ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 237 म अंक 01 नवम्बर 2017 (वर्ष 10 मास 119 अंक 237)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ९ टा उपन्यास संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्षिमनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौंजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फूलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कृशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौंरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपलाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढ़ियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौंजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नडेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह


मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
*सिद्धिरस्तु*

साहित्य

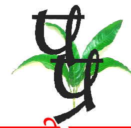
ठूठ गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



ठूठ गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

समर्पण

जिनगीक तँ दुइएटा ने धुरी अछि, सुख आ दुख। अही दुनू धुरीपर ने दुनियाँक बीच आनो-
आनो चरसँ अचर धरि नचबो करैए, उड़बो करैए, महकबो करैए आ
महकेबो करैए। जेना एक दिस- बेली, चमेली आ जूही अछि जे
धरतीसँ सटल अपन पातक पवित्रता आ फूलक सादगीक
संग अपन जिनगीक आदि-अन्त करैत अकासकेँ अपन
महकसँ महकबैत जीवन-लीला समाप्त करैए तँ
दोसर दिस- राड़ी, डबहारी आ पटेर अछि
जे अपन फूलकेँ अकासमे पसारि एक
दिशासँ दोसर दिशा उड़ि-उड़ि
अपन रंग-रूप देखबैए, मुदा
महक केहेन रखने अछि
से बेली, चमेली आकि
जूही पुछौ कि नै पुछौ
मुदा देखनिहारक
दायित्व तँ
बनियेँ
जाइए।

ISBN : 978-93-87675-25-4

दाम : ₹ 250/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

THOOTH GACHH
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

एकसत्तैर-



एक/08
दू/17
तीन/23
चारि/28
पाँच/35
छह/46
सात/54
आठ/70
नअ : 'क'/83
'ख'/95
'ग'/101
दस/108

एक

साँझक बढ़ैत सियाही अन्हराए लगल, जेना-जेना सियाही करियाएल जाइत तेना-तेना दिनक इजोत कमए लगल। सड़कसँ बीघा पचासे हटि बाधमे एकटा गाछ। इजोतमे गाछक सभ सिरखार रस्तेपर सँ चलनिहार देखैत मुदा साँझक पछाइत, माने जेना-जेना अन्हार पसरैत जाए तेना-तेना गाछोक रूप बदलऽ लगइ। पहिल साँझ सौंसे गाछक पात आँगनक बिछान जकाँ बिछाएल बुझि पड़ैत मुदा कनियेँ सियाही बढ़ने पातक पता नइ रहैत संगे गाछक डारियो अन्हारमे हेरा ठूठ जकाँ किछु समए देख पड़ैत पछाइत ओहो हेरा जाइत।

झंझारपुरसँ धीरेन्द्र अबैत रहैथ, रस्तासँ कनी हटि प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूक घर छैन। घरक पछुऐतपर नजैर पड़िते नबे-एकानबे बर्खक रामकृष्ण बाबूपर गेलैन जे आइ ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेला अछि। 1925 इस्वीमे रामकृष्ण बाबूक जन्म ओहन परिवारमे भेलैन जे परिवार राज-परिवारसँ जुड़ल जमीन्दारक रूपमे छल। देशमे अंगरेजक खिलाफ अजादीक लड़ाइ पसैर धाराक रूपमे प्रवाहित हुअ लगल, किसानक देश, गामक देश भारत। भारतक मूल पूजी खेत, जैपर देश ठाढ़ अछि। गुलामीक हजारो बर्खक इतिहास ऐठामक गाम आ गामक पूजीकेँ पाछू धकेलैत पछुएने रहल। जइसँ गमैया जिनगी टुटैत-टुटैत एतेक टुटि गेल अछि जइ -सँ चीन-पहचीन मेटाएल जा रहल अछि।

प्रगतिशील विचारक सभ मञ्चपर आबि चुकल छला। ओ सभ जमीनपर एला जे देशक मूल पूजी–माने किसानक देश, गामक देश–गाम छी तँए बिना गामक विकास भेने देशक विकास सम्भव नइ। गाम रज-रजबारसँ लऽ कऽ जर-जमीनदारक संग रूढ़िसँ सेहो जकैड़ गेल अछि, ओ सुधरने बिना गामक सुधार सम्भव नहि। जमीनक प्रश्न उठने देशमे पसरल रज-रजबार आ जर-जमीनदारक बीच खलबली उठल। जमीन आ जमीन्दारीक खरीद-बिकरी संग उधार भेटने जमीनदारक संख्यामे बढ़तियो भेल आ घटबियो भेल।

ओना, गाम-गामक लोकक दशा एहेन भऽ गेल जे उपास करैले कोनो पावैनक प्रतीक्षा नै रहल।

जँ कोनो गाम हजार घरक अछि तँ नअ साएसँ ऊपरे परिवारकेँ अपन घराड़ियो नहि। मनुख तँ केतौ घरेमे रहत। ओना तइसँ किछु दिन पहिने रेण्ट-मुक्त बास भूमि भऽ चुकल छल, मुदा हजारो बर्खक गुलामीक शिकार लोककेँ पड़ाइत-पड़ाइत कोनो कर्म बाँकी नै रहि चुकल छल। केकरो कोनो गाममे घराड़ी छल, मुदा पेटक दुआरे पड़ा दोसर गाम बसल तँए ओ फेर बिनु घराडीए-क होइत रहल।

जखन अधिवेशन सभमे अजादीक वृहद आकारक अवाज उठल तखन रजो-रजबार आ जरो-जमीन्दारक पेटक पानि डोललैन। जइसँ पसरल खेतक लत्तीकेँ समटऽ लगला। ओना गामो-गामक लोकक आचार-विचारमे किछु-ने-किछु अन्तर होइते छै, जे सोभाविको अछि। बौद्धिक स्तरक हिसाबसँ विचारो आ काजोक स्तर बदलै छइ।

प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूक पिता गोरख बाबू चारि भाँइक बीच जेठ, तँए जहिना माता-पिताक सिनेह तहिना भाए सबहक आदर। जइसँ सुसम्पन्न परिवारक जे गुण-धर्म होइ छै तइसँ सम्पन्न परिवार।

आगत-भागतसँ लऽ कऽ गीत-संगीत, साहित्यिक चर्चासँ मञ्च जकाँ सजल परिवार। संस्कारी परिवारमे आने काज[1] जकाँ पढ़ाइयो-लिखाइ। जइसँ स्कूल जाइ-जोकर जखने रामकृष्ण भेला कि स्कूलक बाट पकैड़ लेलैन। गामक स्कूलसँ हाइ स्कूल तक रामकृष्णक जिनगीमे कोनो हवा-विहाड़ि नइ लगलैन। बच्चेसँ जे नीक रिजल्ट होइत आबि रहल छेलैन ओ मैट्रिक तक बरकरारे रहलैन।

चालीस इस्वीक पछाइत अजादीक लहैर जोर पकैड़ नेने छल। तेजीसँ उथल-पुथल हुअ लगल। जेना आसमान फाटि जाइ छै तहिना रामकृष्णोक परिवारमे भेलैन। चारू भाँइक बीच भिनौज भेने, परिवारक सम्पैत चारि भागमे बँटेने अखन धरिक रचल-बसल परिवार एकेबेर ढनमनाएल। खेत-पथारक बिकरी परिवारमे बढ़ल।

ओना परिवारक अखन धरिक जे हित-अपेक्षित, कुटुम-परिवार, सर-समाजक जे सम्बन्ध रहलैन ओ खर्च तँ ओहिना रहलैन मुदा आमदनीमे धक्का लगबे केलैन। किछु दिनक पछाइत, माने जखन रामकृष्णकेँ कौलेजमे प्रवेश केला साले भरि भेलैन कि पिता मरि गेलखिन। अपन भाए-बहिनक बीच रामकृष्ण सभसँ जेठ रहबे करैथ। पिताकेँ मुइने परिवारक बोझ माथपर आबि गेलैन। अपनासँ छोट पाँचो भाए-बहिनक पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ विधवा माइक भार सेहो पड़लैन। कहुना-कहुना आई. ए. पास कऽ लेलैन।

खेत-पथार रहितो रामकृष्णकेँ ने खेती करैक लूरि आ ने इच्छा। होइतो अहिना छै जे नीक विद्यार्थीक मनमे सदैत यएह रहैए जे केतौ शिक्षक बनि जीवन-जापन करी। मुदा शिक्षकक खगता स्कूल-कौलेजमे रहत तखने ने हएत। से तँ गनल कुटिया आ नापल झोर जकाँ स्कूल-कौलेज! केतौ खाली नै! मुदा इलाको तँ सभ रंगक अछि।

[1] घरेलू काज

कोनो कोसीक उपद्रवी क्षेत्र अछि तँ कोनो भुतही-कमलाक। ओना जइ इलाकामे रामकृष्णक घर छैन ओ धारक उपद्रवसँ सुरक्षित अछि। अपन इलाका छोड़ि रामकृष्ण कोसी क्षेत्रक हाइ स्कूलमे शिक्षक बनि जिनगीक शुरूआत केलैन।

हाइ स्कूलक शिक्षक सभकेँ ओहन दरमहो नहियेँ भेटै छेलैन। जे परिवारकेँ हाइ-फाइमे रखितैथ। ओना ई जरूर भेल जे टुटैत-टुटैत परिवार एक सीमापर आबि अँटैक गेलैन। जेकरा रामकृष्ण बुझलैन। जइसँ आमदनीक बीच परिवारकेँ चलबैक विचार सोचि लेलैन। बाहर रहने बाहरक खर्च हेबे करत, संगे गामोक परिवारक भार तँ अछिए। श्रवण कुमार जकाँ रामकृष्ण परिवारक बेटा बनि भार अपन कन्हापर उठा लेलैन। रेलगाड़ीक सुविधा रहने चारि-पाँच घन्टामे गाम पहुँच जाइ छला, जइसँ अठबारे शनि-रबिकेँ आबा-जाही स्कूल आ गामक बीच रखने छला।

ओना शिक्षा-बेवस्थामे सेहो जुग परिवर्तन होइए मुदा केहेन परिवर्तन होइए ऐपर तँ सभकेँ नजैर रखऽ पड़तैन। नजैरक माने, कोन-मुहेँ आकि केकरा दिस ओ लत भेल। मुदा से जइ जुगक उपज रामकृष्ण छला ओ समयानुकूल छेलैन। शिक्षा पद्धतिमे अखुनका विद्रूपता नइ आएल छल। ग्रामीण परिवेशमे चाहो-पानक चलैन अखुनका जकाँ नइ छल। ओना पानक प्रशस्ति मिथिलांचलमे अदौसँ रहल मुदा आम-जनक बीच समटा ओ विशेष, माने खास-खास उत्सवमे अँटैक गेल छल। ओना एकटा प्रश्न तँ उठिते अछि जे आधुनिक वैज्ञानिक परिवेशमे पानक महत् की अछि। जेहेन परिवारक रामकृष्ण बाबू छला ओइ परिवारमे सभ कथुक चलैन छेलैन। मुदा परिवारसँ हटल रहने अपन जीवनकेँ साँचामे ढालैक तँ अवसर भेटबे केलैन।

मौकाकेँ लाभमे बदैल रामकृष्ण अपन जिनगीकेँ अपना अपना ढंगे निरमाएब शुरू केलैन। एक तँ ओहिना छोट-भाए बहिनक बीच एहेन विचार अखनो तँ गाम-परिवारमे ऐछे जे मते-पिता नइ अपनो भाए-बहिन आ समाजोक भाए-बहिनक बीच बेवस्थित रूपमे सम्बन्ध ऐछे जे बेसीमे नइ तँ कमोमे जरूर चलि रहल अछि। तैसंग विधवा माइक जिनगी परिवारक जिनगीकेँ सात्विकता दिस बढ़बैत रहलैन। भूखे सहब आ कोनो संकल्प-व्रते सहब, दुनू सहबे भेल मुदा दुनूमे अन्तरो तँ अछिए। एक सहब भेल भरलपर आ दोसर भेल जरलपर, जइसँ ईहो तँ हेबे करत जे भरलकेँ पाचक हएत आ जरलकेँ घातक! घातक ई हएत जे हाड़-मांसक संग हड्डियो सुखाएत!

आने-आन मनुख जकाँ रामकृष्णक जिनगीकेँ कहियौन आकि दुनियाँकेँ, बीचमे आबि ठाढ़ भऽ गेल रहैथ। विचारक धारमे अपना बुधिये रामकृष्ण अपनाकेँ जुड़शीतलक माल-जाल जकाँ छोर पकैड़ हेलौलेन। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, बहुरंगी। केतौ बालु भरल अछि तँ केतौ सोना, केतौ पाथर भरल अछि तँ केतौ बोन-झार, केतौ पानि भरल अछि तँ केतौ माटि...।

माटियो तँ माइटे छी, कोनो उस्सर अछि तँ कोनो केशौर केसैर उपजबैक शक्ति रखने अछि।

अथाह दुनियाँक थाह पकड़ब असम्भव नइ तँ कठिन तँ अछिए। दसो दिशामे दुनियाँ बँटाइत बँटाएल अछि, तहूमे तेते कोण-काण बनि गेल अछि, जँ किछु डेग केम्हरो उठबौ चाहब तँ कोनो कोणेमे कोणिआ जाएब आ कोणियेला पछाइत केमहर-मुहेँ चलि जाएब, से ठेकान करब अथाह नइ तँ अगम तँ अछिए। जहिना अगमो पानिमे हेलिनिहार सभ रंगक होइ छैथ, कियो एहनो होइ छैथ जे अगम बुझि, माने माटिक ऊपर एते पानि अछि जइमे डुबि जाएब।

पानिमे डूमने हवाक प्रवेश रूकै छै तँए बिनु हवे अपनो हवे जकाँ उड़ि जाएब! मुदा तँए कि एहेन हेलिनिहार नइ छैथ जे समुद्र सन पानिमे हेलै छैथ जइमे माटिक ठेकाने ने छइ।

दुनियाँक बीचमे ठाढ़ रामकृष्ण अप्पन दुनियाँ दिस नजैर देलैन। अपन दुनियाँ तँ वएह ने भेल जइमे रहैक अछि। एकरो ने दसो दिशा छै आ सैयो कोणो-काण छइ। अपन जिनगीकेँ थाह पबिते रामकृष्णक मनमे तोष-संतोष जगलैन। जगलैन ई जे मनुखो तँ मनुखे छी जे कारखानाक आगिक चिमनियोँ लग जिनगी बितबैए आ साइबेरियाक काइ-लीचेन गाछो तर। तही बीचमे ने हमहूँ केतौ छी...।

अपना जिनगीक आड़ि-धुरकेँ रामकृष्ण बिटिया लेलैन। बिटियैबते भक खुजलैन- सभ किछु अपने करए पड़त। अहीमे धरम-करम सभ नुकाएल अछि। जँ देह-हाथ नइ चलाएब, उपार्जन नइ करब तँ परिवारक खेबा-खर्चा केतएसँ औत, धिया-पुताकेँ पढ़ाएब-लिखाएब केना...। अपना जिनगी-ले लोककेँ अपने उपैत करए पड़ै छै, हमरो करैक अछि।

दोहरी संकल्पक संग रामकृष्ण शिक्षकक जिनगी शुरू केलैन। पहिल संकल्प केलैन जे अपनो प्रोफेसर बनैक अछि आ परिवारमे छोट-भाए-बहिनक निमरजना ओते तँ करबे अछि जेते पिताजीक समैमे भेलैन। तइसँ जेते अगुआ करब वएह ने अपन सृजन हएत।

ओना आर्थिक दृष्टिये दुनू-बापूतक जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर आबि गेल छेलैन। पिताक जिनगी मझोलका जमीन्दारक रहलैन जखन कि रामकृष्णक जिनगी ओइसँ बदैल एक साधारण शिक्षकक भऽ गेलैन। संकल्पकेँ खण्डित करैत, माने छोट-छोट टुकड़ी बना रामकृष्ण अपन मन असथिर केलैन जे पिताजी जेते पढ़ेलैन, तेते छोट-भाइक प्रति अपनो दायित्व बनैए, ओना तइसँ कम-बेसीमे

पढ़निहारोक विचार तँ ऐबते छइ। जँ नइ पढ़ऽ चाहत तँ परिवारक बीच, समाजक बीच, किए ने अपन प्रायश्चित करा लेब। जँ पढ़निहार रहत तँ अपन ओकाति भरि सहयोग करब दायित्वक संग कर्तव्यो तँ बनिते अछि। ऐठाम आबि रामकृष्णक विचार ठमैक गेलैन। किछु समए ठमकला पछाइत रामकृष्णक नजैर अपनापर पड़लैन। परिवारक खर्चमे सिर्फ भोजने-वस्त्र आ अवासेटा नइ अछि। लिखब-पढ़ब आ बेर-कुबेरमे दवायो-दारूक जरूरत तँ पड़िते अछि। ओना विद्यालयक संग ट्यूशन करब, तइसँ किछु आमदनी बढ़त मुदा घटो तँ लगबे करत ने जे अपन पढ़ैक समए वेरबाद भऽ जाएत। जखन समैए ने बँचत तखन आगू बढ़ि केना सकब। बाल-बोधक खेल पढ़ब-लिखन नइ ने छी, ओ जिनगीक साधना छी जेकरा साधने बिना जिनगीकेँ आगू-मुहेँ बढ़ाएब कठिन अछि। ओना साधनो केते रंगक होइए। मुदा से सभ नइ, जेते साधक जरूरत रहए आ साधैक साधन रहए, बस तेतबे।

रामकृष्णकेँ जेना भक् खुजलैन। भक् खुजिते नजैर मान-इमान आ सम्मानपर गेलैन। ओहो तँ बीज-रूपमे अँकुर, गाछ बनि जिनगीकेँ गछाड़ैत फुनगी धरि पहुँच जाइए। ओतै जा कऽ ने गाछोक फूल फुला-फुला अकास दिस तकैत तरेगन, सप्तऋर्षि गनैए आ तहिना ने मानो-इमान इज्जत बनि इजोरिया राति जकाँ भगवतीक आराधनाक मुहूर्त बनैए...।

रामकृष्णक मन अपना दिस घुमलैन। घुमिते उपकलैन जे जैठाम जिनगीमे आबि अँटैक गेल छी तैठाम इज्जत-इमान की भेल आ तेकरा केना बँचा कऽ रखि सकै छी..?

सौनक मेघ जकाँ मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे जइ काजक भार माथपर आएल अछि ओकरो जँ नीक जकाँ, माने इमानदारी

पूर्वक निमरजना करब, तखन तँ...। जखन कि तहीसँ ने इमानो-इज्जत चलत। जइ बच्चाकेँ पढ़बैक भार कन्हापर आएल अछि, तहूमे लोअर प्राइमरी स्कूल आकि मिडिल स्कूलमे नै छी, हाइ स्कूलमे छी, ऐठामसँ निकलला पछाइत कियो आगूओ पढ़ैले कौलेज जाएत आ केते पढ़ाइ छोड़ि अपन जिनगी बनबैक किरियामे लागत। एहेन धरतीपर जँ अपना जिनगीमे जीवन्तता नइ रहत तखन केतौ-ने-केतौ किछु-ने-किछु कमी औत। मुदा ओ जीवन्तता औत केना?

रामकृष्ण अपन आमदनी आ अपना काजकेँ समैमे बान्हि चलब मनमे रोपि लेलैन। समए निसचित अछि, आमदनी निसचित अछि जँ एकरा काजक निसचितता नइ देब तखन पछड़ैक सम्भावना बनियेँ जाइए। आमदनीक खर्च अपन जिनगीक संग परिवारक जिनगी चलाएब अछि। अपन जिनगीक खर्च जे अछि ओइमे भोजन प्रमुख अछि। जँ हम बजार दिस जाइ छी तँ निसचित रूपे अधिक खर्च हएत, मुदा जँ ओकरा अपन दिनचर्यामे लऽ आनब तँ अदहोसँ बेसीक बँचत हएत। रामकृष्णक मन मानि गेलैन।

आगू पढ़ैपर नजैर गेलैन। भाइयो-बहिन परिवारमे रहि मैट्रिक तक तँ घरेपर सँ पढ़ि सकैए। अपन जे हिस्साक जमीन अछि, ओकरो उपजबैक परियास करब, नइ जँ तइ सभसँ खर्च नइ पुरत तँ थोड़-थाड़ बेचियो लेब। मुदा जँ खर्चक दुआरे अपने आकि परिवारेक बाल-बोधकेँ जिनगी बाधिक केने रहब तखन तँ जिनगी कोणाह बनि जाएत।

बी.ए.मे रामकृष्ण नाओं लिखा, छह मासक पछाइत कौलेज छोड़ने रहैथ, किताब सभ कीनि नेने रहैथ। सोझे बैचमे फारम भरि बी.ए. कऽ लेलैन। बी.ए. केला पछाइत विद्यालयमे स्तरो बढ़लैन आ दरमहोक बढ़ोत्तरी भेलैन। तैसंग नीक रिजल्ट पढ़ैक मन सेहो जगा देने

रहैन। प्राइवेट विद्यार्थीकेँ युनिवर्सिटीसँ परीक्षा-ले परमीशन लिअ पड़ै छइ। मनमे अराधि लेलैन जे जखने अवसर भेटत तखने एम.ए. कऽ लेब। मुदा ओइले अखनेसँ कनखड़ए पड़त।

◌

शब्द संख्या : 1790, तिथि : 25 अक्टुबर 2015

दू

विचार रूपमे रामकृष्णक मनमे रोपा गेल रहैन जे एम.ए. करब। मुदा घड़ी-मिनट दिन-मास गुजैर गेल, अखनो धरि रामकृष्णक मनमे काज रूपमे नइ रोपाएल छेलैन। ओना विद्यालयमे सेहो साहित्येसँ जुड़ल रहला मुदा ओ पूर्वपीठिका भेल। तेकर कारण रहै जे सभ दिन साहित्य विषय दिस रहला। ओना साहित्योमे गणित नइ अछि सेहो बात नइ, गणित तँ ओहूमे अछि मुदा ओ नमहर अछि, तँए छोट जिनगीमे ढीलढीला भऽ जाइए। जिनगीक लेल तँ जरूरत अछि अर्थशास्त्रक संग ओकर स्टैटिक्सकेँ बुझब, तइमे हजारो कोस दूर हटल रामकृष्ण, तँए समए बितए लगलैन मुदा निर्णएपर पहुँचिए ने पाबि रहल छला। केतौ बाजब नीक नइ, एकर अनेको कारण अछि मुदा से नइ, रामकृष्णक मनमे उठलैन जे असम्भव काजकेँ सम्भव बनबैक प्रक्रिया छी, तँए काजक बिसवासू दू दिस बढ़त। एक दिस काजक लेल जिनगी भेल आ दोसर जिनगी-ले काज भेल। मुदा पुरुखकेँ तँ अपन पुरुषत्वोमे बिसवास करबाके चाही। मुदा नजैरमे जेना नचि गेलैन- 'कंगनक लेल आरसी की आ पढ़निहार लेल फारसी की।'

रामकृष्णक मनमे जेना जेठुआ नमी जगलैन। जेठुआ नमीक माने भेल, जमीनमे ठण्ढपन आएब। मुदा से नै नमी तँ जमीनमे सभ

दिन रहिते अछि, भलैँ कहियो जल-प्लाविते भऽ जाए, कहियो कण्ठे सुखए लगए। मुदा सृजन शक्तिमे कमी-बेसी रहै छइ। जइमे जेठुआ नमी जे समुद्र-धारसँ लऽ कऽ जमीन धरिमे बेसिया जाइए। माने समुद्रोमे माछ अण्डा छोड़ैए आ जमीनोमे रौदमे तपि बीआ आरो सक्कत भऽ हाल पबिते धरतीकेँ फाड़ि कलश उठौने दुनियाँक बीच अपन पहचान बनबैत अपना वंशो आ अपनो नामकरण करैए। जँ से नइ करैत तँ सभ धान धाने छी आ सभ मान माने छी, जकाँ ने भऽ जाएत...।

जेठुए हाल जकाँ रामकृष्णक मनमे अपन जिनगीक गणित जगलैन- साहित्यो गणितसँ आ अर्थशास्त्रो गणितसँ फड़कैत बुझि पड़लैन। जेना कानमे किछु भेने कुकुऐ लगैए, आँखि मिड़मीड़ए लगैए, पीपनी फड़कए लगैए तहिना रामकृष्णोक मन फड़फड़ेलैन। फड़फड़ाइते दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि कागज-कलम उठा जिनगीक केलकुलेशन करए लगला।

एक दिस सोझ बाट देखैथ जे आठ साए नम्बरक आठ विषय एम.ए.क कोर्समे अछि जइमे छह साइक परीक्षा उतीर्ण भाइए गेल छी। मात्र दू साइक नम्बर दू विषयक झमेल अछि। मनमे चपचपी एलैन जे बढ़ि-बढ़ि ठमैक जाइन। ठमैक ऐ दुआरे जानि जे अपन बुझल बात माने 'हाथी पियासल, घोड़ा पियासल, दल-दल पानि, थलथल वाणि पथपल मानि।'

रामकृष्णक आगूमे रकशाएल मन ऊकवाती नेने रस्तापर ठाढ़ भऽ दीवाली पावैनक ऊक जकाँ परीक्षा घड़ी..; परीक्षा घड़ी..; पढ़ैत रहैन। जइसँ रामकृष्ण ठमैक गेला।

अही झीका-तीड़ीमे रामकृष्णक साल भरि समए निर्णए करैसँ पहिने चलि गेलैन। विद्यालयमे हेड मास्टर एम.ए. रहथिन, मुदा

कुर्सियो तँ कुर्सी छी, ने धाके कहियो विचारैक बात सोचलैन आ ने कहियो उपकैरो कऽ हेडमास्टर साहैब जीवनक सम्बन्धमे पुछलकैन। ओना बेकतीगत गुण आ पद प्रतिष्ठाक गुण दुनू दू भेल। नियमानुसार दुनूक पालन हेबा चाही मुदा ओकर तँ समए-स्थान निर्धारित अछि। खाएर जे से...।

सोचे रामकृष्ण हेडमास्टर साहैबसँ एम.ए. करैक गप नइ चलौलैन। पाछू उनैट तकैथ तँ सभ शिक्षक नव कि पुरान मुदा रहैथ तँ सभ आई.ए.-बी.ए. पासे। जैठाम आई. ए; बी.ए. पास तैठाम एम.ए. तँ भुताहि भेबे कएल। भुतही गाछीसँ आगू बढ़ि रामकृष्ण जखन विद्यार्थी दिस बढ़ैथ तँ देखैथ जे ई तँ भेल पूर्वपीठिका, माने बच्चाक ज्ञानभूमि! ऐठामसँ आगू बढ़ैत ने कियो एम.ए.क चोटीपर पहुँचैए आकि पहुँचत। मुदा ऐमे तँ चुम्बकक सम्बन्ध छै जे एक सिरा दोसरकेँ नचबैए।

तेसर साँझ। कोसीक किनछैर, माने भेल धारक लगक जमीनपर देने जे चलैक रस्ता रहैए ओ। ओही रस्ता होइत रामकृष्ण टहलैत बहुत दूर चलि गेला। अपने पढ़ैक विचार मनकेँ दबने रहैन, इजोरिया पख रहबे करइ, सुर्ज अपन बोरिया-विस्तर समैट सुतैले चलि गेला मुदा ठहाका मारि इजोरिया अन्हारकेँ घेरैए ने दइ, अही धोपचटमे रामकृष्ण तीन कोस आगू धरि टहलैत गेलापर मनमे होश एलैन जे साँझका समए छी, केते दूर चलि एलौं! घुमि कऽ आबि अपन ओसारक कुरसीपर बैसते मनमे उठलैन, पहिने हाथ-पएर धोइ चाह बना पीब ली। पछाइत बैस विचारि लेब जे हमरा की करक चाही। विचारक दुइए पक्ष होइए। 'हँ' आ 'नइ'। पछाइत 'हँ'ओमे हजारटा डारि छिटकैए आ 'नहियोँ'मे।

चाह पीला पछाइत मनमे चेनियत ऐबते अपन विचार–

संकल्पक विचार, जे आइ हँ-निहँस कैये लेब–जेना पूर्वाक लहकीमे भँसिया पच्छिम दिस डोलि गेने आ धारक पानि जकाँ विचारोक लाट धेने दोसर विचार सेहो बहैत रहैए, तहिना लाटे-लाट साहित्यक धारमे रामकृष्ण फँसि गेला। आऽ हाऽ हाऽ! केहेन सुन्दर सुन्दरी अछि जे एक घड़ी आधो घड़ी, आधोमे पुन आध! मने-मने रामकृष्ण विस्मृत भऽ गेला। विस्मृत एहेन भेला जे जहिना घड़ी-घण्ट बजैत देवालयक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ पूजाक शंख फूकैत होइत। मनमे हलचल उठलैन। मुदा लगले दोसर धुन ससैर कऽ आबि सवार भऽ गेलैन। ओ धुन छल- 'आध जनम हम नीन गमाओल..!' दुनियाँ केतेटा आ जिनगी केतेटा..? तइले लोक अनेरे हाय-हाय किए करत?

ओना हाथोक घड़ी रामकृष्ण रखने छैथ मुदा देवालोमे घन्टीबला-घड़ी रखनहि छैथ। होइतो अहिना छै जे केकरो घड़ी समए बतबै छै तँ कियो घड़ीकेँ समए बतबैए। यएह तँ भेल दुनियाँक खेल। कियो मिनट-पल समए पकैड़ नचैत तँ कियो कटल-खोंटल चान जकाँ जिनगी देख झुझुआइत!

घड़ी बाजल, साढ़े आठ। रामकृष्णक भक् टुटलैन। भानसक समए भऽ गेल। हाथक घड़ीपर नजैर रखि पैछला समए (माने बैसै कालक समए) सँ मिलौलैन तँ डेढ़ घन्टा घन्टीए डोलबैमे चलि गेल। हाइ रे बा! नान्हिटा विचार करए बैसलौं, सेहो छुटिए गेल! आइक लेल जे काज अछि, आकि विचार अछि ओ औझुका भेल, काल्हि-ले काल्हि छइ। तखन तँ काजे छुटि गेल। अच्छा! भानस करै बेर विचारि लेब। मुदा विचार आइये करैक अछि।

सम्पन्न परिवारमे रामकृष्णक जन्म भेने गीत-नादक परिवार भेटले रहैन, जइसँ बच्चेसँ किछु-किछु साजोपर हाथ देने आ मीठ अवाज रहने अवाजोक साधना रहबे करैन। जे अखनो पछुऐबते छैन,

जइसँ असगर रहने तबला-मजीराक हाथ तँ छुटि गेलैन मुदा हारमोनियम रखनहि छैथ। ओहो नियमित समए खाइते छैन। असगरे गौनिहार, असगरे बजौनिहार-सुनिनिहार, आन कियो ने! तखन..?

चुल्हि लग बैसते जेना मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते पहिने निर्णेये कऽ लेलैन जे एम.ए. करब, प्रोफेसर बनब। काजक इच्छा तँ करैक शक्ति मंगै छइ। से शक्ति रामकृष्ण संचित करैक दिशामे अखनेसँ भीर गेला। तेसर साल एम.ए.क परीक्षा दइक अछि। काल्हिए युनिवर्सिटीसँ सिलेवश आनि, आठो विषयक खण्डवाइज किताब सेहो कीनि लेब। किछु-किछु समैक कटौती सभ काजमे करैत दू घन्टा समए निकालि काजमे हाथ लगा देब।

जिनगीक टपान टपैक दुर्ग बाटपर ठाढ़ भऽ रामकृष्ण चुल्हि लगसँ आगू देखऽ लगला। मनक संग देहोमे चुलबुली आबि गेलैन। समयानुकूल भोजन बना, भोजन करैत रामकृष्ण निर्णए केलैन जे ओछाइनपर निचेनसँ औरो नीक जकाँ विचारि लेब।

ओछाइन सेरिया जखन ओछानिक सिरमापर मुड़ी खसौलैन कि धक्-दे विधवा माइक संग भाए-बहिनपर मन उड़ि गेलैन। दिनो-दिन माइक देहक दशा खसि रहल अछि! देहक दशा खसैक कारण दुइएटा भऽ सकैए। देह आ दैहिक। ओना उमेरो पचास टपि गेल मुदा साइक नापमे तँ अधडरेर भेल, अखन किए देह खसतैन। साठिक बाद ने खसैक सम्भावना जगैए। ओना खाइ-पीबैमे कोनो तेहेन अभाव तँ नहियेँ हुअ दइ छिऐ, जेहेन हजारो-लाखो परिवारमे छइ। नइ! जरूर मानसिक पीड़ासँ पीड़ित अछि। की एहेन उमेरमे जँ पति-विहीन लोक भऽ जाए, बाल-बच्चा छोट रहै ओहन लोकक इज्जत-आवरू एहेन समाजमे बँचि सकैए जेहेन समाज बनि गेल अछि आकि बनि रहल अछि आकि बनौल गेल अछि। की माए-बापक धर्म बाल-बच्चाक

सेवा करब नइ छी? बहिन बिआहे-जोकर भऽ गेल अछि, ओ तँ माइयेक सोझमे अछि, की ओकरा मनमे सन्ताप नइ जगैत हेतइ?

रामकृष्णक हँसी-खुशीक मनक नीन पड़ा कऽ दूर भागि गेलैन। कछ-मछ करैत ओछाइनपर पड़ल माएपरसँ भाए-बहिनपर नजैर उतरलैन। दू-दूटा भाएकेँ कौलेजक खर्चा जुटाएब बाल-बोधक खेल नइ ने छी। मुदा ईहो तँ दायित्व बनियेँ जाइए किने जे जहुना अपने राम कृष्ण कौलेज मधुबनीमे पढ़लौं, तहुना तँ पढ़ा दिऐ। मुदा छोड़लो तँ नहियेँ जा सकैए। तखन तँ भेल अपन जिनगीक संग परिवारक जिनगीकेँ अपन कमाइमे अँटावेश करब। जे अँटावेश करए तँ अपने पड़त।

◌

शब्द संख्या : 1203, तिथि : 29 अक्टुबर 2015

तीन

अंगरेजी विषयमे रामकृष्ण एम.ए. कऽ लेलैन। जहिना मनमे एम.ए. केला पछाइत जगै छै, तहिना रामकृष्णोकेँ जगलैन। ओना एम.ए. केलासँ पूर्व आ पछातिक बीच स्कूलक अध्यापनमे अन्तर नै एलैन मुदा शिक्षको सबहक आ छात्रो-अभिभावकक बीच बेकतीत्वमे अन्तर आबिए गेलैन।

1940 इस्वीसँ 1960 इस्वीक बीच, अजादीक आन्दोलनसँ लऽ कऽ देशक अजादी तकक परिस्थिति जहिना भुमकमसँ पहिने भुमकमक समए आ पछातिक जे स्थिति होइए तहिना रहल। ओना डोलैत-धरती किछु-किछु असथिरो भऽ गेल मुदा नमहर भुमकमक पछाइत जहिना छोट-छोट भुमकम अबैत रहैए तहिना ऐबते रहइ।

अजादीक आन्दोलन 1942 इस्वी अबैत जुआ गेल। माने जन-जनक बीच पहुँच गेल जइसँ घर-घरसँ निकैल लोक सड़कपर आबि गेल। मनमे स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक बनैक फल फड़िए गेल छल। अजादीक लड़ाइ दिस झूकने देशक उत्पादनो वाधित भेल। खेतियो-पथारी आ शिक्षणो-संस्थान सभ प्रभावित भेबे कएल। ओना पुरना दरभंगा जिला जे अखन मधुबनी, दरभंगा आ समस्तीपुरमे बँटल अछि तइमे मात्र दू या तीनटा कौलेज आ तही अनुपातमे हाइयो स्कूल छल आ ओना संस्कृत विश्वविद्यालयक संग ठाम-ठीम संस्कृत

महाविद्यालयो आ विद्यालयो सभ छेलैहे। 1942 इस्वीमे जहिना कौलेजक शिक्षको आ विद्यार्थियो तहिना स्कूलोक विद्यार्थियो आ शिक्षको सभ आन्दोलनमे कूदि गेला। कठिन लड़ाइक पछाइत देशक अजादीक नीक फलो तँ भेटबे केलैन।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत जहिना सभ क्षेत्रमे अपन-अपन समस्या जगल तहिना अपनो इलाकामे स्कूल-कौलेज आ अस्पतालक संग रस्ता-पेरा, खेती-पथारी इत्यादिक समस्या उठबे कएल। अखुनका मधुबनी जिलामे एकटा कौलेज आर.के. कौलेजटा छल। जयनगर, बाबूबरही, पण्डौल, सरिसव पाही, झंझारपुर, निर्मलीमे कौलेज आ तहिना हाइयो स्कूल, मिडिलो स्कूल, बनबैक जिज्ञासा समाजक मनमे उठल। 1960 इस्वीसँ पहिने पान-सातटा कौलेजो खुजल आ लहेरियासराय अस्पतालो बनल।

अजादीक पूर्वसँ जे स्कूल आ कौलेज चलैत आबि रहल छल ओ अपन नीक गति पकैड़ संचालित हुअ लगल, जइसँ रामकृष्णकेँ स्कूलक जवाबदेहीक दबाव रहबे करैन। नव-नव कौलेज आ नव-नव स्कूल खुजने शिक्षकोक जरूरत पड़बे करत। रामकृष्णो दू धारक पेटमे पड़ि गेला। एक दिस हाइ स्कूलसँ कौलेजक शिक्षक बनैक इच्छा तँ दोसर दिस नव कौलेजमे वेतन नइ भेटने परिवारक भरण-पोषणक समस्या। जखन कौलेज नीक बनि संचालित हुअ लगत तखन ने वेतन भेटत। तैबीच एकटा लागल जीबिका, माने हाइ स्कूलकेँ छोड़ब रामकृष्ण नीक नहि बुझलैन। परिवार ओहीपर ठाढ़ छैन। संगे ईहो होनि जे सीमित कौलेज खुलने सीमित शिक्षकोक बहाली हएत, ओ जँ भरि जाएत तखन तँ अवसरक चूक हएत। जहिना डारिक चुकल बानरक गति होइ छै तहिना अवसरक चुकल लोकोकेँ होइते छइ।

जइ उत्साहक संग देशक अजादी-ले जनमानस जगि कऽ आगू

बढ़ल ओ उत्साहकेँ अजादीक पछाइत छीन-भीन कऽ देल गेल। कहैले शासन विदेशी हाथसँ देशी हाथ आएल मुदा बेवहारिक जे जिनगी छल, ओइमे कोनो बदलाव नै आएल। एहनो नै कहल जा सकैए जे केतौ ने आएल, से ठाम-ठीम गामो-समाजमे आएल आ ठाम-ठीम परिवारोमे आएल। खाली सत्तासँ सटलक जिनगीमे उछाल आएल मुदा गाम-समाज ठमकले रहि गेल। रंग-बिरंगक उपद्रव जे पहिनेसँ आबि रहल छल ओ समाजक बीच किछु बढ़िये गेल, कमल नहि। जँ केतौ कोनो रंगक कमबो कएल तँ दोसर रंगक उपकबो कएल।

ओना देशक बीच जन-जनक समस्या अछि मुदा ओ केना मेटत एकरा-ले जेहेन शासन-सूत्र चाही से नइ भेल। नव जनमल प्रजातंत्र बेवस्था, हजारो बर्खक लूटल-कूटल देश, केना उठि कऽ ठाढ़ भऽ चलत। धिया-पुताक गेन नइ ने छी जे पकड़नौं गुड़ैकते अछि। गाम-गामक अर्थ-सम्पदाक संग, कौशल सम्पदा, जे पहिनेसँ दबल आबि रहल छल ओकरा उठबैक ओहेन उपाय नइ भेल जेहेनक खगता छल।

भुमकमक पछाइत आकि समुद्री जुआरिक पछाइत जहिना धरतियो आकि पानियोँ असथिर होइत-होइत असथिरो आ शान्तो भऽ जाइए तहिना अजादीक पछाइत जनमानसक अजादीक सपना असथिर होइत-होइत शान्त भऽ एते दबि गेल जे ओकर चीन-पहचीन मेटाएल जकाँ बुझिमे आबि रहल अछि।

ओना किछु इलाकाक किसान अपन जिनगीकेँ बुझि खेती-वाड़ी करब अपनौलैन जइसँ ओ सभ बेसी गिरहस्तीपर आश्रित छैथ। जे अपना ऐठाम नइ अछि। हजार बीघा जमीनबला सेहो नोकरीए करता तखन बिनु खेतबलाक की उपाए हएत। ओना घर-बाहर दुनू

दिससँ ओझरी तँ अछिए। सालमे एकबेर बाढ़िक उपद्रव, जइमे खेती-पथारीसँ लऽ कऽ घर-दुआर दहौनाइ-भँसौनाइक संग जमीनो कटि-कटि धार बनिते अछि। तहिना बेसी बरखा भेने सेहो आफद ऐबते छइ। जाड़ोक मौसम सेहो तेहने मारुख होइते अछि। मास-मास, दू-दू मासक शीतलहरी। मुदा सभ किछुकेँ रहैत फेर केना जीबित रहब, ऐ ले तँ सभ ने अपन-अपन सोचबै।

शिक्षाक खगता बुझि इलाकामे स्कूल-कौलेज बनबैक विचार जन-मानसमे जगल। 1960 इस्वीसँ पूर्व जखन दरभंगा जिला छल तखन समस्तीपुरसँ लऽ कऽ निर्मली तक कौलेज खुजैक वातावरण बनल। दर्जनो कौलेज आ दर्जनो हाइ-स्कूल खुजल। मुदा अजादीक पछाइतो पढ़ाइमे, माने शिक्षण बेवस्थामे ओ बदलाव नइ आएल जे गुलामीसँ अजादीक होइ छइ। तैसंग किसानक गामेटा नइ, देशो छी, मुदा खेती-वाड़ीक स्कूल-कौलेज खुजबे ने कएल। एक तँ खेत-पथार ओहिना जमीन्दारीक ओझरीमे पड़ि परती भेल पड़ल आबि रहल छल तैपर पढ़ल-लिखल लोक गामक कोन बात जे राज्ये छोड़ए लगला तखन बोनिहारे सभ किए पाछू रहता, ओहो सभ किए ने शहर होइत विदेशोमे जा-जा बोइने करता। आब कि कोनो डाक्टर-इंजीनियरक खगता छै, आब तँ करखानामे काज केनिहारक खगता छै...। मुदा देहो छीपलासँ तँ समस्याक समाधान नहियेँ हएत।

पण्डौलमे सेहो कौलेज खुजल। परिवारसँ लऽ अपन धरिक जिनगीक हिसाब रामकृष्ण जोड़लैन। भाइयो सभकेँ चेष्टगर भेने उपार्जनक उपाय रामकृष्णक परिवारमे भेलैन। किछु दिन जाबे सुचारू ढंगसँ कौलेज नै चलत ताबे अपनो समैक बचत तँ हेबे करत। ई विचार रामकृष्णक मनमे रहबे करैन जे जेना-जेना कौलेजमे सुधार हएत तेना-तेना दरमहोमे सुधार होइते जाएत। तँए नीक हएत जे कौलेजोमे शिक्षकक लेल अपन उपस्थिति दर्ज करा ली। अखन समए

हाथ लागल अछि, फेर कहिया एहेन अवसर भेटत। मनमे विचार उठला पछाइत परिवारोक (माने माइयो आ भाइयो-बहिनक) बीच अपन विचार रामकृष्ण रखलैन। जहिना पाल परहक मालदह आकि कलकतिया आम आगूमे ऐबते मन पाल-पाल हुअ लगैए तहिना परिवारजनकेँ सेहो रामकृष्णक विचारसँ भेलैन। अवसरक अनुकूल विचार रखैत परिवारसँ पुछलखिन-

“आवा-जाही बढ़ने खर्च बढ़त, जखने अपन खर्च बढ़त तखने अहाँ सबहक बीच, माने परिवारमे कमी औत। जँ से सहैले अहाँ सभ तैयार होइ तँ हम आगू बढ़ि सकै छी।”

एकमुहरी सभ कहलकैन-

“नीक हएत।”

रामकृष्ण पण्डौल कौलेजमे ज्वाइन कऽ लेलैन। किछु दिन तँ नियारे-बातमे बितलैन पछाइत, सात दिनमे एक दिन पढ़ाएब शुरू केलैन। धीरे-धीरे विद्यार्थियो बढ़ल जइसँ कौलेजक आमदनियोँ बढ़ल। कौलेजमे आमदनी बढ़ने किछु-किछु वेतनो सुधरैत भेटब शुरू भेलैन।

ओना सड़कक माथ तीनू। माने जहिना कौलेज जेबाले सड़कक माथ, तहिना बीचमे अपन घरो आ दोसर भाग हाइयो स्कूल।

तीन सालक पछाइत जखन रामकृष्ण कमीशनसँ बहाल भऽ गेला तखन हाइ-स्कूलक नोकरी छोड़ि, कौलेज पहुँच गेला।

◌

शब्द संख्या : 999, तिथि : 04 नवम्बर 2015

चारि

समैक संग कौलेजोक स्थिति सुधरए लगल। सरकारियो अनुदान आ विद्यार्थियोक फीसमे बढ़ोत्तरी भेने कौलेजक आर्थिक स्थिति सुधरल। जइसँ मकानो बनल, पुस्तकालय सेहो सुधरल आ शिक्षक-कर्मचारीक वेतनमे सेहो सुधार भेल। रामकृष्ण बाबूक जिनगीमे सेहो उछाल एबे केलैन।

ओना रामकृष्ण बाबू कौलेजक शिक्षकमे सभसँ उमेगर रहैथ। उमेरक लाभ-गुण दुनू भेटबो केलैन। पहिल, हाइ स्कूलमे पढ़बैक जे दस बर्खसँ ऊपरक अभ्यास रहैन ओ लाभ कौलेजमे प्रवेश पबिते नीक शिक्षकक श्रेणी पड़ले भेटलैन। आ दोसर, होइतो अहिना छै, जे जेहेन बुढ़ाएलमे डिग्री पौता ओ ओहिना ने बुढ़िया बाढ़ि जकाँ गाम-गामकेँ उजाड़ि कऽ बुढ़ाएल काजो करता। सोभाविक अछि जैठाम कियो अठारह-बीस बर्खक शिक्षक कौलेजमे प्रवेश करता आ कियो काञ्चीनाथ झा ‘किरण’ जकाँ सतावन-अठावन बर्खक अवस्थामे करता, तैठाम दुनूकेँ एकरंगाह तँ नहियेँ कहल जा सकैए। एकटा भेला नवतुरिया जिनका अखन सीखैक समए छिऐन आ दोसर ओहन बुढ़ाएल भेला जे गामक-गाममे धार फोड़ि देने छथिन...।

तीस-पैंतीस बर्खक उमेरक जखन रामकृष्ण बाबू रहैथ तखन कौलेजक शिक्षक बनला। तैबीच बेटो हाइ-स्कूलसँ पढ़ि कऽ कौलेजमे

पहुँच गेल रहैन। आन शिक्षकक अपेक्षा रामकृष्ण बाबूकेँ विद्यार्थीक पढ़ाइ दिस किछु बेसी झूकान रहैन। ओना नीक-बेजए तँ सभठाम किछु-ने-किछु होइते छै, मुदा एकर माने ईहो नइ जे नीकसँ बेसी काज बेजाए भऽ जाए। मुदा समैयोक तँ अपन बलउमकी होइते छइ। जखन एक रंग वेतन दुनू गोरेकेँ रहत तँ के कम आ के बेसी भेला?

कौलेजमे शुरूहेसँ रामकृष्ण बाबूकेँ शिक्षको, कर्मचारियो आ विद्यार्थियो सभ श्रद्धाक नजरिए देखबो करैन आ मानितो रहलैन। जइसँ रामकृष्ण बाबूक मनमे ओहन मलिनता कहियो नै एलैन जे जिनगीमे केतौ कमियोँ अछि।

यएह ने भेल जिनगी जे जइ काजक भार उठौने छी ओकर निर्वहन जँ इमनदारीसँ करिते छी तखन मलिनता औत किए...।

अंगरेजी साहित्यक विद्यार्थी रामकृष्ण बाबू मुदा अंगरेजी जीवन शैली–माने अपन अधिक-सँ-अधिक काज स्वयं करब–नै बनि पड़ैन। ऐ मानेमे रामकृष्ण बाबूकेँ महसूस होनि जे अपनामे किछु कमी तँ अछिए। हेबो केना ने करतैन। खबासोकेँ खबासक खगता मने-मन रहिते अछि किने।

कौलेज आ रामकृष्ण बाबूक घरक बीच पचास-पचपन किलो मीटर पक्की सड़कक दूरी। नीक सड़क रहने बसक लगातार सर्भिस। गामेसँ कौलेजक आबा-जाही रामकृष्ण बाबू रखने रहला। ओना दुइयो-डेढ़ किलो मीटर दूरीबला शिक्षक अपन डेरा फुटा परिवार आ गाम-समाजसँ हटि दोसर समाजमे बसऽ चाहै छैथ।

ओना रामकृष्ण बाबू अपना गामक पहिल एम.ए छैथ तहूमे अंगरेजी साहित्यसँ। अहुना लोक कहै छै जे दूरक ढोलो सुहौन लगै छइ। मुदा, ढोल तँ ढोले छी। ढोलक चालि आकि तबलाक चालि थोड़े सभ पकैड़ पबैए। कोनो भाषा भाषा भेल जे क्षेत्र भरिमे बाजल-

लिखल जाइए। मुदा साहित्य समाजक ओहन शील अछि जे देहक आत्मा जकाँ सभ समाजक बीच बास करैए। तैठाम गमैया पाहुन जकाँ जँ मोजरे नइ देब तँ ओइ वेचारे पाहुनक कोन दोख? खाएर जे से...। दुनू कारणे रामकृष्ण बाबूकेँ परिवारसँ लऽ कऽ समाज तक मान-सम्मान आ पद-प्रतिष्ठाक आदर भेटबे केलैन। परिवारो आ समाजोकेँ तँ ई लाभ भेबे कएल जे जखन परिवारमे एक गोटे एम.ए. पास कऽ लेलैन तँ एम.ए. तकक बाटक बोध तँ हुनका भाइए गेलैन। करै-सँ-धरै-जोकर तँ ओ भाइए गेला। माने ई जे कोन एहेन पढ़ुआ हेता जे उच्च शिखर धरि पहुँचैक बीआ अपना मनमे नइ रखने हेता। अगर-मगर एक ढकिया मुदा सबहक मन-मन्दिरमे बास करैबला भगवान कैलाशवासी बनैए चाहै छैथ।

देखा-देखी रामकृष्ण बाबूक परिवारोमे शिक्षाक स्तर बढ़लैन। छोट दुनू भाए सेहो एम.ए. पास कऽ लेलखिन, जइसँ नोकरियोमे प्रोन्नति भेलैन। जेकर प्रभाव गामोपर पड़बे कएल। देखा-देखी गाममे पाँचटा एम.ए. पास भऽ गेला।

कहैले रामकृष्ण बाबू सभ दिन गामसँ जोड़ल रहला मुदा जुड़ि कऽ रहि नै सकला। जुड़ि कऽ रहैक माने भेल जे मनुखेक जिनगी जकाँ मनुखक बनौल समाजोक जिनगी छै किने तँए जहिना परिवारमे बेटाकेँ कोरामे नेने बापोकेँ अपन बालपन मन पड़ै छै, जेकरा ओ पितृ-ऋण बुझि चुकबैक संकल्प मनमे रोपि निमाहैए तहिना ने समाजियो परिवारमे अछि...।

ओना जखन रामकृष्ण विद्यार्थी छला तखन बच्चे छला, ओहू अवस्थामे स्कूल-कौलेजक संगी गाममे बनबे केलैन। आ जखन हाइ-स्कूलक शिक्षक बनला तखन विद्यार्थी जीवनक सभ किछु बदैल गेलैन, मुदा रहला तँ विद्यार्थीए सबहक बीच। ओना अठबारे गाम अबै

छला मुदा रस्तेक झमार आ परिवारेक काजमे उलैझ कऽ समए कटि जाइत रहैन, जइसँ गाम दिस तकैक समैये ने भेट पबैन...।

ओना समाजोक बीचक जे काज अछि, माने सार्वजनिक काज ओहो केतेक रंगोक अछि आ करैयोक ढंग अलग-अलग छइ। मुदा तइ सभसँ कम सरोकार रामकृष्ण बाबूकेँ अखन तक रहलैन।

कौलेजक पुस्तकालयमे समृद्धता आएल, ओना कौलेजमे छात्रो आ शिक्षकोकेँ नव-नव आ नीक-नीक पोथी उपलब्ध भेने पुस्तकालयक संचालनमे सेहो बढ़ोत्तरी भेल। जहिना पैघ-पैघ प्रकाशनक प्रकाशित पोथीपर नीक प्रकाश पड़ए लगैए, प्रकाशित होइते पोथीक गुण बुझौनिहारक नजैर पड़ए लगै छैन, माने पोथीक गुण-अवगुन बुझौनिहार भेटने सभकेँ लाभे-लाभ होइए तहिना रामकृष्ण बाबूसँ, पुस्तकालयसँ लऽ कऽ कौलेजक शिक्षकक संग विद्यार्थियोकेँ लाभ भेल...।

शुरूहेसँ रामकृष्ण बाबूक झुकाउ पढ़ै-लिखै दिस रहलैन, संगे कौलेजक पुस्तकालयक भार भेटने पढ़ै-लिखैमे आरो बढ़ौत्रीए-क अवसर भेटलैन।

एक तँ महाविद्यालयक विद्यार्थीकेँ पढ़ौनाइ तैपर पुस्तकालयक देख-रेखक भार भेटने रामकृष्ण बाबू कौलेज खुजैसँ लऽ कऽ बन्द होइ धरिक समैमे बन्हा गेला। ओना आन कौलेज जकाँ ऐ कौलेजमे पुस्तकालयक रीडिंग रूम नै, नइ तँ रामकृष्ण बाबूकेँ आरो बेसी भार पड़ितैन। हलाँकी अलगसँ पुस्तकालयक भार भेटने लाभे भेलैन। घरपर सँ सबेरे आठ बजे बस पकड़ए निकलै छला, दस-पोने-दस बजे कौलेज पहुँच जाइ छला। जँ क्लास रहै छेलैन तँ क्लास जाइ छला नइ तँ पुस्तकालैयेमे रहै छला। ओना पोथीक लेन-देन पुस्तकालयक आन-आन कर्मचारी सबहक जिम्मामे छेलैन, मुदा देख-भालक भार तँ

रामकृष्ण बाबूपर रहबे करैन।

दस बजेसँ चारि बजेक बीच पढ़ै-लिखैक भरपूर समए रामकृष्ण बाबूकेँ भेटलैन। जेकर उपयोगो नीक जकाँ केलैन। जइसँ अंगरेजी साहित्यक संग हिन्दी, मैथिली आ संस्कृत साहित्यकेँ सेहो गहरायसँ अध्ययन केला।

रामकृष्ण बाबूक पढ़ौनीसँ विद्यार्थियोकेँ नीक लाभ भेटैत रहल। तेकर कारण छल जे पुस्तकालयमे टटके पढ़ि क्लास जाइ छला, नीक जकाँ पढ़बै छला।

कौलेजक जिनगीक रूटिंग रामकृष्ण बाबूक एहेन बनि गेल रहैन जे भोरे सुति उठि नित्यकर्मसँ निवृत्त होइत, चाह पीबैत-पीबैत नहेबा बेर भऽ जाइन। नहा कऽ खाइ छला आ कपड़ा पहिर बस पकड़ैले निकैल जाइ छला। तहिना कौलेजसँ घुमती बेर सेहो चारि बजेक बाद हब-गब करैत पाँच बजे तक कौलेजक कम्पाउण्डसँ निकलै छला, जे सात बजेसँ आठ-साढ़े-आठ बजे तक घरपर पहुँचै छला। घरपर पहुँचला पछाइत रौतुका ओरियानमे लगि जाइ छला। ओना गामोक लोक देखैत रहैन जे रामकृष्ण बाबू गामेसँ कौलेज जाइ-अबै छैथ। खाली रबि दिन गाममे रहै छैथ। ओना तेकर अतिरिक्त गामक लोकमे ईहो तँ धारणा रहबे करइ जे 'छबे कौलेज, नबे स्कूल।' माने कौलेजक पढ़ाइ छह मास चलै छै आ हाइ-स्कूल तकमे नअ मास। बाँकी दिन छुट्टी रहैए, माने बन्न रहैए।

गाममे रहितो रामकृष्ण बाबू गामक पैघ समाजसँ हटि कटल-छँटल समाजिक जिनगी जीबए लगला। गामक बीच नव-नव समाजक जन्म सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। माने ई जे जँ गाममे पाँचटा इंजीनियर भऽ जाथि तँ एक इंजीनियर समाजक जन्म भाइए जाइए। समाजमे इंजीनियरक की

जरूरत अछि, ई तँ ओ जानैथ, मुदा एक नव समाज तँ उठि कऽ ठाढ़ भेबे कएल। अहिना आनो-आन समाजक अछिए। डाक्टरक समाज, प्रोफेसरक समाज, विस्तृत रूपमे पढ़ल-लिखलक समाज इत्यादि-इत्यादि। दू साए परिवारक गाममे रामकृष्ण बाबूक जन्म भेल छेलैन। एक-दियादी परिवार जे एक-जातीय टोल-समाज बनि गाममे ठाढ़ छैन। बाँकी गामक लोक रंग-रंगक अनेको टुकरीमे बँटल अछि। किछु परिवारकेँ, जिनका खेत छैन ओ किसान छैथ आ जिनका अपन खेत नै छैन ओ तँ बोनिहार छैथे जे किछु पूब-पच्छिम खटि जिनगी बितबै छैथ तँ किछु गोटे छोट-मोट कारोबार करै छैथ। मुदा पढ़ै-लिखैक मामलामे सभ एकरंगाहे। दू-चारि गोरे हाइ-स्कूल तक देखने बाँकी सभ निशान दऽ दऽ मटिया तेल-गहुम कोटासँ उठबैबला।

गामो तँ आदिम समाजसँ लऽ कऽ एक्कैसम शताब्दी तकक इतिहास अपना पेटमे रखने अछि। माने ई जे मनुख निरमित परिवारो छी, समाजो छी आ देश-दुनियाँ सभ कथू छी। आइक सदी एक्कैसम सदी छी, माने एकसँ शुरू भेल सदी ई एक्कैसम छी। आइपर काल्हि ठाढ़ होइत-होइत एक्कैसम सीढ़ीपर पहुँचल बटोही हम सभ छी। तैसंग ईहो एकटा गुण तँ ऐछे जे ने बीसम छेलिऐ आ ने बाइसम हेबै, रहबै एक्कैसमे। तँए हमरा ई भ्रम नइ हेबा चाही जे सभ दिन चानक अशोकक गाछक निच्चाँमे टोकरीसँ हमहीं सूत कटैत रहब। मुदा निअसो तँ नहियेँ भऽ सकै छी। हमहूँ ने ऐ धरतीक एक खूटपर नट-नटी जकाँ ठाढ़ छी आ हमरो आगूमे ने विशाल रंग-मञ्च सजल अछि। करोड़ो-अरबो तमसगीर बैसलो-बैसल आ ठाढ़ो भऽ भऽ तमाशा तँ देखैयो-ले चाहि रहला अछि आ देखियो रहला अछि...।

रामकृष्ण बाबू जेहने चरित्रवान तेहने इमनदारो, मुदा गाममे रहितो समाजसँ दूर जिनगी रहने समाजकेँ जे लाभ हिनकासँ हेबा चाही, से लाभ नइ भेल। उच्च श्रेणीक पढ़ल-लिखल लोक, उच्च

श्रेणीक चिन्तको आ उच्च श्रेणीक विचारवानो तँ होइते छैथ। मुदा चिन्तन केना विचारक रस्तासँ चलि विचारवान बनौत, तइ बुझैमे रामकृष्णकेँ भौक भेलैन। हलाँकी भौक जानि कऽ नहि, अनजानमे भेलैन। साहित्यक विद्यार्थियो आ चिन्तको रहने साहित्येक दुनियाँमे वौआए लगला। वौआइत-वौआइत आइ चारू जुगक साहित्य आ साहित्यक भाषा तथा लिपिक बीच तेना ओझरा गेल छैथ जेकरा सोझरबैले जहिना अंगरेजी साहित्यक ढेरियाएल पोथी, तहिना संस्कृत, मैथिली आ हिन्दी साहित्यक पोथी पढ़ैले बाँकीए छैन। स्कूल-कौलेजक साहित्यसँ आगू बढ़ि अठारहो पुराणेमे अखन ओझराएल छैथ। उपनिषद, वेदान्त आ एक लाख मंत्रबला ऋृग्वेदो तँ बाँकीए छैन...।

साहित्यक दुनियाँ अलगो अछि आ समाजोक संग अछि। दुनूक दू दिशा, दू पहलू, दू विचार आ दू तरहक संचालनमे दूरी भेने, दूरी तँ बनियेँ जाइए। जइसँ रामकृष्ण बाबू गाम-समाजमे रहितो ऐ दूरीक कारणे हटल रहला।

ओना, जहिना व्यास बाबा अपन अठारहो पुराणक निचोर पाप-पुण्यक सीमापर आनि रखि देलखिन तहिना गमैया साहित्यकारोक सीमा ने भेल जे गमैया लोकक गमैया भाषामे गमैया बात-विचारकेँ गामक इतिहास-भूगोलकेँ देखैत समाजशास्त्रपर नजैर रखैत साहितक रूपमे साहित्यकेँ ओढ़ा दिऐ।

◌

शब्द संख्या : 1494, तिथि : 07 नवम्बर 2015

पाँच

जहिना पढ़ैक खुशी पढ़ला पछाइत सभकेँ होइए तहिना रामकृष्ण बाबूकेँ सेहो होइन। जिनगीक तँ दुइएटा ने धुरी अछि, सुख आ दुख। अही दुनू धुरीपर ने दुनियाँक बीच आनो-आनो चरसँ अचर धरि नचबो करैए, उड़बो करैए, महकबो करैए आ महकेबो करैए। जेना एक दिस- बेली, चमेली आ जूही अछि जे धरतीसँ सटल अपन पातक पवित्रता आ फूलक सादगीक संग अपन जिनगीक आदि-अन्त करैत अकासकेँ अपन महकसँ महकबैत जीवन-लीला समाप्त करैए तँ दोसर दिस- राड़ी, डबहारी आ पटेर अछि जे अपन फूलकेँ अकासमे पसारि एक दिशासँ दोसर दिशा उड़ि-उड़ि अपन रंग-रूप देखबैए, मुदा महक केहेन रखने अछि ओ तँ बेली, जूही आकि चमेली पुछबे करत किने।

होइतो अहिना छै जे जखन विद्यार्थी अपन परीक्षाक तैयारीमे अध्ययन केला पछाइत मननक अवस्थामे पहुँच उताहुल हुअ लगैए जे हे भगवान इहए प्रश्न जँ परीक्षामे पूछल जाएत तँ हमरासँ नीक उत्तर कियो ने देत। हँ ओहो विद्यार्थी देत जे हमरे जकाँ अध्ययन केने मननक मने चलैत हएत। एहेन बात कोनो हाइये स्कूलक आकि कौलेजेक विद्यार्थीकेँ नइ, सभकेँ होइए जे रामकृष्ण बाबूकेँ सेहो होइन। कोनो पोथी पढ़ला पछाइत जखन मननक अवस्थामे मन निसाँ

जाइ छेलैन तखन निसभेर राति जकाँ अपनो सुधि-बुधि बिसैर जाइ छला जे अपना हाथ-पएर अछि की नइ। कानो अछि की नइ। आँखि जँ रहैत तँ दुनियोकेँ देखतौं ने। ओना दुनियाँक दूरी तँ दूर अछि मुदा अपन हाथ-पएर तँ अपना देहेमे सटल अछि तथापि अन्हारमे कहाँ एको-डेग आकि एको हाथ उठैए।

रामकृष्ण बाबूक संग मजबूरी तँ छेलैन्हे। मजबूरी ई जे पुस्तकालयमे पोथीक लेन-देनमे जे गप-सप्प होइन, तइमे कियो बाइबिलक बात पुछि दैन तँ कियो गीताक, कियो पुराणक कथा लाड़ि-चाड़ि दैन तँ कियो वेदान्तक। जइसँ मन नंग-चंग रहिते छेलैन। ओना पढ़ैक धारमे उपस्थिति होइते छेलैन मुदा तइमे पाराग्राफपर पहुँचैक मोहलत लऽ लइ छला तँए पढ़ैक धारमे बाधा तँ नइ उपस्थित होइ छेलैन मुदा लिखैक धारमे तँ सभकेँ होइते छइ। जँ से नइ होइ छै तखन चद्दैरक खूटमे बान्हि कऽ किए रखऽ पड़ैत-

'कनक छड़ी सी कामिनी, कहे को रस लीन...।'

जँ वेचाराक धारक धारा गतिशील रहितैन तँ वेचारी धोबिनकेँ किए जोड़ए पड़ितैन-

'कटि के कंचन काटि कऽ छातीपर रख दीन...।'

जहिना सभ दिनसँ आ सभकेँ होइ छै तहिना रामकृष्ण बाबूकेँ सेहो होइन...।

ज्ञान एलापर जहिना गुनगुनी लगैए, बुधि एलापर बुदबुदी, तहिना ने लूरि एलापर खुइर सेहो अबैए। जइसँ खोदो-वेद होइए आ वेदो-खोद तँ होइते अछि। जे रामकृष्णो बाबूक मनमे कुरसीक ओंगठान आबि जाइन। ओंगठलहा मनमे कोनो नव विचार ऐबते देह-हाथमे खुर-खुरी आबऽ लगै छेलैन। खुर-खुरी ऐबते हाँइ-हाँइ शर्टक ऊपरका जेबीमे खोंसल पेन आ राखल डायरी निकालि चारि-पाँति

गढ़ि लइ छला। कहियो नीक धुनमे गीत तँ कहियो नीक चालिमे कविता। ई तँ अपनो मने-मन बुझबे करै छला जे गद्य लेखन सक्कत धरतीपर चलब छी, जखन कि पद्य- सल-सल, दल-दल, थल-थल, थल-जल सभतैर चलैए। जे पुरना डायरी सभमे केतेक टुकड़ी-पुरजी गीत-कविताक ओहिना खोंसल छैन्हे।

जहिया जेहेन छुट्टी कौलेजमे होनि तहिया पुस्तकालयसँ तेहेन अधखड्डुआ पढ़ल किताब वा ओतेक किताब लऽ कऽ चलै छला जे गामोमे पढ़ब। पढ़ैक तेहेन लत पकैड़ नेने रहैन जे लिखै दिस हाथे ने बढ़ऽ दैन। हाथो केना बढ़ितैन, दसमीक छुट्टीमे अबै छला तँ भागवत-कथा सभकें सुनबऽ लगैथ आ अमैया छुट्टीमे अबै छला तँ सिनुरिया आमक ललियाएल सिनूर-कलियाएल फल, कृष्णभोगक थुलियाएल-गुलियाएल गोला, सजमनियाक सजमैन आ फैजली आमक गाछसँ फड़ धरिक फझैत सुनैत-सुनैत चालीस दिनक छुट्टी बीत जाइ छेलैन। मुदा गाछ जेहेन माटिपर रोपल अछि तेहने ने आमोक सुआद हेतै से बुझिए ने पबै छला।

रामकृष्ण बाबू आमक सुआदेटा-मे नै ओझराइ छला, ओझरा जाइ छला जे हनुमानजी जखन सीताकें ताकए लंका गेला आ ओइठाम अमराय बगानमे काँच-पाकल, लाल-डम्हाएल सभकें खा-खा सुआदो बुझलैन आ वएह जे आमक गुद्दा खा-खा आँठी फेकलखिन, सएह ने बम्बैसँ बम्बई पलल आ कलकतियासँ कलकत्ता। मुदा सरही भुटभुटिया, खटहा नकुबी आ गोबराहा सापसीन केना आबि गेल? अही ओझरीमे साल-सालक गरमी छुट्टी अमरैयाक बगवैयामे बितैत रहलैन, मुदा एतबो ने बुझि पेला जे मनुखक भोजनक अनिवार्य वस्तुमे फलो अछि। जैठामक बारहो मास तीन साए साइठो दिनक भोज्य वस्तु फल भेल, तैठाम हजारो बीघा आमक गाछीबला गामकें तँ पुछले जाएत किने जे एते खेतक उपजा

जँ अहाँ सभ डेढ़े-दुइए मासमे खा जाइ छी, तहूमे अन्न-तीमन लगा कऽ नइ, केवल चारि साए ग्राम फलेटामे, तखन किलो भरि अन्न आ तीमनमे केते खाएब? तैपर सालक दस-साढ़े-दस मासमे जे फलक खगता हएत से केतएसँ आनब?

भाय! मुदा किछु छिऐ तँ आमक गाछीक जेठक दुपहरियाक मचकीपर मचकैत चैतावर चौमासासँ बढ़ैत छहमासा, बरहमासा होइत मस्तीसँ चलिते अछि। तहूमे रामकृष्ण बाबूक सोझराएल मन तँ छेबे करैन जइमे कवित्व शक्ति छैन्हे। कविता लिखैमे स्पष्ट सोच छैन जे जखन-

'भुजंग प्रयात्, भुजंग प्रयात्

भुजंग प्रयात्, भुजंग प्रयात्।'

छन्दबद्ध कविता भऽ सकैए।

'हरि गरजल हरि सबदल

हरिक सबद सुनि

हरि चलल।'

कविता भऽ सकैए। तखन ईहो किए ने हएत-

'नीन तोड़ू जागू उठू

उठि कऽ ठाढ़ होउ।'

तँए कवितो लिखैमे केतौ उलझन मनमे नइ होइन। मुदा लिखैकाल मनमे झमेल ठाढ़ भऽ जानि जे शेक्सपीयरक शैलीमे गद्य लिखी आकि शेक्सपीयर शैलीमे पद्य? ..खाएर किछु हौउ, मुदा ने चाइनसँ तरबा तकक कविता कहियो कहि आकि लिख पबै छला आ ने कथा। ओना अंग-भंग आ भंग-अंग कविता नइ लिखै छला सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

..ओना रामकृष्ण बाबू साहित्यक विद्यार्थी सभ दिन रहला, जइसँ सभ दिन साहित्यसँ जुड़ाउ रहलैन। मुदा रूपमे थोड़े बदलाव भेलैन। बदलाव ई भेलैन जे जखन हाइ स्कूलक शिक्षक छला तखन परिवारक बोझ तर तेना दबल छला जे लिखै-पढ़ैक वातावरण परिवारमे बनाइए ने पाबि सकला। जइसँ अपन अध्ययन-शक्तिमे सेहो बाधा उपस्थित भेबे केलैन। मुदा साहित्यसँ प्रेम रहने परिवारक संस्कार-संस्कृतिसँ जुड़ल रहला। साज-बाजक संग परिवारो सजले छेलैन। असगरूआ जिनगी रहने हरमुनियाँ रखै छला। आखिर साजो तँ साज छी। किछु एहनो अछि जे असगरो दुनियाँमे रमैए आ दोसराइतोक संग रमैए। हरमुनियाँ आकि खौजरी एहने ने साज छी। जँ से नइ रहैत तँ कबीरदास अपना झोरीमे खौजरीए टा किए रखै छला।

ओना हाइ-स्कूलक जिनगीमे रामकृष्ण बाबू अपनो आ परिवारोक समुचित खाँहिसकें नै पुरा पबै छला। मुदा ऐठामक माटियोक तँ अपन गुण-धर्म अछि। नै पान तँ पानक डन्टियोसँ पूजाक विहीत होइते अछि। एहेन खानापुरी रामकृष्ण बाबूक जिनगीक बीच छेलैन। ओना मनमे सदैत रहैन जे जिनगी खानापुरी नइ, पूरीखाना छी। मुदा..?

शिक्षकक जिनगीक बीच रामकृष्ण बाबू साँझू पहरमे, एक घन्टा नित्य हरमुनियाँपर बैस अपन स्वर-साधना करै छला आ अपन इष्ट आराध्य देवकें दुखनमो सुनबै छला।

कौलेजक नोकरीक दस सालक पछाइत–प्रोफेसर बनलापर–रामकृष्ण बाबूक जिनगीक परिस्थितिमे मोड़ एलैन। अनेको परिवारिक उलझन एक्केबेर समटा गेलैन। एक दिस कौलेजकें सरकारीकरण भेने वेतनमे भरपुर उछाल एलैन तँ दोसर दिस दूटा बेटा बैंकक नोकरी

करए लगलैन। बाल-बच्चाक बिआह-दान, पढ़ाइ-लिखाइसँ रामकृष्ण बाबू निचेन भेला। निचेन होइते जेना पढ़ै-लिखैक जिज्ञासा तेज भऽ गेलैन। एक संग कथा-कविता लिखब शुरू केला। जहिना सभकें एकटा गीत लिखला पछाइत मनमे होइ छै जे एकटा गीतक मलो बना गरदेनमे पहिर ली, तहिना कथाक एकटा संग्रह छपौलैन करीब अस्सी पृष्ठक। जिनगीक पचासम बरख रामकृष्ण बाबू पार कऽ चुकल छला। मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी जे एक उमेरक–समैक–हिसाबसँ चलैए आ दोसर, काजकें आराध्य मानि आराधनाक पाछू जे जिनगी चलै छै ओ। मुदा से नइ, भगवान केकरो बेपाट नै छथिन, ओना एते दूजा-भाव तँ छैन्हे जे केकरो सुखदेव जकाँ पेटेमे हूँहकारी सीखा दइ छथिन तँ केकरो अष्टावक्र जकाँ शुद्ध-अशुद्ध। तँ केकरो ध्रुव जकाँ बच्चेमे एकटंगाक लूरि सीखा दइ छथिन आ तहिना केकरो युवनास्त जकाँ जुआनीमे सीखबै छथिन, तँ केकरो बुढ़िया शबरी ऐठामक बैर खेनाइ।

रामकृष्ण बाबूक पचास बरख परिवारसँ लऽ कऽ अखन धरिक जे समए काटब रहैन से इमनदारीसँ कटलैन। जेकर फलो भेटबे केलैन। तीनू बेटाकें नीक जकाँ पढ़ा-लिखा नीक पदपर पहुँचा, बिआह-दान करैत जिनगीक विश्रामक साँस लेलैन। आब, पहिलुका जे धएल-धरल साहित्यिक बीज गणित छेलैन ओ जेना चैती हवा पेब एकाएक भकरार गाछ जकाँ मनमे ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ भेलैन ई जे साहित्य पढ़ि जँ कनियोँ साहित्य-साधना नै केलौं तँ ओइ पढ़बक कोनो महत नै भेल।

ओना साहित्यक क्षेत्र ओहन क्षेत्र छी जे बिनु ओर-छोरक अछि जेकर पार पाएब कठिन तँ अछिए। जँ से नइ अछि तँ कियो किए अपन राग अलापैत घन्टो-घन्टो स्वर-साधना करै छैथ, तँ कियो पैरक एक आँगुरपर ठाढ़ भऽ नचै छैथ? मुदा से नइ, रामकृष्ण बाबूकें कथा आ कविता लिखै दिस तेज धार जकाँ मन बढ़लैन। ओना जइ उमेरमे

अखन रामकृष्ण बाबू आबि गेल छैथ आ साहित्यक बीज मनमे जागि गेल छैन, जँ तेकर समुचित पालन पोशन हएत तँ ओ कवितासँ महाकाव्य आ कथासँ उपन्यास रूपमे फड़बे-फुलेबे करत। मुदा परिवारिक जे जिनगी अछि ओ गजपटहा धार जकाँ बनि गेल अछि जइसँ बरहबट्टु विचारो आ गतियो-विधि बरहबट्टुए भऽ जाइए। तँए नीक बाटो पकड़ब खेल नहियेँ छी।

जखन अपन संग्रहक सभ कथा सेरिया, छपैले प्रेस दिस बढ़बैक ओरियान केलैन तइ दिन रामकृष्ण बाबूकेँ खुशीसँ अपन बिआहक दिन मन पड़ि गेलैन। केकरो बेटी, केकरो पुतोहु, केकरो पत्नी तँ केकरो जननीक सीमा छी किने? तूँ नीके-ना प्रेससँ आरो फ्रेश भऽ अबिहऽ। जिनगीमे की लेब। यएह ने भेल समाजिक जीव भेने समाजकेँ आत्म-शक्ति देब। पचास हजार महिना कमाइ छी, किए ने अपन आ अपन परिवारक खर्चकेँ जिनगीक योजनानुसार बनाएब-बढ़ाएब। देश गरीब अछि, गरीब ऐ दुआरे जे हजारो बर्खक गुलामीक पछाइत स्वतंत्राक साँस लेलक। जइसँ समाजक संग परिवारोक धुरी तँ ढील भाइए गेल अछि। चारि बापूत तँ उत्पादनकर्ता परिवारमे छी, जँ ओ उत्पादकेँ परिवारक समुचित विकासमे लगा आगू दिस डेग उठाएब तँ ओ बिसवासू हेबे करत।

रामकृष्ण बाबूक उत्साह जेते लिखै घड़ी रहैन तइसँ बेसी उत्साह पोथी छपबैकाल मनमे जगलैन। लोकक बीच जुड़ाएल अपन आत्मचित्य पठा रहल छी, केतेकेँ आत्म जुड़ाएत ई पछाइत बुझब मुदा अनवरत ऐ साहित्य साधनासँ जुड़ि आगूक दिवस गूदस करब।

पोथी छपल। किछु पोथी हित-अपेछितक संग कुटुमो-परिवारमे बिलहलैन। पोथी छपबैकाल मनमे रहैन जे अही पोथीक मूल्यसँ आगूक पोथी छपबैमे सुविधा हएत। मुदा समाजोक तँ अजीव खेल

अछि, एक दिस पढ़ैक वातावरण तैयार भेल जा रहल अछि तँ दोसर दिस पढ़निहार पोथीसँ हटि रहल अछि।

हजार पोथीमे गोटेक साए बिनु मूल्यक बँटलैन, बाँकी ओहिना अलमारीमे रखल रहलैन। लोकक बीच एहेन धारणा ऐछे जे जँ कियो साधक अपन कठिन साधनासँ पोथी प्रकाशित करबै छैथ आ बजारक समुचित बेवस्था आ समुचित मांग नै रहने जँ अपन बजार अपने ताकऽ आगू बढ़ै छैथ तँ ओ अपन नैतिकताक मान बढ़बै छैथ। मुदा वाह रे नँगरकट समाज! किछु अपने नै करत आ केनिहारकेँ सौंसे माथ टेटरे ताकि बाजत जे जँ नीक रचनाकार रहितैथ तँ अपने गामे-गाम घुरि-घुरि भौरगीरी करितैथ। मुदा हुनका यएह ने बुझऽ अबै छैन जे जखन मनुख अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे लऽ पैरक बले चलि बुधिक बाट पकैड़ विवेकक लक्ष्य बना ओतए तक पहुँचैक तीर्थ यात्रा करए, वएह ने मनुख भेल। मुदा समाजक लोको तँ लोके छी किने, कियो अनकर नीककेँ भरि दिन अधला बनबैए तँ कियो अपन अधलाकेँ भरि दिन नीक बनबैए। जँ से नइ अछि तँ किए कियो अपनाकेँ उदार कहैए आ अनका कंजूस कहि गरियबैए?

भाय! गारि-गरौवैलक तँ ई दुनियेँ छी, पढ़बो करू सुनबो करू, सीखबो करू आ सीखेबो करू। जँ से नइ करब तँ बिजलीक इजोत जकाँ लगले इजोत लगले अन्हारमे पड़ि जाएब।

सभ सभकेँ गरियबै पाछू बेहाल अछि, जइसँ दुनियाँक सभ गारि सुननिहारो छी आ पढ़निहारो तँ छिहे। जेना, जे कियो पोथी प्रेमी छैथ ओ अपन सिदहो-समरक पाइ पोथीए पाछू मार्क्स जकाँ गमा दइ छैथ, मुदा खाधुर नीक मानि प्रशंसा करत, एहनो तँ मनुखक सोभाव नहियेँ अछि। ताड़ी-दारू पीनिहार अपन सिदहा-समरक पाइ ताड़ी-दारूमे गमा, रोडपर सँ दुनियाँकेँ गरिऐबते अछि। तँए ओ नीक करैए

एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहिना खेतक प्रेमी लोक, बेटाकेँ कुपोषणक शिकार बना लइ छैथ मुदा कमाएल पाइ नै खर्च कऽ ओही बेटा-ले खेत कीन लइ छैथ। खाएर जे से...।

दुनियाँमे सभ अपनाकेँ उदार मानि दुनियाँकेँ कंजूस कहि गारि तँ पढ़िते अछि, कर्म चाहे जे हुअए। मुदा ई खेल छी मनक माइनक। मनक माइन जे नीक बुझैए आकि अधला बुझैए ओ भेल मनक खेती-वाड़ीक उपजा। उपजा तँ समैक हिसाबसँ खेतमे उपजबे करैए, तखन तँ जे जेहेन खेतिहर ओ ओहेन हवा-पानि देख फसल लगबै छैथ, जइसँ सुभर अन्नो आ आनो-आन भोज्य वस्तु तँ उपजैबते छैथ। ओना आइए नै अदौसँ आमोक गाछ आ ताड़ो-खजूरक गाछ आबि रहल अछि, मुदा छी तँ दुनू गाछे। तँए फल कुफल नै फड़त सेहो केकरो रोकने थोड़े रोकाएत। एकटा गाछमे फलसँ रस निकलै छै तँ दोसरकेँ पँजरेसँ निकलै छइ। मुदा दुनियाँक खेलो तँ खेले छी, केकरो फूलसँ फड़ होइ छै तँ केकरो फूलकेँ फड़सँ कहियो मकै जकाँ भेँटे ने होइ छइ।

जइ दिन रामकृष्ण बाबू प्रेससँ पोथीक थाक लऽ बससँ गाम अबैत रहैथ, तइ दिन गोसा घाटक मेला दुआरे बसमे खूब भीड़ रहइ। गामक बस रहने पोथीक थाक नेने बसमे चढ़ला। चिन्हार बसक कण्डक्टर आगूएमे गेटे सोझे रामकृष्ण बाबूकेँ बैसा देलकैन।

पोथीक थाक दुनू जाँघपर रखि दुनू हाथे पकैड़, भीड़मे हेरा गेला। हेराइते दुनू आँखि बन्न भऽ गेलैन। पर्वतपर टहलैत पार्वतीकेँ देखते जहिना महादेव कल्याण, कल्याण करए लगै छैथ तहिना हिनको मन उधिया गेलैन। उधियाइते बिसैर गेला जे गाड़ीमे ठस्सम-ठस्स लोक अछि, जिनगी भरिक कमाइ आगूमे अछि तँए कनी सचेत रही।

रामकृष्ण बाबूक वौआइत मन शिव-शिव करैत विचड़ए लगलैन। बसो जेना चलैसँ थस्स लऽ लेने। करबैन पहुँचाएत, करबैन नइ। पत्नीकेँ अपन जिनगीक कमाइ हाथमे दऽ देबैन। परिवारक एकटा ओहन अमर फलक गाछ रोपि रहल छी जे पुश्त-पुश्ताइन रचैत-बसैत भोगैत रहत। एक-एक जनकेँ हाथमे अपन कीर्त देब। जँ आइए सभटा बिलहा जाएत तँ काल्हिए फेर ने प्रेसक रस्ता पकड़ब।

जइ दिन रामकृष्ण बाबू पोथीक रूपमे कथा संग्रह छपबौलैन तहू दिन तक ई बात नै बुझि पेला जे किए अपनो परिवारजन मैथिली साहित्यक पोथी नइ पढ़लैन। की मैथिलीएकेँ दोख लगा जिनगीक बाटकेँ तियागि दिऐ। भाषा नीक-अधला भऽ सकैए मुदा भाषासँ सजल जे साहित्य अछि, जे मनुखक आत्म स्वरूप अछि, ओ केना इमहर-ओमहर भऽ सकैए।

ओना जाधैर रामकृष्ण बाबूक पोथी प्रेसमे रहलैन ताधैर अपन सृजन-शीलतामे कमी आबि गेल रहैन। प्रेसोमे पोथी छह मास अँटकलैन जे कौलेजसँ समए निकालि-निकालि प्रेसक काज सम्हारने रहैथ। जइ समए रामकृष्ण बाबूक कथा संग्रह प्रकाशित भेलैन तइ समए जहिना लुबधल फड़ल आमक गाछ आ लुबधल फुलाएल गुलाव-फूलक गाछक शोभा-सुन्दरक रंग-रूपमे चारि चान लगि जाइए, तहिना रामकृष्णो बाबूक मनमे लगल रहैन। जइसँ दिन-राति कथा-कविताक सृजनक पाछू मन वौआए लगलैन। छिटफुट केतेको कथो लिखलैन आ कवितो। मुदा लिखैक पाछू छपाएबो, माने प्रकाशितो कराएब तँ ओहीसँ जुड़ल अछि, तँए जखन पोथी छपाइपर नजैर उठि कऽ जानि तँ अन्हार जकाँ आँखिक सोझमे बुझि पड़ैन। ओना अन्हारो बहुत घनगर नहियेँ रहैन, घनगर अन्हार तँ ओइ रचनाकारक आगू पसरैत जिनका आर्थिक मजबूरी रहै छैन। घनगर अन्हार नइ रहैक कारण रामकृष्ण बाबूकेँ अपनो पचास हजार

महिनाक कमाइ रहैन, तैसंग दुनू बेटाक कमाइ सेहो तइसँ बेसीए रहैन।

ओना जइ मनसूबासँ पोथीक दाम रखने छला, जँ अदहो पोथी–माने पाँचो साए–बीक जइतैन तैयो समस्याक समाधान, माने आगूक छपबैक छपाइक बाधा हल भऽ जइतैन। मुदा से भेलैन नहि। घरेमे पोथी जक-थक पड़ल रहि गेलैन जइसँ रामकृष्ण बाबूक सृजनशीलतामे ह्रास हुअ लगलैन। रचना दिससँ मन टुटए लगलैन, मुदा पढ़ै-लिखैक वातावरणक बीच रहने पढ़ै-लिखैक अनुकूलता तँ रहबे करैन। सृजन दिससँ–माने मौलिक रचना दिससँ–रामकृष्ण बाबूक मन उतैर समीक्षा तथा अनुवाद दिस बढ़ऽ लगलैन।

◌

शब्द संख्या : 2363, तिथि : 12 नवम्बर 2015

छह

गाम-घर आ चेहरा-मोहरासँ धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूकेँ तीस-पैंतीस बर्खसँ चिन्हैत आबि रहल छैन, मुदा सोझहा-सोझही कहियो कोनो गप नै, तैठाम आगूक सम्बन्धक बीच किछु रस्ता तँ हेबा चाही, से बन्न रहने मनक बात दुनूकेँ मनेमे रहलैन। मनक बात मनेमे ई जे धीरेन्द्र सेहो साहित्यक विद्यार्थी, साहित्यसँ रूचि रहने, गाममे केतेक पावैन-तिहारक अवसरपर सेहो आ औहुना समाजक संग समाजिक मञ्चपर समाजक जिनगीक बात कहितो छैथ, सुनितो छैत आ संगे हँसी-ठट्ठा सेहो करिते छैथ, मुदा...।

कृष्णपुरक दछिनवारि टोलमे एक गोरे अगुआ कऽ एकदिना साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन केलैन। अगले-बगलक चारि गामक चारि गोरेकेँ कार्यक्रममे आमंत्रित कऽ एकठाम केलैन। गामक कार्यक्रम, साहित्यसँ रूचि रखैबला धीरेन्द्र सेहो अपन काज बुझि ओइमे जुटला। ओइ चारू पड़ोसी विद्वानमे रामकृष्ण बाबू एक। दोसर, गामेक एक बेकती जे रहैथ तँ अर्थशास्त्र विषयक प्रोफेसर मुदा गामक जिनगीमे रचल-बसल रहने समाजिक काजमे बेस रूचि छेलैन। तेसर बेकती छला, तेसर गामक आई.पी.एस. अफसर- आई.जी साहैब। आ चारीम बेकती रहैथ- संस्कृत साहित्यक आचार्यक संग वैदिक।

धीरेन्द्रकेँ सेहो समए भेटल। मुदा, एक तँ गाममे नव काजक बीजारोपण भऽ रहलए जइ फलक जरूरत समाजकेँ छइ। तँए अपनाकेँ वक्ता नै बुझि धीरेन्द्र प्रमुख[2] श्रोताक रूपमे मञ्चपर उपस्थित भेला।

एके दरी-जाजीमक मञ्च बनल। श्रोतासँ वक्ता धरि एक संग सभ बैसला। ओना निर्धारित विषय नइ रहने सभ अपने-अपने सूरे तैयार रहबे करैथ। तैपर मने-मन ईहो तँ रहबे करैन जे समाजक बीच जेहेन पहचान अछि, तइमे विश्व-मोहिनीक मञ्च परहक नारद जकाँ ने कहीं भऽ जाए। ओना निर्धारित समैसँ पहिने जहिना मञ्चक ओरियान मञ्चकर्ता केने छला तहिना आमंत्रित विद्वतजन सेहो आध-पौन घन्टा पहिनहि पहुँच गेल रहैथ।

खुल्ला मञ्च छल तँए चारू गोरेक परिचए-पात करबैत मञ्चवैया चाह-पानक ओरियानमे गेला। एमहर-चारू गोरे नमस्कार-पाती करैत, अपन-अपन दर्शक बाँटि लेलैन। नवतुरिया धिया-पुता सेहो अनेरे ढेरिया[3] गेल छल। कियो पुलिस विभागक आई.जी.सँ मुहाँ-मुहींक गपक आनन्दमे मस्त, तँ कियो कौलेज-युनिवर्सिटीक विषयक चर्चमे व्यस्त। मुदा आम आदमी ऐ दुआरे व्यस्त जे साहित्यिकी पर्वक नव पवनौट समाजकेँ भेट रहल अछि। वाह रे गामक संस्कार! हमरा गामकेँ फल्लाँ-फल्लाँ आबि धरतीकेँ पवित्र केने छैथ...।

सभसँ आश्चर्यजित लोक तखन भेला जखन एक संग एक दरीपर बैस सभ चाह पीलैन। तहूमे जेना आई.जी. साहैब कमाने सम्हारि नेने रहैथ तहिना चाह देखते कहि देलखिन-

“एक दिससँ शुरू करू।”

[2] प्रमुख श्रोताक माने कान-आँखि आ मनसँ त्रिवेणी धारक घाट जकाँ श्रवण केनिहार।

[3] अनेरो ढेरिआइसँ मतलब जे गंभीर कार्यक्रम अछि, तइ अनुपातमे।

कार्यक्रम शुरू भेल। ओना अपन-अपन सीमामे सभ उपरा-उपरी, मुदा आई.जी. साहैबक सम्बन्धमे विशेष चर्च समाजक बीच पसरले छल जे वैष्णव छैथ, माछ-मासु किछु ने खाइ छैथ। तेतबे नइ, एको पाइ घूसो-घास नइ लइ छथिन। जइक चलते पितासँ गरमिलान रहै छैन। गरमिलानोक तँ कारण ऐछे, जैठाम थानाक मुंशी, एक बाध खेत, दस कट्ठा घराड़ी कीन, तीन महला पीट लइए, तैठाम आई.पी.एस. बेटा भेनहि की भेल। सभ दिन अपने तवाह जे मासक अन्तिम सप्ताहमे साबुन लगाएब छोड़ि देने छी...।

मञ्चक अध्यक्षक नाओंक घोषणा होइते गामक पान-सातटा नव-तूर अपन-अपन कविता नेने एक्केबेर आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल। जा! ई की भेल? मुदा पहिने सभकेँ कविता पाठक समए भेटल।

पहिल कविताक पाठमे जहिना रामकृष्ण बाबू मुड़ी डोलबैथ तहिना, शायरी जकाँ शब्द-शब्दमे आई.जी. साहैब सेहो कहथिन-

“बहुत नीक, बड़ बढ़ियाँ।”

ओना बैसारक पाछू दिस ईहो कन-फुसकी होइत रहए-

“रओ, ई छौड़ा कहिया कवि-काठी भऽ गेल। जेना पेटेसँ सुकदेव जकाँ सीख कऽ आएल हुअए तहिना ढीठगरसँ पढ़ैए!”

ओना, पँजराबला तैपर चोहटबो करइ-

“तूँ ने अपने सुनै छह आ ने दोसरकेँ सुनऽ दइ छहक।”

कविताक पाठ सम्पन्न भेल।

पहिल वक्ता आई.जी. साहैब भेला। गीतासँ बेसी सिनेह छैन, गीतापर जेते छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ पोथी अछि, सभ रखनौं छैथ आ पढ़ितो छैथ। ओ गीतेपर प्रवचन करए लगला। ओना विषयो-वस्तु निर्धारित नइ छल। आई.जी. साहैबकेँ अद्भुत भाषण-शक्ति छैन्हे,

जमीनक रस्ते केना गीता चलि रहल अछि...; अपन एक घन्टाक भाषणमे आई.जी. साहैब रखि देलखिन।

एक सूरे वक्ता आ श्रोता मुँहमे कान सटा तेना मस्त भऽ गेला जे सबहक विचारमे जेना नव स्फुरण जागि गेल।

चाह चलल। हँसी-मजाक सेहो चलल। तइ बिच्चेमे रामकृष्ण बाबू अपन पोथी–कथा संग्रहक–एक-एकटा दस-गोरेक हाथमे थम्हा देलखिन। धीरेन्द्रोक हाथमे एकटा पोथी एलैन। जेतेकाल चाह-पान चलल तेतेकालमे सभ कियो पोथीकेँ उनटा-पुनटा देख भाषा-साहित्य, साहित्यकारक परिचयक संग रामकृष्ण बाबूक चेहरा देख-देख अपन-अपन पोथी अपना आगूमे रखि लेलैन ।

कार्यक्रम फेर शुरू भेल। दोसर वक्ताक रूपमे रामकृष्ण बाबूकेँ समए भेटलैन। विषय निर्धारित नइ रहने सभ अपन-अपन विषय-खण्ड चुननहि रहैथ। तहूमे साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम छी। ने विषयक कमी आ ने भावक। ओना आई.जी. साहैबक प्रवचन सुनि रामकृष्ण बाबू एते अह्लादित भऽ गेला जे गीता दिससँ ससैर रामायण दिस चलि एला। ओना दर्शकक बीच क्रम भंग भेल मुदा ईहो तँ भेबे कएल जे एक विषयमे पच्चीस गोरे पच्चीस रंगक बात कहि अनेरे श्रोताक कानकेँ झराह नै केलैन। मुदा तैयो चारू वक्ताक बीच अपन-अपन वक्तव्यक कान्ही-मिलानी रहबे करैन। रामकृष्ण बाबू रामायणिक सीता-चरित्र शुरू केलैन जे केना ऋषि-मुनीक खूनसँ उत्पैत कन्या पिताक ऐठाम शिव-धनुष सन धनुषकेँ वामा हाथे उठा ठाँउ करै छलि, तिनका केना पति-घरमे राजगद्दीक बदला बोनक बास करए पड़लैन। जेतए मात्र तीनियेँ गोरे–राम, लक्ष्मण, सीता–वौआइत रहलैथ। संगे, रावण केना ठकि कऽ हरि लेलकैन।

एक तँ शिक्षण वृत्तिसँ जुड़ल रामकृष्ण बाबू, दोसर साहित्यसँ

सेहो जुड़ल, तँए रूचिगर ढंगसँ बजला। जइसँ दर्शकक बीच जहिना दही-चीनीक भोजमे सकरौड़ी पातपर अबैत तहिना गीतासँ रामायण धरिक प्रवचन सुनैत-सुनैत समाज मस्त भऽ गेला।

तेसर वक्ता अर्थशास्त्री रहैथ, ओना विषय बुझबैक अद्भुत क्षमता रहने कौलेजोमे नीक शिक्षकक गिनती छैन्हे। हिनको अपन विषय तँए अपन साहित्य-संस्कृति रहबे करैन। मिथिलाक माटि-पानि आ साइबेरियाक उत्तरी ध्रुवसँ सटल दछिनी तकक माटि-पानि, समए-सालक तुलना केलैन। केना साइबेरियाक माटि, जे सालक तीन मास-चारि मास-पाँच मास बरफसँ उघार होइए आ ओइठामक लोक केना ओइ माटिकेँ उपजा अपन उदर-पोषण करै छैथ। जखन कि अपना ऐठाम देखौआ तीन मौसम–जाड़, गरमी, बरसात–आ तेकर सीमा-सरहद मिला छहटा मौसम होइए। ने बरफसँ कहियो भेँट आ ने वर्फीली रोगसँ रोगाएल मौसमक संग मातृभूमिसँ। अपना ऐठाम बेसीसँ बेसी- कहियोकाल हवोक संग आ कहियोकाल बर्खोक संग पाथर खसैए, वएह भेल बरफ।

चारिम वक्ता आचार्यजी भेला जे छठि पावैनपर बजला। पोखैरक घाटपर डुबैत सूर्यक संग उगैत सूर्यक आगू सजल सूप-कोनियाँक अर्घक शास्त्रीय विवेचन पहिने आचार्यजी केलैन। जे किछु गोरे बुझबो केलैन आ किछु गोरे नहियोँ बुझलैन। पछाइत अर्घक संगे जेना अचार्यजी सूपक भुसवाक संग डालीमे गुड़ैक गेला। गुड़ैकते बजला-

“चाउरक चिक्कसमे कुशियारक रस मिला अन्नकेँ मधुर बनबैक लूरि अपना सबहक पूर्वजेक देन छी। जेकरा अपना सभ आइयो ओहिना जीबित रखने छी। खेती-गिरहस्तीसँ उपजल वस्तुकेँ डालीमे सजबै छी। जे एक जुगक सीमा रेखा निर्धारित केने अछि। वरसाती

फसल जेना हरदी, आदी, सुथनी, अड़ुआ, टौकना, कुशियार इत्यादिक समए पुरि गेल, आब ओकरा खेतसँ आनि अपन उपयोग करू। तहिना अँकुरीपर संकेत कएल अछि जे ओकर अँकुरैक समए भऽ गेल तँए ओकरा घरसँ निकालि खेतमे दियौ...।”

आचार्यजीक वक्तव्यसँ दर्शक सभ पावैनक पाबन-पौना पाबि गद्-गद् भऽ गेला। आचार्यजीक वक्तव्यसँ कए गोरेक मुहसँ अनायास निकलल-

“यएह ने खेतसँ अबैत आ खेत दिस जाइत उदय-अस्त छी!”

“एक जिनगीक बेथा-कथा, केना एकटा दाना साल भरि चक्कर लगबैत छठिक घाटपर अँकुरि कऽ परसाद बनि अपन पाबन पौना दऽ रहल अछि!”

सम्पन्नताक संग कार्यक्रमक समापन भेल।

खुशीक वातावरणमे गदगदीक लहैर लहरल। बाहरी जे अतिथि-अभ्यागत छला हुनका सभकेँ विदा करबाक बेर आएल। मुदा जहिना सीता स्वयंवरक पछाइत जखन मिथिलासँ मिथिलांगना विदा भऽ अयोध्या जाइ लेल तैयार भेली आ तखन जहिना एक दिस बरियातीक बीच जानकी, तहिना ने दोसर दिस जानकी-राम सेहो छेलैथे। जहिना अतिथिगण समाजक सिनेहसँ सिनेहिल भेला तहिना दोसर दिस समाज सेहो बाहरी समाजसँ सिनेहिल भऽ भऽ सिहैर रहल छला। जहिना कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिनहि चारू गोरेकेँ एलापर सबहक परिचए बेवस्थापक देने छेलखिन तहिना चारू परिचितिसँ मुँह-मिलानी करैत एक स्वरे बजला-

“एहेन कार्यक्रम साले-साल समाजमे हेबा चाही।”

गौआँ-सँ-अनगौआँ धरि सभ एक स्वरे हूँहकारी भरलैन-

“एके गाममे नइ सभ गाममे होय, जँ दसटा गाममे सालमे एको

बेर भेल तैयो मास-सबा-मासपर भेल, जइसँ मनक ताजगी बनल रहत। जँ से नइ हएत तँ बिना धरिऔल हँसुआ-खुरपी जेना भोथ भऽ बिझा जाइए जइसँ ओ काजे-जोकर ने रहैए।”

ओना चारू वक्ताक अपन-अपन जिनगी, कियो हजारो कोसपर नोकरियो करैत आ बान्हल छुट्टीक बीच रहबो करैत, तँ कियो काजेक बोझ तर दबाएल। कियो परिवारक ओझरीमे तेना ओझराएल जे कोट-कचहरीसँ नोकरी सम्हारैत-सम्हारैत परेशान। अन्तो-अन्त यएह विचार भेल जे सालमे एकबेर हम सभ ऐ गाममे कार्यक्रम करब।

अन्तिम नमस्कार भेला पछाइत रामकृष्ण बाबूक पोथीक चर्च उठि गेल। अपन साहित्य प्रेमक चर्च करैत रामकृष्ण बाबू अपन मातृभाषामे कथा-कविता लिखैक संकल्पित विचार व्यक्त केलैन-

“अपन ई सदैत इच्छा रहैए जे किलास छोड़ि अंगरेजी नइ बाजी, अपन परिवार-समाजक संग विद्यार्थियोसँ अपने भाषामे गप-सप्प करी, से करितो छी।”

चारू गोरे अपन-अपन रस्ते विदा भेला। रामकृष्ण बाबूक संग लगि धीरेन्द्र आगू बढ़ल। ओना दू-अढ़ाइ किलो मीटरपर रामकृष्ण बाबूक गाम, गामक बीचमे घर। पएरे आएलो छला। दस डेग आगू बढ़लापर धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूकेँ बधाइ दैत कहलकैन-

“श्रीमान्, अपनेकेँ तँ चेहरोसँ आ शिक्षण-काजोकेँ बहुत दिनसँ चिन्है छेलौं मुदा सोझहा-सोझही चिन्हारए आइए भेल। अपनेकेँ पोथी लिखैक बधाइ..!”

ओना हजारो चेहरामे रामकृष्ण बाबू हेराएल रहै छैथ, मुदा धीरेन्द्रपर नजैर नइ पड़ल हेतैन, सेहो बात नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा ‘बधाइ’ सुनि धीरेन्द्रक परिचए पुछैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“अहाँक की नाओं छी, की करै छी?”

"नाओं धीरेन्द्र छी, साहित्येक विद्यार्थी हमहूँ छी। किछ-किछ लिखबो करै छी।"

तैपर रामकृष्ण बाबू कहलखिन- "हमहूँ तँ पड़ोसिया छी। ओना नोकरिहारा छी। मुदा रविकेँ गामेपर रहै छी। अपन लिखलो देखौ देब आ अबैत-जाइत रहब। देखियौ! एकरे कहै छै संयोग। एक पड़ोसी छी, एतेटा जिनगी बीत गेल आ परिचए-पात आइ भेल।"

दुनू गामक बीचमे, माने अदहा रस्तामे जखन गप-सप्प करैत दुनू गोरे पहुँचला तँ अखियास भेलैन जे अदहा-अदहीपर आबि गेलौं। मुस्कियाइत रामकृष्ण बाबू बजला-

"बेसी दूर अरियातल अभ्यागतक भेँट बेसी दिनपर होइ छइ। आब अहूँ जाउ, हमहूँ जाइ छी।"

◌

शब्द संख्या : 1539, तिथि : 17 नवम्बर 2015

सात

नोकरीक अन्तिम समए, माने जखन तीन बरख सेवा निवृत्त होइमे बँचल रहैन, रामकृष्ण बाबू प्रोफेसर इण्चार्य रूपमे प्रिंसिपल भेला। ओना किछु दिन पूर्व डी.लिट् करैक विचार मनमे सेहो उठल रहैन, मुदा से नइ कऽ पेला। पी-एच.डी. तँ केनहि छला। तहूमे नीक विषयपर, तँए मनमे उर्जवान बल तँ आबिए गेल छेलैन। पचपन बर्खक अवस्थामे रीडर भेने दरमहोमे बढ़ोत्तरी भेलैन आ कौलेजमे एक-मात्र रीडर भेने पद-प्रतिष्ठामे सेहो बढ़ोत्तरी भेबे केलैन।

पहिल पोथी–कथा संग्रह–सँ दोसर पोथीमे, माने कथा-सँ-कविताक बीच भावक संग भाषोमे किछु-ने-किछु तफड़का रहबे करैन मुदा जिनगीक प्रथम पुष्प रहने जेहने अपना मनमे तेहने कौलेजक संगियोँ-साथी आ परिवारोजनक बीच खुशीक लहैर उठबे कएल रहैन। मुदा जे कविता संग्रहमे छपल छेलैन ओ टटका नै, दस बरख पूर्वक रहैन। पचास बर्खक पछाइत जहिया पी-एच.डी. करैले रामकृष्ण बाबू रजिष्ट्रेशन करौलेन तहियासँ अपन सृजनक कलम ठमैक गेलैन। ओना कथो आ कवितो संग्रह, दुनू पोथी- अपन मौलिके रचना छिऐन मुदा एकाएक सृजनशीलतामे ठहराव तँ आबिए गेलैन। तेकर कारण ईहो भेल जे पी-एच.डी.क तैयारीमे समए खिंचा गेलैन। मनो दोसर दिस बहैट गेलैन। तैसंग कौलेजक जिम्मा तँ रहबे करैन।

रामकृष्ण बाबू इण्चार्यक रूपमे प्रिंसिपल बनला पछाइत पुस्तकालयक भार दोसरकेँ सुमझा देलखिन मुदा तैयो ऑफिसक काजे तेते बढ़ि गेलैन जे मनक थकान बेसिया लगलैन, जइसँ अपन सृजनक कलम साफे बन्न भऽ गेलैन।

होइतो अहिना छै जे जँ कोनो शारीरिक काज हुअए आकि मानसिक, औसतसँ बेसी भेने या तँ थकान जल्दी आएत वा काजक समए पुरौला पछाइत देरी तक थकान रहत। सएह भेलैन रामकृष्णो बाबूकेँ। ऑफिसक ओझरौठ सभमे तेना मन थाकि जानि जे घरपर किताब-कागज-कलम दिस नजरिए ने जाइन।

माघक आठ बजे भिनसर। काल्हि रामकृष्ण बाबू सेवा निवृत्त भेला। काल्हि तकक जे आठ बजैत भोर छल ओ स्नानक समए रहैन, साढ़े आठ बजैत-बजैत खा-पी कौलेजक रस्ता पकैड़ लइ छला। मुदा आइ तँ कोनो काजे ने छैन...।

सौनक करियाएल मेघ जहिना उमड़ए-घुमड़ए लगैए, तहिना रामकृष्ण बाबूक मनमे उमड़न-घुमड़न उठलैन। उठिते पत्नीकेँ कहलखिन-

"मन कनी खसल बुझि पड़ैए, पीलहा चाहक कोनो असर नै भेल। एकबेर हार्ड लीकरबला चाह पीयाउ।"

ओना सुभद्रोक मन खसले रहैन। खसैक कारण पतिक सेवा निवृत्त छेलैन। काजूलक संगी आब नइ रहलौं। पतिक जिनगी टुटने की पत्नीक जिनगी नइ टुटैए। टुटिते अछि। काल्हि धरि जे कमौआ छला ओ आइ थोड़े रहला। काल्हि धरि जे काज करैत आबि रहल छला, जँ ओ काज करैक शक्ति छैन्हो तैयो आब काजक थोड़े रहला!

आगिपर चढ़ल गर्म वर्तनक पानि जकाँ सुभद्राक मनमे रंग-रंगक बुलबुला जगैत रहैन। मुदा बजती की आ कहथिन केकरा..?

पतिक वेदनाक संग अपन संवेदना व्यक्त करैत सुभद्रा बजली-

"हमरो मन उखड़ल जकाँ बुझि पड़ैए। कॉफीए बना लइ छी।"

'कॉफी' सुनि रामकृष्ण बाबूक मनमे कुवाथ भेलैन। कुवाथ ई भेलैन जे भरिसक ताना तँ ने मारि रहली अछि। मुदा लगले मन मनाही करैत विचार देलकैन जे भाइयो सकैए। ओहो कियो आन तँ नहियेँ छैथ, आ ने दूरमे छैथ जे हमर बेथा हुनका प्रभावित नै करतैन। बजला-

"जे नीक बुझि पड़ैए सएह बनाउ। मुदा ई नजैर राखब, जे बनाएब ओ कनी कड़गड़ बनाएब।"

सामंजस करैत सुभद्रा बजली-

"चिन्नी कनी कम कऽ देने चाहो आ कॉफियोक अपन रमकी रहै छइ।"

सतरंजक गोटी जकाँ सह पाबि रामकृष्ण बाबू बजला-

"जाबे रमकी नइ पीब ताबे मन थोड़े रमकत।"

गैस चुल्हिक बेवस्था, तँए कॉफी बनबैमे पाँचो मिनट ने लगलैन। लगले सुभद्रा दुनू गिलासमे कॉफी नेने रामकृष्ण बाबूकेँ हाथमे धरबैत अपनो आगूमे बैस पिबए लगली।

सुभद्रा कॉफियो पीबैथ आ आँखि उठा-उठा पतियोपर दैथ। आँखि उठा कऽ दइक कारण पतिक बदलैत जिनगीक धारक दुनू कातक महार देखब रहैन।

ओना रामकृष्ण बाबूक मनमे सेहो उठैत रहैन जे नारी-जगतक पहिल इच्छा तँ यएह ने रहैत अछि जे कर्मगर पतिक हाथमे हाथ रखि जीवन-यात्रा करी। से तँ काल्हि धरि छल। अपन बाहुँवलसँ अपनो आ परिवारोक जिनगीकेँ गूदस करैत एलौं। आइ काज छीना गेल।

छिनाएल केना, ओइ-जोकर आब नइ रहलौं। जहिना सभकेँ होइ छै तहिना ने हमरो भेल...। मुदा तैयो, रामकृष्ण बाबूक मनमे ठनका जकाँ खसिते रहैन। खसैन ई जे अपना तँ ओते पेंशन मासे-मासे भेटैत रहत जइसँ दू गोरेकेँ खाइ-पीबैमे तिरोट नै हएत। मुदा अपन मन की कहत? यएह ने कहत जे बिनु श्रमिक पेब श्रमिक जिनगीक मान-मरजादा रखै छिऐ! जँ से नइ तखन श्रमक माने-सम्मान की रहल। आ जखन श्रमक मरजदे मरि जाएत तखन कियो उन्नतिक शिखरक शिखा जँ माथमे टाँङियेँ लेत तइसँ की हेतै?

लगले रामकृष्ण बाबूक मन आगू ससरैत पत्नीपर गड़लैन। अपने तँ परश्रमावलंवी बनि भरपाइ कऽ लेब मुदा पत्नीकेँ तँ परिवारिक क्रियामे बढ़ोत्तरीए हेतैन। काल्हि तक आठ बजे भोरसँ आठ बजे साँझ तक बोनाएल रहै छेलौं, भरि दिन जे किछु अपन देहीक जरूरत पड़ै छल अपन सेवा अपने करै छेलौं। मुदा आब तँ हमहूँ ने भार स्वरूप चारि बेर चाह बनबैले कहबे करबैन। तहूमे तेहेन शरीर बनि गेल छैन जे अपने उठबो-बैसबमे असोकर्ज होइते छैन...।

नंग-चंग होइत मने रामकृष्ण बाबू बजला-

"अखन गप-सप्प करैक मन नइ होइए।"

कहि हाथक खाली गिलास हाथमे पकड़ा देलखिन। गिलास पकड़बैक कारण रहैन जे झब-दे लगसँ चलि जाएब। मुदा से भेलैन नइ। पतिकेँ कछमछ करैत देख सुभद्राक मन सेहो कछमछा गेलैन। कछमछा ई गेलैन जे बुढ़ देह भेलैन। जँ ऐठामसँ उठि कऽ चलि जाएब आ कहीं कछमछीए सँ प्राण छुटि जानि; तखन जँ समाजक कियो पुछत जे की भेलैन, केना भेलैन? तखन ई कहब केहेन हएत जे 'हम किछु बुझबे ने केलौं?' जँ कोनो बेथा मनमे छैन तँ ओ जाबे मनसँ निकालता नै ताबे ओकर दरद केना कमतैन। कनैत-कनैत तँ लोक

कमाइबला जुआन बेटाक मृत्युक दरद मेटा लइए आ हिनका कोन एहेन विपैतक पहाड़ टुटि कऽ देहपर खसि पड़लैन, जे दरद नै कमतैन...। दुनू परानीक मन अपन-अपन दुनियाँमे कॉफीक रमकी पकैड़ रमकैत रहैन। मुदा लगले रामकृष्ण बाबूक मनमे एकटा युक्ति फुरलैन। युक्ति ई फुरलैन जे जँ कनीकाल मन मारि कऽ चुप भऽ जाएब तखन अपने उठि कऽ केनो काजे चलि जेती। सएह केलैन।

कुरसीपर बैसल रामकृष्ण बाबूक देहमे शिथिलता अबऽ लगलैन, जेना देहक शक्ति निकलऽ लगलैन। जँ कुरसीपर बैसल रहब तँ मुहेँ-भरे निच्चाँमे खसि पड़ब। चेतन मन चेतबैत कुरसीपर सँ उठा पलंगपर लऽ गेलैन। सिरमापर नीक जकाँ मुड़ी सोझो ने भेल रहैन कि मन फुरफुरा कऽ उड़लैन। उड़लैन ई जे काल्हि धरि दुनियाँक बीच काजमे रमल रहने अपन देहक संग परिवारो आ समाजोक सभ किछु बिसैर गेल छेलौं। मुदा आइ तँ ओ दुनियाँ नइ रहल। की दुनियाँ हमरा-ले अनर्थ भऽ गेल?

रामकृष्ण बाबूक मनमे 'अनर्थ' ऐबते एक संग केतेको विचार मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। उठि कऽ ठाढ़ ई भेलैन जे जखन दुनियेँ अनर्थ भऽ गेल तखन हमरे अर्थ की रहल। दुनियेँ रहने ने अपनो छी...।

मुदा लगले मन फरिच भेलैन। दुनियाँ अनर्थ नइ भेल, दुनियाँ तँ जहिना सभ दिन अर्थ-भरल रहल तहिना अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत! लगले मन अपन दुनियाँक बीच एलैन। ऐबते मनमे उठलैन जे अनका-ले दुनियाँ भलेँ अर्थपूर्ण किए ने अछि आ रहह मुदा अपना-ले तँ अनर्थ भाइए गेल। जँ से नइ भेल तँ की जइ दिन कौलेजक प्रोफेसर बनलौं तइ दिन जे योग्यता छल, तइमे तँ आइ बढ़ोत्तरीए भेल, मुदा आब हमरा-ले कोन कौलेजक जगह खाली अछि

जैठाम जा बास करब... ?

रामकृष्ण बाबूक मन फेर ठमकलैन। ठमैकते मनमे उठलैन जखन अपन दुनियेँ अनर्थ भऽ गेल तखन तँ दुनियाँ अन्हार भाइए जाएत किने। मन कलपऽ लगलैन। कलपऽ लगलैन जे जखन सगतैर अन्हारे पसैर जाएत तखन रहब केतए!!

जिनगीक बोनमे रामकृष्ण बाबू औना गेला। औनाइक कारण भेलैन जे जहिना परती-परात भूमिमे बोन-झाड़क बीच साइयो-हजारो चलैक बाट तँ रहैए, लोक चलितो अछि, मुदा ओकर निसचित दशा-दिशा नइ रहने बोने-बोन, झाड़े-झाड़ चलैत रहैए-चलैत रहैए मुदा कोनो ठौर-ठेकान नै रहने औनाए लगैए, तहिना रामकृष्ण बाबूक मन वौआ तँ अबैन मुदा निसचित बाट नइ भेटने औनाए लगैन, दम फूलऽ लगैन। मुदा किछु क्षणक पछाइत जखन मन असथिर भेलैन, साँसक गति सम भेलैन तखन अपन जिनगीक दू महारक बीच बहैत धारपर नजैर पड़लैन।

काल्हि धरि की जिनगी छल। निसचित काजमे जिनगीक सभ क्षण निर्धारित रहै छल। समैपर खेनाइ खाइ छेलौं, काज करै छेलौं, अराम करै छेलौं। अपन जिनगीक संग जे सेवाक भार कान्हपर छल से करैत दुनियोँक सेवा करै छेलौं। अहिना ने संयासियो सबहक जिनगी छैन, जे सदिकाल दुनियाँकेँ दुतकारितो दुनियाँक सेवामे सभ किछु त्यागि दिन-राति प्रकृतस्थ भेल रहै छैथ...।

रामकृष्ण बाबूक भक् जेना खुजलैन। दरमाहापर सेवा करैक भार छीना गेल, जे आब भरिया बनैक सामर्थसँ बाहर भऽ गेल, मुदा तँए कि अपनामे ओ शक्ति नै अछि जे भार विहीन भऽ जाएब। अपना भरे चलब आ अनका भरे चलब, यएह ने हारि-जीत छी। ..मन पड़लैन अपन सृजन शक्ति। सृजन शक्ति ऐबते मन तरैस गेलैन।

जेना किछु नव चीज भेट गेल होनि तहिना मनमे खुशी जगलैन। पत्नीकेँ सोर पारलखिन-

"केतए छी?"

चारि कोठरीक घर-आँगन, सुभद्रा जेबे केतए करती। बड़ जेती तँ सुतै-घरसँ भनसा-घर।

पतिक अवाज सुनि बजली- "एतै छी। अबै छी।"

बजैत सुभद्रा आबि आगूमे ठाढ़ भेलखिन। रामकृष्ण बाबू सेहो पलंगेपर पल्था मारि बैस, कैरम-बोडक उल्टा गोटी जकाँ कहियौ आकि महाभारतक अर्जुनक नैन-भेदी वाण जकाँ, बजला-

"एना जे छिलमिलाइत चिड़ै जकाँ देख संगीक संग छोड़ि चलि जाएब, तखन भेल जिनगीक संगबे?"

रामकृष्ण बाबूक बात सुभद्रा नीक जकाँ नइ बुझली मुदा चिड़ै तँ बुझि गेल छेली। चिड़ैयेक पाँखि पकैड़ बजली-

"पुरुखक कोन ठेकान। वेचारी मादा चिड़ैकेँ अण्डा सेबए पड़ै छइ। अहाँकेँ की अछि भने नोकरियो चलिये गेल, आब पलंगपर बैसल-बैसल हुकुम फरमाबैत रहू।"

सुभद्राक बात जेना रामकृष्ण बाबूक करेजकेँ छेद देलकैन। तिलमिला गेला। मुदा चुप्पो हएब नीक नहि बुझि तीनू बेटा-पुतोहुक चर्च उठबैक विचार मनमे रखि बजला-

"अपने तँ आब कोनो काज नइ रहल..?"

रामकृष्ण बाबूक मनक बात मनेमे घुरियाइत रहैन आकि बिच्चेमे सुभद्रा टोकि देलकैन-

"एना किए मन तोड़ि कऽ बजै छी। दुनियाँकेँ लोक कर्मभूमियो कहैए, आ अहाँ..?"

ओना रामकृष्ण बाबूक मनमे घुरियाइत ई रहैन जे जहिना अपने काजसँ निचेन भऽ गेलौं तहिना जँ ओहो[4] काजसँ निचेन भऽ जाथि, तखन ने दुनू गोरेक जिनगी समतूल हएत। से तँ ऐठाम सम्भव नइ अछि। अपने तँ कोनो काज नइ रहल मुदा हुनको नइ रहलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। एक तँ जहिना सभ दिन घर-आँगनक काज करैत आबि रहल छैथ तहिना छैन्हे आ तैसंग ईहो तँ भाइए गेलैन जे एते दिन भरि दिनक असगरूआ जिनगी छेलैन, जइसँ खगतो कम छेलैन आ आब हमरा रहने तँ परिवार जकाँ परिवारिक खगतो बढ़तैन जइसँ काजो बढ़बे करतैन...।

रामकृष्ण बाबूक मन नचलैन। नाचिते दुनू सिरो आ पुछरियो एकठाम भऽ गेलैन। जहिना घुरीपर नचैत चक्रवत-चक्का चारू दिस एके अवस्थामे नाचि जाइए तहिना मनक चक्का नाचए लगलैन। कखनो होनि जे जीवन संगिनी पत्नी छैथ, तँए काजोक समरूपता हेबा चाही, मुदा लगले होनि जे जहिना आदिम कालमे मनुख मनुखक हाथ पकैड़ अपन गुलाम बना, मारि-पीटि ओकरासँ सेवा करबै छल तहिना ने पत्नियोँ भेली! किछु कहबैन आ से जँ नै करती, तँ कि कोनो एहेन मरतरिया हमहींटा हएब जे मारि-पीट कऽ हुनकासँ काज लेब आ अपने मलिकाना झाड़ब..!

रामकृष्ण बाबू गुम्म भऽ गेला। मुदा परिस्थितिवस कहियौ आकि देखा-देखी, फुरलैन- हँ ई कोनो अनुचित थोड़े भेल। समाजमे कि कोनो हमहींटा एहेन हएब आकि एहेन समाजक रेवाजे बनल अछि। रेवाजेसँ ने रीति आ रीतेसँ ने नीति बनैए। समाजोक तँ एहेन नीति ऐछे...।

मुदा फेर रामकृष्ण बाबूक मन अपन साठि बर्खक देहसँ भारी

[4] पत्नी (सुभद्रा)

पत्नीक पसेनापर पड़लैन। जैठाम भरि-भरि दिन आगिक चुल्हि लगक जिनगी जीनिहारि संगी छैथ तैठामक यएह भेल संगपना! कियो आगिमे झड़कै आ कियो फूह खेलए..?

ओना रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ ऐ दुआरे सोर पाड़ने छेलखिन जे गामसँ हटि जखन कोनो बेटा ऐठाम रहब, तखने दुनू बेकतीक जिनगी समरूपमे चलत मुदा फूहर मन रहने आने-आने विचार तेना मनमे उठए लगलैन जे नियरलाहा बात मनेमे टराइत रहलैन। बजला-

“एकटा बात बुझल अछि?”

तेहेन पोजमे रामकृष्ण बाबू बजला जे सुभद्रा चौंक गेली। अकचकाइत बजली-

“की इ इ इ.., नाइ इ इ...।”

ओना बजैकाल तँ सुभद्रा बाजि गेली, मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे एतेटा दुनियाँमे एते चीज अछि, एते लोक अछि, तइमे एहेन कोन एकटा बात अछि जे एतेकालसँ गप-सप्प केलौं आ ओ रहि गेल पछुआएले?

सुभद्रा अपन मनक विचारमे वौआइते छेली कि बिच्चेमे रामकृष्ण बाबू चहैक उठला-

“कनी चाह पीआउ।”

‘चाह पीआउ’ सुनि सुभद्रा मने-मन हँसली। खुनलौं पहाड़, भेटल मुसरी! मुदा मन तँ बिहुसल छेलैन्हे, बजली-

“माँड़े ते माउग जीविते अछि, अही बहन्ने ने अपनो पीब।”

ओना पत्नीक बात रामकृष्ण बाबूकेँ नीक नइ लगलैन नीक नइ लगैक कारण भेलैन जे जइ तरहक विचार मनमे उपजए लगलैन, तइ अनुकूल पत्नीक कर्म-कुशल नइ बुझि अपनेमे मनन-चिन्तन करब

नीक बुझलैन। तँए लगसँ पत्नीकेँ हटबए चाहलैन।

सुभद्रा चाह बनबए गेली।

सुभद्राकेँ लगसँ हटिते वर्तनक लहरैत पानि जहिना रसे-रसे असथिर होइत जाइए तहिना रामकृष्ण बाबूक मन असथिर हुअ लगलैन। मुदा तैयो मन सिहकैते रहैन। सिहकैत मनमे एलैन- हम केतए छी?

‘हम केतए छी’ मनमे उठिते जेना अचेत मनमे होइए तहिना सभ किछु हेरा गेलैन। मुदा कोनो एहेन फल वा फूलक गाछ, जे जड़िए-सँ फड़ए–फुलाए लगैए तैठाम जहिना लगौनिहारक तृष्णा तृषित होइत तिरपित हुअ लगैए तहिना रामकृष्ण बाबूक मनमे जगए लगलैन। ..एक संग अनेको प्रश्न उठि-उठि ठाढ़ हुअ लगलैन। कोनो प्रश्न एहेन बुझि पड़ैन जे पेनी नीक छानल अछि, जइसँ मन हरैस कऽ हरखित भऽ जाइन। मुदा लगलै आगू टुटल छाती वा फुटल माथ देख मन तरैस कऽ तलैप जाइन! मुदा सिहरैत मनकेँ असथिर करैत जिनगीक धारकेँ पकड़ैक परियास केलैन। तैबीच पत्नी चाह नेने आबि गेलखिन।

होइतो अहिना छै जे जँ अहाँ अपन जिनगीक कोनो गिरह खोलैत होइ आ बीचमे जँ कियो नव आगन्तुक आबि जाथि तैठाम अपन विचार रोकि, हुनका तँ कुशल-छेम पुछब अनिवार्य भाइए जाइए तहिना रामकृष्णो बाबूकेँ भेलैन। चाहक गिलाससँ निकलैत भाफ देख बजला-

“अहाँ तँ ने बेसी भफाएल छी, चाहक रंग नीक लगैए।”

तैबीच सुभद्रा दू घोंट चाह पीब चुकल छेली। गरम चाहक भाफ सुभद्राक मुहोँसँ निकैलते रहैन। भफाएले-मुहेँ उत्तर देलखिन-

“जेते भफाएल पुरुख-पातर होइ छैथ, तेते जँ मौगी-मेहैर रहत तँ

दुनियाँ आछन भऽ जाएत।”

रामकृष्ण बाबू सेहो अदहा गिलास चाह पीब नेने छला। चाहक भाफो जिरा गेल छल मुदा मनमे पत्नीक बात घुरियाइते छेलैन। एहेन भारी बात किए पत्नी बजली जे दुनियोँ आछन भऽ जाएत? जँ दुनू बेकता-बेकतीक बात रहैत तँ काज देख टोक-टाक करितैथ, मुदा ऐठाम तँ दुनियेँक बात बाजि गेली..!

बीटियबैत रामकृष्ण बाबू पुछलखिन-

“नै बुझलौं, की दुनियेँ आछन भऽ जाएत?”

बिहुसैत सुभद्रा कहलकैन-

“सभटा गप अखने कऽ लेब आकि काल्हियो-ले राखब। एकरा काल्हिले रहए दियौ।”

चीतवनमे मन असथिर करैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“अपना नीक बुझि पड़ि रहल अछि जे जखन सेवा-निवृत्त भाइए गेलौं तखन किए ने बेटे-ऐठाम चलि दुनू परानी रही।”

‘बेटा-पुतोहु ऐठाम जा रही’ सुनिते सुभद्राक मनमे भन-भनी शुरू भेलैन। एक संग केतेको प्रश्न मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। विरहाइत मनमे नाचए लगलैन, अपन-हाथ जुइत आ विचारक परिवार। तहूमे एकटा बेटा नइ, तीन-तीनटा अछि। तीनू तीनठाम अपन-अपन रहैए। अपनो तीनू भैयारीमे तीन रंगक जिनगी छइ। तीनू नोकरिया परिवार छी, बेटा सभ भरि दिन काजक पाछू विरहाएल रहैत हएत आ घर-परिवारक सभ जुति-भाँति पुतोहुक हएत...।

पुतोहुपर नजैर पड़िते सुभद्राक मन आरो भिनैक गेलैन। भिनैकते पतिपर दाँत पीसैत विचारए लगली। कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेलैन जे ओहन मनुखकेँ कपारपर उठा अनलैन। ई तँ

गुण अछि जे दुनू गोरे दूठाम छी, नइ ते साँझ-भोर झोंटा-झोंटौवैल होइतए। जेहने गामक रहत तेहने ने माइयो-बाप आ सरो-समाज रहतै। जेहने सर-समाज रहतै तेहने ने लोको हेतइ।

मुदा लगले सुभद्राक मन शान्त भेलैन। शान्त होइते बजली-

"अपनेटा नीक बुझि पड़ैए आकि बेटो सभ नीक कहत, समाजो नीक कहत?"

सुभद्राक बात रामकृष्ण बाबूक चानिक चान तोड़ि देलकैन। झनाक-दे मनमे उठलैन, तीनू बेटाक परिवारक जिनगीक संग अपन जिनगी। तीनू बेटाक परिवारो आ दरमहो तीन रंगक अछि। जेना पैरक ओंगरीक घावमे ठेंसने ठेंसेक अनुकूल दरदो बढ़ै छै तहिना एक साहित्य-प्रेमी सेवा निवृत्त प्रोफेसर- रामकृष्ण बाबूक बीच उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। ठाढ़ होइते नजैर तीनू बेटाकेँ बच्चासँ सियान धरिक जिनगीपर गेलैन। अपन सेवामे केतौ कोताही कहाँ भेल। कोताही मनमे ऐबते पत्नीपर नजैर गेलैन। नजैर ई गेलैन जे जनमसँ करम धरि सभटा तँ वएह ने केलखिन। तखन अपने मने अपना मनकेँ मना लेब, से नीक नै...।

समगम होइत रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ पुछलखिन-

"पहिने अहाँ कहू जे तीनू बेटाक पालनमे कोनो दूजा भाव केने छी?"

सुभद्राकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजली- "नहि।"

रामकृष्ण बाबूकेँ बुझि पड़लैन जे उड़ैत कौआ जकाँ सोझे टाँहि दऽ देली। काग भाषा नै बजली। तँए बिना घमरथने नइ फरियाएत।

बजला-

"एकटा बात पुछौं?"

जहिना जिज्ञासु जकाँ रामकृष्ण बाबू बाजल छला तहिना जिज्ञासा करैत सुभद्रा बजली-

"एकटा नइ एक हजार पुछू।"

मुँह-कान सम्हारैत रामकृष्ण बाबू पुछलखिन-

"कोनो चीजक छाँहक अकार केहेन होइए?"

ओना रामकृष्ण बाबूक प्रश्न ओझराएले रहलैन। जे पछाइत अपनो बुझलैन।

पत्नी टाँहि दऽ उत्तर देलकैन-

"चीजक रंग चाहे जेहेन हौउ मुदा छाँह तँ कारीए हएत किने।"

पति-पत्नीक बीचमे अहिना बात-विचारक झिक्कम-झिक्का होइते छै, तँए रामकृष्ण बाबूक मनमे मिसियो भरि कुवाथ ऐ बातक नइ भेलैन जे हमर बात पत्नी काटि देली, नै मानली।

थोड़ेक पाछू घुसकैत बजला- "अहूँ बुझैमे लाले-बुझक्कर छी। हम पुछलौं 'अकार' आ अहाँ बुझि गेलौं 'रंग'। ठीके ने लोक कहै छै केदैन बुझलैन दू ढेकरी पियौज।"

'लाल-बुझक्कर' सुनि सुभद्राकेँ मिसियो भरि कम्पन्न नै भेलैन। जँ कम्पन्न होइतैन तँ लाल बुझक्कर आ कारी बुझक्करक बात उठितैन, मुदा से सभ किछु ने। ऐगला बात जे 'दू ढेकरी पियौज'क छल से मनमे जनु गड़ि गलैन। बजली-

"की दू ढेकरी पियौज कहलिऐ?"

अपन बात सम्हारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"कोनो चीजक अकारक माने भेल, ओकर मूर्त रूप, जे ओकर अपन लछन-करन छिऐ। आ रंग तँ ऊपरसँ चढ़ैए।"

पतिक बातकेँ मने-मन मानि सुभद्रा बजली-

"कीदैन कहए लागल छेलिऐ से बिसैर गेलौं?"

"नै, बिसरबै किए। सएह ने कहै छी।"

पत्नी-

"कहू।"

"जहिना कोनो चीजक अकारक छाँह अकार नेने रहैए तहिना परिवारमे बेटा-बेटीक सेवा ओही अकारमे माए-बापक प्रति रहैए। ओना हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछि। दुनियाँमे जेते मनुख अछि, तेते रंगक जिनगियो छइ। जइमे लोक मौज-मस्तीसँ जीबतो अछि।"

पतिक बात सुनि सुभद्राक मन पानिसँ भरल घैल जकाँ बुझि पड़लैन। अकछाइत बजली-

"अनेरे कोन दुनियाँक भौरी-बट्टामे लागल छी। अपन नून-रोटीक बात सोचू।"

पत्नीक विचार सुनि रामकृष्ण बाबूक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे एते दिन अपन देह दुनियाँक धुनकीमे धुनै छेलौं जइसँ दुनियाँमे जीबैक हकदारो छेलिऐ मुदा आब तँ से नइ रहल। तीनू बेटा तीनठाम नोकरी करैए, तीनूकेँ तीन रंगक दरमेहेटा नै, परिवारो छइ। विचारमे ऐबते रामकृष्ण बाबू वौआ गेला। आँखि उठा देखैथ तँ दुनियाँक बोनमे सौंसे बाटे-बाट देखाइन। मुदा जहिना बाट नइ रहने लोक हेरा जाइए तहिना बाटक बोनमे सेहो तँ हेराइते अछि...।

पतिकेँ चुप देख सुभद्रा टोकलखिन-

"एना जे नून-रोटी बेर चुप्पी लाधि देब, तखन तँ...।"

पत्नीक तगेदा सुनि रामकृष्ण बाबूक मन विचलित नइ भेलैन। नइ होइक कारण मनमे रहैन, दुनू परानीक जिनगी तँ दू जनक प्राणक बीचक आड़िपर ने ठाढ़ अछि, तैठाम एक-दोसरकेँ विचारवान बनौने

बिना काजो तँ नहियेँ चलि सकैए...।

विचारकेँ बहटारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"हम अही दुआरे बेटा ऐठाम रहैक विचार करै छी।"

बेटाक नाओं सुनिते सुभद्राक मन नचलैन। नचलैन ई जे बेटाकेँ पालने छी, पालनक भार लेब मुदा ओहो तीनू तँ तीनठाम अछि!

झँपले-तोपल सुभद्रा बजली-

"तीनू तीनठाम जे अछि?"

पत्नीक बात जेना रामकृष्ण बाबूक छातीकेँ बेध देलकैन। बेध ई देलकैन जे तीनूकेँ अपना जनैत ने कहियो खाइ-पीबैमे कोताही केलिऐ आ ने पढ़ै-लिखैमे। एके रंग तीनू भाँइ डिग्रियो पौने अछि। मुदा तीनूक जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर भऽ गेल अछि! एना किए भेल?

पत्नीकेँ कहलखिन-

"माथा काजे ने करैए। कनी एकबेर दू-घोंट चाह पिआउ।"

रामकृष्ण बाबू तीनू बेटाक जिनगीपर जखन सेरिया कऽ नजैर देलैन तँ बुझि पड़लैन जे जेठ बेटाकेँ उन्नतिक कारण नीक बैंकक नीक दरमाहाक संग नीक सुविधो अछि आ तैपर सँ बालो-बच्चाक तेहेन भारी बोझ नइ छइ। मुदा मझिलाकेँ तँ दुनू दुरगैत भऽ रहल छै, परिवारो नमहर छै आ नव बैंक रहने दरमहो कम छइ। आ तेसरक तँ दिने-दुनियाँ दोसर छै, सरकारी नोकरी छै, सरकारी खजाना हाथमे छै, सदिकाल हवाइये जहाजसँ स्वर्ग-नर्क टहलैत रहैए। तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँचलैन।

भफाइत चाह देखियो कऽ रामकृष्ण बाबू गुमे-गुम चाह पिबए लगला। विचार बिन्दुमे अँटकल रामकृष्ण बाबूक मन। तीनू बेटाक जिनगीमे सामंजस तँ आनल जा सकैए। किए तीनू भाँइ अपने-अपने

बाल-बच्चा मात्रक परिवार बुझि मनमे रोपि लेलक।

बिच्चेमे पत्नी पुछि देलकैन-

“आब कहू केहेन मन लगैए?”

हारल-मारल-थाकल बटोही जकाँ रामकृष्ण बाबू बजला-

“अपनो हूसलौं। जँ परिवारक स्तरक हिसाबसँ तीनू भाँइकेँ सामंजस कएल जाइत तँ जे अखन बनि गेल अछि से नइ रहैत!”

सुभद्रा-

“तखन आब..?”

रामकृष्ण बाबू-

“तखन यएह जे जँ बेटा बाप-माए बुझि परिवारसँ सम्बन्ध रखए सेहो बड़बढ़ियाँ आ जँ नइ राखए सेहो बड़बढ़ियाँ। समाज तँ भीखो मांगि कऽ खेबाक अधिकार लोककेँ देनहि अछि। अन्तमे बुझल जेतइ। मुदा गाम छोड़ि बाहर नइ जाएब।”

◌

शब्द संख्या : 3232, तिथि : 23 नवम्बर 2015

आठ

दरबज्जाक चौकीपर बैसल रामकृष्ण बाबू अपन ऐगला जिनगीकेँ ठेकाइन रहला अछि जे आब केना चलब? मुदा कखनो अनठेकान दिस बहि जाइ छैथ तँ कखनो ठेकान दिस। स्पष्ट आ सोझ-साझ रस्ता देखिये ने पाबि रहल छैथ...। मुदा लगले मनक खिड़कीसँ अपन संकल्पित विचार हुलकी देलकैन, हुलकी ई देलकैन जे तीनटा बेटा अछि मुदा तीनू तीनठाम ऐछो आ तीनूक जिनगियो–दरमाहा, आमदनीक–हिसाबे तीन रंगक छइ। तैठाम केकरो ऐठाम गेने विसाइन भाइए जाएब। विसाइन ई जे भाए-भाए वा बहिन-बहिन वा भाए-बहिनक बीच जे अनुवांशिक सिनेहक रज-कण अछि ओ दोसर-तेसरसँ किछु-ने-किछु भिन्नता रखिते अछि। भलेँ अपन सहोदर बहिनकेँ देवी-दुर्गा वा भगवतीक रूपमे दर्शन पबैए तैठाम दोसराइत बहिनक संग रूप परिवर्तित हुअ लगै छै, अनेको रंगक रूप बनि-बनि ठाढ़ हुअ लगै छइ। खाएर जे से...। रामकृष्ण बाबूक विचार आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते परिवार सभपर–माने अपनो बेटा आ आनोक बेटा–पर नजैर पड़लैन। विचित्र ढंगसँ परिवार-सजल अछि। दू परिवारक दू जनक संयोग विवाहक रूपमे होइ छइ। मुदा दुनूक[5] परिवारिक रूप की अछि? किएक तँ परिवारो ने एकटा रूप बना

[5] लड़का-लड़कीक

चलैए। दू परिवारसँ आएल दू जन मिलि एक नव परिवारक सृजन करैए। जइसँ दू लूरि, दू बूधि आ दू विचारोक संग भऽ सकैए आ एको-एक लूरि, बूधि आ विचारक संयोग भऽ सकैए। माने ई जे जँ एक भाषा-क्षेत्र, एक लूरि अर्थात् एक काज आ एक विचार–माने जिनगीक दिशाक विचार–क्षेत्रक संयोग सेहो होइए...।

मुदा रामकृष्ण बाबूक मन लगले आगू बढ़ि अपन तीनू बेटा-पुतोहुपर पड़लैन। तीनू सहोदर भाइयो आ दियादिनियो भेली। मुदा तीनूक जिनगीमे एते अन्तर किए भऽ गेल जे भैयारीक बीच एतबो मिलान-भाव नइ अछि जे एक परिवारक छी? एक माए-बापक संतान छी? एके रंग तीनू भाँइकेँ सेवा करैत एक स्तर तक पढ़ैलौं-लिखैलौं! आखिर, तीनू भाँइ ऐ बातकेँ किए ने बुझि पेलक? एक तँ समाजिक जिनगी टुटि-टुटि कऽ विकृत रूप बनौने जा रहल अछि..! तैठाम तीनू बेटाकेँ अनेरे पढ़ेबे किए केलौं। हम सक्षम बेल बुझि विचार करैक बाट देलिऐ। अपना-ले कियो अपने ने सोचत-विचारत। भैयारीक सम्बन्ध भाइए ने निमाहत आ माए-बापक धियान रखि चलत। भलेँ सोचै-विचारैक अनेको दिशो आ रस्तो अछि।

पत्नीकेँ सोर पाड़ि रामकृष्ण बाबू कहलखिन-

“अहूँकेँ चाहो-पान धरिक सिनेह हमरासँ नइ..?”

सुभद्रा वर्तन-बासन धोइ छेली। आँखियो कारिखेपर आ हाथो कारिखेपर तँए मनो करिखाइये गेल रहैन।

उत्तर दैत बजली-

“बहत्तैर हाथक अँतरी होइ छैन पुरुखकेँ आ सिनेहीन हेती मौगी।”

ओना पतिक इशारा सुभद्रा बुझि गेल छेली। सभ काज छोड़ि केतली अखारि चाह बना कपमे नेने रामकृष्ण बाबू लग पहुँचली।

हाथक भफाइत चाहसँ जखने रामकृष्ण बाबूक नजैर उठि सुभद्राक चेहरापर पड़लैन कि गाछक शील जकाँ परिवारक शीलपर नजैर पहुँच गेलैन। शीलपर पहुँचते ऐगला परिवारक[6] शीलपर गेलैन। ओ तँ डारि जकाँ होइए..!

जहिना भकमोड़पर भक् लगितो अछि आ छुटितो तँ ऐछे तहिना रामकृष्ण बाबूक भक् खुजलैन। भक् खुजिते पत्नीकेँ कहलखिन-

“जहियासँ दुनू गोरे संग भेलौं तहियासँ केतेको रौदी-दाही भेल, मुदा जहिना दुनू परानी प्राण-सँ-प्राण सटा संगे जीबैत एलौं तहिना आगूओ ने जीबैक बिसवास बना चलब।”

एक तँ भिनसुरका उखड़ाहा तैपर दुनू बेकती संग-संग चाहो पीलैन। चाह-पान केला पछाइत तँ ओहिना सबहक मन जीरा जाइते छै, तहिना सुभद्राकेँ भेलैन। मुदा मनक भीतर खौंझ उठि गेल रहैन जे पुतोहु रहैत अपने हाथ झड़काबऽ पड़ैए। आ दोसर दिस ईहो होइन-‘साँएक राज अपन राज, बेटा-पुतोहुक राज मुँह-तक्की।’ जैठाम अपना मने सभ दिन खेलौं-पीलौं तैठाम आनक मने खाइ-पीबैले भेटत से मन मानत..?

द्वन्दमे सुभद्राक मन घुरिया गेलैन। रस्ता परहक धूरा जेना रस्तेकेँ अन्हरा देलकैन तहिना आगू-पाछूक विचार दिस नजरिए ने जाइत रहैन।

ओना रामकृष्ण बाबू अपनो दू जिनगीक मझधारमे लटैक गेल रहैथ। होइतो अहिना छइ। जहिना धरती-अकासक बीच जे क्षितिज अछि ओ दुनू दिससँ घीचम-तीर करैत सीमा बनौने अछि, तहिना दू धारक बीचक धारामे सेहो लोक लसैकते अछि। ओना तहूठाम तीन

[6] बेटा सबहक परिवार

स्थिति होइ छइ। कोनो पहाड़ी धार रहने सालो भरि गतिशील रहैए तँ कोनो बरसाती धार रहने तीन-मसुआ, छह-मसुआ बनि सुखि जाइए। मुदा से नइ, वर्फीली धारक बहाउ सभ दिशामे जँ समान होइ, तखन जे दू धाराक बीचक शक्ति रहत ओ एक नव शक्तिक सृजन करैत आरो बेसी गतिशील होइत बहैत रहैए। मुदा ओहो वर्फीलीक बहाउ जे मध्यम गतिये हएत, तैठामक धाराक जे गति रहत ओइमे कतर-व्योंत हेबे करत किने। माने तेज बहाउक धारा ओकरा रोकबे करत किने। तैठाम जँ ओइसँ क्षीण वर्फीलीए धार किए ने हौउ आकि तीन-मसुआ, छह-मसुआ बरसातीए धार, ओ तँ सहजे अपन घर-अँगना छोड़ि मरि जाइए।

विचारक धारमे बहैत रामकृष्ण बाबूक मन सेहो डोलि-डोलि जिनगीक धारमे बहऽ लगलैन। जइसँ मन थीरे ने होनि जे आब कोन घाटपर पहुँचब जे ओइ पार जाएब। मुदा मनमे लगले उठि गेलैन जे अखन धरि परिवारे आकि अपनो जिनगी गढ़ैमे तँ पत्नीए संग रहली, तँए किए ने आगूओक जिनगीक विचार हुनकोसँ पुछि लिऐन। अनेरे केतौ जे हेरा-भेथिया जाइ। तखन तँ अपनो जान थालमे फँसल हाथी जकाँ भऽ जाएत, तैपर सँ जे जँ नढ़िया जकाँ माथपर चढ़ि कपार खोधि-खोधि खाए लगती तखन तँ अनेरे ढोंढ़क फेरमे पड़ि जाएब। तइसँ नीक 'संग मिलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।'

'संग मिलि करी काज' विचारमे ऐबते रामकृष्ण बाबूक मन थोड़ेक हरियेलैन। माने, मनक रंग बदललैन। हरियाएले पत्नीकेँ कहलखिन-

"अहूँ देखै छी आ अपनो बुझै छी जे महाविद्यालय अकाजू बना जिनगीकेँ अदहेपर सँ तोड़ि पेंशनक जिनगी बना देलक। नीक-नीकुत पौष्टिक खेनाइ खाएब तखने किछ दिन औरो देखब, तइमे बेसी खरचो

हएत। मुदा से जाबी तँ मुँहमे लगिए गेल। तैपर सँ बुढ़ भेने देहो ने ठेहियाएत, जइसँ रंग-रंगक रोगो-वियाधि पकड़त। तहूमे तेहेन जुग आबि गेल जे 'संगेमे वैद मियाँ मरता है।' बला कहबी भऽ गेल अछि। रोगक जेते इलाज अगुआएल तेते महगो भऽ गेल। अहाँ तँ सभ दिन घर चलेलौं मुदा अपने तँ कहियो घर-परिवार बुझि नइ पेलौं, तँए अहींक हाथमे अपन जिनगीक डोरि थम्हा रहल छी...।"

तीर्थयात्रा, धर्मयात्रा आकि कर्मयात्रासँ घुमल थाकल-ठेहियाएल यात्रीकेँ जहिना परिवारक सिनेह भेटै छै, वएह सिनेहिन विचार सुभद्राक मनमे जगि गेलैन। जगि गेलैन अपन माथक लाल सिनुर। जाधैर पति जीबै छैथ ताबैए धरि ने सती-पति कहबै छी मुदा जखने पति छीना जेता तखने ने समाजो विधवा मानि अपन यात्राकेँ अशुभ बुझए लगत। तखन केना? तखन तँ काटल गाछ तरक जिनगी बनिये जाएत। ऐ काटल गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ केना चलब? सुभद्रा असोथकित भऽ गेली। थोड़े कालक पछाइत कूह फेरैत बजली-

"अपन मन की कहैए?"

'अपन मन' सुनि रामकृष्ण बाबूक मन अमैर कऽ उमैर गेलैन। पहाड़सँ उतैर उमरैत धारक हिलकोर जकाँ मन घुमए लगलैन। जहिना धारक बीच धारा केतौ-केतौ गोल-गोल घुमि क्षीण गतिक वेगकेँ चारू कात छिड़ियबैत चलैए तहिना रामकृष्ण बाबूक मनक छिड़ियाएल क्षीण धार, जे आगूक गतिसँ फेकाइत फीका हुअ लगलैन। गरमान्त मने रामकृष्ण बाबू बजला-

"अखन धरिक जे जिनगी रहल ओ एकबट कहियौ आकि एकचलिया, तेकर अभ्यस्त भऽ गेल छी। मुदा जिनगी तँ बहु-चलिया छी, तखने नव सिरासँ कोनो बाटक घाट बना पाएब। से तँ आब कठिन अछिए। एहेन..?"

पतिक बात सुनि सुभद्रा सहजे-सहजे सहमए लगली। सहमए ई लगली जे हिनके कमाइपर तँ अपनो ठाढ़ छी, जइ भरे ठाढ़ छी सएह खुट्टा जँ हिल-डोल करए लगत तखन अपनो तँ ओहिना हिल-डोलमे हिलैत-डोलैत रहब..!

मुदा सुभद्राक मन लगले बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे किछु छैथ तैयो तँ ओ पुरुखे छैथ, तहूमे ओहन पुरुख जे पति सेहो छैथ। जाबे कोनो गाछमे पतिया नइ औत ताबे बतियाक आशा व्यर्थ! कमाइ टुटि गेलैन, माने दरमाहा पेंशन बनि अधिया गेलैन, मुदा अखनो जेते भेटतैन तइसँ बहुत कम-कम कमेनिहारकेँ हमरोसँ नमहर परिवारक गाड़ी घीचए पड़ै छैन, तैठाम जँ अपनाकेँ निरवल-दुरवल बुझै छी, तँ ई मनक बेकार विकार भेल। अनेरे जे मनमे अबैए जे ई बीमारी, उ बीमारी हएत, तइमे बेसी खरचा हएत। तेकर कोन गारंटी छै जे हेबे करत...।

ओह! ई अनेरे मन तोड़ब भेल। बुढ़ाड़ीमे नीक-निकुत (पोष्टिक) भोजन, ओ तँ भोज्य वस्तुमे पएल जाइ छै, तइले बेसी महग वस्तु कीनबक कोन जरूरी अछि। ई तँ पाइबलाक फैशन छी। महग आकि सस्ता, ओ तँ बनिया-बेकालक किरदानी छी, जे समाजमे काल बनि ठाढ़ अछि। जइ वस्तुक कमी रहल ओकर दाम बढ़ा देत आ जे बेसी रहत ओकर दाम घटा देत। जइसँ लेनिहारक जेबी पकड़ाएत। मुदा तइसँ वस्तुक पौष्टिक गुणकेँ कोन मतलब छइ। तहूमे हम सभ तँ ओइ इलाकामे रहै छी जइ इलाकामे अनरनेबाकेँ कौआ नइ पुछैए। आमे केते खाएत, तहूमे खेरा कौआ उपैटे गेल जे फलखौका छल, आब तँ कार-कौआक बास बनि गेल अछि, ओ तँ सहजे फलक संग ओकर गाछक दिवारकेँ सेहो तेना कऽ नोचि-नोचि खाइए जे ओइ गाछे कें सिर खुनि सुखा दइए।

सोच-विचारमे पड़ल सुभद्राक मनमे जहिना सूर्यक इजोत बढ़ैत अन्हारमे प्रवेश करैत शाम कहबए लगैए तहिना पति-पत्नीक बीचक संध्यावेला जकाँ भेलैन। भेलैन ई जे अपनोमे एते सामर्थ्य तँ ऐछे जे जहिना घरक काज माने भानस-भातसँ लऽ कऽ सभ काज सभ दिनसँ करैत एलौं, अखनो करै छी आ आगूओ करब, सएह ने। तइले पतिक बेथाएल मनकेँ आरो बेथित किए करबैन। बजली-

"अहाँ पुरुखक खेल खेलै छी।"

पत्नीक बात सुनि रामकृष्ण बाबूक मनमे काँटक बोझ भीष्म पितामह जकाँ नहि रामक पुष्पवाणक तुणीर जकाँ खसलैन। रामकृष्ण बाबू खाली शिक्षक पदसँ सेवा निवृत्त शिक्षकेटा नै, एक साहित्य सृजक प्रेमी सेहो छैथ। जे समाजक आत्माक निर्माता सेहो होइ छैथ। जखन समाजक आत्म-निर्माता स्वयं व्यक्ति-निर्माता नइ बनि सकल तँ ओ सृजनकर्ता केना भेल। व्यक्तिक समूह समाज आ समाजक आत्माकेँ प्राण-प्रतिष्ठित करैबला सृजनकर्ता...।

रामकृष्ण बाबूक मनमे एकाएक जेना साइयो-हजारो पुष्प-वाण आगूमे छिड़िया गेलैन। नजैर पड़लैन पत्नीक ओइ शब्दपर जे पुरुखक खेल कहने छेली। पुरुखक खेल यएह ने भेल जे पुरुख खेलए। मुदा पत्नीक मुँहक बात छी। आनक रहैत तँ आनो नजैरसँ देखल-मानल जा सकैत मुदा..।

फेर होनि जे बजन्ता तँ केतौ अपन छाहाँ ने देखए देलैन। अहाँ पुरुखक खेल, अहाँक माने पुरुखक समूह सेहो भेल, तैठाम नारीक नारी केतौ कहाँ देखै छी..?

मन घुमलैन, पुरुखक खेल! दुनियाँ तँ पुरुख-नारीक झुलैत खेल छी किने। मुदा ई तँ कुम्हारक चाक जकाँ एक्केटा खुट्टीमे ठाढ़ अछि..!

तरे-तर रामकृष्ण बाबूक मन तुरैछ कऽ मुरैछ गेलैन। विचारक

बोन अन्हरा गेलैन। जइसँ बोलती बन्न रहैन। मुदा पत्नी तँ ऐगला उत्तर पबैले आँखि उठा बेर-बेर देखबे करैन। तगेदा होइत देखैथ।

कनीए कालक पछाइत रामकृष्ण बाबूक ठमकल मन ठनकलैन। ठनैकते उठलैन, पुरुखक खेल। पुरुख तँ लिंगक हिसाबे बँटाएल अछि, मनुखक हिसाबे तँ नइ बँटाएल अछि। पुरुखपना तँ से नइ छी। ओ तँ मरदो आ मौगियोमे अछि। केतौ कोनो पुरुखमे बेसी अछि तँ केतौ मौगीमे। जइ पुरुखमे कम रहै छै ओ मौगपना रस्ता पकैड़ चलैए आ जइ मौगीमे बेसी रहै छै ओ मरदोसँ बेसी मरदगानी गबैए...।

रामकृष्ण बाबू जेते थाह लिअ चाहैथ तेते अगममे चलि जाइ छला। अपने बेथे बेथित भेल जा रहल छला आकि बिच्चेमे सुभद्रा टोकलकैन-

“किए मन खसल अछि?”

अपनाकेँ सम्हारैत रामकृष्ण बाबू कहलखिन-

“मन खसल कहाँ अछि, विचारमे कनी झुकाउ आबि गेल अछि।”

एक्केबेर ऐगला-पैछला जिनगीकेँ सानैत-बाटैत सुभद्रा बजली-

“अनेरे सोग-पीड़ा मनमे रखने छी। जेते दिन अनकर तील खेलिऐ तेते दिन बोहि देलिऐ। हूबा करू होशमे आउ। बिनु किछु केने अदहा दरमाहा देत। अपन दिन-राति तँ अजाद भऽ जाएत। कनियोँ-कनियोँ लुर-खुड़ाएब तैयो बहुत हएत।”

“हँ! जेकर खेलिऐ तेकरा-ले केलिऐ।”

जहिना साल भरिक पछाइत गाड़ीक ड्राइवर अपन ऐगला जिनगी-ले ड्राइवरी लाइसेंसक नवीकरण करबैए आ करेला पछाइत

जहिना मनमे खुशी होइ छै तहिना सुभद्रोकेँ भेलैन। मुख-मण्डल चमैक उठलैन। मुदा रामकृष्ण बाबूक चेहराक रोहानी जेना उतरए लगलैन। बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा पछाइत सुमारक भेलैन। सुमारक ई भेलैन जे जेकर खेलिऐ तेकरा-ले केलिऐ। मुदा आब तँ से नइ हएत। आब तँ अपना भरे चलए पड़त। जाबे कार्यरत छेलौं, काजमे लागल रहै छेलौं, समैक गतिक पहियाक संग घुमैत रहै छेलौं मुदा आब तँ से नइ हएत। एक घरक खसान हएत आ दोसर घरक उठान। तइमे टटघरसँ ईंटाक होइमे जड़ि-मूल घरकेँ तोड़ए पड़ै छइ। मुदा किछु पुरान घरक आत्मा तँ नवका घर बसिते अछि। आन वस्तु रहौ कि नइ मुदा घराड़ी तँ रहिते अछि...।

रामकृष्ण बाबूक भक् जेना खुजलैन। खुजलैन ई जे अखन धरिक जिनगी पठन-पाठनक रहल, तँए मनमे यहए ने लिलसा रहत जे मरैकाल तक अहिना काज लगल रहए...।

मुदा लगले भकमोड़पर आबि रामकृष्ण बाबूकेँ फेर भक् लगि गेलैन। लगि ई गेलैन जे सभ दिन पठन-पाठन करैत एलौं, से आब केना हएत! पठनक जोगार तँ कैयो लेब, मुदा पाठन केना करब? अखन धरि मन मारि विद्यालयक पठन-पाठनमे लगल रहलौं जे से ने रेडियो स्टेशनसँ जान-पहचान भेल आ ने गामेक समाजक कोनो साहित्यिक संस्थासँ। तखन पाठन केतए करब? कौलेजक विद्यार्थियो तँ छीनाइए गेल!

भकमोड़पर सँ रामकृष्ण बाबूक मन फेर घुमि कऽ पहिलुके रस्ता धेने पाछूए-मुहेँ आगू बढ़लैन। पाठनेटा किए, पठनो तँ बदलबे करत। एते दिन विद्यार्थी-ले बेसी पठन करै छेलौं अपना-ले कम, मुदा आब तँ से नइ हएत। काजो घटल। विद्यार्थीक समए विद्यार्थी बनि अपन अध्ययन करब। अपन अध्ययन मनमे उठिते पुस्तकालय मन

पड़लैन। हाइ रे बा, किताबो छीना गेल! गाममे पुस्तकालय कहाँ अछि! केतएसँ किताब आनब? जखन किताबे नइ तखन पढ़ब की?

अपन किताब दिस नजैर गेलैन। पठन-पाठनक जिनगी रहितो अपन पुस्तकालय कहाँ अछि? मन आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते पाछूसँ धकियबैत दोसर मन कहलकैन। अपनो तँ सृजन शक्ति अछिए। जिनगी भरि तँ पढ़बे-पढ़ेबे केलौं आ घरसँ बाहर धरिक दुनियोँ देखते आबि रहल छी आ देखतो छी। तखन किए किताबक अभाव खटकत...। मन मानि गेलैन जे अपन ऐगला शेष जिनगी पठन-पाठनमे बिताएब। मन थीर होइत-होइत सृजनशीलतापर आबि अँटकलैन। अँटैकते उठलैन, पोथी छपाएब केना? जँ लिखबे (साहित्य सृजन) करब आ ओ छपि नहि पएत तखन तँ ओ घरमे सड़िए जाएत। तइसँ लाभ की भेटत। लिखब असान अछि, आइसँ नियमित जिनगी बना लिखै-पढ़ैक निसचित समए बनेला पछाइत ओ अनेरे जिनगीक नियमित क्रियासँ जुड़ि जाइए। आगूक कोनो स्पष्ट (सोझ) रस्ता नजैरमे एबे ने करैन। कोनो टेँढ़-टुढ़ तँ कोनो झँपाएल-तोपाएल तँ कोनो आगूएसँ कटल-खोंटल...।

आइक समैमे पोथी छपाएब असान भऽ गेल, तेकर दुनू कारण भेल तकनीकी विकास सेहो भेल आ आर्थिक विकास सेहो भेल। मुदा से भेल अछि पैछला पाँच बर्खक बीच। तइसँ पहिने पोथी छपाएब भारी भीड़ छल। जेकर चलैत साइए नहि हजारोमे मिथिलांचलक धरोहर हेरा गेल अछि...।

रामकृष्ण बाबू मने-मन विचारए लगला- अपन दरमाहा टुटि गेल, बेटा सभ कहियो ई नइ पुछलक जे बाबू कोन किताब लेब। धिया-पुता जकाँ बिस्कुटक डिब्बा हाथमे धड़बैत रहल।

बिस्कुटक संग धिया-पुतापर नजैर पहुँचते रामकृष्ण बाबूकेँ मन

पड़लैन जेठ बेटाक कहल बात-

“बाबू, हम तँ अंगरेजी माध्यमसँ पढ़ने छी, मुदा गीता पढ़ैक मन सदिछन होइए। संस्कृतमे लिखल छै, ओ मैथिलीमे रचि दियौ, जे सभकेँ पढ़ैमे असानो हएत आ सभ पढ़बो करत।”

मनमे ऐबते रामकृष्ण बाबू सोचलैन। अखन ओ बैंकक मैनेजर भऽ गेल छैथ, अपन बेटो-बेटीक भार उतरिए गेल छैन, जँ ओ आर्थिक मदत करता तँ पोथी छपाएब बड़ भारी समस्या नहियेँ अछि...।

मुदा लगले रामकृष्ण बाबूक मनमे भेलैन जे आइसँ दस बरख पहिने गीताक चर्च बेटा केने छला। गीताक मांग केने छला। मुदा ओ हमरा बुते पुरौल हएत। ओहिना पाँती पढ़ि भाषा बदैल देबै, मुदा से अपन मन मानत?

गीताक नृत्य-कृत्य मनमे उठिते रामकृष्ण बाबू आत्म-भोरसँ विभोर हुअ लगला। खापैड़क धानक संग खापैड़क तीसी जकाँ मन चनचना लगलैन। कृष्णक गोपीक संगक रासलीला हारल-मारल ब्रजवालाक संग रचब-बसब। मुदा अपन जिनगी की रहल? अपना कलममे तँ केकरो ओतबे ने दम रहै छै जेते ओ दमगर रहल। सभ दिन घरसँ बाहर तक गुरुआइ केलौं, सेवकाय कहियो केलौं नै, तखन बेटाक मनोरथ हमरा बुते केना पुड़ाएल हएत..?

रामकृष्ण बाबूक मन ठमैक गेलैन। किछु समए धरि ठमकला पछाइत फेर मनमे भेलैन जे किए ने बेटोक परीक्षा लाइए ली। किए ने हमहीं मन पाड़ैत कहिऐन जे ‘बौआ, आब कौलेजसँ निचेन भेलौं, जँ अहाँ पोथी-छपबैक भार उठा ली तँ दू-तीनटा संग्रह-जोकर लिखलो राखल अछि आ अहूँ जे गीताक चर्च केने रही, तहूमे हाथ लगा देब। अपने तँ किछु-ने-किछु कहबे करता, तइसँ अपन ऐगला काजक रूप-

रेखा बना लेब...।

ऐगला काजक रूप-रेखा रामकृष्ण बाबूक मनमे ऐबते फेर गीते घुमि एलैन। गीतासँ केकरो डेरेबा नइ चाही। ओ जिनगी दइए। जिनगीकेँ जन्म-जन्मान्तर धरिक रस्ता देखबैए।

रामकृष्ण बाबूक मन अह्लादित भऽ गेलैन। अह्लादित होइते मन उनैट बेटाक पढ़ाइ दिस बढ़लैन। बेटा अंगरेजी-माध्यमसँ पढ़लक। मुदा गीता तँ संस्कृतमे लिखल गेल अछि। दुनूक दू भाषा छी। दुनूक लिपि, शब्द-विन्यास, उच्चारण सभ किछु अपन-अपन छइ। तँए किछु भारी तँ अछिए। मुदा मैथिली तँ अपन घरैया भाषा छी, जे बिनु सीखनौं-पढ़नौं लोक सीख लइए। तँए जँ मैथिलीमे गीताक अनुवाद करैक मांग बेटा केलक तँ ओ उचित केलक...।

...मुदा काजो तँ काज छी, गीता सन महत-माइन विषयपर रस्ते-पेरे शब्दक तुकवन्दी गढ़लासँ थोड़े हएत। ओ हिसाब जोड़ैले तँ कैलकुलेटर मशीन संगमे राखए पड़त। नइ तँ ई थोड़े बुझि पाएब जे लत्तियो-फत्ती आकि झाड़ो-झुड़मे अमृत-फल फड़ैए। तैठाम सोझे वृक्षक फल कहि देने नइ ने हएत।

रामकृष्ण बाबूक वौआएल मन थाकल बटोही जकाँ थकथका गेलैन। थकथका ई गेलैन जे अनेरे मनक संग अपनो वौआइ छी। अनेरे पानि महक माछकेँ नअ-नअ कुटिया बँटै छी। जहिया जे हेतै से बुझल जेतइ। पहिने राम-राम करैत राम-धामक काजमे हाथ लगा दिऐ। थकथकाएल मनमे ईहो उठलैन जे सतेकेँ ने सत्-सत् कृष्ण गीतामे गीत गौने छथिन- 'करम करैत चलू, फलक आशमे बैसू नइ।' ठीके ने कहने छथिन। आब ईहो वएह कहितथिन जे आम रोपब तँ आम भेटत आ बगुर रोपब तँ काँट। एते कहैले हुनका छुट्टी छेलैन। हँसेरा-हँसेरीक बीचमे ने ठाढ़ रहैथ...।

रामकृष्ण बाबूक मन फेर कनी पाछूए-मुहेँ घुसैक गेलैन। जहिना महाभारतक मैदानमे वीरक तीरसँ वीरक रथ कनी पाछू घुसैक जाइए। मनमे खुशी उपकलैन। बिहुसैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"ऐगला जिनगीक बोही-खतियानक नक्शा मनमे बनि गेल...।"

आगूक बात रामकृष्ण बाबूक पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे सुभद्रा टोकि देलकैन-

"की बोही-खतियान?"

"सएह ने कहै छी, सुनू...।"

'सुनू' कहि रामकृष्ण बाबू सुभद्राक आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

"जहिना अहाँ गृहिणी बनि गृहपत्नी सभ दिन रहलौं तहिना आगूओक भार भेल।"

'भार' सुनि सुभद्रा बजली-

"आ अपन भार की भेल?"

बिहुसैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"कुशी अमावस्या दिनक उखारल कुशक भार। राम-धान केना अपन जिनगीमे जुटि जाइत अछि।"

◌

शब्द संख्या : 2780, तिथि : 01 दिसम्बर 2015

नअ- 'क'

धीरेन्द्रक गाम कृष्णपुर आ रामकृष्ण बाबूक गाम रामपुर, एकबधू गाम। एकबधूक माने दुनू गामक बीच कोनो आन गाम नै, खाली जोतसीम जमीनक बाध अछि। पच्छिमसँ रामपुर आ पूबसँ कृष्णपुर गाम अछि। ओना दुनू गामक बीच पड़ोसी-पनक सम्बन्ध-सूत्र तँ ऐछे संगे आनो-आन जेते सूत्र पहिनेसँ छल सम्बन्धक तइमे कृष्णपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रमक जोगदान सेहो अपन महत रखैए। ओना, दुनू गामक बीचक बाधेमे दुनू गामक घसवाहिनी आ गाए-महींस चरौनिहारसँ लऽ कऽ खेतमे काज करैबला, हर जोतैबला, धान-गहुम कटैबलाक बीच सेहो चिन्हा-परिचए अपना-अपना ढंगे रहल अछि, तँए बेकतीगत रूपमे सेहो सम्बन्ध केतेको बर्खसँ अछिए। दुनू उपरारि गाम, धार-धूरसँ भेँट नहि, तँए गामक चासो-बास पुरान अछिए।

सांस्कृतिक कार्यक्रमक पछाइत जहिना धीरेन्द्रक जिज्ञासा रामकृष्ण बाबूक प्रति जगलैन, तहिना रामकृष्णो बाबूक जिज्ञासा धीरेन्द्रक प्रति जगलैन। जिज्ञासाक प्रति मनमे जिनका जे होनि से तँ ओ जानैथ मुदा कुशल-छेमक सम्बन्ध दुनूक बीच बढ़ल। जेकरा बढ़बैमे कृष्णपुरक सिनुरियाक सेहो नीक जोगदान रहल। सिनुरियाक अपन माए-बापक देल नाओं 'श्याम सुन्दर' छिऐन मुदा लोक अपन

जिनगीमे अपनो नाओं तँ कमाइए लइए। सिनुरिया बहुत कर्मठ वेपारी, संगे वेपारीक नीक लूरि सेहो छैन्हे। आइ पैंतीस बर्खसँ हरदी, मेरचाइ, धनियाँ, लसुन इत्यादिक वेपार अपन चरिकोसी गाममे कऽ रहल छैथ। चारि बजे भोरे साइकिल उठा 'हरदी, मिरचाइ, धनियाँ, लसुन' करैत गामे-गाम पहुँच टहैल-टहैल बेचै छैथ। रस्तेपर सँ केतौ दादी, केतौ काकी, केतौ भौजी करैत अँगने-अँगने खोज-खबैर लैत बेचैत-बिकनैत बारह बजे तक गाम आपस होइ छैथ। जेकरे माध्यमसँ रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक बीच समाद-वाड़ी होइत रहलैन, बेवहारिक सम्बन्ध बढ़ैत गेलैन।

सुति कऽ धीरेन्द्र उठले छला कि सिनुरिया आबि दरबज्जापर सँ बजला-

"धीरेन्द्र बौआ छह हौ, हौ धीरेन्द्र बौआ?"

आँखि मीड़िते धीरेन्द्र घरसँ निकैल ओसारपर एला। सिनुरिया साइकिलेपर सँ कहलकैन-

"बौआ, रामकृष्ण बाबू हाल-चाल पुछै छला?"

एक तँ भिनसुरका मौसम तहूमे अखने ओछाइन धीरेन्द्र छोड़नहि छला तैपर शुभ-समाचार सुनि समदियाकेँ चाहो-पानक आग्रह नै करथिन सेहो केहेन हएत। मुदा सिनुरियाकेँ एते समए कहाँ जे चाह-पानक पाछू अपन कारोबार ढील करता। ओ तँ वेपारीक पतरानुकूल अपन पतरा बनौने छैथ। लेबाल बुझै छै जे भिनसुरका वोहैन वेपारीक नइ मारिऐ, तँए नगदी कारोबार बेसी छैन। मुदा अपन कारोबार आकि अपना हाथक रेखा तँ लोक अपने ने बनबैए। कलम घँसत तँ ओंगरी घँसाइत ठेला हेतै आ कोदारि चलौत तँ तरहत्थी घँसाइत ठेला हेतै, सएह ने...।

सिनुरिया घर-घरक लछमी-पात्र बनि समाजमे कारोबार करै

छैथ। ओना ओ अपन पतरा ई बनौने छैथ जे जँ पहिल गहिंकी एको पाइक वोहैन नहियोँ करै छैथ तैयो मुहूर्त शुभ भेल आ जँ करै छैथ तँ ओ घीबोसँ चिक्कन भेल। सभ दिना कारोबारीकेँ नगद-उधारसँ कोन मतलब। मतलब तँ अछि बिकरी-बट्टासँ...।

अही चरि-कोसी गामक सेवा करैत ने सिनुरिया दूटा बेटाकेँ बी.ए. पास करा शिक्षको बनौलैन।

चाहक आग्रह करैत धीरेन्द्र सिनुरियाकेँ पुछलखिन-

“भैया, तूँ भोरे-भोर समाद कहलह आ चाहो नइ पिबह से केहेन हएत?”

ठाँहि-पठाँहि सिनुरिया कहलकैन-

“बौआ, कारोबार शुरू करैसँ पहिने अजमा कऽ तेना खा पीब लइ छी जे बीचमे काजक समए ने दुइर हुअए। एते फुरसत थोड़े अछि। सौंसे गामक जेते पाहि लगौने छी, तेते तँ घुमि-घुमि कऽ पुरबए पड़त किने। एक मोन समान अछि अहीमे ने पान साए रूपैयाक कमाइयो अछि।”

सिनुरियाक बात सुनि धीरेन्द्रक मनमे उठलैन- एहेन काजक लोक! पनरह हजारक महीनाक बजार अपन कर्मसँ बनौने छैथ! समए ओना लेब उचित नइ...।

कहलखिन- “भैया, अपनो कनी लसुनक काज अछि। कनी मसस्लो-ले लेब आ थोड़े आब रोपबो करब किने।”

जहिना धीरेन्द्र अपन काज अगुऐबा-ले गहिंकी बनला तहिना सिनुरियो वेपारी। दलानक आगूमे साइकिल ठाढ़ करैत सिनुरिया बजला-

“कनियाँसँ पुछि लियौन जे आरो कोनो मसल्लाक खगता छैन?”

सिनुरियाक विचार धीरेन्द्रोकेँ नीक लगलैन। जहिना लूटमे चरखा नफ्फा तहिना कनियाँक बहन्ने अपनो गप-सप्प करैक समए भेटबे केलैन...।

आँगन जा धीरेन्द्र पत्नीकेँ कहलखिन-

“मसल्लाक बरतन देखने आउ जे कथी सबहक खगता अछि।”

जखन दुनू गोरेक अपन-अपन काज आगू बढ़ल तखन एकठाम ठाढ़ दुनू गोरेक मनक विचार केना रूकल रहत। धीरेन्द्र बजला-

“भैया, केते दिनसँ रोजगार करै छह?”

सिनुरिया बजला-

“बौआ, कोनो कि दस्ताबेज बना काज शुरू केने रही जे नीक जकाँ मन रहत। तखन तँ हाले-सालमे बिआह भेल रहए। साइकिल सोसराइरेमे देने रहए, गोर लगाइबला रूपैया सेहो रहबे करए। तहिया महरैलक हाट उखैर झंझारपुरमे आबि लागब शुरूहे भेल रहै, जबन्नो ताबे सस्ता रहै, ओही पूजीसँ अखन धरि परिवारकेँ हँसबैत-खेलबैत चलबैत एलौं हेन।”

धीरेन्द्र-

“की चलबैत एलह?”

सिनुरिया-

“पाँचटा बाल-बच्चाकेँ पोसि-पालि अपन-अपन ठौरपर पहुँचा देलिऐ, आब कि कोनो घरक चिन्ता-ले कारोबार करै छी।”

सिनुरियाक बात सुनि धीरेन्द्रकेँ अजगुत लगलैन। अजगुत ई लगलैन जे एते काजुल-कर्मठ लोक रहैत बजै छैथ- ‘कोनो चिन्ते ने...।’

तैसंग ईहो कहै छैथ- ‘बालो-बच्चाकेँ ठौरपर पहुँचा देलिऐ।’

दोहरबैत धीरेन्द्र बजला-

“भैया, तेना ने तूँ हाँइ-हाँइ कऽ बाजि देलहक जे बुझबे ने केलौं।”

ओकीलकेँ जहिना जीरह करैकाल कोर्टमे आ डाक्टरकेँ जहिना ऑपरेशन करैकाल थियेटरमे अपन आत्मशक्ति हँसैत रहै छै तहिना परिवारक सेवा कएल जिनगीक वृतान्त सुनबैत सिनुरियाक मनमे खुशी उपकलैन। अह्लादित होइत बजला-

“धीर बौआ, भगवान तीनटा बेटी आ दूटा बेटा देलैन। जइसँ आन परिवार जकाँ एकभग्गु परिवार नइ भेल।”

सिनुरियाक ‘एकभग्गु परिवार’ सुनि धीरेन्द्र फेर अकबका गेला। पुछलखिन- “की एकभग्गु?”

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनि सिनुरियाक मनमे जेना गुदगुदी लगलैन तहिना मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, परिवारमे जँ बेटी नइ भेल तँ पत्नी रूसती, जे कन्यादान सन धर्मक काज हमरा कपारमे लिखले ने अछि। आ जँ बेटा नइ भेल तँ माइक कोन बात जे बापो कानत आ परिवारो कानत जे बाँसक बीटे उपैट गेल।”

सिनुरियाक जेहने नाओं तेहने सदिकाल सिनुरीए रंगमे मन रंगल प्रकृतो...।

धीरेन्द्र बिच्चेमे टोकलकैन-

“असलाहा गप ते छुटिए गेलह, भैया?”

बनियाँ जाति सिनुरिया, सम्हरैत कहलकैन-

“बौआ, बात पछुआ गेल एकर माने बिसैर नै गेलौं। पाँचो बेटा-बेटीक भार निमाहि लेलौं। तीनू बेटी सासूर बसैए आ दुनू बेटा बी.ए.

केला पछाइत शिक्षा मित्रमे नोकरी करैए।”

तैपर धीरेन्द्र पुछलखिन-

“जखन बेटा सभ कमाइए लगला तखन आब अनेरे किए ऐ पुरना हड्डीकेँ आ पुरना साइकिलकेँ धुनै छहक?”

धीरेन्द्रक बात सुनि सिनुरिया विह्वल भऽ गेला-

“बौआ, इहे चरि-कोसी गाम हमर दुनियाँ छी। सभ दिन सेवा करैत अपन दुनियाँमे रमैत एलौं, छोड़ने नीक लागत?”

धीरेन्द्र-

“किए ने नीक लगतह?”

सिनुरिया-

“सभ दिन समाजकेँ भैया, काका, बाबा, दादी, काकी, भौजी आ बच्चा कहि सबहक नीक-बेजाए, सबहक जिनगीक क्रिया-कलाप देखैत-सुनैत एलौं, ओ छोड़ि दरबज्जा पकैड़ लेब तखन जिनगीमे रहबे की करत?”

बिच्चेमे सुजिता आबि बजली-

“मिरचाइ आ हरदी नइ अछि।”

पैछला बातक बिसरजन करैत सिनुरिया बजला-

“बौआ, रबि दिनकेँ रामकृष्ण बाबू गामेपर रहै छैथ।”

“हँ से केते दिन गपो-सप्प भेल अछि। मुदा नोकरियाकेँ ने रबि दिन छुट्टीक भेल, मुदा किसानकेँ, जे खेती केनिहार अछि, माल-जाल पोसनिहार अछि तेकरा तइसँ कोन मतलब छइ। मुदा दुनूक बीच तँ सम्बन्धो स्थापित करैक अँटाबेशो तँ अहीमे करए पड़त। रबि दिन भेँट करबैन।”

पचास रूपैआक तीनू समान–मिरचाइ, हरदी आ लसुन–दैत

सिनुरिया साइकिल टनटनबैत आगू बढ़ि गेला।

अन्त आसीन। काल्हि कोजगरा हएत। बरसातक उतार मुदा खेती-वाड़ी शुरू नइ भेने धीरेन्द्रोक काज पतराएले। ओना दुर्गापूजासँ करीब बीस दिन पहिनहि चारिटा मैथिली-कथा धीरेन्द्र सुधार करैले, माने मुँह-कान आ सिंग-सिंगहौटी बनबैले रामकृष्ण बाबूकेँ देने छेलैन। ओहो दुर्गापूजाक समए देने रहथिन। दुपहरियाक तीन बजे धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबू ऐठाम पहुँचला।

रामकृष्ण बाबू पलंगपर बैसल चाह पीबैत रहैथ। धीरेन्द्रकेँ देखते हाथक इशारासँ पलंगेपर बैसैले कहलखिन। आगूमे तीनटा डिक्शनरी आ कागज-कलमक संग डायरी सेहो रखल रहैन। भरिसक किछु लिखैक विचार केने छला। प्रणाम करैत धीरेन्द्र पलंगक निच्चाँमे ठाढ़ रहला। जातीय बन्धनक बीच जे समाज बनल अछि, ओइ हिसाबे रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक बीच किछु दूरी बनियेँ गेल छैन। ओना आइसँ पहिने जहिया कहियो धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबू ऐठाम अबै-जाइ छल तहिया ओसारक कुरसीपर बैस दुनू गोरे गप-सप्प करै छला, मुदा आइ पलंग छी।..धीरेन्द्रकेँ पलंगपर बैसैत संकोच होइ छेलैन। संकोचक कारण समाजमे जातीय बेवहार रहइ। ओना कुरसी भेने सेठ-साहुकारक गद्दी आ मड़-महाजनक आसनमे किछु बदलाव एबे कएल अछि, मुदा मोथा खढ़क सीरक पन्ना जकाँ केतौ-केतौ बिच्चियो तँ नुकाएले अछि, जे समए पबिते गाछ बनि ठाढ़ भऽ जाइए।

पलंगक निच्चाँमे ठाढ़ धीरेन्द्रकेँ देख रामकृष्ण बाबू फेर कहलखिन-

"ऐपर बैसैमे धखाइ किए छी, ई तँ सुतै-बैसैक वस्तुए छी।"

ओना रामकृष्ण बाबूक मनमे जातीय आसनक पूर्व कथा ओहिना लहलहाइत रहैन मुदा समाजोमे समाज बनबो करैए आ टुटबो

करैए, सेहो तँ बुझिए रहला अछि। तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँच बजली-

"बैस कऽ पीबू।"

कहि चाहक कप पलंगपर रखि देलखिन। दुनू गोरे चाह पीब साहित्यपर गप-सप्प शुरू केलैन। हथिया नक्षत्र बितने जाड़क ज्वर[7] सेहो तँ उतरिए रहल अछि मुदा रौदक गरमी अखनो ओहिना प्रखर अछि। घरक पलंग तँए दुनूक शरबती घोल जकाँ मौसम बनले छल...।

धीरेन्द्र कहलकैन-

"सर, अपनेक जे संग्रह अछि, कथा संग्रह, ओ सोझ-सोझ ढंगसँ लिखल बहुत निम्मन कथा संग्रह अछि। मुदा..?"

रामकृष्ण बाबूक मन 'निम्मन कथा' सुनि हर्खसँ हलैस गेलैन, मुदा ठनका जकाँ मनमे ईहो ठनकबे केलैन जे 'मुदा' कहि धीरेन्द्र चुप किए भऽ गेल। धीरेन्द्रकेँ चरियबैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"एना अदहे किए बजलौं। खोलि कऽ बाजू, सृजन छी किने? झँपलासँ क्षति हएत।"

रामकृष्ण बाबूक विचारक सह पबैत धीरेन्द्र कहलकैन-

"सर, अपने साहित्यक विद्वान विशेषज्ञ रचनाकार छिऐ, जे शैली आ जइ विषयकेँ कथा बनौलिऐ, ओ तँ ओहनो रचनाकार रचि सकै छैथ, जिनका अपने सन विशेषज्ञता नइ छैन।"

धीरेन्द्रक विचारकेँ मोड़ैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"देखियौ धीरेन्द्र, रचना मौलिक हेबा चाही। जहिना दुनियाँ अछि, जे सभ दिनसँ अछि आ सभ दिन रहत। अहीमे सभ दिन घटनो घटैत रहैए आ घटबो करैत रहत। मुदा जे मौलिक अछि ओ मौलिक

[7] जड़

ऐछो आ रहबो करत।"

रामकृष्ण बाबूक विचारकेँ धीरेन्द्र मने-मन विचारए लगला जे थोड़ेके शब्दमे बहुत बात बाजि गेला। मुदा सभ शब्दक एक लड़ी बनत तखने ने विचारक झड़ी झड़त। तेकरा जोड़ै-गुणैमे धीरेन्द्रक मन ठमैक गेलैन। ओना धीरेन्द्रक देल चारू कथा पढ़ि कऽ रामकृष्ण बाबूकेँ झलैक गेल छेलैन जे अपन संग्रहक प्रभाव धीरेन्द्रपर ओते नइ छोड़लक जेते ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म', प्रभास कुमार चौधरी, रमानन्द रेणु, राजकमल, प्रेमचन्द, फणिश्वर नाथ रेणु, भीष्म सहनी, राजेन्द्र यादव, राहुल संकृत्यायन इत्यादिक छाप पड़ल छइ। अपनाकेँ सम्हारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"मणिपद्म तँ मिथिला रत्न छैथ, मुदा..?"

जिज्ञासा करैत धीरेन्द्र पुछलकैन-

"मुदा की?"

मणिपद्मजीक प्रति रामकृष्ण बाबूकेँ असीम श्रद्धा छैन, श्रद्धावान पुरुखक श्रद्धावान-कृत्यक एको चुटकी सिमटी-बाउल भवन निर्माणमे श्रद्धावत केने तँ चानकेँ आरो चारि चान बनबैए मुदा से...।

अपनाकेँ सम्हारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"मणिपद्मजी जिनगीक एकभग्गु रचैता छला।"

रामकृष्ण बाबूक बात सुनि धीरेन्द्रक उत्कण्ठित मन चहेलैन-

"से की?"

हृदैकेँ हियासैत रामकृष्ण बाबू मणिपद्मजी आ प्रभास कुमार चौधरीपर नजैर फेकलैन। फेकते मनमे बरसा कालक पानिक बुलबुला जकाँ कखनो नजैर मणिपद्मपर पहुँचैन तँ कखनो प्रभासजीपर। मुदा ई तँइए ने कऽ पबै छला जे मणिपद्मजीकेँ मुँह बनाबी आकि

प्रयासजीकेँ। माने ई जे मणिपद्मजी दिससँ बात चाली आकि प्रभाषजी दिससँ। धीरेन्द्र हिया-हिया रामकृष्ण बाबूपर नजैर फेकैथ मुदा मन बजैसँ ई कहि रोकि दैन जे भरिसक कोनो गम्भीर विचारक ओझराएल ओझरीकेँ सोझरा रहला अछि...।

हँ-निहँस करैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"मणिपद्मजी एकभग्गु रचनाकार छला जखन कि प्रभासजी से नइ छला।"

तेहेन गोल-मटोल विचार रामकृष्ण बाबू धीरेन्द्रक आगूमे रखलैन जे धीरेन्द्र अकबका गेला। ई की कहि देलैन? मुदा लगले मन गवाही दैत धीरेन्द्रकेँ चरियौलक। चरियाइते धीरेन्द्र बजला-

"कनी सोझरा कऽ दुनू गोरेक चर्च करियौ?"

धीरेन्द्रक बात जेना रामकृष्ण बाबूकेँ नीक लगलैन। 'सोझरा कऽ कहियौ'क मतलब धीरेन्द्रक रहैन भाषाक स्तरपर चर्च।

रामकृष्ण बाबू बजला-

"मणिपद्मजी केँ जिनगीक तीन चौथाइ आर्थिक भार माने खेनाइ, पीनाइक संग आरो सभ खर्च-बर्च सभ दिन हुनकर पिता जुमबैत रहलैन। मुदा अपना जिनगीक अमलदारीमे अपन केते रचना प्रकाशित करा, केते लोकक बीच पहुँचला?"

बजैत-बजैत रामकृष्ण बाबू गम्भीर भऽ गेला। जेना अपन जिनगी अपना सोझमे नाचए लगलैन। नाचए ई लगलैन जे अपनो तँ दू संग्रह-जोकर कथा, एक संग्रह-जोकर कविता लिख कऽ राखल अछि। जखन कि मोट दरमाहाक नोकरी रहल! विचारकेँ आगू नइ बढ़ा बातकेँ मोड़ैत बजला-

"धीरेन्द्र, रचना आ रचनाकार दुनू दू धुरी छी। ऐ धुरीक बीच

अनेको दशा-दिशा अछि। मुदा जँ रचनाकार स्वयं रचित भऽ किछु रचैथ आ तहूसँ कनी आगू बढ़ि जँ शब्दक संग रचैथ तँ दुनूमे किछु-ने-किछु कमी एबे करत...।”

धीरेन्द्र-

“सर, नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?”

रामकृष्ण बाबू-

“सत्य ओतइ अकाट् अछि जेतए शब्द नइ पहुँच पबैए। मुदा रचना-ले तँ शब्दे संगी हएत। नइ तँ एक-दोसराक बीच विचार बढ़त केना...।”

किरिण डुबि गेल। मुदा अन्हार नइ पसरल, कनी-मनी जाड़क हल्फी सेहो हफुअए लगल...।

रामकृष्ण बाबूकेँ धीरेन्द्र कहलकैन-

“सर, औझुका जे गप-सप्प भेल ओ अविस्मरणीय रहत। समए भेटलापर फेर दोसर दिन...।”

धीरेन्द्र उठि कऽ ठाढ़ भेला। ओना रामकृष्ण बाबू एकबेर आरो चाह पीबैले कहलखिन मुदा चाहकेँ टारैत धीरेन्द्र कहलकैन-

“सर, चाहक पाछू पड़ने अन्हारमे पड़ि जाएब।”

रामपुरक सीमान टैपते धीरेन्द्रक मनमे उठलैन। करीब दस बर्खसँ रामकृष्ण बाबूसँ सम्बन्ध बनल अछि, आबा-जाही अछि। मुदा सम्बन्धमे जे प्रगाढ़ता एबा चाही से कहाँ आबि रहल अछि...। मन ठमकलैन। ठमकल ई जे सम्बन्धक प्रगाढ़ताक जे दिशा अछि तइमे कमी भऽ रहल अछि तँए नै प्रगाढ़ता आबि रहल अछि। की कमी? ओना अखन तक कृष्णपुरक कार्यक्रमक पछाइत तीनटा आरो कार्यक्रममे दुनू गोरे संग छेलौं। मुदा आबा-जाहीमे एकभग्गुपन तँ

अछिए। हमरा हिसाबे रामकृष्ण बाबूकेँ सवाड़ियोक सुविधा छैन्हे। ओना जे दूरी दुनू गोरेक गामक आकि घरक अछि, तइले सवाड़ीक खगतो ने छै, मुदा किछु अन्दरूणी विचारोक सम्भावना तँ ऐछे...।

सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अनैले तँ सम्बन्धिक बीच दुनू दिससँ आबा-जाहीक जरूरत होइए। से जखन हएत तखने ने सम्बन्धमे प्रगाढ़ता आएत। ओना रामकृष्ण बाबू कौलेजमे कार्यरत छैथ, तँए समैयोक अभाव तँ छैन्हे। मुदा ई तँ गाम-घरक बात छी।

◌

शब्द संख्या : 2091, तिथि : 06 दिसम्बर 2015

नअ- ‘ख’

सेवा निवृत्तिक तीन सालक पछाइत रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक भेँट-घाँट भेल। सेहो संयोगसँ। नवान पावैनक चीज-बौस कीनए रामकृष्ण बाबू दुनू परानी झंझारपुर हाट आएल छला। आ गहुमक बीआ-ले धीरेन्द्रो हाटेपर आएल।

एकटा तरकारीक दोकानपर दुनू परानी रामकृष्ण बाबू सागो आ सजमैनो कीनैत रहैथ। किछु फरिक्केसँ धीरेन्द्र दुनू परानीकेँ देख कातमे ठाढ़ भेल रहैथ। ठाढ़ होइक कारण रहैन जे भरिगर हाट अछि जँ कहीं अपने दोसर दिस जाएब आ ओहो तेसर दिस चलि जाथि तखन तँ भेँट हएब कठिन भऽ जाएत। तँए सोझहामे रहने एते तँ हेबे करत जे तरकारी लऽ कऽ जखन विदा हेता, तखन टोकबैन।

झोरामे साग आ सजमैन सैंत हाथमे झोरा नेने पाछू-पाछू रामकृष्ण बाबू आ आगू-आगू सुभद्रा विदा भेली।

साग सजमैन देख धीरेन्द्रक मनमे उठलैन जे भरिसक सेवा निवृत्त ने तँ विषेलैन अछि। एक तँ आब दुनू परानीक ओहन उमेर नइ रहलैन जे हाट-बजार करैथ, कहब जे टहलब-बुलब आकि काजे छोड़ि देब? नहि। जैठाम भीड़-भड़क्का बीचक काज होइ तेकरा छोड़ि, एकान्त दिस काज करब। मुदा तइसँ–माने काज करब नइ करबसँ–धीरेन्द्रक मन आगू बढ़ि साग-सजमैनपर पहुँच गेल रहैन। कुल-खुट

भलेँ दुनूक[8] जेते नीक किए ने रहल हुअए आकि अखनो ओ गुण जीबित होइ मुदा अखुनका बजारक तँ सागे-सजमैन ने भेल। भरिसक रामकृष्ण बाबूकेँ गुजर-बातमे किछु कमी एलैन अछि...। ओना, धीरेन्द्रकेँ बुझल नइ जे काल्हि नवान पावैन छी। तेकरे ओरियानमे दुनू बेकती लागल छैथ...।

दोकानपर सँ विदा होइते धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूकेँ टोकलकैन-

“प्रणाम सर..?”

ओना धीरेन्द्रक मुँह खुजिते रामकृष्ण बाबूक नजैर सेहो धीरेन्द्रपर पड़लैन। धीरेन्द्रक ‘प्रणाम’क उत्तर देब बिसैर बजला-

“काल्हि नेवान छी किने, तेही ओरियानमे लगल छी।”

हाटक लोक एमहरसँ ओमहर करैत रहए। कियो किए धीरेन्द्र आकि रामकृष्ण बाबूक प्रणाम-पाती सुनत। तोहूमे अदहासँ बेसी वेपारी पावैनेक चीजो-बौस बेचैत आ लेबालो बेसी सहए कीनैत। तँए हाटक समान-बात दुनू गोरेक बीचक रहैन। मुदा धीरेन्द्र सेरिया कऽ एकटा वाण साहित्यकार रामकृष्ण बाबूपर चलौलैन-

“सर, आइक जुगमे जँ कियो सालक नवान करै छैथ, माने पावैन करै छैथ तँ ओ पुरना जुगक पावैन करब भेल।”

नव-पुरान दुनू जुग रामकृष्ण बाबूक मनमे नाचि उठलैन। नाइच ई उठलैन जे एहेन बात धीरेन्द्र किए बाजल? तहूमे अदना-गुदना रहितए तँ बुझितिऐ जे मेघमे अहिना कौआ-चील चिलकै छै...।

जिज्ञासु बनि रामकृष्ण बाबू जिज्ञासा केलैन-

“एना किए धीरेन्द्र भरल हाटमे बजै छी?”

रामकृष्ण बाबूक जिज्ञासा देखैत नाचक बिपटा जकाँ धीरेन्द्र

[8] सागो आ सजमैनोक

बिपटाइ छोड़लैन-

"सर, आइक जुगमे जे कियो दुरागमन करैए आकि नवान करैए ओ दुनू जुग-विहीन भेल।"

धीरेन्द्रक बात जेना दुनू परानी रामकृष्ण बाबूकेँ करेजमे बेधैत रहैन। मुदा लोकक बीच छटपटाएबो तँ नीक नहियेँ। तँए सम्हरैत बजला-

"एक्के लकड़ीसँ दुनू ताल बजबै छी?"

रामकृष्ण बाबूक सहिट विचारमे सह दैत धीरेन्द्र बजला-

"सर, आब जे कियो दुरागमन करैए, ओ दुरागमन करैए आकि माल-जाल फरिछबैए।"

रामकृष्ण बाबू धीरेन्द्रक बात सुनि ततमताइते रहैथ कि बिच्चेमे सुभद्रा बजली-

"से की, से की?"

धारक बहैत धाराक मुँह देख रामकृष्ण बाबूक मनक टीटही[9] विचारकेँ रोकि देलकैन। विचार रूकने कान कनखड़लैन।

धीरेन्द्र बजला-

"जैठामक धरती सभ दिन अन्नदायी छी तैठाम नवान की? तहूमे आन-आन अन्नक नवान कहाँ होइ छइ। जखन कि जे अन्नक होइ छै ओ सभ दिना उपजैबला छी।"

धीरेन्द्रक बात सुनि सुभद्रा मुड़ी डोलबैत बजली-

"बेस बात बजलौं, आ..?"

सुभद्राकेँ 'आ' कहिते धीरेन्द्र कहलकैन-

[9] एक पंक्षी

"चाची, धड़फड़ेने काज चलत। अहीं कहू- बर-कनियाँक बीच दुरागमन होइए, बड़बढ़ियाँ। मुदा बिआह-दुरागमनक बीच जे जेरक-जेर धिया-पुता आबि जाइए, ओकर की होइए?"

हाटसँ निकैल तीनू गोरे बगलक चाहक दोकानमे चाह पिबए पहुँचला।

ओना चाहक दोकान टटघरे अछि, मुदा नीको-नीको पुजिगर दोकानक कान कटिते अछि। दोकान टटघरे छी मुदा अछि नमहर। नमहर ऐ मानेमे जे सरकारी सड़कक बगलमे अछि, जेकरा दोकानदार पाँच धुर अपन घराड़ीमे पनरह धुर सड़कक जमीन घेर खूब ऐल-फैलसँ दोकान बनौने अछि। दोकानक चलतियो सबदिना छै, मुदा हाट रबिकेँ लगैए तँए कोट-कचहरी बन्न रहितो समस्तीपुरसँ लऽ कऽ जयनगर-निर्मली तकक वेपारीक अड्डा बनि जाइए। लाखोक कारोबार वेपारी चाहे दोकानमे बैसल-बैसल करैत रहैए। ओना दोकानक चलतीक कारण नमगर-चौड़गर आसे-बासटा नै अछि, असल अछि दोकानक सौदा। जहिना नवका लोहियामे तेल-मसल्लाक काज लोहिये करै छै तहिना अछेलालक हाथमे अछि।

परोपट्टाक एकोटा चाहक दोकानदार अछेलाल सन नइ अछि, एके चाह-चीनी आ दूधक एहेन समान कहाँ कियो बना पबैए।

पूब दिसक खाली टेबुल-कुरसीपर तीनू गोरे बैसला। बसिते धीरेन्द्र अछेलालकेँ चाह दिअ कहलैन। एक तँ चाहक दोकान, तैपर रंग-रंगक इलाकाक रंग-रंगक कारोबारी सभ बैसल। अनठिया चाह पीआक बेसी तँए धीरेन्द्रक मनमे उठल, किए अखन परिवारिक गप-सप्प करब। किए हिनको अपन बेथा-कथा सुनाएब। सुनेबो तँ ओतए ने नीक होइ छै, जेतए लोक सुआद बुझैए...।

मुदा रामकृष्ण बाबूक पारखी नजैर लोककेँ परेख लेलक। ओना

सभ टेबुलपर अपन-अपन मेलुआ संग अनेको रंगक गप-सप्प अपना धुनियेँ सभ धुनैत रहए...।

परेखते रामकृष्ण बाबू बजला- "भने भेँट भऽ गेलौं, धीरेन्द्र। अखन ते चाहक दोकानपर छी, आन गप करब नीक नइ हएत।"

जेना रामकृष्ण बाबूक विचारक जड़ि आगू बढ़ि गेलैन। आनो-आनो टेबुल परहक गहिंकी सभ कान ठाढ़ करैत ताकए लगलैन। धीरेन्द्र ततमताइते जे आगू की बाजी। मुदा रामकृष्ण बाबू दोहरबैत बजला-

"अखन ते चाहक दोकानपर छी, काल्हि घरेपर भेँट होउ, बहुत दिनक गपो-सप्प पछुआएल अछि निचेनसँ सभ गप करब।"

धीरेन्द्र मने-मन हिसाब लगबए लगला–औझुका दिन हाटे–बजारमे चलि गेल, काल्हि गहुम बागो करब आ दनो-पट बनाएब। मने-मन धीरेन्द्र हिसाब लगैबते रहए कि तेहरबैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"पोताकेँ अमेरकेमे बेटी भेल, ओ ओतुक्का नागरिक भऽ गेल। ऐगला मास मुड़न करबए गामे औत। तेकरो अखन हकारे दइ छी, जखन दिन-ठेकान निसचित भऽ जाएत तखन नतो-पिहान देब।"

अखन तक धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूक पहिलुको विचार नइ सोझरा पौने, तैपर आरो-आरो विचार उठबैत गेलखिन। काल्हिए-ले ने आइ बीआ कीनलौं। काल्हि जँ बाउग करि लेब तँ यएह ने भेल गति-विधि, माने गतिक निअम। ओना रामकृष्ण बाबूक जिज्ञासा छैन, तँ जरूर भेँट करबैन। मुदा काल्हि नहि। जैठाम काजक सम्बन्ध अछि तैठाम तँ देखै-परखै पड़त जे जेहेन काज अछि तइसँ आगू बढ़ल काज अछि आकि बराबरीक अछि आकि तल-बितलक अछि...। धीरेन्द्रक मनमे जेना किछु फुरफुरेलैन।

फुरफुराइते बजला-

"सर, कहलो जाइ छै 'सभ दिन खइहह, पबनी ललैइहह।' काल्हि नवान पाबैन छी, ओरियाने बात आ खाइए-पीबैमे भरि दिन लगि जाएत, तखन भेँट केना कएल हएत।"

रामकृष्ण बाबूक मन मानि गेलैन। बजला-

"ओना तीन दिन औरो गाममे रहब। मुदा चारिम दिन जे निकलब तँ ऐगला काज, माने मुड़न लगिचाइए कऽ आएब।"

चाह पीब तीनू गोरे दोकानसँ निकैल अपन-अपन काज दिस बढ़ला। झंझारपुरसँ निकलला पछाइत धीरेन्द्रक मनमे उठलैन- ऐगला मास परपोतीक मुड़न छिऐन तइले सपरिवार गामो औता आ भोजो-भात करता। बड़बढ़ियाँ...।

मुदा एकटा बात धीरेन्द्रक मनमे बेर-बेर उठए लगलैन जे जे अमेरिकाक नागरिक भऽ गेल ओकरा अमेरिकन संस्कार ने हेबा चाही? संस्कारोक तँ अपन जगह होइ छै, अपन क्षेत्र होइ छइ।

जखन क्षेत्रक अनुकूल काज-उदम, पठन-पाठन, साज-संस्कार हएत तखने ने सभ किछु सम्मिलित होइत शमील बनि चलत। जँ से नइ हएत, तखन तँ पुरान मशीनक पार्ट कहियौ आकि नवकाक अनमेल पार्ट, झरझरबे करत किने।

◌

शब्द संख्या : 1083, तिथि : 08 दिसम्बर 2015

नअ- 'ग'

एक पख अगहन बीत चुकल अछि, नवानो भऽ गेल। नहेबे बेर धीरेन्द्र विचारि लेलैन जे खेला पछाइत रामकृष्ण बाबू ऐठाम जाएब। रौदमे प्रियपन एने मिठास सेहो आबिए गेल अछि आ खेला पछाइत थोड़े टहलबो नीक होइते अछि, अराम नइ करब...।

अरामो कि केतौ पड़ाएल जाइ छइ। ओकर हिसाब तँ कियो चौबीस घन्टाक रूटिंगमे तँ कियो तीन-दिना रूटिंगमे तँ कियो सत-दिना रूटिंगमे रखि अपन क्रिया-कलाप संचालित करैए। अगहन मास छी सुतैले तेतेटा राति होइए जे तरो गुलगुल ऊपरो गुलगुल तैयो काठ जकाँ देह सूतल-सूतल कठुआइए जाइए। अखन बाधक-बाध किए ने एहेन प्रियगर समैमे धनकटिया लोक कऽ लेत...।

...मुदा अबैत लछमी–बाधसँ धान घर आएब–पर धीरेन्द्रक नजैर खिड़ते अपन डुबैत गहुमक खेतीपर पहुँचलैन। दिसम्बर अन्तक सीमानपर आबि गेल, गहुमक बाउगक समए दुर्गापूजाक जयंतीक संगे चलक चाही, जे अक्टुबर-नवम्बरक सीमापर अछि। जखने जगती मैयाकेँ समैपर खोंइछ भरबैन तखने ने मुँह खोलि मंगबैन। केतबो नीक बीआ आ उचित खाध-कीटनाशक खेतमे देब, पानिक बेवस्था करब तैयो उपज तँ खर्चसँ पछुआइए जाएत। जखने लागतसँ उपज कम हएत तखने ओ घाटाक खेती भेल। तइमे समए आ पूजी

लगाएब, दुनू नोकसानदेह भेल। मुदा जे भेल, अपना सबहक गाममे गहुमक खेती प्रमुख खेतीक रूपमे तँ अछिए। किसान पनरह जनवरी तक बाउग करबे करै छैथ, ओ थोड़े बुझै छैथ जे आसीन-कातिकमे खेत जाइवाली पछुआ गेली।

खेला पछाइत धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबू ऐठाम जेबाक तैयारी करए लगला। करीब पाँच बर्खक पछाइत दुनू गोरे एकठाम हएब।

साढ़े बारह बजे धीरेन्द्र विदा भेल। सुखार समए। बाधे अखन घर अँगना बनल अछि। बरसातक समए तँ छी नहि जे पकियो सड़क चलैबला नइ रहैए...।

अगहन मास, गामक-गाम उनैट अखन बाधेमे भरि दिन रहैए। बाधेक रस्ता, माने जइ खेतमे धान लगल अछि तेकर आड़ि आ जइ खेतमे धन कटि गेल अछि ओकर बीचो-बीच कोणा-कोणीक रस्ता भेल।

एक बजे रामकृष्ण बाबू ऐठाम धीरेन्द्र पहुँचला। असगरे दुनू परानी रामकृष्ण बाबू पलंगपर बैसल टिफिनक चाह पीबैक गप-सप्प करैत रहैथ। ..धीरेन्द्रकेँ देखते रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ झपैट कहलखिन-

"कहै छेलौं ने..! जाउ, चाहक ओरियान करू।"

ओना भोजन केलाक केते कालक पछाइत चाह आकि जलखैक जरूरत पड़ैए ओ भोजनक समैपर आश्रित अछि। जँ नअ-दस बजे भोजन करै छी तँ बारह-एक बजे टिफिनक समए भेल। मुदा जँ बारह-एक बजे भोजने करै छी तखन केना भेल? तइ हिसाबे रामकृष्ण बाबूक समए भऽ गेल छेलैन। जहिना झपाटा मारि रामकृष्ण बाबू बाजल छला तहिना पत्नियोँ झपासा दैत कहलकैन-

"अहाँक विचार जँ मानि नेने रहितौं तखन पहुनमाक पावैन केना होएत?"

सामंजस करैत रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ कहलखिन-

"हमहूँ दुनू गोरे छतेपर बैसब। आब जेना-जेना समए खसत तेना-तेना रौदो प्रियगर होइत जाएत।"

दुनू गोरे मकानक छतपर पहुँचला। ओछाइन ओछाएले रहइ। कनियेँ पछाइत सुभद्रा सेहो चाह नेने छतपर पहुँचली।

कुशल-समाचार होइते रामकृष्ण बाबू अपन परिवारक खेरहा शुरू केलैन। अपन तीनू बेटाक संग बेटी-जमाएसँ लऽ कऽ पोता-पोती तकक चर्च, एक्के साँसमे कऽ लेलैन। आगूमे बैसल धीरेन्द्र चुप-चाप किछु बात सुनबो केलैन आ किछु नहियोँ सुनलैन। नइ ऐ दुआरे सुनलैन जे रामकृष्ण बाबूक संग जइ सीमाक भीतर सम्बन्ध अछि तइ सीमामे गप-सप्प करबे ने उपयोगी भेल...।

धीरेन्द्रक मनमे शंका उत्पन्न भेल जे भरिसक रामकृष्ण बाबूक जिनगी तँ ने बदैल गेलैन अछि। होइतो अहिना छै जे जखन लोकक जिनगीमे घटी-बढ़ी अबऽ लगै छै तखैन विचारोमे घटी-बढ़ी ऐबते छइ। मुदा घटियो-बढ़ीक तँ अपन गति-विधि छै जे लोकक जिनगीपर निर्भर करै छइ। एके मुँह जखन शराब नइ पीबैए तखैन शराबेकेँ अधला कहि ओइ भीड़मे जाए नइ चाहैए, मुदा कोनो कारण जखन ओ शराबक रस्ता पकड़ैए तखन पहिने एक-चम्मछ, दू चम्मछकेँ दवाइ कहि नीक कहए लगैए। जएह शराब अखन तक अधला मनमे छेलै से नीकोमे नीक, माने पोष्टिक बनि गेल! वएह ने बढ़ैत पछाइत मन भरि पीबैकेँ उचित कहि बेसी पीबैले प्रेरित सेहो करैए..!

अपन साहित्यिक चर्च धीरेन्द्र मनेमे रखने, किएक तँ रामकृष्ण बाबू अपने बात बजैमे बेहाल।

..बीचमे टोकैत धीरेन्द्र कहलकैन-

"सर, ई साल केहेन गुजैर रहल अछि?"

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनिते रामकृष्ण बाबूकेँ जेना नव मसल्ला भेट गेलैन। बाजए लगला-

"अही साल किए, जहियासँ सेवा-निवृत्त भेलौं, तेकर तीनियेँ मासक पछातिसँ जहिना बेटा सभ पोता-पोतीकेँ पढ़बैले जोर केने रहैए तहिना बेटियो-जमाए। एकठामसँ दोसरठाम करैत तेना साल बीत जाइए जे बुझिए ने पबै छी जे साल केना बीत गेल।"

रामकृष्ण बाबूक बदलल विचार सुनि धीरेन्द्रक मनमे उठलैन-भरिसक जिनगी दोसर दिस मुड़ि कऽ बदैल गेलैन अछि। जखने जिनगी बदैल दोसर रूप लइए तखने ओकर बहुत किछु बदैल जाइ छइ। विचारमे लोच आनि अपन जिनगीक भरपाइ करिते अछि। मुदा लोचो तँ लोच छी, ओ दुनू दिशामे जिनगीक अनुकूल चलैए। जँ जिनगी बढ़त दिस बढ़ैए तँ बढ़ियाँ होइए आ जँ घटत दिस बढ़ैए तँ घटियाए लगैए। जइसँ एक दिस बढ़ियोँसँ बढ़ियाँ बढ़ती होइए, तँ दोसर दिस घटियोसँ घटिया घटबी होइए।

अखन तक रामकृष्ण बाबू एक-हरफी अपन परिवारक बात बजैत रहला मुदा तैयो केतौ अल्प-विराम आकि पूर्ण-विरामक लक्षण नहि देख धीरेन्द्र टोकलकैन-

"सर, एकसूरे तेते बात बाजि देलिऐ जे नीक जकाँ एकोटा नइ बुझि पेलौं।"

ओना धीरेन्द्रक मनमे रहै जे जखने विचार व्यक्त करैक क्रममे सबाल सभ उठाएब तखने बात-चीतक क्रम बदलत। नइ तँ सोलहन्नी भाषण भऽ जाएत। भाषण आ परिचर्चामे यएह ने अन्तर होइ छइ। परिचर्चामे खण्डन-मण्डनक संग विचार बढ़ैए, आ भाषणक क्रम तँ से नइ छी। झूठ-साँच सभ संगे चलैए...।

ओना रामकृष्ण बाबूकेँ बजैक सूढ़ि चढ़ले रहैन, तहूमे धीरेन्द्र जे

प्रश्न उठौलकैन तइसँ आरो मसल्ला भेट गेलैन। ओना अपन जिनगीक धार सुखाए लगल रहैन...।

रामकृष्ण बाबू बजला-

“धीरेन्द्र, भगवान तेते पोता-पोती आ नाइत-नातिन दऽ देने छैथ, जे ओकरे सबहक बीच खेलाइत समए केना बीत जाइए से बुझबे ने करै छी।”

रामकृष्ण बाबूक विचार सुनि धीरेन्द्रक मन संकल्प-विकल्पक बीच घुरिया लगल मुदा ओकरा मनसँ ठेलैत बजला-

“तखन तँ अपने बड़ बालक एक रंग बनि जिनगीक खेल खेलै छी।”

ओना धीरेन्द्रक बात रामकृष्ण बाबूकेँ व्यंग्य वाण जकाँ बुझि पड़लैन, मुदा व्यंग्य केतबो तान-बान्हसँ किए ने गतानल हुअए, मुदा ओकर दोसर रूप नइ होइ छै सेहो तँ नहियेँ अछि। एक दिस लंका अछि तँ दोसर दिस लंका रूपी मिरचाइयो तँ ऐछे, तैबीच लंक लऽ केमहर-मुहेँ पड़ाएब ई तँ पड़ेनिहारेपर निर्भर करैए। ओना रामकृष्ण बाबूक मनमे ईहो विचार टहैकते रहैन जे कियो भीड़मे खेलैए तँ कियो असगरमे। मुदा दुनूक बीचक जे खेलक खेलाड़ी अछि, ओ केहेन अछि..?

मुदा रामकृष्ण बाबूक मन लगले आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते अपन परिवारक चर्चकेँ बदलैत बजला-

“धीरेन्द्र, परिवारक सभ आनन्द छैथ किने?”

धीरेन्द्रक पहचान समाजक बीच कथाकारक रूपमे भऽ गेल छेलैन, ओना रामकृष्ण बाबू धीरेन्द्रसँ जहिना उमेरमे तहिना डिग्री-डिप्लोमामे आ तहिना अध्ययनोमे श्रेष्ठ छथिन तँए हिनको कान तक धीरेन्द्रक समाचार पहुँचले हेतैन। मुदा ओकर चर्च केने बिना धीरेन्द्रकेँ

परिवारक समाचार पुछलखिन..!

अपन समाचारकेँ सोझहासँ हटबैत धीरेन्द्र कहलकैन-

“पुरबते अछि। हमरा सबहक जिनगीए कोन अछि। जहिया मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही तहियो भाँटा-मिरचाइ रोपैक लूरि रहए आ आइयो ओही लूरिए जीबै छी। ने भाँटा-मिरचाइ संग छोड़ैए आ ने अपने ओकर संग छोड़ै छी।”

ओना धीरेन्द्रक विचार रामकृष्ण बाबूकेँ कटलपर नून छीटलकैन। जइसँ मन सहैम गेलैन। सहैम ई गेलैन जे अपन पुरबते जिनगी ने पश्चात जिनगीक जुआ छी। जिनगीक गाड़ीकेँ अगुआ-पछुआ दू धुरी होइ छै, जे कखनो आगूओ-मुहेँ चलत आ कखनो पाछुआ पेब पछुएबो करत मुदा जुआ एकेटा होइ छै जे सदिकाल आगूए-मुहेँ बनल रहैए...। रामकृष्ण बाबूक मनमे पश्चात जिनगी नाचए लगलैन- जेते दिन शिक्षण संस्थानमे रहलौं, उच्च कोटिक विद्यार्थीकेँ पढ़ेलौं, तैसंग अपनो उच्च कोटिक अध्ययन केलौं। जइमे पुस्तकालय सेहो सहयोगी भेल।

..मुदा आइ छोट-छोट बच्चाकेँ जे मिडिल स्कूल आ हाइ स्कूलक अछि तेकरा पढ़बै छी! की हमरा-ले ई उचित भेल? जँ अपना ढंगे पढ़ाएब, जेकर अभ्यास छल तँ ओ बच्चा नइ बुझि पौत आ जँ ओइ बच्चाक अनुकूल पढ़ाएब सीखब तँ ओ मतहानि भेल! मुदा उपए..?

सामंजस करैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“धीरेन्द्र, केतौ रही मौज-मस्तीसँ रही।”

रामकृष्ण बाबूक विचारमे सह दैत धीरेन्द्र बजला-

“सर, बगीचाक बेल हौउ आकि बाड़ी-झाड़ीक बेला[10] चाहे बोन-झाड़क बेली हौउ आकि चमेली-जूही सभ अपन परिचय अपने दइ छइ।”

धीरेन्द्रक बात जेना रामकृष्ण बाबूकेँ नीक लगलैन तहिना गोल-मोल मुड़ीकेँ घुमबए लगला...।

लगमे बैसल सुभद्रा टोकलकैन-

“बड़ीखान चाह पीना भऽ गेल। तहूमे मासक प्रेमी चाह छिहे तखन एतीखान भऽ गेल।”

ओछाइनपर सँ उठैत धीरेन्द्र बजला-

“ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीब। बैसल-बैसल देहो अकैड़ गेल।”

◌

शब्द संख्या : 1296, तिथि : 10 दिसम्बर 2015

[10] राजवेला, जेकर गाछ भाँटिक गाछ जकाँ होइ छइ।

दस

बजारक काज करि कऽ झंझारपुरसँ धीरेन्द्र रामपुरेक रस्ते अबैत रहैथ कि सीमामे प्रवेश करिते प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते अपन सभ किछु बिसैर गेला। साइकिलक सवारी रहितो, पशुक सवारीक चालि आबि गेलैन। अबैत-अबैत प्रो. रामकृष्ण बाबूक घरक पछुऐतमे आबि एकाएक ठमकैत रूकि गेला।

रस्तेपर सँ धीरेन्द्र हियबए लगला जे कियो भेटता तँ हुनकासँ रामकृष्ण बाबूक हाल-चाल बुझि लेब। बहू दिन भेँट भेना भऽ गेला। मुदा लोकक आबाजाही नहि देख धीरेन्द्र हिया कऽ घर आ घरक निच्चाँ- घराड़ीपर नजैर देलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना घराड़ी बिनु घरे कलपैए तहिना ने घरो बिनु लोक कलपैए। छहरदेवालीमे जे प्रवेश द्वार बनल अछि ओइमे ताला लगल अछि। धीरेन्द्रकेँ अपन पैछला बात सभ मन पड़ए लगलैन। केते सुन्दर बात रामकृष्ण बाबू कृष्णपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रममे बाजल छला, मुदा ओ बाजल आइ कहाँ रहलैन। कहुना-कहुना तँ नब्बे-एकानबे बर्खक उम्र तँ छैन्हे। तहूमे संयोगो नीक छैन जे पत्नियोँ जीविते छथिन। लगले धीरेन्द्रक मन आगू ससैर रामकृष्ण बाबूक परिवारपर गेलैन। बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाइक संग पोता-पोती, नाइत-नातिनसँ भरल परिवार छैन, मुदा अपना रहैले जे घर अप्पन कमाइसँ रामकृष्ण बाबू बनौलैन ओ आइ

किए भकोभन लगैए..? तहीकाल आगू दिससँ अबैत एक आदमीपर धीरेन्द्रक नजैर पड़लैन। लगमे ऐबते ओइ आदमीसँ पुछलखिन-

"अहाँक घर अही गाम अछि?"

"हँ।"

"की नाम छी?"

"फोचबा लोक कहैए, मुदा फोंचाइ दास नाओं छी।"

"रामकृष्ण बाबूकेँ चिन्है छिऐन?"

फोंचाइ कहलकैन-

"किए ने चिन्हबैन। केतेको काज-उदममे सहयोग केने छिऐन।"

'काज-उदमक सहयोग' सुनि धीरेन्द्र चपचपाइत बजला-

"वाह! तखन तँ अहाँ लगेक भेलिऐन। शरीरसँ नीके छैथ किने?"

धीरेन्द्रक बात सुनि फोंचाइ दास सकपका गेला। सकपका ई गेला जे प्रतिष्ठित लोककेँ जँ कोनो बाते ठेंस लगैन तँ ओहन बात नइ बाजी।

मुदा लगले मन आगू ससैर गेलैन। सामंजस करैत बजला-

"हमर घर कनी हटि कऽ हुनका घरसँ अछि। तँए सभ दिन एमहर एबे करै छी से बात नइ अछि। हमर अगवाहि पुवारिये भाग बेसी अछि, कहियो काल एमहर अबै छी तँए नीक जकाँ सभ बात नै बुझल अछि।"

फोंचाइ दासक विचार धीरेन्द्रकेँ नीक लगलैन। नीक ई लगलैन जे वेचारे जे किछु बजता ओ थाहल बजता।

बातकेँ आगू बढ़बैत धीरेन्द्र पुछलखिन-

"केते दिनसँ नइ भेँट भेला अछि।"

फोंचाइ दास-

"दिन-ठेकान कोनो लिखल तँ नहियेँ अछि, मुदा पैछला बेर, तीन साल पहिने जे आएल रहैथ, तइमे भेँट भेल छला। देहक सुरखी जे बुढ़क हेबा चाही से तँ आबिए गेल छेलैन।"

मुड़ी डोलबैत धीरेन्द्रक मुहसँ बहराएल-

"उमेरो बहुत भऽ गेलैन।"

फोंचाइ दासकेँ धीरेन्द्रक बातमे की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा धीरेन्द्रक बात सुनिते फोंचाइ दास बजला-

"ऍंह, हुनका बरबैर तँ हमरा गाममे एकोटा गाछो-बिरीछ ने अछि, आ उमेर कहै छिऐन।"

'गाछ-बिरीछ' सुनि धीरेन्द्र चौंकला जे गाछ-बिरीछक उदाहरण फोंचाइ दास किए देलैन! मुदा दोहरा कऽ एहेन बात पुछबो केना करबैन जे गाछ-बिरीछ एकठाम असथिर भेल धरतीपर ठाढ़ रहैए आ लोक चिड़ै जकाँ सौंसे दुनियाँ उड़ैए। ओह! भरिसक आवेशमे आबि फोंचाइ दास बजला अछि। होइतो अहिना छै जे आवेशेमे ने कियो बाल-बोधकेँ सुर्ज-चान कहै छैथ। मुदा धीरेन्द्रकेँ फोंचाइ दासक नाड़ीक एकटा नश भाँजपर चढ़लैन। चढ़लैन ई जे, ई आदमी हवाबाज भऽ सकै छैथ मुदा उड़नवाज नइ हेता। भाय कुत्ते किए लोकक संग रहैए आ हरिण किए पड़ाएल घुड़ैए। तखन तँ यएह ने हएत हरिणोकेँ प्रेमसँ पोसा बनाउ...। जहिना एकटा हाथक नाड़ी भेटने वैदजी रोग परेख दवाइ छोड़ै छथिन तहिना धीरेन्द्रो छोड़लैन-

"अँए यौ, जखन अहाँ कहै छी जे हमरो घर अहीगाम अछि तखन अहाँ सन गौआँ-घरूआ लऽ कऽ लोक इनार-पोखैर कटौत।"

धीरेन्द्रक बातकेँ फोंचाइ दास जेते बुझने होथि, जे बुझने होथि मुदा विचारमे लोच एलैन। बजला-

"भाय सहाएब, अहूँ जखन कहै छी जे हमरो घर कृष्णपुरे अछि तखन अहूँ कोनो आन नहियेँ भेलौं, पड़ोसीए भेलौं तँए...।"

फोंचाइ दासक बात सुनि धीरेन्द्र ठमकला। ठमकला ई जे ऐ आदमीमे इमनदारी रग-रग भरल छैन, तँए जँ एकटा विचार नजैरपर दिऐन तँ काजक गति आगू-मुहेँ बढ़ि सकैए। बजला-

"अँए यौ फोंचाइ भाय, गाममे अहाँकेँ एको पाइ मोजर नइ अछि जे एना निरीह जकाँ निरीहक बात बजै छी?"

फोंचाइ दासक मनमे फुलवाड़ीक ओ दुइभ नजैर पड़लैन जे फुलक संग फुलडालीमे सजि-सजि फूल-पत्तीक माला बनि देवालय पहुँचैए। मन पघिल कऽ रांग-रांग भऽ गेलैन। बजला-

"भाय सहाएब, अहूँ कि कोनो आन छी जे बजैमे लाज हएत। अहाँ नइ बुझै छिऐ जे गरीब आदमी घरक माटिक देवाल जकाँ होइए।"

बिच्चेमे धीरेन्द्र टोकलखिन-

"फोंचाइ भाय, अहाँ अपनाकेँ हीन-दीन किए बुझै छी, अहूँ समाजक अंग छी, जे विभव अछि ओकरे अंजलिसँ अरपित करैत चलू।"

धीरेन्द्रक विचार फोंचाइ दास नइ बुझि पेला। मन सिहकलैन-

बिहकलैन नै बल्कि चिहुँक गेलैन। कोनो सबालकेँ बुझि सवालो आ ओकर समुचित जवाब देब भेल सिहकब। दोसर भेल प्रश्न तँ बुझि पेलिऐ मुदा उत्तर नइ दऽ पाबि रहल छी, ओ भेल बिहकब। आ जे ने प्रश्न बुझै छी आ ने उत्तर बुझैक लूरि अछि ओ भेल

चिहकब...।

फोंचाइ दास बजला-

"भाय सहाएब, आइ पहुनमे भोजन होइ।"

धीरेन्द्र बजला- "देखियौ, समाजमे कियो निर्बल-निरीह नइ अछि, समाज एकबल छिऐ, जइमे अपनाकेँ साटि समाजकेँ सबल बनौल जाइ छइ। जइसँ समाज सबल बनैए।"

धीरेन्द्रक बात सुनि फोंचाइ दासक मन मगन भऽ गगनमे उड़ए लगलैन। बजला-

"भाय सहाएब, अहाँ तँ तेना भूषण-आभूषण पहिरा अपन बात रखलिऐ जे हमरा नजरिए-सँ पीछैड़ गेल, तँए कनी मुड़कुटियामे कहियौ।"

धीरेन्द्र कहलखिन-

"देखियौ, हम अनभुआर छी, अहाँ गौआँ भेने भुआर भेलिऐ तँए रामकृष्ण बाबूक विषयमे पुछलौं। नइ बुझल अछि। ई कोनो अधला नइ भेलइ। सभकेँ सब बात बुझले नइ रहै छइ। जँ नइ बुझल अछि तँ अहाँ कोनो दोसर गोरेसँ भेँट करा अपना काजे आगू बढ़ि जैतौं।"

फोंचाइ दासक मन ओहन फरिच पानि जकाँ भऽ गेलैन जे ने अपने गन्दा अछि आ ने कियो गन्दे कोनो चीज धोइए। तेहने ने फोंचाइयो दास समाजमे छैथ। किए फोंचाइ दास सन तीनि-जनियाँ परिवारमे दुनू प्राणी देह धुनि-दुनियाँक मनुखक एकटा परिवारक भार उठौने अछि। आ जखन उठौने अछि तखन किए ने ओहो...।

फोंचाइ दास कहलकैन-

"भाय सहाएब, चलू राधाचरण काका ऐठाम पहुचा दइ छी।"

राधाचरणक घर रामकृष्ण बाबूक घरसँ थोड़बे हटल। दस साल पहिने खोपिया विभागक चतुर्थ श्रेणीक पदसँ सेवा निवृत्त भेल छला। ओना रामकृष्ण बाबू आ राधाचरणक बीच जातीय दूरी सेहो छैन। दुनू गोरे दू जातिक छैथ। पढ़बो-लिखबमे दुनू गोरेक बीच अन्तर छैन्हे। जैठाम रामकृष्ण बाबू एम.ए; पी-एच.डी. छैथ तैठाम राधाचरण पहिलुका मैट्रिक फेल। ओना दोसर-तेसर साल परीक्षा देलासँ पासो कऽ सकै छला, मुदा रिजल्टक तीनियेँ मासक पछाइत नोकरी भऽ गेलैन। नोकरी भेलापर मन गवाही देलकैन जे नोकरीए-ले बेसी लोक पढ़ैए, आ से जखन भाइए गेल तहूमे जिनगी भरिक गारंटीक संग तखन अनेरे...। जँ आगूए पढ़ैक मन हएत तँ तइले स्कूल-कौलेजक डिग्री-डिप्लोमाक कोन खगता अछि। अपन विभागेकेँ किए ने समरपित भऽ सेवा करब, जइसँ नइ छह मासमे तँ सालमे परमोशन हेबे करत। तखन तँ भेल जिनगी केहेन जीब?

मुदा जहिना रामकृष्ण बाबूक परिवार बेटा-बेटी, पुतोहु-जमाए, पोता-पोती आ नाइत-नातिनसँ जगमग करैत तेकर विपरीत राधाचरणक परिवार। ने एकोटा सन्तान आ ने भैयारीए। मुदा जहिना कोनो फुलवाड़ी रस्ता-कातसँ दूर रहितो अपन फूलक परिचय सुगन्ध रूपमे राहीकेँ दइए तहिना विभागीय गुणसँ राधाचरण मण्डित भऽ गेल छला। जखन एक देशक इन्टेलिजेन्स दोसर देशक अपराधीकेँ चिन्हैए तखन घर-परिवारक तँ सहजे घरे-परिवार भेल। राधाचरण अपन जिनगीक भाँज लगबैत बुझि गेल छला जे मनुखसँ आगू परिवार भेल। जे माता-पिता, दादा-दादीसँ लऽ कऽ बेटा-बेटी, पोता-पोती धरिक भेल। मुदा एकर कोनो बिसवास कहाँ अछि जे सभकेँ एके रंग हएत। केकरो माए-बाप विहीन परिवार होइ छै तँ केकरो- किछु, केकरो किछु। जे बिसवास करै-जोकर थोड़बे भेल, मुदा तँए परिवार जिनगी लेल सुखदायी नै अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ। तखन तँ भेल जे

जे जेतइ छी से तेतइसँ लगल रहू। दू प्राणीक बीच परिवारमे राधाचरण अपन शेष जिनगीक बाट ताकि रहला अछि...।

फोंचाइ दासक संग धीरेन्द्र राधाचरण ऐठाम विदा भेला। आगू बढ़िते धीरेन्द्र फोंचाइ दासकेँ पुछलखिन-

“फोंचाइ भाय, सालमे कोनो पावैनक उपास करै छी की नइ?”

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनि फोंचाइ दास जेना पड़ले पौलैन तहिना धाँइ-दे कहलकैन-

“हँ।”

“कोन-कोन पावैनक उपास करै छी?”

‘कएटा आ कोन-कोन पावैन सालमे’ सुनि फोंचाइ दास ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे लऽ दऽ कऽ शिवरातिमे शिव-उपास करै छी, दोसर-तेसर बुझलो ने अछि तखन अनेरे किए झूठ बाजी...।

कहलखिन-

“अनेरे जे सालो भरि उपासे-उपास करैत रहब तखन देह-हाथ बुते कोनो काज कएल हएत, तइसँ नीक ने छी जे महावीरजी-स्थानमे अठबारे मंगले-मंगल मंगलो गबै छी आ शिवरातिमे शिव-उपासो करै छी।”

धीरेन्द्र बुझि गेला जे अपन बँचाउमे फोंचाइ दास अठबारेक चर्च केलैन...।

पाशा बदलैत पुछलखिन-

“अहाँ जे बाजल छेलौं-रामकृष्ण बाबूक तुरिया गाममे गाछो-

बिरीछ नइ अछि से की कहलिऐ?”

फोंचाइ दास बजला-

“से कि कोनो हम अपन विचारल कहलौं आकि लोकक-मुहेँ जे

सुनै छिऐ से कहलौं।”

फोंचाइ दासक बात सुनि धीरेन्द्रकेँ भेलैन जे ई आदमी बिल्कुल निश्छल-निष्कपट अछि। मन दहैल गेलैन। बजला-

“फोंचाइ भाय, गाछ-बिरीछक अपन दुनियाँ छै आ मनुखक अपन छइ। जहिना एकसँ बढ़ि एक नीक-नीक फूलो आ फलोक अछि तहिना मनुखोक दुनियाँमे एकसँ बढ़ि कऽ एक अछि।”

गप-सप्प करिते दुनू राधाचरणक घर लग पहुँचला। दुनू परानी राधाचरण अपन दिनका काजक समापन करैत, सौंझका साँझक ओरियानमे शान्त-चीते लागल रहैथ।

राधाचरणकेँ देखते फोंचाइ दास कहलखिन-

“काका, अभ्यागती लागत।”

अपरिचित धीरेन्द्रक चेहरा दिस देख राधाचरण फोंचाइ दासकेँ कहलखिन-

“जखन घरे छी तखन नइ सुखल तँ भुजलो खा, संग मिलि राति गुदस कैये सकै छी, नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ पूजा होइते अछि किने।”

धीरेन्द्र दिस नजैर फेरैत फोंचाइ दास बजला-

“हिनकर घर बगलेक गाम कृष्णपुर छिऐन।”

‘कृष्णपुर’ सुनि राधाचरण बजला-

“धीरेन्द्रकेँ चिन्है छिऐन।”

राधाचरणक बात सुनि धीरेन्द्र ठीठैक गेला। ठीठकैक अनेको कारणमे दूटा प्रमुख छेलैन। पहिल ई जे रामपुर आ कृष्णपुर दुनू सटल गाम, तखन हम राधाचरणकेँ चिन्ह नइ रहलयैन अछि, जखन कि ओ चिन्ह रहला अछि। मुदा लगले मन फरिच भऽ गेलैन। जे गौआँ होइथ

आकि पड़ोसी गौआँ, जे गाममे रहता, वएह ने मेला-ठेला, हाट-बजार आकि बाध-बोनमे भेटता। आ जे गाममेमे नइ रहता हुनका चिन्हैले लोक अमेरिका-इंग्लैण्ड थोड़े जाएत। दोसर ई भेलैन जे जइ सरधे राधाचरण पुछलैन, ओहन श्रद्धावान हम कहाँ छी, केना कहबैन..?

राधाचरण धीरेन्द्रसँ अपन प्रश्नक उत्तरक प्रतिक्षो करए लगला आ मने-मन शिनाख्त सेहो करए लगला। जहिना जहलक गेँटपर शिनाख्त केला पछाइत भीतर जाए दइ छै आ निकलै काल मुँह-कान छोड़ि शिनाख्ते पकैड़ ने बहरा सकैए। मुदा शिनाख्त तँ निसचित जगहपर निसचित जगह-ले ने होइए...।

राधाचरणकेँ मनमे फेर भेलैन जे देहमे जे कटल-खोंटल आकि जनमौए कोनो दागकेँ ने लोक शिनाख्त बुझैए। केकरो कपारमे फुटल-कटलक चेन्ह छै, मुदा ओ चेन्ह की सबहक एके रंग होइ छै, केकरो एहनो तँ होइते छै जे घा भेलहा दाग थोड़े दिनक पछाइत निरमूल मेटा कऽ चिक्कन भऽ जाइ छै...।

राधाचरणक मन फेर आगू घुसैक गेलैन। घुसैकते उठलैन जे हओ-भाव तँ शिनाख्तक एकटा अधार भाइए सकैए। जखन अधार भऽ सकैए तखन एहने अधारकेँ किए ने अधारिक धरना बना धारककेँ सिरमौर्ज करैत धारक धाराकेँ प्रवाहितो तँ कएले जा सकैए...।

मने-मन राधाचरण पानि-पानि हुअ लगला। जिनगी भरि इन्टेलिजेन्समे काज केलौं मुदा लोकक पीछड़ाह घाटकेँ नीकसँ नइ बुझि पेलौं जे केहेन माटिक पीछड़पन छी। मटियार माटिक पीच्छड़ छी कि चक्कैन माटिक आकि बर्फीली-पथरीली...।

फोंचाइ दास अपने मने मगन। धीरेन्द्रक किछु बात–जे टटके सुनने छला से–जेना मीठगर विचार बनि मनेमे नचैत रहैन। होनि जे बेर-बेर धीरेन्द्रक मुँह देखी। मुदा लगले ईहो भऽ जानि जे राधाचरण

काका ऐठाम छी, जँ हुनका दिस नइ तकैत रहब तँ मनमे तकलीफ हेतैन तँए फोंचाइ दास चेहरो देखैथ आ मने-मन आत्म निरीक्षण सहो करैथ...।

दस दरबज्जा जकाँ राधाचरणक दरबज्जा सजल। धीरेन्द्रकें कुरसीपर बैसबैत फोंचाइ दास अपनो बैसला। फोंचाइ दासकें राधाचरण कहलकैन-

“फोच, आँगनसँ चाह नेने आबह।”

‘फोच’ तँ फोचे, फुचिया कऽ कहलकैन-

“काकी कोन नौतारि छैथ जे दरबज्जापर नइ औती?”

फोंचाइ दासक बात सुनि राधाचरणक मनमे मिसियो भरि तिलमिलाहैट नै एलैन। एबो किए करितैन, जेहेन मन तेहने ने धनो होइए। कोनो कि राधाचरण नइ बुझै छैथ जे पढ़ल-लिखल लोक स्त्रीकें हजारो नाओं आ रूपो जनै छैथ मुदा फोंचाइ दास सन लोक तँ बड़-बहुत बुझत तँ स्त्रीकें धरवाली बूझत, सएह ने। जिनकर घर सएह ने घरक मलिकाइन। जखने मलिकाइन भेली तखने ने घर-दरबज्जाक मान-मरजादा रखती। मुदा से नहि, फोंचाइ दासकें बुझबैत राधाचरण कहलखिन-

“बौआ, गौआँ-घरूआकें जिनका काकी चिन्है छथुन, तैठाम तक जाइमे कोनो धड़ी-धोखा नइ हेतैन, मुदा अनठिया लग जाइमे तँ धखेबे करती किने। तोहूँ कि कोनो आन भेलह जे अँगना-घर जाइसँ धखेबह।”

राधाचरणक बात सुनि फोंचाइ दासक मन मानि गेल जे काका ठीके कहलैन। अनठिया तँ अनठिये भेला किने। अनभुआर जगह तँ भाइए गेल किने...।

फोंचाइ दास चाह आनए आँगन गेला। एकान्त जगह देख

धीरेन्द्र बजला-

“हमहीं धीरेन्द्र छी, भाय सहाएब।”

‘हमहीं धीरेन्द्र छी’ सुनि राधाचरण चौंकैत बजला-

“धन्य ओ धरती आ धन्य ओ समाज जे अहाँ सन सृजनकर्ता पैदा करैए, संग-संग ओहो धरती धन्य अछि जैठाम अहाँ सन लोकक पदार्पण होइए।”

फोंचाइ दास चाह नेने एलैन। तीनू गोरे चाह पीलैन। चाह पीला पछाइत राधाचरण फोंचाइ दासकें कहलखिन-

“काकियोकें कहुन जे धीरेन्द्र कियो आन नइ, पड़ोसीए छैथ, ओहो आबैथ।”

किरिण डुबि गेल। मुदा अन्हार नइ भेल छल। रामपुर-कृष्णपुरक बीच सभ दिना देखल-सुनल रस्ता धीरेन्द्रकें रहबे करैन तँए नअ बजे राति तक अबेर नहियें बुझैथ। तैबीच एके-दुइए दरबज्जापर चारि-पाँच गोरे आरो आबि गेला। मुदा सबहक नजैर धीरेन्द्रेपर कनखड़ल। जे अनठिया रहने पहिने हुनकर विचारकें ने विचारब उचित भेल।

राधाचरण मने-मन सोचैथ जे धीरेन्द्र किए एला, से तँ अपने ने बजता। दरबज्जापर छैथ, केना पुछबैन जे किए एलौं।

तैबीच धीरेन्द्र बजला-

“भाय सहाएब, किछु काजे आएल छी।”

सुनि राधाचरण आँखि-कान दुनू ठाढ़ केलैन मुदा बजला किछु ने। मनमे उठलैन- काजो तँ काज छी, केतौ वस्तुक लेब-देब होइए, केतौ विचारक लेब-देब होइए तँ केतौ सम्बन्धक लेब-देब होइए। जँ कोनो वस्तुक लेब-देब अछि आ किनको खगता छैन, तँ जे उचित रूप

अछि तइ रूपमे देल जा सकैए मुदा जँ कोनो ओहन विचार हुअए जे विचारसँ भिन्न हुअए, तैठाम केना देल जा सकैए..? कियो अपराध केला पछाइत अपन रक्षा लेल ओकील ऐठाम जाइ छैथ तँ कियो अपना ऊपर भेल अपराधक रक्षा लेल जाइ छैथ। दुनू तँ अपन जानेक गुहारि लगबए जाइ छैथ, मुदा की दुनू गुहारि एक्के अच्छत-फूलसँ थोड़े हएत..?

मुदा राधाचरण बिनु किछु बजने जहिना कियो अपन दरबज्जापर दुनू हाथ पसारि आगन्तुकक आगवानी करै छैथ तहिना दुनू आँखिक रूपसँ रूपायित होइत रहैथ जे मुँह खोलू कथी खगता अछि।

अपन विचारकें सेरियबैत धीरेन्द्र बजला-

“कोनो तेहेन काज तँ नहियें अछि मुदा एते तँ ऐछे जे जेते रामकृष्ण बाबूसँ सम्बन्ध बनल अछि, ओ केना जीवित रहत, ऐ लेल अपना भरि...।”

‘अपना भरि’ सुनिते राधाचरण साकांच भेला। साकांचक माने ई भेल जे हजारो रूपक कानून जननिहार होथि, आकि हजारो रंगक देहक दुख जननिहार डाक्टर-वैद होथि आकि हजारो रंगक काजकें जननिहार करिन्दा होथि, अपन मनकें ओइ जगहपर आनि कऽ तैयार राखब भेल जेतए जेकर जरूरत भेल। सौनक लटकल करिया मेघ जकाँ राधाचरणक नजैर धीरेन्द्रक अकासमे टपकए लगलैन...।

राधाचरण बजला-

“बोल किए रोकने छी। बाजू जे सम्भव ओ सम्भव भेल आ जे असम्भव हएत ओ असम्भव भेल, सएह ने?”

धीरेन्द्र बजला-

“रामकृष्ण बाबूक औझुका की जिनगी छैन, सहए बुझबाक

अछि।”

धीरेन्द्रक बात सुनि राधाचरणक मनमे ओइ अनुभवी कारीगर जकाँ भऽ गेलैन जे ओइ अनुभवमे दक्ष अछि...।

कहलखिन-

“जिनगी भरि अपन वृत्तिये यएह रहल, दोसरेक खोज-भाँज करैत एलौं अछि। बीस दिनक छुट्टी गामेमे साले-साल बितबैत रहलौं अछि, जइसँ ने समाज-अध्ययनक सिलेबस नमहर भेल जे कोनो अंश छुटि जाए जे बीस दिनक छुट्टीमे अध्ययन नइ कएल जा सकै छइ। तँए रामकृष्ण बाबूक जन्मसँ आइ धरिक सभ बातक जानकारी भेट जाएत। काल्हिए अही बेरमे रामकृष्ण बाबूक जेठ बालकसँ जे मोबाइलपर गप-सप्प भेल से कहै छी।”

टटका समाचारक चर्च सुनिते धीरेन्द्रक मन कलैश गेलैन। कलशल मने बिच्चेमे बजला- “उमेरो बहुत भऽ गेलैन। अस्सी-नबे बर्खसँ ऊपरे भऽ गेल हेतैन। अस्सी बर्खसँ ऊपर वएह ने जीब सकै छैथ जे कठपिंगल[11] होइथ।”

ओना एक सी.आइ.डी.क नजरिए राधाचरण धीरेन्द्रकें जइ रूपमे चिन्है छला तइ रूपमे जे बात धीरेन्द्र बजला ओ अछि। मुदा प्रश्नकें दोहराएब ओते जरूरतो नहियें अछि। अपने जे बुझै छी तेकरे मालिको ने अपने भेलौं। दुनियाँ बड़ीटा छै, बहुत पैघ-पैघ लोको भेबे केला अछि जँ हमरा उत्तरसँ धीरेन्द्रकें तुष्टि भेट जाइन, नीक बात भेल, जँ से नइ भेटतैन तँ अखन रामकृष्ण बाबू जीविते छैथ जा कऽ मुँहा-मुहीं भऽ आबैथ...।

राधाचरण बजला-

[11] लकड़ी रूपी देहक पिंगल, माने जीवैक सूत्र...।

“धीरेन्द्र बाबू, अहाँ समाजक कर्ता-पुरुख छिऐ, अहीं नइ हमहूँ छिऐ, सभ छैथ। समाज केना उठि कऽ ठाढ़ हएत आ फड़त-फुलाएत ई सबहक दायित्व भेल। आब तँ साँझ पड़ि गेल, रसे-रसे अन्हार पसैर-पसैर गढ़ियाइते जाएत। अहूँ अपना पएरे नइ, अनका पएरे छी, साइकिल अछि तँए बेसी बात तँ नइ कहब मुदा मनमे ई बात तँ नाचिते अछि जे जहिना पहिल दिनक प्रेम जखन प्रेमी-प्रेमिकाक मनमे उपकै छै तँ होइते छै, जे जिनगी भरिक सभ हरेलहा-भोथियेलहा खिस्सा-पीहानी बना पीआ दिऐन।”

राधाचरणक बात सुनि धीरेन्द्र मनकेँ मनबए लगला जे ‘रे मन धीर पकैड़ धैड़पर बैस।’ ने राधाचरण मरैले धड़फड़ करै छैथ, जइसँ पेटक बात बुझैमे हूसि जाएत आ ने अपने। तखन आइए सभ बात बुझि लेब जरूरी थोड़े छौ। जरूरी तँ एतबे ने छौ जे जे बात बुझए चाहै छेँ ओ बुझि जो...।

मनकेँ असथिर करैत धीरेन्द्र राधाचरणकेँ कहलखिन-

“भाय सहाएब, जेते बुझैक जिज्ञासा अछि, ओते बुझब अखन सम्भव नइ अछि, तँए आजुक जे बुझल अछि, तेतबे तकक सम्बन्ध ने जिनगीक भेल। काल्हि रहब कि नइ रहब आकि हमहीं रहब कि नइ रहब, तेकर कोनो ठेकान अछि।”

धीरेन्द्रक विचारकेँ जेना मुड़ी डोलबैत राधाचरण सूहकारि लेलैन। सूहकारि तँ लेलैन मुदा लगले रामकृष्ण बाबूक जिनगीक घाटे-घाट सभपर नजैर दौड़ए लगलैन...।

घाटे ने बाटो आ बाटे ने घाटो देखबैए। जैठामसँ जिनगीमे मोड़ अबैए। भलेँ ओकर मुँह जेमहर हुअए। माने ई जे नीको दिस बढ़ि सकैए आ अधलो दिस बढ़ि सकैए। तँए नीक हएत जे रामकृष्ण बाबूक नोकरीक पूर्वक जिनगी आ नोकरीक पछातिक जिनगीक बीच

घाट बना पैछला छोड़ि ऐगलाक जानकारी देब उचित हएत। मुदा तइसँ पहिने कौल्हुका गप-सप्पक चर्च–जे हुनका बेटाक संग भेल–करब बेसी नीक हएत। बेसी नीकक माने जे जखने मुँह दिससँ पाछू दिस बढ़ब, तखने पैछला बात स्वत: भेटैत जाएत जइसँ शंकाक केतौ सम्भावना नइ रहत। यएह वृत्ति ने जिनगी भरिक रहल। जँ शंकाक समाधान नइ होइत गेल तँ ओइ बीचमे सड़ैन करत जइसँ जिनगी सेराइत जाएत...।

राधाचरण बजला-

“धीरू बाबू, मनुखक जिनगी तेना ओझराएल अछि जे जेते सोझरा-सोझरा चलैक कोशिश करब ओते ओझरी लगैत जाएत।”

आगू बजैले राधाचरणक मुँह खुजले रहैन कि बिच्चेमे धीरेन्द्र बजला-

“से केना?”

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनि राधाचरणक मनमे मिसियो भरि कचोट नइ भेलैन जे बिच्चेमे बाट किए कटलक। मनमे खुशीक लहैर लहरए लगलैन। लहरए ई लगलैन जे शुरूहेसँ विचारक विचार धीरेन्द्र कऽ रहला अछि..! बजला-

“धीरू बाबू, जे प्रश्न अपने बुझए चाहै छी, ओ समैक हिसाबसँ, माने अखन जेते कालक समए अछि, तइ हिसाबे नमहर अछि। तँए ओकरा पटुआ जकाँ जड़ि-मुड़ी छपैट कहब। जँ केतौ कोनो शंका आकि खरोंच बुझि पड़ए तँ ओकरा तहियबैत दोसर दिन-ले रखि लेब। मुदा अखन मूल प्रश्नक उत्तर सुनि लिअ।”

राधाचरणक विचार धीरेन्द्रकेँ नीक लगलैन। बजला-

“जँ अपनेसँ किछु दिन पूर्व सम्बन्ध बनल रहैत तखन तँ दुनू गोरे–माने रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक–बीचक जे खाली समए रहल

ओकर भरपाइ भेल जाइत रहैत। मुदा आब उपाइये की।”

धीरेन्द्रकेँ अपन बीतल समैक महसूस करब सुनि राधाचरण सेहो मने-मन विचारलैन जे पहिने कौल्हुके समाद लगसँ उत्तर देब नीक हएत...।

बजला-

“काल्हि जेना रामकृष्ण बाबूक जेठ बालकसँ गप भेल, पहिने सएह कहि दइ छी। अखुनका समएसँ किछु पहिनेक बात छी। जखन पुछलयैन तँ कहला- ‘अखन अचेत अवस्थामे छैथ, आँखि मुनने छैथ, मुदा साँस चलै छैन।”

बिच्चेमे धीरेन्द्र पुछलखिन-

“खाएब-पीब छैन कि नहि?”

राधाचरण-

“सभ बन्न छैन।”

धीरेन्द्र-

“नमहर उम्रक जिनगी रामकृष्ण बाबू बितौलैन।”

धीरेन्द्रक मुहसँ ‘नमहर जिनगी’ सुनि राधाचरणक मन कनी अमतेलैन। अमताइते बजला- “हुनकर जिनगी देखैले ईहो देखए पड़त जे केहेन संकल्पक केहेन विकल्प पकैड़ चलला।”

राधाचरणक बात धीरेन्द्र नीक जकाँ नै बुझि पेला। जिज्ञासु नजैर राधाचरणपर गाड़लैन...।

राधोचरण बुझि गेलखिन जे भरिसक धीरेन्द्र नीक जकाँ नइ बुझि पेला। कहलखिन-

“धीरू बाबू, देहकेँ अधिक बरिस धरि ठाढ़ रखि लेब, एकबात भेल। मुदा जिनगीकेँ ठाढ़ केने रखि लेब, दोसर बात भेल।”

बातमे ओझरी देख धीरेन्द्र बजला-

“से की?”

धीरेन्द्रक विचारकेँ रोकैत राधाचरण बजला-

“दुनियाँमे सात अरब लोक छैथ, जँ एक-एक कथा सबहक देखब ते सात अरब भेल, जँ से नइ तँ जेना एक-एक गोरेक सैकड़ो कथा होइए तइ हिसाबे केते भेल। नइ जँ दुइयो-दुइयोटा कथा सुनब तँ चौदह अरब तैयो भेल। मुदा से सभ छोड़ू। एकेटा बात बुझि लिअ जे संकल्पित जिनगी जीब लेब, असान नइ अछि। सेवा-निवृत्तक पछाइत जखन शेष जिनगीक नक्शा बनौलैन तँ पठन-पाठनेक। मुदा से नइ निमहलैन।”

तेसर साँझ बीत गेल। जहिना तीन बजे राति आ तीन बजे भोरक सीमा नइ अछि तहिना तेसर साँझ आ दोसर रातिक बीच सेहो नहियेँ अछि...।

दरबज्जापर सँ उठैत धीरेन्द्र बजला-

“एक दरबज्जाक उसार भेल तँ दोसरक बैसार भेल। आगूक बात आगू होइत रहतै।”

◌

शब्द संख्या : 3304, तिथि : 16 दिसम्बर 2015

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-25-4

जगदीश प्रसाद मण्डल

जीवन–मरण



जीवन-मरण

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम

अंक
पहिल/08
दोसर/81

ISBN : 978-93-87675-30-8

दाम : ₹ 250/-

दोसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

JEEVAN-MARAN
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

1.

छह बजे भिनसुरका ड्यूटी रहने डाक्टर देवनन्दन पाँचे बजे ओछाइन छोड़ि नितकर्मसँ निवृत्त भऽ कपड़ा पहिरते रहैथ, कि चाह नेने पत्नी आबि टेबुलपर रखि चोट्टे घुमि पिता-ससुरकेँ चाह देमए गेली। पिता लग चाह रखि बजली-

“बाबू, बाबू...।”

कोनो सुन-गुन नहि देख नाकक साँसपर हाथ दऽ अन्दाजए लगली। साँस रूकल देख शीलाक मनमे उठलैन- पिता तँ तीन मास बिमारीसँ ग्रसित भऽ मरल रहैथ। मुदा हिनका तँ किछु ने भेलैन तखन किए साँस नै चलै छैन..! शीला असमंजसमे पड़ि गेली। मनमे फुरलैन अपने नै ने किछु जनै छी मुदा पति तँ डाक्टर छैथ। दिन-राति तँ यएह रमा-कठोलामे लगल रहै छैथ, पुछि लिऐन। फेर मनमे एलैन जे अखन शुभ-शुभ ड्यूटी जा रहल छैथ केना अशुभ बात कहबैन। फेर मनमे एलैन जे ड्यूटी तँ क्षणिक छी मुदा मृत्यु तँ स्थायी छी, तँए ऐ आगू ओकर तुलना करब बचपना हएत।

पिता लगसँ झटैक कऽ पतिक कोठरीमे जा शीला धमकली। चाह पीब डाक्टर देवनन्दन कोठरीसँ निकलैक तैयारी करैत रहैथ। धड़फड़ाएल पत्नीकेँ देख पुछलखिन-

“किछु मन पड़ल की?”

“नै किछु मन नै पड़ल।”

“तखन?”

“बाबू भरिसक मरि गेला। केतबो बाँहि पकैड़ डोलौलयैन मुदा आँखि नै तकलैन।”

पिताक मृत्युक बात सुनि देवनन्दन घबरेला नहि। बजला-

“माए केतए छैथ?”

“ओहो अपना कोठरीमे सुतले छैथ। जहिना सभ दिन पहिने बाबूकेँ चाह दइ छेलिऐन तहिना दइले गेलिऐन आकि देखलयैन।”

“चलू।”

कहि देवनन्दन आगू बढ़लैथ। सासुकेँ उठबैले शीला दोसर कोठरी दिस बढ़ली। कोठरीमे पहुँचते बजली-

“माए!”

“माए” सुनि सुभद्रा फुरफुरा कऽ उठली। तैबीच शीला चाह आनए गेली। रखल लोटाक पानिसँ सुभद्रा कुर्ड़ा करए लगली। कुर्ड़ा कऽ चाह पिलैन। देवनन्दन पत्नीकेँ सोर पाड़लैन। शीलाकेँ पहुँचते कहलखिन-

“बाबू मरि गेला।”

अपना कोठरीसँ सुभद्रो सुनलैन। मृत्यु सुनि दौगले पति लग पहुँचली।

मृत पतिकेँ देख सुभद्रा घबरेली नहि। मन पड़लैन अपन जिनगी। जहिया दुनू गोरे एक बन्धनमे बन्हि दुनियाँक लीला-ले संगी बनलौं, तेकरा साठि बरख भऽ गेल। ओइ बन्धनसँ पूर्ब ने हम किछु कहने रहिऐन आ ने ओ किछु कहने रहैथ। कहियो भेँटे नै भेल छला,

तहिना बिना किछु कहनहि संग छोड़ि चलि गेला। मुदा तँए कि साठि बर्खक संग मिलि कएल काजो चलि जाएत। जहिना अबै दिन परिवार भरल-पुरल छल, सासु-ससुर छला तहिना तँ आइयो बेटा-पुतोहु ऐछे, तहन सोग कथीक..!

मुस्की दैत सुभद्रा बेटा दिस तकलैन। तैबीच फुदकैत आशा आबि माएकेँ पुछलक-

“माए, बाबा मरि गेलखिन?”

आशाक बात सुनि सुभद्रा बजली-

“बाबा गाम गेलखुन।”

पिताक मृत्यु देख देवनन्दन सोचए लगला। पिताक अपन समाज छेलैन। जैबीच रहि जिनगी बितौलैन। मुदा हमर समाज तँ अलग भऽ गेल अछि। तँए उचित हएत जे ऐठामक समाज छोड़ि हुनका अपना समाजमे पहुँचा दिऐन। मृत्युक कोनो कर्म ऐठाम नै कऽ हुनके समाजक अनुकूल करब बढ़ियाँ हएत। शीलाकेँ कहलखिन-

“अहाँ तीनू गोरे ऐठाम रहू। गामेमे ऐगला सभ काज हेतैन। हम जोगार करए जाइ छी।”

कोठरीसँ निकैल ऐगला ओसारपर अबिते ड्राइवरकेँ ठाढ़ देख डाक्टर देवनन्दन कहलखिन-

“अस्पताल नइ जाएब। पेट्रोल-पम्पपर सँ तेल भरौने आबह। गाम चलैक अछि।”

बिना किछु बजनहि ड्राइवर गाड़ी लऽ निकैल गेल।

डाक्टर देवनन्दन कोठरीमे आबि दुनू बेटाकेँ जनतब दइले मोबाइलमे नम्बर टिपलैन। दयानन्द जेठ आ धर्मानन्द छोट बेटा। दयानन्द फोर्थ इयरक विद्यार्थी आ धर्मानन्द फस्ट इयरक। दुनू एक्के

मेडिकल कौलेजक छात्र। दयानन्दकेँ कहलखिन-

“बच्चा, बाबू मरि गेला तँए दुनू भाँइ गाम आउ?”

बाबाक मृत्युक समाचार सुनि दयानन्द कहलखिन-

“ऐ-ले गाम किए जाएब। आब तँ तेहेन बिजलीबला शवदाह बनि गेल अछि जे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि।”

दयानन्दक विचार सुनि देवनन्दन बजला-

“बच्चा, सभ जीव-जन्तुकेँ अपन-अपन जिनगी होइत अछि। जे जइ जिनगीमे जीबैत अछि, ओकरा-ले वएह जिनगी आनन्ददायक होइ छइ। जेना देखै छहक जे चीनीमे सेहो किड़ा फड़ैए, मिरचाइ आ करैलामे सेहो फड़ैए। तीनूक सुआद तीन तरहक होइ छइ। एक मीठ, दोसर कड़ू आ तेसर तीत। चीनीक किड़ाकेँ जँ मिरचाइ आकि करैलामे देल जाए तँ सोभाविक अछि जे ओ मरत। मुदा की मिरचाइक किड़ा आकि करैलाक किड़ाकेँ चीनीमे जीब सकत? कथमपि नहि। ओ किए मरत? ओ तँ अधलासँ नीकमे गेल? तहिना बाबू सेहो सभ दिन गाममे रहि जीवन-यापन केलैन। ई तँ संयोग नीक रहल जे तोहर माए सप्पत-किरिया दऽ बुड़हीकेँ ‘हँ’ कहौलैन। जइसँ दुनू गोरे मास दिन पहिने एला। सेहो एलाक तीनियेँ दिनक उत्तर गाम जाइले कच्छर काटए लगला। केते सप्पत दऽ-दऽ माए मास दिन घेरलखुन, नइ तँ तेसरे दिन चलि जइतैथ।”

पिताक बात सुनि दयानन्द बाजल-

“ई तँ बड़ आसचर्जक बात कहै छी, बाबू?”

दयानन्दक जिज्ञासा देख देवनन्दन बजला-

“कोनो आसचर्ज नहि। गामक दोसर नाओं समाजो छिऐ। जे शहर-बजारमे नै अछि। समाजमे बन्धन अछि जइ अनुकूल लोक

चलैए, जेकरा समाजिक बन्धन कहल जाइत छइ। ऐ बन्धनक भीतर धर्मक काज छिपल अछि, जेकरा सभ मिलि निमाहैत अछि। मुदा शहरमे से नइ छइ। कानून-कायदाक हिसाबसँ चलैए जइमे दया-प्रेम नइ छइ। प्रतिदिन बुड़हाकेँ दस गोरेक जिनगीक बात सुनब आ दस मिनट बजैक जे अभ्यास लगि गेल छैन से ऐठाम केना हेतैन। एतए सभ अपने पाछू बेहाल रहैए। के केकर सुख-दुख, जीवन-मरण सुनत। भरि पेट नीक अन्ने-तीमन खुऔने लोकक मन असथिर थोड़े रहि सकैए, जाधैर आत्माक सन्तुष्टी नै हेतइ?”

पिताक बात सुनि दयानन्द हुँहकारी दैत बाजल-

“कहुना-कहुना तँ तीन दिन पहुँचैमे लगत, ताधैर की कहब?”

“अखनो गाममे एहेन चलैन अछि जे शरीरसँ पराण निकैलते जरबैक ओरियान हुअ लगैत अछि। अर्थी रखैक चलैन नै अछि। तोरा सभकेँ अबैसँ पहिने दाह-संस्कार कऽ लेब। काजो तँ लगले सम्पन्न नहियेँ होइत अछि। कहुना-कहुना तँ पनरह दिन लैगे जेतह।”

“बड़बढ़ियाँ। सौंझुका गाड़ी पकैड़ दुनू भाँइ गाम आबि जाएब।”

मोबाइल ऑफ कऽ मने-मन देवनन्दन हिसाब मिलबए लगला। कमसँ-कम पनरह दिनक काज अछि। उसरैयोमे किछु समए लगबै करत। मोटा-मोटी बीस दिन लगि जाएत। बीस दिनक आकष्मिक छुट्टीक दरखास लिखए लगला।

दरखास लिख टेबुलपर रखि पिताक कोठरी पहुँच देवनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन-

“गाममे बीस दिन लगत, तइ हिसाबसँ सभ समान ओरिया लिअ। काजक समए अछि। तँए नीक-जकाँ तैयार भऽ चलैक अछि।”

कहि माए लग बैस गेला। शीला उठि कऽ चीज-वौस ओरियाबए चलि गेली। सुभद्राक चेहरामे सोग नै सुख[1] उमड़ैत रहैन। विचारक समुद्रमे डुमल छेली। मने-मन खुशी होइत रहैन जे हुनका अछैत जँ हम पहिने मरितौं तँ मनमे लगले रहैत जे शेष दिन हुनकर केहेन बिततैन। मुदा से भगवान सुनलैन। जहिना हाथ पकड़लैन तहिना पार-घाट लगा देलिऐन। हमरा आब की अछि, तेहेन भरल-पुरल फुलवाड़ी लगा देने छैथ जे केतौ हराएल रहब। उमेरोक हिसाबसँ नीके भेल। चारि बर्खक जेठो छला...।

माएकेँ विचारमे डुमल देख देवनन्दन टोकलखिन-

“माए..!”

मुस्की दैत सुभद्रा बजली-

“बौआ, एक्को मिसिआ दुख नै भऽ रहल अछि। ई तँ सृष्टिक नियमे छिऐ। तइले दुख कथीक?”

ओमहर शीला कपड़ो-लत्ता सेरियबै छेली आ मने-मन मुस्कियाइतो छेली। अनका जे हौउ, हमरा तँ सात गंगा नहेला फल भेटल। जेना अनका देखै छिऐ, अनका की अपन पितियौते भाएकेँ देखलयैन जे मरै बेरमे काका केना घिनबथिन। से तँ नै भेल। जिनगीमे कियो एहेन ओंगरी तँ नै देखाएत!

तैबीच ड्राइवर बाहरमे हौरन बजेलक। अवाज सुनिते देवनन्दन माएकेँ कहलखिन-

“माए, लगले हम अबै छी।”

कहि कोठरीसँ दरखास लऽ ड्राइवरकेँ ऑफिस दऽ अबैले कहलखिन। पुनः घुमि कऽ पिताक गोरथारीमे बैस देवनन्दन, तैयारीक

---

[1] सिनेह

प्रतिक्षा करए लगला। आँखि माएपर पड़लैन। एक्को पाइ माइक मुँह मलिन नहि, सोचए लगला। जहिना आँगनसँ घरक ओसारपर जाइले बीचमे सीढ़ी बनल रहैए, तहिना तँ परिवारोमे अछि। मन पड़लैन बाबाक सुनौल माए-बापक बिआहक कथा। केना नव परिवार बनि दुनू गोरे बाबा-दादीकेँ जिनगीक पार लगौलैन। ओहने समए तँ आइ हमरो संग आबि गेल। माएकेँ किए मनमे कोनो तरहक अभाव औतैन। एते दिन पिताक आशपर जीलैन आब हमरा दुनू परानीपर आबि गेली। जहिना पत्नीक सहयोग पतिकेँ आ पतिक आशा पत्नीकेँ बनल रहैत, तहिना तँ पतिक परोछ भेने बेटाक भऽ जाइत।

फेर मन पड़लैन गामक स्कूलमे अपन नाओं लिखौलहा दिन। नीक मनुख बनैले पिता चारि बर्खक अवस्थामे कान्हपर उठा भगवान रामक खिस्सा सुनबैत नाओं लिखा देलैन। ज्ञानक प्रति एते प्रेम केना कम पढ़ल-लिखल आदमीमे आएल? केना सभ माए-बापक हृदैमे सरस्वती बैसल रहै छथिन? भलेँ समाजिक कुबेवस्था आ सत्ताक लापरवाहीसँ नै भऽ पबैत अछि, जिनगीक मजबुरी अन्हारक काल-कोठरीमे धकैल दैत अछि। मुदा हमरा से नइ भेल। गामक स्कूलमे लोअर प्राइमरी धरि पढ़लौं। लोअर पास करिते मिडिल स्कूलमे नाओं लिखबैले रूपैआ देलैन। चारि बर्खक पछाइत मिडिल स्कूलसँ निकललौं। फेर हाइ स्कूलक खर्च देलैन चारि बर्खक उपरान्त हाइ स्कूलसँ निकललौं। संयोगो नीक रहल आर.के. कौलेज- मधुबनीमे, साइंसक पढ़ाइ शुरू भेल। जहिना उत्साह कौलेजमे नाओं लिखौने अपना रहए, तहिना नव-नव शिक्षक बनने प्रोफेसरो सभकेँ रहैन। ओना ताधैर शिक्षो विभागमे चोर-दरबज्जा खुजि गेलइ। मुदा अखुनका जकाँ बड़की गाड़ी पास होइ-जोकर नहि, छोट-छीन एकपेरिया। बहुत नीक विद्यार्थी तँ हमहूँ नहियेँ छेलौं मुदा बहुत भुसकोलो नइ छेलौं। जँ भुसकोल रहितौं तँ पास केना करितौं? कहियो

फेल नै भेलौं।

डाक्टर बनैक विचार तँ मनमे आएलो नै छल। विचार छल बी.एस.सी. केलाक उपरान्त हाइ-स्कूलक शिक्षक बनैक। चिकित्सा जगतमे बिर्ड़ो उठल। दरभंगामे अस्पताल खुजल आ डाक्टरीक पढाइयो शुरू भेल। आइ.एस.सी. पास केलहा संगी सभ मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखबैक विचार हमरो देलक। पिताकेँ कहलयैन। पढ़बैक इच्छा पहिनैसँ रहैन। नाओं लिखबैक विचार दऽ देलैन।

अगुआएल परिवारक, अधिक खेतबला परिवारक पढ़ि-लिख नोकरी करैक पक्षमे नइ रहैथ। गरीब परिवारक बच्चा, अभावमे पढ़ि नै पबैत रहए। जे लाभ हमरो भेटल। मुदा आब बुझै छी जे डाक्टर बनि गाम छोड़ब, परिवार-समाजकेँ छोड़ब भेल। जखन हम डाक्टर बनलौं। रोगक इलाज करब काज भेल तखन की गाममे रोग आ रोगी नै अछि...।

जहिना अकास और पृथ्वीक बीचक सीमा होइत, जैठाम पहुँच चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइए, तहिना डाक्टर देवनन्दनक बुधि लसैक गेलैन। ने आगूक बाट देखैथ आ ने पाछू हटल होइन। मन घोर-घोर होइत रहैन। माए दिस, मुड़ी उठा तकलैन। माइक पजरामे बैसल आशाकेँ अपना धुइनमे मगन देखलैन। आशापर सँ नजैर ससैर दुनू बेटापर गेलैन। डाक्टरी पढ़ैत बेटापर नजैर पड़िते ऐगला पीढ़ी दिस देखए लगला। जहिना हम माए-बाबूक सेवाक फल डाक्टर छी तहिना तँ ओहो दुनू भाँइ हमर हएत। मुदा जे सुख-सुविधा पाबि हम दुनू गोरेसँ अलग भऽ जीवन-यापन कऽ रहल छी, तहिना तँ ओहो दुनू भाँइ हमरासँ अलग भऽ जीवन-यापन करत। मुदा शरीरक तँ गति अछि- बालपन, युवापन आ वृद्धापन। ओ तँ सबहक लेल अछि। बालपन आ वृद्धापनमे एक-दोसरक जरूरत सभकेँ होइत अछि। जेकरा अपन

बुझि सभ सेवा करैत अछि ओ हजारो कोस दूर रहए लगैए। तखन सेवा केना हेतइ? अगर जँ दुनियाँ भरिकें अपन बुझि सेवा करी तँ एतेक खून-खच्चर, छीना-झपटी, चोरी-छिनरपन, लूट-खसोट किएक होइत अछि?

विचित्र स्थितिमे देवनन्दन ओझरा गेला। मनमे एलैन हम डाक्टर छी। हमरा सन-सन केतेको डाक्टर अस्पतालसँ शहर धरि छैथ मुदा सेवा रहितो जाति आ दलालक कोन खगता छइ। देखै छी जे जिनका जातिक आ दलालक अधार छैन ओ दिन-राति रूपैआ ठिकियबैत रहै छैथ आ जिनका क्षेत्रीय आकि जातिक अधार नइ छैन, ओ सभ गुण रहितो माछी मारै छैथ।

फेर मनमे उठलैन, जहिया हम डाक्टर बनलौं तहिया मात्र थर्मामीटर आ आला रहए। तहिना अस्पतालोक स्थित छेलइ। मुदा आइ अनेको यंत्र, औजार अस्पतालोमे भऽ गेल आ अपनो कीनलौं। जइसँ चिकित्सा असान भेल, आ आरो असान भऽ रहल अछि। मुदा केकरा-ले? की अखन दबाइ आ चिकित्साक अभावमे लोक नै मरैए? सभकें चिकित्साक सुविधा भेट गेल छइ? की रोग लोककें पुछि-पुछि होइ छइ? जँ से नहि, तँ हमरा स्वयं अपन सीमा-सरहद बूझक चाही। जँ से नइ बुझब तँ जहिना झाँट-बिहाड़िमे कीड़ी-मकौड़ीसँ लऽ कऽ चिड़ै-चुनमुनी नष्ट होइए, तहिना भऽ जाएब। जँ सएह हएब तँ अनेरे एते बुधिकें किए रगड़ै छिऐ? वेचारी ओहिना खसल खेत जकाँ परती रहितैथ। जैपर धिया-पुता परो-पैखाना करैत आ खेलबो-धुपबो करैत..!

तैबीच स्टाफ-सँ छात्र धरिक झुण्ड पहुँच कहलकैन-

“डाक्टर साहैब, लहासकें की करए चाहै छिऐ?”

आँखि उठा देवनन्दन सबहक चेहरा देख मुस्कियाइत बजला-

“गाममे जरेबैन। ऐठाम सभ सुविधा रहितो हिनक विचारक प्रतिकूल रहत। तँए बीचमे हम अपन सिर दोख नै लेब। सौंसे जिनगी गाम आ समाजक बीच बितौलैन, तँए हमर फर्ज होइत अछि, हिनका लऽ जा समाजकें सुमझा दिऐन। हिनका निमित्ते जे काज हएत ओ समाजक विचारानुसार हएत। जँ से नइ हएत तँ समाजक नजैरमे काँट बनि जाएब। जे नइ चाहै छी।”

देवनन्दनक विचार सुनि सभ गुम्म भऽ गेला। तैबीच सीनियर डाक्टर सबहक झुण्ड सेहो पहुँचलैन। मुदा किनको मनमे सोग नहि। सबहक मन प्रफुल्लित। परिवारमे ने कहियो काल जन्म आ मृत्यु होइए मुदा अस्पतालमे तँ से नहि, सभ दिन जनम-मरण होइते रहैए। मुस्की दैत डाक्टर कृष्णकान्त देवनन्दनकें कहलखिन-

“आगूक काज किए रोकने छी? पहिने शवदाहगृहमे फोन करि कऽ बुक करबए पड़त। जखुनका समए भेटत तइ हिसाबसँ ने जाएब?”

डाक्टर कृष्णकान्तक विचार सुनि देवनन्दन गुम्मे रहला। मनमे नाचए लगलैन जे स्टाफ आ जुनियर जे कहलैन हुनकर जवाब तँ दऽ देलिऐन। मुदा हिनका की कहबैन। जँ विचार कटबैन तँ मनमे दुख हेतैन। हमरासँ बेसी दिन दुनियाँ देखने छैथ। अपन विचारकें मनेमे रखि देवनन्दन बजला-

“हम तँ बेटा छिऐन मुदा माए तँ जिनगीक संगी रहलखिन, तँए हुनकर विचार बुझब जरूरी अछि।”

सभ कियो माइक विचार सुनैले कान ठाढ़ केलैन। सुभद्रा बजली-

“भलें ईहो घर-दुआरि अपने छी मुदा बनौल छिऐन देवक। हिनकर बनौल गाममे छैन। अपन गाछी-कलम छैन, जे पुस्तैनी

छिऐन। मुइलहा-सुखलाहा गाछ सबहक जगहपर नवका गाछो लगौने छैथ। पतियानी लगा कऽ पैछला पुरखा सभ सजल छैथ, तँए हम ओइ पतियानीकें छोड़ि अनतए केतौ दऽ अबिऐन, ई नीक नै बुझि पड़ैए। सिरिफ लहासे जरबैक प्रश्न तँ नै अछि अन्तिम क्रिया धरि निमाहैक अछि। मासे-मास, साल भरि छाया हेतैन। साले-साल, बरखी हेतैन तैपर सँ पितृपक्ष सेहो हेतैन।”

सुभद्राक विचार सुनि सभ मुँह बन्न कऽ लेला। तैबीच ड्राइवर आबि बाजल-

“गाड़ी तैयार अछि।”

ड्राइवरक बात सुनि देवनन्दन कपड़ा बदलैले गेला। कपड़ा बदैल कऽ आबि गाड़ीमे लहासकें चढ़बैक विचार केलैन। सभ कियो रहबे करैथ हाथे-पाथे लहासकें उठा गाड़ीमे चढ़ौलैन। लहासकें गाड़ीमे चढ़ा सभ कियो अपनो बैस गाम विदा भेला।

गाड़ीमे बैसते देवनन्दनक मनमे एलैन उमेरक हिसाबसँ पिताजीक मृत्यु उचिते भेलैन। अस्सी बरख धरि लोक बुढ़ होइत अछि आ ओइसँ ऊपर भेलापर झुनकुट बुढ़ भऽ जाइए। जहिना पाकल धान कि कोनो अन्न कटलापर अधिक छिजानैत नै होइत मुदा वएह जखन झुना जाइत तँ हवो-बिहाड़िमे आकि ओहुना तुड़-तुड़ खसए लगैए, तहिना तँ मनुखोक शरीर होइत अछि? अधिक बएस भेलापर, माने झुनकुट बुढ़ भेलापर शरीरक अंग सभ क्रियाहीन हुअ लगै छै, जइसँ रंग-बिरंगक बाधा सभ उपस्थित हुअ लगैत अछि। बाधा उपस्थित होइते केतेको रंगक रोग-वियाधि आबि जाइत अछि। नीक भेलैन जे अखन धरि अपन सभ क्रिया-कलाप करैत रहला। सिरिफ प्राण-वायु शरीरसँ निकललैन।

सुभद्राक मनमे खुशी ऐ दुआरे होनि जे अधपक्कू भऽ नै पूर्ण पकि

कऽ पति दुनियाँ छोड़लैन।

शीला आ आशा-ले धैनसन। बेसी-सँ-बेसी हम सभ हुकुम निमाहैवाली छी। परिवारक हानि-लाभसँ हमरा की। अखन धरि परिवारमे चारिम सीढ़ीपर छेलौं, आब तेसरपर एलौं। तहिना आशाक मनमे रहै जे हमर तँ कोनो हिसाबे ऐ परिवारमे नइ अछि आ ने रहत। जहिना घर आ आँगनक बीच सीढ़ी बनल रहै छै जइसँ लोक घर-सँ-बाहर होइए आ बाहरसँ घर जाइए, तहिना।

माइक चेहरापर देवनन्दन नजैर देलखिन तँ बुझि पड़लैन जे पैछला कोनो बात मन पड़ि गेल छैन, जइसँ चिन्तित जकाँ भऽ गेल छैथ। मनमे उठलैन, माइक चिन्ता मनसँ निकलतैन केना?

युक्ति सुझलैन जे आन कियो जँ किछु बाजत तइमे माइयक चिन्ता नै मेटाएत। भऽ सकैए जे ओइ बातपर धियाने नै दैथ। तँए नीक हएत जे किछु पुछि दिऐन, जइसँ आन बात मन पाड़ैमे पैछला बात दबि जेतैन। नीक युक्ति फुरने मुस्की दैत पुछलखिन-

“माए, जखन हम छीहे तखन तोरा चिन्ता किए होइ छौ?”

‘चिन्ता’ सुनि सुभद्रा बजली-

“बौआ, पुरना बात मन पड़ि गेल छेलए तँए कनी चिन्ता आबि गेल।”

बिच्चेमे लाड़ैन चलबैत शीला बजली-

“बुढ़ोमे पुरना बात मने छैन?”

“कनियाँ, अहूँ एक उमेरपर आब एलौं, तँए कहै छी, हमरा दादी कहने रहैथ जे जहिना माटिक कोठी बना लोक अन्न रखैए, जे बहुत दिन तक सुरक्षित रहैत, तहिना मनुखकें अपन जिनगीक कर्म-ले कोठी बना राखक चाही। सभसँ पहिने गणेशजी बनौलैन। जहिना अन्नक

खढ़-भूस्सा, सूपसँ फटैक कऽ हटा दइ छिऐ तहिना जिनगीक कर्मक जे भूस्सा-भुस्सी अछि, ओकरा हटा कर्मकेँ मोन राखक चाही।"

सुभद्रा बजिते छेली आकि बिच्चेमे आशा जोर दैत पुछलकैन-

"कोन पुरना गप छिऐ?"

आशाक मुँह देख सुभद्रोक मुँहमे पुरना अँकुर फुटलैन। मुस्की दैत बजए लगली-

"बुच्ची, बहू-दिनका कथा छी, अपने गाममे दू समुदायक छौड़ा-छौड़ीकेँ प्रेम भऽ गेलइ। बच्चेसँ दुनू झंझारपुर हाट माए-बापक संग जाइत-अबैत रहए। गाममे दुनूक सभ काज-उदम फुट-फुट रहइ। ने खेनाइ-पिनाइ एकठीन होइ आ ने पावैन-तिहार। मुदा खेती दुनू गोरेक एक्के रहइ।

..दुनू गोरे तरकारीक खेती करए आ हाटमे जा-जा बेचैत। गामेसँ दुनू गोरे संगे जाए आ हाटोपर एक्केठाम बैस तरकारी बेचए। जखन दुनूक बच्चा कनी चेष्टगर भेलै तँ कोनो-कोनो समान कीनि-कीनि आनए लगलै। दुनू संगे जाइ। एकटाकेँ ने हराइक डर रहैत मुदा संगीक संग तँ बच्चा कम हेराइत अछि। बच्चेसँ दुनू गोरेकेँ वैचारिक मिलान हुअ लगलै। अपना सन-सन लोककेँ हँसी-चौल देखै-सुनै। देखा-देखी दुनू गोरेक बीच, हँसी-चौल हुअ लगलै। हाटमे तरकारी बेचैक लूरि आ खेतमे गोला-फोड़ैक, पटबैक, रोपैक, कमठौन करैक लूरि सेहो भऽ गेलइ। दुनूक नव दुनियाँ बनए लगलै, किएक तँ बाप-माएसँ पाँच-दस किलोक मोटा फाजिल उठबए लगल। जइसँ परिवारक काजो आ आमदनियोँ दोबरा गेलइ। बीचमे एकटा घटना घटलै।"

बिच्चेमे फुदैक कऽ आशा पुछि देलकैन-

"की घटना?"

"बुच्ची, झूठ की साँच से भगवान जनथिन। मुदा गाममे चरचा चलए लगल। तना-तनी बढ़ए लगल। जहाँ-तहाँ गारि-गरौवैल आ पकड़ा-पकड़ी शुरू भऽ गेल। गामक जेते मुँहपुरुख छला सभकेँ अपने-अपने अपेछितसँ कहा-कही हुअ लगलैन। कखनो काल माथा ठंढा होइ, नइ तँ बेसी काल गरमाएले रहए लगलै। मुदा पनचैती के करत से पंचे ने एक्कोटा गाममे। सभ मुँहपुरुख अपनेमे कनफुसकी कऽ पनचैतीक समए निर्धारित कऽ दुनू गोरेक बापकेँ कहि देलखिन। हाट-बजारक लोक दुनू गोरे रहबे करए, जवाब देलकैन जे पंच हम हुनका मानब जे निष्पक्ष होथि।

..मुँहपुरुखक बीच दोसर उलझन ठाढ़ भऽ गेल। जँ एक समुदायक रहैत तखन तँ दोसर ढंगसँ पनचैती धरा कएल जा सकै छल मुदा से नहि, दू जाति दू सम्प्रादायिक बीचक विवाद छल! ..सभ मुँहपुरुखक माथ चकरा गेलैन। गाममे एक्को गोरे शेष नहि, जे एक पक्ष नै भऽ गेल होथि। तकैत-तकैत बुड़हापर नजैर पड़लैन। सभ दिन तँ बुड़हा अपन खेत-पथारसँ परिवार धरि रहला। गामसँ ओतबे मतलब रहैन जे मुरदा डाहए जाथि, बरियाती पुड़ैथ, भोज खाथि, केतौ अगिलग्गी होइ तँ जाथि। पर-पनचैतीक लूरि नहि, मतलबो नइ रहैन। आ कियो पुछबो ने करैन।"

हँसैत शीला बजली-

"एहेन सोहल-सुथनी बुड़हा छेलैन?"

पुतोहुक बात सुनि सुभद्राक आँखिमे सिंहक ज्योति एलैन। उत्साहित होइत बजली-

"कनियाँ, की-की लीला भेल से की कही। बुड़हाक भीर तँ कियो जाथि नहि, मुदा हमरा भरि-भरि दिन बरदबए लगल। अपन काज सभ खगए लगल। हमरा लग जे आबए तँ तेना कऽ अपन बात

कहि दिअए जे हम 'हँ' कहि दिऐ। जइसँ हमर विचारे उधिया गेल। तखन बुड़हाकेँ कहलयैन। जखने कहलयैन आकि फरैक उठला जे गाममे की केतए होइ छै से हम नै देखै छी। खाइ-पीबै काल सभ एक भऽ जाएत आ जखन इज्जत-आबरूक बेर औत तँ पड़ा जाएत। एहेन गामसँ हटले रहब नीक। 'जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए चोरा।' एहेन गामक कुचालिमे हमरा नै पड़ैक अछि। भने अपन नून-रोटीक ओरियानमे समए बितबै छी आ शान्तिसँ रहै छी...।

..एक्के-दुइए सभ आबि-आबि कहए लगला। हारि कऽ हुनका बुझबैत-बुझबैत सुढ़िएलौं। मानि गेला। चारि बजेक समए निर्धारित भेल। सौंसे गामक लोक एकत्रित भेला। आँखिक देखलाहा तँ एकौटा गवाह नहि, मुदा दुनूक[2] क्रिया-कलापसँ साबित भऽ गेलइ। एक मतसँ सभ सहमत भऽ गेला जे दुनूक बीच सम्बन्ध अछि। जखन सम्बन्ध अछि तखन निराकरण हुअए...।

..गुन-गुनी फुस-फुसी बैसारमे शुरू भेल। चुपचाप बुड़हा सभ देखैत-सुनैत रहैथ। गुन-गुनी, फुस-फुसी जोड़ पकड़ए लगल। जोर पकड़ैत-पकड़ैत हल्ला हुअ लगल। दुनू दिस गाम बँटा गेल। एक पक्षक कहब रहै जे एहेन-एहेन सम्बन्ध कोन समाजमे नै होइ छइ? कोनो कि अपने गामक पहिल घटना छी, आइ धरि की भेलइ। कहियो कोनो मुँह दुबराहाकेँ चारि थापर मारल गेलै तँ केकरो पाँच-दस रूपैआ जुरिमाना भेलइ...।

..दोसर पक्षक कहब रहै जे जाति-सम्प्रदायक बन्धन काँच-सूतक बन्धन छी। एक वृत्ति, एक उमेरक लड़का-लड़की जँ अपन जिनगीक निर्णए स्वयं करए चाहैए तँ समाजकेँ ओइमे प्रोत्साहन करबाक चाही।

[2] लड़का-लड़की

..दोसर विचार बुड़हाकेँ जँचलैन। अपनो निर्णए दऽ देलखिन। ले बलैया! एक पक्षकेँ तँ खुशी भेल मुदा दोसर पक्षक जे ऐगला-वाहन रहै, ओ बुड़हाक गट्टा पकैड़ कहलकैन जे बड़ पनिचैतियाक सार बनलैथ हेन!

..गट्टा पकैड़ते बुड़हाक नरसिंह तेज भऽ गेलैन। सभ बुझबो ने केलक। हाँइ-हाँइ कऽ बुड़हा चारि-पाँच थापर ओकरा मुँहमे लगा देलखिन। लगक लोक कियो एक थापर देखलक तँ कियो दू थापर। मुदा बुढ़ो आ मारि खेनिहारो पाँच थापर बुझलक।

..गाममे सना-सनी भऽ गेल। दौग-दौग कऽ सभ अपना-अपना अँगनासँ लाठी आनि-आनि दू साइड भऽ गेल।

..अपन-अपन घरबलाकेँ लाठी लऽ-लऽ जाइत देख स्त्रीगणो सभ दौग-दौग आबए लगली। ओना मारिक डर सभकेँ होइते छइ।

..एक बेर 1942 इस्वीक एहने घटना पहद्दीमे भेल रहइ। जइमे लड़का-लड़कीकेँ आगि लगा घरेमे जरौल गेल रहइ। जेकर परिणाम हत्याक मोकदमा चलल आ एकतीस गोरेकेँ आजन्म कारावास भेल।

..गामक स्त्रीगण ढेरिया गेली। कियो बजै जे मनुखक जिनगीकेँ मनुखक जिनगी बना जीबैक चाही, तँ कियो बजै जे कुल-खानदानक नाक-कान कटौलक। कियो-किछु तँ कियो-किछु बजए लगल। सभ अपने-अपने बजैमे बेहाल। जहिना पुरुख तहिना स्त्रीगण। मुदा तत्खनात झगड़ा रूकि गेल। सभ पुरुखकेँ अपन-अपन घरवाली लाठी छीन-छीन बाँहि पकैड़-पकैड़ अपना-अपना आँगन लऽ गेली। गामक खेलौनाकेँ सरकारी खेलाड़ी पकड़लक। रंग एलइ। दुनू पक्षक जेते पंच पनचैतीमे रहै, सभकेँ कोट-कचहरीसँ लाट-घाट पहिनेसँ रहैन। नव खेलाड़ी-ले नव खेल आ नव फील्ड तैयार भेल। दुनू परानीकेँ मारि-पीटक मोकदमामे फँसा देलक। जे पच्चीस बर्खक पछाइत हाइ-

कोर्टसँ फड़ियाएल।"

आत्म विभोर भऽ सुभद्रा बेटा-पुतोहु आ पोतीकेँ अपन जिनगीक कथा सुनबैत रहथिन। जहिना एकाग्र भऽ देवनन्दन सुनै छला, तहिना शीलो। आशाक बुधिमे बात अँटबे ने करैत, तँए कखनो दादीक बातो सुनैत आ कखनो बाबाक अर्थियो दिस देखैत।

चौअन्नियाँ मुस्की दैत बिच्चेमे शीला सासुकेँ पुछलैन-

"माए, जहलो देखने छथिन?"

पुतोहुक प्रश्नसँ सुभद्राकेँ दुख नै भेलैन। मनमे एलैन जे भरिसक जिज्ञासा जागि रहल छैन। ओना देवनन्दनक नजैर सेहो माइयेपर अँटकल रहैन मुदा चुपचाप सुनैक इच्छासँ कान पथने छला।

सुभद्रा कहए लगलखिन-

"कनियाँ, बुड़हा-संग तँ हमहूँ हाइ-कोट धरि लड़लौं। मुदा हाकिमक आगू दुइए दिन जाइ छेलौं। जखन ममिला भेल तखन जमानत करबए जाइ आ जइ दिन पुछै जे गलती केलौं आकि नहि, तइ दिन।"

शीला पुछलकैन-

"जहलमे की सभ होइ छै से तँ नै देखलखिन?"

सुभद्रा बजली-

"नै कनियाँ! झूठ केना बाजब। जे नइ देखलिऐ से केना कहब। भगवान सबहक देहमे रोइयाँ देने छथिन केकरो आगि किए उठेबै।"

शीला-

"बुड़हा, केतेक बेर जहल गेल छथिन?"

बुड़हाक नाओं सुनि सुभद्राक मनमे खुशी एलैन। मुस्की दैत बजली-

"अपने-मुहेँ एक्कैस बेर कहने छैथ। ओना देखिऐन तँ हमहूँ मुदा हमरा ठेकान नै अछि।"

"भेँटो करए जाथिन?"

"कहू, केना नै जैतिऐन। खाइ-पीबैक वौस मनाही केने रहैथ मुदा तमाकुल-चून दऽ दऽ अबिऐन।"

"देख कऽ कनबो करथिन?"

"कनितौं किए! कोनो कि नै बुझिऐ जे दस-पाँच दिनमे फेर निकलबे करता। तइले कनितौं किए। दस-पाँच दिन तँ लोक कुटमैतियोमे जा कऽ रहिते अछि।"

"बुड़हासँ झगड़ो होनि?"

"झगड़ा किए होइतए। हँ, तखन घरक काजमे कहा-कही कहियो काल हुअए। मुदा ओ हिसाब जोड़ि कऽ बुझा दैथ। मन मानि जाए। एक बेर अहिना भेल बौआ बिआह-ले।"

'बौआक बिआह' सुनि आशो चौकन्ना भेल आ शीलो देह-हाथ समैट सुनैले कान ठाढ केलैन। मुदा देवनन्दनमे कोनो तरहक उत्सुकता नहि।

"बौआक बिआह-ले की भेलैन?"

"बौआ जखन पढ़िते रहए तखन विचार देलिऐन, समाजमे बौओसँ छोट-छोट बच्चा सभकेँ बिआह होइ। जखन समाजमे रहै छी तखन तँ समाजक संग चलए पड़त। मुदा बुड़हाक विचार रहैन जे जखन देव पढ़ि कऽ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाएत तखन बिआह करब। हमरा हुअए जे ऐ जिनगीक कोन ठेकान अछि, जँ बिआह केने बिना मरि जाएब तखन तँ अपनो मन लगले रहि जाएत। मुदा बुड़हाकेँ परिवारक खर्च जोड़ए पड़ैन। कहियो हाथमे साए-पचास रूपैआ नइ

रहै छेलैन। परिवारमे एकटा-सँ-एकटा भूर हरिदम रहबे करै छल।"

पत्नी आ माइक गप-सप्प सुनैत देवनन्दन विचारक दुनियाँमे डुमल रहैथ। मने-मन विचारैत रहैथ जे जहिना लंकामे विभीषण छला तहिना तँ अहू समाजमे अछि। हरिदम एक-ने-एक आक्रमण होइते रहैए। जइ समाजकेँ हम नीक बुझै छी, ओइमे अन-पानिसँ लऽ कऽ बुधि धरिक चोर किए अछि? हरिदम लोक झुठे किए बजैए? अनका नीक देख जरैत किए रहैए? दोसराक बोहु-बेटीक इज्जत किए लैत अछि? केकरो-कियो गारि-मारि किए करैत अछि?

देवनन्दनक मन फाटए लगलैन। किएक तँ मनमे प्रश्न उठलैन जे समाजमे अछूत के अछि जे कोनो ने कोनो रोगसँ ग्रसित नै हुअए? जँ सभ रोगीए अछि तँ समाज नीक केना भेल? जाधैर समाजक लोक समाजकेँ नीक नै बनौत ताधैर समाज नीक बनत केना? जइ गाममे एक गोरेकेँ हेजा होइ छै ओइसँ सौंसे गाम रोग पसैर जाइ छइ। तहिना तँ आनो-आनो रोगक अछि। खास कऽ समाजक रोग..!

अपनापर नजैर एलैन। अपनापर नजैर पड़िते अपनाकेँ डाक्टर देखलैन। मुदा केहेन डाक्टर, जे खाली शरीरक रोगक छैथ। मुदा रोग तँ एतबे नै अछि? शरीरक संग-संग मन-रोग आ परम्पराक-रोग सेहो अछि, जेकरा समाजक बेवहारक रोग सेहो कहि सकै छिऐ।

जहिना तेज धाराक धारमे भट्ठासँ सीरा दिस बढ़ब कठिन अछि मुदा असम्भव नहि? तहिना तँ समाजोमे अछि। जेमहर देखै छी ओमहरे केतौ झाड़ीक वोन, तँ केतौ तीत फलक गाछक वोन, तँ केतौ मीठो फलक गाछक वोन अछि। जे जिनगीक सैद्धान्तिक फलक वोन दिस पहुँचबैत अछि..!

तीत-मीठ फलक गाछ देख देवनन्दनक हृदैमे संतोषक अँकुर जन्म लेलकैन। संतोषक अँकुरकेँ उगिते दुनियाँक रंग बदलल बुझि

पड़लैन। नजैर पितापर गेलैन। सिर दिससँ निहारब शुरू केलैन, पएर लग अबैत-अबैत मन पड़लैन पिताक ओ रामकथा जे गामक स्कूलमे नाओं लिखबै दिन सुनौने रहैन। भगवान राम जंगल विदा भेला तँ अपन गामक समाज अरियातए संगे चलला। गामक सिमानपर पहुँचैत-पहुँचैत साँझ पड़ि गेल। समाजक आग्रह होनि जे अपने वोन नइ जा पुनः अयोध्या घुमि जाइ। मुदा राम अपन संकल्पपर दृढ़ छला जे पिताक आदेश नै काटब...।

साँझ भेने सभ कियो रात्रि विश्राम करए लगला। जखन सभ सुति रहला तखन राम, लक्ष्मण आ सीता विदा भेलैथ। स्थल रस्तासँ नहि, स्थल छोड़ि अकासक रस्तासँ...।

भोरमे जखन सबहक नीन टुटलैन तँ रामकेँ नै देखलैन। रस्ता दिस बढ़ला तँ ने घोड़ाक टापक चेन्ह रहै आ ने रथक पहियाक। निराश भऽ सभ घुमि गेला! एहेन समाजमे पूर्ण जीवन पिता केना जीब लेलैन..?

देवनन्दनक नजैर बढ़लैन जे समाजमे केते परिवारसँ दोस्ती अछि आ केतेसँ दुश्मनी। नजैर खिरबए लगला तँ वौआ गेला। माएकेँ पुछलखिन-

"माए, आइ तँ समाजक काज पड़त। केते परिवारसँ बाबूकेँ दोस्ती छेलैन?"

दोस्तीक नाओं सुनिते सुभद्रा हरा गेली। जेना शरीरसँ मन उड़ि गाममे वौआए लगलैन। मन पड़लैन संग मिलि गाएल कुमरम, बिआह, शामा आ घरक गोसाँइसँ लऽ कऽ दुर्गास्थान धरिक गीत।

सासुकेँ एकाग्र होइत देख शीला बजली-

"बुड़ही तँ जनु नीन पड़ि गेली!"

नीनक नाओं सुनिते आँखि खोलि सुभद्रा बजली-

“नै कनियाँ, नीन कहाँ पड़लौं हेन। मन पड़ि गेल आमक गाछीक धिया-पुता। भगवानो बड़ अनर्थ केने छथिन जे केकरो ढेरीक-ढेरीक चीज देने छथिन तँ केकरो ढेरीक-ढेरी खेनिहार। पाकल-पाकल आम जखन बच्चा सभकेँ दइ छिऐ आ ओकर हृदए जुड़ाइ छै तँ अपनो आत्मा जुरा जाइए...।”

मुस्की दैत शीला बजली-

“बुड़ही फेर ओंघा गेली।”

बोलीमे जोर दैत शीला फेर बजली-

“बेटा पुछै छैन, गाममे केते गोरेसँ दोस्ती छैन?”

“एहेन गप किए पुछलह बौआ! ने कियो दोस अछि आ ने कियो दुश्मन।”

देवनन्दन बजला-

“जखन गाम पहुँचब तँ बाबूकेँ जरबैले तँ लोक सभकेँ कहए पड़त किने?”

बेटाक बात सुनि सुभद्रा बजली-

“छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुरदा जरबैले, केकरो घरक आगि मिझबैले, केकरो-साँप-ताप कटने रहल आकि गाछ-ताछपर सँ खसल रहल तेकर जिगेसा करैले केकरो कियो कहै नइ छइ। ई समाजिक काज छी, तँए अपन काज बुझि सभ अपने तैयार भऽ जाइत अछि।”

माइक बात सुनि देवनन्दन नमहर साँस छोड़लैन। गामक सीमापर अबिते सभ चुप भऽ गेला। अपन गाछी लग पहुँचते देवनन्दन गाड़ी रोकबौलैन। रघुवीर भायकेँ अबैत देखने रहथिन।

एक बेर पच्छिमसँ कमला आ पूबसँ कोसीक बान्ह टुटि गेल। बरखो खूब होइत रहइ। नेपालक पहाड़सँ तराइ धरिक पानि सेहो टघैर-टघैर वेग बनि अबैत रहए। पानियोँ किए ने औत? आखिर ओकरो तँ समुद्रमे समेबाक लिलसा छइ। तहूमे मिथिलांचल बीच बाटपर अछि ओकरा किए ने होइत जाएत। गामक उत्तरसँ बाढ़िक पानि ढुकल आ एक दिससँ पसरैत दच्छिन-मुहेँक रस्ता धेलक। जाधैर पानि वासभूमिसँ हटि बाधक रस्ता धरि रहल ताधैर केकरो चिन्ता नै भेलइ। मुदा जखन पानि मोटा कऽ अँगना-घर ढुकए लगल तखन सभकेँ चिन्ता हुअ लगलै। गामक एकटा टोल गहींरगरमे बसल, चारू दिससँ पानि चढ़ैत-चढ़ैत अँगना-घर ढूकि गेल। एक तँ ओहिना, बरखामे टटघरो आ भीतघरो ढहिए-ढनमना गेल रहइ। तैपर सँ बाढ़िक वेग अबिते भीतघर खसए लगल, टटघर सभ मचकी जकाँ झुलए लगल। घर खसैत देख टोलक सभ मालो-जाल आ चीजो-वौस आ धियो-पुतोकेँ लऽ लऽ पोखैरक महार दिस विदा भेल। पच्चीस परिवारक टोल। बेदरा-बुदरी लगा एक साए तीस आदमी। चालिस-पैंतालीसटा गाए-महींस, पच्चीस-तीसटा बकरियो। मालो-जाल बाढ़िक पानि आ अवाज सुनि डरे थरथर कँपैत! कोनो-कोनोकेँ आँखिसँ नोरो खसैत। मुदा एक्कोटा ने खाइले डिरियाइत आ ने पानि पीबैले। सभ अपन-अपन माल जालक डोरी खोलि देलक। डोरी खुजिते आगू-पाछू जोरिया सभ पानिक वेगसँ ऊपर भेल। मुदा एकाएक पानि नै चढ़ल जइसँ एक्कोटा जान-मालक नोकसान नै भेल।

टोलक समाचार सुनिते रघुनन्दन करिया काकाकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“एमहर आबह हौ बटु।”

करिया काकाकेँ दुलारूसँ ‘बटु’ कहैत रहथिन। अबिते

कहलखिन-

“सुनै छी जे पुबाहि टोलमे बाढ़िक पानि चढ़ि गेलै हेन से चलह तँ देखिऐ?”

बिना किछु बजने करिया काका संग भऽ गेलैन। थोड़े आगू बढ़ला तँ देखलैन जे चेतनसँ लऽ कऽ धिया-पुता धरि किछु-ने-किछु माथपर उठौने, भीजैत-तीतैत गामक ऊँचका जगह दिस जा रहल अछि।

मनमे उठलैन जेतए जा रहल अछि ओतए रहत केना? मुदा आँखि उठा कऽ तकैयोमे लाज होइन। जे जनिजाति कहियो सोझहामे बजबो ने करैत, ओ सभ साड़ीक फाँड़ बन्हने कियो अन्न, तँ कियो ओछाइन, तँ कियो बरतन-बासन नेने बच्चा सबहक पाछू-पाछू जा रहल अछि। लोकक दशा देख करिया काकाकेँ कहलखिन-

“बटु, सभकेँ अपना ऐठाम लऽ चलह, जहाँ धरि सकरता धरत तहाँ धरि पार लगेबै।”

दुनू गोरे सभकेँ संग केने अपना घरपर एला। समस्या तँ देशक नै सिरिफ एक टोलक अछि मुदा पहाड़ोसँ नमहर। समाजक मनुखो तँ सभ रंगक अछि, कियो अनका दुखकेँ अपन दुख बुझि कनैए, तँ कियो हँसैए। जे विपैत छै ओ एक गोरे बुत्ते केना मेटौल जाएत। जँ नै मेटौल जाएत तँ लोक मरैत केहेन परिस्थितिमे अछि?

मनमे बुकौर लगि गेलैन, कोनो बाटे नै सुझैत रहैन। सभसँ पहिल समस्या अछि लोको आ मालो-जालकेँ पानिसँ बँचैले जगह। अपना घरे कएटा अछि। तहूमे सभ व्योतले अछि! अँगनाक घर अन-पानिसँ आ जारैन-काठीसँ भरल अछि। लऽ दऽ कऽ एकटा दरबज्जा खाली अछि। जे परिवारक प्रतिष्ठा छी, दोसराक आश्रम-स्थल। रघुनन्दनक मनमे नव आशा जगलैन जे जे विपैतमे पड़ल अछि ओ तँ

अपन विपैतक मुकाबला करैले सेहो अछि। मुहसँ हँसी निकललैन। अँगनासँ दरबज्जा धरि सभकेँ ठौर धड़ौलैन। माल-जालकेँ तत्खनात तँ बान्हेपर, माने रस्तेपर खुट्टा गाड़ि-गाड़ि बन्हैले कहलखिन। खाइक ओते जरूरी नै बुझलैन जेते माल-जालक ठौरक। करिया काकाकेँ कहलखिन-

“बटु, तत्खनात तँ सभ असथिर भेल। पहिने मनुखो आ मालो-जालकेँ खाइक ओरियान करह। तेकर बाद ऐगला काज देखबै।”

खेनाइ बनबैले आगि आ चूल्हिक खगता पड़त। चूड़ा तँ घरमे ओते अछि नहि, तहूमे ओ फँक्का-फुँक्की भेल, ओइसँ काज नै चलत। जँ चाउर-दालि, तरकारी सभकेँ फुटा-फुटा देबै तँ ओते चूल्हिक बेवस्था केतए हएत। से नइ तँ पहिने नारक टालसँ नार खिंच कऽ सभ माल-जालकेँ दहक। आ लोक सभ-ले चारि गोरे एक्केठाम भानस करह। सएह केलैन। भानस हुअ लगल।

रघुनन्दनो आ करियो काका गाममे घुमि-घुमि सभकेँ गर लगौलैन। बीस दिनक पछाइत सभ अपना-अपना ऐठाम गेल...।

रघुनन्दनक समाचार कानमे पड़िते करिया काका दौड़ल एला, अबिते देवनन्दनकेँ कहलखिन-

“डाक्टर साहैब, भैयाकेँ पहिने घरपर लऽ चलियौन। घरपर मृत्यु नै भेल छैन। अपनो परिवारक आ समाजोक लोक अन्तिम दर्शन करि लेतैन, तेकर बाद बरियाती साजि गाछी अनबैन।”

करिया कक्काक विचार सुनि सबहक मनमे समाजक प्रति श्रद्धा जगलैन। देवनन्दनक मनमे एलैन, समाजमे पिताक कएल काज जे समाजक प्रतिष्ठाक कारण रहैन।

करिया कक्काक बात देवनन्दन मानि, चारू गोरे गाड़ीसँ उतैर गेलैथ। पछाइत ओहो तीनू गोरे– सुभद्रा, शीला आ आशा– उतैर जाइ

गेली। तैबीच गाममे समाचार पसैर गेल। समाचार पसैरते जे-जेतइ सुनलैन ओ ओतइसँ देखैले दौगलैथ। धिया-पुता, बुढ़-बुढ़ानुससँ रस्ता अन्हरा गेल। गाड़ी केना आगू बढ़त से रस्ते नहि। मुड़ियारी दऽ दऽ रघुनन्दनक मुँह देखए चाहैन। मुदा मुँह झाँपल। तँए सभ चद्देर ओढ़ने सूतल आदमी देखैत। लोकक भीड़ चारू भरसँ गाड़ीकें घेरि नेने। ने आगू बढ़ैक बाट खाली आ ने कियो रघुनन्दनकें देख पबैत।

माटिक मुरूत जकाँ चारू गोरे निच्चाँमे ठाढ़ भऽ सबहक मुँह देखैथ। रंग-बिरंगक मुँह देख पड़ैन। केकरो-केकरो आँखिमे नोरो आ मनमे सोगो देख पड़ैन आ केकरो-केकरो आँखिमे ने नोर आ ने सोग। मने-मन करिया काका विचारि बजला-

“अहाँ सभ रस्ता छोड़ि दियौ। भैयाकें अँगना लऽ चलै छिऐन ओतै उतारि कऽ रखबैन आ सभ दर्शन करब।”

करिया कक्काक बात मानि रस्ता छोड़ि देलक। आगू-आगू गाड़ी पाछू-पाछू सभ घर दिस बढ़ला। घरपर अबिते रघुनन्दनक मृत शरीरकें उतारि उत्तर-सिरहौने सुता देलकैन। लगमे सुभद्रा, शीला आ आशा बैस गेली। देवनन्दनकें करिया काका कहलखिन-

“बौआ, अहाँ दरबज्जापर बैसू। समाज सभ जिज्ञसो करए औता आ एमहर हम आगूक ओरियानो करै छी।”

दियादीक सभ चूल्हि मिझा गेल। मुदा सबहक मनमे खुशी रहैन। सभसँ उमेरगर रघुनन्दने छला। ओना बेवहारिक रूपमे सबहक आँखिमे नोर रहैन मुदा मनमे दुख नहि।

उत्तर-मुहेँ सुतौल रघुनन्दनकें नव वस्त्रसँ मुँह छोड़ि सौंसे देह झाँपल। सिरहौनामे रखल तुलसी गाछ आ गुगुलक सुगन्ध अँगनामे पसरैत। मर्द-औरतसँ आँगन भरल। मर्द सभ तँ दर्शन करि कऽ दरबज्जापर आबि जाइ छला मुदा स्त्रीगण सभ अँगनेमे बैस गप-सप्प

करए लगैथ। छोटका-बच्चा सभ ओसारपर खेलए लगल।

एक साए एगारह बर्खक रधिया दादी, बाँसक बत्तीक ठेंगा हाथे एली। झुनकुट बुढ़। ने मुँहमे एक्कोटा दाँत आ ने एक्कोटा केश कारी। चौड़गर मुँह। दहिना गालपर एकटा नमहर मसुहैर। जैपर इंच-इंच भरिक दूटा पाकल केश। सौंसे देहक चमड़ी ढील भऽ घोकैच-घोकैच गेल। चानिपर तीनटा रेघा जकाँ बनल। गालक ऊपरका भागमे सेहो रेघा जकाँ, मुदा निचला भागमे गाइक गरदैन जकाँ चमड़ी लटैक गेल। आँगनमे पएर दैते नवतुरियो आ सियानो सभ दादी-ले रस्तो बनौलकैन आ सुभद्रा लग बैसैक जगहो। मुदा दादीक आँखिक नोरमे बेथा रहैन। ओना अखन धरि नोर पुतलीसँ भीतरे छेलैन..। तखने पाँच बर्खक एकटा छौड़ा लुचबा, दादीक ठेंगा पकैड़ तीनू झुनझुनाकें जे तारक बना कऽ लाठीमे ठोकल रहैन–डोला-डोला बजबए लगल। अँगनाक सभ खढ़ू-मढ़ू लगमे जमा भऽ गेल। धिया-पुताकें देख डाँटि कऽ सुबधी बाजल-

“भने तँ तूँ-सभ ओसारपर खेलै छेलें, ऐठीन किए एलँ?”

सुबधीक बात दादीकें नै सोहेलैन बजली-

“कनियाँ, बच्चा सभकें किए डाँटै छिऐ। अहाँ समरथ छी तँए नइ बुझै छिऐ, ई सभ अखन क्याँने गेल, जहिना जाड़क उत्तर गरमी मास अबैए आ गरमीक उत्तर बरखा, जे गरमीसँ शुरू भऽ जाड़मे ठेका दइ छै, तहिना तँ ई देहो अछि। हम तँ कातिक-अगहनक जाड़ भेलौं, ई बच्चा सभ तँ फागुन-चैतक जाड़ छी। मुदा सुरूज तँ वएह रहै छैथ। भलें कहियो उग्र तँ कहियो शीतल भऽ जाइ छैथ।”

दादी बजिते रहैथ कि शीला उठि कऽ दहिना बाँहि पकैड़ आगू लऽ जाए लगलैन। रघुनन्दन लग पहुँचते दादीक आँखिसँ सौनक बरखा जकाँ नोर झहरए लगलैन। मुदा बेसी काल नै झहरलैन। मात्र

ओतबे काल जेते काल अपन उमेरपर मन अँटकलैन। आगूसँ पाछू-मुहेंक रघुनन्दनक जिनगी दिस नजैर बढ़िते दादीकें मुहसँ हँसी निकलए लगलैन। दादीक हँसी देख आशा बाजल-

“बाबीकें एक्कोटा दाँत नइ छैन। आब हेतैन?”

आशाक बात सुनि दादी जोरसँ हँसली। बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, जे तीन गोरेक मुँहक बरबैर लगैन। एक झोंक हँसि दादी सुभद्राकें कहलखिन-

“दियादनी, अहाँ बच्चा छी तँए, कनी दुख होइते हएत। मुदा अहाँसँ कम्मे उमेरमे हमर स्वामी संग छोड़ि चलि गेलैथ। तइ आगू अहाँक विपैत छोट अछि। भगवान अहाँकें सभ किछु देने छैथ। भरल-पुरल परिवारमे श्रवणकुमार सन बेटा, लछमी सन पुतोहु आ एहेन सुन्नर खेलौना सन पोती अछि, तहन किए सोग करै छी। आब अपना सभ सृष्टिक ओहन बीज स्वरूप बनि गेल छी जइसँ अँकुरक सम्भावना नहि। जहिना कोनो अन्नक बीआ आकि फलक बीआ साल भरिक उत्तर पुरान भऽ जाइए जइमे अँकुरक शक्ति झीण भऽ जाइ छै तहिना भऽ गेलौं। मुदा तँए कि अन्ने फलक बीज जकाँ मनुखोक शक्ति साले भरिमे झीण भऽ जाएत? सबहक शक्तियो एक समान नै होइए?”

तैबीच फुदैक कऽ आशा पुछलकैन-

“बाबी, अहाँकें केते दिन भेल?”

“हे गइ डकडरबा बेटी, तूँ हमरा दिन पुछै छें। साढ़े बाइस गाही बरख भेल अछि।”

दादीक बर्खक हिसाब कियो नै बुझलैन। सभ अकबका गेली। सभ-सबहक मुँह देखए लगली। जे दादियो बुझलैन। मुस्कियाइत शीलाकें कहलखिन-

“सासु सासु नहि, माए छैथ। हमर छोट दियादनी छैथ। जखन हमरा पाँच बरख ऐठाम एला भेल रहए तखन रघू बौआक जन्म भेलैन। एक बेरक खेरहा कहै छी, ता काकियो समरथे रहैथ मुदा हमरासँ उमेरगर रहैथ। माघ महिनाक मकरक मेला शुरू भेल। अपना गाम सबहक बेसी लोक हर्ड़ी जाइ छल। हमरा संग रघू बौआ हर्ड़ी गेल। हर्ड़ीसँ कनीए बेसी बिदेसर अछि। मुदा बिदेसरक मेला गड़बड़ हुअ लगलै। निरमलीसँ दरिभंगा धरिक रेलबे कातक जेते उचक्का अछि, सभ भोरुके गाड़ीसँ आबि उचकपन्नी शुरू कऽ देलक। जइसँ नीक घरक लोक विदेसर जेनाइ-एनाइ छोड़लक। ओना बिदेसरो बाबा बड़ जगताजोर, तँए केतबो उचकपन्नी होइ तैयो मेला बढ़ले जाइत। अपना गाम सबहक लोक जेनाइ छोड़ि देलक। ओना क्षेत्रो नमहर छै, तैपर सँ स्थानक लग-पासक लोक सेहो कान्ह उठेलैन। जेकर फल भेलै जे स्थानसँ उचकपन्नी समाप्त भेल। हर्ड़ीक संग दूटा बाधा उपस्थित भेल। परसा धाममे सुरूज भगवानक मुरती उखड़लासँ नव स्थान बनल। ओना मुर्तियो दिव्य अछि। एक तँ सुरूज भगवानक, दोसर बेस किमती पाथरो अछि। मन्दिरो नीक। मुदा हालमे जे साम्प्रदायिक प्रभाव मदनेसरकें बढ़ौलक ओइसँ परसो आ हर्ड़ियोकें नीक झटका लगलै। हर्ड़ीक महादेवो छैथ गहींरमे, जइसँ सभ दिन जल भरल रहै छैन।”

बिच्चेमे सुभद्रा, दादी दिस देखैत बजली-

“बहिन केते दिन बौआ[3]कें दूध पिऔने छिऐन?”

दादी बजए लगली-

“समरथाइमे हम खूब बुफगर रही। पहिल सन्तान भेले रहए।

[3] रघुनन्दन

मनसम्फे दूध हुअए। काकी रोगा गेली। दूध टुटि गेलैन। हमरे दूध पीब-पीब बौआ जीअल। जखन बौआ साल भरिक भेला अन-तन सेहो खाए लगला, डेगा-डेगी चलौ लगला, बोलियो फुटलैन तखन काकी सिखा देलकैन दूधवाली माए कहैले। हमरो नीक लगए। बेटा तँ नै कहिऐन मुदा बच्चा कहैत रहिऐन। डेढ़ साल भेलापर हमरो दूध टुटए लगल। खाइ-पीबैमे तँ कोताही नै हुअए मुदा दोसर कारण भऽ गेल। मकरक मेला जाइत रही। काकी बच्चोकेँ नेने जाइले कहलैन। सभ साल ओतैसँ तरिपात कीनि-कीनि आनी जे सालो भरि मसल्ला खाइ छेलौं। ओना हर्ड़ी मेलाक हरीष, माटिक नादि, टाड़ा-टाड़ी नामी रहए। सात-आठ बर्खक बच्चा रहैथ। गामक बहुत जनिजातियो आ धियो-पुतो रहए। अपनो बेटा आ बच्चोकेँ हमहीं नेने गेलिऐन। अरबा चाउरक रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन बना लेलौं। गामोपर खा लेलौं।"

बिच्चेमे आशा टोकलकैन-

"खा कऽ महादेव दर्शन करए गेलिऐ?"

आशाक बात सुनि दादी ठहाका दैत बजली-

"हर्ड़ी मेला स्त्रीगणक मेला छी। पुरुखसँ बेसी स्त्रीगण आ धिया-पुता रहैए। दस बजेमे सभ खा-खा जाइत अछि आ दोसैर-तेसैर साँझ धरि घुमि-घुमि अबैत अछि। अपना सबहक कुटमैतियो बेसी ओही भाग अछि। एक दिससँ धीओ-बेटी अबैत आ दोसर दिससँ माइयो-पितियाइन जाइत, जइसँ सभकेँ मेलामे भेँट-घाँट भऽ जाइत। जहिना 'बड़ियाकेँ बान्ह नइ छै, जे मन फुरै छै से करैए' तहिना तँ जनिजातियो आ बुड़िबकहो अछि। जे मन फुरतै से करत...।

..हँ, तँ कहै जे छेलियह, बच्चाकेँ नेने गेलिऐन। बेरहटिये पोखैरक महारपर बैस खाए लगलौं। बच्चोकेँ एक खाड़ा रोटी आ तरकारी देलिऐन। हम दच्छिन-मुहेँ, पोखैर दिस घुमि कऽ खाए

लगलौं। मुड़ी गोंतने रही, माथपर साड़ी लटकल रहए। तैबीच एकटा झुनझुनाबला घुमैत-घुमैत आएल। धिया-पुता सभ पाछू-पाछू रहइ। ताड़क पातकेँ गुलाबी रंगमे रंगि झुनझुना बनौने रहए। एकटा झुनझुना हाथसँ बजबैत रहै आ बाँकी पथियामे माथपर रखने रहए। आँएले-वाँएले बौओ रोटी खाइते पाछू धऽ लेलैन। हम बुझबे ने केलिऐ। धिया-पुता तँ खुरलुच्ची होइते अछि। झुनझुनाबला आगू बढ़ि गेल। बाटीमे पानि पीब जखन पानि दइले तकलौं तँ देखबे ने केलिऐन। ले बलैया! ओते लोकमे केतए ताकब? भारी पहपैटमे पड़ि गेलौं। हाँइ-हाँइ कऽ तरिपातो आ टाड़ो लेलौं आ तकैले विदा भेलौं। एकटा झुनझुनाबला रहैत तखन ने ठेकना कऽ जइतौं। से तँ जेम्हरे देखिऐ ओम्हरे झुनझुनाबला रहए! मन हारि मानि लेलक। मनमे हुअ लगल जे काकीकेँ की जवाब देबैन। मुदा मने-मन चण्डेसर बाबाकेँ कहलयैन जे आन देवस्थानमे तँ कियो नै हेराइत अछि मुदा तोरा स्थानमे भऽ गेलह। अखनुका जकाँ ताबे धिया-पुताक चोरि देवस्थानमे नै हुअए। मुदा तैयो मनमे खुटखुटी रहबे करए। तेकर कारण रहै जे कहियो काल सुनिऐ फल्लाँ स्थानसँ फल्लाँक बेटा आकि बेटी हरा गेलइ। तँए मनमे हुअए जे काकी की कहती? तहूमे रोगाएल छैथ। मने-मन समोह लगि गेल। मुदा फेर मनमे भेल जे जँ कहीं घुमि-फिर कऽ चलि आबैथ। थोड़े काल गुन-धुन कऽ एक हाथमे तरिपात आ दोसर हाथमे टाड़ा लऽ ताकए विदा भेलौं। रस्ताक दुनू कात दोकानबला सभ दोकान लगौने रहै आ बीच देने लोक सभ चलइ...।

..मन्दिरक आगू एक्के बेर मन्दिरक फाटकसँ बहुत लोक निकलल। रस्तापर रेड़ा भऽ गेल। तखने माथपर सँ साड़ी ससैर गेल। आब की करब? दुनू हाथो बरदाएल रहए। माथपर साड़ी केना लेब। नै लेब तँ लोक की कहत। तैकाल दहिना हाथक टाड़ा छुटि गेल। फुटि गेल। झुटका-झुटका भऽ गेल। मुदा पहिने साड़ी ससारि कऽ माथपर

लेलौं। एक गोरेकेँ पएरमे झुटकाक कान गड़ि गेलइ। ओ भिन्ने खिसियाइत कहलक जे 'एहेन ढहलेल छह तँ मेला-ठेला किए अबै छह।' मुदा अपन हारल रही, किछु नै कहलिऐ।

..चुपे-चाप रेड़ासँ बहरेलौं। बाहर अबिते आँखि उठा कऽ तकलौं आकि देखलौं जे उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ एकटा झुनझुनाबला अबैए। रस्ता कातमे ठाढ़ भऽ हिआ-हिआ ताकए लगलौं आकि पाछू-पाछू हिनको देखलयैन। देहो हल्लुके रहए। खाली एक्केटा हाथ बरदाएल रहए। दौग कऽ जा बाँहि पकैड़ कात केलिऐन। फेर जखन पोखैरक महारपर एलौं तँ केकरो नै देखिलऐ। सभ चलि गेल रहए। आनो-आनो गामक यात्री घरमुहाँ भऽ गेल छेलइ। हमहूँ ओही लाटमे विदा भऽ भेलौं।"

मुस्की दैत शीला पुछलकैन-

"तमसाएलमे फज्झैतो केलखिन?"

सिनेहसँ भरल दादीक मुहसँ निकललैन-

"राम-राम। अबोध बच्चाकेँ किए किछु कैहतिऐन। अबोध बच्चाकेँ तँ बुझा कऽ ने कहबै आकि मारि कऽ, मारलासँ बच्चा हेहरू भऽ जाइ छै किने...।

..हँ, तँ कहै जे छेलौं, गामपर एलौं तँ काकीकेँ कहलयैन जे एहेन-एहेन खुरलुच्ची बेदरा सेने कोनो मेला-ठेला नइ जाइ। काकी अकचका कऽ पुछलैन तँ सभ खेरहा कहलयैन। उमेरक अन्तर रहितो चौल करबे करै छेलिऐन। जूरशीतलमे अछींनजलसँ असिरवाद दैते छेलिऐन आ फगुआमे रंगो-रंग खेलाइ छेलौं...।"

सुभद्रा दिस देख फेर दादी बजली-

"बहिन, अहाँक मालिकसँ कम्मे उमेरमे हमर मालिक संग

छोड़लैन। करीब साठि बरिससँ ऊपरे भेल हएत। अहाँ तँ एक बएसपर आबि गेल छी। भगवान कोनो चीजक परिवारसँ समाज धरि कमी देने छैथ जे सोग-पीड़ा करब। दुनियाँ फुलवाड़ी छिऐ। एक अबैत अछि, एक जाइत अछि। जहिना सालो भरि एकटा जन्म लैत अछि, एकटा जुआनीक आनन्द लैत अछि आ एकटा पकि कऽ सुखैत अछि। तहिना तँ मनुखोक होइ छइ। तहूमे भगवानक फुलवाड़ीक अजीब गति छैन। हुनका फुलवाड़ीमे सालक कोन, मासक कोन, दिनक कोन जे छने-छन एकटा अबैत अछि तँ दोसर जाइत अछि। हम अहाँ मनुख छी। असगर मनुख रहितो समाजिक सेहो छी, मुदा पहिने मनुख छी तखन किछु आर। मनुखकेँ मनुषत्व प्राप्त करब प्रमुख काज छी। जखने मनुखकेँ मनुषत्व प्राप्त भऽ जाइत तखने ओ दुनियाकेँ चिन्हए-जानए लगैत। अपन परिवारसँ समाज धरिक सम्बन्ध स्थापित कऽ लइत। जइसँ सम्बन्धक अनुरूप अपन दायित्व निमाहए लगैत। ओना बच्चा[4] हमरा आगूमे बच्चे छैथ। भलेँ समाजिक सम्बन्धमे भाए-भौजीक सम्बन्ध अछि। मुदा भगवान अनुचित केलैन। उचित ई होइत जे पहिने हमरा लऽ चलितैथ।"

ई विचार मनमे अबिते रधिया दादीक दुनू आँखि ढबढबाए लगलैन!

बचनू, चंचल, झोली, बौकू आ बतहू, देहक कपड़ा उतारि खाली देहपर तौनी आ डाँड़मे धोती पहिरने, कान्हपर कुरहैर नेने पहुँचल। अँगना-सँ-दरबज्जा धरि जनिजाति, पुरुख आ बच्चासँ भरल। लोकक भीड़ देख देवनन्दनक मन उड़ैत रहैन। अँगनासँ दरबज्जा धरि पिताक हँसैत आत्मा देखैथ। बिसैर गेला अपन जिनगी। मनमे हुअ लगलैन जे बिनु कहनौं समाज केना अप्पन काज बुझै छैथ।

[4] रघुनन्दन

एहेन काज समाजक मात्र मृत्युए समए नहि, बेटा-बेटीक बिआहक संग अनेको समए होइत अछि। जँ संग मिलि हँसी, संग मिलि कानी, संग मिलि गाबी आ संग मिलि नाची, तँ ऐसँ सुन्दर की होइत अछि। सुख केकरा कहबै? जइ सुख-ले लोक नीच-सँ-नीच काज करैत अछि मुदा पाबि नहि पबैत अछि।

एक छिन्ना धोती पहिरने श्रीकान्त पहुँचला। श्रीकान्त मधुबनी कोर्टसँ बड़ाबाबूक पदसँ सेवा निवृत्त भेल छला। मुँह निच्चाँ केने सोझे आँगन पहुँच पएर छुबि गोड़ लागि एकटंगा दऽ ठोर पटपटबैत फुसुर-फुसुर बजए लगला-

"काका, अहाँ परसादे जिनगी भरि कुरसीपर बैस सेवा निवृत्त भेलौं। जइसँ जहिना जिनगी चैनसँ बितेलौं तहिना ऐगला शेष जिनगी सेहो बिताएब।"

सुभद्रा दिस देख श्रीकान्त फेर बजला-

"काकी, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जहिना अहाँ देवकेँ बेटा बुझै छिऐन तहिना हमरो बुझब।"

श्रीकान्तक बात सुनि सुभद्रोकेँ मन पड़लैन। मनमे उठलैन जे देखियौ कौल्हुका छौड़ा बुढ़ भऽ गेल। बुड़हा तँ सहजे झुनकुट बुढ़ छला। हवा-बिहाड़िमे टुटि कऽ खसबे करितैथ। एहेन मृत्यु भगवान सभकेँ देथुन। एहेन मृत्यु तँ धरमतमे सभकेँ होइ छैन। कोनो कि हमरेटा चूड़ी फुटल, सिन्नुर धुआएत आकि दुनियाँमे बहुतोकेँ होइ छइ।

मुड़ी निच्चाँ केने श्रीकान्त अँगनासँ निकैल दरबज्जापर आबि देवनन्दनक बगलमे चुपचाप बैस गेला। किछु बजैक साहसे नै होइत रहैन। जेना जीह्वामे थरथरी आबि गेल रहैन। साहस बटोरि, आँखि उठा, देवनन्दनकेँ कहलखिन-

"बाउ देव, ओना अहाँ बच्चा छी मुदा हमरासँ सभ तरहेँ ऊपर छी। अपन बात कहै छी। अखुनका जकाँ पहिने घरक स्थिति नइ रहए। बाबू बड़ मेहनती रहैथ। जहिना मनुखक किरदानी तहिना दैवीए प्रकोप सेहो सदिकाल चलिते रहै छल। एक दिस बइमानी-शैतानी तँ दोसर दिस पानि-बिहाड़ि, भुमकम-रौदी आ शीतलहरी होइते रहै छल। तैपर सँ रोग-वियाधि सेहो चलिते रहै छल। जखन टेस्ट परीछा दऽ पास केलौं तँ फार्म भरैक समए आएल। बाबू अस्सक रहैथ। कालाजार भऽ गेल रहैन...।" श्रीकान्तक आँखि सिमैस गेलैन। दुनू हाथे आँखि पोछए लगला।

कालाज्वर सुनि डाक्टर देवनन्दनक मनमे एलैन जे सचमुच अपना इलाकामे कालाज्वर अखुनका केन्सरसँ कम नै छल।

आँखि पोछि श्रीकान्त आगू कहए लगलखिन-

"दिनानुदिन बाबूजीक देह हहरले जाइत रहैन। गुनाकरपुरसँ हाथीक लिद्दी आनि-आनि दिऐन। बच्चे रही तँए बुझबो कम करिऐ। माए जे कहए से कऽ दिऐ। फारम भरैले रूपैआ माएसँ मंगैक साहसे ने हुअए। भरि दिन तंग-तंग देखिऐन। दोसर-दोसर विद्यार्थी सभ फारम भरि लेलक। हमरा मनमे विचित्र उथल-पुथल होइत रहए। अन्तिम तारीख अबैत-अबैत आशा टुटि गेल। जेना विपैत कपारपर आबि गेल हुअए तहिना बुझि पड़ए। दुनियाँक रंग बेद-रंग लगए लगल। अन्तिम दिनक चारि बजे, हेड मास्टर साहैब एकटा विद्यार्थी दिअए समाद देलैन जे- काल्हि धरि हमरा लग फारम रहत तँए तूँ आबि कऽ फारम भरि लएह। कौल्हुका बाद भरब कठिन भऽ जेतह। ने कोनो काज नीक लगैत आ ने खेनाइ-पिनाइ...।

..मनमे आएल एक बेर रघुनन्दन काकाकेँ कहिऐन। सएह केलौं। आबि कऽ सभ बात कहलयैन तँ पुछलैन जे कहिया धरि काज

छह..?

..कहलयैन आइ तँ आखिरी तारीक छी मुदा हेड मास्सैब एते दया केलैन जे काल्हि धरि समए देलैन अछि।

..दरबज्जेपर सँ काकीकेँ बक्सामे सँ रूपैआ नेने अबैले कहलखिन। जहिना बच्छाबला पैकार देने रहैन, तहिना आनि कऽ आगूमे रखि काकी कहलकैन जे घरमे एक्कोटा चाउर नै अछि...।

..जहिना काकी कहलखिन तहिना काका उत्तर देलखिन, एक-दू साँझ भूखलो रहि जाएब। मुदा एक जिनगीक प्रश्न अछि। तँए एहने सभ काजकेँ ने लोक धरम बुझैए।

..रौदियाह समए रहए। जइसँ गामक लोक कियो मरूआ रोटी, तँ कियो कोटाक जनेरक रोटी, कियो अल्हुआ तँ कियो खेसारीक उसना खाइत समए काटैत रहए। सेहो सभकेँ भरि पेट नै होइत। केते गोरेकेँ तँ साँझक-साँझ चूल्हि नै चढ़ैत रहइ...।"

कहैत-कहैत श्रीकान्तक आँखिमे नोर टघरए लगलैन। जेते दुखक ताप श्रीकान्तक आँखिसँ टघैर-टघैर निच्चाँ खसैत, तेते देवनन्दनकेँ धरतीसँ उठैत हवासँ हृदए शीतल हुअ लगलैन। पुछलखिन-

"अखन परिवारक केहेन स्थिति अछि?"

धोतीक खूटसँ आँखि पोछैत श्रीकान्त बजला-

"बाउ, बड़ सुखसँ जीबै छी। दुनू भाँइ बी.ए. पास कऽ नोकरी करैए। जेठका हाई स्कूलमे अछि आ छोटका ब्लौकमे। शनिए-शनि दुनू भाँइ अबैए आ सोमकेँ सबेरे खा-पी कऽ चलि जाइए। दुनू पुतोहुओ आ पाँचो पोता-पोतीसँ घर भरल अछि। अपनो पेन्शन भेटते अछि। भगवान बेटी नै देलैन। मुदा तैयो दुनू बेटाकेँ पढ़ा, रहैले छह

कोठरीक मकान आ तीन बीघा खेत कीनलौं। चौमासमे एकटा कल गड़ा देने छिऐ, जइसँ तीमन-तरकारी कीनऽ नै पड़ैए। बाँकी खेत बटाइ लगा देने छिऐ। भरि दिन अनमेनामे लगले रहै छी। कखनो ई नै बुझि पड़ैए जे समए केना काटब। एते दिन तँ ऑफिसेक फाइल उघलौं मुदा आब दू-दू घन्टा रामायण, महाभारत पढ़ै छी। तइ लगल बच्चो सभकेँ पढ़ाइयो दइ छिऐ आ गोटे-गोटे खिस्सा सेहो रामाइनो आ महाभारतोसँ सुना दइ छिऐ। महिना भरिक हिसाबसँ सालमे एक बेर देशाटन सेहो कऽ लइ छी। जइसँ तीर्थाटनो भऽ जाइए। अपनो तँ बहुत नहियेँ अछि, मुदा कक्काक बतौल बातकेँ अखनो कान धेने छी जे अपनासँ निच्चाँक जँ कियो किछु मांगए अबैत तँ नै पान तँ पानक डण्टियो लऽ जरूर सेवा करै छिऐ। मनमे कखनो कोनो चिन्ता नइ रहैए।"

तैबीच किसुन लाल साबेक जुट्टी खोलि भिजौने आबि दलानक आगूमे बैस खड़ए लगल। कान्हपर कुरहैर नेने सोधन सेहो आएल। आबि कऽ करिया काकाकेँ पुछलकैन-

"भैया, बाँस कटबै?"

"के सभ जाइ छह?"

"कएटा कटबै?"

"रौ बुड़िबक, ईहो पुछैक गप छी। खूब नमगर-चौड़गर चचरी बनबैक अछि। कोन चीजक कमी भैयाकेँ छैन जे मचोड़ि-सचोड़ि कऽ घर-सँ-बाहर करबैन। कमसँ-कम तँ चारिटा बाँस आनह। दूटा मुठबाँसी आ दूटा छिपगर लऽ आनह।"

"कोन बीटमे कटबै?"

"एना अनाड़ी जकाँ किए पुछै छह। तोरा कि नै देखल छह?"

"से तँ सभटा देखल अछि। साले-साल काटि कऽ लऽ जाइ छेलौं तैयो ने देखल रहत। आकि आबे बिसैर जाएब। जहिना जेठ भैया जीबैतमे छला तहिना तँ आगूओ रहता किने। पाँचटा बाँस साले-साल सोझहोमे कटै छेलिऐन परोछोमे कटबैन। मुदा से नइ कहलौं। कहलौं जे हरोथक बीटमे कटबै आकि चाभमे?"

सोधनक बात सुनि करिया काका गुम्म भऽ सोचए लगला। मुदा बुझल-गमल काज, तँए सोचैमे देरी नै लगलैन। मुस्की दैत बजला-

"हरोथ मरदनमा बाँस होइए, छाती धरि मोंछ-दाढ़ी रहै छइ। ओकरा चिक्कन बनबैमे देरी लगतह संगे एकटा आरो ओजार तीन दिन जहल चलि जाएत। काजक घरमे सभ चीजक काज बढ़ि जाइत अछि।"

करिया कक्काक बात सुनि हँसैत सोधन बौकू दिस बढ़ल। तखने धड़फड़ाएल दुनू परानी लेलहा आएल। अपनाकेँ अपराधी बुझि करिया कक्काक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। करिया काका बुझि गेलखिन जे भरिसक केतौ गेल रहए तँए पछुआ गेल। आगू चलैबला जँ पछुआ जाए तँ तेकर कारण पैछला काजो होइ छइ। मुस्कियाइत कहलखिन-

"चेला, अखन धरि सुतले छेलह?"

ठोर बिजकबैत लेलहा बजला-

"काका, केतेक दिनक पछाइत आइ काज लगल। वएह करैले चलि गेल छेलौं।"

"कोन काज करए गेल छेलह?"

"घुरना भैयाकेँ आठ गो मझोलके शीशो गाछ छै ओकरे पाँगे-ले गेल छेलौं। एक तँ एहेन गाछ नै देखलौं। सदिकाल चुट्टी आ घोरन लड़ाइए करैत रहैए। मुदा आइ तँ अद्भुत देखलौं। चारिटा गाछपर ने

चुट्टी आ ने घोरन छेलइ। मुदा एक भागक दूटा गाछमे लोहाड़ि रहइ आ दूटा गाछपर घोरन। तीनटा पाँगि नेने छेलौं कि सोनमा-माए दौड़ल आबि कऽ कहलक जे रघूदादा मरि गेलखिन। छिप्पी दिससँ थोड़े पाँगि नेने रही। सोचलौं जे उतरैमे ओते घोरन कटबे करत से नइ तँ बँचले केते अछि पाँगियेँ ली...।

..एँह काका की कहब! पाँखिबला बड़का-बड़का घोरनक छत्ता रहइ। ओही पुरबैमे कनी अबेर भऽ गेल।"

"अच्छा की हेतइ। अखन तँ ढेरो काज पछुआएल अछि। भने टेंगारियो अननहि छह। सोधनक संग जा बाँस काटि आनह।"

"काका, कड़ची टाट बनबैले लऽ लेब। ताबे ओतै बोझ बान्हि कऽ रखि देबइ।"

"बड़बढ़ियाँ।"

"काका, मूजक काज तँ सेहो ने हएत।"

"भने मन पाड़ि देलह, बिसरले छेलौं।"

घरवालीकेँ लेलहा कहलक-

"पहिने दुनू गोरे काकाकेँ दर्शन कऽ लिअ। तखन हम बाँस काटए जाएब आ अहाँ मूज नेने आउ। गठुलाक बत्तीमे खोंसि कऽ रखने छी। अदहा रखि लेब अदहा नेने आएब।"

कहि लेलहा करिया कक्काक कानमे फुस-फुसा कऽ कहलकैन-

"काका, थाकि गेल छी। पियासो लगि गेल अछि। पानि तँ पीब लेब मुदा अखन खाएब केना! एक बेर चीलमक भाँज लगा दियौ।"

लेलहापर करिया काका बिगड़ला नहि! सोधनकेँ आँखिक इशारासँ कहलखिन-

"कुरहैर-टेंगारी लेलहो आ झोलीकेँ दऽ दहक आ हमर नाओं

कहि बौकासँ पाँच रूपैआक गाँजा लऽ बँसबिट्टीए-मे पीब लिहह।"

काजक जुति-भाँति लगा करिया काका बँसवारि पहुँच गेला। तीनू गोरे गजो पीबैक तैयारी करैत आ दुनू बापूत-रघुनन्दन-देवनन्दनक बीच तुलनो करैत...।

"देवनन्दन केतबो पैघ डाक्टर साहैब भऽ जेता मुदा तइसँ की, रघू कक्काक परतर हेतैन?"

सोधनक बात सुनि करिया काका जिज्ञासासँ पुछि देलखिन-

"से की?"

"भरि दिन काका महादेव जकाँ लेन-देन करै छला। डाक्टर साहैब बुते से हेतैन?"

चीलममे दम मारि, ऊपर-मुहेँ धुँआ फेकैत करिया काका बजला-

"अपने बात सोधन कहै छिअ। भलेँ लोक हमरा माइयो-बापकेँ दोख लगा कहि दैत अछि जे जाबे माए-बाप, जन्मदाता-भगवान किछु गुण नै देखलखिन ताबे 'करिया' नाओं किए रखि देलखिन। कोनो कि हमर देहक रंग कारी अछि? तँए, हम तँ समाजमे कलंके बनि जन्म नेने छी। केतबो लोककेँ बुझेबै तैयो हमर बात तरे पड़ि जाइए। जेकरा बुझा देबै ओ बुझि कऽ मुँह बन्न कऽ लेत। जेरक-जेर जे जनैम-जनैम कऽ नवका पीढ़ी बनबैत अछि ओ केना बुझत? मुदा तइले दुख कहाँ होइए। हम तँ ओहन समाजक लोक नै छी जे वित्तीय गामक सीमामे घर बना बुझैत अछि। हम तँ ओइ समाजक छी जइमे जन्म-सँ-मृत्यु धरिक गाड़ी गुड़कैत अछि। पल्हैनक ऐठामसँ लऽ कऽ असमसान धरि!"

जाधैर करिया काका बजैत रहैथ तइ बिच्चेमे लेलहा दू दम मारि

लेलक। गहुमन साँपक बिख जकाँ लेलहाकेँ निशाँ चढ़ि गेल। सोधनक हाथमे चीलम दैत बाजल-

"काका, एक बेर पटुआ काटए असाम गेलौं। अपना इलाकाक बहुत लोक साले-साल पटुओ आ धानो काटए मोरंग, असाम, ढाका धरि जाइ छल। मुदा हम पहिले-पहिल गेल रही। काकरभिट्टासँ बस पकैड़ सिलीगौड़ी होइत असाम गेलौं। एकटा बड़का धार देखलिऐ। बसक कण्डेक्टर ओंगरीसँ एकटा पहाड़ देखबैत बजलै जे 'कामरूप कामाख्या मन्दिर' ओही पहाड़पर छइ।"

चीलम बढ़बैत सोधन पुछलक-

"कोन कमख्या?"

सोधनक बात सुनि ठहाका मारि हँसि लेलहा बाजल-

"भैया, तहूँ अनठा-अनठा बजै छह। हौ वएह कमख्या जैठामसँ लोक जोग-टोन सीखि-सीखि अबैए आ अपना इलाकामे मौगी सभकेँ ठकैए। कहतह जे सभसँ पक्का मन्तर हमर कोखिया गुहारिक अछि। शुक्रक बेरागनक दस बजे रातिमे गुहारि करए जेतह।"

बिच्चेमे सोधन टोकलकै-

"ओइ स्थानपर जा कऽ नै देखलहक?"

लेलहा बाजल-

"एँह, भैया तहूँ हद करै छह। जखन गौहाटी पहुँचिए गेलौं। तखन नै जइतौं? गेलौं तँ देखलिऐ जे चिड़ैसँ लऽ कऽ मनुख धरिक बलि होइए। हँ, तँ कहै छेलियह जे जखन बससँ उतरलौं तँ पानि पड़ैत रहइ। कनीए काल ओतए अँटकलौं आकि पानि छुटि गेल, चाह पीना बड़ी काल भऽ गेल रहए। चाह पीबैले मन लुस-फुस करैत रहए। किछु नीके ने लगए, चारू गोरे एकटा चाहक दोकानमे गेलौं तँ दोकानक

सजाबट देख कऽ किछु ने फूरल। अपना इलाकामे ओ सजाबट कहाँ अछि।"

"केहेन सजाबट रहइ?" ...सोधन पुछलकै।

तैपर लेलहा बाजल-

"दोकानदारेसँ पुछलिऐ तँ कहलक ई बाँसक कैमचीक बनौल छिऐ। ओकर बनाइ देख आसचर्ज लगल जे केहेन-केहेन लूरिगर लोक सभ अछि। बाँसेक कुरसी, टेबुल आ गीरहक कप बनौने रहए। सिंह-दुआरि परहक मेहराउकैं अदहा घन्टा धरि देखैत रहलौं। पथिया-मौनी तँ अपनो इलाकामे लोक बनबैए मुदा ओहन कहाँ बनबैए। ने ओहन मेघडम्बर बनबैए आ ने ओहन मन्दिरनुमा घर..।

ओम्हुरका बाँसो अजीब अछि। अपनो इलाकामे बीस-पच्चीस रंगक बाँस अछि। मुदा ओमहर तँ साइयो रंगक अछि। जेहेन कड़चीक दतमैन बनबै छहक तेहेनसँ लऽ कऽ भरि-भरि पाँजक देखबहक। पालकीमे जे बाँस देखै छहक, बीटक-बीट ओ बाँस अछि ओतए। छत्ताक बेंट बनबैबला सेहो अछि। पुरान-पुरान बाँसक बीट सभ फुलाएल-फड़ल सेहो अछि।"

चीलमो सठल। उठैत करिया काका बजला-

"बेसी देरी नै लगबिहह। हम ताबे आगू बढ़ै छी।"

करिया कक्काक बात सुनि लेलहा बाजल-

"काका, जहिना पानि उतरल कोदारि, खुरपी, हँसुआ इत्यादिसँ काजो कम होइत आ भीरो बेसी, तहिना पनिउतरू पुरुख आ पनिचढ़ू पुरुखक काजमे होइ छइ। एते काल पनिउतरू छेलौं आब पानि चढ़ि गेल। अहाँ पहुँचबो ने करब तइसँ पहिनहि हमसभ पहुँच जाएब। मुदा एकटा बात कहि दइ छी, 'रघूकाका गामक मेह छला!' ई अन्तिम

काज समाजक कान्हपर अछि, तँए नीक जकाँ होइन।"

चारिटा बाँस काटि तीनू गोरे पहुँचल। दुनू मुठबाँसीक दूटा बल्ला बनौलक। बाँकी दुनू छिपगरहा फट्ठा बनबैले टोनए लगल। दू गोरे टोन बनबैत आ दू गोरे दू-दू फाँक कऽ फट्ठा बनबए लगल।

रघुनन्दनक मृत्युक समाचार सुनि दियादीक बीच चूल्हि बन्न भऽ गेल। मुदा दियादीमे एकरूपता नहि। जइक चलैत किछु चूल्हि बन्न भेल आ किछु जरिते रहल।

गाममे सभसँ नमहर दियादी रघुनन्दनक छैन। से कोनो एकाएक आइए भेलैन से नहि। पहिनेसँ बढ़ैत आबि रहल छैन। ओना, पहिलुका रूतबा आब नइ छैन मुदा तैयो गामक लोक मने-मन बुझैत अछि। पहिलुका रूतबा कमैक कारणो भेल। बेटीक बाढ़ि एने किछु परिवार तँ उपटिए गेल जे जहियासँ सतना आ रमचन्द्रा भेल तहियासँ तँ आरो दियादी घिना गेलैन। दुनू एहेन भेल जे गामक कोन बात जे अपनो कुल-खनदानक बहिनकेँ बहिन नै बुझैए। जइसँ आनो-आनो आ अपनो परिवारक बुढ़-पुरान "छगरा गोत्र" कहए लगलैन। ऐ सभ दुआरे रघुनन्दनोकेँ दियादवादसँ ओते मेल नइ रहैन जेते सभ चाहैन। एकटा बात अखनो जरूर अछि जे आन दियाद आ आन जातिसँ कोनो तरहक झगड़ा-झंझटमे सभ एक भऽ जाइए। अखन धरि एते जरूर निमाहैत एला जे अर्थीकेँ अपने दियाद उठा कऽ अँगनासँ गाछी लऽ जाइत अछि।

अखनो गाममे सभसँ अधिक पढ़ल-लिखल दियादी-परिवार देवनन्दनेक छैन। मुदा गुरु काका आ पढ़ुआ भैया ओछाइने धेने छैथ। जहिया दयाकान्त डाक्टरी पढ़ि नोकरी शुरू केलैन, तहिए-सँ धिया-पुताक संग गाम छोड़ि देलैन। तहिना उमाकान्तो इंजीनियरिंग पढ़ि केलैन। आब तँ सहजे एहेन चलैने बनि गेल, माने फैशने भऽ गेल

अछि। साधारणो नोकरी केनिहार सभ गाम छोड़ि दइए। उमेरे तँ गुरुओ काका आ पढ़ुओ भाय बुढ़ नहियेँ भेला हेन, मुदा सोगे दुनू गोरे ओछाइन पकैड़ लेलैन। नीको मन रहै छैन तैयो घरपर सँ केतौ ने जाइ छैथ।

अखुनका लोकक माने मर्द-औरतक जे छिछा-बिछा देखै छथिन तइसँ मन हरिदम खसले रहै छैन। नवका लोको तेहने भऽ गेल अछि जे नीक विचार, नीक काजकेँ शब्द मात्र बुझै छैथ ओकर बेवहारिक पक्षक गुणकेँ नै बुझै छैथ। बुझबो केना करता? जे कोनो फल काज केलाक उपरान्त भेटैत अछि, ओ बिनु केने केना भेट सकैए।

दियादीक परम्पराकेँ निमाहैले सुखदेव देवनन्दन लग आबि बजला-

"बौआ देव, अहाँ बच्चा छी तँए दियादीक परम्पराकेँ नै बुझै छिऐ। अखन धरि अपना दियादीमे चलैन रहल जे लहासकेँ आँगनसँ गाछी, अपन दियादीए-क समांग उठा कऽ लऽ जाएत।"

सुखदेवक बात सुनि देवनन्दन किछु नै बजला। मुदा कातमे ठाढ़ करिया काका मुस्कियाए लगला। मनमे नचैत रहैन जे अखन गाममे छैथ तँए बेसी फुरै छैन। देह तेहेन बनौने छैथ जे अपन धोधि सम्हरबे ने करै छैन, डाँड़सँ धोती ससैर-ससैर खसैत छैन आ रूआब बब्बेबला छैन...।

देवनन्दन दिस देख सुखदेवकेँ कहलखिन-

"हओ सुखदेव, भाय-साहैब जाति-दियादसँ आगू बढ़ि समाजमे छैथ तँए कियो अपन करबह। जँ तौं गाछीए लऽ जेबहुन तँ ऐमे अधला की। ईहो तँ एकटा काजे भेल। मुदा खाली बजनहिटा सँ तँ नै हेतह। तइले संगोरो करए पड़तह किने?"

कहि करिया काका मुँह चुप कऽ लेला, मुदा मनमे उठिते रहैन- 'जिनगी बितलैन बोहुक संग सिनेमा देखैमे आ एला हेन अपनत्व बुझबै-ले। कोनो गत्रमे लाजो ने होइ छैन।'

मुदा ऐ गपकेँ मनेमे रखि बात बदलैत फेर बजला-

"जाधैर हम सभ एमहुरका ओरियान करै छी, ताधैर तहूँ संगोर केने आबह।"

तैबीच सुन्दर काका धड़फड़ाएल पहुँचला। दुनू ममियौत भाय परसू कपर-फोड़ोवैल कऽ नेने रहथिन, ओहीक जिज्ञासामे गेल छला।

दुनू ममियौतक बीच डेढ़ कट्ठा घराड़ी छइ। बीच गाममे घर छैन। गामो गदाल अछि, तँए एक्को घूर घराड़ी कीनब असाध छैन। के अपन घर तोड़ि देतैन। ओना बाधमे पाँच बीघा खेत छैन मुदा धराड़ीक सुखे तँ असकरे बाधमे नै बसता। नानाक परिवार समटल रहने अइल-फइलसँ रहै छला। मालोक थैर आ नारक टालो बना लइ छला। इनारो अँगनाक कोणेमे रहैन। मुदा अपना परोछ होइते मनुखक बाढ़ि घरमे आबि गेलैन। दुनू भाँइ भिनौज कऽ लेलैन। करनाइयो नीक बुझि पड़लैन। करमी लत्ती जकाँ जेठका भायकेँ परिवार चतैड़ गेलैन। भगवानो दहिन भऽ सातटा बेटा आ छहटा बेटी देलखिन। पढ़बैक तँ कोनो समस्ये नहि, जे बिआहो-दान पछुआएले रहैन। मुदा तैयो घरक अभाव बुझि पड़ए लगलैन। अपने टी.बी.क रोगी। धिया-पुता जनमबैत घरोवाली तेहने छइ। मुदा जहिना क्रोध, तहिना जेठ हेबाक रूआब मनमे दुनू गोरेकेँ रहबे करैन।

छोट भाएकेँ दूटा बेटेटा। तँए, कोनो तरहक अभाव नै बुझि पड़ैन। एक पीठिया पाँचो भाँइ लाठी उठौलक। समांगक पातर छोट भाए, कपार फोड़ा लेलैन। मुदा घरवाली बदला लाइए लेलखिन। पहिने भाइक चानिपर खापैड़ फोड़ि दियादनीपर कनखा पटकैत

कहलखिन-

“भरि दिन आहि-आलम करैत रहती आ रातिकेँ केहेन सुरखुरू भऽ जाइ छैथ..!”

छोट दियादनीक गारि सुनि तँ उनटबए चाहलैन, मुदा ताबे टोलक लोक सभ आबि झगड़ा छोड़ा देलखिन। ओही झगड़ाकेँ निपटबैले सुन्दर काका गेल छला। मात्रिकेमे पता लगलैन जे रघुनन्दन भाय देश छोड़ि देलैन। पता चलिते मामकेँ पनरह दिनक समए दऽ आबि गेला। गाम अबिते अँगा, चप्पल निकालि धोतीक खूट देहपर लऽ विदा भेला। अँगनासँ निकैलते पता लगलैन जे लहास अँगनेमे अछि, तँए गाछी दिसक रस्ता छोड़ि घरे दिसक पकड़लैन। डेढ़ियापर पहुँचते करिया काका सोझहामे पड़ि गेलखिन। देखते पुछलकैन-

“काज सुढ़ियाएल छह आकि पछुआएल?”

नजैर घुमबैत करिया काका बजला-

“एमहुरका काज तँ डोरियाएले अछि मुदा..?”

“बड़बढ़ियाँ?”

कहि सुन्दर काका आगू बढ़ि रघुरन्दन लग पहुँच, गोड़ लागि ठोर पटपटबैत फुसुर-फुसुर कहलखिन-

“जिनगी भरि संगे रहलौं, तँए जँ किछु ऊँच-नीच भऽ गेल हुअए तँ बिसैर जाएब।”

कहि सुभद्रा दिस देख मुस्कियाइत टोकलखिन-

“भौजी।”

सुन्दर कक्काक बोली सुनि सुभद्रा आँखि मिलबैत बजली-

“बच्चा।”

सुभद्राक-मुहेँ ‘बच्चा’ सुनि सुन्दर काका चोट्टे अँगनासँ निकैल

देवनन्दन लग आबि बजला-

“बाउ देव, दुनू भाँइमे तीने मासक जेठाइ-छोटाइ अछि। बच्चेसँ दुनू भाँइ संगे बितेलौं। सभ ओरियान तँ देख रहल छी मुदा भजनियाँ सभ कहाँ अछि। मृत्यु सोगे ने खुशी सेहो होइत अछि। खुशी तँ तखन होइत जखन खुशीक काज होएत। भाय-साहैब अपनो रामायण, महाभारत गबै छला। संगे भजनियों-कीर्तनियाँक सेहो सुनै छला। आइ जखन दुनियाँ छोड़ि रहला हेन तखन पाँचटा भजनो किए ने संग कऽ दिऐन।”

सुन्दर कक्काक विचार सुनि देवनन्दन अवाक् भऽ गेला। मने-मन विचारि बजला-

“काका, सभ बात तँ समाजक बुझै नै छी, तहन तँ करिया काका जेना-जेना करै छैथ से देखै छी।”

देवनन्दनक बात सुनि सुन्दर कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक किसुन लालकेँ नजैरमे नइ एलइ। मन लहरए लगलैन। जोरसँ तँ नहि, मुदा आस्तेसँ बजला-

“सुआइत लोक ओकरा कन्हा कहै छइ। जेम्हरे देखत ओम्हरे बरिसत।”

टाटक अढ़सँ किसुन लालो सुन्दर कक्काक बात सुनलैन। मुदा किछु टोक-टाक नै केलखिन।

भजनियाकेँ बजबैले सुन्दर काका विदा होइत जोरसँ बजला-

“किसुन, भजनियाँ ऐठाम जाइ छी, ताबे ऐठामक ओरियान करह।”

किछु दूर आगू बढ़लापर मन पड़लैन आकि की, घुमि गेला।

सुन्दर भायकेँ घुमैत देख किसुन लालकेँ भेलैन जे भरिसक

किछु गंजन बाँकी रहि गेल, सएह करैले घुमला।

किसुन लाल अपन डोलैत छातीकेँ असथिर केलैन। मुदा भऽ गेल उन्टा। जहिना किसुनलाक मन गंजन सुनैले मन्हुआएल तहिना सुन्दरो भाइक किसुन लालसँ पुछैले मन्हुआएल।

लगमे आबि पुछलखिन-

“किसुन, समरथाइमे तँ साज-बाजबला भजन-कीर्तन सुनै छेलौं मुदा आब तँ मने-मन गबै छी। अखन के सभ गबैया अछि?”

अपन पुछब सुनि किसुन लाल उत्तेजित भऽ बजला-

“आब की कोनो कमी छइ। एते दिन ढोल-पीपहीपर जीबछ भाय गबै छला। तहिना गुणापर छीतन आ रंगलाल सिङा बजबै छला। तीनूकेँ भाय-साहैबसँ अपेछा छेलैन। तीनू जीबते अछि, तँए तीनू गोरेकेँ कहि देब आवश्यक अछि।”

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रहैथ आकि बाँस-टेंगारी रखि लेलहा आबि बाजल-

“काका, एक बेरक खिस्सा कहै छी। भैयाक बिआह रहैन। बाउ हमरा लोकनियाँ जाइले कहलक। अपन मन बरियाती जाइक नइ रहए। किएक तँ रजकुमराक बिआह रहइ। बच्चे रही। बिनु कहने बरियातीक पछोर लगि गेलौं। अखुनका जकाँ गाड़ी-सवारी थोड़े रहै जे उतारि दइत। घरवारी ऐठाम पहुँचलापर हमरो गिनती भऽ गेल। भूजल बदाम आ चूड़ा जलखै देलक। लुंगियाँ मिरचाइ तेहेन कड़ू रहै जे ओइ लाटमे खूब खेलौं। रातियोमे खूब खेलौं। गद-पर-गद भऽ गेल। अफैर गेलौं। मन हुअए जे खूब फलिगर बिछान होइत तँ ओंघरा-ओंघरा सुतितौं। दलान छोट रहइ।

..चेतन सभकेँ तँ दलानपर अँटाबेश भऽ गेलै मुदा बच्चा सभकेँ

जगहे नै भेलइ। पछाइत घरवारी मालक घरसँ मालकेँ निकालि बहरामे बान्हि देलक आ ओइमे पुआर पसारि बिछान कऽ देलक। ओछाइन देख मन खुशी भेल। एक कातमे पहिनहि जा कऽ जगह पकैड़ लेलौं।

..कत्तू रातिमे घरवारी छौंड़ा सभ आबि टीकमे चिड़चिड़ी आ देहमे कबछुआ पत्ता रगैड़ देलक। लगबै काल नै बुझलिऐ मुदा जखन चुलचुलाए लगल आकि नीन टुटल। बोरामे कसल धान जकाँ पेट रहए। कुरियबैबला हाथ दुइयेटा रहए, आ कुरियाए सगरे देह। उठि कऽ ठाढ़ भऽ निच्चासँ ऊपर कुरियाबए लगलौं आकि माथपर हाथ पड़ल। दुनू हाथ देलिऐ आकि सौंसे माथ मानी-चानी सुपारी जकाँ बुझि पड़ल। टोबैत-टोबैत ओंगरी टीकपर गेल आकि मौगीक खोपा जकाँ बुझि पड़ल। एक भागसँ चिड़चिड़ी टीकमे छोड़बी तँ दोसर दिस पकैड़ लिअए। एमहर सौंसे देहो चुलचुलाइतो रहए। तैपर सँ हुअए जे पेट फाटि जाएत! महाग मोसकिलमे पड़ि गेलौं। तामस उठि गेल। दुनू कान पकैड़ सप्पत खेलौं जे आइ दिनसँ बरियाती नइ जाएब। मुदा फेर मनमे आएल जे अगर हम नै केकरो बरियाती जेबै तँ हमरा के जाएत? जँ बरियाती नइ जाएत तँ बिआह केना हएत? कोनो कि केकरो फुसला कऽ मन्दिरमे जा करब आ पछाइत पनचैतीमे लाठी खाएब। बिनु बरियातीए बिआह केहेन हएत? बिआहक गवाह के हएत? कहियो कोनो झगड़ा हएत तँ पनचैती के करत...।

..एक तँ सगरे देह नोचैत रहए तैपर सँ बिआह मन पड़ि गेल। बिआह मन पड़िते मनमे उपकल जे जाबे दुख नै काटब ताबे बोहुक सुख केना हएत?”

मुस्की दैत करिया काका बिच्चेमे टोकलखिन-

“तोहूँ सभ दिनक ढहलेले-बकलेल रहि गेलँह। भैयाकेँ की कहै

छहुन से ने कहबुहुन?"

करिया कक्काक बात सुनि लेलहाक मन नोचनीसँ हटि भाइक बिआहपर पहुँचल, बाजल-

"जखन बाउ कहलक जे लोकनियाँ जइहें, तखनेसँ आँगी-पेन्ट साफ करैक मन भेल। गामपर तँ फटलौ-पुरान आ मैलो-कुचैल पीहिन लइ छी। बरियातीमे तँ छौड़ी सभ पीहकारीए मारत। उसराहा परतीपर सँ उस आनि, माएकैं कहलिऐ खूब नीक जकाँ उसैन दइले। जखन उसैन देलक आ सरेलै तँ पोखैरक घाटपर जा कऽ खूब उज्जर करि कऽ खीचिलौं। दू ठीमन अँगा फाटल रहए। माएकैं सी दइले कहलिऐ। काकीसँ सुइया आनि पुरना साड़ीक पाढ़िसँ डोरा निकालि सी देलक।"

काजक धुमसाही देख बिच्चेमे करिया काका कहलखिन-

"अखन केतेक काज पछुआएल छह सेहो बुझै छहक। जे कहैक छह से झब-दे कहुन?"

लेलहा बजए लगल-

"हँ तँ काका, बिआहसँ दू दिन पहिने रघुनी काका आबि बाउकैं कहलखिन जे जेहने बेटा-बेटी धनिकक तेहने तँ गरीबोक। माए-बाप तँ माइए-बाप होइत। सबहक हृदए तँ भगवान एक्के रंग बनौने छथिन। बेटा-बेटीक बिआहमे तँ सभकैं एक्के रंग मनोरथ होइ छइ। गामेमे सिंगरिया बाजा अछि। एकटा सोहनगर बजो भऽ जेतह आ ओहो वेचारा[5] समाजक संग खेबो करत आ हँसि-बाजि कऽ बिताइयो लेत।

..कक्काक बात सुनि बाबू कहलकैन, सिङाबला तँ रूपैऔ लेत, से केतएसँ देबइ?

..तैपर रघुनन्दन काका कहलखिन, हमरा संगे चलह। कहि देबै जे समाजक काज छिऐ तँए नै पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ काज सम्हारि दहक। रूपैआ नै ने हेतह मुदा खाइले तँ देतह।

..सएह भेलइ। दुआर लगैसँ पहिनहि रस्तेमे हमरा कहि देलक जे बौआ, नाच देखा देबौ। तूँ हमरे लग रहिहें।

..जखन बर दुआर लगल आकि सौंसे गामक बुढ़िया-सुढ़िया सभ चँगेरामे चरि-मुहाँ दियारी बाड़ने भैया लग गीत गबैत एली। जेते ढेरबा आ समरथकी सभ रहै ओ पाछूमे हाँ-हाँ, हीं-हीं करैत रहइ। चुपेचाप रंगलाल काका बीचमे सन्हिया गेलखिन। हमहूँ पाछू-पाछू गेलौं। अन्हार रहबे करै, एक्के-बेर खूब जोरसँ सिङा फूँकि देलखिन। तेते जोरसँ अवाज भेलै जे सभटा पड़ाएल। एक्के बेर जे पड़ाएल आकि एँड़ी-दौड़ी लगलै। एकटा खसल आकि ओइपर भेड़ी जकाँ खसए लगल। जहिना अन्नक ढेरी लगबै काल पथिया-पथिये ऊपरसँ देल जाइ छै, तहिना भऽ गेल। हमहूँ बीचमे पड़ि गेलौं..!

..काका की कहब, दसटा सँ बेसीए ढेरबासँ अधबेसू धरि तरोमे रहै आ ऊपरोमे! तेते भारी लगै जे कनैए लगलौं।"

मुस्की दैत करिया काका-

"धुर्र बुड़ी, एहने पुरुख।"

"ताबे तँ बच्चे रही किने...;

मुस्की दैत-

"से कि कोनो हमहींटा कनैत रही आकि तरमे पड़ल सभ कनैत रहए।"

"आ ऊपरका?"

"ओ सभ तँ खिखिर जकाँ हँसैत रहए। तँए काका, ओहो वेचारा आब चौथापनेमे अछि। आब तँ नवका-नवका बम्बैया बजन्त्री सभ भऽ गेल। ओकरो कहि दैतिऐ!"

सुन्दर काका मुड़ी डोलबैत बजला-

"अच्छा, तूँ सभ एमहुरका काज सम्हार हम ओमहर जाइ छी।"

सुन्दर काका विदा भेला आकि करियो काकाकैं मन पड़लैन। बजला-

"भाय, कनी सुनि लिअ। एक गोरे छुटि जाएत!"

"के?"

"छीतन भाय। एक दिनक बात मन पड़ल। अगहन मास रहइ। झुरझाड़ धन कटनी चलैत रहइ। एक्के ठीन हमहूँ रही आ भैयो रहैथ। हुनका जन रहैन, हम अपने कटैत रही। करीब बारह-एक बजे छिऐ। दुनू परानी छीतन भाय सुगर हहकारने खसलाहा खेतमे चरैले छोड़ि गुना नेने भाय-साहैब लग पहुँचलैन। काटल धान जे पसरल रहै, ओइपर दुनू परानी बैस गुना टुनटुनबए लगल। भैया कहलैन- बटु, तमाकुल खा लएह। एलौं। खूब बढ़ियाँ जकाँ तमाकुल चुनेलौं। दुनू भाँइयों खेलौं आ छीतनोकैं देलिऐ। छीतन घरवालीकैं रघु भैया दिस देखबैत कहलकै, जे भाय-साहैबक धानमे अपनो सबहक साझी अछि किने। पाँचटा गीत सुना दियौन।

..दुनू परानी गुनापर गीत गाबए लगल। से की कहूँ भाय, हुअए जे दुनू गोरेकैं हाथसँ उठा माथपर लऽ ली। ओहन सिनेहसँ कहियो नै सुनने छेलौं, जेहेन सुनलौं। राजा भरथरी आ पिंगलाक गीत गौने रहए। वेचारा जीबते अछि। ओहू वेचाराकैं कहि देबइ।"

"बड़बढ़ियाँ" कहि सुन्दर काका आगू बढ़ला। जीबछक घर पहिने पड़ैत रहइ। जीबछक ऐठाम पहुँच जीबछकैं कहलखिन-

"भाय, रघूभैया दुनियाँ छोड़ि देलैन। अपन बाजाक संग चलह।"

सुन्दर कक्काक बात सुनि घरवालीकैं सोर पाड़ि जीबछ कहलक-

"गिरहत बौआ मरि गेलखिन। छौड़ा सभकैं सोर पाड़ियौ। सभ बापूत जाएब।"

बेटा-भातिजकैं बजबए मुनियाँ विदा भेल। सुन्दर काकाकैं जीबछ कहए लगलैन-

"भाय, एक दिनक गप कहै छी। माध मास रहइ। शीतलहरी चलैत रहइ। जहिना दिन तहिना राति। दिनोमे नै खेने रही। जाड़े बुझि पड़ए जे मरि जाएब। घूर-ले जरनो सधि गेल। की डाहब से रहबे ने करए। बिछानमे पुआर देने रहिऐ, बस ओतबे रहए। मन हुअए जे ओकरे जरा ली, फेर हुअए जे जखन आगि मिझा जाएत तखन सूतब केतए। भुखे मन सेहो छटपटाइत रहए। दुनू परानी गिरहत बौआ ऐठीन गेलौं। रघुनन्दन बौआ करसीक बड़का घूर मालक घरमे लगौने रहैथ। अपनो बैसल रहैथ। हिनका लग पहुँचैक डेगे ने उठए। जी-जाँति कऽ खरिहाँनेसँ सोर पाड़लयैन। घूरे लगसँ कहलैन, एम्हरे आबह।

..गेलौं। खेबो केलौं आ माले घरमे घूरे लग बिछान बिछा सुतबो केलौं। जँ कनियोँ कानमे भनक लगल रहैत तँ अपने आबि जैतौं, मुदा अखन तक नै सुनने छेलौं। चलू-चलू पीठेपर अबै छी।"

ढोल-पीपही लऽ जीबछ, गुना लऽ छीतन आ सिङा लऽ रंगलाल पहुँच, अपन-अपन बाजा बजबए लगल। जहिना बेटीक बिआहमे सोहनगर गीत गौल जाइत, तहिना बाजाक मुहसँ निकलए लगल। घरे-अँगना नै गामक वातावरण महमह करए लगल। बाजाक धुनपर कियो घुनघुनाइत, कियो नचैत, धिया-पुता उछलैत-कुदैत आ बुढ़-बुढ़ानुस सभ मने-मन रघुनन्दनकैं स्मरण करैत टुटैत सम्बन्धपर विह्वल

[5] रंगलाल

होइत।

धड़फड़ाएल फोंच भाय आबि देवनन्दनकेँ कहलखिन-

“डाक्टर साहैब, सभ किछु तँ ओरियान देखै छी मुदा सरर आ घी कहाँ अछि?”

फोंच भाइक बात सुनि देवनन्दन बजला-

“करिया काका आ सुन्दर काका सभ ओरियान कऽ रहल छैथ। हुनके ऊपर सभ भार छैन। बजा कऽ पुछि लियौन।”

एकाएकी करिया काका, सुन्दर काका, लेलहा, बचनू देवनन्दन लग एला। करिया काकाकेँ अबिते फोंच भाय पुछलखिन-

“कारी भाय, सभ काज तँ समटाएले बुझि पड़ैए मुदा घी आ सरर, नै देखै छी?”

फोंच भाय पाही जमीन्दारक मुँहलगुआ। ओना ने आब जमीन्दारी अछि आ ने जमीन्दार। मुदा एक साए पाँच बर्खक ढीलाबाबू जीबते छैथ। खेत-पथार तँ कमि गेलैन मुदा दरबारी चालि छैन्हे। अखनो भाँग पीसै, पान लगबै, मालिश करै, संगे टहलै आ भानस करैले नोकर रखने छैथ। वएह संगे टहलैबला फोंच भाय।

फोंच भाइक गप सुनि करिया कक्काक मन नाचए लगलैन। सुन्दर काका मने-मन खुशी रहैथ जे भने हमरा नै पुछलैन।

करिया काका मनमे आबए लगलैन जे आँखिक सोझमे देखै छी जे कियो लहासकेँ धारमे फेकैत अछि, तँ कियो धारक कातमे गाड़ैत अछि। कियो आमक लकड़ीसँ जरबैत अछि, तँ कियो बगुरसँ। कियो संठी-गोइठासँ जरबैत अछि, तँ कियो मुँहमे आगि छुबा गाड़ैत अछि। तैठाम सरर आ घीक कोन खगता अछि?

फोंच भाइक बात सुनि बचनू बाजल-

“फोंच काका, अपन कएल काज कहै छी। नानी मरि गेल। ओना मरैसँ तीन दिन पहिनहिसँ दुनू माय-पुत ओतै रही। आँखिक देखल नानाक गाछी अछि। जइ साल अपन गाछी नै फड़ै छेलए। तइ साल चलि जाइ छेलौं। खूब मारि-धुसि कऽ डेढ़ मास खाइ छेलौं।

तेसर साल जे कोसी नाश केलक ओइमे मामाकेँ के कहए जे इलाकाक गाछी-कलम, बँसबारि उपैट गेल। अँगनाक सभ नानीकेँ मुइने कनैत रहए, आ मामा जरबैक लकड़ीले कनैत रहैथ। कानब दू रंग बुझि पड़ल। जहिना एक धुनक गीत भिन्न-भिन्न गबैयाक-मुहेँ एक्के स्वरमे गौल जाइत, तहिना तँ मरैयोक अछि। मामाक कानब सुनि लगमे जा पुछलयैन, तँ कहलैन जे भागिन माए मरि गेल तेकर दुख नै अछि। दुख तँ तखन ने होइत अछि जखन माए-बापक अछैत बेटा-बेटी मरैत। मुदा अपन जे पुबरिया गाछी छेलए ओ माइए-बाबूक रोपल छेलैन। बाल-बच्चा जकाँ दुनू गोरे सेवा करि लगौने रहैथ। उत्तरवारि भागसँ एक-पाँति सरही आम लगौने रहैथ, बाँकी सौंसे कलम कलमी रहए। मुदा सरही तँ सरहीए रहए। एकदम बड़बरिया। कनीए-कनीए-टा आम होइ। तहूमे गोटे-गोटे मीठ होइ नइ तँ सभ खट्टे। मुदा कलमी सभटा चुनल रहैन। अगते रोहैणसँ गुलाब खास आ डोमाबम्बै पकऽ लगए। जाबे सठबो ने करै ताबे कृष्णभोग, लड़ूबा पाकब शुरू भऽ जाइ। पीठेपर मालदह पाकए लगइ। मालदह सठबो ने करै आकि कलकतिया पाकए लगइ। कलकतिया सठिते फैजली, मोहर, ठाकुर आ राइर पाकए लगइ। ऐ हिसाबकेँ देख पुछलयैन तँ कहलैन, ‘बौआ सभ रंगक आमक खगता होइ छइ। जखन जारैनक खगता हेतह तँ कलमीक डारि कटैमे मासचर्ज लगतह। मुदा सरहीमे से नइ हेतह। हँ सरहियोमे तखन हेतह जखन कलमीए सन नम्हरो आ सुअदगरो रहतह। जारैनक जरूरत चूल्हिओ आ मुरदो डाहैमे हेतह। मात्र जरबैयेक काजटा तँ नै अछि। मुइला पछाइत गाछोक उत्सर्ग

होइत अछि। तइले तँ बड़बरीए नीक अछि।

काटि कऽ जरबैक बात तँ जँचल मुदा उत्सर्ग नै जँचल। हुनकर लगौल छेलैन। अपना विचारसँ लगौलैन। कोसीक बिकराल बाढ़िसँ पहिनहि नाना मरल रहैथ, तँए हुनका सुकाठ माने सरही आमक लकड़ीसँ जरौल गेलैन। एक-एकटा गाछ पुरहितो-पात्रकेँ देल गेल। हुनका तँ सोलहो-अना गाछी रोपैक फल भेट गेलैन। मुदा माएकेँ केना जराएब आ की दान देबइ।

मामाक बात सुनि दुखो भेल आ तामसो उठल। जखन छल तखन भोगलौं। अखन नइए तँ कानब किए?

कहलयैन- मामा जँ कनलासँ दुख भगैत आ सुख भेटैत तँ अहिना ई दुनियाँ रहैत? अनेरे अँगनामे रखने छी आ कनै छी। चलू, हमरा सभ लूरि अछि। खाधि खुनि गोरहोसँ जरबैक लूरि अछि आ सनठियो-मनेजरसँ, सुकाठोसँ जरबैक लूरि अछि आ कुकाठोसँ आ अगबे बाँसो-कड़चीसँ।”

बचनूक बात सुनि सभ ठमकला, मुदा फोंच भायकेँ तामस चढ़ि गेलैन। दाँत पीसैत बजला-

“सौनमे जनमल गीदर, भादवमे आएल बाढ़िकेँ देखते कहलक जे एहेन बाढ़ि देखबे ने केलौं! देखैत-देखैत दाँत-पोन झड़ि गेल हमर आ सिखबै छेँ तूँ।”

करिया काका सुन्दर काका दिस तकलैन। सुन्दर काका पहिनेसँ करिया काका दिस देखैत रहैथ। दुनू गोरेकेँ फोंच भाय दिससँ नजैर हटल देख लेलहा फोंच भायकेँ चोहटैत बाजल-

“फोंच भैया, अहाँकेँ ओतबे काल धरि भैया कहब, जेते काल अहूँ भाए बुझब। अहाँक देहमे हजार रूपैआक कपड़ा, हजार रूपैआक घड़ी आ दस हजारक मोबाइल अछि, मुदा हमरो दिस देखू।

रघूकाका आ देवभायसँ हमरो ओते अपेछा अछि जेते अहाँकेँ अछि। अहाँ कहने हम पड़ा जाएब से बात नहि। अन्तिम संस्कार काइए कऽ जाएब। काज ने अहाँ परिवारक छी आ ने हमरा परिवारक। काज करए ऐठाम एलौं हेन, घरवारी जेना आदेश देता तेना कऽ देबैन। अहाँकेँ फुचफुचेने की हएत?”

लेलहाक बात सुनि फोंच भाय सहमला। भाषा बदलैत बजला-

“ऍंह, खिशिया गेलह लेलहू। दस गोरे जखने एकठाम बैसलौं तखने दस रंगक गप चलत। तइले एते बिगड़ैक कोन काज अछि। एहेन-एहेन छोट-छीन गप-ले समाज टुटि जाइ छइ। जहिना सभ एकठाम रहैत एलौं हेन, तहिना आगूओ रहब किने।”

वातावरण ठंढाइत देख सुन्दर काका दरबज्जासँ उठि जीबछ लग पहुँच बजला-

“बटगवनीक समए आएल जाइए। धियान रखब।”

कहि दरबज्जापर आबि करिया काकाकेँ कहलखिन-

“किसुन, अखन बैसैक समए नै अछि। बैसलासँ काज पछुआएत।”

“हँ-हँ, से तँ ठीके”

कहैत करिया काका उठि गेला। करिया काकाकेँ उठिते एका-एकी केतेको गोरे उठि गेला। मने-मन फोंच भाय जरल जाइ छला। ठोर पटपटबैत बजला-

“जेकरा जे मन फुरै छै से करैए। ने बजैक ठेकान आ ने बाप-दादाक कएल काजक।”

दरबज्जापर सँ उठि फोंच भाय आँगन दिस टहैल गेला। मनमे अन्हर उठल रहैन। भेल काज सभपर नजैर गड़ा-गड़ा देखए लगला जे

केतए कथी गलती अछि। मुदा नजैर गलतीक जड़िपर जाइते ने रहैन। जँ से जइतैन तँ ईहो बात बुझितैथ जे 'गलती ओहन बेवस्था पैदा करैत अछि जे चलैनमे रहैए नै कि आगूक बेवस्थामे।'

दरबज्जाक डेढ़ियापर चंचल चचरी बनबैत रहए आ बौकू साबेक जौर बँटै छल।

आँखि गुड़ैर फोंच भाय चचरीक लम्बाई-चौड़ाइ देखए लगला। फट्ठा बैसबैत चंचल मुस्कियाइत कहलकैन-

"नजैर नै लगा देबै, भैया?"

चंचलक मुस्की फोंच भाइक छातीमे महुराएल तीर जकाँ लगलैन। किछु बोकरए चाहलैथ आकि तखने उत्तरवारि टोलमे जोरसँ हल्ला होइत सुनलखिन। जेतए जे कियो रहैथ, कान ठाढ़ कऽ ओतइसँ सुनए लगला। हल्लाक कारण रहै अढ़ुलिया-अपराजितक झगड़ा।

रघुनन्दनक दियादक भगिनमान मनोहरक परिवार। तीन पुस्तसँ मनोहर ऐ गाममे। बब्बे आबि सासुरमे बसल रहैन। मुदा जे मनोहरो परिवारक छिऐ, ओहो दियादे जकाँ काज-उदममे संग-साथ दइत।

पैछला लौफा-हाटमे मनोहर बीस हजारमे गाए बेचलक आ ओइसँ नीक, बगलेक गाममे तीस हजारमे टोहिया गेलइ। पनरह दिनक समए बना रूपैआक ओरियान करए लगल। हिसाब जोड़ने जे बीस हजारमे गाए बिकाएल, बच्छोक पोसिन्दार कहलकै जे दुनू बच्छा बेच हमहूँ गाइये पोसब। बच्छा पोसब तँ ओइ पोसिन्दार-ले अछि जे खेतियो करैत हुअए। जहिना सभ दिन, नवका कारमे बैसनिहारकेँ आनन्द होइत, तहिना नव बरद जोतनिहार हरबाहकेँ सेहो। ने गियर बदलैक काज आ ने स्पीड कम-बेसी करैक। रहबो किए करतै, अपन-अपन खेतक यात्राक बीचमे केतौ दुबट्टी-तीनबट्टी नै पड़ैत। जइ चालिमे जोतए चाहब, ओइ चालिमे हर लादि दियौ। एक्के बेर खोलै

बेरमे लदहा छिटकबैक काज।

वेचारा पोसनिहारकेँ खेती नइ छइ। छोट पूजीकेँ पैघ बनबैक काज कऽ रहल अछि। मुदा ओही वेचाराकेँ की दोख देबै, जइतए तँ पैछले हाट मुदा बिमारीक चक्करमे तेना पड़ल अछि जे दुनू बच्छो हलि गेलइ। वेचाराक बड़ सुन्दर विचार छइ। अपन ढेनुआर गाए[6] भऽ जेतइ।

समैक फेर देख मनोहर बीसो हजार रूपैआ देवालमे तख्ता देल आलमारीक ग्रन्थमे रखि देलक। खुल्ला रैक। रैकपर सिरिफ भागवत, देवी भागवत, सुखसागर, योगवशिष्ट, कबीर मन्सुर, बाइबिल, कुरान आ कृष्ण-उद्धव संवाद रहइ। कृष्ण-उद्धव संवादमे बीसो हजारीक नोट पन्नामे दऽ दऽ सैंत कऽ राखने।

काल्हि दिनमे सोहन आबि मनोहर माएकेँ कहि कृष्ण-उद्धव संवाद लऽ गेल। ग्रन्थ उनटा कऽ देखैक काजे नहि। अविश्वासक केतौ गन्धे नहि।

साँझमे जखन मनोहर लालटेन नेस ग्रन्थ निकालैले गेल तँ कृष्ण-उद्धव संवाद नै देखलक। मनमे शंका भेलइ। मुदा चोरिक शंका नै भेलइ। लगातार दुनू गोरेक बीच पोथीक लेन-देन होइत। माएकेँ पुछलक-

"माए, सोहन भाय किताबो लऽ गेल छैथ।"

"हूँ।"

"ओइमे किछु छेलैहो?"

"खोलि कऽ कहाँ देखिलऐ।"

मनोहर गुम्म भऽ गेल। मनमे एलै, अखने जा कऽ बुझि ली।

[6] उत्पादित पूजी

फेर दोसर मन कहलकै, पाइयक ममिलामे राति-बिराति नइ जाएब, नीक। आगूमे लालटेन रखि बैस गेल। मुदा मनकेँ अन्हार दाबए लगलै, सोग बढ़ए लगलै। माएकेँ कहलक-

"माए, मन नीक नै लगैए। नै खाएब।"

जोर करैसँ पहिने माइक मनमे एलै खेनाइ तँ नीक मनक छिऐ। अधला मनक तँ ओ...।

सोचि पुतोहु-अढ़ुलियाकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, बौऔक मन दबे छै, हमरो खाइक मन नै होइए।"

पुतोहु झझकारि कऽ बजली-

"चूल्हि लगमे जखन अधपक्कू भऽ गेलौं, तखन हिनकर मन खराब भेलैन। होइतए हमरा तँ भऽ गेलैन हिनके? एक ताउ लगतै तरकारियो भाइए गेल। रोटी पहिनहि पका नेने छेलौं। खइहैथ भोरे, तखन मन नीक हेतैन।"

मुदा फेर वेचारीक मनमे पत्नी आ पुतोहुक रूप आबि बैस गेल। जिनका-ले भानस केलौं से जखन खेबे ने करता तँ हमहीं...। ओहिना झाँपि कऽ सभ किछु रखि देबइ।

सबेरे जखने मनोहर सुनलैन जे रघुनी भैया मरि गेला। तखने आबि दरबज्जापर मुड़ी झुका कातमे बैस गेल। सभकेँ होइत जे गाममे सभसँ बेसी दुख मनोहरेकेँ भऽ रहल छइ। असीम दुख! सेर-समांग दुनूक। माइयो पाछूसँ गेलखिन।

खाली आँगन देख अढ़ुलियाकेँ भुखे नइ रहल गेलैन। वेचारी चारिटा रोटी आ घेराक भुजिया लऽ खाए लगली। तखने अपराजित आबि अढ़ुलियाकेँ डेढ़िए-पर सँ हाक देलकैन-

"कनियाँ, काकी गेलखिन?"

मुँहमे घेरा-रोटी चिबबैत अढ़ुलिया बजली।

मुँह भारी बुझि अपराजित ससैर कऽ आँगन आबि गेली, तँ देखलैन जे बीचे दोहैरपर केबाड़ लग बैस हाँइ-हाँइ खाइत अछि।

जहिना करिया भेम्ह कटलासँ एक्के बेर सनसना कऽ बिख चढ़ि जाइए, तहिना अपराजितकेँ चढ़ि गेलैन। मुदा निधोखसँ अढ़ुलिया चपा-चैप चपने जाइत। जेते अढ़ुलियाक मुँह चलै, तेते अपराजितकेँ तरसँ खौंत चढ़ल जाइत।

अढ़ुलिया बुझि गेली जे जँ कहीं सरेरा केलैन, तँ सीनेपर पकड़ा जाएब। से नइ तँ जाबे मुँह खोलैथ-खोलैथ ताबे थारी अखारि कऽ रखि लइ छी।

बरदाससँ बाहर होइते झपटैत अपराजित बजली-

"अँइ-गे निरविचारी, तोरा कोनो गत्तरमे लाज छौ कि नहि?"

अखन धरि अढ़ुलिया मुँह नै खोललैन। थारी माँजि, अँठि फेरि हाथ धोइ, लोटा रखि उत्तर देलकैन-

"हिनका बड़ लाज छैन। जे झूठ-मूठक बझा कऽ अबलट जोड़ै छैथ। हमरे नइ कोनो गत्तरमे लाज अछि। बुढ़ भऽ कऽ ई झूठ बजै छैथ से बड़बढ़ियाँ, हम बड़ निरलज्जी?"

"अइँ गे तोरा एतबो ने विचार छौ जे जाबे अँगनासँ लहास नै उठलै ताबे मुँहमे अन्न किए देलौं। पहिने अँगना-घर करितेँ तखन ने भानस-भात करितेँ?"

"हिनका दियादी छैन आकि हमरा। हम भगिनमान छी। लोकक सहोदरो भाए अनतए रहने बिरान भऽ जाइ छै, आ दूरोक लोक लगमे रहने अप्पन भऽ जाइ छइ। हमरा कोन अँगना-घर करैक काज अछि?"

अढ़ुलियाक बात अपराजितकेँ बेसम्हार कऽ देलकैन। बजली-

"जेहने कुल-खुट रहतौ तेहने ने बुड़धो हेतौ?"

कुल-खनदानक ऊपराग बुझि अढ़ुलियो बेसम्हार भऽ बाजल-

"यएह जँ बड़ नीक कुल-खनदानक छैथ तँ कहाँ भेलैन जे मनुख जकाँ चुपचाप लगमे अबितैथ। खाइत देखितैथ तँ पुइछ लितैथ जे कनियाँ एना किए करै छी। रातिमे नै खेने रही से बुझैक काज हिनका नै भेलैन। मुदा छुच्छे उपदेश दइले चलि एलौं। अपन काज आँखि-मूनि कऽ करैत रहितैथ, हमरा टोकैक जरूरत किए भेलैन?"

मुदा अपराजितो अपने सीमामे रहैथ, तँए बोलीमे गरमी रहबे करैन। अदहो बात अढ़ुलियाक नै सुनलैन, अपने बजैमे बेताल रहैथ। मुदा मनमे शंका उठलैन जे हो-न-हो अखन एकरे अँगनामे छी, कोनो दोखे लगा दिअए। ..रसे-रसे पाछू-मुहेँ डेगो उठबैत आ दूरीक हिसाबसँ बोलियोमे जोर दैत विदा भेली। मुदा भऽ गेलै केनादन। एक्के-दुइए टोलक धियो-पुता सहैट-सहैट आबए लगल, तहिना जनिजातियोक ढबाहि लगि गेल। चिपड़ी पथैत महिनाथपुरवाली सेहो गोबराएले हाथे पहुँचली। तहिना फूल तोड़ए जाइत नवानीवाली फुलडाली नेनहि पहुँचली। सभसँ कमाल ननौरवाली केलैन। खाइले बेटा कनैत रहै, ओकरा आरो चारि थापर ऊपरसँ लगा फनैकत पहुँचली। तहिना लखनौरवाली खिसिया कऽ बेटाक आगूमे भात-दालिक बरतने रखि, अपनाकेँ पछुआइत बुझि लफड़ल पहुँचली। विचित्र भऽ गेलइ। सभ अपने-अपने फुरने अपन-अपन विरोधीकेँ चिक्कारी दऽ दऽ गरियाबए लगल। कियो केकरो बात सुनैले तैयार नहि। मुदा बजैत-बजैत मुँह दुखेने आकि बुधि जगने आस्ते-आस्ते हल्ला कम हुअ लगलै। कम होइत-होइत हल्ला सोलहन्नी शान्त भऽ गेल। मुदा तरे-तर केना-ने-केना दू पाटी बनि शब्दवाणक तैयारी चलए

लगल। ओना, खलीफा केम्हरो नहि।

अखन धरि पुवारिपारवाली दादी आ पछवारिपारवाली दादीकेँ सभ अपन-अपन अगुआ बुझैत। अगुआइ करैक बुड़धो छैन। मुदा पुवारिपारवाली ऐ दुआरे नै पहुँचली जे चारिमे दिनसँ दुखित छैथ। आइ एकादशी केना छोड़ितैथ। बिछानसँ उठैक होश नहि।

तहिना पछवारिपारवाली अपना घरबलाकेँ डेढ़ बीघा जमीनक जिनगी बुझा दुनू परानी अपनो मालक गोबर आ बेरू-पहर एक बेर चारागाह जा एक छिट्टा आरो लऽ अनैत। सएह अनैले गेल रहए। जइसँ गामक किछु गोरे कुट्टी-चालि करैत। मुदा दादियो पाछू घुमि कऽ देखैवाली नहि। जखने कनियोँ भनक लगि जानि जे फल्लीं-चिल्लीं बाजल, तँ अँगना पहुँच उपराग दऽ अबैत। आब कहाँ कियो गोबरबिछनी कहै छइ।

आँगनसँ टहलैत आबि फोंच भाय चचरी लग पहुँच नजैर दौगा-दौगा नाप-जोख करए लगला। मुदा काज अधखड़ुए, तँए गरे ने अँटैन। काजक दुनियाँमे अपन अँटाबेश नै देख वाद-विवादक दुनियाँमे पहुँच बतहूकेँ पुछलखिन-

"केतेटा चचरी बनत?"

डोरी फट्ठेपर रखि आगूमे ओंगरीक नहसँ चेन्ह दैत बतहू बाजल-

"ऐठीन तक।"

"झुझुआन बुझि पड़ै छौ।"

"से की?"

"साढ़े तीन हाथ तँ यएह भेल। तेकर वाद जँ एक्को बीत आगू-पाछू नइ रहत से केहेन हएत?"

फोंच भाइक बात सुनि बतहू गुम्म पड़ि गेल। कातमे ठाढ़ भेल

लेलहा सभ बात सुनैत। मुदा ऐ आशामे अखन चुप रहए जे जिनकासँ गप करै छैथ, पहिने हुनकर जवाब ने सुनि लेब। जँ अपने सक्षम वाद-विवाद कऽ सकैथ तँ सर्वोत्तम। नइ तँ जखन ऐठाम छी तँ ओते दूर धरि केना बतहा भैयाकेँ पाछू हुअ देब। बतहूकेँ चुप देख लेलहा बाजल-

"फोंच भैया, अहाँसे अधिक उमेरक बतहाभैया शरीर धुइन रहल छैथ, तैकालमे एतबो नै बुझलिऐ जे जिनका जइ काजक लूरि अछि ओ तइमे सहयोग करैथ। तैकालमे अपन कोनो कर्तव्य नै मुदा...।

..आइ धरि जिनगीमे केते चचरी बनेलौं आ केते मुरदा जरेलौं हेन? हँ! ई बात जरूर अछि जे गोटि-पंगरा जँ जरेनौं हएब तँ ओहन मुरदा, जिनका चचरीक जरूरते ने भेल हएत। पलंगपर उठा असमसान पहुँचै छैथ। चचरीक स्कूलमे पढ़लौं हम आ हिसाब बुझि गेलिऐ अहाँ?"

लेलहाक बात सुनि फोंच भाय तिलमिलाए लगला। क्रोधसँ आँखिमे नोर एलैन आकि डरसँ, ई बात लेलहा नै बुझि सकल। ऐगला गप सुनैले कान पाथि देलक। मुदा कोनो प्रश्न नै अबैत देख, फेर बाजल-

"पचासो ओहन मुरदा डाहने छी, गाड़ने छी जेकरा चारि गोरेक बदला दू गोरे पथियामे उठा सीक लगा बाँसक ढाठपर उठा अँगनासँ असमसान लऽ गेल छी। एहेन-एहेन केतेक की सभ केने छी से कहैक अखन समए नइ अछि। नइ तँ...।"

आँगनसँ पटपटाइत दरबज्जापर आबि फोंच भाय देवनन्दनकेँ दुनू हाथ जोड़ि कहलखिन-

"कठियारीमे हमरो हाजिरी।"

"बेस-बेस। एतबे की कम छिऐ।"

दरबज्जापर सँ फोंच भाय विदा तँ भऽ गेला, मुदा मनमे अन्हर-बिहाड़ि जकाँ उठए लगलैन। आगू-मुहेँ डेगे ने उठनि। पाछू घुमि बेर-बेर तकैथ।

एमहर अरथी उठबैले आ कठियारी जाइले घोल-फचक्का हुअ लगल। जनिजाति आ धिया-पुताक झुण्ड बाजाक लोभे आगू आबि-आबि ठाढ़ भऽ गेल। किछु गोरेक कहब रहैन, 'अपन पत्नियोँ धरि असमसान नइ जाएत।' तँ किछु गोरेक कहब रहैन, 'जिनका बेटा नइ रहै छैन हुनका तँ पत्नीए आगि दइ छथिन तँए केना मनाही कएल जाएत?

तहिना धिया-पुताक सम्बन्धमे सेहो प्रश्न उठैत जे ई तँ अन्तिम संस्कार-कर्म छी, जइमे खाधि खुनल जाएत, लकड़ी काटि जरौल जाएत। तइमे धिया-पुता अनेरे जा कऽ की करत?

मुदा संस्कारे ने संस्कार पैदा करैत अछि। अरथीक मुँहमे आगि लगाएबो ने संस्कार छी। जेकर जरूरत केकरा नइ छइ? आजुक धिए-पुते ने काल्हि जुआन बनि करत। तँए ओकरा काजसँ विमुख करब उचित नहि। मुदा काज[7] जेतेटा अछि, जेते लोकसँ कएल जाएत, तेतबे लोक ने चाही। तहन एते लोकक काज कोन छइ? फेर बाजा-बुजीक कोन काज अछि? काज मात्र मुरदे जराएबटा छी, आकि बेटी जकाँ एकठाम-सँ-दोसरठाम पहुँचेनाइयो छी।

एमहर बाजा गनगनाइत! रंग-बिरंगक सोहर, रंग-बिरंगक दुआरि निकालि, वटगबनीक रिहलसल मने-मन चलैत।

जहिना तरे-तर करिया काकाकेँ तहिना सुन्दर काकाकेँ छातीक

[7] मुरदा जराएब

पसीना गोलगलाकेँ भिजबैत, दुनूक मन घोर-घोर रहैन। अपन मन हारि मानि गेलैन। सहयोगीक जरूरत पड़लैन, मुदा सहयोगी के?

करिया कक्काक नजैर सुन्दर भायपर आ सुन्दर कक्काक नजैर किसुनपर। अपन-अपन जगहसँ उठि आँखिक इशारा चौमासक आड़िपर देलैन।

आगू-पाछू दुनू गोरे चौमासक आड़ि दिस, चारि डेग बढ़ौलैन आकि पाछूसँ लेलहा टोकलकैन-

“काका केतए ससरल जाइ छिऐ, काज अछि ऐठाम आ अहाँ विदा भेलौं बाध दिस?”

लेलहाक बात दुनू गोरेक करेजकेँ जेना छेद देलकैन। छटपटाइत मन कहलकैन-

“तेहेन उफाँटि टोकि देलक जे की विचार हएत।”

मुदा दरबारमे जहिना भिखमंगाक बिजकल मन रहैत, तहिना दुनू गोरेक रहैन। कठहँसी हँसि-हँसि दुनू गोरे संगे बजला-

“जमात करे करामात! बौआ, तोहूँ इम्हरे आबह?”

तीनू गोरे चौमासक आड़िपर बैस काजक समीक्षा करए लगला। मुदा मुरदा जराएब आ कठियारी जाएब, दू प्रश्न भेल। किछु गोरेकेँ लकड़ी कटैसँ खाधि धरि खुनए पड़त। किछु गोरे ओहिना मुड़ी गोंति कऽ सोग मनौता। सवा पहर मुरदा जरैमे लगै छै, तैपर सँ जारैन काटै-फाड़ैसँ लऽ कऽ अछिया सजाएब धरि अछि। घरोपर केते खटनी भेल अछि। ओहूना दू घन्टा खटला पछाइत किछु खाइ-पीबैक मन होइ छइ।

बिच्चेमे लेलहा टपकल-

“ओइ जगहपर खाइक मन हएत?”

सुन्दर लाल कहलखिन-

“धुर्र बुड़ी, सभ दिन आड़िए-धूर आ गाछीए-बिरछीमे खाइ छेँ से बिसैर गेलही?”

मुँह सकुचबैत लेलहाक मन लेलहाकेँ कहलक-

“अनेरे बजलौं।”

तीनू गोरे विचारलैन जे पहिने घरवारीकेँ–जे जरबए नै जेती, जना दियौन जे कमसँ-कम दू बेर चाह आ लोकक हिसाबसँ सुखल जलखै-पानि पठा दैथ। अपने सभ ने बारीक रहब, जेकरा जेते मेहनत हेतै ओकरा ओते अहगरसँ देबइ। मुदा नै लऽ गेने तँ एकटा आफद हएत, जाबे धिया-पुताक पेट भरल रहतै तबे तक ने नाचत। जखने पेट कुलकुलेतइ आकि घर दिस विदा हएत। बिना हाथ-पएर धोनइ भनसा घर पहुँच जाएत। तँए ओकरो तँ घेर कऽ रखि नँचबैक अछि। हँ, किछु गोरे एहेन जरूर छैथ जे मुँहमे किछु नै लेता। लेबो केना करता। एक जिनगीक ओहन सिमान छी जे सोझहाक प्रश्न अछि, तँए हटल आकि बाइस-तेबाइसकेँ आनबो उचित नहि।

सुन्दर कक्काक मनमे उठलैन, ‘सिमानक विवाद तँ दू खेत, दू गाम आ दू दुनियाँ भऽ जाइत अछि। कियो मृत्युकेँ खुशीसँ छाती लगबै छैथ, तँ कियो कानै-कलपै छैथ। शुभ काज तँ खाइत-पीऐत हएब नीक।’

मुहसँ हँसी निकललैन। तैबीच लेलहाक नजैर सुन्दर कक्काक मुँहपर पड़ल। मुस्की देख अपनेपर शंका भेलै जे फेर ने तँ किछु हूसल। मुदा अहं जगलै, बाजल-

“काका, जेते अबेर करब ओते अबेर हएत। अबेर भेने केतेको गोरे बिमार पड़त।”

तीनू गोरे वाड़ीसँ दरबज्जापर आबि एक्के बेर बजला-

“राम-नाम सत्य छी।”

आहि रे बा! फेर चचरी लग हुज्जैत शुरू भेल। कियो बजैत जे जीबैतमे कक्काक उपकारक बदला नइ दऽ सकलयैन, तँए हम उठाएब? किछु गोरेक कहब रहै, काका की बाबा आकि भैया हमरो माए-बाबूकेँ उठौने रहैथ, तँए उठाएब। किछु गोरेक कहब जे बड़ बेरपर रूपैआ सम्हारने छला, तँए अपन कर्ज चुकाएब?

आड़िपर गप सुनि लेलहोमे जेना पावर आएल। हुज्जैतयाकेँ दुनू हाथे इशारा दैत बाजल-

“सुनै जाइ जाउ, कान्ही लगा कऽ उठबयौन नइ तँ एकभग्गु भेने दरद हेतैन।”

लेलहाक विचार सभ मानि, चारि गोरे चचरी उठबए बाबा लग पहुँचल। चचरी लग पहुँचते जेना एक्के बेर सबहक मुँह चहा उठल- ‘रघुनन्दन नइ रघुनन्दनक अरथी उठि रहल छैन!’

सुभद्राक आँखि, कोसीक ओइ धारा सदृश बहए लगलैन जे पहाड़क झरना होइत समतल जमीनपर आबि अनवरत चलैत रहैए...।

आँगनसँ निकैलते एक दिस “राम-नाम सत्य छी? तँ दोसर दिस शहनाइपर बहिनक विदाइक धुन..! यएह तँ सुख-दुख दुनू जगहक दुनियाँ छी।

घरक मुहथैरपर एक दिस करिया काका आ दोसर दिस सुन्दर काका ठाढ भऽ अन्तिम प्रणाम कऽ आगू बढ़ौलैन। तइ पाछू देवनन्दक हाथमे आगि दऽ विदा केलैन। तइ पाछू बरियाती सजि गेल। सभ बरियातीकेँ निकलला पछाइत सुभद्रा आ शीला रूकि

गेली।

समए पाबि करिया काका शीलाकेँ चाह-जलखै-पानिक बात कहि, रेलगाड़ीक गार्ड जकाँ पाछू-पाछू चलला। गाछीक कोणपर पहुँचते करिया काका आ सुन्दर कक्काक खोज हुअ लगल। मुड़ी-उठा देवनन्दनो तकलैथ। मुदा दुनू गोरेकेँ अदहे रस्तामे अबैत देखलैन।

गाछी पहुँचते करिया काका आगू बढ़ि ओंगरीसँ इशारा दैत बजला-

“ऐठाम भैया मचान-खोपड़ी बनबैत रहैथ।”

दोसर दिस माने उत्तर-पूरब कोणमे देखबैत फेर बजला-

“आ ऐठाम बेसी काल बैसै छला। तँए नीक हएत जे बिच्चेमे दिऐन।”

कहि लेलहाकेँ कहलखिन-

“लेलहू, चलह। पहिने लकड़ी देखी।”

करिया काका, सुन्दर काका, लेलहा, बचनू, चंचल सभ बढ़ला। एमहर जीबछो, छीतनो आ रंगलालो अपन-अपन जगह टेबि बाजा उठौलक। एकछाहा मालदहक कलम, खाली चारू हत्तापर शीशो, जामुन, गमहाइर। एकोटा आमक गाछ सुरेब नहि। सभ अष्टावक्र जकाँ। तहूमे मृत्यु-ले जीबितकेँ बलि देब उचित नै बुझि आमक गाछसँ नजैर हटा लेलक। गमहाइर दिस नजैर दैते लेलहा बाजल-

“गमहाइर महराज आ जामुन महराज तँ तेहेन छैथ जे अपना बुत्ते अपनो नै पार लगतैन, मरल देह हिनका बुत्ते जरौल हेतैन।”

लेलहाक बात सुनि सुन्दरो काका आ करियो काका आँखि मिला मुस्कियाए लगला। मुदा लेलहाक बाजबसँ चंचलकेँ तामस पजरए लगल। खढ़क आगि जकाँ लगले पजैर गेल-

“यौ सुनर काका, जहिना पनियाह जामुनक लकड़ी होइए, तहिना गमहाइरो होइए। ऐसँ नीक आमक हएत। कनी रूखो होइए। तहूसँ रूख इलचीक होइ छइ। अनेरे काजमे कोन भदबा लगौने छी। हइबए तँ देखै छिऐ, दछिनबरिया हत्ता परहक शीशो सुखल अछि। मुरदा जरबैले ओहन जारैन चाही जेकर धधड़ा करगर होइ।”

सभ कियो दछिनबरिया हत्ता लग पहुँचला। दस-पनरहटा शीशो पैछला साल बिमारीमे सुखि गेल छेलइ। तीने चारिटा साइजक गाछ, नइ तँ सभ अनसाइजक। जे जरने भाव बिकाएत। पातर गाछ कटने चारिटा पाँचटा काटए पड़त। से नइ तँ ओहन दूटा गाछ काटि लिअ, जइसँ सभ काज नीक जकाँ भाइयो जाएत आ थोड़-थाड़ डोमोले रहि जेतइ। मुदा लेलहाक नजैर तर चलि गेल। बाजल-

“काका, केते लकड़ीसँ मुरदा जरै छइ?”

करिया काकाकेँ सुनल तँ रहैन मुदा लिखल नहि पढ़ने रहैथ। प्रश्नक जवाबो नै देब उचित नहि। भलेँ कहि दिऐ, नै बुझल अछि। मुदा जे काज संगे मिलि एते केने छी तइमे हमहीं सोलहन्नी केना मूर्ख बनि जाइ।

फरैक कऽ बजला-

“अँइ रौ लेलहा, तोहर हम ठकदरूआ छियौ जे एहेन बात पुछलँह। एते मुरदा जे संगे जरौलौं से हम देखलिऐ आ तूँ आँखि मुनने रहँह।”

करिया कक्काक बात सुनि दोहरी नजैर खसल। मनमे रहै जे काजक लकड़ी छी, बेसी जराएब उचित नहि, जँ जड़ि दिससँ टोनि कऽ लऽ लेब तँ घरक केबाड़ी भऽ जाएत। से नइ तँ, पहिने टोनि कऽ कलमक सीमा टपा कऽ रखि दिऐ। पछाइत लऽ जाएब। से मंगैसँ पहिनहि करिया काका खिसिया गेला। अपन काजक रूखि खराब

होइत देख लेलहा सोचलक जे से नइ तँ सझिया करि कऽ बाजी। बाजल-

“काका, दुनू भाँइ छी। बहुत लकड़ी अछि। निचका टोनि कऽ केबाड़ बनबैक विचार होइए?”

मने-मन हिसाब जोड़ि करिया काका कहलखिन-

“काज-जोकर निकालि कऽ सिरहौना-पटौना सौंसे रहह दिहक आ ऊपरका फाड़ि लीहह। ताबे हम ऐगला काज देखै छिऐ।”

कहि कोदारि लऽ अछियाक खाधि नापि, खुनैले झोलीकेँ कहलखिन। झोली हँसैत बाजल-

“भाय लोकैन, सुनि लिअ। हमहूँ बुढ़ाएले जाइ छी, मुदा जाबे बाँहिमे दम अछि ताबे समाजक भार, अछिया खुनब–उघैत रहब। एक साए पच्चीसम अपनासँ उमेरगरक अछिया खुनने छी। अपनासँ कम उमेरक खुनैक मौका नै भेटल।”

कहि झोली अछिया खुनए लगल। तैकाल जीबछ शहनाइपर उठौलक-

“मन सुमिरन करले रात-दिना, जगमे कोइ नै अपना...।”

अछिया खुना गेल। शीशोक ओहन मोट लकड़ी सिरहौना-पटौनामे देल गेलैन, जेते मोटगर ओछाइनपर रघु जिनगीमे कहियो सूतल नै छला। एक-एक चेरा चढ़बैत छाती भरि ऊँच चेरा रघुनन्दन कक्काक संग जरैले तैयार भऽ गेल।

सुन्दर काका देवनन्दनकेँ बाँहि पकैड़, धधकैत ऊक मुँहमे लगौलैन।

मुँहमे ऊक पड़िते, बिजलोकाक इजोत जकाँ सबहक मनमे रघुनन्दन पहुँच गेलखिन। बाबा, काका, भैया, भाए, बौआ, बच्चा,

नूनू इत्यादि हजारो रूप पटेरक फूल जकाँ उड़ए लगल। जहिना पटेरक एकटा डाँटमे हजारो-लाखो पूर्ण फूल निकलैत तहिना रंग-बिरंगक फूल बनि रघुनन्दन मने-मन उड़ए लगला।

आँगनसँ अरियाति सुभद्रो आ शीलो रहि गेली। शीलाक मनमे चाह, जलखै पठबैक ओरियान करब रहैन। आ सुभद्रा सोचैथ जे घरनिप्पो सुखाइए गेल अछि। मास दिन केना भीजल रहत। पुतोहुजनीकेँ ओरियाने-बात करैक छैन। तइमे नीक जे एक-गिलास पानि छीटि लाभर-जीभर बाढ़ैनसँ बहारि दिऐ। आब तँ चारिम दिनसँ सभ दिन घर-अँगना होइते रहत। सएह केलैन।

चाह-जलखै-ले गाछीएसँ बौकू आ शीतला चलि आएल। दुनू गोरेकेँ सभ समान दऽ निचेन भेली। धिया-पुताक हल्होरिमे आशा सिंगरिया-बाजाबलाक पाछू-पाछू चलि गेल रहए। ताधैर सुभद्रो आँगन बहारि निचेन भेली।

तखने शीला सुभद्राकेँ कहलखिन-

“माए, केतौ बैस कऽ बुड़हाक बात कहौथ?”

सुभद्रा कहए लगली-

“हँ कनियाँ, जैठाम अपने सूतल छला तहीठाम चलू, भने तुलसियोक गाछ बगलेमे अछि।”

दुनू गोरे बैसते छेली कि लोहनावाली दादी हहाएल-फुहाएल पहुँचली। लोहनावालीकेँ देखते शीला कहलकैन-

“आबौथ बाबी, अँगने आबौथ। अँगनामे दुइए गोरे छी।”

अँगना-घर नीपल नै देख लोहनावालीक मनमे तरे-तरे क्रोधक लहकी-लहकए लगल। मुदा क्रोधकेँ दबैत सुभद्राकेँ कहलखिन-

“दियादनी, अहाँ तँ हमरासँ जेठ छी, मुदा सभ विध-बेवहार

सभकेँ थोड़े मन रहै छइ। ऐमे एकटा विध आरो होइ छइ।”

“की?”

“स्वामीक निमित्ते कपारमे पाथर लगाएब।”

मुस्की दैत सुभद्रा बजली-

“हँ, हँ, ई तँ हमरो मन अछि।”

“अखन नै बैसब। जाइ छी।”

कहि लोहनावाली विदा भेली।

“बेस, बेस। जाउ।”

कहि पुन: दुनू सासु-पुतोहु बुड़हाक जगहपर जा बैसली, आँखिसँ नोर बिलाएल।

मुस्की दैत शीला बजली-

“माए, बुड़हासँ कहियो झगड़ो भेल छेलैन?”

“बुड़हा नर्कसँ स्वर्ग गेला। हुनकर आगि नै उठेबैन। हमरो माए-बाप सिखा देने रहैथ। मुदा जेते माए-बाबू सिखौने रहैथ तइसँ बहुत बेसी बुड़हा सिखौलैन। हरिदम कहैत रहै छला जे जेकरा मनुख बुझै छिऐ ओ मनुखक हाड़-मांसक बनल एक ढाँचा मात्र छी जेकरा मनुख बनबै छै मन। मन जेहेन रहत तेहेन ओ मनुख बनत। जेहेन मनुख बनत तेते लोकक मनमे जगह भेटतै। जगहो दू तरहक होइ छइ। एक तरहक होइत अछि नीक आ दोसर अधला। मनुखकेँ हरिदम नीक विचार मनमे रखक चाही।”

बिच्चेमे शीला टपैक गेली-

“परिवारमे तँ घरहटो होइ छै, बिआहो होइ छै, पावैनो होइ छइ। ओ काज केना करै छेलखिन।”

“कनियाँ, परिवारमे नमहर काज भेने चुल्होक काज बढ़िए जाइत अछि। मुदा हरिदम ई मनमे राखी जे अपन काज सम्हारि दोसरोक काज करी। जँ परिवारमे एहेन लोक बनि जाएत तँ जहिना बीटमे नवको आ तीन-सलियो-चरि-सलिया बाँस धरि एक संग समटल रहैए, जइसँ पातरो बाँसकेँ देखै छिऐ केते-केते नमहर होइए, कड़ची सभकेँ समैट कऽ रखैए– वएह कड़ची छी परिवारक अपनासँ बढ़ि दोसराक काजमे सहयोग करब– तहिना परिवारसँ-गाम आ गामसँ-राज्य-देस धरिमे समटल सम्बन्ध रहत नइ कि फल्लर। औझुका लोकक मन ढील भऽ गेल अछि। जेकर फलाफल सोझहेमे अछि।”

◌

शब्द संख्या : 14981

2.

खूब अन्हरगरे भोरमे सुभद्रा शीलाकेँ उठबैत कहलखिन-

“कनियाँ, उठू झब-दे उठू।”

सासुक औगताएल बोली सुनि शीला उठि कऽ बैसैत पुछलखिन-

“की भेलैन जे एना अधनिनामे उठा देलैन?”

“असथिरसँ बाजू। अखन गामक लोक नै उठल अछि। अपन काज आगू बढ़ाउ।”

“कोन काज?”

“जखने एक्के-दुइए लोक सभ जागए लगत आकि भूत सभ आबए लगत। अहाँ नव-नौताड़ि छी तहूमे शहर-बजारमे रहै छी। अहाँ गामक भूतकेँ नै चिन्हबै बुड़हा सभटा भूतकेँ चिन्हा देने छैथ। अखन एतबे सुनू। नइ तँ जिनगी हूसि जाएत। बुड़हा मरि गेला तँए कि सभ ओइ लगल मरि जाएब। सभकेँ अपन-अपन दाना-पानी अछि। मुदा फेर कहै छी। गप-सप्प करैले भरि दिन खालीए अछि। समाजक लोक सभसँ सभ बात पुछबैन आ बुझब। अखन जल्दी बिस्कुट डिब्बा निकालू आ चाह बनाउ। ताधैर हमहूँ बौआकेँ एकटा दतमैन दऽ अबै छिऐन। जाबे अहाँकेँ चाहो नै बनत ताबे ओ तैयार भऽ जाएत।

चूल्हिमे तँ छाउर नै अछि, माटिए लऽ कऽ हाँइ-हाँइ दू घूसा दाँतमे दियौ आ कुर्ड़ा करि कऽ पानि पीब लिअ।”

कहि सुभद्रा देवनन्दनकेँ उठबैले दलानपर गेली। जइ जगहक चौकीपर रघुनन्दन सुतै छला, ओही अखड़े चौकीपर देवनन्दन सूतल छला। देहपर हाथ दऽ आस्तेसँ डोलबैत बजली-

“बाउ, बाउ उठू! लिअ दतमैन पहिने मुँह-हाथ धोइ लिअ।”

मृत्यु-कर्मक विध बुझि देवनन्दन किछु पुछलखिन नहि। माइक सोलहन्नी बात मानि दतमैन करए लगला। सुभद्रा अपनो मुँह धोइ कुर्ड़ा कऽ आँगनक ओसारपर बैसली। प्लेटमे चारिटा छोट साइजक बिस्कुट आ गिलासमे पानि नेने शीला पतिकेँ दइले चलली। शीलाक हाथमे गिलास-प्लेट देख सुभद्रा बजली-

“पौआही पाँउ-रोटी नै अछि तँ बड़का डिब्बा–चारि साए ग्रामबला, बिस्कुटेक दऽ अबियौ।”

शीला सएह केलैन। चाह पीऐत सुभद्रा कहए लगलखिन-

“अपना सभमे तँ तेरहे दिनमे सभ कर्म भऽ जाइत अछि मुदा अपने गामक आन टोलमे केकरो पनरह तँ केकरो सतरह तँ केकरो महिना दिनपर कर्म सम्पन्न होइत अछि। हम किए एते भोरे उठा देलौं से बुझै छिऐ? आइ एक्के बेर बौआकेँ एक-भुक्त करए पड़तैन गोसाँइ लहसैत पहिने बुड़हाकेँ अरगासन दैत खेता। आब अहीं कहू जे जे आदमी बानर जकाँ किछु-ने-किछु हरिदम खाइत रहै छैथ ओ भरि दिन निराधार केना रहता? बुड़हा जिनगीक संगी छला मुदा बौआकेँ दस मास पेटमे पालने छी। ओ पालब हम नै बुझबै तँ पुरुखकेँ बुझब छिऐ। अखन कियो नै अछि कहि दइ छी। हमरा कोन, हमरा तँ हरिवासयक साधल देह अछि मुदा अहाँ दुनू परानी तँ से नइ छी। लोके भूत छी से बुझि लिअ। जखन अँगना खाली रहए आ खाइ-

पीबैक मन हुअए तँ घरमे जा कऽ खा लेब। बुड़हाक क्रिया-कर्मक जे विधान अछि आ समाजमे रहै छी ओ तँ समाजेक विचारानुसार हएत। मुदा ईहो ने मनमे राखए पड़त जे एक तँ समांगक सोग मनमे अछि तैपर सँ खेनाइयो-पिनाइ छोड़ि देब तँ की बुड़हा लगल सभ चलि जाएब? जेते काल जीबै छला, सेवा-टहल केलिऐन वएह दायित्व भेल। एकटा खिस्सा कहै छी कनियाँ। खिस्सा नै आँखिक देखल घटना..।”

ओंगरीसँ टोलकेँ देखबैत-

“ओइ टोलमे फुसनाक घर छइ। बहुत दिन तँ नै भेलैए मुदा तैयो पच्चीस-तीस बरख भेल हेतइ। फुसनाक बाबा मुइलै। ओ पेटबोनिया रहए। मुइलाक पराते अरगासन की देत आ अपने एक-भुक्त की करत..! मुदा तैयो केकरो-केकरोसँ पैंइच लऽ लऽ पार लगलै। बिना आमदनीए परिवार केना चलतै। खाइ-बेतरे धिया-पुता सभ टौआइ। चिन्तासँ दुनू परानी तरे-तर सूखए लगल। धिया-पुताक मुँह देख वेचारी फुसना-माइक करेज चहैक गेलइ। मरि गेल वेचारी! फुसनाक-गरदैनमे माइक उतड़ी आ बापक गरदैनमे बापक उतड़ी। तैपर सँ बीस दिन बाद मलेमास पड़ि गेल।”

दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलै...।

सुभद्राक आँखिसँ बहैत सरस्वतीक धारा देख शीलाक मुहसँ अनासुरती निकलल-

“वाह रे धैर्य! अपना सोगे नोरो नहि आ अनका सोगे धार।”

चाह पीब पान खा पढ़ुआ भाय पत्नीकेँ कहलखिन-

“हमरा अबेरो भऽ सकैए। तैबीच जँ कियो खोज करैथ तँ कहि देबैन जे देवनन्दनक ऐठाम जिज्ञासा करए गेला।”

"अखने किए जाएब?"

"अहाँ जे सोचै छिऐ तइसँ हटि कऽ सोचए पड़त।" -कहि पढ़ुआ भाय डेग बढ़ौलैन।

पत्नी पाछूसँ कहलखिन-

"अच्छा जाउ।"

रस्तामे पढ़ुआ भाय सोचए लगला जे अपने पढ़ल छी, पोथीक बात बुझै छिऐ। अनको कहै छिऐ। मुदा परिवारक जँ सभ नै बुझत तँ अपन बुझलाहा पइठ अपने केतेक हएत? खाएर.., जाधैर आँखि तकै छी, सोचै-विचारैक शक्ति अछि, मात्र ताधैरक भार। जँ से नइ तँ की शास्त्र ओकरा-ले नइ जेकरा कियो अपन नइ छइ?

मन ओझराए लगलैन। मुदा नजैर अहीठाम अँटैक पत्नीक प्रश्नपर चलि गेलैन।

मार्किन वस्त्रमे सजल असकरे देवनन्दन गुरुकुलक विद्यार्थी जकाँ चौकीपर दच्छिन-मुहेँ बिस्कुट खा पानि पीब चाह पीबते रहैथ कि शीला सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ नेने आबि आगूमे रखि खाली गिलास लइले ठाढ़ भऽ गेली। तीन-चारि घोंट चाह गिलासमे रहबे करैन मुदा मन जे जबदाह छेलैन से आब हल्लुक भऽ गेल रहैन। शीला दिस मुस्की दैत, डेढ़-बराह आँखिए तकलैन। शीलाक आँखिकेँ काजक बोझ दबने। पतिक मुस्की जेना मनक घूरकेँ एक मुट्ठी सुखलाहा खढ़मे सलाइ पजाइर देलकैन। मुदा धधराक लपटक संग काजे अगुआ गेल। बजली-

"आइसँ समाजक लोक काजक विषयमे पुछैले एबे करता। हुनका सभकेँ खाइ-पीबैले नै देबैन से उचित हएत?"

देवनन्दन कहलखिन-

"कथमपि नहि।"

मनक मुस्की, अपन नमहर ऋृण अदाए होइत देख अठन्नियाँ हँसी बनि निकललैन-

"घरमे की सभ अछि?"

"चाह-पत्ती, चीनी, दूधक डिब्बा सिगरेट-सलाइ तँ अननहि छी, आरो किछु जोगार करए पड़त से तँ नै बुझल अछि।"

अपन भार उतारैत देवनन्दन बजला-

"गामक सभ बात तँ हमहूँ नहियेँ बुझै छी। करिया काकाकेँ बजा पुछि लइ छिऐन।"

"अच्छा हौउ। कौआ डकल। झब-दे सिगरेट पीब लिअ। ने तँ अनेरे सिगरेटक सुगन्ध चलत। लोक जागत।"

पत्नीक गतिगर गप बुझि गिलास हाथमे दैत देवनन्दन सिगरेट धरा सोंटए लगला। मनमे एलैन, अपने दुनू परानी ने बहरबैया भेलौं मुदा माए तँ सभ दिन गाममे रहली। हुनका सभ विध-बेवहार तँ बुझले छैन। तही काल बिस्कुटक ढेकार भेलैन। मुँह लाड़ए-चाड़ए लगला। सिगरेटक ठुट्ठी फेकते रहैथ कि पढ़ुआ काकापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते चौकीएपर सँ बजला-

"आशा।"

पतिक बात शीला बुझि गेली। गैस चूल्हिपर चाहक ओरियान करैत शीला आशाकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, दरबज्जाक कोणपर सँ देखने आबह जे केते गोरे छैथ?"

दौगल आबि आशा पढ़ुआबाबाकेँ बैसल देख घुमि माए लग जा कऽ बाजल-

"बाबू लगा दू गोरे।"

पढ़ुआ काका आबि चुपचाप मौन धारण केलैन। दू मिनटक पछाइत आँखि खोललैन कि आशाकेँ चाहक कप बढ़बैत देखते जहिना रेलमे कटल बेकतीपर नजैर पड़िते बुधिक फाटक बन्न भऽ जाइत, तहिना भेलैन। तैबीच देखलैन जे देवनन्दन दू चुस्की मारि लेलैन। मनमे बिहाड़ि उठलैन ओना तँ नह-केश कटेलाक उत्तर नइ तँ कम-सँ-कम छौरझप्पी धरि तँ सोग मनेबाक चाही। मुदा बुढ़क मृत्युमे सोग मनेबाक चाही आकि हर्ष? जँ सोग मनाएब तँ की प्रकृतिक संग छेर-छार नै हएत? मुदा परम्परो तँ अपन महत रखैत अछि। अखन धरि कर्ताक संग परिवारो आ समाजोक संग किछु निअम बनल अछि। जेकर संचालक अपने सभ छिऐ। तैठाम की कएल जाए? तहूमे नवकबरिया डाक्टर छैथ, मनमे कचोट हेतैन...। मरै-हरैक तँ सीमो नहियेँ होइत। बुढ़ो मरैत, जुआनो मरैत आ बच्चो मरैत अछि। तखन तँ सभकेँ अपन-अपन जिनगीकेँ दीर्घायु बनबैक छइ। तहीले ने सभ अपन-अपन जिनगीकेँ लगौने रहैए। मुदा असकरे कोनो काज करैसँ पहिने दोसरो गोरेकेँ पुछि लेब आवश्यक अछि। मुदा लगमे के अछि जेकरासँ पुछबै। भरोसे रहब तँ चाहे दुइर भऽ जाएत! मुदा देवनन्दनकेँ पीएेत देख भरोस भेलैन। चाहक चुस्की लैत सोचए लगला, अपना सबहक समाजमे तेरह दिनक कर्म डाहब-जराएबसँ लऽ कऽ द्वादसा-कर्म धरि अछि। जहिना घरसँ निकालि गाछी लऽ जा गाछक संग कऽ देलिऐन। तहिना ओइठाम काज सम्पन्न कऽ घरपर लऽ अनलयैन। आब घरक काज शुरू हएत। फेर मनमे उठलैन जे काजक दौड़मे जिज्ञासो तँ होइत अछि? फेर मन ओझराए लगलैन। तेरह दिन हिसाब जोड़ैथ तँ ठीके बैसैन। मुदा जिज्ञासा तँ तखनेसँ ने शुरू हएत जखनसँ आँगनमे लोह-पाथर छुबि लोक अपन-अपन घर चलि जाइए। समाजक तँ एक परकिरिया सम्पन्न भऽ गेल। एहनो तँ भऽ सकैत अछि जे गाममे नै छला। जरौला पछाइत एला। हुनका

कखन समाजिक काजमे संग कएल जाए। जँ छौरझप्पीक पछाइत कएल जाए तँ संस्कारक संगी माने जरबैक संगी मानल जेता। मुदा जहिना माटि खुनैत-खुनैत केतेको रंगक माटि धरतीमे मिलैत तहिना माथ खोधैत-खोधैत चिक्कन माटि भेटलैन। छह-छह करैत पानियोंसँ बेसी छिछलाह! फुरलैन- मनुखकेँ समैक अनुकूल बना चलक चाही। जहिना अनेको कारणसँ वायुमण्डल बदलैत रहैत अछि तहिना जँ मनुखो नइ बदलत तँ गतिहीन भऽ जाएत। गतिहीन आ मृत्युमे अन्तरे की..? जेते पढ़ुआ काका सोचैथ तेते मन ओझराएल जाइन। बजला-

"बौआ, तीन दिन धरि जहिना बाधमे हरियरी नइ रहने माल-जालकेँ बहटारि चरबाह अपने गुल्ली डन्टा खेलए लगैत तहिना छौरझप्पीसँ पहिने मन बहटारए एलौं। अखन जाइ छी फेर आएब। मनमे चिन्ता नै करब। समाज समुद्र छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ बड़का-बड़का पानिक जानवर धरि प्रेम-भावसँ जीवन-यापन करैए। सभ शक्ति समाजमे छइ।"

कहि पढ़ुआ काका रस्ता धेलैन।

माथ उधारने, अदहा देह वस्त्रसँ झाँपल गुदरी पाछू-पाछू आ डाँड़मे ठेहुनसँ ऊपर धोती, कान्हपर तौनी नेने आगू-आगू हुलन आबि देवनन्दनकेँ ओसारक निच्चाँसँ प्रणाम केलकैन।

शिष्टाचारकेँ देखैत डाक्टर देवनन्दन चौकीपर सँ उठि ओसारक निच्चाँ आबि, भुइयेँमे चुक्की-माली बैस दुनू परानी हुलनकेँ सेहो बैसैले कहलखिन।

मुँह सकुचबैत हुलन कहलकैन-

"सरकार, अहाँ लग हम केना बैसब? हम ठाढ़े रहै छी।" बजैत-बजैत दुनू परानीक आँखिसँ नोर टघरए लगल।

गाल परहक नोरक टघार पोछैत हुलन बाजल-

"गामक खुट्टा उखैड़ गेला। कक्काक अछैत कहियो चिन्ता नै भेल जे समाजसँ बाहर छी। आन जे अछि ओ हरिदम अगराहीए लगबैत रहैए।"

"अच्छा, गामक बात पाछू कहिहह पहिने अपन काज कहह।"

पतिकेँ दबारैत गुदरी बाजल-

"बौआ डागडरबाबू, अहाँ देवता छी। कोनो बात नुका कऽ नइ रखब। हमरो काज बहुत अछि। एक दिन बीतिए गेलैन। दसे दिनपर नह-केश होइ छइ। ओइसँ पहिने सभ बरतन बना कऽ दिअ पड़त। बीचमे आठे दिन समए बँचलै। दुइए परानी काज करैबला छी। धिया-पुता सभ इसकूले जाइए।"

स्त्रीगणक बोली सुनि अँगनासँ सुभद्रो आ शीलो दरबज्जापर एली। दरबज्जापर अबिते सुभद्रा गुदरीकेँ कलखिन-

"कनियाँ, ओजार-पाती नै अनने छह? आब तँ सूपे-चालैनक काज पड़त। कनी ओकरा जोड़ि-जाड़ि दितहक।"

"नै काकी कहाँ किच्छो अनने छी। काल्हि बेरूपहर आबि करि कऽ देबैन। अखनी तँ काजेक बरतन बुझैले एलौं हेन।"

"बेस-बेस। मुदा एकटा बात मन रखिहह जे जहिना बुड़हा मेघडम्बरक सिनेही छला तेहने बनबिहह।"

मेघडम्बरक नाओं सुनि मुस्कियाइत हुलन बाजल-

"काकी, जहिना भगवान विष्णु वामनरूपमे मेघडम्बर ओढ़ै छला तइसँ बीस कक्काक मेघडम्बर हेतैन। पाँच गोरेक परिवार तरमे अँटाबेश कऽ सकैए।"

सुभद्रा देवनन्दनकेँ कहलखिन-

"बाउ, अपने तँ गामक किछु बुझै नै छह, हम स्त्रीगणे भेलौं।

मरदा-मरदीक काज छी। करियो बौआकेँ बजा लहुन।"

सुभद्राक बात सुनिते गुदरी करिया काकाकेँ बजबए विदा भेल।

देवनन्दन हुलनकेँ पुछलखिन-

"कारोबार की सभ छह?"

कारोबारक नाओं सुनि हुलन हरा गेल। मन पड़लै अपन सुगर। भड़भड़ाएल स्वरमे बाजए लगल-

"भाय, गरीबकेँ कियो नीक केनिहार नहि। देवस्थानमे दोहाइ दइले गरीब अछि। जहिना केतबो दोहाइ देनौं गहुमन साँपक बिख नै उतरैए तहिना दीनदयाल भजने की हेतइ। यएह गाम छी धनेसर ऐठीन भोज रहइ। अपनो सभ अठि-काँठ समेटलौं आ अँइठारमे फेकल अँठिहा पातमे सुगरकेँ छोड़ि देलिऐ। धनेसरक बेटा तेहेन सेतानक चरखी अछि जे चोरा कऽ पोखैरक माछ मारैले इन्डोसेल अनने रहए। पातपर छीट देलकै। सभटा सुगर मरि गेल। तइ दिनसँ ने पूजी भेल आ ने फेर दुआरपर पशु।"

देवनन्दन अकचकाइत पुछलखिन-

"जखन खेतो ने छह, सुगरो सभटा मरिए गेलह तखन गुजर केना चलै छह?"

देवनन्दनक प्रश्न सुनि हुलनक मनक आशा फुटि कऽ निकलल-

"डाकदर साहैब, समाज जीबैत रहए...।"

सुभद्रा दिस देख-

"भगवान काकीकेँ औरदा देथुन। काकीकेँ बुझले छैन जे बारहम-तेरहम मास हिनके दुनू परानीक असिरवादसँ गुजर करै छी।"

हुलनक उत्तर सुनि देवनन्दनक मनमे सुनैक उल्लास जगलैन। भुखाएल जकाँ पुछलखिन-

"से की?"

रेगहाए कऽ हुलन कहए लगलैन-

"बाउ, गरीब लोकक लिए आसिन-कातिक सभसँ भारी होइए। मुदा सभ साल काका हमरा दूटा बाँस शुरूहे आसिनमे दऽ दइ छैथ। दुनू बाँस लऽ जाइ छी। ओकरा चिड़ि‍-फाड़ि कऽ बरतन बनबए लगै छी। ओना कोनियोँ-छिट्टाक बिकरी दोगा-दोगी हुअ लगैए। मुदा फुलडालीक संग आरो-आरो समानक बिकरी हुअ लगैए। जइसँ खूब नीक-नहाँति तँ नहियेँ मगर गुजर चलए लगैए। ई आशा अखनो अछिए। जाबे काकी जीबैत रहती ताबे रहबे करत।"

हुलनक बात सुनि देवनन्दन चौंक गेला। मनमे एलैन जे पिताक कएल कर्म-धर्मकेँ हम मेटा देब। कथमपि नहि। मुस्की दैत बजला-

"बाबूक सभ किछु रहबे करथुन।"

देवनन्दनक विचार सुनि हुलनक आशा बनले रहल।

करिया काका बजार जाइक तैयारीमे रहैथ, पत्नी बुझा-बुझा कहैत रहैन-

"औझुका एक-भुक्तक सभ सरंजाम देबैन। बारह-तेरह दिन तँ सभ कियो हुनके काजमे लगि जाएब तँए आइए तेरह दिनक नोन-तेलक ओरियान नै कऽ लेब तँ बीचमे छुट्टी हएत?"

पत्नीक बात करिया काका सुनबो करैथ आ समान अनैक झोरा-झोरी आ रूपैआक हिसाब सेहो मने-मन जोड़ैत रहैथ। तैबीच गुदरी डेढ़ियापर सँ हाक देलकैन-

"काका, काका?"

टाटक दोगसँ मुड़ी उठा देखलैन तँ गुदरी-डोमिनपर नजैर पड़लैन। मनमे उठलैन- जतरा बिगैड़ खराब भऽ गेल। की हएत की

नै। मन खसि पड़लैन।

दोहरबैत गुदरी बाजल-

"काका तँ अखन काकीमे ओझराएल छैथ। अनकर बात किए सुनथिन?"

गुदरीक शब्दवाण करिया कक्काक छातीकेँ बेधि देलकैन। अँगनेसँ बजला-

"कनी काजमे लगल छी। लगिचा गेल। अबै छी।"

मुदा शब्द-वाण छाती बेधि कऽ मैल निकालि देलकैन। विचार जगलैन कोनो काजमे जाइसँ पहिने केकरो देखने केकरो जतरा किए भंगठत? ई मनक मैल छी। आदमी अपन जिनगी आ कर्मक मालिक स्वयं अछि। तखन केकरो दोख लगाएब कायरता छी। गुदरीकेँ सुनबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"आब अपन काज ठमैक गेल ताबे अहाँ झोरा ओरिया कऽ रक्खू। पहिने डोमिनक बात बुझि लइ छिऐ।"

आँगनसँ निकैल करिया काका दरबज्जापर आबि गुदरीकेँ पुछलखिन-

"किए एते हलचलाएल छी?"

मजबुरीक अवाजमे गुदरी कहलकैन-

"काका, हम तँ हिनके सबहक लऽ लऽ छी। ई तँ बुझिते छथिन जे सराधमे डोमिनकेँ केते काज होइ छइ। एक दिन बीतिए गेलैन। दसे दिनपर नह-केश होइ छइ। नहे-केश दिन जँ सभ बरतन नै पहुँचा देबैन तँ येहे की कहता?"

विचित्र द्वन्द्वमे करिया काका फँसि गेला। एक मन कहैन जे सराधक काज तँ छौरझप्पीक पछाइत शुरू हएत आइ केना करब? फेर

दोसर मन कहैन जे भात झँकैले कमसँ-कम चारिटा बड़का छिट्टा, चीज-वौस रखैयोले आ परसैयौले बीस-पच्चीसटा चँगेरो बनबए पड़तै। तैपर सँ सराधी-कर्मबला बरतन सेहो बनबए पड़तै। दिनो तँ गनले आठटा अछि। जइमे बाँस काटबसँ लऽ कऽ घरपर पहुँचबै धरिक छइ। छोट लोकक तँ दुर्भाग्यो छै जे दूटा जबानसँ तेसर एक-ठाम नइ रहए चाहत। भलेँ बाप-माए होइ आकि बेटा-बेटी। फेर मनमे एलैन सुआइत मौगी पुरुखाह आ पुरुख मौगियाह भऽ जाइए। मनमे हँसी एलैन। मुदा लगले पाकल जअमे पाथर खसलैन। एकरा जखने साय देबै तखने काज करैक अधिकार भेट जेतइ। अधिकारमे बाधा देब अनुचित हएत। जँ अखने नै साय दऽ देबै तँ बेसी समांग छै, हाथे-हाथ सम्हारि देतइ। मनुख तँ लोहाक मशीन नै छी जे बटम दाबि देतै आ ढेरक-ढेर बनबए लगत। कमसँ-कम चारि बाँसक काज छइ। काटत, फाड़त टोनत तखन कैमची बनौत, काड़ा बनौत आरो केते करए पड़तै। मौगी केतबो लट-लट करैए तँ पुरुख जकाँ बाँस तँ नै काटि सकैए। जँ काटियो लेत तँ झोंझसँ खिंचल केना हेतइ...।

करिया कक्काक मन धोर-धोर हुअ लगलैन। आशा जगलैन। काज तँ देवनन्दनक छिऐन। हम समाज भेलौं। भलेँ दुनू गोरेक परिवार जोटल आम जकाँ आकि जोटल फूल जकाँ अछि। मुदा मनुख होइक नाते मनुखक बात नइ मानिऐ ई समाजक संगे बेइमानी हएत। आँखि मूनि कोनो बात मानियोँ लेब ओ खाधिमे खसाएत। मनुख दोहरा कऽ ऐ धरतीपर नै अबैए भलेँ लोक साए बेर अबैक-जाइक बात बुझए। मुदा हमरा गरदैनसँ निच्चाँ नै उतरत।

आगू-आगू फनकल गुदरी आ पाछू-पाछू करिया काका असथिरसँ रस्ता धेलैन। आगू बढ़ि उनैट कऽ गुदरी आगूमे ठाढ़ भऽ कहए लगलैन-

“आब की ईहो जुआने-जहान छैथ जे नइ बुझथिन। काजक केते छिगरीतान अछि से नइ बुझै छथिन। ओछाइनपर सँ उठै छी आ काजमे लगि जाइ छी। जलखै बेरमे छौरसँ आकि माटिसँ मुँह धोइ पानि पीऐ छी। धिया-पुताकेँ खुअबैत-पीअबैत, चरिया कऽ स्कूल पठबैत गोसाँइ कान सोझे चलि अबैए। हमरा-ले की दोहरा कऽ दिन उगत।”

आगूमे बाँहि फरका-फरका कहैत गुदरीक बातसँ करिया काका अकैछ कऽ बजला-

“चलू.. बुझलिऐ..! जे अहाँक बात नै मानता ओ काजक भार लेथिन।”

कहि मने-मन सोचए लगला। काजक बेरमे वाय गौंगियाए लगै छैन आ हुकुम चलबै कालमे जएह मन फूरत सएह बाजि देब। जहिना कोनो घर बनबैमे रंग-बिरंगक काज, रंग-बिरंगक समान, रंग-बिरंगक ओजारसँ लऽ कऽ रंग-बिरंगक बुधि लगैत तहिना मनुखक समाज बनबैले मनुखकेँ बुझए पड़त। दरबज्जापर अबिते करिया काका देवनन्दनकेँ पुछलखिन-

“किए बजेलौं?”

देवनन्दनकेँ बजैसँ पहिने हुलन किछु कहए लगलैन मुदा हुलनकेँ रोकैत करिया काका बजला-

“रघुनी भैयामे हमरो साझी अछि तँए किनको बिगाड़ने अपन हिस्सा दुरि नै हुअए देब। तोहर जे काज छह ओकर मालिक तूँ छह। जइ चीजक जरूरत हुअ ओ कहि दएह।”

हुलन बजला-

“बाँस।”

“बीट देखले छह। जेतेसँ काज हुअ काटि लिहह।”

बिच्चेमे सुभद्रा शीलाकेँ कहलकैन-

“कनियाँ, साय दऽ दियौ।”

आँगनसँ शीला पँचटकही आनि गुदरीक हाथमे दऽ देलखिन। रूपैआ लैत गुदरी बाजल-

“काल्हि बेरमे आबि सुपा-चालैन बान्हि देबैन काकी।”

काज हल्लुक होइत करिया काका मने-मन सोचलैन जे अदहे घन्टा ने देरी भेल, कनी रेसेसँ चलि जाएब। नइ तँ कनी अबेरे हएत किने, काजक दौड़मे अहिना होइ छइ। तैबीच दुनू परानी हुलनकेँ अपनामे गप-सप्प करैत दू लग्गा आगू आगू-पाछू जाइत देखलैन।

“किछु छिऐ तँ राज-दरबार छिऐ। मुँहमंगा। आब तँ नवका-नवका लोक सभ भऽ गेल किने। ने तँ बाउ कहै जे रघुनी भाइक बाबा जे रहैन से बेटीकेँ खोंछिमे पाँच बीघा खेत देने रहथिन। से जँ नै देने रहितथिन तँ बाल-विधवाकेँ की दशा होइतै?”

गुदरी अपना विचारमे ओझड़ाएल तँए हुलनक बात सुनबे ने केलक। तैबीच करिया काका हुलनकेँ सोर पाड़ैत कहलखिन-

“सिदहा नेने जा। बेरू-पहर बाँसो लाइए जइहह, काजमे बिथुत ने होइ।”

सुभद्रा उठि आँगन विदा भेली। पाछूसँ शीलो गेली। हुलन दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ रहल आ गुदरी सिदहा आनए आँगन गेली। हुलन करिया काकाकेँ कहलखिन-

“करिया काका, जाबे जीबैत रहबै ताबे सम्बन्ध रहबे करत। ओना आब डाक्टरो भाय बाहरे रहए लगला, हमरो सबहक धिया-पुता अपन बेवसाय छोड़नहि जा रहल अछि।”

हुलनक बातकेँ करिया काका बेवहारिक बुझलैन। मुदा देवनन्दनक नजैर अपन ऐगला जिनगीपर पड़लैन। मने-मन सोचए लगला, रविए-रवि तँ नहि आ ने मासे-मास मुदा तीनटा जे मौसम– जार, गर्मी आ बरखा होइ छै, कमसँ-कम तहूमे आबि जँ मौसमी दबाइक संग रोगक इलाज कऽ दिऐ तँ की हमर समाजिक सम्बन्ध बरकरार नै रहत? डाक्टर भाय, डाक्टर भैया, डाक्टर काका, डाक्टर बाबा नै कहत? जरूर कहत। समाजिक सम्बन्धकेँ यएह डोर बान्हि कऽ रखैत अछि किने...।

जहिना सौन-भादोमे बाबा बैजनाथक डोर कँवरियाकेँ लगि जाइत। तहिना डाक्टर देवनन्दनकेँ भेलैन।

परिवारक सिदहा आ जारैन देख गुदरी निचेन भऽ गप-सप्प पसारि देलक। घरक बेवहार बुझल तँए गुदरी चारि हाथक साड़ी फाड़ि कऽ बनौलहा टुकड़ा लाइए कऽ आएल छेली। जारैनक बोझ-ले बीड़बाक जरूरत सेहो होइत तँए बीड़बो अनने। सुभद्राकेँ गुदरी कहलकैन-

“काकी, हमरा सबहक अपलेशन डागडर बौआ करै छथिन?”

गुदरीक बातकेँ मजाक बुझि सुभद्रा चुपे रहली मुदा शीला पुछि देलखिन-

“केहेन अपरेशन?”

“और कोन अपलेशन, उहए धिया-पुताबला।”

“होइबला आकि नै होइबला? अपलेशन केने धिया-पुता हेबो करै छै आ नहियोँ होइ छइ।”

“जहन अपलेशनसँ धिया-पुता होइ छै तहन पुरुखे लऽ कऽ की हेतइ।”

कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत फेर गुदरी बाजली-

“काकी, आब तँ आबा-जाही लगले रहत। काजक अँगना छिऐ केते रंगक चीज-वौसक खगता हेतैन। नै किछ तँ देह तँ अछिए। लोकेक काज लोककेँ होइ छइ।”

दुनू परानी मुस्कियाइत गाछी ठेकना सोझे विदा भेल। जहिना धारमे सुगरकेँ घाटक जरूरत नै होइत मुदा जाएत सोझे हिआ कऽ, भलेँ केतेको बेर घुमि-घुमि आबए पड़इ। तहिना सुगर पोसनिहारोक चालि। केना नइ रहतै, जिनगी तँ सुगरे चड़बए पाछू रहल।

शीशोक झाँखियो आ मोट-मोट गोटनो देख दुनू परानी आनन्दसँ बैस गप-सप्प करए लगल।

गुदरी बजली-

“कहुना तँ पनरह दिन चलबे करत।”

हुलन-

“सुखलो ऐछे..!”

करिया काका उठि कऽ विदा होइक विचार करिते रहैथ आकि कुसुमलाल पण्डितकेँ धड़फड़ाएल अबैत देखलैन। बुझि गेला जे आब बाजार गेल नै भेल। फरिक्केसँ कुसुमलालकेँ कहलखिन-

“आबह-आबह पण्डित, तोरासँ बहुत बुझैक अछि। तूँ तँ बुझिते छहक जे काजक अँगना छी।”

मुस्की दैत कुसुमलाल कहलकैन-

“हँ, से तँ छीहे?”

अँगना दिस बढ़ैत, मने-मन करिया काका सोचए लगला- कमसँ-कम घन्टा भरि बजला पछाइत मन ठंढेतै। भलेँ कौल्हुके सभ गप किए ने दोहराबए। पाँच गोरेकेँ एकठाम बैसार बनिते बजैक समए

निर्धारित हुअ लगैत। कुसुमलालो तँ पाँच गोरेक बैसारमे रहैए। तहूमे अखन तँ आरो फिरिसान अछि। घरवालीक गट्टा टुटि गेल छै, एकटा बेटा भीने छै तँए ओकर अधिकार कटि गेल छइ। दोसर बेटा जे साझी अछि ओ दिल्लीमे नोकरी करैए। पुतोहुकेँ आठम मास छिऐ। तीनू जमाइयो परदेसीए तँए अपन घर-दुआर छोड़ि बेटियो केना देखत। तैपर धनकटनी, गहुमक बागु संगे बरदकेँ फाड़ लगि गेलइ। मुदा तँए कि कुसुमलालक मन खुशी नइ रहै छइ? अपन दोख हटा बेटा-बेटीकेँ जानकारी दइए देने अछि। किए परिवारक कियो दोख लगौत। बिमार रहितो बुड़ही घरकेँ थतमारि कऽ रखने छैन। धनकटनी भाइए गेल। बुड़हीक पलश्तरो भाइए गेलैन। बीस दिन और बान्हल रहतैन तेकर बाद तँ दुनू बाल्टीन उठेबे करती। हिनका कोन टुटल छैन, अनका तँ जाँघ टुटि जाइ छै, छाती टुटि जाइ छइ। फेर ओकरा छुटै छै की नै? भगलाहि पुतोहु कखनो अपन माए-बापकेँ गरियबैत तँ कखनो पतिकेँ। सासु अपने रोगी। एतेक रहला पछाइतो कुसुमलालक मन हरिदम खुशी रहैत! जखन केतौ काज करए विदा होइत तँ पुतोहुक भगलपाना पर हँसैत, तँ कखनो बेटीक दिन-दुनियाँपर खुशी होइत। एते कम्मल आ ऊनी कपड़ा तँ बेटीए-जमाइक देल छी। तखन तँ तीनू बहिन आबि कऽ भेँट-घाँट काइए लेलक। इलाजो-ले पँच-पँच साए तीनू देबे केलक। तखन तँ जाबे थेहगर अछि, ताबे...।

करिया काका घुमि कऽ अँगनासँ आबि पुछलखिन-

“अच्छा पण्डित, भनसियाक समाचार कहह?”

“बीसम दिन पलश्तर कटि जेतइ। मुदा अखन हम धड़फड़ाएल छी काजे भरि गप करू।”

“तोहीं बाजह?”

“कर्मक बरतन तँ नापल अछि मुदा सभसँ झनझटिया दहीक

तौलाक अछि किने। सरधुआ बरतनक दसम-एगारहम दिन काज हएत। मुदा दही तँ तीन-चारि दिन पहिनहि पौड़ल जाएत तहूमे एक दिन बीतिए गेल। पाँचम-छठम दिन तौलाक काज पड़ि जाएत। माटिक बनैमे तीन दिन टेम लगै छइ। तहिना पीटैयो-सुखबैमे तीन दिन लैगे जाइ छइ। पछाइत एक दिन आबा लगत। आब हिसाब जोड़ि कऽ देखियौ जे आइसँ जँ हाथ नै लगाएब तँ काज केना सम्हरत?”

कुसुमलालक बात देवनन्दनकेँ ओजनगर बुझि पड़लैन। बजला किछु नहि, मुदा मुड़ी जे डोलबैत रहथिन से सुनैबला आकि मानैबला, ओ कुसुमलालकेँ बुझैमे एबे ने करैत।

हँसैत करिया काका बजला-

“पण्डित, तोहूँ जीवनीसँ अनाड़ी भऽ जाइ छह। रघू भैयाक काज अनकर बुझै छहक जे पुछैले एलह?”

“नइ नै से तँ नहियेँ बुझै छी। तखन तँ काजे छिऐ चारि गोरेमे चरचा भेने छुटल-बढ़ल सभ बात सभकेँ नजैरपर आबि जाइ छइ। अखन जाइ छी...।”

कहि पुन: कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल-

“काजक तेहेन छिगड़ी-तान भऽ गेल अछि जे घरमे करू आकि समाजमे। सभ दिन सभ कियो एकठीन बैस कऽ जे हाँ-हाँ-हीं-हीं करैत रहलौं ओ जे आब ऐ अवस्थामे छुटि जाएत से केहेन हएत? की अखनेसँ मुरदा बनि घरमे ओझरा जाइ? के खुट्टा गाड़ि कऽ रहैले आएल अछि जे सभ दिन रहबे करत। तखन तँ जाबे घटमे पराण अछि ताबे ऐ दुनियाँक लीला देखै छी।”

करिया काका टोकलखिन-

“ऐँह, तूँ तँ तेहेन गप पसारि देलह जे चाहो पीब बिसैर गेलौं।”

करिया कक्काक इशारा पानिकेँ आगू बढ़ाएब छेलैन। मुदा पानिक गति तँ हरिदम निच्चे-मुहेँ चलैए।

देवनन्दन आशाकेँ सोर पाड़लखिन। अँगनामे शीला बुझि गेली। आशाकेँ कहलखिन-

“बाउ, दरबज्जापर बाबूजी शोर पाड़लैन, सेहो बुझि लेब आ कए गोरे छैथ सेहो गनि आउ।”

दरबज्जाक कोणपर आशा गैनिए रहल छल कि फाँड़ बन्हने, माथपर तौनी नेने राजेसरकेँ अबैत देख करिया काका जोरसँ बजला-

“आबह-आबह राजेसर। चाह छुटि जेतह?”

चारि लग्गा फरिक्केसँ राजेसर बाजल-

“करिया भैया, जहिना स्वाती नक्षत्रक अमृत रूपी जल सैकड़ो हाथ समुद्रक पानिमे टपैत सितुआक मुँहमे पहुँच मोती बनि जाइत तहिना जइ अन-पानिमे हमर अंश चलि गेल अछि ओ घुमैत-फिड़ैत हमरे लग चलि औत।”

कहि हाथ उठबैत फेर राजेसर बाजल-

“दाना-दानामे लिखल अछि खेनिहारक नाओं।”

“अच्छा आबह, तोहर काज तँ आइ भोरे छेलह?”

करिया भैयाक बात सुनि चानिपर उल्टा हाथ लैत राजेसर बाजल-

“भाय साहैब, केते तील ऐ गामक खेने छिऐ से नइ कहि। लोको सभ तेहेन बिजकाठी भऽ गेल अछि जे झगड़ो करूँ तँ दिन-राति कखनो छुट्टी नइ भेटत। कियो कि एक्को मिनट चैनसँ केकरो रहए दिअ चाहै छइ। घर-सँ-बाहर घरि एक्के रमा-कठोला।”

“अच्छा खिस्सा छोड़ह। काजक गप करह?”

मुस्की दैत राजेसर बाजल-

“भाय, एना आन जकाँ किए बुझै छी। जखने माया-जालमे पड़ल छी तखने तँ तबाही रहबे करत किने, तँए कि समाजक काज छोड़ि देब। हमरा सबहक खुट्टा जहिना रघु भाय छला तहिना हुनकर अन्तिम काज सेहो खुट्टा जकाँ हेतैन।”

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन चौंकला। हिनका -पिता- सबहक दोहरी चालि जिनगीक छैन। जीवनक एक चालि छैन आ लोकक बीचक दोसर। जेना सौंसे गामक ठकदरूआ ई सभ होथि आ हिनका सबहक ठकदरूआ सौंसे गाम होनि..! मुदा साकांक्ष होइत तीनूक–करिया काका, कुसुमलाल आ राजेसरक–गप-सप्प धियानसँ सुनए लगला। तखने शीला तस्तरीमे चारि कप चाह नेने पहुँचली। खाली चाह देख कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल-

“आँइ यौ करिया भैया, कुम्हारक टेमकेँ अहाँ अहिना बुझै छिऐ। जेते काल चाह दुआरे बैसलौं तेते कालमे तँ केते ने बैंक गढ़ि नेने रहितौं।”

कुसुमलालक इशारा बुझि शीला तस्तरीकेँ पतिक आगू चौकीपर रखि चोट्टे आँगन घुमि बिस्कुटक पॉकेट फाड़िते दरबज्जापर पहुँचली। बिस्कुट देख करिया काका बजला-

“कनियाँ, अहाँ पानि नेने आउ हम बिस्कुट बाँटि लइ छी।”

सोलहो बिस्कुटमे सँ पँच-पँचटा कुसुमलाल आ राजेसरकेँ देलखिन। तीन-तीनटा अपने दुनू गोरे देवनन्दन सहित लऽ दुनू गोरे दुनू गोरे दिस देखए लगला। स्वादिष्ट नमकीन बिस्कुट मुँहमे लइते राजेसर बाजल-

“चारि बजे भोरेसँ भाय खटै छी। खाइयोक छुट्टी नै भेल। मुदा भगवानो तेहने अहारो देलैन। भऽ गेल भरि दिनका कोइला-पानि। दस बजे राति तलिक घुमि कऽ तकैयोक काज नहि।”

एकटा बिस्कुट खा आ एक-गिलास पानि पीब राजेसर शीलाकेँ गिलासमे पानि भरैक इशारा दैत बाजल-

“कनियाँ एक दिनक खिस्सा छी। पानियोँ बाँटू आ खिस्सो सुनियौ। एक गोरेकेँ नत-पता दइले छह कोस पएरे गेलौं। भिनसुरका चलल डेढ़-दू बजे दिनमे पहुँचलौं। थाकियो गेल रही आ भूखो लगि गेल रहए। मुदा बुड़ही जे रहथिन से महा-सोभावी! मुहसँ मधु चुबैन! जाइते गेलौं आकि अपने बिछानपर बैसैक इशारा करैत जजमान आ पसारीक गप पसारि देलैन। हमर मन तँ जरले रहए। तैयो घन्टा भरि जी-जाँति कऽ सुनलौं। तखन खिसिया कऽ कहलयैन- ‘हमरा घुमैमे अन्हार भऽ जाएत। जाइ छी।’

..तखन औगता कऽ उठि पुतोहुकेँ कहलखिन- ‘कहुना भेला तँ कुटुमक गामक नौआ भेला। चाहो-पान नै खुएबैन-पिएबैन, से केहेन हएत...।’

मनेमे आएल जे ई सभ गामोमे परदेसीए छैथ। शहरमे रहैत-रहैत मूस जकाँ समाजोक जालकेँ काटि रहल छैथ। चाह पीब पान खा ओतै विचारि लेलौं जे झाड़ा-झपटा कमले पेटमे करब। किरिण डुमिते जँ पुबरिया छहर टपि जाएब तँ दोसर-तेसर साँझ धरि गाम पहुँचिए जाएब। बटखर्चा-ले पाँचटा रूपैआ देने रहैथ भूखे छटपटी धेने रहए। कमला धारक ठंढेलहा पानिमे जहाँ पएर देलिऐ आकि पैखाना सटैक गेल। मुदा लघी लगि गेल। पुबरिया छहर टपि झंझारपुर बजारमे तीन रूपैआक छोला-मुरही खेलौं, पानि पीलौं तखन जान-मे-जान आएल।”

बिच्चेमे कुसुमलाल टोकलकै-

“कोन गपमे बौआइ छह राजेसर भाय, काजक गप करह।”

बिस्कुट खा पानि पीब चाहक गिलास हाथमे लैत राजेसर शीलाकेँ कहलैन-

“कनियाँ, जँ बिस्कुटे खुएबाक छेलए तँ पहिने पानि बिस्कुट अनितौं। एक तँ वेचारी अपने बेइज्जत भऽ चाहसँ पानि भऽ गेल। तैपर सँ हमहूँ सभ केते बेइज्जत करबै।”

राजेसरक बात सुनि एक लाड़ैन चलबैत देवनन्दन बजला-

“बेइज्जतीक वोनमे नम्हरे बेइज्जतक इज्जत होइत!”

काजकेँ देखैत करिया काका गपक रस्ता बदलैले बजला-

“कनियाँ, राजेसरकेँ भाँड़ी जकाँ एहेन गिलासमे नहि पौआही गिलासमे चाह दैतिऐन। अच्छा, राजेसर आइ तँ गाछीएमे कर्म हेतइ?”

अपन काज अगुआएल देख राजेसर बाजल-

“भाय, औझुका गप की कहूँ। एक तँ तेहेन-तेहेन सिफलाहि मौगी सभ गाममे चलि आएल अछि जे होइए जे झब-दे मरि जाइ जे एहेन-एहेन मनुख सभसँ पिण्ड छूटत।”

“से की?”

“की पुछै छी। पहिलुके नीन रहए। करीब एगारह-बारह बजे रातिक बात छी। गोपला घरमे आगि लगि गेलइ। ओकरे मिझबैमे दू-बाजि गेल। सौंसे देह थाल-कादो सेहो लगि गेल रहए। ओकरे धोइत-धाइत तीन बजि गेल। ओछाइनपर एलौं आकि औझुका काज सभ मन पड़ल। छुतकाबला केश कटैक अछि। खबैर दइले पुरहित-पात्र ऐठाम जाइक अछि। तैपर सँ परसुए जुगेसरा कहि देने रहए जे कनी केशो नीक जकाँ छाँटि दिहह आ बरियातियो चलिहह।”

करिया काका टोकलखिन-

“अखन लगन कहाँ छइ?”

राजेसर बाजल-

“अहाँ कोन जुग-जमानाक गप बजै छी भाय। कियो जे कोटमे बिआह करैए से लगन देख कऽ? तहूमे की जुगेसराक बिआह हेतै आकि चुमौन करत।”

“केहेन कनियाँ छइ?”

“एह हद भेल भाय। कन्याँ बच्चोकेँ कहल जाइ छै आ सासुरो बसनिहारिकेँ। जुगेसराकेँ तेसर छिऐ आ कनियाकेँ चारिम।”

“दुनू तँ उड़नबाजे बुझि पड़ैए?”

“भाय, मनुखमे सभ गुण होइ छइ। पालतुओ चिड़ै वोनाए जाइ छै आ वोनेलहो चिड़ैकेँ पकैड़ पोसा बना लैत अछि।”

चाहक गिलास हाथसँ पकड़ैत राजेसर शीलाकेँ कहलकैन-

“कनियाँ, काकीकेँ सभ बुझले छैन। हुनका हमर नाओं कहि देबैन। डालीक ओरियान करती। जाबे तक छौरझप्पी नै हएत ताबे तक गाछीएमे पुजौल जाएत।”

शीला आँगन जा सासुकेँ कहलैन। दरबज्जापर सभकेँ चुप देख राजेसर देवनन्दनकेँ कहए लगलैन-

“डाकदर साहैब, हमर काज, नौआबला काज पहीले दिनसँ शुरू भऽ जाइए। काजो दोहरी। एक दिस पुजबैक परकिरियामे डाली सजौनाइ, दोसर दिस कठियारीबला सभ परातेसँ केश कटबए लगैत अछि। ई तँ एकटा काज भेल। जँ गाममे एकटा काज हएत तखन, नै जँ दोहरा-तेहरा गेल तँ काजो दोहरा-तेहरा जाइए, तैपर सँ जन्मौटी छुतका भिन्ने। केते दिनसँ मनमे होइए जे एकटा नाङैर दुआरपर

रखितौं से पारे लगब कठिन अछि। एमहर सराध-कर्ममे मात्र छहअना हिस्साक भागीदार छी। ऊपरसँ किछु निछौर– झलफाँफी धोती, माटिक बरतन आ किछु हथ-उठाइ भेटैए।”

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन तरे-तर सर्द हुअ लगला! आँखि उठा करिया काकापर देलैन। करिया काका राजेसरक मुँह दिस तकैथ। जेना रसगुल्ला खसतै आ लपकता। रसगुल्ला तँ नै एलैन मुदा रसगुल्लाक रस जरूर आबि गेलैन। मुस्की दैत बजला-

“राजे, जे बेसी मनुख-ले खटत आ कम-सँ-कममे अपन जिनगी चलौत ओकरासँ बेसी इमानदार ऐ घरतीपर के अछि? धरमक एकटा बाट तँ इमानो छिऐ किने!”

मने-मन देवनन्दन तँइ केलैन जे पिताक कर्म करौनाइ हमर जिम्मा छी। जे कोनो काज हएत ओकर नीक-अधलाक भागी तँ अपने हएब। गाममे जेतए जे होइ छै हौउ। मुदा अपना ऐठाम एहेन अनुचित नै हुअ देब।

फेर मनमे शंका उठलैन जे ऐ बातकेँ पुरबासय केना कएल जाइ? पूर्वाशयक अर्थ तँ पूर्ब+आशय होइत मुदा समाजक अधिकांश लोकक कानमे जे रहै छै ओकरा की मानल जाए..?

रंग-बिरंगक तर्ककेँ मनमे उठैत देख सोचलैन जे दुनू पार्टी माने पुरोहित-नौआक बीच काजक सम्बन्ध अछि। सझिया काजक फल तँ सझिया होइत। मुदा केते साझी आ तेकर की अधार? से नइ तँ दुनू गोरेमे करैथ। सोझक जे निर्णए दुनू गोरे करता तँ हमरा मानैमे की लगत। मन असथिर भेलैन।

चारिम दिन। गाछीमे छौरझप्पीक पछाइत कर्म सम्पन्न भेल। शंकरदेव गाछीएमे भोजन कऽ नेने छला। करिया काका हाथमे कोदारि नेने आगू-आगू आ पाछूसँ शंकरदेव, देवनन्दन आ तइ पाछू

परिवारक सभ कियो–तीनू भाइयो-बहिन आ सासुओ-पुतोहु आँगन एली। आँगन अबिते सभकेँ बुझि पड़लैन जे जेना आगूए-आगू रघुनन्दन आबि गेला। हुनके बनौल घर-दुआर, पानिक चापाकल इत्यादि छिऐन। जेना सभ किछुमे सन्हिया गेल छैथ। जँ हुनकर घराड़ी स्मारक बनैन तँ सभ दिन ओइ स्मारकमे दर्शन दैतैथ।

मने-मन पिताकेँ स्मरण करैत देवनन्दन संकल्प लेलैन जे पिताक देल जे किछु अछि ओ ऐ समाजक छिऐ। हम तँ अपने तेते कमाइ छी जे गामो अबैक छुट्टी ने होइत अछि। बेटी सासुर जाएत। बेटो केतौ नोकरी करत। की बाप-दादाक देल सम्पैत हम आनठाम दऽ अबिऐ? तखन गामक मनुख अनतए जा भलेँ अपनाकेँ अगुआ लैथ मुदा गाम तँ तरका जाँत जकाँ पड़ले रहि जाएत! चलत कहिया? जँ दुनू-चक्की मिलक चक्की जकाँ चलए लगए तँ की गहुमक आँटा नै पीसल जाएत? जरूर पीसल जाएत। पिताक देल सम्पैतक जे आमदनी अछि ओकरा भोजमे आ अपना दिससँ गरीब बच्चाकेँ पाँच हजार रूपैआक पोथी, पाँच हजार रूपैआक दबाइ समाजक बीच पिताक मृत्युक दिन उपहार स्वरूप देब। ओना, ऐसँ खुशीक बात ई हएत जे पिताक जन्मे दिनक तिथिपर साले-साल दिऐ जे बच्चा सबहक संग-संग सभ दिन खेलैत रहता। किएक हुनकर मृत्यु शरीरकेँ मृत्यु बुझिऐन? मुदा हुनकर जन्म-कुण्डली तँ नै भेटत? स्कूल गेबे नै केला। तखन की करब? मनमे नव उत्साह जगिते डाक्टर देवनन्दन करिया काकाकेँ कहलखिन-

“काका अहाँ सभ एक-बतारी छी, हमरासँ बेसी देखने छेलिऐन। अखने बैस कऽ ऐगला कर्मक विचार काइए लेब। शंकरो भाय छैथे।”

देवनन्दनक बात सुनि, अपन आमदनी शंकरदेव देखलैन। मनमे गुद-गुदी लगलैन। पानक पीत फैकैत बजला-

“बेजाए कोन। अखन सभ समटाएल छी फेर समटैमे समए लगत। तेते करिया काका ठेल-ठेल कऽ खुऔलैन जे आराम करैक मन होइए।”

अपन चाबस्सी सुनि करिया कक्काक नजैरमे रघुनन्दन नाचि उठलैन। खेतक आँड़िपर बैस गपक संग-संग तमाकुलो खाथि। मन पड़लैन गुनाक गीत। तहियाक छीतन आइयो संग-संग अछि। मन पड़लैन समाज। आइ जे समाज एक भऽ भाय-साहैबकेँ विदाइ देलैन। की ई उचित होइ जे गामसँ लऽ कऽ आन गाम धरिकेँ खाली अपन जातिकेँ भोज खुअबैए आ गामेमे ओहन समाजक बच्चा दिस तकबो ने करैए, कनैत छोड़ि दइए, जे बेर-विपैतमे हरिदम लगमे रहै छै..? जेते खुशी शंकरदेवक बात सुनि भेलैन तइसँ बेसी कचोट मनमे उपैक गेलैन। बजला-

“जखन तेरहे दिनक बीच काज नापल अछि तखन तँ अधिक-सँ-अधिक समाजक उपयोग होएब जरूरी अछि। हम सुन्दर भायकेँ बजौने अबै छिऐन।”

कहि करिया काका विदा हुअ लगला। आकि देवनन्दन रोकलखिन-

“अहाँ कोदारि पाड़ि कऽ एलौं हेन, आशाकेँ पठबै छिऐ।”

देवनन्दनक बात सुनि करिया काकाकेँ हँसी लगलैन। बजला-

“डाक्टर साहैब, आशा जा कऽ की कहतैन?”

“बजबै छैथ।”

“कथीले?”

देवनन्दन चुप रहि गेला। करिया काका बजला-

“जँ भैया बुझैथ जे कोनो छोट-छीन काज हेतै तखन तँ अपन

नमहर काजकेँ सम्हारि औता। तँए अपने जाइ छी।”

करिया काकाकेँ विदा होइते शंकरदेव दयानन्दकेँ कहलखिन-

“बाउ, एक लोटा पानि पिआउ। हमरो अहाँक परिवार कोनो बाँटल अछि अहाँक मात्रिक बरियाती हमहूँ गेल रही। अहाँ सभ तँ परदेसी भेल जाइ छी। हमरा ओहिना मन अछि उपनयनसँ तीन दिन पहिने दालि-भात, तरूआ तरकारी, दही-चीनी खेने रही। अहीं सबहक अन्नपर हमहूँ सभ ठाढ़ छी...।”

पानि पीब कऽ–

“अखन दुइए गोरे छी, तँए कहै छी। पुजबैत-पुजबैत हमरा सबहक परिवार निच्चाँ-मुहेँ ससैर गेल। अपने बात कहै छी। राजविराजसँ तीन कोस आगू तक बाबूकेँ जजमैनका रहैन। जखन ओइ इलाका जाइ तँ मास-मास दिन परदेशे जकाँ रहि जाइ। सेवा खूब हुअए। खेनाइ-पिनाइक कमी नहि। हमरा तँ एतएसँ नेपाल धरि ने धाँगल अछि। अपना सभ तँ कनी हटल छी तँए, नइ तँ जेना-जेना उत्तर-मुहेँ जेबै तेना-तेना बाजब-भुकब, खेती-वाड़ी, माल-जाल मिलल-जुलल देखबै। कथा-कुटमैती, भोज-काज ऐपार-ओइपारमे होइते अछि। सीमाकातमे ऐ भागक लोक ओइ भाग जा हाट-बजार करैत अछि आ ओइ भागक ऐ भागमे। हँ, तइसँ आगू जेना-जेना बढ़बै तेना-तेना पानियोँ आ बोलियोमे अन्तर बुझाएत। तेकर कारण अछि उत्तरबरिया पहाड़। बाबूकेँ खूब आमदनी होइन। भरि-भरि दिन भाँग खा दरबज्जापर बैस तास खेलल करी। “लघु-सिद्धान्त” पढ़ैमे एगारह बरख लगल रहए। मुदा बाबूक संग पुरैत-पुरैत अपन जीविकाक सभ लूरि भऽ गेल। पढ़ैमे मझिला भाए चन्सगर। खूब पढ़ि कऽ नीक नोकरी करै छैथ। कहि देलैन जजमैनकासँ हमरा कोनो मतलब नहि, हम मेहनत करब आ मेहनतक अन्न खाएब। तखन

धिया-पुताक संस्कार तेज हएत। सभसँ छोटका बकनाएल अछि। दिल्लीमे भाए नोकरियो धड़ा देलकैन तँ तेते कमाथि जे पेटो ने भरैन। मुदा समाजमे प्रतिष्ठा बनौने छैथ।"

प्रतिष्ठाक नाओं सुनि दयानन्दक मनमे भेलैन जे एक दिस कहै छैथ जे बकना गेला आ दोसर दिस प्रतिष्ठितो छैथ? मनमे अचरज भेलै आँखि-मे-आँखि गड़ा पुछलकैन-

"की प्रतिष्ठा?"

दयानन्दक प्रश्नकेँ हल्लुक बुझि शंकरदेव बजला-

"बौआ, अखनो अधिक खेनिहार लोककेँ प्रतिष्ठित मानल जाइत अछि। एते दिन ई प्रतिष्ठा भोज-काजमे भेटै छेलै, आब घरे-घर भऽ गेलइ। हम केतेक रूपैआ खेनाइपर खर्च करै छी, अहिक भीतर प्रतिष्ठा आबि गेल अछि। भलेँ हजार रूपैआ प्रतिदिन परिवारक भोजनमे खर्च किए ने करैथ मुदा समाजक लोक जँ डेरापर आबि जेता तखन या तँ गेट खोलि भेँटे नै देबैन आ जँ भेँटो देबैन तँ गामक- हाल-चाल पुछि कहबैन जे पत्नी नोकरीपर ड्यूटीमे छैथ तँए डेरामे चाहो पिआएब मोसकिल अछि। वेचारा हाले-चाल की कहतैन। ने जिनगीक भेँट आ ने एकठाम रहैबला...। हँ, तँ कहै छेलौं अपन भाइक विषयमे, साल भरिसँ महंथ भऽ गेल अछि। देखलिऐ तँ नै मुदा सुनै छी अपनो चिट्ठीमे केताक बेर लिखलक हेन। ओना भाए छी आगि नै उठेबै, नअ-दस माससँ लत्तो-कपड़ा आ हजार रूपैआ महिनो पठबैए। मुदा आफद की एकटा अछि। साल करीब भऽ गेलैन। कनियाँ एतै छथिन। एकटा बच्चो छैन। फोन केलिऐ जे दसो दिन-ले गाम आबि बालो-बच्चाकेँ असिरवाद दऽ दहक। आब तँ तोँ महंथ भऽ गेलह।"

देवनन्दन दिस मुँह घुमबैत शंकरदेव मुस्कियाइत बजला-

"भाय, की जवाब देलक से बुझलिऐ, कहलक जे स्थानक की हमरा खतियान बनल अछि। भरि-दिन-भरि-राति केतौ रहू मुदा साँझ-भिनसर घड़ी-घण्ट बजा आरती गबै पड़त। मुदा आब चढ़ौआ सभ सेहो हुअ लगल हेन। भरि गाम-घरक स्त्रीगणसँ लऽ कऽ बजार धरिक जनीजाति सदिकाल अबिते रहैए।"

देवनन्दन कहलखिन-

"भावोओकेँ ओतै पठा दियौन।"

शंकरदेव बजला-

"से तँ अपनो लिखैए जे विदागरी करि कऽ नेने अबियौन। मुदा एकटा आफत रहए तब ने आफत-पर-आफत अछि। एक तँ कनियाँ जाइले नै गछै छैथ। केना उपकैर कऽ घरसँ विदा कऽ दिऐन। मुदा बात एकेटा नै अछि दोसरो अछि। एक बेर बिआह-पंचमीमे नैहरक संगी-संगे जनकपुर गेली। लोकक ठठ्ठ, दिन-राति यात्री एमहरसँ ओमहर नचिते। एकठाम एकटा नंगा स्थान लग बिजली कटि गेलइ। जहाँ-तहाँ लोक अपन संगी छोड़ि यात्री सभमे हरा गेल। हमरो भावो हरा गेली। ले बँगौर! रौतुका हराएल दिनोमे ने गौआँ भेटलैन हिनका आ ने ई भेटलखिन गौआँकेँ। मुदा हेराएल नै छेली, वौआएल छेली। सभ यात्री तँ अपने इलाकाक रहै किने। नानी गामक संगी भेटलैन। जहिना धारमे बाँस आकि रस्सी पकैड़-पकैड़ लोक पार होइए तहिना वेचारी नानी गामसँ मेहमानी करैत सात दिनक पछाइत गाम एली। से मन उड़ल छैन।"

रस तकैत देवनन्दन पुछलखिन-

"सभ स्त्रीगण शहर जाए चाहैत अछि अहाँ उनटे कहै छी?"

मुस्की दैत शंकरदेव-

"एँह भाय! अहूँ अनाड़ी जकाँ बजै छी, अपन जे मिथिलांचल अछि ऐ क्षेत्रमे तँ केतौ लोक मैथिली बाजि जिनगी गूदस कऽ सकैए। मुदा जैठाम भाषाक दूरी अछि, जीवन-शैलीक दूरी अछि तैठाम की गिरगिट जकाँ सात बेर जिनगी बदैल सकैए? रहल बात जीबाक उपाइक। तँ की जैठाम मनुख रहत ओइठाम कोनो वस्तुक उत्पादनक जरूरत नै अछि? की हमरा सभकेँ शिक्षा आकि दबाइक जरूरत नइ अछि, भोजन-वस्त्रक जरूरत नइ अछि? मनोरंजनक जरूरत नइ अछि आकि कला-संस्कृतक जरूरत नइ अछि? मुदा ई के करत? जेकर छिऐ से बोहु लऽ लऽ शहर घुमैए तँ की सोझे सीते भूमि कहने अयोध्यासँ राम औता? मुदा छोड़ू दुनियाँ-जहानकेँ। अखन जे काज सोझहामे अछि पहिने तेकरा देखू...।

हँ, तँ जाधैर करिया काका आ सुन्दर काका नै पहुँचला, तैबीच एकटा आरो कहि दइ छी। राज-विराजसँ तीन कोस उत्तर धरि हमरा बाबूकेँ जजमैनका छेलैन। लोकोक धारणामे सराध-कर्मक महत बेसी छल। जइसँ आमदनियोँ नीक होइन। अखुनका जकाँ जिनगियो फल्लर नै छेलइ। लोको बेसी बिसवासू। आँखि देखा कऽ केकरो कियो बेइमानी नै करैत। जहाँ-तहाँ बाबूओ अपन समान, बरतन-कपड़ा रखि देथिन, ओना कपड़ाक केते जरूरते परिवारमे रहै छल, जइसँ राजसी ठाढ़मे जीवन बितौलैन। जखन मुइला तखन चारू दिससँ भूत पकैड़ लेलक। भाय कहलैन जे नोकरीए करब। अपन परिवार लऽ कऽ चलि गेला। काजे-उदममे पाहुन जकाँ अबै छैथ। दोसर, छोटजनक कहबे केलौं जे गामक फेदार मोरगंक दफेदार भऽ गेल अछि। सुनै छी जे भरि-भरि दिन नानीक सिखैलहा खिस्सा सभ मौगी सभकेँ सुनबैत रहैए। खाएर, किछु करह। हमरो तँ कपार नहियेँ चटैए। आब की भऽ गेल अछि जे अल्लापुरक सभ जाति अपने-अपने पुजबए लगल। जजमैनका घटि गेल। अल्लापुरक देखौंस सीमो-

कातक गाम सभ करए लगल हेन। रहैत-रहैत पाँच गाम बँचल अछि। ओना, आब नवका जजमान- मारवाड़ी सेहो बढ़ल हेन। पाइबला पार्टी।"

बिच्चेमे देवनन्दन पुछलखिन-

"ओ सभ अपन छोड़ि देलक?"

"अपनो धेनइ अछि। मुदा ऐठाम तँ सभ वेपारी भऽ गेला। पुजेगरी कहाँ अछि। एक बेर पान खुआउ...।

..गामक खेल-तमाशा देख मन कनैत रहैए मुदा तैयो जे ठोरपर पछबा लहकी देखै छिऐ तँ तामसो उठैए। ओना, सभसँ भला चुप। ने किछु बजै छी आ ने केकरो किछु कहै छिऐ।"

पान मुँहमे लऽ कनी काल गुलगुला कऽ पीत फेकैत शंकरदेव फेर बजला-

"भाय, छह माससँ निचेन भऽ गेलौं। मुदा दियादवादक जे दशा-दिशा देखै छिऐ तइमे होइए जे भगवान हमरो ऊपरमे तकै छैथ।"

बिच्चेमे देवनन्दन पुछि देलखिन-

"से की?"

'से की' सुनिते शंकरदेव बजला-

"भाय-साहैब सभ तेहेन रस्ता पकैड़ लेलैन जे चिन्ता मेटा देलैन। मझिला भाए जे नोकरी करै छैथ, ओ गामपर सभतूर आबि बलजोरी दुनू भाँइकेँ लऽ गेलखिन। की कैहतिऐन। अपनो बुझै छी जे दिनानुदिन जीविका घटले जा रहल अछि। तहन तँ सभ दिन समाजक बीच रहलौं तँए आब ऐ उमेरमे केतए जाएब। जाधैर समाज जीबैए ताधैर कहुना-ने-कहुना बहिते रहब। मुँहपर तँ नइ मुदा पत्नी लग भावो

बजली- 'उसरागा खाइत-खाइत सभटा उसरन भेल जाइए। हमरा की लोक नै दुसत जे बाप-पित्ती बड़का हाकिम छथिन आ बेटा-भातीज दसखतो करै जोगर नै भेलखिन।' कहि दुनू भाँइकेँ लऽ जा अपने लग अफसर सबहक जे स्कूल छै तइमे नाओं लिखा देलखिन। छोटका भाए हरिदम फोन करैत रहैए- 'हमरा तेते चढ़ौआ होइए जे केतए रखब। उठा-उठा लऽ लऽ जाउ।' मुदा गाड़ीमे चलैत डर होइए। तेते छिना-झपटी, निशाँ-खुऔनी हुअ लगल अछि जे हमरा बुत्ते तीस घन्टा गाड़ीमे बैस दिल्ली पहुँचल हएत। मुदा तैयो अनका-अनका दिआ तेते चीज पठबैत रहैए जे कोनो चीजक कमी नै अछि। संतोष एते भऽ गेल जे कियो अपन बाप-माइक किरिया-कर्म करैत अछि तैबीच हम किए डाक-डकौवैल करिऐ। पूर्वज सभ तँ तीन श्रेणीक सराध कर्म तँइयेँ कऽ गेल छैथ। जेकरा जइ तरहक विभव रहै छै ओ ओइ तरहक कर्म करि एकलोटा पानि तँ पूर्वजकेँ दइए दइ छैथ। मुदा लोकोमे छल-प्रपंच छइ। जँ करै छी तँ श्रद्धापूर्वक करू नइ तँ ठकि कऽ पिण्ड कटौने नै हएत। तहिना हमहूँ करै छेलौं। दियादवाद अखनो करिते छैथ जइसँ दशो तेहने भेल जाइ छैन। गामेमे वेदान्ती काका छैथ। वेचारा अपन जिनगी अपना ढंगसँ बना नेने छैथ। ओना ओ लोअरे-प्राइमरी स्कूलमे गुरुआइ करै छैथ, गामेक स्कूलमे। मुदा अप्पन क्रिया-कलाप छैन। जहिना किसान काजकेँ दू उखड़ाहा–भिनसरसँ बारह बजे आ दू बजेसँ सूर्यास्त धरि, बँटने छैथ। तहिना स्कूलमे दुनू उखड़ाहा पढ़बै छथिन। दरमाहा भेटलैन आकि नै तेकर कोनो चिन्ता नहि। किछु ऑफिसक किरानी ठकि कऽ खाइ छैन तँ किछु बैंकक, तहिना कहियो कियो नाँगट देह आ बच्चाकेँ पोथी-कॉपी देखा मांगि लइ छैन, तँ कहियो बैंकक चारू भाग मरड़ाइत लुच्चा सभ झोड़ा छीन लइ छैन। मुदा ने कहियो काकी मुँह उठा हिसाब मंगै छथिन आ ने अपने केकरो कहै छथिन। मन पुष्ट रहै छैन जे अपनो तँ जीबते छी, तहन अनेरे घरमे

रखि कऽ की हेतइ। कातिक मासमे 'कार्तिक महात्म्य' बरहम स्थानमे बैस कऽ सभ साल सात दिन धरि समाजकेँ सुनबै छथिन, तइमे तेतेक कपड़ा भऽ जाइ छैन जे सालो भरि दुनू परानी बिनु सुइया भिरौल कपड़ा पहिरै छैथ। दूध खाइले गाइये पोसने छैथ। ओना खेती अपने नै करै छैथ। गाममे दू कट्ठा वाड़ी छोड़ि घराड़ीएटा छेबो करैन। पिता जजमैनका पुजबैत रहथिन। गामे-गामे जे जजमान दानमे खेत आ आमक गाछ देने छैन वएह तेते आबि जाइ छैन जे दू-सलिया-तीन-सलिया चाउर सेहो पथ्य-पानिले रहै छैन। आदतो तेहेन रखने छैथ जे केकरोसँ मंगैक काज नहि। आजुक छौड़ा सभ जकाँ नै ने जे- बाबा, कनी खैनी खुआउ। पचास गाछ तमाकुलक खेती अपने हाथे-बुधिए करै छैथ। काकी गाइयेक पाछू बेहाल रहै छथिन। जहिना एक बहिन दोसर बहिनक माथमे केश बिहिया-बिहिया ढीलो तकैत आ नीक-अधलाक गप्पो करैत तहिना गाइक संग काकी लगल रहै छैथ। जहिना तमाकुलो अपने हाथे उपजबै छैथ तहिना चूनो अपनेसँ बनबै छैथ। दियादमे जखन हुनकापर नजैर पड़ैए तँ स्वत: नजैर निच्चाँ भऽ जाइए। मुदा ओहीठाम दोसर छैथ जिनका घराड़ी दुआरे एक्के अँगनामे सोरेक-सोरे धिया-पुताक संग तीन भाँइ छथिन। भोर होइते तीनू महाभारत शुरू कऽ दइ छैन! तीनू दियादनियोँ तीन परगनाक छथिन। एकटा अल्लापुरक, दोसर भौरक आ तेसर– गंगा ओइ पारक, मगहक छथिन। तीनू जे तीन सुर-तानपर गारिक गीत गाएब शुरू करै छथिन, तखन बुझि पड़ैए वृन्दावनमे छी आकि लंकाक पुष्प-वाटिकामे..।"

मुस्की दैत-

"केते कहब भाय, अपने लाज होइए। एकटा छौड़ा अछि लक-लक पतरे। झोंटा जकाँ केश रखने अछि। सभ दिन मोछ-दाढ़ी कटैए। छींटबला घुट्ठी लग तक अँगा सिऔने अछि। पएरेमे सटल

चुस्त पैजामा पहिरैत अछि। एक गोरेक काज रहए, देखलिऐ तँ धोखासँ कहा गेल के छिऐँ गे। से की पुछै छी जेना बिढ़नी छत्तामे गोला फेक देने होइऐ तहिना गनगनाए कऽ मुहेँ-काने की कहलक तेकर ठेकान नहि। सभसँ चोट एकटा बातक लगल कहलक मनुखक झर कहीं-के।

मुदा लगले मुहसँ हँसी फुटलैन आगू बजला-

"आँखि उठा कऽ देखै छिऐ ने भाय तँ बुझि पड़ैए जे सभटा बुड़ि-मुहाँ भँसि भँसि आएल अछि। तेहेन-तेहेन कुरेर सभ जन्म लऽ लेलक हेन जे कुल-खानदानक नाक कटौत, की कान कटौत, की घराड़ीकेँ भँट्टाक खेत बनौत से नइ कहि। एकटा दियाद छैथ जिनकर लम्बाइ चारि फीट हेतैन आ चौराइयो तहिना। चँगेरा भरि चूड़ा, अधमन्नी तौला दहीकेँ एक्के सुरकानमे सीमा टपा दइ छथिन। चूड़ा-दही तेहेन चुहैट पेटकेँ पकड़ने छैन जे हरिदम पेटेटा सुझै छैन। घर गिर पड़लैन। केते खुशामद करि कऽ 'इन्दिरा आवास' दिआ देलिऐन। ले बँगौर ओहो चाटि लेलैन आ अखन खिचड़ी खाइ छैथ। केते कहब भाय।"

सुन्दर काकाकेँ संग केने करिया काका पहुँचला। तखने लेलहा सेहो कुरहैर लेमए आबि करिया काकाकेँ कहलकैन-

"आब तँ तीन दिन कोदारि, कुरहैर, टेंगारी जहल कटलक। आबो छोड़बै की नै? साते दिनमे जारैनकेँ सुखाएबो छइ।"

लेलहाक बात सुनि करिया काका चुपे रहला। मुदा सुन्दर काका लेलहाक मुँहक बात छिनैत बजला-

"कारी, पढ़ुआ भायकेँ बजा अनियौन। गाममे सभसँ बेसी गुल्ली-पेंच वएह करै छैथ।"

सुन्दर कक्काक बात सुनि करिया काका पढ़ुआ भाय ऐठाम विदा

भेला। जखनसँ लेलहा सुन्दर कक्काक-मुहेँ 'गुल्ली-पेंच' सुनलक तखनसँ गुल्ली-पेंचक अर्थ बुझैले मन लुस-फुस करए लगलै। मुदा काजक गप सुनि अपन प्रश्नकेँ पेटमे दबने रहए। मुदा तैयो पेटमे उधकै। होइ जे कखन बाहर निकलब। बाँस भरि करिया काका आगू बढ़लैथ आकि लेलहा पुछलकैन-

"सुनर काका, 'गुल्ली-पेंच' केकरा कहै छइ?"

लेलहाक प्रश्न सुनि सुन्दर कक्काक पेट-गोंगियाए लगलैन मुदा पहिले मुहराकेँ रोकैत शंकरदेव सम्हारि लेलैन। बजला-

"देवनन्दन भाय, लेलहा समाजक खुट्टा छी। वेचाराकेँ ऐ उमेरमे कहीं एहेन देह रहितै। देखै छिऐ, जहिना कोसी बाढ़िमे नव-गछुली कलम-गाछी सभ पतझाड़ लऽ कऽ भऽ जाइए तहिना वेचाराकेँ छुच्छे पतरका-पतरका डारि जकाँ देहक हाड़ झकझक करै छइ। समाज की? समाजरूपी घर की? समाजरूपी घर वएह जइमे सबहक सझिया होइ। आब प्रश्न उठैए काज-पर-काज तँ ढेरो तरहक अछि, समाजक काज की बुझल जाइ? ऐ प्रश्नक उत्तर विकास-परकिरियामे अछि। मुदा मूल प्रश्न अछि सभ मनुख मनुख छी तँए सबहक दुख-सुख सझिया हुअए।"

शंकरदेवक बात सुनि सुन्दर काका उफैन पड़ला। जहिना रौद लगिते ताड़ी चैलमे फेना-फेना निच्चाँ खसैत तहिना सुन्दर कक्काक मुहसँ खसए लगलैन-

"लेलहू, तूँ सभ लगले बिसैर जाइ छह मुदा हमरा तँ जुग-जुगक बात मन अछि। श्यामसुन्दर माइक सराधक भोजमे देखने रहक ने जे पच्चीस गामक पंच केना दरबज्जापर सँ लऽ कऽ अपना अँगना धरि गरियौलकैन। केकर केलहा रहए? वएह पढ़ुआ भाय भनसियाकेँ फुसला कऽ गाँजा पिआ, हकिमानी करए लगला। तरकारी-दालिमे

जखन नोन दइक बेर भेलै तखन बोरे देखा देलखिन।"

सुन्दर कक्काक बात सुनि ठहाका मारि लेलहा बाजल-

"हँ, यौ काका। पाछू हमहूँ बुझलौं।"

"धुर्र बुड़ी, तेहेन छुछुनैर छैथ जे ओतबे केलैन। देखने रहक किने जे पुलकितक बेटी-बिआहमे केहेन मारि करा देने रहथिन। कोनो अनकर किरदानी रहै, जे कि ओही बीचमे घोघटाही साड़ीकेँ दुसि देलखिन। हुनके बातपर ने जनिजाति सभ झगड़ा ठाढ़ केलक। अन्तमे देखबे केलहक...। तँए एहेन-एहेन बुधिकनाह लोकसँ सम्हैरिए कऽ रही। कखन की कऽ देतह तेकर कोनो ठीक नहि। एहेन-एहेन लोक एतबो ने बुझैए जे अपन काज अनको-ले होइ। हरिदम अनकर हिस्सा अपनबैमे लागल रहैए। सोझहेमे तँ कुल-पुज बैसले छैथ। इएह बाजौथ?"

सुन्दर भाइक प्रश्न सुनि शंकरदेव सकपकेला नै असथिरसँ बजला-

"देखू, किछु दिन पहिने तक हमरो चालि ओहने छल मुदा आब ओ सभ छोड़ि देलौं। केकरो चुगली-चालि केने हमरा की भेटत? एतबे ने होइए जे नकलीसँ सावधान? मुदा आब जेते कालमे नकलीसँ सावधान करब तेते कालमे असलीएकेँ ने किए आरो असली बनाएब। सुन्दर भाय, जहियासँ भाए सभ कुल-खनदानक घराड़ीकेँ चिन्हलक, तहियासँ सभ दुख पड़ा गेल। किछु दिन पहिने धरि हमहूँ आन-आन सराध-कर्मक उदाहरण दऽ दऽ जजमानसँ अधिक झाड़ै छेलौं मुदा आब से सभ छोड़ि देलौं। सभ अपन-अपन भार उठा लेलैन जइसँ हमहूँ उठि गेलौं। आब बुझै छी जे जाबे कियो करै छैथ अपन बाप-माइक करै छैथ, तइमे किए जोर दिऐन? जहियासँ विचार बदलल तहियासँ जिनगियो बदलल। गारियो सुनब कमल। तेहेन-तेहेन झनाठी

बच्छा सभकेँ दागि कऽ साँढ़ बनौल गेल जे गाइक खाढ़े चौपट्ट भऽ गेल। जइसँ ने नीक बच्छा आ ने नीक बाछी गाममे रहल। वाड़ी-झाड़ी चड़ैबला साँढ़ भऽ गेल अछि। हरिदम लोक नाओं धऽ धऽ सोझहेमे गरियबैए जे "हैया शंकरबाबा पहुँच गेला।" मुदा रच्छ रहल जे जहिना-जहिना नवका-नवका लोक सभ भेला, तहिना-तहिना नव-नव काजो कऽ रहला अछि। हिनके सबहक परसादे तँ एहेन-एहेन सुन्दैरो आ दूधगैरो गाए सभ गाममे आबि गेल। नवका-नवका मशीन सभ सेहो आबिए रहल अछि।"

बिच्चेमे देवनन्दन दयानन्दकेँ कहलखिन-

"बौआ, चाहो-ताहोक...।"

दयानन्द आँगन जा माएकेँ कहलक। एमहर पढ़ुआ कक्काक संग करिया काका पहुँचला। पढ़ुआ काकाकेँ शंकरदेव हाथक इशारासँ अपने लग बैसैले कहलखिन। मुदा लेलहाकेँ अपन पैछला बात मनमे नाचए लगलै। बात ई जे गाछपर एकटा लुक्खी पकड़लक। जाधैर धड़ पकड़ने रहए ताधैर तँ लुक्खी हाथमे रहलै। मुदा नाङैर पकैड़ते लुक्खी पड़ा गेल। लेलहाक हाथमे नाङैरक रोइयेंटा बँचि गेलइ। पछाइत अपना नजैरेपर लेलहाकेँ शंका हुअ लगलै। कखनो बामा हाथसँ आँखि मिड़ै तँ कखनो दहिना हाथसँ। मुदा तैयो मन मानबे ने करै जे पढ़ुआ काका भीतरसँ छैथ आकि ऊपरे-ऊपर छैथ। मुदा मन बदललै। पाँच गोरेक बीच जखन रही तखन अपन बात दोसरकेँ कम-सँ-कम कही आ दोसराक बात बेसी सुनी।

चाह आएल। सभ पिबए लगला। चाहक गिलास रखि पढ़ुआ काका शंकरदेव दिस देखैत बजला-

"भाय, आब की पहिलुका किछु रहल। पहिने केहेन बढ़ियाँ सभ मिलि भोज-काजमे संगे करबो करै छल आ संग मिलि सभ खेबो

करै छल। आब तँ दरिभंगाक वेपारी आबि कऽ सराध बिआहक ठिक्के लऽ लैत अछि।"

पढ़ुआ कक्काक बात सुनि शंकरदेव बजला-

"हम अपने बात कहै छी। देनिहार बुझै छैथ जे हजार रूपैआक बरतन देलिऐन, मुदा हम की ओकरा घरमे चूरि-चूरि खाएब। केतौसँ अनै छी दोकानमे जा कऽ अधोरमे बेचै छी। कहैले तँ एते भेटल मुदा हाथ केते अबैए? तहन तँ आब बुझए लगलिऐ जे मनुखक जिनगी मनुखताक योनि छी। सक्कत संकल्प-ले कठीन आ दृढ़ताक जरूरत होइ छइ। मुदा भऽ गेल छी पेटगनाह। बीत भरिक पेटक खातिर सभ चौपट भऽ गेल अछि। अपन हारल बोहुक मारल के केकरा कहै छइ। तहन हम यएह कहब जे पाँच गोरे विचारि कऽ डेग उठाउ।"

सभ कियो विचार-विमर्श कऽ आगूक रस्ता धेलैन-

1. घरवारीकेँ माने कर्ताकेँ जेना मन मानैन ओइ अनुकूल कर्म हुअए। झरखंडी बाछाकेँ दागि साँढ़ बनबैसँ परहेज कएल जाए।

2. आन गामक पंच माने भोज खेनिहारसँ परहेज कऽ गामक सभ जातिक पुरुख-स्त्रीगणकेँ खुऔल जाए। आन गामक कुटुम, दोस्त, दियाद तँ रहबे करता।

अन्तमे देवनन्दन बजला-

"जहिना पिताजीक शरीर नष्ट भेलैन मुदा आत्मा तँ छैन्हे तहिना साले-साल हुनका निमित्ते यथासाध्य कल्याणकारी काज करैत रहब।"

○

शब्द संख्या : 7903

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-30-8

जीवन-संघर्ष

जगदीश प्रसाद मण्डल



जीवन-संघर्ष

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ
...
..
.

ISBN : 978-93-87675-29-2

दाम : ₹ 250/-
सर्वाधिकार © श्री सुरेश मण्डल
चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

JEEVAN-SANGHARSH
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

अनुक्रम

एक/08
दू/43
तीन/73
चारि- क/96
ख/121
ग/130
घ/141
ङ/149
पाँच/157

एक

कातिकक अनहरिया। रौदियाह समए भेने जेठेक रौद जकाँ रौदो कड़गर, तैपर सँ जनमारा उम्मस। जहिना छींच स्नानसँ देहपर पानिक टघार चलैत तहिना पसेना देहपर टघरैत। दस बजेक पछाइत बाध-बोन दिस आँखि नै उठौल जाइत, तेते झड़क! मुदा घरोमे चैन कहाँ? माथक पसेना नाकपर होइत टप-टप खसैत! देहक वस्त्र गन्हकैत! औल-बौल करैत सबहक मन..!

आठमे दिन दियारी छी तहूमे काली-पूजा करैक विचार सेहो सौंसे गौंआँ मिलि कऽ केलैन। दुनू अमावसिये दिन हएत। ओना अदौसँ दिवाली एक दिना पाबैन होइत आएल अछि मुदा काली-पूजा धूम-धामसँ मनबैक विचार भेने, पाँचो दिन सभ अपन-अपन अँगनमे सेहो दीप जरबैक विचार कऽ लेलैन। आठमे दिन पाबैनक दिन, तँए सात-दिनक पेसतरे घर-अँगनाक टाट-फरक सेरिएनाइ, छाउर-गोबरक ढेरी हटौनाइ, दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ अपन-अपन घर लगक बाटकेँ छिलनाइ-बनौनाइ इत्यादि, कनीए काज अछि! तैपर सँ आन-आन गामसँ अबैत सड़को सभकेँ तँ अपना सीमान धरि मरम्मत करैए पड़त किने। गुण अछि जे रौदी भेने खेत-पथारमे काज नइए। जँ रहैत तँ सबहक लटैक जाइत!

गाममे काली-पूजाक पैघ आयोजनक विचार अछि तँए काजोक

भरमार अछिए। ओना, लोकक उत्साहे तेहेन अछि जे कोढ़िलो बोझसँ हल्लुक बुझि रहल अछि। मालो-जालक भार सभ स्त्रीगणेपर छोड़ि देलैन। सभ किछु होइतो आ रहितो मुँहक चुहचुहीमे सेब-तड़क छैन। कारण धानक खेतीमे गामक किसान बँटा गेल छैथ। ओना खेतक बुनाबट सेहो तेहेन अछि जे बँटाएब सोभाविके। अधिक ऊँच, मध्यम ऊँच, नीच आ अधिक नीच रूपमे गामक खेत अछि। जइसँ पानि आ रौदक एक-रंग असर नै होइए। जेकर सद्य: प्रभाव उपजापर पड़िते अछि। गामक किसानो बँटा गेल छैथ। जिनका मध्यम आ ऊँच खेत छैन हुनका-ले गरमा धानक खेती उपयोगी छैन। मुदा जिनकर खेत नीच आ अधिक नीच छैन, जइमे शुरूक बर्खासँ अगहन-पूस धरि पानि जमल रहैए, ओइ खेत-ले अगहनीए धानक खेती उपयोगी अछि। ओना वैचारिक भेद सेहो अछि। अखनो गरमा धानकेँ अशुद्ध बुझल जाइए। जइसँ किछु गोरे विरोध स्वरूप कम उपजा खुशीसँ पबै छैथ।

आइ धरि बँसपुरामे ने कहियो कोनो होम-यज्ञ भेल आ ने कोनो तेहेन दसगरदा उत्सवे। जइसँ परोपट्टाक लोक बँसपुराबलाकेँ अधरमी सेहो बुझैए..। ओना, गाम मेहनती किसान-बोनिहारक छी। गाम भरिमे ने एक्कोटा कम्पनीक एजेंट अछि आ ने चोर-डकैत आ ने ठक-फुसियाह। मुदा तँए की बँसपुराबला धर्मक काज नै करै छैथ? बखूबी करै छैथ। साले-साले महावीरजी स्थानमे अष्टयामक संग रामनवमी मनैबते छैथ। समए नीक हौउ कि अधला मुदा उत्सवमे कोनो बाधा नै होइत, भलेँ नै पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलिते अछि। तेकर अतिरिक्तो बेकता-बेकती भनडारा, अगहनमे जनार, आसीनमे सलहेसक पूजा इत्यादि करिते छैथ।

रौदी सबहक मनकेँ हौंर रहल छैन मुदा तैयो मनमे नव उत्साह जगले छैन। भिनसरसँ लऽ कऽ खाइ-पीबै राति धरि सभ पूजेक

कोनो-ने-कोनो काजो करैत, नै तँ पूजेक जुति-भाँतिक विचारमे लगल रहै छैथ। डिहवारो स्थानक चलती आबि गेल। स्थानक सौंसे आँगनकेँ चिक्कैन माटिसँ दुनू साँझ नीपलो जाइए आ गामक पुतोहु आ ढेरबा बेटी-जाति सभ, कमसँ कम पाँचटा उचिती-विनती सेहो सुनैबते छैन। कुमारि भोजन तँ पाबैन दिन हएत। मुदा अनेको तरहक सुगन्ध अगरबत्ती आ सरर-धुमनक माध्यमसँ पसैरते अछि। केना नै पसरत? पहिले-पहिल गाममे पाँच दिनक मेला लागत। रंग-बिरंगक दोकानमे रंग-बिरंगक वस्तुक बिकरी गाममे हएत। सभ अपन-अपन जिनगीक अनुरूप कीनबो करत...।

मेलाक प्रति लोकक मन एतेक उड़ि गेल अछि जे ने आन काज आ ने आन गप करैत नीक लगैत। घरक सोलहन्नी भार स्त्रीगणेपर पड़ि गेलैन। मुदा तरे-तर रोगक एकटा किड़ी फड़ि गेल। ओ किड़ी ई जे खिस्सकरक चलती आबि गेल। सुननिहारक कमीए नहि। बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ धिया-पुता धरि। खिस्सकरो रंग-बिरंगक, कियो कालीकेँ समैक गति बुझि बजैत तँ कियो महादेवक छातीपर पएर देब कहैत। जहिना अपन खेत छोड़ि किसान वसन्त-पंचमी दिन एक्के परतीकेँ बेरा-बेरी जोतैत तहिना कालियोक चर्च करैत।

अदौसँ दिवाली एकदिना पाबैन होइत आएल अछि। संगे एक-लाटेमे गोधन पूजा, भरदुतिया, दवातक पूजा सेहो होइत आएल अछि। तैपर सँ पाँच दिनक काली पूजाक मेला सेहो हएत। गाममे गहगट मचि जाएत। बिना ब्लिचिंग पौडर छिटने पेशावक गन्ध मेटाएत? दोहरी पूजा भेने जेहने सबहक मनमे खुशी होइत तेहने काजक तबाही सेहो। एक-लखाइत दस-बारह दिन खटब असान नहि। के बिमार पड़त, केकरा रद-दस्त हेतै तेकर कोन ठेकान। तहूमे धिया-पुता अकड़-धकड़ खेबे करत। रोकने थोड़े मानत। तैपर सँ भरि राति नाचो-तमाशा देखबे करत। सोचिनहार सभकेँ तरे-तर सोगो

होइत। तेतबे नहि, आरो सोग सभ एकाएकी मनमे अबैत जाइत। एक तँ ओहिना दिल्ली-कलकत्ता दुआरे भाए-बहिनक पाबैन- भरदुतिया-रोगा गेल अछि, तैपर सँ गामक मेला। जँ पूजाक हकारो देल जाएत तँ के एहेन अभागल हएत जे लक्ष्मी पूजा छोड़ि गाम औत? भलेँ ऊक पुरुखे फेड़त मुदा तम्मा तरमे दूबि-पाइ सिरा आगू तँ जनीजातिये रखै छैथ। ओ पुरुख केना करता? एहेन पाबैन छोड़ब केते उचित हएत?

गामक मेला सबहक मनकेँ बिर्ड़ोक झोंक जकाँ उड़बैत। तँए नीक-अधलापर नजैर केकरो टिकबे ने करैत। तहिना कातिकक जरैया बोखार आ पेट-झर्ड़ीपर नजैर केकरो जेबे नै करैत। सभ उन्मत! सभ बेहाल! जहिना फगुआ दिन भाँग पीब गाममे नचैए तहिना सभ घरसँ गाम-धरिक लोक काजक पाछू नचैत। जहिना घरक ओलतीक पानि टघैर कऽ अँगनासँ निकलैत-निकलैत पानिक बेग बनि पोखैर पहुँच जाइत तहिना बेकती ससैर कऽ समाजमे मिलि रहल अछि।

गाममे काली-पूजा किए हएत? जे एते दिन नै भेल ओ ऐ सालसँ किए हएत? अनेरे खर्चाक उतड़ी गौंआँ गरदैनमे पहिरैले किएक तैयार भऽ गेल? तेकर कारण ई अछि जे बँसपुरासँ कोस भरि सटले सिसौनीमे पच्चीसो बर्खसँ बेसीए दिनसँ दुर्गा-पूजा होइत अबैए। चरिकोसीक लोक दुर्गा-पूजा देखए सिसौनी जाइ छैथ। गामेक नहि, आनो-आनो गामक स्त्रीगण दुर्गा-स्थानमे साँझो दिअ अबै छैथ। कुमारि भोजन सेहो करबै छैथ। कबुलाक छागर सेहो चढ़बै छैथ।

बलि-प्रदानमे सिसौनीक जोड़ा जिलामे नै अछि। दुर्गा-पूजा होइसँ एक महिना पहिनेसँ बकरी पोसनिहारक चलती आबि जाइ छइ। तहूमे एकरंगापर तँ डाक-डकौबैल भऽ जाइए। तेतबे नहि, पाठ केनिहार सभ सेहो अभ्यास करए लगैत। गाममे दुर्गा-पूजाक समए परीक्षाक समए बनि जाइत। जे बेसीठाम सम्पूट पाठ केलैन ओ

डिस्टिंग्सनक संग फस्ट डिवीजन घोषित होइ छैथ। आमदनियोँ नीक आ डिपलोमो नमहर! ओना, केतबो कियो अभ्यास करैथ मुदा छन्ठे पंडीजी फस्ट करता, ई सबहक मन बीस सालक अनुभवसँ मानैत आएल छैन। हद छैथ ओहो। एक तँ ओहिना तेज बोली छैन तैपर सँ तेते स्पीडमे धड़ै छैथ जे चौपाइक पहिल शब्द आ अन्तिमो शब्द सुनि पाएब कि नहि! ओना किछु हौउ मुदा किनुआँ सर्टिफिकेट नै रखने छैथ। मेहनत कऽ कऽ अनने छैथ।

ऐबेर सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे एकटा घटना भेल। घटना ई भेल जे बँसपुराक एकटा अठारह-बीस बर्खक लड़की, जेकर पैछले साल बिआह भेल छेलै आ तीनियेँ मास सासुर बसल छल, केँ पूजा कमिटीक तीन गोरे फूसला कऽ भण्डार घर लऽ गेल। मेला-गनगनाइत। नाच-तमाशाक लोड-स्पीकर चरिकोसीक नीन उड़ौने। तीनू गोरे ओइ लड़कीक संग दुरबेवहार केलक। बेवश भऽ ओ लड़की सभ किछु बरदास केलक। चारि बजे भोरमे ओकरा सभ छोड़ि देलक। मेला भरि ओ किछु ने बाजल। मुँह-कान झाँपि मेलासँ निकैल सोझे गामक रस्ता धेलक। गामक सीमापर पहुँचते छाती चहैक गेलइ। छाती चहैकते हबो-ढकार भऽ कानए लगल...।

भिनसुरका कानब सुनि एक्के-दुइए गामक लोक घर-आँगनसँ निकैल रस्तापर आबि-आबि देखए लगल। टोल प्रवेश करिते एका-एकी लोक पुछए लगलै। अपन बीतल घटना सुनबए चाहैत मुदा बजले ने होइ...।

बेटीकेँ कनैत देख, बिनु किछु पुछने माए छाती पीट-पीट कनैत दुनू हाथे पँजिया कऽ पुछलक-

“की भेलौ, हम माए छियौ, हमरा नै कहमे तँ केकरा कहबीही।”

जेना-जेना माए बेटीक मुँहक बात सुनैत तेना-तेना देहमे आगि

सुनगए लगलै। सुनैत-सुनैत बमैछ कऽ पतिकेँ कहलक-

“जहिना हमर बेटीक इज्जत सिसौनीबला लूटलक तहिना सिसौनीक दुर्गास्थानमे मनुखक बलि पड़त।”

कहि घरमे रखल झोलाएल फौरसा निकालि, साड़ी समेट कऽ बान्हि सिसौनीबला सभकेँ गरियबैत विदा भेल। पत्नीक काली रूप देख पति सेहो तौनीक मुरेठा बान्हि हरोथिया लाठी नेने गारि पढ़ैत बढ़ल। बताहि जकाँ माए चिकैर-चिकैर गरियेबो करैत आ देवी-दुर्गा लगा-लगा सरापबो करैत। जेते डेग आगू-मुहेँ बढ़ै तेते तामसो ऊपरे-मुहेँ चढ़ल जाइ। एमहर भुमहुरक आगि जकाँ तरे-तर गौआँक करेजमे आगि लहैर गेल। सभसँ पहिने सातो दियादी परिवारक पुरुख, स्त्रीगण सहित धियो-पुतो, जेकरा जएह सोझमे भेटलै, से सएह लऽ कऽ सिसौनीक रस्ता धेलक। दियाद-वादकेँ आगू बढ़ैत देख टोलोक आ जातियोक सभ विदा भेल। गाम दलमलित हुअ लगल। जेकरा जएह मनमे उठै से सएह जोर-जोरसँ बजैत सिसौनी दिस विदा भेल।

बुधियार लोक सबहक मन दड़कए लगल जे दुनू गामक बीच खून-खरापी हेबे करत। एकरा कियो नै रोकि सकैए। मुदा तैयो आगिमे जरैसँ रोकैक परियासमे किछु लोक आगू बढ़ि रस्ता रोकलक। कियो बात मानैले तैयारे नहि। दुनू परानी कुसुमलालकेँ माने लड़कीक माए-बापकेँ चारि-चारि गोरे पकैड़ कऽ रोकलक। कुसुमलाल तँ ठमैक गेल मुदा पवित्री मानैले तैयारे नहि। चरि-चरि हाथ कुदि चारू गोरेक हाथ छोड़ा-छोड़ा आगू बढ़ि बजैत-

“सभ दिनसँ पुरुख स्त्रीगणपर अतियाचार करैत आएल अछि आ अखनो करैए। ऐ अतियाचारकेँ के रोकत? पुरुख-पुरुख सभ एक छी। जहिना गाएसँ गाए नै पाल खाइत तहिना पुरुख बुते पपियाह पुरुखकेँ सिखौल हेतइ! आइ सिखा देबइ!”

जहिना भादवक वादलमे बिजलोको छिटकैत आ चारू भर अवाजो होइत, तहिना हँसेरीक बीचसँ रंग-बिरंगक बात अकासमे उड़ए लगल-

“सिसौनीमे आगि लगा लंका जकाँ जरा देब!”

“इज्जत-आबरू लूटि, गाममे आगि लगा देब!”

“चौराहापर अपराधीकेँ आनि मुँहपर थूक फेक देहमे आगि लगा देब!”

“सिसौनीक बहु-बेटीकेँ पकैड़ लऽ आएब!”

क्रोधक चिनगारी उड़िे-उड़ि फुलझड़ी जकाँ अकासमे चमकए लगल। मुदा ई सभ विचार बेकता-बेकती होइत सामूहिक नहि। ने कियो केकरो बात सुनैले तैयार आ ने अपन मुँह रोकैले। मुदा तैयो बुधियार सभ रस्ता छोड़लैन नहि। घरमे लगल आगि मिझबैमे हाथ-पएर झड़ैकते छइ।

गाममे सभसँ बेसी उमेरक मनधन बाबा। जहिना नब्बे माघक जाड़ कटने छैथ, तहिना अनेको झाँट, पाथर, शीतलहरी, बिहाड़ि आ भुमकम सेहो देख-भोगि चुकल छैथ। गामक लोककेँ एकमुहरी देख बाँसक फराठी नेने टुघरल-टुघरल मनधनो बाबा पहुँचला। पाछुएसँ देखलखिन तँ मन मानि गेलैन जे सिसौनी आ बँसपुराक बीच मारि हेबे करत। ब्रह्माक बापो नै बँचा सकै छैथ। केमहर के मरत, केतेक हाँड़-पाँजर टुटत, तेकर कोनो ठेकान नै रहत..!

विचारैत-विचारैत दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैन। छाती छहोंछीत भऽ गेलैन। बुकौर लागि गेलैन। देहक हूबा टुटि गेलैन। बोम फाड़ि कानए लगला। गंगोत्रीक गंगा जकाँ दुनू आँखिसँ अनघोल करैत अश्रु अर्ड़ाहट मारैत मुँहक बोल आ थर-थर कँपैत छातीसँ बेकाबू मनधन बाबा भऽ गेला। जहिना कोसीक धारक बीच

मोइनमे पाछुक पानिक धारा आबि घुमए लगैत तहिना मनधनक विचार घुमए लगलैन। हूबा करि कऽ उठि आगू-मुहेँ ससरए लगला। आगू पहुँच रस्तापर फराठीसँ चेन्ह दैत पड़ि रहला। मन थिरे ने होइन। कखनो आँखिक सोझमे दू गामकेँ नष्ट होइत देखैथ तँ कखनो पुश्त-पुश्तानिक दुश्मनी सेहो होइत देखैथ! मन पड़लैन जुड़शीतल पाबैनक घटना। एकटा नढ़ियाक खातीर बेला आ मैनही गामक शिकार खेलनिहारक बीच मारि भेल। धमगज्जर मारि। परिस्थितियो अनुकूले पड़लै। पाबैन मनबए सभ लाठी, सोहत, तीर-धनुष लऽ लऽ शिकार खेलए गेले रहए। ने लोकक कमी आ ने मारि करैक वस्तुक। मुद्दो तेहने भारी, एकटा मुइल नढ़िया। मुदा प्रतिष्ठाक प्रश्न तँ गामक रहबे करइ। अही प्रतिष्ठा लऽ कऽ केतेको लोकक कपार फूटल, केतेकोकेँ हाथ-पएर टुटल आ दुनू दिस एक-एकटा खूनो भेल। कियो केकरो देखैबला नै रहल। जे जेतइ से तेतइ कुहरैत रहए। केकरा के उठा कऽ लऽ जाइत आ इलाज करबैत। हो-ने-हो तहिना कहीं आइयो ने हुअए!

फेर, मनधन बाबाक मनमे उठलैन जे सभकेँ मनाही करी मुदा सुनत के? विचित्र स्थितमे मन ओनाए लगलैन। आँखि उठबैथ तँ देखथिन जे जे स्त्रीगण सभदिन सोझमे मुड़ी नै उठबै छल, आइ ओहो सभ बताहि जकाँ साड़ीक भरकौंच बन्हने लाठी फरका रहली अछि! सबहक मन मारिये-पर टँगल छै! केना उतरत?

मुदा तरे-तर खुशियो होइत रहैन जे नीक वस्तुक कीमतो बेसी होइए। गुन-धुनमे फँसल मनधन बाबाक मन अपन दायित्वपर पड़लैन। मुदा ऐ हँसेरीक बोनमे दायित्वक मोजर के देत? मुदा तैयो एक भाग फराठीकेँ पकैड़ दोसर भाग उठा इशारासँ सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। मुदा सभ अपने ताले, बेताल! गामक जेते कुकुर जेतए रहए ओ बान्हक निच्चाँ खेते-खेत भूकैत आगू पहुँच गेल। छह-मसुआ बच्चा सभ चारि बेर भुकै आ कनी काल सुसता लिअ…।

मनधन बाबाक मनमे उठलैन जे बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेवहार सिसौनीबला लुच्चा सभ केलक ओ गामक इज्जतक संग जुड़ल सबाल अछि। इज्जत-ले जान देब पुरुखक काज छी। एकरा अधला के कहत? सभकेँ अप्पन-अप्पन इज्जत-आबरू बनबैले, बना कऽ निमाहैले, कटए-मरए पड़तै। से जँ नै रहत तँ कखन केकर इज्जत के लूटि लेत तेकर कोन ठेकान अछि। भदबरिया बेंग जकाँ साले-साल तेते लुच्चा-लम्पटक जन्म भऽ रहल अछि जे गामे-गाम सोहरल जाइए! मुदा गामक भीतर तँ एहेन-एहेन किरदानी सदिकाल होइते रहैए। तहन कहाँ कियो किछु बजैए? तैकाल साला सभ कहत जे धुर्र छौड़ा-छौड़ीक खेल छी…।

दुनू बात मनमे उठिते मनधन बाबाकेँ मुहसँ हँसी फुटए लगलैन। मुदा गामक लोकक रूखि हँसीकेँ दाबि देलकैन। सोचए लगला जे एक्के रंगक काज-ले एकठाम लोक कटए-मरए चाहैए आ दोसर ठाम धिया-पुताक[1] खेल बना उड़बैए! अजीब अछि लोकोक बुधि-विचार! जहिना सदिकाल एक पुरुख दोसर महिलापर नजैर उठबैत रहैए मुदा अपन पत्नीकेँ दोसरक संग बजैत देख आगि-बबुला भऽ किछु-सँ-किछु करैले तैयार भऽ जाइए तहिना ने अखनो भऽ रहल अछि। जइ घटनाकेँ सामूहिक रूपे इज्जत बुझल जाइए ओइ इज्जतक रक्षो तँ समूहेकेँ करए पड़तै। जँ खेल बूझत तँ खेल जकाँ बुझह नै जँ इज्जत बूझत तँ इज्जत जकाँ सुरक्षित राखह। नै जँ गुल-गुल बुझि दुनू करत तँ इज्जत-आबरूक बाते करब छोड़ह…।

मन सक्कत हुअ लगलैन। रस्तापर फराठीक नोकसँ डाँरि दैत कहलखिन-

“ऐ डाँरिसँ जँ कियो एक्को डेग पएर बढ़ेबऽ तँ एतै पराण गमा

[1] छौड़ा-छौड़ीक

देब। नै तँ अखन सभ शान्त भऽ जाह। नहाइयो-खाइ बेर भेल जाइए। भानसो-भात सबहक बन्ने छह। तँए अखन जाइ जाह। खा-पी कऽ चारि बजे बरहम स्थानक आगूमे बैस आगूक रस्ता बना लिहऽ।"

मनधन बाबाक विचार सभ मानि घरमुहाँ भेल। तत्खनात झंझट ठमैक गेल। मुदा मनक धधरा मिझाएल नहि। जहिना चेराक धधकैत आगिमे पानि ढारलासँ धधरा पझा जाइए मुदा ताउ रहबे करै छै, तहिना लोकोक मनक आगिमे भेल। छोट-छोट टुकड़ी बनि सभ विदा भेल। मुदा रस्तामे सभ क्रोध बोकैरते रहए। सभकेँ डोरियाइत घर दिस जाइत देख मनधन बाबाक मन थीर भेलैन। घर दिस घुमिते मनमे उठलैन जे जखन गामक लोकमे एते आगि लगल अछि तखन दुनू परानी कुसुमलालकेँ केते लगल हेतइ! से नइ तँ ओकरा ऐठाम जा बोल-भरोस दऽ अबिऐ।

अपन अँगनाक रस्ता छोड़ि मनधन बाबा कुसुमलालक ऐठाम पहुँचला। दुनू परानी कुसुमलाल दुखक अथाह समुद्रमे उगि-डुमि रहल अछि। दुनू निराश। आशाक केतौ दरस नहि। दुनूक चेहराक रंग मलीन भेल। मनमे बेर-बेर उठैत जे बिनु इज्जतक जिनगी जीब नै जीब दुनू बरबैर!

दुनू बेकतीकेँ देख मनधन बाबा चुपचाप मेह जकाँ डेढ़ियापर ठाढ़। ने कुसुमलाल किछु बजैत आ ने बाबा। मनमे होनि जे कुसुमलाल हमरे सोलहन्नी दोखी बुझैत हएत। जहिना प्रेमक अन्तिम सीढ़ी बिआह छी, तहिना तँ क्रोधक खूनो छी। हो-ने-हो कोनो उझट बात कहि दिअए...।

फेर मनमे एलैन जे आएले तँ छी बोले-भरोस दइले। जीबठ बान्हि कहलखिन-

"बौआ कुसुम! हमरा आगू तूँ बच्चा छह। तोरासँ बहुत बेसी ऐ दुनियाँक चक्कर-भक्कर देखने छी। मनकेँ थीर करह। जे भऽ गेल ओ तँ नै घुमत। मुदा तइले की करी, केते करी, ई सभ बुझए पड़तह। एहेन तँ नै ने जे सभ कियो ओही लगल पराण गमा देब। तूँ दुनू गोरे तँ बापे-माए छहुन। दुखी भेनाइ उचिते छह। मुदा आइ की देखलहक? देखलहक किने जे समुच्चा गामक लोककेँ असीम दुख भेल छइ। ई विचार मनसँ हटाबह जे हम्मर इज्जत चलि गेल। गरीब लोकक सभसँ पैघ दुश्मन ओकर गरीबी छिऐ। गरीबी केवल अन्ने-पानि धरि नै होइए, जिनगीक सभ पहलु-ले होइए। गरीबीक बान्ह ओइ रूपे बन्हने अछि जइमे गारि-फज्झैतसँ लऽ कऽ धन-सम्पैत, माए-बहिनक इज्जत लुटै धरि अछि। तहन जँ कियो हँसी-खुशीसँ जीवियो लइए वएह एक लाख।

बौआ, गरीबीक ताला लोहोक तालासँ नमहर आ सक्कत अछि। लोहाक तालामे एक्केटा मुँह आ दाँत होइ छै जइमे कुन्जी घुमौलासँ भक-दे खुजि जाइए। मुदा गरीबीक जे ताला अछि ओइमे अनेको मुँह आ अनेको दाँत अछि। एकटा खोलबह दोसर लगि जेतह। सोझे लगबे टा नै करतह, पहिलुकासँ केते गुना कस-कसा कऽ लगि जेतह। तँए, जहिना कोनो आमक गाछ साले-साल रौद, बर्खा, पानि-पाथर, बिहाड़ि जाड़ सहि नमहर भऽ फड़ैए आ ओ फड़ मनुखसँ लऽ कऽ अनेको जीव-जन्तु धरि बिलहैए तहिना मनुखोक जिनगी छी। जखने गरीब घरमे जन्म लेलह तखने बुझि जाहक जे आँखि देखैले नै कनैले अछि, गारि सुनैले कान अछि आ मारि खाइले देह अछि। गरीबक आँखिमे जेते इजोत बढ़ैए तेते नोरक समुद्र दिस जाइए आ जेते समुद्रक लग पहुँचैए तेते नोरक टघार अनवरतताक रूपमे बदलैए जइसँ अनवरत टघरैत रहैए! तोहर दुख समाजक दुख बनि गेल अछि। समाज ओहन कारखाना छी जइमे देवतासँ लऽ कऽ छुतहर धरि

बनैए। तँए, ने केकरो कहने केकरो इज्जत अबैए आ ने जाइए। लोककेँ अपने केने होइ छै आ गमौने जाइ छै...।"

मनधन बाबाक बात सुनैत-सुनैत पवित्री बोम फारि कानए लगली हुचैक-हुचैक बजली-

"बाबा, ई तँ गामक मेह छथिन तँए हिनकर बात मानि लेलिऐन। नै तँ आइ सिसौनीमे आगि लगौने बिना नै छोड़ितिऐ। जखनसँ बेटी आएल तखनसँ एक्को बेर मुँह उठा नै तकैए। कनैत-कनैत दुनू आँखि डोका जकाँ भऽ गेल छइ। सदिखन एक्केटा रट लगेने अछि जे जीवियो कऽ की हएत। जखन इज्जत चलिए गेल तखन कोन मुँह समाजकेँ देखाएब।"

पवित्रीक बात सुनि मनधन बाबाक हृदए छँहोछीत भऽ गेलैन। आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। दुनू हाथसँ आँखि पोछि बजला-

"कनियाँ, जेकरा अहाँ इज्जत जाएब बुझै छिऐ ओ जाएब नै छी, जोर-जबरदस्ती छिऐ। जोर-जबरदस्ती मुँहक कहलासँ नै मेटाइ छइ। ओकरा शक्तिसँ रोकए पड़ै छइ। गरीबक बीच ओहन शक्ति अखन नै भेल अछि, जखन हएत स्वत: रूकि जाएत। अखन जोर-जबरदस्ती केनिहार बलगर अछि तँए सूझि-बूझिसँ चलए पड़त। इलाकामे कोन गाम एहेन अछि जइ गाममे एहेन-एहेन किरदानी नै होइ छइ। सभसँ पहिने गरीबकेँ अपना पैरपर ठाढ़ हुअ पड़तै। जखन ओ ठाढ़ भऽ संगठित हएत तखन शोषक संगे, जबरदस्ती केनिहारक संगे संघर्ष होएत। संघर्षोसँ समाज बदलैए समाज बदलने सभ किछु बदैल जाइए तँए कानू-खीजू नहि। समाजक संग पएर-मे-पएर मिला कऽ चलू।"

कहि विदा भऽ गेला। घर दिसक बाट तँ मनधन बाबा धऽ लेलैन मुदा डेग उठबे ने करैन। तैयो बलजोरी बढ़ला। फराठी हाथे

कहुना-कहुना कऽ घरपर आबि गेला मुदा देहमे आगि लगले रहलैन। जइसँ विचार ओझरा गेलैन। धरती-पहाड़क दूरी देख सोचैथ जे कोनो आँगुर कटने अपने घा हएत। भलेँ अखन धरि ई घटना छौड़ा-छौड़ीक खेल बुझल जाइ छल मुदा आइ सही रस्तापर आबए चाहैए। तँए घटनाकेँ रोकब उचित नै हएत।

फेर मनमे उठलैन जे दू गामक बीचक घटना छी। एक गामक रहैत तँ कनी हल्लुको रहैत मुदा दू गामक बीच एहेन घटनाकेँ केते नमहर मानल जाए? मुदा छोड़नाइयो तँ उचित नहि। अदौसँ पहाड़ी धार जकाँ निच्चाँ-मुहेँ बहैत आएल अछि, जेकरा रोकनाइयो जरूरी अछि। जँ से नइ हएत तँ वैश्वीकरणक बिर्ड़ोमे उड़ि कऽ अकास ठेक जाएत। मुदा जइ रूपे घटनाक जवाब बढ़ए चाहैए ओ तँ आरो विनाशक अछि। जहिना ऐ गामक लोक समाजिक प्रतिष्ठा बना कटै-मरैले तैयार अछि तहिना जँ कहीं सिसौनीबला सभ गामक प्रतिष्ठा बुझि ठाढ़ भऽ जाएत, तहन की हएत? ठाढ़ो होइक केते कारण भऽ सकैए। ओना सार्वजनिक स्थानक घटना होइतो गाम आबि लड़की बाजल। जेकरा गौआँ मानि रहल अछि। मुदा सही घटना रहितो सिसौनीबला मानियेँ लेत सेहो जरूरी नै अछि। एक गाम दोसर गामपर बलजोरी केते काल कऽ सकैए?

मनधन बाबाकेँ कोनो बाटे नै सुझनि। दू गामक बीच तँ विचारेसँ रोकल जा सकैए। मुदा जँ एहेन घटना रोकल नै जाएत तँ सार्वजनिक स्थानक महत्ते केते दिन टिकत?

भुँइयेँमे दलानक ओसारपर कर बदैलते मनमे एलैन जे एहेन घटना समाजिक स्तरपर रोकब नीक हएत। मन असथिर भेलैन।

बेरुका बैसारमे जाइ आकि नहि? मुदा बाजल तँ हमहीं छी। फेर मनमे एलैन, चारि बजे सौंसे गौआँकेँ बैस कऽ विचार करैले कहलिऐ

आकि ई कहलिऐ जे तोरा सभकेँ विचार सुना देबह। दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। पाकल आम भेलौं, कखन छी कखन नै छी। ईहो कोनो जरूरी नै अछि जे हम्मर विचार सभकेँ सोहेबे करइ। जँ नै सोहेतै तहन तँ औरो मनमे दुख हएत। तहूमे मूलत: ई घटना महिलाक छी। जे पुरुख हजारो बर्खसँ एहेन अपराध करैत आएल अछि ओ सुहरदे-मुहेँ मानि लेत? आन गामक घटना कहीं गामे दिस ने चलि आबए। अखनो धरि समाजमे एहेन किरदानीकेँ लोक हँसीए-चौल बुझैए।

फेर मनमे उठलैन, अपनो तँ आब बलजोरीए जीब रहल छी, नै तँ अपन बतारी कएकटा गाममे अछि। तँए कि समाजसँ हटि जाइ? जँ हटब तँ मुइला पछाइत डाहैले के औत? ओना, से देखबो करैले तँ नै आएब। अपनो परिवारमे देखै छी जे सिनेमा कलाकार आ खेलाड़ी सबहक कुल-खुटक नाओं जनैए आ अपना कुल-खुटक जनिते ने अछि। एहेन तँ गँरिबहू गाम अछि! केकरा कहबै, स्त्रीगणो सभ तेहेन-तेहेन आबि गेल अछि जे पुरुख सभकेँ गारि पढ़ि-पढ़ि कहैए जेहने छुतहर कुल-खुट रहतह तेहने ने चालि रहतह! आब कहू जे कुल-खुटक केन दोख छइ। नान्हि-नान्हिटा छौड़ा शिखर-पराग खाए लगल अछि, ऐमे केकर दोख? जीबैतमे एहेन-एहेन लीला देखै छी आ परोछ भेलापर हीरा सजौल मन्दिर बना देत? तैबीच पोती आबि कऽ टोकलकैन-

“खाइले चलू ने बाबा? नहेबै नहि?”

केचुआएल साँप जकाँ बाबा कहलखिन-

“चलै-फीड़ैक होश नै अछि अहीठाम नेने आबह। पहिने एक लोटा पानि नेने आबह। कनी मुँह-हाथ धोइ लेब।”

जहिना गदगरल मन रहने खाइक इच्छा नै होइत तहिना

मनधनो बाबाकेँ बुझि पड़ैन। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ खाए लगला। लाभर-जिभर चारि कौर खा लोटो भरि पानि पीब पोतीकेँ कहलखिन-

“अन्न नै धँसैए। लऽ जाह।”

हाथ मुँह धोइ मनधन बाबा चौकीपर ओंधरा गेला। मुदा जहिना ज्वर-एलासँ कछमछी अबैए तहिना चौकीपर एक करसँ दोसर कर घुमैथ। बेर टगल देख मनधन बाबा उठि कऽ फराठी हाथे बरहम स्थान दिस विदा भेला।

तीनियेँ बजेसँ एका-एकी लोक बरहम स्थान पहुँचए लगल। चारि बजेसँ पहिनहि गामक लोक एकत्रित भऽ गेल। मुदा एकटा नव घटना सेहो भेल। ओ ई भेल जे गाममे आइ धरि कोनो पनचैती वा सार्वजनिक काजमे महिला भाग नै लइ छेली से आइ घरा-घरी सभ पहुँच गेली। ओना आइ धरि हुनका सभकेँ कहलो नै जाइ छेलैन। मुदा जखन सबहक बीच माने पुरुख-महिलाक बीच समए निर्धारित भेल तखन हुनको सभकेँ हौसला जगलैन। हौसला जगिते टाट-फरकक परदा तोड़ि घरसँ निकैल तीत-मीठक सुआद लइले निकलली। अखन धरि जे बुधि-विचारक गाछ माटिक तर बीज रूपमे पड़ल छेलैन ओ एकाएक अँकुर गेलैन। नजैर नचलैन तँ देखली जे अदौसँ आइ धरि महिला पुरुखक चारागाह छोड़ि आर किछु नै रहली! जबकि बुधि-विवेक आ हाथ-पएर तँ हमरो सभकेँ अछि। केवल नीन तोड़ि जगैक जरूरत अछि। चरैत-चरैत पुरुख महिलाक सम्पूर्ण जिनगीकेँ, पाण्डु रोगी जकाँ निरस बना देने अछि! बिआहसँ पूर्व शिक्षा-विहिन बच्चा जिनगी आ बिआहक पाँचे दिनक पछाइत समाजक कलंकित विधवाक जिनगी! जहिना सामूहिक हत्याराकेँ जहलमे यातना भेटैत तहिना महिलाक संग भेल अछि..! मुदा आइ बँसपुरामे नव सुरूजक उदय भेल।

बैसारमे पुरुख-नारी तँ पहुँचली मुदा एक-संग नै बैस फूट-फूट बैसली। एक भाग पुरुख आ दोसर भाग महिला। बिनु अनुशासक बैसार तँए दुनू बैसारमे सभ अपन-अपन पेटक बात बोकरए लगल जइसँ दुनू दिस अनधोल हुअ लगल। कियो केकरो बात सुनैले तैयार नहि। सभ अपने बजैमे बेहाल। मुदा पेटक बात सठिते सभ पोखैरक पानि जकाँ शान्त भऽ गेल।

कातमे बैसल मनधन बाबा समाजक रूखि चुपचाप अँकैत रहैथ। सभकेँ चानिपर पसेनाक टघार देखैथ। जइसँ बुझि पड़लैन जे भीतरक गरमी निकैल रहल छैन। समस्याकेँ दू ढंगसँ समाधान करब सोचि उठि कऽ ठाढ़ होइत मनधन बाबा बजला-

“अनकर घेघ देखैसँ पहिने अपन देखू। जँ से नइ देखब तँ ओहन दशा हएत जेहेन हँसि कऽ बजलासँ गम्भीर विचारक होइत। सभसँ जरूरी अछि गामक बीच जे एहेन-एहेन कुचालि सभ चलि रहल अछि, ओकरा बन्न करए पड़त। जँ से नइ करब, तँ आइ ओहन लकड़ीमे आगि धऽ लेलक जे एक गामक कोन बात जे साइयो गामकेँ जरौत। औझुका सूमा जे देख रहल छी ओ पुरुखसँ कम महिलामे नै अछि। तँए दू बैसारकेँ एक बनाउ।”

एक बैसार सुनि दुनू दिस गल्ल-गुल्ल शुरू भेल। दू तरहक विचार दुनू दिस टकराए लगल। टकराहट देख केते पुरुख उठि कऽ विदा हुअ लगला। मुदा बाबाक बात महिला सभ मानि अपन बैसार उसारि पुरुखेक बैसारमे बैस चिकैर-चिकैर बाजए लगली-

“बाबा, अहाँक पीठपर हम सभ तैयार छी, उठि कऽ निर्णए दियौ।”

महिलाक अवाज सुनि बाबाकेँ भेलैन जे ई अवाज शरीरक नै

शरीरी[2]क छी। हृदैसँ सभ कल्याण चाहि रहल छैथ। एकरा रोकब तँ असम्भव अछि मुदा मोड़ल जा सकैए...।

एक तँ बुढ़ाड़ी दोसर मनमे आगि लगल, मनधन बाबा थर-थर कँपैत फराठी बले उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-

“बाउ, हमरा आगू सभ बच्चे छह। जहन बच्चा बौआ आ बुच्ची बनैत तहिए-सँ दूजा-भाव शुरू भऽ जाइए। मुदा हम सभकेँ बच्चे बुझै छिअ तँए कहै छिअ जे अपन कल्याणक बाट सभ पकैड़ चलह। अखन जइ घटना, जइ समस्या दुआरे सभ एकठाम भेल छी, ओ मात्र दू बेकतीक बीचक नै दू समाजक बीचक छी। दू बेकतीक बीचक जँ रहैत तँ ओकरा छोट मानल जाइत मुदा दू गामक समस्याकेँ छोट मानब गलत आँकब हएत। ई ओहन अछि जे एक-सँ-अनेक रूपमे पसैर जाएत। जहिना तूँ सभ कहै छहक जे सिसौनीमे आगि लगा देब, मारब, बेइज्जत करब तहिना तँ ओहो सभ करतह। तहूँ सभ मारबहक ओहो सभ मारतह। तहूँ कपार फोड़बहक ओहो सभ फोड़तह। अखन ने बुझि पड़ै छह जे सोलहन्नी हमहीं सभ मारबै आ ओ सभ मारि खाएत। मुदा से केतौ देखलहक हेन। दुनू दिसक लोक मारबो करैए आ मारियो खाइए।”

मनधन बाबाक विचार सुनि सभ मुड़ी डोला-डोला सोचए लगल। एक दोसर दिस तकबो करैत आ नजैर निच्चोँ कऽ लइत। सबहक मनमे मारिक गम्भीरता नाचए लगल। मुदा तैयो मनक गरमी पूर्ण शान्त नै भेलइ। विचार गजपटाए लगलै। कखनो शान्तीक रस्ता मनमे जोर पकड़ै तँ कखनो उनैट कऽ मारि-दंगाक रस्ता पकैड़ लइ। जे चढ़ैत-उतरैत विचार मुँहक रूखिसँ साफ बुझि पड़इ। लोकक रूखि देख बाबा फेर ठाढ़ होइत बजला-

---

[2] आत्मा

“गामेमे देखै छहक जे कनी हूबगर अछि ओ मुँहदुबराक संग केहेन बेवहार करैए? भलेँ अप्पन जातिए, दियादे किएक ने होइ..!”

बीचमे कनी काल चुप भऽ मनधन बाबा आगू बजला-

“भीतरसँ अप्पन गाम फोंक छह। देखते छहक जे सभ अपन-अपन नून-रोटीमे दिन-राति लगल रहैए। ने अपना पेटसँ छुट्टी होइ छै आ ने दोसराक आकि समाजक कोनो चिन्ता छइ। समाज की छिऐ से लोक बुझबे ने करैए। अपने पेटक खातिर बेइमानी-शैतानी, चोरी-डकैती सभ करैए। सभ मिलि समाजकेँ परिवार जकाँ ठाढ़ कऽ काज करी, से केकरो मनमे छैहे नहि। ओना सिसौनियो सएह अछि मुदा तैयो तँ अपना गामसँ कनी निस्सन अछिए। कम-सँ-कम तँ सभ मिलि दुर्गा-पूजा तँ कइए लइए जखने दस-पनरह दिन सभ एकठाम भऽ एक काजक पाछू लगैए, तखने ने अपनामे गप-सप्प भेने साल भरिक छोट-छोट झगड़ा मेटाइए, जइसँ सामुहिक बल बढ़ै छइ। तँए समाजकेँ आगू बढ़बैले दसगरदा काज जरूरी अछि।

जाधैर लोकक मनमे दसनामा काजक प्रति झुकाउ नै हेतै ताधैर समाज आगू-मुहेँ केना ससरत? ऐ नजैरसँ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे अपना गामसँ थोड़े आगू सिसौनी बढ़ल अछि। सिसौनियोसँ आगू पछबारि गाम ‘बरहरबा’ अछि। देखते छहक जे ओइ गाममे दुर्गो-पूजा होइए आ पढ़ै-लिखैले हाइयो स्कूल छइ। बरहरबोसँ अगुआएल दछिनबरिया गाम ‘कटहरबा’ अछि।

कटहरबामे हाइयो स्कूल छै, अस्पतालो छै आ सालमे एक-बेर सभ मिलि चारि दिनक मेला कालियो-पूजा लगा लइए। जइ गाममे जेते सार्वजनिक काज हएत ओ गाम ओते तेजीसँ आगू बढ़त। गाम अगुआइक माने संस्थे बनि जाएब आ पूजे हएब नै बल्कि आचार-विचार-बेवहार-चालि-ढालि सभ किछु बदलब होइत। जाधैर कोनो

गाम पछुआएल रहैए ताधैर ओइ गाममे सदिखन राँड़ी-बेटखौकी, मारि-मरौबैल, हल्ला-फसाद होइते रहैए। जाधैर लोक झूठ-फूस बजैत रहत, छोट-छीन बात लऽ कऽ लड़ैत-झगड़ैत रहत, ताधैर ओकर समैक कोनो मोल नै हएत। जखने मूल्यहीन जिनगी चलैत रहत तखने श्रमक कोनो महत नै रहत। जे श्रम सार छी, मनुखक पूजी छी ओ धूरा-गर्दा जकाँ उड़ैत रहत! भाग्य-तकदीर बनौनिहार चानी कटैत रहत। जइसँ लोकक कमाइ लूटाइत रहत आ आँखिकेँ सदिकाल नोर दबने रहतै! जेकर आँखि नोरसँ झाँपल रहत ओ दुनियाकेँ केना देख सकत?”

मनधन बाबा बजिते रहैथ कि सुननिहारक बीच गल-गुल शुरू भेल। लोकक गल-गुलसँ मनधन बाबाकेँ दुख नै भेलैन, खुशीए भेलैन। मनमे उठलैन जे भरिसक लोकक परती बुधिमे जोत-कोर भऽ रहल छइ। नजैर खिरा-खिरा मरदो दिस आ जनीजातियो दिस देखए लगला। बैसले-बैसल जोगिन्दर जोरसँ बाजल-

“दुर्गा-पूजा तँ आब पौरुकाँ हएत मुदा कालीपूजा तँ लगिचाएल अछि। तँए हम सभ आइए संकल्प लऽ ली जे हमहूँ सभ काली-पूजा गाममे करब।”

जोगिन्दरक बातपर सभ थोपड़ी बजा समर्थन दऽ देलक। अही प्रतिक्रियाक फल छी गाममे काली-पूजा।

ओना रौदियाह समए भेने गामक किसानो आ बोनिहारोक दशा दयनीय अछि मुदा सिसौनीक घटना तेना उत्साहित कऽ देलक जे सभ बिसैर गेल। उत्साहित भऽ बोनिहारो सभ एकावन-एकावन रूपैआ चन्दाक घोषणा कऽ देलक। बोनिहारक उत्साह किसानकेँ झकझोड़ि देलक।

प्रतिष्ठाक प्रश्न सामनेमे उठि गेलइ। तैपर सँ परदेसिया आरो रंग

चढ़ा देलक। जेना एक दुखकेँ दबैले अनेको दबाइ आ पथ्य सामने आबि गेलइ। समाजक संग मिलि चलैक अछि, तँए बेकतीगत दुखकेँ दाबए पड़त। सार्वजनिक काजमे पाछुओ हटब उचित नहि। गामक बहु-बेटी आन गाम मेला देखए जाइत रहल, ओइ प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त करब। सभसँ पैघ बात बदला लेबाक रस्ता बनि रहल अछि। हमरा गामक लोककेँ जँ आन गामक लोक बेइज्जत करत तँ ओहू गामक लोककेँ हमसभ करबै। जइसँ आन गामक बरबैरमे अपनो गाम औत। उत्साहित भऽ प्रेमलाल उठि कऽ ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बाजए लगल-

“भाय लोकैन! अपना गामक भाए-बहिन आन गामक मेलामे जा बेइज्जत होइए। एकर की कारण छइ? कारण छै जे अपना गाममे कोनो तेहेन सार्वजनिक काजे ने होइए। जखने अपनो सभ तेहेन काज करब तँ अनेरे आन गाम बलाकेँ दहसैत हेतइ। वएह दहसैत गामकेँ उजागर करत, प्रतिष्ठित बनौत। गोसाँइ जी रामायणमे कहने छैथ, बिनु भय होइ न पीरिति।”

प्रेमलालक मुँह तँ बन्न भऽ गेल मुदा बजैले मन लुसफुसाइते रहलै। मुदा, आगूक बात मनमे एबे नै करै आ बजले बात दोहरौनाइ उचित नै बुझि, बैस रहल। प्रेमलालकेँ बैसते फेर गल-गुल हुअ लगल। गल-गुल एते बढ़ि गेलै जे जहिना सौजनियाँ भोजमे होइत तहिना भऽ गेल। गल-गुल देख अनुप उठि कऽ हाथक इशारासँ शान्त करैत गरमा कऽ बाजल-

“देखू, गल-गुल केने किछु ने हएत। सिसौनीबला सभकेँ एते गरमी किए चढ़ल रहै छै से बुझै छिऐ? ओ सभ दस हजार रूपैआ खर्च कऽ कऽ दुर्गा-पूजा कए लइए! तँए ओकरा सबहक गरमी हेट करैक अछि। तँए हम सभ पचास हजार रूपैआ काली-पूजामे खर्च करब। जँ सबैया-डेढ़ा खर्च कऽ पूजा करब तँ ओ सभ मद्दियो ने देत। तँए

समधानि कऽ हरदा बजबैक अछि।

अखने पूजा कमिटी बना लिअ। ओना अखन बीस-बाइस दिन काली-पूजाक अछि। मुदा अखनेसँ गाम-सँ-आन गाम धरि माहौल बनबैक अछि। पूजा समितिमे सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य बनाउ। जँ सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य नै बनाएब तँ अनेरे अखनेसँ अनोन-बिसनोन शुरू भऽ जाएत। तेतबे नहि, सभ जातिक सदस्य बनौने काजो असान हएत। सभ अपन-अपन लूरि-बुधिसँ सहयोग करत।”

अनुपक विचारसँ सभ सहमति भेला। समिति बनए लगल। सभ मिला एक्कैस गोरेक समिति बनल जइमे पाँच महिला। एक्कैसो गोरे उठि कऽ ठाढ़ भेला तँ एक दिव्य स्वरूप चमकल। सभ नौजवान। एक्कैसोक मनमे खुशी जे समाजिक क्षेत्रमे आगू बढ़ि रहल छी। समितिक सदस्य एक भाग आ गौआँ दोसर भागमे बैस विचार आगू बढ़ौलैन। समितिक संचालन-ले पदाधिकारीक जरूरत होइत। कमसँ कम अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ कोषाध्यक्षक जरूरत हेबे करैत। मुदा अध्यक्ष के बनत? गम्भीर प्रश्न। सभ सबहक मुँह देखए लगला।

केकरो अनुभव नहि। ओना समितिक अधिकांश सदस्यकेँ अध्यक्ष बनैक इच्छा मुदा अनुभव नै रहने डरो होइत। सभकेँ चुप देख रघुनाथ अपन पितियौत भाय देवनाथक नाओं अध्यक्ष-ले प्रस्ताव केलक।

देवनाथक परिवार गाम भरिमे जातियो आ पूजियोमे सभसँ बीस। देवनाथक नाओं सुनि अधिकांश सदस्य धकमकए लगल। विरोधमे दोसर किनको नाओं नै सुनि मंगल अपन नामक प्रस्ताव अपने केलैन।

दू गोरेक नाओं अबिते बैसारमे गुन-गुनी शुरू भेल। धनो आ

जातियोमे मंगल देवनाथसँ पछुआएल। मुदा जेहने बजैमे फरकोर तेहने इमानदार आ बी.ए. पास सेहो। जे सभ बुझैत।

देवनाथ आ मंगल संगे-संग बी.ए. पास केने रहए। ओना पढ़ैमे मंगल चन्सगर मुदा रिजल्ट देवनाथक नीक रहलै। तेकर कारण रहै जे देवनाथ धुड़फन्दा शुरूहेसँ रहए।

मंगलक नाओं सुनि देवनाथो आ रघुनाथो आँखिक इशारासँ गप-सप्प करए लगल। कनीए कालक पछाइत मंगलकेँ पलौसी दैत रघुनाथ बाजल-

"भैया, हमरा लिये जेहने अहाँ तेहने भैया छैथ। अहूँ दुनू गोरे संगीए छी। आग्रह करब जे देवनाथ भैयाकेँ अध्यक्ष आ अहाँ उपाध्यक्ष बनि काज चलाबी।"

मंगलक मनमे केवल पूजे समिति चलाएब नहि, समाजकेँ आगू बढ़बैक विचार सेहो। बच्चेसँ देवनाथक चालि-ढालि मंगल देखैत आएल। मुदा समाज तँ पोखैरक पानि सदृश होइए। जइमे हवा-बिहाड़िक लहैर सेहो उठैए आ लगले असथिर भऽ शान्त सेहो भऽ जाइए। मंगलक मनमे देवनाथक प्रति एकटा आरो बात घुरियाइत रहैन। ओ ई जे एक दिन, करीब चारि साल पहिने एकटा गामेक लड़कीक संग छेड़खानी करैत देवनाथकेँ मंगल पकड़ने छला। हाटसँ अबैत मंगलकेँ देख ओ लड़की फफैक-फफैक कानए लगल।

साइकिल ठाढ़ कऽ सभ बात सुनलैन। तामसे बेकाबू भऽ गेला। देवनाथकेँ बिनु किछु पुछनहि चारि-पाँच चाट मुँहमे लगा देलखिन। क्रोधो कमलैन। मुदा डरसँ देवनाथ थर-थर काँपए लगल। मंगल देवनाथकेँ कहलखिन-

"बच्चा, अखन धरिक संगी छेलेँ तँए छोड़ि दइ छियौ। नै तँ समाजक बेटीक संग एहेन बेवहार करैबलाकेँ जिनगी भरिक पाठ पढ़ा

दैतिऐ।"

दुनू हाथ जोड़ि देवनाथ, न्यायालयक अपराधी जकाँ मंगलक आगूमे ठाढ़ भऽ गेला। विचित्र स्थितमे मंगल उलैझ गेला। मनमे क्रोध आ दयाक बीच घिच्चम-घिच्चा हुअ लगलैन। कखनो दया दिस मन ससरैत रहैन तँ कखनो क्रोध दिस बढ़ि जाइत रहैन। मनकेँ असथिर करैत कहलखिन-

"अखन धरिक संगी होइक नाते छोड़ि रहल छियौ। नै... तँ...। कान पकैड़ कऽ बाज जे एहेन गलती फेर केकरो संग नै करब! जाधैर कोनो लड़कीकेँ बिआह-दुरागमन नै होइत ताधैर माए-बापक सन्तान बुझल जाइत मुदा सासुर जाइते गामवाली माने गामक बेटी बनि जाइए।"

यएह बात मंगलक मनमे घुरियाइत रहैन।

रघुनाथक बात सुनि मंगल जवाब देलखिन-

"बौआ रघू, दसगरदा काजक शुरुआत गाममे भऽ रहल अछि। मुदा समाज तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़ियाएल अछि। तँए जरूरत अछि जे एक-एक टुकड़ीकेँ ओरिया-ओरिया पकैड़ दोसरमे सटबैक अछि। से जाधैर नै हएत ताधैर कोनो सार्वजनिक काज सफल हएब सन्दिग्ध बनल रहत। खण्डित भऽ जाएत। देखते छहक जे कोनो भोज होइ छै तँ दस कोस, पनरह कोससँ पंच आबि-आबि खाइए मुदा भोजैतक घर लगहक परिवार भूखले रहैए। एहेन अन्यायी समाजमे न्याय कहिया औत आ के आनत?

अखन जे समाजिक ढाँचा बनि ठाढ़ अछि, ओ गँरि-मुराह अछि। जहिना कोनो बोझ गँरि-मुराह भेने कखन माथपर सँ खसि छिड़िया जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि, तहिना समाजोक अछि। तँए बोझे जकाँ समतुल्यपर बान्ह पड़ैक चाही। जइसँ कहियो छिड़ियेबाक

शंका नै रहत। दसनामा काजमे समाजक बच्चा-बच्चाकेँ बरबैरक हिस्सा भेटक चाही। मुइल-टुटल कियो किएक ने हुअए मुदा ओकरा मनसँ ई विचार निकैल जेबा चाही जे ई काज हमर नै फल्लाँक छिऐ। हम सोझे करैबला छी करबैबला नहि। केकरो बाप-पुरखा हर जोतैत आएल अछि, अखनो जोतैए आ आगुओ जोतैत रहत। जँ से नइ जोतत तँ खेती केना हएत? मुदा ओहो समाजक ओहने अंग छी जहिना पढ़ि-लिखि कियो करैए।

अखन गामक सभ बैसल छी तँए पूजा-प्रकरणक सभ निर्णए सबहक बीच भऽ जाए। सिसौनीमे अखनो देखै छी जे दुर्गास्थानमे सबहक पहुँच नै अछि।"

मंगलक बात सुनि सभ स्तब्ध भऽ गेला। मनमे उठा-पटक हुअ लगलैन। ओना बहुतोक बुधिमे सभ बात अँटबो ने कएल मुदा जेतबे अँटल ओ आगिक लुत्ती जकाँ चमकए लगल। बेवहारिक जिनगी आ वास्तविक जिनगीक बीचक दूरी बहुत बेसी भऽ गेल अछि। बेवहारिक जिनगीकेँ वास्तविक जिनगी दिस झुकौने चलए पड़त। जँ से नइ हएत तँ सदिखन चलैक रस्ता गजपट होइते रहत। परोछमे उचित बात बजनिहारक कमी नै मुदा सोझहा-सोझही बजनिहार कियो नहि! तेकरो केतेको कारण अछि...।

गुन-गुन, फूस-फूस होइत देख मंगल बुझि गेला। मनमे उठलैन बुद्धदेवक ओ बात जइमे कहने छैथ जे वीणाक तारकेँ ओते ने कसि दिऐ जे टुटि जाए, आ ने ओते ढीले रहए दिऐ जे अवाजे ने निकलै...।

मंगल बजला-

"अध्यक्ष पदसँ हम अपन नाओं आपस लइ छी। देवनाथे अध्यक्ष होथि। मुदा अखनसँ लऽ कऽ जखन तक पूजाक प्रकरण चलैत रहत ताधैर सभ काजक निर्णए, समितिक बीच हुअए।"

मंगलक बात सुनि देवनाथ सेहो ठाढ़ होइत बजला-

"जिनगीमे पहिल-पहिल दिन समाजक काज करैक मौका भेट रहल अछि तँए मनमे असीम खुशी अछि। सभ तँ अनाड़ीए छी, जइसँ बिनु बुझलो केतेक गलती भऽ सकैए। मुदा ओइ सभकेँ भुल-चुक मानि सम्हारैक उपाय हेबा चाही। अखन सभ कियो छी तँए मुख्य-मुख्य काजक निर्णए अखने भऽ जाए। ओना अखन दिनगर अछि मुदा सबहक नजैरमे रहब बढ़ियाँ रहत।"

देवनाथक विचार सुनि सबहक मुहसँ निकलल-

"बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।" कहि समर्थन देलक।

निर्णए भेल-

(१) गामेक कारीगर माने मूर्ति बनौनिहार मूर्ति बनबए। ओना एक-पर-एक कारीगर दुनियाँमे अछि मुदा पूजाक मूर्तिमे कला नै देवी-देवताक स्वरूप देखल जाइए। दोसर जँ हम अपन बनौल मूर्तिकेँ अपने अधला कहब तँ गामक कलाकार आगू केना ससरत? तँए जे गामक कला अछि ओकरा सभ मिलि प्रोत्साहित करी।

(२) काली मण्डप गामेक घरहटिया बनबैथ। जिनका घर बनबैक लूरि छैन ओ मण्डप किए ने बना सकै छैथ। संगे ईहो हएत जे गामक अधिक-सँ-अधिक लोकक सहयोग सेहो होएत।

(३) मनोरंजन-ले गामोक कलाकारकेँ अवसर भेटैन। संगे बाहरोक ओहन-ओहन तमाशा आनल जाए जेहेन ऐ परोपट्टामे नै आएल हुअए।

(४) पूजा-ले, परम्परासँ अबैत ओहनो पुजेगरीकेँ अवसर भेटैन जे पूजाक प्रेमी छैथ।

(५) गामक जेते गोरे काज करैथ ओइमे नीक केनिहारकेँ

पुरस्कृत आ अधला केनिहारकेँ आगू मौका नै देल जाइन।

पाँचो निर्णए सर्वसम्मतिसँ भऽ गेल। बैसार उसैर गेल।

खा-पीब कऽ मंगल सुतैले बिछान बिछबैत रहैथ। रातिक एगारह बजैत रहइ। सतरंजी बिछा दुनू हाथे जाजीम झारलखिन। तैबीच जोगिन्दर मंगलसँ भेँट करए आएल। जाजीमक अवाज सुनि जोगिन्दर घबड़ा गेल। मनमे भेलै जे केम्हरौ थ्री-नट्टा ने तँ चलल! हियासि-हियासि चारूकात ताकए लगल। मुदा केकरो सुनि-गुनि नै पाबि मन असथिर भेलइ। असथिर होइते मंगलकेँ सोर पाड़लक।

कोठरीएसँ मंगल अवाज दैत बहरेला। बाहर अबिते जोगिन्दरकेँ देख बजला-

"आबह। आबह भाय। एती रातिकेँ किए एलह?"

दुनू गोरे ओसारक चौकीपर बैस गप-सप्प करए लगला। जोगिन्दर कहलकैन-

"भाय, आइ तक तोरा एना भऽ कऽ नै चिन्हने छेलिअ। मुदा तोहर औझुका विचार सुनि छाती बारह हाथक भऽ गेल। भाँइमे कियो दादा हुअए!"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल बजला-

"भाय, बहुत राति भऽ गेल अछि, भोरे उठैओक अछि। किए एलह से कहऽ।"

"अखन अबैक खास कारण अछि, तँए निचेन बुझि एलौं। तहूँ तँ देखते छहक जे अखन धरि हम गाममे दहलाइते छी। ने रहैक बढ़ियाँ ठर अछि आ ने जीबैक कोनो आश। मुदा...।"

"मुदा की?"

"मुदा यएह जे करोड़पति रहितो कोनो मोजर गाममे नै अछि।"

करोड़पति सुनि मंगल चौंकैत बजला-

"करोड़ केतेक होइ छै, से बुझै छहक?"

"हँ। सौ लाख।"

"एते रूपैआ अनलह केतएसँ?"

"ऐ बातकेँ छोड़ह। जहिए-सँ दिल्ली नोकरी करए गेलौं तहिए-सँ रूपैआक ढेरी लग पहुँच गेलौं। शुरूमे जे बोरामे कसल रूपैआ देखिऐ तँ हुअए जे छपुआ कागत छिऐ। मुदा कनी दिन रहलापर रूपैआ हथियबैक लूरि भऽ गेल। अखन, दिन भरिमे लाख रूपैआ हौंसतब कोनो भारी कहाँ बुझै छिऐ! मुदा ओइ काजसँ मन उचैट गेल। आब एक्केटा इच्छा अछि जे मनुख बनि गाममे रही।"

"हमरा की कहए चाहै छह?"

"अखन तँ सभ पूजामे ओझराइल छी। पूजाक पछाइत मदैत कऽ दिहऽ। एक लाख रूपैआ अनने छी। अपन जे आदमी अछि जदी ओकरा जरूरी होइ तँ बिना सुइदेक सम्हारि देबइ। खाली मूरक-मूर घुमा देत। संगे तोरो कहै छिअ जे रूपैआ दुआरे पूजामे कोनो कमी नै होइ।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगलक मनमे बिर्ड़ो उठि गेलैन। एक मन कहैन जे रूपैआ दुआरे काज पछुआ जाइए। से आब नै हएत। तँ फेर सोचैथ जे डकैत-तकैतक भाँजमे ने तँ पड़ल जाइ छी! जोगिन्दरकेँ अखन धरि एकटा साधारण आदमी बुझि परदेसिया बुझै छेलौं। परदेसमे की करै छेलै से तँ नै बुझै छेलौं। मुदा खतरनाक आदमी बुझि पड़ैए। एसमगलर छी आकि हवालाक धन्धा करैए। तत्-मत् करैत मंगल पुछलक-

"एते रूपैआ केना भेलह?"

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिन्दर चौकन्ना भऽ चारू दिस तकलक। केकरो नै देख घुन-घुना कऽ बाजल-

"भाय, जैठीम नोकरी करै छेलौं ओ बड़ भारी कारोबारी अछि। हजारो नोकर-चाकर छइ। देखौआ कारोबारक संग चोरनुकबा कारोबार सेहो करैए। आन-आन देशक रूपैआ भजबैए। कोन-कोन देशक लोक कोन-कोन रंगक रूपैआ भजबैए से कि सभकेँ चिन्हबो करै छेलिऐ। मुदा हमरापर सेठवाकेँ खूम बिसवास छइ। हरदम अपने लग रखैए। टहल-टिकोरासँ लऽ कऽ चाह-पान धरि आनि-आनि दइ छेलिऐ। निशिभाग रातिमे एक आदमी गाड़ीपर अबै आ भरि दिन जेते बाहरी रूपैआ भेल रहै छै ओ सभ लऽ जाइ छइ। आपस किछु ने करै छइ। खाली पास-बुकपर रूपैआ चढ़ा दइ छइ। सेठबाकेँ जखन जेते रूपैआक जरूरत होइ, हमहीं बैंकसँ आनि-आनि दइ छेलिऐ।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगलक भक्क जेना खूजि गेलैन। बिच्चेमे बजला-

"दिल्ली सनक शहरमे सी.आइ.डी. आ पुलिस किछु ने कहै छइ?"

मुस्की दैत जोगिन्दर उत्तर देलक-

"सभकेँ महिना बान्हल छइ।"

जोगिन्दरक बात सुनिते मंगलक मनकेँ, निराशाक कारी मेघ टोपर बान्हि जेना चारू-भरसँ घेर लेलकैन, तहिना हतोत्साह भऽ गेला। मनमे उठलैन, केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर रे..! जइ देशक शासन कमजोर रहत ओइ देशक सुरक्षा भगवान छोड़ि के कऽ सकैए..!

मंगल भीतरे-भीतर डरा गेला। मुदा मनकेँ असथिर करैत पुछलखिन-

"तूँ ओही सेठक संग रहै छह की..?"

जोगिन्दर-

"दस बरख ओइ सेठबा ऐठीन रहि सभ तरी-घटी देख लेलिऐ। ओकरा ऐठीनसँ हटैक मन भऽ गेल। मुदा नोकरी नै छोड़लौं। कहलिऐ, माए अस्सक अछि तँए किछु अगुरवारो रूपैआ दिअ। जे इलाज कराएब। भरि दिन दारूए पीऐत रहैए। सारकेँ लगबो करै छै कि नहि। एते भारी कारोबार केना सम्हारि लइए। मनमे उठल जे जहिना ई सार दुनियाकेँ ठकि धन जमा केने अछि तहिना हमहूँ किए ने एकरे ठकी। दबाइक दोकानसँ एकटा कड़गर निशाँबला दबाइ कीनि आनि दारूक बोतलमे फेँट देलिऐ। आठ बजे साँझमे जखन दारू मंगलक तँ वएह बोतल दऽ देलिऐ आ कहलिऐ जे हमरा गाम दिसक गाड़ी चारि बजे भोरमे अछि तँए रातिए-मे चलि जाएब। कहलक, बड़बढ़ियाँ। दारू पीलक।

हम ससैर कऽ मलिकाइन लग जा कऽ कहलिऐ जे गाम जाएब। फेर ओइठीनसँ थानापर चलि गेलौं। सभकेँ कहि देलिऐ जे आइ गाम जाएब। सभ चिन्हरबे रहए। घुमि कऽ एलौं तँ देखलिऐ जे सेठबा बेमत् अछि। खाइले गेलौं। खेलौं। खा कऽ आबि सिरमा तरसँ कुन्जी निकालि रूपैआबला कोठरी खोललौं। बाप रे! सौंसे कोठरी रूपैएसँ भरल। मझोलका बैगमे रूपैआ भरि कोठरी बन्न कऽ कुन्जी रखि देलिऐ। अपन जे नेपलिया रैक्सीनबला बैग रहए ओइमे रूपैओक बैग आ कपड़ो-लत्ता लेलौं। बारह बजे रातिमे जखन रोड खाली भेल तखन एकटा टेम्पूसँ ममियौत भाय लग चलि गेलौं। भैया बड़ होशगर छैथ। कहलैन जे जहन रूपैआ हाथ आबि गेल तहन चलि केना जाएत। वएह रूपैआ छी।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल बजला-

"अपन की अभियन्तर छह?"

"मनमे अछि जे दस कट्ठा घराड़ी जोकर जमीन भऽ जाए आ पाँच बीघा घनहर। दसो कट्ठा घराड़ीकेँ छहरदेवालीसँ घेर दिऐ। बीचमे डेढ़ कट्ठामे चौबगली घर-अँगना बना लेब। दू कट्ठा खुनि भरियो लेब आ दुनू कट्ठामे माछो पोसब। दू कट्ठामे फल-फलहरीक गाछ लगा लेब। तीमन-तरकारीले चौमासो भइए जाएत। काजो-उदेम आ खरिहाँनो-ले आगूमे खस्ते रखि लेब।"

जोगिन्दरक विचार सुनि मंगलक मनमे आश जगलैन। बजला-

"देखते छहक जे बथनाहामे अवधिया सभ अछि। ओकरा सभकेँ बहुत जमीन छइ। ओइमे सँ एकगोरे बैंकमे नोकरी करैए। समांगोक पातर अछि। असगरे नोकरी करत आकि खेती करत। सभ खेत बटाइ लगौने अछि। दस बीधा जमीन अपना गाममे ओकर छइ। जँ इच्छा हुअ तँ दसो बीघा कीनि लएह। अखन धरि ओकर जमीन ऐ दुआरे बँचल छै जे एक्केठाम बेचए चाहैए। नै तँ कहिया ने बिका गेल रहितै। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे अखन धरिक जे तोहर जिनगी रहलह ओ हमरासँ विपरीत रहलह। तोंही कहऽ जे दुनू गोरेक बीच केते दिन निमहत?"

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिन्दर अवाक् भऽ गेल। कनी कालक पछाइत बाजल-

"मंगल भाय, तोहर शंका सोलहन्नी सही छह। दस गोरेक बीच बजैबला मुँह बनौने छह। मुदा सप्पत-किरिया खा कऽ कहै छिअ जे अपनो अपना जिनगीसँ मन उचैट गेल अछि, सदिखन होइत रहैए कखन सड़कपर घुमै छी आ कखन जहल चलि जाएब। ओना, रोडक सिपाहीसँ लऽ कऽ नीक-नीक पाइबला सभसँ चिन्हारे ऐछे मुदा ओ सभ पाइयक दोस छी। कहियो काल जे सूतलमे सपनाइ छी तँ

ओहिना देखै छी जे आगू-पाछू बन्दूकक हाथे सिपाही घेरने अछि आ हाथमे कड़ी लगौने जहल नेने जाइए! कखनो सोचै छी तँ बुझि पड़ैए जे अपनाकेँ आगू-मुहेँ जाइत देखै छी, आ लगले होइए जे पाछू-मुहेँ तेजीसँ खसल जाइ छी! कखनो चैन नै रहैए..!"

बजैत-बजैत जोगिन्दरक आँखिमे नोर ढबढबा गेल। दुनियाँक आकर्षण देख मंगलोक मन जेना पीघलए लगलैन। मनमे उठलैन मनुखमे एहेन अद्भुत शक्ति होइ छै जे एकाएक बदैल जाइए। डकैतसँ महात्मा बनि जाइए आ महात्मासँ डकैत। तँए मनुखक सम्बन्धमे किछु निश्चित कहब असम्भव अछि, अनुपमेय अछि। मुदा तैयो एकटा नमहर खाधि बुझि पड़ैए। हमरा तपमे बिसवास अछि जहन कि एहेन जिनगी उनटा छइ। उम्रमे भलेँ बेसी अन्तर नै हुअए मुदा जिनगी तँ दु-दिसाह अछि..!

मंगलकेँ अपन मात्रिकक एकटा बात मन पड़लैन। मात्रिक कोशिकन्हामे अछि। पूबसँ कोसी आ पच्छिमसँ कमला गामकेँ घेरने रहए। बिचला सभ धार एक-दोसरमे मिलल। ओइ गाममे बाँसक बोन। बाँसक एकटा बीट गहींरगरमे छल। खूब सहजोर बाँस रहए। चालीस-चालीस हाथक बाँस ओइमे। अगते धार फुला गेल। बाढ़ि आबि गेल। गामक सभ माल-जालक संग गाम छोड़ि कुटुमारे चलि गेल। कातिकेमे घुमि कऽ औत। एहेन परिस्थितिमे मातृभूमि केना स्वर्ग बनि सकैए! ओइ बाँसक बीटमे दस-बारह हाथ पानि लगल रहए। ओइ बीटमे दस-बारह हाथ ऊपरसँ सौंसे बीट कोंपर दऽ देलक। जे अपनो देखनहि रही...।

मन पड़िते मंगल सोचलैन जे अगर जँ मनुख संकल्पित भऽ जिनगी मोड़ए चाहत तँ जरूर मोड़ि सकैए। अपन परिवारक पाछू लोक चोरी-डकैती, बेइमानी, शैतानी सभ किछु करैए। हम तँ एकटा

गिरल आदमीकेँ उठबए चाहै छी। मनमे खुशी उपकलैन। मुस्कियाइत बजला-

"भाय, जहिना तूँ दरबज्जापर आबि कहलह तहिना तँ हमरो मदैत करब फर्ज बनैए। मुदा आइ धरि अधला काज नै केलौं, तेकरो तँ निमाहैक अछि।"

मंगलक बात मंगलक पिता गणेशी सेहो सुनलैन। ओ लग्घी करए निकलल रहैथ। हाँइ-हाँइ कऽ लग्घी कऽ लगमे दुनू गोरेक बीच आबि कहलखिन-

"बौआ, तीस बरख पहिलुका एकटा खिस्सा कहै छिअ। ओइ समए जुआने रही। मोछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। माइयो-बाबू जीबते रहैथ। अहिना कातिक मास रहइ। तीन बजे करीब बेरू-पहर माथपर मोटरी नेने नाना हहाएल-फुहाएल एला...।

अबिते माएकेँ कहलखिन-

"दाइ, गंगा नहाइले जाइ छी। बहुत लोक गामक जाइ छइ। ओकरा सभकेँ कहने छिऐ जे टीशनेपर भेँट हेबह। ताबे कनी हमहूँ सुसता लइ छी आ तहूँ तैयार हुअ। खेबा-खरचा ऐछे तँए कोनो ओरियान करैक नै छह...।"

..नानाक बात सुनि माए ठर्रा गेल। एक दिन पहिने गाए बिआएल रहए। ऐ सभमे माए बड़ सुतिहारि। माइक मनमे दू तरहक बात टकरा गेलइ। ओमहर गंगा नहाइले जाएब आ एमहर जँ गाएकेँ किछु भऽ जाए? तहन तँ नअ मासक मेहनत डुमि जाएत? दोसर होइ जे गौआँ-घरूआकेँ छोड़ि बाबू एला। गाड़ीए-सवारीक भीड़-भड़क्काक बात छी, जँ कहीं कियो भेँट नै होनि, तहन की हेतैन? तँए गुम्म रहए। तैबीच बाबूओ आबि गेला। गोड़ लागि ओहो कातमे ठाढ़ भऽ गेला। ने माए किछु बजैत आ ने ओ। नाना अपन बात बाजि चुकल छला तँए

ने किछु बाजैथ। तीनू गोरेकेँ चुप देख कहलयैन-

"नाना पएर धुअ ने?"

ओ कहलैन-

"नै-नै, पएर-तएर नै धुअब। टेनक टेम भेल जाइए...।"

सामंजस करैत माए बाजल-

"बौआ, छोड़ैबला कोनो ने छह। नन्ना संगे तोंही जाह।"

...मन अपनो रहए मुदा बीचमे बाजब उचित नै बुझि चुप्पे रही। ओना भागवत सुनै काल एकटा खिस्सा सुनने रही जे गंगा तेहेन भारी धार अछि जइमे सौंसे दुनियाँक मनुखसँ लऽ कऽ चुट्टी-पिपरी धरि अँटि जाएत। तैयो पेट खालीए रहत। सएह देखैक जिज्ञासा रहए। नाना संगे विदा भेलौं। जखन गंगामे पैस दुनू गोरे नहाए लगलौं आकि नाना टोकलैन-

"नाति, मने-मन गंगाकेँ कहुन जे आइसँ झूठ-फूस नै बाजब।" सएह कहि डुम लेलौं। दू सालक पछाइत बाबू मरि गेला। घरक गारजन बनलौं। बाबूक मुइला पछाइत माइयो रोगा गेल। मुदा काज करैक सभ लूरि रहए तँए कहियो कोनो काजक अबूह नै लागए। अपन राजकाजमे सदिकाल लगल रहै छेलौं। कहियो झूठ बजैक जरूरते ने हुअए। दछिनबारि टोलमे सरूप रहए। दस बीघा खेतो ओकरा रहइ। मुदा रहए फुर्र-फाँइबला आदमी ललबबुआ। भरि दिन एमहरसँ ओमहर घुमल घुरइ। ताश जे खेलए लगै तँ बारह-दू बजे राति धरि खेलते रहइ। गामक लोककेँ टीक ओझरबैमे माहिर।

तेतबे नइ, पर-पनचैतीमे तेहेन पेंच लगा दइ जे मारि-पीटि भइए जाइत। कोट-कचहरीमे दलाली सेहो करइ। दस बीघा खेत रहितो दुइयो मास घरसँ नै खाए। ने अपने कोनो काज करैए आ ने खुट्टापर बरद रखने रहए। जे सभ झड़-झंझटमे फँसल रहए ओकरे सबहक

बरदसँ खेतियो करैए आ ओकरे सभसँ ठकि-फुसिया कऽ गुजरो करइ। जेकरासँ जे चीज लइ ओकरा घुमा कऽ दइक नामो ने लइत।

एक दिन अपना ऐठाम आबि कहलक-

“गणेश, सुनै छी तूँ चाउर बेचै छह?”

हम कहलिऐ-

“हँ।”

कहलक-

“एक मन चाउरक काज अछि।”

कहलिऐ-

“भऽ जाएत। केकरो पठा देबइ, नै तँ अपने नेने जाएब तँ नेने जाउ।”

चाउर तौला कऽ कहलक-

“तोरा तगेदा करैक जरूरत नै छह। जखने हाथमे रूपैआ औत तखने दऽ देबह।”

कहलिऐ-

“बड़बढ़ियाँ। छह मास बीत गेल। ने तगेदा करिऐ आ ने दिअए। साल बीत गेल। दोसर साल फेर ओहिना केलक। तेसरो साल केलक। झूठ केना बजितौं जे चाउर नै अछि। पाइयक दुआरे अपन काज खगैत रहए। काजकेँ बिथुत होइत देख मनमे आएल जे कमाइ छी हम आ खाइए ललबबुआ..! ई तँ सोझहा-सोझही गरदैनकट्टी भऽ रहल अछि! ओह, से नइ तँ आब कहत तँ गछबे ने करब। कहबै जे नइए। मुदा फेर मनमे उठल जे बीच गंगामे पैस संकल्प केने छी, झूठ केना बाजब? विचित्र स्थिति भऽ गेल। हारि कऽ झूठ बाजए लगलौं। मुदा एते जरूर करै छी जे जे झुठ्ठा अछि ओकरा लग झूठ बजै छी आ

जे झूठ बजनिहार नै अछि ओकरा लग सत् बजै छी। तँए बौआ कहि दइ छी जे अहाँ सभ जुआन-जहान छी सोचि-विचारि कऽ डेग उठाएब। जहिना दुनियाँ बड़ीटा छै, बड़ लोक छै, खेत-पथार धार-धूर, पहाड़-पठार, समुद्र इत्यादि की कहाँ छै, तहिना मनुखो अछि। एक्के कुम्हारक बनौल पनिपीबा घैल सेहो छी आ छुतहरो छी मुदा देखैमे दुनू एक्के रंग होइए!”

◌

शब्द संख्या : 7699

दू

अमावसिया दिन। आइए साँझमे दिवाली आ निशाँ रातिमे कालीपूजा हएत। अखन धरिक जे काजक उत्साह सभमे रहै ओ ठमैक गेल। काजो आखिरी रूपमे आबि गेल, ओरा गेल। जहिना साल भरिक अध्ययनक आखिरी दिन परीक्षाक दिन होइत, तहिना। काल्हि धरि काज गतिसँ चलैत रहल। जइ दिन जेहेन काज तइ दिन तेहेन रफ्तार। मुदा आइ तँ आखिरी दिन छी तँए काजक उनटा गिनती कऽ लेब जरूरी अछि। हो-ने-हो किछु छुटि गेल हुअए। जँ छुटि गेल हएत तँ पूजामे बिघ्न-बाधा पड़त। तइ दुआरे पूजा समितिक बैसार सबेरे साते बजे बजौल गेल।

आठे दिनमे गामक चुहचुहीए बदैल गेल। जहिना हरोथ बाँसक जड़ि अधिक मोट रहितो बीचमे भूर कम होइत मुदा आगू ओइसँ पातर रहनौं भूर बेसी होइत तहिना बँसपुरोमे बुझि पड़ैत। जखन पूजाक दिन आगू छल तखन काज बेसी आ जखन लग आएल तँ कमि गेल। काल्हिए-सँ गामक धी-बहिन आबि रहल अछि। ओना, गामक सभ अपन-अपन कुटुमकेँ हकार पहिनहि देने मुदा अबैमे दिवाली बाधक बनल छेलइ। दिवाली दिन घरमे नै रहने भूतक बसेराक डर सबहक मनमे नचैत रहइ जे आगू आरो पहपैट हएत। तँए गामक जे धी-बहिन असगरूआ अछि ओ भरदुतिया ठेकना कऽ दिवालीक परात औत।

मुदा जेकरा घरमे दियादनी वा सासु अछि ओ किए ने एक दिन पहिनौं औत। नैहर छिऐ ने। केते दिन माए-बाप, भाए-भौजाइ आ गामक सखी-बहिनपासँ भेँट भेना भऽ गेल छइ। तहूमे जेकर नैहरक परिवार जेरगर छै ओ तँ साले-साल वा सालमे दुइयो-तीन बेर आबि जाइए मुदा जेकर परिवार छोट छै, जइमे कम काज होइ छै, ओ तँ दस-दस सालसँ नैहरक मुँह-आँखि नै देखलक।

गामक सौभाग्य जे काली-पूजा शुरू भेल। मुदा एकटा अजगुत बात भऽ गेलइ। गामक धी-बहिनसँ बेसी सारि-सरहोजि आबि गेलइ। बेसी साइर-सरहोजि एलासँ गामक चकचकीए बढ़ि गेल। जइसँ छौड़ा-मारड़िसँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुसक मुँहमे सेहो चौअन्नियाँ मुस्की आबि गेलैन, तहूमे परदेसिया साइर-सरहोजि आबि कऽ तँ आरो रंग बदैल देलक।

दुखक दिन गौंआँक कटि गेल। सुखक दिन आबि रहल अछि किएक तँ आठ दिन जे बीतल ओ ओहन बीतल जइमे ने केकरो खाइक ठेकान रहलै आ ने सुतैक। मुदा आब तँ सभ पाहुन-परकक संग अपनो पहुनाइए करत। मरदक कोन बात जे जनीजातियो खुशी! जे भनसिया आबि गेल। नीक-निकुत खेनाइ, दिन-राति तमाशा देखनाइ, ऐसँ सुखक दिन केहेन हएत। तहूसँ बेसी खुशी ई जे भरि मेला ने केकरो पैंइच-उधार करए पड़तै आ ने दोकान-दौरीक झंझट रहतै। किएक तँ दू दिन पहिनहि सभ अपन-अपन काज सम्हारि नेने छल। महाजनोक बोही-खाता बन्न रहत। मुदा दिवालीक बोहैनक दुख महाजनक मनकेँ जरूर कचोटै छेलइ। केतबो रेड़गड़ मेला किए ने हौउ मुदा दूध-दही, माछ-मौसक अभाव नै हएत। पाँच दिन पहिनहि सुधा दूधक एजेन्ट आ माछ-माउसक वेपारीकेँ एडभांस दऽ देने अछि। तहूमे काली-पूजा छी। बिना बलि-प्रदाने पूजो केना हएत। बँसपुराक जनीजातियो तँ ओते अनाड़ी नहियेँ अछि जे जोड़ा छागर कबुला नै

केने हएत।

पहिल साल पूजाक छी। बिना नव वस्त्र पहिरने पूजा केना कएल जाएत आ धिया-पुता मेला केना देखत जँ से नइ हएत तँ की देवीक अपमान नै हेतैन?

जइ जगहपर काली मण्डप बनल ओ आठे-दस कट्ठाक परती अछि। सेहो आम जमीन। जइसँ एकपेरियासँ लऽ कऽ खुरपेरिया लगा सौंसे परती रस्ते बनल रहइ। ओइ परतीक पच्छिम-उत्तर कोणमे लोक फूटल-फाटल माटियोक बरतन आ पड़सौतीक कपड़ो-लत्ता फेकैत। पूब-उत्तर कोणमे धिया-पुता झाड़ा फिरैत। दच्छिन-पच्छिम भागमे घसबाह सभ घास-घास खेलाइ दुआरे केतेको खाधि खुनने आ दच्छिन-पूब कोणमे कबड्डी आ गुड़ी-गुड़ीक चेन्ह दऽ घर बनौने।

काली-पूजाक आगमनसँ सौंसे परती छील-छालि एक-रंग बना देलक। जइ तरहक मेलाक आयोजन भऽ रहल अछि ओइ हिसाबसँ जगहो छुछुन लगैत। मुदा रौदियाह समए भेने परतीक चारू भागक खेतक धान मरहन्ना भऽ गेल, जेकरा काटि-काटि सभ अगते माल-जालकेँ खुआ नेने छेलै, तँए मेला-ले जगहक कमी नै रहल।

पनरह बीघासँ ऊपरे खेतक आड़ि-मेड़ तोड़ि चट्टान बना देलक। अगर जँ से नइ बनौल जाइत तँ मुजफ्फरपुरक ओहन नाटकक अँटावेश केना हएत? किएक तँ जइ पार्टीमे बाजा बजौनिहारसँ लऽ कऽ पुरुखक पाट खेलेनिहारि धरि मौगीए कलाकार अछि, संगीतकार सेहो खालीए मौगीए अछि तइ पार्टीकेँ देखैले परोपट्टाक लोक उनैट कऽ नै औत? ऐबे करत। तँए कमसँ कम पाँच बीघाक फील्ड देखनिहार-ले चाहबे करी। से तँ भइए गेल।

तैपर सँ वृन्दावनक रास सेहो अछि, नाटकसँ कनियोँ कम नहि। एक-पर-एक कलाकार अछि। मोट-मोट, थुल-थुल देह, हाथ-हाथ

भरिक दाढ़ी-केश लऽ लऽ पार्टो खेलत आ नचबो करत। तँए देखनिहारोक कमी नहियेँ रहत। मेल-फिमेल कौव्वालीक संग महींसौंथाक मलिनियाँ नाच सेहो अछि। एक-पर-एक चारू। किए ने धमगिज्जर मेला लगत।

पूजा-समितिक सभ सदस्यक मनमे खुशी होइत मुदा एकटा शंका सबहक मनमे रहबे करइ। ओ ई जे एते भारी मेलाकेँ सम्हारल केना जाए? केतबो गौंआँ जी-जान लगौत तैयो लफुआ छौड़ा सभ छह-पाँच करबे करत। पौकेटमारो हाथ ससारबे करत। मुदा की हेतै, मेला-ठेलामे कनी-मनी ई सभ होइते छइ। केकरा के देखत आ केकर के सुनत। तहूमे रौतुका मसिम रहत किने?

दोकानो-दौरीक आयोजन सेहो बेजए नहि। दुनू ढंगक दोकान। पुरनो आ नवको। नवका समान-ले न्यू मार्केट एक भाग आ दोसर भाग पुरना बजार बसल। ओना अखन धरि दोकान-दौरी नीक-नहाँति नै सजल अछि मुदा बेर टगैत सभ सजि जाएत।

न्यू मार्केटक चाक्-चिक् दोसरे ढंगक अछि जइमे बिनु देखलेहे समान बेसी रहत। दोकानदारो सभ बहरबैए रहत। एहेन-एहेन सुन्नर चूड़ी ऐ इलाकाक लोक देखनौं हएत, तेहेन-तेहेन चूड़ीक दोकान सभ आबि गेल अछि। देखनिहारोकेँ आँखि उठि जाएत। उठबो केना ने करत? एते दिन देखै छल जे चूड़ी स्त्रीगणेटा बेचै छेली, ऐबेर देखत जे पुरुखो बेचैए। तइमे तेहेन-तेहेन फोटो सभ दोकानक भीतरो आ बाहरोमे लगौने अछि जे अनेरे आगूमे भीड़ लगले रहत। असली मनुख छी आकि नकली से सभ थोड़े बूझत। फोटोए टा नै गीतो गबैबला तेहेन-तेहेन साउण्ड-बॉक्स सभ सजौने अछि जे सभ किछु बिसैर जाएत।

चूड़ी बजारक बगलेमे चेस्टरक दोकान लगल अछि। चूड़ी

बजारसँ कम थोड़े ओहो वेपारी सभ सजौने अछि। काल्हिए-सँ एहेन-एहेन प्रचारक मशीन सभ लगौने अछि जे कियो थोड़े परखि लेत जे आदमीक मुँह बजै छै आकि मशीन। परचारो कि हरही-सुरही छइ। समानक संग-संग पहिरैक लूरि सेहो सिखबैए। धैनवाद ओइ बनौनिहारकेँ दी जे हाथी सन-सन मोट देहसँ लऽ कऽ खिरकिट्टी देह धरिमे एक्के रंगक चेस्टरसँ काज चलि जाएत। तहूमे तेहेन डिजेनगर सभ अछि जे एकटा छोड़ि दोसर पसीनो करैक जरूरत नै पड़त। जेकरा पाइ छै ओकरा एकेटासँ थोड़े मन भरत? ओ तँ गेठक गेठ कीनत। बिल्कुल औटोमेटिक। दामो कोनो बेसी नहियेँ रखने अछि जे समानक बिकरी कम हेतइ। मात्र एगारहे रूपैआ। वेपारियो सभ तेहेन ओसताज अछि जे पहिनहि पता लगा समान डिकने अछि।

चेस्टरक दोकानक बगलेमे खेलौनाक बजार अछि। वाह रे! खेलौना बनौनिहार आ पूजी लगा वेपार केनिहार। दस रूपैआसँ लऽ कऽ हजार रूपैआ धरिक। बन्दूक, तोप, रौकेट, हवाइ जहाजक संग बम साइजिक खेलौना सभसँ दोकान भरने अछि। देखैमे असलीए बुझि पड़त मुदा अछि नकली। ओना असलेहे जकाँ गोलियो छुटैत, अवाजो होइत आ उड़बो करैए।

तीनटा दाढ़ी केश बनबैबला बम्बैया शैलून सेहो आबि गेल अछि। तीनूमे महिले कारीगर। मरदे जकाँ अपन रूप बनौने। मुदा मरदोसँ बेसी फुरीतगरो आ बजैयोमे चंगला। दाढ़ी कटबै काल बुझिए ने पड़त जे उनटा हाथ पड़ैए आकि सुनटा। हाथो मरदे जकाँ मुदा कनी गुलगुल बेसी।

शैलूनक बगलेमे साड़ी-बजार। साड़ियो सभ अजबे टँगने अछि। पुरजीमे रेशमी लिखि-लिखि सटने मुदा पटुआ जकाँ क्षल-क्षल करैए। केतौ ओचिला नहि, एकदम पलीन। तेहेन-तेहेन पटोर सभ

रखने अछि जे बुझबे ने करबै ई भगलपुरिया रेशम छी आकि पटुआक। प्लास्टिकक मनुख बना तेहेन सजौने अछि जे बुझि पड़त आँखिक इशारासँ दोकानपर अबैले कहैए।

राम-हिलोरा, मौत-कुआँ, हेलिकेप्टर, हवाइ-जहाज, रेलगाड़ी, दिल्ली-चौकक चरि-पहिया, छह-पहिया गाड़ीक दौड़-बड़हा सभ अछि।

जखन न्यू मार्केट घुमियेँ लेलौं तँ पुरनो बजार घुमियेँ ली। कियो छपरीक दोकान बनौने तँ कियो फट्ठाक खुट्टापर बातीक कोरो बना प्लास्टिक दऽ घर बनौने अछि। कियो तिरपाल टँगने अछि, तँ कियो ओहिना घैला-डाबा इत्यादि माटिक बरतन पसारने अछि। दोकानदारो सभ सुच्चा ग्रामीण। अँइ! ई तँ चिन्हरबे दोकानदार सभ छी। पहिलुके दोकान झुनझुनाबला बुढ़बाक छी। चालिसो बर्खसँ बेसीएसँ झुनझुना बेचैए। आब तँ बुड़हा गेल। तैयो देखियौ, दुनू परानी दुनू दिस बैस ताड़क पत्ताक झुनझुनो बना रहल अछि आ खजुरक पातक पटिया, बीऐन सेहो सजौने अछि!

"तोरा तँ कनी कऽ चिन्है छिअ हौ झुनझुनाबला?"

"बौआ चसमा लगौने छी तँए धकचुकाइ छह। पहिने चसमा नै लगबै छेलौं। आँखियो नीक छेलए। दू साल पहिने आँखि खराप भऽ गेल, अही बेर लहानमे आँखि बनेलौं।"

मुदा झुनझुनावाली परेख कऽ कहलक-

"बौआ सोनमा रौ? जहियासँ परदेस खटए लगलेँ तहियासँ नै देखलियौ। तूँ हमरा चिन्है छेँ?"

"नहि।"

"तोहर मामाघर आ हम्मर नैहर एक्के ठीन अछि, अँगने-अँगने झुनझुनो आ बिऐनो-पटिया बेचै छी। अहीसँ गुजर करै छी। आब तँ

भगवान सभ किछु दए देलैन। दूटा बेटा-पुतोहु अछि। सातटा पोता-पोती अछि। दुनू बेटा घर जोड़ैया करैए, राज मिस्त्री छी। खूब कमाइए। आब तँ अपनो ईटाक घर भऽ गेल। मुदा दुनू परानी तँ जिनगी भरि यएह केलौं। आब दोसर काज करब से पार लगत। ओना दुनू भाँइ मनाहियों करैए। मगर हाथ-पर-हाथ धऽ कऽ बैसल नीक लगत। तँए जाबे जीबै छी ताबे करै छी। तोरा माएसँ बच्चेसँ बहिना लगल अछि। जहिया तोरा घर दिस जाइ छी तहिया बिना खुऔने थोड़े आबए दइए। माएकेँ कहि दिहैन जे अपनो दोकान मेलामे अछि। तोरा कएटा बच्चा छौ?"

"एक्केटा अछि।"

"एकटा झुनझुना बौआ-ले नेने जाही।"

"ओहिना नै लेबौ मौसी। अखन हमरो संगमे पाइ नै अछि आ तहूँ दोकान लगैबते छेँ। बिकरी बट्टा थोड़े भेल हेतौ।"

"रओ बोहैनक सगुन ओकरा होइ छै जे इद-बिद करैए। हम तँ अपन पोताकेँ देब। तइले बोहैनक काज अछि। ले नेने जाही।"

दोसर दोकान रमेसराक लोहोक समान आ लकड़ियोक समानक अछि। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, पगहरिया, कुरहैर, खनती, चक्कू, सरौता, छोलनीक संग-संग चकला, बेलना, कत्ता, रेही, दाइब, खराम, बच्चा सबहक तीन पहिया गाड़ी इत्यादिक दोकान लगौने अछि। असगरे रमेसरा समान पसारि खुट्टामे ओङैठ, टाँग पसारने बीड़ी पीब रहल अछि! कहलिऐ-

"रमेसरा रौ। सुनने रहियौ जे तहूँ दिल्ली धए लेलेँ?"

"धुर्र बुड़ि, दिल्ली हौआ छिऐ। जहिना लोक कहै छै ने जे दिल्लीक लड्डू जेहो खाइए सेहो पचताइए आ जे नै खेलक सेहो पचताइए। दिल्लीसेट सभकेँ फुलपेन्ट, चकचकौआ शर्ट, घड़ी,

रेडियो, उनटा बाबरी देख हमरो मन खुरछाँही काटए लगल। गामपर केकरो कहबो ने केलिऐ आ पड़ा कऽ चलि गेलौं। अपने जाति[3]क ऐठाम नोकरी भऽ गेल। तीन हजार रूपैआ महिना दरमाहा आ खाइले दिअए। मुदा तेते खटबै छेलए जे ओते जे अपने गाममे खटी तँ केतेक बेसी होइए। घुमि कऽ चलि एलौं।

जहिया सुनलिऐ जे अपनो गाममे काली-पूजाक मेला हएत तहियासँ एते समान बनौने छी। कहुना-कहुना तँ चारि-पाँच हजारक समान अछि। कोनो कि सड़ै-पचैबला छी जे सड़ि जाएत। तोरा सभकेँ ने बुझि पड़ै छौ जे दिल्लीमे हुण्डी गाड़ल अछि। हम तँ एक्के मासमे बुझि गेलिऐ। जखन अपना चीज-वौस बनबैक लूरि अछि तखन अनकर तबेदारी किए करब। अपन मेहनतसँ मालिक बनि कऽ किए ने रहब। तूँ सभ ने अनके कोठा आ सम्पैतकेँ अपन बुझै छीही। मुदा ई बुझै छीही जे धनिकहा सभ तोरे मेहनत लूटि कऽ मौज करैए। अखन जो, कनी दोकान लगबै छी।"

आगू बढ़लौं। अरे! ई तँ रौदिया भैयाक चाहक दोकान बुझि पड़ैए।

"अपने दोकान खोललह भैया?"

"हँ, बौआ। गामक मेला छी। एकर भीड़-कुभीड़ तँ गौआँएपर ने पड़त। ओहिना जे टहलैत-बुलैत रहितौं तइसे नीक ने जे दू पाइ कमाइयो लेब आ मेलाक ओगरबाहियो करब।"

"बेस केलह। बरतन-बासन अपने छेलह?"

"नहि। रघुनाथ लग बजलौं तँ वएह अपन पुरना सभ समान देलक।"

---

[3] बरही

"रघुनाथक दोकान तँ बड़ स्टेण्डर भऽ गेलइ।"

"चाहे दोकानक परसादे तीनटा बेटियोक बिआह केलक आ ईंटाक घरो बना लेलक।"

"वाह! बड़ सुन्दर, बड़ बेस।"

केते छोटका दोकानदार अखन छपड़ियो ने बनौने। कातिक मास रहने ने बेसी गरमी आ ने बेसी जाड़। तहन किए अनेरे बाँस-बत्ती कीनि घर बनौत। दूटा बाँसक खुट्टा गाड़ि ऊपरमे बल्ला दऽ देत। ओइपर केराक घौर टाँगि बेचत। तहिना कचड़ी-चप, पापड़-फोंफी-ले तँ माटिए-मे चूल्हि खुनि लोहिया चढ़ा बनौत। मुरही पथियेमे रखि डिब्बासँ नापि-नापि बेचत। झिल्ली बनबैक साँचा तँ सभकेँ रहितो ने छै, जे बनौत।

झंझारपुरक आ मधेपुरक दस-बारहटा दोकानदार आबि कऽ मेलाक चुहचुहीए बदैल देलक। गहींकी सेहो चिन्हरबे आ दोकानदारो सएह। तँए सभसँ नीक कमाइ ओकरे सभकेँ हएत। नगद-उधार सभ चलतै। एक पाँतिसँ सभ दोकान बना रहल अछि।

पितोझिया गाछ लग के झगड़ा करैए! कनी ओकरो देख लिऐ। अरे! ई तँ दुनू परानी ढोलबा छी!

"एना किए ढोल भाय अबिते-अबिते ढोल जकाँ दुनू परानी ढबढबाइ छह?"

अवाज दाबि ढोलबा कहलक-

"हौ भाय, देखहक ने ऐ मौगीयाकेँ, मेलासँ जेकरा जे हानि-लाभ हौउ मुदा हमरा तँ सीजिन पकड़ाएल अछि, आगूमे छठि अछि। परोपट्टाक लोक तँ कोनियाँ, सूप, छिट्टा, डगरी कीनबे करत। ओइ हिसाबसँ ने समान बनबैत। से कहैए जे तीसे गो छिट्टा-पथीया मिला कऽ अछि। अट्ठारह गो सूप आ गोर पचासे कोनियाँ अछि! तोहीं कह,

ऊँटक मुँहमे जीरक फोरनसँ काज चलत?"

कहलिऐ-

"ऐले झगड़ा किए करै छह? फेर लऽ अनिहऽ।"

ढोलबा कनी गम खेलक मुदा झपैट कऽ तेतरी बाजल-

"ऐ मरदावाकेँ एक्को मिसिआ बुधि छइ। एतनो ने बुझैए जे आठे दिनमे केते बनैबतौं। दूटा ढेनमा-ढेनमी अछि, ओकरो सम्हारए पड़ैए। ई तँ भरि दिन बाँस, बत्ती, कैमचीक जोगारमे रहैए। कोनो कि बजारक सौदा छिऐ जे रूपैआ नेने जाइतौं आ कीनि अनितौं।"

ढोलबा बाजल-

"तूँ नै देखै छीही जे महिनामे पनरह दिन काजक दुआरे नहेबो ने करै छी। तोहीं छातीपर हाथ रखि बाज जे एक्को दिन टटका भात-तीमन खाइ छी? डेढ़-दू बजे हकासल-पियासल बाँस आनै छी तखन गोटे दिन नहाइ छी ने तँ नहियें नहाइ छी आ धड़फड़ा कऽ खाइ छी फेर तुरन्ते काजेमे फेर लगि जाइ छी। निचेनसँ बीड़ियो-तमाकुल नै खाए-पिबए लगै छी। खा कऽ अराम केकरा कहै छै से तँ दिन कऽ सिहिनते लगल रहैए। तूँ की बुझबीही जे बाँस टोनै, फारै आ गादि लइमे केते भीर होइ छइ। बैसल-बैसल बानि चलबै छेँ तँ बुझि पड़ै छौ अहिना होइ छइ। ई थोड़े बुझै छीही जे उठ-बैठ करैत-करैत जाँघ चढ़ि जाइए। ऐसँ हल्लुक साए बेर डन्ड-बैसकी करब होइ छइ। एते काज केला बाद जा कऽ बैसारी काज अबैए। बैसियो कऽ कारा-कैमची बनैबते छी। गुण अछि जे ताड़ी पीबै छी तँए मन असथिर रहैए आ मूड फरेश रहैए। तँए ने कोनो काज उनटा-पुनटा नै होइए। ने तँ केकर मजाल छिऐ जे एक्के दिनमे एते रंगक काज सेरिया कऽ कए लेत। अच्छा हो, दोकान लगा। दोकान की लगेमे, कोनियाँकेँ तीन मेल बना ले। डगरी, सूप तँ एक्के रंग छौ आ छिट्टाकेँ दू मेल बड़का एक भाग आ

छोटका एक भाग के लगा ले। पाँच गो रूपैआ दे कनी ताड़ी पीने अबै छी।"

"अखन रौद चरहन्त छइ। अखन जे ताड़ी पीबैले पाइ देबह से कि हमरा गारि सुनैक मन अछि।"

"आँइ गइ मौगिया, तोरा बजैत एक्को पाइ लाज नै होइ छौ, जे पुरुख रहितो घरक भार सुमझा देने छियौ। संगियो-साथी सदिकाल किचारैत रहैए।"

"अच्छा रूपैआ दइ छिअ मुदा फेर बेरू-पहर नै मंगिहऽ। जाइ छह तँ जा मुदा झब-दे अबिहऽ। मेला-ठेला छिऐ असगरे हम दोकान चलाएब आकि बेदरा-बुदरी सम्हारब।"

"से कि हम नै बुझै छिऐ मुदा दसटा दोस-महिम अछि। अगर भेँट-घाँट भऽ जाएत तँ की कुशलो-छेम नै करब।"

बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेवहार सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे भेल ओइ घटनाक समाचार तरे-तर चारू भरक गाममे पसैर गेल छल। जेकर टीका-टिप्पणी गामे-गाम होइ छल। मुदा एक रूपमे नहि। अधिकतर लोक ऐ घटनाकेँ निन्दा करैत तँ कमतर मनोरंजन कहैत। किछु गोरे फैशन बुझि पाछुसँ अबैत बेवहार मानि बजबे ने करैत। मगर सभ किछु होइतो सिसौनीबला बँसपुराबलासँ सहमल। एहेन घटना आगू नै हुअए तइले सिसौनीक बुधिजीवी सबहक मनमे खलबली मचि गेल। सिसौनियेँक दयानन्द दरभंगा कौलेजमे प्रोफेसरी करै छैथ। गामक लोक तँ हुनका एकटा नोकरिहारा बुझै छैन मुदा कौलेजमे छात्रोक बीच आ शिक्षकोक बीच प्रतिष्ठित बेकती छैथ। ऐ बेर ओ दुर्गा-पूजामे गाम नै आबि प्रोफेसर दयानन्द संगीक संग रामेश्वरम् चलि गेल छला। मुदा बालो-बच्चा आ पत्नियोँ गाम आएल रहैन। वएह सभ रामेश्वरम् सँ एलापर घटनाक जानकारी देलकैन।

घटना सुनि प्रोफेसर दयानन्द मने-मन जरि गेला। गुम्म-सुम्म भऽ सोचए लगला, ई कोन तमाशा भऽ गेल जे धर्मक काजक दौड़मे एहेन अधर्म भऽ गेल! केना लोकक मनमे धर्मक प्रति आदर रहत! धर्मस्थलमे जँ एहेन-एहेन वृत्ति हएत तँ कएक दिन ओ स्थल जीवित रहत! केना केकरो माए-बहिन घरसँ निकिल देवस्थान पूजा करए वा साँझ दिअ औत!

प्रो. दयानन्द, जेते घटनाकेँ टोब-टाब करैथ तेते पैच-पैच प्रश्न मनकेँ हौंरए लगलैन। मुदा जे समए ससैर गेल ओ उनैटो तँ नै सकैए। कोन मुहेँ ओइ गाम पएर देब। लोक की कहत? ओहू गामक तँ अनेको विद्यार्थी पढ़बो करैए आ पढ़ि कऽ निकललो अछि। ओ सभ की कहैत हएत। मुदा आगू एहेन घटना नै हुअए तेकर तँ प्रतिकार कएल जा सकैए। पाप तँ प्रायश्चितेसँ कटैए। तहूमे अगुरबारे बँसपुरासँ काली-पूजाक हकार-कार्ड सेहो आबि गेल अछि।

तत्-मत् करैत प्रो. दयानन्दक मनमे एलैन जे एकटा बेंग मरलासँ लोक इनारक पानि पीब तँ नै छोड़ि दैत अछि। ओकरा निकालि गन्धकेँ मेटबैक उपाय करैए। बँसपुराक काली-पूजाक आरम्भ सेहो सिसौनियेँक घटनाक प्रतिक्रिया स्वरूप भऽ रहल अछि। हो-ने-हो एकरे जवाबमे ओहो सभ ने घटना दोहरा दिअए?

काली-पूजा शुरू होइसँ तीन दिन पहिने प्रोफेसर दयानन्द गाम आबि, बिना कोनो मान-रोख केने गामक पढ़ल-लिखल उमरदार सभसँ सम्पर्क कऽ कहलखिन। किछु गोरे गामक प्रतिष्ठा बुझबो करै छला आ किछु गोरे बुझौलासँ बुझलैन। बुझला पछाइत एकमुँहरी सभ गाममे बैसार कऽ एकर निराकरण करैक विचार व्यक्त केलैन। सहमति सेहो बनल। दयानन्दक मनमे आगू डेग बढ़बैक साहस जगलैन। साहस जगिते कौलेजक विद्यार्थी सभकेँ बैसार करैक भार

देलखिन। दू दिन समए बीत गेल। जइ दिन काली-पूजा शुरू हएत तइ दिन भोरे सात बजे बैसार भेल।

सात बजेसँ पहिनहि दुर्गेस्थानमे सभ एकत्रित भेला। वैचारिक रूपमे गाम दू फाँक जकाँ भऽ गेल रहए। तँए अपन-अपन विचारकेँ मजगूत बनबैक विचार सबहक मनमे। जे सभ घटनामे शामिल रहए, ओ तीनू कार्यकर्ताक पिता बैसारमे नै आएल। नै अबैक कारण विरोध नै लाज होइ। तहूमे जखनसँ प्रोफेसर दयानन्द दरभंगासँ आबि गाममे घटनाक चरचा चलौलैन तखनेसँ मुँह नुकबए लगला।

मुदा मौलाएल घटना पुन: पोनैग गेल। ओना गामक एक ग्रुप, जेकरा कुकर्मी ग्रुप कहि सकै छिऐ, बल प्रयोगक योजना तरे-तर बनौने रहए। जइसँ कोनो रस्ते ने गाममे खुजतै। मुदा गामक विशाल समूह, जे अधला काजसँ घृणा करैत, केँ एक रंगाह विचार। एक तरहक विचारक पाछू केते तरहक सोच अछि। किछु गोरेक सोच ई रहैन जे गाममे एकटा कुकर्मी समाज अछि जे सदिकाल किछु-ने-किछु करिते रहैए। परोछा-परोछी तँ एक-दोसरकेँ गारि पढ़ैए मगर, बेर एलापर सभ एक-मुहरी भऽ जाइए। तँए घटना ओहन अस्त्र छिऐ जइसँ ओइ समाजकेँ काटि-काटि लतियौल जा सकैए।

किछु गोरेक विचार रहैन जे जहिना तीनू गोरे दसगरदा जगहपर जुलुम केलक तहिना समाजक बीच लतियौल जाए। ओना, किछु गोरेक विचार ईहो रहैन जे हम सभ मनुखक समाजमे रहै छी नै कि जानवरक समाजमे। तँए मनुखक समाज बनइ। भलेँ मनुखक समाज बनबैक जे प्रक्रिया होइए ओइ प्रक्रियाकेँ क्रियान्वित कएल जाए...।

ललबाक विचार सभसँ भिन्न। किएक तँ जइ लड़कीक संग दुरबेवहार भेल छेलै ओ ओकर ममियौत बहिन।

ललबा कलकत्तामे ड्राइवरी करैए। दुर्गापूजामे गाम आएल।

जइ दिन घटना भेल ओइ दिन ओ बुझबे ने केलक। जखनसँ बुझलक तखनसँ देहमे आगि लगि गेलइ। मने-मन योजना बना नेने रहए जे धनिकक टेरही केना झारल जाइ छै से समाजकेँ देखा देबइ। नीक मौका हाथ लगल हेन। मुदा मनमे ईहो शंका होइ जे दयानन्द कक्काक आयोजन छिऐन जँ कहीं आगूमे आबि जेता तँ सभ विचार चौपट भऽ जाएत। सोचैत-विचारैत तँइ केलक जे चाहे जे होइ मुदा बिना जुत्तियौने नै छोड़बै। भलेँ जिनगी भरि जहलेमे किए ने रहए पड़ए।

गामक सभ टोलक लोक, गोटि-पँगरा छोड़ि, बैसारमे आएल। प्रोफेसर दयानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ बजला-

"ऐ बेरक दुर्गा-पूजामे जे घटना गाममे घटल, ओ समाज-ले बड़का कलंक छी। ऐ घटनाकेँ जेते निन्दा कएल जाए ओते कम होएत। केते गोरे बुझैत हेबै जे अनगौंआँ लड़की छल मुदा ई बूझब हमरा सबहक पड़ाइनवादी विचार हएत। जइसँ रंग-बिरंगक अधलासँ अधला घटना होइत रहत आ हम सभ मुँह तकैत रहब। तँए एहेन-एहेन घटनाकेँ रोकए पड़त।"

बिच्चेमे जे ग्रुप हंगामा करए चाहै छल उठि-उठि हल्ला करए लगल। हल्ला देख सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ विरोध करए लगल। ललबा प्रोफेसर दयानन्द दिस तकलक। दयानन्दक मुँहक रूखि तँ नै बदलल मुदा नोरसँ भरल-आँखि करिया मेघ जकाँ लटैक कऽ निच्चाँ-मुहेँ जरूर भऽ गेल छेलैन! बिजलोका जकाँ ललबा चमैक कऽ फाँइट चलबए लगल।

तीनूकेँ असगरे ललबा मारि कऽ खसा देलक। जाबे सभ शान्त भेल ताबे तँ तीनूक गाल-मुँह फुइल गेल मुदा तैयो ललबाक गरमी कमल नहि। जहिना खून केनिहारकेँ आरो खून करैक गरमी खूनमे आबि जाइए तहिना ललबोकेँ भेल। मुदा चारू दिससँ सभ पकैड़

ललबाकेँ घिचने-घिचने कात लऽ गेल। दुनू हाथ पकैड़ दया बाबू फुसफूसा कऽ कहलखिन-

"अगर समाजमे एक्कोटा बेटा अन्यायक खिलाफ अपनाकेँ उत्सर्ग कऽ देत तँ सैकड़ो बेटा धरतीमाताक गोदमे पैदा भऽ जाएत। मन थीर करह। ओना समाजक सभ तरहक समस्याक समाधान खाली मारिये-टा सँ नै हएत आ ने केवल पनचैतीएसँ हएत। किएक तँ समस्या दू तरहक होइए। पहिल घटना विशेष परिस्थितिक होइ छै, जबकि दोसर सत्ता-विशेष वा बेवस्था विशेषक। अखुनका जे समस्या अछि ओ बेवस्था विशेषक छी तँए एहेन समस्याकेँ बलेसँ रोकल जा सकैए। नै तँ कोनो-ने-कोनो रूपमे चलिते रहत, मरत नहि।"

प्रोफेसर दयानन्दक विचार सुनि ललबा बाजल-

"कक्का, अहाँ लग किछु बजैत-करैत संकोच होइए, नइ तँ तीनूक खून पीब लैतिऐ। भलेँ जिनगी भरि जहले किए ने कटितौं, फाँसीएपर किए ने चढ़ितौं। की लऽ कऽ एलौं आ की लऽ कऽ जाएब। जखन मरनाइ ऐछे तँ लड़ि कऽ किए ने मरब जे सड़ि कऽ मरब।"

ललबाक बात सुनि मुस्कियाइत प्रोफेसर दयानन्द बजला-

"अल्होमे लोक गबैए 'रनमे मरे दोख नै लागे।' तहिना महाभारतमे व्यासो बाबा कहने छथिन- 'इन्द्रासनक अधिकारी वएह छी जे अन्यायक विरूद्ध रनक्षेत्रमे ठाढ़ भऽ अपन बलि चढ़ौत।' मुदा जे भेल से उचित भेल। ऐसँ आगू नै बढ़ह। अगर जँ ऐसँ सुधैर जाएत तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ ओकर फल आन थोड़े भोगत। तूँ एतै रहऽ।"

कहि आगू बढ़ि दयानन्द सोचए लगला जे समाजक अध्ययन नीक नहाँति नै भेल अछि। लोकक जे रूखि बनि गेल अछि ओ कखनो बेकाबू भऽ सकैए। तँए सभकेँ गामपर जाइले कहि दिऐ...।

कहि तँ देलखिन मुदा कियो मैदान छोड़ैले तैयार नै भेल। सभ

अड़ल। विचित्र स्थितिमे अपनो पड़ि गेला। मनमे नाचए लगलैन जे सभसँ पहिने हमहीं केना मैदान छोड़ि देब। मुदा रहनौं तँ लोक मानि नै रहल अछि। दोहरा कऽ बजला-

"सभ गोरेक परिवार आइए-सँ नै बहुत दिनसँ एकठाम रहैत एलौं आ आगुओ रहब। तँए सभकेँ मिल-जुलि रहैक अछि। केकरो संग कियो अधला करबै तँ झंझट हेबे करत। एक परिवारक झगड़ा गाम-समाजक झगड़ा बनि जाइए। तँए झगड़ाकेँ रोकैक उपाय एक्केटा अछि जे ओहेन कारणे ने उठै जइसँ झगड़ा हुअए।"

कहि प्रो. दयानन्द घर दिसक रस्ता पकड़लैन। मुदा सभ मैदानमे डँटले रहल। प्रोफेसर दयानन्दक विचारक असर तेनाहे सन लोकक मनपर पड़ल। किएक तँ एहेन-एहेन घटना पूर्वमे अनेको भऽ चुकल छेलइ। जे सबहक मनमे उपकए लगल।

दयानन्द बाट धेने आगूओ बढ़ल जाइ छला आ पाछू घुमि-घुमि देखबो करै छला जे फेर ने तँ पटका-पटकी शुरू भेल। ओना केकरो हाथमे ने लाठी अछि आ ने हथियार मुदा देह तँ छइ।

प्रो. दयानन्द पाँच बीघा आगू बढ़लापर लग्घी करैक लाथे बैस हिया-हिया देखैथ। जे कियो हाथ-पएर ने तँ फरकबैए। मुदा से नइ देखलैन। पहिने मारि खेलहा सभ मैदान छोड़लक। पाछूसँ सभ अपन-अपन रस्ता धेलक। ठंढाएल रूखि देख अपनो उठि कऽ विदा भेला।

घरपर आबि प्रोफेसर दयानन्द पत्नीकेँ कहलखिन-

"बँसपुरा जाइक समए दसे बजेक बनौने छेलौं मुदा बैसारेमे बेसी समए लगि गेल। तँए आब नहाए नै लगब। झब-दे खाइले दिअ। ताबे हाथ-पएर धोइ लइ छी।"

पतिक बात सुनि पत्नी किछु नै बजली। बुझल रहैन जे एना केते

दिन भेल अछि जे काजक धड़फड़ीमे नहाइयो नै लगै छैथ।

नअ बजैत। बगुरबोनीक भगत कफलाक संग बँसपुरा काली-स्थान पहुँचल। भगतजीक हाथमे लोटा आ जगरनथिया बेंत। डलबाह-मनटुनक हाथमे सिक्कीक चौड़गर चङेरी, जे मधुबनी बजारमे कीनने रहए। चङेरीमे फूल-अछत, अगरबत्ती आ सलाइ रखने रहए। निरधनक कन्हामे मिरदंग लटकल। रविया आ सैनियाँक हाथमे झालि। सोमना हाथमे एकटा बसनी; सरही आमक पल्लो आ पान-सातटा सुखल कूश। बुधबाक कान्हपर एकटा मुठबाँसी बाँस, जेकरा छीपमे आल रंगक पताका आ तीन हाथ जड़िसँ ऊपर ओहने रंगक कपड़ाक टुकड़ा बान्हल। सभ एक-सूरे 'काली महरानी की जय'क नारा लगबैत।

पूजा समितिक सदस्य बैस अपन काजक हिसाब लगबैत रहए। छलगोरिया मूर्तिक अन्तिम परीक्षण मण्डपमे करैत रहए। भगतजीक क्रिया-कलाप देखैले एक्के-दुइए लोक जमा हुअ लगल। पूजा समितिक सदस्य अपन हिसाब-वारी रोकि भगतजी सभकेँ देखए लगल। काली मण्डपक ओसारपर भगतजीक मेड़िया सभ अपन-अपन समान रखि हाथ-पएर धोइले बगलेक पोखैर विदा भेल। अछींजल भरैले सोनमा बसनी लऽ लेलक। भगतजीक हाथमे लोटा।

हाथ-पएर धोइ सभ कियो काली मण्डपक आगू आबि एकटंगा दऽ दऽ गोड़ लगलक। गोड़ लागि निरधन मिरदंग चढ़बए लगल। सैनियाँ आ रविया झालि बजबए लगल। पोखैरसँ आबि भगतजी हाथमे लोटा नेने ठोर पटपटबैत मण्डपक आगू ठाढ़ भऽ आँखि बन्न कऽ सुमिरन करए लगला। बुधबा मण्डपक आगूमे, थोड़े हटि कऽ धूजा गाड़ए लगल। बरसपैतिया भगैत उठौलक-

"हे काली मैया...।"

जेना सभ काजक बँटबारा पहिने कऽ नेने रहए तहिना। ठाढ़े-ठाढ़ भगतजी देह थरथरबए लगला। गोसाँइ आबि गेलखिन। भगतजीक आगूमे डलिबाह दुनू हाथे डाली पकड़ने। थोड़े कालक पछाइत भगतजी चङेरीमे सँ फूल-अछत लऽ उत्तर-मुहेँ खूब जुमा कऽ फेकलैन। फेर फूल-अछत लऽ गंगाजीक नाओं लैत दच्छिन-मुहेँ फेकलैन। चारि मुट्ठी चारू दिस फेक पाँचम मुट्ठी ऊपर फेकैत जोरसँ बजला-

"ओ... ओ...।" कहि अपन परिचए कालीक नाओंसँ देलखिन।

कालीक नाओं सुनि डलिबाह बाजल-

"हे माए, किछु वाक् दियौ?"

भगत-

"ऐ जगहक भाग्य चमैक गेल। एकरा निच्चाँमे साक्षात गंगाजी बहै छथिन। ई स्थान बनने गाममे कोनो डाइन-जोगिनक किछु नै चलत। एते दिन गामक लोक बड़ कलहन्तमे रहै छेलै मुदा आब सभ खुशीसँ रहत। कोनो कुशक-कलेप केकरो नै लगत।"

गामक खुशहाली सुनि पूजा समितिक सभ सदस्यक मनमे नव आनन्दक जन्म भेल।

देवनाथ पुछलक-

"हे माए, अहाँ की चाहै छी?"

"ई स्थान हमर छी। अखन धूजा गाड़ि पीरी बनेलौं। सभ दिन पूजो करब आ बेरागने-बेरागन गोसाँइ सेहो खेलब। जेकरा जे कोनो उपद्रव देहमे हेतै ओ डाली लगौत। फूल दइते छुटि जेतइ।"

धूजा गाड़ि, पीरी बना बुधबा तुलसियोक गाछ रोपि देलक। समितिक सभ चुपचाप भऽ देखैत रहए। केकरो मनमे कोनो शंके नै

उठल। किएक तँ अनेको स्थानमे गहवरो रहैए।

मुस्की दैत देवनाथ पुछलकैन-

“हे मैया, अपन कोनो पहचान दियौ?”

झपैट कऽ भगत-रूप काली बजली-

“तूँ जे जानक बदला जान गछने रहऽ से देलह? जखन जान गड़ूमे रहऽ तखन के बँचौने रहऽ गड़ू मेटा गेलह तँ सभ किछु बिसैर गेलहक! अखनो धरि जे बँचल छह से स्त्रियेक धरमे। जेहने तोहर स्त्री धरमात्मा छथुन तेहने तूँ पापी छह। हुनके धरमे अखन धरि बँचल छह। नै तँ कहिया ने तोहर नाश भऽ गेल रहितह।”

भगतक बात सुनि देवनाथक मनमे लड़कीबला घटना ठनकल। जवाब नइ दऽ चुपचाप दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

“हे माए, बिसैर गेल छेलौं भने मन पाड़ि देलह।”

देवनाथपर सँ नजैर हटा भगत जोगिन्दरकेँ कहलक-

“तूँ जे कबुला केलह से देलह? जखन जान उकड़ूमे फँसल रहऽ तखन केते बेर कहि कऽ गछने रहऽ। ओना तोहर बारहअना ग्रह कटि गेलह सिरिफ चारि-अना बँचल छह। तँए दान-पुन कऽ कऽ जल्दी ओकरो मेटा लएह।”

जोगिन्दरकेँ ओइ रातिक घटना मन पड़ल जइ राति रूपैआ लऽ सेठक ऐठामसँ पड़ाएल रहए। दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

“हे मैया, ठीके बिसैर गेल छेलौं। जल्दीए तोहर कबुला पूरा करबह।”

बीच-बचाव करैत डलिवाह बाजल-

“आइ पहिल दिन गोसाँइ जगबे कएल, ऐसँ बेसी आब कोनो काज ने हएत।”

डलिबाहक बात सुनि भगत उत्तर-मुहेँ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ उठा आँखि मूनि लेलक। काली देहसँ निकैल गेलखिन। सामान्ये आदमी जकाँ भगतो भऽ गेल। झालि-मिरदंग आ भगैत सेहो बन्न भऽ गेल। आँखिक इशारासँ भगत डलिबाहकेँ कहलैन-

“काज सुढ़ियाएल अछि।”

आँखिए-क इशारासँ डलिवाह उत्तर देलकैन-

“हँ।”

समितिक सदस्य भगत लगसँ हटि पुन: बैसारमे आबि जाइ गेला। मुदा एकटा नव समस्या समितिक सामने उपस्थित भऽ गेल। समस्या ई जे कि गहबरो बनौल जाए आकि धूजा उखारि कऽ फेक देल जाए?

मुदा दुनू तरहक विचार उठि गेल। किछु गोरे गहवरक समर्थनो केलक आ किछु गोरे विरोधो केलक। बीचमे मंगलकेँ किछु फुरबे ने करइ। मने-मन सोचैथ जे ई तँ बेर परहक भदबा आबि गेल। जँ मनाही करब तँ शुभ काज अशुभेसँ शुरू हएत। जँ नै करबै तँ सभ दिना भदबा ठाढ़ भऽ जाएत। भगतकेँ मंगल चिन्हतो नै रहैथ मुदा बगुरबोनीक भगतक विषयमे बुझल रहैन जे एकटा कोखिया गुहारि केनिहार-भगत जहल गेल रहए। वएह भगत छह मास जहल काटि हालेमे निकलल छेलइ। बगुरबोनीक गहवरकेँ बदनाम बुझि दोसर गहवर जगबए चाहैए। भगता जहल किए गेल?

बगुरबोनीक भगता मथ-दुखीसँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि धरि करै छल। एक दिन एकटा नोकरिया अपन घरवालीकेँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि करबए बगुरबोनी गहवर आएल। शुक्र दिन रहइ। तीनू बेरागनमे शुक्र सभसँ नीक बुझल जाइए। खूब डील-डालसँ डाली सजा अनने रहए। आन-आन कोखिया गुहारिमे कहालीक संग बूढ़-

बुढ़ानुस स्त्रीगण सभ अबै छल, तँए कहियो कोनो रक्का-टोकी नै होइ। मुदा ओ बुड़िचोन्ह नोकरिया अपन घरवालीक संग अपनो आएल। बुड़िचोन्ह एहेन जे कलकत्तामे नोकरी करितौ अस्पताल देखले ने रहइ। पूजा ढारि भगत ओकरा कहलकै-

“गहवरक सीमासँ हटि जाह।”

साँझका समए रहइ। अन्हारो भइए गेल रहइ। ओकरा मनमे शंका जगलै। ओ हटैले तैयारे ने भेल। दुनू गोरेक बीच रक्का-टोकी शुरू भेल। रक्का-टोकीक पछाइत ओ गहवरसँ निकैल बहराक जाफरी लग चलि आएल। मुदा आँखि-कान ठाढ़ केने रहल। असगरे भगत आ ओ औरत गहवरक भीतर रहल।

देह थरथरबैत भगत पहिने औरतक देहपर हाथ देलक। औरत गुहारि बुझि किछु नै बाजल। जखन भगत ओकरा पीरीक आगुमे पड़ैले कहलक तखन ओ जोरसँ घरबलाकेँ सोर पाड़लक। घरवालीक अवाज सुनि दौग कऽ आबि सोझे भगतपर हाथ छोड़ए लगल। भगतोक अपन घर छेलइ। केना अपना घरमे मारि खा बरदास करैत।

हल्ला सुनि पान-सात आदमी पहुँच गेल। सभ भगतेक लाइग-भाइगक। भगतकेँ कहिते ओ सभ ओकरा थोपड़ा देलकै। दू-चारि थापर मौगियोकेँ लगलै। वएह आदमी थाना जा दोसर दिन केस कऽ देलक। तेसरे दिन भगत जेल चलि गेल।

जखनसँ जोगिन्दर सुनलक जे चारि-अना ग्रह बाँकीए अछि जे दान-पुन केलासँ कटत, तखनसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलइ। मनमे होइ जे भगत ठीके कहलक। जखन रूपैआ लऽ टेम्पूपर चढ़लौं तखन ठीके कबुलो केलौं आ भरि रस्ता गोढ़ियबितो गेल रहिऐन।

भरि रस्ता काली माय, काली माय, सेहो जपैत गेल रही। एते बात जखन मिलि गेल तँ चारि-अना ग्रह केना झूठ भऽ सकैए? दाने-

पुन केलासँ ने ग्रह कटैए। मुदा दान-पुन करैक तँ केतेको रस्ता अछि। तहूमे फुटा कऽ किछु नै कहलक। कियो भोज-भनडारा करैए तँ कियो तीर्थ-स्थानमे धर्मशाला बनबैए, कियो-पोखैर-इनार खुनबैए तँ कियो स्कूल-कौलेज बनबैए। तहिना कियो अस्पताल बनबैए तँ कियो अन्न-वस्त्र दान करैए। दान-पुन करैक तँ अनेको जगह अछि! हम की करी?

फेर मनमे एलै जे एते दिन केकरोसँ दोस्ती नै केने छेलौं, तँए अपने फुरने किछु करैत रहलौं। मुदा आब तँ मंगलसँ दोस्ती भऽ गेल अछि तँए हुनके पुछि लेब जरूरी अछि।

पूजा समितिक सभ सदस्य कालीए स्थानमे छल, किएक तँ औझुका काज सभसँ झनझटिया अछि। केतौ दोकान बनबैक तँ केतौ चन्दा-बेहरीक। मुदा तैयो जोगिन्दर मंगलकेँ बैठकसँ उठा कात लऽ गेल। कातमे लऽ जा कहलक-

“भाय, भगतजी ठीके कहलैन जे तोरा चारि-अना ग्रह बाँकीए छह?”

मंगल-

“तोरा अपनो बिसवास होइ छह?”

“हँ। केना नै बिसवास हएत। कोनो कि झुठे गोसाँइ खेलाइए?”

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल मने-मन सोचए लगला जे एक दिस दोस्ती भेल आ दोसर दिस दुश्मनीक रस्ता सेहो बनि रहल अछि। अखन धरि वएह ओझा-गुनी लोककेँ ओझरौने अछि, तैयो लोकक बिसवास जमले छइ। कोन जरूरी छेलै जे बिना कहनहि-सुननहि अपने मने चलि आएल।

ठीके गोसाँइ जी कहने छथिन जे “भइ गति साँप छुछुन्दर केरी।” अगर भगतकेँ भगा देबै तँ तेहेन बबंडर करत जे पूजा पूजे रहि जाएत। जँ नै भगेबै तँ गहवर बना बड़का तमाशा ठाढ़ करत। सोचैत-

विचारैत मंगल जोगिन्दरकेँ कहलखिन-

"तोहर अप्पन की विचार होइ छह?"

जोगिन्दर-

"भाय, जँ अपना मने करैक रहितए तँ तोरा किए पुछितिअ?"

जोगिन्दक विचार सुनि मंगलक मन आरो ओझरा गेलैन। कनी काल गुम्म रहि बजला-

"भाय, तूँ केते दान करए चाहै छह। दान-पुनक अनेको जगह अछि।"

जोगिन्दर-

"जेते दान-पुनक जगह देखै छिऐ ओ लगले थोड़े हएत। जे लगले हएत वएह करब।"

मंगलक मनमे फेर शंका उठल जे हो-ने-हो, ई ई ने कहि दिअए जे ईंटाक गहवर बना देबइ। जँ से कहत तँ ने विरोध करैत बनत आ ने समर्थने। चपाड़ा दैत बजला-

"बड़ सुन्दर विचार छह। हमहूँ यएह कहैले छेलिअ।"

"मनमे होइए जे गाममे जेते विधवा, नि:सहाय मसोमात अछि ओकरा सभकेँ मदैत कऽ दिऐ।"

मसोमातक नाओं सुनि मंगलक मनमे खुशीक लहैर उठि गेलैन। हँसैत बजला-

"बड़ चिक्कन बात बजलह। मुदा मसोमातक विषयमे कनी बुझह पड़तह।"

"की?"

"अपना ऐठाम दू तरहक मसोमात अछि। एक तरहक सरकारी अछि आ दोसर तरहक समाजक अछि।"

"नै बुझलौं?"

"सरकारी मसोमात ओ छी जे सरकारक देल सभ सुविधा पबैए। आ समाजिक विधवा ओ छी जेकरा ने सरकार जनै छै आ ने ओ सरकारकेँ जनैए। किछु गनल सरकारी मसोमात अछि जे ओकर पोसुआ छी। जे कोनो सरकारी सुविधा मसोमात सभ-ले औत ओ ओकरे भेटतै।

अजीब खेल सरकारो आ मसोमातोक अछि। ओही पोसुआ मसोमातकेँ इन्दिरा आवासक घरो छै आ बाढ़ि-बर्खामे घरखस्सीक रूपैआ सेहो भेटतै आ बाढ़िसँ क्षति फसलक क्षतिपूर्तिक रूपैआ सेहो ओकरे भेटतै। तेतबे नहि, वृद्धावस्था पेंशन सेहो ओकरे भेटतै आ रोजगार चलबैक नाओंपर सब्सिडी सेहो ओकरे भेटतै। तँए सरकारी मसोमात छोड़ि जे निरीह समाजक मसोमात अछि, जँ ओकरा जीबैक उपाय भऽ जाए तँ उपय केनिहारकेँ ऐसँ बेसी दान-पुनक फल केतए भेटतै। धैनवाद ओइ माए-दादीकेँ दी जे सत्तैर-अस्सी बर्ख बितौलाक बादो जेठक दुपहरिया, भादवक झाँट आ माघक शीतलहरीमे, जी-जानसँ मेहनत करैए। धैनवाद ओइ अस्सी बर्खक मैयाकेँ दी जे माथपर धान, गहुम, मकैक बोझ लऽ कऽ दुलकी चालिमे गीत गुनगुनाइत खेतसँ खरिहाँन अबै छैथ..।

..तँए, कहबह जे अखन तँ मेलाक धुमसाही अछि, मेलाक पछाइत सभकेँ अपन रोजगारक उपय कऽ दिहक। काज करब अधला नहि मुदा ओ शरीरक शक्तिक अनुकूल काज हुअए। अखन तत्-खनात पाँच दिनक मेला भरिक बुतात, मेला देखैले किछु नगद आ एक-एक जोड़ साड़ी आ आङी दऽ दहक। मुदा बीचमे एकटा बात आरो छह, जे हमर मिथिलाक धरोहर सम्पैत सेहो छी। ओ ई जे जे जिनगीक चारू पायासँ हारि चुकल अछि, दुखक पहाड़क तरमे

पिचाएल अछि मुदा आत्मबल एते सक्कत छै जे दान लइसँ आना-कानी करतह। तँए पहिने जा कऽ ओइ मैया सभकेँ गोड़ लागि कहिहक-

'बाबी, समाजरूपी परिवारक अहूँ छी आ हमहूँ छी, तँए कमाइबलाक ई दायित्व बनि जाइए जे परिवारमे वृद्ध आ बच्चाक सेवा इमानदारीसँ होइ। हम अहाँकेँ मदैत सेवाक रूपमे दऽ रहल छी।'

..तखन जरूर ओ वेचारी हँसि कऽ लेथुन आ मनसँ असिरवाद देथुन।"

मंगलक विचार सोझे जोगिन्दरक करेजमे घुसल। करेजमे घुसिते तिलमिला गेल। जेना ओइ मसोमात सबहक ह्रदए जोगिन्दरक ह्रदैमे धक्का मारि प्रवेश करए लगलै। मन पसीज गेलइ। ओना, जइ गाममे जोगिन्दरक जन्म भेल अछि ओइ गाममे अनेको मसोमात पहिनौं छल आ अखनो अछि। मुदा मसोमातक जे रूप जोगिन्दर आइ देखलक ओ पहिने नै देखने छल। कँपैत मनसँ मंगलकेँ कहलकैन-

"भाय, जे कहलह से अखने कऽ लइ छी। मुदा ऐसँ मन नै मानि रहल अछि। मेलाक पछाइत नीक जकाँ विचारि किछु करब।"

प्रोफेसर दयानन्द, साइकिलसँ सोझे बँसपुरा विदा भेला। गामक सीमा टपिते देखलैन जे एकटा शिक्षक -जेकर बहाली शिक्षा मित्रमे डेढ़ हजार रूपैआपर भेल, बिच्चे रस्तापर साइकिल लगा मोबाइल कानमे सटौने रहए। मुदा किछु बजला नहि। मनमे भेलैन जे एक तँ अहिना अबेर भेल अछि, तैपर जँ किछु कहबै आ रक्का-टोकी शुरू करत तँ अनेरे आरो समए लागत। मुदा मन असथिर नै रहलैन।

सोचए लगला- अखन तँ दरभंगा कौलेजक लगेमे डेरा अछि। मुदा जहिया एम.ए. पास केने रही, तहिया अपना साइकिलो ने रहए आ डेरो दूरमे छल। पएरे डेढ़ कोस चलि कौलेज पढ़बैले जाइ-अबै

छेलौं। जहन कि देखै छी गामक शिक्षक गामेक स्कूलमे काज करैए आ मोटर साइकिलसँ जाइ-अबैए! हजार रूपैआक नोकरी केनिहार तीन हजारक अपन जिनगी बनौने अछि। की ओइ शिक्षकसँ पुछि सकै छिऐन जे अहाँ अपन जिनगीक सीमा बुझै छी? जँ नै बुझै छी तँ अहाँ पढ़ेबै की? बच्चा सभ अहाँसँ की सिखत?

ई सभ सबाल मनमे उठिते दयानन्दक मन उलैझ गेलैन। मनमे उठलैन जे जहिना खरहोरिमे पैसैले दुनू हाथसँ खढ़ हटबए पड़ै छै तहिना सभ उलझनकेँ मनसँ हटबैत बँसपुराक सम्बन्धमे सोचए पड़त।

सिसौनीक बैसारक समाचार बिर्डो जकाँ लगले चारू भागक गाम सभमे पहुँच गेल। बँसपुराक काली-पूजा समितिक बैसारमे सेहो सिसौनियेँक चर्च चलैत। प्रोफेसर दयानन्दकेँ देखते मंगलो आ देवनाथो उठि कऽ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम केलकैन। प्रणाम कऽ मंगल दयानन्दक हाथसँ साइकिल पकैड़ मण्डपक बगलमे लगा देलक। साइकिल ठाढ़ कऽ मंगल दया बाबूक हाथ पकैड़ बैसारमे लऽ गेलैन। समितिक बिच्चेमे एक-साए-एक रूपैआ चन्दा दैत प्रोफेसर दयानन्द बजला-

"एकाएक अहाँ सबहक मनमे काली पूजा केना आएल?"

प्रोफेसर दयानन्दक प्रश्नमे रहस्य छिपल छल। तँए कियो किछु उत्तर देबे ने केलकैन। सिसौनियेँक दुर्गा-पूजाक घटनाक प्रतिक्रिया-स्वरूप भऽ रहल अछि। जइ बातकेँ छिपबैत कियो किछु नै बाजल। मुदा दयानन्दक प्रश्न ऐसँ अलग छेलैन। हुनकर प्रश्न छेलैन जे दुर्गा-पूजा तँ शक्तिक पूजा छी जे संगठनक होइत, जखन कि काली-पूजा कालक छी, माने समैयक। प्रश्न उठैए जे शक्तिक संचयमे समैक की योगदान होइत अछि। मुदा अपन रहस्यमय विचारकेँ छिपबैत दयानन्द बजला-

“बड़ सुन्दर काज अहाँ सभ केलौं। ऐसँ समाजमे नव चेतनाक उदय होइ छइ। जे सभ समाज-ले जरूरीए अछि।”

प्रोफेसर दयानन्द आ बँसपुराक काली-पूजा समितिक सदस्यक बीच गप-सप्प चलिते छल आकि दयानन्दकेँ तकैत बरहरबा गामक प्रोफेसर कमलनाथ मोटर-साइकिलसँ पहुँचला। प्रोफेसर दयानन्दकेँ कनडेरीए आँखिए कमलनाथ निच्चासँ ऊपर माने पएर-सँ-माथ धरि देख बजला-

“दयाबाबू, हम तँ अहींकेँ भँजियबैत घरपर होइत एलौं हेन।”

कमलनाथक बातक उत्तर नै दऽ दयानन्द मुस्की दैत बजला-

“भाय साहैब, कनीए काल ऐठाम देख लइ छी, तखन दुनू भाँइ संगे चलब। अपने पढ़ौल शिष्य सभ पूजाक आयोजन कऽ रहल छैथ।”

देवनाथो आ मंगलो, कौलेजमे दयानन्दसँ पढ़ने छल। तँए दयानन्दकेँ विशेष सिनेह रहैन। प्रोफेसर कमलनाथ सेहो बिच्चेमे बैस गप-सप्प सुनए लगला। पूजाक सभ बेवस्था बुझि दयानन्द मंगलकेँ कहलखिन-

“अखन तँ ओहिना बुझै दुआरे आएल छेलौं मुदा रातिमे, परिवार सहित सभ कियो देखैले आएब। कनी काल आरो थम्हितौं मुदा भाय साहैब कमल बाबू आबि गेल छैथ। भाय साहैबकेँ तौं सभ नै चिन्हैत हेबहुन। हमर गुरु भाय छैथ। चारि बरख हिनकासँ पढ़ने छी। दस बर्ख पहिने कौलेजसँ सेवा-निवृत्त भेला। अपने पड़ोसिया सेहो छैथ। बरहरबे घर छिऐन।”

प्रोफेसर दयानन्दो आ प्रोफेसर कमलनाथोक आगमनसँ देवनाथो आ मंगलोक मनमे चारि-बर उत्साह बढ़ि गेल। दुनूक मनमे जेना नव खुशी भेल, जइसँ शरीरमे नव शक्तिक संचार हुअ लगलैन।

प्रोफेसर कमलनाथ एक-साए-एक्कैस रूपैआ चन्दा देलखिन। दुनू गोरेकेँ आग्रह करैत मंगल कहलकैन-

“गुरुदेव, आब अपने सभ केतए जाएब। रहिए जाइऔ। कियो औता अहाँ सभ आएले छी।”

मंगलक बात सुनि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“बौआ, अखन धरि तूँ सभ नइ चिन्है छेलह। जहन कि एक अरिया-पटिया छी। महिनामे कमसँ कम पाँच बेर ऐ गाम होइत अबै-जाइ छी। औझुका संयोग नीक रहल जे सभसँ भेँट भेल। सिरिफ भेँटे नै चिन्हा-परिचए सेहो भऽ गेल। सभ एक्के अरिया-पटिया छी तँए एकठाम बैस सभ गामक उत्थान-ले विचार-विमर्श कऽ आगू बढ़ैत रहब। ओना तँ हम बुढ़ भेलौं मुदा तैयो दौनक मेहौता बरद जकाँ जाधैर जीबै छी ताधैर संग-साथ दैत रहबह। गामकेँ आगू बढ़बैले दू तरहक काज करैक जरूरत अछि। पहिल, मनुखकेँ जीबैले मूल आवश्यकता की-की अछि ओ बुझि ओकर पूर्ति करैक आ दोसर पाछूसँ अबैत क्रिया-कलापकेँ ढंगसँ देख अधलाकेँ छोड़ि नीकक अनुशरण करैक। अखन तहूँ सभ नमहर काजमे लगल छह ओकरा नीक-नहाँति सम्हारि लएह तेकर पछाइत बुझल जेतइ।”

कहि कमलनाथ दयानन्दक संग किछु बगैल कऽ गप-सप्प करए लगला। कमलनाथकेँ दयानन्द पुछलखिन-

“अपनेकेँ बड़ हलचल देखलौं। किछु खास बात छै, की?”

मुस्कियाइत कमलनाथ कहलखिन-

“खास बात तँ अहीं कहब। करीब साढ़े नअ बजे भातिज आबि कऽ कहलक जे दयाबाबूक गाममे बैसार छेलैन जइमे किछु गोरे हुनका गरियेबो केलकैन आ मारबो केलकैन। से कहाँ धरि की बात छिऐ?”

कमल बाबूक बात सुनि दयानन्द अवाक् भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला जे बैसारमे तँ कियो आन गामक नै छल, तहन केना बात उड़ियाएल। फेर भेलैन जे इलाकाक सभ गाम एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। कर-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ आबा-जाही, हाट-बजार धरिक सम्बन्ध रहैए। परिवारक काज ने साधारण ढंगसँ चलै छै मुदा समाजिक काज तँ बिर्ड़ो जकाँ उड़ैत चलैए। भरिसक सएह भेल।

फेर मनमे उठलैन, जँ किछु अधला बात उड़बे कएल तँ ओइ संग घटनो उड़ल हएत। जखने घटना उड़ल हएत तखने विरोध स्वरूप चरचा भेल हएत। से तँ अधला नै भेल। ओ तँ नीके भेल। अन्यायक विरोध करब तँ धर्मक रक्षा करब छी। जहिना अन्यायक विरोध केलासँ रामायणिक बालिमे दोबर शक्तिक संचार भऽ जाइ छल तहिना तँ भरिसक ईहो भेल। अन्यायिक बीच जरूर दहसैत बढ़ल हएत। ई तँ जिनगी-ले पैघ उपलब्धि छी। मुस्की दैत दुर्गा-पूजाक घटल घटनाकेँ दोहरबैत प्रो. दयानन्द बजला-

“सभ गाममे दस-बीसटा लुच्चा-लम्पट रहिते अछि। जे सदिकाल किछु-ने-किछु उकठ-पाकठ समाजमे करिते रहैए, ताड़ी-दारू पीब अनेरे केकरो गरियबैत रहैए। माए-बहिनकेँ देख पीहकारी भरैत रहैए। तेतबे नहि, झूठ-फूस सिखा लकठी सेहो लगबैत रहैए। ओहन-ओहन वृत्ति केनिहारक वृत्तिकेँ रोकब समाजक दायित्व बनि जाइए किने। हमहूँ सएह केलौं।

जँ दुर्गा-पूजामे रामेश्वरम् नै गेल रहितौं तँ एहेन घटना थोड़े गाममे होइत। जइ गाममे हजारो बर्खसँ अनेको पीढ़ी-खुशीसँ रहैत आएल अछि ओइ गाममे एहेन-एहेन घटना भेने समाजमे आगि लगत आकि शान्ति रहत। जाधैर समाज शान्तिसँ नै रहत ताधैर आगू-मुहेँ ससैर केना सकैए। यएह सभ सोचि गाममे बैसार केलौं। बैसारेमे

किछु चक-चुक भऽ गेलइ। समाजोकेँ धैनवाद दी जे गलत काजक विरोधमे एकजुट भऽ ठाढ़ भेल। मुदा गलतियो केनिहार तँ बेवस्थेक फूल-फड़ छी, तँए ओहो कमजोर नहियेँ अछि।”

प्रोफेसर दयानन्दक बात सुनि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“देखियौ, कोनो स्थानपर पहुँचैले रस्तो अनेक आ सवारियो अनेक तरहक होइ छै, मुदा चलनिहार जँ यएह सोचैत रहि जाए जे ई नीक कि उ, तहन ओ पहुँच केना सकैए?

अपना इलाकाक दुर्भाग्य रहल अछि जे विचारक क्षेत्रमे पैघ-पैघ विचार कऽ लइ छी मुदा कर्मक बेरमे शिथिल भऽ जाइ छी। कोनो विचार ताधैर महत्तक नै बनत जाधैर कर्मरूपमे नै औत। कहैले तँ सभ कियो अपना बच्चाकेँ सिखबै छैथ जे बौआ अधला काज नै करिहेँ, मुदा केला पछाइत गबदी मारि दइ छैथ। ऐसँ केना अधला काज मेटाएत। खाएर जे किछु मुदा अहाँक प्रसन्नतासँ हमहूँ प्रसन्न छी। आगूक बात हेतइ। चलू।”

◌

शब्द संख्या : 6539

तीन

नीन टुटिते दुखनीक मनमे, ओछाइनेपर उपकल- आइए दीयोबाती छी आ गाममे काली-पूजाक मेलो। बेटी मन पड़लै। एना कऽ श्यामाकेँ समाद देने छेलिऐ जे एक दिन पहिनहि धिया-पुताकेँ नेने अबिहें, से कहाँ आएल। ओहो वेचारी की करत? अन-पानि घरमे हेतै मुदा तीनू तूर जे मेला देखत तइले तँ दसो-बीस चाही। जँ कहीं अपना हाथ-मुट्ठीमे से नइ होइ तेकरो इंजाम ने करए पड़तै। भऽ सकैए जे तेकर ओरियान नै भेल होइ। हँ, हँ, भरिसक सएह भेल हेतइ।

ओना आइ भरि अबैक समैयो छै, बेरो धरि एबे करत। खाइले चाउर आ देखैले रूपैआ नेने आएत मुदा जारैन तँ नै आनत। अखन धरि हमहूँ तँ जारैनक कोनो ओरियान नहियेँ केलौं हेन। आब कहिया करब? भने मन पड़ि गेल। सोचने छेलौं जे श्यामा औत तँ घर-अँगनाक काज सम्हारि देत सेहो नहियेँ भेल। भरिये दिनमे की सभ करब। घरो छछारैले अछि, ओलतियो ओहिना पड़ल अछि। केना असगरे एते काज सम्हरत? ओलतीमे माटि भरब, आकि घर छछारब आकि जारैन आनब..?

काज देख दुखनीकेँ अबूह लगि गेलइ। अस-कताइत मने बिछानसँ उठि ओलती देखलक। मुदा रौदियाह समए रहने माटि देब जरूरी नै बुझि पड़लै। काज हल्लुक होइत देख मनमे खुशी एलइ।

ओलतीएमे ठाढ़ भऽ ओसार हियासलक। केतौ चुबाट नै देख सोचलक जे छछारबो जरूरी नहियेँ अछि। खाली बाढ़ैनसँ झोल-झार झाड़ि देबइ।

आरो मन हल्लुक भेलइ। मन हल्लुक होइते बाढ़ैन लऽ घर-ओसारक झोल-झार झाड़ि, अँगनो बहारलक। बाढ़ैन रखि चैला नेने कलपर गेल। छाउरेसँ मुँह धोइ कुर्ड़ा कऽ चैल भरने आँगन आएल। पानि पीब तमाकुल निकालि सोचलक जे एकजुम खाइयो लेब आ दू जुम बान्हि कऽ बाधो नेने जाएब। सएह केलक।

ओना दुखनी पहिने तमाकुल नै खाइ छलि, हुक्का पीबै छलि। मुदा जहियासँ लबहदक मिल बन्न भेल तहियासँ छूआ भेटनाइए बन्न भऽ गेल। जइसँ पीनी महग भऽ गेलइ।

घर बन्न कऽ कान्हपर लग्गी नेने दुखनी मारन बाध विदा भेल। बाधक अदहा भाग निच्चाँ दिससँ खेती होइत बाँकी ऊपर दिससँ गाछीए कलम अछि। बड़बड़िया आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ सुखल ठहुरी सभ हियासए लगल। रौदियाह समए रहने मनसम्फे जारैन देखलक। जारैन देख मन चपचपा गेलइ।

आँचरक खूट खोलि तमाकुल निकालि एक चुटकी मुँहमे लेलक आ फेर बान्हि लेलक। तमाकुल मुँहमे लइते मन पड़लै जे ऊक बनबैले खढ़ कहाँ अछि! आन साल लोक आसिन-कातिकमे खरहोरि कटबै छेलै ओइमे सँ दू मुठ्ठी रखि लइ छेलौं। जइसँ सालो भरि बाढ़ैनो भऽ जाइ छेलए आ ऊको बना लइ छेलौं। मुदा जेहेन बाढ़ैन चौड़काँटूक होइए तेहेन राड़ीक थोड़े होइए। मुदा हारल नटुआ की करत? तेते ने लोक बकरी पोसि नेने अछि जे केतौ एकोटा चौड़काँटू रहए दैत अछि। तहूमे तेहेन रौदियाह समए भेल जे घसवाह सभ चोरा-चोरा घासेमे काटि खरहोरियो उपटा देलक। कथीक ऊक बनाएब?

ऊक नै हएत तँ पाबैन केना हएत। गाम कि कोनो शहर-बजार छिऐ जे ने लोक घरमे सीर-पाट रखैए आ ने ऊक फेड़ैए। सोझे छुरछुरी-फटक्कासँ पाबैन करैए।

नजैर खिरा खढ़ भँजियाबए लगल। भँजियबैत गंगबापर नजैर गेलइ। बुदबुदाएल-

“त: अनेरे एते मन औनाइ छेलए। घरे लग पोखैरक महारपर खढ़क जाक लगौने अछि ओहीमे सँ लऽ आनब।”

मुँहमे खैनी घुलिते थूक फेकलक। खढ़क ओरियान देख मन सनठीपर गेलइ। बिना सनठीए ऊक केना बनाएब? मनमे खौंझ उठलै। खौंझा कऽ बाजल-

“सभ खेतबला पटुआ उबजौनाइ छोड़ि देलक। आब अपनो ऊक बना लिअ। हमसब तँ सहजे गरीब छी, अपना खेत-पथार नै अछि। मुदा खेतोबला ऊक फेड़ि लिअ! माल-जालकेँ ठेका-गरदामी बना लिअ! आनह आब बजारसँ कीनि कऽ प्लास्टिकक डोरी! अपने मालकेँ डोरीक रगड़ा लगतै, चमड़ी उड़तै आ माछी असाइ देतै, घा हेतै, मरतै। तखन बुझत जे पटुआ नै उबजेने केहेन भेल।”

बजैत-बजैत दुखनीक तामस कमल। बिनु सनठीए जँ ऊक बनाइयो लेब तँ भोरमे सूप कथी लऽ कऽ बजाएब? लक्ष्मी दिन छी जँ सूप बजा दरिदराकेँ नै भगाएब तँ ओ किन्नौं भागत?

अपने गप-सप्प करए लगल-

“कोनो की हमरेटा सन्ठी नै हएत आकि गाममे केकरो नै हेतै?”

“अनका भेने हमरा की? कियो अपन दरिदरा भगौत आकि दोसराक?”

“जँ कोनो जोगार कऽ सभ सन्ठीक ओरियान कऽ लेत आ हमरा

नै हएत तखन तँ सबहक भागि जेतै आ हमरे रहि जाएत!”

दुनू हाथ माथपर लऽ सन्ठीक चिन्तामे दुखनी डुमि गेल। रसे-रसे हूबा टुटए लगलै। मन औनाए लगलै। जहिना कोनो भारी चीज आँगुरपर पड़ि गेलासँ छटपटाइत तहिना सन्ठीक सोगसँ दुखनीक मन छटपटाए लगलै। तरे-तर नजैर गाममे टहलाबए लगल। एक बेर टहला कऽ देखलक तँ केतौ ने सन्ठी अभरलै। फेर दोहरा कऽ टहलेलक। फेर ने केतौ अभरलै! मन कहै जे बिनु सन्ठीए ऊक अशुद्ध हएत। अशुद्ध ऊक गोसाँइक आगूमे केना फेड़ब। ओहो की बुझता। फेर मनमे भेलै गरीब लोककेँ अहिना सभ चीजक खगता रहै छै मुदा कहुना तँ जीवियेँ लइए। देवतो-पितरकेँ बुत्ता नै छैन जे अपनो पाबैन-तिहारक ओरियान करता।

सन्ठी ताकब छोड़ि डिहबार स्थानक भागवत मन पड़लै। भागवत मनमे अबिते महाभारतक कृष्णकेँ कुरुक्षेत्रमे शंख फुकैत देखलक। मुदा जखन व्यासजी अर्थ बुझबए लगलखिन कि तखने खैनी खाइक मन भेलइ। आँचरक खूटसँ खैनी निकालि चुनबए लगल। अर्थ सुनबे ने केलक। भागवतक कम्मे बात छेलै, मनसँ निकैल गेलइ। फेर सन्ठीएपर मन आबि गेलइ। पटुआक सन्ठीक बदला चन्नी आ सनैपर नजैर पहुँचलै।

सनै आ चन्नीपर नजैर पहुँचते मने-मन अपसोच करए लगल जे अनेरे गिरहत सभकेँ दुसलिऐ। पटुआक खेती तँ वेपारी सबहक दुआरे छोड़लक। मेहनैतो आ लगतो लगा गिरहत सभ उबजबै छेलै आ वेपारी सभ गरदैन-कट्टी कऽ लइ छेलइ। नीक केलक जे पटुआ उपजौनाइ छोड़ि देलक। अपना जेते डोरी-पगहाक काज होइ छै ओ तँ सनैयो आ चन्नियोसँ कइए लइ छइ।

मुदा वेपारियो सभकेँ भाभन्स कहाँ भेलइ। जहिना गिरहतक

गरदैन काटि धन ढेरियौलक तहिना प्लास्टिक आबि सभटा खा गेलइ। बड़का-बड़का करखन्ना सभ ओहिना ढन-ढन करैए!

चन्नी मन पड़िते दुखनीक मनमे खुशी उपकल। खूटसँ तमाकुल निकालि-मुँहमे लेलक। पटुओ-सन्ठीसँ मोट-मोट सन्ठी चन्नीक होइ छइ। सूपो बजबैमे नीक हएत। खूब जोरसँ बजाएब जे दोसरे दिन दरिदरा पड़ा जाएत।

चन्नी मन पड़िते घुरनापर नजैर गेलइ। बान्हे कात खेतमे ओकरा खूब चन्नी भेल छेलइ। सोनो सुन्दर मुदा पटुआक सोन जकाँ सक्कत नै होइ छइ। खाएर जे होइ छै मुदा काज तँ सम्हैर जाइ छै किने। घुरनाक घरवाली ऐछो बड़ आबेशी। जखने कहबै तखने बेसीए करि कऽ देत। जयललबाक बौह जकाँ धौंछ थोड़े अछि जे सोझोक वस्तु लाथ कऽ लेत। अनकर चीज लइ बेरमे धौंछीक मुँह केहेन मीठ भऽ जाइ छै, जेना मुहसँ मौध चुबैत होइ! भगवान करौ जे सभ चीज बिला जाइ।

तामसपर दुखनी सरापि तँ देलक मुदा लगले अफसोच करए लगल जे अनेरे किए सरापि देलिऐ..! कहुना भेलौं तँ माइए-पितियाइन भेलौं किने? माइए-बापक सराप ने धिया-पुताकेँ पड़ै छइ। जेहेन चालि रहतै तेहेन फल अपने हेतइ। बीस बर्खसँ कहियो थूको फेकए गेलिऐ। अपना आगिए-पानिए निमहै छी।

..आगि-पानिपर नजैर पड़िते श्यामा मन पड़लै। एना कऽ समाद देने छेलिऐ जे एक दिन पहिने चलि अबिहेँ। अनका जकाँ कि तूँ असगरे छैं। हथिनी सनक सासु छेथुन तखन तोरा घरक कोन चिन्ता छौ।

फेर मनमे उठलै, लक्ष्मी पाबैन छी किने। सभ ने अपना-अपना घरमे पूजा करत। भरिसक तही दुआरे नै आएल। तमाकुल खाइक

मन भेलइ। अँचराक खूट खोलि तमाकुल देखलक तँ एक्के जुम बुझि पड़लै। एक्के जुम देख सोचलक जे एकरे दू-जुम बना लेब। मुदा टुटल दाँतक गहमे तँ हराएले रहत। पछाइत एक्के जुम बना मुँहमे लेलक।

तमाकुल लइते बेटापर मन गेलइ। बेटा मन पड़िते दुखनी सोचए लगल जे सालो भरि परदेसमे नै रहत तँ कमाएत केतए? अन्दाजे मनमे एलै जे चारि-पाँच मास गेना भेल हेतइ। मुदा चारि-पाँच मास झुझुआन बुझि पड़लै। फेर मन पाड़ि हिसाब जोड़ए लगल। ठेकना कऽ मन पाड़लक जे आसिनमे गेल रहए। हँ, हँ आसिनेमे! खान-पीन चलैत रहइ। हमहूँ पोखैरमे तेल-खैर चढ़ा कऽ आएल रही। अखन कातिक छी। अँइ, तब तँ बरखोसँ बेसी भऽ गेल। ओह! नै, पैछला आसिन नै छी किएक तँ ओकरा गेलापर नाइतक जन्म भेल। ओहो छौड़ा दौगैए। कहुना-कहुना दू बरख भेल हेतइ।

आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगल। दू बरख आ एक बरख तीन बरख ने भेल। तीन बरख मनमे अबिते चौंक गेल। ने एकोटा पाइ पठौलक आ ने एको बेर आएल? मनमे खुशी उपकलै। छौड़ा फुटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। कोनो कि खाइ-पीबैक दुख हेतइ। आब तँ चिन्हलो ने जाएत। दाढ़ी-मोँछ सेहो भऽ गेल हेतइ। औत तँ बिआहो कइए देबइ। असगरे नीक नै लगैए। बिनु धिया-पुताक अँगना कोनो अँगना छी। लोके ने लक्ष्मी छी।

मगन भऽ दुखनी आँखि बन्न कऽ अपन फड़ल-फुलाएल परिवार देखए लगल। जहिना पोखैरमे नावपर चढ़ि झिलहोरि खेला उतैर कऽ महारपर अबैत तहिना दुखनियोकेँ भेल। देखते विचार बदलए लगलै। मनमे उठलै जे जँ कहीं छौड़ा ओनइ बिआह-तिआह कऽ नेने हुअए आ गाम नै आबए, तखन की करब? गामोमे तँ केते गोरेकेँ देखबे केलिऐ हेन।

अखन धरिक खुशीक मनमे एकाएक पानि पड़ि गेलइ। निराश मने सोचए लगल जे जुगे-जमाना तेहेन भऽ गेल जे केकरा के की कहतै। आब केकरो बेटा-बेटी थोड़े पाँजमे रहै छइ। जेकरा जे मन फुरै छै से से करैए। छौड़ा सभ जहाँ बौह देखलक आकि माए-बाप बिसैर जाइए। मने उनैट जाइ छइ।

दुखनीक आँखिमे नोर ढबढबा गेल। आँचरसँ नोर पोछलक। नोर पोछिते मनमे उठलै, जाबे पैरूख अछि ताबे तक ने केकरो पमौजी केलिऐ आ ने करबै। जइ दिन पैरूख घटि जाएत तइ दिन बुझल जेतइ। जिनगियो तँ तहिना अछि, कोनो कि ठीक अछि जे पैरूख घटलेपर मरब, पहिनौं मरि सकै छी तइले सोगे की करब। बेटा जँ उरहैरिये जाएत तँ उरहैर जा।

बेटापर सँ नजैर हटि बेटीपर गेलइ। बेटीपर नजैर पड़िते मनमे आशा जगलै। आशा जगिते मुँहमे हँसी एलइ। सात घर दुश्मनोकेँ भगवान हमरा सन बेटी देथुन। साक्षात् लक्ष्मी छी। अपने फेरल नुआ किए ने दिअए मुदा कहियो ओढ़ैसँ पहिरै धरि वस्त्रक दुख अखन तक भेल हेन। ओकरे परसादे तीनटा कम्मर घरमे अछि। जमाइयो तेहने छैथ जे अपने माथपर उठा कऽ अन्नो-पानि दइए जाइ छैथ।

आश जगिते दुखनी जारैन तोड़ए उठल। आँखि उठा गाछमे सुखल ठहुरी हियासलक। रौदियाह समए भेने मनसम्फे सुखल ठहुरी गाछमे रहबे करइ। जारैन देख मन खुशीसँ नाचि उठलै। मनमे गामक सुख नाचए लगलै। अखनो गाम गामे छी। शहर बजारमे तँ लोक जारैन कीनैत-कीनैत तँ तबाह रहैए। मन पड़लै सिंहेश्वर स्थानक मेला। एक्के साँझ भानस केलौं तइमे दस रूपैआ जरनेमे चलि गेल। ई तँ गुण रहए जे सात-आठ गोरे रही जे सबे रूपैआ हिस्सा लगल। नै तँ सवा रूपैआक जारैन चूल्हिए पजारैमे लगि जाइत।

एक-सूरे दुखनी दूटा गाछमे लग्गीसँ ठहुरी तोड़लक। जारैन देख अबूह लगि गेलै, जे कहुना-कहुना तँ पाँच बोझसँ बेसीए भऽ जाएत। उगहौ पड़त ने। घरो कि कोनो लगमे अछि। पाँच बेर उघैत-उघैत दुपहर भऽ जाएत। मुदा भीरो हएत तँ कहुना-कहुना पनरह दिन निचेनो रहब।

फेर मनमे उठलै जे जँ कहीं ऐ बीचमे श्यामा आबि गेल हएत तँ अँगने-अँगने खोज-पुछारि करैत वौआइत हएत। मुदा छोड़ियो कऽ केना जाएब। सभटा लोक लाइए जाएत। से नइ तँ सभटाकेँ बोझ बान्हि लइ छी आ एकटा लऽ कऽ जाएब। देखियो सुनि लेबइ। जँ नै आएल हएत तँ सभटा उघिए लेब। ओना जँ आएल हएत तँ कि ओहो मानत। दुनू माए-बेटी दुइए बेरमे उघि लेब।

मन असथिर होइते तमाकुल खाइक मन भेलइ। आँचरक खूटपर नजैर पड़िते मन पड़लै जे तमाकुल तँ तखने सठि गेल! मुदा पथार लगल जारैन देख मनमे एलै जे पाबैनक दिन छी। बेसी अंहोंस-मंहोंस करब तँ सभ काज दुरि भऽ जाएत। अँगनोमे मारिते रास काज अछि।

जारैन बिछैले उठल। गाछक चारू भाग नजैर देलक तँ बीचमे एकटा घोरनक छत्ता सेहो खसल देखलक। छत्तासँ निकैल-निकैल घोरन पसैर गेल। पाँखिबला घोरन देख दुखनी डरा गेल। बाप रे! ई तँ डकूबा घोरन छी, दुइयोटा काटत तँ पराणे लऽ लेत। मुदा छोड़ियो केना देबइ। से नइ तँ लग्गीएपर उठा कातमे फेक जारैन बीछब। मुदा छोटका सभ तँ सौंसे पसैर गेल अछि। जीबठ बान्हि छत्ताकेँ कातमे फेक दुखनी जारैन बीछए लगल। फेर मनमे एलै जे ठहुरियो तँ दू रंगक अछि। मोटको अछि आ पतरको अछि। से नइ तँ दुनूकेँ फुटा-फुटा रखि, बोझ बान्हब। सएह करए लगल। ठहुरी बिछते रहए कि मन

पड़लै, हाय रे बा! बान्हब कथीपर, जुन्ना तँ ऐछे नहि।

अग-दिगमे पड़ि गेल। पहिने जँ से मन पड़ैत तँ अँगनेसँ जुन्नो नेने अबितौं मुदा सेहो ने मन रहल। छोड़ि देबै तँ सभटा आने लऽ जाएत! एते बेर उठि गेल, किछु खेनौं ने छी। मुदा जारैन देख मनमे खुशी होइ जे कहुना-कहुना एक पनरहिया तँ चलबे करत। जँ दू-चारि दिन आरो तोड़ि लेब तँ भरि जाड़क ओरियान भऽ जाएत।

आँखि उठा घसबहिनी सभ दिस तकलक जे कियो भेटत तँ ओकरे हाँसू लऽ कड़चीए नै तँ राड़ीए काटि जुन्ना बना लेब। मुदा सेहो ने केकरो देखै छिऐ। हिया कऽ करजान दिस विदा भेल। मुदा ओहो केराक सुखल डपोर तँ बिना हँसुए काटल नै हएत।

करजान पहुँचते देखलक जे करजानबला केरा घौड़ काटि भालैर आ थम्होकेँ काटि छोड़ि देने अछि। जुन्ना देख दुखनीक मनमे खुशी भेलइ। पान-सातटा जुन्ना लऽ आबि बोझ बान्हलक। पाँच बोझ। चारू बोझ गाछे लग छोड़ि एकटा नेने आँगन आएल।

आँगन आबि सोचए लगल जे किछु बना कऽ पहिने खा लइ छी। फेर मनमे भेले जे जखने आँगनक काजमे ओझड़ाएब तखने जारैन बाधेमे रहि जाएत। तत्-मत् करैत पानि पीलक। घरसँ तमाकुल निकालि चुनबैत विदा भेल। पाँचो बोझ उघि लेलक। काठी जकाँ डाँड़ो आ गरदैनो तानि देलकै। देहो-हाथमे दरद हुअ लगलै। हाथो-पएर नै धोलक, ओसारेपर भुँइयेँमे ओंघरा गेल। थाकल-ठेहियाएल देह ओंघराइते निन पड़ि गेल।

बेर टगि गेल। घरक छाहैर अँगनामे दू हाथ ससैर गेल। डेढ़ियापर सँ जोगिन्दर सोर पाड़ए लगल-

"काकी, काकी?"

दुखनीक निन नै टुटल। डेढ़ियापर सँ ससैर जोगिन्दर आँगन

गेल तँ देखलक जे भुँइयेँमे काकी निनभेर अछि! फेर बाजल-

"काकी, काकी?"

ठाढ़ भेल जोगिन्दरक मनमे उठल जे हमहूँ तँ पाइएबला ऐठीन रहलौं मुदा सभ सुख-सुविधा रहितो ओकरा सभकेँ एहेन निन कहाँ होइ छइ। देखै छी जे पेट खपटा जकाँ खलपट छै, भरिसक खेबो केने अछि कि नहि। तहूमे पएरो धूराएले देखै छिऐ, भरिसक केतौसँ काज करि कऽ आएल अछि। अखन जे घरक सभ कुछ उठा कियो लऽ जाइ तँ बुझबो ने करत। एकरा सबहक कोन दुनियाँ छइ। जहिना चीनीक कीड़ाकेँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ ओ मरि जाएत। जे सोभाविके छइ। मुदा की मिरचाइक कीड़ा चीनीमे जीब सकत?

विचित्र स्थिति जोगिन्दरक मनमे उठि गेल। मुदा काजक धुमसाही विचारक दुनियासँ खिंच हड़बड़ा देलकै। फेर काकी, काकीक अवाज देलक। मुदा निन नै टुटल देख कपड़ाकेँ ओसारेपर रखि जोगिन्दर दुखनीक घुट्ठी दाबए लगल। घुट्ठी दाबिते दुखनीक निन टुटल। आँखि मुननहि बाजल-

"अँइ गे शामा! काल्हि किए ने एलँह?"

दुखनीक अवाज सुनि जोगिन्दरक मनमे भेल जे भरिसक काकी सपनाइए। घुट्ठीकेँ हिलबैत बाजल-

"काकी, काकी..?"

आँखि खोलि दुखनी उठि कऽ बैसल। हाफी कऽ जोगिन्दर दिस तकलक। मुदा किछु बाजल नहि। मोटरी खोलि जोगिन्दर जोड़ भरि साड़ी, साया, एकटा आँगीक संग दसटा दसटकही आगूमे रखि बाजल-

"अखन धरि काकी अहाँ नहेबो ने केलौं हेन।"

जहिना आम बिछनिहार गाछक निच्चाँमे खसल आम देख उजगुजा जाइत, तहिना दुखनी उजगुजाएल। बाजल-

"बौआ, जारैन नै छेलए वएह तोड़ए भिनसरे चलि गेलौं। ओकरे सम्हारैत-सम्हारैत दुपहर भऽ गेल। किछु खेबो ने केने छी। अराम करए लगलौं आकि आँखि लगि गेल।"

दुखनीक बात सुनि जोगिन्दर बाजल-

"काकी, अखन धड़फड़ाएल छी तँए नै अँटकब। पूजा उसरला पछाइत निचेनसँ आबि आरो गप्पो करब आ कोनो कारोबार करैले मदैत सेहो कऽ देब। अखन मेला देखैले कपड़ो आ रूपैओ देलौं हेन। जाइ छी।"

जोगिन्दर उठि कऽ विदा भऽ गेल। मने-मन दुखनी हिसाब जोड़ए लगल जे अदहा रूपैआक चाउर कीनि लेब आ अदहा हाथ-मुट्ठीमे रखि लेब। मेला-ढेलाक समए छी, कखन कोन भूर फूटि जाएत।

फेर मनमे एलै जे बेटियो तँ अबिते हएत। ओहो चाउर अनबे करत। किएक तँ जखन अनदिनो नेने अबैए, अखन तँ सहजे पाबैन छी। दुनू नाइत-नातिन सेहो एबे करत। ओकरो हाथकेँ दू-चारि रूपैआ नै देबै से केहेन हएत। हम केतबो गरीब किए ने छी मुदा नानी तँ छिऐ। साड़ी खोलि दुखनी देखए लगल। साड़ी देख बुदबुदाएल-

"एहेन साड़ीक कोन काज अछि। कोनो कि नव-नौतारि छी जे एहेन छपुआ पहिरब। ऐसँ नीक तँ तीनकाजू मारकिन दैत जे केतबो मारि-धूसि कऽ पहिरतौं तैयो साल भरि चलबे करैत। सायाक कोन काज अछि। आब तँ सहजे बुढ़ भेलौं। जहिया जुआन छेलौं तहियो तँ डेढ़ीए पहिरै छेलौं। कोनो कि मँगै-ले गेल छेलिऐ मुदा जखन घर पसि कऽ दऽ गेल, तखन तँ जे देलक सएह नीक। बेटी एबे करत ओकरे

पुरना लऽ लेब आ ई दऽ देबइ।"

साड़ी-साया, आँगी समेट कऽ रखि दुखनी रूपैआ गनए लगल। फेर बुदबुदाएल-

"सभटा दस-टकहीए छी। दसटा अछि। दसटा दसटकही कए बीस भेल।"

दू-दूटा कऽ फुटा-फुटा रखि गनलक। पाँच बीस भेल। मनमे खुशी एलइ। फेर लगले मनमे भेलै जे आइ पाबैनक दिन छी अखन धरि खेलौं हेन कहाँ। 'सभ दिन खैहह पवनी ललैहह!' सएह भऽ गेल। मुदा भिनसरसँ तँ गाछीए-बिरछीमे रहलौं। सारा-गारा नंघलौं, बिना नहेने केना भानस करब?

सुरूज दिस तकलक। माथसँ निच्चाँ देख सोचलक आइ उपासे कऽ लेब। जाबे नहा कऽ भानस करए लागब ताबे तँ साँझे पड़ि जाएत। साँझमे लक्ष्मी पूजा करब आकि अपने खाए-पीअ लगब। तहूमे अखन धरि ने खढ़ अनलौं आ ने सन्ठी। जाबे से नइ आनब ताबे ऊक केना बनाएब। दियारियो बनबए पड़त। करू तेलो आनए पड़त। घरमे जे तेल अछि ओ अँइठ भऽ गेल अछि, केना दियारीमे देबइ।

काज देख दुखनीकेँ अबूह लगि गेल। पाबैनक सभ किछु बिसैर गेल। नजैर बेटीपर गेलइ। बेटीपर नजैर पहुँचते मनमे खौंझ उठले। बाजल-

"एना कऽ समाद पठौलिऐ, किए ने आएल?"

दुखनी असमंजसमे पड़ि गेल। तैबीच नवानीवाली बान्हेपर सँ सोर पाड़ि बाजल-

"काकी! काकी! दैया आगू अबैले कहलकैन हेन। उत्तरबरिया पोखैरपर दुनू बच्चो आ मोटरियो लऽ कऽ बैसल छैन।"

श्यामा-दे सुनि धड़फड़ा कऽ उठि घरमे कपड़ा रखि आँचरमे रूपैआ बान्हि दुखनी विदा भेल। तीन-चारिटा धिया-पुता सेहो संग लगि गेलैन। लग पहुँचते दुखनीकेँ श्यामा उठि कऽ गोड़ लगलक। गोड़ लगैत बेटीपर तरैंग कऽ बाजल-

“अँइ गे, तोरा जानक काज नै छौ जे एते लदने एलेहेँ?”

माइक बातकेँ अनसून करैत श्यामा दुनू बच्चाकेँ कहलक-

“नानीकेँ गोड़ लाग।”

नातिनकेँ देख दुखनी जेना हरा गेल, सभ बात बिसैर गेल। आँचरक रूपैआ निकालि एक-एकटा दस-टकही दुनू बच्चाकेँ हाथमे दऽ बाँकी अस्सियो रूपैआ श्यामा दिस बढ़ौलक।

रूपैआ देख श्यामाक मनमे उठल। भरिसक बौआ पठौलके हेन। मुस्की दैत माएकेँ पुछलक-

“बौआ पठेलकौ?”

बौआक नाओं सुनि दुखनीक मन फेर औना गेल। नजैर बेटापर गेलइ। बेटापर नजैर पहुँचते मनमे तामस उठलै। बाजल-

“केतए छौड़ा हराएल-ढराएल अछि तेकर कोन ठेकान। अखन धरि ने कहियो चिट्ठी-पुरजी पठेलक आ ने एक्कोटा छिद्दी। ओम्हरे केतौ कोनो मौगी सने उरहैर गेल कि की, से की कोनो पता अछि।”

माइक बात रोकैत श्यामा बाजल-

“एना किए बजै छेँ। माए छीही कनी ठर-ठेकानसँ बजमेँ से नहि।”

बेटीक बात सुनि माइक मन बेटासँ हटि बेटीपर आबि गेल। बाजल-

“दुनू बच्चो आ मोटरियोकेँ केना आनल भेलौ?”

मुस्कियाइत श्यामा बाजल-

“अपने एतए तक पहुँचा गेलखिन।”

जमाए-दे सुनि दुखनी बाजल-

“एक डेग आगू घर नै देखल छेलैन जे घुरि गेलैथ?”

श्यामा-

“नै माए, से बात नइ अछि। गाममे मेलो होइ छै किने आ पाबैनो छिऐ, तँए कहलखिन जे घरपर गेने ओझरा जाएब। चारि थान माल असगरे माए बुते सम्हारल नै ने हेतइ। परसू एथुन।”

परसू सुनि दुखनीक मन थीर भेल। छोटका बच्चाकेँ कोरामे लऽ जेठकीकेँ आगू करैत विदा भेल। घरसँ कनी पाछुए छल कि दच्छिनसँ एक गोरेकेँ अबैत दुनू गोरे देखलक। फुलपेन्ट-शर्ट पहिरने, मुदा कियो चिन्हलक नहि। बदलल चेहरा भुखनाक। भुखनो अँगने दिससँ अबैत आ दुनू गोरे दुखनियोँ अँगने दिस बढ़ैत। घर लग आबि भुखना दुखनीकेँ कहलक-

“माए।”

‘माए’ दुखनी सुनलक मुदा अनठिया बुझि अनठा देलक। किछु बाजल नहि। मुदा श्यामा चीन्हि गेल। बाजल-

“बौआ हौ!”

‘बौआ’ सुनि दुखनियोँ चौंकली। ताधैर भुखना लग आबि माएकेँ पएर छुबि गोड़ लगलक। दुखनी अवाक् भऽ गेल। आँखिमे नोर ढबढबा गेलइ। निच्चासँ ऊपर धरि भुखनाकेँ निंगहारए लगल।

करेज दहैल गेलइ। वामा बाँहिसँ नातिकेँ दबने आ दहिना तरहत्थीसँ आँखि पोछि विह्वल होइत बाजल-

“आँइ रौ बौआ, तूँ तँ समरथ भऽ गेलैं! चिन्हबे ने केलियौ!

आँगे-समांगे नीक रहै छेलँह किने। एते दिनपर किए एलँह। की बुझि पड़ै छेलौ जे घरमे कियो ने अछि। कोनो कि हम मरि गेलियौ। रूपैआ नै कमेलँह तँ नै कमेलँह मुदा छुच्छो देहो तँ अबितँह। अखन तँ हम अपने थेहगर छी।”

श्यामाक माथ परहक मोटरी पकड़ैत भुखना बाजल-

“दाइ, तोहर माथ अगिया गेल हेतौ। ला।”

“नै-नै कथीले तूँ लेबह। आब कि अँगना कोनो बड़ दूर अछि।”

मुदा बलजोरी भुखना बहिनक माथपर सँ मोटरी उतारि अपना माथपर लेलक। आद्र स्वरे दुखनी बाजल-

“बौआ, रस्ता तँ भुखले आएल हेबह।”

“नै गइ। खाइत-पीऐत एलौं की।”

“बौआ, अँगनो गेल छेलहक आकि रस्तेसँ रस्ता छह?”

“अँगनामे बेग रखि देलिऐ। घर बन्न देखलिऐ तँ तमोरियावाली भौजीकेँ पुछलिऐ। वएह कहलैन जे दायकेँ आनए काकी आगू गेल छैथ।”

भुखनाक बात सुनि दुखनीकेँ तामस उठल। बाजल-

“आँइ रौ छौड़ा, अँगना गेलैं तँ गोसाँइकेँ गोड़ लगलैं की नहि?”

“घर बन्न देखलिऐ तँ बेगकेँ ओसरेपर रखि तोरा तकैले विदा भेलौं।”

“हम कोनो बिलैंत गेल छेलौं। ताबे तूँ हाथ-पएर धो कऽ अँगनेसँ गोसाँइकेँ गोड़ लागि लइतेँ से तोरा बुते नै होइतौ। जाबे हमरा तकैले एलेँ ताबे जँ कियो बेग चोरा लेतौ, तब की करबीही।”

“हमरा देखते मारे धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ आबि गेल। ओते लोकमे के बेग चोरौत।”

फुसफूसा कऽ माए बेटीकेँ पुछलक-

“दाइ, किछु खाइयोबला सनेस छौ। देखै छीही छौड़ाक मुँह केहेन सुखाएल छइ।”

“हँ। असगरे दुआरे केते अनितियौ। पाँच गो दलिपुड़ी अछि।”

“अच्छा, बड़बढ़ियाँ। हम तँ अखन धरि नहेबो ने केलौं हेन।”

“किए? पाबैनक दिन छिऐ तैयो ने नहेलेँ।”

“छुट्टियो ने भेल। भिनसरेसँ जारैनक ओरियानमे लगल छेलौं। बोझ उघैत-उघैत मन ठेहिया गेल। असकता गेलौं। ने भानसे केलौं आ ने नहेबो केलौं हेन। ओहिना ओसारपर ओंघड़ेलौं कि नीन आबि गेल। जोगिन्दरा आबि कऽ उठौलक। नै तँ सूतले रहितौं। देखही जे साँझ लगिचाएल जाइ छै, ने अखन तक ऊकक ओरियान भेल हेन आ ने साँझ-वातीक।”

आँगन अबिते दुखनी-भुखनाकेँ कहलक-

“बौआ, पहिने पएर-हाथ धो कऽ सिरा आगूमे गोड़ लागह। तखन किछु करिहऽ।”

भुखना सएह केलक। श्यामा सेहो घैलची लग जा घैला झूका एक चुरूक पानि निच्चाँ खसा ओइमे दुनू पएरक तरबा भीजा ओसारेपर सँ गोसाँइकेँ गोड़ लगलक। सौंसे अँगना धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ कच-बच करैत। छोटका बच्चा सभ फुटे काँइ-किचिर करैत।

तैबीच जुगेसराक बेटा, रवियाक बेटाकेँ पाछूसँ पोनमे बिठुआ काटि दोगे-दोग घुसैक गेल। छिलमिला कऽ रवियाक बेटा पाछू तकलक तँ शिबुआक बेटीकेँ देखलक। भेले जे यएह छौड़ी बिठुआ कटलक। हाँइ-हाँइ कऽ दू मुक्का लगा देलकै। मुक्का लगिते शिबुआक

बेटी चिचिया कऽ कानए लगल।

शिबुआक घरवाली सेहो पछबारि कात ठाढ़ छलि। बेटीकेँ कनैत देख कोरामे उठबैत पुछलक। ओ छौड़ी रवियाक बेटा नाओं कहलक। ओकरो हरलै-ने-फुरलै ओइ छौड़ाकेँ कान ऐंठि एक थापर लगा देलकै। तखने रवियाक घरवाली सेहो अबै छल।

बेटाकेँ देख पुछलक। ओंगरीक इशारासँ छौड़ा शिबुआक घरवालीकेँ देखा देलक। शिबुआक घरवालीकेँ देखैबते रवियाक घरवाली लगमे जा झोंट पकैड़ मुँहपर थूक फेक देलक। सौंसे आँगन हड़-बिर्ड़ो मचि गेल।

एक दिस छोटका धिया-पुता डरे पड़ाए लगल, तँ दोसर दिस हल्ला सुनि-सुनि आन-आन अबौ लगल। दुखनीक बकारे बन्न। जहिना-जहिना शिबुआक घरवाली गारि पढ़ै तहिना-तहिना रवियाक घरवाली उनटबैत जाइ। किए तँ, स्त्रीगणक झगड़ाक ई विशेषता अछि जे जे पाछू धरि गरियौत ओकर जीत हेतइ।

अँगनाक दृश्य देख भुखनो आ श्यामो दुनूक बाँहि पकैड़-पकैड़ ठेल-ठालि कऽ अपना-अपना अँगना दऽ आएल। भागलाहा धिया-पुता सभ पुन: आबए लगल। जनीजातियो आ धियो-पुतोमे पाटी बनि गेल।

किछु गोरे शिबुआक घरवालीक पक्ष लऽ कऽ आ किछु गोरे रवियाक घरवालीक पक्ष लऽ कऽ झगड़ाकेँ शान्त केलक। एक दोसराक दोख लगबैत अपना पक्षकेँ निर्दोष साबित करए लगल। मुदा जहिना पोखैरमे गोला फेकलापर पानिमे हिलकोर उठैए जे धीरे-धीरे शान्त भऽ जाइत, तहिना शान्त भऽ गेल।

तत्-खनात तँ दुखनीक आँगन शान्त भऽ गेल। मुदा अँगनासँ बाहर रस्तो आ आनो-आनो जगहपर गुद-गुद-फुस-फुस होइते रहल।

जहिना कोनो गाम वा घरमे आगि लगलापर पानि देने मिझा जाइत मुदा आगिक गरमी रहबे करैत, तहिना भेल। आन सभ तँ आँगनसँ निकैल गेल, शान्त भेल मुदा दुखनीक मनमे जेना एकाएक आगि पजैर गेलइ। श्यामा दिस देख जोर-जोरसँ बाजए लगल-

“हम केकरो बजबैले गेल छेलिऐ जे आबि पाबैनक दिन अँगनामे झगड़ा केलक! पाबैन कि कोनो एक दिन-ले होइ छै आकि सालो भरिले होइए! सालो भरि अँगनामे झगड़ा होइते रहत! तहूमे जे कियो डोरी बाँटि घरक पछुऐत बान्हि देत तखन तँ आरो सालो भरि झगड़ा होइते रहत!”

माइक बोली बन्न करै दुआरे थोम-थाम लगबैत श्यामा बाजल-

“अनेरे तूँ किए आफन तोड़ै छेँ। तोरा अँगनामे छेबे के करौ जे साल भरि झगड़ा हेतौ।”

बेटीक बात सुनि दुखनी दम कसलक। मुदा तैयो मनमे आगि लगले रहलै। घरसँ बिछान निकालि श्यामा अँगनामे बिछा अपन मोटरी खोललक। एक धारा चाउर, सेर तीनिए-क खेसारीक दालि, पाँचटा दलिपुड़ी संगे अपनो आ बच्चो सबहक कपड़ा निकालि रखलक। पाँचो पुड़ीमे सँ दूटा भुखनाकेँ आ एकटा कऽ सरस-निरस तोड़ि दुनू बच्चाक हाथमे देलक। एकटा अपना-ले आ एकटा माए-ले फुटा कऽ रखलक। बैग खोलि भुखना रूपैआक गड्डी निकालि माएकेँ दैत कहलक-

“माए, यएह कमा कऽ अनलियौ।”

रूपैआ देख माइयो आ बहिनो बाजल-

“झाँपह! झब-दे झाँपह! लोक देख लेतह!”

रूपैआ झाँपि भुखना दू जोड़ साड़ी, आँगी आ सायाक कपड़ाक संग दुनू बच्चा-ले शर्ट-पेन्ट निकालि आगूमे रखलक। कपड़ा देख

दुखनी विस्मित भऽ गेल। मने-मन सोचए लगल। जे ढहलेलो अछि तैयो तँ बेटे धन छी। मन पड़लै पति। भगवान केकरो अधला करै छथिन। मने-मन पतिकेँ गोड़ लागि दुखनी बाजल-

“अही दुनू बेटा-बेटीक आशपर ने अपन वएस गमा कऽ रहलौं। संतोखे गाछ ने मेवा फड़ै छइ।”

माएकेँ विस्मित देख भुखना बिस्कुटक डिब्बा निकालि माइक हाथमे दैत बाजल-

“माए! ई मक्खनबला बिस्कुट छी, तोरेले अनलियौ हेन।”

हाथमे बिस्कुटक डिब्बा लऽ उनटा-पुनटा कऽ दुखनी देखए लगल। दुनू बच्चो आ श्यामोक नजैर डिब्बापर अँटैक गेल। तैबीच देहमे लगबैबला दूटा गमकौआ साबुन, दूटा कपड़ाक साबुन आ पौआही नारियल तेलक डिब्बा निकालि दुखनीक आगूमे रखलक।

चीज-वौस देख दुखनीक मन उधिया गेल। मनमे हुअ लगलै जे अकासमे उड़ि गेलौं आकि नरक-सँ-सरग चलि गेलौं आकि सपना देखै छी। अपनाकेँ संयत करैत दुखनी बाजल-

“पाबैनक दिन छी, पहिने सभ कियो खा लइ जाइ जाह। हम अखन नै खाएब। दिनो खटिआइए गेल अछि, आब साँझ-बाती दइए कऽ खाएब।”

फेर मनमे एलै जे गोसाँइ डुमैपर अछि, अखन धरि पाबैनक तँ कोनो ओरियान भेबे ने कएल! ने ऊक बनबैले खढ़-सन्ठी अनलौं, ने दियारी बनेलौं, ने दियारीक टेमी बनबैले साफ सुती कपड़ा तकलौं आ ने दोकानसँ तेले अनलौं। तहूमे दुनू भाए-बहिन आएल अछि, दुइयोटा तीमन-तरकारी नै करब से केहेन हएत। एक तँ लक्ष्मी पाबैन छी, तहूमे एते दिनपर छौड़ा आएल अछि!

पुड़ी खा पानि पीब श्यामा माएकेँ कहलक-

“चिकनी माटि सानि कऽ दियारी बना लइ छी। तूँ दोकानक काज झब-दे केने आ नै तँ किरिण डुमलापर दोकानोक काज नै हेतौ। ओहो पूजा-पाठमे लगि जाएत।”

बेटीक बात सुनि दुखनी बाजल-

“आँइ गइ दैया, दोकान-दौरीक काजमे ओझरा जाएब तँ खढ़-सन्ठी कखन आनि ऊक बनाएब?”

काजक भरमार देख भुखना माएकेँ कहलक-

“तोँ दोसरे काज कर, हम दोकानक काज कऽ लइ छी।”

बेटाक बात सुनि दुखनी बाजल-

“अनठिया बुझि दोकानबला ठकि लेतौ!”

माइक बात सुनि भुखनाकेँ हँसी लगल। मनमे उठलै- शहर-बजार घुमै छी हम आ गामक बनियाँ ठकि लेत हमरे! मुदा किछु बाजल नहि। माएकेँ रोकैत श्यामा कहलक-

“आब जे केकरो ऐठीन खढ़-सन्ठी मांगए जेबही से देतौ। पूजा बेर भऽ गेलइ। काल्हिए किए ने मांगि अनलेँ। नै तँ आइए दुपहरसँ पहिनहि मांगि अनितेँ। आब लोक अपन-अपन चीज-वौस समेट कऽ घर आनत आकि तोरा खढ़-सन्ठी देतौ?”

बेटीक बात सुनि दुखनी निराश भऽ गेल। ऊकक आशा टुटि गेलइ। बाजल-

“हम तँ बुढ़ भेलौं। आब कि कोनो पाबैन-तिहारक ठेकान रहैए।”

माइक टुटल आशा देख श्यामा सम्हारैत बाजल-

“खढ़-सन्ठी छोड़ि दही। ऊक नै हएत तँ की हेतइ। गोसाँइ बाबाकेँ कहि देबैन जे एते तिरोट भऽ गेल। नै पान तँ पानक डण्टियो

सँ तँ पूजा करबे केलौं।”

सामंजस करैत दुखनी बाजल-

“अच्छा हो, खढ़-सन्ठी छोड़ि दइ छिऐ। तूँ चिकनी माटिक दियारी बनाले। कनी रूखे कऽ माटि सनिहें। नै तँ आब नै सुखतौ। दिनो खटिआइए गेल। रौदो ठंढा गेल। दोकानेक काज केने अबै छी।”

तैबीच भुखना बाजल-

“माए, तूँ अँगनेक काज सम्हार। दोकानक काज केने अबै छी।”

“आँइ रौ, शुभ-शुभ कऽ तूँ गाम एलेहें, तोरा केना दोकान जाए देबौ। लोक की कहत?”

“लोक की कहतौ?”

“की कहत! तुरन्ते लोक खिधांस करए लगत जे फलनीक खापैड़ केहेन तबधल छै जे अखने बेटा परदेससँ एलै आ बेसाह अनैले दोकान पठौलक।”

“कियो ने किछु बाजत। कोनो अनकर काज छिऐ जे कियो किछु बाजत। बाज कथी सबहक काज छौ?”

“एक रूपैआक नून, दू गो तीमनो-तरकारी करब तँए पाँच रूपैआक करू तेल सेहो लऽ लिहें। आठ-अनाक जीर-मरीच, आठ-अनाक हरदी आ आठ-अनाक मिरचाइ सेहो लऽ लिहें। अल्लुओ घरमे नहियेँ अछि, तरैबला अल्लू सेहो लऽ लिहें। दूटा पापड़ो लऽ लिहें। आइ लक्ष्मी पूजा सेहो छी तँए आठ-अनाक मखान आ आठ-अनाक चीन्नी सेहो लाइए लिहें। आ हँ! भरि राति डिबिया जरत, तइले मटिया तेल थोड़े-कऽ लऽ लिहें।”

“आरो किछु?”

मन पाड़ि दुखनी बाजल-

“आब तँ लोक धुमनक धूपो देनाइ छोड़िए देलक तँए एकटा धुपकाठीए लाए लिहें।”

श्यामा दियारी बनबैले चिक्कैन माटि लोढ़ीसँ फोड़ए लगली। भुखना दोकान विदा भेल। दुखनीक मन असथिर भेल। मन असथिर होइते बेटीकेँ कहलक-

“बुच्ची, आब हम नहाइले जाइ छी। किरिणो लुकझुकाइए गेल।”

“बौआ जे साड़ी अनलकौ सएह लऽ ले।”

‘बेटाक आनल साड़ी’ सुनि दुखनी जेना हरा गेल। मनमे नाचए लगलै बेटाक कीनल पहिल साड़ी! जहियासँ अपने मुइला तहियासँ कहियो नव साड़ीक नसीव नै भेल। ओना बेटी अपन पहिरल साड़ी साले-साल दइते रहल तँए कहियो कपड़ाक दुख नहियेँ भेल...।

रोडेक किनछैरमे गाड़ल सरकारी कलपर दुखनी पहुँचल। कलपर पहुँचते मन पड़लै। साड़ी-लोटा कलेपर रखि चोट्टे घुमि कऽ आँगन आबि बेटीकेँ कहलक-

“दाइ, एकटा बात मन पड़ि गेल। बिसैर जाइतौं तँए कहैले एलियौ।”

अकचकाइत श्यामा पुछलक-

“कोन बात मन पड़लौ?”

दुखनी बाजल-

“बच्चा जे दोकानसँ औत तँ कहि दिहैन जे ऐगला चौमास बिकरी अछि, दुइए कट्ठा छैहो। कीनि लेत। हमरा ने एक्कोटा घरसँ

काज चलि जाइए मुदा नै ऐ साल तँ ओहू साल बिआह कइए देबइ। बाल-बच्चा हेतइ। लघियो करैले केतए जाएत। लोक बढ़ने मालो-जाल पोसबे करत, से केतए बान्हत।”

श्यामा-

“अच्छा जो, पहिने नहाले। बौआ दोकानसँ आएत तँ मन पाड़ि देबौ।”

◌

शब्द संख्या : 4703

चारि : क

आइ धरिक इतिहासमे बँसपुराक एहेन रूप कहियो नै बनल छल जेहेन आइ देखैमे आबि रहल अछि। ओना किछु अनुभवी बुढ़-पुरानक कहब छैन जे आइक बँसपुरा दोबरा कऽ बसल गाम छी। हुनका सबहक कथनानुसार करीब साइठ-सत्तैर बरख पहिने ऐ गाममे कोसी प्रवेश केलक। तइमे पहिने जे गाम छल ओकर रूप-रेखा दोसर तरहक छेलइ। आइक जे मुख्य बस्ती अछि ओ पहिने बाध छेलै आ जे बस्ती रहै ओ अखन बाध बनि गेल अछि। जेकर अनेको परमान अखनो भेटैए।

अखनो बाधमे केतौ-केतौ पित्तैर आ तामक बरतन भेट जाइए। पहिलुका बस्तीमे गाछी-बिरछी भरपुर छेलइ। मुदा अखुनका जकाँ ने एते लोक आ ने एते परिवार। जखन पहिल बेर कोसीक बाढ़ि आएल तँ लोककेँ बिसवासे ने होइ जे कोसीक पानि छी।

मुदा किछु अनुभवी लोक पानिक रंग देख परेख लेलैन। किएक तँ कमला पानि जकाँ घोर-मट्ठा-मटियाएल पानि नै रहइ। पाँकक कोनो दरसे नहि। पहिल साल एतबेपर रहि गेल। एक तोड़ बाढ़ि आएल आ दस-बारह दिनक पछाइत सटैक गेलइ। दोहरा कऽ नै आएल। दोसर साल जे बाढ़ि आएल ओ छोटकी धार जकाँ, नासी जकाँ गामक बीचो-बीच बना देलक। ओइ साल गामक लोककेँ ई

आभास नै भेलै जे एना धार गाममे बनि जाएत। सभ गामेमे रहल। बाधक ऊँचका जमीनमे घर बना लेलक। केना नै बनबैत? एक तँ पुश्तैनी गामक सिनेह आ अपन सम्पैतो तँ छेलइ। छह मासक पछाइत धार सुखि गेल। मुदा उपजो-वाड़ी आ गाछो-बिरीछ अदहा-छिदहा भऽ गेल। किछु गोरेक मालो-जाल नष्ट भेल। अनरनेबा, धात्री, लताम, कटहर इत्यादिक गाछ उपैट गेल, दूटा पोखैर आ पाँचटा इनार धारक पेटमे समा गेल। जइसँ लोकक मनमे डर पैसए लगल। गामक माटि-पानिक सिनेह सेहो कम हुअ लगल। बिसवासू जिनगी अनिश्चितता दिस बढ़ए लगल। किछु गोरे आन गाम जा बसैक बात सोचए लगल।

मुदा जेकरा खेत-पथार रहै ओ करेजपर पाथर रखि रहैले मजबूर भऽ गेल। तेसरा साल बाढ़ि सभसँ भयंकर रूपमे आएल जइसँ गामक खेतो-पथारक रूप नष्ट भऽ गेल, गाछो-बिरीछ नष्ट भऽ गेल आ लोकोक जान अवग्रहमे फँसि गेल। छातीमे मुक्का मारि सभ गाम छोड़ि देलक। सन्मुख कोसी गाम होइत बहए लगल।

तीस बर्ख तक, एक रफ्तारमे बँसपुरा होइत कोसी बहैत रहल। गामक सभ आन-आन गाम जा बोनिहार बनि गेल। जेकरा-जेतए जीबैक गर लगलै ओ ओतए चलि गेल। अधिकतर लोक नेपाल पकैड़ लेलक। जाधैर लोककेँ अपना पूजी रहै छै ताधैर ने किसान वा कारोबारी रहैए मुदा पूजी नष्ट भेने तँ खाली-हाथ बँचि जाइए।

बँसपुराक सभ बोनिहार बनि गेल। कोसी एलासँ पूर्वक जे समाजिक सम्बन्ध बँसपुराक छल ओ राँड़-बाँड़ भऽ गेल। पहिलुका समाज नष्ट भऽ गेल। बँसपुराक सभ सुख लोक बिसैर गेल। मातृभूमि केकरा कहै छै से बँसपुराक लोक-ले परिभषे मेटा गेल। मातृभूमि आ दुनियाँमे की अन्तर अछि..?

...जँ जन्मभूमिकेँ मातृभूमि मानल जाए, तखन तँ ओकरा सबहक मातृभूमियेँ नष्ट भऽ गेलइ, जे सभ बँसपुरामे जन्म नेने छल। किए तँ ओ सभ आन-आन गाममे रहि रहल अछि। जँ कहियो फेर बँसपुरा जगतै तँ ओ फेर आबि देखत किने। तहिना जे घुमि कऽ औत ओ सभ तँ आने-आने ठाम जन्म नेने रहत, तहन ओकर मातृभूमि कोन भेलइ? जँ देशकेँ मातृभूमि मानल जाए, तँ देशो विभाजित भऽ जाइ छइ। जे दू नाओं धारण कऽ लैत अछि, तहन तँ देशोकेँ केना मातृभूमि मानल जाए? जँ से नहि, जइ धरतीपर लोक जन्म लैत अछि ओकरा मानल जाए, तँ दुनियाँक जेते देश अछि सभ धरतीएपर अछि तहन किए मातृभूमिकेँ छोट आकारमे मानै छी। किए ने दुनियाकेँ मातृभूमि मानल जाए?

कोसीक धार हटलापर जखन बँसपुरा जागल तँ रूपे बदैल गेल। मुलाइम माटि बाउल भऽ गेल। गाछ-बिरीछक जगह कास-पटेर, झौआ लऽ लेलक। अपन पुश्तैनी गाम बुझि पुन: लोक सभ आबए लगल। ने केकरो जमीनक सबूत, खतियान-दस्ताबेज इत्यादि रहलै आ ने जमीनक ठर-ठेकान। मुदा गाम तँ हेतइ। जहिना अदौमे माने साबीकमे जंगल-झाड़ तोड़ि लोक बसो-बास आ उपजाउ भूमि बनौलक आ रेन्ट फिक्स कऽ सरकारो जमीनक अधिकार देलकै, तहिना बनौल गाम बँसपुरा छी।

जहिना कहियो बँसपुरा पानिसँ दहा गेल छल तहिना पानिक अभाव गाममे भऽ गेल। ने एकोटा पोखैर-इनार रहल आ ने बाढ़िक पानि अबैत। पोखैर-इनार खुनब छोड़ि लोक कलसँ पानिक काज चलबए लगल। बर्खा पानिसँ खेती हुअ लगलै। चापी जमीनकेँ बान्हि-बान्हि लोक पोखैरोक सेहन्ता मेटबए लगल। जइमे माछ-मखान, सिंगहार सेहो होइए।

ओही बँसपुरामे आइ दिवालियो आ कालियो पूजाक उत्साह लोकक रग-रगमे दौग रहल अछि। आन-आन गामसँ अबैबला देखनिहार-ले, अपन सीमा भरिक चारू भागमे जेते टुटान-कटान छेलै सभकेँ भरि-भरि कऽ गौआँ-सभ सहीट बना देलक। जेतए केतौ बोन-झार छेलै सेहो सभ काटि-खोंटि साफ केलक। ओना सरकारो दिससँ बान्ह-सड़कपर माटि पड़ैत मुदा दूधक डाढ़ी जकाँ पड़ने बरसातमे भँसि जाइत। जइसँ जहिनाक तहिना। मुदा ऐ बेर गौआँ अपन सम्पैत बुझि नीक जकाँ मरम्मत केलक। खाली बान्हे-सड़कटा धरि नहि, गामक जेते पानि पीबैक साधन अछि सबहक मरम्मत सेहो केलक। ओना बैसाख-जेठ जकाँ लोक थोड़े पानि पीत मुदा तैयो पानि तँ पीबे करत। गाम-ले सभसँ आश्चर्य ई भेल जे एकाएक सभ अपन जिम्मा केना बुझलक।

केवल पानियेँक प्रबंधटा नै पाहुन-परकसँ लऽ कऽ हराएल-भौथिआएल देखनिहार-ले सेहो रहैक बेवस्था केलक। जेकरा दुआर-दरबज्जा छै ओकर तँ कोनो बाते नहि, जेकरा नहियोँ छै, ओहो सभ सभ जोगार केलक। मोटका प्लास्टिक आनि-आनि घरे जकाँ बना लेलक। सबहक मनमे गदगदी जे आबह केते पाहुन-परक अबैए। सुतैले मोथीक बिछान सेहो बेसीए कऽ कीनि-कीनि रखि लेलक। अखन ने अनगौआँ-ले कीनलक मुदा पूजाक पछाइत तँ अपने सूतबो करत आ अन्नो-पानि सुखौत। ओना जे मेला देखए औत ओ सूतत आकि मेला देखत। मुदा जे भरि राति मेला देखत ओ तँ दिनोमे सूतबे करत।

रघुनाथोकेँ धैनवाद दिऐ जे खाइ-पीबैक सभ समान- चाउर, दालि, तरकारीसँ लऽ कऽ जारैन-काठी धरिक तेहेन कारोबार पसारि लेलक जे केतबो लोक कीनत-बेसाहत तैयो ने सठतै। एक्के मेलाक कमाइमे ओहो धनिक भऽ जाएत। पूजियो तँ वएह ने लगौने अछि।

तेहेन ओकर बोहुक बोली मीठ छै जे एक्कोटा गहिंकीकेँ घुमए देत। सदिखन दोकानमे भीड़ लगले रहै छइ। कहबियो छै ने, 'जेकरा भगवान दइ छथिन छप्पर फारि कऽ दइ छथिन।' भने दोकान घरेपर केने अछि। जँ मेलामे केने रहैत तँ गौआँकेँ समाजकेँ घीनेबे करैत, किएक तँ पाहुन-परकक सोझमे केना लोक चाउर-दालि बेसाहत।

मुदा आश्चर्य भेल। बाप रे! गाममे एते पाहुन-परक केना उनैट कऽ चलि आएल जे बुझि पड़ैत जेना केकरो कोनो अपना काजे नै छइ। तहूमे मरदक तिगुना स्त्रीगण आबि गेल। स्त्रीगणोमे बेसी ओहन जे पनरह-सँ-पच्चीस बर्खक अछि। सेहो एक मेलक आकि चालि-ढालिक रहैत तब ने, चारि-पाँच मेलक छइ। केना ने गामक हवामे खतरनाक कीड़ा फड़त। बम्बैया सभ जे अछि, ओ सिरिफ छौड़े-मारड़िटाकेँ थोड़े धरत, बुढ़ो-बुढ़ानुसकेँ धरबे करत। जहिना कोनो अनठिया चिड़ैकेँ गाममे एलासँ गामक सभ देखए जाइत तहिना ने बम्बैइयो चिड़ैकेँ देखत। मुदा नहियोँ देखत तँ अनुचिते हएत किने। आखिर ओहो ओहन रूप किए बनौने अछि। लोके देखैले किने। जँ से नइ मनमे रहितै तँ एहेन पाँखि बनबैक काज कोन छेलइ। मनुख तँ मनुख छी किने? तइले एहेन हवा-मिठाइ बनैक कोन जरूरत छइ। तहूमे जखन बनि गेल आ लोक नै देखै तँ बनैक मोले की? मोल तँ तखने हेतै किने जखन लोक ओकरा निहारि-निहारि तर-ऊपर देखत। तँए की ओकर चरौर गाम-देहातमे नै छइ? जरूर छइ। बम्बइये कलाकार सभ ने गामोक लोककेँ सिनेमाक माध्यमसँ सिखौलकै हेन। लोकक मनो अजीब छइ। जँ कनियोँ ऊपर उड़त तँ बुझि पड़ै छै जे जमीनक सभ किछु हम देखै छी मुदा हमरा कियो देखबे ने करैए! तहिना ने जमीनो परहक लोककेँ बुझि पड़ै छइ। मुदा भ्रम तँ दुनूकेँ छइ। ऊपर उड़निहार जँ जमीनक ऊपरका भाग देखैए तँ जमीनो परहक ने ओकर निचला भाग देखैए।

चारि बजैत-बजैत मेला देखनिहारक भीड़ काली-स्थानमे उमड़ल। ओना बुढ़-बुढ़ानुस अपन-अपन घर-अँगनाक ओरियानमे रहैथ। सिरपर सूर्यास्त होइते दीप जरौनाइसँ लऽ कऽ ऊक फेरनाइ सबहक सिरपर रहैन। मुदा आन गामसँ आएल लोककेँ कोन काज छैन, ओ तँ मेले देखैले आएल छैथ। सभसँ खूबी तँ ई अछि जे मेला देखनिहारे मेला देखैक वस्तु बनि गेल अछि। पूजा समितिक सदस्यक ऊपर जवाबदेही रहने सभ जी-जानसँ निगरानीक संग-संग बेवस्थामे जुटल। सौंसे मेला पी-पाह होइत। ओना पूजाक प्रक्रिया निशाँ रातिमे शुरू हएत मुदा ओरियान तँ पहिनहिसँ करए पड़त। एहेन नै ने जे एक दिस पूजा शुरू हएत आ दोसर दिस समान जुटले ने रहत। पूजा काल जइ वस्तुक जरूरत हेतै ओ तखन बेवस्था करत। तँए पुजेगरियो आ पुरोहितो अपन सभ वस्तु-पुरजीसँ मिला-मिला सैंत-सैंत रखि रहल छला।

ओना मेलाक आनन्द तँ तखन होइ छै जखन पूजा शुरू होइए। नाचो-तमाशा तँ तखनेसँ ने शुरू होइ छइ। मुदा तैयो सोलहन्नी नै तँ अदहो-छिदहो मेलाक आकर्षण तँ बढ़िए गेल छइ। सभसँ अजीब तँ ई भऽ गेल अछि जे दर्शक गजपट भऽ गेल अछि। तेहेन ने बजारू रूप बनि गेल अछि जे लड़का-लड़कीक भेदे मेटा गेल छइ। चश्मा खोलि-खोलि बुढ़ो-पुरान सभ आँखि मलि-मलि देखैत जे ई छौड़ा छी आकि छौड़ी। मुदा तैयो आँखि ठीकसँ काजे नै कऽ रहल छैन। सभ अपन-अपन धुइनमे मस्त। तैबीच 'फटाक'-'फटाक'क अवाज हुअ लगलै।

फटाक-फटाकक अवाज सुनि सबहक कान ठाढ़ भेल। जे जेतै रहै ओ ओतैसँ अवाज अकानए लगल। मुदा दोकान-दौड़ी तइ ढंगसँ सजल रहै जे सोझहा-सोझही अवाज निकलबे नै करैत रहइ। लगमे जे रहै ओ तँ अवाजो सुनै आ मारियो होइत देखइ। किछु लोक बाहरो दिस भगै आ किछु लोक दौग-दौग एबो करइ। उत्तर दिससँ देवन आ

पच्छिमसँ मंगल सेहो दौड़ल आबि भीड़केँ चीरैत आगू पहुँचला। आगू पहुँचते देखलैन जे बीस-पच्चीस बर्खक दूटा छौड़ा चेस्टरक दोकानक आगूमे थापर-मुक्का कऽ रहल अछि। फाँटि देख देवनो आ मंगलो सहैम गेला।

तैबीच जोगिन्दर दौड़ल आबि दुनू हाथ धुमबैत, दुनू छौड़ाकेँ गट्टा पकैड़ मारि छोड़ौलक। हल्लो शान्त भेल। एकटा छौड़ाकेँ देवन पुछलखिन-

"बौआ, अखन पूजा-पाठक समए छै, किए मारि केलह?"

मुदा जइ छौड़ाकेँ देवन पुछलखिन ओ किछु विशेष मारि खेने रहए, तँए जाबत किछु बजै-बजै तइसँ पहिनहि दोसर बजए लगल, मुदा ओइ छौड़ाकेँ चोहटैत जोगिन्दर बाजल-

"तूँ चुप रहऽ। पहिने जेकरा पुछलिऐ से बाजत।"

मुदा जोगिन्दरक बातक असर एक्को पाइ ओइ छौड़ापर नै भेलइ। दुनू गामक पाहुन। तँए बिकट संकट समितिक सदस्यक बीच भऽ गेल। विचित्र स्थितिमे सभ पड़ि गेला। अधिकतर लड़को आ लड़कियो परदेसीए, तँए मारिक डर केकरो हेबे ने करैत। लड़की सभ जोर दैत बाजल-

"ब्रेशियरक दोकानपर लड़का सभकेँ अबैक कोन खगता छइ। ई तँ स्त्रीगणक सौदा छी?"

मुदा लड़को सभ लड़कीक बात मानैले तैयार नहि। तेसर छौड़ा बाजल-

"लड़कीक उपयोगक वस्तु छी एकर माने ई नै ने जे एकर जरूरत लड़का सभकेँ नै छइ।"

"लड़काकेँ की जरूरत छइ?" एकटा लड़की पुछि देलकै।

बाजल-

"अपनो परिवार छै आ हितो-अपेक्षित तँ छैहे।"

लड़का-लड़कीक बीचक गप, गजपट होइत देख देवन कहलखिन-

"अखन सभ शान्त हौउ। मेलाक पछाइत एकर निबटारा हएत। शान्तिसँ सभ मेला देखू।"

सूर्यास्तक समए। सुरूज तँ पूर्ण-रूपेण नै डुमल मुदा निच्चाँ उतैर गेलासँ लोकक आँखिसँ ओझल भऽ गेल। गामक धियो-पुतो आ चेतनो स्त्रीगण फुलडालीमे दियारी, सलाइ, अगरबत्ती आ खढ़क ऊक लऽ कऽ गामक जेते देवस्थान अछि, सभ दिस विदा भेल। जेना धरोहि लगि गेल। कियो डिहबार स्थान दिस जाइत तँ कियो महादेव मन्दिर दिस। तहिना कियो धर्मराजक गहवर दिस तँ कियो हनुमानजीक स्थान दिस।

गाममे पाँचेटा पुरना देवस्थान। छठम, काली स्थान बनबे कएल। ओना ठकुरवारी पहिने बेकतीगत छल मुदा महंथजीक मुइलापर ओहो दसगरदे भऽ गेल। सभ स्थानमे दीप जरा, धुप दऽ सभ अपन-अपन आँगन आबि घर-आँगनमे दीप जरबैत माल-जालक थैर, इनार आ कलपर सेहो जरौलक। किछु गोरे कुम्हारक बनौल माटिक डिबिया तँ किछु गोरे दबाइ पिलहा शीशी सबहक डिबिया बना जरौलक। सौंसे गाम इजोतसँ जगमगा गेल। काली स्थानक चारू जेनरेटर चलए लगल। जइसँ अन्हरिया रहितो गाम दिने जकाँ भऽ गेल। ओना दिनमे मेघ जेते ऊपर रहैए, रातिमे अन्हार दुआरे तेते निच्चाँ उतरल बुझाइए।

दिवाली पाबैनसँ गाम निचेन भऽ गेल। स्त्रीगण सभ भानस-भात करैमे लगि गेली। समए पाबि पुरुख सभ मेले दिस टहैल गेला।

मेलाक आकर्षण देख किनको घरपर अबैक मने नै होइत रहैन। मुदा भरि राति तँ नाच-तमाशा चलिते रहत, तँए बिना खेने-पीने रहबो कठिन बुझि अपन-अपन घर-अँगनाक रस्ता धेलैन। काली- मण्डपमे पुजेगरी पूजाक ओरियानमे व्यस्त छला।

मुजफ्फरपुरक जेहने नाटक तेहने मंचो बनल। एहेन मंच, आइ धरि ऐ इलाकाक लोक नै देखने रहैथ। जेहने फइल स्टेज तेहने सुन्दर-सुन्दर रंगीन परदो लगौल गेल रहइ। तेहने ऊँचगरो। केतबो देखनिहार रहत तैयो देखबे करत। अजीब ढंगसँ बिजलियो लगौल गेल। बजोक तेहने बेवस्था। मुजफ्फरपुरक मंचसँ कनियोँ उन्नैस वृन्दावनक रासक नहि। मुदा दुनूमे अन्तर साफ-साफ बुझि पड़ैत। जेहने आधुनिकताक प्रदर्शन मुजफ्फरपुरक स्टेज करैत, तेहने प्राचीनताक प्रदर्शन वृन्दावनक मंचसँ होइत। कौव्वालीक मंच तँ ओते लहटगर नै बुझि पड़ैत मुदा मेल-फिमेलक दुनू स्टेज सटल रहने अपन आकर्षण बढ़ौने। महिंसोंथाक मलिनियाँ नाचक मंच सभसँ दब। मात्र चारि-पाँचटा चौकी निच्चाँमे जोड़ने आ चारिटा खुट्टा गाड़ि ऊपरमे आल रंगक चनवा आ एकटा परदा लगौने अछि। मंच दब रहितो मलिनियाँ नाचक कलाकार सबहक मनमे विशेष उत्साह, जे सभकेँ उखारि देब। ओकरा सबहक मन गदगदाएल ऐ दुआरे रहै जे छुच्छे टीप-टापसँ काज चलै छइ। जे मौलिकता हमरा कलाकारमे अछि से अनकामे नै छइ। संगे जेते देखनिहार हमर अछि, ओते दोसराक नै छइ।

जहिना बजारमे अनेको दोकान रहितो सोना-चानी कीनिनिहार, सोने-चानीक दोकानपर पहुँचैए, किताब कीनिनिहार किताबे दोकानपर पहुँचैए, तहिना ने नाचो-तमाशाक छइ।

नअ बजैत-बजैत मंच सबहक आगू देखनिहारक ठट्ठ पड़ए लगल। केना ने पड़ैत? लगसँ देखब आ दूरसँ देखबमे अन्तर होइते छै

किने। मुदा समितिक सदस्य सभ विचारि नेने रहए जे आगूमे अनगौंआँकेँ बैसाएब। गौंआँ तँ ठाढ़ो-ठाढ़ पाछुओसँ देख सकैए। तहूमे अनगौंआँकेँ कोनो ठीके नै अछि जे सभ दिन देखए एबे करत। मुदा गौंआँक तँ अपन मेला छिऐ तँए एबे करत।

कलाकार सभ मेक-अप करबो ने केने रहए आकि देखनिहार सभ पिक्की मारब शुरू केलक। केना नै मारैत? लोक देखैले आएल आकि बैसैले। कमसँ कम बजोबला सभ तँ मंचपर आबि सम बान्हऽ। समो बन्हैमे एकाध घन्टा लगबे ने करतै। पैसा लऽ कऽ आएल अछि कि कोनो मंगनियेँ आएल अछि जे समए ससरल जाइ छै आ अखन धरि स्टेज खाली रखने अछि। जनसेवा दलक सदस्य सभ कखनो मंचपर जा कऽ शान्त करैत तँ कखनो मर्द-स्त्रीगणक गजपट भीड़केँ सुढ़ियबैत।

चारू मंच बाजाक अवाजसँ गनगनाए लगल। देखनिहारोक मन बाजाक धूनमे शरबत बनए लगल। कियो मने-मन गुनगुनाए लगल तँ कियो हाथक ओंगरीसँ पोनोपर आ कियो-कियो ठेहुनोपर ताल मिलबए लगल।

पूबसँ पुरबा हवाक संग एक चिड़की मेघ[4] उठल। हवाकेँ उठिते देखनिहारक औल-बौल मन शान्त हुअ लगल। धीरे-धीरे हवो तेज होइत गेल। करिया मेघ सेहो नमहर हुअ लगल। एकाएकी तरेगन डुमए लगल। जेना-जेना वादल पसरैत गेल, तेना-तेना हवो तेज हुअ लगल। काली- मण्डपमे पुजेगरी घड़ी देख-देख पूजाक प्रक्रियाकेँ आगू बढ़बए लगला। माए-बहिन गीत शुरू केलैन। जोरसँ मेघ बोली देलक। हवो बिहाड़िक रूप पकड़ए लगल। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगल।

[4] वादल

मुदा पानिक शंका केकरो मनमे नहि। किएक तँ रौदियाह समए रहने सभ निश्चिन्त जे ऐ बेर मेघमे पानियेँ नै छै जे बरिसत। तहूमे जँ शुभ काजमे बुन्दा-बुन्दी हुअए तँ ओ आरो शुभ छी। तँए सबहक मन खुशी। मुदा पानिक बूनसँ मंचक आगूमे बैसल देखनिहार एका-एकी उठए लगल। तरतरा कऽ बर्खा शुरू भेल। बिजलोका सेहो तड़ाक-तड़ाक छिटकए लगल। जेते बिजलोका छिटकै तेते मेघो गरजए लगल। गामक लोक घर दिसक रस्ता धेलक।

मुदा अनगौंआँ असमंजसमे पड़ि गेल जे आब भीजबे करब। मुदा बिहाड़ि तँ जान नै छोड़त। हारि कऽ अनगौंआँ स्टेजक ऊपरो आ तरोमे पहुँच पानिसँ बँचैक गर अँटबए लगल। इंजन बिगड़ै दुआरे जेनेरेटरबला जेनरेटर बन्न कऽ देलक। सौंसे मेला अन्हार पसैर गेल। जहिना पानि तहिना बिहाड़ि अपन भीमकाय रूप बना नाचए लगल।

सौंसे मेला 'साहोर-साहोर'क अवाज हुअ लगल। मुदा सुनैले ने बिहाड़ि तैयार आ ने बर्खा। बिहारि तँ उड़ि कऽ पड़ा गेल मुदा मुसलाधार बर्खा सवा-घन्टा धरि बरिसते रहल। दोकान सबहक छप्पर उड़ने सभ समान तीत-भीज गेल। उड़बो कएल। केकरा के देखत। सभ अपने जान बँचबै पाछू पड़ल। तैकाल एकटा स्टेज दिससँ कनै-कुहरैक अवाज उठल। तेते लोक स्टेजक ऊपर चढ़ि गेल रहै जे बल्ले सभ टुटि गेल, खसि पड़ल! स्टेजक निच्चाँमे जे लोक सभ बैसल रहइ ओकरा ऊपरेमे। केकरा की भेलै से तँ अन्हारमे देखियो ने पड़इ, मुदा कानै-कुहरैक अवाज निकलए लगल। छबेटा सिपाही ड्यूटीमे रहए। वएह वेचारा की करत। केकरा दोख लगाएत। पूजा समितिक सदस्य आ सिपाही मिलि गर लगौलक। देवन आ जोगिन्दर राती-राती पड़ा गेल।

खेला-पीला पछाइत सजना पिताकेँ कहलक-

"बाउ, पाँच दिनक मेला छइ। एकदिना रहैत तखन ने देखैक धड़फडियो रहैत से तँ नै अछि। सोल्होअना घर-आँगन छोड़ि जाएबो उचित नहि। किएक तँ जेते लोक मेला देखए आएत ओ सभ की कोनो मेलेटा देखए औत। कियो छौड़ा-छौड़ीक खेल करए औत, तँ कियो चोरी-चपाटी करए औत। के की करए औत से के कहलक। तँए अखन हम दुनू परानी जाइ छी आ अधरतियामे आबि तोरा उठा देबह, तखन तूँ जैहऽ।"

बेटाक बात दुनियाँ लालकेँ जँचल। मने-मन मानि लेलक। बेटो आ पतियोक बात सुनि तेतरी बाजल-

"राति-विरातिकेँ देखए हम नै जाएब। साँझू पहरकेँ जाएब। काली-महरानीकेँ साँझो दऽ देबैन आ गोड़ो लागि लेबैन।"

माइक बात सुनि सजना किछु बाजल नहि। मेला देखए विदा भेल। किछु कालक पछाइत सजनाक पत्नी–सितिया– सेहो स्त्रीगणक संग गेल। पानि-बिहाड़ि उठिते सजना भागल। मुदा तैयो घर लग अबैत-अबैत नीक जकाँ भीज गेल। अँगनाक पानि जे निकलैत रहै तैठाम डेढ़िया लग आबि पिछैड़ कऽ खसि पड़ल। सौंसे देह थालो लगि गेलै आ ठेहुनमे चोटो लगलै। मुदा हूबापर उठि कऽ पानिमे थाल धोइ आँगन आएल।

अखन धरि ने दुनियाँ लाल सूतल छेलै आ ने तेतरी। किएक तँ हवा देख तेतरी चूल्हि आ मालक घरक घूरक आगि मिझा ओछाइनपर आएले रहए। हवाक रूखि देख दुनियाँ लाल पत्नीकेँ कहलक-

"तेहेन हवा अछि जे भरिसक घरो ने ठाढ़ रहत। तहूमे एक्कोटा खुट्टा लकड़ीबला नै अछि। सभटा बाँसक अछि। बड़ गलती भेल जे चारिये-टा खुट्टा बदललौं। सभ खुट्टाक जड़ि सड़ि गेल अछि।"

तैबीच पछुऐतक तीनू पुरना खुट्टा कड़कड़ा कऽ टुटि गेलइ,

खाली नवका खुट्टा नै टुटलै। उत्तरबरिया-पुबरिया कोण सेहो लटैक गेलइ। मुदा खसलै नहि। जाड़सँ थरथराइत सजना ओसारपर आबि माएकेँ कहलक-

"माए, भीज गेलौं। जाड़ो होइए। कनी लूँगी आ चद्दैर निकालि दे?"

घरेसँ माए कहलकै-

"भीजलेहे धोतीक खूटक पानि गाड़ि सौंसे देह पोछि ले। लूँगी आ चद्दैर दइ छियौ।"

हाथक ओंगरी सजनाक कठुआएल। मुदा तैयो कहुना-कहुना कऽ धोतीक पानि गाड़ि, अँगा निकालि सौंसे देह पोछलक। तेतरी डिबिया नेसए लगल। मुदा सलाइ सिमैस गेने बरबे ने कएल। अन्हारेमे हँथोरि-हँथोरि लुंगियो आ चद्दैरियो निकालि कऽ दैत बाजल-

"घूरो कऽ दैतिऐ से सलाइए ने बरैए। तोंही टा एलँह आ कनियाँ?"

"कहाँ केतौ देखलिऐ। पानिक दुआरे केतौ अँटैक गेल हएत।"

दुनू माय-पूत गप-सप्प करिते रहए आकि रूप लालक घर कड़कड़ा कऽ खसल। रूप लाल दुनियाँ लालक छोट भाए। रूप लाल घरेमे रहए। दू-चारी घर। घरक दुनू चारक ओलती माटि पकैड़ लेलक आ दुनूक मठौठ ठाढ़े रहलै। पजराक दुनू टाट टुटि कऽ लीब गेल, दुनू भाग घेरने रहल। ओइ बीचमे दुबकल रूप लालक जान जीवन-मृत्युक बीच अवग्रहमे पड़ल रहइ। खूब जोर-जोरसँ हल्ला करए लगल, मुदा झाँट-पानिक दुआरे कियो सुनबे ने करइ। एक तँ झाँट-पानि, दोसर बान्हल-घेराएल अवाज सुनबो केना करैत।

किछु कालक पछाइत मुनेसरी, जे दोसर घरमे रहए, सुनलक। अवाज सुनिते मुनेसरी केबाड़ खोलि ओसारपर आएल कि

बिजलोकाक इजोतमे घर खसल देखलक। खसल घर देखते बेटोकेँ उठौलक। दुनू गोरे जोर-जोरसँ हल्ला करए लगल। मुनेसरीक अवाज सुनि दुनियाँ लाल सजनाकेँ कहलक-

"रौ सजना, रूपललबाक घर खसि पड़लै। दौग कऽ जो, देखही जे कियो दबेबो केलै?"

जाड़सँ कठुआएल सजनाकेँ बर्खामे निकलैत अबूह लगइ। मुदा की करैत। मनमे द्वन्द्व सेहो उठि गेलइ। एक दिस पित्तीक मोह, आ दोसर दिस पितियाइनिक बेवहारसँ कुपित मन। मुदा एहेन समैमे तँ जानक प्रश्न अछि। दोस्ती-दुश्मनी तँ जीबैतमे रहै छइ। मन मसोसि कऽ सजना लूँगीक फाँड़ बान्हि निकलल। हवो कमि गेल, मुदा बर्खा होइते रहइ। पाछूसँ दुनियाँ लाल आ तेतरियो गेल।

रूप लालक दछिनबरिया घर खसल रहइ। सजना पितियाइनकेँ कहलक-

"काकी, एकटा इजोत आ हँसुआ नेने आउ। जाबे नीक-नाहाँति देख नै लेब ताबे केना किछु करब।"

हाँसू निकालि कऽ दैत पितियाइन बाजल-

"बौआ, चोरबत्ती तँ पित्तीए लग अछि।"

हाँसू लैत सजना जोरसँ बाजल-

"कक्का हौ, कनी टॉर्चक इजोत दहक?"

घरक तरसँ रूप लाल बाजल-

"चोरबत्ती तँ सिरमे लग रखने छेलौं। ठाठक तरमे पड़ि गेल अछि।"

"चोटो-तोटो लगलह?"

"नै बौआ।"

"अच्छा, तूँ चिन्ता नै करह। हवो कम भेल आ बुन्नियोँ पतड़ाएल जाइए।"

सजनाकेँ बुझबैत दुनियाँ लाल कहलक-

"बौआ, धड़फड़ नै करह।"

हाथक इशारा दैत भावौकेँ-

"कनियाँ डिबिया नेसू।"

मुनेसरी डिबिया नेसलक। इजोत होइते दुनियाँ लालो आ सजनोँ टाट हटबैक गर अँटबए लगल। ओलतीक खुट्टा जे टुटि कऽ कात भऽ गेल रहै, ओकरा टाट देने घोसियबैत कहलक-

"कक्का, ऐ दुनू टोनकेँ पकैड़ दुनू ठाठमे सोंगर लगा दहक। जइसँ ठाठ एमहर-ओमहर नै डोलतह।"

एकाएकी दुनू सोंगर दुनू ठाठमे रूप लाल लगौलक। सोंगर लगिते सबहक मनमे खुशी एलइ। सजनाकेँ दुनियाँ लाल कहलक-

"सौंसे टाट हटबैक जरूरत अखन नै छौ। दोग जकाँ बना पहिने आदमीकेँ बँचा, तखन बुझल जेतइ।"

हाँसूसँ तीन-चारिटा टाटक बनहन काटि सजना दोग जकाँ बनौलक। दोग बनिते रूप लाल बाजल-

"बौआ, निकलै जोकर भऽ गेल। तूँ दुनू हाथे दुनू ठाठकेँ पकड़ने रहह।"

घरसँ निकैलते दुनियाँ लालक पएर पकैड़ रूप लाल कनैत बाजल-

"भैया, अपन समांग दुनियाँमे सभसँ पैघ होइ छइ। अखन जे तूँ दुनू बापूत नै रहितह तँ घरेमे मरि जैतौं।"

भरोष दैत दुनियाँ लाल कहलक-

"एना ढहलेल जकाँ किए बजै छेँ। अपन-बीरान लोक अपने बनबैए। तूँ तँ जानियेँ कऽ छोट भाए छँह। समाज बड़ीटा होइ छइ। गरीब लोक कोनो सुखे जीबैए। तखन तँ जाबे दुनियाँक दाना-पानी लिखल रहै छै ताबे काहियो काटि कऽ जीबे करैए। मन थीर कर। जे होइ कऽ छेलै से भेलइ। थरथर किए कँपै छेँ?"

मुदा दुनियाँ लालक बातक असर दुनू परानी रूप लालपर नहियेँ जकाँ पड़ल। भीतरसँ करेज डोलैत रहइ। मनमे होइ जे फेर ने घरक तरमे दबा जाइ। आँगन डेरौन लागए लगलै। जेना किछु झपटैत होइ तहिना बुझि पड़इ। मिरमिरा कऽ रूप लाल बाजल-

"भैया, होइए जे सुति रहब तँ फेर दोसरो घर खसि पड़त।"

दुनियाँ लालक मनमे एलै जे भरिसक डरे एना होइ छइ। बोल-भरोस दैत कहलकै-

"घर तँ गिरमा-गिरिये पड़लौ। आब कि दोहरा कऽ खसतौ। जे घर बँचल छौ ओकर भीत मजगूत छै, ओ थोड़े खसत। तहूमे झाँटो-पानि बन्ने भेल। नै तँ चल हमरे लग सुतिहेँ। कनियाँकेँ पुछि लहुन जे घरमे सूतब आकि अहूँकेँ डर होइए। जँ डर होइ छैन तँ सजने माए लग सुति रहती।"

दुनियाँ लालक विचार सुनि रूप लाल बाजल-

"भैया, सगरे देह झोल-झाल आ थाल-कादो लगि गेल अछि। ओकरा पहिने धुअ पड़त।"

ओना सभकेँ थाल-कोदो लगल रहइ। सभ कियो कलपर जा सगरे देह धोलक। कलपर सँ आबि मुनेसरी घर बन्न केलक। दुनू माय-पूत तेतरीक संग आ रूप लाल दुनियाँ लालक संग धेलक। पुबरिया घरमे दुनियाँ लाल भुँइयेँमे ओछाइन ओछौने रहए। चौकी नै रहइ। ओछाइनपर बैस सिरमा तरसँ चुनौटी निकालि रूप लालकेँ दैत

बाजल-

"पहिने तमाकुल चुना।"

सकरीकट तमाकुलक डाँट बिछैत रूप लाल बाजल-

"भैया, आइ तँ मरि गेल रहितौं। जेना हड़हड़ा कऽ घर खसल तेना जँ ओछाइन छोड़ि सतरकी नै करितौं तँ चाहे मरि जैतौं नै तँ अंग-भंग भऽ गेल रहितए। मुदा माए-बापक धर्मे कुशप-कलेप नै लगल। नै तँ दुनियाँ अन्हार भऽ जाइत।"

रूप लालक विचारकेँ अँकैत दुनियाँ लाल बाजल-

"ई देहे तँ कुम्हारक बनौल काँच बरतन जकाँ अछि। जहिना कँचका बरतन एकरत्ती धक्का लगने फुटि जाइए, तहिना ने देहो छी। मुदा से लोक बिसैर दँतिया कऽ पकड़ने रहैए। जँ ई बात सभ बुझि जाए जे जिनगीक कोनो ठेकान नै अछि, तखन अनेरे किए झूठो-फूस बाजत आ अधला-सँ-अधला काजो करत। तँए जेतबे दिन जीबै छी ओतबे दिन इमानदारीसँ कमा कऽ पेटो भरी आ जहाँ धरि भऽ सकए, अनको उपकार करिऐ। उपकारे ने धर्मो छी आ मुइला पछातिक जिनगियो जिनगी छी।"

मुँह बाबि रूप लाल पुछलक-

"भैया, फेरोसँ एक बेर कहक। ठीकसँ नै बुझलौं।"

रूप लालक प्रश्न सुनि दुनियाँ लाल मने-मन सोचए लगल जे भरिसक एकरा ज्ञानक उदए भेल जा रहल छइ। ओना, कोनो बेर पड़लापर अहिना लोकक मनमे नीक विचार जगै छै, लगले रूकियो जाइ छै...।

रूप लालकेँ बुझबैत दुनियाँ लाल बाजल-

"बौआ, अगर जँ लोक ई बुझि जाए जे ऐ देहक कोनो ठेकान नै

अछि। कखन छी कखन नै छी, तइले केकरो बेजए किए करबै। आ ओइ हिसाबसे अपन चालि सुधारि लिअए तखन केकरो अधला हेतइ। एक तँ ओहिना लोक समस्या सभसँ रेजानिस-रेजानिस रहैए, तैपर सदिकाल लोको किछु-ने-किछु गड़बड़ करिते रहै छइ। केना कियो कखनो चैनसँ रहत। तोंही कह जे केहेन बढ़ियाँ दुनू भाँइ जखन जड़मे छेलौं तखन तोरा कोनो भार छेलौ? खाली संग मिलि कमाइ छेलँह। आकि नहि? तखन भीने किए भेलँह। जखन भीन भेलँह तखन जँ किछु कहितियौ तँ कनियाँ कहिथुन जे भैया घर फुटबै छैथ। तहूले झगड़ा होइतौ। तइमे नीक ने जे भरमे-सरम मुँह बन्न केने रहलौं। तहूँ बात थोड़े सुनितें। जे कनियाँ कहिथुन सएह मानितें। ई की कोनो हमरे-तोरेमे होइए से तँ नहि, सभकें यएह गति छइ।”

पछबरिया घरमे तेतरी सुतैत। पुबरिया झटक भेने सौंसे ओसारो आ मुँह सोझे घरोमे पच-पच करैत। मुदा तैयो तेतरी चूल्हिक छाउर छीट घरकें रूख बनौलक। जेठ रहितो वेचारी मुँह-सच्च मुदा छोट रहितो मुनेसरी मुँहजोर। सदिखन अपन बात दोसरपर चढ़ाइए कऽ रखैत। जइसँ जखन कखनो दुनू दियादिनीमे कोनो गप होइ तँ मुनेसरी चोहैट लइ। मुदा आइ बिलमे जाइत साँप जकाँ मुनेसरीक मन सोझ भऽ गेल। जेना सभ ताउ मरि गेलइ। हत्याराक खूनमे ताधैर गरमी रहै छै जाधैर फाँसीपर नै लटकैए। मुदा जहिना फाँसीपर लटैकते सवितासँ सुरूजक उदए जकाँ ज्ञानक उदए होइए तहिना आइ मुनेसरियोकें भेल। तेतरियेक बिछानपर दुनू माय-पूत मुनेसरियो सूतल।

दुनियाँ लालक बात सुनि रूप लाल गुम्म भऽ गेल। एक तँ दुनियाँ लालक विचार रूप लालक मनकें झकझोड़ि देलकै, तैपर सँ गिरल घरक सोग सेहो दबनहि रहलै। कनी काल गुम्म रहि मुड़ी डोलबैत बाजल-

“हँ, ई तँ सत्ते कहलह भैया।”

अपन किरदानीपर पचताइत देख दुनियाँ लाल बाजल-

“आब तोंही कह जे जखन दुनू भाँइ एकठाम छेलौं तखन तोरा घरक कोनो भार छेलौ। जानियें कऽ तँ गरीब घरमे अपना सबहक जनम भेल अछि। केहेन बढ़ियाँ दुनू भाँइ संगे बोइन-बुत्ता करै छेलौं आ मिलानसँ रहै छेलौं। अपना केते खेते अछि। लऽ दऽ कऽ सात-सात कट्ठा बाधमे आ घराड़ी अछि। जेकरा बीघा-बीघे छै ओकरो हजार टा भूर सदिकाल फूटले रहै छै, जइसँ मन घोर-घोर भेल रहै छइ। जेकरा नै छै ओ तँ सहजे भूरेमे घोंसियाएल रहैए।”

दुनियाँ लालक विचार सुनि रूप लालक मन केराक भालैर जकाँ डोलए लगलै। ढेरो प्रश्न मनमे उठए लगलै। बेवसीक स्वरमे बाजल-

“की नीक, की अधला से बुझबे ने करै छी। लोकक मुहें जे सुनै छी से मानि करै छी।”

रूप लालक हारल मन देख दुनियाँ लालक मन विचारक रस्तापर आबि अँटैक गेल। मनमे हुअ लगलै जे की कहिऐ। एक दिस भाइक ममता दबैत रहै आ दोसर दिस स्त्रीगणक झगड़ासँ मन अकच्छ छेलइ। बिना किछु बजनहि, दयासँ भरल दुनियाँ लालक आँखि रूप लालकें पढ़ए लगल...।

पछबरिया घरमे दुनू दियादनी, एक वामा करे आ दोसर दहिना करे पड़ल छेली। बीचमे मुनेसरीक बेटा चीते पड़ल रहए। दुनूक मनकें पानि-बिहाड़िक घटना दबने छेलइ। जइसँ नीन निपत्ता रहइ। अनासुरती मुनेसरीकें नैहरक एकटा घटना मन पड़लै। घटना मनमे अबिते बाजल-

“तेसराँ, हमरा नैहरमे एक गोरेक घर अहिना बिहाड़िमे खसि पड़लै। घरवारी घरेमे रहए। वेचाराकें चोटो खूम लगलै। डेनो टुटि गेलै

आ कपारो फुटि गेलइ। मुदा रहए कपारक जोरगर जे मरल नहि। कपारक घा तँ छुटि गेलै मुदा डेन नै जुटलै। ओहिना लर-लर करइ। बड़ कष्ट वेचाराकें होइ छइ। अपना खेत-पथार नै रहने बोइन करै छेलइ, मुदा समांग खसने बोहुओ छोड़ि कऽ पड़ा गेलइ। हारि-थाकि कऽ वेचारा भीख मंगैए।”

मुनेसरीक कथा सुनि तेतरीक मनमे दया उपकल। दुनूक मन आरो डरा गेल। जहिना कठियारीसँ घुमै बेर सभ ‘राम-राम सत् है, सबका यही गति है’, बजैत आँगन अबैए, तहिना तेतरियोकें नैहरक घटना मन पड़ल। बाजल-

“एक बेर हमरो नैहरमे बड़का बाढ़ि आएल रहइ। एहेन बाढ़ि कहियो ने देखने रहिऐ। जलखै बेरमे एक गोरे बजलै जे बाढ़ि अबै छै, रोटी पकबैत रही, माए घास करए गेल रहए, रोटी पकाएलो ने भेल आकि घर लग पानि चलि आएल। चूल्हि तरसँ उठि बान्हपर गेलौं आकि देखलिऐ जे चानी जकाँ बाढ़ि पीटने अबैए! धाँइ-धाँइ भीतघर सभ खसए लगलै। लूटना बाध गेल रहए। बाधेसँ दौड़ल आबि घर पैसल। चाउरक कोठीमे लत्तामे बान्हि कऽ रूपैआ रखने रहए, कोठीसँ जहाँ रूपैआ निकालए लगल आकि देहेपर कोठी खसि पड़लै। माटिक गोड़ा भीज कऽ ढील भऽ गेल रहइ। कोठीए तरमे लूटना पड़ि गेल! तरेसँ हल्ला करए लगल। जाबे लोक सभ अबै-अबै ताबे घरो खसि पड़ल। वेचारा तरेमे छटपटा कऽ मरि गेल!”

तेतरीक खिस्सा सुनि मुनेसरी आरो डरा गेल। दुनू दियादिनीक देह थर-थर काँपए लगलै। नीन आरो दूर चलि गेलइ। डरे दुनू बिछानेपर एक कड़सँ दोसर कड़ लगले-लगले उनटए-पुनटए लगल, कियो किछु बजैत नहि। थोड़े कालक पछाइत मुनेसरी बाजल-

“दीदी, हमरा डर होइए।”

मुनेसरीक बात सुनि तेतरियो समर्थन करैत बाजल-

“हँ हइ कनियाँ, हमरो डर होइए। चलह पुबरिये घर। जँ मरबो करब तँ सबतूर संगे मरब।”

कहि उठि कऽ बैस गेल। मुनेसरियो बेटाकें उठबए लगल। बेटो जगले रहै, फुड़फुड़ा कऽ उठल। बिछान समेट तेतरी पाँजमे लेलक आ मुनेसरी बेटाकें कन्हा-लगा पुबरिया ओसारपर पहुँचल। ओसारपर पहुँचते तेतरी जोरसँ बाजल-

“कनी घर खोलू?”

घरेसँ दुनियाँ लाल पुछलक-

“किए, की भेल?”

“ओइ घरमे डर होइए। अही घरमे सभ सूतब।”

“ऐ घरमे हम दुनू भाँइ छी, तखन अहाँ दुनू गोरे केना सूतब?”

“बेर-विपैतमे ई सभ लोक नै बुझै छइ। पहिने घर खोलू।”

फटक खोलि रूप लाल अपन बिछान घुसकौलक। मोख लग डिबिया रखि मुनेसरी बिछान बिछौलक। तखने सिताहल नढ़िया जकाँ सजनाक स्त्री सेहो आँगन पहुँचली।

एकटा बिछानपर दुनू भाँइ दुनियाँ लाल आ दोसर बिछानपर दुनू दियादनी तेतरी बच्चा संग सुतैक ओरियान केलक। दुनियाँ लाल तँ सिरमापर माथ रखि पड़ि रहल मुदा बाँकी गोरे बैसले रहल। बच्चा सेहो सुति रहल। दुनू परानी रूप लालक मनसँ डर हटबे ने करइ। होइ जे फेर ने कहीं देहेपर घर खसि पड़ए।

एक बेर बड़का भुमकम भेल। भुमकम तँ अढ़ाइए-तीन मिनट रहलै मुदा घर-दुआर, गाछ-बिरीछकें तँ खसेबे केलक जे केते लोको दबा-दबा मरल। तीन दिन धरि रहि-रहि केते बेर धरती डोलल। तहिना

होइ जे बड़का झाँट-बिहाड़ि ने चलि गेल, मुदा कहीं छोटका सभ ने फेर घुमि-घुमि आबए। कोन ठेकान, जँ छोटकेसँ बड़को चलि आबए। तँए दुनू गोरेक मन डेराएल छेलइ। ओना, तेतरीक मन सुतैक होइ मुदा सोचए जे पुरुख बैसल रहत आ अपने केना सुति रहब। तहूमे डिबिया जरिते अछि, डिबियो केना मिझाएब? बेर-विपैतमे इजोते मदैतगार होइए। दुनियाँ लालकेँ तमाकुल दैत रूप लाल कहलक-

"भैया, आइ बुझि पड़ल जे अपन सहोदर केहेन होइ छइ?"

ओछाइनपर सँ उठि दुनियाँ लाल आँगनमे थूक फेक मुस्की दैत उत्तर देलक-

"तखन भीन किए भेलँह? तोंही कह जे अपना दुनू गोरे सहोदर भाए छी किने। जखन सहोदरमे मिलान नै रहत तखन आन तँ आने छी। मनुखमे एते बुधि होइ छै, तखन तँ ई गति छै जे भाए-भाएमे दुश्मनी भऽ जाइ छइ। अगर जँ अहिना सभ मनुखमे होइ तखन ओहन मनुखसँ उपकारक कोन आश। ऐसँ नीक तँ गाइए-बरद। जे दूधो दइए आ हरो बहैए।"

दुनियाँ लालक विचार सुनि रूप लाल उठि कऽ आँगनमे थूक फेक कऽ आबि बाजल-

"भैया, धरमागती बात कहै छिअ। दुरागमनक पछाइत जे विदागरी करबैले पठौने रहऽ, ओइ दिनक बात कहै छिअ। अपनो सासु आ टोलोक मौगी सभ आबि कऽ लगमे बैसल। अपना बुझि पड़ए जे जहिना वृन्दावनमे कृष्ण गोपी सबहक संग बैस कऽ गप-सप्प करै छला तहिना हमहूँ छी। एक-मुहरी सभ स्त्रीगण कहए लगल जे अहाँक भाए बड़ छनकट अछि। केतबो कमाएब तँ भाभन्स हुअ देत। अहाँ दुनू परानी कमाएब आ ओ कोसल करत। जखन हाथ-मुट्ठी गरमा जेतै तखन भीन कऽ देत। अखन दुनू परानी जुआन छी, कमाइ-

खटाइ छी। अखन नै किछु बना लेब तँ जखन धिया-पुता हएत खरचा बढ़त, तखन कएल हएत। तँए नीक कहै छी जे अखने भीन भऽ जाउ। नै तँ पाछू पचताएब।"

रूप लालक बात सुनि दुनियाँ लाल ठहाका मारि हँसल। हँसैत ओछाइनपर सँ उठि मुँहक तमाकुल आँगनमे फेक कऽ आबि बुझबैत बाजल-

"कियो जे तोरा किछु कहलकौ आ तूँ मानि गेलें से अपन बुधि केतए गेल छेलौ। तूँ नै देखै छेलही जे दुनू भाँइ संगे बोइन करैले जाइ छेलौं आ आँगनमे भौजाइ भरि दिन अँगना-घरक काज सम्हारि जारैन-काठीक ओरियान करै छेलखुन। तैपर एकटा नाङैरक घास-भूसा, खुऔनाइ-पीऔनाइसँ लऽ कऽ आश्रमी भानस-भात कऽ बरतन-बासन धरि मँजै छेलखुन, से सभ अपना आँखिए नै देखै छेलही। तोंही कह जे सत् बात की छेलै आ मौगी सबहक कान भरने तूँ की बुझलीही!"

अपसोच कऽ मुड़ी डोला रूप लाल मिरमिराइत बाजल-

"हँ भैया, ई तँ ठीके कहै छह।"

"अपने आँखिसँ जे देखै छेलही से झूठ बुझि पड़लौ आ जे झूठ बात सुनलें ओकरा सत् मानि लेलही। एकरे कहै छै मौगयाही भाँज। तोरे जकाँ आनो-आन मौगयाही भाँजमे पड़ि कुल-खानदानक नाक-कान कटबैए। नैहरसँ सासुर जाइ काल जे मौगी सभ कानि-कानि बजैए से की कहै छै से बुझै छीही? ओ कहै छै जे जहिना बाप-माइक घराड़ीपर हम कनै छी, तहिना बाप-दादाक घराड़ीपर घरबलाकेँ कनाएब। अरे! एतबो ने बुझै छीही जे दुनियाँमे सभ कुछ मिलि सकैए मुदा सहोदर भाए नै मिलै छइ। भाइक खातिर लक्ष्मण स्त्री, परिवार आ समाज सभ छोड़ि देलखिन मुदा भाइक संग अन्तिम समए धरि

रहलखिन। आइ तोरा के काज दइले एलौ। कनियोँ जँ हमरा मनमे पाप रहैत तँ तोरा घरेमे मरैले नै छोड़ि दैतियौ। नै तँ झीक-झाकि कऽ ठाठ देहेपर खसा दैतियौ। नइ मरितेँ मुदा हाथो-पएर तँ टुटबे कैरतौ।"

नमहर साँस छोड़ैत रूप लाल अपन सिमसल आँखिकेँ मिड़ैत बाजल-

"भैया, आइ बुझि पड़ैए जे सभ ठकि लेलक!"

"कान पाथि कऽ सुनि-ले। जहिना मनुख सभसँ पैघ जीव ऐ धरतीपर अछि, जे बड़का-बड़का चमत्कारी काजो करैए, तहिना छुतहरो अछि। देखबीही जे जेकरा कनी बुधि-अकील छै ओ सदिकाल बुड़िबक सबहक कमाइ ठकि-ठकि मौजसँ खाइए, खेबेटा नै करैए ओकर बोहु-बेटीक संग कुत्ता-बिलाइ जकाँ इज्जतो संग बेवहार करैए।"

"भैया, आइ बुझि पड़ैए जे हमर बाप मरल नै जीबते अछि।"

पिताक रूपमे अपनाकेँ पाबि दुनियाँ लालक हृदए पसीज गेल। बाजल-

"बौआ, जे समए बीत गेल ओ आब थोड़े घुमि कऽ औत। मुदा जाबे जीबैत रहब, तैबीच जे समए अछि ओ तँ बँचल अछि। हमरा तूँ मोजर दे आकि नै दे मुदा अपन सीमा तँ हमहूँ बुझै छी किने। अपन कमाइ खाइ छी, अपने औरूदे जीबै छी। तइले दोसराक कोन आश। अपन काज दुसैबला नै करब। जँ केकरो नीक कएल नै हएत तँ अधले किए करबै। तोरा प्रति जे काज अछि सएह ने करब।"

"भैया, आब ओंघी पिपनीपर आबि गेल। रातियो बेसी भऽ गेल। तहूँ सूतह आ हमहूँ सुतै छी।"

मुनेसरीक उनटैत-पुनटैत मन थीर भइए ने पबैत। एक दिस अपन पैछला जिनगीक बाट टुटैत देखए, तँ दोसर दिस नव बाटक

बोध नै रहने बोनाह बुझि पड़इ। मुदा दुनियाँ लालक विचार सुनि झलफलाइत बाट जरूर देख पड़ए लगलै, जइसँ मनमे किछु बदलाउ एलइ। जँ नैहरक स्त्रीगणक नीक सिखौल रहैत तँ नीक होइत, से तँ नै भेल..!

मोम जकाँ मुनेसरीक मन पीघलए लगल। मुदा किछु बजैक साहसे ने होइ। जहिना मालती फुलक सुगन्धसँ विषधर साँप लत्तीमे लटपटाइत चेतन शून्य भऽ जाइए, तहिना मुनेसरियोँक हुअ लगल। मने-मन गलती कबूल करैत तेतरीकेँ कहलक-

"दीदी, ई सुतौथ जाँति दइ छिऐन।"

मुनेसरीक बातसँ जेना तेतरीकेँ खौंझ उठल, बाजल-

"तोरा एक्को पाइ लाज-सरम नै छह, जे जइ घरमे पुरुख-पात छैथ तैठाम तूँ जँतबह। एक तँ भगवान विपैत देलैन जे सभ कियो एक घरमे सुतैले एलौं। डिबिया मिझा दहक जइसँ कनी परदा भऽ जाएत आ तहूँ सुति रहऽ।"

'डिबिया मिझाएब' सुनि मुनेसरीक मन तत्-मत् करए लगल जे इजोतमे तँ देखबो करै छी, अन्हारमे की हएत की नै से देखबो करब। मुदा तैयो उठि कऽ डिबिया मिझा कले-बल पड़ि रहल।

ः

शब्द संख्या : 5532

चारि : ख

काल्हिए, दिवालीसँ एक दिन पूर्व, ओठर होइत देख अनुप काली पूजाक हकार दिअ गेल। बहिनोक सासुर, अपनो सासुर आ मात्रिको एक्के डोइरमे। कनी घुमौन रहितो सोचलक जे पहिने बहिन ऐठाम पहुँच हकारो दऽ देबै आ अबैयोले कहि देबइ। मुदा ओइठीन अँटकब नहि। झलफल होइत-होइत सासुर चलि जाएब। रातिमे अँटैक जाएब। किएक तँ अखनो बुड़हीकेँ छैन जे केतबो धड़फड़ाएल रहब तैयो नहियेँ आबए देती। काल्हि भोरे मात्रिक होइत चलि आएब। छोड़ैबला एक्कोटा ने अछि, एक तँ ओहुना बहिनक मनमे होइत हएत जे जाधैर माए-बाप जीबै छला ताधैर ने नैहर छल मुदा भाए-भौजाइ केकर होइ छै जे हम्मर हएत। मुदा हमर बात थोड़े बुझैत हएत जे दू थान महींस अछि ओकरे पाछू भरि दिन तबाह रहै छी। ओहुना तँ सालमे एक दू-बेर अनबे करै छिऐ आ जेबो करिते छिऐ। मुदा तैयो मनमे होइते हेतै जे बिसैर गेल, तँए पहिने ओकरे ऐठाम जाएब।

दोसर दिन दस-एगारह बजे घुमि कऽ अबिते अनुप देखलक जे महींस पाल खाइले बो-बाँ करैए। एक तँ रस्ताक थाकल तैपर सँ महींसकेँ डिरियाइत देख मन तमसा गेलै मुदा लक्ष्मी पाबैन मन पड़िते लगले मनमे खुशी एलइ। हाँइ-हाँइ कऽ खेलक आ महींस लऽ कऽ पारा लग विदा भेल। गाममे पारा नै रहने बगलक गाम पहुँचल।

ओतए पहुँचते पता लगलै अखने एकटा महींसक संग दच्छिन-मुहेँ गेल। फेर ओइ गामसँ दोसर गाम विदा भेल। दोसरो गाममे पता लगलै जे दच्छिन-मुहेँ गेल। जाइत-जाइत चारि बजेमे एकटा गाछीमे महींसमे पाराकेँ लगल देखलक। जेहने देखैमे पारा भारी तेहने नमहर-नमहर सींगो। मरखाहक दुआरे महींसबला महींसकेँ गाछमे बान्हि हटि कऽ बैसल रहए। फरिक्केमे अनुपक महींसकेँ देख पारा दौड़ल। पाराकेँ अबैत देख अनुप हाँइ-हाँइ कऽ एकटा गाछमे महींसकेँ बान्हि, दोसर गाछपर चढ़ि गेल। तैबीच पहिलुका महींसबला अपन महींसक डोरी खोलि ससैर गेल। लग आबि पारा अनुपक महींसकेँ गछाड़ि लेलक। लगले-लगले तीन-चारि मूठ देलकै। मूठ सुतरैत देख अनुपक मन खुशीसँ नाचि उठल। मुदा पारा डरे गाछपर सँ उतरबे ने करए। महींस लग पारा बैस रहल। मुदा महींस ठाढ़े रहल। अनुपक मनमे होइ जे जँ महींसो बैस जाएत तँ ढड़ैक जेतइ। जइसँ पाल सुतरबे ने करत।

साँझ पड़ि गेल। अमावसिया दिन रहने दोसैर साँझ होइत-होइत अन्हार भऽ गेल। अनुपो गाछपर सँ उतैर हटि कऽ बैस गेल। अन्हार देख अनुपक मनमे होइ जे असगरे छी, केना गाम जाएब। तहूमे तेहेन पारा शेतान अछि जे छोड़बो ने करैए। रातिक दस बजि गेल। हवो उठल आ बुन्दा-बुन्दी पानियोँ शुरू भेल। पानि पड़िते पारा महींसकेँ छोड़ि गाम दिस विदा भेल। हवो आ पानियोँ तेज हुअ लगल। एक तँ अन्हरिया राति तैपर सँ पानि-हवा जोर पकड़ने जाइत।

महींसक संग अनुप गाम दिस विदा भेल। कनियेँ आगू बढ़ल आकि झाँट-पानि आरो जोर पकड़ैत गेल। अदहा रस्ता अबैत-अबैत मुसलाधार बरखो आ बिहाड़ियो जोर पकैड़ लेलक। अवग्रहमे अनुप पड़ि गेल। अवग्रहमे पड़ल अनुप सोचए लगल जे आइ नै बँचब। अपटी खेतमे महींसो आ अपनो मरि जाएब। हाथो-हाथ ने सुझैए। ने केतौ एकोटा लोक देखै छी आ ने अपना कोनो इजोत अछि। बीच

पाँतरमे केना जाएब? तहूमे अंगो ने पहिरने छी। देहमे जेहो कपड़ा अछि सेहो भीजिए गेल अछि। जाड़ो होइए।

अनुपकेँ जेना जिनगीक आश टुटि गेल। मन मानि गेलै जे आइ नै बँचब। जखन अपने नै बँचब तखन महींसे कोन काज देत। बुकौर लगि गेलइ। मुदा कानबो के सुनत? बिजलोका देख होइ जे देहेपर ने खसि पड़ए। हवा बन्न भेल। बन्न होइते मनमे आशा जगलै मुदा घनघनौआ बर्खा होइते रहइ। गाम पहुँचैत-पहुँचैत बरखो बन्न भेल। घरपर आबि थरथराइत अवाजमे अनुप घरवालीकेँ कहलक-

"हाथ-पएर कठुआ गेल अछि। कनी घूर करू।"

नसीवलाल महींस बान्हलक। भुलिया अनुपकेँ कहलक-

"जाबे अहाँ धोती फेड़ब ताबे घूरक ओरियान कऽ दइ छी।"

घरवालीक बात तँ अनुप सुनलक मुदा जाड़े-कठुआ कऽ खसि पड़ल। जाड़सँ देह सर्द-सर्द भेल। बोली बन्न भऽ गेलइ। हाँइ-हाँइ कऽ भुलिया फुटलाहा लोहियामे गोरहा-गोइठा तोड़ि-तोड़ि कऽ दऽ मटिया तेल ढारि सलाइ खड़ैर कऽ लगौलक। घूर धधकल। सुनरीकेँ भूलिया कहलक-

"बुच्ची, झब-दे करौछमे चारि ढेकरी थकुचि कऽ लहसुन आ करूतेल ला। अही घूरपर गरमा कऽ सौंसे देह मालिस कऽ देबैन।"

माइक बात सुनि सुनरी चारमे टाँगल लहसुनक मुट्ठीमे सँ एकटा ढेंसर निकालि, दाना छोड़ा सिलौटपर थकुचलक। शीशीसँ करौछमे तेल निकालि घूरपर गरमाबए लगल। तीनू गोरे– पत्नी, बेटा, बेटीक मनमे होइ जे भरिसक कठुआ कऽ मरि गेल। मुदा साँस चलैत देख आशा बनल छेलइ। रसुनतेलासँ तीनू गोरे दुनू तरबो आ दुनू तरहत्थियोकेँ हाथसँ रगड़ए लगल। पान-सात मिनट तक रगड़लापर अनुप आँखि खोलि बाजल-

"जाड़ कनी कम भेल।"

अनुपक बाल सुनि आरो हाँइ-हाँइ तीनू गोरे रगड़ए लगल। तरहत्थी रगड़ब छोड़ि नसीवलाल चानि रगड़ए लगल। मन हल्लुक होइते अनुप बाजल-

"जाड़े छाती दलकैए। कनी चाह बनाउ। जाबे भीतर नै गरमाएत ताबे जाड़ नै छूटत।"

पतिक बात सुनि भुलिया चाह बनबैक ओरियान करए लगल। चाह-पत्ती तँ घरमे रहै मुदा चिन्नी घरमे रहबे ने करइ। एते राति आ एहेन समैमे दोकानसँ चीनी केना आनैत। पतिकेँ भुलिया कहलक-

"चाह पत्ती तँ घरमे अछि मुदा चिन्नी नइए।"

पत्नीक बात सुनि अनुप कहलक-

"चीनी नै अछि तँ नूने दऽ कऽ बना लिअ। एहेन समैमे केतएसँ आनब।"

भुलिया चाह बनबए लगली। बेटाकेँ अनुप कहलक-

"बौआ, कनी थम्हि जा, धोती फेड़ लइ छी।"

कहि उठि कऽ धोती बदैल गंजी पहिरलक। चाहो बनल। स्टीलिया गिलासमे भरि गिलास चाह करीब २५०एम.एल; छानि भुलिया अनुपकेँ देलक। जेहने जड़ाएल देह, तेहने मुँह रहने चाह गर्म बुझिए ने पड़इ। पानियेँ जकाँ घोंटे-घोंट पिबए लगल। अदहा गिलास पीऐत-पीऐत देह गरमेलै। देह गरमाइते हुहुआ कऽ बोखार आबए लगलै। चाह पीऐत-पीऐत बोखार आबि गेलइ। जाड़ हुअ लगलै। ओछाइनेपर पड़ि बेटाकेँ कहलक-

"बौआ, बड़ जाड़ होइए, कनी कम्मर निकालि कऽ ला।"

कम्मर ओढ़ि अनुप पड़ि रहल। मुदा जाड़ कमैक बदला बढ़ले

जाइत रहइ। पुन: अनुप बाजल-

“एकटा कम्मरसँ जाड़ नै कमत। आरो ओढ़ाबह।”

घरक तीनू कम्मर ओढ़िते देह गरमेलै। देह गरमाइते बाजल-

“बौआ, देहसँ खौंत फेकैए।”

‘खौंत’ सुनि भुलिया बाजल-

“सरद-गरम भऽ गेल! एती रातिमे डाकडरो ऐठीम केना पठेबे। तेहेन दुरकाल समए अछि जे ओहो औत आकि नहि।”

निराश होइत अनुप बाजल-

“जँ औरूदा हएत तँ जीबे करब, नै जे रसीद कटि गेल हएत तँ डाक्टरो बुते थोड़बे बाँचब।”

भुलिया-

“महींसक पाछू जे जान गमबै छी तइसँ नीक जे महींसे बेच लेब।”

आशा भरल स्वरमे अनुप बाजल-

“अही महींसक बले तँ दूटा पाइयो देखै छी आ गुजरो करै छी। जँ एकरे बेच लेब तँ जीब केना। जिनगीमे अहिना नीक-अधला समए अबै-जाइ छै, तइले कि काजे छोड़ि देब। मरैक कोनो ठेकान छइ। चलितो काल लोक खसि पड़ैए आ मरि जाइए। तइले महींस किए उपटाएब।”

अही औज-कौल पौरु-साल गाममे किसान गोष्ठी भेल रहए। ओइ गोष्ठीमे जिलोक कृषि-पदाधिकारी आ ब्लौकक पदाधिकारी सभ सेहो आएल रहैथ। ओना गाम-ले पहिल गोष्ठी छेलए। जइमे किसानक दुख-दर्दकें लगसँ देखल गेल रहइ। ओइ दिन गामोक किसानकें सरकारमे अपन भागीदारी बुझि पड़लै। किएक तँ अखन

धरि गामक लोक सरकारक माने कोटाक चीनी आ मटिया तेल धरि बुझै छल। ओना, गोटे-गोटे साल खराँतक गहुमो आबि जाइ छेलइ। मुदा तइमे बदलल रूप गोष्ठीमे रहए। किएक तँ किसानकें चारि श्रेणी- लघु, सीमान्त, मध्यम आ पैघ, किसानक रूपमे विभाजित कऽ सभ-ले सरकारी सुविधाक चरचा भेल। सीमान्त किसानकें एक-तिहाइ माने ३३ प्रतिशत सरकारी सहायताक घोषणा भेल। एक-तिहाइ मदैतसँ लोकमे भरपुर उत्साह जगलै। खेतीक सभ विधा पशुपालन, माछ-पालन तरकारीक खेती, फल-फलहरीक खेतीक संग-संग उन्नैतशील धान, गहुम इत्यादि अन्नक खेतीमे सेहो मदैतक चरचा भेल। एक तिहाइ, माने ३३ प्रतिशत सुविधा पाबि पैघ किसान आ मध्यम किसान-ले छोट-छोट कारोबार आ गाइयो-महींस पोसैक बाट खुजलै।

गोष्ठीक किछुए दिनक पछाइत पंजाब-हरियाणासँ ट्रकक माध्यमसँ बारहटा जर्सी गाए गाममे आएल। ओइमे सँ एकटा कारी रंगक गाए राजेसर सेहो दस हजारमे कीनलक। चारि मास धरि गाए नीक-जकाँ आठ किलो दूध दैत रहलै। मुदा बादमे, चारि मासक पछाइत एकसंझू भऽ गेलइ। जाधैर आठ किलो दूध गाएकें होइत रहलै, ताधैर दुनू परानी राजेसर सेहो हिआ खोलि मेहनैतो करए। ओना दूधारू घासक खेती नै केने रहए। ने सुधा-दाना आ ने कोनो तरहक पौष्टिक आहारक दोकान इलाकामे रहइ। मुदा तैयो राजेसर पुरने ढंगसँ मौसरी आ मकैक दर्रा थोड़-थाड़ गाएकें खुअबैत रहए। छह मास बीतैत-बीतैत गाए बिसैक गेल। बच्छा तरे गाए रहै, तँए गाइयक संख्या तँ नै बढ़लै मुदा जेतबे दिन दूध भेलै ओइसँ गाइक प्रति आकर्षण जरूर बढ़ि गेलइ। किएक तँ अखन धरि गाममे एक्कोटा ओहन गाए नै भेल रहए जेकरा सेर भरिसँ बेसी दूध होइ।

ओना गामक गाइक वंश दिनानुदिन बिगड़ैत गेल। तेकर अनेको कारणमे एकटा कारण ईहो रहइ जे श्राद्ध-कर्ममे तेहेन-तेहेन दब

बच्छाकें दागि साँढ़ बनौल जाइत रहल जे गाइयक खाढ़े नष्ट होइत गेल। बिसकला पछाइत गाए उठबे ने कएल। आठ मास बीतैत-बीतैत राजेसर निराश भऽ गेल। लोककें पुछै तँ कियो-करूतेल पिअबैले कहै, तँ कियो मेनक गोभी खुअबैले कहइ। मुदा गाए उठलै नहि। हारि-थाकि कऽ मधेपुर मबेशी डाक्टरसँ सम्पर्क केलक। गर्भाशय साफ करबैक विचार डाक्टर साहैब देलखिन।

दिवाली दिन राजेसर गाए नेने मधेपुर मबेशी अस्पताल पहुँचल। एकटा बिमार महींस देखैले डाक्टर साहैब भगवानपुर गेल रहैथ। गाएकें ढाठमे बान्हि राजेसर अस्पतालक ओसारपर तौनी बिछा, पड़ि रहल।

सूर्यास्त भेलापर डाक्टर भगवानपुरसँ एला। डेरा अबिते पत्नी कहलकैन-

“एक गोरे दुपहरेसँ भुखे-पियासे गाइक संग बैसल छैथ, पहिने ओ देख लियौ।”

दुपहरक नाओं सुनिते डाक्टर चौंकला। साइकिल रखि पत्नीकें कहलखिन-

“तेहेन बेमारीक भाँजमे पड़ि गेलौं जे छोड़ियो नै सकै छेलौं। मुदा जखन महींस पाउज धऽ खढ़ उठौलक तखन अपनो संतोष भेल आ महींसोबला कहलैन जे आब महींस बँचि गेल। तँए एते अबेर भऽ गेल। मन गरमा गेल अछि पहिने एक लोटा पानि पिआउ आ चाह बनाउ। ताबे कपड़ा बदैल लइ छी।”

चाह पीब डाक्टर राजेसर लग पहुँच, गाएकें देख कहलखिन-

“जँए एते काल बैसलौं तँए अदहा घन्टा आरो समय लगत।”

आशा भरल स्वरमे राजेसर कहलकैन-

“तइले नै कोनो मुदा गाममे तमाशो छी आ अन्हरिया राति सेहो, तँए कनी..।”

ढढीमे गाएकें बन्हबा डाक्टर साफ केलैन। साबुनसँ हाथ धोइ एकटा इन्जेक्शन देलखिन। चारि खोराक गोटी दऽ कहलखिन-

“काज तँ भऽ गेल मुदा आब गाम नै जाउ। एतै रहि जाउ, भोरे दिन-देखार चलि जाएब।”

फीस दैत राजेसर कहलकैन-

“डाक्टर साहैब, अबेरो भेने तँ काज भइए गेल। गाममे मेलो-तमाशा छी तँए चलिए जाएब।”

एक तँ करिया कम्मर जकाँ अन्हार, दोसर कारी खुट-खुट गाए, मने-मन राजेसर सोचलक जे हो-ने-हो कहीं हाथसँ डोरी छुटि जाएत तँ गाए हेराइए जाएत। तँए छोड़मे ससरफानी दऽ अपन गट्टामे बान्हि आगू-आगू गाए आ पाछू-पाछू अपने विदा भेल। थोड़े दूर आगू बढ़ल आकि बुन्दा-बुन्दी पानियोँ आ हवो रसे-रसे जोड़ पकड़ए लगल। हवाक संग-संग घनघनौआ बरखो हुअ लगलै। घरपर अबैत-अबैत जहिना राजेसर तहिना गाइयो जाड़े कठुआ गेल। राति ढहल। गाए टाँग पटकए लगलै। लगले-लगले उठबो-बैसबौ करइ आ बो-बाँ सेहो।

समए तेहेन भऽ गेलै जे पुन: डाक्टर ऐठाम जाइक साहसे ने भेलइ। ने अपना गाममे मबेशी डाक्टर आ ने लग-पासक कोनो गाममे। हारि कऽ करूतेल-मटिया तेल मिला, सौंसे देह औंस बोराक नूरी बना दुनू परानी गाएकें ससारए लगल। थोड़े काल ससारि मरीच पीस करूतेलमे मिला काँइरसँ पिऔलक। मुदा गाइक रोग हटलै नहि। धीरे-धीरे बढ़िते गेलइ। भोरहरबामे खूब जोरसँ डिरिया कऽ गाए मरि गेल। गाएकें मरिते दुनू परानी राजेसर कानए लगल। भोरहरबाक कानब सुनि दुनू परानी डोमन दौग कऽ आएल। अबिते राजेसरकें

डोमन पुछलक-

"भैया, की भेलह?"

डोमनक प्रश्नक उत्तर नै दऽ राजेसर कनिते रहल। लगमे अबिते डोमन देखलक जे चारू पएर छिड़िएने गाए मरल अछि। मुँहपर तरहत्थी दऽ डोमन बाजल-

"भैया, चुप हुअ। कमाइबला बेटा मरलापर लोक सबुर करिते अछि, ई तँ सहजे नाङैर छी।"

डोमनक बात सुनि राजेसर बाजल-

"गाए मरि गेल तेकर दुख ओते ने अछि जेते बैंकक करजाक अछि। एक तँ सरकार लोककेँ मदैत करैए आकि गरदैनमे फाँस लगबैए। जखन गाए नै नेने रही तखन कहलक जे तेकरी सरकार देत आ बाँकी दू हिस्सा बैंकसँ करजा भेटत। काज सुगम देख लेलौं। बुझबे ने केलिऐ जे गरदैनमे फँसरी लगबैए। छूट-ले बैंकबला कहलक जे मधमन्नीसँ कागत आनि कऽ दिअ तखन ओइ रूपैआक मिनहा लोनमे भऽ जाएत। जाबे तक ओ कागत नै देब ताबे तक सोल्होअना रूपैआक सूदि चलैत रहत। अपने देखल-सुनल नहि। कोटक मंशीकेँ जा कऽ सभ बात कहलिऐ तँ ओ तैयार भऽ कऽ ओइ ओफिस गेल। पाछूसँ अपनो गेलौं। ओफिस जखन गेलौं तँ कहलक जे पान साए रूपैआ लगत, तखन कागत देब। अहिना दौड़-बड़हा करैमे हजारसँ ऊपरे खर्च भऽ गेल। रूपैआक किस्त नै देने छेलिऐ। बैंकमे जखन हिसाब करबए लगलौं तँ कहलक जे छह मासक सूदि मूरमे जमा भऽ गेल, आब ओकरो सूदि लगत। तैबीच गाइयो मरि गेल! आब की करब?"

◌

शब्द संख्या : 1944

चारि : ग

दिवालीकेँ शुभ दिन बुझि सुरतिया भोरेसँ दुनू परानी खपड़ाक भट्ठा लगबए लगल। बीस हजार खपड़ाक भट्ठाक मनमे खुशी रहइ। बीचमे थोपुआ आ चारू कात नड़िया खपड़ाक भट्ठा लगौलक। थोपुआ खपड़ा मोट होइ छै तँए कातमे लगौलासँ नीक जकाँ नै पकैए। आमदनीक खुशी मनकेँ तेना खुर-खुरा देने रहै जे दुनू परानीकेँ काजक भीड़ बुझिए ने पड़इ। दुनियाँक सभ किछु बिसैर मन आमदनी देख तरे-तर हँसइ। जहिना कोनो कनैत बच्चाकेँ गुदगुदी लगौलासँ हँसीक लाबा फुटैत, तहिना दुनू परानी सुरतियोकेँ होइ। भट्ठा लगि गेल।

एक तँ सुखार-रौदियाह समए, दोसर कातिक मास। कातिक मासमे चैत-बैशाख जकाँ ने हवा-बिहाड़िक शंका आ ने झाँट-पानिक। तँए ने भट्ठाक ऊपर छाँही देलक आ ने कातमे टाट लगौलक। पहिल साँझ ऊक-बाती फेर सुरतिया भट्ठा लग बैस निंगहारि-निंगहारि देखए लगल जे केतौ किछु छुटि तँ ने गेल। फुलेसरी भानस करए गेल। चूल्हि पजाइर अदहन दइते मनमे उठलै जे अधिक लटारम करैमे बेसी देरी लगत, तइसँ नीक खिचड़ी आ अल्लू चोखा बना लेब। बैसारी लोक ने तरूआ-बगहरूआ बना जीहक चस्की पुरबैए। पाबैने दिन छी तँ की छी। कोनो कि पाबैनेकेँ सीमा-नाङैर छै, जेकरा रहै छै ओ सभ दिन खाइए। खाइए पाछू जे समए बीता लेब तँ खाइक ओरियान केना

हएत।

फेर मनमे उठलै, जे अपने फुरने नै करब हुनको पुछि लइ छिऐन। चूल्हि तरसँ उठि फुलेसरी पति लग आबि पुछलक-

"ओना आइ तँ लक्ष्मी दिन छी, सभ तरूआ-बगहरूआ बनौत, से की विचार।"

सुरतिया मने-मन बीस हजार खपड़ाक दाम जोड़ैत रहए। बारह हजार थोपुआ अछि, जेकर दाम बारह हजार भेल। साए-पचास फुटियो जाएत तैयो, नइ बारह हजार तँ पौने बारहे हजार रहह, आ आठ हजार नड़िया अछि जे आठ साए रूपैए बीकत। ओहूमे पच्चीस-पचास अधपक्कू रहत आकि फुटि-भांगि जाएत, तैयो नइ चौसैठ साए तँ छह हजार हेबे करत। कहुना-कहुना तँ सतरह-अठारह हजार हेबे करत...।

बाजल-

"बुढ़ भऽ गेलौं आ नाक लगले अछि। एतबो नै बुझै छिऐ जे भट्ठा लगौने छी, आगि देबै तँ भरि राति ओगैर कऽ रहए पड़त। जगरनामे अधपेटे खेनाइ नीक होइ छै आकि चढ़ा कऽ। जाउ खिचड़ी आ अल्लू चोखा बना लेब।"

अपन विचारसँ पतिक विचार मिलिते फुलेसरीक मन खुशीसँ नाचि उठल। मुस्कियाइत बाजल-

"पाबैनक दिन छी, तखन..?"

"जाउ-जाउ। जेकरा रहै छै ओकरा लिये सभ दिन होलीए-दिवालीए रहै छै आ जेकरा नइ रहै छै ओकरा लिये सभ दिन एकादसीए।"

खा-पी कऽ फुलेसरी बच्चा सभकेँ सुता देलक। रातिक साढ़े

नअ बजैत रहइ। सुरतिया भट्ठामे मौसरी-दालि छिटैत बाजल-

"जेहेन मौसरी-दालि लाल तेहेन भट्ठा लाले-लाल..!"

कहि आगि देलक। सुखार समए धुधुआ कऽ आगि पजैर गेल। आगिक पजरब देख सुरतिया पत्नीकेँ कहलक-

"ऐ बेरक खपड़ासँ पूजी बढ़ा लेब। दू आदमीकेँ आरो रखि लेब। कहुना-कहुना जँ दसो भट्ठा हाथ लगल तँ लाखक कमाइ भइए जाएत। पूजीए ने पूजी बढ़बै छइ। गाममे देखते छिऐ जे जेकरा दस बीघा जमीन छै ओ अपनो साल भरि खाएत से नइ होइ छइ। हम तँ सहजे नंगा-फरोस छी। तहन तँ लुरिये-बुधि तेहेन अछि जे... ।"

फुलेसरीक बुधिमे पतिक बात नै अँटल। छोट बुधिमे पैघ बात केना अँटैत। मुदा पति-पत्नीक बीच कि कोनो शास्त्रार्थ होइए, सुयोग कविक कविता जकाँ तुक मिलौबैल होइए। विषय-वस्तु किछु रहौ वा नै रहौ मुदा तुकबन्दी जँ नीक रहल तँ ओ श्रेष्ठ कविताक श्रेणीमे आबिए जाइए। पतिक प्रश्नक उत्तर दैत फुलेसरी बाजल-

"ऐ बेर अपनो घरपर खपड़ा दैये देब।"

'अपन घर' सुनि सुरतियाक मनमे उठलै, जहिना घर बनौनिहारकेँ अपना रहैले घर नै रहै छै तहिना तँ हमरो अछि। जाबे विराटनगरमे नोकरी करै छेलौं ताबे पेटो चलैमे कोताहिये होइ छेलए। मुदा आब जँ बेसी कमाइ हुअ लगल तँ घरो बनाइए लेब!

बुन्दा-बुन्दी पानियोँ आ संग-संग हवो उठल। मेघ दिस देख सुरतिया बुदबुदाएल-

"मेघो कहाँ देखै छिऐ। एकटा छोटका टुकड़ी बुझि पड़ैए। नै औत बर्खा। मुदा हवा ने एकभग्गू कऽ दिअए। जँ हवा जोर भेल तँ एक भाग काँचे रहत आ दोसर भाग झाम बना देत।"

हवा तेज होइत गेल आ मेघो पसरैत गेल। पूबसँ वादल आबि-आबि सघन हुअ लगल। जहिना-जहिना बर्खा बढ़ए लगल, तहिना-तहिना हवो बढ़ए लगल। तरतरा कऽ जोरगर बरखो आ बिहाड़ियो आबि गेल। झाँट-पानि देख सुरतियाक आशा राइ-छित्ती भऽ गेल। मास दिनक मेहनतक संग-संग पूजियो[5] नष्ट भऽ गेल। टुटल मने पत्नीकेँ कहलक-

"सभ किछु दुइर भऽ गेल!"

पतिक बात सुनि फुलेसरी गौआँकेँ दोख लगबैत बाजल-

"ई सभ किरदानी गौआँ सबहक छिऐ। जखन गाममे काली-पूजाक अरघेना[6] केलक तँ पहिने भगता बजा पूजा कऽ काली-महरानीसँ वाक् लऽ लैत, से करबे ने केलक आ अपने फुरने पूजा शुरू कऽ देलक! ओकरा सभकेँ की बिगड़लै। देत कियो हरजाना!"

फुलेसरीक जोर-जोरसँ बाजब सुनि सुरतिया डपटैत कहलक-

"यएह सभटा बुझै छइ। राजा-दैवक कोनो ठेकान छइ। केकरो हाथमे छै जे केकरो दोख लगबै छिऐ। कोनो कि अपनेटा नोकसान भेल। केते लोकक घर खसल हेतै, चीज-वौस दुइर भेल हेतै आकि अपनेटा भेल?"

पतिक बात सुनि फुलेसरीक तामस गौआँपर सँ हटि पड़ोसनीपर पहुँचल। पड़ोसनीकेँ गरियाबए लगल-

"तेहेन मरमी मौगी सभ अछि जे अनकर नीक सोहाइ छइ। बेटा दऽ दऽ डानि सीखने अछि आ अनकर गरदैन कटैए। जहिना हमर भट्ठा नोकसान भेल तहिना ओकरो सातो पुरखाकेँ उड़ाहि देबइ।"

[5] गाड़ीक भाड़ा, जनक बोइन, जारैनक दाम इत्यादि।

[6] आराधना

सुरतियाक घरक बगलेमे एकटा मसोमातक घर। जेकरा सभ स्त्रीगण डाइन बुझैत। ओकरे ठेकना-ठेकना फुलेसरी गरियबैत। गारि तँ ओहो मसोमात सुनैत मुदा नाओं नै सुनि कान ठाढ़ केने रहए, जखने नाओं लेत तखने देखा देबइ। केहेन घनिकपन्ना होइ छै से सभ निकालि देबइ।

पत्नीक क्रोध देख सुरतिया सोचलक जे एक तँ जे नोकसान भेल से भेबे कएल तैपर सँ अनेरे झगड़ा सेहो ठाढ़ हएत। हमरासँ कि कमजोर ओ मसोमात अछि। दियादियो बेसी छै आ अपनो दुनू बेटा बुफगर छइ। हो-ने-हो कहीं आबि कऽ मारि ठानि दिअए। तखन तँ पूजियो गेल आ ऊपरसँ मारियो खाएब। पत्नीकेँ पोल्हबैत कहलक-

"की हेतै, कियो कपार लऽ लेत। भगवान जे भोग-पारसमे देने हेता ओ हेबे करत। जे नै देने हेता से अपनो केने थोड़े हएत। तइले एते आगि-अंगोरा होइक कोन काज छइ। नोकसाने की भेल, खपड़ा गलि कऽ माटि हएत, ओकरा फेर खपड़ा पाथि सुखा कऽ भट्ठा लगा लेब। जरनो भीजबे ने कएल ओकरो सुखा लेब। गिरहत सभकेँ देखै छिऐ हर-जन लगा खेती करैए आ बाढ़िमे दहा जाइ छै तँ की ओ मरि जाइए आकि खेती छोड़ि दइए। तहिना हमरो भेल। भगवान समांग देने रहैथ। सभ किछु फेर भऽ जाएत।"

पतिक बात सुनि फुलेसरीक मन थीर भेल। मुदा तैयो मन खौंझाएले रहइ। बाजल-

"भगवानो दुष्टे छैथ। जानि-जानि कऽ गरीबे लोककेँ सतबै छथिन। जहिना ओ करै छथिन तहिना ने हमहूँ सभ करै छिऐन। ने एकोटा उपास करै छी आ ने एको दिन पूजा करै छिऐन।"

पत्नीक बात सुनि मुस्की दैत सुरतिया बाजल-

"अच्छा आब भऽ गेल। जहिना ओ[7] केलैन तहिना अहूँ करिते छिऐन। सधम-बधम भऽ गेल।"

मछुआ सोसाइटी बनने किछु गोरे उठि-बैसल आ किछु गोरे गोपलखत्तामे चलि गेल। ओना सोल्होअना पोखैर सोसाइटीमे अखनो धरि नै गेल अछि मुदा जे गेल ओकर मुआबजा तँ पोखैरबलाकेँ नै भेटल। सोसाइटी बनने नव पनिदार मालिकक जन्म जरूर भऽ गेल। किएक तँ एक गोरेक हाथमे अंचल भरिक पोखैर आबि गेल। जइसँ पर्याप्त उत्पादित पूजी हाथ लगि गेलइ। संग-संग सरकारी खजानाक लूट सेहो शुरू भेल। मनमाना ढंगसँ सोसाइटीक सचिव आ सरकारी तंत्र, दुनू मिलि कऽ गामक अमूल्य पूजी लूटब शुरू केलक।

ओइ सोसाइटीसँ एकेटा पोखैर आ एकटा खानगी पोखैर डेढ़ हजार सलियाना-किस्तपर फुदना माछ पोसैले लेलक। सोसाइटीबला पोखैरक महार, बिनु देख-रेख भेने ढहि-ढुहि कऽ सहीट भऽ गेल छेलइ। मुदा रामधनबला पोखैरक महार, नीक मुँह कान रहने, जीअत छइ।

शुरूहे अखाढ़मे फुदना एकटा वेपारीसँ गंगाक जीरा कीनि सैरातबला पोखैरमे देलक। आ दोसर पोखैरमे तमुरियाक हेचरीसँ जीरा कीनि कऽ आनि देने रहए। गंगाक जीरा रौहु, नैन, भाकुर रहै आ तमुरियाक जीरा, सिल्वरकाफ रहए। सिल्बरकाफ साले भरिमे दू-दू-तीन-तीन किलोक भऽ जाइत, जखन कि रौहु-नैन तँ कम बढ़ै छै मुदा भाकुरक बाढ़ि अधिक होइ छइ। पानिक सतहक हिसाबसँ तीनू माछ रहै छै, तँए तीनू मिला कऽ देल जाइए।

शुरूहे अखाढ़मे जे आद्रामे बर्खा भेल रहै, ओइमे दुनू पोखैर भरि गेल रहए। पोखैरक पानि आ जीराक सुतरब देख दुनू परानी फुदनाक

[7] भगवान

मन चपचप करैत रहइ जे भगवान दुख हेरलैन। कहुना-कहुना तँ बीस हजारसँ ऊपरेक आमदनी हएत। जहिना खूब फड़ल आमक गाछी, खूब उपजल खेत आ खूब दुधगरि गाए बिएलासँ खुशी किसानकेँ होइत, तहिना फुदनो दुनू परानीक मनमे होइ। जइसँ दुनू परानी बेरा-बेरी तीन-तीन बेर पोखैरक घाटपर घन्टा-घन्टा भरि बैस माछक बच्चाकेँ एमहर-सँ-ओमहर हेलैत देखए। घरपर अबैक मने ने होइ।

माछक कारोबारसँ फुदनाक परिवार पहिलेसँ जुड़ल। मखान खर्ड़ब, माछ मारि बेचब, परिवारक जीविका रहइ। मुदा तीन-सलिया रौदी भेने फुदना कण्ठी लऽ लेलक। माछक रोजगार कोन जे माछ खाएबो छोड़ि देलक। माछक गन्ध फुदनाकेँ पहिने नीक लगै मुदा आब जी ओकिऐ लगै छइ। गामक कीर्तन मण्डलीमे शामिल भऽ अष्टयाम, नवाहमे कीर्तन करैले सेहो जाए लगल आ भनडारा सेहो पुरए लगल। लाट लगने एक हाथ हरमुनियाँ आ ढोलक बजौनाइ सेहो सीख लेलक। पाछू-पाछू कीर्तन गबैत-गबैत गौनाइयो सीख लेलक। दाढ़ियो-केश बढ़ा लेलक आ पतलखरीक चानन सेहो करए लगल। समैयो संग देलकै। नव रोजगार ठाढ़ भेल। कीर्तन मण्डलीक सट्टा सेहो हुअ लगलै। काजो हल्लुक आ प्रतिष्ठाक संग-संग खेनाइयो नीक भेटै आ पाइयोक आमदनी नीक भऽ गेलइ। मुदा घरवाली साकठे रहल।

जहिना माछक विन्यास बनबैमे सितिया लूरिगर तहिना खाइयोमे जीविलाहि। गामक छौड़ा सभ आ जनिजातियो सभ, ओकरा बगुला भगत कहैत। घरमे एक्केटा थारी-लोटा रहइ। जहीमे फुदनो खाए आ सितियो। एते बात जरूर रहै जे कहियो फुदना घरवालीकेँ माछ खाइसँ मनाही नै केलक। फुदना देखबो करै जे नैहरसँ सनेसमे माछे अबै छइ। नहियोँ-नहियोँ तँ तीन-चारि खेप मासमे आबिए जाइ छइ। सितियाक पिता माछक कारोबारी छथिन।

पोखैरोबला सभसँ आ मधेपुरोक वेपारीसँ माछ कीनि-कीनि आनि आ नफ्फा लगा कऽ गामे-गामे घुमि कऽ बेच लइ छैथ। जइसँ नीक कमाइ होइ छैन। खेत-पथार तँ नै कीनलैन मुदा नीक जकाँ गुजर करैत घरो नीक बनौने छैथ।

एक दिन फुदनाक सार टुनटुनमा दू किलोक अण्डाएल रौहु नेने एलैन। नमहर-नमहर कुट्टिया काटि सितिया माछ तरए लगल।

माछक सुगन्धसँ फुदनाक मन मचकी जकाँ डोलए लगलै। जहिना शरीरमे पुरन रोग समए पाबि जगि जाइए, तहिना फुदनोकेँ भेल। गरदैनसँ कण्ठी निकालि लाचारीक मुस्की दैत पत्नी लग आबि बाजल-

“दूटा कुट्टिया आ चूड़ा भूजि कऽ नेने आउ?”

पतिक बात सुनि व्यंग करैत सितिया बाजल-

“तीन सालमे केते घाटा भेल से बुझै छिऐ? रौहु माछ खेनिहारकेँ कहियो आँखिक ज्योति कमै छइ। बुढ़ाड़ियो तक ओहिना चक-चक देखैत रहैए। अखन चूल्हि तरसँ केना उठब। घरमे चूड़ा नै अछि। दोकानसँ अदहा किलो नेने आउ। ताबे हम अण्डाकेँ तरै छी।”

जहिना चोरकेँ गरपर रूपैआ देखने देहमे तेजी आबि जाइ छै, तहिना फुदनोकेँ आबि गेल। जेबीसँ दसटकही निकालि दोकान गेल। सात रूपैआमे अदहा किलो चूड़ा कीनि कऽ आबि चूल्हिए लग बैस पत्नीकेँ कहलक-

“ताबे एकटा लाउ।”

सितियाक इच्छा रहबे करइ। अनेरे दुनू परानी दु-दिसाह भेल छी। जइसँ अनेरे सदिकाल रक्का-टोकी होइत रहैए। तरल अण्डा आ चूड़ाक भूजा सितिया पतिकेँ देलक। जहिना कोनो वस्तु अधिक दिनक पछाइत भेटलासँ आनन्द अबैत तहिना फुदनाकेँ माछ-चूड़ा

खाइमे आबए लगल।

फुदना सासुर गेल। ससुरक घरमे धड़ैनपर एकटा छोटका घुमौआ जाल सैंत कऽ रखल देखलक। जाल देख मनमे एलै जे अनेरे ई जाल रखले-रखले दुरि भऽ जाएत, तइसँ नीक जे नेने जाइ। छोटका सारकेँ जाल उतारि देखबैले कहलक। जाल मांगि गाम नेने आएल। गाममे केकरो बुझले नै रहै आ ने केकरो लग बजबे कएल। ओजार देख फुदना तरे-तर खुशी रहए। तेसरे-चारिमे दिनसँ ओ पोखैर सभमे साँझू पहरकेँ चोरा-चोरा माछ मारए लगल। अपनो खाए आ उगरै तँ बेचियो लिअए।

पोखैरबला सभ धपबए लगल। होइत-होइत एक दिन फुदना पकड़ा गेल। तत्काल तँ पोखैरबला किछु नै कहलकै, खाली जाल छीन लेलक। दोसर दिन भोरे पोखैरबला पनचैती बैसौलक। पूर्वासायक जरूरते ने रहै किएक तँ जाले गबाह रहइ। पंच सभ पच्चीस बेर कान पकैड़ कऽ उठै-बैसैले आ एक साए रूपैआ दण्ड केलक। मुदा जाल घुमा देलकै। आँगन अबिते पत्नी मुहेँ-काने खुब दुत्कारलक। पत्नीक बातसँ फुदनाकेँ जानसँ ऊपर ग्लानि भेल। कान पकैड़ बाजल-

“आइ दिनसँ कहियो एहेन काज नै करब।”

पतिक बात सुनि सितिया अपन हौंसली दैत कहलक-

“लिअ, एकरा बन्हकी लगा माछ पोसैले एक-दूटा पोखैरक बनोबस कऽ लिअ। अपन कारोबार रहत, जेते मन हएत खेबो करब आ गुजरो करब।”

दिवाली दिनक घनघोर बर्खासँ सैरातबला पोखैरक माछ दहा गेल। बाधक पानिक सलाढ़ पोखैरमे लगि गेल। बर्खा छुटला पछाइत दुनू परानी फुदना टॉर्चक हाथे माछ देखए गेल। पोखैरक सलाढ़ देख फुदनाकेँ बघजर लगि गेल। बकार बन्न भऽ गेलइ। दुनू हाथ माथपर

लऽ महारपर बैस रहल। टॉर्च नेने सितिया घाटपर जा बारलक तँ एक्कोटा माछ नजैरपर पड़बे ने केएल। माछ नै देख सकदम भऽ गेल। मने मन सोचए लगल जे सभ केलहा डुमि गेल। मुदा गलती अपनो भेल जे महारकेँ बन्हलौं नहि। जँ मोटगर आड़ियो जकाँ मुहकेँ बान्हि देने रहितिऐ तँ एहेन दिन नै देखितौं। मुदा आब सके कोन। जे चलि गेल ओ फेर घुमि कऽ थोड़े औत। घुमि कऽ पति लग आबि चुपचाप ठाढ़ भऽ गेल। फुदना सोचैत, लोक कमा कऽ स्त्रीकेँ गहना-जेबर कीनि-कीनि दैत अछि आ हम एहेन करमघट्टू छी जे जेहो गहना छेलै सेहो पानिमे बोहा देलिऐ। एक तँ माछ भाँसल, तैपर सँ हौंसलियो चलि गेल...।

फुदना किछु बजबे ने करैत। पतिकेँ देख सितिया बाजल-

“माथा-हाथ देलासँ थोड़े माछ घुमि औत। तखन तँ आगू की करब से सोचू। चलू ओहू पोखैरकेँ देखिऐ जे ओहो भँसि गेल आकि बँचल अछि।”

मने-मन फुदना सोचलक, हमर बाजब उचित नै हएत। किएक तँ जनीजाति बेटोसँ पैघ गहनाकेँ बुझैत अछि। तँए वएह कि बजैए सएह सुनी। आगू-आगू टॉर्च नेने सितिया आ पाछू-पाछू चुपचाप फुदना दोसर पोखैर देखए विदा भेल।

पोखैरक चारू महार घुमि कऽ देख मुस्की दैत सितिया बाजल-

“जीरासँ जे किछु आमदनी होइत से तँ नहियेँ हएत। मुदा एक्को पोखैर जँ बँचि गेल तँ अहीसँ दुनू पोखैर अबाद भऽ जाएत।”

पत्नीक बात सुनि फुदना बाजल-

“पहिने तँ भेल जे जहिना ओ पोखैर दहा गेल तहिना ईहो दहा गेल हएत। मुदा भगवान रच्छ रखलैन जे एकटा बँचल अछि। तेते ने जीरा सुतरल अछि जे एकटाकेँ के कहए जे एकटा आरो पोखैर भऽ

जाएत, तेकरो अबादि लेब। जेते छेहर बच्चा रहै छै ओते बेसी बाढ़ि होइ छइ।”

फुदनाक बात सुनि सितियाक मनमे एकटा नव विचार जगलै। मने-मन सोचए लगल जे भने दहार भऽ गेल। कोनो कि हमरेटा पोखैर दहाएल, एहेन-एहेन केते गोरेक दहाएल हेतइ। आब सोसाइटीबला आ पोखैरबला अगधाएत थोड़े, तेहेन पूजी अछि जे पोखैरबला सभ खुशामद करए औत। सस्तेमे दोसरो पोखैर हाथ लगि जाएत। भगवान जहन दइपर होइ छथिन तँ अहिना ने छप्पर फारि कऽ दइ छथिन। बाजल-

“गलती अपनो सबहक भेल जे पोखैरक मुँह मजगूतसँ नै बान्हि देलिऐ। जँ से बान्हल रहैत तँ एहेन दिन थोड़े देखतौं। काल्हि भोरे पाँचटा टल्लाबला जन कऽ कऽ मजगूतसँ मुँह बान्हि देबइ। अखन कातिके छी बहुत समए अछि। बैशाख-जेठमे मछहैर हएत। भने पोखैर उपो-उप भरि गेल।”

पत्नीक बात सुनि फुदना बाजल-

“जँए एते पूजी लगेलौं तँए थोड़े आरो लगा देबइ। दू मन खैर आनि कऽ सेहो दइए देबइ। ओना देखै छिऐ जे केते गोरे खादो दइए। मुदा अपना तँ ओते ओकाइत नइए। ऐ साल कहुना-कहुना कऽ लिअ। ऐगला सालसँ नीक जकाँ करब। कोनो की अग्गह-बिग्गह पोखैरे जोतलासँ थोड़े होइ छै, जेतबे करब नीक जकाँ करब।”

◌

शब्द संख्या : 2373

चारि : घ

कालीपूजा समितिक सदस्य होइक नाते भोला भोरेसँ स्थानक काजमे जुटल रहए। केना नै जुटैत? जे परिवारसँ उठि समाजक काजकेँ अपन काज बुझैत अछि ओ केना ओकरा छोड़ि सकैए। जहिना ब्रह्मक अंश जीव होइत तहिना ने बेकती समाजक अंग छी। स्थानक काजक दुआरे जलखैयो करए भोला घरपर नै आएल। नहेबो नै केलक। हाथ-पएर धोइ खेलक आ पुन: विदा होइत पत्नीकेँ कहलक-

“हमर कोनो ठेकान नै अछि तँए मालो-जाल आ पाबैनोक सभ ओरियान कऽ लेब।”

पानि-बिहाड़ि जखन आएल तखन भोला आ मंगल वृन्दावनक रासक आगूमे ठाढ़ भऽ हियासि-हियासि देखै छला जे केतौ कोनो गड़बड़ी तँ नै भऽ रहल अछि। मुदा तेहेन भयंकर रूपमे पानि-बिहाड़ि आएल जे मनक सभ विचार सबहक मनेमे सड़ि गेल।

मंचक घटना सम्हारि भोला घरपर आबि बीरार देखए गेल। बीरारमे बिहैनक दशा बिगड़ल देख निराश भऽ गेल। आमदनीक आशा टुटि गेलइ।

जहिना भोला छोट किसान तहिना छोट कारोबारियो। पनरहे

कट्ठाक आँट-पेटक किसान। मुदा दुनू परानी एहेन मेहनती जे सात गोरेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलबैत। ओना चारिटा बच्चा लिधुरिया रहै मुदा जेठका बारह बर्खक। बलदेब मिड्ल स्कूलमे पढ़बो करैत आ घर-गिरहस्तीक काजमे संगो-साथ दइत। स्कूलोक दशा तेनाहे सन। पाँच साए विद्यार्थीक स्कूलमे तीनिटा शिक्षक। तहूमे एकटा नेतागिरिये करैत। पढ़बै-लिखबैसँ ओते मतलब नहि, जेते ऑफिसक दौड़-बड़हासँ। सिरिफ लोकेक काजे ऑफिस नै जाए, बल्कि स्टाफो[8] सबहक काज करैत। जइसँ आमदनियोँ नीक आ पैघ लोकक बीच बैस समैयो गूदस करैत। स्कूलसँ ओतबे मतलब जे मासो दिनक हाजरी बना दरमाहा उठबैत। समाजमे केकरो किछु कहैक साहसे नहि। थाना-बहानासँ लऽ कऽ कोट-कचहरी धरिक धुड़फन्दा लोक, तँए कियो आँखि केना उठा सकैए। तहूमे सरकारी पार्टीक नेतागिरी करैत।

स्कूलक ढील-ढालसँ भोला खुशीए रहए। किएक तँ बलदेब माल-जालक पूरा भार उठा नेने। कुट्टी काटब, खाइले देब, पानि पियाएब, घर-बाहर करब, थैर खर्ड़ब, गोबर उठाएब बलदेवक बान्हल ड्यूटी। अइले ने पिताकेँ अढ़बैक जरूरत आ ने कोनो चिन्ता। मुदा तँए की बलदेव पढ़ए नहि? पढ़बो करए। भरि दिन ने माल-जालक नेकरम करै मुदा बारह घन्टाक राति तँ बँचइ। दोसैर साँझ होइते भोला मुस्तैज भऽ धिया-पुता लग बैस नजैर रखैत।

पढ़ैमे बलदेव ओते चन्सगर नहि, रहबो केना करैत? जखन स्कूलेकेँ केन्सर धेने रहत, तखन हाथ-पएर केते क्रियाशील रहत। मुदा तँए कि बलदेव सोलहन्नी भुसकौले रहए से नहि। इमानदारीक छह घन्टाक मेहनतसँ कियो इंजीनियर तँ कियो डाक्टर, कियो ओकील, तँ

[8] सरकारी पदाधिकारी

कियो प्रोफेसर बनि जाइए, तँ तीन घन्टाक मेहनतसँ बलदेव किए ने पास करत। साले-साल किलास टपिते रहए। भोलो खुशी, किएक तँ बच्चेमे बाबाक मुहेँ सुनने रहए जे- ‘उत्तम खेती’।

नोकरी आ गुलामीमे की अन्तर छइ। कमा कऽ जिनगी जीबैक लूरि जँ भऽ जाए तँ ऐसँ बेसीक जरूरते की। जहिना राजतंत्रमे रजेक बेटा राजा होइत तहिना ने प्रजातंत्रोमे मंत्रियेक बेटा मंत्री आ हाकिमेक बेटा ने हाकिम बनत। तइले आनक सेहन्ता, सेहन्ता नै तँ आरो की भऽ सकै छइ?

पनरहे कट्ठा खेत रहितो भोला गामक किसानक गिनतीमे अबैत। खेती करैक अपन ढंग। खाली बरसातेक मसिममे धानक खेती करए, बाँकी समैमे तरकारीक खेती करए। ओना बरसातोक मसिममे पाँचो कट्ठा चौमासमे तरकारीए उपजबैत रहए। बाँकी दसो कट्ठामे कतिका धान करैत रहए।

पिताक अमलदारीमे ओइ दसो कट्ठामे रोहनियाँ-मरूआक बीआ पाड़ि रोपैत आ मरूआ काटि अगहनी धान रोपैत। मुदा मरूआक बिसवासू खेती नै रहइ। गोटे साल पचता पानि भेने बीये बुड़हा जाइ, गोटे साल बेसी बर्खा होइ तँ दहाइए जाइ। किएक तँ मरूआ पनिसहू नै होइए मुदा जइ साल समगम समए होइ तइ साल दसो कट्ठामे दस मन भऽ जाइ। मरूआकेँ किसान पवित्र अन्न मानैए किएक तँ ओइमे सूरा-फाड़ा नै लगै छइ।

ओना, आन-आन पाबैनमे मरूआ अशुद्ध अन्न मानल जाइए मुदा जितिया पाबैनमे शुद्ध भऽ जाइए। जहिना कुमारि कन्या बिआहमे पवित्र मानल जाइए मुदा चुमौनमे बालो-बच्चावाली अपवित्र बनि जाइए। पाबैनक जोड़ो मनुखे जकाँ अछि जहिना कुमार बर-कन्याक बिआहक संग-संग दोती बर-कन्याक बिआह सेहो होइते अछि, तहिना

मरूआक रोटी आ साग, चाहे माछक मिलानसँ जितिया पाबैन होइए। ओना आन-आन पाबैनमे मरूआ, साग आ माछ बर्जित अछि।

धानोक वएह हालत होइत। जइ साल रौदी होइ तइ साल मरहन्ना भऽ जाइत आ जइ साल बेसी बर्खा होइ तइ साल दहा जाइत। समगम समए भेने दसो कट्ठामे दस मन धान भऽ जाइत।

अन्नक खेतीकेँ भोलाक पिता जुआ बुझि खेतियो बदललक आ बीआक कारोबार बढ़ौलक। ओना रामझिमनी, झिमनी, भाटा, मेरिचाइ, सजमैन, घेरा, कदीमा आ सागक बीआ तँ अपने बना लिअए मुदा कोबीक बीआ बनौल नै होइ। हाटो-बजारमे कोबीक गोट्टा-बीआ नै बिकाइत रहए। एक बेर हरिहर क्षेत्रक मेला गेल तँ हाँजीपुरमे कोबीक गोट्टा-बीआ बिकाइत देखलक। दोकानदार लग बैस कोबी बीआक भाँज बुझए लगल। दोकानदार रघुनीकेँ माने भोलाक पिताकेँ कोबी बीआ बनबैक लूरि बता देलक। नीक किस्म बुझि रघुनी सभ कथूक बीआ कीनि लेलक। बीआ कीनला पछाइत दोकानदार “लक्ष्मी सीड” कम्पनीक नाओंसँ पाँचटा पोस्ट-कार्ड दैत बाजल-

“जइ चीजक बीआ कीनैक हुअए ओकर नाओं आ ओजन लिखि कऽ पठा देब। ऐठामसँ हम पार्सल कऽ देब।”

रघुनीक जिनगीमे नव मोड़ आएल। ओइ सालसँ बिहैनक कारोबार करए लगल। पिताक संग-संग भोलो सीख लेलक। पछाइत अपनो तरकारी-खेती आ बीओक कारोबार, करए लगल...।

कृषि मंत्री आ प्रधानमंत्री शास्त्रीजीक नेतृत्वमे खेतीमे हरित क्रान्तिक कार्यक्रम बनल। कार्यक्रम बनैक कारण रहै देशक भूख मेटबैले अमेरिकासँ गहुम कर्ज लेब। औझुका जकाँ ओइ समए जनसंख्यो नै रहै मुदा तैयो पेट भरैमे मकमकीए रहए। जइ देशक

माटिक जोड़ा दुनियाँक कोनो कोणमे नै छै, श्रमशक्ति भरपुर छै, मसिम अनुकूल छै, तैठाम केते लाजिमी बात छी जे ओइ देशक लोक अन्न बिना मरए। जे बात शास्त्रियोजी आ जगजीवनो बाबू बुझि "जय-जवान, जय किसान"क नारा देलैन। खाली नारेटा नै देलैन खेती-ले योजना बना क्रियान्वित सेहो केलैन।

अदौसँ अबैत खेतीमे नव जागरण भेल। हरक जगह ट्रेक्टर, करीनक जगह दमकल-बोरिंगक संग-संग नव-नव औजार किसान तक पहुँचल। नव-नव बीआक अनुसन्धान भेल। कृषिक महत बढ़ने शिक्षाक विकास भेल। उपजा-ले रासायनिक खाद, कीट-नाशक दवाइ इत्यादिक उपयोग शुरू भेल। जइसँ खेतीक उत्पादनमे आश्चर्यजनक वृद्धि भेल। देशक किसानमे नव चेतनाक सिरजन भेल।

मुदा भारत सनक देशमे जेते आ जइ गतिए विकास हेबा चाही से नइ भेल। ओना, जइ राज्यक सरकारोक नजैर आ किसानोक नजैर खेती दिस बढ़ल ओ जरूर विकास प्रक्रियाकेँ पकड़ने रहल। मुदा जइ राज्यमे से नइ भेल ओइ राज्यक कृषि पुन: ठमैक गेल। ओना मिथिलांचलक संग आरो-आरो संकट छइ। जइ कारणेँ विकास-प्रक्रिया आगू बढ़ैक कोन बात, ठमकैक कोन बात जे पाछुए-मुहेँ ससरए लगल। जेकर कारण छेलै बाढ़िक विभीषिका। एहेन-एहेन पहाड़ी धार सभ अछि जे खाली पानिएसँ नाश नै करैत बल्कि खेतक माटि काटि-काटि नव-नव धारो बनबैत अछि आ उपजाउ माटिकेँ सेहो भँसा-भँसा बाउलसँ भरैए। जइसँ खेतक उर्वराशक्तिये चौपट कऽ दैत अछि। नव धार बनने गामो घर उजैर जाइए। खेत-पथार सेहो नष्ट भऽ जाइए, तँए जरूरी अछि धारक ऐ उपद्रवकेँ नियंत्रित करब। जाधैर से नइ हएत ताधैर बिसवासू खेती मात्र कल्पना बनि रहत।

पचास-साइठ वर्ष पूर्व कोसीक पुलमे फाटक लगा दुनू दिस

माने पूवो आ पच्छिमो, नहरक योजना बनल। मुदा अखनो धरि जइ रूपे ओकर उपयोग हेबा चाही से नइ बनि सकल अछि, तेकर अतिरिक्तो सरकारी-उदासीनताक चलैत एहेन बेवस्था बनि गेल अछि जे कोसीए इलाकाक-इलाका दहाइत रहैए।

ओना, कोसीक पुबरियो आ पछबरियो भागमे मुख्य नहर बनल। ओइसँ नहरक शखो सभ सोलहन्नी तँ नै मुदा थोड़-थाड़ सेहो बनि गेल। मुख्य नहरक भीतर सीमेंट-ईंटाक जोड़ाइयो भेल। मुदा बनौनिहारक, ठीकेदारक बदनीयतीसँ तेहेन काज भेल जे जहाँ-तहाँ ढहि-ढहि नहरकेँ भरि देने अछि। नहरक मुख्य बहाव बन्न भेने आ बाढ़िक प्रकोपसँ मुख्य नहर जहाँ-तहाँ टुटितो अछि। ओना, साले-साल मरम्मतो होइत अछि आ टुटितो अछि। मुदा तैयो थोड़-थाड़ लाभ किसानकेँ होइते छइ। जेतए-जेतए पानिक सुविधा उपलब्ध अछि, ओइ-ओइ इलाकाक किसानक जिनगीमे क्रान्ति-कारी बदलाउक सम्भावना बनि गेल अछि। मुदा सरकारी-तंत्रक चलैत जेते लाभ हेबा चाही से नइ भऽ पबैत अछि। ओना शाखा-नहर पूर्णरूपेण तैयारो नै भेल अछि। तहूसँ दुर्भाग्य ई भेल जे पैछला साल कुसहामे पुबरिया बान्ह टुटने पुबरिया इलाका तँ नाश भइए गेल, जे नहरक रूपे-रेखा चौपट भऽ गेल। जइसँ पूर्वतते स्थिति बनि गेल अछि।

कोसीए नहर जकाँ बोरिंग-दमकलक योजनाक दशा सेहो अछि। छोट किसान-ले नब्बे प्रतिशत सब्सिडीमे बोरिंग आ तिहाइ सब्सिडीमे दमकल देब शुरू भेल। मुदा सीमित दायरामे योजना समटा गेल। जइसँ गामक पाँचसँ दस प्रतिशत खेत धरि पानि पहुँचैक सुविधा भेल। मुदा वेपारीक चालिसँ घटिया बोरिंगक पाइप आ घटिया दमकल किसानक हाथ आएल। जे तीन-साल बीतैत-बीतैत सभ बिगैड़ गेल। ने एक्कोटा बोरिंग काजक रहल आ ने दमकल। मुदा बैंकक कर्जक बोझ किसानपर लदले रहल। जे चक्रवृद्धिक दरसँ सुदि

सहित मूलधनक असुलीमे किसानक सिरिफ गाइए-महींस नै खेतो-पथार बीकैत अछि। खेतीक उपजाक कोन बात जे लोकक खेतो हाथसँ निकैल रहल अछि।

जहिना किसान पानि-ले पहिने लल छेलए तहिना फेर भऽ गेल। पानिक चलैत खेतियो पाछुए-मुहेँ ससैर गेल। जे किसान अपन पूजी लगा बोरिंग-दमकल कीनि खेती करै छैथ ओ खादक वेपारी आ बीआ वेपारीक हाथक खेलौना बनि गेल छैथ। घटिया खाद आ घटिया बीआक चलैत हुनको खेतीक हालत आरो चौपट भेल छैन। गोटे साल नीक खाद भेटल तँ बीआ लऽ कऽ डुमि गेल नै जँ बीआ नीक भेटल तँ खाद लऽ कऽ डुमि गेल। खेती चौपट भेने गामक लोक पड़ा कऽ पंजाब, दिल्ली, बम्बइ, कलकत्ता चलि गेल जइसँ गामक-गाम सून भऽ गेल अछि। ओना पाछू घुमि कऽ देखलापर नै बुझि पड़ैत जे मिथिलांचलमे पहिनेसँ कम जनसंख्या अखन अछि, मुदा श्रमशक्तिक अभाव जरूर भऽ गेल अछि। तहिना उपजाउ माटिक सेहो ह्रास भऽ गेल अछि। नीक माटि बाउलमे बदैल गेल अछि। सोलहन्नी तँ नै मुदा अदहा नै तँ तिहाइक दशा जरूर बिगैड़ गेल अछि। जे गाम कहियो अन्नक बखारी छल ओ आइ राजस्थान सदृश मरूभूमि बनि गेल अछि। गाछ-वृक्षसँ सजल गाम वस्त्र-विहीन नारी सदृश बेनग्र भऽ गेल अछि। ओना जेहो बँचल अछि तहूमे पानिक अभाव, खाद बीआक गड़बड़ीसँ नर-कंकाल जकाँ गामक सकल बनि गेल अछि।

सभ किछु होइतो भोला चैनसँ गृहस्ती करैत अछि। आ गृहस्तक गौरवसँ मण्डित अछि। किएक तँ जेते खेतबला पड़ाइन केलक ओ अपन खेत-पथार तँ नै लऽ कऽ गेला। खेत तँ गामेमे रहल। भोला सन-सन खेतिहरकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। अखन धरि जे बटाइ प्रथा छल ओइमे सुधार भेल। पहिने बटेदारकेँ उपजाक अदहा बँटबारा होइ छेलइ। जइसँ बटेदार सदिकाल घाटामे रहै छला।

घाटाक खेती देख बटेदार बटेदारी छोड़ि बोइने-बुत्ताकेँ नीक बुझए लगला। मुदा बटाइमे सुधार भेने मनखपक चलैन भेल। धानक बँटबारा पनरह किलो प्रति कट्ठा जमीनबलाक हिस्सा आ बाँकी बटेदारक। तहिना गहुमोक उपजाक बँटबारा हुअ लगल अछि। तरकारीक खेती सेहो तहिना हुअ लगल अछि।

दुइए बेकती भोला, तँए केते खेती करत। मुदा तैयो एक बीघा बटाइ खेती करैत अछि। ओना अपनो पनरह कट्ठा खेत छइहे। ओइ एक बीघा खेतमे गरमा धान काटि अगते गहुमक खेती कऽ लैत अछि। गहुमो अगते भऽ जाइ छइ। गहुम काटि खेत पटा "पूसा बैशाखी" खेरही कऽ लैत अछि। यएह ओकर फसल चक्र छइ। सालो भरि मारि-धूसि खेबो करैत अछि आ खेतबलाकेँ सेहो दैत अछि।

तरकारीक खेतीमे सेहो सुधार केलक। आब ओ हाँजीपुरक बीआ मंगाएब छोड़ि हाइब्रीड बीआ नामी-गामी कम्पनी सभसँ मंगा अपनो खेती करैत अछि आ बिहैन सेहो बेचैत अछि। जइसँ सभ दिना काज सेहो रहै छै आ आमदनियोँ बढ़ियाँ होइ छइ।

गाममे काली पूजाक मेलाक अन्दाजसँ पनरह घूरमे बीआ पाड़लक। किएक तँ इलाकाक लोक भोलाक बीआकेँ जनैत अछि। सभ जनैत अछि जे भोलाक बीआ सन कोनो वेपारीक बीआ नै होइ छइ। नीक बीआ रहितो आन वेपारीसँ सस्तेमे बेचबो करैत अछि। मुदा ऐ बेर वेचाराकेँ गरदैनकट्टी भऽ गेलइ। तेहेन बर्खा भेल जे चौमासमे दनार फोड़ि देलकै जइसँ सौंसे बीरार माटिसँ भरि गेलइ। बीआक दशा देख भोलाकेँ ठकमुड़ी लगि गेल। मुदा निराश नै भेल। एते आशा रहबे करै जे एक बेरक ने नष्ट भेल। फेर पाड़ि लेब।

ः

शब्द संख्या : 1793

चारि : ङ

दोकानक छिजानैत देख दुनू परानी ललितक मन विचलित भऽ गेल। साल भरिक मेहनतकेँ नष्ट होइत देख सुरजी तुरैछ कऽ पतिकेँ कहलक-

“जेकर बनरी सएह नचाबे। कोन दुरमतिया अहाँकेँ कपारपर चढ़ि गेल जे मिठाइक दोकान केलौं। हलुआइक काज जे आन जाति करत तँ अहिना हेतै किने।”

एक तँ पूजी नष्ट होइत ललित देखए दोसर पत्नीक गनजन सुनि मन थरथर कँपए लगलै। करुआएल मने बाजल-

“कोनो काज कोनो जातिक बान्हल नै छइ। जेकरा जे लूरि रहतै से किए ने ओ काज करत। कोनो की अपनेटा बेरबाद भेल आकि सबहक भेलइ।”

“सबहक किए ने हेतइ। गौँआँ सभ ने अकरहर केलक। बिना काली महरानीक वाक् नेनहियेँ गाममे पूजा किए ठानि देलक। पहिने भगताकेँ बजा पूजा ढारि वाक् लऽ लैत। से तँ केलक नहि। देवियो-दुर्गाकेँ हँसीए-ठट्ठा बुझलक। तँए ने एना भेल।”

पत्नीक बात सुनि ललित मुँह बन्न कऽ चुप्पे रहल।

चारि साल पहिने ललित नोकरी करैले बिराटनगर गेल।

हलुआइक दोकानमे नोकरी भेलइ। पहिने तँ कोनो मिठाइ बनबैक लूरि नै रहै मुदा रहैत-रहैत सभ मिठाइयो आ आनो-आनो चीज बनबैक लूरि भऽ गेलइ। दू सालक पछाइत मनमे एलै जे जखन सभ लूरि भऽ गेल तखन अनेरे किए नोकरी करै छी। से नइ तँ गामेमे जलखैयो आ मिठाइयोक दोकान खोलब।

गाम आबि सोचलक तँ मनमे एलै जे ऐठाम मिठाइ दोकान चलैबला नै अछि। कहियो काल कियो-कियो मिठाइ कीनैए। तइमे दोकान थोड़े चलत। एकटा चाहक दोकान छै ओकरो देखै छिऐ जे सभ दिन उधारी-दुआरे गहिंकी सभसँ झगड़े होइत रहै छइ। फेर घुमि कऽ विराटेनगर जाइक मन भेलइ। मुदा नोकरी करैबला परिवार सबहक दशा देख मन नै मानलकै। मासे-मास रूपैआ पठबैत रहू मुदा घरक कोनो ठर-ठेकान नहि। ने धिया-पुता स्कूल जाइए आ ने घरेवाली कोनो काज करैए। अपने गाममे रहब तँ सभ किछु सुढ़िया जाएत। गामोमे की काजक कमी छइ।

फेर मनमे उठलै जे आब तँ गामोमे तेते भोज-काज होइए जे उठो काज करब तैयो परदेससँ बेसीए कमा लेब। पहिने जकाँ की आब लोक थोड़े भतभोज करैए। आब तँ हर्हियो-सुर्हियो बरियातीकेँ पुड़ी-मिठाइ खुअबैए आ श्राद्धोक भोज मिठाइयेक होइ छइ। हजार-हजार, डेढ़-डेढ़ हजार रूपैआ मिठाइ बनौनिहार लइ छइ। बिआह ने सीजनल होइए। मुदा सराधक तँ कोनो सिजीन नै होइ छइ। दोसरो काज ठाढ़ कऽ लेब आ जइ दिन काज भेटत तइ दिन काजो कऽ लेब। पच्चीसो-पचास काज सालमे पकड़ाएत तैयो पच्चीस-पचास हजारक कमाइ भइए जाएत। पाबैनो आ भारो-दौरमे लोक मिठाइक चलैन केने जा रहल अछि। अखन शुरूआती समए अछि। तँए अबूह बुझि पड़ैए। मुदा जखन काज शुरू करब तखन अनेरे काज बढ़ए लगत। पहिलुका जकाँ तँ आब लोकक हालतो गड़बड़ नहियेँ छइ। पहिने लोककेँ भरि

पेट खेनाइयो ने होइ छेलै मुदा आब तँ से बात नै रहल। जेना-जेना हालत सुधरतै तेना-तेना खेनाइयो-पीनाइ आ आनो-आन काज सुधरतै। तहूमे की सभ गाममे थोड़े हलुआइ अछि। जखने लोक बूझत आकि आनो-आनो गामबला सभ आबि-आबि काज करैले कहत।

सोचैत-विचारैत ललित, गाममे रहि अपन कारोबार करैक निर्णए कऽ लेलक। निर्णए करिते मिठाइ बनबैक सँचो आ बरतनो-जात कीनलक। पाँचे दिनक पछाइत फागुनक लगन पकड़ा गेलइ। बाप रे! एहेन लगन कोनो साल नै भेल छेलइ। पनरह-सोलहटा बिआहक दिन। बुढ़-ठेंर सभ उठि जाएत, तहूमे की कोनो सरकारी नोकरी छी जे जेते दरमाहा तँइ भेल ओतबे रहत। जखने काजक धुमसाही हेतै तखने कारीगरक कमाइ बढ़तै। जहिना कम वस्तु रहने दाम बढ़ैत अछि आ बेसी वस्तु भेने दाम घटैत अछि तहिना, ने कम काज रहने रेट कमत आ बेसी काज भेने रेट बढ़त। टोटल-नफा मिला कऽ ने मासक हिसाब हएत।

सोलहो लगनमे ललित चौबीस हजार रूपैआ कमाएल। तैपर सँ अपूछ खेनाइ-पीनाइक संग किछु-किछु उगरहला समानो भेलइ। मासो दिन व्यस्त रहल। मुदा कमाइक संग एकटा रस्तो भेटलै। ओ ई जे अन्तिम लगनक काज करए गेल तँ घरवारी घरपर नहि। बरियातीक भोजन बनबै आ खुअबै-पिअबैक बरतन भाड़ापर आनए गेल रहए। गप-सप्प करैक समए ललितकेँ भेटल। गप-सप्पक क्रममे बुझलक जे दू हजार रूपैआ बरतन-बासनक भाड़ा लगतै। ललित बाजल तँ किछु ने मुदा मने-मन हिसाब बैसौलक जे जेते दू दिनक मेहनतमे कमाएब ओते तँ बरतने-बासन कमाइत अछि। मनमे जँचि गेलइ।

सभ बरतनक हिसाब जोड़लक तँ बुझि पड़लै जे जेते पूजी

लगाएब ओते नमहर कारोबार हएत। तत्काल तँ ओते पूजियो नइ अछि आ ने समान रखैक जगह। से नइ तँ पहिने एकटा घर बनाएब जरूरी अछि। जखन घर भऽ जाएत, तखन बहुत तँ नइ मुदा एक बरियाती जोकर सभ बरतन-बासन ताबे कीनि लेब, फेर बुझल जेतइ। जेना-जेना पूजी होइत जाएत तेना-तेना कारोबार बढ़बैत जाएब।

नव कारोबार देख ललितक मनमे खुशी एलइ। खुशी अबिते नजैर दौगलै इजोतपर, जेनरेटरपर। मुदा टेन्ट आ जेनरेटर-ले समांग सेहो चाही। असगरूआ बुते केना हएत। अपने कारीगिरी करब आकि ओइमे बरदाएब।

सोचैत-सोचैत मन घुरियाए लगलै। फेर मनमे एलै जे टेन्ट-जेनरेटरमे ने अपन रहब जरूरी अछि मुदा बरतनमे तँ से नइ हएत। गिनती कऽ कऽ देबै आ लेबइ।

साल भरिक उत्तर ललित दोसरो काज ठाढ़ कऽ लेलक। दोहरी कमाइ हुअ लगलै। ललितक आमदनी आ काज देख गामक लोक बाजए लगल जे ललितक कपार जगि गेलइ। केना नै जगैत? सूतल कपार माने बुधिकेँ जगौलासँ ने जगै छइ। जँ से नइ जगाएब तँ ओहिना ने सूतले रहत।

दोहरी कारोबार भेला पछाइतो ललितकेँ किछु समए बैसारी बुझि पड़लै। बैसारी-ले सोचए लगल जे एकरा केना काजमे आनब। अपना खेत-पथार नहि। मुदा संयोग नीक रहल। एक गोरेक माए दुखित पड़ल। वेचाराकेँ लहेरियासराय इलाज करबए जाइक रहैक। ललितक आमदनी गामक सभ बुझए लगल। अपन लाचारी देखबैत मकशूदन ललित लग आबि बाजल-

“भाय, विपैतमे पड़ि गेल छी। माएकेँ तेहेन बेमारी भऽ गेल अछि जे लहेरियासराय लऽ जाए पड़त। तमोरियाक डाक्टरकेँ बेमारी

जँचैक मशीने ने छैन। तँए कहलैन जे बिना लहेरियासराय गेने इलाज नै भऽ सकत।”

मकशूदनक बात सुनि ललित बाजल-

“हमरा की कहै छी। जँ देहक काज हुअए तँ अखने संगे चलब।”

“नहि, समांगक काज नै अछि ललित भाय, रूपैआक जरूरत अछि।”

फेर ओंगरीसँ देखबैत मकशूदन बाजल-

“अहाँक घरे लगहक दसो कट्ठा खेत भरना दऽ देब। पनरह हजार रूपैआ सम्हारि दिअ।”

मकशूदनक मजबुरी देख ललितक मनमे एलै जे बेमारी, आ बच्चा सभकेँ पढ़ैले रीणो-पैंच कऽ कऽ मदैत करैक चाही। एहेन समैक मदैत सिरिफ लेने-देन नहि, घरमक काज सेहो छी। घरसँ पनरहो हजार रूपैआ निकालि कऽ दऽ देलक। रूपैआ लैत मकशूदन बाजल-

“भाय, कागत बना लएह?”

कागतक नाओं सुनि ललित अवाक् भऽ गेल। मने-मन सोचए लगल जे कोनो की केबाला लेलौं हेन जे लिखा-पढ़ी कराएब। भरना-ले लिखा-पढ़ीक कोन जरूरत छइ। समाजमे केतबो छल-प्रपंच आबि गेल मुदा अखनो समाज समाजे छी। गाममे एहेन-एहेन लोक छैथ जे दोसराक बच्चाकेँ पढ़ैमे, इलाजमे, माए-बापक क्रिया-कर्ममे ओहुना मदैत कऽ दइ छथिन, तहन कागत-पत्तर बनबैक कोन जरूरत अछि। जँ मनमे बेइमानी औतैन तँ नै देता। मुदा जमीन तँ हमरो कब्जामे रहत। समाज की ऐ बातकेँ नै बुझता। जँ समाजमे बेइमानी-शैतानी बढ़ि गेल अछि तँ ईहो बात तँ छिपल नै अछि जे केतेको गोरे माइयो-बापकेँ खाइ-पीबैमे तकलीफ करैए। भीन कऽ दैत अछि, ई बेइमानी-

इमानदारी तँ आदमी-आदमीक बीचक विचार अछि।

ऐ नजैरसँ देखलापर मकशूदनकेँ बेइमान केना कहबैन। अपन मुँहक अहार काटि कऽ माइक इलाज करबए जा रहल छैथ। जइ आदमीमे एते इमानदारी छैन, हुनकासँ कागत बनाएब जरूरी नहि। अखनो गाममे ढेरो भरना एहेन अछि जेकर लिखा-पढ़ी नै भेल अछि। जँ बेइमानीए करता तँ अपन माए-पितियाइन बुझि बूझब जे समाज सेवा केलौं। जँ रजिष्ट्री कराएब तँ अदहा खर्च हमरो हएत आ अदहा हुनको हेतैन। बेर-बेगरतामे एक पाइक महत, एक लाखक बरबैर भऽ जाइए।

सोचि-विचारि ललित बाजल-

“भाय, अहाँ माएकेँ इलाज करबयौन। लिखा-पढ़ीक जरूरत नै अछि।”

हाथमे रूपैआ अबिते मकशूदनक मनमे बिसवास जगि गेल जे माइक इलाज हेबे करत। काजोक एहेन संयोग होइए जे नीक होइक रहत तँ कोनो काजमे बाधा नै हएत। मुदा अधला होइक रहत तँ अनेरो काज सभमे ओझरी लगैत रहत।

दस कट्ठा जमीन हाथमे एने ललितक मन खुशीसँ गदगद भऽ गेल। तैबीच सुरजी आबि बाजल-

“जँ फेनो रूपैआ माङैथ तँ फेन देबैन।”

पत्नीक बात सुनि ललितक मन आरो खुशी भऽ गेल। बाजल-

“किए?”

“अहाँ खेत-पथारक बात नै ने बुझै छिऐ। कनीए-कनीए देने जखन बेसी भऽ जाएत तखन कबल्ले लिखा लेब।”

पत्नीक बात सुनि एकाएक ललितक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि

गेल। बुदबुदाएल-

“देखू ऐ दुनियाँक रीति। एक घर कानै एक घर गीत।”

तुरैछ कऽ बाजल-

“जखन किछु बुझैक हएत तखन पुछि लेब। जाउ, अँगना-घरक काज देखू गऽ।”

सुरजी चलि गेल। ललित सोचए लगल जे पहिने अनका खेतमे काज करै छेलौं, जे अढ़ा दइ छल से कऽ दइ छेलिऐ। काजक ने लूरि अछि मुदा काजेक लूरि भेने तँ लोक गिरहस्त नै ने बनि जाइए। गिरहस्ती-ले काजक लूरिक संग कोन समए कोन चीजक खेती हएत सेहो बूझब जरूरी अछि। तेतबे नहि, केहेन समए भेने केहेन खेती कएल जाएत। केतेको प्रश्न अछि।

फेर ललितक मनमे एलै जे खेत तँ बड़ सुन्दर अछि, घरे लग अछि आ बगलमे बोरिंगो छइ। तँए एहेन खेती करब जे अधिक-सँ-अधिक उपजा हएत। बारह मासक साल होइ छइ। साल भरिपर मसिम बदलैए। जहिना-जहिना मसिम बदलत तहिना-तहिना खेतियो माने फसलो बदलब। नीक हएत जे पहिने गरमा धानक खेती कऽ लेब, जे चारि मासमे भऽ जाएत। धान काटि अल्लुक खेती कऽ लेब, जे तीन मासमे भऽ जाएत। अल्लु उखारि पिऔज कऽ लेब, जे बैशाख अबैत-अबैत भऽ जाएत। कमो खेत रहने बेसी उपजा हएत। संगे आरो कारोबार सभ अछि, कारीगरो छी, बेसी समैयो ने बँचैए।

गाममे मेला भेने ललित मिठाइक बढ़ियाँ दोकान केलक। मुदा झाँट-पानिक दुआरे बनौल मिठाइयो आ समानो सभ दुइर भऽ गेलइ। मुदा सबहक क्षति देख ललितक मन घबड़ाएल नहि। कोनो की कर्जा लऽ कऽ दोकान केने छी जे एक दिस सभ नोकसान भेल आ दोसर दिस महाजन कपारपर चढ़त। भरि राति दोकानेक चीज-वौस सम्हारैमे

दुनू परानीकेँ लगि गेल।

पाँच दिन पहिने ललित दसो कट्ठामे कुफरी अलंकार अल्लु रोपने रहए। समस्तीपुरसँ बीआ अनने रहए। भोरमे जखन खेत देखलक तँ ठेहुन भरि पानि खेतमे, देखते निराश भऽ गेल। एक तँ दोकानक पूजी नष्ट भऽ गेलै, दोसर खेतियो डुमि गेल। सभ अल्लू माटिए तरमे सड़ि जाएत। तेते पानि लगल अछि जे मास दिन जोतैयो जोकर नै हएत जे दोहराइयो कऽ रोपि लेब।

खेतसँ आबि ललित पेटकान लाधि देलक। मनमे एलै, छह मासक कमाइ डुमि गेल। मुदा फेर हूबा केलक जे अही सबहक संग की अपनो पराण गमा लेब। जहिना सभकेँ भेल, तहिना हमरो भेल। जहिना सभ दिन काटत, तहिना हमहूँ काटब। तइले अनेरे सोगा कऽ की हएत।

◌

शब्द संख्या : 1609

पाँच

भरि राति जहिना गामक लोक जगले रहि गेल तहिना मेलो देखनिहार आ दोकानो-दौरी केनिहार जगले रहल। मुदा अपनापर सभकें अचरज लगै जे राति सुतैबला छी ओइमे केना दिनोसँ बेसी काज केलौं। अन्हार गुप-गुप राति, ने इजोत आ ने चान। अमावसियो ओहन जइमे घनघोर करिया-वादल आबि आरो अन्हार कऽ देने। आध पहर रातिए-सँ दोकानदारो आ नाचो-तमाशाबला भागए लगल। ओना, गाड़ी-सवारीक अभाव गाममे मुदा मोबाइल जे ने करए। राता◌-राती केतएसँ ओते गाड़ी आबि भोर होइत-होइत कदबा कएल खेत जकाँ बना देलक से नै कहि।

गौआँ-अनगौआँ सभ अपन-अपन जान बँचल देख खुशी छल। अपन-अपन समांगक गिनती करै काल कियो-कियो खुशियो आ कियो-कियो समांगसँ लऽ कऽ आनो-आनो चीजक नोकसान देख कम-सँ-बेसी धरि दुखियो छल। मुदा दैवक डांग देबाक शक्ति नै बुझि अपन-अपन भाग्यकें कोसि कने-मने बेथितो छल। वृन्दावनक रास, मुजफ्फरपुरक नाटक, मेल-फिमेल कौव्वाली आ महिंसोंथाक मलिनियाँ नाच पार्टी, चारू पार्टी अदहा-अदहा रूपैआ पहिनहि, माने सट्टे बनबै काल लऽ नेने रहए, तँए कमिटिक भेँट करब जरूरी नै बुझि अनरोखे डेरा तोड़ि लेलक। कारण रहै जे स्टेजबला घटना सभकें

थरथरी पैसैने छेलइ। जखने घटना भेल तखने थाना-बाहानक दौग-धूप शुरू हएत। जखने दौग-धूप शुरू हएत तखने जे फाँटिपर पड़त, जहलक हवा खाएत..! तइमे नीक जे कनी थाले-खिचार ने छै, जान बँचत तँ देहेक साबुनसँ कपड़ो खीचि लेब। मुदा ऐठामसँ पड़ाएबे नीक हएत...।

तहिना बनियौं-बेकाल सोचैत, एक तँ पूजी गेल तैपर सँ अनेरे कोट-कचहरीमे जे बरदाएब, तइसँ नीक जे बँचल रहब तँ कमा लेब।

अनगौआँक-तँ-अनगौआँ बुझए मुदा गामक गिनतीमे देवनाथ आ जोगिन्दर कमैत रहए। रातिए दुनू मरि गेल आकि पड़ा गेल, ई बात मंगलक मनकें झकझोड़ैत रहैन।

गाममे जेते पाहुन-परक आएल रहैथ सबहक मनमे होइत रहैन जे केतए एलौं तँ केतौ नहि। तैपर सँ जहिना झाँट-पानिमे गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनीकें होइत, तहिना पहुनाइ करैबला पाहुन सभकें होइत रहैन मुदा कहथिन केकरा आ सुनतैन के? लोक अँगना-घरक टाट-फरक सोझरौत आकि...।

ओना जेठक रौदमे तपल धरतीपर बिहड़िया हाल भेने जेहेन सुगन्ध माटिसँ निकलैत तेहेन नहि। कोन दोग देने जाड़ो चलि आएल सेहो ने कियो देखलक।

जहिना जवानीक आगमनसँ शरीर सभ अंगक सौन्दर्य छिटका अपना दिस आकर्षित करैत, तहिना धरतियोक पियाससँ जरल मन छाँक भरि पानि पिबते शक्ति पाबि आलिंगन-ले दुनू बाँहि पसारि अपन प्रियतमकें[9] बरहमासा सुनबए लगल।

पियाससँ सुखाइत किसानोक कण्ठ पानि पिबते तृप्त भऽ

[9] किसानकें

प्रियतम दिस आँखि उठा-उठा देखए लगला। देखए लगल जे अखन धरि पियाससँ मरनासन्न भऽ गेल छेली, एकाएक आब ओ केते शक्तिवान भऽ गेली जे नव सिरजनक शक्तिसँ लऽ कऽ सुखाएल-जरल जजात तकमे जान फूकि देलैन।

अखन धरि गामक किसान धानक खेतीमे बँटाएल छैथ। बँटेबाक अनेको कारणमे दू कारण प्रमुख अछि। पहिल, खेतक बनाबट आ मनक सोच। दोसर, साबीकसँ अबैत खेती, उपजबैक ढंग आ आधुनिक वैज्ञानिक ढंग।

जैठाम अदौसँ अबैत खेती रासायनिक खाद, समुचित पानि माने पटबन आ उन्नत बीआक संग नव तकनीकक माने नव लूरिक अभावमे पाछुए-मुहें लुढ़कैत गेल अछि, ओकरा आगू-मुहें केना बढ़ौल जाए, ई मूल प्रश्न सबहक सोझहामे ठाढ़ अछिए।

देशक बढ़ैत जनसंख्या की खाएत, ई विचार तँ खेतक मालिके माने किसानेकें करए पड़तैन। मुदा किसानो तँ खेतकें खतियाने-दस्ताबेज धरि बुझै छैथ..! जखन कि, एहेन परिस्थितिमे हमरा की करए पड़त, ई ने बुझए पड़तैन। ओना, नै बुझैक अनेको कारणमे एकटा ईहो अछि जे चाहे जे कोनो प्रचार माध्यम् हुअए वा प्रवचन देनिहार, ओ अखन धरि किसानक स्वरूपकें झाँपि कऽ रखने छैथ। जेकरा इमानदारीसँ किसानक बीच रखए पड़त। जँ से नइ तँ छह साए बरख पूर्व, जे लगभग पच्चीसो पीढ़ी होएत, तुलसीदास 'विनय पत्रिका'मे समाजक दशा देखलैन- 'खेती न किसान को..।'

जँ किसानक खेती मरि जाए, वेपारीक वेपार तँ भिखमंगोकें के भीख दऽ सकत? जँ भिखारीकें भीख नै भेटैन तँ पार्वती महादेव सन भिखमंगाक संग कए दिन रहती?

प्रश्न मात्र खेतियेक नै जीवनक छी। आइक जेहेन समए भऽ

गेल अछि ओइ अनुकूल जाधैर अपनाकें नै बनाएब, समैक संग नै चलब ताधैर बच्चा जकाँ लुढ़ैक-लुढ़ैक खसिते रहब। मुदा समैक संगो हएब धिया-पुताक खेल नहि। धरतीपर सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुख रहितो एक-दोसरसँ करोड़ो कोस हटल छी। जहिना विशाल बोनमे लाखो-करोड़ो प्रकारक गाछ-बिरीछसँ लऽ कऽ झार-झूरसँ लऽ कऽ माटिमे सटल घास धरि रहैए तहिना मनुखोक बोनमे अछि। एक दिस अज्ञानक अन्तिम छोड़पर रहनिहार तँ दोसर दिस चानपर बास करैबला। मुदा जहिना बोनमे छोटसँ छोट जन्तुसँ लऽ कऽ बाघ, सिंह, हाथी धरिक भोजनो आ रहैयोक बेवस्था अछि, तहिना ने मनुखोक बोनमे अछि। अनेको तरहक बाट आ विचार अदौसँ अबैत रहल अछि। एक पुरुख-नारीक सम्बन्धकें धर्मक श्रेणीमे रखनिहार अपनहि निअम तोड़ि निआमक छैथ। जिनकर देखा-देखी बढ़िते गेल अछि। जइसँ सदिकाल नव-नव विचारक संग नव-नव बाट बनि रहल अछि। मुदा जहिना समुद्रमे अमूल्य रत्नसँ लऽ कऽ घोंघा-सितुआ-धरि आनन्दसँ रहैए, तहिना ने समाजोमे अछि। मुदा तँए की सघन खरहोरिमे चलनिहार नै छैथ? जरूर छैथ। जे खरहोरिमे एक इंच खाली जगह नइ रहनौं खढ़क गाछकें दुनू हाथे बिहिया-बिहिया एक भागसँ दोसर भाग पार करिते छैथ! आइक सघन जिनगी एहने भऽ गेल अछि। मुदा प्रश्न उठैत जे सीना तानि आगू-मुहें बढ़ल जाए आकि पीठ देखा पाछू-मुहें ससरल जाए?

जाधैर सीना तानि आगू-मुहें नै बढ़ब ताधैर असीम शान्तिक गाछ लग केना पहुँचब? जँ से नइ पहुँचब तँ अनेरे किए अन-पानिकें दुइर करै छिऐ। जिनगीक सफलताक सर्टिफिकेट सिरिफ कठिन साधनासँ भेटै छै, नै कि कट-पीस रस्तासँ। जाधैर असीम शान्ति नै पाएब ताधैर जिनगीक सफलताक सर्टिफिकेट केना पाबि सकब?

मेघौन रहने सुरूज अबेर कऽ ओछानि छोड़लैन। मुदा तँए की

अकासमे उड़ब चिड़ै बिसैर गेल। गोसाँइकेँ जगबैत ढोलिया गोवर्धन पूजा करबए गाम दिस विदा भेल। मनमे खुशी। किएक नै खुशी रहतै, खेत जोतनिहार-किसानसँ लऽ कऽ गाए पोसनिहार किसान धरिकेँ ऐठाम जेबाक छै किने। आमदनियोँ नमहर तँ मेहनैतो कम नहि। गोवर्धन पूजा-ले कियो करमी लत्तीक भाँजमे तँ कियो ठेका-गरदामीक ओरियानमे जुटल। कियो दोकानसँ रंग आनि गरदामी रंगैत तँ कियो रंग-बिरंगक गाछ-पात-बुट्टीक ओरियान, सोनहाउन-ले करैत। स्त्रीगण सभ भिने बताहि भऽ गोधन महराजक संग-संग धान-मरूआक बखारी बनबैत। मुदा मनमे एकटा शंका रहबे करैन जे ढोलिया ने कहीं पहिनहि आबि जाए। वेचाराकेँ सौंसे गाम घुमए पड़तै आकि कोनो हमरे ऐठाम भरि दिन रहने पेट भरतै। कियो खरिहाँन बनबै पाछू बेहाल तँ कियो जन-बोनिहार मिलि चाह-पान करैत।

ओना समैक फेरमे पड़ि कियो भोरमे सूप नै बजौलैन। हो-ने-हो दरिदरा कहीं निर्विरोध सालो भरिले फेर ने रहिए जाए। मुदा साले-साल सूप बजा-बजा भगेनौं तँ रहिए जाइए, जहिना परशुराम क्षत्रियकेँ मेटबैले दर्जनो बेर सामुहिक हत्या केलैन मुदा तैयो क्षत्रिय रहिए गेला। हो-ने-हो कहीं एहने जिबठगर दरिदरोहो ने तँ अछि..?

झाँट-पानिक चलैत काली-पूजाक जे दशा भेल ओ तँ भेबे कएल जे केतेको समस्या समाजक बीच आनि कऽ रखि देलक। जहिना घर बन्है काल एक-एक वस्तुक ओरियान करए पड़ैत तहिना घरक करइ पड़त।

साइकिल उठा मंगल काली-पूजा समितिक बैसार करैले समितिक सदस्य-सबहक ऐठाम विदा भेला। सभसँ पहिने देवनाथ ऐठाम पहुँचला। देवनाथकेँ दरबज्जापर नै देख जोरसँ सोर पाड़लैन-

"देवनाथ जी, औ देवनाथ जी..?"

मुदा कारकौआ धरिक कुचरब नै सुनि पुन: दोहरौलैन-

"देवनाथ जी, यौ देवनाथ जी..?"

देवनाथक नाओं सुनि पत्नी आँगनसँ निकैल, बजली-

"काल्हि बेरू पहर जे घरपर सँ निकलला ओ अखन धरि कहाँ एला हेन। कालीए स्थानमे छैथ।"

काली स्थानक नाओं सुनि मंगल चौंकैत बजला-

"कालीए स्थानमे बैसार छी, वएह कहैले आएल रहौं। जँ ओतै हेता तँ भेँटे भऽ जेता नै जँ घरपर आबि जाथि तँ कहि देबैन।"

कहि मंगल जोगिन्दर ऐठाम एला। ओकरो पता नहि। बीसो सदस्य ओइठाम पहुँच मंगल घरपर आबि साइकिल रखि काली स्थान विदा भेला।

एका-एकी एगारह गोरे काली स्थान पहुँचला। गप-सप्प शुरू भेल। जीबछ मंगलकेँ पुछलखिन-

"सिंहेसर भाय किए ने एला?"

जीबछक बात सुनि मंगल बजला-

"ओ तँ घरोपर नै छला। घुरए लगलौं तँ माए भेटली। पुछलयैन तँ वएह कहलैन- 'आध पहर रातिए खाटपर टाँगि दुखाकेँ डाक्टर ऐठीन लऽ गेलइ।"

"की भेलै दुखा काकाकेँ?"

"वएह कहलैन जे ओहो मेले देखए गेल रहए। जखन पानि-बिहाड़ि आएल तँ घरपर पड़ाएल। रस्तामे एकटा घुच्चीमे पएर पड़ि गेलै, खसि पड़ल। ठेहुने टुटि गेलइ।"

'ठेहुन टुटब' सुनि अपसोच करैत जीबछ बजला-

"बाप रे! जुलुम भऽ गेलइ। वेचाराकेँ ने अपना बेटा छै आ

बेटियो सासुरेमे रहै छइ। घरोवाली हफ्सियेक रोगी छथिन। हे भगवान! तहूँ बड़ अन्यायी छह। जेकरा दुख दइ छहक ओकरा मुरदा जकाँ एक-एकटा चेरा चढ़ैबते रहै छह। हम तँ बुझबे ने केलिऐ नै तँ इलाजक खर्च मदैत कऽ दैतिऐ। नीक केलक सिंहेसर। एहेन-एहेन बेरपर जे बेटा समाजमे ठाढ़ हएत, वएह ने भारत माताक सपूतक प्रथम श्रेणीमे औत।"

मंगल-

"जीबछ भाय, हमहूँ तँ बहुत नहियेँ पढ़ने छी, किएक तँ स्कूल-कौलेजमे लोक परीक्षा पास करैले पढ़ैए। ज्ञानक पाठ तँ जिनगीमे उतरला बाद पढ़ैए। जे काज सिंहेश्वर भाय करए गेला ओ आइक समाजक मांग छी। मुदा एहेन-एहेन काज करैबला बेटा अदौसँ जन्म लैत आएल अछि। समाजक मुख्य सेवा[10]मे एहेन-एहेन काजकेँ रखल गेल अछि। जे सेवा अदौसँ चन्दनक गाछ जकाँ जन्म लऽ बढ़ैत-बढ़ैत फुलाइत-फड़ैत रहल ओ ठमैक कऽ मौला रहल अछि, सुखि रहल अछि। सुखिए नै रहल अछि ऐ गतिए सुखि रहल अछि जे किछु दिनक पछाइत कोकैन कऽ उकैन जाएत!"

मंगलक बात जीबछ दुनू कान ठाढ़ केने आँखि चिआरि कऽ मुँह बौने सुनै छला। जहिना मुहसँ नीक वस्तु खेलापर मनमे खुशी होइत, कानसँ सुनलापर मुहकेँ हँसेबो करैत आ हृदैकेँ गुदगुदेबो करैत, आँखि विवेकक आँखिकेँ सेवा करए पहुँच जाइत, तहिना जीबछोकेँ मंगल बातसँ भेल। बाजल-

"भाँइमे कियो दादा हुअए! बच्चा, भलेँ उमेरमे बेसी छिअ मुदा भऽ गेलिअ बगुरक गाछ जकाँ, जे जहिए-सँ जनमलौं तहिए-सँ काँट-कूशमे गना गेलौं। गिनतीए हिसाबसँ काजो भेल। मुदा आब समाजक

[10] समाज सेवाक मुख्य कर्तव्य

एक खुट्टाक रूपमे जिनगी बिताएब। जइ स्थानकेँ भगवान[11] मारि देलखिन, ओइ स्थान[12]पर बैसल छी। अपना सबहक पुरना राजा[13] केहेन छेलखिन।"

मंगल बजला-

"ओ ओहन राजा छला जे एक-एक आदमीक जिनगीमे पैसल रहैथ। एते सिपाही रखने छला जे समैक हिसाबसँ कियो आगू-पाछू नै हुअए तैपर सदिकाल आँखि गड़ौने रहै छला।"

"हुनकर फुलवाड़ी केहेन छेलैन?"

"हुनकर फुलवाड़ीक जोड़ा दुनियाँक कोनो राजा नै लगा सकला। ओना, किछु राजा जरूर अपन धन, बल, जन लगौने छैथ।"

"फुलवाड़ीक गाछ सभ केहेन छइ?"

"फुलवाड़ीक बीचमे विवेकक गाछ छइ। विवेकक बगलेमे मन आ बुधिक गाछ छइ। तेकर काते-कात सेवाक गाछ छै, जे सदिकाल हरीक हरिअरीपर नजैर रखैए।"

मंगलक बात सुनि भुवन बजला-

"मंगल, काल्हि धरि समाजक जइ काजमे लगल छेलौं, नीक आकि बेजए, सम्पन्न भऽ गेल। अखन जे गाम तहस-नहस भऽ गेल अछि, पहिने ओकरा देखैक अछि। जखने झाँट आएल तखने किछु-ने-किछु सभकेँ झँटनहियेँ हएत। सतनाकेँ सेहो नहियेँ देखै छिऐ?"

"रस्ते कातमे ओकर जामुनक गाछ छेलै सएह रस्तेपर खसि पड़लै। रस्ते बन्न भऽ गेल छै, तेकरे काटै-खोंटैले गेल।"

[11] झाँट-पानि

[12] श्मशान महादेवक साधना स्थल

[13] पौराणिक राजा जनक

"निरधन किए ने आएल?"

"ओकरा तँ आरो बड़का फेड़ा लगि गेलइ। चारिये कट्ठा अपना खेत छइ। जइमे कतिका धान केने अछि। गहींरगर खेत छै धान सुतैर गेलइ। कालीए पूजा दुआरे पाकल धान खेतेमे रहलै, नइ कटलक। एक तँ बौना धान, दोसर ऊपरका खेत सबहक पानि ओलैर कऽ चलि गेल। निपुआंग धान डुमि गेलइ। पानियोँ बहैबला नहियेँ छइ। तहूमे अगहनी धान तँ कनी डँटगरो होइ छै मुदा गरमा तँ गरमे छी।"

"झोलिया किए ने आएल?"

"एक्केटा घर छै सेहो खसि पड़लै। घरक सभ किछु भीज गेल छइ। ओकरे सम्हारैमे लगल अछि।"

एक्के बेर सभ बाजल-

"जेतबे गोरे आएल छी ओतबे गोरे विचारि लिअ। जे सभ नै एला, हुनका सभकेँ कहि विचार बुझि लेब।"

साठिक दशक। किसानक बीच भारी भुमकम भेल। जहिना अनुकूल वातावरण बनने भारी बर्खा, भुमकम आ अन्हड़-तूफान अबैत तहिना खेतपर ठाढ़ रहैबलाक बीच भेल। एक दिस आजादीक दिवाना गाम-गाम जन्म लऽ अंग्रेज भगौलक तँ दोसर दिस समाज सेवा करए आगू सेहो आएल। देश भक्त सिपाही पर्याप्त देशक भीतर तैनात भऽ गेला। अंग्रेज भगौलहा-फलक गाछ सोझमे छेलैन। केना नै दोसरो-तेसरो गाछ रोपैले तैयार होएब? दुनियाँक जेते जीव-जन्तु अछि। सभ सुखसँ जिनगी बितबए चाहैए। मनुख तँ सहजे मनुख छैथ, सभ जीवसँ ऊपर। ओ की नै बुझै छैथ जे प्रशान्त सुख पाबि लोक आध्यात्मिक पुरुष बनि सकैए। के नइ चाहता जे मातृभूमि स्वर्गोसँ सुन्दर बनए।

एक दिस जमीन प्रतिष्ठाक मूल अधार बनि चुकल अछि तँ

दोसर दिस राजा-रजबारक अन्त भेने मालगुजारीक शासन समाप्त होइतिक फल सोझमे आबि गेल। राजशाही अन्त भेने रसीदक माध्यमसँ औना-पौना दाममे जमीन बीकए लगल। बकास्त जमीनक लड़ाइ गाम-गाममे शुरू भेल। एक जबरदस भूखण्डमे बटाइदारी आन्दोलन- 'जे जमीनकेँ जोते-कोड़े ओ जमीनक मालिक छी'क नारा अकासमे उठल। धरती अपन जीवन-ले बलि मंगै छैथ, से भेल। सिकमी बटाइक कानून बनि लागू भेल। जेतए बटेदार तैयार भेल ओतए बटाइदारी हक भेटल। जेतए तैयार नै भेल ओतए अखनो लटकले अछि।

आम जमीन सभपर दसनामा संस्था सभ ठाढ़ हुअ लगल। स्कूल, अस्पताल बनए लगल। मनुखक मूल समस्या दिस जनमानसक नजैर दौड़ल। जइसँ तियाग-भावनाक जन्म भेल। लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ मिड्ल, हाइ स्कूल धरि बनए लगल। गोटि-पँगरा कौलेजो बनल। सरकारोक धियान शिक्षा दिस बढ़ल, जइसँ पढ़ै-लिखैक वातावरण बनए लगल। तैबीच भूदान आन्दोलन सेहो शुरू भेल। दानकेँ धरम बुझि जमीन दान हुअ लगल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल। जइ गाममे कमिटी सक्रिय भऽ काज केलक ओइ गामक जमीन भूमिहीनक बीच आएल, मुदा जइ गाममे सक्रिय रूपमे काज नै भेल ओइठाम लड़ाइक अखड़ाहा बनल अछि। जइ भूदान आन्दोलक उदेस 'देशक छठम हिस्सा जमीन भूमिहीनक बीच आबए' अखनो सरकार चारि डिसमिल बास-भूमि दइक शक्ति नै रखने अछि।

गामक लोकक पड़ाइन भेने गाममे रहि खेती केनिहारकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। जमीनोक रूप बदलल। प्रतिष्ठाक वस्तु बुझल जाइबला जमीन रूपैआमे बदैल गेल। बैंकक सूदिक हिसाबसँ जमीनक उपजा बुझल जाए लगल। उपजाक अदहाबला बँटाइदारी

प्रथा ढील भेल। मनखप, पट्टा, मनहुन्डा इत्यादिक जन्म भेल। पनरह किलो कट्ठा धानक उपजा आ दस-सँ-पनरह किलो कट्ठा गहुमक उपजा बँटाए लगल।

कोसी नहर आ नव-नव सड़क बनने चौक-चौराहाक संग-संग बोनिहारकेँ काजो बढ़ल। मुआबजाक रूपैआ सेहो सहायक भेल। शिक्षा मित्रक बहालीक संग एन.एच.डब्लू. सेहो किछु मदैत केलक। सड़क बनने गाड़ी-सवारीक धन्धा सेहो जन्म लेलक।

मिथिलांचलमे एक नव वर्गक जन्म भेल, किसान वर्ग। मुदा ऐ वर्गक क्षेत्र छिड़ियाएल अछि। हरित-क्रान्ति एने जमीनक, माने खेतक भाग्य चमकल। मुदा जइ रूपमे चमकबाक चाही तइ रूपमे नहि। जँ एक रूपमे चमकैत तँ जहिना कहियो मिथिला दुनियाँक गुरु मानल जाइ छल तहिना फेर प्रतिष्ठित भऽ जाइत। तइमे कमी अछि।

देशमे अखनो कम क्षेत्र अछि जइमे मिथिलांचल एते इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक, साहित्यकार इत्यादि अछि। दुर्भाग्य ई जे ओ लोकैन मिथिला छोड़ि दुनियाँ भरिमे छिड़ियाएल छैथ। बाध्यतो छैन, ने कल-कारखाना अछि जे इंजीनियर ओइमे काज करता, आ ने स्वास्थ-ले समुचित जगह अछि जइमे डाक्टर अपन अँटावेश करता। ने विज्ञानक शोध संस्था अछि जइमे वैज्ञानिक अपन चमत्कार देखौता आ ने पढ़ै-लिखैक समुचित बेवस्था अछि जइमे साहित्यकार अपन प्रतिभाकेँ निखारता।

गंगा ब्रह्मपुत्र मैदानी इलाका रहैत मिथिलांचल अनेको नदीसँ सकबेधल अछि। नदियो ओहन-ओहन उपद्रवी अछि जे इलाकाक इलाकाकेँ सदिकाल रूप बिगाड़िते रहैए। लोकक जिनगी एहेन दुब्बर बनि गेल अछि जे जएह लोकैन मिथिलांचलमे ठाढ़ छैथ ओ धैनवादक पात्र छैथ।

किसान वर्ग बनने जातिवादक बन्हन ढील भेल। केतेको एहेन धन्धा, खेतीसँ लऽ कऽ लघु उद्योग धरि, अछि जे खास जातिक सीमामे बान्हल छल ओ टुटि कऽ कोनो धन्धा कोनो जातियेक बीच नै रहल। मुदा जहिना कोसीमे डुमल इलाका पुन: कहियो जागि चहटी रूपमे जन्म लइए आ पुन: ओइपर बसि मनुख पूर्ववत गाम बना लइए, तहिना करैक जरूरत अछि।

जातिगत पेशा बदैल जाति-बेवस्थाकेँ ढील जरूर केलक मुदा राजनीतिक कुचक्र समाजमे नव समस्याक रूपमे ठाढ़ भऽ विकासकेँ बाधित कऽ रहल अछि। अनेको तरहक नव-नव बाधा उपस्थित भऽ रहल अछि। मुदा तँए की मिथिला मरूभूमि भऽ गेल जे कर्मयोगी पैदा करब छोड़ि देलक। कथमपि नहि।

सम्मिलित रूपमे तँ नै मुदा छिट-फुट रूपमे एहनो-एहनो किसान छैथ जे लाख आफत-आसमानीसँ मुकाबला करैत सोनाक स्तम्भ बनि चमैक रहला अछि। निश्चित क्षेत्र तँ निर्धारित नै कएल जा सकैए, किएक तँ सीमा-विहीन अछि, मुदा ऐ बातकेँ नकारलो नहियेँ जा सकैए जे खेतमे ओते धान उपजा रहला अछि जे जापानसँ मुकाबला करैले ठाढ़ छैथ। तहिना गहुमो, दालियोक आ फलोक अछि। अखनो हजारो ट्रक आम बाहर जाइए। एक इलाकाक तरकारी दोसर इलाका जाइए। हजारो ट्रक मसाला आन-आन राज्य जाइए। एक इलाकाक दूध दोसर-तेसर इलाका धरि बिकाइत अछि।

अखन धरिक अनौपचारिक बैसक जे समाजमे होइत रहल अछि ओ प्रोफेसर दया बाबू आ पूर्व प्रोफेसर कमल बाबूकेँ एलासँ औपचारिक रूपमे बदलए लगल। काली स्थान पहुँचते कमल बाबू बजला-

"अखन धरिक समाजक, गाम-गामक, इतिहास हराएल अछि,

ओकरा पहिने पकड़ू। तँए जरूरी अछि जे एकटा रजिष्टर कीनि लिखित रूपमे काज करू।”

कमल बाबूक बात सुनि मंगल सोचलैन जे लगले रजिष्टर केतएसँ आनब, से नइ तँ आइक बैसक कागतक पन्नेपर कऽ निचेनसँ रजिष्टर आनि ओइपर लिखि देबइ। तेकर कारण मनमे नचैत रहैन जे दुनू गोरे, दयोबाबू आ कमलोबाबू, बेसी काल अँटकता नहि, जोरो केना करबैन। जँ जोरो करबैन तँ पट-दे कहि देता जे गाम-समाज अहाँक छी, अपना ढंगसँ चलाउ। मुदा गामक लोक तेहेन गँरि-मुराह अछि जे धरमेक काज स्कूलो आ माइयो-बापक सेवाकेँ कहता आ अपने भरि दिन बैस झूठ-फूसमे समए बर्बाद कऽ समाजकेँ तनो-भगन करैत रहता। अन्यायक अखाड़ा समाज बनि गेल अछि। एहेन परिस्थितिमे खाली “समाजिक न्यायिक” नारा देलासँ समाज सुधैर जाएत..?

मुस्की दैत मंगल प्रोफेसर दया बाबूकेँ कहलखिन-

“श्री मान्, अपने तँ चारि साल पढ़ौने छी तँए अपनेपर अधिकार अछि जे जे नै बुझै छी ओ अखनो पुछि सकै छी। मुदा बाबाकेँ किछु पुछैक अधिकार तँ नै अछि। भलेँ ओ अपने हमरा मनक सभ सबालक जवाब दऽ दैथ।”

मंगलक पेटक बात जेना कमल बाबू बुझिते रहैथ तहिना बड़बड़ाए लगला-

“रौतुका घटना सुनि हृदए पाथरपर खसल ऐना जकाँ चूर-चूर भऽ गेल अछि। ...आँखिक नोर पोछैत-

“मुदा दोख केकर लगौल जाएत। किछु दोखी अहूँ सभ छी जे बादमे कहब। अखन एतबे कहब जे काल चक्रकेँ रोकब असान नहि। ई कालचक्र छल। तँए प्राश्चित कऽ लेब जरूरी अछि। दू मिनट सभ

उठि हुनका लोकैनक क्षतिक स्मरण कऽ लिअ। रजिष्टरक पहिल पाँतिमे शोक प्रस्ताव लिखि काजकेँ आगू बढ़ाउ।”

शोक व्यक्त कऽ बैसते कमल बाबू पुछलखिन-

“समिति केते गोरेक बनौने छेलौं?”

“एक्कैस गोरेक?”

“एक तरहक अछि। अखन केते गोरे छी?”

“एगारह गोरे।”

“आरो गोरे?”

“दू गोरे हराएले छैथ, एगारह गोरे हाजिरे छी, आठ गोरे दोसर-दोसर जरूरी काजमे लगल छैथ।”

“हूँ, रौतुका झाँट तँ सभकेँ झँटनहि हेतैन।”

कहि एकाएक किछु सोचैत पुन: बजला-

“बाउ मंगल आ अनुज दयाबाबू, जहिना हम खुशीसँ जीवन-यापन कऽ रहल छी, तहिना चाहब जे अहूँ सभ जीबी, ओहूसँ नीक जिनगीक बाट बना आगूक पीढ़ि-ले दिऐ।”

कमल बाबू बजिते रहैथ आकि नेंगरो आ बौनो एक्के बेर बाजल-

“जहिना दयाकक्का पढ़ल छैथ तहिना मंगलो कौलेजक सीढ़ि होइत कोठरी तक पहुँचल छैथ, मुदा हम सभ तँ जिनगी भरि कोदारिये किलासमे पढ़ैत रहलौं तँए... ।”

ठहाका मारि उठि कऽ ठाढ़ होइत प्रोफेसर कमलनाथ समितिकेँ सम्बोधित करैत बजला-

“नेंगरा आ बौकूकेँ हमर बधाइ। जे अपन सीमा देखलक। बाउ नेंगर आ बौकू, बधाइ ऐ दुआरे दुनू गोरेकेँ देलौं जे समाजक जबरदस समस्याक जड़ि पकड़लौं। अपना समाजमे ई भारी समस्या अछि जे

कियो अपने सीमा-सरहद नै बुझए चाहै छैथ, तखन ओ धारक रेत जकाँ चलैत समैसँ केना जुटि सकता। जहिना पानिक रेतमे ठाढ़ भेने अपनो जान अवग्रहमे रहै छै जे रेतमे खसि, भँसिया कऽ मरि ने जाइ। तैठाम जँ कियो दस-बीस सेरक मोटरी माथपर रखने हुअए, ओकर गति ओइ रेतपर केहेन हेतै? तँए जहिना अट्टालिका बनबै काल सभसँ पहिने ईंटाकेँ देख लेल जाइ छै, जँ से नइ देखल जाएत तँ नकटेरहीपर जहिना सभ लट्टू होइए तहिना ने हएत।”

कमल बाबू बजिते रहैथ आकि दुनू गोरे, नेंगरा आ बौका आँखिमे आँखि मिला हँसए लगल। आँखि उठा सभापर सभ नजैर दौगौलैन। कियो गम्भीर तँ कियो मुँह बाबि बुझैक परियास करैत। मुदा दुनूक हँसी हँसा देलकैन। मन पड़लैन हुगली नदी। अपना इलाकाक जेते धार अछि ओ उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ बहैए भलेँ गंगाक ओइ कातक दच्छिनेसँ उत्तर-मुहेँ बहैत हुअए। मुदा हुगली, जे समुद्रसँ जुड़ल अछि, सोलह घन्टा एक दिसा-सँ-दोसर दिसामे बहैए आ आठ घन्टा विपरीत दिसामे। तहिना बाबाक आत्मा आ कोदारिक किलासमे पढ़निहारक आत्मा, मिलि कऽ शिवलिंग सदृश नव परमात्माक मन्दिर बना रहला अछि।

नेंगरा आ बौकू मुस्कियाइत मुड़ी निच्चाँ कऽ लेलक। दया बाबू आ मंगलकेँ गम्भीर देख प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“रौतुका घटना दुखद भेल। मुदा ओ तँ काल्हुक भेल। कालक तीन गति छै- बीतल, वर्तमान आ अबैबला। जे समए बीत गेल वएह समए वर्तमान आ भविसक रस्ता देखबैए। एक हिसाबे रौतुका घटना अहाँ सभकेँ एक सीमापर आनि कऽ छोड़ि देलक। ढंगसँ एकरा बुझैक जरूरत अछि।”

आँखि उठा मंगल पुछलकैन-

“कनी सोझरा कऽ कहियौ?”

“देखू अपन समाजमे केतेको पाबैन-तिहार अछि। नीको आ अधलो अछि। नीककेँ पकैड़ चलैक अछि। कोनो रातिए-टा धर्मक काजमे समए बाधा उपस्थित केलक, एहेन बात नै अछि। परिवारो सभमे देखै छी जे पाबैनक सभ ओरियान भेला उत्तर कोनो अप्रिय घटना घटलासँ पूजो-पाठ आ खाइयो-पीबैमे बाधा उपस्थित भऽ जाइए। मुदा की देखै छिऐ?

..यएह ने देखै छिऐ जे पाबैनक काजकेँ उसारि आगूमे उपस्थिति घटनामे लोक लगि जाइए। तहिना परिवारिक पाबैन नै बुझि समाजिक बुझि सोग कम करू। एहेन-एहेन समाजिक काज-कालीपूजा, दुर्गापूजा इत्यादि सभ गाममे होइते अछि सेहो बात नै अछि। कोनो-कोनो गाममे होइतो छै आ कोनो-कोनोमे नहियोँ होइ छइ। समाज-ले, गाम-ले अनिवार्य नै अछि। मनक शान्ति-ले होइए।

..अखन अहाँ सभ ओइ सीमापर ठाढ़ छी जैठामसँ दूटा रस्ता फुटैए। पहिल, ऐगलो साल करब की नहि? समाजक विचार देखए पड़त। ऐ प्रश्नपर समाज बँटा गेल छैथ। अधिकांश लोकक मनमे ई हेतैन जे गाममे पूजा नै धारलक। तँए आगूओ नै हेबा चाही। मुदा किछु गोरे एहनो हेता जे चाहितो हेता। प्रश्न उठैए, जँ अहिना ऐगलो साल हुअए, तहन? फेर प्रश्न उठैए पूजा ओरियाने भरि रहल संकल्पित नै भेल।

..ओना, ऐठाम दूटा विचार अबैए, पहिल समाजक संकल्प आ दोसर पूजा प्रक्रिया शुरू होइत समैक संकल्प। जे नै भेल। तँए आगू-ले विचारक मुद्दा बनि गेल अछि। फेर प्रश्न उठैए जे बेकतीगत रूपमे सभ घरे-घर वा मने-मन तँ करिते छैथ। ओना, समाजिको स्तरपर

हएब जरूरी अछि मुदा कोन रूपे हुअए, ई विचारणीय प्रश्न अछि। अखन धरि जइ तरहक सार्वजनिक मेलाक रूप रहल ओ आइ-ले, माने वर्तमान-ले केते नीक अछि, ऐपर विचार करए पड़त। पहिने कहि देलौं जे गामक इतिहास लिखल जाएत। जे अखन धरि रजे-रजबारक सुरा-सुन्दरीसँ लऽ कऽ कहियो-कहियो खेत-पथार-ले तँ कहियो मनोरंजन-ले होइत रहल। एक राजा-रानी राजगद्दीक सुख भोगैथ आ बाँकी सभ सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ-भऽ एक-दोसरकेँ रोकबो करैत आ पाछू-मुहेँ धकेलबो करैत। यएह इतिहास अपना सबहक रहल अछि।

..तँए अपन समाजकेँ जेते नीक रस्तासँ आगू लऽ जाए चाहब, ओ अहाँ सबहक काज छी। मुदा समाज जेकरा बुझै छिऐ ओ मनुखक समाज नहि, साबेक बोझ सदृश अछि। जहिना साबेक जौरसँ घर तँ बान्हल जाइत मुदा अपन नमहर बोझ बन्हैमे केते बदमासी करैए ओ तँ बन्हनिहारे सभ बुझैत हेता। तहिना लोकोक अछि। एक दिस समटब दोसर दिस छिड़ियाएत आ दोसर दिस समटब तेसर दिस छिड़ियाएत। ऐमे ओहू वेचाराक दोख नै छइ। कियो पेटक पाछू वौआ रहल अछि, तँ कियो मलिकानाक पाछू। मलिकाना केहेन तँ हम विधाता बनि बजै छी! अहाँकेँ आदेश मानै पड़त? वाह! वाह! भाय, विधाता बनैसँ पहिने अपन रजिष्टर सार्वजनिक करू जे हमहूँ अपना समाजक इतिहास रजिष्टरमे लिखि देखब जे केते गोरेक सवारी हवाइ जहाज छी, केते गोरेक ए.सी. कार आ केते गोरेकेँ चरणबाबूक टेक्सी।

..तँए जहिना अदौमे कोनो गाम जे बसल ओइमे पहिले-पहिल एक-दू-तीन-चारि परिवार आएल। जे अखन देखते छी, केहेन झमटगर भऽ गेल अछि, तहिना असगरोक चिन्ता नै कऽ आगूक...।"

बिच्चेमे बौकू बाजल-

"बाबा, छौड़ा सभ भोरे माछ पकड़ैले बाध दिस गेल से कनी ओकरा सभकेँ देखैक अछि जे माछे पाछू अपनो डुमल आकि बँचल आएल?"

बौकाक बात सुनि ठहाका मारि बाबा बजला-

"बौकू, जिनगीमे सभसँ पैघ सुख प्राप्त करब होइए। जेकरा सुख भेट गेलै ओकरा भगवान भेट गेलखिन। मुदा सुख केकरा कहबै से अखन नै कहबह। तहूँ धड़फड़ाएल छह। एहेन समैमे तोरा रोकब उचित नै बुझै छी। मुदा एतबे बुझि लएह जे दुख भागब सुखक आएब छी।"

आँखि उठा मुस्की दैत दयानन्द बजला-

"भाय साहैब, इतिहास लिखैक विचार तँ देलखिन मुदा पैछला इतिहास बुझल छैन की नहि, से कहाँ कहलखिन?"

"दयाबाबू, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। अखन जइ समैमे सभ बैसल छी ओ बैसैक नै करैक समए छी। केते लोकक घर खसल हेतै, केतेकक माल-जाल नष्ट भेल हेतै, केतेकेँ हाथ-पएर टुटल हेतै, एहेन समैमे हाथपर हाथ दऽ विचार करैक नै अछि। जेतए जे नीक गर लागए, ओतए ओइ गरे दलमलित भेल गामकेँ असथिर करू, सभ पड़ोसीए छी। समैयो बदलत। समुद्रसँ उठल केहनो वादल रहैए मुदा ओहो रसे-रसे बदैले जाइए।

..तँए अन्तिम बात यएह कहब जे आशाक संग जिनगीकेँ आगू-मुहेँ ठेलैत पहाड़पर चढ़ा अकासमे फेक दियौ।"

◌

शब्द संख्या : 3811

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ◌ ◌ ◌



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 350

ISBN : 978-93-87675-29-2

जिनगीक जीत

जगदीश प्रसाद मण्डल



जिनगीक जीत

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

ISBN : 978-93-87675-28-5

दाम : ₹ 350/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

JINGIK JEET
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

एकसत्तैर-

अंक

आमुख/08
एक/12
दू/26
तीन/37
चारि/43
पाँच/56
छह/67
सात/77
आठ/101
नअ/116
दस/137
एगारह/151
बारह/174
तेरह/182
चौदह/189
पनरह/181

आमुख

प्रायः चारि-पाँच बर्ख पहिनेक बात थिक जे जगदीश जीक सम्बन्धमे हमरा पहिले बेर जनबाक अवसर भेटल रहय। ओ हमर पुस्तक सभक प्रेमी पाठक छलाह आ ताकि ताकि कऽ हमर रचना पढ़ल करथि। ओहि दिनमे हमर कोनो नव पुस्तक छपल रहय जकरा मादे ओ सुनने रहथि मुदा उपलब्ध नहि भऽ सकल रहनि। ताहि क्रममे हुनक स्फूर्तिवान बालक उमेश हमरासँ भेँट करय पटना आएल रहथि। तखनहि पता चलल छल जे जगदीश जी लिखबो करैत छथि। उमेश अपना संग हुनकर पोथी सभक पांडुलिपि अनने छलाह। हम चकित रही जे विद्याक ई अनुरागी पुरुष कोना साहित्यक मुख्य धारा तँ के कहय जे अवान्तरो धारा सँ एकदम्मे एकात धरि निरन्तर साहित्य साधनामे लागल छथि। पता चलल जे ओ मैथिलीमे पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ गोट बीसेक कथा लिखने छथि। तहियै पहिल बेर हुनकर पाण्डुलिपि सभकें हम उनटा-पुनटा कऽ देखने छेलियनि। तहियो हमरा ई बात स्पष्ट लागल छल जे हुनकर लेखनमे कला भने जेतबे होउक प्रामाणिकता धरि भरपूर छनि।

हम अपना सक्क भरि हुनका मनोबलकें मजगूत आ दृष्टिकें फड़िच्छ करबाक प्रयास केलियनि। मधुबनीमे रही तँ ओ हमरासँ सम्पर्कोमे रहलाह। साहित्यक बिरादरीमे तहियै हुनकर प्रवेश भेलनि। हमरा खुशी अछि जे पैछला दू सालमे ओ आइ बेसी ऊर्जस्वी, आर रचनाशील, आर बेसी निधोख भेलाह अछि। आ आइ श्रुति प्रकाशनसँ हुनकर पुस्तक सभ प्रकाशित भऽ रहलनि अछि। हमरा लेल ई बहुत खुशीक बात थिक। एहि हेतू हम गजेन्द्र जीकें धन्यवाद आ बधाइ दैत छियनि।

जगदीश जीक साहित्यमे मिथिलाक ग्रामीण समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहां चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजरि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से निगेटिभ फोर्ससँ भरल अछि, अधिकाधिक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीवनमे देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीश जीक छनि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छनि तेँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि। हम तँ हुनक लेखनकें ग्रामीण समाजक सकारात्मक जीवन-शैलीक डक्यूमेन्टेशनक रुपमे देखैत छी।

हुनकर साहित्यमे जे लोक सभ आएल अछि, से मिथिलाक साधारण लोक सभ थिक– वर्ण आ जातिसँ छोट-छोट लोक सभ। ई लोक सभ मैथिली साहित्यमे पहिनहु आएल छथि। किछु बहुत प्रामाणिक चित्र सभ पहिनहु प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। मुदा, हमर ई असंदिग्ध मान्यता अछि जे जाहिठाम ई छोट लोक अपन सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग प्रस्तुत भेल होथि, सएह, केबल सएह टा, एहि लोकक प्रमाणिक चित्र कएल जा सकैत अछि। जगदीश जीक कथा साहित्यकें देखू तँ ई बात स्पष्ट भऽ सकैत अछि। जे बाहरसँ देखने छोट प्रतित होइत अछि, से लोक सभ वस्तुतः बहुत पैघ-पैघ लोक सभ छथि। हुनका सभक उन्नत सांस्कृतिक आयामकें देखल जाय। मानवताक गुणसँ भरपूर ई लोक सभ दया, ममता,

सहयोग सद्भावनासँ कते भरपूर लोक सभ छथि! तखन, एहन अवश्य लागि सकैत अछि जे ई चित्र सभ आजुक मिथिलाक चित्र नहि थिक अपितु अतीतक थिक! मुदा, जाहि देशमे जेट विमान आ कटही गाड़ी एक्के संग चलैत हो, ततय कोन अतीत आ कोन वर्त्तमान से निर्णय करब कठीन अछि। आ जाहिठाम सकारात्मक जीवन-शैली दस्तावेजीकरणक प्रश्न हो, ततय तँ ई अत्यन्त उपादेय।

जगदीश जीक लेखनक जे सामान्य विशेषता सभ छनि, से सम्पूर्णतः प्रस्तुत उपन्यास 'जिनगीक जीत' मे देखार पड़त। द्वन्द्व आ दुविधाक अन्हारक भीतर किरणमालाक खोज एहि उपन्यासक इष्ट छिऐक। एकर नायक अनेकानेक संघर्षसँ आगू बढ़ैत एकटा सुखी जीवनक पड़ावपर पहुँचैत अछि, जतय ओकरा परम सेहन्ता एहि बातक छैक जे ओकरा 'सुखी जीवन' एकटा 'सार्थक जीवन' सेहो होइक। सुखी बनाम सार्थकक़ें अन्तर्संघर्षसँ ओकर जीवन आक्रान्त अछि। एहिठाम कृषि संस्कृति आ सेवा संस्कृतिक अन्तर्द्वन्द सेहो बेस फरिच्छ भऽ कऽ आएल अछि। सदासँ मिथिलाक लोक कृषि कर्म करैत, कृर्षि-संस्कृतिक ताना-बानामे जीबैत आएल अछि। एहि युगमे आबि कऽ नोकरी (सेवा-संस्कृति) प्रधान लक्ष्य भऽ गेलैक अछि तँ स्वाभाविक थिक जे एहिसँ पूर्व-व्यवस्थित जीवन क्रममे विक्षोभ उत्पन्न भेलैक अछि। जगदीश जीक एहि समस्याकेँ नायक (बचेलाल)क पत्नी (रुमा)क पृष्ठभूमिक रुपमे उठौलनि अछि जे नोकरिहारा परिवारसँ कृषक परिवारमे बिआहलि गेलि छथि। हमरा लोकनि देखैत छी जे बचेलाल एहि दू संस्कृतिक बीच समायोजन करबामे ततेक झमारल गेलाह अछि जे मानसिक रुपसँ अवसाद ग्रस्त भऽ गेल छथि। एहि अवसाद (डिप्रेशन)सँ उबारैत छथिन हुनकर माय (सुमित्रा), जे कृषि-संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैवाली एक सबला मैथिलानी थिकीह। श्रमजीवी समाजसँ आएल एहन स्त्री अबला कदापि नहि भऽ सकैत छथि। आ एहि स्त्री, सुमित्राक द्वारा सम्पन्न कराओल जाइत अछि जिनगीक जीत, जेना कहियो सत्यवतीक द्वारा महाभारत सम्पन्न कराओल गेल छल।

एहन प्रतित भऽ सकैत अछि जे एहि रचनामे पठनीयताक अभाव छैक आ जेना कि एक औपन्यासिक कृतिसँ जिनगीक घात-प्रतिघातकेँ चिन्तित करबाक आशा कएल जाइछ तकरो अभाव छैक। एहिठाम सभ कथू एकदम सरलतासँ, आसानीसँ सम्पन्न होइत देखाओल गेल अछि, तेना वास्तविक जीवनमे प्रायः नहि होइछ। मुदा, एहि कृतिक प्रामाणिकता एकर अभावकेँ भांपि दैत छैक। असलमे साहित्यक तीनटा उद्येश्य होइत छै- रंजन, शिक्षण आ प्रेरण। से हम देखैत छी जे शिक्षण आ प्रेरणक तत्त्व एहिठाम ततेक सक्रिय छैक जे रंजनक कसौटीपर एकर मूल्यांकन कयने रचनाक संग न्याय संभव नहि छैक।

एक बेर फेर हम जगदीश जीकेँ एहि रचनाक लेल धन्यवाद दैत छियनि। ◌

-तारानन्द वियोगी

-भभुआ, 9.3.2010

एक

छोट-छीन गाम कल्याणपुर। गामकेँ देखते बुझि पड़ैत जे आदिम युगक मनुखसँ लऽ कऽ आइ धरिक मनुख हँसी-खुशीसँ रहैए। मनुखेटा नहि मालो-जाल तहिना। एक फुच्ची दूधवाली गाएसँ लऽ कऽ बीस लीटर दूधवाली गाए धरि। बकरियोक सएह नश्ल। एहनो बकरी अछि जेकरा तीन-तीन-चरि-चरिटा बच्चा भेने एक-दूटा दूधक दुआरे मरिये जाइत। आ एहनो अछि जेकरा चारि लीटर दूध होइए। गाछियो-बिरछी तहिना। एहनो गाछी अछि जइमे एकछाहा शीशोए, तँ दोसर बगुरेक। आमो गाछीक वएह हाल। कोनो एकछाहा सरहीक अछि तँ कोनो एकछाहा कलमीक। तेतबे नहि, ओहन-ओहन गाछ अखनो अछि जे दू-दू कट्ठा खेत छेकने अछि तँ ओहनो गाछी अछि जइमे पनरह-पनरहटा आमक गाछ कट्ठे भरिमे फइलसँ रहि मनसम्फे फड़बो करैए। औझुका जकाँ कल्याणपुर चालीस बरख पहिने नइ छल। ने एकोगो चापाकल छेलै आ ने बोरिंग। त्रेता युगमे जेहने हरसँ राजा जनक जोतने छला तेहने हरसँ अखनो कल्याणपुरक खेत जोतल जाइए। ने अखुनका जकाँ उपजा-बाड़ी होइ छल आ ने बर-बिमारीक उचित उपचार। सवारीक रूपमे सभकेँ दू-दूटा पएर वा गोटि-पँगरा बरद जोतल काठक पहियाक गाड़ी।

अंग्रेजी शासन मेटा गेल मुदा गमैया जिनगीमे मिसियो भरि सुधार नहि भेल। जहिना जत्तामे दूटा चक्की होइत- तरौटा आ उपरौटा, तरौटा कीलमे गाड़ल रहैत, तहिना शहरी आ देहाती जिनगीक अछि। शहरी जिनगी तँ आगू-मुहेँ घुसकल मुदा देहाती जिनगी तरौटा चक्की जकाँ ओहिना गड़ाएल अछि। बान्ह-सड़क, घर-दुआर सभ ओहिना अछि जहिना चालीस बरख पहिने छल। तँए, कि कल्याणपुरक लोक अंग्रेजी शासन तोड़ैमे भाग नइ लेलक? जरूर लेलक, दिल खोलि साहससँ लेलक। सगरे गामकेँ गोरा-पल्टन आगि लगा-लगा तीनबेर जरौलक। केते गोरे बन्दूकक कुन्दासँ तँ केते गोरे मोटका चमड़ाक जूत्तासँ थोकचल गेला। जहल जाइबलाक धरोहि लगि गेल रहए। केते गोरे डरे जे गाम छोड़ि पड़ाएल ओ अखनो धरि घुमि कऽ नइ आबि सकल। केते गोरेक परिवार बिलटलै तेकर कोनो ठेकान अखनो धरि नइ अछि।

कल्याणपुरक एक परिवार अछेलालक। अगहन पूर्णिमाक तेसर दिन, बारह बजे रातिमे घूर धधका दुनू परानी अछेलाल आगि तपैत रहए। पहिलुके साँझमे मखनीकेँ पेटमे दरद उपकल। प्रसवक अन्तिम मास रहने मखनी बुझलक जे प्रसवक पीड़ा छी। अछेलालोकेँ सएह बुझि पड़लै। ओसरेपर चटकुन्नी बिछा मखनी पड़ि रहल। चटकुन्नीक बगलेमे अछेलालो बैस गेल। दरद असान होइते मखनी बाजल-

"दरद असान भेल जाइए।"

मुँहपर हाथ नेने अछेलाल मने-मन सोचैत जे असगरूआ छी केना पल्हैनक ऐठाम जाएब? केना अगियासी जोड़ब? जाड़क समए छिऐ। परसौती-ले जाड़ ओहने दुश्मन होइए जेहने बकरी-ले फौती। दरद छुटिते मखनी फुर-फुरा कऽ उठि भानसक जोगारमे जुटि गेल। पानि भरैक चैल लऽ जखने चैलची दिस बढ़ए लगल आकि पति बाँहि पकैड़ रोकैत कहलकै-

“अहाँ ऊपर-निच्चाँ नै करू। हम पानि भरि अनै छी। अहाँ घरसँ बासन-कुसन निकालू। हम ओकरो धोइ कऽ आनि देब।”

मखनी चुल्हि पजारए लगल आ अछेलाल लुड़ु-खुड़ु करए लगल। बरतन-बासन धोइ अछेलालो चुल्हिए-पाछूमे बैस आगियो तापए लगल आ मुस्कियाइत गपो-सप्प शुरू केलक-

“ऐबेर भगवान बेटा देता।”

बेटाक नाओं सुनि सुखक समुद्रमे मखनी हेलए लगली। मने-मन सुखक अनुभव करैत मनमे उठलै- बच्चाकेँ दूध पिआएब...। तेल-उबटनसँ जाँतब...। आँखिमे काजर लगा किसुन भगवान बना चुम्मा लेब...। कोरामे लऽ अनको अँगने-अँगना घुमैले जाएब...। स्कूलमे नाओं...।

स्कूलमे नाओं लिखा पढ़बैक विचार एलै आकि जहिना गमकौआ चाउरक भात आ नेबो रस देल खेरही दालिमे सानल कौर मुँहमे दइते ओहन आँकर पड़ि जाइत जइसँ जीह कुचा जाइत तहिना मखनीकेँ भेल। मनक सुख मनेमे अँटैक गेलइ। पत्नीक मलिन होइत मुँह देख अछेलाल बाजल-

“गरीबक मनोरथ आ बर्खाक बुलबुला एक्के रंग होइ छइ। जहिना पानिक बुलबुला सुन्नर अकार आ रंग लऽ जा कि बढ़ए लगैए कि फुटिये जाइए, तहिना।”

मखनीक मनमे दोसर विचार उठलै जे धन तँ बहुत रंगक होइ छै- खेत-पथार, गाए-महींस, रूपैआ-पैसा इत्यादि, मुदा ऐ सभ धनसँ पैघ बेटा-धन होइ छै जे बुढ़मे माए-बापक सवारी बनि सेवा करैए। तेतबे नहि, परिवारो-खनदानोकेँ आगू बढ़बैए। तहूमे जँ कमासुत बेटा तँ जीबतेमे माए-बापकेँ स्वर्गक सुख दइए।

भानस भेलइ। दुनू परानी खेलक। मोटगर पुआरपर चटकुन्नी

बिछौल छेलै, तैपर जा मखनी सुति रहल। एमहर थारी-लोटा अखारि, चुल्हि-चिनमारक सभ काज सम्हारि अछेलाल चुल्हिए लग बैस आगि तापए लगल। तमाकुल चूना मुँहमे लेलक। चुल्हिए लग बैसल-बैसल अछेलाल ओंघाइयो लगल। ओंघी तोड़ैले उठि कऽ अँगनामे टहलए लगल। भक टुटिते फेर चुल्हि लग आबि आगि तापए लगल।

मखनी निन पड़ि गेल। मखनीक नाकक अवाज सुनि अछेलाल सोचलक जे जँ राति-बिराति दरद उपकतै तँ महाग-मोसकिलमे पड़ि जाएब। अपने तँ किछु बुझै नइ छी। दशमी डगरक सिदहा दऽ नै सकलिऐ तँए पल्हैनियो औत कि नहि औत..!

चुल्हिक आगि मिझाइत देख अछेलाल जारैन आनए डेढ़ियापर गेल। ओससँ जरनो सिमसल। लतामक गाछपर सँ टप-टप ओसक बून खसैत। अन्हारक तृतीया रहने, चान तँ भरि राति उगल रहत..।

मनमे अबिते अछेलाल मेघ दिस तकलक। चान तँ उगल देखैत मुदा ओसक दुआरे जमीनपर इजोत अबिते नहि। पाँजमे जारैन नेने अँगना आएल। ओसारपर चुल्हि रहने सोचलक जे घरेमे घूर लगौनाइ बढ़ियाँ हएत, घरो गरमाएल रहत। अछेलालक पैरक दम्मससँ मखनीक निन टुटि गेलइ। धधकैत घूर देख मखनियोकेँ आगि तपैक मन भेलइ। ओछाइनपर सँ उठि ओहो घूर लग आबि बैसली। बीचमे घूर धधकैत आ दुनू भाग दुनू परानी बैसल। जहिना देहक दुखसँ मखनी तहिना मनक दुखसँ अछेलाल दुखीत। बेवसीक स्वरमे अछेलाल बाजल-

“अदहा राति तँ बिते गेल, अदहे बाँकी अछि। जहिना अदहा बीतल तहिना बाँकियो बितबे करत।”

अछेलालक बात सुनि मखनी पुछलक-

“अखन धरि अहाँ जगले छी?”

“हँ, की करब। जँ सुति रहितौं आ तैबीच अहाँकेँ दरद उठैत तँ फटोफनमे पड़ि जइतौं। सौंसे गामक लोक सूतल अछि। केकरा शोरो पाड़बै। एक्के रातिक तँ बात अछि। कहुना-कहुना कऽ काटिये लेब। मनमे होइ छल जे बहिनकेँ विदागरी करा कऽ लऽ अनितौं मुदा ओहो तँ पेटबोनियेँ अछि। तहूमे चारि-पाँचटा लिधुरिया बच्चो छइ। जँ विदागरी करा कऽ आनब तँ पाँच गोरेक खरचो बढ़ि जाएत। घरमे तँ किछु अछि नहि। कमाइ छी खाइ छी।”

“कहलिऐ तँ ठीके। अपना घरमे लोक भूखलो-दुखलो रहि जाइए। मुदा जेकरा माथ चढ़ा अनबै ओकरा केना भूखल रहए देब? दिन-राति चिन्ता पैसल रहैए जे पार-घाट केना लागत। भगवानो सभटा दुख अपने दुनू परानीकेँ देने छैथ। खाएर.., एक पसेरी चाउर घैलामे रखने छी कहुना-कहुना पान-सात दिन चलबे करत तेकर बाद बुझल जेतइ।”

‘पसेरी भरि चाउर’ सुनि अछेलालक मनमे आशा जगल। मुहसँ हँसी निकलए लगलै, बाजल-

“जँ हमर बनि बच्चा जनम लेत तँ केतबो दुख हेतै तैयो जीबे करत। नै जँ कोनो जन्मक कर्जा खेने हेबै तँ असुलि कऽ चलि जाएत।”

पतिक बात सुनिते मखनीकेँ पहिलुका दुनू बच्चा मन पड़ल। मने-मन सोचए लगल- जँ नीक-नहाँति सेवा होइतै तँ ओहो बच्चा नै मरितए...। मुदा मनुखे की करत? जेकरा भगवाने बेपाट भऽ गेल छथिन। पैछला बात मनसँ हटबैत मखनी बाजल-

“समाजमे ओहनो बहुत लोक होइत अछि जे बेर-बेगरतामे भगवान बनि ठाढ़ होइए।”

“समाज दू रंगक अछि। एकटा समाज ओहन होइ छै जइमे

दोसराक मदैतकेँ धरम बुझल जाइ छै आ दोसर ओहन होइ छै जइमे सभ सबहक अधले करैए। अपने गाममे देखै छिऐ। अपन टोल तीस-पैंतीस घरक अछि। चारि-पाँच रंगक जातियो अछि। एक जातिकेँ दोसरसँ भैंसा भैंसीक कनारि अछि। अपन तीन घरक दियादी अछि। तीनू घरमे सुकनाकेँ दू-सेर-दू-टाका छइ। ओकरा देखै छिऐ जे हदिघड़ी झगड़े-झंझटक पाछू रहैए तँए टोलमे सभसँ बाड़लो अछि। ओकरा चलैत हमरोसँ सभ मुँह फुलौने रहैए। ने केकरोसँ टोका-चाली अछि ने खेनाइ-पीनाइ आ ने लेन-देन। ई तँ भगवान रच्छ रखने छैथ जे सभ दिन बोइन करै छी मौजसँ खाइ छी। नइ तँ एक्को दिन ऐ गाममे बास होइतए।”

अछेलालक बात सुनि मुड़ी डोलबैत मखनी बाजल-

“कहलौं तँ ठीके मुदा जे भगवान दुख दइ छथिन वएह ने पारो-घाट लगबै छथिन।”

मखनीक बात सुनि अछेलाल बाजल-

“सगरे गाममे नजैर उठा कऽ देखै छी तँ खाली बचेलालेक परिवारसँ थोड़-बहुत मेदहा अछि। सालमे दस-बीस दिन खेतियो सम्हारि दइ छिऐ आ घरो-घरहट। पैंच-उधार तँ नहियेँ करै छी। हमर ब्रह्म कहैए जे अगर बचेलालक माएकेँ कहबैन तँ ओ वेचारी जरूर सम्हारि देती। कहुना राति बीतए जे भोर होइते कहबैन। दुखक रातियो नमहर भऽ जाइ छइ। एक्के निनमे भोर भऽ जाइ छेलए, से आइ बितबे ने करैए।”

हाफी करैत मखनी बजली-

“देहो गरमा गेल आ डाँड़ो दुखाइए। ओछाइनेपर जाइ छी।”

मखनीक बात सुनि अछेलाल ठाढ़ भऽ मखनीक बाँहि पकैड़ ओछाइनपर लऽ गेल। मखनी पड़ि रहल। पड़ले-पड़ल बाजल-

"मन हल्लुक लगैए। अहूँ सुति रहू-गे।"

अछेलालक मनमे चैन तँ आएल मुदा तैयो सोचए जे ऐ देह आ समैक कोन ठेकान जे कखन की भऽ जाएत! ..गुनधुन करैत बाहर निकैल चारू-भर तकलक। झल-अन्हारक दुआरे साफ-साफ किछु देखबे ने करैत। मुड़ी उठा मेघ दिस तकलक। मेघमे छोटका तरेगन बुझिए ने पड़इ। गोटे-गोटे बड़का देख पड़ैत। ऐना जकाँ चानो बुझि पड़ैत। डण्डी-तराजूकेँ ठेकना ताकए लगल। तकैत-तकैत पछबारि भाग मन्हुआएल देखलक। डण्डी-तराजू देख अछेलालकेँ सन्तोख भेलै जे राति लगिचा गेल अछि। फेर घुमि कऽ आबि घूर लग बैसल। आलस आबए लगलै। तमाकुल चुना मुँहमे लेलक। बाहर निकैल तमाकुल थुकैर कऽ फेक फेर घुरे लग आबि बोरा पसारि घोकरी लगा बाँहियेक सिरमा बना सुति रहल। निन पड़ि गेल। निन पड़िते सपनाए लगल। सपनामे देखए लगल जे घरवाली दरदसँ कुहरैए। चहा कऽ उठि पत्नीकेँ पुछलक-

"बेसी दरद होइए?"

मुदा मखनी निन छल। किछु उत्तर नहि पाबि। घूरकेँ फुकि अछेलाल धधराक इजोतमे मखनी लग जा निंगहारि कऽ देखए लगल। मनमे भेलै जे कहीं बेहोश तँ ने भऽ गेल। मुदा नाकक साँस असथिर रहइ।

कौआ डकिते अछेलाल उठि कऽ बचेलाल ऐठाम विदा भेल। दुनू गोरेक घर थोड़बे हटल मुदा बीचमे डबरा रहने घुमौन रस्ता। बचेलालक माएकेँ अछेलाल भौजी कहैत। दियादी सम्बन्ध तँ दुनू परिवारमे नै मुदा समाजिक सम्बन्धे भैयारी। बचेलालक पिता रघुनन्दन छोटे गिरहस्त मुदा समाजिक हृदए रहने सभसँ समाजमे मिलल-जुलल रहैत। बचेलाल ऐठाम पहुँचते अछेलाल डेढ़ियापर ठाढ़

भऽ बचेलालक माएकेँ शोर पाड़लक। आँगन बहारैत सुमित्रा बाढ़ैन हाथमे नेनहि घरक कोनचर लगसँ देख मुस्कियाइत बजली-

"अनठिया जकाँ दुआरपर किए छी? आउ अँगने आउ।"

अछेलालक मन्हुआएल मुँह देख सुमित्रा पुछलैन-

"रातिमे किछु भेल की? मन बड़ खसल देखै छी?"

कँपैत हृदैसँ अछेलाल उत्तर देलकैन-

"नहि रातिमे तँ किछु ने भेल मुदा भारी विपैतमे पड़ल छी। तँए एलौं।"

"केहन विपैतमे पड़ल छी?"

"भनसियाकेँ सन्तान होनहार अछि। पूर मास छिऐ। घरमे तँ दोसर-तेसर अछि नहि। जनिजातिक नीक-अधला तँ अपने बुझै नइ छी। तँए अहाँकेँ कहैले एलौं जे चलि कऽ सम्हारि दियौ।"

कनीकाल गुम्म भऽ सुमित्रा बजली-

"अखन तँ दरद नै ने उपकलै हेन?"

"नहि, अखन चैन अछि। साझू-पहर दरद उपकल छेलै मुदा कनीएकालक पछाइत असान भऽ गेलइ।"

"लोकेक काज लोककेँ होइ छइ। समाजमे सबहक काज सभकेँ होइ छइ। अगर हमरा गेलासँ अहाँकेँ नीक हएत तँ किए ने जाएब।"

कहि सुमित्रा फुसफुसा कऽ पुछलखिन-

"परसौतीकेँ खाइले चाउर अछि किने?"

अछेलालक मनमे एलै जे झूठ नै कहबैन। कनी गुम्म भऽ बाजल-

"एक पसेरी चाउर घरमे अछि, भौजी।"

'एक पसेरी चाउर' सुनिते सुमित्राकेँ हँसी लगलैन। मुदा हँसीकेँ दाबि सोचलैन जे कम-सँ-कम एक मासक बुतात चाही। मास दिनसँ पहिने परसौतिक देहमे कोनो लज्जैत थोड़े रहै छइ। तँए एक मासक बुतातक जोगार सेहो कऽ देबइ। बेर पड़लापर गरीब लोकक मन बौआ जाइ छै तँए अछेलाल एना बाजल। पुरुख जाति थोड़े परसौतीक हाल बुझैए। जखन हमरा बजबैले आएल तँ बच्चाकेँ ऐ धरतीपर ठाढ़ करब हमर धर्म भऽ जाइए। सिरिफ बच्चा जनैम गेलासँ तँ नै हएत…।

दुनू गोरे गप-सप्प करिते छल कि बचेलाल सुति कऽ उठल। खिड़कीक एकटा पट्टा खोलि हुलकी मारलक तँ दुनू गोरेकेँ गप-सप्प करैत देखलक। केबाड़ खोलि बचेलाल दुनू गोरे लग आबि चुपचाप ठाढ़ भेल। पुतोहुक दुआरे सुमित्रा बजली-

"दरबज्जेपर चलू।"

तीनू गोरे दरबज्जापर आबि गप-सप्प करए लगल। अपन भार हटबैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

"बच्चा, अछेलालक कनियाकेँ सन्तान होनिहारि छइ। वेचारा जेहने समांगक पातर अछि तेहने चीजोक गरीब। आशा लगा कऽ अपना ऐठाम आएल हेन। गाममे तँ बहुतो लोक अछि मुदा अनका ऐठाम किए ने गेल। जेँ हमरापर बिसवास भेलै तँए ने आएल।"

मुड़ी निच्चाँ केने बचेलाल माइक सभ बात सुनि बाजल-

"जखन तोरा बजबैले एलखुन तँ हम मनाही करबौ।"

तैपर सुमित्रा बजली-

"सोझे गेलासँ तँ नइ हेतइ। कम-सँ-कम एक मासक बुतातो चाही किने?"

"माए, जखन तूँ घरक गारजने छेँ तखन हमरासँ पुछैक कोन जरूरी? जे जरूरी बुझै छीही से कर।"

अछेलालक हृदैमे आशा जगल। मने-मन सोचए लगल, अखन धरि बुझै छेलौं जे गाममे कियो मदैतगार नइ अछि मुदा से नहि। भगवान केहेन मन बना देलैन जे ऐठाम एलौं…।

मुस्कियाइत अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक-

"बड़ीकाल भऽ गेल भौजी, अँगनामे की भेल हएत की नइ। आब नै अँटकब। चलू अहूँ।"

सुमित्रा-

"बौआ, अहाँ आगू बढ़ू, हम पीठेपर अबै छी।"

अछेलाल आँगन विदा भेल। सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

"बच्चा, मनुखेक काज मनुखकेँ होइ छइ। आइ जे सेवा करब ओ भगवानक घरमे जमा रहत। महिना दिन हम ओकर ताको-हेर करबै आ खरचो देबइ। भगवान हमरा बहुत देने छैथ। कोन चीजक कमी अछि।"

बचेलाल-

"माए, तोरा जे नीक सोहाओ से कर, जा कऽ देखही।"

दरबज्जासँ उठि सुमित्रा अँगनाक काज सम्हारए लगली। सभ काज सम्हारि अछेलाल ऐठाम विदा भेली…।

मखनी ओसारपर बिछान बिछा, पड़ल। पहुँचते सुमित्रा मखनीकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ, दरदो होइए?"

कर फेड़ मखनी बाजल-

"दीदी, अखन तँ नइ होइए मुदा आगम बुझि पड़ैए।"

मखनीकेँ दूटा सन्तान भऽ चुकल छल तँए आगम बुझैत। सुमित्रा अछेलालकेँ कहलक-

"ऐठाम हम छीहे। अहाँ पल्हैनक ऐठाम जा बजौने आउ?"

अछेलाल पल्हैनिक ऐठाम विदा भेल। मुदा पल्हैन ऐठाम जाइले डेगे ने उठैत। मनमे होइ जे दशमी डगरक सिदहा नै दऽ सकलिऐ, तँए ओ औत की नइ औत..?

मुदा तैयो जी-जाँति कऽ विदा भेल। भरि रस्ता विचित्र स्थितिमे अछेलाल पड़ल रहए। एक दिस सोचैत जे जँ पल्हैन नइ औत तँ बेकार गेनाइ हएत। दोसर दिस होइ जे जाबे हम एमहर एलौं ताबे घरपर की भेल हएत की नहि।

पल्हैनक ऐठाम पहुँचते अछेलाल देखलक जे मालक थैरक गोबर उठा पथियामे लऽ पल्हैन खेत विदा अछि। जहिना न्यायालयमे अपराधीकेँ होइत तहिना अछेलालोकेँ बुझि पड़ैत। मुदा तैयो साहस करैत बाजल-

"कनी हमरा ऐठाम चलू, भनसियाकेँ दरद होइ छइ।"

"माथपर गोबरक छिट्टा नेनहि पल्हैन उत्तर देलक-

"हम नइ जेबैन। डगरक सिदहा हमर बाँकीए अछि। पेट-बान्हि केते दिन काज करबैन।"

पल्हैनक बात सुनि अछेलाल अपन भाग्यकेँ कोसए लगल। भगवान केहेन बनौने छैथ जे जेकरा-तेकरासँ दूटा बात सुनै छी। मुँह सिकुरियबैत फेर कहलक-

"कनियाँ, ऐ साल सिदहा नै दऽ सकलौं तँ कि नइ देब। समए-साल नीक हएत तँ ऐगला साल दोबर देब। समाजमे सबहक उपकार सभकेँ होइ छइ। चलू...।"

खिसिया कऽ डेग बढ़बैत पल्हैन बाजल-

"किनौं नै जेबैन।"

एक टकसँ अछेलाल पल्हैनकेँ देखैत रहल। देहमे जेना एक्को मिसिया तागते ने बुझि पड़इ। हतास भऽ दुनू हाथ माथपर लऽ बैस रहल। आब की करब..? आशा तोड़ि घर दिस विदा भेल। आगू-मुहेँ डेगे ने उठै, पएर पताइत रहइ। जेना बुझि पड़ै जे आँखिसँ लुत्ती उड़ैए। कहुना-कहुना अछेलाल घरपर आएल।

तेसर सन्तान भेने मखनीकेँ दरदो कम भेलै आ असानीएसँ बच्चो जनमल। अपना जनैत सुमित्रा सेवोमे कोनो कसैर बाँकी नै रखलखिन।

डेढ़ियापर अबिते अछेलालकेँ बुकौर लगि गेलइ। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर टघरए लगलै। अछेलालकेँ देखते मुस्कियाइत सुमित्रा कहलखिन-

"बौआ, केकरो अहाँ अधला केने छी जे अधला हएत। भगवान बेटा देलैन। गोल-मोल मुँह अछि मोटगर-मोटगर दुनू हाथ-पएर छइ।"

आशा-निराशाक बीच अछेलालक मन उगए-डुमए लगल। हँसी होइत सुख निकलए चाहै आ आँखिक नोर होइत दुख।

बेटा जनैमते सुमित्राक अँगनाक टाटपर बैसल कौआ दू बेर मधुर स्वरमे कुचरल। कौआक कूचलव सुनि बचेलालक मुहसँ अनासुरती निकलल-

"अछेलाल काकाकेँ बेटा भेल।"

मुहसँ निकैलते बचेलाल आँखि उठा-उठा चारू कात देखए लगल जे कियो कहलक नहियेँ तखन मुहसँ किए निकलल? आँगनसँ निकैल बचेलाल टहलैत-टहलैत डबराक कोण लग आएल। कोणपर

ठाढ़ भऽ हियासए लगल जे बच्चाक जन्म भेल आकि दरदे होइ छइ। सुमित्रा ओछाइन साफ करैत रहैथ आ अगियासी जोड़ैले अछेलाल डेढ़ियापर जारैन आनए गेल कि बचेलालपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते अछेलाल थोड़े आगू बढ़ि बचेलालकेँ कहलक-

"बौआ, छौड़ा जनमल।"

लड़काक नाओं सुनिते बचेलालक एक मनमे आएल जे जा कऽ देख आबी। मुदा लगले दोसर मन कहलकै, अखन जा कऽ देखब उचित नहि। चोट्टे घुमि आँगन आबि पत्नीकेँ कहलक-

"अछेलाल काकाकेँ बेटा भेल।"

बेटाक नाओं सुनिते मने-मन असिरवाद दैत रूमा बजली-

"भगवान जिनगी देथुन।"

बच्चाक छठियार भऽ गेल। सुमित्रा अपन अँगनाक काज सम्हारि अछेलालक आँगन पहुँचली। गोसाँइ लुक-झुक करैत। पतियानी लगा बगुला पच्छिमसँ पूब-मुहेँ उड़ैत, अपनामे हँसी मजाक करैत जाइत। कौआ सभ धिया-पुता हाथक रोटी छीनैले पछुअबैत। जेरक-जेर टिकुली गोलिया-गोलिया ऊपरमे नचैत। सुरूज अराम करैक ओरिआनमे लगल...।

अछेलालक बीच आँगनमे बोरा बिछा सुमित्रा बच्चाकेँ दुनू जाँघपर सुता जँतबो करैथ आ घुनघुना कऽ गेबो करैथ-

"गरजह हे मेघ गरैज सुनाबह हे

ऊसर खेत पटाबह सारि उपजाबह हे

जनमह आरे बाबू जनमह जनैम जुड़ाबह हे

बाबा सिर छत्र धराबह शत्रु देह आँकुश हे

हम नहि जनमब ओइ कोखि अबला कोखि हे

मैलहि बसन सुताएत, छौड़ा कहि बजाएत हे

जनमह आरे बाबू जनमह जनैम जुड़ाबह हे

पीअर बसन सुताबह बाबू कहि बजाबह हे..।

झुमि-झुमि सुमित्रा गेबो करैथ आ बच्चाकेँ जँतबो करैथ। बच्चाक आँखि-सँ-आँखि मिलते सुमित्राक मनमे जेना सिनेहक बरखा बरिसए लगैन। बच्चाकेँ कोनो तरहक तिरोट ने होइ, मनमे अबिते सुमित्रा बच्चाक मुँह दिस देखए लगैथ। टाटक अढ़मे बैस अछेलाल, सुमित्राक सिनेह देख दुनियाकेँ बिसैर आनन्द लोकमे बिचरैत रहए।

◌

शब्द संख्या : 2652

दू

रवि दिन रहने बचेलाल अबेर कऽ उठल। यएह सोचि बिछानपर पड़ल रहल जे आइ स्कूलो नहि जाएब आ घरोपर कोनो काज नहियेँ अछि। मात्र एक जोड़ धोती, एक जोड़ कुरता आ एक जोड़ गंजीटा खीचैक अछि। दुपहर तक तँ काजो एतबे अछि। बेरू-पहर हाट जा घरक झूठ-फूस कीनि आनब। हाटो दूर नहि गामक सटले अछि...।

सुति उठि बचेलाल नित्य-कर्मसँ निवृत्त भऽ दलानक चौकीपर आबि बैसल। रूमा चाह दऽ गेलैन। दू घोंट चाह पिबते पिता मन पड़ि गेलखिन। पिता मन पड़िते बचेलाल अपन तुलना हुनकासँ करए लगल। मने-मन सोचैत रहए, पिता साधारण किसान छला। पढ़ल-लिखल ओतबे जे नाम-गाम टो-टा कऽ लिखि लैथ। काजो ओतबे रहैन जे कहियोकाल रजिष्ट्री ऑफिस जा सनाक बनैथ। भरि दिन खेतीसँ लऽ कऽ माल-जालक सेवामे बेस्त रहै छला। मुदा एते गुण अबस्स रहैन जे गाममे केतौ पनचैती होइत वा केतौ भोज-भात होइ वा समाजिक कोनो दसनामा काज, तँ हुनका जरूर बजौल जानि। तेतबे नहि, बुढ़-बुढ़ानुस छोड़ि कियो नाओं लऽ कऽ शोर नइ पाड़ैत रहैन। अपन संगतुरिया 'भाय' कहैन आ धिया-पुता-सँ-चेतन धरि कियो 'गिरहतबाबा' तँ कियो 'गिरहतकाका' कहैन। परिवारे जकाँ

समाजोकेँ बुझैत रहला। मुदा हम शिक्षक छी। अपन काजक प्रति इमानदार छी। बिनु छुट्टीए एक्को दिन ने स्कूलमे अनुपस्थित होइ छी आ ने एक्को क्षण बिलम्बसँ पहुँचै छी आ जेतेकाल स्कूलमे रहै छी, बच्चा सभकेँ पढ़ैबते छी। जेना आन-आन स्कूलमे देखै छी जे शिक्षक सभ कखनो अबै छैथ, कखनो जाइ छैथ आ स्कूलेमे ताशो भँजैत रहै छैथ...। ओना, हमहूँ केकरो उपकार तँ नहियेँ करै छी किएक तँ दरमाहा लऽ काज करै छी। आन शिक्षकक अपेक्षा इमानदारीसँ जीबतो अपना पैघ कमी बुझि पड़ैए। ओ कमी अछि समाजमे रहि समाजसँ कात रहब। स्कूलक समए छोड़ि दिन-राति तँ गामेमे रहै छी मुदा ने कियो टोक-चाल करैए आ ने कियो दरबज्जापर अबैए। मनमे सदिक्षन रहैए जे कमाइ छी तँ दू-चारि गोरेकेँ चाह-पान खुआबी-पीआबी। मुदा कियो कनडेरियो आँखियेँ नै तकैए। हमहूँ तँ केकरो ऐठाम नहियेँ जाइ छी। चेतन सबहक कहब छैन जे दुआर-दरबज्जाक इज्जत छी चारि गोरेकेँ बैसब। मुदा से कहाँ होइए। गाम तँ शहर-बजार नइ छी जे एक्के मकानमे रहितौ लोक–आन-आन क्षेत्रक रहने–लोक आन-आन भाषा बजैए आ आन-आन चलि-ढालिमे अपन जिनगी बितबैए, केकरो कियो सुख-दुखमे संग नै होइत। मुदा समाज तँ से नइ छी। बाप-दादाक बनौल छी। एकठाम साइयो-हजारो बर्खसँ मिलि-जुलि कऽ रहैत एला। रंग-बिरंगक जातियो प्रेमसँ रहैए। सभ सबहक सुख-दुखमे संग रहैए। बच्चाक जन्मसँ लऽ कऽ मरण धरि संग पुरैए...।

एहेन समाजमे हमर दशा एहेन किएक अछि? ..जहिना पोखैरक पानिक हिलकोरमे खढ़-पात दहाइत-भँसियाइत किनछैर लगि जाइए तहिना तँ हमरो भऽ गेल अछि! की पानियेँक हिलकोर जकाँ समाजोमे होइ छइ? जँ पानियेँक हिलकोर जकाँ होइ छै तँ हम ओइ हिलकोरकेँ बुझै किए ने छी? हमहूँ तँ पढ़ल-लिखल छी..!

जेते समाजक सम्बन्धमे बचेलाल सोचैत तेते मन मलिन भेल जाइत। मुदा बुझि नै पबै छल। अदहा चाह पीला पछाइत जे गिलासमे बँचलै ओ सरा कऽ पानि भऽ गेल। ने चाहक सुधि आ ने अपन सुधि बचेलालकेँ। जेना बुझि पड़ै जे ओहन बोनमे वौआ गेलौं जेतए एक्कोटा रस्ते ने अछि। ..बचेलाल कखनो गंभीरो होइत आ कखनो बड़बड़ाइयो लगैत।

आँगनसँ सुमित्रा आबि बचेलालकेँ देख पुछलखिन-

"बच्चा, कथीक सोगमे पड़ल छह? किछु भेलह हेन की?"

बचेलालक बाजल-

"नहि माए, भेल तँ किछु नहि मुदा गामक किछु बात मनमे घुरियाइए। जेकर जवाब बुझिते ने छी।"

तारतम करैत सुमित्रा कहए लगलखिन-

"गाममे तँ बहुत लोक रहैए मुदा सभ थोड़े गामक सभ बात बुझै छइ। गाममे तीन तरहक रस्ता छइ। पहिल ओ जइसँ समाज चलैए, दोसरसँ परिवार चलैए आ तेसरसँ मनुख चलैए। मनुख अपन चालि परिवारक चालिमे मिला कऽ चलैए। तहिना परिवार समाजक चालिसँ मिला कऽ चलैए तँए तीनूक अलग-अलग चालि रहनौं एहेन घुलल-मिलल अछि जे सभकेँ बुझैमे नै अबैत।"

मुँह बाबि बचेलाल माइक बात सुनि बाजल-

"माए, तोरो बात हम नीक-नहाँति नहि बुझि सकलौं। मनमे यएह होइए जे किछु बुझिते ने छी। अन्हारमे जेना लोक किछु ने देखैत, तहिना भऽ रहल अछि।"

मुड़ी डोलबैत सुमित्रा बजली-

"अपने घरमे देखहक- दूटा बच्चा अछि, ओकर तँ कोनो मोजरे

नहि। तीन गोरे चेतन छी। तूँ भरि दिन स्कूलेक चिन्तामे रहै छह। भोरे सुति उठि कऽ नअ बजे तक अपन सभ क्रिया-कर्मसँ निचेन भऽ खा कऽ स्कूल जाइ छह। चारि बजे छुट्टी होइ छह। डेढ़ कोस पएरे अबैत-अबैत साँझ पड़ि जाइ छह। घरपर अबैत-अबैत थाकियो जाइत हेबह। पर-पखानासँ अबैत-अबैत दोसर साँझ भऽ जाइ छह। दरबज्जापर बैस कोनो दिन 'रमायण' तँ कोनो दिन 'महाभारत' पढ़ै छह। भानस होइ छै खा कऽ सुतै छह। फेर दोसर दिन ओहिना करै छह। अहिना दिन बितैत जाइ छह। दिनेसँ मास आ मासेसँ साल बनै छइ। कोल्हुक बरद जकाँ घरसँ स्कूल आ स्कूलसँ घर अबैत-जाइत जिनगी बित जेतह। मुदा जिनगी तँ से नइ छी। जिनगी तँ ओ छी, जेना वसन्त ऋतु अबिते गाछ-बिरीछ नव कलश लऽ बढ़ैए तहिना मनुखोक गति अछि। जिनगीक गतिए मनुखकेँ ब्रह्माण्डक गतिसँ मिला कऽ लऽ चलै छइ। अज्ञानक चलैत मनुख ऐ गतिकेँ नहि बुझि छुटि जाइए। छुटैक कारण होइ छै, बेकतीगत, परिवारिक आ समाजिक जिनगी। जे सदिकाल आगूक गतिकेँ पाछू-मुहेँ धकलैत अछि। जइसँ मनुख समैक संग नै चलि पबैए। मुदा तइसँ की। बाधा केतबो पैघ किए ने हुअए मुदा मनुखोकेँ साहस कम नै करक चाही। सदिखन सभ अँगकेँ चौकन्ना करि कऽ चललासँ सभ बाधा टपि सकैए। पुतोहुएजनीकेँ देखहुन। भरि दिन भानस-भात आ धिये-पुतेक आइ-पाइमे लगल रहै छथुन। हमरो जे सक्क लगैए से करिते छी। घर तँ कहुना चलिऐ जाइ छह। मुदा परिवार तँ समाजक एक अँग छी माने परिवारेक समूह ने समाज छी, तँए समाजक संग चलैले परिवारकेँ समाजक रस्ता धड़ए पड़त। से नै भऽ रहल छह। जहिना रेलगाड़ीमे ढेरो पहिया आ कोठरी होइ छै जे आगू-पाछू जोड़ल रहै छइ। मुदा चलैकाल सभ संगे चलैए। तहिना मनुखोक होइ छइ।"

माइक बात सुनि बचेलालक जिज्ञासु जकाँ बाजल-

"अपन परिवारक की गति अछि?"

मुस्कियाइत सुमित्रा कहए लगलखिन-

"अपन परिवार ठमकल छह। ओना बुझि पड़ैत हेतह जे आगू-मुहेँ जा रहल छी मुदा नहि। तोरा बुझि पड़ैत हेतह जे शिक्षक छी, नीक नोकरी करै छी, नीक दरमहो पबै छी। मुदा अपनो सोचहक जे जखन हम पढ़ल छी, बुधियार छी तखन हमरा बुधिक काज कए गोरेकेँ होइ छइ। जे कियो नहियेँ पढ़ल अछि ओहो तँ अपन काज, अपन परिवार चलैबते अछि। कनी नीक आकि कनी अधला सभ तँ जीबे करैए। आइ तोरा नोकरी भऽ गेलह तँए ने, जँ नोकरी नै होइतह तखन तँ तोहूँ ओहिना जीवितह जहिना बिनु पढ़ल-लिखल जीबैए। अहिना पुतोहुजनीकेँ देखहुन, जेना घरसँ कोनो मतलबे ने छैन। हमरो बिआह-दुरागमन भेल छल, हमहूँ कनियाँ छेलौं मुदा आइ जे घरमे देखै छिअ तेना तँ नइ छल। जखन हम नैहरसँ ऐठाम एलौं तखन भरल-पूरल घर छल। सासु-ससुर जीबते रहैथ। जखन चारि दिनक पछाइत चुल्हि छुलौं, तहियासँ सासु कहियो चुल्हि दिस नै तकलैन। ने कोठीसँ चाउर निकालि कऽ दैथ आ ने किछु कहैथ। जेहने परिवार नैहरक छल तेहने एतुक्को। जे सभ काज नैहरमे करै छेलौं सएह सभ काज अहूठीम छल। अपन घर बुझि एकटा अन्न आकि कोनो वस्तु दुइर नै हुअ दइ छलिऐ।

..अखन देखै छिअ जे पाँचे गोरेक परिवार रहनौं सभ सभसँ सटल नहि, हटल चलि रहलह हेन। सटि कऽ चलैक अर्थ होइ छै सभ सभ काजमे जुटल रही। ई तँ नै कि कियो काजक पाछू तबाह छी आ कियो बैसले छी। परिवारक सभकेँ अपन सिमान बुझि चलक चाही, से नै छह। हम खेलौं कि नहि, तूँ खेलह कि नहि। भनसिया-ले धैनसन। की खाएब, कोन वस्तु शरीर-ले हितकर आ कोन अहितकर

हएत तइसँ सभकेँ बुझैक कोनो मतलबे नहि। जे खाइमे चटगर लागत, भलेँ ओ अहितकरे किए ने हुअए, वएह खाएब। जइसँ घरमे बिमारी लधले रहै छह। जहिना सुरूजक किरिणकेँ देखै छहक जे अनेको दिशामे चलैए तहिना परिवारोक काज, सभ दिशाकेँ जोड़ैए, से नइ भऽ रहल छह।"

बिच्चेमे बचेलाल बाजल-

"माए, नीक-नाहाँति तोहर बात नहि बुझि रहलौं हेन?"

तारतम करैत सुमित्रा बुझबए लगलखिन-

"बच्चा, देखहक जहिना गाममे किछु परिवार आगू-मुहेँ ससैर रहल अछि तँ किछु परिवार पाछू-मुहेँ। किछु परिवार ठमकल अछि जइसँ गाम आगू-मुहेँ नै बढ़ि रहल अछि। तहिना परिवारोमे होइ छइ। परिवारोमे किछु गोरे आगू बढ़ैक चेष्टा करैए तँ किछु गोरे अदहा-छिदहामे रहैए आ किछु आलस अज्ञान आदिक चलैत पाछू-मुहेँ ससरैए। तँए परिवारकेँ जइ गतिमे चलक चाही, से नै भऽ रहल अछि। तेतबे नहि, ई रोग मनुखक भीतरोमे अछि। किछु लोक अपनाकेँ समैसँ जोड़ि कऽ चलए चाहैए तँ किछु लोक समैक गति नहि बुझि पाछुए-मुहेँ ढुलकैए। ई बात जाबे नीक नहाँति नै बुझबहक ताबे ने मनमे चैन हेतह आ ने आगू-मुहेँ परिवार बढ़तह।"

माइक बातसँ बचेलालक मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। की नीक, की अधला से बुझबे ने करैत। माथ कुरियबैत बाजल-

"माए, जखन मन असथिर हएत तखन बुझा-बुझा कहिहेँ। एक बेरे नै बुझब, दू बेरे बुझैक चेष्टा करब। दू बेरे नै बुझब तीन बेरे चेष्टा करब। मुदा बिनु बुझने तँ काज नै चलत।"

बचेलालक बात सुनि मुस्कियाइत सुमित्रा कहलखिन-

"बच्चा जखन तोहर पिता जीबते रहथुन तखन घरमे पाथरक

बटिखाड़ा छल। ओइसँ जोखै-तौलै छेलौं। एक दिन अपने आबि कहलैन जे आब लोहाक पक्की सेर आ अढ़ैया-पसेरी सभ आएल। हम पुछलयैन जे पथरक जे सेर, अढ़ैया अछि तेकरा फेक देबै? ओ कहलैन, 'फेकबै किएक। लोहाक सेरकेँ पथरक सेरसँ भजाइर लेब। बटिखाड़ा कम-बेसी हएत सएह ने हएत, ओकरा अपन बटिखाड़ा हिसाबसँ मानि लेबै और की हेतइ। ...बौआ अखन तोरो मन खनहन नै छह, जा तोहूँ अपन काज देखह। हमरो बहुत काज अछि। जखन मन खनहन हेतह तखन आरो गप करब।"

अनोन-बिसनोन मने बचेलाल कपड़ा खीचैले विदा भेल। आँगन जा बाल्टीन-लोटा, कपड़ा आ साबुन नेने कलपर पहुँचल। कपड़ा, साबुनकेँ कातमे रखि पहिने कलक चबुतरा साफ केलक। बाल्टीनमे पानि भरि सभ कपड़ाकेँ बोरलक। एकाएकी कपड़ा निकालि दुनू पीठ साबुन लगा-लगा, बगलमे रखैत। जखन सभ कपड़ामे साबुन लगौल भऽ गेलै तखन पहिलुका साबुन लगौलहा कपड़ा निकालि-निकालि खीचए लगल...।

सुमित्रा खन्ती लऽ ओल उखाड़ए बाड़ी दिस विदा भेली। बाड़ीमे पतियानी लगा ओल रोपने छेली। तीन-सलिया ओल! कएटा गाछ फुलाएलो! बाड़ी पहुँच सुमित्रा हियासए लगली जे कोन गाछ खुनी। सभ गाछ डग-डग करैत। पतियानीक बीचमे एकटा गाछक अदहा पत्ता पिरौंछ भऽ गेल। पातकेँ पीअर पात देख सुमित्रा वएह गाछ खुनैक विचार केलैन। ओल कटि ने जाए तँए फइलसँ खूनब शुरू केलैन। सात-आठ किलोक हैदरावादी ओल। टोंटी एकोटा ने। टोंटी नै देख सुमित्रा मने-मन सोचए लगल जँ टोंटी रहैत तँ रोपियो दैतिऐ मुदा से नहि भेल।

..ओलक माटि झाड़ि गाछकेँ टुकड़ी-टुकड़ी काटि खाधिए-मे

दऽ ऊपरसँ माटि भरि देलखिन। सुमित्रा चाहैथ जे ओलो आ खन्तियो एक्केबेर नेने जाइ मुदा से गरे ने लगैन। दुनू हाथसँ ओल उठा एक हाथमे लऽ दोसर हाथसँ खन्ती लिअ लगैथ कि ओल गुड़ैक कऽ निच्चाँमे खसि पड़ैन। कएक बेर चेष्टा केलैन मुदा नहियेँ सम्हरलैन। तखन हारि कऽ पहिने दुनू हाथे ओल उठा कल लग रखि, खन्ती आनए गेली। खन्तियोमे माटि लगल आ ओलोमे। तँए दुनूकेँ नीक-नाहाँति घुअ पड़तैन...।

माएकेँ ठाढ़ देख बचेलाल हाँइ-हाँइ कपड़ा पखाड़ए लगल। कपड़ा लऽ बचेलाल चारपर पसारए गेल।

सुमित्रा ओलकेँ कलक निच्चाँमे रखि कल चलबए लगली। गर उनटा-उनटा दस-पनरह बेर कल चलौलैन। मुदा तैयो सिरक दोग-दागमे माटि रहबे केलइ। तखन ओलकेँ घुसुका बाल्टीनमे पानि भरि लोटासँ ओलो, खन्तियो आ अपनो हाथ-पएर धोलैन। आँगन आबि सुमित्रा पुतोहुकेँ कहलखिन-

"आइ रवियो छी, बच्चो गामेपर रहता तँए ओलक बरी बनाउ। बड़ निम्मन ओल अछि तँए दू चक्का तड़ियो लेब।"

सुमित्राक बात सुनि मुँह-हाथ चमकबैत पुतोहु कहलकैन-

"हिनका हाथमे सरर पड़ल छैन तँए कब-कब नै लगै छैन। हमरा तँ ओल देखिए कऽ देह-हाथ चुलचुलाए लगैए। अपना जे मन फुरैन से बनबौथ। हम चुल्हि पजाइर ताबे भात रन्है छी। सभकेँ नवका चीज नीक लगै छै हिनका पुरने नीक लगै छैन।"

पुतोहुक बात सुनि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली जे जवाब दिऐन कि नहि। समैपर जँ जवाब नै देब तँ दबब हएत। मगर जवाब देनौं तँ झगड़े हएत! अपना जे इच्छा अछि वएह करब मुदा बाता-बाती भेने तँ काजे रूकत। जेते बनबैमे देरी हएत तेते भानसोमे अबेर हेतइ।

तैयो जवाब दइले तनफनाइते रहली। ओलकेँ बीचो-बीच काटि चारि फाँक करए लगली, ओलक सुगन्ध आ रंग देख बजली-

“कनियाँ, जे चीज सभ दिन नीक लागल ओ आइ अधला केना भऽ जाएत? जाबे जीबै छी ताबे तँ खेबे करब। तूँ जेकरा अधला बुझै छहक ओ अधला नइ छी। दुनू गोरेक नजैरमे अन्तर छह। जे अन्तर नीक-अधलामे बदैल गेल छह। दुनू गोरेक नजैर ऐ दुआरे दू रंग भऽ गेल छह जे दुनू गोरेक जिनगी दू रंग बीतल। तूँ नोकरिहारा परिवारक छह हम गिरहत परिवारक। तोहर बाप नगद-नरायण कमाइ छेलखुन जइसँ हाट-बजारसँ समान कीनि आनि खाइ छेलह। मुदा हम तँ समान उपजबैबला परिवारमे रहलौं। कोन वस्तु केना रोपल जाइ छै, केना ओकर सेवा करए पड़ै छै से सभ बुझै छिऐ। हमर नीक आ तोहर नीकमे यएह अन्तर छह।”

दुनूक गप-सप्प बचेलालो दरबज्जापर सँ सुनैत। बीच आँगनमे बैस सुमित्रा ओल बनबैत रहैथ आ घरमे पुतोहु भनभनाइत रहैन, से सुमित्रा नीक नहाँति सुनबो ने करैथ। तखने बच्चा नेने मखनी आएल। कोरामे बच्चाकेँ देख सुमित्रा दबारैत मखनीकेँ कहलखिन-

“मासे दिनक बच्चाकेँ अँगनासँ किए निकाललह! जँ रस्ता-पेड़ामे हवा-बसात लगि जइतै?”

हँसैत मखनी कहलकैन-

“दीदी, ऐ आँगनकेँ अनकर अँगना कहै छथिन, हमर नइ छी। अपनो अँगना अबैमे संकोच हएत?”

मखनीक बात सुनि सुमित्रा मने-मन अपसोच करैत बजली-

“अनकर अँगना बुझि नै कहलौं। अखन बच्चा छोट अछि तँए बँचा कऽ राखए पड़त। बेटा धन छी। घरसँ तँ निकलबे करत...।”

बिच्चेमे पुतोहुकेँ शोर पाड़ैत कहलखिन-

“पहिले-पहिल दिन बच्चा अँगना आएल। तेल-उबटन दहक। अगर उबटन घरमे नै हुअ तँ तेलेटा नेने आबह। ताबे चुल्हि मिझा दहक। पहिने बच्चाकेँ जाँति-पीचि दहक।”

घरसँ रूमा तेल आ बिछान नेने आबि अँगनेमे बिछौलक। तेलक माली लगमे रखि बच्चाकेँ कोरामे लेलक। दुनू पएर पसारि जाँधपर बच्चाकेँ सुतौलक। बच्चाक मुँह देख रूमा मने-मन बजली-

“मखनी केहेन भाग्यशाली अछि जे भगवान एहेन सुन्नर बच्चा देलखिन।”

बच्चाकेँ उनटा-पुनटा कऽ देखैत रूमाक मनमे उठलै- केना लोक बजैए जे फल्लाँक कपार खराब छै आ फल्लाँक नीक। जँ कपार अधला रहितै तँ बेटी होइतै आ जेकर कपार नीक रहै छै ओकरा खाली बेटे होइतै। भगवानक नजैरमे सभ बरबैर अछि। सभ तँ हुनकेँ सन्तान छी। कोन पापी बाप एहेन हएत जे अपना सन्तानकेँ दूजा-भाव करत। अनेरे लोक कपार गढ़ि भगवानकेँ दोख लगबै छैन।

ओल देख मखनी बाजल-

“ओल अण्डाएल रहु माछ जकाँ बुझि पड़ैए। दीदी, ‘हाथ धोइ लौथु, हम बना लइ छिऐन।”

सुमित्रा हाथसँ ओलो आ कत्तो लऽ मखनी ओल बनबए लगली।

सुमित्रा हाथ धोइ कऽ दुनू हाथमे करूतेल लगा अपना पैरमे हसोंथि लेलैन। हाथक कबकबी मेटा गेलैन। बिछानपर जा पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, बच्चा लाउ। हम जाँति दइ छिऐ। अहाँ चुल्हि लग जाउ।”

सासुक कोरामे बच्चाकेँ दऽ रूमा चुल्हि पजारए गेली। सुमित्रा बच्चाकेँ जाँधपर सुतबैत मखनीकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, बीचला चक्का ओरिया कऽ काटब। ओ तड़ब। कतका सभ उसैन कऽ बरी बनाएब।”

मुस्की दैत मखनी कहलकैन-

“तेहेन सुन्नर ओल छैन दीदी जे चुल्हिपर चढ़िते गलबला जेतैन। खेबोमे तेहने सुअदगर लगतैन जे किछ कहौ ने..। ऐ आगूमे दुदहो-दहीक कोनो मोल नहि।”

सुमित्रा बच्चाकेँ जँतबो करैथ आ घुनघुना-घुनघुना गेबो करैथ-

“कौने बाबा हरबा जोताओल,

मेथिया उपजाओल हे।

कौने बाबी पीसल कसाय

ओ जे बच्चाकेँ उङारब हे।

बड़का बाबा हरबा जोताओल

ओ जे सरसो उपजाओल हे।

ऐहब बाबी तेल पेरौली

बच्चाकेँ उगहरैथ हे।”

जाबे मखनी ओल बनौलक ताबे सुमित्रो बच्चाकेँ जाँति-पीचि चानिमे काजरक टिक्का लगा निचेन भेली। मखनीकेँ कोरामे बच्चा दऽ सुमित्रा एक-डेढ़ सेर चाउर आ तीमन जोकर ओल दऽ देलखिन।

◌

शब्द संख्या : 2410

तीन

अधरतीए-मे सुमित्राक निन टुटि गेलैन। ओछाइनपर सँ उठि आँगन आबि मेघ दिस हियासए लगली। अन्हरिया राति। साफ अकास। सिंगहारक फूल जकाँ तरेगन चमकैत। घरसँ थोड़े हटल, पुबारि भागमे बँसबिट्टी। बाँसक झोंझमे मेना सबहक खोंता। एकटा मेनाकेँ बाझ पकैड़ उड़ि गेल। बाझकेँ उड़िते आन-आन मेना गदमिशान करए लगल। मेना सबहक अवाजकेँ सुमित्रा अकानए लगली। भिनसुरका बोली नहि बुझि सुमित्राक मनमे उठलैन- ‘जनु किछु भऽ गेलइ तँए एना बजैए।’ ..कनीकाल ठाढ़ भेलोपर रातिक ठेकान नै पाबि सुमित्रा फेर ओछाइनपर आबि पड़ि रहली। अनासुरती मनमे एलैन, जहिना अछेलाल समाजमे रहितो समाजसँ अलग अछि तहिना तँ बचेलालो अछि। ओइ दिन वेचारा सते कहलक जे ने केकरो ऐठाम जाइ छी आ ने कियो हमरा ऐठाम अबैए। ने केकरोसँ गप होइए आ ने गामक कोनो बात बुझै छी...। तखने रूमा उठि कऽ लगमे एलैन। पुतोहुकेँ सुमित्रा कहए लगलखिन-

“जखन दुरागमन भऽ ऐठाम आएल रही तखन दू-तीन साल अँगनेमे रहलौं। सासु अँगनासँ बाहर नइ हुअ दैथ। बाहरक काज अपने सम्हारैथ। कातिक मासमे छठिक परातेसँ दुनू सासु-पुतोहु शामा गीत गाबी। समाजक सभ स्त्रीगण अपन-अपन अँगनामे सामाक गीत

गबैत। ओ आगू-आगू गबथिन आ हम पाछू-पाछू। तीन साल अहिना बीतल। चारिम सालक गप छी, शामा भँसौन दिन हुनकर मन खराब भऽ गेलैन। तेते जोर कफ आ उकासी होनि जे बजले ने होइन। भँसौन दिन रहने छोड़लो केना जइतै। बेरूए-पहर ओ एक पाँज धान काटि अनलैन। ओकरा मिड़लौं। अदनार धान तँए ताड़ै-भाड़ैक जरूरते नहि। सासु घानी लाड़ैथ हम उक्खैर-समाठ लऽ कूटी। चूड़ा कुटलौं। बाटीमे अरबा चाउर भीजैले दुपहरे दऽ देने रहिऐ। ओकर पीठार पीसलौं। गोसाँइ लुक-झुका गेल। काजो बहुत रहए तँए हाँइ-हाँइ करी। तहूमे सासुक मन खराबे रहैन मुदा तैयो संग-साथ दैथ। ने अखन धरि समा रंगने छेलौं आ ने वृन्दावनक चुगला झड़काबैले बनौने छेलौं। किएक तँ घरमे सोन रहबे ने करए। हाँइ-हाँइ शामा-चकेबा सभकेँ पीठारसँ ढोरलौं आ सुखैले चँगेरामे दऽ देलिऐ। शामा रंगैले एक्टा पुड़िया गुलाबी रंग रहए। एके रंगसँ तँ रंगल ने जाएत। कम-सँ-कम लाल, हरिअर, पीअर आ कारी रंग तँ जरूर चाही। दुनू गोरे गुनधुनमे पड़ल रही। अनासुरती हुनका मनमे एलैन जे सीमक पात तोड़ि हरिअरका आ सिंगहारक फूलक डन्टीसँ पीअरका रंग बनौल जा सकैए। मन पड़िते ओ दस-बारहटा सीमक पात तोड़ि आनि हमरा पीसैले कहलैन आ अपने सिंगहारक गाछ लग जा बसिया फूल बीछि अनलैन। हम सीमक पात पीसए लगलौं आ ओ सिंगहारक डन्टी तोड़ए लगली। मनमे सवुर भेल। किएक तँ काजरसँ करिया रंगक काज चलि जाएत। रंग तैयार होइते दुनू गोरे रंगलौं। रंगल जखन भऽ गेल तखन हुनका मन पड़लैन जे झाँझी कुत्ता, ढोलिया आ लड़ुबेचा तँ बनेबे ने केलौं! आब की हएत? वीध तँ पुरबए पड़त।"

कनी रुकि फेर बाजए लगली-

"गुनधुन करैत सासु कहलैन- कनियाँ, कनी माटि सानि तीनू बना लिअ। मुदा धड़फड़मे सूखत केना? तैयो तीनू बनेलौं। काँच

दुआरे ओकरा नै ढोरलौं आ ने रंगलौं। सभकेँ चँगेरामे सेरिया कऽ रखि भानसक जोगारमे लगि गेलौं। सासु मालक घरमे ओछरा दइले गेली आ हम भानस करए लगलौं। भानस भेलो ने छल कि उत्तरबारि टोलमे शामा-गीत शुरू भेल। बाबूओकेँ[1] आ हुनको[2] खुआ दुनू गोरे[3] खेलौं। थारी-लोटा, बरतन-बासन अखारि रखि देलिऐ आ दीप जरेलौं। दुनू गोरे गीत गबए बैसलौं। जहाँ ओ[4] गोसाउनिक गीत उठौलैन कि उकासी हुअ लगलैन। एक लखाइते बड़ीकाल धरि खोंखी करिते रहली। उकासी बन्ने ने होइन। हम हुनकर छाती दाबि-दाबि ससारए लगलौं। तखन उकासी बन्न भेलैन। उकासी बन्न होइते कहलैन- कनियाँ, हमरा गौल नै हएत। आइ भँसौन छी तँए छोड़बो नीक नै हएत। जएह अबैए सएह गाबि वीध पुरा लिअ। ..सासुक आग्रह सुनि तरे-तर खुशी भेलौं जे हमरो लूरि देखती। पहिने तँ थोड़े नाकर-नुकर केलौं जे हमरा गीत नै अबैए मुदा फेर सोचलौं जे लूरिकेँ झाँपियो कऽ रखब नीक नहि। गाबए लगलौं। आगू-आगू हम कहिऐ आ पाछूसँ ओ धरैथ। उकासी दुआरे घुनघुनेबेटा करैथ। आँगनमे गोसाउनिक गीत गाबि चँगेरा उठा बटगबनी गबैत चौमास दिस विदा भेलौं। चौमास जाइत-जाइत गीतो खतम भेल। चौमासमे चँगेरा रखि शामा गीत शुरू केलौं। पहिल गीत समाप्त होइते सासु कहलैन जे लगले सूरे पाँचटा पुरा लीअ। पहिलुक गीत तँ हुनको अबैत रहैन तँए घुनघुनाइयो कऽ संग पुरि देलैन मुदा दोसर नै अबैत रहैन तँए कखनो घुनघुनाइथ आ कखनो चुप भऽ जाथि। हम देखियो कऽ अपना सूरे गबिते रहलौं। जहिना भरल कोठीक मुँह खोललासँ चाउर भुभुआ कऽ निकलैए

[1] ससुर
[2] पति
[3] सासु-पुतोहु
[4] सासु

तहिना हमरो हुअए। एक्के सूरे दस-बारहटा शामा गीत गाबि लेलौं। गामक जेते शामा खेलेनिहारि रहैथ सभ अपन-अपन शामा भँसा आँगन गेली। हमहूँ शामा भँसा सोहर गबैत अँगना विदा भेलौं। एक्के-दुइए गामक गीत गौनिहारि आबए लगली। पाछू-पाछू ओहो सभ भाँज पुरए लगली। एकटा सोहर गाबि दोसर उठेलौं। सासुक मन खराब रहैन तँए खिसिया कऽ ओ सुतैले चलि गेली मुदा पाँचटा सोहरो गौलौं। नवकी कनियाँ सभ मुँह दाबि-दाबि बजैत जे दीदी नाचमे रहै छेलखिन तँए हाथ चमका-चमका गबै छैथ। ओछाइनपर सँ कखनो-कखनो साउसो घुनघुना-घुनघुना गेबौ करैत आ चाबस्सियो दैथ। सोहरक पछाइत समदाउन उठेलौं। नवतुरिया सभकेँ भास चढ़बे ने करइ। घरेसँ माए कहलखिन, 'ठी-ठी केने समदाउन गौल जाइ छइ? मनुख जकाँ मन असथिर कऽ कऽ गाओले ने होइ छैन।' अपन कमजोरी मानि मंगली कहलक, भौजी समदाउन छोड़ि एकटा बरहमासा कहियौ। मंगलीक विचारकेँ सभ समर्थन दैत हुँहकारी भरलक। हम बरहमासा शुरू केलौं-

रघुवर जुनि जइयौ मिथिला नगरसँ सिआ कोहवरसँ ना।
अगहन सिआ के बिआह पूस सेजिया लगायब,
माघ सीरक भरबाएब रघुवर क, सिआ कोहबरसँ ना।
फागुन फगुआ खेलाएब चैत माला गाँथि लाएब
बैशाख बेनिया डोलाएब रधुवर क, सिआ कोहवरसँ ना।
जेठ तबे दिन-राति आषाढ़ बरसे दिन-राति
सावन झुला झूला कऽ, सिआ कोहवर से ना।
भादव राति अन्हार आसीन आस लगायब
कातिक चलि जाएब मिथिला नगर से, सिआ कोहवर से

ना...।"

रूमा अपन सासुक बात धियानसँ सुनैत। पुतोहुकेँ धियानसँ सुनैत देख सुमित्रा आरो आगू बजली-

"बरहमासा गबैत-गबैत रातियो बेसी भऽ गेलै आ ओससँ सबहक नुओ सिमैस गेल। मुदा तैयो उठैले कियो तैयारे ने होइत। हाँ-हाँ, हीं-हीं सभ करैत। अपनो थाकि गेलौं। तखन दुनू हाथ जोड़ि कहलिऐ, बड़ राति भऽ गेल। आब जाइ जाउ। काल्हिसँ आबि-आबि सुनबो करब आ सीखबो करब। तखन सभ गेल। हमहूँ सुतैले गेलौं। औझुका जकाँ ने पढ़ल-लिखल जनिजाति छल आ ने पढ़ै-लिखैक सुविधा छेलइ। एक-एकटा गीत सीखैमे कए-कए दिन लगि जाइ छेलइ। हमहीं जे सीखलौं ओ माएसँ सीखलौं। काजो करैकाल सीखी आ रातिमे खेला-पीला पछाइत माएकेँ जँतैले जाइ तखनो सीखी। जखन गीत इयाद भऽ जाए तखन माएकेँ गाबि सुना दिऐ। ..दोसरे दिनसँ गीत सीखैले ढेरबासँ लऽ कऽ जुआन कनियाँ धरि आबए लगल। गामक बेटी सभ तँ जखन-तखन आबि जाए मुदा कनियाँ पुतोहु वर्गक दोसैर तेसर साँझमे आबै। अँगनाक काज बरदाइत देख सभकेँ कहि देलिऐ जे साँझू-पहरमे आबह। सएह भेल। छह मास धरि सभकेँ गीत सिखेलौं। जखन अपने[5] मरि गेला तखन घरक भार पड़ि गेल। दुनू बच्चा लिधुरिया। की करितौं। खेती-बारीसँ लऽ कऽ अँगना-घरक काज सम्हारए पड़ै छल। अपने काजमे तेना ओझराए गेलौं जे दोसराक सुधिए ने रहल। समाजमे केतौ बिआह होइ वा उपनाइन तँ हमरो हकार अबै छल। हमहूँ जा कऽ गोसाउनिक गीतसँ लऽ कऽ समदाउन तक गबै छेलौं। जे सभ छुटि गेल। अखनो ओ सभ जँ एमहर अबैए तँ जरूर भेँट करैए। मुदा आब तँ अपने सभकेँ बाल-

[5] पति (बचेलालक पिता)

बच्चा, नाति-पोता भऽ गेलइ। सभ अपने-अपने परिवारमे ओझराएल रहैए। हमहूँ बुढ़ भेलौं तँए पहिलुका जकाँ काजोमे नइ सकै छी। जाधैर गामक लोकसँ लाट रहै छल ताधैर सभ नीक-अधला बुझै छलिऐ। केकरा ऐठाम पाहुन आएल वा केकरा घरमे केते नून-तेल खर्च होइ छेलै सभटा बुझै छलिऐ। समए जिनगीकेँ छोट बना देलक। खाएर.., जाबे जीबै छी ताबे दोसराक भार नै बनिऐ तइले भरि दिन लुड़ु-खुड़ुमे लगल रहै छी। अखनो बाड़ी-झाड़ीमे तीमन-साजन उपजैबतै छी, भानसो करिते छी, अँगना-घर बहारिते छी, चिक्कैन माटिसँ घर नीपते छी। ..कखनो ई नहि बुझि पड़ैए जे अथबल भेलौं। जखने काजसँ हटब तखने जिनगी भार बुझि पड़त। जिनगी की छी। जिनगी तँ यएह छी जे हँसैत-खेलैत बिता ली। जे अखन धरि तँ निमहल, आगू बुझल जेतइ।"

रूमा अपन सासुक बात धियानसँ सुनैत रहल। भोर भऽ गेल। चिड़ै चुनमुनी जुट बान्हि-बान्हि खोंतासँ निकैल अकासक रस्तासँ पराती गबैत जिनगीक लीला करए विदा भेल।

◌

शब्द संख्या : 1260

चारि

अँगना बहारि सुमित्रा दरबज्जा बहारए गेली। दरबज्जा बाहरैसँ पहिने बरदपर नजैर पड़लैन। डेढ़ियापर बाढ़ैन रखि मुँहपर हाथ दऽ बैस देखए लगली। बरदक दशा देख सुमित्राक दुनू आखिसँ नोर टघरए लगलैन। ताबे बचेलालो सुति उठि कऽ दरबज्जापर आएल मने-मन सुमित्रा सोचए लगली, जाबे बचेलालक पिता जीबै छला ताबे जोड़ा बरद खुट्टापर रहै छल। दुनू बरदकेँ खुआ-पीआ पट्ठा बनौने रहै छला। ने एकटा कुकुर माछी देहपर रहए दइ छेलखिन आ ने एकोटा अठगोरबा रहै छेलइ। जहिना लोक अपन बच्चाक सेवा करैए तहिना ओ गाए-बरदक सेवा करै छला। जखन अपने जीबै छला हमहूँ जुआन छेलौं। दुनू बेकती मिलि घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेती-पथारी धरि सम्हारै छेलौं। आब बुढ़ भेलौं आब केना गाए-बरदक सेवा कएल हएत? जँ कहीं अनचोकमे लथारे मारि दिअए वा हूरपेटे दिअए तखन तँ हाथ-पएर तोड़ा घरमे कुहरैत रहब। तइसँ नीक जे ओकरा लग जेबे ने करी। भरि दिन बचेलालो स्कूलेक आइ-पाइमे लगल रहैए। पुतोहुओ जनी तेहेन घरसँ आएल छैथ जे गाए-बरदसँ कहियो भेँटे ने। घास-पात दुआरे खुट्टापर बरद कलपैए। ने एक मुट्ठी कियो घास देनिहार आ ने एक डोल पानि नमेनिहार। कखनो एक मुट्ठी घास आगूमे फेक देलिऐ तँ कखनो एक डोल पानि पिआ देलिऐ। ऐसँ गाए-

बरद केना पोसल जाएत..? सुमित्रा सोचबो करैत आ आँखिसँ नोरो टघरैत। दलानक आगूमे बचेलाल दतमैनो करैत आ टहलबो करैत। अछेलालकेँ घरमे चुन नै रहने मुट्ठीमे तमाकुल नेने चुन मांगए आएल। सुमित्राक आँखिसँ नोर टघरैत देख बचेलाल पुछलकैन-

"माए, कानै किए छँह?"

सुमित्रा किछु नै उत्तर देलखिन। दुनू आँखिक नोर आँचरसँ पोछि बचेलाल दिस देखए लगली। हाथमे तमाकुल रखने अछेलालो चुपचाप ठाढ़। ने चुन मंगैक साहस होइ आ ने किछु बजैत। सुमित्राक मलिन चेहरा देख अछेलालोक आ बचेलालोक चेहरा मलिन हुअ लगल। त्रिकोण जकाँ तीनू गोरे। कियो ने किछु बजैत। कनीकालक पछाइत मिड़मिड़ा कऽ अछेलाल सुमित्रासँ पुछलकैन-

"एते सोगाएल किए छी भौजी? कथीक दुख मनमे अछि?"

फेर आँचरसँ नोर पोछैत सुमित्रा बजली-

"एतै आउ। लगमे बैसू। कहै छी। बौआ बचेलाल, तोँहू मुँह-हाथ धोने आबह?"

बचेलाल मुँह-हाथ धोइले कलपर गेल। अछेलाल लगमे आबि सुमित्राकेँ बाजल-

"चुनक दुआरे तमाकुलो ने खेलौं भौजी। मन चटपटाइए। पहिने कनी चुन आनि दिअ।"

"अच्छा बैसू। अँगनासँ नेने अबै छी।"

कहि सुमित्रा आँगन विदा भेली। डेढ़िएपर सँ बचेलाल जोरसँ घरवालीकेँ चाह बनौने अबैले कहलक। दू घुस्सा दऽ अछेलाल तमाकुल चूना ठोरमे लेलक। दुनू गोरेकेँ सुमित्रा कहए लगलखिन-

"एक समैक बात छी। हमरा नैहरमे एकटा गौड़ बाबू देने रहैथ।

बड़ सुन्नर बाछी छेलइ। छह मास पोसलौं तखन पाल खेलक। ठीक नअ मास पुरिते बाछी तरे बिआएल। बड़ दूधगर गाए भेल। दू सेर भिनसर आ डेढ़ सेर बेरू-पहर-के दूध हुअए। गाए तँ गाइए छल। जखन बेगरता हुअए तखन पाभैर-आसेर दुहि ली। बड़ सहठुल छल। एगारह बिआन बिआएल। जहाँ तीन मास बिएना होइ कि पाल खा लिअए। पाल खेलापर छह मास लगबो करए। जखन तीन मास बिआइले बाँकी रहै छेलै तखन अपने दुहब छोड़ि दइ छेलिऐ। जहिना नाओं गाए तहिना सज्जनो। खाइयो पीबैमे कोनो चीज बगै नै छेलइ। लत्ती-कत्तीसँ लऽ कऽ तीमन तरकारीक छाँट-छूँट आगूमे दइते लप दे खा लैत रहए। तीन मास बिएना भेलै कि बड़ जोर दुखित पड़ल। गामक लोक सभ जे-जे दबाइ बतौलक सभ केलिऐ मुदा दुख घटैक बदला बढ़िते गेलइ। मनमे हुअए जे कोन जन्ममे पाप केलौं जे एहेन लागल फुलवाड़ी उजड़ि रहल अछि। दुनू परानीक आशा टुटि गेल। सोगे अन्नो-पानि नीक नै लगए। बच्चाकेँ देख दयासँ हृदए पघिल गेल। गाए अपने दुखसँ तबाह तँ बच्चाकेँ केना लगमे जाइ दैतै। जेना बच्चापर सँ सूर्ता हटि गेलइ। सिरियाक गाए बिआएल रहइ। ओकरेसँ पाभैर कऽ दूध ली आ बच्चाकेँ खुरचनसँ पीआबी। मुदा पाभैरसँ बच्चाकेँ की होइतै? फुलकीबला घास आ खिचड़ीक आदति रसे-रसे लगबए लगलौं। पड़ले-पड़ल गाए डिरियेबो करै आ चारू टाँगो पटकै। मनमे हुअए जे नैहरक गाए छी जँ मरि जाएत तँ नैहराक लोक कहत जे धारबे ने करै छइ। मुहसँ फुफरी उड़ए। हमरोसँ बेसी हुनके (पति) चिन्ता होइन। सोगे हदिघड़ी चौकीपर पेटकानो लधने आ कुही भऽ भऽ कनबो करैथ। बेर टगिते एकटा महात्मा जे दाढ़ी-केश बढ़ौने रहैथ, रस्ते-रस्ते केतौ जाइत रहैथ। महात्माक नाओं देवन छेलैन। गाइक डिरियेनाइ सुनलखिन। थोड़ेखान रस्तापर ठाढ़ भऽ हियासलैन। तखन ससैर कऽ दुआरपर एला। मुड़ी गोंति हम अथाह दुखमे डुमल

रही। दुआरपर अबिते देवन निंगहारि-निंगहारि गाएकेँ देखए लगलखिन। कनीकाल गुम्म भऽ पुछलैन, केते दिनसँ गाए अस्सक अछि? कँपैत मनसँ कहलयैन, सात दिनसँ। फेर पुछलैन, घरवारी कहाँ छैथ? हाथक इशारासँ चौकीपर देखा देलिऐन। हाथेक इशारासँ ओहो हुनका लग अबैले कहलखिन।”

कनी रूकि कऽ फेर बाजए लगली-

“लग अबिते मुस्कियाइत कहलखिन, गाए मरत नहि। दुनू बेकती मनसँ दुख हटाउ। कहि अपना झोरासँ कथुक जड़ि निकालि दऽ कहलखिन, एकरा सिलौटपर खूब हलसँ पीसने आउ। ओइ जड़ीकेँ धोइ सिलौटपर सँ पीसने एलौं। भरि गिलास पानिमे ओइ जड़ीकेँ घोरि गाएकेँ पीआ देलखिन। तीनू गोरे गप-सप्प करए लगलौं। कनीए-कालक पछाइत गाइक डिरियाएब बन्न भेलइ। आँखि उठा कऽ गाए बच्चा दिस तकलक। बच्चापर नजैर पड़िते हुकरल। बच्चो बोली देलकै। बाछीकेँ खुजले छोड़ि देने रहिऐ। दौग कऽ बाछी गाए लग आबि ठाढ़ भऽ गेलइ। चारू टाँग समैट गाए ओरिया कऽ बैसल। गरदैन उठौलक। उठल गरदैन देख केतौसँ पराण आएल। मनमे खुशी भेल। अपने कहलैन, गाइक रोग छुटि रहल अछि। आब गाए बँचि जाएत। एते कहिते छला कि गाए उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलि। मुदा चारू टाँग थरथराइते रहइ। नेरू गाइक थन दिस बढ़ए लगल आकि अपने डोरी लगा देलखिन। घरसँ घास आनि हम आगूमे देलिऐ। गाए खाए लगल। हमर करेज चमैक उठल। जहिना जाड़क मासमे करिया पहाड़पर ओस पसरल रहैए आ सुरूजक रोशनी पड़िते चानी जकाँ चमकए लगै छै, तहिना भेल।”

कनी रूकि कऽ फेर बाजए लगली-

“तोहर पिता देवनकेँ कहलखिन, महात्माजी, अपने भोजन कऽ

लेल जाउ। हँसैत देवन उत्तर देलकैन, भोजन जरूर करब मुदा ऐ गाइक दूधक खीर खाएब। ताबत एक लोटा जल पिआ दिअ। महात्माजीक बात सुनि दुनू परानीक मन बिहुँसि उठल। घरक काते-काते जे घास रहै ओकरा नोचि-नोचि हम गाइक आगूमे दिअ लगलिऐ आ अपने बाँसक पत्ता तोड़ए गेला। आहूल भरि घास गाइक आगूमे दिऐ आ ओ लप दे खा जाएत। पँजरामे पँजरा जे सटल रहै से अलगए लगलै। इनारसँ पानि भरि अनलौं। आगूमे दइते बाल्टीनो भरि पी लेलक। फेर एक बाल्टीन अनलौं, सेहो पी गेल। ताबे अपनो पात अनलैन। दुनू गोरे पात खोंटि-खेंटि दिअ लगलिऐ। अदहा बोझ पात खा गेल। तखन देवन कहलैन जे आब दुहि लीअ। थन लटैक कऽ ठेहुन लग चलि आएल रहइ। बच्चाकेँ डोरी छिटिका देलिऐ। दौग कऽ बच्चा पिबए लगलै। अपने दुहए लगला। बाल्टीन भरि गेल। दूध देख मनमे भेल जे दुखीत गाइक दूधो तँ दूषिते हेतइ। मुदा देवन-महात्माजी कहलैन जे दबाइक गुण तँ सेहो दूध तक पहुँच गेल हेतइ। तीन दिनक भूखल दुनू परानी रही। जाबे गाए दुखित रहए ताबेतक भूखो नै बुझिऐ मुदा अपनो भूख जगल। हम भानस करए गेलौं आ अपने देवनसँ गप-सप्प करए लगला। सभटा दूधक खीर रन्हलौं। पहिने माहात्माजीकेँ खुआ अपने दुनू बेकती खेलौं। ओइ गाइक जरोह ई बरद छी। जेकर दशा देख पैछला सभ बात मन पड़ि गेलि तँए आँखिमे नोर आबि गेलि।”

रूमा चाह नेने आएल। सभ कियो चाह पिबए लगल। चाह पीब अछेलाल तमाकुल चुनबए लगल। तमाकुल चुना कऽ खा सुमित्राकेँ पुछलकैन-

“तेकर बाद की भेलै?”

सुमित्रा बाजए लगली-

“खेला-पीला पछाइत देवन विदा हुअ लगला। हम झोरा पकैड़ कहलयैन कम-सँ-कम आइ भरि रहि जाउ। काल्हि चलि जाएब। मानि गेला। खा-पी कऽ रातिमे देवन अपन जिनगीक कथा कहए लगला। दुनू परानी सुनिनिहार रही आ ओ कहनिहार। कहए लगला, जखन हम दसे बर्खक रही तखने माइयो आ बाबूओ दुखित पड़लैथ। हम कमाइ-खटाइ जोकर नै रही। माए-बाबूजी कमाइसँ घर चलै छल। अनासुरती दुनू गोरे दुखित पड़ि गेलैथ। खाइले घरमे किछु रहबे ने करए। एक तँ दुखसँ दुनू गोरे अब-तब करैत रहैथ, दोसर पेटमे अन्न नहि। सिरिफ पानिटा दिऐन। हमहूँ हदिघड़ी लगेमे रहै छेलिऐन। हुनका सभकेँ छटपटाइत देखिऐन तँ हमरो दुख हुअए। मुदा की करितौं? कोनो रस्ते ने सुझैत। पाँचम दिन दुनू गोरे मरि गेला। जाबे दुखित रहैथ ताबे समाजक कियो ने अबै छल आ ने किछु मदैत करए। मुदा जखन मरि गेला तखन जिगेसा करए किछु गोटा एला हमहूँ केकरो ने किछु कहलिऐ। मनमे आएल जे जइ समाजमे कियो केकरो देखैबला नै ओइ समाजमे रहिये कऽ की करब। दुनू गोरे घरेक बिछानपर मुइला? हमरो हड़ल-ने-फूड़ल जेते अँगनाक टाट-फड़क रहए सभकेँ उजाड़ि घरमे दऽ देलिऐ। मनमे आएल जे जरबैकाल नव-वस्त्र हेबा चाही। मुदा सोचलौं जे जीबैतमे तँ दुनू गोरे फाटल-पुरान कपड़ा पहिरलैथ मुदा जरैले नव वस्त्रक कोन जरूरी छइ। सभ समान जमा कऽ कऽ घरमे आगि लगा देलिऐ। जखन आगि पजरल तखन अँगनामे एकटंगा दऽ हाथ जोड़ि संकल्प केलौं जे ऐ समाजमे नै रहब। जइ समाजमे लोक अन्न बिनु काहि कटैए, वस्त्र बिनु नाँगट रहैए, दबाइ बिनु रोगसँ मरैए ओइ समाजमे एक्को क्षण रहब कायरता छी। आँगनसँ विदा भऽ गेलौं। जाबे गामक सिमानक भीतर रही ताबे घुमि- घुमि पाछुओ ताकि आगि देखिऐ मुदा जखन गामक सिमानपर पहुँच गेलौं तखन तक घरो जरि गेल छल। गामक

सिमानेपर ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि पाँच ठोप नोर चुबा माए-बाबूक सराध कऽ विदा भऽ गेलौं। गामक सिमान टपिते मनमे हिलोर उठए लगल। एकटा फूलक गाछ रस्ताक बामामे भाग देखलिऐ। बड़ सुन्नर गाछ छेलइ। निच्चोमे हरिअर कचोर दूबि पसरल छेलइ। नीक जगह देख ओइ गाछक निच्चाँमे बैस गेलौं। मनमे भेल जे दुनू गोरे–माए आ बाबू- पछुएने आबि गाछपर चढ़ि गेला। आँखि उठा कऽ ऊपर तकलौं। किछु ने देखलिऐ। एकटा भोम्हरा उड़ि-उड़ि फूलक रस पीबैत रहए। सिहकी चलैत रहइ। ओइ सिहकीक लहैरमे किछु अवाज होइत रहइ। साकांच भऽ कानपर हाथ दऽ ओइ अवाजकेँ सुनए लगलौं। अवाज पिताक बुझि पड़ल। अवाज परेखि आरो धियानसँ सुनए लगलौं। बुझि पड़ल जे बाबू किछु कहि रहल छैथ। मुदा स्पष्ट बुझबे ने करिऐ।”

कनी रूकि कऽ फेर बाजए लगली-

“मने-मन कहलयैन, अपन पाँच बून नोर चुबा हम अपन कर्तव्य पुरा कऽ लेलौं। आब हम मुक्त छी। तखन अहाँ किएक पछुएने एलौं। ई सुनि ओहो कनैत-कलपैत स्वरमे कहए लगला, बौआ, तोहर अवस्था दसे बर्खक छह तँए तोहर कोनो दोख नहि। अखन तूँ खाइ-खेलाइ बला छह, कमाइ-खटाइबला नहि। तँए तोहर कोन दोख। बड़ इच्छा छल जे बेटाकेँ पढ़ा-लिखा मनुख बनाबी मुदा सभटा मनेमे रहि गेल। मुदा हमरो कोनो दोख नइ अछि। जँ जीबैत रहितौं तखन ने से तँ हमहूँ मरिये गेलौं। तोरा हम असिरवाद दइ छिअ जे जखन घर छोड़ि निकललह तँ दुनियाँ देखह। दुनियेँमे सभ किछु छइ। हदिघड़ी मनुखक बीचमे रहिहह। मनुखेक बीचमे सरस्वती बास करै छथिन। ओइ बीच रहि तूँ पण्डित भऽ जेबह। मुदा एकटा बात हदिघड़ी मन रखिहह जे अपना मेहनतसँ जीवन-यापन करिहह। केकरो एक्को पाइक कर्जदार नै बनिहह। पिताक असिरवादसँ हमरा नव ज्योति भेटल।

नव शक्ति जगल। मनसँ चाउर मरूआक भेद मेटा गेल! मेटा गेल गंगाजल आ डबरा पानिक भेद! मेटा गेल सजल-धजल फुलवाड़ीक फूलक सुगन्ध आ जंगलक अनेरूआ फूलक भेद, मेटा गेल उज्जर-कारी मनुखक भेद! ..नव उत्साह जगिते उठि कऽ विदा भेलौं। विदा होइते माइक अवाज गाछपर सँ आबए लगल। रूकि कऽ सुनए लगलौं। माए कहैत रहैथ- 'बेटा, बड़ इच्छा छल जे भरल-पूरल परिवार देखब। मुदा सभ मेटा गेल। जँ बेटा बनि जन्म भेल हेतह तँ दुनियाँ देखबे करबह नइ तँ तोरा सन-सन बहुतो वौआइत-ढहनाइत मरैए।' ..भूखसँ देह जरै छल मुदा विवेक रूपी सारथी ओइ रूपे प्रेरित करै छल जेना नाँगर घोड़ा रथ घिचैए। जाइत-जाइत एकटा गाम पहुँचलौं। जाड़क मास छेलइ। गामसँ हटल एकटा परिवार बाधमे। भिनसुरका समए सुरूज उगि गेल रहए। ओइ परिवारमे दूटा बच्चा। दुनूक उमेर पाँच बरख सात बरख। दुनू नँगटे। दुनू घरक पछुआरमे खढ़ बिछ-बिछ घूर लगबैत। हम रूकि गेलौं। मनमे आएल जे हमहूँ घूर लगबैमे बच्चाक संग दिऐ। हमहूँ नार-पात बिछए लगलौं। एकटा बच्चा अँगनासँ आगि अनलक। घूर सुनगेलौं। तीनू गोरे आगि तापए लगलौं। देह गरमाएल। कनीकालक पछाइत ओइ बच्चाक माए छिपलीमे भात-तीमन नेने आबि आगूमे रखि देलकै। ओ औरत तीस-पैंतीस बर्खक मुदा देखैमे अधबेसू बुझि पड़ैए। हमरा बैसल देख ओ पुछलक, बौआ, कोन गाम रहै छह। हम कहलिऐ, 'हमर कोनो गाम नइ अछि। माए-बाप मरि गेली। दुनियाँ देखैले जाइ छी। जाबे तक जीबैत रहब ताबे तक चलिते रहब। मुदा बिनु दुनियाँ देखने छोड़ब नहि।' ..हमरा देख ओइ वेचारीकेँ दया लगलै। बच्चाक आगूक छिपली उठा अँगना गेल। भारामे जे भात-तीमन रहै काढ़ि कऽ नेने आएल। तीनू गोरे संगे-संग खेलौं। मुँह-हाथ धोइ कऽ पानि पीब विदा हुअ लगलौं। तँ ओ औरत कहलक, 'आइ नै जो बौआ। जहिना दूटा

बच्चा पोसै छी तहिना तोरो पोसबो।' ..औरतक बात सुनि हम रूकि गेलौं। बौआ बचेलाल भरि राति देवन अपन जिनगीक बात कहिते रहल आ हम दुनू परानी सुनिते रहलौं। आब बेरो बहुत भऽ गेल। काजो उदम बहुत अछि। फेर कहियो ऐगला बात कहबऽ।"

जहिना नीन टुटिते, सूतल आदमी विहान देखैए तहिना अछेलालो आ बचेलालकेँ भेल। दुनू गोरेक मुहसँ हँसी निकलए लगल। ओना दुनू गोरे आँखि गड़ा सुमित्रे दिस देखै तकै छल मुदा हृदैमे हिलकोर उठए लगलै। जहिना भुमकमक समए पोखैरक पानि हिलकोरसँ किनछैरमे ऊपरो चढ़ैत आ फेर टघैर अपना जगहपर चलि अबैत तहिना दुनू गोरेक मनमे हुअ लगल...।

अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक-

"भौजी, आइ घरि एहेन खिस्सा नै सुनने छेलौं। औझुका खिस्सा सुनलासँ बुझि पड़ैए जेना तरको आँखि खुजि गेल।"

अछेलालकेँ सुमित्रा किछु कहए लगलखिन कि बिच्चेमे पानि पीबैले बरद हुकरल। बरदक हुकरब सुनि बचेलालकेँ सुमित्रा कहलकखिन-

"बौआ, बरद पियासल छह। अँगनासँ बाल्टीन आनि पानि पीआ दहक।"

माइक बात सुनि बचेलाल आँगनसँ बाल्टीन आनि कलपर सँ पानि भरि कऽ आनि, बरदकेँ पीआबए लगल। सौंसे बाल्टीन पानि बरद पीब गेल। फेर दोसर बाल्टीन पानि आनैले बचेलाल कल दिस बढ़ल। पानि पीआ बचेलाल नादिमे कुट्टी लगौलक। नाइदमे कुट्टी पड़िते बरद हपैस-हपैस खाए लगल जहिना भूखल आदमी नूनगर-अनून नहि बुझैत तहिना बरदोकेँ भेलइ। बरदकेँ खाइत देख सुमित्राक मुहसँ हँसी निकललै। हँसैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलक-

"बौआ, तोहूँ जुआन छह आ घरोवाली जुआन छेथुन। मुदा...।"

अकचकाइत बचेलाल पुछलक-

"मुदा की?"

सुमित्रा बजली-

"मुदा, यएह जे कनियाँ जे छेथुन ओ मेहनतसँ हटल रहए चाहै छथुन। हदिघड़ी आरामे करब मनमे रहै छैन। पुरुख-नारीक जे वैवाहिक सम्बन्ध अछि से नै बुझै छथुन। तोहूँ अनका पढ़बै छह मुदा अपन बात बुझबे ने करै छहक। एहेन बात हम ऐ दुआरे कहि रहल छिअ जे आइ चालीस बर्खसँ हम ऐ आँगनमे रहैत एलौं हेन। जइ रूपमे हमर जुआनी बीतल ओइसँ बहुत दूर हटल कनियाँक छैन। हमरा खुशी होइए जे बेटाकेँ मास्टर बना ठाढ़ केलौं। तँए अपन मेहनतकेँ सार्थक बुझै छी। मुदा पुतोहु जनीक जे चालि-ढालि छैन ओइसँ भोगी-विलासीक परिवारक रूप-रेखा बनि रहल छह। मनुख तँ भोगी नै योगी होइए। हम बुढ़ भेलौं। केते दिन जीबे करब। मुदा परिवार देख अधमौगैत भऽ रहल छी। जाबे आँखि तकै छी ताबे घरक अधला केना देखल जाएत? मुदा की करब। हदिघड़ी रक्का-टोकी करब नीक हएत? तूँ असगरे केते करबऽ। लोहाक मशीन तँ नै छह। जेते खेत अखन छह तेतबे पहिनौं छेलह। जइसँ परिवार नीक नहाँति चलै छेलह। परिवारसँ आगू बढ़ि दुनू बेकती समाजसँ जुड़ल छेलौं। अखन दुख होइए जे बहुत निच्चाँ उतैर गेलौं मुदा तूँ दुनू परानी बुझै छहक जे आगू बढ़ि रहल छी। उन्नैत भऽ रहल अछि। अखन घरक आमदनीक दूटा रस्ता भऽ गेल छह- एकटा नोकरी, दोसर खेती। मुदा घुसैक रहलह हेन पाछू-मुहेँ।"

बिच्चेमे बचेलाल बाजल-

"माए, जेते तूँ बुझै छीही तेते हम थोड़े बुझै छिऐ?"

मुस्कियाइत सुमित्रा उत्तर दैत कहए लगलखिन-

"बौआ, आइ बुझि पड़ैए जे तोहर नजैर बदैल रहलह हेन किएक तँ जँ ई बात पहिने बुझितहक तँ सीखैक चेष्टा करितहक। मुदा जखने जागी तखने परात। जिनगीमे सभसँ पहिने सभकेँ अपन सीमा-सरहद बुझक चाही। जाघरि अपन परिचए लोककेँ नइ हेतै ताधैर गरथाहक जिनगीमे रहत। तोरा होइत हेतह जे हम बड़ गरीब छी वा बड़ धनीक छी मुदा जखन अपनासँ आगू-पाछू देखबहक तँ बुझि पड़तह जे हमरोसँ बेसी धनिक लोक अछि आ गरीबो अछि। जेना देखते छहक, जेतबो तोरा छह तेतबो अछेलालकेँ नइ छइ। भरल पेट रहने मनक विचारो नीक होइ छइ। जखन कि जरल पेटमे से केना औत?"

नमहर साँस छोड़ैत बचेलाल बाजल-

"हूँ-उ-उ।"

"हँ, ठिके बुझलहक। भूखल पेट मनकेँ जरबै छइ। जरल मनमे सिनेह केना औत? सिनेह तँ खाली बजने वा उपदेश सुनने नै औत। जाधैर दुनूक बीच सिनेहक पुल नै बनत ताधैर मनुख-मनुखक बीच द्वेष रहबे करतै। जाधैर द्वेष रहतै ताधैर छल-प्रपंच, बेइमानी-शैतानी, मारि-मरौवैल केना मेटाएत।"

निरीह भऽ बचेलाल पुछलक-

"तखन की करब? माए।"

मुस्की दैत सुमित्रा बाजए लगली-

"जहिना अछेलालक बेटाकेँ जनमैकाल सेवा केलिऐ तहिना जिनगी भरि करबै। भगवान सभकेँ दूटा हाथ दूटा पएर, साढ़े तीन

हाथक देह और सभसँ पैघ सम्पैत बुधिक खजाना सेहो देने छथिन। अपना ऐठाम सभसँ दुखद बात यएह अछि जे किछु गनल-गुथल लोक सम्पैत हथिया नेने अछि जइसँ गरीबी एते बढ़ि गेल अछि। कुम्हराक आबा जकाँ गरीब लोक भूखक आगिमे जरि रहल अछि। जइसँ दुनूक बीच बड़का पहाड़ ठाढ़ भऽ गेल अछि। वेचारा अछेलाल जेहने चीजसँ तेहने समांगसँ आ तेहने बुधियोसँ पाछू पड़ि गेल अछि। अखन धरि वेचारा उजड़ल-उपटल घरमे रहल तँए ज्ञान प्राप्त करैक अवसरे कहिया भेटलै। देवनक देखौल रस्ता हम जनै छी। तँए जहिना तोरा बेटा बुझै छिअ तहिना ओहूँ वेचराकेँ बुझै छी।"

तारतम करैत बचेलाल पुछलक-

"केना अछेलाल काकाकेँ अपन समांग बनाएब?"

"अखनेसँ खेत-पथारसँ लऽ कऽ बरदक सेवा करैक भार अछेलालकेँ दऽ दहक। तूँ नोकरी करै छह मुदा खेती-पथारी तँ मरि गेल छह। अखन भार बुझि पड़तह मुदा नहि, मनुखक भीतर जे सूतल शक्ति अछि ओकरा जगबैक छह। जखने ओ जागि जाएत तखने मनुख अपन बदलल रूप देखए लगत। जे खेत परती अछि ओ सोना उपजए लगत। जइसँ अपनो परिवारक आमदनी बढ़त आ ओहू वेचाराकेँ परिवार हँसी खुशीसँ चलतै।"

माइक बात सुनि बचेलाल अछेलालकेँ कहलक-

"काका, आइसँ हमर आ अहाँक परिवार एक भऽ गेल। अखनेसँ खेत पथारक तरबदुत शुरू कऽ दिऔ। पाँच कट्ठा बाड़ी अछि, ओहीमे एक भागसँ घर बना लिअ आ बाँकीमे उपजा हेतइ। एकठाम घर रहने चोरो-चहारसँ रक्षा हएत। बच्चा सभकेँ पढ़बैत रहै छी जे एकटा ढेला छल आ एकटा पत्ता। दुनू जखन अपना जिनगी दिस तकैत तँ ढेलाकेँ बुझि पड़ै जे बरखा हएत तँ गलिए जाएब आ पत्ताकेँ

बुझि पड़ै जे हवा उठत तँ उधिआइए जाएब। तँए दुनूक जिनगी अनिश्चिते बुझि पड़इ। दुनू सोचलक जे अगर दोस्ती कऽ लेब तँ दुनूक जिनगी हँसैत-खेलैत चलैत रहत। दुनू दोस्ती कऽ लेलक। जखन हवा उठै तखन ढेला पत्ता कऽ दाबि कऽ बँचा लैत आ जखन पानि होए तखन पत्ता ढेलाकेँ झाँपि बँचा लइत। तहिना तँ मनुखोक अछि?"

बचेलालक बदलल विचार सुनि गदगद हृदैसँ अछेलाल कहलक-

"बौआ, गरीबक हृदैमे छल-प्रपंच नै होइ छै आ ने मान-अपमान। कियो जँ हमरा अपमाने करत तँ हम ओकर की कऽ लेबै? हमरा की अछि जइसँ अपन मानक रक्षा करब...।"

सुमित्रा दिस देख-

"हमरो मनमे अछि भौजी जे जहिना अहाँ अपन बुझि बेटाबला बनेलौं तहिना अहूँकेँ माए बुझि सेवा करब।"

ः

शब्द संख्या : 2926

पाँच

बचेलाल स्कूल गेल। घड़ी पाबैन रहने स्कूल तँ खूजल रहै मुदा विद्यार्थी अनुपस्थित छल। पहिने तँ बचेलाल भकचकेमे रहला जे छात्र स्कूल किए ने आएल मुदा किछुकालक पछाइत एक गोरेसँ भाँज लगलैन जे पाबैन छी। अपन दृढ़ता रखैत बचेलाल चारि बजेसँ पहिने स्कूल नै छोड़ैक विचार मनमे ठानि लेलैन। स्कूलक ओसारपर कुरसी लगा असगरे बैसल मने-मन अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। अखन घरि सोचैक जे प्रक्रिया बचेलालक रहैन ओ माइक विचार सुनला पछाइत बदलए लगलैन। जइ ढंगसँ अखन धरि सोचै छला ओ ढंग बदलने किछु स्पष्ट बुझए लगला। आँखि उठा कऽ आगू दिस तकला तँ सभ किछु बदलल बुझि पड़लैन। माएपर धियान पहुँचते अनासुरती मुहसँ निकललैन-

"माए साक्षात् सरस्वती छैथ। हुनकासँ बहुत किछु सीखैक अछि। जहिना मनुख अपन विशाल शक्तिक भंडार रहितो, अज्ञानवश नहि बुझि पबैत तहिना तँ हमहूँ छी। हर मनुखकेँ अपन लक्ष्य निर्धारित करि कऽ ओइ पाछू जान-पराणसँ लगि जेबा चाही तखने जिनगीक सार्थकता बुझि पड़तै। अखन धरि हमहीं जे बुझै छेलौं ओकरा इमनदारीसँ निमाहै छेलौं मुदा ओ असथिर चालि अछि। जहिना कोनो स्थानपर पहुँचैले कियो धीमी गतिसँ चलैए तँ कियो मध्यम गतिसँ मुदा

तेज गतिसँ चलनिहारकेँ जल्दी सफलतो भेटैत आ दोसरो काज करैक मौका सेहो। चालि तेज केना हएत? ई मुख्य प्रश्न अछि। मुदा अपन चलब तँ जिम्मा ऐछे जे अनको बुझाएब ओहने जरूरी अछि जेहने अपना बुझब। मुदा पहिल दायित्व तँ अपन अपने अछि। हम शिक्षक छी। आठ घन्टा समए लगाएब आ बच्चा सभकेँ पढ़ाएब अछि जे चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे एक तिहाइ भेल। अहिना पत्नियोकेँ देखै छिऐन...। छोटका बच्चाकेँ बेसीकाल माइए रखै छैथ। बड़की बच्चिया स्कूलेमे बेसीकाल रहैए। अँगना-घर बहारनाइसँ लऽ कऽ भानसोमे संग साथ माइए दइ छथिन। तखन जुआन औरतक काज केते बँचल? जरूर विचारमे केतौ कमी अछि। की पति-पत्नीक जिनगी सिरिफ बच्चेटा पैदा करब छी? की परिवारक खर्च जुटाएब सिरिफ मरदेक जिम्मा छी? की मरद दुनियाँक कोनो कोणसँ पसीना चुबा कमा कऽ अनैथ आ स्त्री घरक छहरदेबालीसँ नइ निकलैथ, यएह प्रतिष्ठा छी? औरत अपना पैरपर नै ठाढ़ होथि आ अइले पुरुखे दोखी छैथ, महिला नहि? की गुलामीक जिनगी सभ-ले कष्टकरे होइ छै सुखद नहि? ..एहेन ढेरो प्रश्न अछि जे सिरिफ वैचारिक समाधानसँ समाधान नहि हएत। किएक तँ प्रश्न समस्या बनि कार्यरूप धेने अछि। जेकर समाधान काजे कऽ सकैए। मुदा काजोकेँ तँ ढेरो बाधा अछि जे काजे ने हुअ दइ छइ। तखन की कएल जाए? ..एते विचार मनमे उठिते बचेलाल कुरसीपर सँ उठि विद्यालयक अँगनामे टहलए लगला। जहिना अधसुखू जारैनकेँ आगिमे देलासँ धुआँ बेसी होइत मुदा धधरा हेबे ने करैत तहिना बचेलालोक मनमे हुअ लगलैन। मुदा बिनु धधरा भेने इजोत केना हएत, अही बिचमे बचेलाल पड़ल छला।"

अखन बचेलाल ने विद्यार्थीकेँ पढ़बैत शिक्षक छैथ आ ने घरवाली-ले पाँच साए नम्बर जर्दा-पत्ती कीनिनिहार। ने अखन किसान परिवार कहौनिहार छैथ आ ने ऑफिसक बड़ा बाबूक जमाए। अखन

मनुखक ओइ सघन बोनमे माटिपर पसरल हरिअर-हरिअर दूबि जकाँ छैथ जे घाससँ लऽ कऽ विशाल-विशाल गाछक निच्चाँमे अपन अस्तित्व हँसैत-खेलैत मौजसँ रखने अछि। की ओइ दूबिकेँ अपन जिनगीसँ आनन्द नै छइ? जरूर छै! ओहो सजि-धजि पूर्ण जुआनीमे आबि अपन प्रीतमक प्रतिक्षामे दिन-राति तकैत रहैए जे हमर अखुनका जे पुष्ट शरीर अछि ओ छीलि कऽ लऽ जा ओइ गाइक भोजन बनौत जे दूध सन अमृत दइए। अमृतक सृजनकर्ता हम नइ छी?

..अनासुरती बचेलालक मनमे उठलैन- अखन हम ओ बतहा बबाजी ने तँ भऽ गेलौं जे शरीरसँ अलग भऽ नचैए? ..टहलल-टहलल बचेलाल कलपर जा मुँह-हाथ धोइ कऽ पानि पीलैन। जहिना धीपल लोहा पानिमे पड़िते सरा जाइए तहिना बचेलालोकेँ पानि पिबते भेलैन। पानि पीब धोतीक खूटसँ मुँह-हाथ पोछि बचेलाल घड़ी देखलैन, तँ चारि बजैत। कुरसी उठा कोठरीमे दऽ केबाड़ बन्न कऽ ताला लगा घर दिस विदा भेला। आन दिनसँ भिन्न मन। जहिना नसेरीकेँ निशाँ कम भेलापर भक् लगल रहैत तहिना बचेलालोकेँ होइन। रस्ताक कोनो सुधिए ने रहैन जे केतए पएर पड़ि रहल अछि। विचारक दुनियाँमे मन वौआइत रहैन। मनमे बेर-बेर उठैन जे हमर शक्ति सूतल अछि ओकरा जागाएब जरूरी अछि, मुदा ओ जागत केना? मनमे आबए लगलैन, डेढ़-डेढ़ घन्टा स्कूल अबै-जाइमे लगैए जँ साइकिल कीनि लेब तँ अदहा समैक बँचत जरूर हएत। अदहा समैक मतलब भेल डेढ़ घन्टा। तेतबे नहि, पाँच-दस मिनट देरियो भेने, तेजीसँ चलि कऽ समए पुरा लेब। नहाइ-खाइमे सेहो डेढ़-दू घन्टा लगि जाइए ओहूमे अदहा समए बँचा सकै छी। भोरू-पहर-के बिछानपर पड़ल रहै छी ओ पहिनौं उठि सकै छी। अगर सभ समैकेँ बँचा एकटा नव काज ठाढ़ कऽ लेब तँ खुशीसँ सम्हारि सकै छी। तेतबे नहि,

फजिलाहा समैसँ जेते करब ओइसँ केते बेसी जीवनोपयोगी मशीनक उपयोगसँ हएत। तहूसँ बेसी काजक उत्साह एने सेहो हएत...।

घरपर आबि बचेलाल घड़ी देखलैन तँ आन दिनसँ बीस मिनट पहिने आबि गेल छला। ई केना भेल? मन पाड़ए लगला तँ रस्ताक चलब मने ने पड़ैन। दरबज्जेक चौकीपर कुरता, गंजी निकालि कऽ रखि बिनु हाथ-पएर धोनहि चीत गड़े सुति दुनू बाँहि मोड़ि चाइनपर लऽ आँखि बन्न केने सोचए लगला।

बाड़ीसँ अरुआ उखाड़ि सुमित्रा एक हाथमे खन्ती दोसरमे अरुआ नेने अबैत रहैथ। रस्तेपर सँ बचेलालकेँ देख चुपचाप आँगन चलि गेली। सुमित्रा मने-मन बुझि गेलखिन जे जहिना साइकिलपर सँ गिरल आदमी हाथ-पएर तोड़ि रोडपर चीते पड़ल रहैए सएह गति बचेलालोकेँ भेल अछि। मुदा अँगनाक टाटक भुरकी देने रूमा बचेलालकेँ देख मने-मन सोचैत जे आन दिन स्कूलसँ सोझे अपना कोठरीमे आबि कपड़ा निकालै छला मुदा आइ एना किएक केलैन। भरिसक रस्तामे किछु भऽ गेलैन। धड़फड़ाइत अँगनासँ निकैल रूमा बचेलालक लगमे आबि पुछलकैन-

"किछु होइए?"

आँखि खोलि बचेलाल रूमाकेँ देख फेर आँखि मूनि लेलैन। रूमाक करेजमे डर सन्हिया गेल। मुँह लग मुँह लऽ जा रूमा फेर पुछलकैन-

"मन-तन खराब भऽ गेल?"

आँखि खोलि बचेलाल मन्द स्वरे मुदा सक्कत शब्दमे बजला-

"नहि! किछु ने होइए। अखन ऐठामसँ जाउ। मनमे समुद्रक लहैर उठि रहल अछि।"

धड़फड़ाइत रूमा सासुकेँ कहैले आँगन गेली। माथपर सँ साड़ी

सरकल रूमाक। सासु लग जा कहलकैन-

"अखन अरुआ बनौनाइ छोड़ि देथुन। बेटाक मन खराब भऽ गेलैन। ने बजै छैथ आ ने मन उछटगर छैन। जेना मुँहक रंगो बदलल जाइ छैन। झब-दे चलौथु। देखथुन जे की भऽ गेलैन।"

दुनू हाथसँ अरुआ पकैड़ कत्तामे लगौने सुमित्रा रूमा दिस देख बजली-

"बच्चाकेँ किछु ने भेलैन। स्कूलसँ अबैमे थाकि गेल हेता।"

हड़बड़ाइत रूमा बजली-

"नहि माए! आनो दिन स्कूलसँ अबै छला कि आइए-टा पएरे एला। एना कहाँ आन दिन होइ छेलैन! केहेन बढ़ियाँ आन दिन देखै छेलिऐन!"

सुमित्राक बाँहि पकैड़ रूमा घिचने-घिचने दलानपर अनलकैन। दरबज्जापर अबिते सुमित्रा रूमाकेँ कहलखिन-

"अहाँ, झब-दे चाह बनौने आउ। हम अछेलालकेँ शोर पाड़ै छी।"

रूमा चाह बनबए गेली। सुमित्रा अछेलालकेँ शोर पाड़ए गेली। जारैन-ले अछेलाल सुखल कड़ची टोनियबैत रहए, तखने एकटा कड़ची तौड़ैकाल आँगुर कपा गेलइ। जइसँ छर-छर खून बहैत रहइ। ताबे सुमित्रो लगमे पहुँचली।

खून बहैत देख सुमित्रा मखनीकेँ लत्ता नेने अबैले कहलखिन। लत्ता नेने मखनी दौगल आएल। मखनीक हाथसँ लत्ता लऽ सुमित्रा अछेलालक ओंगरीमे नुरिया कऽ बान्हि देलखिन। खून बन्न भऽ गेल। टोनियेलहा कड़ची समैट मखनी चुल्हि लग लऽ गेल। अछेलालकेँ संग केने सुमित्रा बचेलाल लग एली। ताबत रूमो चाह नेने एली। सभ

कियो चाह पिबए लगला। चाहक चुस्की लैत बचेलाल अछेलालकेँ पुछलखिन-

"काका, ओंगरीमे लत्ता किए लटपटौने छह?"

"अखने कड़ची टोनियबै छेलौं कि काप लगि गेल। अपना टेंगारी नइए जइसँ छकैड़तौं, तँए हाथेसँ तोड़ै छेलौं। खून बहए लगल तँए लत्ता बान्हि देलिऐ।"

बचेलालक गप सुनि-सुनि रूमाक मन असथिर होइत गेलैन। मुदा तैयो आँखि उठा-उठा बचेलाल दिस देखैत रहली। ..अछेलाल बचेलालकेँ कहलक-

"बच्चा, छुच्छे अहाँ खेतीक भार देलौं। बिनु ओजारे खेती केना करब? ने हर अछि आ ने कोदारि, ने घरमे नीक हँसूआ अछि आ ने खुरपी। ने कुरहैर अछि आ ने टेंगारी। तखन छुच्छे हाथे केते काज चलत। गाममे देखते छी जे ने केकरो कियो कोनो चीज दइए आ ने गरीबी दुआरे सभकेँ सभ चीज छइ। तखन केना काज चलत?"

अछेलालक बात सुनि बचेलालक मनमे उठलैन- जहिना साइकिलक दुआरे अपन समए नष्ट होइए तहिना ओजारक दुआरे अछेलाल कक्काक। ..मुस्की दैत सुमित्रा कहलखिन-

"बच्चा, जहिना समाज परिवारकेँ आगू बढ़बैमे सहायक होइ छै तहिना बाधको अछि। ओना कहैले सभकेँ-सभ नीके बात कहैए मुदा बेवहारमे उनटा छइ। अखन जइ सिमानपर ठाढ़ छह पहिने ओते पहुँचैक उपए करह। बुझैमे नै अबैत हेतह मुदा छह ओइसँ बहुत निच्चाँ, तँए अपन सिमानसँ निच्चाँ कोन-कोन रस्तामे पछुआएल छह, पहिने ओ बुझि ओकरा पुरबए पड़तह। जखन औझुका सिमानपर ठाढ़ भऽ जेबह तखन आगू-मुहेँ डेग उठतह। एकभग्गू भऽ आगू डेग उठबए चाहबह तँ केतौ-ने-केतौ लसैक जेबह।"

सुमित्राक विचार सुनि बचेलालक मनमे आशाक टेमी भुकभुकाए लगल। हृदैमे मद्धिम इजोत भेल। मुस्कियाइत बजला-

“माए, तोहर बात मनमे गड़ि गेल। अखन काज करै जोकर चारि गोरे छी, दू परानी अछेलाल काका आ दू परानी अपने। तूँ तँ बुढ़ भेलँह। जखन स्कूलमे छेलौं तखन मनमे उठल जे सभ दिन पएरे चारि कोस अबै-जाइ छी तँए एकटा साइकिल कीनि लेलासँ अदहा समए बँचत। जे समए उगरत ओकर उपयोग आगूक काजमे करब। जाबे आगू बढ़ैक चेष्टा नै करब ताबे आगू केना बढ़ब?”

मुड़ी डोलबैत सुमित्रा बजली-

“बच्चा, अखन दूटा रस्ता पकड़ैक छह। नोकरी करै छह तँ नोकरियो आ दू बीघा खेत छह ओहूमे जान फुकैक छह। जँ दुनू सुढ़िया कऽ चलए लगतह तँ अनेरे घर उठैत देखबहक। बड़ चिक्कन बात अछेलाल बौआ कहलखुन। जाबे खेती करैक ओजार नै रहतह ताबे मुकाबला केना करबहक?”

सुमित्राक बात समाप्तो ने भेल कि बिच्चेमे अछेलाल बाजल-

“भौजी, काल्हि बेरू-पहर जुगाय आबि कऽ डेढ़ियापर बैस रहल। हम अँगनामे बिछानक टुटल डोरी जोड़ैत रही। कनीकालक पछाइत थूक फेकैले उठलौं कि जुगायकेँ बैसल देखलिऐ। चोट्टे आँगन घुमि चक्कापर सँ तमाकुल-चुन लऽ चुनबैत डेढ़ियापर गेलौं। जुगायक सुखल मुँह देख पुछलिऐ जे ‘भाय केमहर-केमहर एलह, बड़ मन्हुआएल देखै छिअ।’ किछु बजैक हिम्मते ने वेचारे के होइ। तमाकुल देलिऐ। अपनो खेलौं। तमाकुल मुँहमे लेला पछाइत जेना बजैक हूबा भेलइ। कहलक, ‘अछेलाल भाय, कहैक तँ साहस नहियेँ होइए मुदा तोहूँ कोनो बिरान नहियेँ छह तँए कहै छिअ। देखबे करै छहक जे समए केते दुरकाल भऽ गेल अछि। लऽ दऽ कऽ चारि बीघा

खेत छल। भगवान तीनटा बेटी देने छैथ। जेठकी बेटीक बिआह तँ बाबूए सोझहामे भेलइ। दूटा बँचल। मैझलीक बिआहमे सोमनसँ रूपैआ कर्ज लेलौं। आशा छल जे खेतक उपजासँ कर्जा सठा लेब। मुदा पैछला तीन साल केहेन भेल से तँ बुझले छह। रूपैआ नै देल भेल। एक दिन सोमन तेना ने बाजए लगल जे खीस चढ़ि गेल। मनमे आएल जे एक्को धूर खेत बँचाए वा नहि मुदा पाँच दिनक भीतर ओकर रूपैआ दऽ देबइ। मनमे तामस रहबे करए, डेढ़ बीघा खेत सस्तेमे बेच कऽ रूपैआ दऽ देलिऐ। आब अढ़ाइए बीघा खेत बँचल अछि। छोटकी बेटी पनरह-सोलह बर्खक भऽ गेल अछि। तँए बिआह केनाइ जरूरी भऽ गेल अछि। कथा ठेमाएल अछि मुदा बिनु खरचे दिन-ठेकान केना करब। तेहेन भूत लोककेँ लगल छै जे सभकेँ मचोड़ि-मचोड़ि खाइए। सूदी रूपैआ लैत डर होइए तँए तोरा लग एलौं जे रूपैआक कोनो जोगार लगा दएह।’

जुगायक बात हृदैकेँ पीघला देलक। मुदा गरीबक हृदए पीघलनहि की? अपने तँ तेरह दण्डक सकराँति बितैए तखन दोसरक मदैत की करबै। मुदा मनमे आएल जे बचेलाल तँ नोकरी करै छैथ तँए हुनकेँ कहबैन। समाजक बेटी आ अपना बेटीमे कि अन्तर होइ छइ। जाबे बिआह-दुरागमन नै भेल रहै छै ताबे माए-बापक समाजमे बेटी रहैए, तेकर पछाइत तँ सदा-सदा-ले चलि जाइए।”

अछेलालक बात धियानसँ सुनि बचेलाल मुड़ी गोंति विचाराए लगला। समाजमे हम नोकरी करै छी। रूपैआ कमाइ छी। समाजोक तँ आशा हमरा कमाइमे छइ। अगर रूपैआ हम नहियोँ देबै तैयो कोनो-ने-कोनो तरहेँ बिआह भाइए जेतइ। मुदा हमरा की बूझत? हमरा प्रति केते घृणा वेचाराकेँ हेतइ। जाबे जुआन बेटी केकरो घरमे रहै छै ताबे माए-बापक हृदए तिल-तिल कऽ जरैत रहै छइ। एहेन समैमे मदैत मदैत नहि जिनगीक पैघ बोझ उतारब हएत। हमर रूपैआ बैंकमे

अछि। सुदिये केते देत? जेते सुइद देत तइसँ बेसी महगी बढ़तै जइसँ रूपैआक मोले कमत। तखन तँ मुरोसँ कम भेटत। ओइसँ नीक जे बिनु सुदिये रूपैआक मदैत कऽ दिऐ। ..एते बात मनमे अबिते बचेलाल मुड़ी उठा माए दिस तकलैन। सुमित्रो बचेलाले दिस तकैत। दुनू गोरेक विचार आँखिएसँ भऽ गेल। बचेलाल माएकेँ कहलक-

“माए, चारू-भर तँ अभावे-अभाव देखै छी। अभावकेँ बिनु मेटौने लोक केना आगू-मुहेँ ससरत। बेकतीसँ लऽ कऽ परिवार आ परिवारसँ समाज धरि सभ अँटैक गेल अछि। केना ससरत? जहिना नीच जमीनमे बहैत पानि ऊँच जमीनमे नै चढ़ि पबैत, तोहूमे जँ माटिक आड़ि बनल रहए, तखन तँ आरो मोसकिल होइत तहिना तँ जिनगियोमे लोककेँ होइए। जिनगी तँ हवाक गतिसँ नइ चलि सकैए जे ऊपर-निच्चाँक भेद बिनु बुझने चलैत रहत।”

मुस्कियाइत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

“बड़ सुन्नर बात बच्चा कहलह। निच्चाँक पानि जखन जमा भऽ मोटाइए तखन ऊपर चढ़ैक आशा होइ छइ। बाधा रूपी आड़ि तोड़ैले साधनक जरूरत होइ छइ। अखन धरि समाजिक रीति-रिवाज, चालि-ढालि एहेन बना देल गेल अछि जे एकटा डेग उठाउ तँ दोसर लसकत आ दोसर उठाउ तँ तेसर लसकत। मुदा धैर्य आ साहसक आवश्यकता सभकेँ छइ। एक स्थानपर ठाढ़ भऽ वा बैस कऽ देखलासँ दूर धरि देख पड़ैत मुदा बातकेँ गौरसँ बुझए पड़त जे जहिना आँखिसँ निकलैत ज्योति पहिने लगसँ देखैत दूर तक देखैए तहिना सभसँ पहिने मनुखकेँ अपने देखए पड़तै, जखन अपनाकेँ देख लेत तखन दुनियाँ देखैक रस्ता भेटतै। जखने दुनियाँक रस्तापर चलब शुरू करत तखने थाल-खिचार छोड़ि सक्कत माटिपर पएर पड़तै। अखन तोरा सोझहामे तीन तरहक काज उपस्थित छह, पहिने अपना-ले साइकिल कीनि लएह जइसँ

शरीरोक रक्षा हेतह आ समैयोक बचत आ दोसर खेतीक सभ समचा कीनि लएह।”

माइक बात सुनि बचेलाल अछेलाल दिस देखैत बजला-

“काका, काल्हि शनि छी। जँए एते दिन खगल तँए एक दिन आरो खगह। हमहुँ जँए एते दिन पएरे स्कूल गेलौं तँए एक दिन आरो जाएब। परसू रवि छी, छुट्टियो रहत। दुनू गोरे सबेरे जलखै कऽ बजार चलब। साइकिलो कीनि लेब आ खेतियोक सभ ओजार। जुगायोकेँ बेटीक बिआहमे मदैत कऽ देबइ। जे रूपैआ बैंकमे अछि ओ सभ उठा परिवारसँ समाज धरिमे उपयोग कऽ लेब। एक परिवारकेँ आगू बढ़ने तँ समाज नै अगुआएत। समाजकेँ अगुआइले सभ परिवारकेँ अगुआए पड़त। जहिना एकटा इंजन बड़का-बड़का कोठरीकेँ जोड़ि अपना गतिमे चलबैए तहिना जँ समाजोकेँ रस्तापर आनि घिचल जाए तँ ओहो ओइ गतिसँ जरूर चलत।”

बचेलालक विचार सुनि सुमित्रा बजली-

“बौआ, तूँ साइकिल कीनिबह। अपने तँ एक्केबेर स्कूल जेबह एबह। मुदा तेकर बाद तँ साइकिल घरेमे पड़ल रहतह तँए समाजमे केकरो साइकिलक जरूरी हेतै तँ ओकरो दिहक। अपनो काज चलतह आ दोसरोक चलतै। जहिना पहिलुका लोक पोखैर खुनबै छला जइसँ अपनो काज होइ छेलैन आ समाजोक होइ छेलइ। जाधैर समाजमे प्रेम नै बढ़त, एक दोसरकेँ मनुख बुझि मदैत नै करत ताधैर समाज लड़खड़ाइते रहत। जखन सभ- सभ-ले देहसँ लऽ कऽ चीज धरिसँ ठाढ़ हएत तखन समाज निश्चित आगू-मुहेँ ससरत जइसँ सबहक कल्याण हएत। जुगायक बेटीक बिआहमे रूपैआ जरूर दिहक। ओ जँ खेत भरना दिअ चाहतह तँ ओकरा कहि दिहक जे खेत बटाइ वएह करए। वेचारा सुदियोसँ बँचि जाएत आ उपजो हेतइ। ओकरो तँ

परिवार छै, ओहो तँ अन्ने खाएत।"

साँझू-पहर जुगाय अछेलाल ऐठाम आएल। अछेलाल सभ काज सहियारि पोखैर दिस जाइक विचार करिते छल कि जुगायपर नजैर पड़लै, नजैर पड़िते कहलक-

"जुगाय भाय, तोहर काज सुतैर गेलह। जखनसँ तूँ कहलह तखनेसँ मनमे खुटखुटी पकैड़ लेलक। मुदा केकरोसँ कोनो बात करैक समए होइ छइ। समए पाबि बचेलालकेँ कहलिऐ। वेचारा मानि गेल। ओ तोरा रूपैआ सम्हारि देथुन। तूँ निश्चिन्त भऽ बिआहक दिन-ठेकान करह।"

अछेलालक बात सुनि जुगाय बाजल-

"भाय, अखनो दुनियाँमे नीक लोकक कमी नइ छइ। जे अनका बेरपर ठाढ़ हएत ओकरो बेरपर भगवान ठाढ़ हेथिन। हम तँ अपना-मुहेँ हुनका किछु ने कहलयैन तँए संगे चलह जे अपनोसँ बचेलालकेँ कहबैन।"

"अखन तोरा कहैक काज नै छह। नीक हेतह जे परसू रवि दिन संगे बजार चलि रस्तेमे सभ गप करब।"

अछेलालक बात सुनि मुड़ी डोलबैत जुगाय बाजल-

"बड़बढ़ियाँ भाय।"

◌

शब्द संख्या : 2453

छह

देवनकेँ पाबि दीनमा आ भुखनीकेँ वेहद खुशी भेल। भुखनीक मनमे आएल- कमाइबला बेटा भगवान पठा देलैन। मनमे एकटा पैछला बात एलै, हमरासँ एक दिन पहिने दुखनीक जन्म भेल, बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहबो करै छेलौं आ खेलबो करै छेलौं। जब कनी नमहर भेलौं तब संगे पत्तो बीछी, गोबरो बिछ-बिछ आनी आ चिपड़ियो पाथी। घासो छिलैले जाइ आ बकरियो चराबी। बाधमे रखबारक खोपड़ी लग बैस चैरखियो-चैरखी खेली। खेसारी मासमे अँगनेसँ नून नेने जाइ आ खेसारी मुड़ीक झक्खो बना-बना खाइ। आमक जखन टुकले होइ तखनेसँ बिछ-बिछ खाइ। अँगनेसँ चुन पत्तामे नेने जाइ आ खटहो आममे लगा दिऐ तँ ओहो खट्टा नै लगए। जब ढेरबा भेलौं तब माइए संगे दुनू गोरे धानो-गहुम काटी आ लोढ़बो करी आ खेसारियो मौसरीक बोइनो करी। किछु दिनक पछाइत धानो-मरूआ रोपए लगलौं। हमरासँ पाँच बरख पहिने दुखनीक बिआह भेल। ओ सासुर बसए लगल आ हमर बिआहो ने ताबे भेल। दुखनीक बेटो ढेरबा भऽ गेलै हमर लिधुरिये अछि। मुदा भगवान हमर दुख बुझलैन। कमाइबला बेटा अनासुरती पठा देलैन...।

दीनमा बुझैत जे बाँहि पुरैबला समांग भऽ गेल। दुनू गोरे संगे खेतो तामब आ धानो-मरूआक रोपैन करब। एक जनक बोइन तँ

बेसी हएत। जँ कहीं गिरहत बच्चा बुझि देवनकेँ काज नै अढ़ौत तँ ठीक्केपर काज लऽ लेब। अपने कनी बेसी भीर पड़त तँ पड़त, एकटा बोइनो बेसी हएत किने। तीनटा कमेनिहार भेलौं। आब कोनो चीजक दुख नै हएत। कपारमे जाबे दुख लिखल छल ताबे कटलौं। आब सुखक दिन आबि गेल।

पूस-माघक जाड़ दीनमा आ भुखनी केना बितबैत रहए से देवन गौरसँ देखए लगल। ने घरमे सीरक आ ने एक्कोटा कम्मर। फाटल-पुरान साड़ी-धोती पहिर दुनू परानी दीनमा दिन बितबैत। पहिलुका गुदरी-चेथरी साड़ी-धोती सेरिया कऽ साटि, ओकरा सीबि सुजनी बनौने। वएह ओढ़ैत रहए। जइ दिन बेसी जाड़ होइ तइ दिन अखरे पुआरपर सुति बिछानो ओढ़ि लिअए। सात हाथक एक्केटा घर जइमे सभतूर हँसी-खुशीसँ रहैत। ओही घरमे भानसो होइत, चीजो सभ रखैत आ सभतूर सुतबो करैत। एक भाग भानस करैक चुल्ही, दोसर भाग बिछान आ बीचमे सुखल गोबर करसीक घूर लगबैत। ओना घर गरम रहैक नीक बेवस्था छेलै मुदा बिनु लेबल टाटक घर रहने, चारू दिससँ ठंढ आबि घरोकेँ पानि जकाँ ठंढा कऽ दइत। रातिमे जाबे भानस होइ ताबे धिया-पुताक संग दीनमा घूर तपैत।

एक दिन भोरहरबामे पछिया हवा उठल। दीनमाक दुनू ठेहुनसँ निच्चाँ पएर उघारे रहइ। जड़ाएल हवासँ दुनू पएर कठुआ कऽ सुन्न भऽ गेलइ। दीनमाक निन टुटल। ओछाइनसँ उठि बाहर जाइक मन भेलइ। जहाँ उठए लगल कि पएर सोझे ने होइ। उठि कऽ बैस पएर टोबए लगल। ठेहुनसँ ऊपर तँ बुझै मुदा निच्चाँ किछु बुझबे ने करैत। मने-मन दीनमा सोचए लगल एना किए भेल। जँ ठेहुनसँ निच्चाँ पएर दुइर भऽ जाएत तँ चलब केना? डरे दीनमाक छाती धक-धक करए लगलै। घरवालीकेँ उठौलक। मुँह उघारि भुखनी कहलकै-

"बड़ कन-कन्नी अछि, मुँह झाँपि कऽ सुइत रहू।"

कहि भुखनी अपन मुँह झाँपि लेलक। मुँह झँपैत देख दीनमा जोरसँ बाजल-

"हमरा पैरमे भरिसक साँप काटि लेलक, सुन्न बुझि पड़ैए।"

साँपक नाओं सुनिते भुखनी धड़फड़ा कऽ उठल। उठि कऽ चुल्ही लग राखल छोलनी लऽ पैरमे भिरा पुछलकै-

"केहेन लगैए? की भीरौने छी?"

दीनमा जवाब देलकै-

"आँखिसँ तँ छोलनी देखै छी मुदा भिरल किछु ने बुझि पडैए।"

छोलनी रखि भुखनी बिठुआ कटैत पुछलकै-

"केहेन बुझि पड़ैए?"

दीनमा जवाब देलकै-

"किछु बुझबे ने करै छी।"

अखियास करैत भुखनी पुछलकै-

"छुछुनैरो-तुछुनैरोक बोली सुनलिऐ?"

मध्यम तामससँ दीनमा बाजल-

"से कि हम जगले छेलौं। अखन नीन्न टुटल तँ उठिए ने भेल। तब बुझलिऐ।"

भुखनीक मनमे उठलै- हे भगवान एहेन दूरकाल समैमे कोन दुख पठा देलह। दुखे पठबैक छेलह तँ दिन-देखार पठैबतह। एत्ती रातिमे हम की करबै, केना पार-घाट लागत।"

भुखनीकेँ आहि-आलम करैत देख दीनमा बाजल-

"अगियासी करू पछबा बहै छै, भऽ सकैए ठंढी लगि गेल

हुअए।”

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल देवन सभ बात सुनैत रहए। चुल्हीसँ भुमहुर बला आगि निकालि भुखनी घूर पजारए लगल। शीताएल जारैन रहने घूर पजरबे ने करइ। धुइयेँ बेसी होइ। धुआँक दकसँ खोंखी करैत देवनो उठल। घरमे धुआँ भरि गेल। धुआँ दुआरे कोइ किछु देखबे ने करैत। देवन भुखनीकेँ कहलक-

“मौसी, ओछाइनेक पुआर लऽ कऽ कनी घूरमे देही ने।”

हँथोइर कऽ भुखनी एक मुट्ठी पुआर निकालि घूरमे देलक। धुआँ दुआरे भुखनीकेँ तेते खोंखी उठल जे फुकले ने होइ। तरे-तर दीनमाकेँ तामस उठइ। मनमे होइ जे ऐ मौगियाकेँ दू घरमेचा दुनू कनगोजमे लगा दी, हम उठैबला नइ छी तँए। ऐ मौगियाकेँ कोनो लूरिये ने छइ। मुदा फेर होइ जे एकटा दुख तँ लधले अछि, दोसर बेसाहब नीक नै हएत। तँए चुप्पे छल। घूर धधकलै। धुआँ सभ हवाकेँ चाटि गेल। घूर धधैकते शीशीसँ भुखनी तरहत्थीपर करूतेल लेलक। दुनू तरहत्थीमे मिला आगिक ताउ लगा-लगा दीनमाक ठेहुनमे रगड़ए लगल। कनीकालक पछाइत दीनमाकेँ ठेहुनक गिरह हल्लुक भेलइ। ठेहुन हल्लुक होइते दीनमा पएर मोड़लक। अपने हाथे पैरक गिरह टोबए लगल। पएर टोबि दीनमा भुखनीकेँ कहलक-

“कनी डिबिया-तेल आ करूतेल मिला तरबा रगैड़ दिअ।”

डिबिया तेल आ करूतेल मिला भुखनी पतिक तरबा रगड़ए लागलि। तरबा रगैड़ते दीनमाक झुनझुनी छुटि गेल। मन हल्लुक होइते दीनमा उठि कऽ बाहर भेल। बाहरसँ आबि भुखनीकेँ कहलकै-

“जाड़क सुख धनीक लोककेँ होइ छइ। गरीब-गुरबाक हिस्सामे अनेरे भगवान जाड़ देने छथिन।”

वसन्तक आगमन भेल। काल्हिए सरस्वती पूजा सेहो छी आ

किसान सभ हर ठाढ़ सेहो करता। समए सेहो गरमाए लगल। छोट दिन रसे-रसे नमहर हुअ लगल। केते हरबाह गिरहत बदलैक विचार कऽ नवका गिरहत ठेमौलक। दीनमा ऐठाम सेहो कएटा गिरहत आबि हर जोतैले कहलकै मुदा दीनमा नइ गछलक। किएक तँ वसन्त पंचमीमे जे हरबाह जइ गिरहतक हर ठाढ़ करत ओकरा सालो भरि ओही गिरहतक हर जोतए पड़तै। बन्हुआ काज दीनमाकेँ पसिन नहि। छुट्टा रहने बोनिहार स्वतंत्र भऽ काज करैत। जैठाम काज करैक मन हेतै तैठाम काज करत आ बोइन लेत। अखन धरि गाममे यएह प्रथा चलैत जे हरबाहकेँ पाँच कट्टा खेत बटाइ करैले दऽ दैत आ भरि साल काज करबैत। मुदा ऐबेर अदहा लोक पंजाब-दिल्ली चलि गेल तँए हरबाहक मंहगी भऽ गेलइ। हरबाहि करैबला सभ अपनामे विचारि लेलक जे हरबाहिक बोइन एक अढ़ैया कच्चीसँ बढ़ा पाँच किलो बोइन लेब नइ तँ हरबाहि नै करब। संगे बटाइ खेतक उपजा अदहा नै देबै, तिहाइ देबइ। तैपर जँ किसान तैयार हुअए तँ बड़बढ़ियाँ नइ तँ अपन-अपन हर अपने जोतह। दस बरिससँ भुटकुमरा राधाकान्तक हर जोतैत आबि रहल छल। ऐबेर हर ठाढ़ करैसँ तीन दिन पहिनहि जवाब दऽ देलकै। हर ठाढ़ होइसँ एक दिन पहिने राधाकान्त भुटकुमरा ऐठाम आबि हर ठाढ़ करैले कहलखिन, तैपर भुटकुमरा हर ठाढ़ करैसँ इनकार करैत कहलकैन-

“गिरहत पाँच किलो बोइन लेब। सभ हरबाह अपनामे बैस निर्णए केलक। जँ पाँच किलो हरबाही बोइन देबै तखन तँ हर ठाढ़ करब नइ तँ नै करब।”

भुटकुमराक बात सुनिते राधाकान्तक आँखि लाल हुअ लगलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“गामक जँ सभ गिरहत पाँच किलो बोइन तौलत तखन हमहूँ

तौलब। जँ से नै देत तँ असगरे हमहीं किए देबइ।”

राधाकान्तक बात सुनि भुटकुमरा बाजल-

“आन गिरहत आ आन हरबाह जे करए मुदा हम पाँच किलो बोइन लेबे करब जँ से नै देब तँ हरबाहि नै करब।”

‘हरबाहि नै करब’ सुनि राधाकान्त आगि-बबुला होइत भुटकुमराकेँ कहलखिन-

“अगर सभ गिरहत पाँच किलो देत तँ हमहूँ देबह। जँ नै देत हमहूँ नै देबह। मुदा काल्हि पाबैनक दिन छी तँए हर ठाढ़ करबे करिहह।”

भुटकुमराक मनमे एलै जे ई गिरहत सबहक चलाकी छी। जखने हर ठाढ़ करब तखने बन्हा जाएब। जखने बन्हा जाएब तखने पनचैती बैसा कऽ बलजोरी हर जोतेबे करत। तँए अखुनके फड़िछेलहा नीक रहत। मुँह चोरौने काज नै चलत। खुलि कऽ खेलाइये पड़त। दृढ़ भऽ भुटकुमरा बाजल-

“किये बोइन दइ आकि नै दइ मुदा हम पाँच किलो नेने बिनु हर ठाढ़ किनौं नै करब।”

भुटकुमराक सक्कत बोली सुनि राधाकान्त अकैड़ कऽ बजला-

“कियो किछु करै मुदा तोरा पुरने बोइनपर हर ठाढ़ करए पड़तह जँ नै करबह तखन बुझल जेतइ।”

जहिना राधाकान्त कठोर होइत बजला तहिना भुटकुमरो कहलकैन-

“ऐ भागक सुरूज ओइ भाग किए ने उगै मुदा भुटकुमरा अपन बात कोनो हालतमे नइ बदलत।”

तेबर बदलैत राधाकान्त-

“हर नै ठाढ़ करबह तँ हमर कर्जा चुका दएह। तोहूँ घर हमहूँ घर। जाबे कर्जा नै चुकेबह ताबे गट्टा पकैड़ हर जोतेबे करबह।”

भुटकुमरा बाजल-

“बहुत गट्टा पकड़निहारकेँ देखलिऐ जँ तोरा हिम्मत हुअ तँ गट्टा पकैड़ कऽ देख लिहह। मरदक गट्टा छिऐ मौगीक नहि।”

राधाकान्त-

“बड़बढ़ियाँ, हर नै ठाढ़ करैक मन छह तँ नै ठाढ़ करिहह। मुदा हमर कर्जा तँ देबह। चलह हमरा ऐठाम। बोहीमे जेते लिखल हएत तेते दऽ दिहह। तोहूँ घर हमहूँ घर।”

राधाकान्तक बात सुनि भुटकुमराक मनमे एलै जे जँ कहीं ओइठाम जाएब आ सभ समांग मिलि मारए तखन तँ नाँहकमे मारि खा जाएब। गुनधुन करैत भुटकुमरा बाजल-

“एतै बोही नेने आबह, जे बाँकी हैतै से दऽ देबह।”

राधाकान्तक मनमे आएल जे जँ ऐठाम बोही लऽ कऽ आबी आ छीनि कऽ निशान फाड़ि दिअए तखन तँ सभ चौपट भऽ जाएत।

दुनू गोरेमे बक-झक चलिते छल कि भुटकुमराक बेटा–गुलेतिया पंजाबसँ आएल। तीन साल पहिने गुलेतिया मामा गामक लोक सबहक संग दिल्ली गेल। दिल्लीमे नोकरी भेबे ने केलइ। पनरह दिन घुमि-फिर दिल्लीमे ठमौलक। मुदा केतौ गर नै देख पंजाब विदा भेल। गाड़िए-मे एकटा नवयुवक पंजाबी सरदारजी सँ भैंट भेलइ। सरदारजी दिल्लीमे पढ़ैत छल। ओही सरदारजीक संग गुलेतिया पंजाब गेल। सरदारजीक पिता सुभ्यस्त गिरहस्त। जहिना खेती-वाड़ी तहिना मालो-जाल। ओहीठाम गुलेतिया रहि गेल। पंजाब जाइकाल गुलेतिया कोनो चिन्हरबासँ भैंट नै केने रहए। अनका मने गुलेतिया हरा गेल। कियो कहै ‘गाड़ीमे चप्पा पड़ि गेलै’ तँ कियो कहै ‘चोरिमे

पकड़ा गेल अखन जहलमे अछि' तँ कियो कहै 'गुलेतिया अरब चलि गेल' तँ कियो कहै 'दलाल ठकि कऽ बेच लेलकै' तँ कियो कहै 'क्रिमिनलक गैंगमे अछि' तँ कियो कहै 'पॉकेटमारी करैए' मुदा भेँट केकरो ने होइ...।

जेना-जेना दिल्लीक लोक गप उड़बै तहिना-तहिना गामोमे समाद आबि-आबि पसरैत। रंग-बिरंगक गुलेतियाक समाचार सुनि दुनू परानी भुटकुराक कान बहिर भऽ गेल। साल भरि गुलेतियाक कोनो चिट्ठी-पुरजी आ रूपैआ गाम नै ऐलै तखन माइयो-बाप छातीमे मुक्का मारि सवुर कऽ लेलक। जइ सरदार ऐठाम गुलेतिया रहै छल ओ साँझू-पहरकेँ गुलेतियाकेँ खिस्सा-पिहानीसँ लऽ कऽ खेती-पथारी, कुटुम-परिवार सबहक सम्बन्धमे कहइ। मने-मन गुलेतिया तँइ कऽ लेलक जे ने नोकरी करैले दोहरा कऽ आएब आ ने घर रूपैआ पठाएब। जइ दिन बुझि पड़त जे अपन कारबार ठाढ़ करै जोकर कमा लेलौं तइ दिन सभ हिसाब-बारी कऽ, रूपैआ लऽ गाम चलि जाएब। सएह केलक। गुलेतियाकेँ देख भुटकुमरा चिन्हियेँ ने सकल। देहमे पंजाबी पैजामा-कुरता आ हाथमे काड़ा पहिरने खूब नमहर-नमहर केश-दाढ़ी गुलेतियाकेँ रहइ। दरबज्जापर अबिते गुलेतिया बैग-एटैची रखि पिताकेँ गोड़ लगलक। माथ ठोकि भुटकुमरा आसिरवाद तँ दऽ देलकै मुदा चिन्हलक नहि। एक बेर मनमे एलै जे गुलेतिया ने तँ छी, फेर भेलै जे ओ तँ मरि गेल। राधाकान्त गुलेतियाकेँ देख ससैर गेल। ताबे गुलेतियाक माइयो अँगनासँ मुँह झँपने निकैल ओलती लग आबि ठाढ़ भऽ गेल। तरे-तर गुलेतिया हँसैत मुदा चुप-चाप ठाढ़। टोलक धिया-पुता सभ हल्ला करैत जे 'हींगबला आएल, हींगबला आएल!' हींगबलाक नाओं सुनि-सुनि आरो धिया-पुता जमा हुअ लगल। कनीकालक पछाइत अचताइत-पचताइत भुटकुमरा गुलेतियाकेँ पुछलकै-

"बौआ, अदहा-छिदहा चिन्हबो करै छिअ आ नहियोँ चिन्है छिअ तँए ठीकसँ अपन चिन्हारे दएह?"

मुस्कियाइत गुलेतिया बाजल-

"गुलेतिया छिअ।"

'गुलेतिया' सुनिते भुटकुमरा हक्का-बक्का भऽ गेल। आँखिसँ नोर टघरए लगलै। माए दौगल आबि दुनू हाथे भरि पाँज कऽ पकैड़ छाती लगौलक। जेना तेज हवाक बीच घनघोर बरखा होइकाल ऊपरसँ ठनका खसैत आ पृथ्वीमे भुमकम होइत तहिना भुटकुमरा ऐठाम बुझि पड़ए लगल। गुलेतिया मात्र पाइयेटा कमा कऽ नै अनलक। ओ अनलक जिनगी जीबैक ढेरो लूरि, ओ अनलक संकल्प, ओ अनलक कठिन मेहनत करैक उत्साह, ओ अनलक परिवार रूपी मोटाकेँ ऊपर फेकैक उदेस। राधाकान्त सोझे घर दिस विदा भेला। मनमे एलैन, आइ बेइज्जत भऽ गेलौं। मुदा लगले दोसर मन कहलकैन- इज्जत तँ छिऐ धन तखन बेइज्जत केना भेलौं। जँ ओकरा अपना हाथसँ पाँच किलो बोइन तौल देबै तखन ने बेइज्जती हएत। मनमे हँसी उठलैन- भुटकुमरा कर्जा तरमे दाबल अछि। दाबल मात्र लेलहेमे नइ अछि, ओकर जिनगियो करजेक रस्तासँ चलैए। तखन पानिमे रहि मगरसँ बैर केतेकाल..!

आन सालक हिसाबे ऐ साल दीनमा दोबर खेत-तमिया केलक। सरस्वती पूजा दिनसँ दीनमा खेत-तमनीमे हाथ लगौलक जे बैशाखक जानकी नवमी दिन धरि तमैत रहल। तमनी तँ किछु दिन आरो चलितै मुदा बिहरिया हाल नै भेने खेत सभ सक्कत भऽ गेलै तँए छोड़ि देलक। आन सालसँ बेसी गरमी ऐबेरक बैशाखेमे पड़ए लगलै।

दीनमाक घरसँ थोड़े हटि बीच बाधमे एकटा आमक गाछ रहइ। ओ गाछ जेहने नमहर तेहने झमटगर छल। सभतूर दीनमा ओही

गाछक निच्चाँमे बैशाख-जेठक रौद बितबैए। अखार चढ़िते घनघनौआ बरखा भेल। बर्खाक आनन्द सभतूर दीनमा बाधेमे लेलक। बर्खाक आनन्द लइकाल दीनमाक मनमे एलै- अनेरे भगवानकेँ लोक बेइमान कहै छैन। जँ ओ बेइमान रहितैथ तँ एते आनन्द गरीब-गुरबाकेँ किए दैतथिन।

असगरे देवन बैस मने-मन जोड़ए लगल, साल लगि गेल। आब ऐठाम एक्को दिन नै रहब। जँ एक्केठाम रहि समए बिताएब तँ दुनियाँ केना देख पएब।

..केकरोसँ किछु कहने बिना देवन नवटोलसँ विदा भऽ गेल।

◌

शब्द संख्या : 2017

सात

नवटोलसँ टपि देवन रस्तो काटए आ मने-मन सोचबो करए जे ऐगला केहेन गाम हएत। दू तरहक विचार देवनक मनकेँ घेरने। पहिल ई जे आगूक मतलब 'नीकमे आगू' आ दोसर 'अधलामे आगू।' फेर मनमे उठलै जे नीकोमे आगूक मतलब तँ दू तरहक अछि। एकटा होइत 'देहक सेवामे' आ दोसर होइत 'आत्मा-बुधि-विवेकक सेवामे।' फेर मनमे उठलै, आत्मा तँ प्रकाश स्वरूप होइत तखन बिनु प्रकाशे हएत की? तहिना अधलो दू तरहक अछि। जेकर आधार जाति, धरम आ धन अछि। जेना कोनो गाममे उच्च जातिक बोलबाला होइ छै जे नीच जाति-ले अधला भेल। तहिना नीच जातिक बोलबाला बला गाम उच्च जाति-ले अधला भेल। तहिना धरमो आ धनोक आधारसँ होइत। ..बच्चा देवन जेते सोचए चाहैत तेते ओझराएल जाए। उम्मस रहने जेना लोकक मन औल-बौल करैत तहिना देवनोकेँ हुअ लगल। रस्ता दिस धियाने ने रहलै। पैछला जेना सभ किछु बिसैर गेल आ ऐगलाक दरबज्जे बन्न देखइ...।

देवन बैस रहल। मनमे कोनो विचार उठबे ने करइ। शरदक समए रहने सुरूजेक किरिणिक संग निनो आबि गेलइ। मनमे किछु रहबे ने करै तँए देह हल्लुके रहै आ निनोकेँ खुजल दरबज्जा भेटलै, देबनक देहमे घोंसिया गेल। रस्तेपर देवन सुति रहल।

बुधि-विवेक तँ पहिनहिसँ बच्चे छल, माइक कोरामे सुरूजक गरमी भेटलै, निसभेर भऽ गेल। मुदा छोटके निन छेलइ। ज्ञान तँ जगलै मुदा देह पड़ले रहलै। जेना कियो ज्ञानकेँ कहलकै-

“ऐ बटोही, सुतने रस्ता कटतह जे दुनियाँ देखबह। तेहेन बाधमे सूतल छह जे खेतक आड़ि सभमे साँपक बिल देखै छहक। जल्दी उठि कऽ रस्ता नापह नइ तँ साँप आबि कऽ धऽ लेतह। पड़ले रहि जेबह।”

देवन उठि कऽ बैसल। चारू-भर आँखि उठा कऽ तकलक। निनाएल आँखि रहने साफ-साफ किछु ने देखलक। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मीड़ि आँगुरसँ काँची निकाललक। काँची निकालिते फरिच्छ देखए लगल। उठि कऽ ठाढ़ भेल। आगू बढ़ल। किछु दूर आगू एकटा गाम नजैर पड़लै। कातेसँ हियासए लगल जे गाम नमहर अछि कि छोट। जेते गामक लग पहुँचैत जाए तेते आँखि झलफलाइत गेलइ। गाम नमहर अछि की छोट से बुझिये ने पड़इ। दछिनबारि भाग देखलक जे एकटा खूब नमहर कोठा झलकै छइ। खूब नमहर-नमहर तारक गाछ सभ सेहो छइ। एक टकसँ देख देवन उत्तरबारि भाग तकलक तँ देखलक केते खुलोमे आ केते गाछक निच्चाँ सभमे, दस-बारह हाथ नमती आ चारि-पाँच हाथ चौड़गर टाटकेँ मोड़ि-मोड़ि घर बनौल अछि। अदहा छिदहा खजूरक गाछ आ अदहा-छिदहा लताम, नेबो आ दारीमक गाछ बुझि पड़लै। देवन देखबो करए आ चलबो करए। गाम पहुँचल। गाम पहुँचते रस्ताक दहिना भागमे एकटा औरतकेँ देखलक जेकर बताहि जकाँ बगए छइ। ओ औरत पाँच बर्खक बेटाकेँ कहैत रहइ-

“स्कूल जेमे की नहि?”

तैपर कुही भऽ भऽ कनैत बेटा कहइ-

“मरि जेबो मगर उसकूल नै जेबौ। माहटर सहाएब अपनोसँ

नमहर ठेंगा लऽ कऽ मारैए।”

बेटाक बातपर धियान नै दऽ माए पुचकाइर कऽ कहलकै-

“बौआ, नै पढ़मे तँ बिआहो ने हेतौ।”

“नइ हएत तँ नै हएत।”

माए-बेटाक बात देवन धियानसँ सुनबो केलक आ सोचबो केलक। थोड़ेकालक पछाइत रस्तासँ उतैर देवन ओकरे अँगनाक बाट धेलक। डेढ़ियापर पहुँचते ओ औरत देवनकेँ पुछलकै-

“बौआ, केतए रहै छह?”

परिचित जकाँ देवन बाजल-

“हमरा गाम-ताम नइए। जतइ मन-फूरत रहि जाएब।”

छगुन्तामे पड़ि ओ औरत सोचए लगल। कहैए गाम-ताम नइए! कोराक बच्चा झूठ बाजत! माए-बाप तँ जरूर हेतइ। फेर मनमे एलै जे मनुखो तँ माले-जाल जकाँ जिनगी बितबैए। बगए-बाणिसँ अनाथ बच्चा जकाँ बुझि पड़ैए! ने किछु खाइले छै आ ने भरि देह बस्तर देखै छी! फेर ओ औरत देवनकेँ पुछलकै-

“माए-बाबू केतए छैथ?”

निधोख भऽ देवन उत्तर देलक-

“दुनू गोरे मरि गेल। असगरे छी।”

असगर सुनि कहलकै-

“ऐठाम रहबह?”

मुस्कियाइत देवन कहलक-

“हँ, रहब। मगर जहिया मन हएत तहिया चलि जाएब।”

देवनक बात सुनि ओ मने-मन सोचए लगल- हमहूँ तँ असगरे

छी। आदमीक जरूरी हमरो अछि। जँ कनी समरथ रहैत तँ खेतियो-पथारी करैत मुदा तैयो तँ पुरुखे छी। कहलकै-

“बौआ, एतै रहि जाह।”

देवनो रहैले तैयार भऽ गेल। देवनकेँ राजी देख पुछलकै-

“रातिमे खेने छेलह की नहि?”

देवन कहलक-

“हँ, खेने छेलौं अखनी भूख नइए।”

जहिना कोनो फूलक गाछक सभ पात बकरी खा लैत आ खाली डारि आ गोटे आधे फूलक कोढ़ी बचल रहैत जे समए पाबि खिल उठैत तहिना ओइ औरतक मनमे आशा जगल। घरसँ बिछान निकालि देवनकेँ बैसैले कहलक। देवन बिछौनपर बैस गेल। देवनकेँ बैसल देख ओ बच्चा सेहो आबि बैसल आ ओ औरत अँगनाक काजमे लगि गेल।

देवन बच्चाकेँ पुछलकै-

“बौआ, अहाँ अपनो नाओं कहू आ बाबूओक?”

बच्चा उत्तर देलक-

“हमर रमुआ छी आ माइक बुधनी। बाबू मरि गेल”

रमुआक बात सुनि देवनक मनमे एलै जे बपटुगर जकाँ नहि बुझि पड़ैए। मुदा झूठ तँ नै कहने हएत।

वासन-कुसन अखारि, चुल्हि लग जारैन रखि पानि भरि बुधनी देवन लग आबि बैस गेल। बुधनीकेँ ओछाइनपर बैसते देवन पुछलक-

“अहाँक पति कहाँ छैथ?”

पतिक नाओं सुनिते बुधनीक दुनू आँखि नोराए लगल। मुँहक बोलीकेँ सोग धकियबए लगल। दुनू चुप। ने देवन बजैत आ ने बुधनी। मुदा दुनूक चारू आँखि आगू-पाछू, ऊपर-निच्चाँ, दहिना-बामा

भाग देखैत आगू बढ़ि एकठाम भऽ गेल। एकठाम होइते बुधनी कहए लगल-

“बौआ, पौरुकाँ सालक गप छी। अखन तँ एकोटा नाँगैर नइ अछि। असगरूआ छी। खुट्टा परहक महींस उठल। बड़ दुधगर छेलए। अपनो सभतूर दूध खाइ छेलौं आ बेचबो करै छेलौं। हाथ-मुट्ठीमे दू-पाइ-चारि पाइ रहिते छेलए। गौआँ सभ मिलि कऽ एकटा पारा पोसने अछि, हमहूँ पाँच रूपैआ बेहड़ी देने रहिऐ। बड़ सहठुल पारा छइ। महींस उठल तँ पारा लगि गेल। दुनू एक्केमे खेबो करै आ रहबो करइ। साँझ पड़ि गेल। अनहरिया पख। तँए दोसरे साँझसँ अन्हार गुप-गुप बुझि पड़इ। अन्हारेमे एकटा अनठिया पारा चलि आएल आ भैंसक घर पैस कऽ दुनू पारा लड़ए लगल। रमुआक बाप, एकटा भराठ लऽ कऽ अनठिया पाराकेँ भगबए चाहलैन। लड़ब छोड़ि पारा हुनकेँ खिहारि कऽ पटैक सींगसँ हूरा लिअ लगलैन। हम जोर-जोरसँ हल्ला करी- जे हौ लोक सभ रमुआ बापकेँ पारा खून कऽ देलकैन दौगै जा..., जाबे लोक सभ जुटल ताबे हुँनका अघमौगैत कऽ देलकैन। छातीक हाँड़ थोकचा-थोकचा भऽ गेलैन। राति रहइ। की करितौं? भरि राति हुनकेँ टहल-टिकोरामे बित गेल। गाममे डाकदर नहि। ओ कखनो कुहरबो करैथ आ कखनो निष्पराण भऽ जाथि। तखन हुअए जे पराण छुटि गेलैन। हाथसँ किछु-किछु करबो करी मुदा आँखिसँ तेते नोर खसल जे अँचरा भीज गेल। अपनो अहलदिल्ली पैस गेल। भोरे खाटपर उठा श्रीबाबू डाकदर लग गेलौं। जन्तर लगा-लगा डाकदर साहैब देख कहलखिन-

“जेते दिन रोगी जीअत तेते दिन कष्टे हेतैन। नै बँचता। घरेपर लऽ जैयौन जाबे जीता ताबे सेवा करबैन। डाकदर साहैबक बात सुनि हमरा चौन्ह आबि गेल। भुइयेमे खसि पड़लौं। बड़ीकाल तक किछु बुझबे ने केलिऐ। जखन मन नीक भेल तखन बुझलिऐ जे दू-चारि

दिनमे मरि जेता। एक्केटा पिलुआ भेल छेलए। मुदा मन नै मानलक। लोको सभ कहलक जे मरथुन नहि। बड़का-बड़का ओझहा गुनी सभ अछि। बह्मोतरा बला ओझहा गाछ हँकैए। ओकरा ऐठाम केकरो पठाबहक। सएह केलौं। ओझहा आएल पूजा ढारलक, भाउ खेलाएल। कहलक जे ठीक भऽ जेतहुन। पान सात साए रूपैआ खर्च भेल। मुदा किछु ने भेलैन। अहिना-अहिना परोपट्टामे जेते धाइम, भगता, तांत्रिक अछि, सबहक ऐठाम गेलौं। मारे खरचो भेल आ छुटबो ने केलैन। सातम दिन मरि गेला। अपना ने खेती करैक लूरि अछि आ ने माल-जाल पौसैक। महींसो चलि गेल। गाछो-बाँस उपैट गेल। आब पनरह कट्ठा खेतेटा अछि। केना जिनगी चलत से बुझबे ने करै छी।"

बुधनीक बात सुनि देवन सोचए लगल, हमहूँ तँ बच्चे छी। अनासुरती मनमे एलै, सिरिफ बुधनीटा तँ खेतवाली नइ अछि। गाममे बहुतो खेतबला अछि। अनको सभकेँ पुछि खेती करब। तइले चिन्ता की करब। समाज समुद्र छी। दोसराक सहारा लऽ पार-घाट लगाएब...। एते बात मनमे अबिते देवनक मुहसँ हँसी निकलल, उठि कऽ ठाढ़ भऽ बाड़ी दिस घुमैले विदा भेल आ चुल्हि पजाइर बुधनी भानस करए लगल। थोड़ेकालक पछाइत घुमि-फिर कऽ आबि देवन चुल्हिए पाछूमे बैसल। भानस भेल। देवनकेँ बुधनी खाइले देलक। खाइतेकाल देवन बुधनीकेँ कहलक-

"अहाँकेँ हम दीदी कहब आ रमुआकेँ 'बच्चा'।"

देवनक बात सुनि मुस्की दैत बुधनी बजली-

"तोरा बेटा कहबौ। तीनू गोरेक सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल।

खेनाइ खेला पछाइत देवन बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, जेते खेत अछि ओ बेरू-पहर हमरो देखा देब।"

कनीए दिनमे देवनकेँ संग केने बुधनी अपन खेत देखबए विदा भेली। पनरह कट्ठा खेत जे तीन कोलामे बँटल। तीनू कोला देख दुनू गोरे घुमि कऽ आँगन आएल। आँगन आबि देवन बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, हमरा खेत तामैक लूरि अछि। कोदारि अपना अछि की नहि।"

देवनक बात सुनिते बुधनी घरसँ बीझहेलहा ठेँठी कोदारि निकालने एली। कोदारिकेँ देवन निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। कोदारि रखि देवन सोचलक जे काल्हि भोरे सिलौटपर रगैड़ धरगर बना लेब। दुनू गोरे एक्के कोदारिसँ बेराबेरी तामब।

भोर होइते देवन कोदारि पिजबए लगल आ बुधनी जलखै बनबए लगली। तीनू गोरे जलखै खा खेत विदा भेल। खेत पहुँच देवन तामए लगल। तमबो करैत आ गोलो फोड़ैत। थोड़ेकालक पछाइत देवन थाकि गेल। देवनकेँ थाकिते बुधनी तामए लगली। जहिना-जहिना देवन तामि-तामि गोला फोड़ने, तहिना-तहिना बुधनियोँ करए लगली। थोड़ेकालक पछाइत बुधनियोँ थाकि गेली कि देवन कोदारि लऽ पाड़ए लगल। दुनू गोरे मिला दस-बारह धूर खेत तामि, गोला फोरि अँगना विदा भेल। रस्तामे देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

"दीदी, कोदारियेसँ हरक काज कऽ लेब। जखन पानि हेतै तँ बीओ पाड़ि लेब।"

देवनक विचार सुनि बुधनी सोचए लगली जे कहुना-कहुना खेती काइए लेब। जखने खेत अबाद भऽ जाएत तँ नहि सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ-चैवन्नियोँ उपजा हेबे करत। अदहो-छिदहो उपजा भेने, नइ साल भरि तँ छओ मास गुजर चलबे करत। अँगना पहुँचली। अँगना अबिते बुधनी पैरपर एक चुरूक पानि लऽ घरसँ बिछान निकालि छाहैरमे बिछा देवनकेँ अराम करैले कहलक आ अपने भानसक

जोगारमे लगि गेली। सभ दिन दुनू गोरे खेत तामए लगल। मासो ने लगलै सभ खेत दुनू गोरे मिलि तामि लेलक। जेठ मास। रौदसँ जमीन जरए लगल। गाछ- बिरीछक पत्ता पीअर भऽ-भऽ खसए लगल। इनार पोखैरक पानि किछु उड़ए लगल आ किछु अपन जान बँचबैले पतालक रस्ता पकड़लक...।

तीन बर्खक पछाइत ऐबेर आम फड़ल। टुकला बिछैले देवन रमुआकेँ संग कऽ गेल आ सभ गाछीक आम देखलक। आम देख देवन बुधनीसँ पुछलक-

"दीदी, अहाँकेँ आमक गाछ नइए?"

आमक गाछक नाओं सुनि बुधनीक आँखिमे नोर आबए लगल। जेहने दुख कमाइबला बेटा मुइने, उपजल जजात दहेने, ढेनुआर गाइक बच्चा मुइने होइत तेहने दुख फड़ैबला आमक गाछ सुखने वा बेचने होइत। करेज असथिर करैत बुधनी बजली-

"बौआ, आमक गाछ तँ अपनो छल मुदा विपैत पड़ल तँ बेच लेलौं।"

बुधनीक बात सुनि देवनक मनमे कचोट भेल मुदा किछु बाजल नहि। मने-मन सोचए लगल जे गाममे तेते आम फड़ल अछि जे मास दिन केतबो लोक खाएत तैयो उगरबे करत। जेकरा बेसी हेतै ओ बेचबो करत। ..देवन बाजल-

"सभसँ बेसी आमक-गाछी केकरा छइ?"

बुधनी बजली-

"नसीवलाल काकाकेँ छैन।"

"हुनका ऐठाम बेरू-पहर जाएब आ कहबैन जे दूटा आमक गाछ हमरा हाथे बेच लिअ। दूटा गाछ कीनने अपनो खाएब आ

फजिलाहा बेच कऽ हुनकर दामो दऽ देबैन।"

मेहनतक बले नसीवलाल काका बहुत किछु अरैज लेलैन। साले भरिक जखन छला तँ पिता मरि गेलैन। असगरे माएटा परिवारमे। छोट बच्चाक ममता माइक हृदैकेँ हिला देलकैन। वेचारी सासुरसँ नैहर चलि एली। बेटीक बगए देख माए बताहि जकाँ करए लगली। मने-मन भगवानकेँ गरियेबो करैन जे केहेन चण्ठ छैथ। अखन बेटी खाइ-खेलाइक उमेरक अछि, तखन ओ विपैतक पहाड़ गिरा देलखिन। मुदा पतिक बात मन पड़लैन- 'जहिना बेटी हमरा घरमे जनमल आ सेवा केलिऐ तहिना जाबे जीब ताबे करबै।' तखन मन असथिर भेलैन।

नाना-नानीक छाहैरमे नसीवलालक पालन भेल। जहिना आगिमे धिपौल लोहा हथौड़ीक चोट खा नीक वस्तु बनैत तहिना नसीवलालोक जिनगीमे भेल। बच्चेसँ नानाक संग रहि काजक लूरि सीखए लगल। जुआन भेल। नाना-नानी मरि गेलैन। अपन मेहनत आ लगनसँ ओ गुजरो केलक आ खेतो कीनलक। खेतीक आमदनीसँ गाए कीनलक, घर बनौलक, गाछी लगौलक। दिन-राति अपन जिनगीक लीलामे रमि गेल।

तीस बर्खक मेहनतसँ नसीवलाल आइ गामक सभसँ पैघ गिरहस्त छैथ। खेती-वाड़ीसँ समए बँचा कऽ पढ़बो-लिखबो करै छैथ। सदिकाल मनुखक बीच रहए लगला। हृदए एहेन विशाल भऽ गेलैन जे ढेरो मनुखक बीच रहनौं असगरे बुझि पड़ैन। जहिना मेघमे लाखो तरेगन रहनौं सुरूज अलग बुझि पड़ैए, तहिना..!

देवन नसीवलाल ऐठाम पहुँचल। नसीवलाल अपराजित फूलक लत्ती टाटपर बान्हि-बान्हि सरियबैत रहैथ। अनभुआर देवनकेँ देख पुछलखिन-

"तोरा चिन्हलिअ नै बौआ?"

पएर छुबि गोड़ लागि देवन कहलकैन-

"काका, आब हम अहीं गाममे रहै छी। अपना घर-दुआर नइ अछि।"

चौंकैत नसीवलाल पुछलखिन-

"ऐ गाममे केतए रहै छह?"

"बुधनी ऐठाम। वेचारीकेँ चारि-पाँच बर्खक बेटाटा छैन और कियो ने।"

नसीवलाल-

"ऐठाम किए एलह?"

"आमक मास छिऐ। वेचारीकेँ एक्कोटा आमक गाछ नै छैन तँए सोचलौं जे अहाँसँ दूटा गाछक आम मोल लऽ लेब, अपनो खाएब आ बेच कऽ दामो दऽ देब।"

ऊपर-निच्चाँ देवनकेँ निंगहारि कऽ देख कहलखिन-

"दरबज्जापर चलह। बैस कऽ निचेनसँ गप करब। तोहर माए-बाप केतए छथुन?"

माए-बापक नाओं सुनि, देवन उदास भऽ कहलकैन-

"दुनू गोरे मरि गेला। असगर बुझि घरसँ निकैल दुनियाँ देखैले विदा भऽ गेलौं। साल भरि नवटोलमे दीनमा-भुखनी ऐठाम रहलौं। साल पुरिते नवटोलसँ विकासपुर आबि बुधनी ऐठाम छी। वएह वेचारी अपनेक सम्बन्धमे कहलैन, तँए एलौं।"

देवनक बात सुनि, नसीवलाल अपन जिनगीपर नजैर दौगबैत, गंभीर होइत बजला-

"हँ, हमरा बहुत आमक गाछो अछि आ आमो। अगर ओइ

वेचारीकेँ नै छै तँ चलह एकटा बरहमसिया आमक गाछी अछि ओ देखा दइ छिअ। बारहो मास फड़बो करैए आ खाइयोमे सुअदगर होइए। ओइमे जे तोरा पसिन हुअ। दूटा गाछ लऽ लिहह। ओकरे ओगरबो करिहह आ तामो-कोर करिहह। सालो भरि आम होइते रहतह।"

नसीवलालक बात सुनि देवनक मन खुशीसँ नाचि उठल। आशाक दुनियाँमे देवन भ्रमण करए लगल। गाछी देखए दुनू गोरे विदा भेला। गाछी पहुँचते देवनकेँ बुझि पड़लै जे आमक ढेरीक बीच आबि गेलौं। नमगर-चौड़गर गाछी। मझोलका गाछक संग बड़को-बड़को गाछ। जहिना गाछ सबहक सुन्नर रूप तहिना आमसँ लदल गहना। एक-दोसर गाछमे एतेक सिनेह जे सभ अपन-अपन बाँहि समैट-समैट हटल। ने बड़का गाछ छोटकापर ओंगठल आ ने छोटका अपनाकेँ हीन बुझि दबाएल, जइ गाछमे जेते बुत्ता तेते बेसी फड़लौ। जहिना नसीवलाल बीच गाछीमे ठाढ़ भऽ हियासि-हियासि देखैथ तहिना देवनो घुमि-घुमि सगरे गाछी देखलक। देखला पछाइत देवन नसीवलालक लगमे आबि कहलकैन-

"अपने धन्य छी काका, जे एते नमहर आ एते सुन्नर गाछी लगौने छी। हम तँ मोल लइक विचारसँ आएल छेलौं मुदा अपने ओहिना दइ छी तँए हम गाछीक ओगरवाहिये कऽ देब आ हमर मेहनतक जे मजूरी हएत तेतबे लेब।"

देवनक जिज्ञासाकेँ अँकैत नसीवलाल बजला-

"अखन तूँ बच्चा छह तँए गाछी लगौनाइ सीखह। ताबे एकटा गाछ ओहिना लऽ लएह आमो खेबह आ आँठीकेँ रोपि अपनो गाछी लगा लेबह। जखन फड़ए लगतह तखन अपन गाछीक सेवा करिहह।"

नसीवलालक गप सुनि हँसैत देवन विदा भेल। घरपर आबि सभ बात बुधनीकेँ कहलक। दोसर दिनसँ देवन टुकला बिछैक विचार केलक। मनमे एलै जे टुकला बिछैले नीक झोरा चाही। मुदा से तँ नइ अछि। तँए दीदीकेँ एकटा झोरा सिबैले कहि दइ छिऐ आ आइ मौनीए लऽ कऽ जाएब। मौनी नेने देवन टुकला बिछए विदा भेल। गाछीमे टुकला पथार लागल। मने-मन देवन सोचलक जे अखन दोसर काजो ने अछि तँए जँ सभ टुकलाकेँ बीछि लेब आ सोहि कऽ आमील बनाएब। माइर पाइ हएत। मनमे अबिते देवन टुकला बिछए लगल। मौनी भरिते देवन विदा भेल।

घरपर आबि बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, गाछीमे टुकलाक पथार लगल अछि। अहूँ चलू आ रमुओ चलत। बड़का छिट्टा सेहो लऽ लिअ। मौनीमे बिछ-बिछ छिट्टामे रखब।"

तीनू गोरे टुकला बिछए विदा भेल। टुकला देख बुधनीकेँ अचम्भा लगि गेलैन। भरि छिट्टा बुधनी, मौनीमे देवन आ दुनू हाथमे रमुआ टुकला नेने आँगन आएल। आबि देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

"दीदी, अहाँ अँगनाक काज करू आ हम टुकला सोहै छी।"

देवन टुकला सोहए लगल। बुधनी भानस करए गेली। पनरहे दिनमे, धान-चाउरक पथार जकाँ आमिलक पथार अँगनामे भऽ गेल। आमील सुखा-सुखा बुधनी दू कोठी भरलक।

अन्तिम जेठमे झमझमौआ बरखा भेल। धरतीक ताप आ पानिक ठंढकक बीच हाथा-पाइ हुअ लगल। हाथा-पाइ करैत दुनू अलिसा कऽ सुति रहल। पैछला सालक बात देवनकेँ मन पड़लै, बीआ बाउग करैक समए आबि गेल। मुदा कथीक बीआ बाउग हएत से बुझबे ने करैत। बुधनीए घर लग सजनाक घर। सजन गिरहस्त।

देवनक मनमे एलै जे सजन गिरहस्त छैथ तँए हुनकेसँ पुछि लेब नीक हएत। सजन ऐठाम देवन गेल। हाल देख सजन हरक समान, गठुलासँ निकालि डेढ़ियापर झोल-झाल साफ करै छल। देवनकेँ देख सजन पुछलकै-

"बौआ, केमहर-केमहर एलह?"

देवन-

"अहींकेँ पुछए एलौं जे पानि भेल हेन से कथीक बीआ अखन पाड़बै?"

सजन बाजल-

"बौआ, गिरहस्ती तँ हम जरूर करै छी, सभ काज करैक लूइरो अछि। मुदा पढ़ल-लिखल तँ छी नहि! तँए महिना लछत्तरक ठेकाने ने रहैए। अखन हरक सभ समान जोड़िया लइ छी आ बेरू-पहर नसीवलाल काका ऐठाम जा कऽ बुझि लेब। तोहूँ संगे चलिहह। जे बुझैक हेतह से पुछि लिहैन।"

'बड़बढ़ियाँ।' कहि देवन चलि आएल।

बेर टगिते देवन सजनक संग नसीवलाल ऐठाम विदा भेल। दरबज्जेपर बैस नसीवलाल बेटाकेँ बीआ बाउग करैक सम्बन्धमे कहैत रहथिन। तखने देवन आ सजन पहुँचल। दुनू गोरेकेँ देख नसीवलाल पुछलखिन-

"दुनू गोरे केमहर-केमहर एलौं?"

सजन कहलकैन-

"काका, हम तँ अहींसँ पुछि कऽ खेती करै छी। आइ भिनसरे देवन हमरासँ पुछए आएल। तखन हम हरक समचा जोड़ियबैत रही तँए कहलिऐ जे बेरू-पहर दुनू गोरे चलि कऽ काकासँ बुझि लेब।"

मुस्कियाइत नसीवलाल कहलखिन-

“पहिने तमाकुल खुआबह तखन गप-सप्प करब।”

कहि नसीवलाल चुनौटी निकालि सजनक हाथमे देलखिन। सजन तमाकुलो चुनबैत आ बजबो करैत-

“तेहेन बरखा भेल जे मन खुशी भऽ गेल।”

तैपर हुँहकारी भरैत नसीवलाल बजला-

“छोट-छीन बरखा होइत तँ रस्ते-पेरे रहि जाइत मुदा झमकौआ बरखा भेने जमीनमे तेहेन हाल भेल जे गिरहत बीओ-बाइल खसा लेत आ दस दिन अफारो खेत धरि जोतत। घासो सभ, जे सूखा गेल छल ओहो पौनगत। जइसँ मालो-जालकेँ खोराकी बढ़तै।”

चुटकीमे तमाकुल लऽ सजन नसीवलाल दिस बढ़ौलकैन। बामा तरहत्थीपर तमाकुल लऽ नसीवलाल दहिना औंठासँ दू बेर रगैड़ नाकमे औंठा भीरा नोइस लऽ तमाकुल मुँहमे लेलैन। नोइस लगिते छिक्का भेलैन। छिक्का होइते मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक होइते बजला-

“जेठ अन्त भऽ रहल अछि। बड़ सुन्नर हाल भेल। पुरना ढंगक गिरहस्तीमे मरूआ, गरमा धान आ नीचला खेतक अगहनी बीआ खसबैक समए आबि गेल। आँखि मूनि कऽ लोक बीआ पाड़त। हमरा तँ बोरिंग अछि तँए मकैयो तिलकैए आ गरमा धान सेहो काटै छी तैसंग बैशाखा तरकारी- सजमैन, रामझिमनी, झिमनी, ठढ़िया साग इत्यादि भरखैर निकलैए। महिना दिन आरो चलत। रामझिमनी बरसातियो होइ छइ। सजमैन झिमनी साग इत्यादि सेहो बरसातियो होइत अछि तँए ओहो सभ लगौल जाएत। मुदा सभसँ पैघ बात अछि जे सभ गिरहतो तँ एक रंग नइ अछि तँए फुटा-फुटा अपन-अपन बुझए पड़तह।”

नसीवलालक बात सुनि सजन सन्तुष्ट भऽ गेल। मुदा देवनक

मनमे अनेको सवाल उपैक गेल। बाजल-

“काका, हमरा दीदीकेँ तँ पनरहे कट्ठा खेत अछि आ दुनू गोरे अनाड़ीए छी। हम केना की करब?”

नसीवलाल-

“तीन गोरेक परिवारमे बहुत जमीन अछि। जँ ढंगसँ उपजा हएत तँ सालो भरि गुजर कऽ कऽ उगरबो करत।”

उगरब सुनि देवन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। नसीवलाल देवनकेँ बैसबैत कहलखिन-

“सभसँ पहिने देवन सालकेँ मनसँ निकालि लएह। तीन तरहक मौसम होइ छै आ तीनू मौसमक फसिल सेहो होइ छै तँए अखन तूँ गरमा धान जे चारि मासमे भऽ जाइ छै आ मरूआ आ तैसंग तीमन तरकारीक खेती शुरू करह। कम्मे समैमे तीमन-तरकारी फड़ए लगतह जइसँ गुजरो चलतह। जँ अपने भरि करबह तँ खेबेटा करबह, अगर जँ बेसी करबह तँ अपनो खेबह आ बेच कऽ गुजरो करबह।”

देवन-

“काका, बीआ केतएसँ आनब?”

नसीवलाल-

“सभ चीजक बीआ हम दऽ दइ छिअ।”

देवन-

“तीनटा कोली हमरा दीदीकेँ अछि। चारि कट्ठाक कोली गहींरगर अछि बाँकी दूटा कोली मध्यम आ भीठ छैन, अपने बुझा-बुझा कहि दिअ कोन कोलीमे कोन अनक खेती करब?”

धियानसँ देवनक बात सुनि नसीवलाल बजला-

“नीचला खेतमे छिपगर धान रोपए पड़तह। किएक तँ ओइमे

बेसी पानि बसत। मुदा एमहर जे दूटा कोली बँचलह ओइमे सँ जे मध्यम छह तइमे गरमा धान करह, किएक तँ बहुतो किस्मक धान अछि जे ७० दिनसँ लऽ कऽ १५० दिनक होइए। जँ गरमा धान नीक-जकाँ उपजतह तँ पाँच कट्ठामे कहुना-कहुना सात क्विन्टल धान हेतह। एकटा कोलीमे मरूआ रोपि लएह। मरूआ कम्मे दिनमे होइ छइ। जँ सवारी समए बेसी बरखा हेतै तँ मरूआ काटि कऽ तीन-मासी गरमा कऽ लिहह आ जँ रौदियाह समए हएत तँ राहैर, तेबखा, कुरथीमे सँ कोनो दालि बाउग कऽ दिहक। बाड़ी-झाड़ी छह की नहि?”

देवन-

“घरे लग अछि। पहिने ओइमे दूटा आमक गाछ छेलै जे उपैट गेल।”

नसीवलाल-

“अगर दसो धूर हेतह तैयो सालो भरिक तीमन-तरकारी ओइमे उपैज जेतह। थोड़ेमे साग बाउग कऽ लिहह। थोड़ेमे रामझिमनी रोपि लिहह। एकटा लत्ती सजमैनक लगा लिहह।”

देवन-

“काका, एकटा लत्ती केते फड़त?”

‘केतए फड़त’ सुनि नसीवलालकेँ हँसी लगलैन। मुदा मनमे एलैन जे बच्चा अछि तँए नै बुझैए। बुझबैत कहलखिन-

“बौआ, एकटा सजमैनक लत्ती जँ सम्हैर जाए तँ साए तक फड़त मुदा डेढ़ साए फड़बैले रोपनिहारोकेँ मुस्ताइज रहए पड़तै।”

देवन-

“की मुस्ताइज?”

“जहिना लोक घर बनबैए तहिना ओकरा-ले बाँसक मजगूत

खुट्टापर मचान बनबए पड़तह। कीड़ी-फतींगीक देख-भाल करए पड़तह। जइमे छाउर-गोबर, डी.ए.पी. खाद दिअ पड़तह। तेतबे नहि, जखने लत्ती ठमकै आकि यूरिया खाद, टौनिक दबाइ देमए पड़तह। फल नीक होइ दुआरे पोटाश सेहो देमए पड़तह।”

नसीवलालक बात सुनि अपनाकेँ कमजोर आ पछुआएल उपजौनिहार बुझि देवन बाजल-

“काका, अहाँक विचार तँ मनमे जँचैए मुदा अखन तँ हम सभ तरहेँ पछुआएल छी तँए अखुनका हमर स्थिति देख कऽ रस्ता बता दिअ।”

“बौआ, भगवानो गरीबकेँ मदैत करै छथिन। भगवानक बास छैन माटि, पानि हवा आ आरो-आरो जगहमे, जैठाम जे जजात पहिले पहिल लगौल जाएत ओइले माटि, पानि, हवा आ रौद अपन खजानासँ शक्ति आनि कऽ दऽ दइ छथिन तँए, तूँ ठीक समैमे रोपि देख-भाल, कमठौन, आरो-ओरो जे जोगार छै, तेतबे करिहह। मुदा करह। जखने करए लगबह दुख पड़ाए लगतह। जेते करबह तेते दुख भगतह।”

नसीवलालक विचार सुनि देवन खिलखिला कऽ हँसए लगल। देवनकेँ हँसैत देख नसीवलालक हृदए जहिना जुड़शीतल पाबैनमे माए-बाप, बेटा-बेटीक माथपर जल दऽ जुड़बैत तहिना भेलैन। आँखि उठा दुनियाँ दिस देखए लगला। मनमे एलैन जे ई दुनियाँ तँ कर्मभूमि छी। देवन जरूर कर्मनिष्ठ बनत मुदा कर्मनिष्ठोक रस्ता[6] तँ ज्ञानेक संग केने चलैत। अखन धरिक जे अनुभव अछि ओ देवनकेँ जरूर बुझा देबइ...। देवनकेँ बीआ दैत नसीवलाल बजला-

[6] साधना

"बौआ, साग-तरकारीक बीआ अन्दाजेसँ आ धान मरूआक बीआ तौलल छह। पाँच-पाँच किलो धानक बीआ छह। एकरा पँच-पँच धूर खेतमे पाड़ि लिहह।"

'पाँच धूर' सुनि देवन पुछलकैन-

"पाँच धूर केना बुझबै?"

देवनक जिज्ञासा देख मुस्कियाइत नसीवलाल कहलखिन-

"बौआ, ऐ गाममे साढ़े छह हाथक लग्गी अछि। एक लग्गी, एक लग्गी एक धूर खेत भेलइ। मुदा पुरुखा सभ तीन-डेग, तीन डेगकेँ एक धूर नपै छला।"

देवन-

"काका, सभ तरहक लोकक डेग तँ एक्के रंग नै होइए?"

देवनक प्रश्न सुनि नसीवलालकेँ खराप नइ लगलैन, कहलखिन-

"बड़ सुन्नर बात बौआ पुछलह। तीन डेगक मतलब, ओहन डेग जे दू हाथसँ कनीक बेसी होइ। दू हाथक डेगक माने ने बड़का धाप आ ने सासुरक डेग। दुनू पैरक दूरी डेढ़ हाथ होइ। किएक तँ एक बीतक पएर होइ छइ। दुनू पैरक नमती एक हाथ भऽ जाइ छइ। तँए डेगमे एक पैरक आ डेढ़ हाथ बीचमे।"

नसीवलालक बात सुनि देवन उठि कऽ ठाढ़ भऽ खिलखिला कऽ हँसबो करए आ दुनू हाथे थोपड़ियो बजबए लगल।

..मने-मन नसीवलाल सोचए लगला जे एते खुशी देवन किए भेल। पुछलखिन-

"बौआ, एना किए करै छह?"

देवन-

"काका, अहाँ हमरा धरती नपैक लूरि बता देलौं। आब हम

जरूर दुनियाकेँ नापि लेब।"

धान, मरूआ आ साग-तरकारीक बीआ लऽ देवन विदा भेल। रस्तामे सजन देवनकेँ कहलकै-

"बौआ, तेहेन गामक लोक अछि जे केकरोसँ गपो करब मोसकिल भऽ जाइए। असगरे अपन दुख-धन्धामे लगल रहै छी तँए, नइ तँ कोन जालमे के कखन ओझरा देतह से बुझबे ने करबहक। आब तँ दू भाँइ भेलौं, दुनू गोरे निचेनमे गप-सप्प करब।"

साँझू-पहर सजन टहलल-टहलल बुधनी ऐठाम आएल। बुधनी भानस करै छेली। एक्केटा डिबिया बुधनीकेँ, जे चुल्हि लग बड़ै छल। अँगना अनहार। अन्हारे अँगनामे देवन आ रमुआ बैस एक-दू-सँ-बीस तक गनैत रहए।

सजनकेँ देख देवन बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, डिबिया मोख लगमे दऽ दियौ। घरोमे इजोत हएत आ अँगनोमे हेतइ।"

बुधनी डिबिया मोख लग रखि देलखिन। सजनकेँ बैसबैत देवन बाजल-

"भैया, गाममे के केहेन लोक अछि से हमरो बुझा दिअ। किएक तँ आब हमहूँ अही गाममे रहब किने।"

देवनक बात सुनि सजनकेँ मनमे भेलै जे देवन हमरा बेसी मानैए।

अपन बड़प्पन बुझि सजन बाजए लगल-

"पाँचिम बर्खक बात छी। जोगिन्दरक गाए बिआएल। बड़ सुन्नर पहिलोठे गाए छेलइ। जेहने रंग तेहने खाँड़। बसुलिया सींग मझोलका थुथुन। आगूसँ देखैमे तेते नीक लगै जे हुअए देखते रही।

तहिना पाछुओसँ। ओना लोक कहै छै 'बरदक आगू गाइक पाछू', मुदा ओइ गाइक जेहने थन तेहने थुथुन। देशी गाए रहितो जरसीए जकाँ बुझि पड़इ। दूधो बढ़ियाँ होइ। सभतूर मिलि जोगिन्दर सेवा करै छेलइ। पहिलोठ गाए रहने दुहैकाल गुदगुदी लगै तँए हनपटा जाइत। ने बच्चाकेँ पिबए दइ आ ने दुहह दइ।

..दोसर दिन जोगिन्दर ननुआकेँ कहलकै। ननुओ गाए पोसैत मुदा अछि नेतघट्टू। जोगिन्दरकेँ ननुआ तेहेन चीज पीयबैले कहलकै जे पीऐबते गाए बगैद गेलइ! ने घास खाइ आ ने पानि पिबइ। ने केकरो लगमे जाए देइ आ ने बच्चाकेँ देखए चाहै। जहिना दारू पीब मनुख करैए तहिना गाइयो करए लगलै।

..दुनू परानी जोगिन्दर हबो-ढकार भऽ भऽ कानल फिड़इ। बच्चा सेहो लर-ताँगर जकाँ भऽ गेल। एक-फुच्ची दूध रतनासँ उठौना केलक। मुदा एक फुच्ची दूधसँ बच्चाकेँ की होइतै। बड़ आशासँ वेचारा जोगिन्दर गाए पोसने छल जे बिआएत तँ दस दिन दूध खा बेच लेब, जइसँ बेटीक बिआहो कऽ लेब आ उगरत तँ एकटा बाछियो कीनि लेब। तेसर दिन जोगिन्दर बुझलक जे ननुआ अन्ट-सन्ट दबाइ दऽ गाएकेँ दुरि कऽ देलक। जोगिन्दर तँ बरदास केने रहल मुदा घरवाली ननुआकेँ गरियाबए लगल।

..घरवालीकेँ गरियबैत देख जोगिन्दर कहलकै, गाइयो दुरि भेल आ मारियो खाएब। चुप रहू। देखै नै छिऐ जे गाममे सभसँ जेरगर दियादी ननुआकेँ छइ। तेहेन-तेहेन हुरनेठगर समांग सभ छै जे...। मुँह बन्न करू नइ तँ अनेरे मारि खाएब।'

..साए बीघा बाधक बीचमे दू-अढ़ाइ कट्ठाक एकटा परती अछि। परतीपर एकटा साहोरक गाछ। नमहर तँ बेसी नै मुदा सघन। छोट-छीन अछार लोक ओतै बिता लैत रहए। ओइ गाछपर ठनका

खसलै। साहोरक गाछपर ठनका खसब सुनि नसीवलाल भोरे देखैले जोगिन्दरे घर लग देने जाइत रहैथ। दुनू परानी जोगिन्दरकेँ कनैत देखलखिन। ससैर कऽ नसीवलाल काका जोगिन्दर लग आबि पुछलखिन, किए दुनू परानी कानै छह? नसीवलाल कक्काक बात सुनि आरो हुचैक-हुचैक दुनू परानी कानए लगल। अँगनामे ढेरबा बेटी लुड़ुओ-खुड़ु करै आ आँखिक नोरो पोछैत रहइ। आ जोगिन्दरक बेटा जेठ बहिनकेँ कहै- 'दाय कहए छेलै जे गाए बीएतै तँ दूध देबौ, से कहाँ दइए।' ..छोट भाइक बात सुनि बहिनक हृदए बरफ जकाँ पीघलैत रहइ। मुदा वेचारी की करितए। मुँहपर हाथ सहलबैत कहलकै- 'बौआ, अल्लू पका कऽ रखने छी। ओकरा सन्ना कऽ दइ छी। रोटी आ सन्ना खा लिअ। भगवान कोनो गाम गेलखिन। जब खुट्टापर गाए अछि तँ दूध खेवे करब।' ..अँगनासँ लऽ कऽ दरबज्जा तकक दृश्य नसीवलाल काका देखैत रहैथ। आशा जगबैत नसीवलाल काका जोगिन्दरकेँ कहलखिन- 'कनलासँ की हैतह? एहेन कोन दुख छै जेकर दबाइ नइ छइ। मुँह बन्न करह आ कहह जे की भेलह?' ..तखन नसीवलाल कक्काक बाँहि पकैड़ जोगिन्दर गाइक-बच्चाकेँ देखबैत कहलकैन- 'काका, पाँच दिन गाएकेँ बिएना भेल, एक्को चौठी दूध नै होइए। बच्चोकेँ थन तर नै जाए दइ छइ। पाभैर दूध रतनासँ उठौना लइ छी वएह पीआ कऽ बच्चाकेँ अखन धरि जीऔने छी। नइ तँ ईहो मरि गेल रहैत।' ..मुँहपर हाथ दऽ नसीवलाल काका थोड़ेकाल गुम्म रहि, पुछलखिन- 'बिएलापर की सभ केलहक?'

..तखन जोगिन्दर कहलकैन- 'थन तर गाए जाइए ने दिअए। तखन ननुआ भैयाकेँ पुछलिऐ। ओ एकटा दबाइ घरसँ आनि कऽ देलक आ कहलक जे एकरा पीआ दिहक। गाए ठीक भऽ जेतह।'

..मने-मन नसीवलाल काका सोचि-विचारि कऽ कहलखिन- 'नीक भऽ जेतह। दूधो हेतह। कानह नहि। हम बाधसँ साहोरक गाछ

देखने अबै छी। तखन संगे डाक्टर ऐठाम चलिहह।'

..कहि नसीवलाल काका बाध दिस विदा भेला। बाधक परतीपर जा साहोरक गाछ देखए लगलखिन। ठनकासँ साहोरक गाछ दू फाँक भऽ गेल छेलइ। दुनू फाँक दुनू भाग खसल। जहिना-जहिना ठनका निच्चाँ-मुहेँ गेल तहिना-तहिना गाछो झड़कल। मनमे एलैन जे अखन धरि सभ बुझैए जे साहोरक गाछपर ठनका नै खसै छै मुदा आँखिक सोझहामे देखै छी। गाछक बगलेमे बैस नसीवलाल काका सोचए लगला। थोड़ेकालक पछाइत मनमे एलैन जे ई बात–साहोरपर ठनका नै खसब–गाछी-बिरछीमे भऽ सकैए जैठाम आन गाछ नमहर-नमहर रहै छै आ साहोरक गाछ छोट। मुदा एगच्छामे तँ भऽ सकै छइ। ऐ निष्कर्षपर पहुँच नसीवलाल काका घुमि कऽ घर दिस विदा भेला। दुनू परानी जोगिन्दर, डेढ़ियापर बैस, नसीवलालक प्रतिक्षा करैत रहए। दुरेसँ हिनका अबैत देख जोगिन्दर रस्तापर ठाढ़ भऽ गेल। जोगिन्दरकेँ देखते नसीवलाल काका कहलखिन- 'अखने चलह। घरपर गेलासँ काजमे ओझरा जाएब।' ..दुनू गोरे मवेशी डाक्टर ऐठाम विदा भेला। डाक्टर कमल एकटा महींसक इलाज कऽ कऽ आएले छला, दुनू गोरेकेँ देखते मातर हाँइ-हाँइ कलपर जा हाथ-पएर धोइ कऽ आबि नसीवलालकेँ गोड़ लगलकैन। दुनू गोरेकेँ बैसबैत, आँगन जा घरवालीकेँ चाह बनबैले कहलखिन। डाक्टर कमलक बेवहार देख जोगिन्दरकेँ आश्चर्ज लगइ। डाक्टर कमल नसीवलाल काका लग आबि पुछलखिन। जोगिन्दर सभ बात कहलकैन। अलमारीसँ दबाइ निकालि टेबुलपर रखि, बुझबैत कमल कहलखिन-

"तीन दिनक दबाइ देलौं हेन। छोटका पुड़ियामे बच्चाक दबाइ छी। दुनू साँझ खुरचनमे घोरि बच्चाकेँ देबइ। आ दू रंगक दबाइ गाए-ले देने छी। रोटी संगे गाएकेँ खुआएब। दू खोराक देला पछाइत गाइक मन नीक हुअ लगत। काल्हि साँझसँ दुहबो करब। तीन-चारि दिनमे

गाए नीक भऽ जाएत। अगर नै ठीक हुअए तँ फेर आएब।"

..फेर जोगिन्दर डाक्टर कमलकेँ पुछलकैन- 'केते दाम भेल।'

मुस्की दैत कमल कहलखिन- 'पाँच रूपैआ भेल।' रूपैआ दऽ जोगिन्दर नसीवलाल कक्काक संग विदा भेल। घरपर अबिते गाइयो आ बच्चोकेँ दबाइ पिऔलक। जहिना-जहिना डाक्टर कहने रहथिन तहिना-तहिना गाए नीक हुअ लगलै। तेसर दिनसँ बढ़ियाँ जकाँ गाए दुहह देलकै। मास दिन सभ परानी जोगिन्दर दूध खा सात हजारमे गाए बेच लेलक। ओइ रूपैआसँ बेटीक बिआहो केलक आ एकटा डेढ़ सालक बाछी सेहो कीनलक।"

आँखि मूनि देवन सजनक बात सुनैत रहल। जखन सजन चुप भऽ गेल तखन देवन आँखि खोलि बाजल-

"भैया, अहाँ तँ हमर बन्न आँखि खोलि देलौं।"

देवनक बात सुनि जोगिन्दर कहलकै-

"बौआ, एहेन-एहेन खिस्सा सबहक अछि। हम जे केकरो दरबज्जापर नै जाइ छी से अही दुआरे। जखन सौंसे गामक लोकक किरदानी सुनबहक तँ हेतह जे सौंसे गाम लुच्चे-लफंगा अछि। ने कोइ एक्कोटा सत बजतह आ ने केकरो कोइ नीक करतह आ जँ केकरो किछु पुछबहक तँ तेहेन मीठ बोली बजतह जे बुझि पड़तह जे एहेन शुभचिन्तक गाममे दोसर नइ अछि। मुदा तेहेन घुरछी लगा देतह जे पेंपियाइत रहबह।"

भानस कऽ बुधनियों आबि बैसल छेली। खिस्सा सुनि बुधनी सजनकेँ कहलखिन-

"भैया, भानसो भऽ गेल आब खा लोथु तखन जइहैथ।"

हँसैत सजन बाजल-

"केतौ आनठाम छी। जहिना ई घर तहिना ओ घर।"

देवन दिस घुमि सजन फेर बाजल-

"बौआ देवन, एहेन-एहेन बहुत बात अछि। दोसर दिन आरो सुना देबह। अखन रातियो बेसी भऽ गेल। तोहूँ सभ खा-पीअ।"

ଠ

शब्द संख्या : 4807

आठ

अधरतीए-मे बचेलालक निन टुटि गेलैन। दू बेर खोंखी कऽ ओछाइनेपर पड़ल रहला। एक करोटसँ दोसर करोट उनैट मने-मन सोचए लगला, अखन धरि हमर जिनगी की रहल। जखन तीन बर्खक रही तखने पिताजी स्वर्गबास भऽ गेला। माइक ऊपर परिवारक भार पड़लैन। ओ जेना-तेना घर सम्हारि चलबए लगली। औरत होइतो परिवारकेँ सम्हारि दुनू भाए-बहिनकेँ पढ़ेबो केलैन। मैट्रिक पास करा हमरा शिक्षक बनौलैन। जे बहुत मर्दो बुते नै होइ छइ। एतइ प्रश्न उठैए जे की औरतकेँ मरदसँ शक्तिहीन बुझल जाए? कथमपि नहि। पुरुखसँ औरतकेँ कम बुझब नादानीक शिवा और की भऽ सकैए। हँ, ई बात जरूर अछि जे आइ धरिक जे जिनगी औरतक रहल, ओ कमजोर जरूर बनौलक। जइसँ पुरुख-औरतक बीच नमहर दूरी अबस्स भऽ गेल अछि। जेकरा समतल बनबैमे समए साधन आ श्रमक जरूरी अबस्स अछि। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समतल नै बनि सकत। जहिना पुरुखमे असीम शक्ति होइए तहिना औरतोमे होइए...।

एते बात बचेलालक मनमे अबिते अपन पत्नी दिस नजैर दौगा कऽ देखलैन। रूमाक चालि-ढालि देख मनमे एलैन, अदहा कोन जे चौथाइयो मनुखसँ कम क्रियाशील छैथ। जँ ओ घर सम्हारि लोथु तँ हम नोकरीक संग किछु समाजो-सेवा करितौं। दरमाहासँ परिवारोक

खर्च चलैत आ किछु समाजोक उपकार होइत। मुदा से कहाँ होइए...।

एते बात मनमे अबिते बचेलाल देवालमे टाँगल घड़ी दिस चोरबत्ती बाड़ि कऽ देखलैन। रातिक एक बजैत। चोरबत्ती सिरमाक बगलमे रखि फेर सोचए लगला, आइ परिवा छी। परीब रातिक चाँन घसकट्टो हाँसूसँ पातर बुझि पड़ैए। मुदा जहिना-जहिना दिन बढ़ैत जाएत तहिना-तहिना चानो बढ़त। बढ़ैत-बढ़ैत वएह चाँन पुरनिमा दिन सुरूजे जकाँ विशाल भऽ रातिकेँ दिन जकाँ बना लैत अछि। तहिना तँ मनुखोकेँ भऽ सकैए। मुदा मनुखमे चाँनक गति नै भऽ पबैत। वएह चाँन पुरनिमाक परातसँ छोट हुअ लगैत आ छोट होइत-होइत अमावश्या दिन विलीन भऽ जाइए। आखिर ओ चाँन केतए चलि जाइए? जँ केतौ चलि जाइए तँ फेर परातेसँ अबैत केना अछि? की मनुखोकेँ ओहिना होइत? जहिना दुनियाँक बोध घटैत-घटैत बेकती लग पहुँच जाइ छै तहिना तँ शक्तियो कमैत-कमैत एते कम भऽ जाइ छै जे अस्तित्वो मृत्यु प्राय बनि जाइ छै...।

फेर बचेलालक मनमे प्रश्न उठलैन, दुनियाँमे सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुख मानल जाइए आ मात्र मानले नै जाइए। वास्तविक ऐछो। दुनियाँमे जेते जीव-जन्तु अछि ओइमे मनुखेटा केँ विवेक होइ छइ। आन-आन गुण तँ कमोवेश सभमे पौल जाइ छइ।

..आइ धरि मनुख विवेकक उपयोग जेते बजैमे करैए तेकर एकअन्नियो जिनगीमे नै कऽ रहल अछि। ई दुनियाँ कर्मभूमि छिऐ आ मनुख कर्मकार। मुदा से नहि बुझि उधिकांश लोक दोसराक श्रमकेँ लूटि अपन ऐश-मौजक जिनगी बनबै पाछू विवेककेँ ताकपर रखि दइए जइसँ मनुखक बोनमे हदिघड़ी आगि लगले रहैए। आ ओ आगि ताधैर धधकैत रहत जाधैर विवेकक सीमा मजगूत नै बनत। शुरूहेसँ

जेना-जेना मनुख होशगर होइत गेल तेना-तेना अल्लढ़ मनुखकेँ जानवरक श्रेणीमे धकलैत गेल। धकलैत-धकलैत एहेन रस्ते बनि गेल जे सभ-सभकेँ निच्चैं-मुहेँ धकलैए। धकलाइत-धकलाइत जे सभसँ नीचाँ पहुँच गेल अछि। ओकरा आगू-मुहेँ बढ़ैक कोन बात जे तकलो ने होइ छइ। तकबो केना करत? दुनियेँ उनैट गेल। जिनगीक सभ रस्ता उनैट गेल। उनैट गेल विवेक। जइसँ साहित्य, कला, संस्कृति, धर्म, दर्शन, एक्कोटा बाँकी नै रहल। जँ थोड़-थाड़ बँचलो अछि तँ ओहिना जेना लक्ष्मणकेँ शक्तिवाण लगलापर हनुमानकेँ सिर-सजमनि अनैले कहलकैन आ ओ सिर-सजमनि नै चीन्हि पहाड़े अनैले मजबूर भेला।

..सवाल उठैए जे बिनु अनुकूल दिशामे एने मनुखक कल्याण भऽ सकै छइ? कथमपि नहि भऽ सकैए। मुदा मनुखेक भीतर ओहन शक्ति अछि जे कऽ सकैए। जँ मनुख अपन शक्तिकेँ चीन्हि उपयोग करए, तखन।

ई बात मनमे अबिते बचेलाल केबाड़ खोलि घरसँ निकैल आँगन आबि अकास दिस देखए लगला। सन-सन करैत अन्हार। आँगनसँ निकैल बाटपर आबि उत्तरसँ दच्छिन आ दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ जाइत रस्ताकेँ धियानसँ देखए लगला। एक्केटा रस्ता जैपर उत्तर-मुहेँ चललासँ उत्तरी ध्रुवपर पहुँचैत आ दच्छिन-मुहेँ चललासँ दछिनी ध्रुवपर। रस्ता तँ एक्के अछि मुदा दिशा बदलने स्थानो बदैल जाइए। अहिना तँ जिनगियोक रस्ता अछि। एक दिस गेने लोक पापी बनि जीबैए जखन कि दोसर-मुहेँ गेने धर्मात्मा बनि जाइए। मुदा प्रश्न उठैए, असगर चलब आ समूहक संग चलब। समूहक संग चलने बेवस्था बदलैत जखन कि असगर चलने बेवस्था नै बदलैत...।

एते मनमे अबिते, बड़बड़ाइत बचेलाल घर आबि बिछानपर

पड़ि रहला। अपने सवालो उठबैथ आ जवाबो तकैथ। ..रूमाक निन सेहो टुटि गेलैन मुदा पतिक बड़बड़ेनाइ सुनि गबदी मारि सुनए लगली। पतिक बोलीमे रूमा संकल्प, धैर्य, उत्साह देखैथ। ..जहिना आगिक धधरामे काँच वस्तु पकैत जाइत तहिना बचेलालमे साहस जगए लगलैन। साहसक संग धैर्य सेहो आबए लगलैन। आइ धरि जे बात रूमा पतिक-मुहेँ कहियो ने सुनने छेली ओ सुनए लगली। जिनगीक रस्ता केना बदलल जाए, ई बात बचेलालक मनकेँ झकझोड़ए लगलैन। बिनु रस्ता बदलने आगू बढ़ब कठिन। मुदा रस्तो बदलब तँ असान नहियेँ अछि। ..यएह गुनधुनी बचेलालक मनकेँ धोर-मट्ठा भेल पानि जकाँ केने रहैन। कछमछाइत बचेलाल कखनो पड़ि रहैथ तँ कखनो उठि कऽ बैस रहैथ। मुदा रस्ता देखबे ने करै छला। चीनक एकटा खिस्सा मन पड़लैन। चीनक एकटा पहाड़ी इलाकामे एक गोरे रहै छल। घरसँ निकैल बाहर जेबामे ओकरा एकटा पहाड़ टपए पड़ै छेलइ। एक दिन ओकरा मनमे एलै जे पहाड़ काटि रस्ता बनौलासँ चलबोमे सुगम हएत आ समैयोक बँचत हएत। ओ आदमी छेनी-हथौड़ीसँ पहाड़ काटए लगल। काटिते समए दोसर गोरे देखलक। पहाड़ कटैत देख ओ पुछलखिन-

"एहेन पहाड़केँ केना काटि सकबह?"

छेनी-हथौड़ी रोकि ओ उत्तर देलकैन-

"जिनगी भरिमे जेते कटत ओते तँ असान भऽ जाएत। तेकर उपरान्त बेटा काटत एक-ने-एक दिन पहाड़ कटबे करत जइसँ सुगम रस्ता बनबे करत। जे अबैबला पीढ़ी-ले सुगम हएत।"

खिस्साकेँ धियानसँ सोचि बचेलाल आगूक जिनगी-ले कार्यक्रम बनबए लगला। पतिक बोलीकेँ रूमा धियानसँ अँकैत रहैथ। कोनो बात निक्को लगैन आ कोनो अधलो तैसंग कोनो-कोनो बात बुधिक

बखारीमे अँटबो ने करैन। रूमा मने-मन सोचए लगली, भरिसक हिनका कोनो बिमारी तँ ने भऽ गेलैन। मुदा बिमारीसँ जे बड़बड़ेनाइ होइ छै ओ तँ जेना-जेना रोगक धक्का कम-बेसी होइत तेना-तेना कमो-बेसी होइए जे हिनकामे नइ देखै छिऐन। एक रसमे बजै छैथ। ..अपन दहिना हाथ रूमा बचेलालक छातीपर दऽ धड़कन देखए लगली। छातीपर हाथ पड़िते बचेलाल पुछलखिन-

"अहूँ जागि गेलौं?"

अपन विचार छिपबैत रूमा बजली-

"अखने नीन्न टुटल। अहाँ कखनसँ जागल छी?"

गंभीर स्वरमे बचेलाल कहलखिन-

"बारह बजे रातियेसँ जगल छी, निन्ने ने होइए।"

"हमरो किए ने उठा देलौं?"

"उठबैक मन भेल मुदा सोचलौं जे जाबे अपने नै जागब ताबे दोसरकेँ केना जगा सकब? तँए नै उठेलौं।"

सुमित्रा उठि कऽ मोख लग राखल बाढ़ैनसँ अपन घर बहारि ओसार बहारए लगली। बहारैत-बहारैत सुमित्रा जखन बचेलाल घरक मुँह लग एली तँ बुझि पड़लैन जे घुनघुना कऽ बचेलाल किछु रूमाकेँ कहै छथिन। बाहरब छोड़ि सुमित्रा बोली अकानए लगली।

बचेलाल रूमाकेँ कहैत रहथिन-

"अपना परिवारमे दू गोरे जुआन छी। दूटा बच्चा अछि आ माए बुढ़ छैथ। जखन पिताजी मुइला तखन हम दुनू भाए-बहिन बच्चे रही। जेते खेत अखन अछि तेतबे ओहू समैमे छल। असगरे माए दुनू भाए-बहिनकेँ पोसबो केलैन आ पढ़ेबो केलैन। बहिनकेँ मिड्ल तक पढ़ा बिआहो केलैन। हमरा मैट्रिक तक पढ़ा शिक्षक बनौलैन अपन

बिआहमे माइक विचार हम कटलौं। हुनकर मन रहैन जे गिरहस्तक बेटीसँ बिआह करब, जखन कि हम नोकरिया परिवारमे बिआह केलौं। हमहूँ आगू-पाछू नै बुझिऐ। मुदा आब बुझै छी जे गलती केलौं। बिआह तँ सिरिफ लड़के-लड़कीक ने होइए। जहिना उमेरक खियाल लड़का-लड़की, बर-कनियाँमे देखल जाइ छै तहिना परिवारो आ समाजोक खियाल हेबा चाही। पुरुख-नारीक सम्बन्ध तँ सृष्टिक सृजनक एक प्रक्रिया छी। मुदा ऐसँ भिन्न जिनगी होइ छइ। जे बेकती-परिवार आ समाजसँ जुड़ल रहैए। हम पढ़ल-लिखल लहक-चहक परिवार बुझि बिआह केलौं मुदा परिवार आ समाज दिस नजैरे ने गेल। अखन धरि परिवार साधारण किसानक रहल जखन कि अहाँक परिवार तीन पुश्तसँ नोकरी करैत आएल अछि। नोकरिया परिवारक आ किसान परिवारक चलैक ढंग अलग-अलग होइत। दू तरहक चालि-ढालि, दू तरहक जीबैक ढंग दुनूक बीच होइ छै तँए आब बुझै छी जे माइक विचार नीक छेलैन...।"

एते सुनिते गहुमन साँप जकाँ रूमा फूफकार कटैत ओछाइनसँ उठि ठाढ़ भऽ बजली-

"हमर बाप-माए, खरचा दुआरे बोइर देलक, नइ तँ नीक शहरमे अफसरनी बनि ठाठसँ रहितौं। ऐ गाममे देखै छी जे ने एक्को बीत पीच सड़क अछि आ ने बिजली, ने एक्कोटा कोठा छै आ ने कोनो गाड़ी-सवारी। दम घोंटि कऽ कहुना-कहुना जीबै छी हम आ उल्टे ठका गेलौं अहाँ। वाह रे दुनियाँ!"

बचेलालकेँ अपन गलती अपने मुहसँ स्वीकार करैत सुनि सुमित्राक मनमे उठलैन- आब बचेलालकेँ होश जगि रहल अछि। होश जगैएमे मनुखकेँ देरी होइए मुदा जगलापर तँ ओ अपन रस्ता बनबैत आगू बढ़ए लगैए। जहिना सलाइक काठीक छोट-छीन आगिक लौ

अनुकूल स्थिति पाबि विराट रूपमे बदलए लगैए जे एक घरक कोन बात, गामक-गामकेँ क्षण-पलमे स्वाहा कऽ दइए।

..ई बात मनमे अबिते सुमित्रा ओसारसँ निच्चाँ उतैर अँगना बहारए लगली। ओमहर फूफकार भरल रूमाक बात सुनि बचेलाल बाँहि पकैड़ बुझबैत कहखिन-

"बिगड़ू नहि, बुझू। अखन धरिक जिनगीक जे नीक-अधला भेल ओकरा बिसैर कऽ आबो होशसँ चलू।"

तैपर रूमा बजली-

"हँ, आब पोथी-पतरा उलटा कऽ जोतखी बनू, दिन गुनू आ तकदीर देखू।"

"हँ, जिनगी-ले ज्योतिक ज्ञानक जरूरत सभकेँ होइ छइ। जाधैर मनुखमे ज्योति नै औत ताधैर अनभुआर बटोही जकाँ केतए वौआएत तेकर कोनो ठीक नहि। जाउ, घर-अँगनाक काज सम्हारू। हमरो बजार जाइक अछि। अछेलाल काका सेहो तैयार भेल हेता।"

कहि बचेलाल घरसँ निकैल हाँइ-हाँइ अपन क्रिया-कर्ममे जुटि गेला। कनीकालक पछाइत अछेलालक संग जुगाय पहुँच गेल। सुमित्रा आँगन बहारि डेढ़िया बहारै छेली। दुनू गोरेकेँ देखते मुस्कियाइत सुमित्रा बजली-

"भोरे-भोर दुनू गोरेकेँ बड़ बनल-ठनल देखै छी, की रातिमे नीन्न नै भेल?"

अछेलाल आश्चर्जमे पड़ि गेल जे भौजी केना बुझि गेली जे रातिमे नीन्न नइ भेल! मुस्कियाइत बाजल-

"बारह बजे रातियेमे निन टुटि गेल भौजी। मन पड़ि गेल जे बजार जाइले बचेलाल कहने छैथ। तखनसँ निनो ने भेल। जहाँ कनी

निन आबए आकि चहा कऽ उठी जे भोर भऽ गेल। कौआ डकिते पर-पैखानासँ आबि तमाकुल चुनबैत रही कि जुगाइयो आबि गेल। काल्हिए जुगायकेँ कहि देने रहिऐ जे तोहूँ बजार चलिहह। रस्तेमे निचेनसँ गपो करब आ बजारक काजो करब। दुनू गोरे तमाकुल खा विदा भेलौं।"

दुनू गोरेकेँ दरबज्जापर बैसा सुमित्रा चाहक जोगार करए लगली। जाबे बचेलाल धोती-कुरता पहिर तैयार भेला, ताबे चाहो बनि गेल। सभ कियो चाह पीलैन। चाह पीब तीनू गोरे बजार विदा भेला। गामक सिमान टपला पछाइत बचेलालकेँ अछेलाल कहलकैन-

"बौआ, हम तँ मुरुख छी आ अहाँ पढ़ल-लिखल छी तँए अहाँ जकाँ केना बुझबै मुदा भौजीक गप सुनलासँ मने बदैल गेल। अखनो हुनका देखै छिऐन जे भोरे सुति उठि अपन काजमे लगि जाइ छैथ। सभ काज सम्हारि समैपर नहा-खा कऽ अरामो करि लइ छैथ। ने कोनो तरहक हरहर-खटखट आ ने कखनो मनमे क्रोध आकि चिन्ता रहै छैन। जखन देखै छिऐन तखन ठोरपर हँसीए रहै छैन। ने केकरोसँ मुहाँ-ठुठी होइ छैन आ ने केकरो अधला गप कहै छथिन। गाममे देखै छी जे हुनकर बतारी बुढ़िया सभ भोरेसँ गारि-गरौवैल, उकटा-उकटी शुरू कऽ दइए। गारि सुनैत-सुनैत जखन मन अकछा जाइए तखन भौजी लग आबि अपन दुख-धन्धाक गप-सप्प करए लगै छी।"

अछेलालक बात सुनि बचेलाल पुछलखिन-

"एना किएक होइ छइ? मनुख तँ कुत्ता-बिलाइ नइ छी जे एक-दोसरकेँ देखते आँखि गुड़ैर पटका-पटकी करए लगैए।"

मुँह सकुचबैत अछेलाल बाजल-

"बौआ, देखते छी धिया-पुता सभ खाइले कनैत रहै छै आ मौगी-मरदाबा सभ झगड़ामे लगल रहैए। आश्चर्ज लगैत रहैए। मुदा जँ

केकरोसँ पुछबै तँ दोसर कहत जे फल्लाँ-फल्लाँकेँ चढ़बै छइ। तँए केकरो पुछबो ने करै छिऐ। तँए तेनाहे सन लोक सभसँ बज्जो-भुक्की अछि। हदिघड़ी अपन दुख-धन्धामे लागल रहै छी।"

अछेलालक बात सुनि बचेलाल जुगायक उदास चेहरा देख कहलखिन-

"जुगाय, अपनो दुनू परानी आ बेटो-बेटीक नाओंसँ बैंकमे रूपैआ जमा अछि। ओहीमे सँ उठा कऽ अहूँकेँ बेटीक बिआह निमाहि देब आ जँ आगुओ कोनो खगता हएत तँ ओहो सम्हारि देब तँए मनसँ चिन्ता हटा लिअ। एकठाम रहने अहिना सबहक काज सभकेँ होइ छइ।"

बचेलालक बात सुनिते जुगायक मुहसँ हँसी निकलल। बिलाएल आशा मनमे पहुँचलै। जहिना केतौ जाइमे रस्ता बदलैत तहिना जुगायक जिनगीक रस्ता चौबट्टीपर पहुँच बदलए लगल। अपन मजबूरी देखबैत बचेलालकेँ कहलकैन-

"भाय, पाइ दुआरे घरवालीकेँ डाक्टर लग नै लऽ जाइ छी। वेचारी तीन सालसँ दुखकेँ अँगेजने अछि। पाइक लार-चार नै देखैए तँए चुपचाप देह मारने अछि। मुदा अपने तँ देखते छी जे दिनो-दिन खिआइले जाइए। जेते काज वेचारी पहिने करै छल तेकर अदहो आब नै कऽ होइ छइ। मुदा की करब। खरचा दुआरे धिया-पुताकेँ स्कूलो ने जाइ दइ छिऐ। कहुना-कहुना दिन कटै छी। कर्जाक डर होइए। गाममे देखै छी जे तेहेन चण्ठ महाजन सभ अछि जे एककेँ तीन कहि घर-घराड़ी लिखौने जाइए। अखन थोड़े खेत अछि तँए दिके-कि-सिके गुजर कऽ लइ छी। जँ ओहो चलि जाएत तखन तँ अपनो आ धियो-पुतोकेँ भीख मांगए पड़त। गामेमे देखै छी जे जनकाकेँ पहिने जोड़ा बरद छेलइ। कर्जामे फँसि गेल। सभ सम्पैत बोहा गेलइ। अहिना

मुनेसरा करजे दुआरे गामसँ भागि नेपालमे बसि गेल। मुदा हमरा कुल-खनदानक मोह लगैए। केना बाप-दादाक धराड़ीपर अनका हर जोतैत देखब। अखन तँ ईहो आशा अछि जे मरबो करब तँ अपन बाप-दादाक लगौलहा कलम-गाछीमे जरौल जाएब। मुइलहा सभ पुरखाक संग एकठाम रहब। जिनगी ने थोड़ दिनक होइत मुदा मृत्यु तँ बेसी दिनक होइए।"

जुगायक बात सुनि बचेलालक मनमे आशा-निराशा आ सुख-दुखक हिलकोर उठए लगल। जहिना शिकारीक तीर लगलासँ कोनो चिड़ै गाछपर सँ छटपटा कऽ निच्चाँ खसैत तहिना बचेलालक विचार कल्पना लोकसँ यथार्थ लोकमे एलैन। यथार्थ लोकमे अबिते बचेलालक हृदए, मोम जकाँ, पीघलए लगलैन, दुनू आँखि उठा जुगायक मुँह देख बजला-

"भाय, बजार लग आबि गेलौं? आब ओ सभ बात छोड़ू। बजारमे जे काज अछि से सभ मन पाड़ि लिअ नइ तँ काज छुटि जाएत। परिवारक गप करैले तँ दुआर-दरबज्जा अछिए।"

अछेलाल-

"बौआ, स्कूल जाइ-अबैले पहिने साइकिल कीनि लेब। तखन खेती-वाड़ी-ले कोदारि, खुरपी, हँसुआ, कुरहैर, टेंगारी, पगहरिया कीनब। हमरा नजैरमे एतबे अबैए।"

अछेलालकेँ चुप होइते धड़फड़ा कऽ जुगाय बाजल-

"भाय, अपना टोलमे ने एक्कोटा लाइट अछि आ ने दरी। जखन कोनो नमहर काज बजड़ैए तखन अँगने-अँगनेसँ बिछान, लालटेम आ बरतन मांगि-मांगि काज चलैए, तँए ओहो सभ कीनब जरूरी अछि।"

जुगायक बात सुनि मुड़ी डोलबैत बचेलाल बजला-

"जुगाय भाय, अहाँ बड़ सुन्नर काज मन पाड़ि देलौं। मनमे

अपनो छल। मुदा सोचै छेलौं जे सौंसे टोल मिला कऽ कीनब, नीक हएत। मगर सभ एक्के रंग तँ नइ अछि। कियो हूबगर छी तँ कियो खगल। तँए चुप्पे रहि जाइ छेलौं।"

बचेलालक बात सुनि मुस्की दैत अछेलाल कहलकैन-

"बौआ, सझिया चीज दू तरहक होइ छइ। एक तरहक जे अहाँ बजलौं। आ दोसर तरहक होइ छै जे असगरे कीनि समाजमे दऽ देब। जेकरा लोक धरम कहै छइ।"

धर्मक नाओं सुनिते उत्साहित भऽ बचेलाल बजला-

"ओना हम रूपैआ जुगाय-ले अनने छी मुदा बिआहमे अखन देरियो अछि आ हमरो रूपैआ बैंकमे ऐछे तँए ई काज पाछू करब। अखन जइ समानक चर्चा केलौं से सभ कीनि लिअ।"

बचेलालक बात सुनि अछेलालो आ जुगायोक मनमे खुशी भेल। बजार प्रवेश करिते तीनू गोरे साइकिल दोकानपर जा साइकिल कीनलैन आ साइकिले दोकानपर दूटा लाइटो कीनलैन। साइकिल गुड़केने लोहा-लक्कड़क दोकानपर एला। दोकानपर आबि सभ लोहाक समान कीनि, बोरामे रखि सुतरीसँ बान्हि साइकिलक कैरियरपर लादि, तीनू गोरे बरतनक दोकानपर गेला।

बरतन दोकानमे दूटा पितरिया बरतन कीनि, दरी दोकानपर गेला। बीस हाथ नमती दरी कीनि, दोकानेमे रखि, कपड़ा दोकानपर जा ओही नापसँ जाजीम सेहो कीनलैन। सभ समान कीनि तीनू गोरे हलुआइ दोकानपर आबि जलखै केलैन। सभ समान घरपर केना जाएत। तीनू गोरे गर अँटबए लगला। अछेलालकेँ गर अँटि गेल। बाजल-

"एकटा बरतन हम कान्हपर लऽ लेब आ एकटा जुगाय आ तैसंग एक-एकटा लाइटो दुनू गोरे हाथमे लटका लेब। बाँकी सभ चीज

साइकिलपर लेब आ तीनू गोरे गप-सप्प करैत चलि जाएब।"

जिनगीक नव रस्ता भेटने तीनू गोरे बचेलाल-अछेलाल-जुगायक मन उधियाइत रहैन। बचेलालकेँ होनि जे आइ रस्तापर एलौं। अछेलालकेँ मनमे होइ जे जाधैर मनुखकेँ काज करैक साधन नइ हेतै ताधैर लूरि-बुधि रहनौं बेकार रहत। मुदा हाथमे ओजार एने काजोक गति बढ़ैए आ सन्तोखो होइ छइ। जखन कि जुगायकेँ होइ जे जइ दुआरे अपनो आ परिवारो अँटैक गेल छल, ओ आगू ससरत। आइ धरिक दुख काल्हिसँ मेटा जाएत। जहिना अन्हार राति समाप्त होइते दिनमे सभ किछु देख पड़ैत तहिना तीनू गोरेकेँ होइत रहैन। घरपर अबैत-अबैत तेसर साँझ भऽ गेल। घरपर आबिते अछेलाल सुमित्राकेँ शोर पाड़ैत कहलकैन-

"भौजी, लालटेन नेने आउ।"

असगरक दुआरे सुमित्रा आँगन आ दरबज्जाक बीच ओलती लग बिछान बिछा, लालटेनकेँ पछबरिया घरक कोनचरमे टाँगि, बैसल छेली। कखनो-कखनो उठि कऽ रस्तापर आबि-आबि देखबो करैथ।

अछेलालक अवाज सुनिते सुमित्रा लालटेन नेने दुआरपर एली। नव-नव समान देख सुमित्रा मने-मन सोचए लगली, जे काज आइ भेल ओ बहुत पहिनहि हेबा चाही छेलइ। मुदा देरियो भेने काज तँ भेल। लालटेन रखि चोट्टे घुमि कऽ आँगन जा पुतोहुकेँ कहलैन-

"कनियाँ, बौआ आएल। झब-दे चाह बनाउ।"

कहि दरबज्जापर एली। अछेलाल आ जुगाय ओसारपर बरतन आ लाइट रखि, साइकिल परहक समान उतारए लगल। बचेलाल कुरता-गंजी निकालि चौकीपर आ चप्पलकेँ चौकी तरमे रखि धोतीकेँ खोंसि फाँड़ बान्हि, गर लगा-लगा सभ चीज रखए लगला। ताबे रूमा चाह बनौने एली। रूमाक हाथसँ चाह लऽ सुमित्रा तीनू गोरेकेँ हाथमे

दऽ पुछलखिन-

"बौआ, पानियो पीब।"

अछेलाल-

"नहि भौजी, अखन तँ चाह नइ पीबतौं तँ नीक किए तँ गरमा गेल छी। जाबे दू डोल पानि देहपर नै ढारब ताबे ठंढाएब नहि।"

कातमे ठाढ़ भऽ रूमा सभ समान देख-देख तरे-तर जेना जरै छेली। मनमे होनि जे साइकिल लेलैन से बड़बढ़ियाँ, मुदा आन-आन समान लऽ कऽ अनेरे पाइकेँ दुइर केलैन। ओना, खुलि कऽ तँ रूमा किछु नै बजली मुदा तरे-तर गुम्हरैत रहली। तामसे आँगन जा चुल्हि लग बैस अन्ट-सन्ट बाजए लगली। अछेलाल आ जुगाय, चाह पीब दरबज्जाक कोठरीमे सभ समान सेरिया कऽ रखि अछेलाल जुगायकेँ कहलक-

"जुगाय जखन चाह पिबे केलौं तँ तमाकुलो खाइए लएह।"

जुगाय तमाकुल चुनबए लगल। अछेलाल सुमित्राकेँ कहलकैन-

"भौजी, जे मनमे छेलए से आइ पुरा भऽ गेल। भिनसरमे दरियो उघारि कऽ देखा देब। बड़ सुन्नर अछि। यएह दरी तँ केते दिन चलत।"

सुमित्रा मने-मन खुशी होइ छेली। दुनू गोरे तमाकुल खा चलि गेल। बचेलाल धोती बदैल माए लग आबि बैस सामानोक चर्च करैथ आ दामोक। एक्के परिवारमे हर्ष-विषाद लड़ए लगल..! बचेलाल मने-मन सोचैथ जे परिवारमे कोनो नीक काज भेने, परिवारक सभ समांगकेँ एक्के रंग खुशी किए ने होइ छइ? हँ, ई बात जरूर जे खास बेकतीकेँ खास वस्तुक संग लगाव भेने बेसी खुशी जरूर होइ छै, मुदा दोसरकेँ ओइसँ जलन तँ नइ हेबा चाही। औझुका जे वस्तु अछि ओ तँ बेकतीगत नइ छी? जखन जेकरा जइ वस्तुक जरूरत हेतै से उपयोग करत। तइमे दुख केतएसँ चलि आएल..?

रूमाक अवाज दुनू माय-पुत सुनैत रहैथ। मुस्की दैत सुमित्रा बचेलालकें कहलखिन-

“बौआ, जहिना केकरो बिढ़नी काटि लइ छै आ दरदे छड़पटाइए तहिना कनियाकें भऽ रहलैन हेन। कमाएल पाइ तोहर खर्च भेलह हुनकर तँ किछु ने भेलैन। तोरा खुशी छह आ हुनका किए एते दुख भऽ रहलैन हेन?”

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल भखरल स्वरमे बजला-

“माए, हमहूँ तँ यएह सोचि रहल छी जे हुनका किए एते दुख भऽ रहल छैन?”

बचेलालकें बुझबैत सुमित्रा कहलखिन-

“बौआ, यएह छिऐ सोभाव, मनुखक रोगक जड़ि। जेहेन जेकर सोभाव रहै छै ओ ओहने काजकें नीक बुझैए, भलें ओ अधले किए ने होइ। अखन तोहूँ थाकल छह। जँ नहाइक मन होइ छह तँ नहा लएह। जँ नहेबह नइ तँ देहे-हाथ धोइ लएह, मन चैन भऽ जेतह।”

“नहाइक मन तँ अपनो होइए। भरि दिन ठाढ़े छेलौं। मुदा सभ काज भऽ गेल।”

सुमित्रा आँगनसँ बाल्टीन आ लोटा आनि बचेलालकें देलखिन। बचेलाल नहाइले कलपर गेला, सुमित्रा लालटेनक इजोतमे खुरपी, हँसुआ देखए लगली। नहा कऽ बचेलाल सोझे अँगना जा खाइले बैसला।

बचेलालकें ओसारपर देख रूमा जोर-जोरसँ अन्ट-सन्ट बाजए लगली। गौरसँ रूमाक बात सुनि बचेलाल पुछलखिन-

“एना तामस किएक उठल अछि? कोन अधला चीज देखलिऐ जे एते तमसाएल छी?”

बचेलालक बात सुनि रूमा गरजैत बजली-

“जखन लोककें मति खराब भऽ जाइ छै तखन अहिना करैए।”

मने-मन बचेलाल सोचए लगला जे जेते अपन पुरुषत्वकें दाबि रखने छी तेते ओ कण्ठपर चढ़ल जाइए। तँए, एक-ने-एक दिन मुँह खोलै पड़त। असथिर मुदा सक्कत शब्दमे बचेलाल रूमाकें कहलखिन-

“बहुत सुनलौं। मुँह बन्न रखू। अपन सिमान टपब तँ बुझि लिअ हम पुरुख छी। जेते अहाँकें सिनेह केलौं तेते अहाँ हमरा कमजोर बुझैत गेलौं। आबो चेत जाउ!”

बचेलालक बात सुनि रूमा चुप तँ भेली मुदा मुँह..!

◌

शब्द संख्या : 3125

नअ

अदहा अखाढ़ बित गेल। जेठुआ बर्खाक पछाइत बीचमे दूटा अछार भेल। सबहक बीआ रोपाउ भऽ गेल। अड़िया-नँघन बरखा भेल। पानि छुटिते गिरहस्त सभ कोदारि लऽ लऽ खेत दिस विदा भेला। कियो अपन खेतक आड़ि बन्हैत तँ कियो अपन खेतक पानि बहबैत। कियो आड़ि-कोण बनबैत तँ कियो हाँइ-हाँइ धानक बीआ उखाड़ैत। एक खेप सजन हरखाड़ा आ चौकी खेतमे रखि आएल आ दोहरा कऽ बरद आ कोदारि लइले गामपर आएल। अँगना अबिते घरवाली कहलकै-

“रोटियो पाकिये गेल तँए जलखै काइए लिअ। हमहूँ पानि पीब बीआ उखाड़ए चलि जाएब।”

सजन हाथ-पएर धोइ कऽ जलखै करए लगल। जलखैयो करैत आ घरवालीकें कहबो करैत-

“तीनकठबा कोली रोपि लेब। हम जाइ छी, खेतो जोइत लेब आ कोणो-काण सेरिया देबइ। अहूँ जा कऽ चारि जोड़ा बीआ खीच लेब आ आबि कऽ भानसो कऽ लेब। अखन बीआ ऊपरेमे हएत तँए उखाड़ैमे देरियो नइ लगत। ओना खेत जोतले अछि तँए हमरो अबेर नहियेँ हएत। अखन जे कदबा आ बीआ उखैड़ जाएत तँ बेरू-पहर दुनू गोरे साँझ धरि रोपियो लेब।”

जलखै कऽ सजन बरद जोड़ि खेत विदा भेल।

दछिनबरिया बाध ऊँच तँए गामक बेसी गिरहस्त ओही बाधमे। हरक जोगार नै रहने देवन कोदारियेसँ खेत तैयार करैक विचार कऽ बुधनीक संग विदा भेल।

बुधनीक खेत सजन-खेतसँ तीन कोला आगू, तँए सजनेक खेतक आड़िपर देने दुनू गोरे देवन-बुधनी जाइत। देवनक कान्हपर कोदारि देख सजन पुछलक-

“देवन, तोहूँ अही खेतकें रोपबह?”

“हँ भैया, पाँच कट्ठाक कोला अछि। दू-तीन दिनमे रोपि लेब।”

सजन-

“जा दुनू गोरे बीये उखाड़िहह। हमरो तीनियेँ कट्ठा खेत अछि। लगले भऽ जाएत। तोरो खेत तँ तमले छह। एकटा चास कऽ देबै तेहीमे कदबा भऽ जेतह। पहिल पानि छिऐ, एक रत्ती अबेरे ने हएत मुदा तोरो काज चलि जेतह। कदबा भेल रहतह निचेनसँ रोपैन करैत रहिहह। जखने खेतमे चौकी पड़ि जाइ छै आकि पानि सुखैक डर कम भऽ जाइ छइ।”

सजनक बात सुनि बुधनी मने-मन सोचए लगली। जे नीक सगुनसँ निकललौं। अदहा काज ओहिना भऽ गेल। एक झोंक जे दुनू गोरे बीआ उखाड़ब तहीमे तँ अदहा खेतक बीआ उखाड़ि लेब। खेतो जोताइए जाएत। बीओ हल्लुके अछि, तखन तँ रोपनियेँ-टा ने रहत। बैस-उठि कऽ दू दिनमे रोपि लेब।

‘रोपि लेब’ बुधनीक मनमे अबिते, खुशीसँ नाचि उठलैन! सोचए लगली जे पाँच कट्ठा खेत अबाद भेने कहुना-कहुना तीन मासक बुतातक ओरियान तँ भाइए जाएत। तीन मासक बुतात-ले मेहनत केते भेल। अहिना पनरहो कट्ठा अबादैमे आठ-दस दिन लगल। दुनू गोरे

आगू बढ़ल। सजनक खेतक आड़ि टपलापर देवन बाजल-

“दीदी, भरिगरहा काज सम्हैर गेल।”

खेतमे पहुँचते बुधनी साड़ी समैट कऽ खोंसि लेली आ बीआ उखाड़ैमे, भीर गेली। देवन कोदारिसँ खेतक कोण-कान तामए लगल। जाबे देवन तीनूटा कोण, एकटा कोणपर बीये रहै–बनौलक। ताबे बुधनी एक जोड़ा बीआ उखाड़ि लेली। आड़ि बना देवनो बीआ उखाड़ए ललग। हल्लुक बीआ देख बुधनी कहलखिन-

“बौआ, उखाड़लो बीआ आठ दिन तक रहै छइ। अगर सभटा बीआ उखैड़ जाएत तँ रोपनाइयेटा ने रहत। एकटा काज तँ सम्पन्न भऽ गेल रहत। जँ सभ बीआ उखाड़ि लेब तँ खेतो खाली भऽ जाएत। जइसँ जोताइयो जाएत। नइ तँ पाछू तामि-तामि रोपए पड़त।”

बुधनीक बात सुनि देवन बाजल-

“हँ, ठीके कहै छी दीदी। जाबे सजन भैया अपन खेत जोतत ताबे अपनो दुनू गोरे सभटा बीआ उखाड़ि लेब।”

दुनू गोरे बीओ उखाड़ैत आ गपो करैत। बेसी काज देख सजन बरद रेबारि कऽ हाँकए लगल। सजन हरो जोतैत आ मने-मन सोचबो करैत जे मनुखेक काज मनुखकेँ होइए। आइ जेकरा हम नीक करबै, एक-ने-एक दिन ओहो जरूर नीक करत। तोहूमे जे गरीब अछि ओ जँ नहियोँ बदला सठाएत तैयो गरीबक उपकारकेँ लोक धरम कहै छइ। काजो भरिगर नहियेँ अछि। पहिल दिन कदबा करैले एलौं हेन, बरदो सभ कोनो थाकल थोड़े अछि। जहिना खेत सहगर अछि तहिना बरदो जीराएले अछि। एकटा चास मेहीसँ कऽ लेब आ समाड़ै-बेरमे लाभरो-जिभर कऽ जोति लेब तैयो कदबा बनबे करत। तहूमे जरल जमीनमे बरखा भेल, खेत ओहिना माँड़-माँड़ भेल अछि। थोड़ेकाल बीआ उखाड़ि देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

“दीदी, ताबे अहाँ बीआ उखाड़ू हम सजन भैयाकेँ देखने अबै छी।”

कहि देवन सजन लग आएल। देवनकेँ देखते सजन बाजल-

“बौआ, केते बीआ उखाड़ैले रहलह हेन? हमरा लगिचा गेल।”

चोट्टे देवन घुमि कऽ खेत आबि बुधनीकेँ कहलकैन-

“दीदी, हाँइ-हाँइ बीआ उखाड़ू सजना भैयाकेँ कदबा लगिचा गेलैन।”

दुनू गोरे हाँइ-हाँइ बीआ उखाड़ए लगल। जहाँ तीन गफ्फी बीआ भऽ जाइ आकि आँटी बान्हि लिअए। आँटी बन्हैत बुधनी बजली-

“बौआ, जहिना सजन भैया कदबा कऽ देथुन तहिना हुनको कहिहौन जे आइ-काल्हि तँ अपने रोपब, जखन अपन खेत रोपा जाएत तँ अहूँकेँ सम्हारि देब। किएक तँ हुनका बेसी खेत छैन। जँ अपनो दुनू गोरे हुनका रोपैन सम्हारि देबैन तँ हुनको रोपैन अगते भऽ जेतैन।”

अपन कदबा कऽ सजन चौकी लधले बरद आ हर कान्हपर नेने बुधनीक खेत पहुँचला। खेत पहुँच बरहा लगले चौकी खोलि, घिसियौने जा दोसर खेतमे रखलैन। हर लाधि सजन देवन लग आबि बजला-

“बौआ, बीआ तँ भाइए गेलह। सभ आँटीकेँ आड़ि टपा कऽ रखि दहक, जोतैमे देरी नै हएत।”

कहि सजन बैस कऽ तमाकुल चुनबए लगला। बीआ टपा बुधनी सजनकेँ कहलकैन-

“भैया, हमरा तँ पनरहे कट्ठा खेत अछि जँ दू दिन सम्हारि दैथ तँ

अगते काज हमरो ससैर जाएत। हिनका तँ बेसी खेत छैन, हमहूँ दुनू गोरे रोपि देबैन।”

बुधनीक बात सुनि सजनक मनमे उत्साह बढ़लैन। ठोरमे तमाकुल लैत बजला-

“कनियाँ, बेसियो खेत रहने रोपैनमे जन नइ लगबै छी, किए ने लगबै छी से बुझै छिऐ? तेहेन गामक जन सभ अछि जे सोल्होअना धियान ओकरा बोइनेपर रहै छइ। कहैले आँटी गनि कऽ उखाड़ैए मुदा रोपैकाल मूठक-मूठ बीआ गाड़ि देत। गिरहत हुअए कि जन, ओकरा मनमे ई हेबा चाही ने जे खेती नीक नहाँति होइ। जखन खेती नीक नहाँति हएत तखने ने उपजो नीक हएत। उपजा नीक हएत तखने ने सबहक हालत सुधरत से केकरो नेतमे छैहे नहि।”

बुधनी बजली-

“भैया, सभ रंगक लोक सभ गाममे रहै छइ। ने सभ नीके होइत आ ने सभ अधले। तखन तँ लोककेँ अपने नीक-अधला देख चलए पड़तै। कियो किछु करह मुदा सभकेँ अपने नीक बनैक चेष्टा करबा चाही?”

तमाकुल खा सजन हर जोतैले उठला, हरक लागैन पकैड़ जहाँ एक मोड़ घुमला कि देखलैन पुबरिया खेतमे, चारि कोला हटि–हरबाहकेँ पटाक-पटाक मारैत। पहिने तँ हरबाहकेँ कोनो शंके ने रहै जे हमरे मारैले फुसियाहा अबैए। मुदा जाबे किसुनमा हर ठाढ़ करै-करै ताबे मारि लगि गेलइ। किसुनमा बुफगर। हर ठाढ़ कऽ फुसियाहाकेँ पकैड़ खेतेमे पटकलक। पटैक कऽ छातीपर बैस किसुनमा मुहेँ-मुँह खूब चोटियेलक। सौंसे बाध हल्ला भऽ गेल। बीओ उखाड़निहार आ हरो जोतनिहार सभ जम्मा भऽ गेला। दुनू गोरेकेँ झगड़ा छोड़ा पुछए लगला। ताबे नवकी बीआ उखाड़ब छोड़ि घर दिस लफरल विदा

भेल। नवकी टोलपर जा पहिने फुसियाहाक घरवालीकेँ कहलक-

“कनियाँ, तूँ अँगनामे छह आ घरबलाकेँ किसुनमा खून कऽ देलकह।”

कहि नवकी लफरल किसुनमा अँगना गेल आ किसुनमो भनसियाकेँ कहलक-

“कनियाँ, घरबला खून भऽ गेलह!”

“केना खून भेल?” –किसुनमाक घरवाली पुछलकै।

“ऐँह की कहबह, फुसियाहा लाठी नेने गेल आ हाँइ-हाँइ देहपर चलबए लगलै!”

फुसियाहाक घरवाली किसुनमाकेँ अँगनेसँ गरियबैत विदा भेल।

तहिना किसुनमोक घरवाली गरियबैत टोलसँ निकैल, कनीए आगू बढ़ल, जेतएसँ एक्के रस्ता बाधक अछि– कि दुनूक रस्ता एक भेल। दुनूकेँ भेँट भऽ गेलइ।

एक दोसरकेँ देखते आरो चिकैर-चिकैर कऽ दुनू गारि पढ़ए लगल। लग होइते दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। दुनू-दुनूकेँ झोंटा पकड़लक। घिचम-तीरा होइत-होइत दुनू खसि पड़ल। मुदा झोंटा दुनू-कैँ-दुनू पकड़नेहि रहल। तरमे किसुनमाक भनसिया आ ऊपरमे फुसियाहाक। तरेसँ किसुनमाक भनसिया नाकेमे दाँत काटि लेलकै। छर-छर लहू फुसियाहा भनसियाकेँ बहए लगल। खून बहैत देख फुसियोहोक भनसिया गालेमे दाँत काटि लेलकै। ओकरो खून बहए लगलै। मुदा तैयो कियो-केकरो छोड़ैले तैयार नहि। अपना आँगन आबि नवकी भानस करए लगल। नवकीकेँ गामक लोक ऐ दुआरे ‘नवकी’ कहैत जे पौंरके वसुआसँ चुमौन कऽ ऐ गाम आएल। नवकीक वसुआ चारिम पति। नवकीक पहिल बिआह रतुआर भेल रहइ। तीनटा धियो-पुतो भेलइ। एक दिन पतिसँ झगड़ा भेलै पड़ा कऽ

नैहर चलि आएल। धियो-पुतोकें छोड़ि देलक। साल भरिक पछाइत दोसर बिआह विसुनपुर केलक। नवकियोकें दोसर बिआह रहै आ घरोबलाकें। विसुनपुरोमे दूटा बच्चा भेलै, ओकरो छोड़ि कऽ पड़ा गेल। तखन तेसर केलक। तेसरोमे झगड़ा भेलै, छोड़ि कऽ पड़ाएल। चारिम सासुरमे अखन नवकी अछि। ई चुमौन चालिस-पैतालिस बर्खक उमेरमे भेलैए। तँए गामक लोक सभ 'नवकी' कहैत।

फुसियाहा आ किसुनमा दुनू भजैत। दुनूकें एक-एक्केटा बरद। खेतो कम्मे। अखाढ़क बरखा तँए सबहक खेतो खसले आ बीओ रोपाउ। भोरहरबामे पानि भेल तँए खेत रोपैक जोगार कियो ने केने। सभ दिन अपन-अपन भाँजमे खेत जोतैत। पानि देख फुसियाहा भोरे बरदकें घरसँ निकालि, कुट्टी लगा, बीआ उखाड़ए दुनू परानी खेत गेल। किसुनमोक खेत पनिआएल। हर खोलै बेरमे किसुनमा बरद आनए फुसियाहा ऐठाम गेल। फुसियाहा घरपर नहि तँए दुनू गोरेमे भेँट नै भेलइ। भजैती बुझि किसुनमा बरद नेने चलि आएल। घरपर आबि अपना बरदमे जोड़ि कदबा करए खेत गेल। थोड़े बीआ उखाड़ि फुसियाहा हर लइले घरपर आएल तँ बड़दे नहि! हाथमे हरवाही पेना रहबे करइ। किसुनमा ऐठाम आएल। ने बरद ने किसुनमा घरपर। घरपर भाँज लगा फुसियाहा किसुनमाक खेत गेल। खेतमे किसुनमाकें हर जोतैत देखलक। बिनु किछु कहने-सुनने किसुनमापर पेना बरिसाबए लगल। जाबे किसुनमा हर ठाढ़ करै-करै ताबे फुसियाहा सात-आठ पेना लगा देलकै। थाले-पानिमे फुसियाहाकें पटैक किसुनमा खूब चोटियेलक। आन-आन हरबाह सभ दुनूकें छोड़ौलक। झगड़ा छुटला पछाइतो दुनू-दुनूकें अनधुन गरियबैत रहल। दुनूकें सभ बुझा-सुझा, हर खोलि विदा केलक। अपन बरद लऽ कऽ फुसियहा घर दिस विदा भेल आ किसुनमा ओत्तै बरदकें चरैले छोड़ि देलक।

घरपर अबिते फुसियाहा घरवालीकें सौंसे देह खून लगल

देखलक। मुदा नाकक खून बन्न भऽ गेल रहइ। घरोवाली फुसियाहाकें सौंसे देह थाल लगल देखलक। दुनू अँगनाक ओसारपर बैस एक-दोसरकें दुनू परानी देखैत रहल। मने-मन फुसियाहा सप्पत खेलक जे किसुनमासँ बरदक भजैती नै रखब। दुनूक भजैती छुटि गेल। गामक सभ अपन-अपन खेती करए लगल। ने एक्को धूर फुसियाहा धान रोपलक आ ने किसुनमा। किएक तँ एकटा बरदसँ हर केना जोतैत?"

साँझू-पहर सजन बुधनीक ऐठाम एला। भरि दिनक मेहनतसँ बुधनियोँ आ देवनो थाकल। अँगनामे बिछान बिछा बुधनी पड़ल आ देवन पएरसँ जँतैत। सजनकें देखते देवन बाजल-

"आउ-आउ, भैया!"

देवनक बात सुनिते बुधनी फुर-फुरा कऽ उठि देहक साड़ी सेरियबैत सजनकें कहलखिन-

"आबौथ भैया। भरि दिन तेते भीर भेल जे देह दुखाइए तँए देवनकें जँतैले कहलिऐ।"

सजनो बाजल-

"आइ रोपैनक पहिल दिन छल तँए देह दुखाइए। जखन दू-चारि दिन एकलखाइत रोपैन करबै तखन अभियास भऽ जाएत तब देह नै दुखाएत।"

बुधनी-

"भैया, हमरा तँ कम्मे खेत अछि, हिनका तँ बेसी छैन। आइ जे कदबा कऽ देलैन काल्हि तक ओकरे रोपब। अहिना जँ दू दिन आरो सम्हारि देता तेहीमे हमर सभ खेती भऽ जाएत। अपन खेत जखन भऽ जाएत तँ हिनको जाबे हेतैन ताबे हमहूँ दुनू गोरे रोपि देबैन। अगते खेती दुनू गोरेक भऽ जाएत।"

"देखियौ कनियाँ, अगर लोक मिलानसँ काज करत तँ सबहक काज असान भऽ जेतइ, मुदा से नै ने होइ छइ। आइए फुसियाहा आ किसुनमाकें देखलिऐ।"

बिच्चेमे देवन सजनकें कहलकैन-

"भैया, ओइ दिन जे खिस्सा कहैत रहिऐ आ कहलिऐ जे दोसर दिन आगू कहब से कहियौ।"

देवनक बात सुनि सजन अखिहासए लगला। मन पड़िते हँसैत बजला-

"अच्छा सुनह...।"

हाथक इशारासँ देखबैत सजन-

"ओ रवियाक घर छिऐ। तूँ अनभुआर छह तँए चिन्हा दइ छिअ। रविया आमक गाछी लगबैक विचार केलक। गाछ तँ पहिनौं रहै मुदा सभटा गाछ बुढ़हा गेल रहै, कएटा सुखियो गेल रहै आ कएटा बेचियो लेलक। सिरिफ एक्केगो पुरना गाछ बँचल रहइ, ओहो पुरना गेल छेलै जे कोनो साल फड़ै आ कोनो साल नइ फड़इ। ..ओ हमरा आबि कऽ पुछलक जे 'कोन-कोन आमक गाछ रोपी?' ..आमक गाछ रोपब सुनि हमरा खूब खुशी भेल। खुशी ऐ दुआरे भेल जे समाजमे केकरो गाछी भेलासँ गामेमे आम बेसी हएत। अपनो खएत आ दोसरो खेतै। हमरो धिया-पुता टुकला बिछत। हम कहलिऐ- 'रवि, नीक-नीक आमक गाछ जे मीठो होइ आ नम्हरो रोपिहह।' ..ओ कहलक- 'गाछ केतएसँ आनब?' ..हम कहलिऐ- 'अगर बजारमे कीनिबह तँ ठका जेबह। कहतह 'कलमी' आमक गाछ दइ छी आ भऽ जेतह 'सरही', तँए आमेक दोकानमे जा चुनि-चुनि कऽ नमहरका आम कीनि लिहह आ गुद्दा खा कऽ सुआद देख लिहक। जे नीक बुझि पड़तह ओकर आँठी रोपि दिहह। पनरहे दिनमे पिपही जनैम जेतह। आमक गाछकें

पिपही लोक ऐ दुआरे कहै छै जे आँठीक तरमे जे गुद्दा जकाँ रहै छै ओकरा लोक सिलौटपर रगैड़ पिपही बनबैए, तँए ओकरा पिपही कहै छइ। पिपहीकें ताक-हेर करैत रहिहह जे बकरी-छकरी ने खा। नमहर गाछकें जँ बकरी खेबो करै छै तँ निच्चासँ कनोजैड़ चलै छै मुदा पिपहीबला गाछकें खेने सूखि जाइए। जखन पिपही कनी नमहर हेतह तखन उखाड़ि कऽ ओकर मुसरा निच्चाँ दबा कऽ काटि फेर रोपि दिहक। साले भरिमे डेढ़-हाथ-दू-हाथक भऽ जेतह। तखन ओकरा थल्ला काटि दिहक। तीनियेँ सालमे फड़ए लगतह।' ..रविया सएह केलक।"

देवन धियानसँ सुनै छल। सजन अपन आँगुरक इशारासँ छठुआक घर देखबैत आगू बजला-

"ओ छठुआक घर छिऐ। छठुआ की केलक तँ रवियाक आमक गाछ पहिने गनि लेलक, बारहटा गाछ रहैक– आ अपन बाड़ीमे जनमल अनेरूआ बारहटा गाछ उखाड़ि कऽ साँझमे रखि लेलक। रातिमे रवियाक बारहोटा गाछ उखाड़ि अपनामे रोपि लेलक आ अपन रवियामे रोपि देलकै। रविया अनाड़ी, बुझबे ने केलक। तीन सालक पछाइत जखन आम फड़ए लगलै तखन रविया तजबीज करए लगल जे जेहेन आमक आँठी रोपने रही तेहेन तँ एक्कोटा ने अछि! एना किएक भेल?

..छठुआ अपन आमक बड़ाइ जेतए-तेतए करए लगल। रवियाकें सेहो छठुआक आम देख मनमे एलै जे जेहने आमक आँठी रोपने रही तेहने बुझि पड़ैए। मुदा कहबै केना। ..रवियाक आँगनवाली आमक गाछ रोपैए-कालमे कबुला केने जे 'पहिल बेरक फलसँ ब्राह्मण भोजन बरहम स्थानमे कराएब।' जखन आम पाकए लगलै तखन सभ गाछक आम मिला कऽ दू चँगेड़ा सैंत कऽ रखलक आ एक मटकुरी

दहियो पौरलक तैसंग एक अढ़ैया धानक चूड़ा सेहो कुटलक। बेरागन बुझि शुक्र दिनक नैंत पुरहितकेँ दऽ देलकैन।

..सबेरे आठ बजेमे पुरहित स्नान-पूजा कऽ माथमे त्रिपुण्ड केने पहुँच गेलखिन। बरहम स्थानक आगूमे सभ समान–चूड़ा, दही, चीनी, अँचार, आम, रखलक। पुरहितक नजैर आमपर पड़िते झुझुआ गेलैन, मुदा दही आ चूड़ा देख सबुर भेलैन। रविया सभ चीज परसलक। पुरोहित सभ आमकेँ बागि देलखिन जे खट्टा अछि। 'खट्टा' सुनिते दुनू परानी रविया तामसे आगि भऽ गेल। मुदा की करैत। ..चारि सालक मेहनत रविया चोरकेँ उसरैग छातीमे मुक्का मारि लेलक। फेर रविया ओइ गाछीकेँ उपटा दोहरा कऽ रोपैक विचार केलक। हमरा आबि कऽ पुछलक। हम कहलिऐ जे नसीवलाल काका ऐठाम चलि जा ओ सुतिहार छैथ। ओ जेना-जेना कहथुन तेना-तेना करिहह। रविया नसीवलाल काका ऐठाम पहुँच, पहिने पैछला खिस्सा कहलकैन। तखन गाछी लगबैक बात पुछलकैन। नसीवलाल काका रवियाकेँ बुझबैत पुछलखिन- 'केते खेतमे गाछी लगेबह?' ..रविया कहलकैन- 'बहुत खेतबला तँ हम नहियेँ छी, पाँचे कट्ठा ऊँचगर खेत अछि जइमे गाछी लगौने छेलौं, ओहीमे लगाएब।' ...नसीवलाल कहलखिन- 'बड़बढ़ियाँ। छअटा कलमी– एकटा बम्बइ, एकटा रोहनियाँ एकटा जरदालू, एकटा मालदह, एकटा फैजली आ एकटा राइर–लगाबह। ऐ आमकेँ रोपलासँ अदहा जेठसँ अदहा सौन धरि बेराबेरी चलैत रहतह। ई छबो आमक गाछ हम दऽ देबह। पाइ-कौड़ी नइ लेबह। पाँचटा सरही सेहो रोपि दिहक तैसंग एकटा बेल, दूटा धात्री, एकटा गुलजामुन आ दूटा लतामक गाछ सेहो रोपिहह। सभ मिला कऽ बढ़ियाँ बगीचा भऽ जेतह। जँ सभटा कलमीए आम रोपबह तँ मौका-कुमौकामे जखन जारैनक काज हेतह तँ दिक्कत भऽ जेतह।' ..नसीवलाल कक्काक बात सुनि रवियाक मन खुशी भऽ गेलइ। गाछ

लऽ जा रोपलक आ सभ गाछमे बेरही सेहो लगा देलक। दुनू परानी रविया गाछक ताक-हेरि करए लगल। वएह गाछी अखन छइ। दू सालसँ फड़बो करै छइ।"

सजनक बात सुनि देवन बाजल-

"भैया, आरो किछु कहियौ?"

देवनक जिज्ञासा देख सजनक मुहसँ मकइ लाबा जकाँ हँसी निकललैन। हँसीकेँ कम करैत हाथक इशारासँ तेतराक घर देखबैत कहलखिन-

"ओ तेतराक घर छिऐ। वेचारा बड़ मुँहसच्च अछि। मुदा काज करैमे भूते छी। जहिना करीन पटबैमे तहिना कोदरवाहि करैमे। काज करैमे तेहेन पीतमरू अछि जे ओकर जोड़ा गाममे नइ छइ। घरोवाली तेहने होशगर। खानदानी घरक बेटी। ओना, देखैमे पिरशियामे अछि मुदा रिष्ट-पुष्ट देह पाँच हाथक नमगर-छरगर। घर-आँगनसँ लऽ कऽ खेत पथारक सभ काजक लूरि। घरक जुइत अपने हाथमे रखने अछि। तेतरो निधैन रहैए। घरवाली जएह करैले कहलक सएह केलक। वेचारी घरक लक्ष्मी छी। खुट्टापर चारिटा माल रखने अछि। मालक सेवा तेहेन करैए जे अनका सेहन्ता लगै छइ। जखन ओकरा बथानपर जेबहक तँ हेतह जे ओत्तै बैस रही। ने एक्को चोत गोबर करखनो थैरमे देखबहक आ ने थाल-खिचार। चानी जकाँ थैर चमकैत रहै छइ। माल-जाल पोसि कऽ वेचारी सबा बीघा खेतो कीनलक, तीनटा घरो बनौलक आ दुनू बेटीक बिआहो केलक। बेटियो सभ तेहेन लूरिगर छै जे नीक-नाहाँति गुजर करैए। गामक कियो ने कहि सकैए जे तेतरा हमर एक्को-पाइ ठकने हएत आ ने केकरो-कहियो गारि पढ़ने हेतइ। मुदा भगवानो कहियो वेचाराकेँ अधला नै केलखिन। अगर केतौ जाइत रहत आ नजैर पड़तै तँ सहैट कऽ लगमे आबि

तमाकुल खुऔत। ऐ तीन-कोसीमे जँ केतौ नाच हेतै आ ओकरा भाँज लगतै तँ आबि कऽ कहत। खेला-पीला पछाइत रातिमे घरवालीकेँ कहतै जे सजना भैयाक मन खराप भऽ गेलै तँए ओ कहलक जे एतइ आबि कऽ सुतिहह। तँइ ओतै जाइ छी। ..वेचारी घरोवाली मन खराब सुनि मानि जाइ छइ। दुनू गोरे नाच देखए जाइ छी। जैठाम नाच देखए जाइ छी तैठाम बिपटा आ नटुआकेँ एक्को-दू रूपैआ देबे करत। ..बरख आठम छिऐ, सजमैनिया टोलक रूपलाल चौरी खेतक मोटका धानक बीआ सासुरसँ अनलक। वास्तवमे धानो नीक छेलइ। सौंसे गामक गिरहस्त ओइ धानक परसंशा केलकै। पाँच मोनक कट्ठा उपजबो केलइ। ई गाम– विकासपुर, राघोबाबूक जमीनदारीमे पहिने छल। राघोबाबू अपन बेटीकेँ खोंइछमे ई गाम दऽ देलखिन। जइ दिनसँ खोंइछमे बेटीकेँ देलखिन तइ दिनसँ उपजाक सेखिये चलि गेल। केहनो सुन्नर खेत आ केहनो सुन्नर धान होइ मुदा कट्ठा मनसँ बेसी हेबे ने करइ। नइ तँ आध मन, छअ पसेरी, पाँच पसेरी कट्ठा होइ। मुदा जखन रूपलाल पाँच मोनक कट्ठा उपजौलक तखन गिरहतक मनमे सुनगुनी एलइ। तहियासँ गिरहत खेतमे खाधो देमए लगल। आ जोतो-कोर बेसी करए लगल। बेसी उपजनमा धानक बीओ लोक आन-आन गामसँ आनए लगल। मुदा गामक बनाबटो अजीब अछि। जेते धनहर खेत अछि ओ तीन किस्मक अछि। अधहा खेत गहींर अछि, जेकरा चौरी कहै छिऐ, छह-अना खेत उपराड़ि अछि आ दू-अना निचरस, जइसँ की होइ छै जे बेसी बरखा भेल तँ ऊपरका खेत उपैज जाइत आ निचला दहा जाइत। तहिना जँ कम बरखा भेल तँ निचला खेत उपैज जाइत आ ऊपरका मरहन्ना भऽ जाइइ। मोटा-मोटी अदहा उपजा गिरहतकेँ होइत। मुदा तैयो किसान, भगवानक लीला बुझि, हँसैत-खेलैत समए बिता लिअए। ..रूपलालक धानक उपजा देख तेतरा अपन स्त्रीकेँ कहलक। लड़ुवती अपन पनरहो कट्ठा

चौरी खेत-ले पनरह सेर धान बदैल अनलक। ओइ धानकेँ तेतरा नारक झट्टाक मोइर बना रखि लेलक। फागुन-चैतमे जखन चौरी खेत उखड़लै तखन खूब महिया कऽ जोइत धान बाउग केलक। बड़ सुन्नर धानक गाछ जनमलै। सभ दिन तेतरा दुनू परानी बेरा-बेरी जा-जा देखैत। बीत भरि-भरिक जखन गाछ भेलै तखन दुनू परानी आठ दिनमे खुरपीसँ कमठौन केलक। बैशाखमे एकटा बिहड़िया हाल भेलइ। कच्चे-बच्चेकेँ धान चलल। खेत भरि गेल। अखाढ़मे डुमौआ बरखा भेल। आठे दिनमे धानक गाछ सरैक कऽ भरि-भरि जाँघक भऽ गेल। ..दुनू परानी तेतरा विचारलक जे सुर्रा कमठौन करब। परात भने दुनू गोरे कमाइले गेल। आड़िपर ठाढ़ भऽ दुनू परानी हियासि-हियासि धान देखए लगल। धान देख लड़ुवती तेतराकेँ कहलक, तेहेन धान अछि जे थारी छिछैल जाएत।' ..तेतरोक मन गदगद रहै, खिलखिला कऽ हँसए लगल। अपन खेत-देख तेतरा अनको-अनको खेतक धान देख अपन धानसँ तुलना करए लगल। जेहेन धान तेतरा खेतमे छल ओहन आड़ि-पाटिमे केकरो नहि। हँसैत तेतरा लड़ुवतीकेँ कहलक- 'ऐबेर लक्ष्मी महरानी खुशीसँ तकलैन।' ..तेतराक बातमे अपन बात जोड़ैत लड़ुवती कहलकै- 'जब, भगवान दइपर होइ छथिन तँ छप्पर फाड़ि कऽ दइ छथिन!' ..कहि दुनू परानी हँसए लगल, हँसिते दुनू गोरे कमठौन करए खेतमे पैसल। कमठौन शुरू केलक। कनीए-कालक पछाइत दुनू गोरेकेँ ठेंगी पकैड़ लेलकै। बुझलक कियो ने। खून पीब जखन ठेंगी लटकल तखन तेतराक नजैर पड़लै। नजैर पड़िते तेतरा फानि कऽ खेतक आड़िपर ठाढ़ भऽ जोरसँ लड़ुवतीकेँ कहलकै- 'सभटा खून ठेंगी पीने जाइए। झब-दे छोड़ाउ नइ तँ जेहो देहमे खून बँचल अछि सेहो पीब लेत!' ..तेतराक बात सुनि लड़ुवती खेतसँ ऊपर हुअ लगल कि अपनो बाँहिमे ठेंगी लटकल देखलक। बाँहिमे ठेंगी लटकल देख धड़फड़ा कऽ ऊपर हुअ लगल कि धानमे साड़ी लटपटा

गेलै, लटपटाइते आड़िपर गिर पड़ल। फेर उठि लड़ुवती पहिने अपन ठेंगी छोड़ौलक, ठेंगीकेँ छोड़ैबते छर-छरा कऽ खून बाँहिसँ बहए लगलै। चुटकीसँ माटि लऽ दाढ़मे लगौलक। खून बन्न भेलइ। ताबे तेतरो अपन ठेंगी छोड़ा खेतमे फेकलक। फेर कमाइले खेतमे पैसए लगल आकि देखलक जे खेतमे ठेंगी सह-सह करैए। कमठौन छोड़ि दुनू गोरे घर दिस विदा भेल। ..ऊपरका खेत सभ किसान अवादए लगला। पनरहे दिनमे सौंसे गामक खेत अवाद भऽ गेल। खेत तँ अवाद भऽ गेल मुदा बरखो बन्न भऽ गेलइ। ऊपरका खेत सभ सुखए लगलै। जेहो पानि खेतमे छेलै ओहो बहि-बहि निचुलका खेतमे जमा भऽ गेल। जहिना जे गब किसान खेतमे रोपने छल ओहिना ओ लगि कऽ ठाढ़! मने-मन सभ किसान सोचए लगला जे समए रौदियाह भऽ गेल। खेत सभमे दरारि फाटए लगल। धानक निचला पात पीअर भऽ-भऽ सूखए लगल। मुदा चौरी खेतक धान किसानक मुहकेँ हरिअर रखने। ..दुर्गापूजासँ पाँच दिन पहिने एकटा अछार भेल। मुदा ओ पानि रस्ते-पेरे रहि गेल। मात्र चौरीए खेतटा मे ठेहुन भरि पानिक सलाढ़ पकड़ने। आब जँ आगू बरखा नहियोँ हएत तैयो चौरी उपजबे करत, ई बात सभ गिरहस्तक मनमे। हर्ष-विषादक बीच गामक सभ किसान। मुदा जइ गिरहस्तक बेसी खेत चौरीमे रहैन ओ बेसी खुशी छला आ जिनकर कम खेत ओ कम। तेतरा आ लड़ुवतीकेँ बेसी खुशी। दुनू परानी तेतराकेँ ऐ दुआरे बेसी खुशी जे आन सालसँ बेसी धान हएत। डेढ़ बीघा खेत तेतराकेँ रहइ। पनरह कट्ठा उपराड़ि आ पनरह कट्ठा चौरी। कोनो साल बीस मनसे बेसी धान नै होइ मुदा ऐबेर नवका धानक आशा। चौरी खेतक धान, दुनू परानी तेतराकेँ नव उत्साह आ नव सिनेह बढ़ए लगल। जखन दुनू एकठाम बैस परिवारक गप करए तँ पहिने चौरीए धानक चर्च उठि जाइत। ..गभहा सकराँतिक दिन। आइ गामक सभ गिरहत अपन-अपन खेत जा

कहत- 'उक्खैर सनक बीट, समाठ सनक सीस।' ..दुपहरेसँ दुनू परानीक बीच तेतराकेँ रक्का-टोकी हुअ लगल। रक्का-टोकीक कारण छल जे तेतरा कहैत जे 'हम चौरी जा कहबै।' आ लड़ुवती कहै जे 'हम जा कऽ कहबै।' तेतराक कहब रहै जे पुरुख खेतमे जा कहैत तँए हम जाएब। आ लड़ुवती कहैत जे 'घरक गारजन जा कऽ कहै छै तँए हम कहबै।' ..मुँह दुब्बर तेतरा, खिसिया कऽ लड़ुवतीकेँ कहलकै- 'जाउ, अहीं जा कऽ कहियौ-गे।' ..मने-मन लड़ुवती सोचए लगल जे पनरहे कट्ठा खेत अछि तँए घुमि-घुमि सौंसे खेत कहबै। तँए अँगनाक सभ काज सम्हारि लड़ुवती खेत विदा भेल। मनहूस भेल तेतरा दुआरपर बैस, बीड़ी पिब-पिब मनकेँ शान्त करए लगल। मन शान्त होइते तेतरा कुट्टी काटए लगल। ..घरक गोसाँइकेँ गोड़ लागि लड़ुवती सोचलक जे जँ कियो रस्तामे टोकबो करत तँ उनैट कऽ जवाब नइ देबै, नइ तँ वीध भंग भऽ जाएत।"

बिच्चेमे देवन बाजल-

"तब की भेलै?"

सजन कहलखिन-

"सुनहक ने, समतोलिया आ अँगुरिया, दुनू माय-धी रस्ते कातमे मरहन्ना धान काटैत रहए। लड़ुवतीकेँ देख समतोलिया कहलकै- 'ऐबेर हिनके बाजी सुतरल छैन। हमरा सबहक कपारमे आगि लगि गेल!' ..समतोलिया बातक जवाब नै दऽ लड़ुवती मुँह घूमा आगू बढ़ि गेली। जखन दस लग्गी आगू बढ़ल तखन अँगुरिया माएकेँ कहलकै- 'एक्को बेर काकी बजबो ने कएल!' ..सन्तोष दैत समतोलियाकेँ कहलकै- 'बुच्ची, धने एहेन चीज छिऐ जे लोककेँ टेंढ़ बना दइ छै, भाए-भाएमे गरदैन कटौवैल करा दइ छै, स्त्री-स्वामीमे गरमेल करा दइ छै तेतबे नहि, बापो-बेटामे खून करा दइ छइ। तइले दुख किए करै छँह। दस

कट्ठा अल्हुआ रोपने छी। कहुना-कहुना तँ साए मन हेबे करत। केते खेमे। अदहा बेच कऽ धान कीनि लेब। एक साँझ भात आ एक साँझ अल्हुआ उसैन कऽ चाहे रोटी पका कऽ खाएब। कोनो की सबहक दिन कटतै आ हमर नै कटत?' ..खेतक चारू आड़ि घुमि लड़ुवती धानकेँ गोड़ लगि खेतमे धँसल। तरे-तर गम्हरा धानमे होइत रहइ। आँगुर सन-सन मोट। एकदम पोछल-पाछल शाही काँट जकाँ। तरे-तर लड़ुवती खुशीसँ गदगद। चारि फेरा खेतमे लगा खेतसँ निकैल मने-मन गोड़ लागि लड़ुवती विदा भेल। अबैकाल रस्तेमे जखन रहए तँ मनमे उठलै जे घरमे एक्कोटा नमहर कोठी नइ अछि, एते धान केतए रखब। से नइ तँ अखन महिना दिन धान होइयोमे लगत तँए अखनियेँ एकटा नमहर ढक बनबा लेब। अँगना अबैत-अबैत लड़ुवती तँए कऽ लेलक जे काल्हिए ढक बनौनिहारकेँ कहि देबइ। सूर्यास्त भेने तेतरा मालऽ घरक ओसारक खुट्टा लगि बैसल छल। मुस्की दैत लड़ुवती तेतराक लगमे आबि कहलकै- 'चौरीक धान तँ फाटि कऽ उपजल अछि। घरमे एक्कोटा नमहर कोठी नइ अछि तँए एकटा नमहर ढक बनबा लिअ।' ..लड़ुवतीक बात सुनिते तेतराक दिनका तामस जगि गेलइ। खिसिया कऽ बाजल- 'ढक बनाउ की बखारी तइले हमरा की पुछै छी? हमहूँ कोनो मनुखे छी? बहिया-खबास जकाँ रहै छी आ रहब।' ..तेतराक करुआएल बात सुनि कनडेरिये आँखियेँ लड़ुवती तेतराक आँखिमे आँखि गड़ा दहिना हाथ माथपर दऽ पुचकाइर कऽ कहलक- 'एना जँ भैंसा-भैंसीक कनारि दुनू परानीमे लोक करए लगत तखन तँ भऽ गेल। खेते देखैक मन अछि तँ काल्हि जा कऽ देख आएब। खेत केतौ पड़ाएल जाइ छइ। तइले एते तामस किए केने छी।' ..लड़ुवती अपन गलती अपन आँखिएसँ मानि लेलक। तेतरोक आँखि गलती माफ करैत अपन बड़प्पनक आनन्द महसूस केलक। मुस्की दैत तेतरा बाजल- 'छोटे-छोटे दूटा ढक बना लेब। एकटा

बनौलासँ गड़बर भऽ जाएत। एकछाहा ओते धान हएत तब ने। जँ से नै हएत तँ मोटका धानमे महिक्का धान केना रखब?' ..मुड़ी डोलबैत लड़ुवती बाजल- 'कहलौं तँ ठीके। जेकरा बेसी खेत रहै छै ओकरा बेसी धानो होइ छै तँए नमहर-नमहर ढक वा बखारी बनबैए। मुदा जे जेहेन गिरहस्त अछि ओ तँ ओहने कोठी आकि ढक बनौत ने। गरीब-गुरबा भुरकुरी वा चैलेमे अन-पानि रखैए।' ..दोसर दिन भोरे तेतरा ढक बनबै-दे कहैले लेलहा ऐठाम गेल। लेलहा गछि लेलक। दोसर दिन आबि लेलहा चारिटा भौर परहक अधपक्कू बाँस कटलक आ दू दिनमे लेलहा चारू बाँसकेँ चीर-फाड़ि, छील-छालि कऽ तैयार केलक। तेसर दिन ढक बनौनाइ शुरू केलक। बिच्चेमे लेलहा ऐठाम जा लड़ुवती कहलक- 'भैया, एकटा मनही ढकिया सेहो बना दिहैथ। छठिमे घाटो परहक काज कऽ लेब आ धान-तानक लरती-चरती हएत तँ धानो रखब।' ..मने-मन लड़ुवती छठि-मायकेँ हाथियो कबुल देलक।' ..अगहन आएल। धनकटनी शुरू भेल। ऊपरका खेतमे तँ धान तेनाहेँ सन रहै मुदा तैयो जरलो-मरल धान काटि-काटि लोक आनए लगल। पनरह अगहनसँ चौरी खेतमे हाथ लागल। तेतराक खेत बीचमे तँए पहिने किन्हैरक धान कटत तखने रस्ता बनतै। रखबार किन्हैरबला गिरहत सभकेँ धान काटैले कहलक आ बीचक खेतबला केँ मनाही कऽ देलक। आठ दिनक कटनीक पछाइत तेतरा-खेतक रस्ता खुजल। साँझेमे आबि रखबार तेतराकेँ कहि देलकै जे खेतक रस्ता भऽ गेलह। भोरे लड़ुवती भानस कऽ दुनू परानी खेलक आ धान काटै लऽ विदा भेल। जाइसँ पहिने माल-जालकेँ खुआ-पीआ लेलक। शीतलहरी दुआरे पानियोँ ठरल। रौदक पता नहि। आड़िपर पहुँच दुनू परानी तेतरा धानकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। धानक सीस ठारहे मुदा दाना एक्कोटामे नहि! लड़ुवतीक मनमे एलै जे भरिसक लोक चोरा कऽ सुरैर लेलक। रखबारकेँ ताकए लगल। ..कनीए-कालक पछाइत मनमे

एलै जे कतका ने सुररलक मुदा बीचला तँ नै सुररने हएत। पानिमे पैस कऽ धान देखलक। बीचोमे एक्कोटा धान नहि! झड़ल सीस देख लड़ुवती हतास भऽ गेल। मनमे उठलै- एना भेल किए? ..एमहर तेतरो चारू आड़ि घुमि-फिर देखलक तँ एक्के रंग बुझि पड़लै। ठकुआ कऽ दुनू परानी आड़िपर ठाढ़ भऽ गेल। ने किछु तेतरा बजैत आ ने लड़ुवती। दुनूक देहमे जेना थोड़बो लज्जैत नै रहल। एक तँ खेतक ठरल पानि दोसर धानक सोग, कठुआ कऽ लड़ुवती खेतेमे खसि पड़ल। जेना अचेत भऽ गेल। ..लड़ुवतीकेँ गिरल देख तेतरा पँजिया कऽ कोरामे उठौलक। मुड़ी उठा-उठा लोककेँ देखैत जे शोर पाड़बै। मुदा लगमे कियो नहि। कहुना-कहुना तेतरा लड़ुवतीकेँ उठा सुखलाहा खेतमे अनलक। लड़ुवती लर-ताँगर भेल, जेना एक्को-पाइ होशे नहि। मने-मन तेतरा सोचए लगल जे आब की करब? किछु फुरबे ने करइ। अनासुरती मनमे एलै जे पैरक दुनू तरबा रगड़ने देहमे गरमी औतै तखन उठि कऽ ठाढ़ हएत। लड़ुवतीक तरबा तेतरा रगड़ए लगल। ..थोड़े-कालक पछाइत लड़ुवती आँखि तकलक। आँखि तकिते साड़ी सेरिया चुक्की माली भऽ बैसल। देह गरमाइत-गरमाइत गरमाएल। तखन दुनू गोरे आँगन विदा भेल। अँगना अबिते तेतरा घूर पजारलक। दुनू परानी भरि मन आगि तपलक। ..बेरू-पहर तेतरा हमरा ऐठाम आबि कहलक- ‘भैया, गरदैन कटि गेल। एक्कोटा धान खेतमे नइ अछि। जेना कियो सुरैर नेने हुअए तहिना बुझि पड़ैए।’ ..हम पुछलिऐ- ‘धान सुररने छह कि झड़ल छह?’ ..कहलक- ‘अगर सुररने कियो रहितए तँ अदहो-छिदहो तँ बँचल रहैत से एक्कोटा ने बँचल अछि।’ ..हम कहलिऐ- ‘तोहर बीये खराब छेलह। अपने घरक बीआ छेलह कि केकरोसँ नेने छेलह?’ ..कहलक- ‘रूपलालसँ नेने छेलौं।’ ..कहलिऐ- ‘वएह तोरा ठकि लेलकह। उ चोट्टा औझुका ठक छी। गाममे केकरो नीक देखए चाहैए। ओते जे चीज ढेरियौने अछि से

सभटा अपने कमेलहा छिऐ। मुँह दुब्बर लोक डरे किछु कहबे ने करै छै तँए छजल जाइ छइ। जेहने चोट्टाक मुँह छुटल अछि तेहने लठिघरो अछि तँए कियो किछु कहबे ने करै छइ। आब की करबह। सवुर करह।’ ..टुटल आशा, विचलित मन, कनैत आँखि तेतराक देख किछ ने फुरैत रहए। कहलक- ‘भैया, एक्को कनमा धान नहि भेल, भरि साल की खाएब?’ ..आशा जगबैत हम कहलिऐ- ‘तोरा अपन सम्पैतक पते नै छह। बहुत धन छह। एकटा बच्छा बेच लेबह तेहीसँ छह मासक बुतात चलि जेतह। तेकर बाद बुझल जेतइ। ताबे छह महिना कि कोनो हाथपर हाथ धऽ बैसल रहबह। चिन्ता नै करह।’ ..कहलक- ‘जाइ छी भैया?’ ..कहलिऐ- ‘तमाकुल खा लएह तब जइहह।’ ..कहलक- ‘तमाकुल खाइक मन नै होइए।’ ..कहलिऐ- ‘मन असथिर करह। कमाइबला बेटा लोकक मरि जाइ छै, सेहो सवुर लोक करिते अछि। तोरा तँ खेतक उपजा गेलह। खेत छह तँ फेर ओइसँ नीक उपजा देखबहक।’ ..अँगना जा तेतरा सभ बात लड़ुवतीकेँ कहलकै। लड़ुवतीक आँखि लाल भऽ गेलै, जोर-जोरसँ बाजए लगल- ‘रूपललवा गरदैनकट्टा छी। जेहने फौतिबा अपने अछि तेहने बौहु छै! अहाँ अँगनेमे रहू, हम ओइ रूपललबाकेँ सराध-बिटारि केने अबै छी। जाबे ओकरा सिरा आगू थूक नै फेकबै ताबे नै बूझत।’ ..विचित्र असमंजसमे तेतरा पड़ि गेल। कखनो होइ जे अनेरे घरवालीकेँ कहलिऐ। तँ कखनो होइ जे दुनू गोरे जा कऽ रूपलालक दरबज्जापर गरियाबी। फेर होइ जे रूपलाल समंगर अछि, बिनु मारने छोड़त नहि। धनो गेल आ नाँहकमे मारियो खाएब। अन्तमे सोचलक जे भने अँगनेसँ घरवाली गरियबैए। लड़ुवती अँगनासँ रूपलालकेँ गरियबैत रस्तापर चलि आएल। तेतरा आगूमे ठाढ़ भऽ बाँहि पकैड़ लेलक। जेते तेतरा लड़ुवतीक बाँहि पकैड़ रोकैत तइसँ बेसी लड़ुवती कुदि-कुदि आगू बढ़ैक चेष्टा करैत। आ चिकैर-चिकैर गरियेबो करैत। ..रस्ता धेने

रूपलाल केतौसँ घर दिस अबै छल। लड़ुवतीक गारि सुनि चौंक गेल मुदा आँखि निच्चाँ केने अपना ऐठाम चलि आएल। हल्ला सुनि हमहूँ गेलौं। तेतराक घरवालीकेँ देह परहक साड़ी उड़ियाएल, केश खुजल, आँखि लाल, गरैज-गरैज गारि पढ़ैत सुनि कहलिऐ- ‘कनियाँ, चुप रहू। धैनवाद अहींकेँ दइ छी जे रूपलालकेँ मुँहपर गरियेलौं। की करबै? जाबे अपना चीज नइ अछि ताबे अहिना ठक सभ ठकत। देखबे केलिऐ जे रवियाक आमक गाछ छठुआ उखारि कऽ रोपि लेलकै। चुप हउ, चुप हउ।’ ..हमर बात सुनि वेचारी साड़ी सरियौलक, माथ झँपैत घुनघुना कऽ बाजल- ‘हिनका पैघ बुझै छिऐन भैया, तँए बात मानि लेलिऐन नइ तँ आइ ओइ डकूबाकेँ खापैड़सँ चानि तोड़ि दितिऐ।’

आँखि मूनि देवन धियानसँ सजनक खिस्सा सुनैत रहए। ‘चानि तोड़ि दितिऐ’ सुनि आँखि खुजलै। मने-मन देवन सोचए लगल जे रूपलालकेँ जेते सजा हेबा चाही से नै भेलइ। किए ने भेल? शायद एकर यएह कारण रहल हएत जे समाजोमे शासक आ शासित लोक अछि। शासकक गलतीक जवाब दइबला कियो ने अछि। मुदा गरीब-गुरबाक गलतीकेँ उचितोसँ बेसी सजा देल जाइ छइ। कनीकाल गुम्म रहि देवन सजनकेँ कहलकैन-

“अहाँ गियानक बखारी रखने छी।”

हँसैत सजन बजला-

“बौआ, रातियो बेसी भऽ गेल आ भरि दिनक थाकल सेहो छी। तोहूँ खा कऽ अराम करह आ हमहूँ जाइ छी।”

◌

शब्द संख्या : 4937

दस

भोर होइते एका-एकी टोलक लोक बचेलालक ऐठाम आबए लगल। लोककेँ अबैत देख सुमित्रा आँगन बहारब छोड़ि दरबज्जापर आबि सभकेँ बैसैले कहए लगलखिन। सबहक मनमे जेहने खुशी तेहने जिज्ञासा। लोकक गल-गुल सुनि बचेलालो बिछानसँ उठि बोलीकेँ अकानए लगला जे केतौ किछु भऽ ने तँ गेलइ। मुदा गल-गुलक तेहेन बाढ़ि जे कोनो बात साफ-साफ बुझाइए ने पड़ैत रहैन। आँखि मीड़िते बचेलाल दरबज्जापर आबि देखलैन। किछु गोरे चौकियोपर बैसल, किछु ठाढ़ो आ किछु गोरे रस्ते-रस्ते अबितो। सबहक मन खुशी तँए मुँहमे हँसी। बचेलालकेँ सुमित्रा कहलखिन-

“बच्चा, काल्हि जे दरी-लाइट-बरतन कीनि कऽ अनलह वएह देखैले समाज सभ एलखुन हेन।”

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल कलपर जा माटिये-सँ चारि घूसा दाँतमे लगा कुरुर कऽ आबि दरबज्जाक कोठरी खोलि, सभ समान निकाललैन। दरी आ जाजीमकेँ खरिहाँनमे बिछा सभकेँ बैसबैत बचेलाल बजला-

“हम सिरिफ कीनिलौं मुदा छी अहाँ सबहक। जिनका जाहिया काज हुअए, लऽ जाएब। ऐ दरी, जाजीम, लाइट आ बरतनकेँ अपन बुझि उपयोग करब।”

बचेलालक बात सुनि सभ थोपड़ी बजौलक। अछेलाल सेहो आएल। सुमित्रा चाहक ओरियानमे आँगन गेली। लोकक हिसाबे हुनका गरे ने अँटैन जे कथीमे चाह बनाएब आ पीबैले कथीमे देब। घरमे चाहो-चीनी आ दूधो कम्मे अछि, ऐसँ पारो ने लागत। विचित्र असमंजसमे सुमित्रा। मुदा मनमे ईहो होइत रहैन जे दरबज्जापर आएल समाजकेँ जँ चाहो ने पिएबैन तँ घरक की रहत...।

अँगनेसँ सुमित्रा हाथक इशारा दैत अछेलालकेँ बजौलैन। सहैट कऽ अछेलाल सुमित्रा लग एला। सुमित्रा कहलखिन-

“बौआ, आइ पहिल दिन समाज दुआरपर एला आ अगर चाहो नै पिएबैन से केहेन हएत।”

हुँहकारी भरैत अछेलाल कहलकैन-

“हँ, ई तँ बड़ पैघ अपमान समाजकेँ हेतैन आ समाजोसँ पैघ अपन घरक प्रतिष्ठाक हएत। सभ चीज तँ ऐछे तखन प्रतिष्ठाकेँ मंगनीमे किए जाए देब। हम दूध नेने अबै छी। चाह-चीनी दोकानसँ लऽ आनब। चाह बनबैले बड़का बरतन अछिए। पीबैले जँ कप-गिलास नइ अछि तँ दोकानेसँ सैकड़ा हिसाबसँ प्लास्टिकक गिलास कीनि आनब। कनी करैये पड़त ने मुदा असम्भव काज तँ नइ अछि। जुगायोकेँ शोर पाड़ै छिऐ, ओ दोकानक काज करत आ अहाँ चुल्हि पजाइर बरतन चढ़ा दियौ। जाबे बरतन सेरियाएब आ चुल्हि पजारब ताबे ईहो दुनू काज भऽ जाएत।”

सुमित्रा बजली-

“हँ! जुगायकेँ शोर पड़ियौ।”

जुगायकेँ अछेलाल शोर पाड़ि कहलक-

“जुगाय, तूँ कनी दोकान जा। चाह, चीनी, गिलास, तमाकुल, बीड़ी आ सुपारी कीनने आबह। हौ भागमन्ते ऐठाम दस गोरे अबैए।”

जुगाय दोकान गेल आ अछेलाल दूध-ले। एमहर सुमित्रा हाँइ-हाँइ गिलासमे पानि लऽ चुल्हिकेँ शुद्ध करैले छीटए लगली।

ओसारपर बैस रूमा गुम्हरैत मुदा बजैत किछु नहि, जेना बिनु आगिए मन छन-छन जरैत रहैन। होनि जे सभ जान मारैपर लगल अछि। खुशीसँ बचेलालक मन ओहिना दहलाइत रहैन जेना पानिक ऊपरका चीज हवा पेब दहलाइत रहैए।

चाह बनल। सभ कियो चाह पीलैन कियो तमाकुल तँ कियो बीड़ी तँ कियो सुपारीक टूक मुँहमे दऽ जूट बान्हि-बान्हि विदा भेला। जहिना पुरुखक जुटान बचेलालक दरबज्जापर तहिना टोलक बुढ़-बुढ़ानुसक जुटान परती परहक जामुनक गाछक निच्चाँमे। ढेरबा बच्चिया सबहक बैसार पोखैरक मोहारक कनैलिक फूलक गाछक निच्चाँमे..।

सभ अपना-अपनामे मस्त। जेना केकरो घर-आँगनमे कोनो काजे ने होइ, तहिना। ठीठर, डोमन, कुजाइ आ बोतल संगे चारू गोरे ठीठरक दलानपर बैसल। सबहक मन खुशी। आइ धरि जे टोल भानस करैक बरतन, इजोत आ बिछान-ले दुख भोगैत आएल ओ दुख पड़ा गेल। डोमन बोतलकेँ कहलक-

“बोतल भाय, अपनो सबहक ऊपरमे किछु जिम्मा आबि गेल। ओना तँ गामक चीज भेल मुदा मुख रूपसँ अपना टोलक तँ भेबे कएल। अपना सबहक जिम्मा भेल जे एक लगनमे दू या दूसँ बेसी काज नै करब। किएक तँ समान कम अछि। तँए एक लगनमे एक्केटा बिआह करब नीक हएत।”

डोमनक बात सुनि बोतल तँ नइ बाजल मुदा ठीठर कहलकै-

“बेस कहलहक डोमन। जेतबे नुआ रहए तेतबे पएर पसारी। ओहो तँ बचेलालेकेँ धैनवाद दी जे एतबो केलक। कमाइ तँ बहुत लोक

गाममे अछि मुदा केकरो एहेन बुधि किए ने भेल। ‘वन राखे सिंह आ सिंह राखे वन।’ जहिना वेचारा बचेलाल समाजक कल्याण-ले डेग उठौलक तहिना अपनो सभ डेग-मे-डेग मिला कऽ चलह। ओइ वेचाराक परिवार लटपटा गेलै, मसोमाती कारोबार भऽ गेलै मुदा तैयो ओइ मसोमातकेँ धैनवाद दी जे घर थथमारि कऽ रखलक।”

खेनाइ-पीनाइ, काज-उदम जेना सभ बिसैर गेल। चारू गोरे गप-सप्प करिते रहल।

नअ बाजि गेल। बचेलाल, अछेलाल आ जुगाय, तीनियेँ गोरे दरबज्जापर रहल। जुगायकेँ बचेलाल कहलखिन-

“जुगाय भाय, हम स्कूल जाइ छी आ ओइ बेरमे अहाँ दुनू परानी डाक्टर ऐठाम पहुँच जाएब। स्कूलसँ हमहुँ सोझे डाक्टर ऐठाम आएब। जाबे आँखि तकै छी ताबे ई दुनियाँ, जखने आँखि मूनि लेब दुनियाँ बिला जाएत। तँए शरीरक रोगकेँ मजाक नहि बुझि दुश्मन बुझए पड़त। अखन अहाँक उमेरे की भेल हेन तखन तँ गरीबी लोककेँ अछैते औरुदे मारि दइ छइ। अखन अहूँ सभ जाउ, घर परहक काज देखियौ, हमहूँ नहा-खा कऽ स्कूल जाइ छी।”

जुगाय उठि कऽ विदा भेल। अछेलाल बचेलालकेँ कहलकैन-

“बौआ, जहिना भुमकम भेलापर गाम दलमलित भऽ जाइ छै तहिना आइ बुझि पड़ल।”

बचेलालक मन खुशीसँ गदगद रहबे करैन, हँसैत बजला-

“काका, जहिना अहाँ असगर छी तहिना तँ हमहूँ छी। जखन स्कूल चलि जाइ छी तखन दुआर-दरबज्जा भकोभन रहैए तँए एहेन काज ठाढ़ कऽ लेलासँ काजो चलत आ दरबज्जो सून नै रहत। अहूँकेँ एक्केटा घर अछि आ कम्मे घराड़ियो। तँए एत्तै घर लऽ आनू। एकठाम घर भेलासँ दुनू गोरेक रक्षो हएत आ मालो-जालक सेवा हएत।

खुट्टापर जे गाए अछि ओ पुरना नश्लक अछि, जइसँ दूधो कम होइए, तँए एकटा नीक जरसी गाए सेहो कीनि लेब। अपन चीज रहलासँ कोनो बेर-बेगरता नै खगत। एते दिन आन्हर जकाँ छेलौं जइसँ परिवार समाजकेँ नै बुझै छेलौं। आब जखन नजैर खुजल तखन ई सभ बुझए लगलिऐ। हमरे रूपैआसँ बड़का-बड़का उद्योगपति कमा कऽ मोट भेल जाइए आ जे कमाइए ओ बेटे-बेटीक पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ बिआह-दुरागमन करैत-करैत जिनगी समाप्त कऽ लइए। हमरो साइकिल भाइए गेल। जेते समए बँचत ओइमे टोलक बच्चा सभकेँ पढ़ा देबइ। स्कूलमे दरमाहा भेटते अछि तँए केकरोसँ एक्को पाइ नइ लेबै। खेती करैक लूरि नइए मुदा पढ़ै-पढ़बैक लूरि तँ अछि, तँए खेतीक किताब पढ़ि, रेडियो सुनि खेती करैक लूरि अपनो सीखि लेब आ अहूँ सभकेँ नव ढंगक खेतीक जानकारी देब। आब अपनो बुझए लगलौं जे शिक्षक भेनौं जिनगी जीबैक ज्ञान नइ अछि। जहियासँ स्कूल छोड़लौं आ शिक्षक भेलौं तहियासँ बड़ पढ़ै छी तँ साँझू-पहर-के दू-चारि पाँति रामायण वा महाभारत। सेहो पढ़ै नइ छी गाबि लइ छी। ओकरामे जे गूढ़ विषय छिपल छै से बुझबे ने करै छी जइसँ जिनगी अन्हराएलक अन्हराएले रहि जाइए। जाबे सभ मनुखकेँ जिनगी जीबैक ढंग नइ हेतै ताबे जिनगी अपन कोनो माने नै राखत। आब समैयो भऽ गेल, हमहूँ स्कूल जाइ छी, गप्पेमे लगल रहब तँ देरी भऽ जाएत, अहूँ जाउ।”

साढ़े चारि बजे बचेलाल डाक्टर ऐठाम पहुँचल। दुनू परानी जुगाय तइसँ पहिनहि पहुँच चुकल छल। सौंझुका समए भेने डाक्टर ऐठाम रोगियोक बेसी भीड़ नहि।

बचेलालकेँ देख डाक्टर पुछलखिन-

“मास्टर साहैब, अपने देखाएब कि कियो रोगी छैथ?”

जुगायकेँ देखबैत बचेलाल बजला-

“डाक्टर साहैब, हिनके पत्नीकेँ देखबैक अछि।”

डाक्टरक कुरसीक बगलमे एकटा स्टूल राखल छेलै, ओइपर जा जुगायक पत्नी बैसली। डाक्टर आला लगा जाँचि कऽ सभ किछु बुझि बचेलालकेँ कहलखिन-

“तीन-चारि तरहक जाँच करबए पड़त। जाँचक रिपोट देखला पछाइत दबाइ लिखि देबैन। अखन ताबे दू खोराक दबाइ दऽ दइ छिऐन, काल्हि बाजाप्ता लिखि देब। पनरहसँ बीस दिनमे मरीज नीक भऽ जेती।”

डाक्टरक बात सुनि जुगायक मनमे घरवालीक नव जिनगी नाचए लगल। नचबो केना ने करत, वेचारा जुगाय घरवालीक आशा तोड़ि चुकल छल। जहिना पानिक वेगमे भँसैत चुट्टीकेँ खढ़ोक सहारा भेटने जिनगीक आश जगैए, तहिना जुगायोकेँ जगल।

रूमाक दाबल क्रोध मिझाएल नहि, तरे-तर धधैकते रहल। साँझू-पहर बचेलाल टहैल-बुलि कऽ आबि, हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर बैसला। सुमित्रो एली आ जरैत लालटेनकेँ तेज कऽ देलखिन। तखने रूमा चाह नेने आबि बगलमे रखि कऽ विदा हुअ लगली कि बचेलाल कहलकैन-

“देखू, अखन तीनियेँ गोरे छी। तीनू गोरे एक्के परिवारक सेहो छी। परिवार एकटा संस्था होइत, जेकरा अहाँ मन्दिरो, देवस्थानो कहि सकै छिऐ। जहिना पुजेगरी मन्दिरकेँ जीवित रखैले दिन-राति लगल रहैए तहिना परिवारोकेँ जीवित रखैले परिवारक सभकेँ ओइ रूपमे लागि कऽ करए पड़त। परिवारमे एक गोरे मेहनत करी आ दोसर गोरे बैस कऽ रहए चाहबै तँ ओ घर कए दिन ठाढ़ रहत। प्रश्न पजेबा आकि खढ़-बाँसक नइ अछि, प्रश्न अछि मनुखक। जेकर पहिल मापदंड

अछि जे मनुख केहेन हेबा चाही? नजैर उठा कऽ देखबै तँ बुझि पड़त जे अनेको चालि-ढालिक मनुख अछि मुदा से नहि, जखन मनुखक मापदंडकेँ आगूमे रखि विचार करब तखन बुझि पड़त। सभ मनुखक दायित्व होइत जे मनुख बनि जिनगी जीबी। आब कोनो बच्चा नइ छी। जँ कोनो काज वा बात अपने नहि बुझैत होइ तँ दोसरसँ बुझैमे कोनो मान-अपमानक बात नहि होइत।”

जुगायक पत्नीक रोग रसे-रसे कमए लगल। जेना-जेना रोग कमलै तेना-तेना काजो करै दिस शक्ति बढ़लै आ अन्नो दिस रूचि बढ़लै। पत्नीक हालत सुधरैत देख जुगाय दबाइक संग पथ्य लेल गाइक दूध सेहो उठौना कऽ लेलक। आठ दिन बितैत-बितैत धनमाक देह चिष्टा गेल। स्त्रीकेँ टनगर होइत देख जुगायक टुटल आशा जागए लगल।

अखन धरि रूमाक नजैर सासुक प्रति जेहेन हेबा चाही से नै भऽ ‘कियो छी’ छेलैन। सासुक प्रति पुतोहुक केहेन बेवहार हेबा चाही? से जेना रूमा बुझिते नहि आकि बुझियो कऽ अनठबै छेली से तँ ओ जनती। जँ किछु करैले सुमित्रा पुतोहुकेँ अढ़बैत रहथिन तँ सुनिते-देरी रूमा बड़बड़ाए लगैत, करब तँ दूरक बात। देखैत-देखैत सुमित्रा अढ़ौनाइए छोड़ि देलखिन।

मनमे यएह छेलैन जे जँ हम केकरो गारजन नइ छी तँ हमरो गारजन कियो ने अछि। मने-मन बजैत जे सासु-ससुरक प्रति वा बेटा-बेटीक प्रति जे कर्तव्य होइए ओ तँ नीक नहाँति निमाहि चुकल छी तँए कियो जिनगीमे आँगुर उठा कए नै देखा सकैए। पुतोहु अप्पन कर्तव्य करती आ बेटा अपन करत। जँ बेटा-पुतोहु नहियेँ सेवा करत तँ नै करह। जाधैर अन्न खाइ छी, देहमे सक्क अछि ताधैर आँखि निच्चाँ केना कऽ लेब, कोनो कि फेर दोहरा कऽ जन्म लेब। सभ मनुख अपन

कर्मसँ मनुखता प्राप्त करैए आ जेकरा मनुखता प्राप्त भऽ जाइ छै, ओकरा देहक सुख-दुख थोड़े पथभ्रष्ट कऽ सकत। हँ! भऽ सकैए जे पुतोहु हमरा बैधव्य बुझि निःसहाय मानैत होथि। मुदा ई तँ जिनगीक क्रम छिऐ। की सभ महिला पुरुखक अछैते मरै छैथ? एकदम नहि। मरैक कारण भिन्न अछि आ परिवारिक सम्बन्ध भिन्न। भऽ सकैए जे ओ अपन नैहरमे कोनो बैधव्य महिलाकेँ कष्टमय जिनगी देखने होथि वा पुतोहुक बेवहार सहन करैत देखने होथि...।

..एते बात सुमित्राकेँ मनमे अबिते जेना आँखि लाल हुअ लगलैन। निर्भीक स्वरमे बुदबुदेली-

“आन महिला हमरा नै बुझौथ, हम जिनगीकेँ जनै छी तँए जीबैक अप्पन ढंग अछि। पुतोहु जे हमरा माए तुल्य बुझती तँ हमहूँ बेटी तुल्य बुझबैन नइ तँ अपन मनक मालिक जँ छैथ तँ हमहूँ अपना मनक मालिक छी।”

मुदा किछु दिनसँ रूमाक बदलल रूप सुमित्रा देखए लगली। मने-मन तारतम करए लगली जे देखबैले करै छैथ वा जिनगीमे सुधार एलैन। मुदा सुमित्राक मन पुतोहुक दोषकेँ ओते महत नै दऽ बेटाकेँ बेसी बुझैत रहैन। किएक तँ आन घरक मनुख आन घरमे आबि एते केना बढ़ि सकत। बढ़ैक तँ कारण होइ छइ। ओना, कारणो तँ अनेक होइए मुदा सभसँ महतपूर्ण कारण अछि पुरुखक दुर्बलता। जे पुरुख हाथी सन अबोध जानवरकेँ बसमे कऽ लैत, की ओकरा बुते एकटा सबोध स्त्रीकेँ मनुख बनौल नइ हेतइ..?

किछु दिन पहिने तक रूमा, आँगनमे सभसँ पाछू सुति कऽ उठै छेली जे आब सभसँ पहिने उठए लगली। उठि कऽ बिनु मुँह-कान धोनहि आँगन-घर बहारि, चीनमार नीपि आ बरतन-बासन धोइ कऽ अपन क्रिया-कर्ममे लगि जाइ छैथ। तेतबे नहि, सासुकेँ माए तुल्य

सेहो बुझए लगली। माने माइक प्रति पुतोहुक जे कर्तव्य होइत ओ कर्तव्य पूर्ति हेतु रूमा जे अपने बुझैत से करए लगली। जे काज नहि बुझैत ओ सासुसँ सीखि-सीखि करए लगली। ..सुमित्रो, पुतोहुक बदलैत रूप देख, बुझा-बुझा कहए लगलखिन-

“कनियाँ, आइ धरिक जे अनुभव हमरा अछि ओ सीखि जिनगीमे उतारू तैसंग नैहरोसँ जे सीखि कऽ आएल छी तहूमे नीक-अधलापर नजैर रखैत विचारि-विचारि अधलाकेँ छोड़ि नीककेँ पकैड़ चलू। अखन धरिक जे परिवारक बेवहार रहल आ आइ जे समयानुकूल बदलाउ आबि रहल अछि ओइपर धियान दऽ आगू बढ़ू, तखने समैक संग चलि सकब। जे कियो ऐसँ अलग भऽ जीबए चाहत ओकरे मन सदिछन उत्तेजित रहतै आ चैन मनसँ पड़ाएल रहतै।”

सासुक विचारकेँ रूमा अँगीकार करए लगली।

पाबैनक दिन। स्कूल बन्न। मुदा बचेलाल पहिलुका जकाँ नहि, चारि बजे उठि गेला। उठि कऽ अछेलालकेँ शोर पाड़लैन। जाबे अछेलाल आबैथ तइसँ पहिने सुमित्रो दरबज्जापर आबि गेली। तीनू गोरे गप-सप्प करए लगला। बचेलाल अछेलालकेँ पुछलकैन-

“काका, आब तँ खेती-वाड़ीक काज असानीसँ करैत हएब?”

बचेलालक बात सुनि अछेलाल बजला-

“बौआ, ऐठामक गिरहस्तक जे रूपरेखा अछि ओ नीक कम आ अधला बेसी अछि। गिरहस्तक जिनगी आ खेतीक ढाँचा बदलैले बहुत किछु करए पड़त। जाबे से नै करब ताबे जे चाहै छी से नै हएत। ओना, हम सभ बात बुझ्तो नहियेँ छी। अखन तक हम बोनिहार रहलौं तँए गिरहस्ती जिनगीकेँ नीक-नहाँति केना बुझब। मुदा भौजी तँ नैहरसँ ऐठाम धरि गिरहस्ते परिवारमे रहबो केली आ बहुत दिन गिरहस्तियो केलैन तँए हिनका बेसी अनुभव छैन।”

अछेलालक बात सुनि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली- अछेलाल तँ ठीके कहलक। मुदा हमहूँ तँ आब बुढ़ भेलौं तँए बहुत किछु बिसैरियो गेलौं किएक तँ काजो बहुत छुटि गेल आ छोड़ियो देलौं। मुदा बिनु माटिपर ठाढ़ भेने ने मनुख रस्तापर औत आ ने परिवार। जाबे मनुख जमीनपर ठाढ़ नै हएत ताबे आगू-मुहें केना ससरत। हँ, ई भऽ सकैए जे हवा-बिहाड़िमे उड़ि कियो बहुत आगू चलि जाए, मुदा ओ अनिश्चित जिनगी हेतइ? भऽ सकैए एक पीढ़ी बहुत आगू चलि जाएत मुदा ऐगला पीढ़ी ओइसँ आगू बढ़त कि पाछू हएत, ई कहब तँ कठिन अछि। किएक तँ जेते ऊपर जे चलि जाएत ओ ओतइ लसैक जाएत। ने ओकरा जमीन पकड़ैक बोध हेतै आ ने आगू बढ़ैक रस्ता भेटतै। किएक तँ दू विचारधारा आ दू रस्ताक संघर्ष चलैए आ आगू आरो मजगूत भऽ चलत। तँए जाधैर दुनू रस्ताकेँ बिनु बुझने जँ कियो आँखि मूनि चलए चाहत तँ ओ निश्चित लटपटेबे करत। मुदा प्रश्न अछि जहिना मनुख समैक संग चलैत आएल तहिना चलैक। जे कठिन अछि...।

एते बात मनमे अबिते सुमित्रा बाजए लगली-

“बौआ, कोनो परिवार ताबे तक नीक नहाँति नै चलि सकैए जाबे तक परिवारक सभ आदमी रस्ता धऽ नै चलत। अपने परिवार छह, तूँ भरि दिन अपसियाँत रहै छह मुदा पुतोहुजनी-ले धैनसन। जहिना ओ भरि दिन काजसँ छिटकैत रहै छैथ तहिना जँ तोहूँ छोड़ि दहक तखन घरक दशा की हेतह? मुदा जहिना तूँ नोकरी करि कमा अनै छह तहिना जँ ओहो घरेपर काज करैथ तँ घरक उन्नैत हेतह की नहि। तँए परिवारमे जे जेहेन रहए ओकरा ओही रूपमे मेहनत करैक चाही। परिवारक जे गारजन होथि हुनको आदमी देख काज ठाढ़ करक चाहिऐन जइसँ घरक आमदनियोँ बढ़त आ बेकारियो भागत। अहिना देखै छी बाढ़ि-रौदीक दुआरे सभ परिवार निच्चे-मुहें जा रहल

अछि। मुदा बारह मासक सालमे चारि मास बरसातक होइए वएह चारि मास सालकेँ संचालन करैत। तज्जुब लगैए जे बरसातक चारि मास छोड़ि शेष आठ मासक कोनो महत्ते ने अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि जे ऐ आठ मास-ले गिरहस्त किछु सोचबे ने करैए। खेतीक मुख्य चीज पानि छी। जेकरा दिस लोक तकबे ने करैए। अगर खेत पटबैक उपाए लोक कऽ लिअए तँ जहिना उपजामे बढ़ोतरी हएत तहिना फसिलोमे। जखन कियो पानि-खाद आ नीक बीआ नै बुझै छल तखनो गिरहस्ती चलै छल। अपन खेत एक बध्धु छह, एकठाम नै छह मुदा थोड़े हटि-हटि कऽ तँ छेबे करह। अगर बोरिंग गड़ा पटबैक जोगार कऽ लएह तँ की बुझि पड़ै छह जे जहिना उपजा अखन खेतसँ अनै छी तहिना औत? जहिना चौबिसे घन्टाक दिन रातिमे देखै छहक जे रातिमे केहेन अन्हार रहैए आ दिन होइते केहेन इजोत भऽ जाइ छै, तहिना सभ चीजक अछि। अखन दू परानी तूँ छह आ दू परानी अछेलालो अछि। चारि गोरे तँ समकस काज करैबला छह मुदा काज केते होइ छह? ई हिसाब जोड़ि कऽ काज शुरू करए पड़तह। आ ई नहि जे अनाड़ी-धुनाड़ी जकाँ कहबह ‘कोन काज ठाढ़ करब?’

आँखिक सोझहामे छह जे खेतमे पानिक सुविधा बनौने, खेतमे सालो भरि फसिल लहलहेतह। खाद देबहक, नीक बीआ रहतह तँ तेते उपजा हेतह जे घरमे रखैक जगह नै रहतह। नारो-पात तेते हेतह जे दूटा चारिटा माल हराएले रहतह। माल पोसबह तँ दुधो खेबह आ बेसी हेतह तँ बेचबो करबह। जेते घरक आमदनी बढ़तह तेते ने आगू-मुहें ससरबह।”

माइक बात सुनि बचेलालकेँ भक खुजलैन। भक खुजिते माएकेँ कहलखिन-

“माए, आइ धरि ऐ दिस नजैरे ने गेल छल। मुदा आब देखै छी

काज केनिहार लोक हँसी-खुशीसँ जिनगी बिता सेकैए। काका, सभसँ पहिने एकटा बोरिंग आ दमकलक जोगार करैक अछि। आइ तँ छुट्टी नइ अछि। परसू रवि छी। दुनू गोरे बजार चलि पहिने बुझि लेब। तखन जे जेना गर लागत से करब।”

अछेलाल-

“बौआ, बैंकोबला सभ बोरिंग दमकल दइ छइ। ओकरा साले-साल बिआज लगा रूपैआ दैत जेबै तैयो भऽ जाएत।”

बचेलाल-

“जखन अपने एते दरमाहा अछि तखन कर्जा किए लेब। अखन जे रूपैआ जमा छल से सठि गेल। मुदा ऐगला सोमे दिन तँ दस हजार रूपैआ भेटत। जँए एते दिन बीतल तँए आठ दिन आरो बीतह। मुदा बिनु उपारजनक साधन बनौने तँ बेकारी नइ भागत।”

भोरे सुमित्रा उठि दलानपर आबि बाढ़ैन लऽ दरबज्जा बाहरैक ओरियान करितै रहैथ आकि अछेलालो एला। अछेलालक चुनौटीमे चुन नहि, तँए चुन लिअ एला। आन दिन अछेलाल निन टुटिते ओछाइनपर सँ उठि, लोटामे रौतुके राखल पानि लऽ दू बेर कुर्रा करै छला आ जे पानि बँचैत रहैन ओ पीब तमाकुल खा पराती गबै छला। मुदा आइ चुनक दुआरे पराती नै गाबि चुन-ले एला। आँगनसँ चुन आनि कऽ सुमित्रा देलखिन। चुन लऽ अछेलाल तमाकुल चुनबए लगला। तेही बीच दुनू गोरेमे गप-सप्प सेहो हुअ लगलैन। दुनू गोरेक गप-सप्पकेँ अकानि बचेलाल सेहो लगमे आबि कऽ ठाढ़ भेला। सुमित्रा अछेलालकेँ कहैत रहथिन-

“बौआ, जहिया अपन घर भरल-पूरल छल साउसो-ससुर जीबै छला। तखन हम जुआन छेलौं। गामक चुनल गीतहारि रही। गाममे

जेतए केतौ कोनो काज होइ तँ हमरा हकार अबिते छल। हमहूँ राति-दिन किछु बुझबे ने करिऐ। अपन अँगना-घरक काज सम्हारि हकार पुरए जाइ छेलौं। हमर नैहर पचही परगनामे पड़ैए। ओइठामक गीत-नाद, बोली-वाणी, चालि-ढालि अल्लापुर परगनासँ नीक अछि। मुदा अपना गाममे बेसी अल्लेपुरक सुआसिन बसैए, गोटि-पँगरा भौरो परगनाक अछि। पचही आ भौरक तँ बहुत किछु मिलबो-जुलबो करै छै मुदा अल्लापुरक दोसरे रंगक छइ। हँ, एकटा बात जरूर छै जे अल्लापुरक सुआसिन बेसी कमासुत होइए। मरदे जकाँ साड़ीक फाँड़ बान्हि लेत आ भरि-भरि दिन खेते-पथारमे काज करैत रहत। रौद-बसात किछु बुझबे ने करत। एक बेरक गप कहै छी। नैहरमे, हमरा घरे लग पण्डित कक्काक घर सेहो छैन। पण्डित काका इलाकाक सभ संस्कृत विद्यालयमे पढ़ौनी केने छला। ओ तेते निअम-निष्ठाबला छेलखिन जे कोनो विद्यालयमे शिक्षक सभसँ पटबे ने करैन। जाबे कियो टोकैन नहि ताबे ओहो केकरो नै टोकै छेलखिन आ ने बिनु काजे केकरो ऐठाम जाइ छेलखिन। ओना हुनका कखनो निचेनसँ बैसल नै देखिऐन। सदिछन कोनो-ने-कोनो काजमे लगले रहै छला। एक दिन पछबरिया इलाकाक एकटा पण्डित एलखिन। ओहो बड़ भारी पण्डित। भिनसरे दुनू गोरे पूजा-पाठ करि कऽ दू-दू छिमैर केरा खेलैन आ शास्त्रार्थ करैले बैस गेला। पण्डित काका की कहथिन आ ओ कि कहैन से आन कियो बुझबे ने करैत। गप-सप्पमे दुनू अपस्याँत।

बड़ीकालक पछाइत पण्डित काका तीन बेर थुक माटिपर फेक देलखिन। ओइ पछबरिया पण्डितक मुँह कनै-कनै सन भऽ गेलैन। दुपहरमे खूब नीक नहाँति खुआ-पीआ कऽ बेरूपहरमे धोती-कुरता-चद्दैर-पाग दऽ अरियाति कऽ विदा केलखिन। ..हँ कहै छेलौं- सौंसे गाम हकार पुरै छेलौं...। जखन अपने मरि गेला तहियासँ हकार पूरब

छोड़ि देलौं। अखुनका आ पहिलुका लोककें मिलबै छी तँ अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ैए। हमरे दूटा बच्चा भेल, ने एकोगो सुइआ लेलौं आ ने एकोटा गोटी खेलौं, तैयो कोनो रोग कहाँ दबलक। पहिल सन्तानक बेरमे, सासु हाटपर सँ सठौरा कीनि अनलैन, सएह खेलौं। अखन देखै छी जे हाट-बजार घुमै बेरमे, सिनेमा-सरकस देखै बेरमे, मेला-ठेला घुमै बेरमे निरोग रहैए मुदा काजक बेरमे जेते दुनियाँमे रोग छै से सभटा ओकरे दाबि दइ छइ। ..जाइ जाउ आब काजोक बेर भऽ गेल।”

भिनसुरका चाह पीब, सभ दिन बचेलाल टोलक बच्चा सभकें पढ़बए लगला। जाबे स्कूल जाइक समए होइत ताबे धरि पढ़बैत रहथिन। केकरोसँ एक्को पाइ नै लैथ। टोलक सभ धिया-पुता पढ़ैमे सुढ़िया गेल जइसँ बचेलालक अपनो प्रतिष्ठा बढ़ए लगलैन। बचेलालक काज देख सुमित्रा मने-मन खुशी होइत रहैथ।

◌

शब्द संख्या : 3127

एगारह

शिवकुमार आ रामनाथ फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलक। बिर्ड़ो जकाँ रिजल्टक प्रचार भऽ गेल मुदा ने स्कूलमे रिजल्ट आएल आ ने अपने आँखियें दुनूमेसँ कियो अखबारमे देखलक। ..शिवकुमार बचेलालक बेटा आ रामनाथ अछेलालक। रिजल्टक समाचार तँ सबहक कानमे पहुँच गेलै मुदा बिनु अपने देखने सोलहन्नी बिसवास केना कएल जाएत। ..शिवकुमारकें शोर पाड़ि बचेलाल कहलखिन-

“बौआ, आन दिन तँ आठे बजे अखबार दऽ जाइ छल मुदा आइ एबे ने कएल। तँए झंझारपुर जा कऽ अखबार कीनने आबह।”

दुनू गोरे–शिवकुमार आ रामनाथ साइकिलसँ झंझारपुर अखबार आनए विदा भेल। ..बचेलाल मने-मन तारतम करए लगला जे बिनु रिजल्ट निकलने लोक केना बुझलक। जे अखबारबला सभ दिन अखबार बेचए अबै छल ओकर अखबार रस्तेमे विद्यार्थियो आ गारजनो कीनि नेने हएत। तँए भरिसक अखबार नै बँचलै जे अपन गहिंकीकें दइत...।

स्कूलमे सेहो विद्यार्थी सभ रिजल्ट देखैले पहुँचए लगल। मुदा हेडमास्टर अखबारसँ अपन रजिष्टरमे लाल रंगक पेनसँ, प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी आ तृतीय श्रेणीक चेन्ह लगा बहरामे रिजल्टक कटिंगकें टाँगि देलखिन। ..अछेलाल मने-मन खुशी होइत रहैथ। खुशीक

कारण रहैन जे एकटा मुरुखक बेटा, जे सभ तरहें विपन्नताक जिनगी जीबैत आएल से पास केलक। सुमित्राक मन ऐ दुआरे खुशी जे जेकरा जन्मसँ लऽ कऽ अखन धरि सेवा केलौं ओ आइ एक सीढ़ी पार केलक। रूमा तँ खुलि कऽ नइ बजैथ मुदा मनमे अपन बेटाकें मैट्रिक पास केने ओते खुशी नइ होइत रहैन जेते रामनाथक पास केने दुख।

रामनाथ आ शिवकुमार ओइ बुक स्टालपर पहुँचल जे अखबारक होलसेलर अछि। ओहूठाम सभ अखबार सठि गेल छेलइ। दुनू गोरे अचताइत-पचताइत बजार गेल। बजारमे एकटा दोकानमे अखबार देखलक। शिवकुमार ससैर कऽ दोकानदार लग जा बाजल-

“अहाँ तँ अखबार पढ़ि लेलौं। हमरा एकर काज अछि। ऐमे मैट्रिकक रिजल्ट निकलल छै तँए हमरा दऽ दिअ। जे दाम अखबारक छै ओ हम दऽ दइ छी।”

दोकानदार राजी भऽ गेला। मुदा आँखि लाल करैत बेटा कहलकैन-

“दू रूपैआमे अखबार नै दियौ। आइ एकर दाम पचास रूपैआ हेतइ।”

बेटाक बात सुनि पिता जवाब देलखिन-

“बौआ, कमाइ-ले तँ एतेटा दोकान छहे, तखन एहेन काज किए करबह?”

तरैंग कऽ बेटा कहलकैन-

“बाबू, जँ अहाँ एहेन दयालु छी तँ लौका-तुम्मा लऽ कऽ वृन्दावन चलि जाउ।”

‘लौका-तुम्मा’ सुनि पिताकें नरसिंह तेज भऽ गेलैन। बाघ जकाँ झपटैत बेटाकें कहलखिन-

“जिनगी भरिक कमाइक ई दोकान छी। ऐ चारि कोसीमे हमरा सभ इमानदार बनियाँ बुझैए तेकरा हम माटिमे मिला देब।”

गद्दीपर सँ अखबार उठा, शिवकुमारक हाथमे दैत बजला-

“बच्चा लऽ जाउ, एक्को पाइ दाम नइ लेब।”

अखबार लऽ दुनू गोरे अपन-अपन रिजल्ट देखलक। रिजल्ट देख दुनूक हृदैमे खुशीक हिलकोर उठए लगलै। साइकिल पकैड़ विदा भेल। रस्तामे होइ जे हवाइ जहाज जकाँ उड़ि कऽ घर पहुँची। दुइएटा विद्यार्थीकें प्रथम श्रेणी भेल छेलइ..।

एकटा शिक्षक अखबार नेने बचेलाल ऐठाम आबि दुनू गोरेकें कहैले एलखिन। ओइ शिक्षकक अपनत्व देख बचेलालक मनमे उठलैन, अखनो नीक लोकक कमी नइ अछि। मास्टर साहैब जलखै कऽ चाह पिबते रहैथ आकि दुनू विद्यार्थी आएल। दुनू गोरे गुरुदेवकें प्रणाम केलकैन।”

सुमित्राक मन गदगद। बचेलाल लग आबि बजली-

“बौआ मास्टरो साहैब छैथे। जेते बच्चाकें घरपर पढ़बै छह सभकें नोत दऽ दहक। जहिना तोहर बेटा तहिना हमरो तँ पोते छी, खुशनामामे भोज कए कऽ सभकें खुआबह।”

बीस बरख पहिने, ग्रामीणक सहयोगसँ एकटा हाई स्कूल खुजल। तीन-चारि साल धरि मात्र दुइए साए विद्यार्थी स्कूलमे छल। शिक्षको सभ पचासे रूपैआ दरमाहापर शिक्षण करैथ। देहातमे पढ़लो-लिखलक संख्या कम्मे रहइ। मुदा सभ शिक्षकक मनमे ई धारणा बनल जे इलाकामे शिक्षाक प्रसार हुअए। तँए किछु कष्ट उठेनौं जँ स्कूल चलै तँ किए ने चलत। सभ शिक्षक अपन-अपन घरेसँ अबैत-जाइत स्कूल चलबैत रहला।

लगमे स्कूल भेने शिवकुमारो आ रामनाथो नाओं लिखौलक।

स्कूलक पढ़ाइयो नीक। अठमेसँ शिवकुमार फस्ट करैत आ रामनाथ सेकेण्ड। जे मैट्रिकक टेस्ट परीछा धरि करैत रहल। शिवकुमार साइंस रखने आ रामनाथ आर्ट। नवमा धरि बचेलाल दुनू गोरेकेँ घरोपर खूब मेहनत करबथिन। पढ़ैक रस्ता दुनू सीखि लेलक। हिसाबमे जेहने तेज शिवकुमार तेहने तेज भूगोलमे रामनाथ। वार्षिक परीक्षामे साए-क-साए अँक शिवकुमार हिसाबमे अनैत तहिना दू-चारि नम्बर कम रामनाथ भूगोलमे अनैत। सालमे एक्को दिन स्कूल दुनू गोरे नागा नै करैत। दुनू गोरे स्कूल जाइकाल पँच-पँचटा अंग्रेजी शब्द अपन तरहत्थीमे लिखि रटैत जाइत। स्कूल पहुँचैत-पहुँचैत दुनू, दुनूकेँ सुना दइत। स्कूल लग पहुँच दुनू गोरे अपन तरहत्थी कलपर जा धोइ लइत। फेर छुट्टी भेलापर पँच-पँचटा शब्द लिखि घरपर अबैत-अबैत यादि कऽ लइत।

ओना तँ जाड़क मासमे दिनो छोट होइत मुदा जाड़क कारणे विद्यार्थी बिलम्मोसँ स्कूल पहुँचैत तैयो हेडमास्टर साहैब, समैकेँ बुझि हाजरी बना दइ छेलखिन। ई सोचि जे कनी बिलम्मोसँ तँ विद्यार्थी स्कूल अबैए, तँए विद्यार्थीक बीच काफी प्रतिष्ठा रहैन। शिक्षको सभकेँ ओ बरबैर कहैत रहै छेलखिन- 'पढ़बैसँ बेसी छात्रमे पढ़ैक जिज्ञासा पैदा करू। जइ छात्रमे पढ़ैक जिज्ञासा जगि जाएत ओ निश्चित पढ़बे करत। जइसँ हमरो-अहाँकेँ पढ़बैमे सहोलियत हएत।' ..जइ विद्यार्थीकेँ किताब नै रहै वा देहपर मैल-कुचैल कपड़ा देखथिन, ओकरा ऑफिसमे बजा परिवारक दशा पुछि, मदैत सेहो करै छेलखिन।

ओना हेडमास्टर सुखी सम्पन्न परिवारक मुदा जहिना गरीबो मनुखक देहमे धनिकक बुधि धोंसिया जाइत तहिना हुनका सुभ्यस्त रहनौं गरीबक दया देहमे घोंसियाएल रहैन।

स्कूलमे रिजल्टक कॉपी आ मार्कसीट आबि गेल। सभ विद्यार्थी अपन-अपन मार्क-सीट आनए स्कूल जाए लगल। शिवकुमारो आ रामनाथो गेल। दुनू गोरेक नम्बर, एक टकसँ हेडमास्टर देख दुनू गोरेकेँ पुछलखिन-

"बौआ, आगू नाओं लिखेबह किने। अगर जँ कोनो दिक्कत हुअ तँ कहिहह। अखन मार्कसीट नेने जा काल्हि दुनू गोरे अपन-अपन पिताकेँ बजेने अबिहौन।"

दुनू गोरे अपन-अपन अंक पत्र लऽ विदा भेल।

हेडमास्टर–दिनेशबाबूक योगदान स्कूल बनबैमे अग्रगण्य छेलैन। ओ अपनाकेँ सिरिफ शिक्षके नै बुझैथ। आजुक शिक्षक जकाँ सदिछन दरमहेपर गिद्ध-दृष्टि नै राखैथ। ओ सोचैथ जे जहिना अपन बेटा-बेटी तहिना छात्र-छात्रा। माए-बाप बेटा-बेटीकेँ जन्म दैत, पालैत-पोसैत मुदा गुरु तँ ओ ब्रह्मस्वरूप कुम्हार छैथ जे मनुखकेँ चाकपर गढ़ैत। अपन परिवारोसँ दिनेशबाबू बेहद खुशी रहै छैथ। दिनेशबाबूक पिता लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक छेलखिन। हुनकेँ पढ़ौल आ रस्ता देखौल दिनेशबाबू। जइसँ बी.ए. पास कऽ हाइ स्कलमे शिक्षक बनला। जखन दिनेशबाबूक बेटा–शुशील सेहो एम.ए. पास कऽ कौलेजमे प्राध्यापक भेलखिन, तखन दुनू परानीक हृदए ओहन सरोवर जकाँ बनि गेलैन जइमे हजारो कमल फुलाइत रहैए आ रंग-बिरंगक चिड़ै-चुनमुनी ओइमे विहार करैत रहैए। जहियासँ दिनेशबाबूक बेटा सुनील नोकरी शुरू केलैन तहिये-सँ ओ अपन दरमाहा गरीब विद्यार्थीकेँ देमए लगलखिन।

बचेलाल आ अछेलाल दुनू गोरे दिनेशबाबूसँ भेँट करए विदा भेला। दुनू गोरे शिवकुमारो आ रामनाथोकेँ संग कऽ लेलैन। दिनेशबाबू सेहो दुनू गोरेक प्रतीक्षेमे रहैथ। दुनू गोरे दिनेशबाबूकेँ

प्रणाम कऽ आफिसमे बैसला। बचेलाल पुछलखिन-

"शिवकुमार आ रामनाथक माध्यमसँ अपने बजेलौं?"

दिनेशबाबू-

"हँ। बजबैक कारण अछि जे दुनू विद्यार्थी पढ़ैबला अछि तँए दुनूकेँ नाओं बढ़ियाँ कौलेजमे लिखा दियौ।"

"विचार अपनो अछि। स्कूलक सभ कागजात भेटलापर जेते जल्दी भऽ सकत ओते जल्दी नाओं लिखा देबइ।"

"स्कूलक सभ कागजात आइए दऽ दइ छी। जँ सम्हैर जाए तँ काल्हिए नाओं लिखा दियौ, नइ तँ परसू।"

"हमहूँ तँ प्राइमरी स्कूलमे काज करै छी। काल्हि जा कऽ परसूका छुट्टी लऽ लेब आ परसू जा कऽ नाओं लिखा आएब।"

दिनेशबाबू किरानीकेँ बजा सभ काज कऽ देलखिन। सभ कियो विदा भऽ गेला।

दोसर दिन बचेलाल स्कूल जा छुट्टीक आवेदन दऽ एला। साँझू-पहर सुमित्राकेँ कहलखिन-

"माए, काल्हि शिवकुमारो आ रामनाथोक नाओं लिखबैले मधुबनी जाएब।"

कौलेजमे पोताक नाओं लिखाएब सुनि सुमित्रा कहए लगली-

"बच्चा, शिवकुमार तोहर बेटा छिअ मुदा पोता तँ हमरो छी। रामनाथोकेँ जनमेसँ सेवा करैत एलौं तँए ओकरो मदैत करब उचित भऽ जाइ छह। वेचारा अछेलाल मुरुख अछि मुदा समांग जकाँ तँ ओहो अछि। जब तूँ मैट्रिक पास केलह तब हमरो मनमे छेलए जे तोरा कौलेजमे नाओं लिखा दिअ। मुदा घरक जरजर हालत देख मनक बात मनेमे रहि गेल। ओना तइले बहुत दुखो ने भेल। किएक तँ दुख तखन

होइत जखन पिता हाइ स्कूल धरि पढ़ने रहितथुन। हम अबला रहितो बहुत केलियह। मुदा आइ तोरा-ले अनिवार्य भऽ जाइ छह जे कम-सँ-कम बी.ए. तक बेटाकेँ पढ़ा दहक। ओना रामनाथ-ले से भार नै छह मुदा ओकरो तँ बेटे बनौने छी। काल्हि जखन मधुबनी जेबह तँ अछेलालोकेँ संग कऽ लिहह। किएक तँ एहेन-एहेन काज लोककेँ जिनगी भरि मन रहै छै जे सिरिफ अछेलालेटाकेँ नै रामनाथोकेँ मन रहतै।"

निर्मलीसँ जयनगर जाइवाली गाड़ी पाँचे बजे निर्मलीसँ खुजैए तँए अपन स्टेशन–तमुरिया साढ़े पाँच तक पहुँच जाइक अछि। ई बात बचेलाल मने-मन सोचैत रहैथ। साढ़े नअ बजे मधुबनी गाड़ी पहुँच जाइए। दस बजे कौलेजक ऑफिसो खुजैत हएत तँए दस बजे ऑफिस पहुँच शुरूहेमे अपन काज केलासँ साढ़े तीन बजे धरि स्टेशन चलि आएब। जइसँ वएह गाड़ी, जयनगर-निर्मलीवाली फेर पकैड़ लेब आ सबेर-सकाल घरपर चलि आएब। जाइकालमे गाड़ीसँ उतैर टीशने कातक होटलमे सभ खा लेब आ रिक्शा पकैड़ चलि जाएब। ई बात बचेलाल विद्यार्थियो आ अछेलालोकेँ कहि देलखिन।

साढ़े चारिये बजे बचेलाल उठि तीनू गोरेकेँ उठा देलखिन। पर-पैखानासँ आबि स्नानो कऽ लेलैन। अछेलालो तैयार भऽ गेला। एमहर शिवकुमारो आ रामनाथो नहा कऽ तैयार भऽ गेल। पौने पाँच बजे गाड़ी पकड़ैले चारू गोरे विदा भेला। छअ बजे गाड़ी तमुरिया पहुँच गेल। चारू गोरेक टिकट शिवकुमार कटा नेने छल। सभ कियो गाड़ीमे बैस गेला। बचेलाल छोड़ि कियो ने मधुबनी देखने। तँए तीनूक मनमे रंग-बिरंगक बात अबै छल। मने-मन बचेलाल अपन काजक हिसाब जोड़ैथ जे कोन काज पहिने आ कोन काज पाछू करब। ..तहिना अछेलालो मनमे उठैत रहैन जे गाममे झगड़ा-झंझट कऽ मधुबनीए आबि लोक केस-फौदारी लड़ैए। आइ हमहूँ कोट-कचहरी देख लेब,

जहलो देखबै जे केहेन होइ छइ। फेर कहिया जाएब कहिया नहि तँए जब मधबन्नी जाइये रहल छी तँ सभ देखने आएब। साढ़े नअ बजे गाड़ी मधुबनी पहुँच गेल। गाड़ीसँ उतैर चारू गोरे विदा भेला। टीशने कातक होटलमे चारू गोरे खेनाइ खेलैन आ थोड़ेकालक पछाइत रिक्शा पकैड़ आर.के. कौलेज विदा भेला।

ऑफिस जा अपन सभ कागज-पत्र किरानीकेँ देलखिन। सभ कागज-पत्र देख किरानी लगले नाओं लिखि रसीद दऽ देलकैन। बचेलाल रूपैआ निकालि दऽ देलखिन। किताबक सूची दैत किरानी कहलकैन जे पनरह तारीखसँ पढ़ौनी चलत। एगारहे बजे सभ कौलेजसँ विदा भऽ गेला। बजार आबि किताबक दोकानपर पहुँचला।

दोकानपर जाइते किताबक सूची दोकानदारकेँ दऽ सभ किताब दिअ कहलखिन। बचेलालकेँ दोकानक भीतरे बैसा दोकानदार एक-एक विषयक तीन-तीन-चरि-चरि लेखकक किताब निकालि आगूमे देमए लगलैन। मने-मन बचेलाल सोचैथ, ओते तँ समए नइ अछि जे पढ़ि-पढ़ि कऽ किताब चुनब तँए सभ किताबक संस्करण देख-देख छँटियबए लगला। जइ विषयक दूटा किताब पसिन होनि ओ दुनू लऽ लैथ। कोर्सक किताब कीनि एकटा हिन्दी शब्दकोष आ एकटा अंग्रजी शब्दकोष सेहो कीनलैन। सभ विषय-ले कॉपी सेहो कीनलैन। बचेलालक विचार देख दोकानदार मने-मन खुशी होइत। ओ नोकरकेँ चाह-पान अनैले पठौलक। चाह पीबैत बचेलालकेँ दोकानदार पुछलकैन-

"अपनेक की जीविका अछि?"

मने-मन बचेलाल सोचए लगला जे हमरा जीविकासँ दोकानदारकेँ कोन मतलब छइ। मुदा जब पुछलक तँ नहियोँ कहब नीक नहि। मुस्कियाइत बचेलाल बजला-

"लोअर प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक छी।"

शिक्षकक नाओं सुनि दोकानदार एकटा `अष्टावक्र गीता' ओहिना दैत कहलकैन-

"जहिया मधुबनी आबी तहिया हमरो भेँट जरूर दी।"

'बड़बढ़ियाँ।' कहि बचेलाल किताबक दाम दऽ चारू गोरे विदा भेला। किताबक एकटा थाक शिवकुमारक हाथमे आ एकटा रामनाथक हाथमे आ अखबारमे चौपेत कऽ बान्हल गीता बचेलालक हाथमे। बचेलालक मनमे उठलैन जे जखन आएले छी आ अढ़ाइ-तीन घन्टा समैयो ऐछे तँ डेरो किए ने ठीक काइए ली। अखन अपनो छी। जँ डेरा ठीक भेल रहत तँ फेर नइ आबए पड़त।

नवका-नवका, मोट-मोट किताब देख शिवकुमार मने-मन सोचैत जे सभ विषयक कॉपियो भाइए गेल, खूब मेहनतसँ पढ़ब। दस-दसटा अंग्रेजी आ हिन्दी शब्द सभ दिन रटब। ओना सभ विषयक अपन-अपन शब्द होइ छै ओहो यादि करए पड़त। जाबे कौलेज खुजत ताबे सएह सभ शब्द सीखि लेब जइसँ क्लासमे बुझैमे परेशानी नै हएत। सभ विषय पढ़ैले समए बाँटि लेब नइ तँ एकभग्गू पढ़ब भऽ जाएत। महत तँ सभ विषयक छै आ पासो तँ सभमे करए पड़त, तखने ने पासो हएब। नइ तँ कोनो विषयमे खूब नम्बर औत आ कोनोमे फेल भऽ जाएब तँए पहिने सभ विषयक तैयारी ओइ रूपे करए पड़त जे पास नम्बर सभ विषयमे आबए। तखन ने बेसी नम्बर आ नीक डिवीजन औत...।

रामनाथ व्याकरणक किताब खोलि कऽ दोकानेपर देखने छल। जइमे वएह सभ देखलक जे हाइयो स्कूलमे पढ़ने छल, थोड़े विस्तारसँ अछि, तँए कम्मे नव चीज पढ़ए पड़त। तँए मने-मन खुशी होइत।

चारू गोरे आगू-पाछू स्टेशन दिस अबै छला आकि एक गोरे

आगूमे साइकिल रोकि बचेलालकेँ प्रणाम केलकैन। मुड़ी निच्चाँ केने बचेलाल चलैत रहैथ। प्रणाम सुनि मुँह उठा कऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणामक जवाब देलखिन। प्रणामक जवाब तँ दऽ देलखिन मुदा चिन्हलखिन नहि। तँए ओइ आदमी दिस तकैत जेना किछु मन पाड़ए लगला। ओ आदमी बुझि गेल जे भरिसक नै चिन्हलैन। धाँइ-दे ओ कहलकैन-

"मास्सैब, हम रमेसरा छी। ऐठाम कोओपरेटिव बैंकमे नोकरी करै छी।"

रमेसराक बात सुनिते बचेलालकेँ धक-दे मन पड़लैन जे ई तँ पढ़ौल विद्यार्थी छी। मुस्कियाइत बजला-

"बौआ, चेहरा देख तोरा चिन्हबे ने केलियह। एक चेराक देह छेलह जे अखन हाथी जकाँ भऽ गेलह। परिवारो एतै रखै छह?"

बिहुँसैत रमेसरा कहलकैन-

"अपन घर बना नेने छी। आइ एतै पहुँनाइ करए पड़त। हमर सौभाग्य जे अहाँ एतए आएल छी। हमहूँ गाम कम्मे जाइ छी। तोहूमे धड़फड़ाएल गेलौं आ धड़फड़ाएले एलौं। तँए किनको भेँटो-घाँट करए नै जा होइए।"

बचेलाल-

"बाल-बच्चा कएटा छह?"

रमेसरा-

"दूटा अछि। दू परानी अपने छी। चारि गोरेक परिवार अछि। अपने केमहर-केमहर आएल छलिऐ?"

"दुनू बच्चाकेँ कौलेजमे नाओं लिखबए आएल छेलौं। आब रहैले डेराक भाँज लगबैक अछि।"

जँ नजैरपर केतौ एकान्त डेरा बुझल हुअ तँ ठीक कऽ दएह।"

जखन हम ऐठाम रहै छी तखन अपनेकेँ डेरा नै हएत। पहिने चाह पीब लेल जाउ। तखन आगूक गप-सप्प हेतइ।"

रमेसरा एकटा होटलमे सभकेँ लऽ गेलैन। सभकेँ जलखै करा चाह पिऔलकैन। पान खुऔलकैन। पाँचो गोरे रेलबे स्टेशन दिस विदा भेला। मुसाफिरखाना आबि रमेसराकेँ बचेलाल कहलखिन-

"अखन बैंकक समए अछि, तूँ जाह?"

"मास्सैब, आब बैंक नहियोँ जाएब तैयो ने किछु हएत। बैंके काजसँ एक गोरे ऐठाम नोटिश दइले गेल छेलौं, तँए अखन बाहरेक काजमे छी। काल्हिए जवाब देबइ।"

"अखन गाड़ी अबैमे देरी अछि। ताबे डेराक भाँज लगा दएह। अच्छा एकटा बात कहह जे होस्टल नीक हएत कि लाउज?"

मास्सैब, ने होस्टल नीक हएत आ ने लाउज। मधुबनीक हवा एहेन अछि जे विद्यार्थी सभ पढ़नाइ छोड़ि-छोड़ि भरि दिन जातिवादी गुट बना-बना झंझटे-फसादमे रहैए। पढ़ैबला विद्यार्थी अपन-अपन अंगीतक ऐठाम रहि-रहि पढ़ैए। हमरो डेरामे चारिटा कोठरी अछि। तीनियेँ कोठरीसँ अपन काज चलि जाइए। एकटा कोठरी पड़ले रहैए।"

"भाड़ा केना की लेबहक?"

मुस्कियाइत रमेसरा कहलकैन-

"अपनेसँ भाड़ा नइ लेब। अहींक परसादे हम नोकरी करै छी। अहाँक विद्यार्थी तँ हमरो भैयारीए भेला किने?"

"दस-पाँच दिनक बात रहैत तँ ठीक छल मुदा से तँ नइ अछि।"

"भाड़ाक सम्बन्ध मे हम किछु ने कहब। एते जरूर कहब जे दुनू

बच्चाकेँ रहैले डेरा जरूर देब।"

असमंजसमे पड़ल बचेलाल अछेलालकेँ कहलखिन-

"काका, अहीं भाड़ा कहियौ?"

धड़फड़ा कऽ अछेलाल पचास रूपैआ महिना कहि देलकैन। दुनू गोरे सहमत भऽ गेला। सहमत होइत बचेलाल रमेसराकेँ पुछलखिन-

"खाइ-पीबैक जोगार केना हेतइ?"

"चाउर-दालि गामसँ पठा देबइ। अपनो परिवारमे खेनाइ बनिते अछि, ईहो दुनू गोरे ओहीमे खेता।"

"चाउर-दालिक अतिरिक्तो तँ नून-तेल-तीमन-तरकारीमे खर्च हएत। तइले साए रूपैआ महिना सेहो देबह।"

"बड़बढ़ियाँ।"

सभ जोगार लगि गेलैन। बचेलाल अछेलालकेँ कहलखिन-

"काका अहाँ सभ जा कऽ डेरा देख लियौ। हम एत्तै अराम करै छी।"

तीनू गोरेकेँ संग केने रमेसरा विदा भेल। स्टेशनक पूबारि भाग–चकदहमे रमेसराक घर। एकान्त जगह। सभ कियो डेरा देख लगले घुमि कऽ आबि गेला। गाड़ीक टिकट कटौलैन। थोड़ेकालक पछाइत गाड़ी आएल। चारू गोरे गोसाँइ उगले अपना स्टेशन पहुँच गेला। तमुरियासँ गाम अबैक रस्तामे अछेलाल बचेलालकेँ कहलखिन-

"बौआ, औझुका दिन बड़ सगुनिया छल।"

बचेलाल-

"से की?"

"एक्के दिनमे केते काज भेल। हमरा तँ होइ छल जे कए दिन

लगत कएक दिन-ने। जाइये-कालमे हमरा होइ छल जे धोती, चद्दैर लऽ लइले कही, मुदा नै कहलौं।"

"काका, काज करैक ढंग होइ छइ। ओना संयोगो होइ छइ। जेकरा काज करैक ढंग रहै छै ओ कम्मे समैमे बहुत काज कऽ लइए। आ जेकरा ढंग नै होइ छै ओकरा कम्मो काजमे बेसी समए लगै छइ। संयोग ऐ दुआरे कहलौं जे जेना कौलेज गेलौं आ किरानीए नै रहैत। चाहे किरानियोँ रहैत आ कोनो कागजे नै रहितै। चाहे जेबाकालमे गाड़ीए छुटि जाइत। इहए सभ कुसंयोग छिऐ।"

शिवकुमारक आ रामनाथक मन चटपट करैत जे कखन घरपर पहुँच किताब देखब। रामनाथ अखबारक विशेषांक सभ गत्ता लगबैले रखने छल। किएक तँ बिनु गत्ता लगौल किताबक ऊपरका पन्ना गन्दो भऽ जाइ छै आ ओदरबोक डर रहै छइ। स्टेशनसँ घरक दूरी चारियेे किलोमीटर, तँए अबैमे बेसी देरियो नइ लगलैन। तहूमे घरमुहाँ पहर। घरपर अबिते शिवकुमार हाथ-पएर धोइ, अँगा निकालि दलानक चौकीपर बैस दादीकेँ शोर पाड़लक। दादीकेँ अबिते किताब सभ देखबए लगल। किताब देख सुमित्रा कहलखिन-

"बौआ मन लगा कऽ पढ़िहह। औझुका दिन तोरा जिनगीक एकटा चौबट्टीपर पहुँचा देलकह। ऐठामसँ जिनगीक आगूक रस्ता खुलतह। अखन, ने तोरा कोनो घरक भार छह आ ने आन कोनो। मात्र पढ़ैक छह। अखन जेते मेहनत कऽ कऽ पढ़बह ओते अपने गुण करतह। मैट्रिक धरि बापो पढ़ल छथुन, तँए ओते धरि सरस्वतीक बास घरमे भऽ गेल छह। आब आगू केना रहथुन ई तँ तोरेपर छह। भगवान केकरो अधला थोड़े करै छथिन, ओ तँ सभकेँ नीके करै छथिन। तोरे अधला किए करथुन। रामनाथोकेँ अपन सहोदरे भाए जकाँ बुझिहक।"

शिवकुमारकेँ सुमित्रा बुझैबते छेली आकि अछेलालो एला। अबिते सुमित्राकेँ कहए लगलैन-

"भौजी, एते उमेर बित गेल मुदा आइ मधमन्नी देखलौं। बाप रे! बड़ीटा बजार छइ। बड़का-बड़का दोकानो सभ छइ। जाइकालमे तँ नीक-नाहाँति नै देखलिऐ किए तँ रिक्शापर चढ़ल रही। मुदा अबैकालमे देखलिऐ। बड़कीटा कौलेज छइ। मारे मास्टर आ मारे चटिया देखलिऐ। बचेलाल दुनू गोरेकेँ नाओं लिखबैत रहए आ हम घुमि-घुमि देखबे करी। बड़का-बड़का कोठा। एकटा घरमे मारे साइकिल देखलिऐ। ओते गनलो ने होइत। एक गोरे ओइ ठीन बैठल रहै ओ हमरा कहलक- 'भायजी, तमाकुल खाइ छी।' ..हमहूँ बुझलौं जे किए ने तमाकुले लाथे किछु बुझियो ली। हम कहलिऐ- 'हँ।'

..ससैर कऽ ओकरा लग गेलौं। मुदा वेचाराकेँ एक्केटा कुरसी रहै, जैपर उ बैठल रहए। हम बगलेमे ईंटा-सिमटीक बनौल कम्मे खड़ा देवाल रहै ओहीपर बैसलौं। दुनू गोरे गप-सप्प करए लगलौं। ओ कहलक- 'अपना जिलाक सभ गामक विद्यार्थी ऐ कौलेजमे पढ़ैए।'

..एह! केते कहब भौजी, ओते कि मनो अछि।"

◌

शब्द संख्या : 2834

बारह

विकासपुर एला देवनकेँ साल लगि गेल। साल भरिक समैयो नीक रहलै। ने बेसी बरखा भेल आ ने कम। जँ बेसी बरखा होइत तँ दहार आ जँ नहियेँ होइत तँ रौदी। एहेन समए गोटे-गोटे साल संयोगसँ होइए। किएक तँ अखन धरिक जे समए होइत आएल अछि ओ अहिना होइत आएल अछि। गोटे साल बेसी बरखा भेल तँ गोटे साल जरूरतसँ कम। समए नीक भेने उपजो नीक भेलै तँए सबहक मन हरिअर। चारिये मास–अखाढ़सँ लऽ कऽ आसिन धरि, सालक ताला-कुञ्जी रखैत। मुदा आठ मास–कातिकसँ लऽ कऽ जेठ–धरिक कोनो मोजरे ने होइत। यएह, अपन मिथिलाक किसानक इतिहास रहल। ..सालो भरि देवन नसीवलाल काकासँ खेतीक लूरि सीखि-सीखि खेती करैत रहल। देवनकेँ नसीवलाल काका खेतीक लूरियो सीखबैत रहलखिन आ बीओ-बाइल दैत रहलखिन। नसीवलाल कक्काक बतौल रस्ता आ मदैतसँ बुधनीक टुटल मन जागृत भऽ ऐगला सालमे हँसी-खुशीसँ प्रवेश केलक।

एक मनसँ ऊपरे टुकला बीछि कऽ बुधनी आमील बनौने छेली जे बहरबैया वेपारी हाथे पाँच रूपैए सेर बेचलैन। दू साए रूपैआ भेलैन। जइसँ तीनू गोरेकेँ माने बुधनी, देवन आ रमुआकेँ नुआ-वस्तर भऽ गेल। दुनू आमोक गाछमे तेते आम भेलै जे माइर-धुइस कऽ खेबो

केलक आ तीन साए रूपैआक बेचबो केलक। पनरह सेर अम्मटो बेचलक। पाँच सेर अपनो लऽ रखलक। जे कहियोकाल खेबो करब आ मातृनवमी, जितिया-ले रखबो करब। आमक आँठी फकुआ बनबैले दुनू घरक चारपर अदहा फेकलक आ अदहा गाछ जनमइले बाड़ीमे जमा केलक। जखन पिपहीमे हरिअरी धेलकै कि सभकेँ उखाड़ि-उखाड़ि बाड़ीमे एक-एक हाथपर रोपि देलक। आठे-नअ मासमे डेढ़-दू हाथक गाछ भऽ गेलइ। बैशाखमे माटियो सक्कत भेलै आ गाछ रोपैक समैयो आबि गेल। सभ गाछक थल्ला काटि-काटि देवनो आ बुधनियोँ उखाड़ि लेलैन। धानक नारक खोंचैढ़ बना सभ थल्लाकेँ बान्हि लेलक। मधुबनीक एकटा वेपारी जे नर्सरी खोलने अछि, आबि पँच-पँच रूपैए छबो साए गाछ कीनि लेलकैन। तीन हजार रूपैआ एक्केठाम भऽ गेल। अपनो-ले देवन दसटा गाछ रोपि लेलक। मोटगर आमदनी देख बुधनी देवनकेँ कहलखिन-

“बौआ, चरि-कठबा खेतमे चापाकल गड़ा लएह। ओइ दिन तूँ बजलो रहह जे नसीवलाल काका कहलैन जे कम्मो खेत किए ने हुअए मुदा पानिक जोगार भेने खेतक हस्तियो बढ़ि जाइ छै आ उपजो।”

घरक छप्परपर जे आमक आँठी फेकने रहए ओ सूखि गेल। कातिकमे सभ आँठीकेँ उतारि लेलक। दुनू गोरे सभटा आँठीकेँ सिलौटपर लोढ़ीसँ फोरि फकुआकेँ एक भाग रखलक आ बखलोइयाकेँ दोसर भाग। बखलोइयाकेँ चुल्हिमे जरा लेलक आ फकुआकेँ जत्तामे पीसि चिक्कस बना रोटी पका कऽ खाइले रखि लेलक। थोड़े फकुआकेँ देवन फोरि-फोरि सुपारी टूक जकाँ बना मलसीमे रखि लेलक। जखन-जखन काज करए जाइत तँ पान-सातटा टुक डाँरमे खोंसि कऽ नेने जाइत आ सुपारीए जकाँ खाइत।

बारहे साएमे कल गड़ा गेल। अठारह साए रूपैआ बँचिये गेलैन।

ओइ अठारह साएमे सँ, चारि साए रूपैए कट्ठा चारि कट्ठा खेत अपने खेतक आड़िमे कीनि लेलैन। डेढ़ साए रूपैआ रजिष्ट्रीमे खर्च भेलैन। कल गड़ौलासँ आठ कट्ठा खेतमे धान पटबैक ओरियान भऽ गेलइ। अखाढ़मे बुधनी अपन पनरहो कट्ठा खेत रोपने छेली। ओना खेतमे जोत-कोर तेनाहे सन भेल रहै मुदा तैयो बीआ आ समैक परसादे डेढ़ मोनक कट्ठा धान भेलैन। जँ खेतमे नीक-जकाँ जोत-कोर, ढकिया-पथिया आ खाद पड़ल रहैत तँ दोबरोसँ बेसी धान होइत मुदा से नै भेल। साढ़े बाइस मन धान देख बुधनीक मनमे जीबैक आशा जागि गेलैन। पतिक मुइने बुधनीकेँ जीबैक आशा टुटि गेल छल। अगर बेटा नै रहितै तँ वेचारी या तँ जहर-माहूर खा मरि गेल रहैत वा चुमौन कऽ दोसर घर चलि गेल रहैत। मुदा खेतक उपजा आ अपन मेहनतक हूबासँ जीबैक भरपुर आशा बुधनीक मनमे जगि गेलैन। बरसात खतम भऽ गेल। धानो सभ आसिने-कातिकमे कटि गेल। देवनकेँ नसीवलाल काका कहि देने रहथिन जे कम खेतबलाकेँ तरकारी खेती जरूर करक चाही। एगारह कट्ठामे गहुम बाउग केलक आ चारि कट्ठामे तरकारी-खेती। एगारहो कट्ठामे गहुमक गाछ तँ नीक जनमलै मुदा पटबैक कोनो आशा रहबे ने करइ। जइ बाधमे बुधनीक खेत ओइ बाधमे एक्केटा बोरिंग जे बुधनीक खेतसँ बहुत हटि कऽ अछि। ने नाला ने पाइप। पटबैले देवन औना-पौना कऽ रहि गेल मुदा नहियेँ पटलै। संयोगसँ पूसमे एकटा बरखा भेल। बर्खाक पानि पिबते गहुमक गाछ हुहुआ कऽ उठलै। बियानो खूब केलकै। ओसो खूब गिरइ, तँए हाल बेसी दिन धरि धेने रहलै। ओही हालपर गहुम गम्हरा गेल। गहुमक गम्हरा देख बुधनीकेँ मनमे आशा जगलैन। पटौलहा गहुम जकाँ तँ नहियेँ भेलैन मुदा तैयो एक-तरहक भेलैन। हरा-हरी पान-छह पसेरी कट्ठा गहुम उपजल। सभटा मिला कऽ साढ़े छह मन गहुम भेलइ।

नसीवलाल काका देवनकेँ कहने रहथिन जे चैतक-अन्हरियामे

बाउग खेरही बढ़ियाँ होइ छै तँए चारिये दिनमे दुनू गोरे एगारहो कट्ठाकेँ तामि-कोरि खेरही बाउग कऽ लेलक। अदहा जेठमे खेरही पाकए लगल। दुनू गोरे–बुधनी आ देवन, खेरही बिछ-बिछ तोड़ए लगल। अन्तिम जेठ धरि सभटा खेरही तैयार कऽ लेलक।

तरकारी खेती-ले जे चारि कट्ठा रखने रहए, ओइ खेतक धान कटिते, तैयार करए लगल। अदहा कातिक अबैत-अबैत खेत तैयार कऽ लेलक। नसीवलाल काका देवनकेँ कहने रहथिन जे तरकारी उपजबैले पानिक ओरियान करए पड़त। जेकरा पोखैर छै ओ पोखैरसँ पटबैए आ जेकरा बोरिंग छै ओ बोरिंगसँ पटबैए। मुदा जेकरा ने पोखैर छै आ ने बोरिंग आ ने चापाकल ओ की करत? मुदा नसीवलाल काकाकेँ अपन जिनगीक अनुभव छेलैन, ओ देवनकेँ कहने रहथिन जे चारि कट्ठामे जँ दूटा कूप खुइन ली आ गर लगा कऽ खेती करी तँ काज चलि सकैए।

खेत तैयार कऽ देवन दूटा कूप, खेतक दूटा कोणपर खुइन लेलक। कुपो खुनैमे देवनकेँ बेसी भीर नहियेँ भेल। दुइए दिनमे एकटा कूप खुइन लिअए। छबे-साते हाथ खुनलासँ पानि छुटि जाइ। मुदा सभसँ कठिन बात ई अछि जे तरकारीमे तँ एक्के रंग पटौनियोँ नै लगैत। किछु चीजक खेतीमे बेसी पटौनी लगैत आ किछुमे कम। बोरिंग जकाँ तँ पानियोँ कूपमे नहियेँ होएत मुदा दुनू बेर-भिनसर आ साँझ-मिला कऽ दस धूर तक खेत जरूर पटि जाइत। दुनू कूपमे बाँसक खुट्टा गाड़ि दूटा ढेकुल गाड़ि पटबैक ओरियान देवन कऽ नेने रहए।

तरकारी खेती देवन दू हिसाबसँ केलक। पहिल अपन परिवार-ले आ दोसर आमदनी-ले। गिरहस्त-ले कातिक धरम मास होइत किएक तँ जेते रंगक अन, जेते रंगक तरकारी आ जेते रंगक फलक

खेती कातिकमे लगौल जाइत, ओते सालक कोनो मासमे नै लगौल जाइए। मसल्लोक खेती करैक मुख्य मास कातिके छी। परिवारमे सभ कथुक जरूरत होइत जेना- अन, तीमन, तरकारी, फल, मसल्ला इत्यादि। ..नोकरिया वा वेपारीक परिवार तँ पाइ कमाइत आ सभ चीज कीनि ि-बेसाहि कऽ काज चला लइत। मुदा किसान जँ नै करत तँ ओ औत केतएसँ। ई सोचि देवन सभ वस्तुक खेती करैक विचार केलक। जे किसान जेते नमहर अछि ओ ओते बेसी करैत आ जे जेते छोट अछि ओ ओते कम करैत। संगे जइ किसानकेँ बेसी खेते छै आ अपने नोकरी करैए वा खेते छै मुदा ने पानिक जोगार छै आ ने होशगर अछि ओ तँ पछुएबे करत। मुदा जे किसान लूरिगर आ हिम्मतगर अछि जँ ओकरा अपन साधनक, कमियो छै तैयो ओ आगू बढ़िये जाइए किएक तँ अपना इलाकाक सौभाग्य रहल जे पोखैरकेँ धर्मक वस्तु मानल गेल आ एहेन-एहेन धरमात्मा सभ भऽ चुकल छैथ जे गाहीक-गाही पोखैर खुनौने छैथ। एहनो-एहनो गाम सभ अछि जइमे अठारह गण्डासँ ऊपरे पोखैर अछि। तेतबे नहि, उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ दरजनो नदी बहि रहल अछि। तेतबे नहि, गामो सबहक जे बनाबट अछि जइमे एक-चौथाइसँ लऽ कऽ तीन चौथाइ धरि गहींर खेत अछि माने चौरी खेत, जे अपना पेटमे जेठ-अखाढ़ धरि पानि भरने रहैए। तैपर सँ बोरिंग, नहर वा आन-आन सेहो साधन मौजूद अछि। तहिना माटिक आछि। दुनियाँमे जेते किस्मक नीक माटि अछि ओ मिथिलाक धरोहर छी। इन्द्रो भगवान कहियोकाल खिसिआइ छैथ, बेसीकाल खुशीए रहै छैथ। जीव-जन्तु आ चिड़ै-चुनमुनी ऐ रूपे भरल अछि जे सदिछन मनुखक सेवा लेल तैयार अछि, सतत् धरती माताक गोदमे रहि रक्षा करैए।

नसीवलाल कक्काक विचारकेँ मनमे अरोपि देवन तरकारी खेतीमे जी-जानसँ लागि गेल। अपन परिवार-ले एक कट्ठामे तीमन-

तरकारी आ साग लगौलक, जेना- मुरै, गाजर, कोबी, अल्लू, मटर, टमाटर आ ठढ़िया, पालक, लफ इत्यादि लगौने रहए। तहिना दस धूरमे मसल्ला-ले सेरसो, धनियाँ, लसुन, जमाइन, मेथी मिरचाय आ पिऔज सेहो लगौने रहए। आमदनी-ले- कोबी, टमाटर अल्लू फुट्टे लगौने। ..फागुन अबैत-अबैत बन्धा कोबी आ टमाटर छोड़ि सभ कटि गेल। ओना टमाटर माघेसँ तोड़ब शुरू केने रहए मुदा अखनो माने फागुनोमे मनसम्फे अछि।

तरकारीक आमदनीसँ बुधनी एकटा घर बनौली। ओना, वेचारीक मनमे रहैन जे एकटा बरद कीनब। मुदा घरक जरजर हालत देख विचार बदैल लेलैन।

बुधनी ऐठाम देवनकेँ एला बरख दिन भऽ गेल। बरखे दिनमे देवन बहुत किछु सीखबो केलक आ विकासेपुरमे किछु दिन आरो रहैक विचारो केलक। मुस्की दैत देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

“दीदी, बड़ सुन्नर गाम अछि। जइ गाममे नसीवलाल काका सन ज्ञानी आ खेतिहर सजन सन इमानदार आ बेर-बेगरतामे ठाढ़ रहनिहार लोक हुअए ओ गाम किए ने नीक हएत।”

अपन दुखड़ा सुनबैत बुधनी देवनकेँ कहलखिन-

“बच्चा, जहिया रमुआक बाप मरि गेलखिन तहिया हुअए जे हमहूँ हुनकेँ लगल मरि जाइ। किएक तँ ने कोनो लूरि छल आ ने कियो कमा कऽ खुऔनिहार, दुख काटब छोड़ि दोसर रस्ते की छल। खेते बेच-बेच कए दिन खेतौं। मुदा रमुआकेँ देख आँखिसँ नोरो खसए आ देहो भुटैक जाए। मनमे आएल जे अखन ने रमुआ बच्चा अछि मुदा पाँच बर्खक पछाइत तँ नोकरी-चाकरी करै जोकर भाइए जाएत। ताबे कुटौन-पिसौन कऽ कहुना-कहुना गुजर करब। जँ केतौ चलि जाएब वा जहर-माहूर खा मरि जाएब तखन तँ वंश-खनदान सभटा उपैट

जाएत। मुदा तोरा पाबि आ नसीवलाल कक्काक देखौल रस्ता आ मदैतसँ आब बुझि पड़ैए जे हँसी-खुशीसँ जिनगी काटि लेब। पैछला सुख ने भगवान छीनि लेलैन मुदा ऐगला सुख तँ भगवान देबे करता।”

दोसर दिन भोरे देवन जलखै खा बुधनीकेँ कहलक-

“दीदी, जेते बीआ-बाइल नसीवलाल काका देलैन, ओकर सबाइ लगा सभ चीज दऽ दिअ, हुनका सभ किछु घुमा देबैन, जइसँ आगूओक रस्ता बनल रहत। नइ तँ मने-मन कहता जे देवन बेइमान अछि।”

देवनक बात सुनि बुधनी घरसँ धान, गहुम आ खेरही निकालि ओसारपर रखलक। हिसाब जोड़ि-जोड़ि देवन तीनू चीज लऽ मोटा बान्हलक। तीमन-तरकारीक तँ बीआ नै रहै तँए अन्दाजेसँ ओइ सबहक दाम जोड़ि रूपैआ लेलक। माथपर मोटा लऽ देवन नसीवलाल ऐठाम विदा भेल।

नसीवलाल दरबज्जापर बैस बेटाकेँ बुझबैत रहथिन-

“बौआ, मनुखक समरथाइ जे होइ छै वएह जिनगीक सार अवस्था छी। ऐ उमेरक सदुपयोग करैक चाही, माने घरमक काजमे लगेबाक चाही। ऐ उमेरमे जे जेते कठिन मेहनत करत ओकर जिनगी ओतेक सुन्नर बनतै। सुन्नरे जिनगी महामानवक जिनगी होइए। जेते मेहनत कएल हुअए ओइमे कंजूसी नै करी। कंजूसी केलासँ लोक चढ़ाइक रस्तासँ भटैक जाइए। तँए इमानदारीसँ मेहनत करह। जँ अपनासँ बेसी उपारजन हुअए तँ ओकरा बाँटि दी। बँटबाक प्रवृति बड़ पैघ वस्तु छी। किएक तँ बँटलासँ जमा नै होइत। संगे, जे अपने बँटनिहार अछि ओ दोसराक वस्तुक लोभे किएक करत। लोभ तँ ओकरा होइ छै जे संचय करए चाहैए मुदा जेकरामे संचयक प्रवृति जगबे ने करतै ओकरामे लोभ आएत कोन रस्ते।”

नसीवलाल बेटाकेँ कहिते रहथिन कि माथपर मोटरी नेने देवन पहुँचल। देवनकेँ देख नसीवलाल हँसैत पुछलखिन-

“देवन, बड़का मोटा माथपर देखै छी। की आइ विकासपुरसँ विदा भऽ गेलिऐ?”

नसीवलालक आगूमे मोटा रखि देवन कहलकैन-

“काका, साल भरिसँ जे ऐठामसँ मोटरी बान्हि-बान्हि बहुत चीज लऽ गेलौं, वएह दइले आइ एलौं।”

नसीवलाल-

“अच्छा, पहिने बैसू। भारी मोटा उठौने एलौं हेन तँए सुसता लिअ। तखन आगू गप-सप्प करब।”

देवन बैस कऽ पसीना पोछए लगला। पसीना पोछि उठि कऽ कलपर जा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीब कऽ आबि बाजल-

“काका, अहाँक असिरवादसँ बुधनी दीदीक हालत एते सुधैर गेल जे हँसैत जिनगी जीब रहल अछि। हमरा तँ अहाँसँ बहुत आशा अछि तँए पैछला लेलहा दइले एलौं आ आगू जे लेब ओ आगू देब।”

नसीवलाल-

“बौआ, तोरा हम कोनो कर्जा देने रहिहह जे तूँ घुमबैले एलह। हम अपन काज केलौं जइसँ तोरा लाभ भेलह। मोटा घुमौने जा। ई कखनो, मनमे नै अनिहह जे काका खिसिया गेला तँए आब किछु नै देता। सभ मनुखकेँ अपन-अपन कर्तव्य होइत। जेकरा करब ओकर धरम होइत। जे हमहूँ केलौं। तोरो अपन कर्तव्य छह जे तोरा करए पड़तह। जहिना हम तोरा बुझेबो केलियह आ थोड़-थाड़ मदैतो केलियह, तहिना तोहूँ करह।”

मोटा नेने देवन अपना ऐठाम चलि आएल। मोटा घूमल देख

बुघनी बजली-

“बौआ, मोटा किए घुमौने एलह?”

ओसारपर मोटा रखि देवन बाजल-

“दीदी, काका कहलैन जे कोनो हम कर्जा देने छेलिअ जे घुमबए एलह। हम अपन कर्तव्य केलौं, तोहूँ जा अपन कर्तव्य करह।”

असगरे नसीवलाल दरबज्जापर बैस, मने-मन सोचैत रहैथ जे चालीस बर्खसँ हम विकासपुरमे रहि अनबरत अपनो आ समाजोक उन्नैत-ले सोचबो आ करबो करैत एलौं जइसँ अपने तँ आगू जरूर बढ़लौं मुदा समाज ओते नै बढ़ि सकल जेते चाहै छेलौं! सवाल साधारण रहितौ जटिल अछि। जेना पोखैरमे नमहर गोला फेकलासँ पानिमे हिलकोर उठैए मुदा धीरे-धीरे असथिर होइत-होइत ओहिना-के-ओहिना भऽ जाइए, जेना पहिने रहैत। एना किए होइए? समाजक तरमे एहेन कोन शक्ति छिपल अछि जे पानिक हिलकोरकेँ शान्त करैत फेर ओइ रूपमे लऽ अबैए..?

◌

शब्द संख्या : 1980

तेरह

चारि बर्खक पछाइत शिवकुमार हिसाबमे आ रामनाथ भूगोलमे आनर्स केलक। दुनूकें आनर्समे सत्तैर प्रतिशतसँ ऊपरे अंक एलइ। कौलेजोमे पढ़ाइ नीक चलै छेलइ। अरुण कुमार दत्त प्रिंसिपल रहथिन। ओ अपनो गणितक जानल-मानल विद्वान। दत्त साहैब मात्र विद्वानेटा नहि बल्कि एक कुशल शासक आ कुशल अभिभावक सेहो। अपने बच्चा जकाँ विद्यार्थियोक संग बेवहार करै छेलखिन। जइ विद्यार्थीकें कोनो वस्तुक अभाव देखै छेलखिन ओकरा भरपूर मदैत सेहो करै छेलखिन। सदिछन मनमे रहै छैन जे हमरा कौलेजक विद्यार्थी केना नीक नहाँति पढ़त। आन शिक्षक जकाँ हुनकामे एक्को पाइ जाति-पातिक भेद-भाव नहि। रिजल्ट निकलला पछाइत शिवकुमारो आ रामनाथो जा कऽ दत्त साहैबसँ भेँट केलकैन।

दुनूकें देखते दत्त साहैब वेहद खुशी भेला। हँसैत दुनू गोरेकें कहलखिन-

"बौआ, आब अहाँ सभ देशक सुयोग्य नागरिक भेलौं, अहीं सभपर देशक भविस निर्भर करैए। तँए एक सुयोग्य नागरिकक जे दायित्व होइ छै, ओकरा अपन लगन आ इमानदरीसँ पुरा करब। परिवारसँ लऽ कऽ समाज होइत देश भरिक भार अहाँ सबहक कन्हापर अछि, तँए ओकरा नीक नहाँति निमाही, यएह हमर

असिरवाद अछि।"

दत्त साहैबक विचारसँ शिवकुमारो आ रामनाथोक आँखिमे सिनेहक नोर आबि गेल। भरभराएल अवाजमे शिवकुमार दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"गुरुदेव, अपनेक असिरवादकें जिनगी भरि निमाहैक चेष्टा करब।"

बचेलाल, अछेलाल आ सुमित्रा– तीनू गोरे दरबज्जापर बैस कऽ शिवकुमारो आ रामनाथोक सम्बन्धमे गप-सप्प करैत रहैथ। तीनूक हृदए खुशीसँ गदगद रहैन। मुदा आगू की करब से किनको मनमे अबिते ने रहैन। बचेलाल बजला-

"काका, दुनू गोरे बी.ए. पास तँ कऽ लेलक मुदा आगू की करबै?"

बिनु कोनो लागि-लपट केने अछेलाल कहलकैन-

"बौआ, हम तँ मुरुख छी, पढ़ै-लिखैक बात बुझबे ने करै छी तँए की कहब।"

सुमित्रा दुनू गोरेकें शोर पाड़लखिन। शिवकुमारो आ रामनाथो आएल। अबिते सुमित्रा कहलखिन-

"बौआ अहाँ दुनू गोरेक पढ़ाइसँ हमर छाती जुड़ा गेल। जखन बचेलालक पिता मुइला तखन हमरो हृदैमे छल जे बेटाकें खूब पढ़ाबी। मुदा सभ तरहें दुखी रही तँए मैट्रिके धरि पढ़ा सकलौं। मुदा आइ ओ इच्छा पुरि गेल। आब अहूँ दुनू गोरे पढ़ल-लिखल भेलौं तँए आगू की करैक विचार अछि से तँ अहीं सभ सोचब।"

शिवकुमार बाजल-

"दादी, काल्हि ललित मास्टर साहैब कहलैन जे मड़वाड़ी

कौलेज दरभंगामे टीचर्स ट्रेनिंगक पढ़ाइ दू सालसँ होइ छइ। दस मासक कोर्स छइ। हमर मन होइए जे ट्रेनिंग कऽ ली। जखन ट्रेन्ड भऽ जाएब तँ कोने-ने-कोनो हाइ स्कूलमे नोकरी भाइए जाएत।"

शिवकुमारक बात सुनि बचेलालक मनमे हूबा जगलैन। गुम्म भऽ किछु मन पाड़ए लगला। किछुकालक पछाइत मन पड़लैन जे बरख पाँचम धनश्यामपुर गेल रही। चुनावक समए रहइ। ओइठाम मड़वाड़ी कौलेजक उप प्राचार्य देवीदत्त पौद्दार सेहो चुनावी प्रचारमे आएल रहैथ। देवीदत्त समाजिक कार्यकर्ता। मड़वाड़ी रहितो अलग चालि-ढालिक लोक। एक्को मिसिया मड़वाड़ी जकाँ नहि बुझि पड़ैत। घुमैत-घुमैत, जेतइ हम रही ओतै ओहो चारि-पाँच गोरेक संग एला। जीप स्कूलेपर लगा देने रहथिन आ पएरे गाममे घुमैत रहैथ। जइ चौकीपर हम बैसल रही ओहीपर ओहो आबि बैसला। हुनक नाओं सुननहि रही मुदा चेहरासँ नै चिन्हैत रहिऐन। साधारण बगए-बाणि। मड़वाड़ी रहितो धुर-झार मैथिली बजैथ। चौकीपर बैसते कहए लगलखिन-

"जाधैर अपना देशमे समाजवादी शासन नै हएत ताधैर किछु गनल गूथल धनीक पूजीपति बहुसंख्यक गरीबकें लूटिते रहत आ ऐश-मौज करिते रहत। १९४७ ई.मे अपना सभकें आजादी भेटल मुदा ओ पूर्ण आजादी नहि, नैंगड़ा आजादी भेटल। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अंग्रेज भारतक गद्दीपर सँ उतरल। कोनो देश कानून-कायदासँ चलैए। अपना ऐठाम अखनो अंग्रेजक बनौल कानूनसँ शासन चलैए! तँए सभ गरीबकें एकजुट भऽ ओइ बेवस्थाकें तोड़ए पड़त।"

ओ बजिते रहैथ कि हम पुछलयैन-

"समाजवाद केकरा कहै छइ?"

जेना सभ बात हुनका जीएपर रहैन तहिना हमर प्रश्न सुनिते

देवीदत्त पौद्दार धाँइ-धाँइ कहए लगला-

"उत्पादनक जे साधन अछि ओइपर बेकतीगत नै सामूहिक अधिकार समाजवाद होइत। जेना खेत, खान आ कारखाना अछि। अखनो देखै छी जे एक-एकटा जमीनदार छैथ जे साए कोन, हजार कोन जे लाख-लाख बीघा जमीन हथियौने छैथ। दोसर दिस देखै छी जे जोतैले कोन बात जे घरो बन्हैक जमीन नइ छइ। तहिना खानोक अछि। खानसँ अमूल्य वस्तु सभ निकलैए। ओहो किछु गनल-चुनल लोकक पल्लामे अछि। तहिना कारखनोकें देखै छी। एक-एकटा कारखानामे लाखो-लाख मजदूर काज करैए मुदा ओकरा केते दरमाहा भेटै छइ।"

एते कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलैन-

"अखन चुनावी दौड़मे छी तँए समैक अभाव अछि।"

हुनका संग हमहूँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। परिचए पुछलैन। हम कहलयैन-

"एतए कुटुमैतीमे आएल छी। हमर घर ऐठामसँ तीस-पैंतीस किलोमीटर उत्तर मधुबनी जिलामे अछि।"

तखन ओ कहलैन-"हम मड़वाड़ी कौलेजमे उप-प्राचार्य छी। जँ कहियो कोनो काज हुअए तँ भेँट करब।"

एते बात मन पड़िते बचेलाल नमहर साँस छोड़ैत शिकुमारकें कहलखिन-

"बौआ, काज भऽ जेबा चाही, काल्हि हम भोरूके गाड़ीसँ दरभंगा जा पहिने बुझि अबै छी तखन जे-जेना हएत से एला पछाइत कहब।"

दोसर दिन भोरे गाड़ी पकैड़ बचेलाल दरभंगा विदा भेला। नअ

बजे, गाड़ी दरभंगा पहुँचल। मुदा बचेलालकेँ कौलेज देखल नहि। स्टेशनसँ निकैल दोकानमे जलखै करए गेला। दोकानदारेकेँ कौलेजक सम्बन्धमे पुछलखिन। दोकानदार कहलकैन- 'अहाँ देहातक छी वौआ जाएब। तँए नीक हएत जे रिक्शा पकैड़ लिअ, पहुँचा देत।'

बचेलालो सएह केलैन। रिक्शाबला कौलेजक गेँटपर बचेलालकेँ उतारि देलकैन। संयोगसँ देवीदत्त पौद्दारो तखने पहुँचला। दुनू एक-दोसर दिस ताकए लगला। चेहरा चिन्हार दुनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। बचेलाल देवीदत्त पौद्दारकेँ पुछलखिन-

"हमरा देवीदत्त बाबूसँ भेँट करैक अछि।"

ओ कहलखिन-

"कोन काज अछि? हमहीं छी।"

प्रणाम कऽ बचेलाल कहलखिन-

"टीचर्स ट्रेनिंगमे दूटा विद्यार्थीकेँ नाओं लिखबैक अछि।"

देवीदत्त-

"विद्यार्थी कहाँ छैथ?"

बचेलाल-

"आइ बुझैले एलौं हेन, जँ भऽ जाएत तँ काल्हिए तैयार भऽ कऽ आएब।"

देवीदत्त-

"जाउ, भऽ जाएत। काल्हि निश्चित चलि आएब।"

लगले बचेलाल घुमि कऽ स्टेशन आबि बारह बजे गाड़ी पकैड़ लेला। दोसर दिन दुनू विद्यार्थीक संग बचेलाल जा नाओं लिखा देलखिन।

दस मासक उपरान्त रामनाथो आ शिवकुमारो प्रशिक्षित शिक्षक

भऽ गेला। जइ हाइ स्कूलमे शिवकुमार आ रामनाथ पढ़ने छला, ओही हाई स्कूलमे पहिलुका बैचक चारि गोट शिक्षक मासे दिनक अन्तरमे सेवा निवृत्त भेला। सुदूर देहातमे स्कूल। चारू शिक्षकक जगहपर नव शिक्षकक नियुक्ति-ले भेकेन्सी भेल। अखबारोमे निकलल। मुदा एहेन हवा बहि गेल अछि जे नवयुवक गामक वातावरणमे रहए नै चाहैत। इलाकाक जे पढ़ल-लिखल युवक अछि ओ अधिकांश बम्बइ, कलकत्ता, दिल्ली जा कियो कारखानामे तँ कियो सेठ-साहुकारक दोकानमे तँ कियो सड़कपर रिक्शा चलबैत शहरमे रहैए। गाममे मात्र बुढ़-बुढ़ानुस आ धिया-पुता रहि गेल छैथ। फलत: किसान परिवार दिनानुदिन टुटि-टुटि निच्चे-मुहेँ ढुलैक रहल अछि। ने मेहनत करैबला आ ने आधुनिक ढंगक खेती करैबला लोक गाममे अछि। जइसँ ग्रामीण सम्पदा दिनानुदिन नष्ट भऽ रहल अछि। जाधैर देहातमे पढ़ल-लिखल आ कर्मठ लोक जी-जाँति कऽ नै रहत ताधैर गामक उत्थान मात्र कल्पना बनि रहत। शहर-बजार देहातेक श्रम-शक्तिसँ गन-गनाइत आगू-मुहेँ बढ़ि रहल अछि जखन कि गामक देश कहैबला भारत पाछू-मुहेँ तेजीसँ ससैर रहल अछि।

शिक्षकक बहालीसँ पनरह दिन पहिने विज्ञापन निकलल। अखबारोक माध्यमसँ प्रसारित भेल। स्कूलक हेड-मास्टरकेँ बुझल जे शिवकुमार आ रामनाथ प्रशिक्षित अछि। हेडमास्टर एकटा पत्र शिवकुमारकेँ लिखि चपरासीकेँ पठौलखिन।

प्रिय शिष्य शिवकुमार,

अहाँकेँ बुझले हएत जे स्कूलमे चारि गोट शिक्षक सेवा निवृत्त भेलाहेँ। हुनका जगहपर नव शिक्षकक बहाली अछि तँए अहाँ दुनू गोर–शिवकुमार आ रामनाथ- अबस्स आवेदन दी। अहाँ दुनू गोरे छात्र रहि चुकल छी, संगे घर लग स्कूलो अछि। बहालीक पूर्ण आश्वासन तँ

हम नै दऽ सकै छी किएक तँ कमिटीक माध्यमसँ बहाली हएत। मुदा एते जरूर आश्वासन दइ छी जे अनुचित बहाली नै हएत।

-प्रधानाध्यापक।

प्रधानाध्यापकक चिट्ठी देख शिवकुमारक मनमे पूर्ण बिसवास भऽ गेलैन जे हमरा दुनू गोरेकेँ बहाली जरूर हएत। पराते भने दुनू गोरे, अपन सभ कागजात नेने स्कूल पहुँचला। ऑफिससँ फारम लऽ ओकरा भरि, अपन सभ कागजातक नकल लगा दुनू गोरे आवेदन देलखिन।

आवेदन देनिहारक रफ्तार बहुत मन्द। पहिल-पहिल आवेदन शिवकुमारे आ रामनाथे केलैन। आवेदनक रफ्तार मन्द रहैक कारण छल जे गाम-घरमे बेसी पढ़लो-लिखल नहि। शहर-बजारक लोक गाममे नोकरी नै करए चाहैत। बहालीमे चारि दिन बँचल। अखन धरि मात्र दुइएटा आवेदन पड़ल। स्कूलक सचिव स्कूल आबि प्रधानाध्यापककेँ पुछलखिन-

"अखन धरि केतेक दरखास्त पड़ल?"

प्रधानाध्यापकोकेँ नीक नहाँति नै बुझल रहैन। ओ किरानीकेँ बजा पुछलखिन। किरानी दुइएटा दरखास्तक नाओं कहलकैन। हेडोमास्टर आ सेक्रेट्रियो गुम्म। दुनू गोरेक मनमे यएह होइत जे एते बेरोजगारी रहनौं आवेदन किए ने भऽ रहल अछि। मुदा दुनू गोरे गुम्मे-गुम्म रहि गेला। अन्तिम दिन तीनटा दरखास्त पड़ल। नियुक्तिक तिथि पुर्ब निर्धारित छल, तँए हेबे करत।

सभ उम्मीदवार नियुक्तिक दिन पहुँचल। तीन गोरेक समिति बनल। हेडमास्टर, सेक्रेट्री आ जिला शिक्षा पदाधिकारी ओइ समितिक सदस्य छला। बिनु कोनो झड़-झमेलक नियुक्ति भऽ गेल। एक गोरे अनट्रेन्ड छला तँए हुनका नै भेलैन। हाथक-हाथे चारू गोरेकेँ चिट्ठियो

भेट गेलैन।

घरपर आबि शिवकुमार दादीकेँ गोड़ लागि सभ बात कहलकैन। गोड़ लागि रामनाथ पँजरामे चुपचाप ठाढ़। रामनाथकेँ सुमित्रा कहलखिन-

"बेटा रामू, तोरा देख हमरा एते खुशी भऽ रहल अछि जेकर पारावार नइ अछि। शिवूक तँ बापो मास्टर छथिन मुदा तूँ तँ उस्सर खेतक आमक गाछ जकाँ भेलह।"

◌

शब्द संख्या : 1359

चौदह

शिवकुमारकेँ नोकरी होइते बचेलाल स्कूलमे तियाग पत्र दऽ एला। बचेलालक तियाग पत्रसँ सौंसे गाम टीका-टिप्पनी चलए लगल। किछु गोरेकेँ दुख ऐ दुआरे होइत जे बेर-बेगरतामे पाइसँ मदैत भऽ जाइत। किछु गोरेकेँ खुशियो होइत। किएक तँ भने आमदनी बन्न भऽ गेलैन। मुदा सुमित्राकेँ ने हरख आ ने विस्मय। किएक तँ ओ नीक नहाँति बुझै छथिन जे जेते मनुखक भीतर कमाइक शक्ति छै, ओते नोकरीमे नहियेँ होइत। आ ने जिनगी भरिले होइत। जाधैर लोक जुआन रहैए मात्र ताधैर नोकरी। मुदा जखन शरीरक शक्ति कमए लगै छै तखन नोकरी छुटिये जाइत। नोकरी छुटलापर दरमाहाक अदहोसँ कम पेंशन भेटैत। जखन कि उमेर बेसी भेने शरीरक सभ अँग धीरे-धीरे कमजोर हुअ लगैत, जइले नीक-निकुत भोजन आ दबाइक जरूरत होइत। पेंशन कम भेटने सभ खर्चक पुरती नै भऽ पबैत। जइसँ जिनगी बोझ बनि जाइत। संगे गिरहस्त परिवारमे जे काज चलैत ओकर लूरियो नै भऽ पबैत। जइसँ नोकरिया लोक अथबल भऽ जिनगी जीबैत।

..आब प्रश्न उठैए जे नोकरी केतए करी? चाहे तँ सरकारमे वा पूजीपतिक ऐठाम। ई बात सत्य जे प्रजातंत्र शासनमे सरकारो अपने होइत तँए शासन पद्धति चलैले सहयोग करब अनिवार्य अछि, नइ तँ

शासन चलत केना। मुदा जँ सरकारो गनल-गूथल लोकक सेवा करैबला होइ आ विशाल जनसमूह-ले मात्र जहलेटा होइ, तेहेन शासनमे कोन रूपे सहयोग कएल जाए? दोसर बात अछि कारखाना। कल-कारखानामे नोकरी केनिहारक संग जे बेवहार होइ छै ओ की गुलामीसँ कम होइ छइ। अगर स्वतंत्र देशक नागरिककेँ गुलामीक जिनगी जीबए पड़ै तखन आजादीक महत्ते की? जे देश गामक देश कहबैए, आ गामक सम्पदा या तँ ठमकले रहै वा पाछुए-मुहेँ ससरैत जाए तखन देशक उन्नैत कल्पना छोड़ि आर की हएत? तँए जरूरत अछि जे गामक सम्पदा– खेत, पोखैर-नदी इत्यादिक समुचित बेवस्था दुनू दिससँ–सरकारो दिससँ आ गामोक श्रम शक्तिसँ- कएल जाए। ई के करत? हम गाममे रहनिहार जँ गाम छोड़ि बजार दिस पड़ाइ छी तखन केना हएत? ऐ सभ बातपर तर्क-वितर्क करैत बचेलाल नोकरीसँ तियाग पत्र देलैन। साँझक समए। अन्हारक तृतीया रहने बेसी अन्हारो नहि। बचेलाल, खेतसँ रिंच-हथौड़ीक झोरा आ अछेलाल पटबैबला प्लास्टिकक पाइप आ कोदारि नेने घरपर अबै छला। अबेर भेने रूमा दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ दच्छिन-मुहेँ रस्ता देखैत रहथिन। आगू-आगू बचेलाल आ पाछू-पाछू अछेलालकेँ अबैत देख रूमा ससैर कऽ थोड़े आगू बढ़ि बजली-

“भगवान हमरो दुनू परानीपर खूब खुशी छैथ। एक परानी गोबर पाथै छी आ दोसर परानी डीजल-मोबीलसँ देह-हाथ रंगै छी।”

रूमाक बात सुनि अछेलाल भभा कऽ हँसला मुदा किछु बजला नहि। मुस्की दैत बचेलाल बजला-

“अगर भगवान खुशी नै छैथ तँ जीबैले एते लूरि आ करैक शक्ति केना देने छैथ। काजकेँ खेलौना बना कर्मशीले टा खेलैए।”

बजैत दरबज्जापर पहुँच गेला। दरबज्जापर अबिते सभ समान

रखि साबुन लऽ स्नान करए कलपर गेला। सुमित्रा लालटेन नेस, चारक बत्तीमे लटका देलखिन। रूमा चाह बनबए गेली। जाबे बचेलाल नहा कऽ दरबज्जापर एला ताबे रूमो चाह बना लेलैन। चाह बना दरबज्जापर आबि बचेलालक आगूमे रखि देलकैन। ताबे अछेलालो नहा कऽ आबि गेला। तीनू गोरे चाह पिबए लगला। एक घोंट चाह पीब बचेलाल रूमाकेँ कहलखिन-

“अही रूपे काज केलासँ परिवार आगू-मुहेँ ससरैए। अखने देखियौ, जाबे हम नहेलौं ताबे अहाँ चाह बनेलौं। माए लालटेन नेस लेलक। दसे मिनटमे केते काज भऽ गेल। अगर जँ अहलाइत-महलाइत सभ करितौं तँ केते समए लगैत।”

तीनू गिलास लऽ रूमा भानस करए आँगन विदा भऽ गेली। अछेलाल तमाकुल चुनबए लगला। बचेलाल माएकेँ पटौनीक सम्बन्धमे कहिते छेलखिन आकि ताबे गोनर आबि अछेलाल लग बैसल। अछेलाल अपनो तमाकुल खेलैन आ गोनरोकेँ देलखिन। तमाकुल मुँहमे लैत गोनर अछेलाल दिस तकैत बाजल-

“भाय, ऐ सालसँ दुख पड़ा गेल।”

उत्सुक भऽ अछेलाल पुछि देलकैन-

“से की?”

गोनर बाजल-

“भाय, जहियासँ मोन अछि तहियासँ आइ धरि नदी कातक खेतमे एते धान कहियो नै भेल छल जेते ऐबेर भेल। बारह कट्ठाक कोला अछि, जइमे पनरह मनसे बेसी धान कहियो ने भेल छल मुदा ऐबेर बारह क्विन्टल धान भेल। जे खेत फागुनसँ अखाढ़ धरि परती बनल रहै छल। गैवार-महींसबार सभ गाइयो-महींस चरबै छेलै आ गुल्लियो-डन्टा खेलैत रहै छल। ओइमे एते उपजा भेल जे सालो

भरिक बुतात भेल। घरवाली कहै छेली जे ऐबेर घरमे लक्ष्मी एली। तँए पाँचो मुरते साधूकेँ चूड़ा-दहीक भनडारा करब।”

गोनर बजिते छल कि एका-एकी टोलक लोक आबए लगल। जेना बरियातीमे हँसी-मजाक होइत तहिना अपनामे सभ करए लगल। हँसी-चौल समाप्त होइते एका-एकी अपन-अपन भरि दिनुका काजक गप शुरू केलक। अपन-अपन हूसलाहा काजक चर्च अपने-मुहेँ कऽ अपनो हँसैत आ दोसरोकेँ हँसबैत। एक हरफी सभ अपन-अपन बात बाजि चुकल। सबहक बात सुनि बचेलाल समूहकेँ पुछलखिन-

“आगू की करैक विचार केने छी?”

बचेलालक सवाल सुनि धनिकलाल बाजल-

“भाय, एकटा नवका धानक बीआ मामा गामसँ अनलौं हेन। हमरे सोझहामे दाउन भेलइ। ममियौत भाय जोखलैन। जोखि कऽ कहलैन जे चारि कट्ठामे छह क्विन्टल धान भेल।”

गोनर पुछलक-

“देखैमे धान केहेन अछि?”

धनिकलाल-

“नमगर-नमगर, खूब मेही, उज्जर-उज्जर धान अछि। गमकबो करैए।”

“भात केहेन होइ छइ?”

“एह भैया! जखने थारी आगूमे औतह कि गम-गम करए लगतह। ओना हम तँ टटके धानक चाउर कुटा कऽ भात खेलौं मुदा तैयो की कहबह।”

“केते बीआ अनलह?”

“एक्के पसेरी अनलौं ऐसँ पाँच कट्ठा रोपाएत। ऐगला साल तँ

सभकेँ बीआ देबइ।”

“तूँ तँ एक्केटा खेतमे रोपबह। मुदा दू-दू आँटी जँ आनो बाधबलाकेँ देबहक तँ ओइसँ आनो बाधमे जँचा जाएत। किएक तँ सभ धान सभ तरहक माटिमे एक्के रंग नै धड़ै छइ। ओहो जाँच भऽ जाएत।”

धनिकलाल-

“बड़बढ़ियाँ बात कहलह। जँ दस आँटी बीआ देलासँ सभ बाधक उपजा जँचा जाएत तँ ओहो नीके हएत।”

गाममे सिरिफ खेत पटबैक सुविधा भेलासँ गामक रूप-रेखा बदलए लगल, गृहस्तमे नव उत्साह जगल, अनिश्चितताक खेती निश्चिततामे बदलए लगल...। जखन कि खेती-ले पानि सिरिफ एकटा साधन छी। नीक बीआ, खाद, जोतै-कोरै-ले नीक ओजार, नव ढंगक खेती करैक लूरि इत्यादि सभ बाँकीए अछि। सिरिफ एकटा साधन भेलासँ उपजामे दोबर-तेबर वृद्धि भेल, गृहस्तक बीच प्रेम-भाव सेहो बढ़ल। खेतीक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल। जइ किसानकेँ गरीबी कखनो मुँहमे हँसी नइ आबए दैत ओइ किसानक मुँहमे सदिछन हँसी आबए लगल।

खाइ-पीबै राति भऽ गेल। दरबज्जा खाली देख शिवकुमार आ रामनाथ आएल। दुनू गोरेकेँ देख बचेलाल पुछलखिन-

“बौआ, पढ़बैमे मन लगै छह किने?”

दुनू गोरे कहलकैन-

“हँ।”

दुनू गोरेकेँ प्रसन्न देख बचेलाल बजला-

“बौआ, मनमे कखनो ई नै अनिहह जे दरमाहा लइ छिऐ तँए

पढ़बै छी। सभ बच्चाकेँ अपन छोट भाए बुझि पढ़बिहह। ओ केना पढ़त तैपर हदिघड़ी धियान रखिहह। बच्चा सबहक जिनगी ओइ अवस्थामे होइ छै जइ अवस्थामे उगैत सुरूजक होइत। उगैत सुरूजक समैमे जँ मेघ लगि जाइ छै तँ रातिये जकाँ दिनो बुझि पड़ए लगै छै ने, तँए जेते शक्ति अछि ओइमे एक्को मिसिया कलछप्पन पढ़बैमे नै करिहह। अखन तक तूँ दुनू गोरे एक-पेरिया रस्तासँ चलैत एलँहेँ मुदा आब चौबट्टीपर पहुँच गेलह। तँए चारू दिस देख कऽ चलए पड़तह। जेना पहिल भेल नोकरीकेँ इमानदारीसँ निमाहब, दोसर भेल परिवार, तेसर भेल माए-बाप आ चारिम भेल समाज। एकरा संग-संग अपन अध्ययन सेहो अछि। आइ हाइ स्कूलक शिक्षक भेलह तँए कि एतबेमे अपनाकेँ समैट कऽ रखि लेबह? आगूक डिग्री प्राप्त कएलासँ कौलेजोक शिक्षक भऽ सकै छह। जिनगीमे सतत चलैत रहैक चेष्टा करक चाही। सतत चलनिहारे जिनगीक महत बुझैए। हमहीं शिक्षक छेलौं। स्कूलसँ तियाग पत्र दऽ गृहस्तीक जिनगीमे प्रवेश केलौं। पहिनेसँ कनियोँ कम आनन्दित अखन नै छी। नव-नव काजक लूरि सेहो सीखि रहल छी आ नव-उत्साहक संग जिनगी सेहो बितबै छी मुदा तैयो एकटा अभाव जिनगीमे अखन धरि रहिये गेल ओ अभाव छी देशाटन। धुमब-फिरब सेहो जिनगी-ले बड़ पैध काज छी। बिनु घुमने-फिरने दुनियाकेँ देख केना सकब। कोन ठामक मनुख केहन अछि, केना रहैए, कोन तरहक जिनगी जीबैए। से तँ घुमला पछाइते बुझबै। अनेको पहाड़, अनेको पठार, अनेको झील, अनेको टापू, अनेको सागर, अनेको झरना, अनेको जंगल आ अनेको रंगक माटिक इलाकाक देश भारत अछि। अनेको तरहक प्राचीनसँ अद्यतन सभ्यता-संस्कृतिसँ सम्पन्न देश, बिनु देखलासँ केना बुझल जाएत। पहाड़क ऊपरसँ लऽ कऽ समुद्रक किनछैर धरिमे बसैबला लोक, हजारो रंगक फल-फूलसँ सजल देशकेँ बिनु देखलासँ केना कियो बुझि

सकैए। तँए देशक भ्रमण सभ-ले ओहने जरूरत अछि जेहने जिनगीक दोसर-तेसर जरूरत। तँए जे समए बित गेल ओ तँ घुमि कऽ नै औत मुदा जे बँचल अछि ओइमे जहाँ धरि सम्भव भऽ सकत ओ तँ पुरबैक चेष्टा करब।”

◌

शब्द संख्या : 1278

पनरह

फागुन मास। मौसमक बदलल रूखि। समुद्री तूफानक चलैत सौने जकाँ मेघो लटकल आ हवो चलैत। कखनो-कखनो बुन्दा-बुन्दी पानियोँ पड़ैत आ हवो कम-बेसी होइत। कखनोकाल तेज बरखो आ तेज हवो बहए लगैत जइसँ सभ जाड़े सिड़सिड़ाइए लगैत। समैक रूखि देख, बाध-बोनक काज छोड़ि सभ घरे-अँगनाक आइ-पाइमे लागल। कियो-कियो घूर पजाइर आगि तपैत तँ कियो चद्दैर ओढ़ि पड़ल।

..देवन मने-मन सोचैत जे फागुन सनक मासमे एना किए होइए। मौसमोक कोनो ठेकान नइ छइ। जहिना लोकक कोनो ठेकान नहि जे बजत किछु आ करत किछु, तहिना भगवानोक कोनो ठेकान नहि। कहू जे फागुन सनक सुन्नर मासमे एना किए होइए। एते हवा केतए जमा छै जे एते बहि कऽ पच्छिम-मुहेँ चलि गेल मुदा अखनो धरि सठल नहि! कहू जे केते आशा लगा कऽ लोक मौसरी, केराउ, खेसारी आ आनो-आन जिनिसक खेती केने छल जे उखाड़ि-उखाड़ि सभ घर अँगनासँ लऽ कऽ खरिहाँन धरि सुखैले पसारने अछि आ ई पानि सभकेँ सड़ौत। ने भुस्सी मालक खाइ जोकर रहत आ ने दाना। सभ दाना पानिमे भीज-भीज सड़त। कनी-मनी जे जाड़ो चलि गेल छल सेहो घुमि कऽ चलि औत।

..फेर मनमे एलै जे भने हमहीं केने छी जे खेसारी-मौसरीक खेतीए ने केने छी। गहुमक लेखे तँ सोना बरैस रहल अछि। ऐबेर एक्कोटा दाना मिरहिन्नी नै हएत। नसीवलाल कक्काक हिसाब ठीके छैन जे 'कतिका धान, गहुम आ खेरही एक खेतमे करी।' फगुनियाँ हाल भेल मन खुशी कऽ देलक। आठे दिनक पछाइत गहुम काटि लेब आ खेरही बाउग कऽ देबइ। पटबीए खेत जकाँ खेरही भुभुआ कऽ जनमत। फँकलो-फूँकल बीआ जनमियेँ जाएत। मुदा पिऔजमे गरदैन कटि जाएत। काल्हिए पटेलौं तैपर सँ तेहेन बरखा होइए जे पनरहो दिनमे खेत फरहर नै हएत जइसँ सड़त। मुदा की करबै। लोक अपनो भरि ने सोचि कऽ करैए मुदा अनहोनीकेँ के रोकत...।

असगरे देवन मालक घरक दलानमे बैस सोचैत रहए। एक्केटा घर अदहामे माल बन्हैत आ अदहामे बैसै-उठैले दरबज्जा बनौने। असगरे देवनकेँ बैसल देख बुधनियोँ एली। बुधनीकेँ बैसते देवन बाजल-

"दीदी, आब हम छबे मास रहब। किएक तँ एगारह बरख छअ मास भऽ गेल। तँए जहियासँ हम एलौं तहियासँ कोन-कोन काज भेल आ कोन-कोन पछुआएल अछि से दुनू गोरे हिसाब जोड़ि लिअ।"

देवनकेँ नै रहब सुनि बुधनीक मनमे धक्का लगलैन। उदास भऽ बुधनी बजली-

"बौआ, तोरा पाबि हमरा बहुत भेल। हमरा सन-सन केते लोक बौआ-ढहना कऽ मरैए। मुदा तूँ हमरेटा नहि हमरा कुल-खनदानकेँ जीआ कऽ रखलँह...।"

बुधनी देवनकेँ कहिते छेली कि सजन सेहो चद्दैर ओढ़ने एला। सजनकेँ चौकीपर बैसबैत देवन पुछलकैन-

"भैया, अखन कोन काज करै छेलह जे हाथ-पैरमे थाल लागल

देखै छिअ?"

सजन-

"बौआ कि कहिह, मालक घर छाड़ैले खढ़ अँटिया कऽ रखने छेलौं। ओहो भीज गेल आ घरो खूब चुअल। बरदक देह परहक झोली भीज गेल। वएह हटा कऽ सुखलाहा बोरा देहपर देलिऐ। थैरमे पानि अँटैक गेल छेलै, ओकरे खड़ैर कऽ बहार केलौं। सएह थाल लागल अछि।"

अदहा मुँह झँपने मुस्की दैत बुधनी बजली-

"भैयाक जेहने बरद मोटाएल छैन तहिना दीदियो मोटाएल जाइ छैन।"

बुधनीक बात सुनि सजन खुशियो भेला आ मने-मन सोचौ लगला जे एहेन बात किए कहलैन। कनीए-काल चुप रहि बाजल-

"कनियाँ, भनसिया मोटाएल जाइए कि फुलैए से अपनो मनमे अबैत रहैए। आन चीज तँ नै देखै छिऐ मगर अल्लू बड़ खाइए। जनु अल्लुऐ कोनो करामत तरे-तर करै छइ।"

बात बदलैत बुधनी बजली-

"आइ तँ हमरा बड़का पहपैट भऽ गेल। कुसमैमे बरखा होइए, एक्कोटा सुखल जारैन-काठी घरमे नइ अछि। कथी लऽ कऽ भानस करब? गोरहो मचानेपर अछि आ चिपरी पाथि-पाथि सुखा-सुखा जे भानस करै छेलौं सेहो सभटा भीजिए गेल।"

सजन-

"हमरो तँ सएह भेल, मुदा एकटा सुखल ढेंग छेलै ओकरे फाड़ि कऽ चुल्हि लगमे दऽ भनसियाकेँ कहलिऐ जे आइ खिच्चैड़े आ अल्लूक सन्ना बनाउ। हुअए तँ सेरसोक चटनी सेहो बना लेब।"

बुधनी-

"सेरसोक चटनी केना बनबै छथिन?"

"से नै बूझल अछि! बड़ सुन्नर चटनी होइ छइ। जेते गोरे-ले बनाबी ओइ हिसाबसँ सेरसो लऽ ली। ओइ हिसाबसँ लसुन सेहो लऽ ली, जँ जमिरी नेबो हुअए तँ बड़बढ़ियाँ नइ तँ कागजियो नेबोसँ काज चलि जाइ छइ। हिसाबेसँ नून आ मिरचाय सेहो लऽ ली। सेरसो, लसुन, नून- मिरचायकेँ खूब हलसँ पीसि कऽ ओइमे नेबो गाड़ि दियौ, भऽ गेल चटनी।"

"बाह, ई तँ सबदिना चटनी हएत!"

..सजन आ बुधनीक बातकेँ विराम दैत देवन बाजल-

"भैया, भने दुनू गोरे छी। ऐठाम एला हमरा साढ़े एगारह बरख भऽ गेल। छअ मास पुरिते हम चलि जाएब। तीनू गोरे छी तँए कहि देलौं, जँ नै कहितौं आ चलि जैतौं, तँ अहूँ सभकेँ खटैकतए जे बिनु कहने-सुनने किए चलि गेल।"

देवनकेँ प्रशंसा करैत सजन बजला-

"तोरा पाबि वेचारीकेँ सभ किछु भऽ गेलइ। खेतो-पथार भऽ गेलै, मालो-जाल भऽ गेलै, घरो-दुआर भऽ गेलइ। रमुआ सेहो बिआह करै जोकर भाइए गेल। हमरा बुझने आब वैहटा काज पछुआएल अछि।"

सजनक बात सुनि देवन बाजल-

"भैया, अपनो मनमे अछि मुदा मन अचताइ-पचताइ छी। किएक तँ इलाका-इलाकाक कन्याँक अलग-अलग चालि ढालि आ जिनगी छै, तँए कोन इलाका कुटुमैती करी, ई बड़ भारी सवाल अछि। ओना समाजमे नवका हवा लगने किछु बदलबो कएल। मुदा अखनो

ग्रामीण इलाकामे सत्तैरसँ अस्सी प्रतिशत वएह छइ। अपना इलाकाक कुटुमैती, पूबमे भागलपुर, पच्छिममे मुजफ्फरपुर, दच्छिनमे गंगाकात आ उत्तरमे नेपालक तराइ इलाका धरि होइए। मुदा सभ जातिक नहि। राजपूत, भूमिहारक कुटुमैती पच्छिम आ दच्छिन बेसी होइत, जे भोजपुरी आ मगही भाषाक इलाका छी। जइसँ ऐठामक भाषापर बहुत बेसी प्रभाव पड़ैत। किएक तँ ओइ इलाकाक सुआसिनक संग भाषो आ बेवहारो चलि अबैत, तहिना ब्राह्मणक कुटुमैती भागलपुर दिस होइत जइसँ अन्तिका बोली आ भगलपुरिया बेवहार सेहो चलि अबैत। मुदा पछुएलहा जातिक कुटुमैती नेपालक तराइसँ लऽ कऽ अल्लापुर, धरमपुर, पचही, नारे दिगर, भौर परगनामे बेसी होइत। पचही परगनाक बोली आ बेवहार अल्लापुर परगना आ नेपालक तराइ इलाकाक बोली आ बेवहारसँ बहुत नीक अछि। मुदा जे मेहनती कन्याँ अल्लापुरक, नेपालक आ कोसी इलाकाक होइत ओ पचही, नारेदिगर आ भौरक नै होइत। तँए गरीब लोक-ले अल्लापुर, कोसी इलाका आ नेपालक नीक होइत।"

देवनक बात धियानसँ सुनि बुधनी मुस्कियाइत बजली-

"हमरो नैहर भौरे परगनामे पड़ैए। दुरागमनसँ पुर्ब जाबे नैहरमे छेलौं ताबे घास छीलब छोड़ि ने दोसर काज केलौं आ ने लूरि भेल। हँ, अँगना-घरक काज नीपनाइ, बहारनाइ, कोठी पाड़नाइ, चुल्ही पाड़नाइ, भानस-भात केनाइ माए जरूर सिखा देलक। मुदा जिनगी जीबैले तँ कमाइक लूरि जरूरी होइत, से नहि भेल। मुदा अहीठीन देखै छी जे अल्लापुरवाली अछि, पुरुखोक कान कटैए। हर जोतनाइ छोड़ि एहेन एक्कोटा काज नइ अछि जेकर लूरि ओकरा नइ छइ।"

बुधनीक बात सुनि सजन मुड़ी डोलबैत बजला-

"कनियाँ, हमरा-अहाँ घरमे कमासुते कनियाँ चाही।"

बुधनी-

“हँ भैया, ढोरबा काकाकेँ देखै छथिन, दान-दहेजक लोभे केहेन चमचिकनी पुतोहु उठा कऽ लऽ अनलैन जइसँ घरमे हदिघड़ी मुहेँ फुल्ला-फुल्ली होइत रहै छैन। ओहन पुतोहु हम नइ करब। हमरा दान-दहेजक लोभ नइ अछि। पुतोहु कमासुत हुअए।”

चारि मास बित गेल। रमुआक बिआहो भऽ गेल। जेहने पुतोहु बुधनी चाहै छेली तेहने पुतोहु भेलैन। मुदा समाज अखनो बुधनीकेँ उपराग दइते छैन जे एहेन दब खेनाइ बरियातीमे केतौ ने खेने छेलौं। जहिना खेनाइ देलक तहिना सुतैले पटेरक पटिया आ नारक आँटीक सिरमा देलक। मुदा, दही ओहन खुऔलक जे जिनगीमे नै खेने छेलौं।”

परसू देवनकेँ बारह बरख पुरि जाएत। एक दिस विकासक प्रक्रियामे आगू बढ़ैत समाजक मोह तँ दोसर दिस दुनियाँ देखैक जिज्ञासा। देवनक मनमे विचित्र द्वन्द उत्पन्न कऽ देलक। तर्क-वितर्क करैत देवन ऐ निष्कर्षपर आबि गेल जे आर्थिक विकासक प्रक्रिया गाममे चलि रहल अछि मुदा दुनियाँ देखैक जिज्ञासा तँ बौद्धिक विकासक प्रक्रिया छी। विकास तँ ओहो छी। बिनु बौद्धिक विकास भेने आर्थिको विकास तँ रस्ता धऽ कऽ नहियेँ चलत। किएक तँ जेतबे ऊँचाइपर बुधि रहत तेतबे तक ने आर्थिक विकास हएत। जइसँ जिनगीक विकास अवरूद्ध भऽ जाएत। मनुख, समाज आ दुनियाँ केते आगू तक बढ़त ई तँ अखन अनुमानेसँ कहल जा सकैए, जे सहियो आ गलतियो भऽ सकैए, तँए दुनियाँ देखब जरूरी अछि...।

जहिना बौद्धिक विकास-ले देवनक मन छटपटाइत तहिना आर्थिक विकासक सुख सेहो शरीरकेँ अपना दिस घीचैत। किएक तँ जइ देवनकेँ बच्चासँ लऽ कऽ किछु दिन पुर्ब तक ने भरि पेट अन्न

भेटल आ ने भरि देह वस्त्र, ने नीक घरक सुख भेटलै आ ने बिसवासू जिनगी।

अही बिचमे देवनक मन आ शरीरक घिचा-तीरी करैत कखनो एमहर झुकैत तँ कखनो ओमहर। मुदा जिनगीक संकल्प मनुखकेँ सिद्धान्तनिष्ट बनबैत।

..ई विचार मनमे अबिते देवन बुधनी ऐठामसँ जाइक विचार पक्का कऽ लेलक। फेर देवनक मनमे एलै जे विकासपुर छोड़ैसँ पहिने नसीवलाल काकासँ भेँट कऽ लेब जरूरी अछि। किएक तँ हुनकेँ पाबि हम ऐ गाममे बारह बरख हँसी-खुशीसँ बितेलौं, खाली जिनगीए नै बितेलौं बल्कि बहुत किछु अनुभवो भेल आ सिखबो केलौं।

दोसर दिन भोरे सुति-उठि कऽ देवन नसीवलाल ऐठाम विदा भेल। गाएकेँ सानी लगा, हाथ धोइ नसीवलाल दरबज्जापर आबि चौकीपर बैस मने-मन सोचैत रहैथ जे मनुख खूब पढ़ि-लिखि लिअए, खूब समृद्धिशाली बनि जाए, परिवारसँ लऽ कऽ देशो समृद्धिशाली बनि जाए, मुदा की तेतबेसँ जिनगीमे शान्ति आ चैन आबि जाएत? की मनुख मनुखकेँ मनुख बुझए लगत? की मनुखक बीचसँ अपराध मेटा जाएत? की मनुखक बीचसँ भोगक प्रवृत्ति समाप्त भऽ जाएत..?

ऐ तरहक ढेरो प्रश्न नसीवलालक मनमे उपकैत रहैन। जहाँ कोनो प्रश्नपर गौरसँ विचार करए लगैथ कि घौंदा जकाँ प्रश्न-पर-प्रश्न मनमे आबि जाइन। आइ अमेरिका सभसँ समृद्धिशाली आ शिक्षित देश अछि। अनेको देश ओकरासँ कर्जा लऽ कऽ अपन विकास कऽ रहल अछि। मुदा की अमेरिकामे चोरी, डकैती, लूट, हत्या, बलात्कार नै होइ छइ? की अमेरिकामे भिखमंगा नै अछि? की अमेरिकामे सभ मनुखकेँ मनुख बुझल जाइ छै आकि जानवरोसँ बदतर बुझल जाइ छइ? की अमेरिकामे माए-बहिनक इज्जत-आबरू सुरक्षित अछि..?

मन जेते दौगैत तेते समस्याक बोनमे नसीवलाल औनाइत रहला। ने सोझ रस्ता देखैथ आ ने भेटैन। मन असथिर करै दुआरे चुनौटीसँ चुन आ तमाकुल निकालि चुनबए लगला। तमाकुल चुना मुँहमे लेलैन। मन बहटै दुआरे उठि कऽ टहलए लगला। टहलैत-टहलैत थूक फेकैले मुँह उठौलैन कि देवनकेँ अबैत देखलखिन। देवनपर नजैर पड़िते मनमे उठलैन जे एहेन-एहेन बच्चा, प्रतिदिन केते मरैत हएत तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा धैनवाद दी ऐ बच्चाकेँ जे एते पैघ संकल्पक संग हँसी-खुशीसँ जीब रहल अछि। आब तँ जुआन भेल। आब तँ ओहन शक्ति ओकरा भीतर जागि चुकल छै जे किछु कऽ सकैए। ..एते बात नशीवलाल मने-मन विचारिते रहैथ आकि देवन लगमे आबि पएर छुबि गोड़ लगलकैन। असिरवाद नसीवलालक मनमे घुरियाइत रहैन आ आँखि देवनक जिनगीकेँ पढ़ए लगलैन। ने किछु देवन बजैत आ ने नसीवलाल बाजैथ। दुनू अपन-अपन दुनियाँमे। देवनक मन अन्तिम असिरवाद तकैत आ नसीवलाल देवनक पुरुषत्वकेँ देखए लगला। ..उत्साहित मन, विचलित करेजसँ देवन कहलकैन-

“काका, काल्हि हम ऐ गामसँ चलि जाएब, तँए आइ अन्तिम असिरवाद लइले एलौं हेन।”

नसीवलाल कलखिन-

“बौआ, तोरा हम अन्तिम असिरवाद अखन केना देबह। अखन तोरो नमहर जिनगी जीबैक छह आ हमहूँ अखन मरब नहि। एकटा दुनियाकेँ खण्ड-परखण्ड कऽ लोक देश, राज्य, गाम, टोल बना नेने अछि। मुदा अछि तँ एक्केटा धरती। अही धरतीपर तोहूँ केतौ रहबह आ हमहूँ केतौ रहब। दुनियाँक कोनो कोणमे चाहे तूँ रहह आकि हम, हमहूँ तोरा देखबह आ तोहूँ हमरा देखबह।”

बिच्चेमे देवन बाजल-

“काका, हम जे असिरवाद लइले एलौं ओ दैहिक छी। बारह बर्खसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, आब कनी हटि कऽ रहब। वएह जे कनी हटब अछि तइले असिरवाद मंगै छी।”

देवनक बात सुनि नसीवलाल मुस्की दैत बजला-

“असिरवाद कि कोनो मुहक बोलीसँ होइ छै ओ तँ हृदैक उद्गार छी। तोहूमे तूँ हमरासँ असिरवाद मांगह आ हम परसादी जकाँ दऽ दिअ से कहूँ भेलैए। जखन कौल्हुका नियार कऽ नेने छह तँ जरूर जइहह। मुदा आइ ऐठाम रहह, खा-पीअ, भरि मन गप करब तखन साँझमे चलि जइहह।”

सभतूर बुधनी सुतले छेली। गामोक सभ सुतले। सूर्योदयसँ पहिनहि देवन उठि कऽ उत्तर-मुहेँ विदा भऽ गेल। जेतबे वस्त्र पहिरने छल, बस ओतबे। ने किछु खाइले लेलक आ ने कोनो आन वस्तु। ज्ञानक भूख देवनकेँ एते लागल जे कोनो आन वस्तुक सुधिए ने रहइ। मुदा जिनगी जीबैक लूरि ओ सीखि नेने छल। ..गामक सिमानपर पहुँच देवन मने-मन सोचए लगल जे गामो-घर देख लेलिऐ आ गाम-घरक लोककेँ देख लेलिऐ तँए आब देव स्थान दिस जाइ। एते बात मनमे अबिते देवन देव स्थान दिस विदा भेल। जाइत-जाइत जखन बहुत दूर गेल तखन देखलक जे साइयो मन्दिर, साइयो मस्जिद आ साइयो गिरिजाघर अछि! देख कऽ अबूह लगि गेलै जे केते देखब। जँ सभकेँ देखए लगब तँ केते बरख लगि जाएत। मनुखक औरुदे केते होइ छइ। ठाढ़ भऽ देवन सोचलक जे छोटका स्थान सभकेँ रस्ते-रस्ते देख लेब आ बड़का-बड़का स्थानकेँ भीतर जा-जा देखब।

मन्द-मन्द हवा सिहकैत। रौदोमे ओते गरमी नहि। मुदा बेसी चललासँ थाइक गेल। रस्ता कातेमे एकटा खूब झमटगर गाछ।

गाछकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि देखलक तँ अनठिया गाछ बुझि पड़लै। गाछक निच्चाँमे दूबि पसरल। हरिअर कचोर दूबि। मनमे भेलै जे जेमा तँ जेबे करब मुदा थोड़ेकाल ऐठान सुसता ली...।

गाछक निच्चाँमे देवन बैस रहल। कनीए-काल बैसल आकि मन अलिसाए लगलै। दुभिएपर पड़ि रहल। पड़िते निन आबि गेलइ। कनीए-काल पड़ल कि चहा कऽ उठल। निन टुटि गेलइ। मनमे दू तरहक विचार उठए लगलै। एकटा विचार होइ जे थाकल छी तँए भरि मन अराम कऽ ली। दोसर विचार होइ जे जँ सुतिए कऽ समए बिता लेब तँ देखब कथी?

उठि कऽ ठाढ़ भेल। आगू तकलक तँ झल बुझि पड़लै। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मीड़ि कऽ पोछलक। आँखि पोछिते साफ-साफ देखए लगल। मुदा सभ किछु बदलैत बुझि पड़लै। जहिना चाउरसँ भात बनैए, दूधसँ दही बनैए, तहिना दुनियाँक सभ किछु तेज गतिसँ आगू-मुहेँ बढ़ैत देखलक। ठाढ़ भऽ देवन हियाबए लगल जे कियो खाधि दिस आँखि मूनि कऽ दौगल जाइए तँ कियो काँटक बोन दिस तहिना कियो आगि दिस दौगल जाइ तँ कियो सुन्नर फुलवाड़ी दिस...। देवनक मनमे द्वन्द उठल। पहिल विचार भेलै जे बिनु खाधिमे खसने खाधिक अनुभव केना हएत आ बिनु आगिमे गेने आगिक ताप केना बुझब?

फेर मनमे उठलै जे जँ खाधिमे खसि पड़ब तँ ऊपर केना हएब? आ जँ आगिमे झड़ैक जाएब तँ जीब केना? जँ मरिये जाएब तँ दुनियाँ केना देखब? ..असमंजसमे पड़ल देवन फेर बैस रहल। बैसले-बैसल मनमे उठए लगलै जे मृत्युक रस्तामे जीवन छै आकि जीवनक रस्तामे मृत्यु? सुखक रस्तामे दुख छै आकि दुखक रस्तामे सुख? पापक रस्तामे पुण्य छै आ कि पुण्यक रस्तामे पाप..?

विचित्र सवाल देवनक मनमे आबए लगल, गुलाबक फूल तोड़ैकाल हाथमे काँट गड़िते अछि। रस्तापर चलनिहार पिछैर कऽ खसिते अछि। मुदा की काँट गड़ैक डरे लोक गुलाब फूल नै तोड़त? पिछैर कऽ खसै दुआरे लोक चलबे ने करत..? अजीव प्रश्न देवनक मनमे उठए लगल। जिनगीए पाछू तँ मृत्युओ छाँह जकाँ सदिछन चलिते अछि। मुदा सबहक पाछू संकल्प छै...।

जे कियो गुलाबक फूल तोड़ैक संकल्प कऽ लेत, ओ काँट गड़ैक चिन्ता नै करत। जे आगिक गुण बुझि आगिमे जाएत ओ झड़कैक परबाह नै करत, तहिना हमरो दुनियाँ देखैक संकल्प मनमे अछि तँए जाबे जीब ताबे चलिते रहब, भलेँ रस्ता केतबो कठिन किए ने हुअए। ..ई बात देवनक मनमे अबिते फेर उठि कऽ विदा भेल।

उत्तर दिसक रस्ता देवन धेलक। थोड़े आगू बढ़लापर काँटक बोन देखलक। बोन देख देवन हियाबए लगल जे केना ऐ बोनमे जाएब। चिक्कन रस्ता तँ अछि नहि! हियबैत-हियबैत देखलक जे ने चिक्कन रस्ता अछि आ ने चौड़गर, मुदा खुरपेड़िया रस्ता जरूर अछि जइ देने मालो-जाल आ चरबाहो अबै-जाइए। अपना दिस देवन देखलक। देखलक जे हमरो तँ किछु अछि नहि, मात्र देहेटा अछि। मनमे बिसवास जगलै जे हमहूँ टपि सकै छी। आगू बढ़ल। थोड़े आगू गेलापर देवन देखलक जे काँटक बोन पूबे-पछिमे नमती तँ बेसी अछि मुदा चौराइ कम छइ। बोन टपि गेल। रस्तामे केतौ किछु खेने नइ तँए भूखो लगि गेलइ। मुदा ऐ बोनमे भोजन की भेटत। ..भूखकेँ दबैत आगू बढ़ल। आगू बढ़िते देखलक जे फेर दोसर बोन अछि। बड़का-बड़का गाछ-बिरीछ ओइ बोनमे मुदा काँट नहि, फलक बोन। अनेरूआ फलक गाछ तँए सभ रंगक फलक गाछ, एकछाहा नहि। ..हिया कऽ देवन फल सबहक गाछ देखए लगल। रंग-बिरंगक फलसँ लदल गाछ देख मन शान्त भेलइ। शान्त चित्तसँ देवन सोचए लगल जे

अखन तँ छोटके बोनमे प्रवेश केलौं हेन, तखन तँ एते रंग-बिरंगक फल चकचकाइए, जँ अहूसँ आगू बढ़ी तखन तँ ओहूसँ बेसी नम्हरो आ सुन्दरो-सुन्दरो फल भेटत। तँए जँ पैघ फल प्राप्त करए चाहै छी तँ ऐ छोटका फलक बोनकेँ टपि आगू बढ़ए पड़त।

फेर मनमे एलै जे चौबेसँ छबे नइ भऽ कहीं दुबे बनि जाएब, तखन तँ सभ गुड़ गोबर भऽ जाएत। मुदा नहि! जिनगीमे कोनो वस्तुक प्राप्ति दू तरहेँ होइए। एक- वस्तुक प्राप्ति आ दोसर- विचारक प्राप्ति। ओना, कखनोकाल दुनूक प्राप्ति सेहो भऽ जाइ छै आ कखनोकाल विचारक प्राप्ति होइत मुदा वस्तुक नहि। तँए जिनगीमे कखनो ऐ बातक चिन्ता नै करक चाही जे प्राप्ति हएत आकि नहि। सतत् मनुखकेँ आगू बढ़ैक उत्साहक संग कर्म करैले डेग उठबैक चाही। जिनगीमे हारि केकरा कहबै आ जीत केकरा कहबै? अन्धकार-प्रकाशक लड़ाइ तँ हदिघड़ी मनुखक भीतर चलिते रहैए, जँ एक रूपमे अन्धकार हारैए तँ दोसर अहूसँ पैघ रूपमे आगू आबि ठाढ़ भऽ जाइए। सुरूज सन प्रकाशमान सेहो अन्धकारक चद्दैरमे झँपा जाइए। हमरा सबहक बीच सेहो एकटा जबरदस भ्रम पसरल अछि जे पैछला जनमक केलहा ऐ जन्ममे भेटै छइ। मुदा अहू प्रश्नकेँ दू दृष्टिए देखल जा सकैए। पहिल, पैछला जन्म जे विकासक प्रक्रियामे एक-दोसरमे बदलैत जाइए आ दोसर, अही जन्मक पुर्बक समए। जेना अफसरक पुर्ब समए विद्यार्थीक होइत, डाक्टरक पुर्ब समए सेहो विद्यार्थीक होइत। मुदा हमरा सबहक बीच पहिल बातकेँ मानल जाइए, तँए ई जबरदस भ्रम अछि। जेते बात देवन सोचैत तेते मन घोर-मट्ठा होइते जाइत। खिसिया कऽ देवन उठि कऽ विदा भऽ भेल। मुदा विदा होइते तामस मुझा गेलइ। शरीरमे नव शक्तिक संचार भेलइ। अपन संकल्पकेँ माथपर उठा साहससँ डेग उठबैत आगू बढ़ल।

देवनक पेटक भूख तँ मिझा गेल मुदा मनक भूख बढ़िते गेलइ।

जाइत-जाइत जखन किछु दूर गेल तँ एकटा विशाल आमक गाछ देखलक। रस्ताक बामा भाग ओ गाछ। गाछमे काँच-सँ-पाकल धरि फल लटकल। निच्चोमे खसल। ..गाछ लग ठाढ़ भऽ देवन सोचए लगल जे ई गाछ अनेरूआ छी आकि लगौल अछि? चारूकात देवन आँखि उठा-उठा देखए लगल। देखैत-देखैत पिताक सुनौल एकटा खिस्सा मन पड़लै। पिताकेँ अपना एक्को धूर खेत नहि जे गाछी-कलम लगा दितिऐ। तीरथ-बरथ करैले पाइ नहि, पूजा-पाठ करैक लूरि नहि मुदा धर्मक काज तँ सभकेँ होइ छइ। तँए रस्ता कातमे पाँचटा आमक गाछ रोपि देलिऐ। ..कहीं ओहने रोपनिहार तँ ने ईहो रोपने अछि। पाँचटा पाकल आम बीछि देवन गाछक अलगलहा सिरपर बैस खाए लगल। आम स्वादिष्ट। पाँचो आम खा देवन सोचलक जे आइ एतै रहि जाएब। दुबिमे हाथ पोछि, हाथेसँ मुहोँ पोछि लेलक। पानिक जरूरते नहि। असगरे देवन ओइ गाछक छाहैरमे पड़ि रहल। गाछक ऊपरमे अनेको रंगक चिड़ै-चुनमुनी पकलाहा आमो खाइत आ अपनामे गपो-सप्प करैत आ चोरो-नुक्की खेलैत आ हँसियो-चौल करैत। रंग-बिरंगक चिड़ै रहनौं सभ अपन-अपन डारिपर बैस अपना जिनगीक गप करैत। ..चीत गरे देवन पड़ल छल तँए गाछक ऊपर सभ चिड़ैकेँ देखैत रहए। ऐगला-पैछला सभ जिनगी बिसैर देवन चिड़ै सबहक दुनियाँमे पहुँच गेल।

किरिण डुमि गेल। आनो-आनो गाछ परहक चिड़ै सभ ओइ गाछपर आबए लगल। जेना सभकेँ बुझले रहै तहिना सभ अपन-अपन ठौर धऽ लेलक। किछुकाल धरि, जाबे मौसम साफ रहै, सभ गप-सप्प करैत रहल आ जेना-जेना अन्हार पसरैत गेलै तेना-तेना ओहो सभ गबदी मारैत गेल। तेसर साँझ होइत-होइत सभ चिड़ै सकदम भऽ गेल। देवनकेँ ओ गाछ कल्प वृक्ष जकाँ बुझि पड़लै। नव-नव विचार, नव-नव जिनगी जीबैक ढंग देवनक मनमे आबए लगलै।

विचारेक दुनियाँमे विचरण करैत देवनकेँ कखन निन एलै से अपनो ने बुझलक।

पोह फटिते एकटा चिड़ैकेँ नीन्न टुटलै। निन टुटिते ओ सभकेँ जगबए लगल। धीरे-धीरे फरिचो होइत गेलै आ चिड़ैयो सभ जागि गेल। जगिते सभ चिड़ै अपन-अपन जिनगीक करम-लीलामे उड़ि-उड़ि विदा भेल। चिड़ैकेँ उड़ैत देख देवनो उठल। उठि कऽ अपन सौंसे देह देखलक। पानि तँ रहै नहि जे मुँह-कान धोइतए मुदा हाथेसँ आँखि-कान पोछि विदा भेल। उभर-खाभर रस्ता। केतौ सोझ, केतौ टेँढ़, केतौ भौक तँ केतौ खाइध। मगन भऽ देवन तेजीसँ सरासर आगू बढ़ए लगल। रस्तामे जानवरक कमी नहि मुदा मनुख एक्कोटा नहि। मुदा तैयो देवनक मनमे ने शंका आ ने कोनो घबराहट। असगरे देवन आगू बढ़ैत गेल। किछु दूर गेलापर बजार जकाँ देखलक। देवनक मनमे सवुर भेल जे आब मनुखसँ भेँट हएत। मुदा ओ बजार नै कसबा छल। छोट-छोट कारोबार चलैत। दुनू भाग घर बीच देने रस्ता। गोटे-गोटे घर पुरने ढंगक मुदा गोटे-गोटे टिपटापसँ सजल। मनुखोक वएह रूप। मुदा अकसरहाँ लोक रूढ़िवादी विचारसँ ग्रसित। किछु गोरे पुरान रूढ़िसँ जकड़ल तँ किछु नवका रूढ़िसँ। रूढ़िवादी रहितो सभमे मिलान नहि! एक दोसरकेँ गरियबैत। सभ-सभकेँ कहैत-

“तूँ गलत तँ तूँ गलत।”

रस्ता धेने देवन आगूओ बढ़ैत आ लोकक करतूतो देखैत। थोड़े दूर आरो आगू बढ़लापर देवन एकटा पैघ पीपरक गाछक निच्चाँमे नमहर मन्दिर देखलक। मन्दिरक आगूमे यात्री सभकेँ रहैले एकटा धरमशालो छेलइ। खाइ-पीबैक सभ बेवस्था ओइ धरमशालामे। मन्दिरक चारूकात फुलवाड़ी। छोटका-छोटका फूलक गाछक संग बड़को-बड़को फूलक गाछ। जहिना रंग-बिरंगक गाछ तहिना रंग-

बिरंगक फूलो। ..पहिने तँ देवन रस्तेपर ठाढ़ भऽ कातेसँ देखलक मुदा मनमे भेलै जे छहरदेबालीक भीतर जा कऽ देखिऐ। अनभुआर जकाँ भीतर प्रवेश केलक। रस्ताक बगलेमे इनार। पानि भरैले ढेकुलमे डोल बान्हल। डोलमे लोहाक जिंजीरक उगहैन बान्हल। इनारपर जा देवन डोलमे पानि भरि हाथो-पएर धोलक, देहपर एक चुरूक छिटियो लेलक आ दोसर डोल पानि भरि पीबो लेलक। पानि पीब देवन पहिने मन्दिर दिस बढ़ल। मन्दिरक ओसारपर महंथजीकेँ एक गोरे ताड़क पातक बनौल बड़का पंखाकेँ पैरक ओंगरीमे डन्टाक निचला भाग लगा, ठाढ़े-ठाढ़ डोलबैत। दोसर गोरे महंथजीक पसारल पैरमे कड़ु-तेलसँ मालिश करैत आ तेसर गोरे महंथजीक बाँहिमे तेल लगा ओम्ठैत-ससारैत। ..महंथजी आँखि बन्न केने असुआएल पड़ल...।

देवन महंथजीकेँ देख मने-मन सोचए लगल जे पकिया साधक जकाँ बुझि पड़ै छैथ। किएक तँ सए-बरिखा गाछक सील जकाँ देह, हाथी पएर जकाँ दुनू जाँध आ क्विनटलिया बोरा जकाँ पेट महंथजीक। लालबुन्द शरीर, दाढ़ी-केश नमहर-नमहर। तीस-पैंतीसटा अगरबत्ती एक्केठाम जरैत। रंग-बिरंगक सेन्टक शीशी, गमकौआ तेलक शीशी महंथजीकेँ पजराक खिड़कीपर राखल। देवनक मनमे एलै जे जखन ऐठाम धरि आबिए गेलौं तखन भगवानक दर्शन आ महंथोजीकेँ प्रणाम काइये लेबैन।

..ओसारसँ आगू बढ़ि दर्शन कऽ महंथजीकेँ ठाढ़े-ठाढ़ प्रणाम केलकैन। प्रणाम सुनि महंथजी आँखि तकलैन। एक टकसँ देवनकेँ देख महंथजी मने-मन गुम्हरए लगला, जे पएर छुबि किए ने गोड़ लगलक..!

देवन अपना ढंगक लोक, मने-मन विचारए लगल जे हमरा कोनो ऐठाम रहैक अछि जे खुशामद रहत। राही छी रस्ता धऽ कऽ

एलौं, कनीकालक पछाइत चलि जाएब।

मने-मन महंथजी गुम्हैरते रहैथ ताबए देवन बाहर चलि आएल। महंथजी पुजेगरीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

“अखन जे एकटा दर्शनार्थी आएल छल, ओ हमरा उचक्का बुझि पड़ल तँए ओकरा जल्दी हातासँ निकालू।”

महंथजीक आदेश सुनि पुजेगरी देवनकेँ ताकए लगल...।

मन्दिरक चारूकात जे फुलवाड़ी लगौल छेलै, ओइ फुलवाड़ीमे देवन घुमि-घुमि कऽ देखै छल। ..पुजेगरी धरमशालामे तकैत एकटा अनठिया बबाजीकेँ पुछलक-

“अखन कियो अनठियो आएल छल?”

ओ वेचारे एक टकसँ पुजेगरी दिस ताकि, बिनु किछु बुझनहि-सुझनहि, बजला-

“जे आएल छला से चलियो गेलैथ। नवका एक्को गोरे नै छैथ। हम तँ परसूऐ एलौं आ आरो जे सभ छैथ ओ पहिनेसँ छैथ।”

चोट्टे पुजेगरी घुमि महंथजी लग जा कहलकैन-

“ओ चलि गेल।”

एमहर देवन फुलवाड़ीमे फूल सभकेँ तजबीज करैत। किछु फूल सुगन्धित आ किछु बिनु सुगन्धक। किछु देशी फूल आ किछु विदेशी फूल। सौंसे फुलवाड़ी देख देवन मन्दिरक पाछूमे जे पीपरक गाछ रहए, ओकरा देखए लगल। गाछ पुरान बुझि पड़लै। किएक तँ मोटका-मोटका डारि सभ, खूब नमहर गाछ। मुदा गाछक एक भाग सुखल आ दोसर भाग हरिअर। देवन सोचए लगल जे एना किए छै, जे अदहा सुखल अछि आ अदहा जीअल। छगुन्तामे पड़ि गेल। तत्-मत् करैत देवन गाछक जड़ि लग पहुँचल। गाछक जड़ियोमे बुझि पड़ै

जे एक भागसँ सुखल छै आ एक भागसँ जीवित। मुँहपर हाथ लऽ देवन विचारए लगल। किछुकालक पछाइत देवनक मनमे एलै जे भरिसक गाछक जड़िमे गराड़ लगल छइ। गराड़ मनमे अबिते ओ एकटा सुखल मजगूत ठौहरी लऽ जड़िमे खोधियाबए लगल। चारिये आँगुर खोधियेलक कि एकटा मोटगर गराड़केँ देखलक गाछक खोंइचा खाइत। देखते देवनक मनमे खुशी एलइ। खुशी अबिते देवन ओही ठौहरीसँ गराड़केँ निकालि कातमे फेकलक। माटिपर खसिते गराड़केँ कौआ लऽ कऽ मन्दिरेक गुम्बजपर बैस कऽ खाए लगल। ..देवन फेर गाछक जड़िकेँ खोधियाबए लगल। मुदा जड़िक माटियो आ गाछक सिरो सभ सक्कत रहए तँए ठौहरीसँ खोधियाएले ने होइत। हारि-थाकि कऽ छोड़ि देवन इनारपर जा हाथ-पैरमे लगल माटिकेँ धोलक आ इनारपर सँ सोझे आबि धरमशालामे बैस गेल। कनीए-कालक पछाइत रसोइया आबि, धरमशालामे बैसल आदमी सभकेँ, गनए लगल। नृद्वन्द्व देवन। कोनो गम नहि। बगलमे बैसल दाढ़ी-केश बढ़ौने बबाजीकेँ पुछलक-

“अहाँ केते दिनसँ बबाजी छी?”

देवनक मुँह देख ओ बबाजी कहए लगल-

“बौआ, अहाँ तँ जुआन-जहान छी। मुदा जखन पुछलौं तँ कहबे करब। हम गिरहस्त परिवारक छी। चारिटा बेटा अछि। सभकेँ बिआह-दुरागमन करा देलिऐ। सभकेँ धियो-पुतो छइ। हमर स्त्री मरि गेल। चारू बेटा बरबैर कऽ खेत बाँटि लेलक। हमरा सझीए रखलक। साल भरि तँ बड़बढ़ियाँ तीन-तीन मास खुऔलक। मुदा दोसर साल चढ़िते सभ अनठा देलक। कियो खाइले देबे ने करए। दू-चारि दिन, अपन जे हित-अपेछित सभ रहए ओकरे ऐठाम खेबो केलौं आ बेटाक किरदानी कहबो केलिऐ। ओहो वेचारा सभ आबि-आबि कहलकै।

मुदा केकरो बातक मोजर नै देलकै। घरसँ निकलैत मोह लगए मुदा की करितौं। गामेक एकटा बबाजीक संग धऽ लेलौं। घुमैत-घामैत ऐठाम छी।"

देवन-

"ऐठाम केते दिन रहबै?"

"जाबे रहए देत ताबे रहब। जखन भगा देत तखन कोनो दोसर असथानपर चलि जाएब।"

देवन चुप भऽ गेल। मुदा मनमे ढेरो सवाल उठए लगलै। ओइठामसँ उठि इनारपर जा कऽ बैस रहल। इनारक लहरामे ओंगैठ मने-मन सोचए लगल जे सिरिफ एहेन परिस्थिति अही वेचाराटा कें नहि भेल, बल्कि एहेन परिस्थिति तँ सभ गाममे होइ छइ। तँए एहेन समस्या-ले समाजकें सोचए पड़त। सिरिफ सोचैए नै पड़तै बल्कि समाधान-ले किछु करैयो पड़तै। गामे-गाम निःसहाय औरत, निःसहय पुरुख आ अपलांग-विकलांग सेहो सभ अछि, जे अछैते औरुदे काहि कटैए। तँए सभ गाममे एहेन-एहेन लोक-ले सार्वजनिक तौरपर बेवस्था करए पड़त...।

ऐ समस्याक बीच देवनक मन ओझरा गेल। सोचैत-सोचैत सुति रहल। खेबो ने केलक।

रातिक बारह बजे। हवाक सिहकी चललै। हवाक सिहकीसँ देवनकें जाड़ हुअ लगलै। जाड़ होइते निन टुटि गेलइ। निन टुटिते इनारपर सँ उठि धरमशालाक कोणमे आबि कऽ बैस गेल। हवा जोरे होइत गेलइ। देवन धरमशालासँ निकैल बाहर आबि अकास दिस तकलक। अकास दिस देखते बुझि पड़लै जे अन्हड़-बिहाड़ि औत तँए धरमशालासँ नीक बहरेमे रहब हएत। फेर इनारक निचला लहरापर आबि कऽ बैस गेल।

महंथजी, पुजेगरी मन्दिरमे सूतल। हवाक ठंढसँ महंथजीकें निन आरो गाढ़ भऽ गेलैन। किएक तँ मन्दिर तीन भागसँ घेरल, मात्र एक्के भाग अबै-जाइले खुजल। फोंफ कटैत महंथजी आ पुजेगरी। संयोगसँ कर घुमैकाल महंथजीक बामा हाथ छातीपर चलि आएल तँ सपनाए लगल। सपनामे महंथजी देखैत रहैथ जे हम रथपर चढ़ि स्वर्ग जा रहल छी। देवलोकक रथ। बड़का-बड़का घोड़ा ओइ रथमे जोतल। अप्सरा सभ नचैत। देवलोकक दूत सभ रथक आगू-पाछू अरियातने चलि रहल अछि...।

तखने जबरदस अन्हड़-बिहाड़ि उठल। महंथजी आरो निनभेर भऽ गेला। बिहाड़िमे मन्दिरक पैछला पीपरक गाछक सुखलाहा भाग टुटि कऽ मन्दिरपर गिरल। ओना, माटिक तर तक गाछ सुखल छेलै मुदा गाछक जड़ि चिराएल नहि। दू फेड़ा लगसँ टुटल। विशाल डारि। मन्दिरपर डारिकें खसिते पहिने मन्दिरक गुम्बज टुटल तेकर पछाइत सौंसे मन्दिर टुटि कऽ खसि पड़ल। पुरान मन्दिर तँए टुटैमे देरियो नै लगलै। महंथजी निनभेर तँए मन्दिरकें खसैत बुझबे ने केलैन। तरमे महंथजी आ पुजेगरी तइ ऊपर मन्दिरक ओसाराक छत आ तइ ऊपर गाछक मोटका डारि। महंथजीक ऊपर जखन सभटा टुटि कऽ लदा गेलैन तखन निन टुटलैन। मुदा निन टुटनहि की? थोकचा-थोकचा देह, मात्र साँसेटा चलैत रहैन। कनीए-कालक पछाइत साँसो अवरूद्ध भऽ गेलैन। दुनू गोरे पराण तियाग केलैन। मुदा तैयो अन्हड़ कमल नहि। ओना, आन दिनक अन्हड़ ओहन होइ छल जे अबै छल आ लगले चलि जाइ छल। मुदा औझुका अन्हड़ बड़ी खान धरि रहल।

धरमशाला मन्दिरसँ थोड़ेक हटल। चारूकातसँ खूजल तँए हवाक झोंक एक भागसँ पइसे आ दोसर भागसँ निकैल जाइ। धरमशाला गिरल नहि, बँचि गेल। इनारपर बैसल-बैसल देवन सभ किछु देखैत मुदा ने हल्ला केलक आ ने उठल। अन्हड़ चलि गेल। मुदा

पानि-पाथर नै खसलै।

अन्हड़कें जाइते धरमशालाक सभ निकैल हल्ला करए लगल जे मन्दिर खसि पड़लै। महंथजी आ पुजेगरी ओइ तरमे दबाएल छैथ। मुदा अन्हड़ तँ सिरिफ स्थाने भरि नइ आएल छल, सभ अपन-अपन उड़ियाएल घर-अँगना सम्हारैमे लागल रहए तँए कियो ने आएल।

पोह फटिते देवन विदा हुअ चाहलक मुदा फेर मनमे एलै जे जाइसँ पहिने कनी महंथजीक अन्तिम दर्शन कऽ लेब उचित हएत। रूकि गेल। मुदा अन्हारक दुआरे ने अखन धरि मन्दिरक छज्जीपर सँ गाछक डारि हटौल गेल आ ने महंथजी छज्जी तरसँ निकालल गेल। किएक तँ डारियो छोट-छीन नहि जे दू-चारि गोरे धींच कऽ कात कऽ दइत। बिनु कुरहैरसँ कटने डारि हटैबला नहि। सेहो अन्हारमे केना होएत। डारिक तरमे मन्दिरक छज्जी आ मन्दिरक छज्जी-तरमे महंथजी आ पुजेगरी। फेर देवनक मनमे एलै जे जइ महंथजी आ पुजेगरीकें देखैले अँटकल छी, ओ जीवित हेता आकि मुइल?

..तर्क-वितर्क करैत देवनक मनमे एलै जे जखन मन्दिरे खसि पड़ल तखन महंथ आ पुजेगरी केना बँचत। अनेरे हम कोन भाँजमे पड़ल छी। ऐठामसँ रबाना भऽ जाइ। ऐठाम जेतेकाल रहब तेतेकाल असमसानमे रहनाइ हएत। असमसानमे रहि अनेरे किए जिनगी गमाएब। ओह! जेते जल्दी हुअए तेते जल्दी ऐठामसँ विदा भऽ जाइ। देवन विदा भऽ गेल।

..रस्तामे थोड़े दूर गेलापर देवनक मनमे उपकल जे मृत्यु की छी? आइ धरि देवनक मनमे एहेन प्रश्न कहियो ने उठल छेलइ। उठबो केना करितै अखन धरि आँखिसँ जे मृत्यु देखै छल, ओकरे मृत्यु बुझैत रहए। मुदा आइ महंथजीक मृत्यु देखलापर, देवनक मनमे ऐ दुआरे प्रश्न उठल जे लोकक मुँहक सुनल बात झूठ बुझि पड़लै। लोकक-मुहें

सुनैत आएल छल जे जे जेहेन करत ओकर मृत्यु ओहने हेतइ। मुदा महंथजी आ पुजेगरी तँ भरि दिन भगवानेक मन्दिरमे रहि, हुनकें टहल-टिकोरा करैत, तखन एहेन मृत्यु..!

'मृत्यु' छिऐ कथी ऐ प्रश्नपर देवन सोचए लगल जे मृत्युकें जीवनक पुर्ब पक्ष कहबै आकि उत्तर पक्ष? पुर्ब पक्ष ऐ दुआरे जे नीक विचारक जन्म होइते पुरान विचारक मृत्यु भऽ जाइ छइ। तहिना नव जीवक जन्म होइते पुरना जीवन समाप्त भऽ जाइ छइ। ऐ द्वन्द्वमे देवनक मन नीक नहाँति ओझरा गेल। फेर दोसर प्रश्न मनमे उठलै जे संगीत शास्त्री लोकैन सभ, गीतकें अवसर विशेषक आधारपर गीतक निर्माण केलैन मुदा 'सोहर' आ 'समदाउन'कें किएक जन्मोत्सवोमे आ मृत्योत्सवोमे मानि लेलखिन? जखन कि दुनू दू अवसर छी? ..देवनक मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। जहिना नसेरी अपने धुनियेँ रस्ता कटैत तहिना देवनो आगू बढ़ैत जाइत। चलैत-चलैत देवन बिनु खेने-पीने, दुपहर तक चलिते रहल। ने भूख दिस मन जाइ छेलै आ ने पियास दिस। जेना कोनो सुधिए ने रहलै। जाइत-जाइत देवन एकटा फूलक गाछ लग पहुँचल। फूलक गाछ लग पहुँचते देवनक भक खुजलै। रूकि गेल। ओइ फूलक गाछकें निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। फूलक गाछ देख देवनक मुहसँ अनासुरती निकलल-

"एहेन फूल तँ आइ धरि नै देखने छेलौं!"

सुन्नर आ सुडौल गाछ। जगह-जगह डारि फुटल। जेहने गाछक धड़ चिक्कन तेहने डारि। हरिअर-हरिअर, चौड़गर-चौड़गर पात नमहर-नमहर, लाल-लाल फूल। मखानी गुलाब जकाँ फूलसँ लदल गाछ। एकान्त जगह। फुलक गाछ देख देवन मने-मन सोचलक जे अखन भरि-दुपहर एतै रहब। रहैक विचार कऽ गाछक निच्चाँमे बैस रहल...।

मन्द-मन्द शीतल हवा बहैत बारह बजेक समए। तेज धूप।

गरमीसँ वायुमण्डल गर्म होइत जाइत। राही-बटोही, जहाँ-तहाँ रूकि-रूकि, दुपहर बितबैक ठौर पकैड़ लेलक। भूख-पियास देवनक मेटा गेल। गाछक निच्चेमे ओ चीत गरे सुति फूल सभकेँ देखए लगल। आँखि फूलेपर रहै मुदा मन अपन जिनगीक उदेसपर पहुँच गेलइ। जिनगीक उदेसपर मनकेँ पहुँचते देवन सोचए लगल जे मनुखक जिनगीक रस्तामे कहियो फुलवाड़ी भेटैत तँ कहियो काँटक बोन। दुनूक बीच होइत जिनगी चलैत। मुदा काँटक बोन देख मनुख घबड़ा जाइत जखन कि फुलवाड़ीमे सतत रहैक चेष्टा करैत। मुदा फूलेक गाछमे काँटो होइत आ काँटेक गाछमे फूलो, तखन मनुख केना अगबे फुलवाड़ीमे रहि पौत?

चारि बजि गेल। राही-बटोही अपन-अपन रस्ता-बाट धऽ चलए लगल। राही-बटोहीकेँ देख देवनोक मनमे एलै जे सुतलासँ तँ नै हएत, जँ किछु हएत तँ चलनहि। जँ आइ चलि कऽ ऐ फूलक गाछ लग नै पहुँचल रहितौं तँ एहेन फूलक गाछक दर्शन केना होइतए।

उठि कऽ बैस देवन हियाबए लगल आकि एकटा बटोहीकेँ उत्तरसँ दच्छिन-मुहें अबैत देखलक। बटोहीकेँ देख देवनक मनमे एलै जे भरिसक हमरे जकाँ ईहो बटोही अछि, किए तँ ने देहमे अँगा देखै छिऐ आ ने माथपर कोनो वस्तु। सिरिफ हाथमे एकटा छोट-छीन मोटरी लटकौने अछि। मुदा उत्तरसँ आबि रहल अछि तँए उत्तर दिशाक रस्ता तँ हिनका जरूर बुझल हेतैन। किएक तँ हमरो ओम्हरे जेबक अछि। अबैत-अबैत बटोही ओइ फूलक गाछ लग आबि रूकि गेला। बटोहीक नजैर देवनपर आ देवनक नजैर बटोहीपर पड़ल। मुदा दुनूमे कियो केकरो नै टोकैत। दुनू मगन। अपना-अपना तालमे दुनू बेहाल। मुदा देवनक मनमे एलै जे हम हिनका आगूमे बच्चा छी तँए हमर पूछब उचित हएत। देवन ओइ बटोहीकेँ पुछलक-

"दादा, हमरा उत्तर-मुहेँ जेबक अछि तँए अपने रस्ताक सम्बन्धमे किछु बता दिअ?"

देवनक बात गौरसँ बटोही सुनि बजला-

"बौआ, तूँ भूखल बुझि पड़ै छह, किएक तँ तोहर मुँह सुखाएल छह, तँए पहिने खा लएह। हमरो ई मोटरी भारी लगैए। तोरो पेट भरि जेतह आ हमरो जान हल्लुक भऽ जाएत।"

बटोहीक बात सुनि देवन किछु नै बाजल। बटोही बुझि गेलखिन जे वेचारा भूखल अछि। खाइक इच्छा भऽ रहल छै तँए ने किछु बाजल। ..उठि कऽ देवन लग आबि मोटरी आगूमे दऽ देलखिन। देवन मोटरी खोलकक तँ देखलक जे खाइ-पीबैक ओहन-ओहन विन्यास सभ अछि जे आइ धरि खाइक कोन बात जे देखनौं ने छेलौं! भरि पेट खा देवन फेर बाजल-

"दादा, अपने उत्तर दिशाक रस्ता बता दिअ?"

बटोही-

"आगूक रस्ता बुझि कऽ कि करबहक?"

"दादा, दुनियाकेँ देखैक लिलसा मनमे अछि तँए घरसँ निकलल छी।"

मुस्कियाइत बटोही कहए लगलखिन-

"दुनियाँ किछु ने छी। माटि, पानि, अकास आ हवाक बनल एकटा गोला छी। अही सभसँ जनैम-जनैम, जइ दुनियाकेँ देखै छहक से ठाढ़ भेल अछि। मुदा सौंसे एक रंग नै भऽ एक-भगाह भऽ गेल अछि। एक भाग निरोग अछि आ दोसर भाग सड़ल। तहूमे सभसँ अजीब बात ई अछि जे दुनियाँक बीचो-बीच एकटा रेखा घिचल अछि, जेकरा लोक विषुवत रेखा कहै छइ। रेखा पूबे-पछिमे अछि।

रेखाक दुनू भाग समान दूरीपर एक्के रंग रौद-वसात आ उपजा-बाड़ी-ले मौसम होइ छइ। गाछो-बिरीछ एकरंगाहे अछि। मुदा सभ किछु एक रंग रहितो, मनुख दू रंगक अछि। एक भागक अगुआएल अछि आ दोसर भागक पछुआएल। तहिना देखबहक जे दुनियाँक मनुखो दू दिस भऽ गेल अछि। एक भागक खूब पछुआएल अवनतिक शिखरपर अछि। मुदा सभ किछुमे विषमता रहितो एक चीजमे समता अछि। ओ छी नंगापन। जे अगुआएल मनुख अछि ओ देखैमे दूध जकाँ उज्जर धप-धप, गाए-महींस जकाँ ओकर देह आ हाथ-पएर छइ। खाइयो-पीबैक आ रहैयोक बेवस्था नीक छइ। मुदा ओ महिला सभ जे कपड़ा पहिरैए से ओहन झकझकौआ मेही होइ छै जे देखलासँ बुझि पड़तह जे कपड़ा पहिरनहि ने अछि। ओहिना सौंसे देह देखबहक। तहूमे जँ केतौ देखैमे झल बुझि पड़ह तँ चश्मा लगा लिहह। ..तहिना दोसर दिस देखबहक जे मनुखकेँ गरीबी ओइ रूपे जकड़ने अछि जे ने भरि पेट अन्न भेटै छै आ ने देहमे वस्त्र। तँए अभावे ओ सभ नाँगट रहैए। ने खाइक ठेकान आ ने रहैक। ने वस्त्रक कोनो उपए, तँए नाँगट रहैए। देहक हाड़ चारि लग्गी हटलेसँ गनि लेबहक। कंकाल जकाँ देह, कारी खट-खट रंग, साबे जकाँ केश वेचारी सबहक रहै छइ। ..मनुखक समाजमे वस्त्रकेँ परदा मानल गेल अछि आ अहीसँ इज्जत-आबरू देखल जाइ छइ। मुदा एकटा सवाल पुछै छिअ, कहह जे दुनू औरतमे केकर इज्जत-आबरू बँचल छै आ केकर नहि?"

बटोहीक बात सुनि देवन धड़फड़ा कऽ बाजल-

"जेकरा देहपर वस्त्र छै ओ इज्जतदार।"

बटोही-

"धुर्र बुड़ि! एतबो ने बुझै छहक। अच्छा कोनो बात ने। तूँ अखन बच्चा छह तँए नै बुझै छहक। देखहक, लोके-लाज दुआरे ने

लोक कपड़ा पहिरैए किएक तँ मनुखमे बुधि‍-विवेक होइ छइ। तँए किछु अँगकेँ गुप्त अँग मानल गेल अछि। जेकरा देहपर वस्त्र छै ओकरापर आँखि गड़ा कऽ देखनिहारो बेसी अछि। मुदा जेकरा देहपर वस्त्र नइ छै, नरकंकाल जकाँ अछि ओकरापर नजैरे केकर पड़त जे लोक-लाजक प्रश्न उठतै। आब कहह जे केकर इज्जत-आबरू बँचल अछि। जेकर बँचल छै सएह ने इज्जतदार।"

बटोहीक बात सुनि देवन मुड़ी डोलबैत हुँहकारी भरलक।

हुँहकारी पेब बटोही बजला-

"आब दोसर बात सुनह। दुनियाँमे जेते मनुख अछि, सभ मनुख छी। सभकेँ एक्के रंग सभ अँग छइ। हाथ, पएर, मुँह, नाक, कान इत्यादि। सभ अन्न खाइए, पानि पीबैए, कपड़ा पहिरैए आ रौद-वसात, पानि, पाथर आ जाड़सँ बँचै दुआरे घरमे रहैए। अस्सक पड़लापर दबाइक जरूरत होइ छइ। बुधिक दुआरे पढ़ैए। मनोरंजनक दुआरे नचबो करैए आ गेबो करैए। तँए सभ-ले एक रस्ता हेबा चाही। नीक रस्ताकेँ धर्मक रस्ता मानल गेल अछि आ अधला रस्ताकेँ पापक। तखन आब तोँही कहह जे भदबरिया बेंग जकाँ एते सम्प्रदाय किएक अछि? एक काज-ले रस्ता अनेको भऽ सकैए मुदा सभसँ नीक रस्ता तँ एक्केटा हएत। जखन एक्केटा रस्ता नीक हएत तखन एते रस्ताकेँ कोन जरूरत। तइले लोक एते मारि-मरौवैल, गारि-गरौवैल किए करैए?"

मुड़ी डोला देवन समर्थन केलक। देवनक मुड़ी डोलौनाइ आ मुँहक रूखि देख बटोहीक मनमे खुशी होइत रहैन। मनमे खुशी ऐ दुआरे होनि जे हम्मर बात देवनक हृदैमे चुभि रहल अछि। औरो आह्लादित होइत बटोही कहए लगलखिन-

"बौआ, अजीव अछि दुनियाँ। कहए तँ बहुत चाहै छी मुदा तोहूँ अनतए छह आ हमहूँ अनतए छी। तोहूँ केतौ जा रहल छह आ हमहूँ

बाटेमे छी। मुदा तैयो जेतबे समए अछि तेहीमे किछु बुझि लएह, जिनगीमे काज औतह। तहूमे अखन तूँ बच्चा छह बहुत दिन ऐ धरतीपर जीबैक छह। जहिना घर बान्हैले एक्के ढंगसँ अनेको घर बनैत, एक्के किताब पढ़लासँ अनेको लोककेँ ज्ञान होइत तहिना तँ जिनगीक आवश्यकता-ले एक्के लूरिसँ काज चलि सकैए। तखन एते रंग-बिरंगक चालि किए महंथ–सम्प्रदाय चलौनिहार–धरबैए? केते अजगूत बात अछि जे कियो खा कऽ पूजा करैले कहैए तँ कियो भूखले। तहिना कियो दाढ़ी-केश बढ़ा पूजा करैए तँ कियो दाढ़ी-केश कटा कऽ। कियो माटिक भगवान बना, तँ कियो पाथरक तँ कियो ओहिना, बिनु मूर्तियेक। तहिना कियो मन्दिर बना, तँ कियो मस्जिद बना, तँ कियो गिरिजाघर बना कऽ पूजा करैए। ..नहि जानि केते रंगक देवालय होइत। तँ कियो ओहिना, बिनु मन्दिरे, मस्जिदेक- कियो भगवानकेँ परसाद चढ़बैत तँ कियो बिनु परसादेक पूजा करैत। कियो ताड़ी-दारू पीब, माछ-मौसु खा पूजा करैत तँ कियो ओकरा अधला कहि निन्दा करैत। कियो नारीकेँ मुक्तिक मार्गक बाधा बुझैत तँ कियो नारीए पूजाकेँ उद्धारक रस्ता बुझैत। अजीव अछि ई दुनियाँ आ अजीव अछि ऐ दुनियाँक लोक। कियो वेश्याकेँ अधला बुझैत तँ कियो पूजा करैकाल वेश्या नचबैत। कियो-ढोलक-झालि, मजीरा बजा कीर्तन-भजन करैत तँ कियो ओहिना बिनु साजे-बाजक।”

जहिना कोनो खेलौना वा पढ़ै-लिखैक कोनो वस्तु-ले बच्चा सभ अपनामे छीना-छीनी करैत तहिना देवनक मनमे, हुअ लगल। देवनक मुँहक बिजकब देख बटोही मने-मन सोचए लगला। जे वेचारा द्वन्द्वमे पड़ि गेल अछि। कखनो मन गुड़ैक कऽ एमहर तँ कखनो ओमहर भऽ रहल छइ। मन असथिरे ने भऽ रहल छइ। कनीकाल बटोही गुम्म भऽ देवनक भावनाकेँ अँकए लगला। देवनक मन कखनो खुश होइत तँ कखनो चिन्तित भऽ जाइत। कखनो मुहसँ हँसी निकलैत तँ कखनो

कानै सन भऽ जाइत। ओना, बटोही मने-मन हँसैत रहैथ मुदा मुहसँ बाहर हँसीकेँ निकलए नइ दैत रहथिन। बटोहीक मनमे एलैन जे आब विषय बदैल दी। बजला-

“बौआ, देखै छहक ने जे केकरो घरमे अन्न सड़ैए तँ कियो भूखले रहैए। केकरो गामक-गाम खेत छै, तँ केकरो घरो बन्हैले ने छइ। केकरो धरमे कपड़ा सड़ै छै तँ कियो नँगटे रहैए। कियो कोठाक भीतर कोठा बनौने अछि तँ कियो गाछक निच्चाँमे रहैए। केकरो बोरे-बोरा नून तँ केकरो रोटियोपर ने होइत। कियो दबाइकेँ सड़ा-सड़ा पानिमे फेकैत तँ कियो दबाइ बिनु मरैए। केते कहबह पहिनहि कहि देलियह जे ऐ दुनियाँक एक भाग निरोग अछि तँ दोसर भाग सड़ल छइ।”

देवनक चेहरा उदास हुअ लगल। मुँह मलीन आ आँखिक ज्योति बदलए लगल मुदा ज्ञानक भूख मनमे आरो जागए लगलै। मने-मन देवन सोचलक जे जखन एतबे दूर एलापर एतेक भेटल तँ ऐसँ आगू गेलापर केते भेटत। ई बात मनमे अबिते देवन बटोहीकेँ कहलकैन-

“दादा, जखन एते दूर आबिए गेलौं तँ ऐगलो रस्ता बता दिअ, ओहो देखिये कऽ घूमब।”

मुस्कियाइत बटोही आगूक अनुभव बाजए लगला-

“ऐठामसँ कोस भरिपर मनपुर अछि। जखन ओइठाम पहुँचबह तँ देखबहक जे किछु गोरे पल्था मारि बैसल अछि आ मने-मन जिनगीक हिसाब जोड़ैए जे जेते समए खटै छी ओइसँ जे उपारजन होइए, ओहिक भीतर अपन जिनगीकेँ रखि जीबी। आ सएह करबो करैए। मुदा भेड़िया-धसान लोककेँ देखबहक जे खड़क बैलून जकाँ हवामे उड़ैए जइसँ केते फुटिये जाइत अछि आ केते गिरबो करैए,

जेकर कोनो ठेकानो ने छइ। तँए तूँ ओइ बैसलाहा लोक सबहक दर्शन करिहह। ओकर दर्शन सीखि जिनगी बनबिहह। जिनगी की छी? जिनगी तँ वएह छी जे मनुख बनि जिनगी जीब लेब छी। ..मनपुरसँ कोस भरि आगू बुधिपुर अछि। जखन बुधिपुर पहुँचबह तँ देखबहक जे ऐठाम जेते लोक अछि सभ जुआरी अछि। भरि दिन, भरि राति जुए खेलाइए। ओ जुआ खेलाइक पासा तीन तरहक अछि। एक तरहक पाशा अछि जइमे बाप-बेटा खेलाइए। खेलाइत-खेलाइत अपनामे गारि-गरौवैल करए लगैए। बाप बेटाकेँ कहै छै, ‘सार तूँ बेइमान छँह।’ तहिना बेटो बापकेँ कहै छै, ‘सार, तूँ बेइमान छह।’ ..देखबहक जे बाप-बेटा सार-बहानचो करैए। मुदा ओइठाम बेसी नै अँटकिहह। देख कऽ आगू बढ़ि जइहह। किएक तँ ओ सार दुनू चोट्टा छी। जहिना छोटका माछक बोर दऽ बंशी खेलेनिहार, बड़का माछ मारि लइए तहिना ओ सभ छोटका गारि देखा फंसा लेतह आ गारि पढ़तह। तँए देख कऽ तुरन्त हटि जइहह। ..दोसर पासा देखबहक जे भाए-भैयारी आमने-सामने बैस जुआ खेलाइए। खेलाइत-खेलाइत देखबहक जे दुनू एक-दोसरकेँ बेइमानी करए लगैए। जइसँ गारि-गरौवैल, मारि-मरौवैल करए लगैए। मुदा ओहो दुनू नमरी चोट्टा छी। तँए ओकरो देख कऽ लगले हटि जइहह। जँ अँटकबह तँ धोखामे पड़ि जेबह। ..तेसर पासा जे देखबहक ओ असली पासा छी। ओइमे देखबहक जे दू परिवारक लोक जुआ खेलाइए। कसमकस खेल ओइ पासापर होइ छइ। दुनू खेलाड़ी सभ तरहक शक्ति लऽ कऽ खेलाइए। गारिक जवाब गारिसँ, मारिक जवाब मारिसँ, लाठीक जवाब लाठीसँ आ बम-बारूदक जवाब बम-बारूदसँ देल जाइ छइ। ओइ पासाकेँ देख मनमे हेतह जे हमहूँ एक भाँज खेलि ली। ओइठाम अँटैक जइहह। जेते दिन देखैक मन हुअ तेते दिन ओतै रहिहह...।”

बटोहीक बात सुनि देवनकेँ मनमे खुशी भेलइ। मुस्की दैत

पुछलक-

“ओइठिनसँ कियो भगौत तँ ने?”

बटोही-

“हँ! एक पासाक खेलाड़ी भगौनिहार अछि मुदा दोसर रखनिहार। जे बचेनिहार हेतह। ओकरा ‘भाय’ बुझि पिठपर रहिहक। ओ जे जीतत तइसँ तोरो लाभ हेतह। ओ सिरिफ अपनेटा लऽ नै खेलैए तोरोले खेलैए, सभ-ले खेलैए।”

बटोहीक बातकेँ गौरसँ सूनि देवन मुड़ी डोला सोचिते छल आकि फेर बटोही बजला-

“ओइठाम देख आगू बढ़ि जइहह। ओइठामसँ कोसे भरि आगू विवेकपुर अछि। जखन बुधिपुरसँ आगू बढ़बह तँ विवेकपुर लगे बुझि पड़तह। जाइकालमे सेहो नहि बुझि पड़तह। मुदा बिनु विवेकपुर गेने आपस नै घुमिहह। जखन विवेकपुर पहुँच जेबह तखन विवेक बाबासँ भेँट हेतह। विवेके बाबाकेँ लोक ज्ञानेश्वर, धर्मगुरु, जगत पिता सेहो कहै छैन। ओइठाम देखबहक जे रंग-बिरंगक ढेरो घोड़ा अछि। एक-सँ-एक सुन्नर, एक-सँ-एक तेज दौड़ैबला। केकरो बान्हल नै देखबहक। ओहिना बिनु बन्हले सभ रहैए। विवेके बाबाक टहलू हम छी। टहैल-टहैल दुनियाँ देखै छी।”

‘विवेक बाबाक टहलू सुनि बिच्चेमे देवन पुछि देलकैन-

“ऐठाम किए आएल छेलौं?”

बटोही-

“अही फुलक गाछकेँ देखैले आएल छेलौं। हँ, जे कहै छेलियह से सुनह। ओइठाम पहुँचते विवेक बाबा भेँट भऽ जेथुन। घोड़ा सभ हिहियाइत देखबहक। अनेरे लगमे आबि-आबि चारूभरसँ घोड़ा सभ

घेर लेतह।”

देवन-

“घोड़ा बदमाशियो करै छइ?”

बटोही-

“नहि। हँ! तखन एकटा बात जरूर छै जे गोटे-गोटे घोड़ा एहेन अछि जे घोड़ी देख कऽ थोड़े रस्ता काटि दइ छै, मुदा घुमि कऽ फेर रस्तापर चलि अबैए।”

साँझ पड़ि गेल। मुदा अन्हार नहि बुझि पड़ैत। बजैत-बजैत बटोही केमहर चलि गेला से देवन देखबे ने केलक। देवनो तँ असगरे चलनिहार तँए मनमे कोनो शंको नहियेँ भेलइ। एक मन कहै जे आइ एतै रहि जाइ छी आ दोसर मन कहै जे जेते रस्ता काटि लेब ओते तँ अपने असान हएत, किएक तँ जेते चाहै छी ओ तँ केनहि हएत। दोसर दिन भोरे देवन विदा भेल। पहिलुका जकाँ देवन आब नै रहल। सोलहन्नी तँ नै मुदा अठन्नी जरूर बदैल गेल। रस्तामे मन्दिरपर नजैर पड़ै तँ आँखि निच्चाँ केने आगू बढ़ि जाइत रहए। भिनसुरका समए तँए रौदो बेसी तीख नहि। हवाक सिहकी चलैत तँए चलैमे बेसी मन लगैत। जाइत-जाइत देवन एकटा बड़का मन्दिर देखलक। शंखमरमरसँ बनल। हालेमे रंग-टीप भेने विशेष आकर्षक। मन्दिरक चारूभाग छहरदेबाली। साइयो बीघासँ ऊपर मन्दिरक अगवास। छहरदेबालीक भीतर एकटा नमहर पोखैर, करीब दस बीघाक कलम, जइमे अगबे बम्बइ आम। हजारोसँ ऊपर नारियलक गाछ। कमोवेश सभ फल। पोखैरक मोहारपर धरमशाला। नहाइले पोखैरमे सिमटीक घाट बनौल। रस्ताक तर देने बिजली तार। एक्केटा रस्ता। जइमे लोहाक फाटक लगल। फाटकमे खूब नमहर पितरिया ताला झूलैत। चारि बजे भोरमे फाटक खुलैत आ आठ बजे साँझमे बन्न भऽ जाइत।

फाटक बन्न भेलापर ने बाहरक लोक भीतर आबि सकैत आ ने भीतरक बाहर जा सकैत। ई महंथजीक कड़गर आदेश छेलैन। इलाकाक लोक महंथजीकेँ जेहने कड़गर बुझैत तेहने चरित्रवान, तँए विशेष इज्जत। ..मन्दिर लग पहुँचते देवनक मन डोलि गेलै जे कनी भीतर जा कऽ देखिऐ। थोड़ेकाल रस्तापर ठाढ़ भेल। बाहरोक लोककेँ भीतर जाइत देखलक आ भीतरोक लोककेँ बहराइत देखलक। देवन सेहो भीतर गेल।

भीतर पहुँच देवन हियासि-हियासि मनुखोकेँ आ मन्दिरक बेवस्थोकेँ देखए लगल। बड़ सुन्नर बेवस्था बुझि पड़लै। चकचक करैत मन्दिर। मन्दिरक आगूमे पानिसँ धुअल अग्रेय। अगरबत्तीक सुगन्धसँ मन्दिरक चारू भाग मह-मह करैत। फुलडालीमे फूल लेने कियो तमही लोटामे तँ कियो पितरिया लोटामे जल लऽ पूजा करैले जाइत। तँ कियो पूजा कऽ घुमितो। मन्दिरक आगूमे ठाढ़ भऽ देवन गोड़ लगलक। गोड़ लगिते देवनकेँ बुझि पड़लै जे जहिना ई तीर्थ स्थान अछि तहिना तँ मनुखक देहो छइ। एकाकार भऽ गेल। अपना देहेमे तीर्थ स्थान बुझि पड़लै। मन्दिरसँ निकैल देवन धुमए लगल।

फुलवाड़ीक फूल देख मन गदगद भऽ गेलइ। फुलवाड़ीसँ निकैल सोझे धरमशालामे पहुँचल। धरमशालाक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ स्थानोक बबाजी आ बाहरोसँ आएल यात्रीकेँ हियासि-हियासि देखए लगल। मन्दिरक बाबाजी आ यात्री दू रंग देवनकेँ बुझि पड़लै। दुनू तरहक लोकमे दू रंग विचार आ काज देखलक। दू रंग देख देवन आरो लगमे जा देखए लगल। बाहरक जे यात्री रहै, ओकर मन आ हृदए पवित्र बुझि पड़लै। छल-प्रपंचसँ दूर। भगवानक प्रति श्रद्धा। ..यात्री सभपर सँ नजैर हटा देवन स्थानक बबाजी सभपर गड़ा कऽ देखलक। मन्दिरक जे बबाजी सभ छल, ओकर चालियो-चलन आ मनो अशुद्ध बुझि पड़लै। बबाजी सभ अपन-अपन रूप बना रहल अछि। कियो

सौंसे देह भष्म लगा-लगा, कियो डाँरमे मात्र चारि आँगुरक बिस्टी पहिर रहल अछि तँ कियो सोलहन्नी सौंसे देह छाउर ओंसि नंगे तैयार भऽ रहल अछि। कियो रेशमी धोती कुरता पहिर साधारण तिलक लगा तैयार भऽ रहल अछि, तँ कियो भिखमंगाक रूप बना रहल अछि। रूप बना-बना कियो गांजा पीब, कियो अफीम खा, कियो दारू पीब तँ कियो भाँग खा तैयार भेल। सबहक आँखि तरेगन जकाँ चमकए लगल। अपन-अपन सभ समान ओरिया कऽ धरमशालामे रखि निकलए लगल। धरमशालामे मात्र बाहरक जे यात्री छल ओतबे रहल। ओहो सभ अपन-अपन मोटरी सम्हारि जाइक तैयारी करए लगल।

रंग-बिरंगक रूप देख, देवनक मनमे सबहक करतूत बुझैक जिज्ञासा जोर मारलक। मुदा कहत के? मने-मन देवन सोचए लगल जे के एहेन लोक भेटत जेकरासँ पुछिऐ। ..गुन-धुन करैत देवन धरमशालाक भनसिया लग पहुँचल। भनसिया सभ बरतन-बासन मँजैत। एकटा बरतन लऽ देवनो मँजए लगल। अनठिया देवनकेँ देख एक गोरे पुछलकै-

“भाय, तूँ केतए रहै छह?”

भनसियाक बात सुनि देवनमे सन्तोष भेलै जे एकरासँ सभ बातक भाँज लगि जाएत। उत्तर देलकै-

“भाय, हम तँ बहुत दूर देहातमे रहै छी। बहू दिनसँ ऐ स्थानक विषयमे सुनै छेलौं। मुदा ने बटखर्चा होइ छलए आ ने अबै छेलौं। ऐबेर खरचाक जोगार भऽ गेल तँ आबि गेलौं।”

भनसिया-

“केते दिन रहबह।”

देवन-

“जेते दिन मन लागत।”

भनसिया-

“बड़बढ़ियाँ, हमरे सभ संगे भंडारमे रहह। कोनो-कोनो काजो करिहह आ जे मन हेतह से खेबो करिहह।”

देवन-

“बड़बढ़ियाँ।”

देवनकेँ बात बुझैक जोगार भऽ गेलइ। जोगार देख देवन मने-मन खुश होइत पुछलक-

“भाय, अखन जे बबाजी सभ निकलल ओ कखन घुमि कऽ औत?”

“किरिण डुमैत।”

“भरि दिन केतए रहत आ की करत?”

देवनक प्रश्न सुनि हँसैत एक गोरे कहलकै-

“कियो स्थानक नाओंसँ चन्दा करत, कियो हाथ देख-देख दैछना लेत, कियो भीख मांगत इत्यादि। जेतए जेकरा जेहेन गर भेटतै से करत।”

“जखन सभकेँ खाइले भेटते छै तखन चन्दा, दैछना आ भीख की करत?”

“जे भीख मांगत ओ एक्को पाइ स्थानमे जमा नै करत मुदा जे रसीद काटि चन्दा करत ओ अदहा-अदही स्थानमे जमा करत।”

“बाँकी रूपैआ लऽ कऽ की करतै?”

देवनक बात सुनि सभ भनसिया ठहाका मारलक। एक गोरे हँसिते-हँसिते बाजल-

"भने ऐठाम एलह। दू-चारि दिन रहह तखन सभ किरदानी आँखिएसँ देखबहक। मुहसँ कहलापर किछु बिसवासो हेतह आ किछु नहियेँ हेतह।"

"महंथजी कोन मकानमे रहै छैथ?"

ओंगरीसँ देखबैत कहलकै-

"ओ दू महला कोठा देखै छहक, ओकर निचला हन्नामे स्थानक राशन-पानी रहै छै आ ऊपरका हन्नामे आठ गो कोठली छइ। आठो कोठली असगरे रखने अछि।"

"ओइमे सभकेँ जाए नै दइ छै, कनी हमहूँ जा कऽ देखतिऐ?"

"नहि। ओइमे सभ नै जाइए। अगर देखैक मन हुअ तँ भिनसुरका पूजा समाप्त भेलापर कातमे ठाढ़ भऽ कऽ देखिहक।"

"की सभ होइ छइ?"

"पूजाक पछाइत सभ अपन-अपन ठौरपर चलि जाइए। तेकरा पछाइत लीला शुरू होइ छइ। मुदा बेसी नै कहबह। ओइ कोठा छोड़ि सौंसे सभ घुमि सकैए। तँए जलखै खा लएह आ सौंसे देख आबह।"

"बड़बढ़ियाँ।" कहि देवन जलखै खा धुमैले विदा भेल।

दच्छिन-मुहेँ देवन विदा भेल। दछिनबारि भाग बजार जकाँ बनल। कनी हटि कऽ देखलापर छोटे बुझाइ मुदा भीतर पसिते खूब नमहर देख पड़लै। उत्तरे-दच्छिने रस्ता। रस्ताक दुनू बगल डेरानुमा घर। पानि, बिजली सौंसे। घरक ओसारपर गद्दीदार कुरसी लागल। साइयोसँ ऊपरे डेरा, जइमे ढेरबा लड़कीसँ लऽ कऽ अधवयसू औरत धरि। मरदक नामो-निशान नहि। वेश्यावृत्तिसँ लऽ कऽ गान विद्यामे सभ निपुण। स्थानक धूप-आरतीसँ लऽ कऽ अपन वृत्ति धरि सबहक काज। रस्ते-रस्ते देवन आगूओ बढ़ैत आ दुनू बगली देखबो करैत।

जाइत-जाइत देवन दछिनबरिया छोर लग पहुँचल। डेरा सबहक रूप-रंग देख देवनक मनमे एलै जे किछु दिन ऐठाम रहब जरूरी अछि। बिनु रहने नीक-नहाँति नहि बुझि सकब। जखन ऐठाम आबि गेलौं तखन सेरिया कऽ बुझने बिना चलि जाएब बचपना हएत। फेर मनमे होइ जे अबैत-अबैत केतए आबि गेलौं। लोक अधलासँ नीक दिस बढ़ैए आ हम अधले दिस चलि एलौं। फेर मनमे होइ जे अधला जगह होइ छै, अधला काज होइ छै, अधला विचार होइ छै, मुदा ओहो तँ ज्ञान रूपमे होइए, तँए ज्ञान अरजन करब तँ अधला नइ छी। तोहूमे अधला काज केनिहारो तँ कम नइ अछि। अगर जँ हम अधला काजकेँ नै जानब तँ ओइकेँ अधला बुझि परहेज केना करब...। तत्-मत् करैत देवन दछिनबरिया छोरपर ठाढ़ भऽ आँखि उठा-उठा चारू भाग देखए लगल। पूबारि भागक डेराक ओसारपर एकटा शील भंग जुआन लड़की देवन दिस छल। ओइ लड़कीकेँ अपना दिस देखैत देवनो ओकरे दिस ताकए लगल। दुनू दुनूकेँ दखैत मुदा आँखिमे आँखि मिलिते लड़की आँखि निच्चाँ कऽ लइत। देवनोक मनमे ओइ लड़कीक प्रति उत्सुकता जगलै। मुदा धड़फड़ा कऽ पूछत की? बड़ीकाल धरि देवन ओतै ठाढ़ रहल। डरो होइ तँए मुँह सुखल जाइ। देवनक उतरैत चेहरा देख ओ लड़की पुछलक-

"किनको तकै छिऐन?"

देवन-

"तकै नै छिऐन। देखैले एलौं हेन।"

"आउ, ऐठाम आबि कऽ बैसू।"

'बैसू' सुनि देवन ससरैत आगू बढ़ल। बेर-बेर ओ लड़की देवनो दिस मुड़ी उठा कऽ देखैत आ फेर मुड़ी निच्चो कऽ लइत। जहिना कियो आन मुलुकक जहलमे जिनगी भरिक सजा कटैत, जैठाम ने

अपना मुलुकक एकोटा लोक रहैत आ ने घुमि कऽ अपना मुलुक अबैक आशा रहैत, वएह दशा ओइ लड़कीकेँ मने-मन होइत। ..देवन आबि कऽ ओसारक कुरसीपर बैसल। देवनक सुखल मुँह देख ओ लड़की मने-मन सोचलक जे भरिसक भूखल अछि। मुदा देवनक मुँह भूखसँ नहि, डरसँ सुखल छेलइ। ओ लड़की पुछलकै-

"किछु खाएब?"

देवन-

"अखने खेलौं हेन। खाइक इच्छा नइ अछि।"

"ऐठाम अहाँ किएक एलौं? ई जगह मनुखक नइ छी।"

लड़कीक बात सुनि देवन चौंक गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि कऽ पुछलक-

"अगर मनुखक रहैक जगह नइ छी तँ अहाँ केना रहै छी?"

देवनक बात सुनि शान्तीक दुनू आँखिमे नोर आबि गेल। मनक सिमानेपर बोली अँटैक गेलइ। चकभौर कटैत चिड़ै जकाँ आँखि घुमए लगलै। ऊपरसँ नीचा धरि देवनकेँ निंगहारए लगल। बड़ीकाल धरि शान्तीक आँखि देवनकेँ देखैत रहल आ मन जिनगीक समुद्रमे उग-डूम करए लगलै। ने किछु शान्ती बजैत आ ने देवन। दुनू दुनूकेँ पढ़ैत। बड़ीकालक पछाइत शान्ती देवनकेँ कहलक-

"अहाँक प्रश्नक जवाब हम अखन नै देब। भानसो नै केलौं हेन। अहूँ आएल छी, तँए अखन भानस करए जाइ छी। निचेनमे अहाँक सवालक जवाब देब। ताबे अहूँ नहा लिअ।"

देवनकेँ शान्ती भीतर लऽ गेल। भीतरमे आँगन जकाँ बनल। चारू भरसँ छहरदेबाली। बाहरक केबाड़ शान्ती बन्न कऽ देलक। भीतरेमे सभ कथुक बेवस्था। नहेबोक, भानसोक। छोटे आँगन तइमे

टहलबोक बेवस्था।

शान्ती भानस करैले चुल्हि पजारलक। देवन अँगा निकालि नहाइक जोगारमे लगि गेल। मुदा, जेना शान्तियोक मन आ देवनोक मन एक-दोसरकेँ शोर पाड़ए लगलै। टंकीपर देवन ठाढ़ आ चुल्हि लग शान्ती बैसल। मुदा दुनू एक दोसर दिस देखैत। जहिना अजेगर साँपक आँखि-सँ-आँखि मिललापर ओकर आँखिक आकर्षण मनुख वेवस भऽ हटि नहि सकैत तहिना देवनो आ शान्तियोक बीच भऽ गेल। ..टंकीपर सँ ससैर देवन चुल्हि लग आबि गेल। खुला देह। सिरिफ धोतीएटा पहिरने। शान्तियो देहक आंगी निकालि सिरिफ सये-साड़ीटा पहिरने। देहक चिन्ता ने देवनकेँ आ ने शान्तीकेँ। जहिना बच्चामे भाए-बहिन नँगटे खेलाइत तहिना दुनू भाए-बहिन जकाँ एकठाम बैस जिनगीक गप-सप्प करए लगल।

शान्ती-

"अहाँ ऐठाम किए एलौं?"

देवन-

"बहिन, दुनियाँ देखैक खियालसँ घरसँ निकलल छी तँए ऐठाम एलौं। मुदा अहाँ किए एहेन बात पुछलौं?"

देवनक बात सुनि शान्तीक हृदए दहलए लगलै। मन विचलित भऽ गेलइ। बोली थरथराए लगलै। नमहर साँस छोड़ैत शान्ती कहलक-

"भैया, जँ अहाँ ऐठाम पहुँच गेलौं तँ नीक केलौं। किएक तँ बिनु देखने दुनियाकेँ बुझबै केना। जइ जगहपर आबि गेल छी, तैठाम दिनक क्रिया-कलाप भिन्न छै आ रातिक भिन्न। तँए दिनुका जे देखबै, ठीक ओकर विपरीत रौतुका देखबै। ओना, जँ अहाँ देखैले आएल छी तँ दिनुको आ रौतुको दुनू देख लिअ। मुदा तइ सभसँ पहिने हमर

जिनगी सेहो.. ।”

शान्तीक बात सुनिते देवनक मनमे जुआर-भाटा उठए लगल। शरीर काँपए लगलै। जहिना तेज हवा, ठाढ़ भेल मनुखकेँ अपन झोकासँ ठेलि दैत तहिना देवनक मन शान्तीक बातसँ घुसकए-फुसकए लगल। लाख परियास केलौपर देवनक मन डोलिते रहल। जहिना रथमे जोतल घोड़ा जखन अपन चालि पकैड़ लैत आ सहीस जँ केतबो छोर खीचि काबू करए चाहैत तैयो किछु-ने-किछु दूर घोड़ा बेकाबू भऽ बढ़िए जाइत, तहिना देवनोक मन भऽ गेल। मुदा, मनकेँ काबू करै दुआरे देवन मुँह बन्न कऽ आँखिएसँ अध्ययनो आ गपो करए लगल। जहिना शान्तीक मनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक तहिना देवनोक मनमे। दुनू दुनूकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। ने किछु शान्ती बजैत आ ने देवन। जेना दुनूक मन, एकठाम भऽ धारक रेतमे भँसियाएल जाइत।

बड़ीकाल पछाइत देवनक मन असथिर भेल। ताबे चुल्हिक आगि सेहो मिझा गेल। जहिना गाइक बच्चा, देहपर हाथ सहलेलासँ आँखि बन्न कऽ असुआ जाइत तहिना शान्ती सभ सुधि-बुधि बिसैर गेल। मन असथिर होइते देवन पुछलकै-

“अहाँक जिनगी!”

“हँ, हम्मर जिनगी!”

विस्मित भऽ देवन पुछलकै-

“कहू।”

शान्ति बाजए लगल-

“हमर जन्म एकटा सुभ्यस्त किसान परिवारमे भेल। जखन सात-आठ बर्खक छेलौं तखन माइक संग मेला देखए गामसँ दू कोस हटि गेलौं। सहस्र चण्डी यज्ञ होइत रहइ। नअ दिनक यज्ञो आ मेलोक

कार्यक्रम रहइ। तीन दिन तक तँ मात्र यज्ञेक कार्यक्रम चललै, चारिम दिनसँ नाच-तमाशा शुरू भेल। बड़का रास, थियेटर, नाच सभ रहइ। दिनमे खाली यज्ञक प्रक्रिया, विषय कीर्तन आ छकरबाजी चलै मुदा रातिक मेला जबरदस होइ। इजोतक एहेन बेवस्था रहै जे जहिना दिन तहिना राति बुझि पड़इ। दोकानो-दौड़ी तहिना पतियानी लगा कऽ सजल रहइ। बगलमे पच्चीस-तीस बीघाक आमक गाछी रहै जइमे मेला लागल छेलइ। पाँचम दिन, हमरा गामक लोक सभ मेला देखए गेल। हमहूँ माइक संग गेलौं। सौंसे मेला एक्के बेर घुमैत-घुमैत पएर दुखा गेल। सभ कियो जा कऽ एकटा आमक गाछक निच्चाँमे बैस गेलौं। सबहक विचार भेल जे रौतुको मेला देखनहि जाएब। खाइ-पीबैक कोनो कमीए ने रहए। ढेरो दोकान रहइ। आठ बजे रातिमे रासो आ थियेटरो शुरू भेल। दुनूक ऊँचगर मंच बनल रहै, तँए केतौ-सँ-केतौक लोक असानीसँ देखैत रहए। इजोतक नीक बेवस्था रहइ। दर्जनो जेनरेटर चलैत रहइ। लोकोक तेहने भीड़ छेलइ। मरद-मौगी मिझराएले। करीब दस बजे, एक्के बेर सभ जेनरेटर बन्न भऽ गेलइ। बिजली गुम्म होइते सौंसे मेला हल्ला हुअ लगलै। तैबीच एक गोरे हमरा उठा लेलक आ दोसर गोरे मुँह दबने, भीड़सँ निकैल गेल। हम जे किछु बजबो करी ओ बोली निकलबे ने करए। तहूमे तेतेक हल्ला होइत रहै जे के सुनत। दुनू गोरे एकटा जीपमे बैसा देलक। जीपोमे अन्हार। तँए नीक नहाँति देखबो ने करिऐ। तीनटा जीप आगू-पाछू लगल। तीनू एक्के बेर खुजल। ..मेलासँ करीब अदहा मील जीप गेल तखन मेलामे इजोत भेलै आ हल्लो कम भेलइ। जीपक इजोतो बड़ल। ..जखन जीपमे इजोत भेल, तखन आठटा आरो लड़कीकेँ जीपमे देखलिऐ। मन उड़ि गेल। डर हुअए जे केतौ मारि कऽ फेक देत। अबधारि लेलौं जे आइ मरले छी। मन पड़ल अपन गाम, अपन परिवार आ अपन कुटुम-परिवार। मुदा की करितौं।”

शान्तीक मुहसँ एते बात निकैलते शान्तियोक दुनू आँखिसँ आ देवनो आँखिसँ दहो-बहो नोरो खसए लगलै आ दुनू बोम फाड़ि कानए लगल। देवनक मनमे अपन मरल माए-बाप एलै आ शान्तीक मनमे जीवित माए-बाप। दुनूकेँ देहमे, जेना एक्को पाइ लज्जैत नहि रहल। जेना मुइला पछाइत मुरदा लर-ताँगर होइत तहिना गारा-जोड़ी कऽ दुनू छातीमे छाती लगा, कानए लगल। आँखिसँ नोर टघरै, मुहसँ दुख निकलैत आ छातीमे छाती सटौने पैछला जिनगीक अन्त आ ऐगला जिनगीक रूप-रेखा बनए लगलै। मुँह-मे-मुँह सटा, दुनूक मन अपन-अपन शेष बात एक-दोसरकेँ कहए लगलै।

बड़ीकाल धरि दुनू एक-दोसरसँ सटल रहल। ताधैर दुनू सटल रहल जाधैर दुनूक मनक सभ बेथा नै निकैल गेल। जहिना अन्हार रातिमे दुनियाँक सभ किछु अन्हारक चद्दैर ओढ़ि सटि जाइए तहिना देवनो आ शान्तियो सटि गेल। मुदा सुरूजकेँ उगिते सभ अलग-अलग भऽ जाइत तहिना सभ बेथा कहला पछाइत दुनू हटि गेल।

दुनू हाथसँ दुनू आँखि पोछि देवन शान्तीकेँ कहलक-

“ऐठामसँ निकलैक कोन उपए अछि?”

शान्ती-

“जखन फाटकक ताला खुलि जाइ छै तखन बहराइक उपए अछि। मुदा किछु लऽ कऽ नहि, छुच्छे देहे।”

देवन-

“आब पहिने ऐठामसँ निकैल चलू तखन आरो गप-सप्प।”

चारि बजे भोरमे फाटकक ताला खुजल। ताला खुजलाक अदहा घन्टाक पछाइत लोकक आबाजाही शुरू भेल। पाँच बजे दुनू गोरे दस लग्गा आगू-पाछू विदा भेल।

देवनो चारूभर तकैत जे कियो देखै तँ ने अछि आ शान्तियो। मुदा देखियो कऽ कियो किछु ने पुछलकै।

फाटक टपिते शान्ती नव दुनियाँ देखलक। दुनियाँक सभ किछु नव। दुनू सोझे दच्छिन-मुहेँ विदा भेल। ने देवन शान्तीकेँ किछु पुछैत आ ने शान्ती देवनकेँ।

जाइत-जाइत दुनू मनपुर पहुँच गेल। मनपुर पहुँचते दुनूक मनमे शान्ति एलइ। दुनू एक दोसरसँ किछु पुछए चाहलक आकि तैबीच ओइ पैछला बटोहीकेँ अबैत देखलक। धियानसँ ओइ बटोहीकेँ देखते देवनक मुहसँ हँसी निकलल। ताबे ओहो लग आबि देवनकेँ पुछलक-

“बौआ, तूँ अखन धरि एतै छह! हम तँ विवेकपुरसँ घुमि, दोहरा कऽ एलौं!”

देवन-

“दादा, रस्तामे शान्ती भेट गेल तँए गप-सप्प करैमे समए लगि गेल।”

बटोही-

“बड़ सुन्दर। भने दुनू गोरे एक संग भऽ गेलह। जे देखैक मन छेलह से आब नीक नाहाँति देखबह। अखन हम काजे जा रहल छी तँए नै अँटकबह, जाह।”

देवन-

“दादा, जेतेकाल ऐठाम छी तेतेकालमे किछु कहि दिअ।”

देवनक बात सुनि मुस्की दैत बजला-

“बौआ, सबहक इच्छा रहै छै जे हमर बात बेसीसँ बेसी लोक सुनए। मुदा ओइ सुनने हेतै कथी। जेते मनुख अछि सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, सभ तँ एक्केठाम ठाढ़ो नइ अछि जे एक्के बात सुनने

सरपट चालि पकड़त। जँ से होइतै तँ सभ दौगैत रहितए, से कहाँ छइ। तँए जरूरी अछि जे सभसँ पहिने अपने उठि कऽ मनुखक रस्तापर ठाढ़ भऽ चली। जखन मनुखक रस्तापर ठाढ़ भऽ चलए लगब, तखन जे गिरल मनुख अछि ओकरा उठबैक चेष्टा करक चाही। उठबैक दुनू उपाए अछि, केकरो बाँहि पकैड़ घीचि कऽ, तँ केकरो पाछूसँ धक्का लगा ठेल कऽ। यएह जिनगीक जीत छी जे हमरा केने केते मनुख मनुख बनल। हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता।"

○○○

शब्द संख्या : 9314

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○


पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 350

ISBN : 978-93-87675-28-5

साहित्य

नै धाड़ैए

जगदीश प्रसाद मण्डल



नै धाड़ैए

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-26-1

दाम : ₹ 250/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

NAI DHARAIYA
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै
घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै
इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै
बनि-कनियाँ-पुतरा-पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै
राति-दिन एकबट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छइ।

अनुक्रम



एक /8
दू /20
तीन /33
चारि /43
पाँच /91

एक

मैट्रीक परीक्षासँ तीन मास पूर्ब कोठरीमे बैस राधामोहन अपन दिन-दुनियाँक सम्बन्धमे सोचैत रहए। ओना परीक्षाक तैयारी-ले बैस कऽ पढ़ैत रहए मुदा किछु कालक पछाइत, जखन पढ़ैसँ मन उचैट गेलै, अनायास जिनगीक बात मनमे उठलै। परीक्षाक फारम भरला पछाइत स्कूल आएब-जाएब बन्न भऽ गेल छेलइ।

राधामोहनक मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा उठै बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ जे उठै आ फुटि जाइ। कोनो असथिर विचार ने मनमे उठै आ ने अँटकैत रहइ। कोनो विचारकेँ ने ठीकसँ पकैड़ पबैत आ ने सोचि पबैत। किछु कालक पछाइत मनकेँ असथिर कऽ अपन भूत-भविसपर नजैर अँटका गौर करए लगल तँ तीन तरहक विचार अभरलै। ओ ई जे अखन धरि साले-साल स्कूलक परीक्षा स्कूलेमे होइतो रहल आ आगूओ बढ़ैत गेल। मुदा आब तँ से नै हएत। सरकारी देख-रेखमे परीक्षो हएत आ रिजल्टो निकलत। जँ फेल करब तँ दोहरा कऽ फेर ऐगला साल परीक्षा दिअ पड़त आ जँ पास करब तँ आगू..? आगू तँ पढ़ि नै पएब। जँ पढ़ि नै पएब तखन की करब?

साधारण चारि बीघा जमीनबला परिवारक राधामोहन। चारि बीघा माने अस्सी कट्ठा। अस्सी कट्ठाक माने सोलह साए धूर। ओना, दुनियाँक मानचित्रमे भिन्न-भिन्न देश आ भिन्न-भिन्न जमीनक महत

अछि। जँ जापानक बेस किमती तँ साइबेरियाक से नहि। मुदा मनुख तँ दुनूठाम ऐछे आ रहबे करत। खएर जे हौउ, ने जापानक चर्च भऽ रहल अछि आ ने साइबेरियाक। चर्च तँ मिथिलांचलक भऽ रहल अछि तँए मिथिलांचलक जमीन देखए पड़त। सबहक जिनगियो सभ रंगक अछि।

पैंतालीस बर्ख अबिते-अबिते राधामोहनक पिता नन्दलाल पूर्ण रोगी बनि चुकल छला। तीन बर्ख पूर्व धरिक जिनगी जखन नन्दलालक मनमे आबैन तँ अपनो नै बिसवास होनि जे हमहूँ जोड़ा बरदबला किसान छेलौं, आ मस्तीक किसानी जिनगी बितबै छेलौं..! जइ साल सुभ्यस्त समय होइ छेलै तइ साल जेहने घरक कोठी भरै छल तेहने पोखैरक महारपर नारक टाल लगबै छेलौं। मुदा आब ओहन दिन-दुनियाँ थोड़े देखब। अछैते खेत रहितो थोड़े हएत। करबो के करत, जखन केनिहारे नै तखन हएत केना। दुनियाँक माटि-पानि तँ सभ दिनसँ रहलै आ सभ दिन रहत। मुदा जइ समय जेहेन मनुख रहत तइ समय दुनियाँक रंगो-रूप तँ ओहने रहत किने...।

जाधैर नन्दलालक शरीरमे रोगक आगमन नै भेल छेलैन तइसँ पूर्व दुनू परानी अपन खेत-पथारमे, कहियो गरदामे तँ कहियो थालमे लेटाइत रहै छला। काजक एहेन सूत्र बनल छेलैन जे आगू-पाछू सोचै-विचारैक बात मनमे उठबे ने करैन। ओना साले-साल बरहम स्थानक भागवतमे कातिक मास सुनै छला जे 'जिनगी क्षणभंगुर छी, तँए समैकेँ बिना गमौने समरपित भऽ किछु कऽ ली।' ..मुदा से भागवते धरि रहि जाइ छेलैन। भरि पेट भोजन भेटिए जाइ छेलैन तँए ने घटबी बाट मनमे उठै छेलैन आ ने दुआर-दरबज्जा भरल देखै छला जइसँ बढ़ती बात उठै छेलैन। भागवतोकेँ धर्मस्थानक धर्मक बात बुझि घर्मस्थानमे सुनि लइ छला। गामपर अबिते घरक चक्कीमे जुटि जाइ

छला। अपन खेत, अपने केनिहार तँए अपना मनोनुकूल खेती-गिरहस्ती करै छला। जइ वस्तुक जेते जरुरत अछि, पहिने ओते पुरा लेब तखने ने अनका दिस ताकब। जँ से नइ तँ आँखिक खच्चरपन्नीसँ अनके सभ किछु देखैत रहब आ अपन देखबे ने करब।

नन्दलालक विशाल रूप जहिना बुधनी देखै छेली तहिना बुधनीक विशाल रूप नन्दलाल देखै छला। कोठरीक राधा-रानीक जिनगी नहि, विशाल दुनियाँक मंचपर नट-नटी बनि दुनू-परानी कखनो खेतक गोला कोदारिसँ फोड़ैत, तँ कखनो संग मिलि धान रोपैत। तहिना, कखनो माल-जालक थइर-गोबर करैत, तँ कखनो इच्छानुसार खाइ-पीबैक ओरियान करैत। जिनगीक लीला तँए लजाइ-धकाइक कोनो प्रश्ने नहि।

तीन सालक बीच नन्दलाल तेना रोगा गेला जे मन मानि लेलकैन 'आब नै जीब! चल-चलौक बाटपर आबि गेलौं!' ..मुदा एते दिन तँ अही समाजमे समाज बनि जिनगी गुदस केलौं, जँ किछु अनकर नै केलिऐ, तँ केकरो भारो तँ नहियेँ बनलिऐ। मेहक बरद जकाँ किसानक संग खेत-पथारमे बहबे केलिऐ। तैबीच ठेहुनक गीरह कचैक उठलैन। कचैक एतेक जोरसँ उठलैन जे बुझि पड़लैन सौंसे देहक बुत्ताकेँ छिन्न-भिन्न कऽ देत। मुदा ई तँ भेल देहक रोग, मनकेँ तइसँ कोन मतलब। ओकर तँ अपन सभ किछु छइ। मुदा शरीरक पीड़ाक कष्ट तँ मनोकेँ प्रभावित कैये देने रहैन। पीड़ाएल मन आ शरीरक बेथा देख नन्दलाल अपन बोरिया-विस्तरकेँ हाँइ-हाँइ समटैत बुदबुदेला-

"जखन दुनियाँ छोड़िए रहल छी तखन किए ने अन्तिम बात कहिए दिऐ जे, भाय जे केलियह से खेलियह, किछु जमा तँ रहल नहि, जे देने जेबह। एकरा गलती बुझि छोड़ि दाए आकि जवाबदेही बुझि द्वारिका छाप दऽ दाए।"

नन्दलाल ऐठाम पण्डाक बगे बनौने एक गोरे एला। बम्बैया सम्पन्न मंचक कलाकार जकाँ बनल-ठनल हुनकर चेहरा रहैन। नन्दलालक दरबज्जापर अबिते कामरूप कामाख्याक शंख फुकि घरवारीकेँ सूचना देलखिन।

दरबज्जापर आएल अभ्यागतक आगमन बुझि बाड़ीसँ नन्दलाल आ आँगनसँ बुधनी पण्डाजीक आगूमे उपस्थित भऽ हुनक देव-रूप देख ओसारक चौकीकेँ देह परहक तौनीसँ झाड़ि-पोछि बैसैक आग्रह केलखिन। दरबज्जापर आएल अभ्यागतक सेवा करब किसानी संस्कारक मुख्य अंग अदौसँ रहल अछि।

बैसते पण्डाजी जोगी-फकीर जकाँ अपने बड़बड़ाए लगला-

“ऐ जमीनक भाग कहै छै जे साक्षात लक्ष्मीक बास छी, दोबर-तेबर गतिए परिवार आगू मुहेँ बढ़त, मुदा..?”

लक्ष्मीक बास सुनि दुनू परानी नन्दलालक मनमे खुशीक ज्वार उठलैन। मुदा पण्डाजीक बोल रहैन एकभग्गू। एकभग्गू ई जे जेते प्रशंसा बुधनीक केलखिन तेते नन्दलालक नहि, जइसँ नन्दलालक मनमे किछु अनोन-विसनोन जरूर भेलैन, मुदा पत्नियोँ तँ आन नहियेँ छैथ, विचारकेँ दबलैन।

पण्डाजी हाथक रेखा देखैक विचार व्यक्त केलैन। ‘हाथक रेखा’ सुनि दुनू परानी अपन-अपन हाथ आगू बढ़ौलैन। ..चलाक खेलाड़ी जकाँ, जे पहिने दोसरकेँ खेलबैत पछाइत सवारी कसैत तहिना पण्डाजी सेहो केलैन। हाथ देखबैसँ पहिने बुधनीक मनमे उठलैन जे जँ पतिक अछैत मृत्यु भऽ जाइत तँ ओ पत्नी..? मुदा परोछ भेने..? बुधनीक मन पतिपर एकाग्र भऽ गेलैन। शुभ समाचार सुनैले बुधनी बिहुँसैत पण्डाजीक आगू हाथ पसाइर बजली-

“ई हमर पति छैथ, जाबे जीबै छैथ ताबे हमहूँ जीबै छी तँए जँ

केतौ कोनो गड़बड़ होइ से कहि दिअ। समय अछैत ओकर प्रतिकार करब।”

बुधनीक बात सुनि पण्डाजीक मन चपचपा गेलैन। गोटी सुतरैत देख, चौकीक निच्चाँ लटकल पएरकेँ समैट पल्था मारि ऊपर बैसला। बैसते बुधनीक हाथ देख खुजल आँखि बन्न कऽ ठोर पटपटबैत बुदबुदेला। फेर आँखि खोलि चारू दिशा दिस देख ऊपर तकलैन। जेना कियो किछु बजैले उत्साहित केलकैन तहिना बजला-

“परिवारक पछुलका गति तँ नीक छल मुदा बीचमे ग्रह केर आगमनसँ गड़बड़ा गेल अछि! ओना अखन धरि तेहेन गड़बड़ नै भेल अछि जे बुझि पड़ैत मुदा आगू जखन जुआ जाएत तखन बुझबे-टा नहि, देखबो करबै। ओना ऐ घरक साक्षात लक्ष्मी अहीं छिऐ जैपर अखनो घर ठाढ़ अछि, मुदा..!”

आगूमे बैसल नन्दलालक मनमे उठैत जे परिवारक गार्जन हम छी, जँ हमर हस्त-रेखा नीक रहत तँ अनकर अधलो भेने की हेतइ। मुदा लगले विचार बदलए लगलैन जे पत्नियोँ तँ अर्द्धांगिनीए होइ छैथ तँए हुनको छोड़ब नीक नहियेँ हएत! पत्नीकेँ कहलखिन-

“पहिने पण्डाजी केँ चाह पिअबियौन। पछाइत सभ गप हेतइ।”

पतिक बात सुनि बुधनी चाह बनबए गेली। तैबीच पण्डाजी नन्दलालकेँ पुछलखिन-

“ऐ गाममे देवस्थान कएटा अछि?”

पण्डाजीक प्रश्न नन्दलाल नीक जकाँ नै बुझि सकला, तँए पुछलखिन-

“की देवस्थान?”

नन्दलालकेँ अनाड़ी बुझि पण्डाजी बजला-

“बरहम स्थान तँ हेबे करत। तेकर बादो महावीरजी, शिवजी, धर्मराज इत्यादि-इत्यादि आरो केते स्थान हएत किने?”

नन्दलाल-

“हँ, से तँ अछिए। तीनटा महादेव मन्दिर अछि, दूटा महावीरजी स्थान अछि, एकटा धर्मराज, एकटा सलहेस आ एकटा ठकुरवारी सेहो अछि।”

तही बीच बुधनी चाह नेने आबि पण्डाजीकेँ आ नन्दलालोकेँ देलखिन एक घोंट चाह पीविते पण्डाजी बजला-

“चाह तँ चाहे अछि! बड़ सुन्दर चाह पिएलौं!”

चाह पीब हाथ धोइ पण्डाजी नन्दलालक दहिना हाथ देख बजला-

“अहाँकेँ तीनटा बिआह आ सातटा सन्तान लिखैए। ई काएम बिआह छी?”

तीनटा बिआह सुनि बुधनीक मनमे जलन उठलैन। मुदा किछु बजली नहि। नन्दलाल बजला-

पहिल जे बिआह भेल सएह छी। सन्तानो एकेटा बेटा अछि।”

पाशा पलटैत देख पण्डाजी पुनः हाथक रेखापर अपन आँगुर दैत बजला-

“ई रेखा ऐठामसँ आबि एकरा काटि देलक। जइसँ दूटा पत्नियोँ कटि गेल आ छहटा सन्तानो।”

पुनः नन्दलालक हाथ छोड़ि बुधनीक हाथ देखए लगला। बुधनीक हाथक रेखा देखैत बजला-

“पति-सुख अहाँकेँ पूर भऽ रहल अछि, मात्र किछु दिन आरो

अछि। मुदा..?”

पण्डाजीक बात सुनि नन्दलालक मनमे उठलैन, भरिसक ई मौगियाहा पण्डा छी। मुदा अखन तँ दरबज्जापर छैथ किछु बाजब उचित नहि हएत।

पण्डाजी आगू बजला-

“अहाँक पतिकेँ शनिक ग्रह केर आगमन भऽ गेल छैन जे अहूँक रेखा इशारा करैए।”

बुधनीक हाथ छोड़ि पुनः नन्दलालक हाथ देखैत बजला-

“अहाँकेँ शनिक ग्रहक आगमन भऽ गेल अछि। मुदा अखन तँ शुरूआती अवस्थामे अछि तँए किछु नै बुझि पड़ैए मुदा तीन मास बितैत-बितैत उपद्रव शुरू भऽ हएत।”

पतिक ग्रह सुनि बुधनी ओहिना तड़पली जहिना कोनो स्त्री अपन निर्दोष पतिकेँ सिपाही हाथे जहल जाइत देखैए। ..तरसैत-तलपैत बुधनी पण्डाजीकेँ कहलखिन-

“अपने साक्षात देवता छिऐ। जे चाहबै से हेतइ। कोनो धरानी हिनका ग्रहसँ छुटकारा करा दियौन।”

गोटी लाल होइत देख पण्डाजी बजला-

“केहेन-केहेन राहू-केतुकेँ तँ जिनगीमे भगा चुकल छी आ ई कोन माल-मे-माल अछि! एकरा तँ छन-पलमे केतए-सँ-केतए दऽ आएब तेकर ठीक नहि!”

पण्डाजीक बात सुनि दुनू परानी नन्दलालकेँ जान-मे-जान आएल। बुधनी बजली-

“खर्च-बर्चक चिन्ता नहि, मुदा काज पक्का होइ।”

घूसक मोट रकम देख जहिना घूसखोरक मन चपचपा जाइत

तहिना पण्डाजीक चपचपेलैन। बजला-

“देखियौ, ऐ काज-ले अनुष्ठान करए पड़ै छै तँए सभठाम करब आकि कराएब सम्भव नहि अछि।”

बुधनी-

“तखन?”

पण्डाजी-

“तइले चिन्ता किए करै छी। हाकिमक दसखत जेहने आँफिसमे तेहने डेरापर। तखन तँ आँफिसमे अनचोकमे आबि कियो देख ने लिअए तेकर कनी.., जे डेरामे नै होइत अछि।”

नन्दलाल-

“नै बुझलौं अहाँक बात पण्डाजी।”

कबुला छागर जकाँ नन्दलालक मन कँपैत रहैन। तँए आँखिक सोझमे अपन अनुष्ठान देखए चाहैथ।

पण्डाजी-

“देखियौ, हिमालयसँ लऽ कऽ समुद्र धरिक वस्तुक जरूरत अनुष्ठानमे पड़ै छइ। ओते लऽ कऽ चलब सम्भव अछि? ऐठाम सभ वस्तु उपलब्ध नै हएत। अहाँ सन-सन केतेको भक्त छैथ जे हमरा लिए तँ सभ बरबैर छैथ।”

नन्दलाल-

“तखन?”

पण्डाजी-

“विधिवत सभ खर्चक मूल्य दऽ दियौ। जहिना अनन्त पाबैनमे माने अनन्तक पूजामे एक गोरे पूजा करै छैथ आ टोल-पड़ोसक लोक

अपन-अपन अनन्द-फनन्दक पूजा करा लइ छैथ, तँए की ओ अशुद्ध नइ भेल। अशुद्ध तँ होइत अछि फनन्द जेकर गीरह-बनहनक गिनती कम होइ छइ।”

हिमालयसँ लऽ कऽ समुद्र धरिक बात सुनि बुधनीक मन चकभौर काटए लगलैन। बाप रे! केतए हिमालय अछि आ केतए समुद्र! तइसँ नीक जे जे कहता सएह करब असान हएत। देववाणी कोनो कि नुनछराह होइ छै, उनटा हौउ कि सुनटा, कहुना हएत मुदा हएत तँ मधुरे-मधुर किने। ..बजली-

“केना की खर्च-बर्च पड़त?”

पण्डाजी-

“खर्च-बर्च की हाथी-घोड़ाक पड़त, तखन तँ अनुष्ठाने छी कनियोँ-कनियोँ करब तैयो तँ... ।”

‘कनियोँ-कनियोँ’ सुनि बुधनी फेर बजली-

“नै पान तँ पानक डन्टियोसँ काज चला लिअ।”

पण्डाजी आ बुधनी दुनू गोरेक बात सुनि नन्दलाल परीक्षा लेल कबुलाक छागर जकाँ थर-थर कँपैत रहैथ। किएक तँ एक दिस जिनगी आ दोसर दिस मृत्यु देखै छला। मनमे उठलैन- ग्रह-नक्षत्रक किरदानीकेँ की मनुख रोकि सकैए? ..मुदा उठल मनमे ईहो उठलैन- जे मनुख माटियोकेँ देवता बना सकैए ओ तँ किछु कऽ सकैए। मुदा दुनू गोरेक अनुकूल विचार सुनि नन्दलाल किछु बजला नहि, चुपे रहला।

हुन्डे अनुष्ठानक खर्च लऽ पण्डाजी सगुनियाँ डेग दैत विदा भेला। मनमे ईहो बात उठैत रहैन जे जँ चारियो-पाँच एहेन सुतरल तँ साल-माल लगिए जाएत। मुदा जे हौउ, यात्रा नीक रहल।

तीन मास बित गेल। ने पण्डाजी अपन परीक्षाक रिजल्ट बुझए

घुमि कऽ एला आ ने दुनू परानी नन्दलालक मनमे कोनो तरहक आशंका भेलैन जे पण्डाजी की केलैन की नहि। मुदा शैनी-ग्रहक आगमनक नाओं जे कहने रहैन ओ दिन नन्दलालकेँ मने रहैन। सौनक पूर्णिमाक दिन। पूर्णिमा मन पड़िते महिनाक हिसाब जोड़लैन तँ जोड़ा गेलैन जे आइए पूर्णिमा छी। हौआइत हाथकेँ कुड़ियबैत नन्दलालक मनमे अबिते पोखैरक माछ सदृश पूर्णिमा चाल देलकैन। ओह! भरिसक हाथ हौआएब शुरू भऽ गेल। बामा हाथक हौआएब छोड़ि दहिना हाथसँ तरबा कुरियौलैन तँ सुआस पड़लैन। ओह! जाबे ग्रहक आगमन नै भेल ताबे पएर-हाथ कुड़ियौनी किए मंगैए..?

पत्नीकेँ कहलखिन-

“राधामोहनक माए, भरिसक ग्रहक आगमन भऽ गेल!”

‘ग्रहक आगमन’ सुनि बुधनीक मनमे उठलैन जे बहुत रोगी ओहनो होइए जे रोगकेँ देहमे रखनौं रहैए, दबाइयो खाइत रहैए आ काजो करिते रहैए। मुदा रोगीकेँ ओछाइन धड़ा आराम देब सेहो तँ होइए। तहूमे सर्दी-बोखार नइ छी जे नूनपनियाँ पीब लेब आ भानसो-भात करब। देवलोकक ग्रहक आगमन छी, एक अलग श्रेणीक रोग..! कहुना भेल तँ राजे रोग भेल किने..!

बिच्चेमे नन्दलाल बजला-

“आब चलब केना हाथो हौआइए आ पएरो, दुनू दिससँ तँ रोग आबि गेल!”

बुधनीक मनमे उठलैन, पथ-परहेज की सभ करए पड़त। सर्दी-बोखारक तँ बुझल अछि जे पोड़ो साग नै खाएत मुदा एहेन रोगसँ तँ पहिले-पहिल भेँट भेल। खौंझाइत बड़बड़ेली-

“जे भगवान सभकेँ बुधि देलखिन ओ एक-रंग करि कऽ किए ने देलखिन, जे रोगमे पड़ल छी आ पथ-परहेज बुझले ने अछि। एहेन

रोगीसँ की लोक हाथ धोइ लिअ?”

‘हाथ धोइ लिअ’ मुहसँ निकैलते चमकैत शीशा जकाँ मन चनैक उठलैन। जँ रोगीसँ हाथ धोइ लेब तँ माथक सिनूरक की हएत..?

असोथकित जकाँ बुधनी थकमका गेली। जइ जिनगीकेँ खेल बुझै छी ओ खेल नै छी, जँ खेल रहैत तँ अमेरिकोसँ केतेक ऊपर रहितौं।

ओछाइन पकैड़ते नन्दलाल रोगाए लगला। श्रम नै केने अरुचि, पड़ल रहने देहक अकड़नसँ जोड़-जोड़क दर्द बढ़ए लगलैन, बढ़ैत-बढ़ैत छह मासक पछाइत भिनसुरका नटुआ जकाँ मोटरी माथपर नेने नन्दलाल चल-चलाउ बनि गेला।

असगरे बुधनी काजमे तेना ओझरा गेली जे काजे मानव आ काजे दानव बनि गेलैन। काज तेते छिड़िया गेलैन जे जहिना उड़ैत फनिगाकेँ गिरगिट पकड़ैए तहिना भऽ गेलैन। काजे काजकेँ खेबो करैत आ गीरबो करैत... ।

साँझू पहर जखन काजसँ निचेन भऽ बुधनी पएर मोड़ैथ आ भरि दिनक काजक हिसाब मनमे अबैन तँ मानि लइ छेली जे सभटा कर्मक खेल छी। कियो खेल खेलि खेलाड़ी बनि जाइए तँ कियो खेल बनि खेलाइत जाइए। डाक्टर ऐठाम जखन पतिकेँ लऽ जाइ छिऐन तँ सभ रोगक जड़ि भरि दिन पड़ल रहब कहै छैन। जइसँ सौंसे देहक जोड़ पकैड़ लेलकैन। फेर जिनगी ठाढ़ हेतैन एकर कोन भरोस। तखन तँ माइयो-बापक लिलसा पूरा कैये देलिऐन जे एकक नाति दोसराक पोता बनि ठाढ़ छैन, की पति-धर्ममे कनियोँ कमी रहल? जँ नइ तँ पति-विहिन नारीकेँ समाज किए कलंकित केने छैथ?

पतिपर सँ बुधनीक नजैर उतैर बेटापर एलैन। लोकक धिया-पुता शहर-बजारमे जा रहबो करैए, सिनेमो देखैए आ पढ़बो करैए।

मुदा, से हमरा राधामोहनक संग गरदैनकट्टी भेल। खएर.., मुदा हमहीं की करबै जइ घरमे एकटा विद्यार्थी आ एकटा रोगी रहत ओइ परिवारक गाड़ी घिचब महिला-ले सचमुच चुनौती अछि। खिस्सा-पिहानी ढेरो लोक लोककेँ सुनबैए मुदा पतिव्रता परिवार-ले के केतेक समरपित छैथ, ऐ दिस सेहो देखक चाहिऐन। ई नहि जे टीक एक बोझ रखनै छी आ पनरह-पनरह दिनक बिनु धुअल पेन्ट पहिर प्रवचन करै छी।

राधामोहनपर नजैर पड़िते वेचारी बुधनी विस्मित भऽ गेली। मन कहलकैन- भगवान सभटा विपैत ओही छौड़ाकेँ देलकै। मुदा तैयो कहुना कऽ गोठगो धरि बनेलौं अछि। आब कि ओ धीगर-पुतगर नै भेल। जँ धीगर-पुतगर भेल ओकरा बुते घर चलौल नै हेतइ।

..बुधनीक मनमे सवुर भेलैन। भगवान पति हरने जा रहल छैथ मुदा जुआन बेटा तँ सोझमे अछिए। फेर मन उनैट राधामोहनपर एलैन, जेतबो सुख माए-बापक घर केलिऐ तेतबो उमेर तक हम कहाँ दऽ सकलिऐ। ओही वेचाराकेँ धन्यवाद दी जे खेने-बिनु-खेने पढ़बो करैए आ संग-साथ दऽ काजो करैए। संग साथ मनमे उठिते बुधनी विह्वल भऽ गेली। संगे-साथ ने सभ किछु छी। मनुख तँ अबैत-जाइत रहत मुदा जे परिवार संग-साथ अछि वएह ने जिनगी छी।

◌

शब्द संख्या : 2359

दू

देखले दिनमे नन्दलालक परिवार केतए-सँ-केतए ससैर कऽ पाछू चलि आएल, यएह छी जिनगी। समय आगू मुहेँ ससरैत अछि आ जिनगी पाछू मुहेँ, तखन समय संग केना चलब? समाजक बीच नन्दलाल परिवारक चर्च अहू रूपमे होइत। प्रश्न अछि जे समाजक केतेक लोकक बीच एहेन विचार उठैए। परीक्षामे एक शब्दक भूलसँ प्रश्नोत्तर गलत भऽ जाइए जेकर परिणाम असफल होइत अछि। मुदा वएह एक शब्द भेटने परीक्षार्थी सफलो तँ होइते अछि। की तहिना जिनगियोक शूत्र शब्द अछि?

ओना समाज तँ समाज छी, अथाह समुद्र कहियौ आकि सघन बोन। कियो नून घोरि नूनपनियाँ बना कऽ पीब-पीब रोग भगबैए, तँ कियो नुनाएल पानिक नुनगरी हटा स्वच्छ बना पीबै जोग बनबैए, तँ कियो दुरगन्ध-सुगन्धक बीच लक्ष्मण रेखा खींच जीवन-यात्रा करैए, तँ कियो नरकोमे ढाही मारि-मारि आरो गर्त दिस बढ़ैए।

समाजमे एहनो लोकक संख्या कम नहि जे बुधनीक दशा-दिशा देख चाबस्सियो दैत आ हँसबो करैत। मुदा केहेन चाबस्सी आ केहेन हँसी? ..खुशीसँ जँ हँसी अबैए तँ केकरो दीन-दशापर किए उठैए? मुदा तैसंग समाजमे एहनो कहनिहार तँ ऐछे जे कहैए जे धन्यवाद ओही वेचारीकेँ दिऐन जे एक संग पतिसँ पुत्र धरिक सेवा अपन बाँहु-बलसँ

कऽ रहल छैथ। एक परिवारक खेती-पथारीसँ लऽ कऽ पढ़ाइ-लिखाइ, बर-बेमारीक सामना असगरे करै छैथ! की हुनका जिनगीकेँ चक्की उनटौनिहार नै कहबैन? जखन कि मिथिलांचलक गौरव-गाथाक एक इतिहास रहल अछि। मुदा तैसंग ईहो कम दुर्भाग्यक बात नहि जे जिनगीकेँ समाजिक जालमे ओझरा अपन करम-भागकेँ दोषी बनबैत रहल.., आ एहनो कहनिहारक कमी नहि जे कहैत पीसलक मड़ुआ तँ उठौत गहुमक चिक्कस...। प्रश्न उठैए जे बुधनीक की दोख जे एहेन शब्दसँ वेचारीकेँ दागल जाइए? मुदा एहनो शब्द तँ ओही समाजमे फड़ैत-फुलाइत अछि जे कहैत वेचारी बुधनीक अखन उमेरे केते भेल अछि। अधोसँ कम जिनगी टपल हएत, बेसी बाँकीए हेतइ। ई केहेन निसाफ भगवानक भेलैन जे सौंसे जिनगी नै दऽ अधोसँ कमेपर अधसुखू बना देलखिन। पति-पत्नीक बीच जे रहैए तेकर तँ ओ गति छै जेकरा मनुखक श्रेणीसँ निच्चाँ बुझल जाइ छै आ जेकरा नै छै ओकर गति की हएत! कियो राँड़ कहि राँड़िन बनौत तँ कियो यात्राक भदवा कहि दुतकारत...।

ओना, एहेन गति अखन धरि बुधनीकेँ नै भेल छैन, कारण जे रोगाएलो पति जीबैत तँ छैन्हे। भलेँ परिवारक गाड़ीक जुआ असगरे किए ने घिचैत होइथ। मुदा जहिना समाजक बीच, मकानक पजेबा जकाँ एक-एक परिवारक ऊपर समाजक भारो रहैत आ जीबैक अजादियो रहैत तहिना परिवारक बीच एक-एक बेकतीक सेहो होइत अछि। शरीर अलग-अलग रहनौं, पानिक बीच जेहेन सम्बन्ध रहैत, से तँ रहिते अछि। मुदा बुधनी तँ जालमे ओझराएल छैथ। दस बजे पुर्वाहनमे जे बेटा स्कूल जाइ छैन ओ चारि-पाँच बजे अपराहनमे घुमि कऽ घरपर अबै छैन, तैबीच रोगाएल पतिकेँ छोड़ि बुधनीकेँ केतौ बाहर जाएब उचित हएत? मुदा बाधो-बोन नै जाएत से हेतइ? तँए कि बुधनीक विचारक सागर सूखि गेलैन जे एक-बोल पतिसँ नै बाजि

पाबैथ? जँ एक दिस गाछक डारि टुटि रहल अछि तँ दोसर दिस राधामोहन सन, अनपढ़ पतिक जगह पढ़ल-लिखल बेटा तँ भेटिए रहल छैन। उत्साहमे मिसियो भरि कमी बुधनीमे नै आएल छेलैन, जहाँ धरि काजक[1] सफलताक पछाइत जे मन खुशिया जानि तँ अनेरे बमकए लगैन। सौंसे गामक लोक बताह भऽ गेल, बाप बेटाकेँ दोखी बना भरि दिन गरियबैत रहैए तँ बेटा बापकेँ गरियबैत रहैए, साला बुढ़ाड़ीमे घी ढारी करैए! सासु-पुतोहुकेँ दोख दैत जे अपढंगहीं घर आएल, तँ पुतोहु बापकेँ गरियबैत जे कोन नटिनियाँ घरमे बोरि देलक। ..मुदा अनेरे अनकर गाछी देखने की फेदा, कियो तेतैरक बोन लगौने अछि तँ कियो बगुरक, केकरो गाछीमे तुइन फुलाइ छै तँ केकरोमे आम। अनेरे भरि दुनियाँ वौआइक कोन काज अछि। अपन धन्धाक दुखक भागी ने छी आकि अनेरो हमर माए मरल तँ अहाँ बुझबो ने केलिऐ आ अहाँक माए मरत तेकर जिगेसा करब हमर दायित्व बनल। मन ठमैक गेलैन।

जिनगीक दशा-दिशा देख बुधनी ठकुआ गेली। जहिना धारक वेगमे कियो भँसि कऽ जान गमबैए, तँ कियो गाछपर सँ खसि जान गमबैए, तहिना कियो घरमे लगल आगि मिझबैमे जान गमबैत तँ कियो ओछाइनपर पड़ल इछानिक गन्धक बीच जान गमबैत, तँ कियो कन्हापर घैलिक भार उठा फुलबाड़ी पटबैत जान गमबै छैथ, तँ की सभ एक्के भेल? एक नै भेनौं एक्के भेल? केना भेल? लत्ती जकाँ लतरल अछि सभ किछु समाजमे, मुदा जहिना लत्तीक गिरहपर फूलो फुलाइ छै आ फड़ो फड़ै छै, जे ओइ लत्तीक फूल फल भेल। तहिना हरेक मनुखकेँ अपन-अपन जिनगीक समस्या ताधैर उठैत रहत जाधैर जिनगी जीबै छी। एहेन स्थितिमे की हएत, ओ हएत जिनगीक हर

[1] दिनक काज

समस्याकेँ अपन तालाक कुंजी बना खोली। रहल बात जे सभ जँ सएह करत तँ मनुखक समाज केना बनत? समाज बनैक अपन सूत्र अछि जइसँ बनैए। ऐठाम प्रश्न बेकतीगत अछि, सभकेँ अपन-अपन बुधि-विवेक छैन। की नीक, की अधलाक विचार तँ अपने करए पड़तैन। वएह भेला पछाइत स्वतंत्र जिनगीक रस भेटैए।

बेटा राधामोहनपर नजैर गड़ा बुधनी देखए लगली। वेचाराकेँ गरदैनकट्टी करै छिऐ! अनका-अनका देखै छिऐ बड़का-बड़का शहर-बजारक स्कूलमे बेटाकेँ पढ़बैए आ..? मुदा से हमरा सन लोककेँ सम्भव अछि। जैठामक शिक्षा गलत दिशा पकैड़ झकझोड़ि रहल अछि तैठाम की कएल जाए, ई तँ नान्हिटा प्रश्न नै अछि। मुदा ओही वेचाराकेँ धन्यवाद दिऐ जे खेने-बिनु-खेने स्कूल नै छोड़ैए। ..बेटाक धर्म-कर्म देख बुधनीक मन तड़पल। आब छौड़ा गोठगो भऽ गेल। भगवान एते रच्छ रखलैन जे आब जे अपनो (पति) मरबो करता तँ एकटा खुट्टा देने जेता। मुदा जइ वेचाराकेँ बच्चेमे माए-बाप छोड़ि दैत, भगवान ओइ बच्चाकेँ केना ठाढ़ करै छथिन। सभ की ठाढ़े भऽ जाइए। किछु ठाढ़ो होइए आ किछु नहियोँ होइए। आगू आब राधामोहनकेँ नै पढ़ा पएब। तखन तँ जँ अपने अपन पढ़ैक भार उठा लिअए तँ रोकबो नै करबै। यएह ने जे नै पढ़त तँ काजमे मदैत करत, पढ़त तँ से नै हएत। नै हएत तँ नै हएत, जँए एते दुख कटै छी तँए किछु दिन आरो काटब।

मेघक तरेगन जहिना अपन-अपन जगहसँ टक लगौने देखैत रहैए तहिना राधामोहन जिनगीक बाट दिस देखए चाहैत मुदा बेँतक बोन जकाँ तेते-ओझरी लगल देखैत जे अन्हार छोड़ि इजोत भेटबे ने करइ। मुदा मूल प्रश्न तँ मनमे उठिए जाइत रहइ। तीन मास पछाइत परीक्षा हएत, तेकर पछाइत? की आजुक जे शिक्षा-पद्धति बनि रहल

अछि तइमे आगू बढ़ि पएब? ..स्कूल लगमे अछि, गामेपर सँ जाइ-अबै छी। मुदा घरसँ बाहर भऽ शहर-बजारक खर्च जुटा पएब? जँ से नइ तँ मैट्रिक पासकेँ के पुछै छै, ऑफिसो आ करखन्नोक चौकीदारी बी.ए, एम.ए. करैए। ..काँच मन राधामोहनक पिघलए लगल। बाप-माइक दशा देख मन बेकाबू भऽ गेल। ओह! अनेरे तीन मास परीक्षाक आशामे बैसल रहब, जेते पढ़ने छी तेतबेकेँ ने घोंकैत रहब। किछु करक चाही। मुदा केतए करक चाही? शहर-बजार जा नोकरी करी आकि परिवारक संग गाममे किछु करी? जँ शहर-बजार जाएब तँ माता-पिताकेँ के देखनिहार हएत? सभकेँ अपने अछि, तखन? तखन तँ दुइए-टा उपाय अछि जे या तँ परिवारकेँ सुधारि, माने परिवारक काजकेँ सुधारि चली चाहे परिवारकेँ तोड़ि कऽ चली। ..विचारमे राधामोहनकेँ डुमल देख बुधनी बजली-

“बौआ, अखन खुट्टा बनि ठाढ़ छिअ, तूँ चिन्ता किए करै छह?”

आशुतोष दैत बुधनी राधामोहनकेँ कहलैन। मनमे अपन खुशी ई रहैन जे जँ पति मरिए जेता तैयो एकटा खुट्टा तँ गाड़नहि जेता। मुदा मनमे ईहो उठैत रहैन जे किछु छैथ तैयो पुरुख कहुना पुरुखे भेला, मौगी कहुना मौगीए भेल। ओना, तेसरो तँ होइते अछि जे पुरुखो मैगियाह होइए आ मौगियो पुरुखाह। हँ से तँ होइते अछि...।

माइक बोल-भरोससँ राधामोहनक मनमे किछु आशा जरूर जगल मुदा जेतेक जरूरत छल तेतेक नहि जगल।

..राधामोहनक ठमकैत मनमे उठलै, गाममे देखै छी जे पनरह-सोलह बर्खबला सभकेँ केरा-पौंच जकाँ पौंच निकलै निकलए लगै छै, तखन हमहीं की जुआन नै भेलौं? मनुख बाँस थोड़े छी जे समैए पाबि कोंपर देत। माए-बापक सेवा बेटा-बेटीक पुनीत कर्तव्य छी। पुनीते काज ने धर्म छी। ..पानिक टघार जकाँ राधामोहनक मनक विचार

आगू मुहेँ ससरल। की हमरे भरोसे दुनू गोरे बैसल रहता। तहूमे पिताक एहेन स्थिति छैन जे सालक कोन बात जे दिन-महिना गनि रहला अछि। परीक्षा देने एतबे ने हएत जे मैट्रिक पासक सर्टिफिकेट भेट जाएत। सर्टिफिकेट लऽ कऽ की धोइ-धोइ चाटब! सर्टिफिकेटक जरूरत ओकरा होइ छै जे नोकरी करए चाहैए। जिनगी-ले तँ ज्ञान चाही, काजक लूरि चाही...।

तत्-मत् करैत राधामोहनक मनमे उठल, परिवारमे जँ किछु करए चाहै छी तँ हुनको[2] सबहक विचार सुनि लेब नीक हएत। जँ एहेन काज होइ जेकर जड़ि हुनका सबहक जिनगीमे रोपा गेल होइ, मुदा कोनो कारणवश ओ सूखि गेल होइ। ई तँ नहि जे बाधक एगच्छा जकाँ कोनो ओहेन काज करए लगी जे जेते हवा-विहाड़ि, ठनका-पाथर आकि झाँट-पानि हेतै, सभटा ओहीपर खसए...।

राधामोहनक मनमे उठल- जखने इच्छाकेँ अनुभवसँ भेँट होइ छै तखन जे बाट भेटै छै ओ जिनगीमे बेसी नीक होइ छइ। से नइ तँ दुनू गोरेक बीच अपन विचार राखब। हुनका सबहक की विचार होइ छैन सेहो तँ सोझहा आबिए जाएत। संगे माए-बाबूक मनमे सेहो हेतैन जे बेटा आज्ञाकारी अछि, एहनो दशामे बिना पुछने आगू डेग नै बढ़बए चहैए। अपनाकेँ पुछै-जोकर जिनगी बना लेब, सफलताक मुख्य सोपान छी। रावणक दरबारमे हनुमानक आसन नमहर ऊँच हेबाक कारण भरिसक सएह रहइ।

..माता-पितासँ पुछि लेब राधामोहन जरूरी नै अनिवार्य बुझलक। अनिवार्यक कारण मनमे छाप पड़लै। ओ ई जे किछु-ने-किछु जिनगीक सच्चाइ जरूर भेटत। माइलिक श्रम सिरिफ ओतबे नै होइत जेते गाछ फूल दइत। बल्कि ओहो होइत जे फुलाइसँ पहिने,

[2] माता-पिता

कोनो कारणे गाछ सुखए नहि। प्रश्न उठैत जे की ओइ गाछकेँ ठाढ़ करैमे, बिआसँ गाछ बनबैमे ओकर श्रम नइ लगल। श्रमक उचित श्रमिक, श्रम केनिहारकेँ जखन भेटै छै तखन मनमे खुशीक अंकुर उठै छै जे अपन कर्मक फल भेटल।

..राधामोहनक मनमे एकटा नव प्रश्न उठि गेल। ओ ई जे दुनू गोरेसँ[3] फुट-फुट विचार करब नीक हएत आकि एकठाम? नीक-अधला जे हुअए मुदा एकटा तँ हेबे करत जे काजक गवाह एको गोरे हेबे करता। जाधैर काजक जानकारी दोसरकेँ नै रहत ताधैर काजक महतमे कमी-बेसी रहबे करत।

गोसाँइ डुमि गेल मुदा अन्हार नै भेल छल। बाहरक सभ काज सम्हारि बुधनी गठुलासँ जारैन आनि चुल्हि लग रखली। रौतुका भानस करैक ओरियानमे जुटैक सुर-सार करए लगली। तैबीच दिनक काजक हिसाबपर मन गेलैन। कोन काज सभ छेलै आ कोन-कोन भेल।

..ओसारपर बैसल बुधनी हिसाब जोड़ए लगली आ ओछाइनपर पड़ल नन्दलालक मनमे उठलैन- जखन भानसक ओरियान भाइए रहल अछि तखन रातियो ठीके-ठाक रहत। भगवानकेँ मने-मन गोर लागि कहलखिन-

“भगवान, जहिना राति अराम करैले बनेलौं मुदा जँ खाइक ओरियान भेल रहए, तखन ठीके बनेलौं। मुदा अहींसँ पुछै छी जे बिनु पाइक सरलाहियो वेश्या केकरो पुछै छइ?”

नीन तँ नीने छी, खाउ-पीबू निनियाँ देवीक पूजा करू। मुदा की ओहो भुखाएल पेटकेँ पुछै छै आकि छोड़ि कऽ पड़ा जाइ छइ। खएर जेतए जे हौउ, मरितो-मरितो तँ सुख भोगाइए जाएत...।

[3] माता-पितासँ

अनुकूल समय देख राधामोहन माए लग आबि बाजल-

“माए, किछु करैक मन होइए। घरक जे दशा देख रहल छी, ओ निच्चाँ दिस ढरैक रहल अछि। आइ करी-कि-काल्हि-करी मुदा करए तँ हमरे पड़त। तइसँ नीक जे बँचल समैकेँ हाथसँ नै जाए दी।”

बेटाक बात सुनि जहिना बुधनीक मनमे आशाक बीआ खसल तहिना नन्दलालक मनमे भेलैन। मुदा लगले मन विसाइन हुअ लगलैन। ओह! वेचाराकेँ जखन पढ़ैक बेर एलै, भगवान हाथ-पएर तोड़ि घरमे बैसा देलैन। जँ अनके जकाँ हमहूँ पढ़ा सैकतिऐ तँ की राधामोहन बड़का लोक[4] नइ बनैत, की ओ पजेबाक बड़का घर बना रहैक ओरियान नै करैत। एते तँ दोखी बेटा लग छिहे, मुदा से केना? जँ निरोग रहितौं तखन जे काजसँ देह चोरैबतौं तखन ने, से तँ अपना मनो ने अछि जे जानि कऽ कहियो कोनो काजसँ देह चोरौने हेबइ। मुदा तैयो ओकरे दुनू माय-पुतकेँ धैनवाद दिऐ जे तीन सालसँ ओछाइन धेने छी आ सभ नेकरम करैए। भगवान अहीले ने परिवार दइ छथिन जे असगरे लोक अपन जिनगी जानवर जकाँ नै जीब सकैए। जँ से होइ, माने कियो असगरे हुअए आ ओकर माए मरि जाइ तँ वेचारा की करत। काज तँ तीन गोरेक छइ। एक गोरे बजारसँ कफनक कपड़ा आनत, दोसर गोरे जरबैक ओरियान करत तँ तेसर गोरे कनबो करत किने। बेटाक विचार सुनि नन्दलाल ओछाइनेपर उठि कऽ बैसैत बजला-

“बौआ, आब की तोहू कोनो नान्हिटा बच्चा थोड़े छह जे नै किछु कएल हेतह। तूँ तँ कहुना चफलगरो भऽ गेलह, देखै छी चरि-चरि-पँच-पँच बर्खक बेदरा सभ गाए-महींसक चरवाहि करैए। जखन कि ओते पैघ जानवरक चरवाहि करैबला ओ अछि नहि। मैट्रिक पास

[4] डाक्टर-इंजीनियर

करैमे तोरा कोनो भांगठ नइ छह, मरियो जाएब तँ तोरा माइएकेँ चाबस्सी दी जे कहुना-कहुना परिवारकेँ ठाढ़ केने रहलह। आब तहूँ जुआन भेलह। नहियोँ कहुना तँ केतेको विषयक बात पढ़नहि हेबह। आइ एते संतोष अबस्से मनमे भऽ रहल अछि जे मरितो काल पुछै-जोकर छी। तोहर बेटाकेँ ऐगला जिनगीक बाट हम नै घेरबह। बेटा धन छह, एतेटा दुनियाँमे जिनगी नै बितौल हेतइ।”

नन्दलालक विचारसँ राधामोहनक मन फरीच नै भेल जे बाबू की कहलैन। मुदा दोहरा कऽ पुछब, थेथारब हएत। एक तँ ओहन रोगसँ पीड़ित छैथ तैपर बेसी बजबयैन से नीक नहि। मुदा अपना जनैत प्रश्नक उत्तर तँ दइए देलैन, भलेँ बुझैमे नै आएल। बुझैमे नै आएल ई कमजोरी केकर भेल, बजनिहारक आकि सुनिनिहारक?

एते बात राधामोहनक मनमे अबिते नव-पुरानक बीचक दूरीपर नजैर गेल। नव केकरा कहबै आ पुरान केकरा कहबै वा पुरान की आ नव की भेल? देखै छी जे किशोरी बाबाक गाछी तीन-चारि पुश्त पहिलुका लगौल छिऐन। गाछीक आड़ापर जे शीशोक गाछ लगौलैन, माटि भलेँ ढहि कऽ सहीट किए ने भऽ गेलैन, मुदा एक-एकटा गाछक दाम तीस-तीस-चालीस-चालीस हजार होइ छइ। से की कोनो शीशोए-टाक अछि आकि आमो गाछ सभ एहेन-एहेन अजोध भऽ गेल छैन आ फड़बो तेते करै छैन जे परिवारमे अपुछ बनौने रहै छैन। मुदा तैयो एकटा प्रश्न उठबे करत जे तैबीच (गाछीक जिनगी) की गाछक डारि नै सुखलैन आकि शीशोक पँगियाँ नै भेलैन? जरूर भेलैन। अकासक चिड़ै सभ सेहो बाँझीक लस्सा लोलमे लगौने आबि-आबि डारिपर बैस लोल रगैड़ लस्सा लगा बाँझियोक गाछ रोपिते रहलैन। आइयो ओ गाछी ओहिना लहलहाइत अछि, जहिना शुरुक जुआनीमे लहलहाइ छल। भलेँ गहुमन साँपक लहलही नै हौउ मुदा

पनियाँ-दरादक तँ ऐछे, किन्तु ओकर भय कहाँ केकरो होइ छै, होइ छै गाम-घरक गहुमनक। जे जमीन आम-शीशोक कोन बात जे चन्दन सन वस्तु दैत रहल अछि, तेकरा छोड़ि जँ कियो मरूभूमिमे बसि खुशी मनबै छैथ ओ...। भलेँ देहक मना लैथ किन्तु मनसँ नै मना सकै छैथ।

किशोरी बाबापर सँ राधामोहनक नजैर अपना परिवारपर उतरल। खेत सभ समुचित करै दुआरे परती भेल जाइए। परतियो की कोनो एके रंगक अछि। केतौ उपजैक शक्ति क्षीण ऐछे तँ केतौ शक्तिकेँ क्षीण कएल जाइए! बिनु पानियेँक खेत केते दिन अपन सेवा दऽ सकत। रौद-जाड़सँ तपैत कहुना अपन अस्तित्व बना रखने अछि। मुदा मूल प्रश्न ऐठाम अछि जे जइ समैमे हम सभ जीब रहल छी, समयानुसार कृषि केना औद्योगिक कृषि बनत ई मूल प्रश्न अछि।

अंकुरक रूपमे राधामोहनक विचार जगलैन जे जे पूजी अछि ओइमे पशुपालन करी। मुदा पशुओ तँ केते रंगक अछि। हाथियो अछि, बकरियो अछि आ घोड़ो अछि। मुदा जहिना हाथी तँ उत्पादित छी वा नहि, तहिना घोड़ो अछि। तँए दुनू सवारी बनि गेल। जैठाम पेटक समस्या अछि ओ थोड़े ऐसँ चलत? महींस छीहो तँ ओ मरदा-मरदीक काज अछि। अखनो गाम-घरमे तीन-तीन दिन लोक वौआ-वौआ बाह[5] कराबैए, तइसँ नीक गाए। जे किछु थोड़-थाड़ विकास भेल ओइमे गाइक पाल सेहो समायानुकूल भेल अछि। तेतबे नहि, जँ गाए-महींस पोसब तँ ओकर चाराक ओरियान सेहो करए पड़त। जे सबहक साधक बात नइ अछि। ..जइ-जोकर जिनका छैन ओ ओइ-जोकर काज सम्हारि सकै छैथ, तँए भीतरे-भीतर राधामोहन ऐ भाँजमे जे जँ घासक लूरि माएकेँ हएत तँ एते तँ उपकारे भेल।

तैबीच बुधनी आ नन्दलालक बीच कहा-कही हुअ लगल।

[5] पाल

खिसिआ कऽ बुधनी पतिकेँ कहि देलखिन-

“बड़ बुधियार छेलौं तँ ओ पण्डाबा केना रूपैऔ ठकि लेलक आ देहमे रोगो पैसा देलक?”

बुधनीक बात नन्दलालकेँ लगलैन नहि। पत्नीक गुरु स्वरूपा रूप सोझहा आबि गेलैन।

..तीन सालक कष्ट नन्दलालकेँ जिनगीक बहुत अनुभव करा देने छेलैन। अनुभव ईहो करा देने छेलैन जे अखन उमेरे की भेल। लोक साए-साए बर्ख जीबैए हम अधोसँ कमेमे जा रहल छी। जइ स्त्री आ बेटाक सेवा हम कैरतिऐ से दिन-राति हमरे पाछू हरान रहैए। जे हमरे पाछू हरान रहत ओ अपना-ले की करत आकि सोचत। सबहक जिनगी हम तोड़ि देने छिऐ! जइक चलैत परिवारक गाड़ी पाछू मुहेँ ढरैक रहल अछि।

अपन हारि कबूल करैत नन्दलाल पत्नीकेँ कहलखिन-

“राधामोहनक माए! अहाँ ठीके कहलौं जे पण्डाबा ठकि लेलक। दोख तँ हमरे भेल। पुरुख भऽ कऽ घरक खुट्टा तँ हमहीं भेलिऐ। मुदा एहेन ठकेनिहार हमहीं-टा छी आकि आरो लोक अछि। परिवारमे एते गलती जरूर भेल मुदा...।”

पिता मुँहक इमानदारीक बोल राधामोहनक हृदैकेँ हिलोरि देलक। बच्चा मन सूप जकाँ फटैक तँ नै पेलक मुदा हिलोरमे नीक-अधलाक सीमा जरूर बना देलकै। बाजल-

“माए, हम तँ स्कूले धेने छी, बाबू बेमारे छैथ तैबीच तूँ केते दिन बगियाक बग्गी बना दौड़ा पेमे?”

बेटाक बात सुनि बुधनी लजबिजी जकाँ आँखि मूनि विह्वल होइत बजली-

"बौआ, कोनो की लिखए-पढ़ए अबैए जे लिखि-लिखि रखितौं। मुदा एते मन जरूर गवाही दइए जे जे बनि पएल से करैत रहलौं। नीक-अधला तँ उपरबलाक छी।"

माइक विचारकेँ पकैड़ राधामोहन लत्ती जकाँ ऊपर मुहेँ उठए चाहलक मुदा एहेन कोनो-गिरह आकि अखुँए ने पकैड़ पबैत जैठाम सँ सोंगर पकड़ैत। नजैर उठा देखलक तँ समुद्र जकाँ झलकैत सभ किछु बुझि पड़लै, मुदा नहेबाक गर केतौ नहि!..गुरुक आगू जहिना शिष्य सिर-सिरा कऽ जनैले प्रश्न पुछैत तहिना राधामोहन पुछलक-

"माए, किच्छो तँ फरिछा कऽ कह?"

राधामोहनक प्रश्नक कारक अपन रहै, मुदा बुधनी अपना कारके बजली-

"बौआ, कोनो अनकर घर-दुआर छी जे बाजब, अपन छी, अपन केलौं, तइले तोरा सभकेँ उपराग देब नीक हएत! अपन पति, बेटा, समाज, देश-दुनियाँ सभ किछु तँ अपने छी तखन कि कियो ऐसँ अलग भऽ करैए जे दोसराकेँ कहत। जइ करैले धरतीपर एलौं, जहाँ धरि सक्क लगल तहाँ धरि करै छी। जखन नीक-अधला देखनिहार कियो और छैथ तखन की करबह।"

माइक बात सुनि राधामोहनक मनमे उठल- ओह गड़बड़ भऽ गेल। तेहेन लाड़-झाड़मे पड़ि गेलौं जे अपन बाटे बटिया गेल। भरियो दिन जँ बाट तकैत रहब तैयो ऐ डगरमे थोड़े डगहैर सकब! से नइ तँ ठिकिया कऽ वएह प्रश्न राखी जैठाम वौआइतो बटोही किछु-ने-किछु अँटकैए। बाजल-

"माए, अखन दुनू गोरे–बाबूओ आ अहूँ- वीर्तमान छी, तँए एहेन रस्ता देखा दिअ जइ पकैड़ कऽ हमहूँ ताधैर चलैत रहब जाधैर ओइसँ नीक आ सक्कत रस्ता नै भेट जाएत। आँखिक सोझमे यज्ञक

संकल्प सबहक माए-बापक इच्छा रहैत अछि तँए..?"

राधामोहनक प्रश्न जहिना नन्दलालकेँ तहिना बुधनीकेँ आरो भँसिया देलकैन। नन्दलालक मनमे उठैलैन- जँ बेटा उठि जिनगी उठबए चहैए, तइमे हम छुटि कहाँ रहल छी, जे बापक सेवा नै करत! किछु करैक मन होइ छै। मुदा किछु माने की, सभ किछु आकि किछु नहि? मुदा किछु विचार जँ बेटाकेँ नै देब, सेहो ही‍क लगले मरब..! मनक बात कहि दइ छिऐ। बजला-

"बौआ, दुनियाँमे कियो ने अपना-ले करैए आ ने अनका-ले, हथियार बनि धरतीपर आएल अछि, ओकर उपयोग केते के केलक ओकरे लेखा-जोखा धर्मराजक घर होइ छइ। कियो धर्मराजक घर बास करैए कियो यमराजक। बेटा बनि धरतीपर जनम लेलह। ई केना कहबह मरदक बेटा छह, मुदा एते तँ कहबे करबह जे मरद बनि मरदक बेटा कहबैत रहिहह।"

पिताक बात राधामोहनक मनकेँ ओहेन बना देलक जेहेन बकरीक काँच दूधमे साहोरक दूध मिल कऽ लगले दही बना दइत। मने-मन राधामोहन चौकन्ना होइत चारू दिस ताकए लगल। गुमा-गुमी देख बुधनी धड़फड़ाइत बजली-

"बौआ, भानसक अबेर भऽ जाएत। तहूमे पथ-पानिक ओरियान तँ अपना सभसँ फुट करए पड़ैए। केना पटुआ-झोर बापक आगूमे पथ बना देबहुन। तखन तँ तोरो बड़ जिद लगल छह मुदा माए भऽ कऽ की कहबह। यएह ने कहबह जे हाथ-पएर भगवान दुरुस देने रहथुन तँ दनदनाइत आगू मुहेँ दौगैत रहिहह।"

कहि झपटल उठि बुधनी भानस करए चुल्हि दिस बढ़ि गेली।

◌

शब्द संख्या : 3037

तीन

रातिक पौने नअ बजैत। गामक शिवालयो आ ठकुरवारियोमे सौंझुका शंखो आ डमरूओ बाजि गेल। जारैन नीक रहने बुधनीक भानसो आन दिनसँ किछु पहिनहि भऽ गेलैन। मुदा गामक देवालयक धूप-आरतीसँ पहिने लोक खाए केना लैत! आ जँ खाइए लेत तँ कि भऽ जाएत? ..ऐ विचारमे चुल्हिए लग बैस खोंरनाक जराएल मुँह दिससँ चुल्हिए आगू लिखए लगली। लिखल-पढ़ल तँ बुधनीकेँ नै होइत मुदा सभ दिनक आरतीक स्तुति सुनि पढ़ै-गुनैक लूरि तँ भाइए गेल छेलैन। कियो अपन अक्षर चित्रे घीचि बनौत तइसँ अनका की...। तैबीच ठकुरवारीमे स्तुति शुरु भेल-

"भए प्रगट किरपाला दीन दयाला...।"

ओना बुधनी सभ दिन स्तुति सुनैत, मुदा आइ खोंरना हाथमे रहने चुल्हिए आगू लिखौ लगली। स्तुति केतौ बतियाइत, बुधनीक कान केतौ सुनैत आ हाथक खोंरनी केतौ चलैत। एक बाट नइ रहितो धारक धारा जकाँ अपना-अपनीकेँ सभ दौगैत...।

स्तुति समाप्त होइते जना बिजलीबला इंजन बिजली लाइन कटने जे जेतए गेल रहल ओ ओतै रूकि जाइत तहिना बुधनीकेँ भेल। दुनू हाथो आ कानो अपने रूकि गेलैन। रूकिते मन औनाए लगलैन।

मुदा आगूमे भानसक बरतन आ खाइक समय, तँए मन परिवारे दिस समटा कऽ घेरा गेलैन। मन पड़लैन राधामोहनक प्रश्न। ओह! वेचाराकेँ कहाँ किछु उत्तर देलिऐ। कहुना तँ माए-बाप अखन हमहीं ने छिऐ, सोझहे असिरवाद देने थोड़े होइ छै, आ असिरवादी सेहो दिअ पड़ै छै किने। ..अपसोच करैत बुधनीक मन ठमकलैन। ठमैकते उठलैन जे नै किछु विलगा कऽ कहलिऐ तँ मनाहियों तँ नहियेँ केलिऐ। बीचमे भूमकमो तँ नहियेँ भेल, जे उनटन भऽ जाइत। की हेतै खाइए काल बौआकेँ बुझा-बुझा कहबै।

नअ बजिते बुधनी पहिने पतिकेँ भोजन करौलैन। पछाइत अपनो आ राधामोहनो खाइले बैसली। मुँहक अन्न मुहेँमे बुधनीकेँ घुरियाइत रहैन कि बिच्चेमे अपन जिनगी मन पड़लैन। केतए जनम भेल, माए-बाप ऐठाम केते दिन रहलौं, पछाइत दुनू गोरे नव लोककेँ पति बना हाथ पकड़ा देलैन। पतिक संग जिनगी भरिक शर्त्त छल से भगवान कलछपन केलैन। जे अखन देखैबला छला तिनके तेना कऽ मचोड़ि देलकैन जे देखनिहारकेँ स्वयं देखनिहारक जरूरत भऽ गेलैन। खएर.., कोनो कि दाम्पत्य जीवन नै रहल। माइयो-बाप आ साउसो-ससुरक इच्छा तँ पुराइए देलिऐन। आब कि राधामोहन बच्चा अछि। ओ कि घरक मोटरी उठा नै चलि सकैए। जहिना पतिक आशा तहिना ने बेटोक...।

बजली-

"बौआ, तखन केना पुरुखक सोझ अपन विचार कहितिअ। कहुना भेला तँ स्वामीए भेला किने। जाबे आँखि तकै छैथ ताबे आँखि उठाएब नीक थोड़े हएत, तँए तखन किछु ने कहलिअ।"

जिज्ञासा भरल माइक बात सुनि राधामोहन अपन चित्त असथिर करैत बाजल-

“कोन बात माए बिसैर गेलौं।”

मुँह-कान चमका जहिना माए बच्चाकेँ चमकब सिखबैए तहिना बुधनी मुँह चमकबैत बजली-

“तोहूँ बाले-बोध जकाँ बुधि-बिसरू छह। आब धीगर-पुतगर होइमे बाँकी छह।”

बिनु नाविकक नाह जहिना झीलमे हवाक संग अपने झिलहोरि खेलाइत तहिना बुधनीक मन खेलए लगलैन। ..विस्मित होइत माएकेँ देख राधामोहन बाजल-

“माए, तेते ने कहै छेँ जे एकोटा मन रहत। सभटा बिसरैए-बला बजै छेँ। कोन बात तखुनका कहए लगलेँ से ने कह?”

बुधनी बजली-

“बौआ, तखन जे कहने छेलह जे किछु करैक मन होइए। से करैसँ मनाही करबह। बड़ करबह तँ अपन कएल सुना देबह।”

माइक बातमे राधामोहनकेँ आशाक अंकुरक सम्भावना बुझि पड़ल। पियासल बटोही जकाँ माइक आगू राधामोहन चुपचाप भऽ गेल।

बुधनी बजली-

“बौआ, जुग-जमाना तेहेन आबि गेल जे..?”

अधबोलिया बाजि बुधनी चुप भऽ गेली। मुदा राधामोहनकेँ बुझि पड़लै भरिसक कोनो दोसर बात मन पड़ि गेलैन। ओना नै हएत, अपन कएल काजक बड़ाइ सभकेँ नीक लगै छै, तँए प्रश्नकेँ सोझरा कऽ राखब नीक...। बाजल-

“माए, एहेन कोनो काज कह जे खुशी मनसँ कएल हौ?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी ठमैक कऽ बुदबुदेली-

“केकरा खुशीसँ कएल कहब आ केकरा नै कहब। एके काज केकरो लिए खुशीक होइए आ केकरो लिए नाखुशीक भऽ जाइए। भानस करैक लूरि माए सिखौलक, केना अधला भेल। मुदा ओकर जरुरत तँ बेटीकेँ होइ छै, राधामोहन तँ बेटा छी। भाए-बाबू गाए पोसै छला। गिरहत तँ नमहर नहियेँ छला मुदा सूर्यवंशी दिलीपक बाट जरूर पकड़ने छला। गाए तँ देशीए पोसै छला मुदा जेहने गाइक रंग-रूप तेहने दूधो छेलइ...।”

बुदबुदाइत बुधनीकेँ जेना एकाएक भक खुजलैन तहिना बजली-

“बौआ, तोहू जमानामे बाबूक खुट्टापर तेहेन-तेहेन गाए रहै छेलैन जे...।”

बिच्चेमे बुधनी तेना चुप भऽ गेली जेना किछु मन पड़लैन। मुदा तूक नै बैसने ठमैक गेली। माएकेँ चुप देख राधामोहन पुछलकैन-

“माए, गाएकेँ की सभ करै छेलही?”

अपन काजक चर्च सुनि बुधनीक वृत्ति चित्त जगलैन। जहिना कोठीक निचला-मुह खुजिते अन्न भुभुआए लगै छै तहिना जिनगीक मुँह खुजिते बुधनी भुभुएली-

“बौआ, माए-बापक घर बड़ सुख केलिऐ, जेतबो उमेर धरि सुख केलिऐ तेतबो तोरा कहाँ देल भेल। तखन तँ ‘अनेर गाइक धरम रखबार!’ माइए-बापक धर्मे अखनो ठाढ़ छी।”

बुधनीकेँ फेर धारमे भँसियाइत देख राधामोहन जालक जौड़ पकैड़ बाजल-

“माए, सएह ने पुछै छियौ जे माए-बाप कोन धरम केलखुन जे अखनो ठाढ़ छेँ?”

अपनाकेँ हिलोरैत बुधनी बजली-

“बौआ, बिआह होइसँ पहिनहि माए संग भानसो-भात सिखलौं, खेतियो-पथारीक काज सिखबो केलौं आ करबो करै छेलौं आ माल-जाल-ले घास-भूसा सेहो करै छेलौं। ऐठाम तँ ओ काजे बिसैर गेलौं।”

राधामोहन-

“ऐठाम की सभ सीखलिही?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी लजाए लगली। मनमे उठए लगलैन जे केना बेटाकेँ कहब जे बौआ स्त्रीगणो भऽ कऽ कोदारि पाड़ब, धान रोपब एतइ सीखलौं। की कहत? ओना, करैत तँ देखबे करैए मुदा नैहरसँ सासुरकेँ केना दुसि देब। कहुना भेल तँ पराए घर भेल किने।

माएकेँ तत्-मत् करैत देख राधामोहन बाजल-

“माए, गाइयक की सभ करै छेलँह?”

बुधनी-

“माइक संगे घासो अनै छेलिऐ, कुट्टियो काटै छेलिऐ। गोबर-हटौनाइ, थइर खड़रनाइ, नमेनाइ-ओगारनाइ सभ किछु करै छेलिऐ।”

राधामोहन-

“गाएकेँ दुहबो करै छेलही।”

दूहब सुनि बुधनी चमैक उठली-

“से कि भाए-बाप नै छलए जे दुहितौं। केतए-कहाँ सुनै छी जे पंजाबमे मौगियो गाए दुहैए।”

राधामोहन-

“जखन गाए पोसैक लूरि तोरा छौ, तखन खुट्टापर गाए कहियो कहाँ देखलियौ। नाना-नानी नइ देने छेलखुन?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनीक मन नाचि उठल। आइ जँ खुट्टापर गाए रहैत तँ यएह दिन-दुनियाँ रहितए। भगवानकेँ मंजूर नै भेलैन। जेहो छल सेहो हेरि लेलैन। बजली-

“बौआ, बिआहमे तेहेन गाए बाप-माए देलक जे ओकरा जरहकेँ सम्हारि नइ पबितौं, मुदा दैवक डाँग लागि गेल!”

राधामोहन-

“की दैवक डाँग लगलौ?”

बुधनी-

“पहिलोठ गाए, बच्छा-तरे बाबू देने रहैथ। जाबे लगैत रहल ताबे दूध-दही परिवारमे चलैत रहल, मुदा दोसर बेर जखन गाए उठल तखन तेहेन खुनियाँ साँढ़क भाँजमे पड़ि गेल जे गाइयक टाँगे टुटि गेल।”

राधामोहन-

“टाँग टुटि गेलै तँ ओकरा डाक्टरसँ नै देखौलही?”

बुधनी-

“लोक सभ कहलक जे बलियारिमे एकटा लत्ती होइ छै, उ आनि कऽ बान्हि दियौ, छुटि जेतइ। सएह केलौं मुदा नै सम्हरल गाए। खुट्टे उसैर गेल।”

राधामोहन-

“माए, मन होइए जे गाइए पोसितौं?”

विस्मित होइत बुधनी-

"बौआ, अपना परिवारमे गाए कहाँ धाड़ैए।"

राधामोहन-

"फेर दोहरा कऽ गाए नै भेलौ?"

धड़फड़ा कऽ बुधनी बजली-

"बौआ, जइ काजमे खौटक लगि गेल से केना करितौं?"

धड़फड़ा कऽ बुधनी बाजि तँ गेली, मुदा मनमे उठलैन जे दोहरा कऽ गाए पोसबो तँ नइ केलौं। पोसबो केना करितौं? ...सोझहा-सोझही दुनू तरहक विचार मनमे दुनू दिससँ भऽ गेलैन। बीचमे ठाढ़ बुधनी छटपटाए लगली। माइकक छटपटाइत नजैर देख राधामोहन प्रश्नकेँ मोड़ैत बाजल-

"एके बेर एहेन विचार किए भेलौ जे खौटका लगि गेल तँ दोहरा कऽ नै पोसब।"

निरुत्तर होइत बुधनी बजली-

"से कि अपने दुनू परानीक विचार भेल आ कि..?"

राधामोहन-

"की, आ कि?"

बुधनी-

"बौआ, अपना तँ देखले अछि जे नैहर अही परसादे भरि गाममे ओहन परिवारक रूपमे अछि जे परिवारक गाड़ी[6] दनदनाइत चलैए। तेतबे नहि, मौका-कुमौका दोसरोकेँ उपकार होइ छेलइ। तेहेन गाए छल जे मुइला पछाइतो नै उतरल अपना चित्तसँ। मुदा अपने मुँह मारि लेलैन। एक्केठाम मनमे रोपि लेलैन जे आब ई काज नहि करब।"

[6] भोजन, वस्त्र, अवासक संग दबाइयो-दारू आ पढ़ाइयो-लिखाइ

राधामोहन-

"बाबू मुँह मोड़ि लेलखुन तँ दोसर-तेसर लगबा कऽ किए ने कहबौलहुन?"

जहिना पँकाएल धारमे टपैकाल केतौ-केतौ हेराएल चिक्कनि माटि भेट जाइत जइसँ किछु बिलमैक आश जगैत तहिना जोरसँ ठेलैत बुधनी बजली-

"बौआ, एक मुँहकेँ के कहए जे साइयो मुँह रोकि देलक।"

माइक स्पष्ट विचार राधामोहन नै बुझि सकल। मनमे हौंरए लगलै जे ओ साए मुँह केतएसँ आबि गेल? ..बाजल-

"ई नै बुझलिऐ जे साए मुँह की कहलिही?"

जहिना थकान भेला पछाइत नाकक संग मुहोँसँ साँस लिअ लगैत तहिना बुधनीकेँ भेलैन। राधामोहनक प्रश्न समाप्तो ने भेल छल तइ बिच्चेमे टप-टप बुधनीक मुहसँ चुबए लगल-

"बौआ, एक तँ अपनो विचार रहबे करैन तैपर एकोरत्ती सह पाबि जाथि तँ आरो मन सकता जाइन। जखने मन सकताइन आकि झिझैक कऽ कहए लगै छला जे आब गाए नै पोसब।"

राधामोहन-

"केकर सह पबै छला?"

बुधनी-

"अड़ोसिया-पड़ोसियाकेँ के कहए जे समाजोक लोक कहैन जे तोरा खुट्टापर गाए नै धाड़ै छह, अनेरे एहेन फेड़मे नइ पड़ह!"

राधामोहन-

"जेकरा खुट्टापर गाए छेलै तेकरासँ नै पुछै छेलखिन। किएक तँ हुनका एहेन तीत-मीठ घटनासँ भेँटो तँ भेले हेतैन।"

बुधनी-

"से कि संगे जाइ छेलौं जे देखतिऐ। हँ! एक दिनक सोझहाक बात कहै छिअ। एकटा पण्डा आएल। ओकरा जेना कियो कहि देने होइ तहिना दरबज्जापर अबिते अपने फुरने बाजए लगल जे ऐ डीहपर ग्रह चढ़ाइ केने छह। सम्पैतक क्षय हएत। 'सम्पैतक क्षय' सुनि आँखि ढबढ़बा गेल। केना जीब। जखन पेटे ने भरत तँ भुखले केते दिन जीब। केना बाल-बच्चा हएत आ केना पतिपाल हएत। अपने तँ ढबकल आँखिक नोरकेँ ब्लौटिन पेपरसँ सोखबो करैत रही मुदा हुनका नै सम्हार रहलैन। दहो-बहो नोर गालपर देने टघैर-टघैर निच्चाँ खसए लगलैन...।"

बजैत-बजैत बुधनीक आँखि नोरा गेलैन। बोली भरभराइत देख खखास करए लगली।

..राधामोहनक आँखिमे सेहो नोर आबि गेल। मुदा आँखिक अश्रुकण रहितो सुषुमाएल छल। जहिना दर्दक निवारण सुसुम पानि करैए तहिना परिवारक दर्दक निवारण राधामोहनक मनमे जागल। तरे-तर राधामोहनक मनमे संकल्प उठल जे जीवनोपयोगी कोनो काजक जँ सर्वांगीन लूरि भऽ जाए तँ ओही काजक सम्पादन परिवारक अंग बनै छै तँए..?

राधामोहनकेँ चुप देख बुधनी आँचरसँ आँखि पोछैत बजली-

"बौआ, गाइयक संग पगहो गेल। पण्डाबा से ठकि कऽ लऽ गेल।"

माइक टुटैत मन देख राधामोहन बाजल-

"गामक लोक सभकेँ किए ने खुट्टापर गाए छैन?"

अपनाकेँ पुछै-जोकर पाबि बुधनीक मनमे खुशी आएल।

जहिना हरमुनियाँक पुरने पटरी चैताबरक टाँहि दैत तहिना बुधनी टाँहि देलैन-

"बौआ, बड़-बड़ लीला छइ। केते कहबह। एक-बेर कि-ने-कि सरकारकेँ फुरलै, गामे-गाम बड़का जरसी साँढ़ देलकै। सेहेन्ते लोक पाल खुआबए लगल, किछु तँ जरूर सुतरलै मुदा बेसी गाइक डाँड़े-टाँग टुटलै जइसँ भरि गाममे उपटनियाँ लगि गेल।"

बातक रस पबैत राधामोहन बाजल-

"की कहलिही बड़-बड़ लीला..?"

बुधनी-

"सरधुआ साँढ़ तेहेन भऽ गेल जे गाए सभ बकरी जकाँ भऽ गेल। गरीब पोसिन्दारक पछाइत तेहेन गरदैनकट्टी भेल जे पोसनाइए छोड़ि देलक।"

◌

शब्द संख्या : 1633

चारि

परीक्षाक मास दिन पहिनहि प्रोग्राम निकलल। ओना अखबारो सभमे रहै मुदा असल विद्यालयमे जे आएल छल ओकरे बुझि राधामोहन विद्यालय विदा भेल। सुनबामे ईहो एलै जे अंगरेजी विषयक परीक्षा तँ हएत मुदा पास-फेलक कोनो महत नइ रहत। एक तँ परीक्षाक जिज्ञासा दोसर अंगरेजी उठावक खुशी मनमे रहबे करइ। अंगरेजी उठावक दसो दुआरि भगवतीक आगमनसँ खुजि जाएत, अंगरेजी सभसँ बेसी समय विद्यार्थीक खा लैत अछि। जिनगीक दशो दुआरि खुजैक परीक्षा, जइमे दसो विषयक पढ़ाइयो होइत आ परीक्षो होइत। ओना जइ हिसाबसँ अंगरेजी विद्यार्थीक समय खाइए तइ हिसाबसँ आपसी नहियेँ होइ छै मुदा सोलहन्नी नै होइ छै सेहो बात नहि। अक्षत कम देवता बेसी रहने बँटाइत-बँटाइत वेचारी मैथिलीकेँ हिस्से कम भऽ जाइ छैन। मुदा तँए कि वेचारी निराश छैथ? नहि। निराशाक तँ प्रश्ने मनमे नै उठै छैन। कारणो स्पष्टे अछि। एक तँ गनल कुटिया नापल झोर जकाँ स्कूलो-कौलेज अछि, तहूमे किछु-ने-किछु मैथिलीकेँ सेहो भेटिए जाइ छैन, मुदा अधिकांश मैथिल तँ स्कूल-कौलेज देखबे ने करैत अछि। आखिर, ओहो सन्तान तँ माँ मैथिलीए-क छिऐन। ओना, जे कुभेलो करै छैन तेकरो-ले मनमे कुभेला नहियेँ छैन, हेबो केना करतैन, अपन कर्तव्यसँ-च्युत भऽ बेटा-कुबेटा बनि

सकैए मुदा अपन कर्तव्य पुरौनिहारि धरती सन धीरज रखैवाली माए केना कुमाए बनि सकै छैथ। ओना हाइ-स्कूल अबैत-अबैत बच्चा ढेरबा भऽ जाइए, तइसँ पहिनहि विषय रूपी गुरु अपन-अपन शिष्य चुनि लेने रहै छैथ। मुदा जहिना जेठुआ बर्खाक गति तहिना बाल-बोधक। मुदा हाइ-रे-हाइ, कुबेवस्थाक चलैत फिजिक्सक एम.ए. रेल-बसक टिकट कटनिहार बनि जीवन-यापन करै छैथ! ज्योतिष पढ़ि पुलिसक लाठी चलबै छैथ। तैठाम जिनगीक बिसवासे केते। जखन जिनगीए-क बिसवास नहि तखन जिनगी जीनिहारेक बिसवास केते। खएर जे हौउ...।

प्रोग्रामक उमकी राधामोहनक मनमे उमकले रहए, साढ़े दस बजे स्कूल खुजैए, पूर्वाहनेक काज नीक बुझि विदा भेल। अन्तिम फागुनक समय, मास दिनसँ ऊपरेक वसन्त भऽ गेल छल। फगुआक उमकीमे जहिना उमकैक विचार मनमे उठै छै तहिना राधामोहनक मनमे सेहो दशो दुआरिक दीप जरबैक उमकी रहबे करइ। मुदा घरसँ निकैल डेगे-डेग जेते आगू बढ़ैत ओते मन पाछू दिस ससरए लगलै। मनकेँ पछुआइत देख उमकियो पाछूए दिस मुड़ि गेलइ। राधामोहनक मनमे उठलै जिनगी आ परीक्षा आकि जिनगीक परीक्षा? शुद्ध पानि ने इनार-पोखैरमे असथिर रहैए मुदा जखन ओकरा चीनी वा नूनसँ दुषित करबै भलेँ ओ जीवनोपयोगीए किए ने हुअए मुदा दुषित तँ भेबे कएल? राधामोहनक विचारमे दू दल अपन-अपन विचार लऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल। घन्टो लक्कर-झक्कर भेलो पछाइत नइ फड़ियाएल जे बुधियो ज्ञान छी आकि ज्ञान आनैक बाट? ..विचित्र स्थितिमे राधामोहन ओझरा गेल। जिराएल आदमी जहिना पहिल झोंकमे बेसी दूर दौर लगा लइए मुदा धीरे-धीरे उत्साहमे कमी हुअ लगै छै तहिना राधामोहनोकेँ भेल। उत्साह कमिते देहमे थकथकीक आगमन भेलै जेना-जेना थकथकी बढ़ैत गेलै, तेना-तेना थकाएल बुझि पड़ए लगलै।

अदहा रस्ता तँ टपि चुकल छल मुदा अदहा टपब भारी बुझि पड़लै। गाछीक छाहैर टोहिया कोनैला बड़बड़िया गाछ लग पहुँच बैस रहल।

एक तँ ओहुना पुरान पत-धारी माने नव-नव पत-धार बड़बड़िया गाछक सेखी रहबे करइ। तैपर कनी सिहकी सिहैकते रहै, फागून रहने मजर संग टुकलो रहइ। ..रौद गरमेने दोहरी बोझ राधामोहनक माथपर चढ़ि गेल रहइ। मुदा गाछक छाहैर जेना राधामोहनक कोहि फेरलक। नजैर गाछी दिस बढ़लै। बड़बड़िया आमक गाछक सटले पतियानीमे फैजली आमक गाछ। बड़बड़ीए गाछक जड़ि लगसँ देखए लगल। दुनू आमेक गाछ छी मुदा एना किए अछि जे एकटा किलो भरिक आ दोसर किलोमे पचास चढ़ैत? प्रश्नक ठेहसँ राधामोहन ठेहियाए लगल। मन घुमि कऽ समय दिस ससरलै। चौबीस घन्टाक भीतर दिन-रातिमे केते अन्तर होइ छइ! बारह बजे दिनमे लोक दुनियाँक कोण-कोण देख सकैए आ बारह बजे राति ओछाइनसँ उठि पेशाबो करैले जाइ काल संगीक जरूरत पड़ैत अछि। मुदा फागुन मासमे सूर्योदय आ सूर्यास्त केना एके रंग मनोरम बनि जिनगीक बाट पकड़ैए, भलेँ एकटा अन्हार दिस बढ़ैत दोसर इजोत दिस?

बड़बड़िया-फैजलीक बीच राधामोहन लटैक गेल। किछु फुरबे ने करै जे गाछ-बिरीछ लोकक देल छिऐ, ई तँ सुच्चा भगवानक देल छिऐन। लोक ओकर सेवा करैए आ गाइक दूध जकाँ अमृत खाइए। मुदा ई तँ अद्भुत अछि जे दुनू आम रहितो एना अकास-पतालक अन्तर किए अछि! भगवान तँ केकरो ने अधला करै छथिन आ ने अधला सोचै छथिन। सोचबो केना करता अपने शक्तिसँ ने सोचैक शक्ति दइ छथिन। तहिना हाथ-पएर थोड़े रखने छैथ जे कोनो काज करता..! ई तँ जरूर लोकक करतुत छी। तैबीच बड़बड़िया आ फैजलीक बीच कहा-कही हुअ लगल। फल देख फैजली बाजल-

"रे बड़बड़िया, हमर किलो तोरा नानासँ नमहरे हएत।"

फैजलीक बात सुनि बड़बड़िया गरमाएल नहि, अखन धरि अपनो मन मानै छेलै जे फैजलीक आगू हम किछु छिहे नहि। जहिना बनियाँ दोकानक मंगनी वौस, तहिना छी। मुदा एकटा गुण तँ हमरोमे ऐछे जे अनको-आन गाछक आम लेलो पछाइत झगड़ा नै हुअ दइ छिऐ। मुदा एकटा फैजली आम, एक छर कुशियार, एक पुड़ा मखान केतेकेँ कपार फोड़ौने अछि। ..मनमे खुशी रहने बड़बड़िया बाजल-

"धरमागती बाज जे जेहन सोझ-साझ हमर शीलो आ डारियो अछि तेहेन तोहर छौ! केकरो संग कियो जाएत नहि। बाज?"

फैजलीकेँ चुप होइते बड़बड़िया रेबाड़ि कऽ फेर बाजल-

"सुनि ले, हमरे भाए-भातिज तोरा डारिमे सटि अपन मुड़ी कटा हृदए देने छौ, जैपर तूँ ठाढ़ छेँ।"

दुनूक झगड़ा देख राधामोहन अपन काज–स्कूल जा प्रोग्राम लिखब–बिसैर गेल। जिरेला पछाइत गाछ तरसँ उठि विदा भेल। खखाएल मन रस्ते बिसैर गेल जे केतए जाइ छेलौं।

थकथकाइत राधामोहन घरमुहेँ भेल। जहिना हेराएल-ढेराएल गाए-महींसक बच्चा साँझू पहर डिरियाइत घर दिस अबैत तहिना राधामोहन जेतेक घर दिसक बाट टपैत तेतेक जोर-जोरसँ मनमे हुँहकारी उठइ।

गाछी आ घरक आधा बाट टपैत-टपैत राधामोहनक भक खुजल। जेना ओंघाएल, निशाँएल, भकुआएल इत्यादिक भक खुजैत तहिना रस्ताक भकमोड़ी लग आबि राधामोहनक भक खुजलै। मन पड़लै हाइ रे बा! जाइ छेलौं परीक्षाक प्रोग्राम लिखैले आ आबि केतए गेलौं? ओना चारि बजे तक स्कूलक काज चलै छै मुदा ई बारह बजेक रौद अनेरे खाइले जाएब। नै जाएब तँ परीक्षा केना देब? नै परीक्षा देब

तँ पास केना करब? ..दोसर दिस मनमे उठै जे पासे करि कऽ की करब। जखन आगू पढ़ैक आशे नइ अछि तँ मैट्रिक पासकेँ मोजरे केते होइ छै जे बेसी फड़त। जेतबे मोजर तेतबे ने फलो। एम.ए-बी.ए तँ ऑफिस-कारखानामे दरमानी करैए आ मैट्रिककेँ के पुछै छइ। तहूमे जेते पढ़लौं तेते तँ ज्ञान भाइए गेल अछि तखन अनेरे एकटा कागत-ले[7] हरान हएब। ..द्वन्द्वमे पड़ल राधामोहनक मनमे उठल- काजक परीक्षा नै जिनगीक परीक्षा असल परीक्षा छी। मुदा जिनगी की? जंगलमे जहिना हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछ रहै छै, जे हजारो रंगक फूल-फड़ दइ छै आ नहियोँ दइ छइ। तहूमे किछु फूल एहेन होइत अछि जे सुगन्धितो होइए, सुन्नरो होइए मुदा फड़क कोनो दरसे ने होइ छइ। तहिना किछु फड़ो एहेन होइ छै जे बिना फूलेक फड़ि जाइए! आ किछु फड़ एहनो होइ छै जे फूलसँ पहिने फड़िए जाइए। तँ किछु फड़ो एहेन होइ छै जे संगे-संग गाछमे निकलै छइ। किछु फूल-सँ-फड़ होइ छै तँ किछु एहनो होइ छै जे फूल केतौ फुलाइ छै आ फड़ि केतौ जाइए। तहिना ने मनुक्खोक जिनगी अछि। जेते मनुख तेते रंगक फूल-फड़। जहिना बर्खाक उपरान्तो आ होइतो-खिन बून-बून मिलि धारा बनबैए। भलेँ एक-दोसरमे मिलैत गहींरगर बाट बना गहींर दिस विदा भऽ जाइए। जइसँ चरो-चाँचर आ नीचरस खेतो आ पोखैरो-झाँखैरकेँ भरबो करैए आ नहियोँ भरैए। भरबो तँ अजीबे अछि। केतेसँ भरब कहब सेहो कठिन अछि। किएक तँ जँ साढ़े तीन हाथक मनुखकेँ अदहा किलो दिन-राति भोजन मानि लेब तँ पँच-पँच साए रसगुल्ला केना पेटमे अँटै छइ! दस-दस किलो माछ आ दू-दू तौला दही केना पचबैए! ..राधामोहनक मनमे उठलै- अनेरे वौआइ छी। काज छोड़ि जखने मन वौआएत तखने बहपनी आबए लगत। जखने बहपनी

7 सर्टिफिकेट-ले

औत तखने धार-सँ-धारा बनए लगत। मुदा धारोक तँ ठेकान नहि। एक तँ ओहुना धारक धारा जकाँ जिनगीक बहान नइ अछि। किछु एहेन होइए जे जुग-जुगसँ एके स्थानपर बोहैत आएल अछि आ किछु एहनो अछि जे दोसरमे मिलि अपन अस्तित्वे मेटा लेलक। मुदा तेतबे नहि, एहनो तँ कोसी-कमला जकाँ ऐछे जे सालमे तीन-तरपान तरपैए!

जेते राधामोहन पताल दिस वा अकास दिस नजैर दौगबैत तेते रंगक दुनियोँ आ पतालो मनमे अबैत जाइत रहइ। अकास दिस तकै तँ देखै जे फनिगा धरतीसँ उठि कूदि-कूदि अकास दिस ऊपर चढ़ए चहैए, घोरन-चुट्टी मरैक पाँखि पहिर उड़ैए...। तहिना पताल दिस तकैत तँ एक्के पोखैरमे सत-रंगा माछक जीवन-यापन सुख-चैनसँ होइत देखैत। थालक गैंची गैंचिया-गैंचिया थालमे बिआह-दुरागमन कऽ पत्नीक लगमे राखि जीवनो-यापन करैए आ कुल-खनदानक धुजा गाड़ि बालो-बच्चाक उपार्जन सेहो करैए। तहिना पानियेँमे माटिसँ ऊपर रेहु-नैन-भौंकरी सेहो अपन-अपन सीमा रेखा खींच-खींच अपन घरो-दुआरि बनबैत आ परिवार संग मिलि वंशोकेँ जीवित रखने अछि...।

बाल मन राधामोहनक जेम्हरे नजैर दौगबैत तेम्हरे डाभ-कुशमे ओझरा जाए। जहिना चाणक्य छैथ नहि छला आ तहियाक नालन्दा विश्वविद्यालय जे कुश उपटाएब शुरू केलक ओ कुश अखनो धरि गामे-गाम ऐछे, वेचारे असकरे केतेक गामक उपटौत। तहूमे ओहन समाजमे जे सदैत जमीनदारीए वा जागीरदारीए बनबै पाछू लगल रहैए। एक्के रंगक जागीरदारीक बीच समाज थोड़े अछि।

सौन-भादोक वायुक गति भलेँ मंथर भऽ जाए मुदा चैती-फुहा, फुहराम हवा तँ केतौ-सँ-केतौ उड़िते अछि। राधामोहनक मन ओही फुहराम हवाक संग उड़ि पुरुषोत्तम लग पहुँच गेल, बीचमे केतौ मुदा

अँटकल नहि। दरबारमे बैसैसँ पहिने मनमे उठि गेलै जे त्रेता-जुगक जुआन-जहान राम चारू भाँइ भेला मुदा समाजक बुढ़-बुढ़ानुसक विचार पिताक विचारक आगू किए ने मानलैन। समाजक जेते बुढ़-बुढ़ानुस छेलखिन ओ अपनामे विचार किए ने केलैन जे राम सन परब्रह्म समाजक अंग बनल रहए। नइ कि बनलोहो बिगैड़ जाए। तइसँ नीक जे हुनके (रामेक) वृद्ध पर-पितामह–दिलीप छैथ तिनके दरबार जा अपन उचिती-विनती किए ने करी जे अपना राजमे बासो देबे करता। ..जेना कानमे कोनो दिशासँ कोनो तरहक अवाज अनासुरती प्रवेश कऽ मनकेँ जगा दैत तहिना राधामोहनक मनमे जगल। अपन संकल्पक संग अपन जिनगी बना जीब। जँ से नइ तँ हारि की भेल? जाधैर मनुख दोसराश्रित रहत –वैचारिक छोड़ि– ताधैर पर्यावरणमे कमी हेबे करत। जिनगीक पहिल विचार जखन मनमे उठल तँ की ओ अधला उठल? जँ नहि तँ किए ने पालन-पोसन करब? जाबे धरि दूध पैदा करैक शक्ति मनुखमे नै औत ताबे धरि हंसक बास केना भऽ सकै छइ? ..जेतए दूध रहत तेतइ ने हंसोक बास रहत। मुदा दूध-पानि बेरौनिहार हंस मनुखक देल पानि बेरबैए आकि भगवानक देल जे गाए-महींसक पेटेमे फेंटल रहैए तेकरो बेरबैए?

बाल-बोध बच्चा जहिना चलै-जोकर टाँग होइते पछोर धऽ चलए चाहैत मुदा चालिक गति पछुआ दोसर बाट सेहो धड़ा जाइत, मुदा बाट तँ बाटे छी तहिना राधामोहनक मन बाटक आशा बाट पकैड़ वौआए लगल। मन पड़लै अपन पहिल बाट- गाइक पालन-पोसन। मनमे उठिते उठि गेलै- 'परिवारमे गाए नै धाड़ैए। तँ धाड़ैए की? धार-साज तखन बनै छै जखन ओइमे मन मधुरस आबि मनकेँ पकड़ै छइ। पशुपालनक अंग भेल गाए पोसब आ पशुपालन कृषिक अंग रहल अछि। किसानक देशक विकास बिना किसानी प्रक्रियासँ सम्भव अछि? अपना लिए अपन दुनियाँ बना-बना बैस जीवन-यात्रा भरिसक

सभसँ नीक होइ छइ। जइ बीच निवास करैत अपन तन-मन-धनक एकाग्र करैए। ..राधामोहनक जिज्ञासा आरो बढ़ल। मनमे उठलै लिखित-अलिखित विचार पकड़ब। केता दिन अखबारक पन्नामे पशुपालनक लेख देखै छिऐ, मुदा ओकरा पढ़ै कहाँ छी? कियो पढ़ै छी जे भारत-अमेरिकासँ केते रणसँ जीतलक तँ दोसर कोनो पछुएलहा देशसँ केते रणसँ हारल। तँ कियो पढ़ैए पूरा इलाकामे बैंकक की कारोबार छै, तँ कियो पढ़ैत चोरी-डकैती केते भेल। तँ कियो पढ़ैत रेलक भाड़ा बढ़ि गेल आब लोक गाड़ीमे केना चलत। ..ई सभ सच्चाइ सामने अबिते राधामोहनक मन वौआए लगलै। अफसोच करैत मन अखबारसँ रेडियोपर आबि गेलइ। जे भाषा बुझै छी तइमे सैंकड़ो कार्यक्रम प्रतिदिन कृषिक अछि। अखबार हूसल तँ हूसल आइएसँ रेडियोक कार्यक्रम सुनब। मन आगू बढ़लै। कृषि कौलेज पूसापर गेलइ। पूसामे किसान मेला लगैए जइमे कृषि सम्बन्धी अधिक-सँ-अधिक जानकारी भेटै छइ। सत संगेसँ ने संगैत सुधरबो करै छै आ बिगड़बो करै छइ! अनेरे मन वौआबै छी, जखन विश्वविद्यालय ऐछे तखन आरो की चाहबे करी। मन ठमकलै। विश्वविद्यालय-ले उन्नत खेतीक जरूरत अछि, तैठाम जँ कौलेज कम रहै तहूमे सीमित पढ़ाइ होइ, आ ओहू सीमितमे किताबीए शिक्षा धरि समटा जाए तखन विकास केना हएत? जरूरत अछि कृषि शिक्षाकेँ खुला विश्वविद्यालय बना सभ स्तरक किसान पैदा करैक। जँ से नहि तँ की मन संग कर्म आ वचन समतुल्य भऽ सकत? आकि पुरना लोक नवका कम्पनीक अंगुरक रस पीब बेसी भँसिया कहलैन?

ओझराएल बाट देख-देख राधामोहनक मन आरो ओझरा गेल। हृदए सुखए लगलै, मन तरसए लगलै, बकार बन्न हुअ लगलै। मुदा की हमहीं सभ ऐ देशक भविस छिऐ, जेकर अपने ठेकान नइ छइ! कहब असान छै जे नवयुवककेँ भरमबैले कहल जाइ छै मुदा केहेन युवक

पैदा भऽ रहल अछि? लगले उड़ि हंस बनि जाएब आ लगले मोड़नीक चालि धऽ लेब आ लगले गाछपर बैस उल्लू जकाँ मुँह दुसए लगबै। जहिना बेर-विपैत पड़लापर संगी संग छोड़ि दइ छै तहिना राधामोहनक मनक सभ संगी संग छोड़ए लगलै। मुदा ओहनेठाम सत-संगो भेटै छइ। जहिना नीन निपत्ता तहिना बुधियो बिला जाइ छइ। जइसँ ने देहमे सक रहै छै आ ने अक चलै छइ। जँ अके नै चलतै तँ बक केना चलत आ जँ बके नै चलत तँ बत्तक जकाँ माटि-पानि एके केना बुझब! ..अधमड़ू अवस्थामे राधामोहन रेडियो खोललक। बिहारक पहिल समाचार-

"सातम दिन पूसा मेला आरम्भ हएत!"

सुनिते राधामोहनक ठेहियाएल मन उबियाएल। सातम दिन कृषि मेला छी। जरूर जाएब। दूरे कोन अछि। पहिलका जिले तँ छी। असकरो जा सकै छी, नहि जँ संगबे भेट गेल तँ आरो नीक। ओना जे मनमे अछि- 'गाए पोसब' ओहन मन केकरो कहाँ देखै छिऐ। जखन मने नहि तखन काजे की आ संगबे केतए। तँए संगियोक कोन आश। ओना चौक-चौराहापर चर्च कऽ देबइ।

सवारीक सुविधा भाइए गेल अछि तहूमे डेढ़ बजे मेलाक उद्घाटन हएत, भिनसुरको बस पकड़ने काज चैलिए जाएत। तीन दिनक मेला छी तीनू दिन रहब। गरमी मास छिहे, खाइ-पीबैक दोकान-दौरी हेबे करतै...।

दृढ़ता अबिते राधामोहन संयोगकेँ नीक बुझलक। मनमे एलै- संयोग कोनो कि अपने अबै छै आकि काज अनै छइ। जँ काजे नइ तँ संयोग कथीक?

जहिना कोनो अबोध बच्चा आमक लालचमे निसभेर अनहरियो रातिमे माए-बाप लगसँ उठि ठेकल आमक गाछ लग पहुँच जाइत

तहिना राधामोहन बस पकैड़ पूसा कृषि मेला विदा भेल। मेला तँ मेले छी। मुदा मेला की? वएह ने जे विदेशी खेल-तमाशा आ ललिचगर वस्तु आनि-आनि लोक अपन जे पुरना मेला छल ओकरा नष्ट कऽ रहल अछि। सुधार जरूरी अछि मुदा अपनकेँ सोल्हन्नी दुसि अनकर अपना लेब की नेनमति नै भेल? कोनो वस्तुक संग परिवार जुटल छै, ओकर जीविका छिऐ, ओइ जीविकाकेँ तोड़ैसँ पहिने ओहन जीविका अनिवार्य होइत जे समैक संग चलि सकए। बिनु हाथ-पएरक जोंक-ठेंगी जहिना दोसर गर पकैड़ आगू बढ़ैए तहिना जैठामक किसानी जिनगीक हाथ-पएर टुटल अछि तैठाम उपाय केहेन होइ?

उद्घाटनक समय जहिना दिल्लीसँ गाम धरिक लोक तहिना रंग-रंगक रेडियो-अखबारबला दन-दन करैत। मुदा सिपाही कम। तहूमे बेसी ओहने जे उद्घाटनक पछाइत चैलिए गेल। क्षेत्रीयता जँ केतौ अधला होइ छै तँ केतौ नीको छै, जरूरत अछि क्षेत्रीय कृषि ज्ञानक। मिथिलांचलक अन्हरो-दिठरा बुझैए जे छहटा ऋृतु होइ छै आ छबो रीतुक छह सीमा होइ छै आ सीमापर किछु दिन मेला लगै छइ। ओइ मेलाकेँ वएह सजा पौत जे ओइ तेजीसँ चलत। एके अन्न एके फल आ एके तरकारी किछु कमो दिनक होइत तँ किछु बेसियो दिनक। हमर स्थिति की अछि ओकरा पकड़ब अछि। जे आन-आन राज्यक स्थितिसँ भिन्न अछि। किताबी दौड़मे देशकेँ जानब असान अछि मुदा भोगोलिक दौड़मे कठिन अछि। भलेँ कठिन अछि मुदा जीवन-दाता तँ वएह छी, छोड़ि केना जीब?

उद्घाटन भाषण सुनि राधामोहनक मन शीशा जकाँ चमैक गेल। पाथर गिरल काच जकाँ चनचना कऽ चनैक गेल। दुनियासँ लऽ कऽ बलुआहा माटि धरिक बात सुनलक। दोखड़ो बालु सोना पैदा करैए से तँ राधामोहन पहिल दिन सुनलक। ओना पहिनौं सुनने रहए जे बालुसँ

तेल भले निकैल जाउ मुदा बातसँ हटि नै सकै छी। मुदा ओकरा कहबीए बुझै छल।

निअमित तौरपर ग्रुप-ग्रुपमे बँटि कार्यक्रम शुरू भेल। एक संग अनेको ग्रुप। केतौ अन्नक खेतीक तँ केतौ तरकारीक, केतौ फूलक तँ केतौ फलक, तहिना केतौ पशुपालनक तँ केतौ मुर्गी पालनक। ..जहिना मेलामे प्रेमिकाकेँ देख आरो मेलाक चुहचुही बढ़ि जाइत तहिना राधामोहनकेँ सेहो चुहचुही भरल मेला बुझि पड़ल। मनमे एलै- बीचक जे अदहा घन्टा समय खाली अछि तइमे खा-पी लेब नीक रहत, चारि घन्टाक गोष्ठी अछि।

पशुपालन गोष्ठीमे राधामोहन बैसल। तीन शिक्षकक बीच गोष्ठी संचालित भेल। मुदा राधामोहनकेँ बैसारक गप-सप्पसँ बुझि पड़ए लगलै जे भरिसक अपना इलाकाक असकरे छी। किएक तँ मनुखक पहिल परिचए भाषे कहबै छइ। बेगूसराय आ बकसरिया बेसी बुझि पड़लै। मुदा असकरोमे असगर नै बुझि पड़इ। कहनिहार शिक्षक छैथे, सुननिहार जहिना सभ तहिना हमहूँ रहब...।

तीनू शिक्षक पशुपालन-ले पशुक देख-रेख, बेमारीक इलाज आ नश्लक चर्च केलैन। चारि घन्टाक गोष्ठीमे तीन-चौथाइ समय निकैल गेल। शेष समैमे ओ सभ[8] समस्या सुनैक समय देलखिन। एका-एकी समस्यापर चर्च हुअ लगल। मुदा अनकर भोज, सुननहि की जे नअ सलिया अँचार छल...।

राधामोहनक मनमे प्रश्न उठए लगल। गुलछिया जकाँ घौंदे-घौंदा। मुदा बाल मन राधामोहनक थकथका गेल। हिन्दीमे सबाल जवाब चलै छल। भाषाक गलती वस्तुक (विषयक) गलती बना दैत

[8] तीनू शिक्षक

अछि। अष्टम सूचीमे मैथिली रहितो मिथिलांचलक कोट-कचहरीसँ लऽ कऽ स्कूल-कोलेजमे हिन्दीए चलैए। अपन धिया-पुताकेँ अंगरेजिया बनाएब अगुआएल जिनगीक लक्षण बुझल जा रहल अछि। जरूरत अछि जगत-जीव-ईश्वरकेँ जानब। ..राधामोहन अपन मनक बात मनेमे रखि लेलक। संयोग भेल। तीनू शिक्षक अन्तिम पाँच मिनटमे के केतएसँ आएल छी, पुछलखिन। क्षेत्र सुनि राधामोहनकेँ हूबा भेल। अपन देश अपन भेष अपन भाषा तँ संगी अछिए। ओ अपन परिचए मधुबनी जिलाक नाओंसँ देलक। ..पड़ोसी गामक एकटा शिक्षक। ओ मैथिलीएमे राधामोहनकेँ पुछलखिन-

"अहाँक गाम?"

गामक नाओं सुनिते ओ कहलखिन-

"अहाँक पड़ोसी छी तँए तीनू दिन अपने डेरापर रहब।"

डेराक नाओं सुनि दोसर शिक्षक हुनका आँखि-पर-आँखि देलकैन। आँखिए-क इशारामे जवाब देलखिन-

"मिथिलाक धर्म।"

सांस्कृतिक कार्यक्रम होइसँ पहिने धरिक ड्यूटीमे पी.एन. बाबू छला। ओना गोष्ठीक तीनू शिक्षकक डेरा सटले-सटल सेहो छैन्हे। तीनूक एकठाम डेरा रहने साँझ-भोर एकठाम बैस चाहो पीबै छैथ आ अपन-अपन देश-कोसक गपो-सप्पो करै छैथ। बीचक एक घन्टा समय बितबैक क्रममे पी.एन. बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

"राधामोहन, अहूँ मेला देखए एलौं, घुमि-फिर देख लियौ आ हमहूँ ड्यूटी समाप्त कऽ लेब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि राधामोहन मेला दिस बढ़ल आ पी.एन. बाबू ऑफिस दिस

बढ़ला। ऑफिस पहुँचते अपना ग्रुपक चर्च उठल। गोष्ठीक नीक कार्यक्रम रहल।

बैगकेँ ऑफिसमे रखने राधामोहनक देहो हल्लुक भेल। आगू बढ़िते लोक दिस ठिकिया कऽ तकलक तँ बुझि पड़लै जे ओहने लोक बेसी छैथ जे बम्बैया कलाकार जकाँ जेहने 'जोकर' तेहने 'हीरो' जकाँ छैथ। नारद भगवान जकाँ जेतए स्मरण करब तेतइ वीणाक संग पहुँचल पेबैन। कचहरीसँ लऽ कऽ गामक भोज-काजक वारीकसँ नेने-नेने दशनामा काज होइत सरकारी भण्डार लग पहुँचलाहाक बाहुल्य! किसान कम। खास कऽ मेहनत करैबला। मुदा, ऐठामक जे कृषिक प्रतिष्ठा बनल रहल ओ तँ रग-रगमे पकड़नहि, जइसँ किसान परिवार आ किसानक ठेकान अमेरिको-इंग्लैंडमे दैते छैथ। तँए समैक भूख अछि जे किसानक परिभाषा आधुनिक कएल जाए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू भेल। राधामोहनकेँ संग केने पी.एन. बाबू डेरा दिस बढ़ैक विचार केलैन। ओना विश्वविद्यालये कैम्पसमे डेरा। तैसंग पान-सात कट्ठाक बाड़ियो झाड़ी छैन।

पी.एन. बाबूक घर मधुबनी जिलाक भगवानपुर गाम, सुरेन्द्र बाबूक घर धर्मपुर नवादा जिला आ दीनानाथ बाबूक बक्सर जिला। तीनूक तीन भषे क्षेत्र नहि भौगौलिक क्षेत्र सेहो। एग्रीकल्चरसँ जुड़ल तीनू गोरे तँए तीनू क्षेत्रक जानकारी तीनू गोरेकेँ रहबे करैन। ओना भाषाक बीच कोनो विवाद नै रहैन, कारणो स्पष्टे अछि। गाम-गामक आ घर-घरक लीला अछि जे मैथिली भाषीकेँ मगहियो आ भोजपुरियो क्षेत्रमे कथा-कुटुमैती होइत आबि रहल अछि। कोनो घरक पुरुष मैथिल तँ भोजपुरनी घरवाली आ भोजपुरिया घरबलाक मगहीनी घरवाली। ओना शब्दक कर्कशपन मगहीक अपेक्षा मैथिली-भोजपुरीमे कम अछि।

कम जवाबदेही रहने पी.एन. बाबू समैपर ऑफिससँ निकैल डेरा दिस बढ़ैक विचार केलैन। मुदा सुरेन्द्र बाबू जवाबदेहीमे आ दीनानाथ बाबू रिपोट दइमे पछुआएले रहि गेला। दिनक एक गाड़ी विलम भेने दिन भरिक गाड़ी बिलैमते चलत। मुदा तैयो पी.एन. बाबू दुनू गोरेकेँ कहि देलखिन-

"गौआँ आएल छैथ। किछु हाल-चालक समाचार तँ आबिए गेल हएत। लेटो-फेट एकठाम बैस चाह पीबे करब।"

आगू बढ़िते जेना पी.एन. बाबू राधामोहनक गौआँ भऽ गेलखिन। पुछलखिन-

"राधामोहन, अहाँ गामक पजरेमे सुखेत अछि, ओत्तै हमर सासुर छी।"

गाम सासुर सुनि राधामोहनक मनमे घनिष्ठता जगल। एकबधू गाम, एक उपजा एक खान-पान...। उगैत उगना जकाँ विभोर होइत राधामोहन बाजल-

"श्रीमान्, अपने लोकैन तँ सभ तरहेँ पैघ भेलिऐ, अपनहि सबहक ने बाँहि पकैड़ आगू बढ़ब।"

राधामोहनक बात समाप्तो ने भेल छल, बिच्चेमे पी.एन. बाबू टपकला-

"जहिना अहाँ अखन नवतुरिया छी तहिना जखन हमहूँ रही तही दिनसँ जनै छी जे एक-दोसराक बाँहि पकैड़ गरा-जोड़ी कऽ जीवन-यात्रा करब नीक होइ छइ। मुदा से नै भऽ पबैए। दिन-राति देखै छी जे ठक ठकि बाँहि पकैड़ धकेल-धकेल गरगोटिया दइए, तैठाम केकरो बाँहि पकैड़ लेब छौड़ा-छौड़ीक खेल नै ने छी।"

पी.एन. बाबूक विचारक गम्भीरताकेँ राधामोहन नै परेख सकल

मुदा मनमे तँ ओहन खुशी जागिए गेल रहै जे भरि पेट भोजन, राति-बीच रहैक जगह देलैन ओ जरूर नीक बोलो देबे करता।

साढ़े सात बजे तीनू गोरे–पी.एन. बाबू, सुरेन्द्र बाबू आ दीनानाथ बाबू–एकठाम भेला। डेराक छतेपर बैसार। एक दिस सांस्कृतिक कार्यक्रमक पीह-पाह तँ दोसर दिस गाम-घरक कुशल-समाचार। चाह चलिते पी.एन. बाबूक पत्नी सेहो चाह पीब बैसारमे शामिल भऽ गेली। ओना जइ दिन दीनानाथ बाबूक मुहेँ मिरचाइकेँ तीत सुनलैन तइ दिनसँ जेना हिनका देखते वएह मन पड़ि जाइ छैन जइसँ अनेरे हँसी निकैल जाइ छैन।

चाह पीब दीनानाथ बाबू बजला-

"सभसँ कम उपस्थिति मिथिलांचलेक रहल?"

स्वीकारैत पी.एन. बाबू बजला-

"हँ, से तँ छल। अपन तीनू गोरेक क्षेत्र तीन रंगक अछि। माटिक (क्षेत्रक) असथिरता जइ रूपे अहाँ दुनू गोरेक क्षेत्रक अछि ओइसँ भिन्न मिथिलांचलक अछि। एक तँ माटि नरम छै तैबीच तेज धारक कटावक संग जोरगर बर्खाक संग भुमकमो क्षेत्रकेँ नष्ट करैत रहल अछि।"

पी.एन. बाबूक जवाबक पछाइत चुपा-चुपी पसैर गेल। अका-अकी, बका-बकी सभ सबहक मुँह देखए लगला। खढ़िया बच्चा जकाँ राधामोहन आँखि-कान-मुँह ठाढ़ केने, जे सीखैक समय भेटल किछु सीखब। ..पी.एन. बाबू गुम जे अपन इलाकाक उखाही करब उचित नहि, तँए चुपे रहब नीक। मुदा दीनानाथ बाबू जेहने काज करैमे चरफर तेहने बजैयौमे फरकोर। मनमे उठलैन जखन पी.एन. बाबूक गौआँ एलैन, ओना हुनका अपनो गाम छोड़ना पचीस बर्खसँ बेसीए भेल हेतैन, तखन वएह ने अपन बात उठौता। तैबीच हम सभ अपन

क्षेत्रक गप करी ई बुड़िपना हएत। बुड़िपना ऐ लेल जे तीनू शिक्षकक बीच एकटा दूधमुहाँ बच्चाक चाराक ओरियान नै कऽ अपने सभ सभ-दिना गप जे ऐ स्कीममे एते सुतरल...। पूर्णिमा दिनक नौत दइ छी...। नइ तँ सासुरक अमराक अँचारक गप करब। नै तहूसँ तँ मिरचाइकेँ तीत कहि गृहिणीसँ मुँह दुसा लेब उचित नहि। ..सभ किछु सम्हारैत दीनानाथ बाबू बजला-

"भाय, गोष्ठीमे जे आँखिक इशारा केलौं से अपन अनुभवक अधारपर, तँए एकरा अपना ढंगसँ नै लेबइ।"

पी.एन. बाबू पुछलखिन-

"की अपना ढंगसँ?"

दीनानाथ बाबू-

"हमरो पत्नी ओमहुरके छैथ। तेते पूजा-पाठ आगत-भागत करै छैथ जे घरक जुतिए सुमझा देलिऐन। हाटे-बजारक दौर-बरहा तेते करैबै छेली जे कमेलहो कि खा कऽ पचए दैथ। तइसँ नीक जेते कमाइ छी, पॉकेट खर्च काटि कऽ दऽ दइ छिऐन। आ कहि देने छिऐन जे तैबीच कर्जा केलौं तँ अपन जानी, नइ जँ महाजनी केलौं सेहो अपने जानी।"

मुस्की दैत बिच्चेमे पी.एन. बाबू टिपलैन-

"तखन तँ सोल्होअना हिसाब घरसँ बेरा नेने छी?"

दीनानाथ बाबू-

"नै ने बेराएल होइए, हुनका लाटक जे कियो अबै छैथ ओ तँ सासुरेक पट्टी भेला किने, किछु-ने-किछु बजा जाइते अछि। जइसँ घुमा-फिरा कऽ दोखी भाइए जाइ छी। से सभ छोड़ि कऽ।"

पी.एन. बाबू गम्भीरतासँ प्रश्न दोहरौलैन। प्रश्नक गम्भीरताकेँ

देखैत दीनानाथ बाबू बजला-

“देखियौ भाय साहैब, अपनो विचार ओहने अछि जेहने पत्नीक छैन तँए अभ्यागती परिवारमे बेसी बढ़ि गेल। मुदा आइक समैमे जे बिगड़ाउ आबि गेल अछि ओ तँ सोझहा-सोझही सामनेमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। नव पीढ़ीक बोलमे केते झूठ फेंटा गेल अछि जे सत बुझब कठिन भऽ गेल अछि। जेना-जेना अभ्यागती बढ़ैत गेल तेना-तेना घरक वस्तु बिड़हाइत गेल, तँए इशारा केलौं।”

दीनानाथ बाबूक उत्तरक पछाइत फेर सबहक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। सुरेन्द्र बाबू ऐ-ताकमे रहैथ जे अपन प्रवास लगसँ पी.एन. बाबू प्रश्न उठौता भलेँ राधामोहनक जनमसँ पहिनहि गाम छोड़ि देने होथि, मुदा जएह सएह।

..पी.एन. बाबूक मनमे उठि गेलैन जे सोझहा-सोझही तीन क्षेत्रक तीनू गोरे छी तँए हुनका सभकेँ प्रश्न उठेबाक चाहिऐन जइमे हम बीचक कड़ीक काज करब...।

दीनानाथ बाबू गर लगबैत राधामोहनकेँ पुछि देलखिन-

“भरि मेला रहब किने?”

आग्रह देख राधामोहनक विचारक बान्ह टुटिते भुभुआ गेल-

“श्रीमानक सासुर आ हमर गाम एक्केठाम अछि। एकबधूए छी। हिनकर ससुर सबहक पुबरिया बाध हमरा गामक पछबरिया बाध छी।”

ई गप सुनिते बगलमे बैसल सुरेखाक हृदैमे अपन नैहरक दुर्गापूजा देखब मन पड़ि गेलैन। केना संगी सबहक हेँजमे चारिए बजे दिआरी लऽ कऽ साँझ दइले जाइ छेलौं से दोसर-तेसर साँझमे घुमि कऽ अबै छेलौं। सतमी-सँ-दसमी धरि तँ ठेकाने ने रहै छल जे कखन अँगनामे छी आ कखन दूर्गा-स्थानमे। मुदा अखन किछु जँ बाजब तँ बाते अबला-दबला भऽ जाएत। से नइ तँ निचेनमे जखन गर लगत तखन गप करब। कियो कि आन छी नैहरक भाए-बोन छी। हमरा सबहक कि ओ युग-जमाना छल जे नैहरेसँ यार भँजिएने सासुर अबै छेलौं। समाजक कियो छी भाए-बोन छी...।

दीनानाथ बाबू प्रश्न दोहरबैत बजला-

“पुबरिया या पछबरिया बाध कथी कहलिऐ?”

राधामोहन-

“एक रंग खेत रहने, माने माटिक सतह एक रंग रहने एके रंगक उपजो-बाड़ी होइ छै आ रौदियो-दाही। ओही बाधमे पनरह कट्ठा खेत अपनो अछि। अपने खेतक बगलमे आन सभ घासोक खेती करै छैथ, तँए विचार भेल जे पूसा मेला जाइ छी, जहाँ धरि जे हएत बूझि-सूझि आगू करब।”

उत्तरक आशामे राधामोहन चुप भऽ गेल। मुदा तीनू गोरे–पी.एन. बाबू, सुरेन्द्र बाबू आ दीनानाथ बाबू-क बीच प्रश्नक गड़ उनटा-सुनटा पकड़ा गेलैन। एक दिस देशक स्थितिक चर्च उठल तँ दोसर दिस गामक आ तेसर दिस एक-एक किसान परिवारक। प्रश्ने-प्रश्न उत्तरे-उत्तर गँरि-मुड़िया हुअ लगल। गपे-सपक क्रममे एहेन गँरि-मुड़िया भऽ गेल जे तीनू गोरे अपने उबाइन हुअ लगला। मुहसँ बोल निकैलते जहाँ नजैर उठबैथ आकि अपने हीआ हारि दैन जे ओ गड़बड़ भऽ गेल।

..एकाएकी तीनू गोरेक मुँह बिधुआ लगलैन। बैसारक रसे समाप्त भऽ गेल। दोहरा कऽ चाहो पीब उचित नहि, हमरे सबहक दुआरे भरिसक घरवारिनी भानसो करए नै जाइ छैथ, तहूमे भरि दिनक ठाढ़ ड्यूटी केनिहार सेहो छथिन। तइसँ नीक जे बैसारे तोड़ि

देल जाए। मुदा तीनू गोरेक बीचक कटौझ तँ राधामोहनो सुनलक। ओइ वेचाराक मनमे की उठतै? खएर.., बाढ़िक टुटल बाट होइ आकि टाट लगौल रस्ता, टपब तँ कठिन अछिए।

सुरेन्द्र बाबू आ पी.एन. बाबूक अपेक्षा दीनानाथ बाबूक चपचपी कम रहैन। मन गवाही दैन जे कहुना भेला तँ दुनू गोरे सुरेन्द्रो बाबू आ पी.एन. बाबू सेहो सीनियरे भेला किने। गलती तँ सभसँ होइ छइ। हमरोसँ भेल हएत जे अपने प्रश्नक जवाबमे अपने ओझरा गेलौं। मुदा किछु बाजबो तँ घापर नुने छीटब हएत किने। एक तँ ओहिना दुनू गोरेक मन रब-रबाइत हेतैन तैपर किछु बाजि आरो भक-भका दिऐन से नीक नहि। ..मुदा बगलमे बैसल मैथिलानी सुरेखा तीनू गोरेक दशा देख बीचमे गंगाजल छीटब उचित बुझि, दिओरक लेहाजसँ गरगोटियबैत दीनानाथकेँ कहलखिन-

“मेहनत करि कऽ पढ़ने छी आकि रूपैआ-पैसा दऽ कऽ?”

दिओर-भौजक गप-सप्पक क्रममे दीनानाथ बजला-

“पाइ-कौड़ी तँ खर्चा नै केने छी मुदा दहेजक बदला ससुरसँ नीक रिजल्ट आ नोकरी जरूर लेने छी।”

दीनानाथक उत्तर सुनि सुरेखा बजली-

“अखन बैसार तोड़ू भरि दिन खटलौं हेन, फेर काल्हि सेहो औझुके जकाँ खटए पड़त। तँए सबेर-सकाल ओछाइनपर चलि जाएब नीक रहत।”

‘एक तँ राकश दोसर नौतल’ हरे-हरे कऽ तीनू गोरे मानि गेला।

सुरेखा भानस करए बढ़ली। राधामोहन आ पी.एन. बाबू छतपर सँ निच्चाँ उतैर कोठरीमे बैस गप-सप्प करए लगला। राधामोहन बाजल-

“श्रीमान्, केते दिनसँ ऐठाम छिऐ?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि पी.एन. बाबू विस्मित हुअ लगला। मन पड़लैन नोकरीक पहिल दिन, कौलेजक पढ़ाइ, हाइ-स्कूलक पढ़ाइ, पालन-पोसन इत्यादि। सिनेमाक रील जकाँ जिनगी पाछू मुहेँ ससरलैन। ओही जिनगीक फल ने अखन धरि भोगि रहल छी। मुदा..? जे गाम-समाज हमरा सन मनुख बना ठाढ़ केलक ओकरा-ले हम की केलिऐ? प्रतिष्ठित किसान परिवारक बेटा रहितो कि ओइ प्रतिष्ठाक हकदार बनि पौलिऐ? ..भक खुजलैन। मनमे एलैन समस्या तँ अहिना सभठाम ओझराएल अछि मुदा गामसँ आएल नवतुरिया बच्चाकेँ जँ आबो संगतुरिया नै बनाएब तँ सेवा-निवृत्तिक पछाइत केतए जाएब! मनमे अबिते पी.एन. बाबूक मुँहमे मुस्की एलैन। जेना अनवरत चलैत साँसक जगह जोरसँ साँस लेला पछाइत नाभी तक गतिमान भऽ जाइत तहिना पी.एन. बाबूकेँ भेलैन। बजला-

“राधामोहन, साल भरिक पछाइत सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी, गामेमे रहब। अखनो गाममे एते खेत-पथार अछि जे जँ ओकरा सरिया कऽ करी तँ नोकरीसँ बेसी हएत। मुदा की करितौं। गाम-समाजक कटू-चालि बोल सुनि पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ गाम छोड़ैक अनेको कारणमे एकटा कारण ईहो अछि जे जँ कियो एग्रीकल्चर ग्रेजुएट खेतक गोला फोड़ि तरकारी खेती करैथ तँ समाजक लोक किचाड़ि कऽ समाजसँ भगा देतैन। कियो कोइर तँ कियो कुजरा कहए लगतैन। भलेँ ओ बेरोजगारीक सूचीमे नाओं लिखा दिल्लीमे कुल्लीए-कबाड़ीक काज किए ने करैथ।”

पी.एन. बाबूक विचार सुनि राधामोहन मुड़ी डोलबैत किछु मानबो करैत आ किछु नहियोँ मानैत। मुदा मुँह बन्न केने रहने पी.एन. बाबू नै परेख पौलैन जे मनसँ केते मानलक। तैबीच सुरेखा आबि

कहलकैन-

“अपने सभ ने रातिकेँ रोटी खाइ छी मुदा पर-पाहुनकेँ खुआएब नीक हएत। मन असकताइए तँए अपनो दुनू गोरे भाते खा लेब।”

भातक नाओं सुनि पी.एन. बाबूक मनमे खौंझ उठलैन जे एक तँ भरि दिन एमहर-ओमहर करैमे देह-हाथ बथा गेल तैपर भात खुआ भरि राति उठ-बैठ करौती! मुदा तेसर लग बाजबो केहेन हएत तँए पाशा बदलैत बजला-

“अहाँ जे एहेन छी से सबेरे किए ने कहलौं जे चाहे माछे लऽ अनितौं कि अण्डे।”

बीचमे राधामोहन बाजल-

“खाइले अनेरे रक्का-टोकी करै छी, जे सभ दिन परिवारमे चलैए सएह हमहूँ खाएब। अखन जुआन-जहान छी अखन नै सभ चीज पचाएब तँ कहिया पचाएब।”

सह पाबि अपन गोटी घुसकबैत सुरेखा आगू बढ़ली।

गैस-चुल्हिक भानस, गप-सप्प ओराएलो नै छल की तैयार भऽ गेल। खेनाइ तैयार होइते कोठरीमे लगल गोल मेजपर सभ वस्तु रखि पतिकेँ सुरेखा कहलखिन-

“चलू, पहिने भोजन कऽ लिअ।”

एके टेबुलपर तीनू गोरे बैस खेनाइ खाए लगला। राधामोहनकेँ नव बेवहार बुझि पड़ल। किछु बाजब उचित नै बुझि चुप्पे रहल मुदा ओंघराइत मनमे उपकलै जे आरो जे हौउ मुदा सोझहामे खेने तँ लूँगी मिरचाइ आ अँचारक उपद्रव तँ कमिते अछि। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे सोझहा-सोझही सबहक खाएब नपाइते अछि। वएह नाप ने काजो नापत आकि खाइले दालि-भात आ..?

प्रात भने आठ बजिते पी.एन. बाबूकेँ कार्यक्रमक तैयारी-ले विदा होइसँ पहिने मनमे उठलैन जे अखन अनेरे राधामोहनकेँ किए संग नेने जाएब। बारह बजेसँ कार्यक्रम शुरू हएत। ..डेरासँ निकलैत राधामोहनकेँ कहलखिन-

“राधामोहन, अखन अहाँ नै जाउ। बारह बजेसँ गोष्ठी चलत, तइमे शामिल हएब।”

परिवारक भीतर ने खाढ़ी हिसाबसँ भाए-बहिन, बाप-पित्ती, दादा-दादी, नाना-नानी बँटल अछि मुदा समाज थोड़े परिवारक विचारकेँ ऊपर मानत ओ तँ वहए मानत जे समाजक कल्याणार्थ होइ। ओ तँ उमेरे हिसाबसँ ने मानत। केश-दाढ़ी पाकल दादा-बाबाक श्रेणीमे एलौं समरथ-सकरथ रहने बाप-पित्तीक श्रेणीमे एलौं, एक उमरिया रहने भाए-बहिन, संगी, बहिना, मीत-यार, भजार इत्यादिक श्रेणी अबैत तइसँ निच्चाँ बौआ-दैया अबैत। ..पचास-पचपन बर्खक सुरेखा आ पनरह-सोलह बर्खक राधामोहन। तहूमे राधामोहनसँ दोवर उमेरक बाल-बच्चा सेहो छैन्हे। ओना राधामोहनकेँ अपने संग जलखै करा पी.एन. बाबू संतुष्ट भऽ गेल छला जे नहियोँ रहने पाहुन भूखल नहियेँ रहत। अराम करैक बेवस्था छैहे जे नीक लगतै से करत।

सुरेखाक बात सुनि राधामोहन बाजल-

“खेत-पथार केकरो जिम्मामे नै देने छिऐ?”

“देने किए ने रहब। मुदा एतबो तँ ओही वेचाराकेँ कहिऐ जे कहियो काल जे अबैए तँ गोटे किलो महींसक घीए नेने आएल, गोटे मटकूर दहीए नेने आएल...।”

सुरेखाकेँ भँसियाइत देख राधामोहन बाजल-

“अहाँ गामसँ हमर गाम बहुत पछुआ गेल।”

“की पछुआ गेल अछि?”

राधामोहन-

“हमर गौंआँ तँ तेहेन रगड़ाउ-झगड़ाउ भऽ गेल अछि जे सदिखन झगड़े-झाँटी करैत रहल आ उपजाक कोन गप जे खेतो-पथार बेच कोट-कचहरीकेँ दैत रहल। मुदा एकटा धरि भेल अछि जे जइ जहलकेँ आन समाजक लोक पाप बुझैए ओइ व्याकरणकेँ उनटा, धरम बना देलक। जे एको बेर जहल नै गेल ओ अधरमी ऐ दुआरे बुझल जाइत जे धर्म प्राप्त करैक एको सीढ़ी ऊपर नै उठल अछि।”

राधामोहनक बात सुनि सुरेखाक नजैर राधामोहनकेँ संगतुरिया जकाँ नजरए लगलैन। सतरह बर्खक अवस्थामे बिआह भेल रहए, तइसँ पहिने तँ राधामोहने जकाँ ने बाप-माइक बीच हमहूँ छेलौं। उमेरोक तँ किछु गुण-धर्म छइ। जँ से नै छै तँ किए मेलामे एक उमेरिये लोक बेसी रहैए...।

विस्मित होइत सुरेखा बजली-

“बौआ, एक दिनक घटना ओहिना मन अछि।”

घटना सुनि राधामोहनक जिज्ञासा जगल। मुँह बाबि बाजल-

“से की?”

सुरेखा-

“तोरा गाममे दुर्गापूजा तहियो होइ छेलह, अखनो होइते छह। झगड़ाउ तोहर गौंआँ सभ दिनेक। दुर्गापूजाक मेला एतए हुअए कि ओतए हुअए, अहीले झगड़ा भऽ गेल। कोनो गाममे एकोठाम पूजा नै होइ छै मगर तोरा गाममे दूठाम शुरूहेसँ पूजा होइ छइ। एकबधू हमर गाम, जहिना पंचायतक गाम सबहक दूरी होइ छै तइसँ लगे हमर गाम अछि। एक्को मिसिया ने बुझि पड़ए जे दू गाम छी, दोसर छी, अपन

गाम नइ छी। खेतो-पथारमे ऐ गामक लोक ओइ गाम आ ओइ गामक लोक ऐ गाममे काज करिते अछि। जबार, सौजनियाँ, मैनजनी, इत्यादि भोजो-भातक सम्बन्ध अछिए।”

सुरेखाकेँ भँसियाइत देख राधामोहन बाजल-

“किदैन घटना कहए लगलिऐ?”

जहिना धक-दे आगि फुटै छै, हवा-विहाड़ि उठै छै तहिना सुरेखाक मनमे उठल। बजली-

“बौआ, भरिसक निशाँ पूजाक दिन रहइ। नाच-तमाशा शुरू होइते रहै आकि धुक-दे पच्छिमसँ विहाड़ि उठलै। पानि-पाथर सेहो संगे एलै। मेलामे हूड़ भऽ गेल। जह-पटार लोक जेमहर-तेमहर पड़ाएल। अपना गामक तीन गोरे रही। गामे दिस पड़ेलौं, मुदा दसो डेग आगू नै बढ़लौं आकि पाथर तड़-तड़ा गेल। भेल जे जान नै बँचत, कपार फुटि जाएत, तेहेन-तेहेन पाथर रहए। रस्ते कातक एक गोरेक मालक घर चलि गेलौं। हवा तेहेन तेज रहै जे बुझि पड़ै घरक चार उधिया देत! मुदा तीनू गोरे चारक बत्ती पकैड़ लटैक गेलौं। कहुना जान बँचल। ..किदैन बाजल छेलह जे अहाँक गाम नीक अछि?”

सुरेखाक प्रश्न सुनि राधामोहन ओहिना अक-बका गेल, जहिना कियो बजिते-बजिते बिसैर जाइत। ओना दुनू गोरेक गप-सप्प जुगो पाछू घुसैक चलि गेल छल जे एकक भोगल दोसराक खिस्सा बनि चलि रहल छल मुदा प्रश्न-उत्तर ओकरा ससारि अनलक। पाछू उनैटते राधामोहनक मनमे सुरेखाक प्रश्न धब-दे खसल। बाजल-

“हँ, हँ, कहै छेलौं जे अहाँक गामक किसानी हमरा गामसँ अगुआ गेल अछि।”

अगुआ-पछुआ सुनि सुरेखा दोहरबैत पुछलखिन-

"एकठाम दुनू गोरेक गाम अछि, एकबधूए खेतो अछि, एक रंग उबजा-बाड़ी तखन किए एना भेल?"

सुरेखाक प्रश्न सुनि राधामोहन अपनाकेँ टटोलए लगल तँ बुझि पड़लै जे प्रश्नक उत्तर ढंगसँ नै दऽ पएब, मुदा आत्माराम कहलकै जे नै पान तँ पानक डन्टियो आकि गाछोक डन्टीसँ काज चलिते अछि। तखन जँ उत्तरक लगलो-भीड़ल जवाब भऽ सकत तैयो तँ किछु-ने-किछु तात्विक बात आबियो जाएत। पहिने तत्व तखन ने एकत्व आकि समत्व। ..बाजल-

"दीदी, अगुआएल-पछुआएल तँ खेनाइ-पीनाइ, ओढ़नाइ-पहिरनाइ आकि घरे-दुआर देखने ने बुझै छी।"

सुरेखो अपन मनकेँ, गोधूलि बेला जकाँ बहटारि राधामोहनक विचार लग ठाढ़ केलैन। जहिना गुरु-शिष्यक बीच एक-दोसराकेँ उकटा-पैंची होइत तहिना सुरेखा पुछलखिन-

"जखन दुनू गामक लोक खेतीए करै छैथ तखन किए भगवान दू रंग बना देलखिन?"

सुरेखाक प्रश्न राधामोहनकेँ ओहिना भरियाएल बुझि पड़ल जहिना युनिवर्सिटी वा बोर्ड परीक्षामे प्रथम स्थान पबैबला छात्र किछु प्रश्नसँ निरुत्तर होइत देख अपनाकेँ अलग कऽ लइए, तँए कि ओकरा भुसकौल कहबै सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। हलैस कऽ हीय खोलि राधामोहन बाजल-

"दीदी, आन चीज तँ नजैरपर नै चढ़ैए मुदा एकटा चढ़ैए।"

नजैरपर चढ़ैबला बात सुनि सुरेखाकेँ मन कहलकैन नजैरपर चढ़ैबला बातकेँ जँ नजैर चढ़ा नै चढ़ाएब तँ ओ ढलानपर छिछैले जाएत। तँए एकत्व भऽ सुनए पड़त। बजली-

"बौआ, हमरा-तोरा बीच कोन लजेबा-धकेबाक बात अछि। हम जेठ बहिन माइए-दाखिल भेलियह, तूँ भाए-बोन बाप-दाखिल सीमा परहक सिपाहीए जकाँ जिनगीक भेलह। तखन किए धकमकाइ छह।"

सुरेखाक भाव देख राधामोहन भवलोक पहुँच गेल, अथाह भवसागर देख बाजल-

"दीदी, अहाँक गामक बेसी किसान एकाजू छैथ। खेती करै छैथ, गाए-महींस पोसै छैथ इत्यादि-इत्यादि मुदा हमरा गामक बेसी जोतदार दू-दिसिया काज करै छैथ। अनो-पानिक खेती करै छैथ आ समाजिक बन्हनक बीच सेहो केते काज करै छथिन। बन्हने ने समाजकेँ बान्हि बेकतियोकेँ बन्हैए। अपना काजक समय समाजक काजमे लगबै छैथ तइसँ खेतीक उचित देख-भाल नै कऽ पबै छैथ। जइसँ कम आमदनीक जिनगी बनि गेल छैन। मुदा अहाँ गामक किसानी बाट मजगूत बनि गेल अछि।"

राधामोहनक बात सुनि सुरेखाकेँ मामा मन पड़लैन। मामा मन पड़िते मन पड़लैन बाड़ी-झाड़ी आ माए संग मामाकेँ भाए-बहिनक ओ रूप जे दुनू मिलि जिनगी-ले ठाढ़ छैथ। की मामा पाहुन नहि जे माइक बाड़ी-तामि-कोरि तीमन-तरकारीसँ फल-फलहरी धरिक गाछ-बिरीछ लगा दइत। राधामोहन कियो आन छी, जँ करजानमे केराक घौर पाकल हएत तँ चारि छीमी खुआइयो देबै आ दू हत्था गामो नेने जाइले कहबै। दू परानी केते खाएब, पचीस-पचीस-तीस-तीस हत्थाक केरा घौर अछि। जे तीने दिनमे दुरियो भऽ जाइए। बजली-

"बौआ, चलह। गाम जकाँ तँ बीघा-बीघे बाड़ी-झाड़ी आकि गाछी-बिरछी नहियेँ अछि मुदा जेतबे अछि से चलि कऽ देखहक जे अपना-जोकर दुनियाँ बनौने छी कि नहि।

बाड़ी-झाड़ीक नाओं सुनि राधामोहनक मन आरो चमकल। खोलियापर राखल हँसुआ हाथमे नेने सुरेखा आगू-आगू आ पाछू-पाछू राधामोहन डेरासँ निकैल बाड़ी पहुँचल। जहिना मकरमे हर्ड़ी-बिदेसरक मेला पहुँच यात्री फरिक्केसँ हिया कऽ देखैए जे केतए कोन तरहक रूप छै तहिना बाड़ीक टाट खुजिते राधामोहन हिया कऽ देखलक तँ अजीव दुनियाँ बुझि पड़लै।

पानिक नालीक बगलमे पाँच बीट केरा पाँच रंगक देखलक। गाछेमे एकटा पकलो। बीटक ऊपर जाल लगल। चिड़ैक कोनो डरे नहि जे चोरा कऽ खाएत। सुखल डपोरकेँ हासूसँ कटैत सुरेखा बजली-

"बौआ, कहुना भेलह तँ तूँ पुरुखे पात्र भेलह किने ओरिया कऽ ओइ घौरकेँ काटह।"

पाकल केरा घौर काटब सुनिते राधामोहन चपचपा गेल, कहुना तँ पहुनाइमे छिहे ने। उचित-उपकार दुनू। बाजल-

"दीदी, हँसुआ दिअ आ अहाँ हटि जाउ, केराक पानि बड़ खराब होइ छै, कपड़ामे एहेन दाग लगा दइ छै जे कपड़ा फटि जाएत मुदा छुटत नहि।"

राधामोहनक रक-छक विचार सुनि सुरेखा बजली-

"तखन फेर लोक ओइ दागकेँ छोड़बै केना छइ?"

जहिना परीक्षा भवनमे पहिलुक प्रश्नकेँ हल्लुक बुझिते ऐगलो बिसैर हाँइ-हाँइ परीक्षार्थी लिखए लगैत तहिना राधामोहन बाजल-

"दीदी, दुनियाँमे एहेन कोन दुख अछि जेकर दबाइ नइ छै, तखन तँ...।"

डोलैत घरमे जहिना घरवारी सोंगर लगा-लगा ठाढ़ रखए चाहैत तहिना सुरेखा अपन जिनगीक संग राधामोहनकेँ खुट्टा नै सोंगरे बनए

चाहली। मुदा राधामोहनक चटपटाइत मुँह देख बजली-

"हँ तँ किदैन कहै छेलह?"

ठेंठीकेँ ठेंठीए कोदारि भार थम्है छइ। बड़का मुरैछ जाइ छइ। तहिना ने केरो दागक दबाइ अछि। बाजल-

"दीदी, केहनो दाग किए ने होइ, मुदा दबाइयो संगे छइ।"

संगे दबाइ सुनि सुरेखा बजली-

"से की?"

"आन जीवित गाछमे ने दूध आकि लस्सा होइ छै, मुदा केरा तँ छी गाछक झड़, तँए एकरा एकरे सुखल डपोर जे छै, ओकरा आगिमे जरा कऽ ओही छाउरसँ रगड़लापर दाग छुटै छइ।"

केराक घौर काटि थम्हकेँ सेहो काटि-खोंटि कात कऽ देलक। हँसुआमे लगल पानि माटिपर रगैड़ साफ केलक। आगू बढ़िते कट्ठा भरिक फलक गाछो आ झाड़ियो देखलक। गमैया आम-जामुनक गाछ जकाँ तँ एकोटा फलक गाछ नहि, मुदा कामधेनु जकाँ सालो भरि फल दइबला सभ। आब कहू जे फड़ैक भार जेकरा नहियोँ छै तहू गाछ सभमे फड़ लटकल छइ! अनेरे मन घुरियाएल अछि। मुदा नहि, गाछोमे अनरनेवा पण्डित अछिए। फूल भलेँ हौउ, फड़ब पाप बुझिते अछि। मुदा तँए कि धात्रीम सन सावित्री थोड़े अछि जे बिनु सत्यवाने फड़बे ने करत। हँ से तँ ऐछे भलेँ टाट-फरक, आड़ि-धूर आकि घाट-बाट दुआरे माटिक बाट किए ने बन्न हौउ, मुदा अकासक बाट तँ खुजल छैहे तँए ने कहै छै जे हे प्रियतम देह भलेँ तीन कोस हटले किए ने होइ मुदा मन तँ दुनू गोरेक संग मिलि रचिते-बसिते अछि...।

समुचित भोजन-ले जहिना आन-आन वस्तुक महत अछि तहिना ने फलोक अछि। मुदा फलक दुर्दशा मनुखक जिनगीकेँ सुदशा

दिस बढ़ए देत। जे मिथिलांचल कुकाठ-सुकाठक संग चानन सन वृक्ष पैदा करैक उर्वर शक्ति संयोगने अछि, की ओइ शक्तिकेँ पूजा केने बिना कल्याणक असिरवाद भेट जाएत? जँ मुखौटे होइतै तँ काँच माटिक एकटा दिआरी नेस, हाथ-जोड़ि निहोरा केलासँ भेटतै तँ अदौसँ होइत आएल आ मिथिलांचल निच्चे-मुहेँ धँसैत गेल। सालो भरि चलैबला फल जैठाम छै, तैठाम..?

खीराक लत्ती देख राधामोहन बाजल-

“दीदी, खिरो-लत्ती बीचमे देखै छी?”

राधामोहनक जिज्ञासाकेँ सुरेखा परेख गेली। जहिना छोट-बच्चाकेँ माए-बाप-भाए-बहिन ओंगरीक इशारासँ कौआ-मेना देखा ओकर नाओं सिखबैत तहिना सुरेखा राधामोहनकेँ सिखबैत बजली-

“बौआ, खीरो फले छी, फलेक गुण ओकरोमे छै, मुदा अपन परिवारिक जिनगी तेहेन बना नेने अछि जे तीमन-तरकारी-सँ-फलाहार धरि पुरबैए।”

सुरेखाक बात राधामोहनकेँ छुछुन बुझि पड़लै। छुछुन ई जे माटिपर पसरल लत्ती आ लत्तीक फड़ केना फलाहार हेतइ। हँ एते तँ देखै छिऐ जे करेला-झिमनी-सजमैन जकाँ फड़ैए, सजमैनसँ भलेँ छोट हुअए मुदा करैला-झिमनीक तँ संग-तुरिया अछिए। खीराकेँ तरकारी मानल जा सकैए। तरकारीकेँ केना फल मानि लेब, फड़ तँ तरकारियो फड़ैए। ..मुदा लगले मन पलैट महकारी लग पहुँच गेलइ। ओकर तरक बीआ जेते तीत होइए ओते तँ करैलोक ने होइ छइ। कहाँ राजा भोज कहाँ भजुआ तेली। करैलाक गुद्दा-रस भलेँ तीत हौउ मुदा ओइसँ पालल-पोसल बीआ कहाँ तीत होइ छइ! दुनूमे अकास-पतालक अन्तर अछि। गोल-गोल, हरिअर-हरिअर, लाल-लाल फड़क बीच महकारीक बीआ खाइ-काल खेलहोकेँ बोकरा दइए, से केना करैलाक

परतर करत। ऊँट जकाँ भलेँ देह उबर-खाबर हौउ, रसो आ गुद्दो तितौंस किए ने हौउ, गलि-पचि अपने किए ने सड़ि जाए मुदा ओहन बीआ तँ दैते अछि जे संगी-साथी जकाँ मनुखक भोज्य बनि चलैत आबि रहल अछि आ आगूओ चलैत रहत...।

खेलौना दोकानपर, रंग-रंगक खेलौना देख जँ बच्चा गुमकी लाधि दिअए तँ किछु कारणक आशंका होइते छइ। स्वर्ग सदृश बाड़ी-झाड़ी रहितो राधामोहनकेँ अपन विचारक दुनियाँमे विचड़ैत देख सुरेखाक मनमे भेलैन जे भरिसक रोड़ा-रोड़ीक ठेंस ने लगि गेलइ। बजली-

“बौआ, की करब जेतबे छुट्टी रहत तेतबे-टा ने दुनियोँ बसाएब। इच्छा केकरा ने होइ छै जे इन्द्रासनक आसनपर बैसी, मुदा इच्छे भेने थोड़े होइ छइ। अही सुखक लोभमे ने एकटा बौना आबि हरिश्चन्द्रकेँ राज-पाट ठकि लेलकैन। अखुनका वियतनाम राज थोड़े छी जे सालक-साल, दशकक-दशक रगड़ैत रहत। कहू जे जइ राजाकेँ एतबो दया नहि जे आमजनक राजकेँ अपना स्वार्थमे केना लगा देबइ।”

ओना सुरेखा राधामोहनक मन बहटारए चाहली मुदा जिद्दयाह गाए-बरद जकाँ गाछक मुड़ीए-पर राधामोनक नजैर अँटकल। बाजल-

“दीदी, अहाँ तँ खीराकेँ फल कहै छिऐ, एते तक मनेमे शंका नै अछि जे फड़ नै होइ छै, मुदा फड़ तँ फड़ भेल आ आमोक गाछक फड़े भेल भलेँ कोशा धरिकेँ फड़े कहिऐ। जिनगीक नीक फल सभ चाहैए आकि नीक फड़ कदीमोसँ नहमर चाहैए?”

जहिना बाल मन वा जुही फूल आकि परोड़ इत्यादि कोनो नव गाछक सराइर सदृश सर-सरा कऽ आगू धरि बढ़ि जाइत तहिना राधामोहनक प्रश्न आगू बढ़ल, मुदा ओरिया कऽ मुड़ीकेँ मोड़ि सुरेखा बजली-

“बौआ, खीराक तरमे तीन फाँक होइ छै, मुदा होइ छै तीनू बरबैर। ऊपरका जे आवरण होइ छै ओ ओहन होइ छै जे दिठा-दृश्य देखए नै दइ छइ। ओकरा हटौला पछाइते देख पड़ै छइ। मुदा जँ ओकरा कत्तासँ गोल-गोल काटल जाइ छै तँ कहाँ तीनूमे सँ कियो कहैत जे कम छी।”

कहि सुरेखा सोचए लगली जे भरिसक राधामोहनक मन उचैट गेल अछि। जाबे तक दोसर दिस नै तकाएब ताबे तक नजैर नै घुमतै। तँए दोसर दिस तकाएब नीक हएत। दोहरबैत बजली-

“बौआ, मेलो जाइक समय लगिचा गेलह। नहाइत-खाइत समय भाइए जाएत। हमहूँ जाएब किने?”

दोसर दिनक साँझ। शिक्षण प्रक्रियाक समाप्ति। काल्हि विसर्जन छी। भोज-भात आ सांस्कृतिक कार्यक्रम रहत। राधामोहन आ पी.एन. बाबू गाइक घरक थैड़ देखैत रहैथ। मच्छरक धनधनाएबसँ बुझि पड़लैन जे घूरक जरूरत अछि। दुनू गोरे गाइए घरमे रहैथ तखने सुरेन्द्रो बाबू आ दीनानाथो बाबू संगे पहुँचला। पहुँचते सुरेन्द्र बाबू पुछलखिन-

“गाइक घरमे अखन किए छी?”

ई गप सुनि पी.एन. बाबूकेँ संकोच नै भेलैन। ओना तीनू गोरेक डेरो एकेठाम छैन आ बाड़ियो-झाड़ी एकरंगाहे छैन तँए प्रश्न बेवहारिके छल। पी.एन. बाबू कहलखिन-

“तीन-चारि दिनसँ एते व्यस्तत्ता बढ़ि गेल जे अपन जिनगीए छिड़िया-बितिया गेल। बुझि पड़ैए जे तीने-चारि दिनक बीच तेते मच्छर बढ़ि गेल जे अवधात करत। मुदा आइयो तँ आब करैक समय नहियेँ अछि। काल्हि बुझल जेतइ।”

दीनानाथ बाबू-

“काल्हियो की भरि दिन छुट्टी हएत, भोज-भात आकि नाच-तमाशा देखनिहार-खेनिहार-ले ने, मुदा विदाइ-समारोह सेहो छी किने?”

“हँ से तँ छी। मुदा भोज-भात पछाइते ने हएत तैबीचक तँ समय बँचबे करत।”

कलपर हाथ-पएर धोइ सभ कियो पहुँचबे केला कि ओमहरसँ सुरेखा चाह नेने एली। ठाढ़े सभ कियो चाह पीबए लगला। चाह पीबैत दीनानाथ बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

“कौल्हुका नोत-हकार दइ छी। खेबो करब आ देखबो करब।”

दीनानाथ बाबू गप तँ चालि देलैन मुदा भोजैत तँ नै छला। भोजैत तँ सुरेन्द्र बाबू छैथ। मुदा जहिना घाटपर चेल्हबाक चालिमे भुन्नो फँसि जाइए, तहिना बगलमे बैसल सुरेन्द्र बाबूकेँ भेलैन। दीनानाथ बाबू तँ पठौल नै छेलखिन जे मद्दी हेतैन। अपनो मुँह खोलए पड़तैन, भलेँ राधामोहन नै बुझि पबैत मुदा दुनू परानी पी.एन. बाबू तँ छैथे। पुलिसक आगू अनेरे पड़ाएब नीक नै होइ छै, खिहारि कऽ पकैड़ खढ़िया मोर मारि पकैड़िए लेत आ जँ पकैड़ लेत तँ सभ ठेही झाड़ि देत। राज-भोज छिऐ, जेते खाएत तइसँ बेसी छिड़ियाएत। बजला-

“राधामोहन सझिया नौतहारी हेता।”

जहिना भोज-काजमे पहिले योजना बनैत आ पछाइत हिसाब-वारी होइत। मुदा बैसार दुनू दिन चलैत। एक तँ बैसारमे नौतक बँटवारा तखन नौतहारीक चर्च नहि! मुदा दोसराक पाहुनकेँ ईहो पुछब उचित नहि जे केमहर एलौं। मुदा जहिना परिवारक छोट भाएकेँ अनको कोहवरक रस्ता खुजले रहै छै तहिना दीनानाथ बाबू। जेठ लग जेहने गलती तेहने सही। जँ सही अछि तँ मुड़ी झुलौता नहि जँ गलती अछि तँ सुधाइर देता। ..पुछलखिन-

"राधामोहन, अहाँ पढ़बो करै छी?"

दीनानाथ बाबूक प्रश्नसँ राधामोहन ठमैक गेल। केना कहबैन जे परीक्षाकेँ अखन छोड़ि आगू बढ़ा देलिऐ, आ अखन घरक पाछू पड़ए चाहै छी। मुदा उत्सुक मन राधामोहनक, बाजल-

"पढ़ितो छी आ परिवारक जे दशा अछि ओकरा जँ नै रोकब तँ केते दूर ढरैक कऽ चलि जाएब तेकर कोनो ठीक नहि। तँए किछु करैक विचार सेहो अछि।"

राधामोहनक सह पाबि दोहरबैत दीनानाथ बाबू पुछलखिन-

"परिवार केतेटा अछि?"

"ओना कहैले तीन गोरे छी मुदा...।"

"मुदा की?"

"पिता अन्तिम अवस्थामे छैथ, अब-तब करै छैथ, कखन छैथ कखन नै तेकर कोनो ठीक नहि।"

"केते उमेर हेतैन?"

"सेहो नीक जकाँ नै बुझै छी। झुर-झुर शरीर भेल छैन। तइसँ तँ अस्सीसँ ऊपरेक कहबैन, मुदा माइक जे गतिशीलता देखै छी तइसँ बुझि पड़ैए जे घरक चीनवारेक खुट्टा टुटि गेल। आइ करी कि काल्हि, करए तँ हमरे पड़त। सएह सभ मन हौंर-हाँरि देने अछि। तँए गाए पोसैक विचार करै छी।"

आँखिक इशारा सुरेन्द्र बाबूक देखते दीनानाथ बाबू चुप भऽ गेला। सुरेन्द्र बाबू पुछलखिन-

"राधामोहन, विचार तँ नीक अछि, मुदा किछु प्रश्नक उत्तर बुझब जरूरी अछि। भने मेलेमे एलौं। भोज-भात खेनिहार सभकेँ खाए दियौ। मुदा, कहब जे जाधैर अपन मन काज करैले ने मानि जाए

ताधैर रहू। जँ जीवनमे एकोटा काजक लोक भेट जाए तँ जरूर ओइ जिनगीकेँ सार्थक मानल जेतइ।"

सुरेन्द्र बाबूक मुँह खुजल देख सुरेखो अपन बातकेँ राखब उचित बुझि बजली-

"दीनाबाबू, जखन राधामोहनसँ गप भेल तँ कहलक जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि। पचीस बर्खसँ नैहर गेबो ने केलौं हेन, अठारह बर्खक अवस्थामे छोड़ने रही तँए जाएब तर पड़ि गेल अछि। तँए सेहो कनी कखनो दुनू भाए-बहिनक बीच कहि देब।"

सुरेखाक प्रश्नसँ सुरेन्द्र बाबू घबरेला नहि, मुदा दिन भरिक देहक थकान, तैबीच काल्हि विदाइ समारोह सेहो छी। एहेन ने हुअए जे औगताइमे प्रोफेसर साहैबक जैकेट प्रिंसिपल साहैबक डालीमे चलि जानि आ प्रिंसिपल साहैबक प्रोफेसर साहैबमे, तँए मन बोझिल, जे केना एहेन सुराग भेट जाएत जे, जे जेतै-क अछि से तेते चलि जाए। मुदा परिवारो तँ परिवारे छी। परिवारकेँ चैन रखने बिना एको छन चैन भेटब कठिन होइ छइ...।

दीनाबाबूकेँ सम्बोधित करैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

"दीनाबाबू, एना करू जे एकेटा उत्तरमे दुनू प्रश्न आबि जाए।"

हुँहकारी भरैत दीनानाथ बाबू बजला-

"हँ-हँ! बढ़ियाँ! बढ़ियाँ! हनुमानजी जकाँ पहाड़े चलि औत, अपन-अपन सभ ताकि लेब। मुदा भाय-साहैब एकटा बात पुछब हमरो रहि गेल अछि।"

सुरेन्द्र बाबू-

"कथी, ओहो राखिए दियौ।"

दीनानाथ बाबू-

"राधामोहन, एकटा बात कहू जे परिवारमे बाहरक लोटा दूध अबैए आकि घरक लोटा बाहर जाइए?"

दीनानाथ बाबूक प्रश्न सुनि पी.एन. बाबूकेँ नै रहल गेलैन बजला-

"दीनूबाबू, की कहब! बिसैर गेलौं रमझिमनी आकि रामझुमनी। भिन्डीक माला जपि-जपि भाषाक जान बँचबै छी। मुदा क्षेत्रो तँ किछु छी।"

एक संग अनेको प्रश्न उठैत देख सुरेन्द्र बाबू विचारलैन जे नीक हएत सभ प्रश्नकेँ बहटारि काल्हि-ले राखि ली आ किछु मनोविनोदक संग बैसारक उसार कऽ ली।

..चौअन्नियाँ मुस्की दैत दीनानाथ बाबूकेँ पुछलखिन-

"अँए हौ दीनू, उद्घाटन बेर किए हँसए लगल रहह?"

टटके बात तँए बिसरैयौक बहन्ना तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा एकटा जवाबदेहक प्रश्न छी। की कहबैन। हम सभ कहुना भेलौं तँ घरवारीए भेलौं किने, किए ने खोलि कऽ सभ गप करब। ..मुस्कीक जवाबमे ठहाका दैत दीनानाथ बाबू बजला-

"भाय! लाबा जकाँ छिड़ियाएल नहि, मुदा छिड़ियाइबला बात तँ रहबे करै ने।"

दुनू गोरेक बीचक बातमे सुरेखा लाड़ैन लाड़लैन-

"उद्घाटने जखन हँसा गेल, तखन बाँकीए कथी रहल!"

सुरेखाक प्रश्नसँ सुरेन्द्र बाबू थकमकेला। थकमकाइत देख पी.एन. बाबू सम्हारैत बजला-

"बात भेल किछु ने आ अनोन-विसनोन हुअ लगल!"

अपन भाँज बुझि दीनानाथ बाबू बजला-

"भेल ई रहै जे चारि गोरेकेँ चरिमुखी दीप नेस उद्घाटन करक रहइ। एकटा मोमबत्ती नै ने जे तीन गोरे डाँट पकड़ु आ एक गोरे सलाइ नेस लगाउ। चरिमुखी दीपमे तँ बाँटल चारू गोरेक। सभकेँ दीप जराएब छेलैन। पहिल बेकती जखन सलाइ खड़ैर एकटा दीप नेस देलखिन तखन दोसर-तेसरकेँ सलाइ खर्ड़ेक कोन प्रयोजन। सलाइ काठीकेँ तँ दीपेमे नेसब असान होइतै। से नै केलैन, केलैन ई जे तेसर बेकती जे रहैथ ओ राशिमे राशि नै काटि सलाइ खर्ड़ए लगला आकि मसल्ला उड़ि कऽ कुर्तापर पड़ि गेलैन! कुर्तो तेहेन जे ओतबेमे दगा गेल। सएह हँसी लगल रहए। अहूँ तँ मंचेपर रहिऐ। अहाँ नै देखलिऐ?"

दीनानाथ बाबूक बातसँ सुरेन्द्र बाबूकेँ दुख नै भेलैन। बजला-

"तूँ छुट्टा छह, हम बान्हल छी तँए किछु...।"

"अच्छा जे हौउ, कौल्हुका-उगरल वस्तु-जात हएत ओ भोजो हएत आ राधामोहनकेँ मेलाक दर्शन सेहो करा देबैन। अखन जाए दिअ, दू घन्टा दुनू कातक चेकिंग बेवस्था करैमे लागत। तहूमे तीन-तीन चेकिंगमे चोरकट रस्ता रहिए जाइ छइ।"

राजसी भोज रहितो तेहेन चोरकट बाट पकड़ा गेल जे ने भोज खेनिहार आ ने भोजैत बुझि सकला जे भरिपेट्टा छी आकि टी-पार्टी। जहिना केकरो घर लूटै-काल जेकरा जे हाथ लगैत से सएह पार कऽ सवुर करैत तहिना एते तँ सतर्की तीनू गोरे–सुरेद्रबाबू, पी.एन. बाबू आ दीनानाथ बाबू–काइए नेने छला जे मझोलका टप रसगुल्ला, अँचारक बोयाम आ निमकीक पैकेट फुटा कऽ दोगमे रखिए लेलैन।

केतए गेल तीन दिनक मेलाक चुहचुही। चारि दिनक चान फेर अन्हराइए गेल। खएर जे हौउ। रिक्शापर चढ़ा रसगुल्लाक टप सुरेन्द्र बाबू ऐठाम पहुँच गेलैन।

जखन चाह बनि राखल अछि तखन अनेरे फकचोदमे समय बिता चाह सरा लेब बुड़िबकी नइ तँ की हएत। समैसँ एक घन्टा पहिनहि सुरेन्द्र बाबू पी.एन. बाबूकेँ आ दीनानाथो बाबूकेँ कहि देने छेलखिन-

“अनेरे चौचंगमे पड़ल छी। चलू, डेरेपर।”

घरमुहेँ होइ काल पी.एन. बाबू दीनाबाबूकेँ टिप देने छेलखिन-

“दीनूबाबूक चलती बेस नीक रहलैन।”

पी.एन. बाबूक प्रश्नकेँ गोड़ियबैत सुरेन्द्र बाबू कहि देलखिन-

“भाएमे कियो दादा होइथ, बात बरबैरे। दीनूबाबू कियो आन छैथ। मुदा एकटा बात नै बुझि सकलौं जे एहेन चलती अनभुआर जगहमे केना बनि गेलैन।?”

सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न सुनि दीनानाथ बाबू जोरसँ ठहाका मारलैन। मकैया लाबा जकाँ किछु उड़ि कऽ छिड़ियेबो कएल आ किछुकेँ मुहेँमे गोड़ियबैत दीनानाथ बाबू बजला-

“मुड़जनमा लग पहुँच की कहलिऐ से कहि दइ छी। कहलिऐ, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि छी तँए चेहरा चीन्हि लिअ।”

मुस्की दैत पी.एन. बाबू दोहरौलैन-

“ओ की कहलैन?”

“कहता की! हमरा कि कोनो नै बुझल छेलए जे ओ खानक इंजीनियर छैथ। खेत-पथारक मेलामे हमहीं ने सम्हारबैन। तैठाम जँ एनए-ओनए करता तँ दसटा गामो-घरक लोक ने छै धान कटैक ओजार ‘कोदारि’ कहा देबैन आ खेत तामैक ‘हँसुआ’।”

मुस्की दैत सुरेन्द्र बाबू पुछलखिन-

“आरो कि सभ गप भेल?”

“गप की होएत, केम्हरोसँ आबि जहाँ नजैर दिऐ आकि हाँइ-हाँइ कऽ टेबुल परहक पएर नीचाँ उतारि समधाइन कऽ बैस जाइथ। मुदा हमरो कोन जरूरत जे अनेरे नजैर अँटकौने रहितौं। कहुना भेल तँ अपन मेला भेल किने, कनी-मनी टुटो-नफा तँ सहैए पड़त।”

दीनाबाबूक बोहैत धारकेँ रोकैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

“छोड़ू, मेलाक गप। जे भेल सएह ने नीक। कागतपर तँ भेबे कएल। लाइव टू लैंड होइ या नै होइ। कागजे ने सभ किछु छिऐ। तीन मन तीन साए मन बनै छइ। आ तीन साए मन तीन किलो। जेहने कागत तेहने ने रोशनाइयो आ हाथक कलमो। आब लोक थोड़े गीधक पाँखिक कलम बनबैए।”

सुरेन्द्र बाबूक विचारमे हुँहकारी भरैत दीनानाथ बाबू बजला-

“बेस कहलौं, कौआ कान नेने जाइए तँ पहिने अपन कान देखब आकि कौएकेँ खिहारब! छोड़ू दुनियाँ-दारीक गप। अपन भोजक योजना बनाउ।”

पी.एन. बाबू बजला-

“केते गोरे भेलौं से पहिने जोड़ि लिअ। आरो कोन-कोन विन्यास बनए आ के बनौती आ के परैस कऽ खुऔती से विचारि लिअ।”

“विचार की करब? जेना-जेना दीनाबाबू कहता तेना-तेना करब, सएह ने सुरेन्द्रो बाबू कहलैन।”

हिसाब जोड़ैत दिनानाथ बाबू बजला-

“राधामोहन लगा सात गोरे भेलौं। तहूमे अपना सभ तँ घरवारीए भेलौं, असल पाहुन तँ राधामोहने भेला। भोजक नौतहारी सुरेन्द्रे भाय भेला, बँचलौं हम। हम दू-दिसिया बनि दुनू दिस सम्हारि देब। सएह ने।”

“एना झाँपल-तोपल नक्शा बनौने काज नै चलत, खोलि-खोलि सभ विचारकेँ जोड़ियाबए पड़त।”

“हँ-हँ, सएह तँ कहै छी। असल पाहुन माने भेल मिथिलाक राधामोहन। अहाँ मगाहे भेलौं हम भोजपुरीए, तँए असल भनसीया भेली सुरेन्द्र बाबूक पत्नी- सुचिता भौजी। वएह ने खजो खुऔथिन। बेसी होइ वा नहि, मुदा एक-एक पीस तँ हेबाके चाहिए।”

सुरेन्द्र बाबू समर्थन करैत बजला-

“बहुत बढ़ियाँ, आगू?”

“आगू यएह जे हमर परिवार विन्यास वस्तुक सूची बना नजैर रखती जे कोनो वस्तु कम-बेसी तँ ने होइ छइ।”

“बहुत बढ़ियाँ।”

“सुरेखा भौजी वारीक हेती। किएक तँ मन अछि किने, बरी पहिने परसा गेलै आ अदौरी पछाइत, तहीपर ने सुरेखा भौजी हँसि देने रहथिन। केतबो पी.एन. भाय डँटलखिन तैयो मुँह सापुट लेलकैन?”

“अच्छा ठीक छै। आ काजक निगरानी?”

“सेहो करब। पी.एन. भाय हेता, अपने वक्ता भेलिऐ हमरा सुनने नइ सुनने हेबे की करतै।”

“एना किए, खिशिया कऽ बजलौं?”

“खिशिया कऽ कहाँ बजलौं। बजलौं ई जे नीक लागत मानि लेब नइ नीक लागत नै मानब।”

पाँचू गोरे गोल-मोल बैसला। चाह चलल। राधामोहन दिस देखैत सुरेन्द्र बाबू बाजए लगला-

“बौआ, अहाँ नवतुरिया छी, अहीं सभ भविस छिऐ। कहलौं जे गाए पोसैक विचार होइए से नीक विचार अछि। मुदा एतबेसँ काज नै

चलत। दुनियाँक आन-आन मुलुकमे सुनै छिऐ गाए-महींसकेँ एते दूध होइ छै, ओते दूध होइ छइ। सत् बात छइ। मुदा ओइ सत्यक पाछू बहुतो कारणो छइ। ओकर जलवायु केहेन छै, ओकर सालो भरिक मौसम केहेन होइ छइ इत्यादि। अपना ऐठाम मोटा-मोटी तीन मौसमक सामना पशुपालककेँ करए पड़ै छैन। जाड़, गर्मी आ बरसातक। जाड़-गर्मी दुनू पशु-ले अहितकर अछि। ऐ अहितकरकेँ हितकर केना बनौल जाए ई मूल प्रश्न अछि। ओना, केतबो कहल जाए जे दूधक धार बहै छल अपना ऐठाम, मुदा..? दूध-दही जइ स्तरक भोज्य–पदार्थ छी ओइ स्तरक समाज अखन धरि नै बनि सकल अछि, मुदा एका-एक अचानके तँ हेबो नै करत। तँए पढ़ल-बिनु पढ़ल किसान परिवार-ले नीक बेवसाय पशुपालन छी। अच्छा ई कहू जे परिवारमे खेत केते अछि?”

राधामोहन-

“ठीक-ठीक तँ नै बुझै छी मुदा अनदाजन तीन-चारि बीघा हएत।”

‘तीन-चारि बीघा’ सुनि सुरेन्द्र बाबूक मुँह बिजैक गेलैन। मनमे उठलैन जे जँ तीन-चारि बीघाक समुचित खेती कएल जाए तँ प्रर्याप्त अछि। मुदा खेतियो करब तँ जटिल अछिए। किएक तँ तीन-चारि बीघा खेत पचास टुकड़ीमे बँटि सौंसे गाम छिड़ियाएल हेतइ।

संयमित होइत पुछलखिन-

“सभ खेत एकरंगाहे अछि आकि भीन-भीन?”

सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न राधामोहन नै बुझि सकल। नै बुझैक कारण भेल जे घरमे खतियान, दस्ताबेजसँ लऽ कऽ बन्दोवस्त रसीदक संग सभ खेतक मालगुजारियोक रसीद अछिए। कागजे ने असल पहचान खेतक छी, तहूमे रैयती मालगुजारी छिहे, एकरंगाहे अछि। ब्रह्मोत्तर-

शिवोत्तर रहैत तँ मालगुजारीक जगह शेषेटा लगैत, सेहो तँ नहियेँ अछि। ..राधामोहनक मन जमीनक गुत्थीक गिरह खोलिए ने पबै छल, जइसँ बाजबे की करैत। ओना तीनू गोरे बुझि गेला जे राधामोहन प्रश्नकेँ नीक जकाँ नै बुझलक। नै बुझैक कारण नहियोँ सुनब होइ छै से नहि, प्रश्नक गहराइकेँ नै छुबि सकल। ..

सुरेन्द्र बाबू प्रश्न दोहराबए नै चाहैथ, दोहरेबे की करितैथ। वएह ने रामाकठोला। वएह बात वएह शब्द। दीनानाथ बाबू बीचमे ऐ दुआरे नै टपकैथ जे सुरेन्द्र बाबूक सोभावसँ परिचित। जँ कहीं रधेमोहन जकाँ भँसिआ जाएब तँ दोसर लग हमरा-ले थोड़े औत आ वएह लगा चला देता। तँए अनकर टेटर अपना सिर सहेजब नीक नहि, तँए चुप। मुदा पी.एन. बाबू अपन मैदान देख मुँह बन्न राखब उचित नै बुझि, बजला-

"सुरेन्द्र बाबू, भरिसक राधामोहन भाषा भेदक चलैत प्रश्न नै बुझि सकल। बुझा दइ छिऐ।"

पी.एन. बाबूकेँ मनमे उठलैन। जेकरा हमसभ एक्के गाममे 'अमधुर' कहै छिऐ ओकरे किछु गोरे 'अमरूद' कहै छैथ, मुदा मिथिलांचल तँ भिन्न अछि, जैठाम 'लताम' कहल जाइ छइ। ..मन मानि गेलैन जे भरिसक भाषे दोष छी। बजला-

"अपना सभ समाजक प्रवुद्ध वर्ग छिऐ किने, जे पछुआएल जिनगीसँ पीड़ित अछि ओ किआँ-ने गेल अगुआएल जिनगीक पद्धति। जँ से होएत तँ अल्लू घर-घर चलैए ओइ घरमे मिठाइयो तँ चलि सकै छल। किएक तँ तैंतीस-चौंतीस रंगक जँ ओकर तरकारियो होइ छै तँ ओइसँ बेसी पैंतीस रंगक मिठाइयो तँ होइते छइ। मुदा जँ लाट साहैबक ऑफिसमे भाषेक दूरी बनल रहत तँ समस्याक समाधान सुलझत आकि आरो उलझत। एक तँ भाषाक दूरी दोसर भाषाक

अपन शब्दक दूरी तँ अछिए।"

सह पाबि दीनानाथ बाबू टिपलैन-

"हँ-हँ भाय साहैब, अहाँक विचारसँ हम बिल्कुल सहमत छी जे एके तरकारीक नाओं क्षेत्रक कोन बात जे गामोमे भिन्न-भिन्न अछि। मिथिलांचलक घेरा झारखण्डमे 'नेनुआ' आ 'परोड़' बनि जाइए तँ भोजपुरमे सोल्हन्नी नेनुआ बनि जाइए। तेतबे नहि, नेपालक राजविराज क्षेत्रमे झींगा नाओं रखने अछि।"

बैसार अनुकूल भेल। पी.एन. बाबू राधामोहनकेँ पुछलखिन-

"राधामोहन, सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न बहुत नमहर भऽ गेलैन, किएक तँ अपना ऐठाम एक-दोसर जमीनक दूरी बहुत अछि। केतौ बाड़ी-घराड़ीक मूल्य बेसी अछि तँ केतौ चर-चाँचरक कम। तहिना पानिक लाट अछि तँ केतौ बिनु पानिक। कोनोक माटि नीक अछि तँ कोनोक दोखरा बालु। तहिना केतौ ऊँचरस रहने रौदीक सम्भावना बेसी रहैत तँ केतौ दाहीक। दाहीक कारण खाली बाढ़िए नहि, बर्खा सेहो होइ छइ। ऊपरका पानि नीचाँक फसलकेँ दहा दइ छइ।"

महजाल जकाँ जलियाएल प्रश्न देख सुरेन्द्र बाबू राधामोहनपर नजैर अँटकबैत बजला-

"राधामोहन, अखन तँ अहाँकेँ माइयो आ बाबूओ जीविते छैथ हुनको सभसँ विचारि नेने छी ने, किएक तँ विचार लैक पहिल ई कारण जे जँ हुनक अनुकूल विचार छैन तखन काजमे सुविधा एहत। जँ प्रतिकूल विचार हेतैन तँ ओ ऐ काजसँ अवगत नै हेता जइसँ सुनाड़ी जिनगीक लाभ नै अनाड़ीक नोकसान हएत।"

अवसर पाबि दीनानाथ बाबू टिपलैन-

"जैठाम कोनो नव काज शुरू कएल जाइत अछि ओइठाम तँ

सभ अनाड़ीए भेल किने?"

मुस्की दैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

"औगताइमे कहि सकै छिऐ। मुदा से नहि, ऐठाम नव किश्मक जर्सी गाएसँ पूर्वक देशी गाए तँ अछिए। दूधारू जानवर दुनू भेल। जिनगीक सभ आवश्यकता दुनूकेँ छइ। मुदा ओकर खाँढ़ बदैल गेलै जइसँ दूधक शक्ति बदैल गेल जाएत। तँए ओकरा ओइ अनुकूल केना बना कऽ राखल जाए से मूल भेल। मुदा एकरा-ले जरूरी अछि जे ओइ पाछू समय केते लगै छै आ परिवारक लोककेँ समय केते अछि तही हिसाबसँ ने नीक हएत।"

समैकेँ ससरैत देख प्रश्नकेँ मोड़ैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

"राधामोहन, जइ परिस्थितिमे अहाँ छी, अछैते पूजीए लल-बेकल छी। बहुत पूजी अछि मुदा ओइ पूजीमे गति आनैले बहुत मेहनतो आ सूझो-बूझक जरूरत अछि। जे अखन अहाँ-ले कठिने नहि भारियो अछि।"

सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न सुनि राधामोहन ओहन ठमकान नै ठमकल जे चारूकात अन्हराएले बाट देखैत, ओहन ठमकल जे चारूकात बाटे-बाट देखैत। एक्के गाछक कोन जड़ि छी आ कोन छीप परहक बड़क सीर ओ बिलगाएब कठिन अछि। मुदा बिनु बिलगौनौं काजो तँ नहियेँ चलत। बाजल-

"श्रीमान्, अखन एते पसार देखा देब तँ ओकरा समैट कऽ उसारब कठिन भऽ जाएत। तखन एना कऽ जरूर देखा दिअ जे फेर केकरोसँ पुछैक जरूरत नै हुअए।"

राधामोहनक प्रश्न सुनि सुरेखा टिपलैन-

"बड़-बड़ धान खेलेँ रे बगड़ा ऐ बेर पड़लौं मरदसँ रगड़ा...।"

महावीरजी जकाँ एकटा जड़ि नै पहाड़े उठा कऽ आनए पड़त!

सुरेखाक चपचपी देख सुरेन्द्र बाबू गम्भीर होइत चपचपाइत बजला-

"राधामोहन! अखन अहाँक जिनगी लटकल भँट्टा जकाँ झुलैए। तँए निश्तुकी काज-ले निसचित समय चाही, से नै देखै छी। कहै छी जे पिता अब-तबक स्थितिमे छैथ। अहाँ गाए खुट्टापर बान्हि लेब हुनका असपताल लऽ जाइक जरूरत हएत तँ की करबै। समैपर गाएकेँ खाइ-पीबैले नै देबै तँ दुरि भऽ जाएत आकि दुरूस रहत?"

राधामोहन-

"तखन?"

सुरेन्द्र बाबू-

"तैयो बहुत सम्भव अछि।"

राधामोहन-

"थोड़बोक चर्च कऽ दियौ। जे सूटगर हएत ओइठामसँ जिनगीक क्रिया शुरू करब।"

प्रश्नक गम्भीरता अँकैत पी.एन. बाबू मुँह बिजका मुड़ी डोलबए लगला। मुदा अपनाकेँ पूरक प्रश्नकर्ता बनब नीक बुझलैन। अपने-आपकेँ अपना नजैरिए देखब आ अनका नजैरिए देखैमे किछु-ने-किछु अन्तर तँ आबिए जाइ छै, तँए नीक हएत जे दुनू नजैरक समावेशी दिशा होइ। तँए ई नीक हएत जे सुरेन्द्र बाबूक सोच-विचार आ अपन सोचमे की अन्तर भऽ रहल अछि। तैसंग राधामोहनकेँ दुनूमे की अनुकूल बनि पड़त। मनमे अबिते पी.एन. बाबू अपन ठोरक केबाड़क बिलैया ठोकि कान ठाढ़ केलैन। कान ठाढ़ करब ऐ लेल जरूरी बुझि पड़लैन जे एहेन ने हुअए जे मूलेमे मन केम्हरो भँसैक जाए।

राधामोहनकेँ हजारो प्रश्न उठबैक अधिकार छै, अनसुनियोँसँ काज चलि सकै छै, मुदा हमरा सेने से तँ नै हएत। एक तँ घरवारी छी, दोसर अपना क्षेत्रक प्रश्न छी, तेसर किछु हेतै तँ राधामोहन उपरागे किनका देतैन। ..नमहर गोष्ठीक अध्यक्षता जकाँ भारी तँ बुझि पड़लैन मुदा दोसर तँ जवाबदेहो नहियेँ छैथ, जिनका सुमझा सकै छिऐन। मुदा, खएर जे हौउ...।

दीनानाथ मने-मन सोचैथ जे, जे शोध सुरेन्द्रेबाबूक अन्दरमे कऽ रहल छी, ओही प्रश्नक उत्तर श्रीमुखसँ सुनब। अवसर भेटल। जँ साकांछ भऽ नै सुनि-बुझि लेब तँ पछाइत अपने भारी हएत।

..सुरेखा-ले धनिसन। मरदा-मरदी गप छी, अनेरे बीचमे पड़ब मगजमारी हएत। मुदा लगले मन बदैल अपन प्रश्नपर पहुँच गेलैन। 'हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि।' के कहने छला। संगे-संग जवाब देब। आब कहू जे सतंजामे एकटाकेँ बेराएब केहेन हएत। जँ आँखि निरारि कऽ नै ताकब तँ भेटत केना..?

तही बीच सुरेन्द्रो बाबूक पत्नी आ दीनानाथो बाबूक पत्नी आबि बैसली। मौका पाबि दीनानाथ बाबू पी.एन. बाबूकेँ पुछलखिन-

"भाय यौ, तिलासकराँइतमे एकटा तिल खेने तँ बेटा-बेटी जिनगीक मोटा उठा लइए आ सुरेन्द्र भाइक बनौल तिलकूट जे सालो भरि लोक पनपियाइ करैए से की हेतइ।"

सुरेन्द्र बाबू तँ चुपे रहला मुदा हुनक पत्नी सेहो ओमहुरके, तँए वएह नैहरक पक्ष लैत बजली-

"से तँ बुझिते हेबइ।"

समैकेँ अनेरे बोहैत देख राधामोहनकेँ सुरेन्द्र बाबू कहलखिन-

"बौआ, अखन अहाँ बालबोध छी, जिनगीक धक्का-पंजासँ भेँट

नै भेल अछि। अपने उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएब धिया-पुताक खेल नै छी, तँए छोड़ियो देब उचित नहि। अहाँ अपन दिशाहीन परिवारकेँ दिशा दऽ सकै छिऐ, मुदा ओहूमे कठिनाइक सामना करए पड़त। वैचारिक दौड़मे पहिल संघर्ष समाजमे होइ छइ। जखने आगू दिस बढ़ए चाहब तखने रूढ़िवादी विचार, जे समाजक कोढ़ रहल अछि, अपन सोल्हन्नी शक्तिसँ विरोध करए लगत। मुदा तेकर चिन्ता नहि। जहिना सूरसाक मुहसँ हनुमान सुरक्षित निकैल आगू बढ़ि गेला तहिना टपान अछि, टपि जाएब। जाबे धरि कोनो परिवारक आमदनी खर्चासँ कम रहतै, ओ परिवार पाछू मुहेँ ढरकबे करत। अहाँ तँ सहजे त्रिकाल–काँच अवस्था, पुरुष विहिन परिवार आ परिवारमे ओहन रोगी जे मृत्युक करीब पहुँच गेल अछि–मे पड़ल छी। तँए अपन खेनाइक संग घोड़ाक दनोक जोगार करैत मोछमे तेल लगा सवारियो करैक अछि।"

बीचमे सुरेन्द्र बाबूकेँ पी.एन. बाबू टोकलैन-

"हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछि। ओते वृहतमे एका-एक जाएब नीक नहि। नमहर-सँ-नमहर गाछक बीआ कनियोँ माटिमे रोपि कऽ जनमौल जाइ छइ।"

पी.एन. बाबूक इशारा पाबि सुरेन्द्र बाबू घोड़ाक मुखाड़ी खींच बजला-

"राधामोहन, किसानी परिवारमे जनम भेल अछि तँए किसानी जिनगीकेँ कनियोँ बुझि लिअ। अहाँक प्रश्न भारी नै अछि। खण्डियो कऽ कऽ सोझराइए देब।"

सोझराएब सुनि राधामोहनक मनमे खुशी उपकल। सुरेखा समैकेँ गमौने बिना सुरेन्द्र बाबूपर आँखि फेकलैन। ..सुरेन्द्र बाबू बुझि गेलखिन जे भरिसक अपन प्रश्न मन पाड़ि रहली अछि। भने नीक हएत जे पहिने हुनके उत्तर दऽ दिऐन...।

बजला-

"देखियौ, राधामोहन बजला जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि। मुदा बाल-बोध अछि औगताइमे बाजि गेल। सभ गाम कुकुर-कटौझमे लगल अछि। खेबो करैए आ भूकबो करैए।"

विचारक रस पाबि दीनानाथ बाबू मुँह चटपटबैत पुछलखिन-

"से की, से की! भाय कनी फरिछा दियौ।"

मुस्की दैत सुरेन्द्र बाबू सुरेखा दिस तकैत बजला-

"सभ सभकेँ गरियेबो करैए आ मुँह मिलानियोँ रखने अछि। कियो बजैत जे 'असकर बरसपतियो फूसि', तँ कियो बजैत- 'दिन-राति आत्मा रामक तीमन खा आ चिड़ैसँ बाँतर कहि विवेकबान बाबू बनह।'

..खएर जे हौउ। खेती-बाड़ीक उपजासँ अहाँक गौआँ कोठो-कोठी बनौलैन आ खेबो-पीबो नीक करै छैथ, तइ खियालसँ राधामोहन बाजल। मुदा पढ़ल-लिखल लोक राधामोहनक गाममे बेसी अछि तँए के नीक के बेजाए से कहब कठिन अछि।"

सुरेखा दिससँ नजैर हटा सुरेन्द्र बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

"राधामोहन आगू बाजू?"

राधामोहन-

"दबाइयो कीनैमे आ दूधो उठौना लइमे तंग-तंग भऽ गेल छी, तँए गाए पोसैक विचार मनमे आएल।"

राधामोहनक प्रश्न सुनि सुरेन्द्र बाबूक मनमे भेलैन जे राधामोहनकेँ ओकर सम्पैतकेँ बिना जनौने कारोबार जनाएब नीक नहि। बजला-

"देखियौ, जे खेत अछि ओकरा समुचित बेवस्था केने अहाँ नीक

गिरहस्त बनि सकै छी। पूजी दू रंगक अछि, एक श्रम आ दोसर धन। दुनूक मिश्रित दिशा जिनगीक बाट भेल। गिरहस्तीक बहुतो डारि छइ। तइमे गाइयो पोसब एकटा छी। मुदा जखन अपन सम्पैतक असल रूप हनुमान जकाँ बुझब तखने ने नमहर छलांग लगाएब। बड़बढ़ियाँ। केते गाए पोसैक विचार अछि?"

राधामोहन-

"मन तँ अछि जीविका बनबैक मुदा अखन जे पार लगत सएह ने। एकेटा पोसैक विचार अछि।"

सुरेन्द्र बाबू-

"बड़ बढ़ियाँ, सभसँ पहिने ओकर खेनाइ-पीनाइक जोगार कऽ लिअ। कोनो दूधारू घास एक माससँ पहिने नै उपजा सकै छी, तँए गाम जा कऽ पहिने घासक खेती कऽ लिअ। खेती केला पछाइत रखैक जोगार, घर आ थैरक सेहो कऽ लेब। अखन अकसरहाँ किसान अगबे एसबेस्टसक घर बनौने छैथ। से नहि, बरसात-ले एसबेस्टस नीक अछि मुदा जाड़ो आ गर्मियो-ले उपयुक्त नै अछि। ओकरा तरमे मोटगर छाड़ दऽ देलासँ उपयुक्त बनि जाइ छइ। ई दुनू काज केने आउ, तखन अहीठामसँ, पुसेसँ एकटा दुधारू गाए कीनि संगे चलब आ दूधक पहिल भोज खाएब।"

पी.एन. बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

"सालक पछाइत तँ हमहूँ गामे अबै छी। जँ चारियो-पाँच गामक लोक गाए पोसलैन तँ ओते दूरक बीच जिनगियो बनले रहत।"

◌

शब्द संख्या : 10284

पाँच

समय पाबि राधामोहन पूसा मेला तँ चलि गेल मुदा परिवारमे बिनु कहने। आने मेला जकाँ टटके दर्शन कऽ घुमि जाएब, मनमे रहै से गड़बड़ा गेलइ।

पाँच दिन समय लगने बुधनीकेँ अन्देशा हुअ लगलैन जे कहीं छौड़ा वौर-तौर तँ ने गेल! नव कवरिया अछि होहा-मे ने केतौ पड़ि गेल। मुदा पिता-नन्दलाल छाती लगा मारि लेलैन जे जहिना दुनियाँक सभ किछु छुटिए रहल अछि तहिना बेटो गेल! मुर्दापर जेहने अस्सी मन लाद तेहने नब्बे मन, आरो की...। हहाएल-फुहाएल राधामोहनकेँ अबिते देख यशोदा मैया जकाँ बुधनीक छाती सूप जकाँ भऽ गेलैन। काजक भूखल-पिआसल चेहरा देख बुधनी बजली-

"बौआ, थाकल-ठेहियाएल एलह-हेन तँए पहिने किछु पानि पीब लएह।"

माइक बात सुनि राधामोहनक मन ओइ यात्री सन भऽ गेल जे छहराइ-ले आमक गाछक निच्चाँमे बैसैए आ तखने पाकल आम धब-दे आगूमे खसै छइ।

..उत्साहित मने राधामोहन बाजल-

"माए, भने कनी जिराइयो लेब आ मेलोक गप-सप्प सुना

देबौ।"

जहिना कोनो परिवारक हेराएल बच्चा हाथमे किछु नेने अबैत जेकरा देख माए-बापक मन खुशी होइत तहिना दुनू बेकती बुधनी आ नन्दलालोकेँ भेलैन।

पानि पीब राधामोहन बाजल-

"माए, जहिना कियो मनकामना नेने देवस्थान पहुँचैए तहिना भेल।"

तरसैत मनमे जहिना तृष्णा तरपैत तहिना माइक तरसैत मनपर राधामोहन आँखि गड़ा देखए लगल। जिज्ञासु मन माइक। बेटाकेँ अपन तृष्णा केना कहती। केकरा नै मन होइ छै जे नीक खेनाइ खाइ, नीक शरीर लऽ कऽ नीक घरमे रही, प्रतिकूल मौसमकेँ अनुकूल बना शान्तसँ निवास करी। मुदा माइक बात जँ बेटा बुते नै पुरौल भेल तँ ओकरो मन कानि-कानि बाजत जे माइक मन लगलै रहि गेल। तइसँ नीक ओकरे सुनब हएत। बजली-

"की सभ मेलामे देखलहक?"

मेला सुनि राधामोहन विस्मित हुअ लगल। दहिना हाथ उठा चानि ठोकि बाजल-

"माए, एक जिनगीकेँ के कहए जे पुश्त-पुश्तैनीक जिनगीक बाट भेट गेल। भगवान दहिन भेला जे मेलाक जड़िएमे पहुँच गेलौं। तेहेन-तेहेन विचारक सभसँ दोस्तियारे भऽ गेल जे गुरु मानि लेलिऐन। केतौ हमरा वौआइ-ढहनाइक जरूरत नै अछि। जखन जे जरूरत हएत एक लपकन चलि जाएब आ सीख लेब। जइ हिसाबसँ कहलैन तही हिसाबसँ काजो करब। एकेटा गाए पोसब। बेसी नै सम्हारल हएत। मुदा एकोटा पोसब तँ तीन के कहए जे तेरहक मुकाबला करत।"

बेटाक उत्साह देख बुधनीक मन उत्साहसँ धधैक गेलैन। जहिना केतौ कोनो घरमे आगि लगने भोंकाँर फुटैत तहिना माइक मन देख राधामोहन बाजल-

"माए, अपना सभ बुझै छी जे गरीब छी कोनो आए-उपए नइए, मुदा से नहि, तेते अछि जे सम्हारले ने हएत। हाथमे रूपैआ नै अछि मुदा खेत-पथार तँ अछि। ओना, खेतो तेतेक अछि जे नीक जकाँ गिरहस्तो बनि सकै छी, मुदा जखन मनमे जिनगीक पहिल काज गाइए पोसब जागल तँ यएह करब। सीमा कातक जे खेत अछि, जेकरा दुनू गामक लोक हगनार बनौने अछि ओइ बारहो कट्ठाकेँ बेच लेब। दस हजार रूपैए ओइ बाधक जमीनक दाम छइ। हगनार बुझि पाँच-दस हजार कमे दिअए मुदा बेचब ओकरे। ओइसँ एको कनमा उबजो नहियेँ अबैए।"

राधामोहन बजिते छल कि बिच्चेमे नन्दलाल ओछाइनेपर सँ बजला-

"बौआ, खतियानी चीज छी तँए पहिने बन्दोबस्ती, दस्ताबेजी बेची। लोक की कहतह!"

राधामोहन चुप्पे रहल मुदा बुधनी झपैट बजली-

"दिनोमे तरेगन देखै छी से होशे ने अछि आ बेटा जे किछु करए चाहैए तँ आगूसँ ठेहुन गड़ा दियौ। ओकर सभ किछु छिऐ, राखए आकि बोहाबए तेकर नीक बेजाए ओकरे हेतइ। अन्न बिना मरब आकि भीख मांगि खाएब, कौल्हुका दिन लोक ओकरे ने थूक देतइ। तइले हम किए रोकब।"

बेटा दिस मुँह ताकि बुधनी फेर बजली-

"हँ, और की करबहक?"

दूमे एकक सह पाबि राधामोहन बाजल-

"दस कट्ठा खेतमे दूधारू घास लगाएब। अपना बोरिंग नै अछि, एकटा कले खेतमे गड़ा लेब आ छोटके इंजिन लऽ लेब। ओना अखन एक्केटा गाए आनब तँए एके गाए-जोकर घरक काज अछि मुदा से नै करब, तेना कऽ बानाएब जे तीन-चारिटा गाइक अँटाबेस भऽ जाएत। अखन ताबे गहुमक भूसी कीनि कऽ रखि लेब।"

मास दिन बितैत-बितैत घरो बना लेलक आ बीत-बीत भरिक दूधारू घासो उपजा लेलक। पचास हजार रूपैआ हाथमे बँचलै रहै पूसा विदा भेल।

चिन्हरबे लोक, चिन्हरबे घर-दुआर। साढ़े पाँच बजे साँझमे राधामोहन पी.एन. बाबूक डेरापर पहुँचल। दुनू बेकती बजार गेल रहैथ। तैबीच बगलेक डेरासँ सुरेन्द्र बाबूक पत्नी देखलखिन। देखते लगमे आबि पुछि देलखिन-

"गाम-घरक की हाल-चाल अछि राधामोहन?"

राधामोहन-

"सभ आनन्दित अछि। साहैब सभकेँ नइ देखै छिऐन?"

राधामोहनक बात सुनि सुचिता बजली-

"साहैब सभ सहाएबे छैथ किने, रौद-बसात लगबैक समय भऽ गेलैन किने सएह लगबए किम्हरो गेल हेता।"

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प चलिते छल कि दुनू बेकती रक्षा-टोकी करैत पी.एन. बाबू पहुँचला। रक्षा-टोकीक कारण छेलैन राति-ले माछ किनब। चसगर खेनिहार पी.एन. बाबू तँए माछपर जोर देने। एक तँ माछक अड़सट्टा तेहेन भारी अछि जे खाइ-बेर तक लधले रहैए, तइसँ नीक अपन गाइक दूध किए ने। कोनो बेसी तरद्दुत नहि। माछक

छातीपर बैसैक दम ओकरा नै छइ। तखन तँ वेचारा ओहुना कहू जे दू गोरेक भानसमे जँ चारि घन्टा समय लगाएब केहेन हएत। दूधकेँ की छै, बथनियाँ जकाँ दूहि कऽ चुल्हियोपर कटिया चढ़ा देबै आ गरमे-गरम खाइ बेर थारीमे उझैल देब। एक संगे दुनू काज भऽ जाएत, माने कटियो सोन्हा जाएत आ दूधो औंटा जाएत। ओना, माछ कीनिए नेने रहैथ। राधामोहनकेँ देखते पी.एन. बाबू पुछलखिन-

"गाम-घरक की हाल चाल अछि राधामोहन?"

"बड़बढ़ियाँ अछि। जहिना-जहिना कहने रही तहिना-तहिना करबो केलौं।"

राधामोहनक जवाब सुनि पी.एन. बाबूक मन फुला गेलैन। बजला-

"अहू ठामक जतरा नीके अछि, माछ अनलौं-हेँ।"

बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा लगलै मन रोकि कऽ अँटका देलकैन। रोकि देलकैन जे माछ खाइ छैथ तिनका-ले ने आ जे नै खाइ छैथ तिनका-ले केना जतरा नीक भेलै? तैसंग ईहो जे भोज्य पदार्थक तुलनामे माछ महगो अछि, जेतए सस्ता वस्तु भेटब भारी अछि तैठाम की कहल जाए? खएर जे हौउ, मिथिलाक पहचान तँ छिहे। भलेँ पोखैर बाढ़िमे मरने भऽ गेल हुअए, गढ़िया गेल हुअए, खरहा गेल हुअए आकि भोंथिया गेल हुअए, मुदा झण्डा झूकाएब नीक हएत। झुकबाको नै चाही। से जँ झूकि गेल तँ की एहेन देह-दशा लऽ कऽ मुरै उखाड़ब।

विचारमे पी.एन. बाबू मगने रहैथ आकि तखने सुरेन्द्रो आ दीनानाथो बाबू ललका-ललकी करैत पहुँचला। ओना ठोर दुनूक पटपटाइते रहैन मुदा राधामोहनक सोझहामे अपन उलझन राखब नीक नै बुझलैन...।

पाशा बदलैत दीनानाथ बाबू राधामोहनकेँ टोकलखिन-

"बड़ चपचपी देखै छी राधामोहन! इन्दिरा अवासक पाइ गाए कीनैले भेटल आकि दारू भट्ठी जाइले से भाँज कनी कहू।"

सुरेन्द्र बाबू आ दीनानाथ बाबूक बीच जे ललका-ललकी रहैन ओ ई रहैन जे जँ दूधक पैदावार गाममे बढ़ि जाएत तँ ओकर बजार केहेन हएत? नीक प्रश्न रहितो दुनू गोरे ओझरा ओतए गेल रहैथ जे बजार केना बनै छइ। दिन उगले सभ एकठाम बैसला। तैबीच सुरेखा माछकेँ धो-धा तेलमे कर लगा नेने छेली। संयमित सोच रहने कियो अपन रमाकठोला नै पसाइर राधामोहनेक बात सुनैले खढ़िया जकाँ कान ठाढ़ केने रहैथ। से जँ नै करतैथ तँ नढ़ियो तँ नहियेँ छैथ जे सोझहे भुकबे करितैथ। तखन पुछतैन के। अपन जिनगीक मांसक रक्षा तँ वेचारा खढ़ियोकेँ अपने करए पड़ै छै, नइ तँ जेकरे आँखिक सोझ पड़त मारि कऽ खा जेतइ।

जहिना किछु लोक एहनो होइ छै जे मुदालह बनि लड़बकेँ प्रतिष्ठा आ मुद्दैकेँ अप्रतिष्ठा बुझै छैथ, कारण जे हौउ, तहिना काज पुरौल राधामोहनक मन प्रश्न सुनैक जिज्ञासा-ले उत्तर मनमे रखने तँए फुलैत जे किछु पुछता तँ प्रश्नक नीक उत्तर देबैन। बिच्चेमे सुरेखा टपकली-

"दूध नीक आकि माछ?"

दीनानाथकेँ भेलैन जे चिकारीमे भरिसक हमरे कहलैथ, किएक तँ हुनका दुनू गोरेसँ तँ धकाइते छैथ। अवसरक चुकल बाण जहिना सौंसे दुनियाँ बौआ-ढहना अबैए तहिना बुझि पड़ैए हएत। हमहीं बुझलिऐ आ ओ सभ नै बुझलैन, की ओ सभ अन्न नै खाइ छैथ जे नै बुझने हेता।

..सुरेखाक आँखि-पर-आँखि दऽ दीनानाथ उत्तर देलखिन-

"जे भेटए से नीक।"

अनेरे समैकेँ ससरैत देख सुरेन्द्र बाबू राधामोहनकेँ पुछलखिन-

"की सभ अखन धरि केलौं?"

जहिना कोनो विद्यार्थी रातिमे कोनो कविता वा गीत रटलक आ भिनसुरका परीक्षाक प्रश्न पबिते अह्लादित भऽ कागतपर उतारए लगैए तहिना राधामोहन अह्लादित होइत बाजल-

"श्रीमान्, एक लाख दस हजार रूपैआमे खेत बेचलौं। सबा क्विन्टल मासक हिसाबसँ पाँच क्विन्टल गहुमक भूसी कीनि लेलौं। दस कट्ठामे घास लगौने छी, चारि थान रहैबला घर बनेलौं। पचास हजार बँचल अछि जे लऽ कऽ अपने लोकैनक शरणमे आएल छी।"

राधामोहनक जवाब सुनि, जहिना कोनो देवालयमे गेट परहक हनुमानजी सभसँ पहिने असिरवाद दइ छथिन तहिना दीनानाथ बाबू सुरेन्द्र बाबूकेँ कहलखिन-

"भाय साहैब, अपनेबला गाए दऽ दियौ।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि सुरेन्द्र बाबू ठमैक गेला। ठमकैक कारण भेलैन एक संग अनेको प्रश्न मनमे उठब। अपना खुट्टा परहक गाए छी, बच्चेसँ देखैत एलौं। अखन गाए अछि। पनरह किलो दूध होइ छइ। की सभ खाइले दइ छिऐ आ केतेक बेर पानि पीअबै छिऐ, केहेन घर बना रखने छिऐ..। सभ तँ बुझल-गमल अछि। जँ गाए देबै तँ तैसंग ईहो सभ तरद्दुतो कहि देब नीक हएत। तैसंग दोसर प्रश्न ईहो उठि गेलैन जे लाख रूपैआ दरमाहा उठबै छी, एकटा बोनाएल नवयुवककेँ उठैले तीस-चालीस हजार दऽ नै सकै छी। गाइक दाम नै लेब।

..मुदा तइ बिच्चेमे दीनानाथ बाबू दाम खोलैत बजला-

"तीस हजार गाइयक दाम भेल, गाड़ी भाड़ा अपने लागत।"

दीनानाथ बाबूक विचारकेँ समर्थन करैत सुरेखा टिपलैन-

"हँ-हँ, दाम ठीके कहलिऐ। तइमे आशीक जे देथिन।"

दुनूक गप सुनि सुरेन्द्र बाबू बजला-

"गाइक दाम नै लेब।"

मंगनी सुनि राधामोहन चौंकैत बाजल-

"श्रीमान्, जहिना मंगनी किताब पढ़ने लाभ होइ छै तहिना मंगनी बौसौक होइ छै, तँए मंगनी नै लेब।"

राधामोहनक प्रश्नसँ सुरेन्द्र बाबू आरो उलैझ गेला। मनमे उठलैन एक तँ जीवनी-सँ-अनाड़ीक हाथ वौस जा रहल अछि। काँच वौस भेल। जँ कहीं दस-बीस दिनक बीच किछु भाइए जाइ! गामे-घर छी साँपो-कीड़ा रहिते अछि, तखन ओइ वेचाराकेँ की दशा हेतइ? मुदा मंगनियों नै लिअ चाहैए! दाम कम करि कऽ दिऐ, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। काल्हि-दिन जखन बेचए चाहत तँ लेबाल कहबै करतै ने जे एतबेमे किनने रहअ। बजला-

"दाम दीनेबाबूक भेलैन मुदा छह मास धरि पाइ अपने हाथ राखू, केते तरहक बेर-बेगरता हएत। जखन अहीं सबहक इलाकाकेँ अपन जीबैक इलाका बना रहल छैथ तखन भाय-बन्धु सिरैज किए ने पाबैनो-तिहार गामे-घरमे मनाबी।"

दोसर दिन गाइक संग सुरेन्द्रो बाबू आ दीनानाथो बाबू राधामोहनक ऐठाम आबि सभ किछु देख-सुनि पायस पारस पाबि चारि बजेक घुमती बस पकैड़ लेलैन।

ooo

शब्द संख्या : 1590

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-26-1

उत्थान-पतन

जगदीश प्रसाद मण्डल



उत्थान-पतन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-24-7

दाम : ₹ 350/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

UTHAN-PATAN
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

...
..
.

एकसत्तैर-

अंक

आमुख/08
एक : 'क'/12
'ख'/18
'ग'/20
दू/24
तीन/42
चारि/66
पाँच/83
छह/97
सात/106
आठ/118
नअ/132
दस/151
एगारह/161
बारह/175
तेरह/192
चौदह/211
पनरह/229

आमुख

नाटककार, कथाकार आ उपन्यासकारक रूपमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी मैथिली साहित्यमे नूतन उर्जाक संग उपस्थित भेल छैथ। हिनक जन्म 1947 ई.मे भेल। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा, प्रेरक कथा उपन्यास सेहो प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

ऐ 'उत्थान-पतन' उपन्यासमे लेखक गामक जिनगीक यथार्थक नव-नव रूप उपस्थित केने छैथ। गामक जड़ता, रीति-रिवाज, पाबैन-तिहार, मूर्खता, विद्वता, अड़ि जाएबला भाव आ सहज सोभाव आदि सहज रूपमे आबि गेल अछि।

तत्वक दृष्टिसँ देखल जाए तँ सर्वप्रथम कथावस्तु धियानकेँ आकृष्ट करैत अछि। कथावस्तु तँ सशक्त आधार अछि जैपर उपन्यासक केतेको रंगक प्रसाद ठाढ़ होइत अछि, जइमे जिनगीक श्वास रहब आवश्यक।

उत्थान-पतनमे गंगानन्द, यमुनानन्द, पण्डित शंकर, सुधिया, ज्ञानचन्द, भोलिया, बिशेसर, भोलानाथ, सुकल, नीलमणि, मोहिनी, रीता, महंथ रघुनाथ दास, लीला, दीनानाथ, गुलाब आदि अनेक पात्रसँ सज्जित भऽ अंचलक मार्मिक चित्र उपस्थित भेल अछि।

कथावस्तुमे विच्छिन्न होइत गाम-घर आ टुटैत बेकती सबहक समस्याकेँ मार्मिक ढंगसँ अभिव्यक्ति कएल गेल अछि। उपन्यासक प्रारम्भ होइत अछि-

"गामे-गाम केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ नवाह, केतौ चण्डी यज्ञ तँ केतौ सहस्र-चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह भेने तँ सुखौनी लगि जाइत अछि आ जैठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तैठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नाओंसँ गदमिसान होइत। जअ-तील आ घीक गन्धसँ हवा सुगन्धित। सबहक हृदैमे भगवानक स्वरूप बिराजैत। सभ व्यस्त। सभ हलचल। खर्चक कोनो इत्ता नहि। जेना निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना। जाधैर लोक कीर्तन मण्डलीक संग, मण्डपमे कीर्तन करैत ताधैर घरक सभ सुधि-बुधि बिसैर मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबिते कियो भूखल गाए-महींसक डिरियाएब सुनि चिन्तित होइत तँ कियो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट-ले ठुनुकब सुनि बेथाकेँ दबैत तँ कियो आँखिक नोर होइत बहबैत।"

समाजिक उत्थान करैबला बेकतीकेँ गामक ऐ परम्परा आ धार्मिक आडम्बरसँ संघर्ष करए पड़ैत अछि। लेखक अपना पात्रक द्वारा अन्धविश्वासकेँ तोड़ि जनकल्याणकारी परिवर्तन अनबाक प्रयास केने छैथ।

साहित्यक भाषा हेबाक चाही जन-भाषा। जेकरा साधारण जन सहज-रूपसँ पचा सकए। ऐ उपन्यासक भाषा गाम-घरक बोलचालक भाषा अछि। जेकरा प्रयोग करैत काल सहजे नव-नव शब्दक निर्माण भऽ गेल अछि। साधारण जनक बोली आ नूतन शब्दक प्रयोग ऐ उपन्यासमे प्रचुरताक संग देखल जा सकैत अछि। कथोप-कथनमे सहजता संक्षिप्तता और स्वभाविकता अछि। जेना ऐ कथोप-कथनपर दृष्टिपात कएल जा सकैत अछि-

"अगर दसखत कएल नै होइत हुअ तब?"

"तब की? औंठा निशान दऽ देतइ"

"भाय, दूटा समाँग आएल अछि। दुनूकेँ काज कऽ दहक।"

"अच्छा थमहह, किरानी बाबूसँ गप्प केने अबै छी।"

कथोपकथन उपन्यासमे वर्णित जिनगीक अनुकूल अछि। दौड़ैत-पड़ाइत संसारमे बृहताकार उपन्यास पढ़ैले समैक अभाव रहैत अछि। किन्तु भाषा आ शौलीमे जँ आकर्षणक गुण रहैत अछि तँ ओ जनमानसकेँ पढ़बाक लेल अपना दिस घींच लैत अछि। जइ गुणसँ भरल-पूरल ऐ उपन्यासक चित्रात्मक शैलीक एकटा उदाहरण देखल जा सकैत अछि-

"गोर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोँछ, बरदक आँखि सन नमहर-नमहर आँखि। कोठीक गेँटपर कान्हमे बन्दूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सेठक करैत।"

एक्के वाक्यमे बहुत बात कहि देब लेखकक विशेषता अछि। जेना-

"माथपर छिट्टा नेने आँगन विदा भेली। माथपर छिट्टा लऽ दुनू हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकैड़ दुलकी डेग बढ़बैत गुलाब 'सैयाँ भेल किसनमा' घुनघुनाइत आँगन दिस लफरल चलली।"

केहनो अकर्मण्य बेकती जँ पूर्ण मनोयोगक संग आर्थिक उन्नतिमे दत्तचित भऽ जाए तँ हुनक प्रगति होएब निश्चित भऽ जाइत अछि। ऐ दर्शनकेँ देखेबाक प्रयत्न लेखक पात्र श्यामानन्द द्वारा केलैन अछि। परिवर्तनशीलता संसारक निअम छी। सामन्तवादसँ पूँजीवाद आ पूँजीवादक गर्भेसँ समाजवादक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीवादसँ साम्राज्यवाद सेहो पनपैत अछि।

समाजिक उत्थान समितिक निर्माण कऽ लेखक ई देखबए चाहै छैथ जे टुटैत गामक लेल एकता आवश्यक भऽ गेल अछि। जइसँ एक-दोसराक सहयोग भेटतै आ गामक सम्पूर्ण विकास हेतइ। सबहक संगे समाजिक न्याय हेतइ। श्यामानन्द द्वारा आधुनिक यंत्रसँ कृषि कार्य होइत अछि। जइसँ ओ सम्पन्न किसान बनि जाइत अछि। ऐ माध्यमसँ लेखक देखबए चाहै छैथ जे अपनो गाम-घरमे जँ बेकती विवेक आ कर्म निष्ठासँ काज करए तँ ओकरा अर्जन करबाक लेल दोसर प्रदेश नै जाए पड़तै आ पड़ाइन रुकि जेतइ।

अखनो गाम-घरमे पूर्ण ज्ञानक किरिण नै पहुँच सकल अछि। तइ कारणे एक गाम दोसर गामसँ लड़ैत-झगड़ैत अपना विकासकेँ अवरुद्ध केने रहैत अछि। बेमारीकेँ डाइन-जोगिन आ भूत-प्रेतक प्रकोप मानैत अछि। ई समस्या सभ सहजे ऐ उपन्यासमे उपस्थित भऽ गेल अछि। ऐ तरहेँ देखै छी जे लेखक गामक यथार्थ जिनगीक चित्र उपस्थित केने छैथ, संगे आदर्श रूप सेहो दृष्टिगत भऽ रहल अछि।

राजदेव मण्डल

एक- 'क'

गामे-गाम केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ नवाह, केतौ चण्डी यज्ञ तँ केतौ सहस्र-चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह भेने तँ सुखौनी लगि जाइत अछि आ जैठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तैठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नाओंसँ गदमिसान होइत। जअ-तील आ घीक गन्धसँ हवा सुगन्धित। सबहक ह्रदैमे भगवानक स्वरूप बिराजैत। सभ व्यस्त। सभ हलचल। खर्चक कोनो इत्ता नहि। जेना निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना। जाधैर लोक कीर्तन मण्डलीक संग, मण्डपमे कीर्तन करैत ताधैर घरक सभ सुधि-बुधि बिसैर मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबिते कियो भूखल गाए-महींसक डिरियाएब सुनि चिन्तित होइत तँ कियो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट-ले ठुनुकब सुनि बेथाकेँ दबैत तँ कियो आँखिक नोर होइत बहबैत।

चारि सालक रौदीक चलैत पोखैरक पानि सूखि गेल। नमहर-नमहर दराइर खेतसँ लऽ कऽ पोखैर धरिमे फाटि गेल। इनारक मटियाएल पानि भरि-भरि सभ घैलमे रखि फरिछा-फरिछा लोटा-गिलासमे लऽ लऽ पीबैत। लोक की करत। केतए जाएत। मृत्युक मुँह छोड़ि दोसर रस्ते की? औझुका कोलकाता ओ कलकत्ता नहि जैठाम

अकाल आ समुद्री तूफानसँ ढेरो लोक मरै छल। जेकरा आइ अपन दोसर घर बुझि लोक जीवन-यापन करए जाइए। औझुका पंजाब ओ पंजाब नहि जैठाम आन-आन राज्यक लोक जा खेत-खरिहाँनसँ कारखाना धरि खटि कऽ परिवारक भरण-पोषन करैए। पंजाबक ओ दशा छल, जैठाम कल-कारखानाक कोन गप जे खेतक माटि गेउर रंगक कंकर मिलल, बरखासँ भेँटो ने होइ छलइ। साइते-संयोग सालमे कहियो बरखा भऽ जाइत रहइ। ओतुक्का लोक पड़ा-पड़ा आन-आन राज्य जा हड़तोड़ मेहनत कऽ जीविका चलबै छल। बम्बई, औझुका मुम्बई नहि। ने सिनेमा उद्योग छल आ ने कल-कारखाना आ नहियेँ अखुनका जकाँ कारोबार...।

गंगानन्दकेँ तीस बीघा जमीन। तीन भाँइक भैयारी आ सतरह गोरेक आश्रम। जइ साल सवारी समए होइत ओइ साल आश्रम चला आ मालगुजारी दैयो कऽ अन्न उगैड़ जाइ छेलैन, जेकरा दु-सलिया-तीन-सलिया पुरान बना खाइत। सबाइयो लगबैत।

पहिल सालक रौदी गंगानन्दकेँ बुझिए ने पड़लैन। घरमे धान-चाउर परियाप्त रहैन संगे गाइयो-महींस-ले बड़का-बड़का दूटा नारक टाल रहबे करैन। पहिलुके जकाँ गंगानन्दक मन हरिअर।

दोसर साल घरक धान-चाउर लगिचा गेलैन। रौदमे, जहिना गाछक तोड़ल फूल मौलाए लगैत तहिना गंगानन्द मौलाए लगला। कुटुमो-सम्बन्धीक आबा-जाही बढ़ि गेलैन।

गंगानन्दक जेठकी बेटी रीता सासुर बसैत। चारि बेटी आ एक बेटाक संग रीता सेहो आबि गेलैन। रीताक जेठकी आ मैझली बेटी बिआह करै जोकर भऽ गेल। जँ कहियो रीता कोनो काजमे नैहर अबैत तँ काजक पराते सासुर जाइले धूम मचा दइत। किएक तँ सासुरक सभ भार रीते दुनू परानीपर। भैयारीमे जेठ रहने घरसँ बाहर धरिक

सभ तरद्दुत करए पड़ैत।

रौदीक चलैत रीता धिया-पुताक संग छबो गोरे नैहर एली। मासोसँ ऊपरे भऽ गेल मुदा सासुर जाइक नाओंए ने रीता लइत। बाप-माए केना मुँह फोड़ि बेटीकेँ सासुर जाइले कहत। भरियाएल खर्चसँ गंगानन्द तेरे-तर कुहरैथ। मने-मन सोचैथ, एक तँ साल खेपब कठीन अछि, तैपरसँ कुटुम-परिवारक धुमसाही..! मुदा कहथिन केकरा। बरखाक केतौ पता नहि। उपजा-बाड़ीक कोनो आशा नहि...।

मने-मन रीता सोचैत जे जँ सुमनक बिआहक चर्च माए करत तँ ओकरे माथपर पटैक देबइ। अपना बुते पार लगाएब कठिन अछि।

सभ दिन गंगानन्द साँझू पहरमे भूजल चूड़ा फँकै छला। बीस मनिया कोठीटा मे चाउर बँचल। धान पहिने सठि गेल। धानक दुआरे चूड़ा कथीक कुटौल जाएत। पार्वती पतिक आदत बुझि चाउरे भूजि छिपलीमे लऽ दरबज्जापर नेने एलखिन। भूजल चाउर देख गंगानन्द मने-मन बुझि गेला जे धान सठि गेल। पुरान चाउर रहने भूजा पथरा गेल तँए सक्कत। पहिलुके फक्का मुँहमे लैत गंगानन्दक दाँत सिहैर उठलैन। दाँत सिहैरते गंगानन्द लोटाक पानि मुँहमे लऽ गुल-गुला कऽ घोंटलैन। मुँहक चाउर घोंटि छिपली आगूसँ घुसका देलखिन।

मने-मन पार्वती अन्दाजलैन जे सक्कत दुआरे भूजा नै खेलैन। मुदा उपए की..?

गंगानन्दकेँ तामस नै उठल। जँ घरमे धान रहैत तँ चूड़ा कुटौल जाइत मुदा नै रहने कएल की जाएत। जहिना लकड़ी जड़ि कऽ राख बनि शक्तिहीन भऽ जाइए तहिना गंगानन्दक दशा भऽ गेलैन।

गिलासमे चाह नेने गंगानन्दक नातिन आएल। दुनू परानीक नजैर सुमनपर पड़ल। चाह रखि सुमन आँगन चलि गेल।

लग्गी भरि हटल पार्वतीकेँ हाथक इशारासँ गंगानन्द लग अबैले

कहलखिन। पार्वती बैसले-बैसल घुसैक कऽ लग एली। फुस-फुसा कऽ गंगानन्द कहलखिन-

"रीताक दुनू बेटी बिआहै जोकर भऽ गेल। जँ कहीं ऐ साल एकोटा बिआह ठानत तँ इज्जत बाँचब मुसकिल भऽ जाएत। हमहूँ तँ नने छिऐ।"

अखन धरि पार्वती अँगनासँ दलान धरि अबै-जाइ छेली। ऐसँ अधिक ने देखैक समए भेटलैन आ ने घरक नीक अधला बुझैक। नातिनक बिआह बुझि अह्लादसँ पार्वती बजली-

"यञो केकरो बाँकी रहै छइ। यएह तँ भगवानक लीला छैन जे गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरिक काज कहुना-ने-कहुना भाइए जाइ छइ।"

केचुआएल साँप जकाँ गंगानन्दक दशा। दिन ससरब कठिन। तैपरसँ पत्नीक चढ़ल बात आरो केचुआ चढ़ा देलकैन। मुदा जहिना केचुआ छोड़ैत साँपक साँस तेज भऽ जाइत तहिना नमहर साँस छोड़ैत गंगानन्द बजला-

"एहेन दुरकालमे जीनाइ कठिन अछि, तैपर बिआह सनक यज्ञ...। तहन तँ जेकरा सिरपर काज अबै छै, कोनो-ने-कोनो धरानी पार लगैबते अछि। दू सालक रौदीक झमारसँ घर फोंक भऽ गेल अछि। अखनो धरि पानिक कोनो आश नहि अछि। तँए, पहिने जीअब पार लगत तखन ने किछु। बिआह तँ एक-दू साल आगूओ बढ़ौल जा सकैए।"

ओलती लग ठाढ़ भऽ रीता माए-बापक फुसराहैट सुनैत। गप मोड़पर अबिते रीता आगू बढ़ि माए लग आबि ठाढ़ भऽ गेल। अपन बातकेँ छिपबैत गंगानन्द कठ हँसी हँसि पत्नीकेँ कहए लगलखिन-

"रीतोक बेटी बिआह करै जोकर भेल जाइ छइ?"

मुँह निच्चाँ केने रीता बजली-

“बाबू, दुनू बहिन तरे-ऊपरे भऽ गेल अछि। मुदा घरक जे दशा भऽ गेल अछि तइसँ अखन बिआह पार लगब कठिन अछि। जखन समए-साल सुधरत तखन बुझल जेतइ।”

मने-मन गंगानन्द सोचैथ जे घरक भार पड़लासँ सभ आगू-पाछू देख किछु करैए। मुड़ी डोलबैत गंगानन्द कहलखिन-

“हँ, से तँ ठीके। अखन बिआह करैक अनुकूल समैयो ने अछि। सिरिफ हमरेटा घरमे नै समाजमे बहुतोकेँ घरमे बिआहै जोकर बेटी अछि। सबहक पार तँ भगवान लगेबे करथिन।”

पिताक बात सुनि रीताक मनमे शान्ति एलइ। अपन परिवारक चर्च करैत रीता बाजए लगली-

“बाबू घरक हालत बड़ खराप भऽ गेल अछि। एक तँ दू-अढ़ाइ बर्खक रौदी, दोसर एक्कोटा समाँग उहिगर नहि! कियो कमाए-खटाए नइ चाहैए। भरि दिन, गप-सप्प लड़बैत समए बितबैए। घरक कोनो धैन-फिकिर नहि। भैयारीमे जेठ रहने दुनू परानी काजक पाछू भरि दिन अपसियाँत रहै छी।”

मास पुरैमे दू दिन बँचल। मालगुजारीक अन्तिम सूचना दिअ राजक सिपाहीकेँ पटवारी पठौलक। सिपाही आबि गंगानन्दकेँ कहलकैन-

“परसू तक जँ मलगुजारी नै देबै तँ जमीन निलाम भऽ जाएत। पटवारी अपन जाति-बेरादर बुझि चुपचाप पठौलैन। नइ तँ कानून-कैदासँ काज हएत।”

जहिना कोनो राजाकेँ राज छीनि कऽ भगा देलापर मनमे धक्का लगैत तहिना सिपाहीक समाचार सुनि गंगानन्दक मनमे एहेन धक्का लगलैन। छाती धकधकाइत, कण्ठ सुखैत गंगानन्द सिपाहीकेँ

कहलखिन-

“अखन जे दशा अछि तइमे मलगुजारी देब असम्भव अछि। दोसर कोनो रास्ते ने देखै छी।”

गंगानन्दक मजबुरी बुझैत सिपाही कहलकैन-

“एकटा उपए अछि।”

गंगानन्द कऽ सुखाइत कण्ठसँ बहरेलैन-

“की?”

कने घुसैक कऽ लग आबि सिपाही कहलकैन-

“पटवारीकेँ बिआहै जोकर बच्चिया छैन। अहाँ अपन बेटाक बिआह कऽ लिअ। देबो-लेब नीक भेटत। हुनके हाथक काज छैन, जमीनक रसीद सेहो दऽ देता। कियो बुझबो ने करत आ काजो भऽ जाएत।”

◌

शब्द संख्या : 1105

‘ख’

बचनाक अवाज सुनि फुलिया जत्ता चलाएब छोड़ि एक हाथसँ हथरा पकड़ने आगू तकलक। बचनाक मन, जेना धिया-पुताक हाथसँ कौआ रोटी लपैक उड़ि जाइत तहिना सोगाएल। पत्नीसँ नजैर मिलते बचना बाजल-

“लछमीपुर जाइ छी जँ कोनो गर रूपैआक लगि जाएत तँ लगौने आएब।”

नैहरक नाओं सुनि फुलियाक मनमे गुदगुदी लगल। मुदा विपैतक चद्दैर ऊपरेसँ झाँपि देलकै। सोगाएल मने फुलिया बाजल-

“जाउ, कपार तँ फुटले अछि मुदा तैयो अपना भरि परियास करू। कपार तँ उनटबो-पुनटबो करै छइ। जँ कहीं नीके गरे उनैट जाए। कनीए थमि जाउ। रोटी पका दइ छी। खा कऽ जाएब।”

मन्हुआएल बचना ठोर पटपटबैत बाजल-

“बड़ बढ़ियाँ। तुरन्ते हमहूँ दूटा दारही खोखरौने अबै छी। नहाइयो लेब।”

बचना दाढ़ी कटबए विदा भेल। फुलिया जत्ता लगक चिक्कस समेट मुजेलामे उठौलक। मुजेला लऽ जा कऽ चुल्हि लग रखलक। चिक्कस रखि कोठीपर सँ चिक्साही सूप आनि गठूलासँ जारैन आनए

गेल। हाँइ-हाँइ चुल्हि पजाइर रोटिपक्का घीपैले चुल्हिपर चढ़ौलक। मुजेलासँ लप लऽ लऽ चिक्कस निकालि सूपमे रखलक। पानि दऽ हाँइ-हाँइ सानए लगल। जाबे रोटिपक्का धिपलै ताबे रोटियो ठोकि लेलक। हाथपर ठोकल रोटी रोटिपक्कामे दऽ पकेलक।

नौआ गाममे नहि। मूड़नक पता लऽ कऽ सुखेत गेल छल। बिनु दाढ़ी कटौनहि बचना घुमि कऽ आबि गेल। अलगनीपर सँ धोती लऽ नहाइले विदा भेल। जाबे बचना नहा कऽ आएल ताबे फुलिया थारीमे भाँटाक सन्ना आ रोटी परोसि कऽ रखने। हाँइ-हाँइ बचना खा कऽ अँगा पहिर, हाथमे छाता लऽ सासुर विदा भेल। बचना रस्तो चलए आ मने-मन ‘जय महावीरजी, जय महावीरजी’ घुनघुनेबो करए। लछमीपुर लग पहुँचते मने-मन महावीरजीकेँ गोड़ लगि, सबा रूपैआक चीनी कौबला केलक। कौबला करिते जेना बचनाक मनमे संतोख भेल जे काज हेबे करत।

लछमीपुर पहुँचते बचना सबहक मन खसल देखलक, जेना केते भारी विपैतमे सभ पड़ल हुअए। करेजपर पाथर रखि बचना सरहोजिकेँ पुछलक-

“किए सभ अनून-बिसनून जकाँ छैथ?”

नोराएल आँखिए सरहोजि कहलकैन-

“पाहुन, की कहबैन खेतक मलगुजारी दू साल पछुआ गेलै तँए परसू सभटा खेत लिलाम भऽ जाएत।”

सरहोजिक बात सुनि बचना अवाक् भऽ गेल। मनमे उठलै- के केकर दुख हरत! सबहक गति तँ एक्के रंग अछि! बचना पएरो ने धुअ लगल, चोट्टे गाम घुमि आएल।

◌

शब्द संख्या : 332

'ग'

बिशेसर घरक आगूमे रस्तापर लोक सभ ठाढ़। रौदाएल बिशेसर हर जोति कऽ अबिते छल। हाथमे हरबाही पेना आ माथमे गमछाक मुरेठा बन्हने। फरिक्केसँ बिशेसर सुनलक जे कचहरीक सिपाही बलजोरी बाड़ीमे कदीमा तोड़ि लेलक। बिशेसरक पत्नी केतबो मनाही केलकै मुदा सिपाही नै मानलक। मोहिनी आ सिपाहीक बीच रक्का-टोकी होइते छल, कदीमा सिपाहीक हाथेमे। लग अबिते बिशेसर सिपाहीकेँ चारि-पाँच पेना लगा कदिमा छीनि लेलक। आ अनधुन गरियबैत सिपाहीकेँ कहलक-

"बापक बाड़ी बुझि कदीमा तोड़लेँ। तूँ सिपाही कचहरीक छीही की हमर?"

चारि-पाँच गोरे बिशेसरकेँ पकड़ने मुदा तैयो जोशमे हुरैक-हुरैक मारैक कोशिश करैत। लोकक कहलासँ शान्त भेल। मुदा तामसे ठोर पटपटाइते रहलै। शान्त भऽ बाजल-

"अहाँ समाज मिलि पकड़लौं तँए चुप भऽ गेलौं मुदा पच्चीस बेर सिपाहीकेँ कान पकैड़ उठाउ-बैसाउ, चाहे थूक फेक कऽ चटाउ। जे फेर एहेन गलती नइ करए। ई चोर छी! लालिश कऽ देबइ। जहलसँ कहियो निकलए नइ देबइ। ई राँड़-मसोमात हमरा बुझलक!"

बिशेसरकेँ मात्र दू कट्ठा घराड़ीए-टा। सेहो बेलगान। दुइए गोराक आश्रमो। बेटा-पुतोहु भीन। एकटा तेरह हाथक घर जइमे दूटा हन्ना बनौने। एकटा मे अपने दुनू परानी रहैत आ दोसरमे बेटा-पुतोहु। कनीए-टा अँगना जइमे तीनू भागसँ टाट लगौने। बाँकी डेढ़ कट्ठा बाड़ी बनौने। मोहिनी अपन बाड़ीमे सभ दिन राशि-राशि कऽ तरकारी उपजबैत आ बिशेसर दुनू उखराहा बोइन करैत।

दुनू परानीक मिलानक चर्च सौंसे गाममे होइत। अपन-अपन काज बँटने। कोनो हरहर खटखट नहि। दू-सेर-चारि-सेर अन्न घरोमे रहैत। साठि बर्खक बिशेसरक जुआन जकाँ तन दुरूस। ने एकोगो दाँत टुटल आ ने केश पाकल। जेना दोसर-तेसर बोनिहार पचास बरख पुरैत-पुरैत झुनकुट बुढ़ जकाँ भऽ जाइत, तेना नहि। नियमित जिनगी बना दुनू परानी बिशेसर जीबैत। डेढ़ो कट्ठा बाड़ीमे मोहनी कोदारिक काजसँ लऽ कऽ खुरपी हसुआँ धरिक काज अपना हाथसँ करैत। लत्ती-फत्ती-ले छोट-छोट मचानो अपने बना लइत। तरकारीक गाछ रोपैसँ लऽ कऽ ताक-हेर-पटौनी-कमौनी सभ मोहिनीए करैत। अँगने जकाँ चिक्कन बाड़ियो बनौने। दस हाथक एकटा लग्गी बनौने जइसँ गाछक सुखल ठौहरी सभ तोड़ैत।

बिशेसर तमाकुल खाइत आ मोहिनी हुक्का पीबैत। अमलो असान। एक्को पाइ खरच नहि। कातिकमे मोहिनी साए गाछ तमाकुलक रोपि लइत। जेकरा सभ तरद्दुत कऽ दइत। माघ अबैत-अबैत गाछ जुआ जाइत। गाछक रंगो बदलए लगैत। गाछकेँ जुआइते काटि लइत। ओइमे बीचला पात बाँछि खाइले रखैत आ निचला पातकेँ, कनोजरिकेँ पीनी कुटैले रखि लइत। जे सालो भरि दुनू बेकतीकेँ चलैत। बिशेसरक बेटा भोलिया जाबे छोट छल ताबे माइक संग घर-आँगनक काजसँ लऽ कऽ जारैन धरि तोड़ि अनै छल। जखन नमहर भेल तँ पिताक संग बोइन करए लगल। बिआहो भेलइ। मुदा

छौड़ा-मारड़िक संगतमे पड़ि भाँग पीबए लगल। बाड़िए-झाड़ीमे भाँगक गाछ। ओकर फूलो झाड़ि-झाड़ि आ जट्टाबला डारियो काटि-काटि सूखा-सूखा रखैत...।

बिशेसरकेँ कोनो जनतब नहि। मुदा माए देखै। भिनसरू पहरकेँ जखन बिशेसर काज करए विदा हुअए तँ भोलिया सुतले। दू-चारि दिन बिशेसर खिसिया कऽ 'छौड़ा अवारा भऽ गेल', 'मौगियाह भऽ गेल' कहि अपने काज करए चलि जाइत। भोलिया घुमिते-घामिते रहि जाए। एक दिन खिसिया कऽ बिशेसर कहलकै-

"तूँ बेटा छँह एकर माने ई नइ जे तूँ मालिक भऽ गेलँह! दू परानी तोहूँ छँह। बिनु कमेने खेमे की? भीन रह आकि साझी मुदा कमाइए पड़तौ। जो आइसँ फुटे भानस कर।"

कहि बिशेसर भोलियाकेँ भीन कऽ देलक। साँझू पहरकेँ बिशेसर सभ दिन डेढ़ियापर बिछान बिछा, जाबे भानस होइ, भजन-कीर्तन करैत। असगरे बिशेसर खौजरियो बजबैत आ भजनो गबैत। ने दोसर कोनो साज आ ने कियो संगी। अपने गबैया अपने बजनियाँ आ अपने सुननिहार। पाँचेटा भजन बिशेसरकेँ अबैत। जएह सभ दिन गबैत। जखन भजन करए बैसए, तखन एक झोंक खूब झमाझम कऽ 'जय सतनाम जय सतनाम जय सतनाम जय-जय सतनाम गबैत...।'

चुल्हि लग मोहिनी भानसो करैत आ घुनघुना-घुनघुना सतनामो-सतनाम करैत। 'सतनाम'क पछाइत 'साँझ भयो नै आयो मुरारी' बड़ी अह्लादसँ बिशेसर गबैत। अड़ोस-पड़ोसक सभ पाँचो भजन सीख नेने। जहाँ बिशेसर भजन शुरू करै आकि सभ अपना-अपना अँगनामे घुनघुना-घुनघुना गबैत। 'साँझ' गौला पछाइत बिशेसर विनती गबैत। विनती गबै काल तेते तन्मय भऽ जाइत जे बुझि पड़ैत जेना भगवान हृदैमे बैस गेलखिन। विनती समाप्त होइते

खौजरी रखि तमाकुल चुना कऽ बिशेसर खाइत। मोहिनियोँ चुल्हिए लग हुक्का भरि पीबैत। तमाकुल फेक कुरुर कऽ कृष्णक रूपक वर्णन शुरू करैत। रूप वर्णनक समए बिशेसरकेँ बुझि पड़ै जे अन्तर्ज्ञानसँ ब्रह्माण्ड देख-देख गबै छी। गबैत-गबैत बिशेसर उठि कऽ ठाढ़ भऽ खौजरियो बजबैत आ ठुमकी चालिमे झुमि-झुमि नचबो करैत...।

असगर रहितो बिशेसरकेँ बुझि पड़ैत जे हजारो-लाखो लोकक बीच नाचि-गाबि रहल छी। कखनो हँसबो करैत तँ कखनो मुस्कियेबो करैत, तँ कखनो आँखिसँ नोरो झहरए लगैत। पछाइत तौनीसँ मुँह-हाथ पोछि बिशेसर सोहर शुरू करैत। सोहर गबैत-गबैत, भरि दिनक ठेही उतरल बुझि पड़ैत। अन्तमे समदाउन गाबि भजन समाप्त कऽ लइत।

◌

शब्द संख्या : 709

दू

रोहितपुरक दानोक चर्च बुड़हो-बुढ़ानुस आश्चर्जसँ करैथ जे एहेन अन्हड़ जिनगीमे नै देखने छेलौं। खेतमे हवा उठल। खढ़-पात उड़ए लगल। गोलियाइत हवा पहिने सुरुंगा ऊपर-मुहेँ–अकास दिस बढ़ल। बढ़ैत-बढ़ैत पसरए लगल। जे हवा खेतमे उठल ओ दौगैत टोलमे प्रवेश केलक। टोलमे प्रवेश करिते अन्हड़ घर-दुआरक छप्परकेँ उड़बैत, क्षणेमे हजारो घरकेँ खसा-पड़ा देलक। सभ चकित! जे नर्तकी जकाँ नचैत हवा कनीए कालक पछाइत एहेन भयंकर रूपमे बदैल गेल जे गामकेँ उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ एकबट्ट केलक।

दुपहरक समए तँए गामक लोको छिड़ियाएल आ मालो-जाल बाधमे। अन्हड़ समाप्त होइते जे जेतए छल, दौगल गामपर आएल। कियो बच्चा सभकेँ ताकए लगल, तँ कियो माल-जालकेँ। गाममे एकोटा एहेन घर नहि बँचल जेकरा कोनो नोकसान नइ भेल होइ। समुच्चा गामक लोक विपैतमे डुमि गेल। के केकर नोर पोछत! सभकेँ अपने खसैत! जहिना सुरूज डुमला पछाइत अन्हारमे सभ किछु कारीए बुझि पड़ैत तहिना गामक माल-जालसँ लऽ कऽ मनुख धरिक दशा भऽ गेल।

रतनाक स्त्री नैहरमे रहैन। बेर झुकि गेल रहए। गाएकेँ पानि पीआ खाइले आगू ओगाड़ि, अन्हार होइ दुआरे चोरबतीकेँ गमछामे

लपेट, काँख तर लऽ बच्चो आ स्त्रियोकेँ आनए सासुर विदा भेल। मुँह सुखल, छाती धकधक करैत मुदा तैयो रतना आगूओ बढ़ैत आ पाछुओ घुमि-घुमि तकैत। मनमे होइ जे फेर ने कहीं अन्हड़ दोहरा कऽ चलि आबए। मनमे ईहो होइ जे ओमहर सासुर जाइ छी आ एमहर गाममे जँ अन्हड़ चलि औत तब तँ आरो पहपैटमे पड़ि जाएब...।

गामक सीमा टपिते रतना खूब झोंकसँ कखनो दौगबो करैत आ कखनो असथिरोसँ चलैत। रस्तामे बिशेसर भेँट भेलइ। भेँट होइते बिशेसर कुशल पुछलकै। कुशलक उत्तर दैत रतना बाजल-

"पाहुन, की कहब नाश भऽ गेल! सबहक घर अन्हड़मे गिर पड़लै। धड़फड़ाएल छी अखन नै रूकब। राता-राती बच्चा सभकेँ लऽ कऽ गाम घूमब।"

'अन्हड़' सुनि बिशेसर बाजल-

"जाउ-जाउ। एहेन विपैतमे रोकबो उचित नहि।"

रतना आगू बढ़ल। बिशेसर आँगन आएल। मोहिनी आँगनमे नै छेली मुदा नैहरक समाद जरूरी बुझि बिशेसर जोरसँ पत्नीकेँ शोर पाड़लक। पतिक अवाज सुनि मोहिनी धड़फड़ाएले एली। मोहिनीकेँ देख बिशेसर बाजल-

"नैहर उजैड़ गेल। रतना कहलक।"

चौल बुझि मोहिनी हँसैत बजली-

"नैहर उजड़तै हमरा दुश्मनकेँ, हमर किए उजड़त। अहूँक मुहसँ दुरभक्खे निकलैए आकि सासुर अकछ लगैए?"

समाचारकेँ सत बनबैत बिशेसर बाजल-

"एहनो चौल होइ छइ। हँसी-चौल हमरा अहाँक बीच हएत कि

गामक अधला बजने हएत।"

बिशेसरक बातसँ मोहिनीक मुँह मलिन हुअ लगल। आँखिमे नोर अबए लगलै। आरो अधिक समाचार बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़लै। मुदा बिशेसरकेँ जेतबे गप भेल ओतबे बुझल, तँए ओइसँ आगू किछु कहबे ने करैत। दुनू चुप। कनी कालक पछाइत मोहिनी बजली-

"कनी रोहितपुर जा कऽ देख अबियौ। नइ तँ हमहीं जाइ छी।"

बुझबैत बिशेसर कहलक-

"ओहिना जा कऽ देखलासँ की हएत। जखन जाएब तँ किछु मदैत करबै। देखै छिऐ ने जेकर घर जरै छै ओकर सभ किछु जरि जाइ छइ। मुदा कुटुम-परिवार छुच्छे हाथे आबि-आबि खाली जिज्ञासा करै छइ। की हमहूँ-अहाँ ओहिना करबै। काल्हि भोरे दुनू परानी चलब। घरमे जे अन-पानि अछि सेहो लऽ लेब। अपनो लत्ता-कपड़ा लऽ लेब। जेते दिन रहलासँ हेतै ओते दिन रहि घर बान्हि देबइ।"

पतिक विचार सुनि मोहिनीक मन बदलल। पतिक कर्मठता देख मोहिनीक ह्रदैमे नव सिनेह सेहो जगल। मधुर स्वरमे पतिकेँ कहलखिन-

"हम तँ रोहितपुरक बेटी छी सभ काज कऽ देबै मुदा अहाँ तँ गामक जमाए छिऐ अहाँ केना..?"

बिशेसरक मन मदैतक अछि जखन कि मोहिनीक बेवहार आ प्रतिष्ठाक...। हँसैत उत्तर देलक-

"जखन नीक समए रहै छै तखन ने सासुर आ जमाए। अखन तँ सभ विपैतमे पड़ल अछि। दोस-महीम-कुटुम-परिवारक परीक्षा तँ एहने-एहने समैमे होइ छइ। जे कुटुम-परिवार वा दोस-महीम बेरपर ठाढ़ नै हएत, ओहन लऽ कऽ की लोक नाचत।"

सालक आखिरी मास। राजक सभ ऐमला-फैमला आमद-खर्चक हिसाब करैमे लागल। तीन रूपैआ महिनाक नोकरी बराहिल करैत। जे सालक अन्तमे एक्के बेर दरमाहा उठबैत। दरमाहा की उठबैत बखसीश उठबैत। दरमाहा तँ मासे-मास भेटै छै जइसँ लोक गुजर करैए मुदा राजक बराहिल तँ सैयो बीघा जमीनपर हुकुम चलबैत। खेती तँ अपने नहियेँ करैत मुदा एक बटेदारसँ दोसर बटेदारक बीच जमीन दइ-लइक अधिकार बराहिलेक छल। तैसंग धान-मरूआक सबाइ लगौनाइ, असुलनाइ सेहो ओकरे हाथक काज छल। केकरो बेइमान वा इमानदार बनाएब बराहिलक बामा हाथक खेल छल।

राजक कचहरीमे गामेक बराहिल मुदा गुमश्ता अन्तुका छल। आमदनीक खल दुनूकेँ फुट-फुट। धन कटनी, मरूआ कटनी वा रब्बी-राइक आमदनी बराहिलक। तैसंग खरिहाँनक खरिहाँनी सेहो बराहिलेक खल छल।

गामक बराहिल रहने मालिक आ गौआँक बीचक कड़ी सेहो। जखन बराहिल कलम-गाछी वा बाध घुमए जाइत आ एक बेर जोरसँ बजैत तँ सौंसे बाधक लोक बुझि कऽ सतर्क भऽ जाइत। जे सतर्क नै होइत ओकरा अनेरे दू-चारिटा गारि सुनए पड़ैत। गाममे ताड़ी पीआकक मेड़िया बराहिल बनौने। ताड़ीक खरच बराहिलक होइ। कमियोँ नहियेँ। मलिकाना पोखैरक माछ, बँसबिट्टीक बाँस इत्यादि बेच लइत।

गुमश्ता गाममे कम बुलैत। कचहरीएमे बैसले-बैसल सभ किछु करैत। सभ दिन बराहिल एक डाबा ताड़ी गुमश्ताकेँ पहुँचा दइत। असगरे गुमश्ता भिनसरसँ साँझ धरिमे जखन मन होइ चारि गिलास पीब लिअए। गुमश्ता सेहो गामक दू गोरेकेँ मिला कऽ रखने। दुनू गोरेक खाइ-पीबैक जोगार गुमस्ते करैत। एक गोरे गामक जुआन

लड़की सभकेँ फुसला-फुसला अनैत। आ दोसर आम-कटहरसँ लऽ कऽ आनो-आनो चीज गाड़ीपर लादि गुमश्ता ऐठाम पहुँचबैत।

बराहिल ताड़ी खूब पीबैत मुदा समाजक बेटीकेँ अपन बेटी बुझि केकरो दिस आखि नै उठबैत। गुमश्ताक किरदानी बराहिल बुझैत तँए जखन मन होइ तखने दसटा गारि बराहिल दऽ दइत। जइसँ बराहिलक धाक गुमश्ताकेँ होइ। धान-मरूआ सबाइ लगबै काल गुमश्ता बोहीए-मे जोड़-घटाउ कऽ हाथ मारि लइत। जइसँ बढ़ियाँ आमदनी भऽ जाइत।

सालमे पनरह दिन पटवारी आबि कचहरीक सभ हिसाब-किताब करैत। पटवारीकेँ अबिते बराहिल गाममे सबहक ओइठाम जा-जा मालगुजारी दैक सूचना दइत। कचहरी आबि-आबि किसान रसीद कटबैत। निलामी जमीनक बन्दोबस्त करब पटवारीक काज। गुमश्ता अपन आमदनीक चौथाइ भाग पटवारीकेँ दऽ सालो भरिक हिसाबक मुँह-मिलानी कऽ लइत।

पटवारी तीनटा बिआह केने। तीनू स्त्रीकेँ साए-साए बीघा जमीन दऽ तीन गाममे घर बनौने। पोखैर-इनार, कलम-गाछी तीनूकेँ देने। जाबे पटवारी कचहरीमे रहैत ताबे गुमश्ता खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ऐश-मौजक वस्तु जुटेबैमे परेशान रहैत।

बिशेसर बोनिहार रहितो केकरो बान्हल नहि। सभ काज करैक लूरि बिशेसरकेँ। जे गिरहस्त पहिने आबि बिशेसरकेँ कहैत, ओकरेमे बिशेसर काज करए जाइत।

भोर होइते बिशेसर मोहिनीकेँ चरिआ भानस करैले कहि अपने घरक अन्न निकालि मोटरी बान्हए लगल। अनक मोटरी बान्हि अपन दुनू बेकतीक नुआ-बिस्तर चौपेत-चौपेत रखलक। भानस होइते दुनू परानी खा रोहितपुर विदा भेल। आगू-आगू बिशेसर माथपर मोटरी

नेने आ पाछू-पाछू मोहिनी विदा भेल। रोहितपुरक दच्छिनबरिया बाधमे पहुँचते दुनू परानी रोहितपुरक दुर्दशा देखए लगल। दुर्दशा देख दुनू परानीकेँ जेना पएरमे जत्ता बन्हा गेलै तहिना डेग उठबे ने करइ। ठकुआ कऽ दुनू गोरे आमक गाछ तर बैस रहल। घरपर जाइक साहसे ने होइ।

मोहिनी मने-मन सोचए लगली जे एहेन अन्याय कहियो ने देखलिऐ। जखन कि बिशेसरक मनमे उठलै- दुओ मासमे सबहक घर बनत की नहि! जेकरा सभ समचा छै ओ तँ लगले घर बना लेत मुदा जेकरा किछु ने छै ओ तँ पछुआ जाएत! बिनु घरे रहत केतए..?

दुनू परानीकेँ रंग-बिरंगक बात मनमे उठए लगलै। तमाकुल चुना कऽ बिशेसर खेलक। तमाकुल खाइते मनमे एलै जे तत्खनात जे उजड़ल-पुजड़ल घरक समान हएत ओकरे काटि-छाँटि कऽ खोपड़ी जकाँ बना लेत। दू मास जे बोइन-बुता करत ओइसँ बाँसो आ खढ़ो कीनि पछाइत घर बान्हि लेत। ततमत करैत दुनू परानी उठि कऽ विदा भेल।

नैहर बुझि मोहिनी मोटरी माथपर लेलक। आगू-आगू मोहिनी आ पाछू-पाछू बिशेसर चलल। मोहिनीक भाइयो बोनिहार। एक्केटा घर मोहनाकेँ। मोहनाक घरक चार अन्हड़मे उड़ि कऽ एकटा केरा गाछपर लटकल, एकटा चार गाछपर अँटकल आ दोसर बाड़ीमे खसल। केरो गाछक मुड़ी सभ टुटि-टुटि निच्चाँ-मुहेँ लटकल।

आँगन पहुँचते मोहिनीक माथपरसँ भौजाइ मोटरी उताइर ओसारपर रखलक।

मोहना ठाठक बन्हन काटि-काटि एक दिस कोरो रखैत आ दोसर दिस बत्ती। झोलाएल घर रहने दुनू परानी मोहना झोलसँ कारी खटखट भेल। बचनी मोटरी रखि अँगनेमे बिछान बिछा, बिशेसरकेँ

बैसैले कहि लोटा लऽ कलपर सँ पानि आनए गेल। बिशेसर धोती-अँगा बदैल पानि पीब हाँसू लऽ ठाठक कोरो बत्तीक बन्हन काटि-काटि छँटियाबए लगल।

मोटरी खोलि बचनी चाउर निकालि भानसक सुर-सार करए लगली। छोट खुट्टीक बचनी, मेघदूती रंग, दोहरा देह, नमहर केश, करजनी सन गोल-गोल दुनू आँखि। जेहने बजैमे चरफर तेहने काजोमे पिच्छर। मुस्कियाइत बचनी मोहिनीकेँ कहलक-

“भगवानो खूब होरी खेलेलैथ! एक्के क्षणमे सौंसे गामक घर उजाड़ि कऽ फेक देलखिन।”

जहिना दुनू सारे-बहनोइ– बिशेसर आ मोहना, घरक ठाठ तैयार करैमे भीड़ल तहिना बचनी आ मोहिनी भानसमे। हाँसूसँ बन्हन कटैत बिशेसरक नजैर कोरोक दोगमे बगराक खोंतापर पड़लै। दुनू बगरा मुइल आ थौआ-थाकर अण्डा। बगराकेँ खाइले जे साँखर साँप अबै छल, ओहो खोंताक बगलेमे मुइल पड़ल। बन्हन काटब छोड़ि बिशेसर हँसुआक नोकसँ बगड़ो आ साँपोकेँ उनटा-पुनटा देखए लगल। कनी काल देख दुनूकेँ हँसुआसँ हटा काज करए लगल।

एगारहक अमल भऽ गेल। रौदो खड़ा गेल। दुनू ठाठक कोरो-बत्ती सेहो तैयार भऽ गेल। सड़ल कोरो आ सड़ल बत्तीकेँ छाँटि जारैन-ले रखि लेलक। रौदमे काज करब कठिन बुझि बिशेसर लतामक गाछक छाहैरमे ठाठ बैसबए लगल। मने-मन हिसाब जोड़ि बिशेसर दू हाथ छोट ठाठ बैसौलक। मोहनाकेँ अपना बाँस नहि, तँए पुरने कोरो-बत्तीसँ काज चलबए चाहलक। ठाठ बैसा दुनू गोरे हाथ-पएर धोइ खाइले गेल। खा कऽ कनी काल लोट-पोट केलक। पछाइत दुनू गोरे ठाठ बान्हए लगल। सोझका ठाठ तँए चारि बजैत-बजैत दुनू तैयार भऽ गेल। ठाठ बन्हिते दुनू गोरे नओटा खुट्टा गाड़ए लगल। नओ खुट्टा

गाड़ि ठाठ चढ़ेलक।

मोहनी आ बचनी कुड़कुट, बत्तीक टुकड़ी आ सड़लाहा कोरो सभ समेट कऽ जारैन-ले रखि लेलक आ नीकहा खढ़ सभकेँ समेट अँटियबैले बेरा कऽ रखलक। दुनू गोरे खर्ड़ासँ सौंसे खररलक।

काज लगिचाएल देख मोहना बिशेसरकेँ कहलक-

“पाहुन आब छोड़ि दियौ। काल्हि कऽ लेब। कोनो की भादो मास छी। काज चलै जोकर तँ भाइए गेल।”

हँसैत बिशेसर बाजल-

“जेहने कोंढ़ि अहाँ छी, तेहने भुटिया घरवाली छैथ। टहटहौआ इजोरिया अछि। दुनू ननैद-भौजाइ नमहर-नमहर आँटी बान्हत। अहाँ चारपर फेकब हम ऊपरेमे सेरिया-सेरिया छाड़ैत जाएब। खाइ-पीबै राति धरि मठौतो मरा जाएत।”

मोहना तरे-तर खुशी होइत जे काल्हि घर गिरल आइ बनि गेल! मुदा रौतुका जगरनासँ मोहनाक देह भँसियाइत। भरि राति दुनू परानी मोहना आ बचनी जगले रहि गेल छल। एकटा ठाठ जखन छड़ा गेलै तखन बिशेसर मोहिनीकेँ कहलक-

“आब अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ गे। भानसो करए पड़त। ताबे हम दुनू गोरे काज करै छी।”

मोहिनी आ बचनी नहाइले चलि गेल। नहा कऽ आबि भानस करए लगल। घरो छड़ा गेल। चारपर सँ उतैर बिशेसर मोहनाकेँ कहलक-

“आइसँ सीख लीअ जे जेते नमहर विपैत आबए तइसँ बेसी अपन हिम्मत करी। जेते हिम्मत करब तेते असानीसँ काज हएत। अपन काज तँ लगिचाइए गेल, खाली टाट छुटल अछि। चारि बजे

भोरे जाबे कौआ-डकतै-डकतै टाटो बैसा लेब। किरिण फुटैत-फुटैत ओहो बान्हि लेब। तइले भरि दिन किए बरदाएब।”

कहि दुनू गोरे नहाइले गेल। दुनू गोरे नहा कऽ आबि अँगनेमे बिछानपर बैसल। राति बेसी भेनौं बिशेसर थोड़े काल भजन केलक। पछाइत मोहनाकेँ कहलक-

“कनी रवियाकेँ शोर पाड़ियौ?”

रविया मोहनाक पितियौत भाए। भरि दिन रविया दुनू परानी ठाठक बन्हन कटलक मुदा तैयो रहिए गेलइ। अबिते रविया पहिने बिशेसरकेँ आ पछाइत मोहिनीकेँ गोड़ लागि बाजल-

“पाहुन, किए शोर पाड़लौं?”

मुस्की दैत बिशेसर कहलक-

“रवि, हम सिरिफ मोहनेक बहनोइ नइ, अहूँक छी आ समाजोक छिऐ। तँए जाबे गामक सबहक घर नै बनि जाएत ताबे रहि सभकेँ मदैत करबै। भरि दिन काज करबै दुनू साँझ खेबइ। एक्को पाइ केकरोसँ बोइन नइ लेबइ।”

बिशेसरक बात सुनि रवियाक मन खुशीसँ गदगद भऽ गेलइ। बाजल-

“मोहना-भैयाक घर भऽ जेतै तखन ने हमर घर बान्हब?”

बिशेसर कहलक-

“मोहनक घर बनि गेल। सिरिफ टाटेटा लगबैले अछि जे घड़ी-पहर बान्हि लेब। काल्हि दुनू गोरे अहींक घर बान्हब।”

नमहर साँस छोड़ैत रविया बाजल-

“पाहुन, ठीके कहबी छै- ‘एक गरूकेँ बहत्तैर आशा।’ हमरा होइ छेलए जे घरमे बोइन नै अछि। अपनो बोइन नै करब तँ खाएब की?”

आशा दैत बिशेसर बाजल-

“रवि, हम बोइन करए नै एलौं। जँ बोइन करैक रहैत तँ बड़ीटा दुनियाँ छइ। केतौ करितौं, तइले सासुरे किए अबितौं। दस सेर दस टाका तँ अछि नहि जे तइसँ केकरो मदैत करबै मुदा देह तँ अछि। ऐ देहसँ जेते जेकर मदैत हेतै, करबै।”

रविया-

“पाहुन घरक सभ चीज बाहरेमे छिड़ियाएल अछि। रौतुका समए छिऐ। अखन जाइ छी।”

रविया चलि गेल।

भुरूकबा उगल। मुर्गी वाँग दिअ लगल। फरीच जकाँ होइते छल कि बिशेसर मोहनाकेँ उठौलक। दुनू गोरे बत्ती-कड़ची जोड़िया पछबरिया टाट बैसौलक। जाबे सुरूज उगल ताबे टाट बान्हि पच्छिमसँ घरमे सटा देलक। टाटकेँ सोझ-साझ कऽ तीनू खुट्टामे चारि-चारिटा बन्हन दऽ देलक।

रविया ऐठाम बिशेसर विदा भेल। मोहना बीड़ी पीबै दुआरे पछुआ गेल। बिशेसरकेँ पहुँचते, रवियाक स्त्री सौंसे मुँह झोल लगा देलकै। बिशेसरकेँ कोनो गम नहि। धैनसन। मुनेसरी, जेहने बजैमे हलबलिया तेहने मुहौं चमकबैमे। कनडेरिए आँखिए मुस्की दैत मुनेसरी बिशेसरकेँ कहलक-

“पाहुन, अहाँसँ हम बाजी लगाएब। जँ अहाँ हमरा काजमे हरा देब तँ हम अहीं सेने चलि जाएब, नइ तँ अहाँ..?”

मुँहक कारीख तौनीसँ पोछि बिशेसर जवाब देलक-

“अहाँमे हम केना सकब। अहाँ दू दाँतक बछौर छी, हम बुढ़ भेलौं। बाजी लगा हम जान गमाएब।”

चारू गोरे मिलि भरिए दिनमे घर ठाढ़ कऽ केलक। टाटो लगा लेलक। बिशेसर नहाइले गेल आ रविया दुनू परानी सौंसे खरड़लक। पहिने खर्ड़ासँ खड़ैर, पाछू बाढ़ैनसँ बहारलक। आँगन-घर तँ कारीए रहलै मुदा खढ़-पात साफ भऽ गेलइ। नहा कऽ आबि बिशेसर खौजरी निकालि भजन करए लगल।

परसू घरि रोहितपुर भकोभन लगै छल मुदा गोटि-पँगरा घर ठाढ़ भेने किछु-किछु चुहचुही आबि गेल।

कचहरीक गुमश्ता आ बराहिल रोहितपुर आबि सगरे गाम घुमि-फिर कऽ देखलक। सौंसे गामक गिरल घर लिखि गुमश्ता राजक मदैत-ले पटवारी ऐठाम जा मुहोसँ कहलक आ गिरल घरक सूचियो देलक। आफद-असमानीमे राज मदैत करैत। पटवारी गुमश्ताक सभ बात सुनि कागत तैयार कऽ मनेजर लग जा सभ बात कहलक। मनेजर, हजारटा बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक आदेश दऽ देलक। आदेशक चिट्ठी पटवारीकेँ दैत फुसफुसा कऽ कानमे कहलक-

“अदहा बेच हमरा दऽ देब आ अदहा गाममे बाँटि देबइ।”

मनेजरक हिसाब सुनि पटवारी अपन हिसाब मने-मन जोड़ि पनरह दिनक समए लऽ लेलक। दोसर दिन कचहरी आबि गुमश्ताकेँ आदेशक चिट्ठी दैत कहलक-

“अढ़ाइ-अढ़ाइ साए सभ चीज बाँटि देबै, बाँकी साढ़े सत-सत-साएकेँ बेच कऽ दस दिनक भीतर पठा देब।”

जाबे पटवारी गुमश्तासँ गप-सप्प केलक ताबे बराहिल गंज बजारसँ ताड़ियो मंगौलक आ पोखैरसँ माछो ऊपर करबौलक। अण्डाएल अनेरूआ रौह माछ, खूब नमहर-नमहर कुटिया बना तड़बौलक। तीनू गोरे माछक चखना आ ताड़ी भरि-भरि मन खेलक-

पीलक। खा-पी कऽ पटवारी चलि गेल।

गुमश्ता बराहिलकेँ पटवारीक हुकुम सुनौलक। चिट्ठियो देखए देलकै। बराहिलकेँ ताड़ीक निशाँ चढ़ि गेल रहइ। ललैक कऽ बाजल-

“एक-एक हजार समानमे साढ़े सत-सत साए बेचिए कऽ जँ आपसे कऽ देबै तँ गामक लोककेँ की देबै आ अपना दुनू गोरेक हिस्सा की हएत? जेकर घर उजड़लै दुख ओकरा होइ छइ। हम गौआँ छी। गामक मरद-मौगी तँ हमरे मुँह नोंचत। एहेन काज हम किनौं नै करब। जाइ छी।”

गुमश्ता बराहिलसँ डरितो। बराहिलक विचारो ओजनदार। गम्भीर होइत गुमश्ता बराहिलकेँ कहलक-

“अखन हमरो निशाँ लगि गेल अछि, अखन जाउ। निचेनमे काल्हि भिनसर गप करब।”

बराहिल कचहरीसँ विदा भऽ गेल। कचहरीसँ निकैलते, गुमश्ता-पटवारीक सातो पुरुखाकेँ गरियबैत घरपर आएल। घरपर आबि चौकीपर बैस आरो जोर-जोरसँ दुनू गोरेकेँ गरियाबए लगल-

“सभटा चोर अछि! जेकर घर खसलै ओ वेचारा त्राहि-कृष्ण कऽ रहल अछि आ हिनका सभकेँ मोजेक-मोजे जमीन! तीन-तीनटा बहु। दहाइक-दहाइ बेटा-बेटी, तैयो सबुर नहि! हम समाजमे रहै छी। समाजक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझै छी। कोठरीक पंखा तरमे बैसिनहार गरीबक दुख की बुझत?”

बराहिलक गरियबैत देख-सुनि गौआँ-घरूआ जमा भऽ गेल। जेते लोककेँ बराहिल देखैत ओते तामस चढ़ल जाइत। भरि मन खूब गरियौलक। निशाँ रसे-रसे उतरए लगलै।

सबेरे आठ बजे बराहिल कचहरी पहुँचल। गुमश्ता, भिनसुरका खोराक ताड़ी पीब नेने छल। बराहिलकेँ देखते गुमश्ता आग्रह करैत

कहए लगल -

“आबह-आबह बराहिल! साँझखन जहिना तोहर मन खराब भऽ गेल रहह तहिना पटवारीक हुकुम सुनि हमरो भऽ गेल रहए। ऐठाम तँ हमहीं-तोहीं रहै छी। ऐठामक नीक-अधला तँ हमरे-तोरे सोचए पड़तह। मुदा एक दिस समाजक बीच रहै छी दोसर दिस राजक नोकरी सेहो करै छी। तँए दुनूकेँ मिला चलए पड़तह। जइसँ साँपो मरै आ लाठियो ने टुटइ।”

कहि गुमश्ता घरसँ ताड़ीक डाबा निकाललक। चारि गिलास अपनो आ चारि गिलास बराहिलोकेँ पिऔलक। ताड़ी पीबते बराहिलक मन शान्त भेल। बराहिलक सभ तामस ताड़ी तरमे दबा गेल। मुस्कियाइत गुमश्ता बराहिलकेँ कहलक-

“हजार बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक जे आदेश भेल अछि, ओ तँ हमहीं तोहीं बँटबै। कियो तँ देखैले नै औत। जे मन फूरत से करब। तोहर की विचार?”

गुमश्ताक विचार बराहिलकेँ जँचल। मुड़ी डोलबैत बराहिल बाजल-

“हौउ, गुमश्ता साहैब अहाँ अनतए रहै छी। हम तँ गामक छी। हमरा तँ दुनू देखए पड़त।”

“हँ, बिल्कुल ठीक कहलह।”

“केना मिला कऽ चलब?”

गुमश्ता-

“सभ वस्तुकेँ डेढ़िया कऽ दहक। साढ़े सात-सात साइक हिस्सा आगू पठा देबइ। अदहामे दू-दू साए सभ वस्तु बाँटि देबइ। बाँकी बेच कऽ दुनू गोरे अदहा-अदहा बाँटि लेब।”

बराहिल-

“हँ, ई एकतरहक विचार अछि। ई करब कन्ना?”

गुमश्ता-

“पाँचो जातिक मैनजनकेँ बजा लाबह। एक-एक साए सभ चीज पाँचू मैनजनकेँ दऽ देब। एक-एक साए तूँ अपन मेलुआकेँ दऽ दिहक। मैनजनेकेँ भार दऽ देबै जे कचहरीक हुकुम अछि आदहा-अदहा दाम सभ वस्तुक लगत।”

बराहिल मानि गेल। समान लेबालक कमी नहि। खाँहिस सभकेँ। केकरो बाँसक जरूरी तँ केकरो खढ़क। बाँसक बीट-लग जा बराहिल बाँस कटबए लगल। अदहा दाम लैत जाए आ बाँस कटबैत जाए। किछु गोरे उधारियो लैलक। खढ़, खरही, साबे सेहो अनधुन बराहिल बेचए लगल। जखन सभकेँ मंगनी, मोल, उधारी बाँस, खढ़, खरही आ साबे भेटलै तखन रोहितपुरबलाकेँ राजक एहसास भेलइ। आफत-असमानीमे राज मदैतो करैए!

रोहितपुरक सभ बोनिहार घरहटिया नहि। तँए काज रहनौं बोनिहार बेकार बैसल। बोनिहारकेँ बैसारी देख बिशेसर सभकेँ बजौलक। एका-एकी बिशेसर सभकेँ पुछए लगल-

“अहाँकेँ बाँस काटल हएत?”

‘हँ’

‘बत्ती चीरल हएत?”

‘हँ’

‘बत्ती छिलल हएत?”

‘हँ’

‘बन्हन देल हएत?”

‘हँ’

‘खढ़ अँटियौल हएत?”

‘हँ’

‘खरौआ जौर बाँटल हएत?”

‘हँ’

‘टाट बान्हल हएत?”

‘हँ’

“जखन सभ काज करैक लूरि ऐछे तखन बैसल किए छी?”

जेकर-जेकर घरहट बाँकी छल, सबहक ओइठाम बिशेसर जा-जा कहलक-

“अनेरे अहाँ सभ घरहट पछूएने छी। जहिना बड़का भुमकम भेने छोट-छोट झटका अबैत रहैए तहिना जँ अन्हड़ोक होइ तखन तँ पहपैटमे पड़ि जाएब। तँए जेते जल्दी भऽ सकए ओते जल्दी घरहट कऽ लिअ। समानो अछिए। बनौनिहारो अछिए। तखन अनेरे पछुएलासँ की लाभ।”

मुदा गामक लोक तँ अखन धरि यएह बुझैत जे पाँचे-छअ गोरे घरहटिया अछि जे काज करिते अछि। बेरे-बेरी ने हएत।

बिशेसर सभ बोहिहारकेँ बजा कहलक-

“अपन-अपन सभ मेड़िया बना-बना सभसँ काज कराउ। काजो अधिक हएत आ बोनिहार सभकेँ बैसारियो नइ हएत?” लाटमे काज केलासँ सभ सीखबो करत आ रोजियो चलतै।”

बिशेसर बढ़ियाँ घरहटिया जे सभ बुझैत। अखन धरि गाममे बिनु कोनो कारणे, एक-दोसरक बीच कटुता, दुश्मनी जे छल ओ बिहाड़िक विपैतमे उड़ए लगल। भाए-भैयारी जकाँ सम्बन्ध बढ़ए

लगल। नव विचारक जन्म समाजमे भेल। हँसी-मजाक, खिस्सा-पिहानिक बीच सभ काज करए लगल। साँझ पड़िते सभ काज छोड़ि, अपनामे सभ विचार करैत जे केकर-केकर घरहट आइ भेल आ केकर-केकर बाँकी रहल।

अखन धरि जे जातीय कटुता, धरमक उन्माद सबहक मनमे छेलै ओ धीरे-धीरे कमए लगल। छुआ-छूत, ऐगली-पैछलीक विचार ढील हुअ लगल। सभ मनुख छी, सबहक देहमे एक्के रंग खून अछि तँए सभ एकरंग छी।

बिशेसरक चर्च सौंसे गाममे चलए लगल। जैठाम बिशेसर काज करै छल तहीठाम रहि खेबो करए आ साँझू पहर खौजरी बजा भजनो करए।

अमृतलाल बड़ धनीक तँ नइ मुदा मध्यम रहलासँ समाजमे प्रतिष्ठित बुझल जाइत। हुनको दूटा घर गिरल आ दूटाक कोनचर उजड़ल रहैन। अमृतलाल बिशेसरकेँ कहलखिन-

“पाहुन, बजैत तँ लाज होइए मुदा विपैतमे पड़ल छी। काल्हिसँ हमरो घरहट कऽ दिअ?

हँसैत बिशेसर उत्तर देलकैन-

“जिनगीमे अहिना आपैत-विपैत अबैत-जाइत रहै छै आ अबैत-जाइत रहत। जहियासँ मनुख अछि तहिएसँ हजारो-लाखो बेर अन्हड़-तूफान, पानि-पाथर आ भुमकम होइत आएल तँए कि मनुख मेटा गेल? जहिना हमर-अहाँक पुरखा सभ विपैतकेँ झेललैन तहिना हमहूँ सभ झेलब। तइले निराश किए हएब। अखन हमहीं-अहाँ छी तँए अखन हमरे-अहाँकेँ सामना करए पड़त। आगू-ले ऐगला पीढ़ी करत।”

बिशेसरक विचार अमृतलालक हृदैमे चुभि गेलैन। कनी काल गुम्म रहि बजला-

“पाहुन, अहाँ गरीब रहितो देहसँ मदैत करए एलौं। ऐसँ पैघ की भऽ सकैए। अखन अहूँ भजन करैले सुढ़ियाएल छी आ हमरो बहुत काज सभ अछि। जाइ छी।”

अमृतलाल चलि गेला। बिशेसर भजन करए लगल। आँगन पहुँच अमृतलाल पत्नीकेँ बिशेसरक सम्बन्धमे कहलखिन। नैहरमे सावित्रीक घर एकटा पण्डितक घर लग छैन। बच्चेसँ सावित्री पण्डितजीक अचार-विचारसँ प्रभावित। सावित्री बजली-

“यएह छी मनुखक महानता। जे विपैतमे समाँग जकाँ मदैत करए। खेनाइ तँ घरोक लोक खाइए। मुदा अपनो खनदान दिस तँ तकबै, जँ मंगनी कोनो समान भेटत तँ ढेरिया लेब। गामोक बोनिहार तँ बोइन-जलखै लैते अछि मुदा बिशेसर-पाहुन तँ खेबेटा करता। गामक जमाए छैथ, ईहो तँ बुझए पड़त। जहिना ओ हमर घर बनौता तहिना तँ हमरो सोचए पड़त।”

अमृतलाल-

“हँ, ई तँ ठीके कहलौं। अहाँक की विचार?”

सावित्री-

“जखन घरहट भऽ जाएत, तखन हुनका धोती पहिरा विदा करबैन। खेनाइ तँ अनको-आन दइए।”

भोरे बिशेसर मेड़ियाक संग अमृतलाल ऐठाम आएल। अमृतलाल घरक समचा जोड़ियबैत रहैथ। अबिते बिशेसर धोती-अँगा बदैल पुरना धोतीक टुकड़ा पहिर अमृतलालकेँ कहलखिन-

“पहिलुके जकाँ घर बनाएब आकि ओइसँ छोट-पैघ?”

अमृतलाल-

“घर तँ ओतबेटा बनाएब। मुदा कोरो-बत्ती नव-पुरान मिला कऽ

देबइ।”

बिशेसरकेँ देख सावित्री मने-मन सोचए लगली- बिशेसर गरीबक सकलमे साक्षात् महादेव छैथ। तँए अनका ऐठाम जेहेन खेनाइ-पिनाइ भेल होइन मुदा हमरो तँ प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। जहिना अपन जमाए तहिना तँ समाजोक।

मासे दिनमे, उजड़ल गाम पुनः नव बनि गेल। दुनू परानी बिशेसर अपना गाम विदा भेल। रोहितपुर सिरिफ घरेटा सँ नै विचारोसँ नव बनि गेल।

◌

शब्द संख्या : 3349

तीन

रोहितपुरसँ सटले लालपुर। घनगर बस्ती, सभ जातिक लोक बसल। परोपट्टामे सभसँ पुरान गाम। घनगर तेहेन जे बहुतो गोरे बेटा-बेटीक बिआह गामेमे केने। बस्तियो तेहेन गदाल जे आइ तक कियो नै सौंसे गामकेँ भोज खुआ सकल। ओना, सभ जातिक बीच जबार, सौजनी आ सभैती भोज आइ धरि अपन-अपन आन-आन गामसँ चलैत। शुरूमे गाम उत्तरे दछिने बसल। मुदा परिवारो बढ़लासँ आ आनो-आनो गामक लोककेँ आबि बसलासँ गामक नक्शे बदैल गेल। जहिना उत्तरे-दछिने पहिने छल गाम तहिना आब पुबे-पच्छिमे भऽ गेल। जे कियो आन-आन गाम जा कऽ पढ़लक मात्र ओतबे पढ़ल-लिखल लोक गाममे। ने रोहितपुरमे स्कूल आ ने लगे-पासक कोनो गाममे। गाममे एकटा हकीम जे मात्रिक-अलीनगरमे जा पढ़ने। ओइ हकीमक माम बढ़ियाँ हकीम जे अपने लग रखि भागिनकेँ पढ़ौने। पढ़ल-लिखलमे एकटा दीनानाथो जे वैदागिरी करैत। परोपट्टामे एकेगो वैद दीनानाथ।

बच्चेमे दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल रहए। पड़ाइक कारण भेलै जे जखन आठे-नअ बर्खक रहए तहिए माए मरि गेलइ। पिता दोसर बिआह कऽ लेलखिन। पिता तँ दीनानाथकेँ बेटे जकाँ मानथिन मुदा सतमाए फुटलो आँखिए नै देखए चाहथिन। हदिघड़ी दीनानाथकेँ दू-

चारिटा बात-कथा कहिते रहथिन। माइक बातसँ तंग आबि दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल। लालपुरोक आ लगो-पासक गामक पच्चीस-तीस गोरे पटुआ काटए मोरंग-दिनाजपुर जाइत रहए। ओही मेड़ियाक संग दीनानाथ धऽ लेलक। भोरुके गाड़ी पकड़ैक विचार सबहक भेलै, किएक तँ तमुरियासँ निर्मली जाइक गाड़ी तीन बजे भोरमे रहइ। जँ ऐ गाड़ीसँ नै जाएब तँ पछाइत दस बजे दिनमे गाड़ी तमुरियासँ निर्मलीक अछि। जेकरा पकड़ने बारह-एक बजे निर्मलीए पहुँचब। जइसँ गेलापर कोसियो धार पार भेल हएत की नहि? ई शंका सबहक मनमे रहइ। मुदा तीन बजे भोरुका गाड़ी पकड़ने साढ़े पाँच-छअ बजे निर्मली पहुँच जाएत। जइसँ गेलापर लोक असानीसँ सबेर-सकाल कोसीपार भऽ आठ नअ बजे राति होइत-होइत बथनाहा पहुँच जाइए।

बथनाहासँ जोगबनी जाइक अन्तिम बस साढ़े-दस बजे रातिमे तँए ओकरा ठेकानि कऽ सबहक संग दिनानाथो विचारि लेलक जे भोरुका गाड़ी पकैड़ विदा हएब। ने माएकेँ किछु कहबैन आ ने पिताकेँ। चुप-चाप विदा भऽ जाएब। जँ माए-बाबूकेँ कहबैन तँ जाइए-कालमे अट्ठाबज्जर खसत। तँए ने दीनानाथ कपड़ा-लत्ता साफ केलक आ ने बटखरचा-ले केकरो कहलक। मने-मन दीनानाथ विचारि नेने जे माएबला चानीक पाइत आ सोनाक छक जे चोरा कऽ रखने छी, ओ लऽ लेब आ निर्मलीमे बेच बटखरचोक ओरियान कऽ लेब आ पेंटो-गंजी कीनि लेब। नाहक खेबाइ आ बसक भाड़ा सेहो भाइए जाएत।

रातिए-मे पटुआ कटनिहार सभ खा-पी कऽ गाड़ी पकड़ैले तमुरिया विदा भेल। किएक तँ एक-दू गोरे तँ छी नहि। पच्चीस-तीस गोरेक संगोर करैमे गाड़ीए छुटि सकैए। सबेर-सकाल टीशन पहुँचने ओतै मुसाफिर खानामे कनी काल सुतियो रहब आ भोरमे गाड़ियो असानीसँ पकड़ा जाएत। दीनानाथो पाइत आ छक लऽ संग लगि

गेल। तमुरिया स्टेशन पहुँच सभ अपनामे विचार केलक जे भाड़ा-भुड़ीक पाइ एकठाम जमा कऽ लिअ। किएक तँ सभ जँ अपन-अपन दिअ लगबै तँ हूलि-मालि हुअ लगत। ई सोचि तीन-तीन रूपैआ सभ कियो बौआजी लग जमा केलक। बौआजी सबहक मेट। साले-साल पटुआ काटैले, धान रौपैले आ धान काटैले मोरंग जाइत-अबैत।

दीनानाथ तमुरियामे टिकट नइ कटौलक किएक तँ पाइए ने रहइ। भोरमे गाड़ी अबिते सभ चढ़ि गेल। निर्मली पहुँचैत-पहुँचैत भिनसर भऽ गेलइ। गाड़ीसँ उतैर दीनानाथ बौआजीकेँ कहलक-

“कक्का, हमरा एकजोड़ चानीक ‘पाइत’ आ एकटा सोनाक ‘छक’ अछि। ओकरा बेच दिअ। जइसँ बटखरचो भऽ जाएत आ कपड़ो नइ अछि सेहो कीनि लेब।”

दीनानाथक बात सुनि बौआजी पुछलक-

“बौआ, तूँ जे हमरा सबहक संग जाइ छह से तोरा बुते पटुआ काटल हेतह। पटुआ काटैमे बड़ भीड़ होइ छइ। तहूमे मोटका-मोटका जोंक सेहो पकड़ै छइ।”

दीनानाथ तँ घरसँ तंग आबि भागल, तँए जीबठ बान्हि बाजल-

“हम केतौ नोकरीए धऽ लेब। नै बहुत दरमाहा देत तँ नै देत। कम-सँ-कम खाइयोले तँ देत।”

दीनानाथक बात सुनि बौआजी गुम्म भऽ गेल। सभकेँ मुसाफिर खानामे बैसाए दीनानाथकेँ संग केने बजार विदा भेल। दोकानो सभ बन्ने। सोना-चानीक दोकानदार नहा कऽ पूजा करैत। बौआजीकेँ देख रूपचन पुछलक-

“हमरा दोकानक काज अछि?”

“हँ, एक जोड़ पाइत आ एकटा छक बेचैक अछि।”

आमदनी देख रूपचन हाँइ-हाँइ पूजा कऽ दोकान लगौलक। भिनसुरका समए। तँए रूपचन सोचलक जे कम्मो नफ्फापर समान कीनि लेब। जँ गहिंकी घुमि कऽ चलि जाएत तँ भरि दिन खटपट होइते रहत।

दुनू वस्तुकेँ जोखि सेठजी आठ रूपैआ दाम सुनेलकै। आठ रूपैआ सुनि दीनानाथ मने-मन खुशी होइत जे बहुत भेल। आठो रूपैआ लऽ दीनानाथ एक रूपैआकेँ चूड़ा-मुरही, दू आनाक गुड़, एक रूपैआमे एकटा तौनी, एक रूपैआमे एकटा गंजी आ आठ आनामे एकटा झोरा कीनलक। झोरामे सभ समान रखि गंजी पहिर लेलक। टीशनपर आबि सबहक संग दीनानाथो विदा भेल।

निर्मलीसँ सोझे पूब-मुहेँ सभ विदा भेल। पाँच कोस पूब कोसी धार। तीनटा नमहर-नमहर धार सटले-सटल। जइ तीनूमे नाहसँ पार हुअ पड़ैत। पहिल धारक कात पहुँचैत-पहुँचैत दस बजि गेलइ। धारक कातमे ठीकेदार खोपड़ी बनौने। जैठाम तीनू धारक खेबा लइत।

सभ कियो ओइ खोपड़ीमे बैस जलखै करए लगल। जलखै खा सभ कोसीए-क पानि पीलक। धारक पानियोँ हरिअर कचोर। पानि देख सभकेँ नहाइक मन होइ मुदा रस्ता काटै दुआरे कियो ने नहाएल।

घाटक ठीकेदार छपरिया। जे खूब मनमानी घाटपर करैत। सुखलो धारक खेबा खिहारि-खिहारि ओसलैत। जँ कियो खेबा नै दिअ चाहै तँ ओकरा गरिएबो करैत आ मारबो करैत। मुदा बिनु खेबा नेने किनौं नइ छोड़ैत।

घुमती नाह अबिते सभ चढ़ल। नाह खुगलै। पानिक वेग देख दीनानाथकेँ डर हुअ लगलै। बाँकी गोरे साले-साल पार होइत तँए सभकेँ बुझल। दीनानाथक मनमे होइ जे जँ कहीं बीच धारमे नाह डुमत तँ एक्को गोरे ने बँचब। तँए दीनानाथ मने-मन ‘कोसी महरानी की

जाय’ जपए लगल..। तीनू धार पार होइत-होइत बेर झुकि गेल। नाहसँ उतैरते दीनानाथ कोसी धारकेँ गोड़ लगि सबहक संग विदा भेल।

बथनाहा पहुँचैत-पहुँचैत गोसाँइ डुमि गेलइ। भूखो सभकेँ लगि गेलइ। बस अबैमे देरी बुझि सभ अपन-अपन मोटरी खोलि चूड़ा निकालि खाए लगल। जाबे बस एलै ताबे सभ चूड़ा फाँकि-फाँकि पानि पीलक। बस अबिते बौआजी कन्टेक्टरकेँ सभ आदमीक गिनती करा चढ़ौलक। दीनानाथक अदहा मासुल आ सबहक पूरा मासुल जोड़ि बौआजी कन्टेक्टरकेँ दऽ देलक। बस चलल। जोगबनी जाइत-जाइत रातिक आठ बजि गेल।

जोगबनी आ बिराटनगरक बीच नेपाल भारतक सीमा। सीमापर एकटा पाथरक पीलर गाड़ल। रतिगर बुझि सभ सोचलक जे एतै राति बिताएब नीक हएत। बिजलीक इजोतो रहइ। बस स्टेण्डमे सभकेँ बैसा बौआजी रहैक जगह टेबए लगल। बिजलीक इजोतसँ दिने जकाँ बुझि पड़ैत।

बस स्टेण्डसँ बीघा भरि दच्छिन एकटा वैदक घर। घरक बगलेमे एकटा अशोकक गाछ। अशोकक गाछक निच्चाँमे ईटा-सिमटीक चबुतरा बनल। चबुतरा देख बौआजीक मनमे एलै जे बड़ सुन्दर जगह अछि, एतै राति बिता लेब। चबुतराक बगलेमे एकटा चापा-कलो। बौआजी चबुतरा देख घुमि कऽ आबि सभकेँ कहलक। सभ अपन-अपन मोटरी लऽ विदा भेल। चबुतरापर सभ अपन-अपन मोटरी रखि कलपर हाथ-पएर धुअ लगल। हाथ-पएर धोइ सभ अपन-अपन मोटरी खोलि रोटी आ अल्लुक भुजिया निकालि-निकालि खाइक सुर-सार करए लगल। भरि दिन सभ फँके-फुँकी खा रस्ता काटने तँए सभकेँ जोरगर भूख लगल। दीनानाथकेँ रोटी नहि, तँए

चूड़ा-गुड़ निकालि खाइक विचार केलक। चूड़ा-गुड़ देख बौआजी दीनानाथकेँ कहलक-

“बौआ, फाँक्का-फुँक्कीसँ पेट थोड़े भरै छइ। चूड़ा रखि लएह। हमरा तीन दिन खाइ जोकर रोटी अछि। तोहूँ रोटीए खा।”

दीनानाथ चूड़ा रखि लेलक। बौआजी तीनटा रोटी आ भुजिया देलकै दीनानाथ खाए लगल। सभ कियो रोटी आ भुजिया खा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीबते सभकेँ ओंघी लगलै। पतियानी लगा सभ सुति रहल। भरि दिनक सभ थाकल। एक्के निने राति बीत गेलइ।

भोरे वैद टहलैले निकलला तँ दीनानाथकेँ कलपर मुँह-हाथ धोइत देखलैन। एकटकसँ वैद दीनानाथकेँ देख लगमे जा पुछलखिन-

“बौआ, केतए रहै छह?”

दीनानाथ बाजल-

“मधमन्नी जिला रहै छी।”

“केतए जाइ छह?”

“नोकरी करए जाइ छी।”

नोकरीक नाओं सुनि, कनी काल गुम्म भऽ वैद पुछलखिन-

“एतै रहबह?”

दीनानाथ-

“हँ, रहब।”

वैद-

“मेड़ियाक मेट के छिअ?”

दीनानाथ बौआजीकेँ ओंगरीसँ देखा देलक। बौआजी लग जा वैद कहलखिन-

“ऐ बच्चाकेँ ऐठाम रहए दियौ। कोनो दिक्कत नइ हेतइ।”

बौआजी दीनानाथकेँ पुछलक-

“बौआ, एतै रहबह?”

दीनानाकेँ मनमे रहै जे केतौ ठर लगत तँ रहि जाएब। बाजल-

“हँ।”

दीनानाथ रहि गेल आ मेड़ियाक संग बौआजी पटुआ काटए विदा भेल।

सुशील अयुर्वेदिक वैद। दुइए परानी। दुनू परानी वैदागिरी करैथ। दीनानाथकेँ पाबि दुनू परानी सुशील ह्रदैसँ खुशी भेला। बेटा जकाँ दीनानाथकेँ मानए लगलखिन। दीनानाथो अपने माए-बाप जकाँ सेवा करए लगल। हदिघड़ी सुशील अपने संग दीनानाथकेँ राखए लगलखिन। सुशील जड़ी-बुटीक दवाइयो बनबैत रहैथ आ इलाजो करैथ। अपने बाड़ीमे सैयो किस्मक लत्तीसँ लऽ कऽ गाछ धरि लगौने। मासमे एक दिन उत्तरबरिया पहाड़पर सँ पहाड़ी जड़ी-बुटी आनए जाथि। दीनानाथोकेँ संग नेने जाथिन। पहाड़ो बेसी दूर नहि। छबे सात कोसपर। भिनसरे दुनू गोरे जलखै खा बस पकैड़ लैथ आ बेर धरि घुमि कऽ चलि अबैथ। शुरूमे तँ दीनानाथकेँ जड़ी चिन्हबए पड़लैन मुदा किछुए दिनक पछाइत दीनानाथो जड़ी चिन्हए लगल। साँझू पहरकेँ जखन रोगी एनाइ पतरा जाइत तखन सुशील दीनानाथकेँ पढ़ेबो-लिखेबो करै छेलखिन। दीनानाथ एते तल्लीन भऽ रहए लगल जे घरक सुधि-बुधि सभ बिसैर गेल।

दस बरख दीनानाथ सुशील वैद लग रहल। दसे बर्खमे दीनानाथ वैद बनि गेल। रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ दवाइ देनाइ, दवाइ बनौनाइ सभ सीख लेलक। बच्चा दीनानाथ जुआन भऽ गेल। बिआह करै जोकर भऽ गेल। सुशीलक विचार रहैन जे दीनानाथकेँ अहीठाम बिआह करा

दिऐ, मुदा दीनानाथकेँ घरक सोह घींचए लगलै। बिसरल माए-बाप, सर-समाज मन पड़ए लगलै। एक दिन दीनानाथ सुशीलकेँ कहलकैन-

“बाबूजी, हम गाम जाएब। बहुत दिन माता-पिता आ समाजक लोककेँ देखना भऽ गेल।”

दीनानाथक विचार सुनि सुशील बजला-

“बौआ, दुनियाँ बड़ीटा छइ। सभ मनुखकेँ चाही जे केतौ रहि मनुखक सेवा करी। यएह सभसँ पैघ धरम छी।”

दीनानाथ सिरिफ दवाइए-दारू नै सीखलक बल्कि जिनगीक नीक-अधला सेहो सीखलक। बाजल-

“बाबूजी, मनुखक सेवा जरूर धरम होइत मुदा जैठामक लोक अधिक पछुआएल अछि ओकर सेवा तँ अगुआएल मनुखक सेवासँ पैघ होइत। ऐठाम देखै छी जे लोक बहुत अगुआएल अछि मुदा जैठाम हमर घर अछि, ओइठामक लोक बहुत पछुआएल अछि तँए ओकर सेवा करब हम पैघ बुझै छी।”

दीनानाथक विचार सुशीलक ह्रदैमे चुभि गेलैन। अपन सहमत दैत कहि देलखिन। दीनानाथ गाम चलि आएल।

गाम अबिते दीनानाकेँ देखैले गामक लोक उनैट गेल। अखन धरि सबहक मनमे यएह रहै जे दीनानाथ बौड़ गेल। मुदा बदलल दीनानाथ, गामक एक इंसान बनि, परिवारिक नहि समाजिक लोक बनि गाम आएल।

एक सुयोग्य वैद बुझि गौआँ-सभ अपन-अपन समाँग बुझए लगल। सभ मने-मन सोचए लगल जे जइ दुखक चलैत परेशान रहै छेलौं ओइ परेशानीकेँ मेटबैबला आब गामेमे दीनानाथ भऽ गेल।

लालपुरमे सात पुश्तसँ लेलहाक घर। शुरूएमे लेलहाक पूर्वज

जेतए घर बनौने छल ओतए बारह कट्ठा जमीन बनौलक। बीचमे घर आ चारूकात किछु बाड़ियो आ किछु धनखेतियो। लेलहाक परिवार एक-पुरखिया। खनदानमे बेटी तँ बेसियो होइत मुदा बेटा एक्केटा। लेलहोकेँ एक्केटा बेटा गुलबा। गुलबा लताम तोड़ए गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। पहिने तँ गुलबा बुझलक जे ऊँच-नीचमे पएर पड़ल तँए देह झुनझुनाएल मुदा झुनझुनी बढ़िते गेलइ। झुनझुनी बढ़ैत देख गुलबा धड़फड़ा कऽ गाछपर सँ उतैर अँगना आबि माएकेँ कहलक-

“माए, सौंसे पीठ्ठी झुनझुनाइए।”

झुनझुनी सुनि माए आँगनमे बिछान बिछा गुलबाकेँ सुतैले कहलक- आ घरसँ करूतेलक शीशी आनि मालिश करए लगल। मुदा तइसँ एक्को मिसिया झुनझुनी कमल नहि। झुनझुनी बढ़ैत देख गुलबा कानए लगल। कानब देख गुलबाक माए-तेतरी पतिकेँ बजबए विदा भेल।

दछिनबरिया बाधमे लेलहा गाए चरबैत। फरिक्केसँ तेतरी, लेलहाकेँ गाए चरबैत देख, जोरसँ शोर पाड़ए लगल। मुदा पछबा हवा दुआरे लेलहा सुनबे ने करैत। तेतरी सोरो पाड़ैत आ आगू-मुहेँ बढ़लो जाइत। जखन तेतरी कनी और लग पहुँचल तखन लेलहा सुनि पुछलक-

“किए एते हल्ला करै छी। कनी फरिछा कऽ कहूँ।”

“गुलबाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलइ! चलू गामपर!”

भूतक नाओं सुनिते लेलहाक देह थरथराए लगलै। गाए हँकने घर दिस विदा भेल। तेतरी चोट्टे घुमि आएल। तीनू माल– गाए, गौड़ आ एकटा बच्छाकेँ हँकने लेलहा घरो दिस अबैत आ मने-मन विचारबो करैत जे अही बेर दशमीमे दूटा नवकी कनियाँ डाइन

सीखलक। ओही दुनू मौगियामे केकरो किरदानी छी। भरिसक मन्तर पक्का बनबै दुआरे गुलबाक जान लेत।

घरपर आबि लेलहा तीनू मालकेँ बान्हि एक आहूल घास आगूमे दऽ गुलबाकेँ देखए अँगना आएल। टोलक लोकसँ अँगना भरल। लेलहाकेँ देख एकटा बुड़ही, जिनका सभ दादी कहैत, बजली-

“गुलबाकेँ भूत लगल छौ। झब-दे ढोरबाकेँ बजौने आ। माथाहाथ देतै, लगले छुटि जेतइ।”

दादीक बात सुनि तेतरी डपटैत घरबला-केँ कहलक-

“बकर-बकर मुँह तकने हएत। जल्दी ढोरबा भैयाकेँ बजौने आउ?”

डरे लेलहाक देह थर-थर कँपैत। भूतक ओते डर लेलहाक मनमे नै होइत जेते गुलबा मरने वंशक अन्त होइक। दौगल लेलहा ढोरबा ऐठाम विदा भेल। ढोरबा घरपर नहि। बाँस काटैले बँसबारि गेल छल।

ढोरबाक घरपर लेलहा पहुँच भाँज लगबए लगल। मुदा घरपर कोनो भाँजे ने लगलै। बड़ी काल एमहर-ओमहर ताकि ढोरबाक भनसियाकेँ पुछलक। ढोरबाक भनसिया बाँस काटैक नाओं कहलकै। चोट्टे लेलहा ढोरबाक बँसबारि दिस विदा भेल।

तीन सलिया पाकल बाँस ढोरबा कटने, जे घींचले ने होइ। असगरे ढोरबा अपसियाँत-अपसियाँत भेल। सगरे देह पसेनासँ भीजल। चारूकात आँखि उठा ढोरबा तकैत जे केकरो देखबै तँ शोर पाड़ि बाँस घींच लेब। लेलहाकेँ अबैत देख ढोरबा बैस कऽ तमाकुल चुनबए लगल। जाबे लेलहा लग आएल, ताबे ढोरबो तमाकुल चुना अपनो मुँहमे लेलक आ लेलहो हाथमे देलक। लेलहाक कँपैत देह देख ढोरबा पुछलक-

“एना कँपै किए छह?”

मिरमिरा कऽ लेलहा बाजल-

“भैया, की कहबह। छौड़ाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलै तँए तोरा बजबैले दौगल एलौं। जल्दी चलह।”

लेलहाक बात सुनि ढोरबा बाजल-

“अहीले एते अपसियाँत छह! जखन आबि गेलह तँ भूत कि भूतक बापो रहत तँ छोड़ि कऽ भागए पड़तै। बाँस झोंझमे ओझरा गेल अछि, पहिने ओकरा उताइर दैह तखन चलब।”

लेलहा-

“ताबे बाँस छोड़ि दहक। पहिने चलह। पछाइत बाँस उताइर कऽ लऽ जैहह।”

“झार-फूकक बात तूँ नै ने बुझबहक। गामपर जा कऽ पहिने हाथ-पएर धोअब, देहपर गंगाजल छीटब, तखन ने घरक गोसाइकेँ गोड़ लागि, देह बान्हि विदा हएब। एक-पर-एक दाय-माय आ एक-पर-एक करामाती डाइन-जोगिन छैथ। जँ कहीं उनटे चोट कऽ दैथ! तखन?”

दुनू गोरे बाँस घींचए लगल। केतबो जोर दुनू गोरे दइ मुदा बाँस निकलबे ने करैत। पात तोड़निहार बाँसक छिपकेँ कड़चीसँ गछाड़ि देने रहइ। ढोरबा हियासि कऽ बाँस देखए लगल तँ मुड़ी गछारल नजैर पड़लै। तखन ढोरबा बाँसपर चढ़ि गछरलाहा कड़चीकेँ काटलक। कड़ची काटि कऽ उतैर जहाँ दुनू गोरे एक्के जोर देलक कि बाँस हरहरा कऽ निकैल गेल। बाँस उतारिते ढोरबा हाँइ-हाँइ पाँगए लगल। लेलहा कड़ची बीछए लगल। कड़चीक बोझ बान्हि लेलहा लेलक आ ढोरबा बाँस कान्हपर लऽ विदा भेल।

घरपर अबिते ढोरबा इनारपर जा हाथ-पएर धोइ, आँगन जा गंगाजल छीटि, गोसाइकेँ गोड़ लगि, देह बान्हि निकलल। दुनू गोरे

विदा भेल।

लेलहाक आँगनमे लोकक करमान लगल। लेलहा ऐठाम पहुँचते ढोरबाकेँ तेतरी कहलक-

“भैया, झब-दे देखथुन। गुलबाकेँ जी घींचने जाइ छइ।”

ढोरबा टीक खोलि लेलहाकेँ कहलक-

“दूटा कुश लाबह।”

लेलहा बाजल-

“भाय की कहबह, ऐ बेर तेहेन बाढ़ि आएल जे कुशो दहा गेल। गाममे कियो ने कुश उखाड़लक। एक्को दिन बाप-दादाकेँ जलो ने देलिऐ। केतएसँ कुश आनब।”

लेलहाक बात सुनि ढोरबा कहलक-

“नै कुश भेटतह तँ चौड़काँटू बाढ़ैनमे सँ दूटा नेने आबह।”

तेतरी बाढ़ैनमे सँ दूटा चौड़काँटू निकालि ढोरबाक हाथमे देलक। ढोरबा झार-फूक करए लगल। झाड़ैत-फुकैत जेते मन्तर ढोरबाकेँ अबैत रहै ओ सभटा ठोर पटपटबैत पढ़ि गेल। मंत्र पढ़ि मुहसँ फूकि गुलबाकेँ पुछलक-

“बौआ, मन केहेन लगै छौ?”

कुहरैत गुलबा बाजल-

“ओहिना लगैए।”

ढोरबा तेतरीकेँ कहलक-

“सभकेँ अँगनासँ हटा दियौ। मनतर काजे ने करैए।”

सभकेँ अँगनासँ हटौला पछाइत ढोरबा जोर-जोरसँ मनतर पढ़ए लगल। मुदा तैयो गुलबाक कनकनी असान नइ भेल।

कनी काल गुम्म भऽ ढोरबा बाजल-

“कनी पंचमीक माटि लाउ।”

पंचमीक माटि लेलहाकेँ अपना नहि, दशमीएमे चिक्कैन माटि नै रहने ओहीसँ घर नीपि लेलक। पड़ोसिया-आँगनसँ तेतरी पंचमीक माटि आनि, सिलौटपर लोढ़हीसँ फोड़ि चँगेरीमे देलक।

बाढ़ैनक खढ़ रखि ढोरबा पंचमी माटिसँ झारए लगल। बीच-बीचमे गुलबाकेँ पुछबो करइ-

“मन केहेन लगै छौ, हल्लुक लगै छौ किने?”

जखन ढोरबा झारि कऽ निचेन भेल तखन फेर गुलबाकेँ पुछलक-

“आब बाज केहेन लगै छौ?”

गुलबा बाजल-

“ओहिना लगैए। एक्को मिसिया दुखेनाइ नै कमल।”

खिसिया कऽ ढोरबा विदा होइत लेलहाकेँ कहलक-

“नवटोल गहवरसँ भगता बजा लाबह। हमरा बुते नै छुटतै।”

ढोरबाकेँ विदा होइत देख तेतरी चौना पसारि कनबो करए आ बजबो करए-

“हे बरहम बाबा हम कोन अपराध केलियह जे एते सतबै छह।”

लेलहोक आँखिमे नोर ढबढ़बा गेल। दुनू हाथ माथपर लऽ मने-मन सोचए लगल- आब गुलबा नै बँचत..! कनी काल गुन-धुन कऽ लेलहा नवटोल जाइले तैयार भेल।

कोसे भरिपर नवटोल। भगतजीकेँ बजबए लेलहा नवटोल विदा भेल। रस्तामे लेलहा मने-मन कौबला केलक जे ‘अगर गुलबाकेँ दुख छुटि जाएत तँ जोड़ भरि छागर बरहम बाबाकेँ चढ़ाएब।’ चलबो करए

आ मने-मन लेलहा ‘जय बरहम बाबा, जय बरहम बाबा’ जपबो करए। नवटोल पहुँच लेलहा गहवरक भगताकेँ भँजियाबए लगल।

भगता गाममे नहि। उजानमे हैजा भेल ओतै गेल। सोगाएल मन लेलहा रहबे करइ। असोथकित भऽ गहवरक आगूक अशोकक गाछक निच्चाँमे बैस भगताक रस्ता देखए लगल।

उजानक चारू सीमा बान्हि भगता नवटोल विदा भेल। थोड़बे कालक पछाइत पहुँचल तँ एकरा बैसल देखलक। चिन्हैत नहि। भगते लेलहाकेँ पुछलक-

“किए बैसल छी?”

सिमसल आँखि लेलहाक, पोछैत बाजल-

“भगतजीसँ काज अछि।”

“केहेन काज अछि, हमहीं छी।”

भगताक बात सुनि जेना वादलसँ झँपाएल सुरूज हवाक सिहकीसँ वादलकेँ छँटिते भुक-दे उगैत तहिना लेलहाकेँ भेल। मुस्कियाइत लेलहा भगतजीकेँ कहलक-

“भगतजी, हमरा बेटाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेल तँए बजबए एलौं।”

“हम तँ बेरागन दिनकेँ भाउ करै छी। आइ तँ बेरागन नै छी। डाली लगा दियौ शुक्र दिन आएब।”

बेवसीक अवाजमे लेलहा बाजल-

“भगतजी, कोनो उपए करियौ। अहीं केने सभ हेतइ। बड़ आशासँ आएल छी। ओहिना केना घुमि जाएब?”

देरी होइत देख तेतरी एक गोरेकेँ नवटोल पठौलक। धड़फड़ाएल आबि ओ लेलहाकेँ पुछलक-

"तोरे आशा-वाटी सभ तकै छह तूँ आबि कऽ ऐठाम बैस रहलक?"

मन्हुआएल लेलहा, बाजल-

"भगतजी नै छेलखिन तँए देरी भऽ गेल। अखने एलखिन तँ कहलयैन।"

ताबेमे भगतजी एकटा फूल नेने आबि दैत कहलखिन-

"गमछाक खूटमे बान्हि लिअ। घरपर पहुँचते कहालीकेँ खुआ देबइ। लगले छुटि जेतइ।"

फूल लऽ दुनू गोरे विदा भेल। रस्तामे होइ जे गुलबाकेँ की भेल हएत की नहि! मुदा करैत की। घरपर अबिते लेलहा गुलबाकेँ फूल खुऔलक। फूल खुएलाक कनीए कालक पछाइत लेलहा गुलबाकेँ पुछलक-

"मन केहेन लगै छौ?"

गुलबा कुहरैत बाजल-

"ओहिना लगैए"

गाममे अनेको रंगक बात चलैत। कियो बजैत-

"गुलबाकेँ डाइन केने छइ।"

तँ कियो कहैत-

"गुलबाकेँ देवी लगल छइ।"

कियो बजैत-

"मोतिया बेटी- जे मरि गेल, तेकरे संग ने हदिघड़ी खेलाइत रहै छल। वएह लगि गेल छइ। बिनु लऽ गेने थोड़े छोड़तै।"

बिच्चेमे गुलटेनमा आबि लेलहाकेँ कहलकै-

"एकटा गुनी कटहरबामे अछि, नेपालक सीख छी, ओकरा बजा आनह। जरूर छोड़ा देतइ"

कटहरबा लालपुरसँ सटले पच्छिममे कनीए-टा टोल अछि। कटहरक गाछ अधिक रहने 'कटहरबा' नाओं पड़लै। दौग-बड़हा करैत-करैत लेलहा असोथकित भऽ गेल। मुदा की करत। केतौ जाइक साहसे ने होइ मुदा विपैते तेहेन पड़ल छै मरितो दम तक छोड़त केना? लेलहा कटहरबा विदा भेल। कटहरबा जा गुनीकेँ भँजियौलक। गुनीसँ भेँट होइते लेलहा सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि गुनी कहलकै-

"हम तँ खाली जनिजातिये-टाकेँ झार-फूक करै छी। पुरुखक मनतर नै अबैए। हम जा कऽ की करब। जँ जनिजाति रहैत तँ गारंटी दऽ छोड़ा दैतौं। केतेकोकेँ छोड़ेलौं। केहेन-केहेन भुतलग्गूकेँ जे बताह जकाँ करै छल, छोड़ेलौं।"

गुनीक नाओं भालेसर। कमाइले भालेसर नेपाल गेल। बिराटनगर पहुँच भालेसर उत्तर-मुहेँ विदा भेल। जाइत-जाइत धरानसँ तीन किलोमीटर पाछुऐ रहै कि गोसाँइ डुमि गेल। जंगली-पहाड़ी रस्ता। आगू बढ़ैक हिम्मते ने भेलइ। रस्ताक पच्छिम एकटा दू महला काठक घर देखलक। ओइठाम जा भालेसर घरवारीकेँ कहलक जे राति-बीच रहब। खाइक समान हमरा अपने अछि। सिरिफ रहैले दिअ। घरवारी एकटा मौगी। ओइ मौगीक पति काठमाँडूमे नोकरी करैत। तीस-चालीस बीघा जमीन जे ओ मौगीए सम्हारैत। ओ मौगी गुनी सेहो। दूटा छोट-छोट बेटा-बेटी। दू घर एतए दू घर ओतए, अहिना गाम। सभकेँ दू महला-तीन महला काठक घर। घरक नीचला हन्नामे मोटका-मोटका सखुआक लकड़ीसँ घेर माल-जाल बान्हैत आ ऊपरमे अपने रहैत। ऊपर-निच्चाँ भालेसरकेँ देख ओ गुनी बजली-

"एतए नोकरी करब?"

नोकरीक नाओं सुनि भालेसर 'हँ' कहलक। एक मास पहिनहि पहिलुका नोकर गाम गेलै से अखन धरि घुमि कऽ नै आएल। औत आकि नै औत सेहो ठीक नहि। यएह बात सोचि गुनी भालेसरकेँ दू महलापर लऽ गेल। एकटा चौकीपर समानो रखैले आ बैसैयो-ले गुनी भालेसरकेँ कहलक। अखन धरि भालेसरकेँ कोनो चिन्ता मनमे नहि। मुदा जखन बुझलक जे मरद घरमे नइ छै, तखनसँ भालेसरक मनमे डर पैसए लगलै। गामक बात मन पड़लै जे लोक सभ बजैए जे पूभर मौगी सभ पुरुखकेँ भेड़ा बना खेतमे चरैले ठोकि दइ छइ। जँ कहीं हमरो तहिना करए, तखन तँ गामक बाल-बच्चा सभ बिलैट जाएत! एलौं कमाइले आ भऽ जाएत किछु-सँ-किछु! मुदा आब अन्हारो भऽ गेल जँ जेबो करब आ रस्तामे बाघ सिंह खा गेल तखन तँ आरो चौपट भऽ जाएत! एते बात मनमे अबिते भालेसरक मन उड़ि गेल। किछु बजबे ने करए। चौकीएपर पड़ि रहल।

अभ्यागत बुझि गुनी भालेसरकेँ आगत-भागत करए लगली। पहिने चाह बना पिऔलक। चाह पीला पछाइत मुरही आ चारिटा अण्डा तड़ि कऽ जलखै करैले देलक। जेते गुनी सुआगत करैत तेते भालेसरक मन उड़ल जाइत। रातिमे हाँसक तीमक आ बासमती चाउरक भात खाइले देलकै। भालेसर रहि गेल हर जोतैसँ लऽ कऽ गाए-बरदकेँ खुआएब-पीआएब धरि काज। दू-तीन दिन धरि दुनूक बीच नोकर-मालिकक सम्बन्ध रहल, तेकर बाद दुनूक बीच सम्बन्ध बदलए लगल। हाट-बजार सेहो दुनू संगे जाए-अबए लगल। ओही गुनीसँ भालेसर गुण सीखने।

भालेसर ऐठामसँ लेलहा अबिते छल तखने टोलेक एक आदमी दौगल लेलहा ऐठाम आएल। ताबे लेलहो पहुँचल। लेलहाकेँ तेतरी

पुछलक-

"की भेल?"

टुटैत आशाक स्वरमे लेलहा बाजल-

"गुनी कहलक जे हम मरदनमा मनतर नै जनै छी, हम जा कऽ की करब।"

जे आदमी दौगल आएल छल ओ तेतरीकेँ कहलक-

"भौजी, एकटा मालि झाँप बेचए आएल अछि, ओ कहलक जे हम छोड़ा देबइ। ओकरा हम अपना ऐठाम बैसौने छी। मुदा ओ कहलक जे बिनु घरवारी कहने नै जाएब।"

ओइ आदमीक संग लेलहा विदा भेल। मालिकेँ देख, दुनू हाथ जोड़ि लेलहा बाजल-

"एक्केटा बेटा अछि, जँ मरि जाएत तँ निपुत्र भऽ जाएब। सिरिफ निपुत्रेटा नै हएब खानदाने खतम भऽ जाएत। कहुना गुलबाकेँ भूत छोड़ा दियौ। बड़ गुन मानब।"

लेलहाक बात सुनि मालि कहलकै-

"एक्कैसटा रूपैआ लगत। जे कोनो अपना खाइले नै लेब। तेते देवी-देवताक पूजा-पाठ करए पड़ैए, ओहीमे खर्च हएत।"

छगाएल मन लेलहाक, गछि लेलक। मालिकेँ संग केने घरपर आएल। आँगन आबि लेलहा तेतरीकेँ कहलक-

"एक्कैसटा रूपैआ मालि लेत तखन किछु करत।"

एक्कैस रूपैआ सुनि तेतरीक मन उड़ि गेल। हाथमे एक्को पाइ नहि। जखन कि बिनु पाइ नेने मालि किछु करबे ने करत। मुदा छोड़बो केना करत।

दरबज्जापर मालिकेँ बैसा दुनू परानी लेलहा रूपैआक भाँज

लगबए लगल। मुदा केतौ रूपैआक भाँज नइ लगलै। अन्तमे निराश भऽ लेलहा खुट्टा परहक बियाएल गाए, गामेक पैकारक हाथे बेच लेलक। एक्कैस रूपैआ माइलिक हाथमे जाइते, मालि बाजल-

“डालीमे मूसक माटि आ पंचमीक माटि नेने आउ।”

चँगेरीमे माटि नेने आबि तेतरी माइलिक आगूमे रखि देलक। दहिना हाथ चँगेरीक माटिमे गोरियबैत मालि ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। मंत्र पढ़ि मालि लेलहाकेँ कहलक-

“कनी काल और नै अबितौं तँ बच्चा मरि जाइत!”

माइलिक बात सुनि दुनू परानी लेलहा आशा-निराशाक बीच उगए-डुमए लगल। मालि कहलकै-

“बच्चाकेँ पूब-मुहेँ चद्दर ओढ़ा कऽ सुता दियौ आ ऐ माटिकेँ घर-आँगन सहित अगुआर-पछुआर छीटि दियौ। अँगनासँ सभ देखनिहारकेँ हटा दियौ। हम जाइ छी। जखन सीमा पार भऽ जाएब तखन बच्चाकेँ उधारि देबइ। ओ बच्चा अपने टहलए-बुलए लगत आ कहत जे छुटि गेल।”

लाठीमे टँगल झाँप लऽ मालि विदा भेल। अँगनासँ लेलहा सभकेँ हटा चँगेरी माटि छीटए लगल। रस्तामे मालि घुमि-घुमि पाछुओ-मुहेँ देखैत आ नमहर-नमहर डेग दैत आगूओ बढ़ैत।

कनी कालक पछाइत जखन तेतरी गुलबाक देह परहक चद्दर हटौलक तँ देखलक ओहिना कुहरैत। गुलबाकेँ कुहरैत देख तेतरी पतिकेँ कहलक-

“कहाँ छुटलै?”

हृदैमे आशा रखैत-लेलहा उत्तर देलक-

“कम होइत-होइत ने छुटतै आकि एक्के बेर हरहरा कऽ छुटि

जेतइ।”

दुनू परानी लेलहा ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगल। कनी कालक पछाइत पुनः गुलबाकेँ तेतरी देखलक। कनियोँ उन्नैस नै होइत देख हलचलाइत तेतरी बाजल-

“मालिबा ठकि लेलक। गाइयो चलि गेल आ गुलबा ठीको नै भेल!”

लेलहाक मुँह दिस तेतरी तकैत आ तेतरीक मुँह दिस लेलहा। आशा-निराशा, जीवन-मरण आ सुख-दुखक बीच दुनू परानी उगए-डुमए लगल।

दोसैर साँझ भऽ गेल। भानसक बेर भऽ गेल। सोगसँ दुनू बेकती मन्हुआएल। जेकरा-ले भानस हएत ओ खेबे ने करत आ जे खाइबला अछि ओकरा अन्न धँसबे ने करतै। तेतरी भानस छोड़ि देलक। गुलबाकेँ उठा ओसारपर देलक। दुनू परानी गुलबे लग बैस गप-सप्प करए लगल। एते काल सिरिफ बेटाक सोग रहै आब बियाएल गाइक सोग सेहो हुअ लगलै। भोर भेल।

गामोमे एकटा भगत। केते गोरेक-मुहेँ लेलहा सुनने जे गामक जे भगत अछि ओ केतेको भूतकेँ लोहाक मोटका काँटीसँ पीपरक गाछमे ठोकने अछि।

अचताइत-पचताइत लेलहा गामक भगत ऐठाम पहुँच, सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि भगत अपन मेड़िया– डलबाह, मिरदंगिया, भगैत गौनिहार सभकेँ बजौलक। सभ मिलि पूजा ढारैक सामग्रीक लिस्ट बनौलक। आठ गोरेक खेनाइ लगा दू साए रूपैआक खर्च भगत लेलहाकेँ सुनौलक। दुपहर तक रूपैआ बन्दोबस करैक समए भगत लेलहाकेँ देलक। आँगन आबि लेलहा तेतरीकेँ कहलक। तेतरी लेलहाकेँ कहलकै-

“एक साए रूपैआ गाएबला अछि, बाँकी साए रूपैआ केतएसँ औत?”

दुनू परानी चिन्ताक समुद्रमे डुमि गेल। दुनूमे सँ केकरो ने अक चलै आ ने बक। देहक शक्ति कमए लगलै। निराशाक अन्तिम सीमापर पहुँच लेलहा पत्नीकेँ कहलक-

“अगर खेतो बेच कऽ दऽ देबै आ जँ नै छुटै तखन जीब केना?”

बेटाक ममता तेतरीक हृदैकेँ झकझोड़ैत रहइ। एक मन तेतरीक कहै जे खेत रखि बेटाकेँ मरए दिऐ ओहो उचित नहि। दोसर मन कहै जे बेटो चलि जाएत आ खेतो, तखन अपन बुढ़ाड़ी केना चलत? फेर मनमे एलै जे बेटाक सोग बरदास हएत आ खेतक सोग नहि! देखल जेतै बुढ़ाड़ीमे। जँ कमाइक शक्ति नै रहत तँ भीखे माँगब। मुदा अछैते चीजे बेटाकेँ छोड़ि केना देब। साहस करैत तेतरी लेलहाकेँ कहलक-

“की करबै, खेत भरना लगा कऽ दऽ दियौ। कियो ई नै ने कहत जे खेतक लोभे बेटाकेँ मारि देलक।”

जहिना केकरो चारूकातसँ दुश्मन हथियार लऽ घेर लइत। तहिना दुनू परानी लेलहाक मनमे हुअ लगल। खुट्टापर बान्हल गौड़[1] भूखे-पियासे जोर-जोरसँ डिरियाइत।

मिरदंगक बद्धी मूस काटि देने। मिरदंगियाँ-बद्धी कीनए कमलपुर गेल। बिशेसरसँ मिरदंगियाकेँ चिन्हारे तँए बद्धी कीनि भेँट करए गेल।

बिशेसर हरबाहि कऽ आबि खाइत रहए आकि डेढ़ियापर सँ मिरदंगियाँ शोर पाड़लकै। खाएकेपर सँ बिशेसर अँगने अबैले कहलकै। आँगन आबि मिरदंगियाँ बिशेसर लग बैसल। दुनूक बीच कुशल-क्षेम भेलइ। बिशेसर मोहिनीकेँ कहलक-

[1] बाछी

“खाइ बेर छइ। थारीमे नेने आउ।”

जाबे मोहिनी थारी सँठलक ताबे मिरदंगिया हाथ-पएर धोलक। हाथ-पएर धोइ बिशेसरे लग बैसल। दुनू गोरे खेबो करए आ गप्पो करए। लेलहाक सभ बात मिरदंगिया बिशेसरकेँ कहलक। मने-मन बिशेसर सोचलक जे जँ एहेन बात छै तँ लगमे जा कऽ हमहूँ देखब। मिरदंगियाकेँ बिशेसर कहलकै-

“हमहूँ अहींक संग चलि कऽ गुलबाकेँ देखबै।”

खा कऽ दुनू गोरे विदा भेल।

लेलहा ऐठाम आबि बिशेसर देखलक जे दुनू परानी पेटकान लधने अछि। बेटाक सोग, धनक सोग आ खनदानक सोगसँ दुनू परानी लेलहा मरनासन्न अछि। गुलबाकेँ देख मने-मन सोचए लगल जे जाधैर मनुखकेँ जीबै जोकर बुधि नै भऽ जाएत ताधैर अहिना दुखक पहाड़ तर दबि-दबि कुहरैत रहत। भगवानोक लीला अजीव छैन। बुधिक बखारी मनुखकेँ दऽ एहेन बड़का ताला लगा देने छथिन जे सभ-बुते खुगबो ने करैए। जेकरा बुते खुगबो करैत ओ अपने बखारी भरै पाछू जिनगी भरि अपसियाँत रहैए। केकरा के देखत। सभ अपने ताले बेताल अछि। समाज रूपी जंगलमे मनुख रूपी गाछ एहेन अछि जइमे मीठ फल फड़ैबला गाछ झँपा गेल अछि आ कँटहा गाछ एहेन भोगर बनि गेल अछि जे अनाड़ी-धुनाड़ी वौआ जाइए। जइसँ छल-प्रपंची समाजपर हाबी भऽ गेल अछि। एते बात बिशेसरकेँ मनमे अबिते मनमे उठलै- दुखक अन्तिम अवस्थाक उपरान्ते नव जिनगी शुरू होइत…।

बिशेसर लेलहाकेँ पुछलक-

“एते सोगाएल किए छी?”

बिशेसरक बात सुनि लेलहाक मनमे आशाक मेही ज्योति अबए

लगल। नोरसँ भीजल आँखि.., बेथित हृदए...। बाजल-

“भाइ साहैब, बड़ आशा छल जे एहेन सुन्दर दुनियाँमे बाबा-दादीक कोरासँ माए-बापक कोरा होइत जिनगी शुरू भेल। आशाक गाछ नमहर होइत गेल। अदहा रस्तामे आबि बेटाकेँ कोरामे लेलौं मुदा आब पोताकेँ कोरामे नै लऽ सकब दुख एकरे अछि। ‘हम केहेन अधरमी खनदानमे भेलौं जे अन्त भऽ रहल अछि।”

मुस्कियाइत बिशेसर बाजल-

“अधरमीसँ धरमात्मा बनब बड़ कठिन नहि अछि सिरिफ रस्ता बदलैक अछि। अखनेसँ धरमक रस्ता धरू सभ आशा पूर भऽ जाएत।”

बिशेसरक बात सुनि लेलहाक हृदैमे जेना अमृतक बून पड़ि गेल। उत्साहित भऽ तेतरीकेँ हाथक इशारासँ शोर पाड़ैत बाजल-

“बिशेसर भाय जे कहै छथिन से सुनू। सभ दुख मेटा जाएत।”

दुनू बेकती बिशेसरक मुँह दिस तकैत ऐगला गप सुनैले कान पाथि देलक। बिशेसर बाजल-

“अहाँ बेटाकेँ भूत नै लगल अछि। हवा रोग लगल अछि। अखन धरि अहाँ सभ भूत छौड़ौनिहारकेँ बजा-बजा अनलौं। रोग छोड़ौनिहारकेँ नै बजेलौं। चलू हमरा संगे।”

दुनू हाथ जोड़ि तेतरी बिशेसर दिस देखैत पतिकेँ कहलक-

“जाउ, जेतए भैया जाइ छैथ। जिनगीमे कहियो केकरो अधला नै केलिऐ, तखन भगवान एहेन विपैतमे केना दऽ देलैन।”

बिशेसर तेतरीकेँ कहलक-

“जाऊ, अहाँ भानस करू-गे। पहिने बाछीकेँ खाइ-पीऐले दियौ। भूखे परान गमौने की हएत। अँगनाक काज सम्हारू। हम दुनू

गोरे जाइ छी।”

करिछौन भेल तेतरीक ठोर अनासुरती बदैल कऽ लाल हुअ लगल। देहक सूतल शक्ति पुनः जागए लगल। अँगना-घर बहारि तेतरी बाछीकेँ पानि पीआ खाइले देलक। लेलहाकेँ संग केने बिशेसर दीनानाथ वैद ऐठाम पहुँचल। दुनू गोरेकेँ देख दीनानाथ पुछलखिन-

“केमहर एलौं?”

लेलहाकेँ देखबैत बिशेसर कहलकैन-

“हिनकर बेटा लताम तोड़ैले गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। जनिजाति सभ भूत कहि ओझा-गुनी बजबए कहलकैन। दुनू परानी वेचारे ओही पाछू पड़ि गेला। अपने चलि कऽ देखियौ।”

दीनानाथ रोग बुझि गेलखिन। दवाइक बैग लऽ गप-सप्प करैत लेलहा ऐठाम चलला। रस्तामे बिशेसर दीनानाथकेँ पुछलखिन-

“अपने वैदागिरी केना सिखलौं?”

हँसैत दीनानाथ अपन सभ खिस्सा भरि रस्तामे बिशेसरकेँ सुना देलखिन। लेलहा ऐठाम आबि गुलबाकेँ वैदजी देख कहलखिन-

“रोग कोनो असाध नइ छइ। दुइए दिनमे छुटि जेतइ।”

कहि दू दिन-ले चारि खोराक दवाइ दऽ देलखिन। एक खोराक अपना सोझहेमे खुआ दीनानाथ लेलहाकेँ कहलखिन-

“दस मिनटक उपरान्ते रोग कमए लगत आ सौझुका खोराक खुऔला पछाइत बुझि पड़त जे अदहा रोग छुटि गेलइ। चिन्ताक कोनो बात नहि।”

ঃ

शब्द संख्या : 4651

चारि

मिडिल पास केला पछाइत ज्ञानचन गामेमे रहैक विचार केलक। गामसँ दस-बारह कोस हटि ज्ञानचनक पिता नोकरी करैत। दुरस्तक दुआरे प्रकाशचन्द बालो-बच्चाकेँ संगे रखैत। माए-बाप मरि गेने आश्रमो छोट। बहिन सासुर बसैत। गाममे कियो नहि जइसँ घरो गिर पड़ल। गौआँ-घरूआ सभ घरक ठाठ उजाड़ि जरा लेलक। घराड़ी छोड़ि एक्को बीत जमीन फाजिल नहि। घर गिरने घराड़ियो ढिमका जकाँ बनि गेल, जैपर अनेरूआ गाछ सभ जनैम गेल। घराड़ी बेलगान तँए बँचलो।

पिताक मेहनतसँ प्रेरित भऽ ज्ञानचन गामेमे रहि मेहनतक बले जीबैक संकल्प मनमे रोपलक। गाम आबि ज्ञानचन एकटा घर बना गामेमे रहि बच्चा सभकेँ पढ़बैक जोगारमे जुटि गेल।

गरीब आ मझोलका किसानक गाम। गामक मुख-मुख आदमीकेँ बैसा अपन विचार रखलक। बच्चाकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ मुदा पढ़ौनिहारोकेँ तँ परिवार छइ। तर्क-वितर्क करैत सभ ऐ निर्णएपर पहुँचला जे, जे किसान परिवार अछि ओ एक विद्यार्थीपर एक सेर चाउर, मासमे देत आ गरीब परिवार शैने-शनि शनिचरा देत...।

ऐ विचारपर गौआँ आ ज्ञानचनो सहमत भऽ गेल। बच्चा सभकेँ ज्ञानचन पढ़बए लगल।

सुभ्यस्त समए रहने दू साल तक तँ बेवस्थित ढंगसँ पढ़ौनी चलल मुदा तेसर साल तेहेन बाढ़ि एलै जे अदहासँ अधिक लोकक घर गिर पड़ल। खेतक फसिल दहा गेल। तीन मास धरि घर-घराड़ी छोड़ि सौंसे गाम पानिमे डुमले रहल! काजक अभाव भेने गरीब लोक, जन-बोनिहार पड़ा-पड़ा परदेश जाए लगल। अनक अभाव आ घास-भूस्साक अभावमे धियो-पुता, बुड़हो-बुढ़ानुस आ मालो-जाल अदहासँ बेसी मरि गेल। घरक दुआरे बहुतो लोक गाम छोड़ि आन-आन गाम जा कर-कुटुमक ऐठाम रहए लगल।

ज्ञानचनक दशा एहेन भऽ गेल जे मृत्युक रस्ता छोड़ि जिनगीक दोसर कोनो बाँकी नै रहल। करेजपर पाथर रखि गाम छोड़ैले तैयार नहि। अन्न बिनु दुनू परानीकेँ सात साँझ भऽ गेल। भूखे अँतरी ऐंठैत, पेटमे बगहा लगैत। सुधियाक सुखल मुँह ज्ञानचन देखैत आ ज्ञानचनक मुँह सुधिया देख आँखि निच्चाँ कऽ लइत। थरथराइत मने सुधिया पतिकेँ कहलक-

“गामक दशा बड़ रद्दी भऽ गेल आब जीनाइ कठिन अछि। चुपचाप हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ नै हएत।”

कनी काल बिलैम ज्ञानचन बाजल-

“कहलौं तँ ठीके मुदा करब की। देखते छी जे साँझक-साँझ लोक भूखल रहैए। जैठाम पेट पहाड़ बनि रहत तैठाम बच्चाक पढ़ाएब मात्र कल्पना हएत। पेटक आगि सभकेँ जरा दइ छइ। बुधि-विवेककेँ नष्ट कऽ दइ छइ। हमरा बुझने एक्केटा उपए अछि जे दुनू बेकती बाबू लग चलू। ओहीठाम किछु दिन रहब, जखन समए बदलत तखन बुझल जेतइ।”

सुधिया-

“अखन पितोजी लग जाएब कठिन अछि। भूखल पेट एते दूर

केना जाएब? घरमे थारी लोटा छोड़ि तँ किछु ऐछो नै जेकरा बेच कऽ वा बन्हकी लगा कऽ पेटक ओरियान कऽ जाएब।"

ज्ञानचन-

"लोटाक काज तँ रस्तो-पेरा हएत तँए ऐ बिनु नै बनत। मुदा थारीक तँ तत्काल ओते जरूरी नै अछि, पातोसँ काज चला लेब। थारी लाउ ताबे बन्हकी लगा बटखरचाक ओरियान कऽ लइ छी आ ओमहरसँ घुमि कऽ एलापर बन्हकी छोड़ा लेब।"

सुधिया घरसँ थारी निकालि ज्ञानचनकेँ दऽ देलक। थारी नेने ज्ञानचन दोकान जा बन्हकी लगा बेसाहने आएल। सुधिया भानस केलक। दुनू परानी खा घर बन्न कऽ पिता लग विदा भेल।

मिडिल पास केलाक तीन सालक पछाइत ज्ञानचनक बिआह सुधियाक संग भेल छल। बिआहक समए सुधियाकेँ मनमे बेहद खुशी छेलै जे पढ़ल-लिखलसँ बिआह भऽ रहल अछि। बिआहो आकर्षित वातावरणमे भेल छेलइ। बिआहक समए गीत गौनिहारि एहेन आकर्षित वातावरण अपन गीतक माध्यमसँ बनौने रहैथ जेना वसन्तक आगमनक समए प्रकृति बनबैत। ऐ मोहक वातावरणमे ज्ञानचनक मन आ सुधियाक मन जेना शरीरसँ हटि एकठाम बैस भावी जिनगीक लीला रचए लगल। अलग-अलग योजना रहितो एकठाम जा मिलि जाइत। जिनगीक अन्तिम छोड़ धरिक संगी नचैत-गबैत सुख-दुखक रस्तासँ चलैक समझौता केलक। मुदा आइ ओ वसन्ती जिनगी ग्रीष्मक प्रखर रौदसँ झड़कए लगल। जहिना नदी-सरोवरक शीतल जल रौदमे अपन जिनगीक आहूत दैत तहिना ज्ञानचन आ सुधिया दिअ लगल। जिनगीक रस बेरस हुअ लगलै। मुदा आगिमे तपैत जिनगीमे सोनाक ओ रूप आबि जाइत जे आगिमे जरि शेष रहैत। यएह छी जिनगीक लीला। अहीक बीच जिनगी हँसैत-कनैत चलैए।

पिता लग जाइक रस्तामे ज्ञानचनक मन विषादसँ भरैत गेल। मनमे ढेरो प्रश्न उठलै। की हम जिनगीसँ हारि मानि ली? की हम अपन संकल्प बदैल ली? की हम अपन उगैत ज्ञानकेँ नष्ट कए ली? की हमर ज्ञान एते दुर्बल अछि जे जिनगीक छोट-छीन झोंककेँ नै सहि सकैत..?

ऐ सभ प्रश्नक बीच ज्ञानचनक मन भारसँ ऐ रूपे दबाएल जाइत जेना पहाड़क तरमे पड़ि गेल हुअए। मुदा ज्ञानचनक छटपटाइत मन हारि मानैले तैयार नहि! जेना दू सेनाक बीच लड़ाइ होइत तहिना ज्ञानचनक मनमे हुअ लगल। देहसँ पसेना निकलए लगल। संकल्प सक्कत रूपमे बदलए लगलै। हर्ष-विषादक बीच ज्ञानचन आगू बढ़ैत गेल...।

सुधियाक मन अपनो आ भगवानोकेँ कोसैत। की हम नारी बनि ऐ धरतीपर जन्म लऽ मातृत्व प्राप्त नै कऽ सकै छी? की भगवान हमरा ओइले जन्म देलैन जे फुलाइसँ पहिने नष्ट भऽ जाइ?

ज्ञानचन आ सुधियाकेँ पहुँचते प्रकाशचन्द बुझि गेलखिन। मुदा बिनु किछु कहनहि पत्नीकेँ इशारा केलखिन-

"पहिने दुनू गोरेकेँ खाइले दियौ।"

जाबे ज्ञानचन हाथ-पएर धोलक ताबे ज्योति दूटा थारीमे चूड़ा भीजैले दऽ देलखिन। घरमे दही नहि तँए चूड़ा आ चीनी दुनू गोरेकेँ खाइले देलखिन।

ज्योति हाँइ-हाँइ चुल्हि पजाइर बरतनमे पानि गरम करए लगली। जाबे दुनू परानी ज्ञानचन खेलक ताबे इनहोरो भऽ गेल। हाथ-मुँह धोइते दुनू परानीकेँ कहलखिन-

"बौआ, दूरसँ एलौं हेन तँए इनहोरसँ पएर ससारि लिअ। थाकैन दूर भऽ जाएत। बाटीमे इनहोर निकालि पहिने ज्योति ज्ञानचनकेँ ठेहुनसँ निच्चाँ ससारि देलखिन। पएर ससारिते ज्ञानचनक थाकैन कमि

गेल। बाटीमे इनहोर लऽ सुधियाकेँ अढ़मे लऽ जा ज्योति पएर ससारैक ओरियान करए लगली।"

मुदा सासुक हाथ पकैड़ सुधिया कहलकैन-

"माए, हम अपने पएर ससारि लइ छी। ई केना हमर पएर छूती?"

सुधियाक बात सुनि ज्योति बजली-

"एना किए कहलौं कनियाँ! जखन नीक रहब तखन हम सासु आ अहाँ पुतोहु। मुदा दुखमे अहाँक सेवा हम नै करी, हमर सेवा अहाँ नै करी तखन हम अहाँक केना भेलौं। आ अहाँ हमर केना भेलौं? रस्ताक थाकल छी, देह-हाथ दुखाइत हएत तँए हमर सेवा करब उचित हएत किने?"

ज्योति सुधियाक दुनू पएर इनहोरसँ ससारि देलखिन। ज्योतिक सेवा देख ज्ञानचन मने-मन सोचए लगल जे यएह छी माए-बाप आ बेटा-पुतोहुक सम्बन्ध। जँ एहेन विचार परिवारमे बनल रहत तँ किए परिवारमे बिखण्डन हएत। परिवार कम लोकक हुअए आकि बेसी लोकक, अगर सभ अपन-अपन सीमा बुझि जीबैक कोशिश करत तँ परिवार टुटतै किए...। रस्ताक झमारसँ दुनू बेकती ज्ञानचन आ सुधियाकेँ ओंघी लगैत आ देहे भँसियाइत। देह भँसियाइत देख ज्योति दुनू गोरेकेँ सुति रहैले कहलखिन। दुनू बेकती ज्ञानचन सुति रहल।

किरिण डुमि गेल। प्रकाश सेहो काजपर सँ एला। लालटेन नेस ज्योति ओसारपर दऽ ओछाइन ओछा चाह बनबए लगली। कपड़ा बदैल प्रकाश हाथ-पएर धोइ कऽ ओछाइनपर बैसला। ज्योति चारि गिलास चाह बना एक गिलास प्रकाशकेँ दऽ अपनो आ बेटो-पुतोहुकेँ देलखिन। चारू गोरे चाह पीब एक्केठाम बैसला। ज्ञानचनक चेहरा देख प्रकाश आँकि नेने रहैथ। मुदा कोनो गम्भीर बात पुछैसँ परहेज करैत

बजला-

"बौआ, सालभरि हमरो नोकरी रहल तेकर बाद तँ गाममे रहब। तँए आब घर बनाएब जरूरी भऽ गेल अछि। जाबे घर बना रहए नै लगब ताबे जीबैले कोनो काजक सृजन सेहो नै कऽ सकै छी।"

अपन समस्या ज्ञानचन रखैत बाजल-

"बाबूजी, गामक एहेन दशा भऽ गेल अछि जे रहनाइ कठिन अछि।"

बेटाक बात सुनि प्रकाशचन्द अनुभवक बात बुझबैत बजला-

"बौआ, जहिना ऐ शरीरक विचित्र स्थिति अछि तहिना ऐ संसारोक छइ। देखबहक जे, जे आदमी अधिक शारीरिक श्रम करैबला अछि ओ जइ दिन नै खटत तइ दिन ओकरा देह-हाथ दुखेतै। ठीक एकर विपरीत, जे आदमी देहसँ श्रम नै करैए ओ जइ दिन भारी काज करत तइ दिन ओकरा खूब देह-हाथ दुखेतै। तहिना ऐ संसारोकेँ छइ। विचित्र शक्ति ऐ संसारमे छइ। जहिना नाश करैक अद्भूत शक्ति देखै छहक तहिना सृजनो करैक छइ। तँए जे मनुख सृजनशील अछि वएह ऐ दुनियाँक आनन्द उठा सकैए।"

प्रकाशचन्दक बात सुनि ज्ञानचनकेँ नवज्योति भेटलै। अखन धरि जे ज्ञानचन सोचने छल जे दस दिन पिता ऐठाम रहब, मुदा पिताक विचार सुनिते सौंसे देह सुनगुनी पैस गेलै जे अखने गाम घुमि कऽ चलि जाए। एक दिस ज्ञानचनक मनमे बाढ़िक विकराल रूप नचैत तँ दोसर दिस बाढ़िक रूपसँ मुकाबला करैक उत्साह मनमे जागए लगलै...। तखने सासु पुतोहुकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, अपन घर नै रहने ऐठाम बहुत रास वस्तु छिड़ियाएल अछि जेकरा अपना ऐठाम लऽ जेनाइ अछि। एक्के बेर तँ सभ वस्तु लऽ गेल नै हएत तँए थोड़े-थोड़े-के लऽ जाएब नीक हएत। घरमे माइर

पुरान थारी, लोटा, बरतन-बासन आ कपड़ा-लत्ता अछि। ओइमे सँ जेते लऽ गेल हएत ओते नेने जाएब।"

ज्योतिक बात सुनि सुधियाक मनमे एलै जे एकटा थारी छल ओहो बन्हकीए लगा देलौं मुदा ऐठाम तँ तेते अछि जे एक बेरमे लैओ ने गेल हएत। कपड़ो-लत्ताक सएह हाल अछि। बरतन आ कपड़ा-ले मन कलहन्त रहै छल, आ से एतए तेते अछि जे जिनगी भरिमे सठबो ने करत। तँए मने-मन सुधिया खूब खुशी होइत।

तेसर दिन ज्ञानचन पिताकेँ कहलखिन-

"बाबू, हम चलि जाएब। गाममे की भेल हएत की नहि, चिन्ता भऽ रहल अछि।"

ज्ञानचनक बात सुनि प्रकाशचन्द बजला-

"बौआ, ईहो तँ अपने घर छिअ तखन जाइले एते किए धड़फड़ाइ छह?"

ज्ञानचन-

"भरि दिन एतए बैसले रहै छी, गाम गेलापर किछु करबो करब।"

प्रकाशचन्द-

"बड़बढ़ियाँ। काल्हि चलि जैहह।"

दोसर दिन भोरे ज्ञानचन आ सुधिया गाम जाइक तैयारी करए लगल। बरतन आ कपड़ाक मोटरी देख सुधिया मने-मन सोचए लगली जे एते दूर एते लऽ कऽ केना जाएब। मुदा अभावक जिनगीसँ गुजरल सुधिया, साहस बटोरि कऽ मोटरी लऽ जाइले तैयार भेली। ज्ञानचनकेँ प्रकाश साए रूपैआ देलखिन। दुनू परानी गाम विदा भेल।

गाम आबि ज्ञानचन थारियो बन्हकी छोड़ौलक आ पाँच दिनक

बुतात सेहो कीनलक। दू दिन धरि ज्ञानचन गाममे रहि आराम केलक। तेसर दिन भोरे जलखै खा ओसारपर बैस मने-मन हियाबए लगल जे कोन-कोन गाममे स्कूल नै अछि। मुदा अकसरहाँ गाम तेहने। कोनो-कोनो गाममे खानगी शिक्षक परिवारमे पढ़बैत। मुदा आम लोक-ले स्कूल नहि।

जेते हियासि-हियासि ज्ञानचन गाम सभकेँ देखैत तेते विचित्र स्थितिमे पड़ल जाइत। मनमे रहै जे गरीब-गुरबा बच्चा सभकेँ पढ़ाबी। सुभ्यस्त परिवारक बच्चा सभ तँ कोनो-ने-कोनो रूपे पढ़िए लैत मुदा खगल परिवारक बच्चा सभ छुटि जाइत। जखन कि पढ़ब सभले जरूरी छइ। अही गुन-धुनमे ज्ञानचनक दू दिन बीत गेल। तेसर दिन सुधिया बजली-

"जाबे घरमे बुतात अछि ताबे जँ कोनो जोगार नै कऽ लेब तखन तँ फेर दिक्कत हएत।"

पत्नीक बात सुनि ज्ञानचन बाजल-

"कहलौं तँ ठीके मुदा विचित्र उलझनमे पड़ल छी। एक दिस संकल्प अछि दोसर दिस पेट।"

झगड़ौआ सुभ्यस्त गाम। नमहरो। सभ तरहक परिवार गाममे। मुदा पचभैंया परिवार सभसँ सम्पन्न। पाँचू भाँइ मिलि शिक्षक रखने। पाँचू भाँइक बच्चा सभ तँ पढ़ैत मुदा गामक आन परिवारक बच्चा छूटल। पाँचू भाँइ सागीरदे। एकटा नमहर दरबज्जा, जैपर शिक्षक पढ़ेबो करैत आ रहबो करैत। नमहर परिवार रहने नमहर दरबज्जा बनौने, किएक तँ जखन बिआह, मूड़न, श्राद्ध वा कोनो नमहर काज परिवारमे होइत तखन तेते अधिक सर-कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महीम सभ अबैत जे छोट-छीन दरबज्जामे अँटावेशे ने होइत। ओइ पचभैंया परिवार छोड़ि गामक सभ परिवार शिक्षासँ अलग। ने गाममे स्कूल आ

ने दोसर परिवारक बच्चाकेँ पचभैंया अपना ऐठाम पढ़ए दइत। गुरुजीकेँ खेनाइक संग दू मन धानो मासमे दइत। शिक्षको समाँगे जकाँ बच्चा सभकेँ पढ़बैत।

गरीब लोक बच्चाकेँ पढ़ाएबकेँ जरूरीए ने बुझैत। सभकेँ बुझले जे जखन बच्चा ढेरबा हएत तखन गाए-महींस चरौत नइ तँ केकरो ऐठाम नोकरी करत। जखन जुआन हएत, बिआह-दुरागमन हेतै तखन बोइन करत। ने शिक्षाक महत बुझैत आ ने नोकरी मनमे।

बच्चो सभकेँ जीबैक लूरि बापक संग काज करैत-करैत तँ भाइए जाइत। झाँपल ज्ञान झाँपल विचार। ओना, मध्यम किसान परिवारक लोक बच्चाकेँ पढ़बए चाहैत मुदा भीतरिया मन-मोटाउ सबहक बीच। अनेरे एक-दोसरसँ मुँह-फुलौने। एक जातिक लोककेँ दोसर जातिक लोकसँ भैंसा-भैंसीक खानदानी कनाइर। जातियोक बीच कुल-गोत्र टौहकी लगौने, जइमे माछे जकाँ सभ फँसि छटपटाइत। ने कियो केकरो नीक करैत आ ने नीक देखए चाहैत। अनेरे एक दोसरक भरि दिन निन्दा करैत।

झगड़ौआक पहिलुका नाओं सुन्दरपुर छल। मुदा गौंआँक बीच हदिघड़ी मारि-झगड़ा भेने आन-आन गामबला 'झगड़ौआ गाम' कहए लगल। जइसँ गामक नाओं 'झगड़ौआ' पड़ि गेल।

झगड़ौआमे सभसँ रूआबी चुनचुन। मध्यम किसान, दस बीघा खेत। अकसरहाँ चुनचुनकेँ दोसरसँ गारि-गरौवैल आ मारि-पीटि होइते रहैत। जइसँ दस-बीस मोकदमा सभ दिन लधले रहैत। एक दिन केसक तारीख करए मधुबनी गेल। घुमती काल टीशनपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसल छल तखने एक आदमी लगमे आबि बेंचपर बैसल। कनी काल दुनू गोरे चुप्पे रहल मुदा पाछू गप-सप्प हुअ लगलै। गप-सप्पक क्रममे ओ आदमी चुनचुनकेँ कहलक-

"हम हाइ स्कूल तक पढ़ल छी। नोकरी करए जाइ छी।"

पढ़ल-लिखल सुनि चुनचुन बाजल-

"हमरा ऐठाम चलू। तीनटा बच्चा अछि ओकरा पढ़ा देबै आ अहाँकेँ दू मन धान महिना देब।"

चुनचुनक संग ओ आदमी झगड़ौआ आएल। दोसरे दिन सगरे गाम हल्ला भेल जे चुनचुन मास्टर अनलक। पचभैंया परिवारमे सेहो समाचार पहुँचल। साँझू पहर सभ समाँग बैस विचार केलक जे चुनचुनमो आ मासटरोकेँ तेहेन विदाइ देब जे फेर एहेन काज नै करत। सएह भेल।

दोसर दिन सभ समाँग पचभैंया आ चारिटा लठैतो आबि चुनचुनमो आ मास्टरोकेँ तेहेन मारि मारलक जे मास्टर तखने पड़ा गेल आ चुनचुनमा थाना जा केस केलक।

पचभैंयाक एक समाँग हाकिम, जे सभकेँ बुझल तँए थनोक कियो नै आएल आ केसे ने बढ़ेलक।

ओइ दिनसँ चुनचुनमाक मन टुटलै। तखन गामक लोकसँ मेल करए चाहलक। मुदा सभ छनगल। किएक तँ चुनचुनमाक खचरपन्नी सभकेँ बुझल। तँए कियो चुनचुनमासँ सटए नइ चाहैत। चुनचुनमाक दशा गाममे ओहन भऽ गेल जेना कोनो बड़का डकैत जहलमे जा दाढ़ी बढ़ा बबाजी बनि जाइत।

चुनचुनमाक मारि चुनचुनमा सन लोकक हृदैकेँ झकझोड़ि देलक। अखन धरि जइ विषयक चर्चा लोक करितो नै छल ओ चरचाक प्रमुख विषय बनि गेल। अज्ञानक चद्देरसँ झाँपल बुधि बहराइले पाँखि फड़फड़बए लगल। जहिना माटिक तरमे कोनो बीआ चुपचाप पड़ल रहैत मुदा समए पबिते अंकुरित भऽ ऊपर चलि अबैत तहिना। जे विद्या दान-ले अमूल्य बुझल जाइत ओइले समाजमे

विस्फोट भऽ सकैए। चुनचुनमाक दियाद-वाद, दोस- महीम, कुटुम-परिवार अपनामे विचारि पुनः मास्टर रखि बच्चाकेँ पढ़बैक निर्णए केलक। मुदा एहेन विचार किछु गनल परिवार धरि रहल। आम आदमी, जे समाजमे बहुसंख्यक अछि, काते रहल। ने ओकरासँ पूछल गेल आ ने ओ उत्साहित भेल।

चुनचुनमाक घटना ज्ञानचनकेँ बुझल। ओना ज्ञानचनक विचार चुनचुनमाक काजक अनुकूल, किएक तँ शिक्षा एकसँ पाँचो दिस तँ बढ़ल। मुदा समाजक बीच तँ खाढ़ी बनले रहैत। एकाएक ज्ञानचनक मनमे आएल जे झगड़ौआ नै जा कमलपुर जाएब।

कमलपुर जाइक विचार ज्ञानचन मनमे ठानि पत्नीकेँ कहलक-

"काल्हि भोरे कमलपुर जाएब। जँ ओइठाम रहैक जोगार भऽ गेल तँ ओतै रहब नइ तँ परसू तक घुमि जाएब। ओना मन कहैए जे कमलपुरमे जरूर जोगार भाइए जाएत।"

पतिक बात सुनि सुधिया बाजल-

"जिनगीमे अहिना चढ़ा-उतरी होइ छइ। मुदा ऐसँ धड़फड़ेबाक नइ चाही। एकटा कमलपुरे नै ढेरो गाम अछि जैठाम पढ़ै-लिखैक कोनो बेवस्था नइ छइ। करेज मजगूत कए कऽ जाउ भगवान केतौ-ने-केतौ गर लगाइए देता।"

पत्नीक विचार सुनि ज्ञानचन कनी गुम्म भऽ बाजल-

"समाजक विचित्र लीला अछि। पढ़लासँ ज्ञान होइ छइ। ज्ञान मनुखकेँ नीक रस्ता चलैले प्रेरित करै छइ। मुदा समाजमे एहेन मुँहगर-कनगर लोकक कमी नै जे बीचमे बाधक बनि ठाढ़ रहैए। आ वएह सभ अपनाकेँ समाजक हितैषी कहि ढोल पीटैए। हमरा-ले धन पैघ नहि विचार पैघ अछि।"

सुधिया-

"जइ रूपक समाजक बात अहाँ कहलौं, ओइसँ अलग भऽ सोचए पड़त। जँ से नै सोचब तँ जीब केना। आ जँ जीबे ने करब तँ सिरिफ सोचलेसँ की हएत?"

ज्ञानचन-

"अहाँक बात मानलासँ समाजमे कटुताक जन्म हएत। मनुख-मनुख छी। कियो केकरोसँ ने पैघ अछि आ ने छोट। हँ ज्ञानक स्तर आगू-पाछू भऽ सकै छइ। मुदा जे अगुआएल छैथ हुनका तँ पछुऐलहाक बाँहि पकैड़ आगू-मुहेँ बढ़ेबाक चाहिऐन। जँ से नै करै छैथ तँ ओकरा बेइमानी छोड़ि की कहबै? बेइमाने मनुख ने नीच मनुखक श्रेणीमे अबैए। जे ज्ञानक संग छेड़-छाड़ करब भेल। धनसँ मनुखकेँ नापब, सोना तौलैबला निकटीपर माछ तौलब हएत। जे बेवसाय हम करै छी ओइले एहेन तराजू चाही जैपर एक्के बैटखारासँ सभ तौलल जाए। जे अध्ययन करत ओ चाहे गरीबक बेटा हुअए आकि अमीरक, जरूर विद्वान बनत।"

दोसर दिन भोरे ज्ञानचन जलखै कऽ कमलपुर विदा भेल। जहिना समुद्रमे पहुँचैले नदीक पानि अनवरत गतिसँ चलैत तहिना ज्ञानचन्दो कमलपुर जाइक रस्ता कटैत रहल। कमलपुर पहुँचते ज्ञानचनकेँ बुझि पड़लै जे आन-गामसँ भिन्न ऐ गामक लोकक चालि-ढालि अछि। पहिले-पहिल ज्ञानचन देखलक जे जेते मेहनत ऐ गामक लोक करैए ओते मेहनत आन गामक नै करैए। मान-सम्मानक मर्यादा सेहो ऐ गामक लोक आन गामक अपेक्षा अधिक बुझैए। रस्ते-पेरे ज्ञानचन ऐ बातकेँ आँकि विहारी ऐठाम पहुँचल।

तीस पैंतीस परिवारक टोलमे विहारीक घर। विहारीक दरबज्जापर सिलेब बरदक जोड़ा आ एकटा महींस बान्हल। कँचके ईंटासँ बनल आ खढ़सँ छारल दरबज्जा। नीक कारीगरक जोड़ल

देबाल आ नीक छारनिहार छारने तँए दरबज्जा सुन्दर। दरबज्जाक ओसारमे एक भाग एकटा कोठली बनल। टोलमे जे बरियाती अबैत ओही दरबज्जामे रहैत। टोल तँ गरीबे लोकक मुदा अपनामे खूब मिलान सभकेँ।

दरबज्जाक ओसारपर राखल चौकीपर अपन झोरा रखि ज्ञानचन घरबैयाकेँ शोर पाड़लखिन।

.पछबरिया घरक केबाड़क उखड़ल बिलैयाकेँ विहारी ठीक करै छल। अनठियाक अवाज सुनि रूखान-बैसला अँगनामे रखि दरबज्जापर आएल। नव चेहरा देख, विहारी डेढ़ियापर सँ चोट्टे घुमि आँगनसँ एक लोटा पानि नेने दरबज्जापर आएल। ज्ञानचनकेँ हाथमे लोटा पकड़बैत विहारी कहलकैन-

"पहिने पएर धोउ, तखन गप-सप्प हेतइ।"

ज्ञानचन पएर धुअ लगल आ विहारी आँगन जा पत्नीकेँ कहलक-

"एकटा अभ्यागत एला हुनको भानस करब।"

कहि दलानपर आबि विहारी ज्ञानचनसँ परिचए-पात करए लगल। पढ़ौनीक चर्चा सुनि विहारीक हृदैमे उत्साहक बिर्ड़ो उठि गेल। ऐगला गपकेँ तोपैत ज्ञानचनकेँ कहलक-

"गुरुजी, थाकल हएब अखन आराम करू। ताबे हमहूँ अपन काज सम्हारि लइ छी। गप-सप्प निचेनसँ करब।"

आँगन आबि विहारी बिलैया ठोकए लगल। बिलैयो ठोकैत आ मने-मन विचारबो करैत जे तीनटा बेटा-बेटी अछि ओकरा पढ़बैमे एक गोरेक खेनाइ की छी। टोलक लोक गरीब अछि मुदा हमरा तँ दू सेर दू टाका अछि। जेकरा रहै छै ओ स्कूल केना बना दइ छइ। विहारीक मनमे एते उत्साह जगि गेल जे असगरो खरच करैले तैयार।

साँझू पहर विहारी ज्ञानचनकेँ संग केने बिशेसर ऐठाम पहुँचल। बिशेसर भजन करै छल। भजन अदहापर आबि गेल रहइ। मगन भऽ बिशेसर आँखि बन्न केने गबै छल। बिशेसरकेँ मगन देख दुनू गोरे–विहारी आ ज्ञानचन–बिछानपर बैस गेल। भजन समाप्त होइते, आँखि खोलि बिशेसर विहारीकेँ पुछलक-

"पाहुन कहाँ रहै छैथ?"

विहारी उत्तर देलक-

"भैया, हिनकर नाओं ज्ञानचन छिऐन। पढ़ल-लिखल छैथ। गामक बच्चा सभकेँ पढ़बए चाहै छैथ।"

जहिना माटिक तरमे गाड़ल रूपैआक तमघैल भेटलापर खुशी होइत तहिना ज्ञानचनक चर्चा सुनि बिशेसरकेँ भेल। हँसैत बिशेसर बाजल-

"बहुत दिनसँ मनमे छेलए जे बच्चा सभकेँ पढ़ैक जोगार करी मुदा गरीबीक चलैत नै भऽ पबै छल। ई तँ सौभाग्यक बात छी। जहिना घर आएल लक्ष्मीकेँ लोक जाए नै दिअ चाहैत तहिना तँ आएल सरस्वतीकेँ सेहो पकड़ैक अछि।"

बिशेसरक बात सुनि कँपैत विहारी पुछलक-

"भैया, जेना झगड़ौआमे चुनचुनकेँ भेल तेना तँ ने हएत?"

कनी काल गुम्म रहि बिशेसर चुनचुनक घटनापर नजैर दौगबैत बाजल-

"चुनचुन अधला रस्ता धऽ नीक काज करए चाहलक तँए फल अधला भेलइ। हम सभ नीक काज करैले नीक रस्तो पकड़ब।"

अखन धरि ज्ञानचन चुपचाप सुनैत। बिशेसरक बात सुनि ज्ञानचन बाजल-

“बिल्कुल ठीक। जाधैर मनुख मनुखक संग नै चलत ताधैर एहेन-एहेन दुखद घटना होइते रहत।”

विहारी मुँह बाबि ज्ञानचन आ बिशेसरक बात सुनैत। ज्ञानचनक बात सुनि विहारी बाजल-

“गुरुजी, हम मुरुख छी। खेती छोड़ि दुनियाँ-दारीक किछु ने बुझै छी। जहिया कहियो कोनो तेहेन काज भेल तँ बिशेसरे भैयासँ पुछि करै छी।”

विहारीक बात सुनि ज्ञानचन बाजल-

“शुरूमे कोनो गाम जे बनल ओ ऐ रूपे बनल– हमर-अहाँक पुर्वज परती जंगल तोड़ि खेत बनौलैन। गामोमे सभ तरहक लोकक जरूरत होइ छइ। जेना बढ़ही, कुम्हार, नौआ, धोबि, चमार इत्यादि। जिनका पसारी बुझल जाइए। ओ सभ खेती नै कऽ कियो खेतीक सामान हर, कोदारि बनौलक तँ कियो माटिक बरतन। मुदा जखन छल-प्रपंचक कारोबार शुरू भेल तखन खेतक छीना-झपटी हुअ लगल। अधिक लोक गरीब बनैत गेल आ कम लोक अमीर। समाजक कल्याण बास्ते धरमक आश्रय लेल गेल। मनुखो आ मालो-जाल-ले इनार-पोखैर खुनौल जाए लगल। चलैले रस्ता बनल। मुदा बादमे दसनमो चीज खानगी बनए लगल। ‘ई हमर छी’ एहेन विचार लोकमे आबि गेल। जइसँ द्वेष पनपल। हमर पुर्वज ऋषि-मुनि ज्ञान आ कर्मक माध्यमसँ समाजक कल्याण-ले निअम बनौलैन। मुदा सभ छल-प्रपंचक अखाड़ा बनि गेल।”

ज्ञानचनक विचार सुनि बिशेसरक उत्साह बढ़ल। उत्साहित भऽ विहारीकेँ कहलक-

“अखन तँ तीनिए गोरे छी। काल्हि बेरूपहर टोलक सभकेँ बैसार करह। ओइ बैसारमे बच्चाकेँ पढ़बैक विचार सभकेँ पूछब।

कियो तँ नै नहियेँ कहत मुदा सबहक विचार लऽ लेब जरूरी अछि। गुरुओजी तैयारे छैथ।”

विहारी-

“भैया, तूँ जे कहबहक तइसँ हम थोड़बे पाछू हएब। गुरुजीकेँ खेनाइ आ एक धारा चाउर घरो-परिवार-ले देबैन। मुदा कोनो तरहक भीड़ जँ पड़त तइले तूँ आगू रहिहह।”

बिशेसर-

“विहारी, तूँ हमरा छनकट आदमी बुझै छह जे बाजब किछु आ करब किछु। जहिना मरद जकाँ कहै छिअ तहिना निमाहब। हम अपन मालिक अपने छी। कियो एक साँझक बुतात जोड़ैए जे तेकर हुकुम मानबै। जे आँखि देखौत ओकर आँखि निकालि लेबइ।”

मुस्कियाइत विहारी आ ज्ञानचन विदा भेल। रस्तामे विहारी झगड़ौआक चुनचुनक खिस्सा ज्ञानचनकेँ कहैत घरपर तक आएल।

दोसर दिन टोलक लोकक बैसार विहारी केलक। गुरुजीक नाओं सुनि टोलक चेतन लोकसँ बेसी धिए-पुते बैसारमे आएल। बच्चा सभकेँ पढ़बैक नाओंपर सभ सहमत होइत दुनू हाथ उठा समर्थन केलक। सबहक समर्थन देख बिशेसर बाजल-

“अगर कोनो आपैत-विपैत औत तँ सभ मिलि ओकर सामना करब।”

बिशेसरक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन दैत बाजल-

“जखन गाममे सरस्वतीक आवाहन भऽ गेल तखन फेर जाए नै देब। सभ शनिकेँ एक पौआ चाउर शनिचरा कहि गुरुजीकेँ देबैन।”

ज्ञानचन-

“काल्हि हम गाम जा परिवारमे जनतब देब। परसूसँ बच्चा

सबहक पढ़ौनी शुरू कऽ देब।”

ज्ञानचन गाम जा पत्नीकेँ सभ बात कहलक। अखन धरि जे सुधिया ग्रीष्मक गरमीसँ जरै छेली ओ बरखाक बून पड़िते जेना कलशए लगली।

◌

शब्द संख्या : 3359

पाँच

चैत-बैशाखक आड़िपर जुड़शीतल पाबैन। ओना अपना ऐठाम अनेको तारीख आ साल चलैए। जेना साल भेल- विक्रम संवत, हिजरी, लक्ष्मण संवतक संग अंग्रेजियोक। चैतक रान्हल बैसाखमे खाएब तँए आध पहर रातिए-सँ भनसिया सभ भानसमे जुटि गेल। संक्रान्तिक हिसाबसँ जुड़शीतल पाबैन होइत तँए पूर्णिमाक महत क्षीण भऽ जाइत।

भोर होइते स्त्रीगण सभ घर-आँगनसँ लऽ कऽ रस्ता-पेरा धरिमे पानि छीटैत। बुढ़-बुढ़ानुस लोटामे पानि लऽ धिया-पुतासँ जुआन धरिक माथपर एक चुरूक दऽ असिरवाद दइत। छौड़ा-मारड़िसँ जुआन धरि भाँगक ओरियानमे जुटि गेल। कियो भाँग पीसैमे मस्त तँ कियो दोकानसँ चीनी-गुड़ आनि बाल्टीनमे घोड़ैमे मस्त। किसानो सभ अपना-अपना काजमे व्यस्त। कियो घरक केबाड़ खोलि धोइमे तँ कियो गाछ सभ पटबैमे, तहिना कियो गाए-बरदकेँ नहबैमे, तँ कियो इनार उराहैमे।

पाबैनक उत्साह सिरिफ लोकेटा मे नै बल्कि गाछो-बिरीछमे देख पड़ैत जे अपन पुरना वस्त्र तियागि नवका वस्त्र पहिर-पहिर उमंगमे झुमैत।

दस बजैत-बजैत सभ अपन-अपन घरक काज सम्हारि एकत्रित

भऽ भाँग पीब महादेव-पार्वती बना 'जय शिव जय शिव' गबैत गाममे घुमए लगल। महादेवोक रूप अजीब। भाँग-धुथुरक गाछसँ सजल महादेवक रूपसँ पार्वतियो बेहद खुशी। कखनो संग छोड़ैले तैयार नहि। थाल-कादो गोबरसँ कियो डराइत नै बल्कि महादेवक रंग बुझि अपनो आ दोसरोसँ देह ढोरेने। जेहने महादेव तेहने हुनकर संगी। सभ मस्त। यएह छी जुड़शीतल पाबैनक भिनसुरका उखड़ाहा।

दुपहर होइते धिया-पुता सभ अपन-अपन पिचकारी रखैत तँ कीर्तनियाँ ढोलक-हरमुनियाँ। पोखैरमे सभ नहा-नहा घरपर आबि खाइ-पीबैमे लगि गेल।

बेर टगिते शिकार खेलैक तैयारीमे जुटि गेल। कियो भाँग हाँइ-हाँइ पीसैत तँ कियो नवका लाठी बनबैत। कियो पुरने लाठीक झोल झाड़ैत तँ कियो लाठीमे करुतेल लगबैमे व्यस्त। कियो सिलौटपर भाला पिजबैमे व्यस्त तँ कियो तीर पिजबैमे।

भाँग पीब लाठी, भाला, तीर लऽ लोक शिकार खेलए विदा भेल। घरसँ निकैलते ललकारा दैत सभ बाध दिस चलल। गाममे जेतेक खरहीक खेत, खरहोरि, बोन-झाड़ सभ अछि तेकर तलाशी आइ हएत।

गामक ढेरबा बच्चासँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुस धरि लाठी लऽ शिकार खेलए विदा भेल। चारि कट्ठाक एकटा खरही-खेतकेँ चारू-भरसँ घेरलक। पाँच-सात गोरे लाठी नेने खरहीमे पैसल। घेरनिहारो हल्ला करैत आ झोरनिहारो। एकटा नढ़िया खरहीसँ निकैल दोसर खरहीमे नुका रहल। नढ़िया देख सभकेँ जोश बढ़लै। हल्ला करैत सभ ओइ खरहीक खेतकेँ घेरलक जइमे नढ़िया पड़ा कऽ आबि नुकाएल। किछु गोरे खरहीमे ढूकि नढ़ियाकेँ ताकए लगल। खरहीक एकटा बीटमे बैस नढ़िया आँखि गुरैड़ कऽ तकैत रहए। एकटा झोरनिहारकेँ

देख नढ़िया जान बँचबैले पड़ाएल। खरहीसँ निकैलते हल्ला करैत सभ खिहारलक।

नढ़िया भगैत एकटा झाड़ीमे तेना नुका रहल जे कियो देखबे ने करैत। तिलकोरक लत्ती तेना ओइ झाड़ीपर चतरल जे तरमे अन्हार बुझि पड़ैत। हारि कऽ शिकारी सभ आगू बढ़ि गेल। नढ़िया बँचि गेल। शिकरी सभ आगू बढ़ि झाड़ीक बोन घेरलक। बोन घेर ललकारा दिअ लगल। ललकरेपर ओइ बोनसँ एकटा हरिण आ एकटा नील गाए निकैल तेते जोरसँ पड़ाएल जे केकरो पबैए ने देलक। सभ ठाढ़ भऽ मुँह तकैत रहि गेल। शिकारी सभ अपनामे गप-सप्प करए लगल जे आब एक्केटा खरहोरि बँचल अछि जँ अहिना भेल तँ पाबैनक महौते की?

नव उत्साहसँ शिकारी सभ खरहोरि लग पहुँचल। खरहोरिकेँ चारू-भरसँ घेर तीरबला सभ पैसल। जोड़ा खढ़िया खरहोरिसँ निकैल पच्छिम-मुहेँ पड़ाएल। खढ़ियाक ऐगला दुनू पएर छोट आ पैछला दुनू नमहर। अठ-अठ हाथ छरपैत।

शिकारी सभ खिहारलक। खढ़िया भगबो करैत आ पाछू घुमि-घुमि तकबो करैत। किछु दूर भगलापर दुनू खढ़िया दू दिस भऽ गेल। खिहारनिहारो सभ राइ-छित्ती भऽ गेल। खिहारैत-खिहारैत शिकारी सभ अपसियाँत-अपसियाँत भऽ गेल मुदा खढ़िया पकड़ए नै देलक। दोसर गामक शिकारी सेहो खढ़ियाकेँ अबैत देखलक। सीमा टपि खढ़िया दोसर गामक सीमामे चलि गेल। शिकारी सभकेँ दूर देख खढ़िया बड़का आड़िक बिलमे ढूकि गेल।

एक दिस प्रेमनगरक शिकारी दोसर दिस रूपनगरक शिकारी। प्रेमनगरक शिकारीकेँ बुझि पड़लै जे रूपनगरबला खढ़िया मारि लेलक आ रूपनगरबला शिकारीकेँ बुझि पड़लै जे प्रेमनगरबला मारि लेलक।

खढ़िया चौंकले छेलए आँखि उठा-उठा देखबो करए।

दुनू गामबला-केँ एक-दोसरपर शंका हुअ लगलै जइसँ कहा-कही शुरू भेल। एक तँ शिकारक निशाँ दोसर ताड़ी-दारू-भाँगक सेहो रहबे करइ। जमातो रहबे करै आ हाथमे लाठियो रहबे करइ।

जहिना चैत मासमे खरिहाँने-खरिहाँन खुगल गहुमक बोझ रहैत, पच्छिया हवा बहैत रहैत आ तखने कियो बदामक ओरहा बान्हपर करए लगए तँ आगि किए ने लगतै, तहिना लड़ाइक सभ साम्रगी अनुकूल तँए जेते काल मारि नै फँसल ओते देरीए होइत। कहा-कही गारि-गरौवैलमे विकसित भेल। बुढ़बा सबहक गारि तँ मारिक जोश नै चढ़बैत मुदा छौड़ा-मारड़ि जे बुढ़बाकेँ गरियबैत ओ मारिक अनुकूल समए बनबए लगल। ताबे पाछूसँ एकटा छौड़ा ईंटाक रोड़ी लऽ दोसर दिस फेक देलकै। ओ रोड़ी एक गोरेक कपारपर गिरल। कपारमे रोड़ीक कोण गड़ि गेलइ। जइसँ छर-छर खून बहए लगलै। पैछला लोक हल्ला करए लगल जे कपार फोड़ि देलकै! एक दिस हल्ला होइत दोसर दिस लाठी चलए लगल। धमगिजर मारि भेल। दुनू दिससँ करीब साएक लगभग घाइलो भेल। केकरो डेन टुटलै तँ केकरो घुट्ठी। केकरो कपार फुटल तँ केकरो कन्हा टुटलै।

दुपहरसँ अखन धरिक गरमी ठंढा गेल। कन्हेठ-कन्हेठ लोक घाइलकेँ उठा-उठा लऽ जाए लगल। दुनू गामबला अपन-अपन आदमीकेँ उठा-उठा अपना-अपना गाम लऽ गेल। दुनू दिस इलाज चलए लगल। बिनु पार्टीकेँ कहनौं थानासँ दरोगा दू दर्जन फोर्स लऽ कऽ पहुँच गेल। पहिने एकटा गामक घाइलकेँ देख नाओं लिखलक पछाइत दोसर गाम जा सबहक नाओं लिखि केस आगू बढ़ौलक। सभपर केस भऽ गेल। मुदा दरोगा एते जरूर केलक जे जेतबे घाइल भेल रहै ओतबे आदमीपर केसो लिखलक। इलाजसँ लऽ कऽ जमानत

करबै धरि तीन मास दुनू गामबला-केँ लगलै। मुदा भुमहुरक आगि जकाँ विवाद मिझाएल नहि।

इलाकामे वीरपुरकेँ लोक बदमाश गाम बुझैए। जइसँ ने लग-पासक गामबला कियो ओइ गाममे कुटुमैती करैए आ ने खेनाइ-पिनाइ। परोपट्टामे वीरपुरबला-केँ कुटुमैती नै भेने इलाकासँ बाहर जा-जा कुटुमैती करए पड़ैत।

वीरपुरमे बाहरसँ सुआसिन ऐने परिवारमे विचित्र घाल-मेल भऽ गेल। किछु सुआसिन भोजपुरी इलाकाक तँ किछु मगही इलाकाक तँ किछु अन्तिका इलाकाक तँ किछु अवन्तिका इलाकाक। तँए, ने बोलीमे एकरूपता आ ने समाजिक रीति-रिवाजमे। जहिना बोली तहिना भोजन बनबैमे आ तहिना ओढ़ब-पहिरबमे। गाम रहितो वीरपुरमे शहरे जकाँ अनेको बोली गाममे चलैत! जखन कोनो परिवारमे बिआह-मूड़न आकि पूजा-पाठक अवसरपर जे गीत-गौनिहारि एकत्रित भऽ गोसाउनिक गीत शुरू करैत तँ सुननिहार सभ हँसबो करैत आ व्यंगो करैत। जँ कहियो कोनो काजमे लाउडस्पीकर लगा गीत गबैत तँ चारूकातक जनिजाति सभ एकत्रित भऽ-भऽ सुनबो करैत आ हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ ताना सेहो मारैत।

ओना वीरपुरबला अपनाकेँ लड़ाकू बुझैत। साले-साल जुड़शीतल दिन अपन शक्तिक प्रदर्शन सेहो करैत। गामसँ पूब एकटा परती अछि, जेकरा सभ कुरुक्षेत्रक मैदान कहैत। वीरपुर गाममे पुबे-पच्छिमे, बीचो-बीच ऊँचगर बान्ह अछि। बान्हक दुनू भाग गाम बसल अछि।

गाममे दूटा दियादी पट्टी एहेन जे अदहा गाम पसरल। दुनू पट्टी बान्हक दुनू भाग बसल। जुड़शीतल दिन-ले सौंसे गौंआँ बेहरी कऽ एकटा नमहर खस्सी कीनैत। जुड़शीतल पाबैन दिन ओइ खस्सीकेँ

बीच परतीपर खुट्टा गाड़ि बान्हि दइत आ बेर टगिते सौंसे गामक लोक गाँजा, भाँग, ताड़ी, दारू पीब मस्त भऽ जाइत। चारि बजेसँ अदहा गामक लोक एक भाग आ अदहा गाम दोसर भाग भाला, फरसा लऽ जमा हुअ लगैत।

जखन सौंसे गामक लोक जमा भऽ जाइत तखन ढोलिया कसि कऽ एक झोंक ढोल बजबैत। ढोल बन्न होइते सभ तैयार भऽ जाइत। जखन दुनू दिसक लोक तैयार भऽ जाइत तखन ढोलिया तीन बेर ढोल बजबैत। ढोल बजिते नवजुबक सभ सन-सन करए लगैत।

एकटा नवजुबक जे गोर वर्ण रिष्ट-पुष्ट शरीर बी.ए. पास छल। अही बेर फागुनमे बिआहो भेल छेलै, ओ खस्सी खोलए आगू बढ़ल। खस्सी लग जा डोरी खोलए लगल। डोरीए खोलै काल दोसर पाटीक एक गोरे कपारपर सोझे फरसा मारलक। दुनू एक्के हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास केने। दियाद सेहो। ओइ जुबकक कपार दू फाँक भऽ गेल। फरसा मारिते दुनू दिस हल्ला हुअ लगल। जाबे हल्ला शान्त होइ-होइ ताबे ओ जुबक मरि गेल। मनोरंजनक विकृत रूप मैदानमे उपस्थिति भऽ गेल।

रूपनगर आ प्रेमनगर एकबधू। ओना आनो-आनो बाधमे दुनूक खेत मुदा एकटा बाधमे दुनू गौंआँक खेत। जखन रूपनगरबला खेत जोतए अबैत तँ धपा कऽ प्रेमनगरबला पकैड़ मारबो करैत आ हरो-बरद छीनि लइत। तहिना रूपोनगरबला करए लगल। ढेरो मोकदमा दुनू गौंआँक बीच फँसि गेल। पनरहे दिनमे रविया, भोलबा, अनुपा, गोसैमा, रूपना आ मेथराक हर-बरद छीनि लेलक। तहिना प्रेमनगरक चंचलबा, फकीर, सिंहेश्वर, भैयेजी, सुकल आ सोनेलालक हर-बरद छीना गेल। मुदा दुनू गौंआँ अखन धरि बरबैरेमे रहल। किएक तँ सात गोरे रूपनगरबला आ सात गोरे प्रेमोनगरबला मारियो खेलक आ हरो-

बरद छिनौलक। मुदा गौंआँमे कैबलत्ती एलै जे जेकर-जेकर हर-बरद छिनाएल रहै ओकरे सभकेँ भेटलै। मुदा बरबैर रहनौं प्रेमनगरबला नफ्फामे रहल। तेकर दू कारण- पहिल जे नीक बरदक जोड़ा पड़ि लगलै आ दोसर जे प्रेमनगरक जे कियो मारि खेलक ओ जुआन जहान छल तँए अस्पताल जाइक काज नै पड़लै। मुदा रूपनगरक तीनटा अधवयसू मारि खेलक। जेकरा एक महिना डाक्टरी इलाज करबए पड़लै।

एक दिन सौंसे रूपनगरक लोक एकठाम बैसल। सभ मिलि तँइ केलक जे भोरगरे दू बोझ लाठी बाधमे रखि आएब आ जेते लोकक खेत ओइ बाधमे अछि ओ सभ अपन-अपन हर लऽ कऽ ओइ बाधक खेत जोतब।

बढ़ियाँ विचार बुझि सभ मानि लेलक। मगर बुधना मने-मन विचार केलक जे जेहने नफगर विचार भेल तइसँ केते घाटा छै ओइ दिस केकरो नजैरे ने गेल। हम जे बजबो करब तँ छौड़ा-मारड़ि बुझि सभ दुसबो करत आ बुढ़बा सभ गरिएबो करत। तइसँ नीक अपने बुधिए काज करब। जखन सभ बैसारसँ उठि विदा भेल तखन बुधना बाजल-

“हमहूँ हर लऽ कऽ ओइ बाध जाएब मुदा हमरा बजारसँ दवाइयो अनैक अछि। ओना हम भोरे जा हर जोतै बेर तक आबि जाएब, जँ कहीं अबेर भेल तँ कियो ई नै कहिहह जे बुधना धोखेबाज अछि।”

बुधनाक बात सुनि सभ हल्ला करैत बाजल-

“ठीक अछि। ठीक अछि। बड़ देरी हएत तँ जलखै बेर हएत। सएह ने।”

मने-मन बुधना बुझलक जे दाउ सुतैर गेल। बजारे छिऐ कएटा

चिन्हारए भेटत। की ओकरासँ कुशल-छेम नै करब। चाह-पान नै करब। अबेर हेबै करत। बुधियार सभ केते अछि जे पाँच गामक लोककेँ बजा पनचैती नै करत। जाएत चैत-बैसाखक रब्बी बनैले..!

भोरे सभ संगोर कऽ एक्के संगे हर लऽ विदा भेल। सभ अपन-अपन खेत जोतए लगल। प्रेमनगरक अधिकलाल सेहो ओही बाध हर-बरद लऽ खेत जोतैले अबैत रहए। फरिक्केसँ रूपनगरबला-कँ जेरगर देख घुमि गेल। गामपर आबि हल्ला कऽ कऽ कहए लगलै जे रूपनगरबला सभ खेत जोतैए। तेते जेरगर अछि जे कहीं अपन-अपन खेत जोति अपनो सबहक ने जोइत लिअए।

एक तँ दुश्मनीक क्रोध आ दोसर खेत जोतैक डर। सभसँ बेसी डर होइ जे जँ कहीं अहिना सभ दिन आएत आ अपन जोति-कोरि कऽ अबादि लेत आ हमरा सबहक परतीए रहि जाएत!

सौंसे गामक लोक सभ लाठी लऽ विदा भेल। रूपनगरबला मने-मन खुशी जे हमहूँ सभ तैयारे छिऐन। मुदा जखन लोकक करमान देखलक तखनसँ सबहक करेज डोलि गेल। ओना कमजोरीक कारण ईहो रहै जे रूपनगरक सिरिफ किसानेटा रहै तँए कमजोर। मुदा जँ भागियो जाइ आ एमहर प्रेमनगरबला गाम हूलि जाए, तखन तँ मरद-मौगीक कोनो ठेकान नै रहत! ओना, आशा ईहो रहै जे गाम हूलत तँ गामक मरद-मौगी तैयार भऽ जाएत आ हमहूँ सभ बीच्चे गाममे घेर मरम्मत कऽ देबइ।

प्रेमनगरक किछु गोरे बरद खोलए गेल आ किछु गोरे बाता-बाती करए लगल। सभ बरदकेँ खोलि हरो आ बरदो एकठाम केलक...।

एमहर, ऐ बातक दृढ़ बिसवास रूपनगरबला-कँ भऽ गेलै जे आइ सभ हर-बरद चलि जाएत। तँए अपन इज्जत बँचबै दुआरे

अगुआ कऽ मारि ठनलक। खूब लाठी चललै। किछु लोक भागि गेल आ किछु गोरे मारि खा खेतमे ढेंग जकाँ बेहोश भऽ पड़ल। एकतरफा मारि खेलक।

..सभ चिन्तित जे मारियो खेलौं, हरो बरद गेल आ कहीं खेतो ने जोइत लिअए। तेतबे नइ, सबहक लाठियो लऽ लेलक आ हरो-बरद अगुआ लेलक!

हँसैत-पिहकारी दैत प्रेमनगरबला गामपर आएल। एक दिस मरद सभ आ दोसर दिस मौगी सभ कुदि-कुदि गरियबैत। जखन रूपनगरबला-कँ घरपर लऽ गेल तखन स्त्रीगण सभ कनैयो लगल आ सरापि-सरापि गरिएबौ लगल।

गामपर आबि प्रेमनगरबला, बीस सेर चिन्नी चालिस-पचासटा नेबो आनि शरबत बनबए लगल। जेते कालमे शरबत बनलै तेते कालमे लाठी चलौनिहार सभ अपन मारिक कथा सुनेलकै। मुदा मारिक डर दुनू गौंआँकेँ भीतरे-भीतर होइत। ओना, डरे ने फेर रूपनगरबला ओइ बाध आएल आ ने प्रेमनगरबला। गामक बगलबला खेत दुनू गोरे अबादलक आ बीचला बाधक खेत छोड़ि देलक।

रूपनगर आ प्रेमनगरक बगलमे, कोस भरि हटि सोनपुर हाट लगैत। सप्ताहमे दू दिन- मंगल आ शुक्रकेँ बेरूपहरमे। हाट तँ तीनिए-चारि घन्टाक होइत मुदा इलाकाक नामी हाटमे गनल जाइत। हाटमे बजरूआ समान-कपड़ा, बरतन, सोना-चानीक बिकरी तँ नै होइत मुदा देहाती चीज- बरद, गाए, लकड़ीक बनल कुरसी, चौकी, हँसुआ, खुरपीसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, अन-पानिक बिकरी खूब होइत। तरकारी आ मसल्ला उपजैक इलाका तँए बाहरोक वेपारी आबि-आबि कीनैत। रूपोनगरक वेपारी आ प्रेमोनगरक वेपारी हाटमे खरीद-बिकरी करैत। मुदा जइ दिनसँ दुनू गामक बीच मारि भेलै तहियासँ दुनू गामक

वेपारी हाट करब छोड़ि देलक। डर दुनू गामक वेपारीकेँ होइत।

जुड़ेशीतलक साँझमे दुनू गामक मारिक जनतब बिशेसरकेँ भेल। समाचार सुनिते देहमे आगि लगि गेलइ। मने-मन बिशेसर सोचए लगल जे दुनू गामक लोक मनुख छी आकि मनुखक नकल। कहू जे नढ़िया, खढ़िया दुआरे कहीं एहेन मारि हुअए! तीन मास धरि दुनू गामक लोककेँ केते नोकसान भेल आ केते शरीरमे कष्ट! प्रेमनगरमे बिशेसरक समधियौर आ रूपनगरमे ममियौत बहिन बसैत। एहेन घटनाक पछाइत जिज्ञासा करब बिशेसर जुरूरी बुझलक। मुदा खढ़िया-ले झगड़ा भेल तँए तामसे ने रूपनगर जा कऽ जिज्ञासा केलक आ ने प्रेमनगर। प्रेमनगरक भार उताइर बिशेसर बेटाकेँ पठा देलक मुदा अपने नै गेल। रूपनगर तँ अपने जेनाइ जरूरी मुदा तामसे सभ जरूरी बिशेसरक आगिमे जरि गेल। लड़ाइ बेसिएलोपर तामस ओहिना तरगर रहइ। चारू दिससँ बिशेसरकेँ उपराग अबए लगल। पहिल उपराग ममियौत बहिन दिससँ एलइ तँ दोसर बहनोइ दिससँ एलइ। तहिना तेसर समैध दिससँ तँ चारिम समधीन दिससँ। एक्को एहेन दिन बाँकी नै रहै जइ दिन उपराग नै अबइ। मुदा उपराग सुनि बिशेसरकेँ तामसोमे नवका पानि चढ़ि जाइत।

छह मास बीत गेल। मुदा बिशेसरकेँ तामसमे कमी नै आएल। मने-मन विचारए लगल जे की करब उचित हएत। गुनधुन करैत माथपर हाथ दऽ बैसल बिशेसरकेँ एकटा जुक्ती फूरल। फुरिते बिशेसर रूपनगर जाइले तैयार भऽ गेल। जुक्ती यएह फुरलै जे जिज्ञासाकेँ भार नै बुझि भेँट करब बुझब। पत्नीकेँ बिशेसर कहलक-

"हम कनी रूपनगरसँ भेल अबै छी।"

रूपनगरक नाओं सुनि हँसैत मोहिनी बाजल-

"आइ केमहर सुरूज भगवान उगलखिन जे मन बदलल!"

"मन-तन नै बदलल, तेते उपराग अबैए जे नइ गेलासँ दोखी भऽ जाएब। वएह दोख मेटबैले जाइ छी।"

बिशेसर असथिरसँ बाजि रूपनगर विदा भेल। रस्तामे ओइ जुड़शीतल दिनक घटनाक सम्बन्धमे सोचए लगल। अदहासँ अधिक रस्ता कटि गेलै, तखन मनमे एकाएक एलै जे नै जाएब। एतैसँ घुमि जाएब। ने एक्को डेग बिशेसर आगू बढ़ैत आ ने पाछू। बीच रस्तापर ठाढ़ भऽ जेबीसँ तमाकुल-चुन निकालि चुनबए लगल। तमाकुलो चुनबैत आ मने-मन सोचबो करैत जे आब जँ घुमि जाएब तँ घरवाली ताना मारती। तहूसँ बेसी जे जँ औरो गोरे लग बाजि देने हएत तखन केतेकेँ मुँहमे जवाब देब।

तमाकुल खा बिशेसर आगू बढ़ल। बहिन ऐठाम पहुँचते बहनोइ दरबज्जापर सँ उठि रस्ता दिस टहैल देलकैन। बिशेसर बुझि गेल जे तामसे एना केलैन। मुदा मान-अपमान बहिनक ओइठाम नै होइत। तँए पोल्हा कऽ हमहीं किए ने पुछिऐन। थोड़े आगू बढ़ि बिशेसर बहनोइकेँ पुछलक-

"पाहुन, एना मन किए उड़ल अछि। कोनो केसमे वारन्ट-तारन्ट भऽ गेल की?"

गुम्हरैत बहनोइ उत्तर देलखिन-

"गनू झा ठीके कहने छथिन जे 'एक्के बेर मुइने माइयोकेँ चिन्हलौं।' सभ दिनसँ कुटुम छेलौं बेर पड़ल तँ अहूँ छोड़ि देलौं।"

चुपचाप बिशेसर सुनैत रहल। हँ, हूँ किछु नै बाजल। तरे-तर हँसियो लगै जे- 'गदहा खसल मेघसँ तँ रूसि रहल सौंसे गौआसँ।' हँसीकेँ दाबि बिशेसर कहलकैन-

"वएह सभ बुझैले तँ एलौं हेन जे की केना भेल। आऊ एकठाम बैस सभ बुझा दिअ। बुझल रहत तखन ने किछु सोचब।"

ताबे अँगनासँ बहिन निकैल डेढ़ियापर आबि ठाढ़ भऽ गेल। बिशेसरसँ छोट बहिन। गोड़ नै लागब देख बिशेसर बुझलक जे दुनू गोरे एक्के रंग तमसाएल अछि। हमहूँ तँ गप्पे करए एलौं। तँए जे भऽ रहल अछि ओ सभ नीके।

बहनोइ-

"भैया! गामक इज्जतक सबाल भऽ गेल। जँ अछैते जिनगी गामक इज्जत चलि जाइत तँ जीविए कऽ की करितौं।"

बहनोइक बात सुनि बिशेसर मने-मन हँसबो करैत जे बड़ इज्जत बचेनिहार छैथ। मुदा हँसीकेँ दबैत बिशेसर बाजल-

"इज्जत बँचा लेलौं ई तँ बड़का काज केलौं। हमहूँ धड़फड़ाएले आएल छी, रहब नहि तँए एकटा बात कहू जे अखन नीक छी किने?"

बिशेसरक बात जेना बहनोइकेँ ह्रदैमे धक्का मारलकैन तहिना मन तिलमिला गेलैन। बोलीक कठोरता बदैल नरम हुअ लगलैन। अपशोच करैत बजला-

"भैया की कहबैन, छह माससँ जे दशा भऽ रहल अछि ओ तँ अपने ह्रदए जनैए। एक्के बीघा खेत अछि। जइमे पनरह कट्ठा खसले रहि गेल। पाँच कट्ठाक उपजासँ की हएत। एकटा जे बरदो छल ओहो प्रेमनगरबला छीनियेँ लेलक। खुट्टापर गाए छल ओहो दवाइ-दारूसँ लऽ कऽ केसक खर्चमे बिका गेल। गुजर करब मुसकिल भऽ गेल अछि।"

बहनोइक बात सुनि बिशेसरक मन तामसे आगि भऽ गेल। मुदा किछु बाजल नहि, चुपचाप उठि विदा भऽ गेल।

बाध खसल रहने घास उपजल। मुदा घसबहिनियौं सभ डरे घास छिलए नै जाइत। ने रूपनगरक घसबहिनी बाध जाइत आ ने प्रेमनगरक।

एक दिन आठ-दसटा रूपनगरक घसबहिनी घास छिलए बीचला बाध गेल। प्रेमनगरक घसबहिनी देखलक। ओ चुपचाप गाम आबि पनरह-बीसटा छरे-छाँट घसबहिनीक संगोर कऽ बाध दिस चलल। थोड़े दूर गेलापर सभ छिड़िया कऽ बढ़ैत गेल। रूपनगरक घसबहिनी घास छिलैमे मस्त। चारू-भरसँ प्रेमनगरक घसबहिनी रूपनगरक घसबहिनीकेँ घेर लेलक। जखन प्रेमनगरक घसबहिनी रूपनगरक घसबहिनीक लग आएल तखन रूपनगरक घसबहिनीक नजैर पड़लै। प्रेमनगरक घसबहिनीकेँ देख रूपनगरक घसबहिनी डरल नहि। आठो-दशो घसबहिनी साड़ीक फाँड़ बान्हि, हाथमे हाँसुआ-खुरपी लऽ ठाढ़ भऽ गेल। प्रेमनगरक घसबहिनीमे एकटा अधवयसू, जेकरा सभ झगड़ाउ दादी कहैत, दुनू गामक घसबहिनी दू दिस ठाढ़ भऽ झगड़ा करैले तैयार भऽ गेल। तैबीच झगड़ाउ दादी बाजल किछु नइ मुदा हँसुएसँ इशारामे कहलक जे आँखि निकालि लेबौ। दादीक इशारा देखते रूपनगरक घसबहिनी गारि पढ़ब शुरू केलक। दुनू दिससँ गारि चलए लगल। रूपनगरक देवसुनरी प्रेमनगरक माधुरीकेँ कहलक-

"गे मोटकी, तोरा की होइ छौ जे हम हाथी छी। सभकेँ पीच देबइ। सूढ़ जे नमरल छौ ओकरा जड़ि भिरा कऽ काटि लेबौ।"

देवसुनरीक बात सुनि माधुरी बाजल-

"हे गइ ठोरनमरी, देखै छीही हँसुआ! दुनू ठोर सहित नाक काटि लेबउ।"

माधुरीक बात सुनिते रूपनगरक घसबहिनी आगू बढ़ि प्रेमनगरक घसबहिनीकेँ झोंटा पकड़ैले लगमे चलि आएल। प्रेमनगरक घसबहिनी बेसी छलि। दू-दू, तीन-तीन गोरे मिलि एक-एकटा रूपनगरक घसबहिनीकेँ कियो झोंटा पकड़लक तँ कियो गट्टा।

रूपनगरक घसबहिनीकेँ लिड़ी-बिड़ी कऽ पटकए लगल। दुनू गामक घसबहिनीक बीच मुक्का-मुक्की चलए लगल। मारि तँ प्रेमोनगरक घसबहिनी सेहो खेलक मुदा बेसी रूपनगरक घसबहिनी खेलक। रूपनगरक झगड़ाउ बुढ़िया सबहक हँसुआ, पथिया समेट गाम दिस विदा भेल।

साल भरिक झगड़ा-झंझटसँ दुनू गामक लोक पस्त भऽ गेल छल। बिशेसर पाँच गामक पंचकेँ बैसा दुनू गामकेँ मिलान करौलक।

◌

शब्द संख्या : 2869

छह

दलानक चौकीपर देबालमे ओङैठ उत्तर-मुहेँ गंगानन्द बैस आँखि बन्न कऽ दुखक अथाह सागरमे उगैत-डुमैत। मनमे यएह होइ जे खेत निलाम होइपर अछि, जँ समैपर मालगुजारी नै दऽ सकब तँ निलाम भाइए जाएत। जँ खेत चलि जाएत तँ जीब केना। अखन धरि जे समाज आ कुटुमक बीच प्रतिष्ठित बुझल जाइ छी ओ केतए चलि जाएत...।

फल-फूलसँ लदल जहिना कोनो बगीचा हवाक सिहकी पाबि झुमैत रहैत आ एकाएक अन्हड़-तूफान आबि सभटा गाछ-बिरीछकेँ खसा-पड़ा दैत, वएह स्थिति तँ हमरो भऽ रहल अछि...। चकभौर लैत गंगानन्दक मनमे उठलैन- एते रहलापर जखन हमर ई गति भऽ रहल अछि तखन जेकरा कम छै, ओकर गति की हेतइ। हमरे खेत जखन निलाम भऽ जाएत तखन हमहीं की करब। तीन भाँइक भैयारी अछि। परिवारो नमहर अछि। अखन धरि सभकेँ अपन बुझि दिन-राति सेवा करैत रहलौं। मुदा जेतेक अपन बुझि करैत रहलौं तेते भाए-भावो आलसी बनैत गेल। सिरिफ खाइ-पीबै आ आरामसँ रहैक चिन्ता सभकेँ रहलै। जँ जमीन निलाम हएत तँ सिरिफ हमरेटा नै हएत, सबहक हेतइ। निलामी-ले किछु समए बँचल अछि तँए ई अन्तिम परियासमे दुनू भाएकेँ पुछि लेब उचित अछि।

मने-मन गंगानन्द सोचबो करैथ आ निलामीक डरे करेजो थरथड़ाइत रहैन। आँखिक आगूमे झल-अन्हार बुझि पड़ैन।

पतिकेँ गुम-सुम बैसल देख पार्वती आबि पुछलखिन-

“मन-तन खराब अछि जे एते मन्हुआएल छी। मुँहक सुरखी उतरल बुझि पड़ैए!”

अपन बेथाकेँ दबैत गंगानन्द बजला-

“नहि, मन तँ खराप नै अछि मुदा परिवारक जे भविस देखै छी तइ चिन्तासँ मन घेराएल अछि। कोनो रस्ते ने सुझैए।”

गंगानन्द आ पार्वतीक बीच होइत गप-सप्प सुनि रीतो लगमे आएल। जहिना गंगानन्द भाइक क्रिया-कलापसँ दुखी तहिना रीतो दुनू परानी। पिताक समैमे जहिना गंगानन्दक परिवार चैनसँ चलैत तहिना रीतोक। अखुनका जकाँ ने अन्ट-सन्ट खरच परिवारमे आ ने एते नमहर परिवार, तँए रौदी-दाही भेनौं दिक्कत नै होइत। जन-बोनिहारक हाथे सभ काज चलि जाइत। गंगानन्द रीताकेँ कहलखिन-

“दाय, कनी काका सभकेँ बजौने अबहुन?”

रीता उठि कऽ यमुनानन्द आ श्यामानन्दकेँ बजबए गेल। तीनटा समस्या गंगानन्दकेँ तीनू दिससँ घेड़ने। पहिल, खेत निलामीक। दोसर, आइ धरि दुनू छोट भाएकेँ बेटा जकाँ सेवा करैत आएल छला जे बिगैड़ कऽ गाराक घेघ भऽ गेलैन आ तेसर, रीताक दुर्दशा। मने-मन गंगानन्द सोचैथ जे जँ रीता बेटा रहैत तँ ऐ सम्पैतक हिस्सेदार तँ ओहो रहैत, मुदा से नै भेलासँ कि ओ कष्ट काटए आ हम चुपचाप देखैत रही। वेचारीकेँ चारि-चारिटा बेटी छै, केना बिआह-दान पार लगतै! जँ केतौ गरीब-गुरबा घरमे बेटीक बिआह करत तँ जिनगी भरि वेचारी नातिन सभकेँ दुख हेतइ।

रीता अँगनेमे रहि गेली यमुनानन्द आ श्यामानन्द दरबज्जापर

आबि गंगानन्दक लगमे बैसल। दुनू भाँइ यमुनानन्द आ श्यामानन्द एते मन्हुआएल गंगानन्दकेँ कहियो नै देखने जेते आइ देख रहल छैथ। मने-मन दुनू भाँइ सोचए लगल जे भरिसक कोनो नमहर मुसीबतमे भैया फँसल छैथ। मुदा किछु बाजल नहि। आइ धरि गंगानन्द जोरसँ कहियो किछु भाए सभकेँ नइ कहने, तँए बजैत संकोच होइत। मुदा करेजपर पाथर रखि गंगानन्द दुनू भाँइकेँ पुछलखिन-

“बौआ, दू सालक रौदी घरकेँ तोड़ि देलक। एक्को सेर उपजा-बाड़ी नै भेल। खरच तँ परिवारमे हेबे करत। केना पार लगतह? मलगुजारी से पछुआ गेल अछि जइसँ खेत निलाम होइक स्थितिमे आबि गेल छह। की करबहक?”

गंगानन्दक बात सुनि दुनू भाँइ ठर्ढ़ा गेल। मुड़ी निच्चाँ कऽ लेलक। जहिना जड़ि काटल गाछ अर्ढ़ा कऽ जमीनपर खसैत तहिना यमुनानन्द आ श्यामानन्दक चढ़ल मन झमान भऽ खसल।

गंगानन्द सेहो तरे-तर आगिपर चढ़ल घी जकाँ पघिलैत रहैथ। मुदा जिनगी ओहन मोड़पर पहुँच गेल छैन जे भैयारीक सिनेह आइ शीशा जकाँ चूर-चूर भऽ रहल छैन। एक परिवार तीन परिवारमे विभाजित भऽ जाएत!

दुनू भाएकेँ चुपचाप मुड़ी गोंति बैसल देख दोहरा कऽ गंगानन्द बजला-

“बौआ, चुप रहने काज नै चलतह। भारी विपैतमे परिवार फँसि गेलह। जँ ओइ विपैतकेँ मेटबैक कोशिश नै करबह तँ दू दिनक पछाइत सभ चीज हराएल बुझि पड़तह तँए अखन समए अछि बँचैक जोगार करह।”

मिरमिरा कऽ यमुनानन्द बाजल-

“भैया, अखन धरि तँ हम ने परिवार बुझलिऐ आ ने कोनो

चिन्ता कहियो भेल। निलामसँ बँचैक जोगार तँ अहीं करबै।”

यमुनानन्दक बात सुनि गंगानन्द बजला-

“रौदी तँ अपने परिवारटा-ले नै भेल, सभले भेलैए। जँ एकटा परिवारमे कोनो बेर-बेगरता होइ छै तँ समाजमे काज चलि जाइ छइ। मुदा से तँ नै अछि। केकरा के सम्हारत। सभ तँ अपने तबाह अछि।”

यमुनानन्द-

“तखन की करबै?”

गंगानन्द-

“खेत बँचैक एकटा उपए हमरा नजैरमे अबैए। ओ ई जे घरमे जेते गहना-जेबर अछि ओ बन्हकी लगा मलगुजारी अदाइ कऽ दिऐ आ पछाइत बन्धक छोड़ा लेब। किछु सुइदे ने लगत मुदा खेतो बँचि जाएत आ गहनो-जेबर।”

गंगानन्दक विचार सुनि श्यामानन्द बाजल-

“बड़ सुन्नर विचार अछि मुदा स्त्रीगण सभ अपन गहना दइले तैयार हेती तहन ने। अगर जँ ओ गहना दइले तैयार नै होथि, तहन की करबै?”

गंगानन्द-

“एक बेर जा बुझा कऽ कहुन, अगर नै मानती तँ खेत जेतैन।”

यमुनानन्द आ श्यामानन्द उठि कऽ आँगन जा अपन-अपन पत्नीकेँ सभ बात बुझा कहलखिन। मुदा जमीनक सुख-दुखसँ अनभिज्ञ आ गहनाक सिनेही औरत, ने यमुनानन्दक बात मानलकैन आ ने श्यामानन्दक। दुनू भाँइ दरबज्जापर आबि गंगानन्दकेँ कहलकैन। दुनू भाँइक बात सुनि गंगानन्द गुम्म भऽ गेला। आँखि नोरा गेलैन। मने-मन गंगानन्द सोचलैन जे जँ खोलि कऽ दुनू भाँइकेँ नै कहि

देबै तँ पछाइत हमहीं दोखी हएब। करेजपर पाथर रखि गंगानन्द दुनू भाँइकेँ कहलखिन-

“सतुआ संगे घून पीसब उचित नहि। तीस बीघा जमीन अछि। दस-दस बीघा तीनू भाँइक हिस्सा हेतह। तँए अपन-अपन हिस्सा बँचाबह वा बुड़ाबह। सभ बुड़बैइए पाछू लगल छह तँ सभ किछु बाँटि लएह। जेठ भाय होइक नाते हम कहि देलिअ।”

तीनू भाँइक बीच घरोक वस्तु-जात आ खेतोक बँटवारा भऽ गेल। बँटवाराक पछाइत यमुनानन्दोक पत्नी आ श्यामानन्दोक पत्नी तरे-तर खुशी। मुदा दुनू परानी गंगानन्द दुखसँ बेथित। किरिण उगिते पटवारी छोटकी चौकीपर बैस आगूमे ऐना आ पोडरक डिब्बा रखि ब्रुशसँ दाँत मजैत रहए। तेसर स्त्रीकेँ, जे वएसमे पटवारीक बेटी जकाँ बुझि पड़ैत, ओहो लगेमे रहैन आ तीनू सन्तान– जेठ बेटी आ छोट दुनू बेटा घरमे रहैन। तखने लूँगी-गंजी पहिरने दतमैन करैत सिपाही-दुखन सेहो आएल। सिपाहीकेँ अबिते पटवारी पत्नीकेँ कहलक-

“चाह बनाउ?”

पत्नी चाह बनबए गेली। पटवारियो आ सिपाहियो कुड़ुर कऽ ओसारपर आबि कुरसीपर बैस गप-सप्प करए लगल। आँगनसँ पटवारीक बेटी दूटा प्लेटमे, चारि-चारिटा नमकीन बिस्कुट आ चारि-चारि फाँक सेब आनि दुनू गोरेक आगुमे रखि पानि अनैले भीतर गेली। जाबे चाह बनल ताबे दुनू गोरे सेब आ बिस्कुट खा पानि पीलक। पानि पीबते पटवारीक पत्नी चाह नेने एली। लीलाकेँ देख सिपाही गुलाबी मुस्की दैत बाजल-

“पटवारी साहैब, अहाँक हुकुम पूरा केने एलौं।”

हुकुम पूरा करैक बात सुनि लीलो ठाढ़ भऽ गेली। आँखि गुरैड़ मुँह बाँबि लीला सिपाही दिस देखए लगली। बेटी बिआहक जिज्ञासासँ

पटवारी सिपाहीकेँ पुछलक-

“केहेन परिवार गंगानन्दक छैन?”

घटकक ढंगसँ सिपाही बाजल-

“भगवानकेँ जँ नीक करैक रहै छैन तँ अपन रंग-बिरंगक लीला पसारि दइ छथिन। अहाँकेँ नीक हेबाक अछि तँए रौदियाह समए आ मालगुजारीक विपैत गंगानन्दक कपारपर आएल। नइ तँ ओहन कुल-शील घरमे कुटमैती होएब असम्भव अछि।”

‘कुल-शील’ सुनिते लीलाक ह्रदैमे गुदगुदी लगलैन। चौअन्नियाँ मुस्की दैत लीला सिपाहीकेँ पुछलखिन-

“नीक खनदान छैन?”

गंगानन्दक बराइ करैत सिपाही बाजल-

“अपना इलाकामे एक्केटा वंश एहेन अछि जे सभसँ पैघ बुझल जाइत। ओइ वंशक गंगानन्द छैथ। सिरिफ वंशेटा पैघ नै छैन हुनका सबहक बेवहार आ विचार सेहो तेहने छैन। जखन हुनका ऐठाम जाएब तँ बुझि पड़त जे मनुखक नै देवताक घर एलौं। जुआन-जहानक कोन गप जे अस्सी बर्खक बुड़हो स्त्रीगण हदिघड़ी मुँहपर साड़ी रखने रहै छैथ।”

सिपाहीक बातसँ लीलाक दिल धड़कए लगलैन। मनमे हुअ लगलैन जे, जे बिआह काल्हि हएत से आइए भऽ जाए। उत्तेजित भऽ लीला सिपाहीकेँ कहलखिन-

“खरच जे होइ तेकर एक्को पाइ चिन्ता नै करब। धन भेलापर सभ इज्जत बनबैए। अवसर हाथ लगल अछि छोड़ब मुरुखपना हएत। आइए जाउ आ बात पक्का-पक्की केने आउ।”

लीलाक उत्सुकता देख सिपाही बाजल-

“मेम साहैब, दुखन सिपाही ओते कच्चा खेलाड़ी अछि जे फँसल शिकार छोड़ि देत। जखन डेग उठेलौं तँ काज कइए कऽ छोड़ब। काल्हिए फेर जा कऽ दिन-ठेकान तँइ केनहि आएब।”

खुशामदी बोलीमे लीला बजली-

“जँ ओइ खनदानमे कुटुमैती भऽ गेल तँ अहाँकेँ मुहमंगा इनाम देब।”

मने-मन सिपाही बुझैत जे जहिना पनहाएल गाए औंढ़ मारैए तहिना लीलो अछि, तँए मौकाक लाभ उठा ली।

लीला आँगन गेल। सुनयना दरबज्जा दिसक खिड़की लग ठाढ़ भऽ सभ बात सुनैत मने-मन पाँच साल उपास कऽ दुर्गास्थानमे साँझ देवाक कबुलो केलक। आँगन आबि लीला भगवती आगू जा आँचर पसारि, कुमारि भोजन कौबुला केलैन। घरसँ निकैल लीला अँगनाक कुरसीपर बैस सोचए लगली जे हम सभ तँ करतबे करब, भाग्य तँ संग सुनयनेक देत। पटवारीक तेसर स्त्री लीला। जखन पटवारीक उमेर पचास बर्खसँ टपि गेल तखन पनरह बर्खक लीलाकेँ फुसला कऽ बिआह केलक। धन देख लीला, उमेरक परवाह बिनु केने पटिया गेली। पटवारीक पहिल बिआह जे पिता करौने रहैन से अपने जातिमे भेल रहैन। जइ स्त्रीसँ दू बेटा आ दू बेटी। चारू जुआन। नाति-नातिन आ पोता-पोती सेहो। बाप-दादाक घर-घराड़ीक अतिरिक्त, साए बीघा निलामी जमीन सेहो गाममे बनौने। दोसर स्त्रीमे एकटा बेटा आ तीनटा बेटी छैन। चारूक बिआह-दुरागमन भऽ गेल। बेटी सासुर बसैत आ बेटाकेँ सेहो दोसर गाममे पचास बीघा जमीन, गाछी-कलम, पोखैर, इनार, घर-दुआर सभ किछु बना देने। जैठाम दोसर स्त्री आ बेटा-पुतोहु रहैत। तेसर बिआह कचहरीक नोकरानीक बेटीसँ केने। जइ स्त्रीक बेटी सुनयना छी। वएह सुनयनाक बिआहक गप-सप्प

चलैत। हीन जातिक बेटी रहने पटवारीकेँ छाती धकधक करैत जे जँ कहीं गंगानन्द बुझि जेता तँ कुटुमैती भङैठ जाएत। पटवारी दुखन सिपाहीकेँ कहलक-

“दुखन, अहाँसँ तँ कोनो बात छिपल नहियेँ अछि मुदा जातिक भाँज गंगानन्दकेँ ने लगैन से ओरिया कऽ गप-सप्प करब।”

पटवारीक बात सुनि दुखन सिपाही हँसैत बाजल-

“हम ओते अनाड़ी छी जे गंगानन्द पेटक बात बुझि जेता पहिलुका सासुरक कुल-मूलक पता देबैन किने।”

सिपाहीक बात सुनि पटवारीक मन असथिर भेल। दुखन सिपाहीकेँ पोल्हबैत बाजल-

“अहाँक हम छोट भाए बुझै छी। अहूँ जे जेना कहब से हम करब। मुदा कुटुमैती हूसए नहि।”

दुखन बिसवासमे लैत बाजल-

“हाकिम, रसीदक एकटा सादा जील्द अपन दसखत कए कऽ दऽ दिअ। पहिने रसीद दऽ गंगानन्दकेँ हाथमे लऽ लेब। जखन पकड़मे चलि औत तखन अनेरे काज सुढ़िया जाएत। आइए अहाँ एकटा जील्दमे दसखत कए कऽ दऽ दिअ काल्हि भोरे हम जाएब।”

ओसारपर सँ उठि पटवारी कोठरी जा एकटा रसीदक जील्दमे अपन हस्ताक्षर करए लगल। पचास रसीदक एकटा जील्द। सौंसे जील्दमे हस्ताक्षर कऽ पटवारी दुखनकेँ दऽ देलक। जील्द हाथमे अबिते दुखन तरे-तर चपचपाए लगल जे आमदनी भेट गेल..! तखने आँगनसँ लीला आबि एक भरि सोनाक चेन दैत दुखनकेँ कहलक-

“ई नेने जाउ। बिआहक बात पक्का करैत बरक हाथमे सगुन दऽ देबैन।”

रसीदक जील्द आ सोनाक चेन लऽ दुखन अपना डेरामे आएल। डेरामे आबि रसीदकेँ उघारि-उघारि देखए लगल। पचासो रसीद देख दुखन जील्दकेँ अढ़मे झाँपि कऽ रखलक। गदगद मने चौकीपर बैस सोचए लगल जे हमहूँ तँ गरीबेक बेटा छी। जमीन्दारियो जाइए रहलै हेन। तँए हमरासँ जेते गरीबकेँ उपकार भऽ सकतै से करब। जँ किछु कमाइयो-खटाइ भऽ जाएत तँ सेहो कऽ लेब। राष्ट्रीय आन्दोलन पूर्ण जवानीमे आबि चुकल छल। 1940 ई.क पछाइत राजा-महराजा आ जमीन्दार बुझए लगल छल जे आब हमरा जाइक बेर आबि गेल। देशक आन्दोलन दू दिशामे बढ़ि रहल छल। गाम-गाममे बकास्त जमीनक लड़ाइ शुरू भऽ गेल। जमीन्दार आ जमीन्दारक लगुआ-भगुआ सभ अपन हाथ ससारैमे लगि गेल। जेकरा जेतए जे फबै ओ हथियाबए लगल। मुदा जमीन्दारक जे पैछला बेवहार रहलै ओइसँ किसान डराइते छल।

राष्ट्रीय आन्दोलनमे जइ तरहेँ जन-समर्थन भेट रहल छल ओइ तरहेँ जनतामे जागरूकता नै आबि सकल छल। पैछला जे जमीन्दारक शोषण आ क्रिया-कलाप छल ओइसँ किसान त्रस्त रहए। मुदा जमीन्दारक लगुओ-भगुओ आ जमीन्दारो सभ बुझि रहल छल जे जमीन्दारी अन्तिम अवस्थामे आबि गेल। बकास्त जमीनक लड़ाइ आम जनताक बीच पहुँच गेल छल जइसँ किसानोक बीच नव-चेतना जगि रहल छल। ऐ लड़ाइ सँ मिथिलांचलो अलग नहि। मिथिलांचलोमे गाम-गाम बकास्तक लड़ाइ पकैड़ नेने छल। मुदा ‘बटाइदारी’ आ ‘हदबन्दी’ कानून नै बनि सकल छल।

◌

शब्द संख्या : 1842

सात

दलानक ओसारक एकजनियाँ कोठरीमे बैस गंगानन्द परिवारक दुर्दशाक सम्बन्धमे सोचै छला। जहिना वसन्त आ ग्रीष्मक बीचक सिमानपर मौसम रहैत तहिना सुख-दुखक बीच परिवार अछि। अखन धरि जे परिवार समाजमे सुभ्यस्त, इज्जतदार बुझल जाइ छल ओ जमीन निलाम भेने टुटि कऽ केतए चलि जाएत। समाज आ सम्बन्धीक बीचक सम्बन्ध की भऽ कऽ रहत? जइ जमीनक कोरामे अखन धरि खेलेलौं आ ओहीक उपजासँ जिनगी चलैत रहल से जमीन निलाम भेलापर सभ चलि जाएत! हम केहेन करमजरू भऽ गेलौं जे देखते-देखते सभटा जा रहल अछि! धिया-पुताक कपारमे विधाता की लिखि पठौलखिन जे गुजर-बसरसँ लऽ कऽ बिआह-दुरागमन होएब कठिन भऽ गेल अछि। जे परिवार गरीब-गुरबासँ लऽ कऽ भूखल-पियासल तककेँ एक मुट्ठी अन्न खाइले दइ छल ओ आइ अपने केतए जा रहल अछि..!

मने-मन गंगानन्द सोचबो करैथ आ दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोरो टघरैत रहैन। सुखल मुँह, करुआएल आँखि आ करिछौन भेल ठोर गंगानन्दक देख पार्वती आगूमे ठाढ़ भेली। आइ धरि जइ सिनेहक नजैरसँ गंगानन्द पार्वतीकेँ देखै छला आ पार्वती गंगानन्दकेँ देखैत रहैन ओइमे दुनूकेँ बदलल रूप बुझि पड़ए लगलैन। ने गंगानन्द किछु बजैथ

आ ने पार्वती। जेना दुनू गोरे अपन-अपन बेथाकेँ घोंटि रहल छल। जेना दुनू गोरेकेँ जिनगीक आशा तिले-तिल कम हुअ लगलैन। जेना अथाह पानिक वेगमे दुनू उगैत-डुमैत। तरे-तर दुनूक हृदैमे बुकौर लगैत। गंगानन्दकेँ होइन जे बोम-फाड़ि कऽ कानि सभ बेथा कऽ आँखिक नोरक संग बहा ली, मुदा समैक गतिकेँ के रोकि सकैए...।

दहिना हाथसँ आँखिक नोर पोछैत पार्वती बजली-

“दुख केलासँ की हएत। जखन भगवानक यएह लीला भऽ गेलैन तखन मनुखकेँ कनने की। हरिश्चन्दक कथा बुझले अछि। जइ दिन जेते दुख होइक अछि ओ तँ हेबे करत।”

आँखि उठा गंगानन्द पार्वतीकेँ देख पुनः आँखि निच्चाँ कऽ मने-मन सोचए लगला। सहोदर भाए, जेकरा बेटा जकाँ बुझै छेलौं से दियाद बनि गेल! समटल परिवार राइ-छित्ती भऽ रहल अछि..!

धीरक पातर टेमीक ज्योति गंगानन्दक मनमे आएल। आशाक कोमल अंकुर अंकुरित भेल। साहसक लालिमाक रंग आँखिक आगूमे बिजलोका जकाँ छिटकल। दुनू हाथसँ दुनू आँखिक नोर पोछि उठि कऽ ठाढ़ भेला। पार्वती मुड़ी गोंतने बैसल। जहिना कियो किछु पबैले देवताक गुहाड़ि लगबैत तहिना गंगानन्द नचारीक नजैरसँ पार्वतीकेँ गुहाड़ि लगबैत बजला-

“आइ भरि समए अछि। भैयारीमे भिनौज भाइए गेल मुदा अखन धरि दुनू भाएकेँ बच्चा जकाँ पोसलौं, एहेन समैमे छोड़ब उचित नै हएत। अहाँ अपन सभ गहना दिअ। अगर बन्हकी लगौलासँ काज सम्हैर जाएत तँ बन्हकीए लगा लेब नइ तँ बेच लेब। जँ से नै करब तँ सभ खेत-पथार चलि जाएत। खेत बँचत आ समए-साल नीक हेतै तँ उपजा बेच कऽ छोड़ा देब नइ तँ किछु खेते बेच कऽ छोड़ा देब।”

एते बात बजैत-बजैत गंगानन्दक देह थरथर कँपए लगलैन।

मुदा भलमानुस घरक बेटी पार्वती, पतिक बेथाकेँ अपन बेथा बुझि मुस्किया कऽ बजली-

"गहना कोनो हमरेटा छी आ अहाँक नहि छी आकि धिया-पुताक नइ छिऐ। सबहक छिऐ। ओ तँ बेरे-बेगरता-ले रहै छै किने।"

पार्वतीक बात सुनि गंगानन्दक मन हल्लुक भेलैन। मुस्कियाए लगला। गहना अनैले पार्वती आँगन गेली। निराशाक समुद्रसँ गंगानन्द आशाक छोट-छीन पोखैर दिस मुड़ला। गहनाक पेटी नेने पार्वती दुआरपर आबि गंगानन्दक आगूमे रखि देलकैन। पेटी देख गंगानन्दकेँ मनमे भेलैन जे कहीं खिसिया कऽ तँ नै आगूमे रखलैन। मुस्कियाइत बजला-

"पेटी खोलब तखन ने अन्दाजसँ देख गहना लेब। ओना केना बुझबै।"

पार्वती पेटी खोलि सोनाक गहना एक भाग आ चानीक एक भाग रखैत बजली-

"जेतेसँ काज सम्हरत ओते लऽ लिअ।"

अखन धरि गंगानन्द पार्वतीक गहना नै देखने छल। गहना देख गंगानन्द क्षुब्ध भऽ गेला। सोचलैन जे दुओटा सँ काज चलि सकैए। अगर दूटा बोहाइयो जाएत तैयो बहुत रास गहना रहबे करतैन। दूटा सोनाक गहना छाँटि इशारा करैत शेष सभ गहनाकेँ रखि लइले कहलखिन आ दुनू गहनाकेँ रुमालमे बान्हि गंगानन्द बजला-

"कनी झब-दे जलखै बना दिअ बजार जाएब। कखन आएब कखन नइ, तँए किछु खेने रहब तँ बढ़ियाँ रहत।"

सभ गहनाकेँ पेटीमे रखैत पार्वतीक मनमे उठलैन- जँ दूटा बोहाइयो जाएत तैयो बहुत रहबे करत।

चुल्हि पजाइर पार्वती जलखै बनबए लगली। गंगानन्द लोटा-बाल्टी लऽ नहाइले कलपर गेला...।

दुनू परानी यमुनानन्द घरक पलँगपर बैस गप-सप्प करैत। गपक क्रममे यमुनान्द पत्नीकेँ पुछलक-

"भीन भेलासँ खुशी अछि कि दुख?"

मुस्कियाइत पत्नी कहलकैन-

"खुशी तँ एते अछि जइसँ ऊपर हुअए नहि। जहिए बाबू मुइला तहिए जँ भीन भऽ गेल रहितौं तँ बेसी नीक होइत। किएक तँ अखन धरि जे दुख कटलौं ओ नै काटए पड़ैत।"

यमुनानन्द-

"की दुख कटलौं?"

पत्नी-

"अखन धरि नोकर-चाकर जकाँ घरमे रहलौं। जेना हमर किछु ऐ सम्पैतमे रहबे ने करए। ने घरमे एक्को पाइ मोजर छेलए आ ने कोनो काजमे पूछ-आछ। आब अपन सम्पैत भेल, जे मन फूरत से करब। कियो हाकिमो-महाजन तँ नै रहत।"

घटक बनि दुखन सिपाही गंगानन्द ऐठाम आएल। सिपाहीकेँ देख गंगानन्दक ह्रदए हर्ष-विषादक बीच लटैक गेलैन। दुखन सिपाहीक बोलीमे मलिकाना ताउ नै बल्कि घटकक मधुआएल अवाज। दुखनकेँ कुरसीपर बैसा गंगानन्द आँगन जा पत्नीकेँ चाह बनबए कहलखिन। आँगनसँ दरबज्जापर आबि गंगानन्द दुखनसँ गप-सप्प करए लगला। फुसफुसा कऽ दुखन कहलकैन-

"अखन दुइए गोरे छी। कोठरीमे चलू, किछु खास गप करब। बहरामे जँ कियो गपक बीचमे औत तँ गड़बड़ हएत, एकांती गप

अछि।"

सिपाहीक हाव-भावसँ गंगानन्दक जरल मन शीतल भेलैन। दुनू गोरे कुरसीसँ उठि ओसारेक कोठरीमे जा गप-सप्प करए लगला। गंगानन्दकेँ पोल्हबैत सिपाही कहलकैन-

"हम तँ सिपाही छी। हमरा बुते जेते उपकार भऽ सकत तेते जरूर करब। पत्नियोकेँ बजा लियौन। परिवारिक गप छी।"

आँगनसँ पार्वती चाह नेने एली। चाहक गिलास रखि गंगानन्दक पाँजरमे ठाढ़ भऽ गेली। एक घोंट चाह पीब दुखन टेबुलपर गिलास रखि, झोरासँ चद्देरमे लपेटल रसीदक जील्द निकालि बाजल-

"पैछला जे रसीद अछि ओइसँ खाता खेसरा आ रकबा मिला कऽ ऐ रसीदमे चढ़ा लिअ।"

रसीदक जील्द देखते दुनू परानी गंगानन्दक दिल धड़कए लगलैन। मनक सभ क्लेश निकैल कऽ उड़िया गेलैन। मुरझाएल चेहरा एकाएक खिल उठलैन। हँसैत गंगानन्द बजला-

"बहुत पैघ उपकार अहाँ केलौं। जीवनमे कहियो अहाँक उपकार नै बिसरब।"

गंगानन्दक हाथमे जील्द पकड़बैत सिपाही बाजल-

"अहाँ पटवारीजीसँ कुटुमैती जोड़ि लिअ। अहाँक जेहने बेटा भव्य छैथ तेहने पटवारीजीक बेटी छैन। राजक अंग सेहो छैथ। केतौ तँ बेटाक बिआह करबे करब मुदा ओइठाम कुटुमैती केलासँ कोनो चीजक कमी नै रहए देता।"

सिपाहीक बात सुनि गंगानन्द दुनू परानीकेँ स्वर्गक सुखक एहसास भेलैन। मने-मन गदगद होइत गंगानन्द कनडेरिये आँखिए पार्वती दिस देख आँखिएसँ जेना किछु पुछलखिन। पार्वतियो

आँखिएसँ स्वीकृति दऽ देलकैन।

दुनू परानीकेँ चुप देख सिपाही सोनाक चेन निकालि पार्वतीक हाथमे दैत बाजल-

"एकरा रखू। सगुनक रूपमे पटवारीजी देलैन।"

सोनाक चेन लैत पार्वती आरो गदगद भऽ गेली। मुस्कियाइत गंगानन्द तखने कहलखिन-

"कुटुमैतीक पहिल दिन छी तँए बिनु भोजन करौने सिपाहीजीकेँ केना जाए देबैन। जाउ, भानसक ओरियान करू।"

पतिक बात सुनि पार्वती चेनकेँ समेट भानस करए गेली। सिपाहीकेँ गंगानन्द पुछलखिन-

"पटवारीजीक कुल-मूल केहेन छैन?"

सतकेँ छिपबैत सिपाही घटकक शैलीमे कहलकैन-

"ऐँह, कुल-मूलक की गप करै छी। कुले-मूलक चलैत एते पैघ कुरसीपर छैथ किने। राजक बिसवासू लोक छैथ। जेहने कुल-मूल तेहने परिवारक आचार-विचार आ बेवहारो छैन। भागमंते घरमे ओहन-ओहन कनियाँक आगमन होइ छइ।"

भोजन कऽ दुखन सिपाही बिशेसर ऐठाम पहुँचल। बिशेसरकेँ ओही दिनसँ जनैत जइ दिन बिशेसर सियाराम सिपाहीकेँ कदीमा दुआरे मारने छल। हर जोति कऽ आबि बिशेसर नहा कऽ खाइले आँगन पहुँचल कि दुखन रस्तेपर सँ शोर पाड़लक। अनठिया अवाज सुनि बिशेसर आँगनसँ निकैल डेढ़ियापर आबि सिपाहीकेँ पुछलक-

"कोन काज अछि?"

सिपाही कहलक-

"अहाँसँ किछु खानगी गप करैक अछि, तँए एलौं।"

'खानगी गप' बुझि बिशेसर सिपाहीकें कहलक-

"आउ, अँगने आउ। गरीब लोकक दरबज्जा-अँगना एक्के होइ छइ। खाइ बेर छै जे किछु साग-सत्तू भेल अछि, दुनू गोरे मिलि-बाँटि कऽ खेबो करब आ गपो करब।"

बिशेसरक संग दुखन आँगन आबि बाजल-

"हम अखने गंगानन्दजी ऐठाम खेलौं। अहाँ खाउ, हम बैसै छी।"

बिशेसर खेबो करए आ मने-मन सोचबो करए जे हमरासँ राजक सिपाहीकें कोन काज हेतइ। हमरा की कोनो खेत-पथार अछि जे राजसँ मतलब रहत। लऽ दऽ कऽ घराड़ी अछि सेहो बेलगाने।

दुखन बिशेसरकें गहराइसँ पढ़ैत जे एकटा अदना आदमी राजक सिपाहीपर हाथ उठौलक ई नान्हिटा गप नै भेल। आखिर एकरा भीतर कोन शक्ति छिपल छै जे एते साहसी अछि।

बिशेसर खा कऽ उठल। मोहनी ओसारेपर बिछान बिछा देलक। दुनू गोरे बिछानपर बैस गप-सप्प करए लगल। सिपाही बिशेसरकें पुछलक-

"अहाँकें केते खेत अछि?"

मुस्कियाइत बिशेसर बाजल-

"हमरा खेत-पथार नै अछि। खाली घराड़ीए-टा अछि। कमाइ छी खाइ छी। मस्तीमे जिनगी बितबै छी।"

बिशेसरक बात सुनि सिपाही चकित भऽ गेल। बिशेसर केते मेहनती अछि जे सिरिफ दूटा हाथ-पएरक बले एते साहसी आ खुशीसँ जिनगी बितबैए..!

चकित होइत दुखन बाजल-

"बिशेसर भाय, हमर नाओंएटा दुखन नै छी आ ने राजेक सिपाहीटा छी। जिनगीमे एकटा व्रत केने छी जे गरीब-गुरबाकें जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करब। जे अखन धरि निमाहैत एलौं। आब तँ सहजे राज जाइए रहल अछि। किछु दिनक नोकरी अछि। तँए जहाँ धरि जे उपकार भऽ सकत ओ गरीब-गुरबाकें करबै। अखनो ओहने काजसँ आएल छी।"

जिज्ञासासँ बिशेसर पुछलक-

"केहेन काज?"

"ऐ गाममे बहुतो गोरेकें मलगुजारी दइ दुआरे जमीन निलाम होइपर अछि। ओ हमरा बचेने बँचि जाइत। तँए ओकरा सभकें बजाउ। हम मंगनियेँ रसीद दऽ देबइ।"

'रसीद' सुनि बिशेसर चौंक गेल। मुदा अपनाकें सम्हारि बिशेसर गप-सप्प आगू बढ़ौलक। दुनूक बीच आत्मीयता सेहो बढ़ए लगल। जइ बाटक बटोही बिशेसर ओही बाटक चलनिहार सिपाहियो। मुदा तैयो बिशेसरकें मनमे भेलै जे जँ कहीं रसीद चोरा कऽ अनने हुअए तखन तँ सभ धोखामे पड़ि जाएत। मुदा फेर मनमे उठलै जे रसीदक पाइयो तँ नहियेँ लगैत। बुझल जेतइ...।

ततमत करैत बिशेसर बचनाकें बजबैले भोलियाकें पठौलक। भोलिया संगे बचना आएल। सिपाहीकें देखते बचनाक करेज कँपए लगलै। बचनाक स्त्री फुलिया सेहो पाछू-पाछू नुका कऽ आबि बिशेसरक घरक कोनचर लग ठाढ़ भऽ गेली। बिशेसर बचनाकें कहलक-

"बचन, दुखन सिपाही अपन हितैषी छैथ। बिनु पाइयेक तोरा सभ खेतक रसीद दऽ देथुन।"

'मंगनी रसीद' सुनि बचनाक छाती सूप सन भऽ गेलइ। मनसँ

जमीन निलामीक डर सेहो पड़ा गेलइ। सदे रसीद बचनाकें दैत दुखन बाजल-

"सभ जमीनक रकबा जोड़ि कऽ चढ़ा लेब।"

रसीद मोड़ि बचना मुट्ठीमे लऽ विदा भेल। काते-कात फुलिया दौगल आगूमे जा बचनाकें पुछलक-

"की भेल?"

हँसैत बचना बाजल-

"चुप्पेचाप चलू। विपैत टरि गेल।"

एकाएकी बिशेसर एक्कैस गोरेकें रसीद दिया देलक। निलामीक पहाड़ गाममे ढहि गेल। सौंसे गामक किसानक बीच खुशीक हड़बिड़ो मचि गेल। सबहक सुखाएल चेहरा हरिअर भऽ गेल।

जखन बाइली लोकसँ बिशेसरक आँगन खाली भेल तखन दुखन सिपाही बिशेसरकें पुछलक-

"बिशेसर भाय, अहाँ गाममे राजक परती-पराँत गैरमजरूआ जमीन केते हेतइ?"

आँखि उठा बिशेसर परतीपर नजैर दौगबए लगल। मुदा सभ परती तँ नजैरमे नै एलै खाली एकटा परती जे पोखैरक दछिनबरिया महारक एक-डेढ़ बीघाक एलइ। अबिते बिशेसर कहलक-

"एक-डेढ़ बीघाक परती एकटा छइ।"

एक-डेढ़ बीघा सुनि सिपाही बाजल-

"डेढ़ बीघा जमीनक बन्दोबश्ती रसीद दऽ दइ छी। हम काल्हि जाएब। जाइसँ पहिने ओइ जमीनक दखल करा देब। बरद तँ अपना नहियेँ हएत, पाँच-छहटा हरक भाँज लगा लिअ। भाँजो असानीसँ लगि जाएत। जेकरा सभकें मदैत केलिऐ ओ एक दिन हर नै देत।"

सिपाहीकें गाँजाक तलक लगल। झोरा खोलि पित्तैरसँ मेढ़ौल चीलम, नेपलिया जट्टाबला गाँजा आ सरेसाक बड़की तमाकुलक पात निकालि दुखन चीलमक जोगार करए लगल। गाँजा देख भोलियोक मन चटपटाए लगलै। दुखन बुझि गेल। भोलयाकें देख सिपाही बिशेसरसँ पुछलक-

"भोलिया भीन अछि कि साझी?"

बिशेसर बाजल-

"देखियौ जे पच्चीस सालक छौड़ा अछि तखन केहेन झखरल बुझि पड़ैए। बेहूदा गाँजा-भाँग पीब सोन सन शरीरकें माटि बना लेलक!"

गाँजाक सोंट मारि, कनी काल मुँहमे धुँआ रखि दुखन ऊपर फेकलक। फेर एक सोंट मारि दुखन कनी काल हाथमे चीलम रखि बिशेसरकें कहलक-

"बिशेसर भाय, गाँजा-भाँग जोगी-फकीरक थोड़े छी। एतेटा उमेरमे हम कहियो ताड़ी-दारू मुँहमे नै लेलौं। जहिया कहियो राज-दरबारमे कोनो उत्सव होइ छै तहिया खाइ-पीबै तँ सबहक संगे छी मुदा अंग्रेजिया-दारू आइ धरि मुँहमे नै लेलौं। बड़ तलक लगल तँ गाँजा पीब लेलौं।"

दोसर दम मारि दुखन तरैंग कऽ भोलियाकें कहलक-

"रे, तूँ जे गाँजा-भाँग पीबै छँह से किए? जखन अपना ओते ओकाइत नै छौ जे दूध-दही-घी खेमे आ ने अपना खुट्टापर गाए-महींस रखने छँह। तखन गाँजा किए पीबै छेँ। तूँ हमरा नै चिन्हलेँ हम राजक सिपाही छी। अखने, बापेक सोझहामे एक साए लाठी मारि गाँजा-भाँग छोड़ा देबौ आ पकैड़ कऽ लऽ जा छअ मास जहलमे बन्न कऽ देबौ, तूँ की बुझै छीही!"

सिपाहीक बात सुनिते भोलियाक देह कँपए लगल। कँपैत दुनू हाथसँ दुखनक पएर पकैड़ बाजल-

“सरकार, आइ दिनसँ गाँजा-भाँग नै पीअब।”

“कनने-खिजने नै हेतौ। दुनू कान पकैड़ पचास बेर उठ-बैठ आ सप्पत खा कऽ कह जे कहियो गाँजा नै पीब।”

डरे भोलिया दुनू कान पकैड़ उठए-बैठए लगल। पनरहे बेर उठल-बैसल कि दुनू जाँघ लोथ भऽ गेलइ। आगू उठिए-बैस ने होइ। दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलै।

घरक भुरकी देने भोलियाक स्त्री कान पकैड़ उठैत-बैसैत देखैत। अढ़ेमे ओ मुँहपर आँचर नेने खूब हँसैत। हँसबो करैत आ बजबो करैत-

“खूब होइ छैन! अनेरे सभ दिन साँझू पहरकें गरियबैत रहै छैथ। तैकाल जँ जवाब देबैन तँ चारि लाठी लगाइयो दैता। भने नीक होइ छैन। जेहेन चालि छैन तेहने दशो होइ छैन।”

जेकरा सभकें दुखन खेतक रसीद देलक ओ सभ घरमे रसीद रखि एका-एकी बिशेसर ऐठाम अबए लगल। सबहक मनमे खुशी। सभ अपनामे हँसी-चौल करैत। हँसैत बेंगबा कुरहरियाकें कहलक-

“दोस, जँ खेत लीलाम भऽ जैतौ तखन तोरा कातिक मासक अपियारीक कबै माछ खेनाइ निकैलतौ।”

उत्तर दैत कुरहरिया कहलकै-

“हमरेटा निकलैत आ तूँ जे हाटपर माछ बेच कऽ ताड़ी पीबै छँह, से अपन कह तोरा की होइतौ?”

सभकें चुप करैत सिपाही पुछलक-

“केते गोरेकें हर-बरद छह?”

केकरो एकटा बरद जे दोसरसँ भजैती लगौने। केकरो दूटा बरद जे हरबाह रखि जोतबैत। केकरो एकोटा नहि, जे अनके हर जोति अपनो धूरहा हर लऽ खेती करैत। सभ अपन-अपन बात सिपाहीकें कहलक। सबहक बात सुनि सिपाही बाजल-

“जे हरबाहि करै छी ओ शरीरसँ आ जेकरा बरद अछि ओ बरदसँ, काल्हि भोरे आबि पोखैर लगक परती बिशेसर भायकें जोइत दियौ। ओ परती हम बिशेसर भायकें बन्दोबस कऽ देलौं।”

जहिना एक गामक लोककें दोसर गामबलासँ झगड़ा भेलापर गामक धिया-पुतासँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुस धरि लाठी, भाला, फरसा लऽ कऽ पहुँच जाइत तहिना भोर होइते कियो हर-बरद, कियो कोदारि तँ कियो छुछे देहे बिशेसरक खेतमे पहुँच गेल। लोकक उजैहिया देख बिशेसर सोचए लगल जे सभकें जलखै कराएब केना पार लगत। केकरा जलखै खाइले देबै आ केकरा नै देबइ। तहूमे धिए-पुते बेसी अछि...।

दुनू हाथ माथपर लऽ बिशेसर कातमे बैस गुनधुनमे पड़ल। दुखन बिशेसरक चिन्ता बुझि गेल। बिशेसर लग आबि बाजल-

“बिशेसर भाय, एक्के घन्टामे खेतकें चीर-फाड़ि दखल कऽ लिअ। हम सभकें कहि देबै जे हमहूँ जाइ छी आ अहूँ सभ जाइ जाउ।”

दुखनक विचारसँ बिशेसरक मन हल्लुक भेल। सौंसे परतीकें खेत जकाँ चीर-फाड़ि सभ हर खोलि देलक।

◌

शब्द संख्या : 2278

आठ

गंगानन्दक बेटा–सुमनक बिआह सुनयनाक संग भऽ गेल। जहिना पनियाहा मेघ लटैक कऽ धरतीक लग चलि अबैत तहिना पटवारीसँ कुटुमैती भेने गंगानन्द धनक लग आबि गेला। सोना-चानीक गहना, फूल-पित्तैर आ स्टीलक बरतन, सूती-उन्नी आ रेशमी कपड़ा पटवारी टाएर गाड़ीपर लादि गंगानन्द ऐठाम पठौलक। बेटीक खोंइछमे पटवारी गामक सटले दोसर गाममे पचास बीघा जमीन सेहो देलक। ओ जमीन तेसरे-साल निलाम कऽ अपना नाओंसँ पटवारी बन्दोबस केने। दू जोड़ सिलेब रंगक बड़का बरद, दूटा बड़की गाए आ जमाएकें चढ़ैले एकटा बड़का घोड़ा सेहो देलक। समाँगक पातर रहने गंगानन्दकें तीनटा नोकर जे माल-जालक सेवासँ लऽ कऽ खेती करै तक-ले पठौलक। एकटा खबासिनीकें सेहो सुनयनाक सेवा-टहल-ले पठौलक।

चौघारा घर, तीनू भाँइक बीच गंगानन्दकें। तीनू भाँइक बीच भिनौज भेने एक-एक अलंग हिस्सा भेल। आबाजाही कम रहने एक अलंगक घर मूसक माटिसँ भरल। देवालक पलस्तर सेहो झड़ि-झड़ि खसलो आ खसितो।

दरबज्जा आ मालक घर तीनू भाँइक साझीए। पाहुने-परक एलापर यमुनानन्द आ श्यामानन्दकें दरबज्जाक काज होइत नइ तँ

अँगने घरसँ काज चलैत। सिरिफ गंगानन्देटा दरबज्जापर रहबो करैत आ चीजो-बौस रखैत। मालक घर नमहर। मुदा माले कम तँए कोनो भाँइकें अभाव नै खटकैत।

समधियौरमे जे समान गंगानन्दकें भेटल ओ परिवारमे रखैक समस्या ठाढ़ कऽ देलक। कपड़ा, बरतन तँ घरमे अँटि गेलैन मुदा गाए-बरद केतए बान्हल जाएत। तत्-खनात बाँसक खुट्टापर तिरपाल टांगि गाए-बरद आ धोड़ा बन्हैक जोगार कऽ लेलैन।

यमुनानन्द आ माला दुनू परानी सुमनक बिआहक सरमजान देख मने-मन जरए लगल। झगड़ाक जोगार माला ताकए लगली। समाजक स्त्रीगण कनियाँ देखैले अबए लगली। घरसँ ओसार धरि गंगानन्दक भरल। तँए बैसैयोक जगह नहि। जे कियो कनियाँ देखए अबैत ओ यमुनानन्दक खाली ओसार देख बैस जाइत। स्त्रीगणक बीच हाँ-हाँ, हीं-हींसँ लऽ कऽ हँसी-मजाक धरि होइत। लोकक हाँ-हाँ, हीं-हीं सँ मालाक देह जरैत...।

गाममे एकटा नवकी दादी। नवकी दादी विधवा। ओना उमेरो साठिसँ ऊपरे, बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीसँ घर भरल। नवकी दादी, जेहने बजैमे चरफर तेहने शुद्ध सोभावक सेहो। दरद ससारैक लूरि नवकी दादीकें। गाममे जेकरा केकरो पेटमे दरद उखरैत ओ नवकी दादीकें बजा अनैत। करुतेलसँ नवकी दादी तेना ससारैत जे लगले दरद ठीक भऽ जाइत। दरदे ससारि नवकी दादी दसनामा लोक बनि गेली। ने केकरोसँ एक्को पाइ लैथ आ ने केकरो काज खगए देथिन। अपन केहनो हलतलबी काज रहैन मुदा जँ कियो बजबए आबैन तँ अपन काज छोड़ि संगे ओकरा ऐठाम जा दरद ससारि देथिन। तँए समाजो हुनका बजैक अधिकार देने। केकरो उचित बात कहैमे नवकी दादी नै चुकैथ। ठाँइ-पठाँइ मुहेँपर नवकी दादी कहि देथिन।

मालाक ओसारपर गामक बेटी जातिसँ लऽ कऽ नव-पुरान स्त्रीगण सभ बैस गंगानन्दक समैध-समधीनक कुट्टी-चालि करैत। गंगानन्दक परिवारोक लोक आ समाजोक सभ नवकी दादीक गपसँ आनन्दित होइत। मुदा माला भीतरे-भीतर जरैत। मालाक रुष्ट मुँह आ बोलीकेँ अकानि नवकी दादी बजली-

“जेहने हूरार बाप छह तेहने ने ओकर कुलो-खुट हेबह।”

नवकी दादीक बात सुनि माला मुँह बन्न कऽ लेलक मुदा मनमे क्रोध बढ़िते गेल। कनियाँ देख-देख सभ चलि गेल।

यमुनानन्द दोकान गेल छल ओहो आएल। यमुनानन्दकेँ आँगन अबिते माला कहलखिन-

“जखन सभ भाँइ भीन भेलौं, सभ किछु बँटलौं तखन आँगन आ मालक घर किए ने बँटलौं?”

यमुनानन्दक हृदैमे परिवाक ममता तँए मालाक बात उत्कट लगलैन। मुदा जोरसँ किछु उत्तर देब उचित नै बुझि मिरमिरा कऽ कहलखिन-

“सभ भऽ जेतइ। अखन काजक घर अछि, पाहुन-परकसँ लऽ कऽ समाज धरिक लोक आँगन अबै-जाइ छैथ, नजैर नै अछि जे बताहि जकाँ बगए बनौने छी आ चिचिआइ छी।”

यमुनानन्दक बातकेँ अनसून करैत चोटाएल साँप जकाँ फुफकार कटैत माला बाजल-

“हम अपन घर-अँगना भैयाकेँ दऽ दिऐन आ हुनकर जे घर भरलैन से हुनकर छिऐन! अगर अहाँ बुते नै हएत तँ बाजू। हम देखा दइ छिऐन जे केहेन बापक बेटी हमहूँ छी। आइए जँ अँगनामे छहरदेबाली नै घींच दिऐन तँ फेर ओ कहता। जइ लोकक लाज अहाँकेँ होइए ओ सभ नै बुझै छै जे तीनू भाँइ भीन छी।”

कोहवरक कोठरीसँ सुनयना मालाक सभ बात सुनैत। दोसर कोठरीसँ गंगानन्द आ पार्वती सेहो सुनैथ। मालाक ऐगला बात सुनैले सभ कान पथने। कखनो गंगानन्द आँखि उठा पार्वतीकेँ देखैत तँ कखनो पार्वती गंगानन्दकेँ देखैन। तरे-तर गंगानन्दक मनमे उठलैन-

“की अही प्रतिष्ठा-ले एते केलौं? की भाएसँ भाए एते दूर भऽ सकैए? की हमर बेटा-पुतोहु यमुनानन्दक नै छिऐ? की समाजक नजैरमे तीनू सहोदर भाए नै छी? अगर भैयारीमे एहेन बेवहार हएत तँ दोसर-तेसरक संग केहेन हएत? अनेरे सभ किए ऐ जंजालमे पड़ल अछि?”

बिनु किछु बजने गंगानन्द घरसँ निकैल मुँह निच्चाँ केने दुआर दिस विदा भेला। डेढ़िया लग पहुँचते पाछूसँ पार्वती घुनघुना कऽ कहलकैन-

“जेना भाए-भावोक सेवा केलौं ओना जँ दोसरकेँ केने रहितौं तँ एहेन बात नै सुनितौं।”

अपन मनक बेथाकेँ छिपबैत गंगानन्द पार्वती दिस देख मुस्कियाइत दरबज्जापर चलि गेला। कोहवरक घरमे सुनयना मने-मन सोचैत जे एक तँ हम नव छी, दोसर ससुर आ पतिकेँ रहैत किछु बाजब उचित नहि। नइ तँ देखा दतिऐन जे माए केते दूध हुनका पिऔने छैन।

दछिनबरिया घरसँ श्यामानन्दक स्त्री गुलाब सेहो सभ बात सुनलैन। केतौसँ धड़फड़ाएल श्यामानन्द आबि पत्नीकेँ कहलखिन-

“कनी खाइले दिअ, आनठाम जाइक अछि।”

गुलाब थारी धुअ लगली। श्यामानन्द लोटामे पानि लऽ हाथ-पएर धुअए डेढ़ियापर गेला। हाथ-पएर धोइ घर आबि खाइले बैसला। थारी परोसि गुलाब पतिक आगूमे दऽ बगलमे बैस कहए लगलैन-

“अहाँ तँ अँगनामे नै छेलौं। भैया तँ चुप्पे रहैथ मुदा मैझली-दीदी गरैज-गरैज कहै छेलखिन जे अँगनामे छहरदेबाली घींच देब।”

पत्नीक बात सुनि श्यामानन्द बजला-

“भैया-भौजी जे करैथ मुदा हुनके जकाँ की हमहूँ करब? अखन धरि घरक कोनो भार नै बुझलौं। खाइ-खेलाइमे जिनगी बीतल। तीस बीघा जमीनमे दस बीघा अपन हिस्सा भेल। मात्र तीन गोरेक परिवार अछि, तइले गारि-गरौवैल कऽ खनदानक नाक कटाएब।”

श्यामानन्दक विचारसँ सहमत होइत गुलाब बजली-

“भागमे जे लिखल हएत से हेबे करत। तइले नीच काजपर उतैर जाए, ई नीक नहि।”

श्यामानन्द खा कऽ उठि बाहर जाएब छोड़ि पलँगपर बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे विचारए लगला। अखन धरि भगवानक भरोसे खेती चलैत रहल, जइसँ अछैत खेत रहनौं अन-पानिक दिक्कत होइत रहल। जँ कोनो साल सम-गम बरखा भेल तँ उपजा नीक भेल नइ तँ रौदी वा दाही भेल। अढ़ाइ-तीन सालसँ रौदी अछि, मुदा रौदी-दाहीसँ बँचैक उपए आइ धरि नै सोचलौं। बारह मासक साल होइए। जइमे सिरिफ चारिए मास बरसातक अछि। जइमे बेसी बरखा भेने दहार होइए आ कम भेने रौदी। मुदा बँचल आठ मास अछि तहूपर तँ नहियेँ किछु सोचल जाइए। ओना, अखन धरि हमहूँ यएह बुझै छेलौं जे पानि सिरिफ मेघेटा सँ होइए। माटिक तरोमे पानि छै जेकरा ऊपर आनि खेती-बाड़ी कएल जा सकैए, से बुझबे ने करै छेलौं। ओना इनार-पोखैरमे जरूर देखै छेलिऐ मुदा तैयो किछु करै नइ छेलौं खाएर जे भेल मुदा आब तरका पानि ऊपर अनैले बोरिंग गड़ाएब।

अखन हाथमे रूपैआ नै अछि घरमे गहना, खेत आ बड़का-बड़का गाछ सभ तँ अछि। तँए चाहे गाछ बेच कऽ वा खेत बेच कऽ

वा गहना बेच कऽ सभसँ पहिने बोरिंग जरूर गड़ाएब। जखने बोरिंग भऽ जाएत तखने खेती हाथमे चलि औत। जखने हाथमे खेती चलि औत तखने अन, तीमन-तरकारी उपजए लगत। एक बीघा खेत गाछी-बिरछी, घर-घराड़ीमे फँसल अछि। नअ बीघा तँ उपजैबला अछि। नअ बीघाक उपजासँ तँ पचास गोरेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलि सकैए। हम तँ तीनिए गोरे छी, तहूमे एकटा बच्चे अछि...। पानि हाथ एलासँ रौदियो मेटा जाएत, खाली कोनो-कोनो साल बाढ़िक खतरा रहत। सेहो मात्र चारिए मास। अन, तीमन-तरकारीक ढेरी लगि जाएत। जेते परिवारमे खरच हएत ओतबे ने, बाँकी फजिलाहा बेच कऽ जिनगीक विकासमे लगाएब। अखन धरि कोढ़ि बनि भाँग-गाँजाक पाछू समए बेरबाद केलौं मुदा आबो जँ चेती तँ बहुत-किछु कऽ सकै छी।

एते विचार श्यामानन्दक मनमे अबिते उठि कऽ ठाढ़ भेला। जेना-जेना मनमे विचार चलैत रहैन तेना-तेना चेहरामे मलिनता अबैत गेलैन। गम्भीर विचार श्यामानन्दकेँ गम्भीर चेहरा बनबैत गेलैन।

श्यामानन्दक गम्भीर चेहरा देख गुलाबक मनमे उठलैन, भरिसक परिवारक बोझ हिनका चिन्तित कऽ रहल छैन...। मुदा कनीए कालक पछाइत इन्द्रधनुषी आँखि, गुलाबी मुस्कानसँ श्यामानन्द पत्नीकेँ टोकलखिन-

“जिनगी बहुत कठिन होइए, मुदा नहि! बहुत असान होइत। सिरिफ चलैक ढंग बदलब जरूरी अछि। जँ सभ चलैक ढंग सीख लिअए तँ चैनक जिनगी सहजे-सहज बनि जाएत।”

अखन धरिक जिनगी दुनू बेकती श्यामानन्दक अल्हर-अबोधक रहल जे बदलैत नीक दिशा दिस बढ़ए लगल।

मुस्की दैत गुलाब पतिकेँ पुछलखिन-

“केतौ किछु हरा गेल की? जे एना अनून-बिसनून जकाँ मुँह लटकौने छी?”

गम्भीर स्वरमे श्यामानन्द बजला-

“हँ, हरेबो कएल आ भेटबो कएल। आइ धरिक जिनगी छोड़ि नव जिनगी बनबए चाहै छी। अहूँकेँ कहै छी जे आइसँ संगी बनि संगे चलू।”

संगीक नाओं सुनि गुलाब चौंकैत बजली-

“अखन धरि संगी नै छेलौं?”

सामंजस्य करैत श्यामानन्द बजला-

“हँ छेलौं, मुदा जहिना कोनो धारमे नाह भट्ठा[2] दिस बढ़ैत रहैए तहिना, जे भँसियाएब छल। मुदा शिरा[3] दिस चलब, चलब भेल। सिरा दिस चलैमे पुरुषत्वक जरूरत होइए जे वास्तविक जिनगीक दिशा दइए। चढ़ाइक जिनगी ओकरे कहल जाइ छइ। चढ़ाइले संघर्ष आ शक्तिक जरूरत होइत, तइले संगीक जरूरत पड़ैत।”

श्यामानन्दक विचार गुलाब नीक-नहाँति नै बुझि सकली। मुदा मनमे एकटा हड़बड़ाएल विचार एलैन, जे मरद-औरत मिला कऽ बिआहक रूपमे संकल्पित होइत। जइसँ सृष्टिक सृजन होइत। मुदा जिनगी तँ बहुत नमहर होइ छै, जइमे भूख-पियास, आपैत-विपैत-सुख-दुख इत्यादि गाड़ीक पहिया जकाँ घुमैत रहैए। तँए, अइले संगीक जरूरत होइए। जे एक-दोसरक मदैतगार बनि जिनगी दुरूस कऽ चलत। एते बात मनमे अबिते गुलाब उछैल कऽ बजली-

“संगी-ले संगी अपन सभ किछु न्योछाबर कऽ सकैए। हम

[2] जेमहर पानिक वेग जाइत

[3] जेमहरसँ पानिक वेग अबैत

आज्ञाकारी छी। जखन जे कहब ओ करैले अन्तिम साँस तक कोशिश करब।”

अखन धरि श्यामानन्द खेत बेच कऽ बोरिंग-पम्पसेट कीनब मनमे रखने छल मुदा पत्नीक सहयोग देख गतिशील आ गतिहीन सम्पैतपर नजैर पड़लैन। देखते विचार बदलए लगलैन।

घरमे पड़ल गहना-गुरिया, सोना-चानी जे गतिहीन बनि पड़ल अछि ओकरा किए ने गतिशील बना काज करी। मुदा श्यामानन्दक मनमे शंको होइत रहैन जे मालगुजारीक बेरमे पत्नी गहना नै देने रहैथ। ऐ शंकाक समाधान-ले श्यामानन्द गुम्म भऽ सोचए लगला तँ बुझि पड़लैन जे पत्नीक बदैल रहल छैन। परीक्षा करैक खयालसँ श्यामानन्द पत्नीकेँ कहलखिन-

“अहाँ अपन गहना दऽ दिअ, घरमे ओ पड़ले रहत आ भऽ सकैए जे जँ कहियो चोर-चहार आबि गेल तँ ओहो चलि जाएत। ओकरा बेच कऽ बोरिंग-पम्पसेट कीनि लेब। जखन खेतीक साधन बढ़त तखन उपजो-बाड़ी बढ़त। जइसँ हालतो सुधरत जखन हालत सुधैर जाएत तखन जँ गहनो लेबाक मन हएत तँ कीनि लेब।”

श्यामानन्दक विचार सुनि गुलाब हँसैत अपन गहनाक मोटरी अलमारीसँ निकालि आगूमे रखि देलखिन। पत्नीक सहयोग देख श्यामानन्दक ह्रदैमे खुशीक उफान उठल। ह्रदैक खुशी मुहसँ हँसी बनि लिकलए लगलैन। हँसैत श्यामानन्द बजला-

“अखन गहना रहए दियौ। हम बजार जाइ छी, पहिने बोरिंग-पम्पसेटक दाम बुझब तखन सोनरा दोकान जा सोना-चानीक दाम पता लगाएब। दुनूकेँ बुझि ओइ हिसाबसँ गहना बजार लऽ जा बेचब।”

गंगानन्दक खेती करैले पटवारी रामदेवकेँ पठौने। रामदेवकेँ

खेती करैक नीक लूरि। ओना रामदेव राजक नोकर मुदा किछु दिन-ले पटवारी ओकरा पठौने। बालगोविन्द आ चंचलकेँ गाए-बरद आ घोड़ाक देखभाल करैले पठौने। अखन धरि गंगानन्दक परिवारमे सवारी-ले साइकिल आ टायरगाड़ी छल। घोड़ाक आगमन पहिले-पहिल भेल।

सुमनकेँ तँ घोड़सवारी चंचल सिखा देलक। गंगानन्द असमंजशमे पड़ल छला। असमंजशक कारण रहैन, बेटाक सवारीपर बाप केना चढ़त। मुदा सवारीक घोड़ा रहैत साइकिलसँ चलब ईहो एकटा पैघ द्वन्द्व...। कखनो-कखनो गंगानन्दकेँ होनि जे घोड़ापर चढ़ि दस गाम घुमि लोककेँ देखा दिऐ। मुदा बेटाक सवारी। अगर जँ हम दोसर घोड़ा कीनि चढ़ब तँ बेटा-पुतोहुकेँ जलन हेतैन। मने-मन ओ सभ कहत जे केहेन स्वार्थी अछि। विचित्र स्थितिमे गंगानन्दक मन औनाए लगलैन।

दोसर दिन भिनसरे चंचल फुलौल बदाम अपना-ले बाटीमे रखि घोड़ाकेँ खाइले नाइदमे दऽ अपनो खाइत रहए। बुलैत-बुलैत गंगानन्द आबि चंचल लग ठाढ़ भऽ गेला। आगूमे गंगानन्दकेँ ठाढ़ देख चंचल मुँह बन्न कऽ हाँइ-हाँइ मुँहक बदाम घोंटए लगल। मुँहक बदाम घोंटि बाजल-

“मालिक! अहूँ घोड़ा चढ़ब सीख लिअ?”

चंचलक बात सुनि गंगानन्द कनी काल गुम्म रहि, कहलखिन-

“कहलौं तँ ठीके, मुदा ऐ घोड़ापर हमर चढ़ब उचित हएत?”

“किए ने हएत! ई तँ सवारी छिऐ।”

गंगानन्द बजला-

“बेटाक सवारीपर बापक चढ़ब उचित नहि।”

गिलास उठा पानि पीब चंचल कहलकैन-

“जइ दिन बेटा वा पुतोहुक मन खराब हएत, बजारसँ दवाइ अनैक वा डाक्टर ऐठाम जाइक जरूरी हएत, तखन की करबै?”

चंचलक बात सुनि गंगानन्द गुम्म भऽ बैस मने-मन सोचए लगल। ओना, चंचलक बात दमगर बुझि पड़लैन। बात बदलैत बजला-

“आब हमर उमेर घोड़ापर चढ़ैबला अछि? हो-ने-हो जँ कहीं गिर पड़ी आ हाड़-पाँजर टुटि जाए तखन तँ लोको दुसत आ अपनो कष्ट हएत।”

गंगानन्दक बातकेँ चंचल टारब बुझि कहलकैन-

“ई घोड़ा कोनो बोनैया छी जे अपने सूढ़िये चलत। सिखौल घोड़ा अछि।”

चुप्पे-चाप गंगानन्द उठि कऽ दरबज्जापर आबि बैस रहला। मुदा चंचलक बात गंगानन्दक मनकेँ पकड़ने रहलैन, तँए गुन-धुनमे पड़ल रहैथ। ताबे आँगनसँ खबासिनी चाह नेने एलैन। रामदेव सेहो आबि गंगानन्दक लगमे बैसल। दुनू गोरे चाह पीबए लगला। चाह पीब रामदेव बौगलीसँ तमाकुल निकालि चुनबए लगल। तमाकुलक चुन झाड़ि गंगानन्दोकेँ देलकैन आ अपनो मुँहमे लेलक। थूक फेक गंगानन्द रामदेवकेँ कहलखिन-

“एकाएक पसार भेलासँ काज सम्हारब कठिन भऽ रहल अछि। कखनो मन चैन नै रहैए। हदिघड़ी एमहर-ओमहर देखैत–सम्हारैत परेशान रहै छी।”

गंगानन्दक बात सुनि रामदेव कहलकैन-

“अगर पसार बेसी बुझि पड़ैए तँ आदमी रखि लिअ। सम्पैत

भेलासँ लोक सुख करैए आ अहाँ बेचैने रहै छी। अपने केते करब। दसटा कुटुम-परिवार भेला तैपरसँ समाज छैथ आ तहूसँ बेसी कारोबार भेल। असगरे केना सम्हारब?”

गंगानन्द-

“कहलौं तँ ठीके मुदा छोड़ियो देलासँ तँ नै हएत। कामतपर घर नै अछि, ओहूठाम घर बनौनाइ जरूरी भऽ गेल अछि।”

रामदेव-

“कामतपर अपन लगक लोककेँ भार दऽ दियौन। जँ से नै करब तँ आने-आने सभटा लूटि कऽ खा जाएत। तीन भाँइ छी, एक भाँइकेँ कामतक भार दऽ दियौन। अगर खेबो-पीबो करता तँ अपने भाए ने। जखन धनक पसार भेल आ तखन जँ समाजक काजमे आगू नै हएब तहन प्रतिष्ठा केना भेटत। तँए सालमे दू-चारिटा उत्सव समाजमे ठाढ़ करब जरूरी अछि।”

गंगानन्द-

“कोन तरहक उत्सव ठाढ़ करब?”

रामदेव-

“एँ, उत्सवक कमी छइ। पैछला जे पाबैन-तिहार अछि ओकरो मेला रूपमे ठाढ़ कऽ सकै छी, चाहे नवको ठाढ़ कऽ सकै छी।”

रामदेवक बात गंगानन्दकेँ जँचलैन। नातिनकेँ कहलखिन-

“दाइ, कनी श्याम नन्नाकेँ बजौने आबह?”

नातिन दौगल अँगना जा श्यामानन्दकेँ बजौने आएल। दरबज्जापर अबिते श्यामानन्द गंगानन्दकेँ पुछलखिन-

“भैया, अहाँ बजेलौं?”

गंगानन्द-

“हँ, आबह ऐठाम बैसह। एकटा विचार पुछैक अछि।”

श्यामानन्द बैसल। गंगानन्द बजला-

“बौआ श्याम, तूँ कामतक काज सम्हारि दाए।”

श्यामानन्दक आत्मबल जागि चुकल छल। इनकार करैत श्यामानन्द उत्तर देलकैन-

“भैया, हमरा हाथमे खेती-ले बोरिंग-दमकल आबि गेल। पहिलुका जिनगीकेँ नव जिनगी बनबए चाहै छी। आब लोहाक रिंच-हथौड़ी हाथसँ चलबए चाहै छी। तँए कामतक काज सम्हारब हमरा बुते केना हएत?”

श्यामानन्दक बात सुनि गंगानन्द गुम्मे रहि गेला। श्यामानन्द उठि कऽ अँगना चलि गेल। पुनः गंगानन्द नातिनकेँ यमुनानन्दकेँ बजा अनैले कहलखिन। नातिन यमुनानन्दकेँ बजौने आएल। यमुनानन्दकेँ अबिते गंगानन्द पुछलखिन-

“बौआ जामुन, हमरा तँ घरेपर सँ छुट्टी नै होइए, तूँ कामतक काज सम्हारि दैह?”

अराम तलब काज बुझि यमुनानन्द गछि लेलक। यमुनानन्द उठि कऽ आँगन जा पत्नीकेँ सभ बात कहलखिन। पचास बीघाक आमदनी उपजा-बाड़ी बुझि माला हँसैत कहलकैन-

“दियाद केहनो दुश्मन होइ तैयो दियादे होइए। जइ गाछक बखलोइया रहै छै ओहीमे लगै छइ।”

टटाएल खेत, दराइर फाटलमे जजात केना लगौल जाएत? तँए श्यामानन्द सबेरेसँ पम्पसेटसँ पटबए विदा भेला। डोरीबला पेन्ट तैपरसँ करिया गमछा लपेट श्यामानन्द कोदारि आ रिंच-हथौड़ीक झोरा लऽ खेत पहुँचला। खेत पहुँच मने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे

डेढ़ बीघा खेत पटबैमे कम-सँ-कम सात-आठ घन्टा लगत।

पट ठीक कऽ श्यामानन्द पम्पसेट स्टार्ट केलैन। नव बोरिंग आ नव मशीन रहनौं पानिक रफ्तार कम। पानिक कम रफ्तार देख श्यामानन्द मने-मन सोचए लगला जे भरिसक पम्पसेटमे कोनो गड़बड़ी अछि। किएक तँ बोरिंगमे कोनो पाट-पुरजा छइहे नै जे ढील-ढाल वा टुटल-फुटल हएत...। अनासुरती श्यामानन्दकेँ मन पड़लैन जे रौदी दुआरे पानि कम अबैए। खेतमे तेहेन-तेहेन दराइर फाटल जे पानि आगू-मुहेँ ससरबे ने करैत। मुदा बाढ़ि जकाँ नालाक पानि देख श्यामानन्दक मनमे सबुर भेलैन जे खेत जरूर पटत। कोदारि लऽ खेतमे पानि चालए लगला।

कनीए कालक पछाइत, करीब एक कट्ठा खेत पटल हएत, तइमे बगुला अबए लगल। पहिने तँ एक्केटा बगुला आ एकटा मेना आएल। मुदा तेकर पछाइत जेरक-जेर बगुला, मेना आ कौआ आबि गेल। जेमहर-जेमहर खेतमे पानि बढ़ैत तेमहर-तेमहर बगुलो मेना बढ़ि पिलुआ, कीड़ी, फनिगा बिछ-बिछ खाए लगल।

जखनसँ श्यामानन्द कोदारि आ रिंचक झोरा लऽ खेत दिस विदा भेला तखनेसँ गुलाबोक इच्छा होनि जे हमहूँ खेत जा देखिऐ। मुदा परिवारिक प्रथा- खेत जाइसँ गुलाबकेँ रोकि दैन। जलखै खा गुलाब पलँगपर पड़ि मने-मन सोचए लगली। विचित्र द्वन्द्वमे गुलाबक मन उलैझ गेलैन। कखनो मनमे उठैत रहैन जे हमरा खेत-पथार अछि तँ घरसँ बाहर नै जाएब। मुदा जे कियो नोकरी करत ओ की करत? ..फेर दोसर प्रश्न मनमे उठलैन जे हमरा खाइ-पीबै जोकर सम्पैत अछि मुदा जेकरा किछु ने छै आ भीख माँगए पड़ै छइ? गुलाबक मनमे प्रश्नो उठैन आ जवाबो...।

गुनधुन करैत गुलाब घरसँ निकैल खेत विदा भेली। खेत पहुँच

गुलाब देखलैन जे पति खेतमे केतौ दहिना पएरसँ पानि उपैछ पटबै छैथ तँ केतौ बामा पएरसँ। श्यामानन्द खेत पटबैक धुनिमे, तँए गुलाबपर नजैरे ने पड़लैन। श्यामानन्दक लग पहुँचते गुलाबकेँ हृदैक हँसी फुटलैन। गीत गबैत पतिकेँ इशारामे कहलखिन-

“पानी रे पानी, तेरा रंग कैसा...।”

पति-पत्नीक बीच श्यामानन्द आ गुलाबक प्रेम जे आइ धरि छल ओइसँ बदलल प्रेम दुनूक बीच आइ बुझि पड़ए लगलैन। अखन धरिक प्रेममे मान्सलता प्रमुख छल मुदा आइ कर्मक उपजल प्रेम दुनूक बीच आबए लगलैन...।

जे गुलाब सौंसे देह वस्त्रसँ झाँपब नीक बुझै छेली ओ साड़ीकेँ छाबासँ ऊपर डाँरमे खोंसि, सुखल खेत सभमे दुनू हाथे पानि उपछए लगली। ने श्यामानन्दकेँ बुझि पड़ैन जे गुलाब पत्नी छैथ आ ने गुलाबकेँ श्यामानन्द पति बुझि पड़ैन।

दुनू एक दोसरक सहयोगी बनि काजमे जुटल। जेरक-जेर मेना, बगुला आ कौआ कीड़ी-मकौड़ी बिछ-बिछ खाइत। एक जोड़ा मेना एकठाम बैस एक-दोसरक लोलमे लोल मिला अपन प्रेमक कथा सुनबैत। साँझ पड़ि गेल। मात्र जलखैए खेने श्यामानन्दो आ गुलाबो खेत पटबैत रहला। खेतो पटब लगिचाएले तँए छोड़ि कऽ जएबो उचित नै बुझि दुनू परानी खेतेमे...। दोसैर साँझ होइत-होइत डेढ़ो बीघा खेत पटि गेल। काजक खुशी दुनू परानी श्यामानन्दक भूख हेर लेलक। खेत पटिते श्यामानन्द दमकल बन्न कऽ बोरिंगक आगूमे जे पानि जमा छल, ओहीमे देह-हाथ धुअ लगला। दुनू परानी देह-हाथ धोइ कऽ सभ सामान लऽ आँगन विदा भेला।

◌

शब्द संख्या : 2822

नअ

श्यामानन्दक बोरिंगक चरचा सौंसे गाम हुअ लगल। दमकल चलै काल गामक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ धिया-पुताक मेला लगि जाइत। पम्पसँ निकलैत पानिक फब्बारा देख सभ अचम्भित होइत जे लोहामे एते पानि केतएसँ अबैए। ..बरखा आ बाढ़िक पानि तँ सभ देखने मुदा बोरिंगक पानि पहिले-पहिल देखैत। नब्बे बर्खक बुढ़िया दादी–सोन सन उज्जर धप-धप केश, मधुमाछीक छत्ता जकाँ देहक चमड़ा लड़-लड़ करै छैन। नमगर-छड़गर दोहरा देह घोकैच कऽ मौकनी हाथी जकाँ–लुदुर-लुदुर चलि कऽ दमकल लग आबि कातेसँ अवाज अकानए लगली। पहिले दादीकेँ भेलैन जे भरिसक रेलगाड़ी अबैए मुदा जखन दमकल लग पहुँचली तखन दमकलक अवाज बुझलखिन। ठेंगा रखि बुढ़िया दादी दुनू हाथ जोड़ि दमकलकेँ गोड़ लगली आ आगूमे पम्पसँ गिरैत पानिकेँ चुरूकमे लऽ सौंसे देह छिटलैन। पानिक पवित्रता देख बुढ़िया दादी चारि चुरूक पीबो केलैन आ पानिक पह देखैत-देखैत खेत धरि जा देखबो केली। पानिक वेग देख दादी मने-मन करीनक पानिसँ तुलना करए लगली। खेतकेँ पटैत देख दादी सोचलैन जे तेते पानि अबैए जे एक्के दिनमे सगरे बाध पटि जाएत। कनी काल ठाढ़ भऽ दादी खेत पटैत देख घुमि कऽ दमकल लग एली। दमकल लग अबिते दादीक मनमे भेलैन जे बड़ चिक्कन

पानि छै तँए नहा लितौं। मुदा फेड़ैबला साड़ी नै रहने नइ नहेली।

जहियासँ डेढ़ बीघा खेत बिशेसरकेँ भेल तहियासँ बिशेसर एक उखड़ाहा बोइन करए जाइत आ एक उखड़ाहा अपने खेतमे काज करैत। डेढ़ो बीघा खेतकेँ चारि कोला बना लेलक। दूटा कोला दस-दस कट्ठाक आ दूटा पँच-पँच कट्ठाक। तीन कोला–पच्चीस कट्ठा–क ऊपरका माटि उठा पाँच कट्ठाकेँ भीठ जमीन बना लेलक।

बेर टगैत सुति उठि कऽ बिशेसर मुँह-हाथ धोइ कऽ तमाकुल चुनबए लगल। तमाकुलो चुनबैत आ मने-मन सोचबो करैत जे जाबे खेतमे पटबैक जोगार नै हएत ताबे खेतक कोनो मोल नहि। पानि तँ खेतीक मुख्य अंग छी। मुदा पानिक जोगार करब तँ हँसी-ठट्ठा नइ छी। बोइन करैबला जँ बोरिंगक बात सोचए तँ ओ मात्र मनक उड़ाने हएत। मुदा जरूरी तँ अछि...।

गुनधुनमे पड़ल बिशेसरक मन तमाकुलो चुनाएब बिसैर गेल। अनासुरती बिशेसरक मनमे आएल जे हम ने गरीब छी, खेतो कम अछि मुदा हमरा खेतक आड़िएमे तँ बचनू आ बचनाक बेसी खेत छइ। तँए दुनू गोरेकेँ बुझा कऽ बीचमे बोरिंग गरबैले कहिऐ। एते दिन ने बोरिंगक गुण नै बुझै छल मुदा श्यामानन्दक उपजा देख तँ सभकेँ नजैर खुगलै...।

एते बात मनमे अबिते बिशेसर हाँइ-हाँइ तमाकुल चुना मुँहमे लऽ कनीए कालक पछाइत तमाकुलक सिप फेक मोहिनीकेँ कहलक-

"हम एकटा काजे जाइ छी, साँझ धरि आएब।"

कहि बिशेसर बचनू ऐठाम विदा भेल।

एक्के टोलमे बिशेसर, बचनू आ बचनाक घर। बचनूक घर पहिने पड़ैत तँए बिशेसर पहिने बचनू-ऐठाम पहुँचल। दुनू बापूत बचनू महींस लऽ कऽ पारा तकैले भोरे निकलल जे अखन धरि घुमि कऽ नै आएल

रहए। बचनूक दलानपर जा बिशेसर चारू दिस बचनूकेँ ताकए लगल। मुदा केकरो देखबे ने करैत। बचनूक ढेरबा बेटी पानि आनए अँगनासँ कल दिस निकलल कि बिशेसरपर नजैर पड़लै। डोल रखि रेखा आँगन जा माएकेँ कहलक-

"बिशेसर दादा दूरापर ठाढ़ छथिन।"

रेखाक बात सुनि माए कहलकै-

"जा कऽ पुछि लहुन जे कोन काज छैन?"

आँगनसँ रेखा दलानपर अबिते छलि कि बचनूकेँ महींसक संग अबैत बिशेसर देखलक। आगू-आगू बचनू आ पाछू-पाछू महींसपर चढ़ल बेटा। भूखे-पियासे दुनू बापूत लहालोट। बचनूकेँ देख बिशेसर पुछलक-

"अखन धरि बासिये-मुहेँ छह?"

भूखसँ बचनूक पेट खलपट। मुदा महींसकेँ पाल खेलासँ मन खुशी, तँए भूखकेँ बिसरैत बचनू बाजल-

"की कहिहह भैया। तीन बजे रातिएसँ महींस अर्र-बौं करए लगल। बिछानपर सँ उठि कऽ देखिऐ तँ गुप्प-गुप्प अन्हार। जेते समए बितैत जाइ तेते महींस जोर-जोरसँ डिरिआइ। तखनेसँ जागल छी। ओंघीसँ देहो भँसियाइए। मुदा राजाजीक कृपासँ महींस पाल खा लेलक। पाँच रूपैआक गाँजा हुनका कौबला केलिऐन। भीड़ो भेल तँ काजो भेल। केमहर-केमहर एलह हेन?"

जिज्ञासाक नजैरसँ बिशेसर बचनूकेँ कहलक-

"नमहर काजसँ आएल छेलौं मुदा तोहू तँ थाकले छह। ताबे बचना ऐठाम जाइ छी। नहा-खा कऽ तोहूँ ओतए अबिहह।"

बिशेसर आगू बढ़ि गेल। आँगन जा बचनू ओसारपर खुट्टा लागि

कऽ बैस घरवालीकेँ कहलक-

"राजाजी दहिन छेला। पारा देखते महींसमे लगि गेल। मुदा तेना घेरौर करए लगल जे आबै ने दिअए। हम ताबे नहाइ छी अहाँ एक आहूल घास लऽ जा कऽ महींसक आगूमे दऽ दियौ आ ओतइ बैस महींसकेँ तकैत रहब जे बैसए नहि।"

बिशेसर बचना ऐठाम पहुँचल तँ देखलक जे दुनू परानी रक्का-टोकी करैए। आँगनक टाट[4] उजाड़ि बचना सरल कड़ची छँटिया कऽ एक भाग रखैत आ नीक कड़ची दोसर भाग आ बचनाक घरवाली–फुलिया अँगनेसँ जोर-जोरसँ बजैत जे भदबामे टाट किए बन्है छी। घरवालीक बातपर धियान नै दऽ बचना टाटक कड़चियो सेरियबैत आ असथिरसँ कहबो करैत-

"अँगनाक मुँह परहक टाट छी। जखन उजाड़ि देलौं तँ बन्हबे करब।"

"टाट उजाड़लौं किए जे बेपर्द भेल! चारि दिनले की होइतै?"

पत्नीक प्रश्न सुनि जवाब दैत बचना बाजल-

"हमरा कि भदबा बुझल रहए जे टाट नै उजाड़ितौं। अगर अहींकेँ भदबा बुझल छेलए तँ किए ने टाट उजाड़ैसँ पहिनहि कहलौं! जखन टाट उजाड़ि देलिऐ तखन बन्हबे करब।"

दुनू बेकतीक रक्का-टोकी सुनि बिशेसर मने-मन हँसैत। बिशेसरपर नजैर पड़िते बचना डाँटि कऽ फुलियाकेँ कहलक-

"दरबज्जापर बिशेसर भैया छैथ आ अँगनामे अहाँ तूफान उठौने छी। चुप रहू!"

'बिशेसर भैया' सुनि फुलिया चुप भऽ ओलतीमे आबि दुआर

4 परदा

दिस तकलक तँ बिशेसरकेँ देख मुँह झाँपि लेलक। बिशेसरकेँ बचना कहलक-

"चौकीपर बैसह भैया। हमर हाथ मटियाह अछि। कनीए कड़ची सेरियबैले अछि तखन हाथ धोइ निचेनसँ गप करब।"

बिशेसर बचना लग आबि टाटक जगह नाइप, माटिपर कड़चीसँ चेन्ह दऽ बचनाकेँ टाटक बत्ती बैसबैले कहलक। दूटा बाँसक टोन बत्तीक तरमे दऽ बचना चारिटा बत्ती बिछौलक। ताबे बचनू सेहो लफरल आएल। तीनू गोरे टाट बान्हि, तीनटा खुट्टा गाड़ि देलक। तीनू खुट्टा लगा टाट बान्हि बचना पत्नीकेँ कहलक-

"टाट भऽ गेल। पहिने खर्ड़ासँ कुरकुट-मुरकुट खड़ैर लिअ तखन बाढ़ैनसँ बहारि लेब।"

तीनू गोरे कलपर जा हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर आबि चौकीपर बैसल। दुनू हाथ गमछासँ पोछि बचना तमाकुल चुनबए लगल। बचनू अपन महींसक बात बचनाकेँ कहलक। दुनू गोरे बिशेसर आ बचनूकेँ तमाकुल दऽ बचना अपनो मुँहमे लेलक आ बिशेसर दिस घुमि पुछलक-

"कोन काजे भैया आएल छेलह?"

थूक फेक बिशेसर दुनू गोरेकेँ कहए लगल-

"अपना तीनू गोरेक खेत एकठाम अछि। तँए विचार भेल जे एकटा बोरिंग तीनू गोरे मिलि कऽ गड़ा लएह। श्यामकेँ देखै छहक जे अवारा जकाँ भरि दिन वौआइत रहै छेलै से केहेन गिरहस्त भऽ गेल। गाममे कियो हाथ मिलबैबला छइ। जेहने अपने मेहनती अछि तेहने पत्नियोँ छइ। साले भरिमे दुआरपर बखारी बना लेलक।"

बिशेसरक विचार सुनि बचनू आ बचना गुम्म भऽ सोचए लगल जे ओते रूपैआ केतएसँ औत जे बोरिंग गड़ाएब। बड़का-बड़का

गिरहत बुते तँ होइते ने छैन आ हम सभ कोन मालमे माल छी...।

दुनू गोरेकेँ चुप देख बिशेसर बाजल-

"जहिना तूँ दुनू गोरे अनाड़ी छह तहिना तँ हमहूँ छी। मुदा श्यामानन्द तँ बोरिंगक तरी-घटी जनैए, तँए तीनू गोरे श्यामक ऐठाम चलि कऽ पहिने बुझि लएह।"

श्यामानन्दक बात सुनि बचनू बाजल-

"बड़ सुन्नर विचार भैया अहाँ कहलिऐ। श्यामक घर कि कोनो दूर अछि, तीनू गोरे चलू। अगर काज सम्हरैबला हएत तँ करब नै तँ नइ करब। तइले कि कोनो डाँर-बान्ह छइ।"

तीनू गोरे श्यामानन्दक ऐठाम विदा भेल। श्यामानन्द घरपर नहि। घरपर पता लगलै जे ओ खेतमे छैथ। तीनू गोरे खेत दिस चलल। खेतमे श्यामानन्द ओराहैबला मकइ-बालि बिछ-बिछ तोड़ैत। एक छिट्टा कोबी काटि कऽ आड़िपर रखने। दू-दू, अढ़ाइ-अढ़ाइ किलोक कोबीक फूल। फरिक्केमे तीनू गोरेकेँ अबैत देख श्यामानन्द आगू बढ़ि, दुनू हाथ जोड़ि बजला-

"गोड़ लगै छी भाय-साहैब। जखन ऐ बाध दिस एलौं तँ कनी हमरो खेती देख लियौ।"

मुस्कियाइत बिशेसर श्यामानन्दकेँ कहलखिन-

"बौआ श्याम, अहींक खेती देखैले आ किछु विचार करैले तीनू गोरे एलौं हेन।"

आगू-आगू श्यामानन्द आ पाछू-पाछू बिशेसर, बचना आ बचनू चलल। कोबीक छिट्टा लग ठाढ़ भऽ श्यामानन्द कहलखिन-

"बिशेसर भाय, आइ पनरहम दिन छी। पनरह दिनसँ एक-छिट्टा दू-छिट्टा कोबी रोज काटै छी।"

बिशेसर-

"कोबी बिकाइ केना अछि, श्याम?"

"भाय की कहूँ। घरेपर सभ कोबी बीकि जाइए। हमहूँ एते केने छी जे हाट-बजारसँ दू रूपैआ किलो कम दइ छिऐ। लेबालोकेँ असान आ अपनो असान, संगे समाजक लोक खाइए ईहो खुशी।"

आगू-आगू श्यामानन्द आ पाछू-पाछू तीनू गोरे आड़िए-आड़ि घुमि खेत सभ देखए लगला। बीघा भरि मकइ। पँच-पँच हाथक हरिअर-हरिअर फुलाएल गाछ। तीन-तीन, चारिटा बाइल गाछमे झुमैत। जेना जुआन कनियाँ अपन जुआनीक गुणसँ झुमैए तहिना मकइ-गाछ झुमि-झुमि एक-दोसरसँ लट्टा-पट्टी करैत।

मकइ आड़ि टपिते दू बीघा फुटल गहुम। दुनू बीघाक एक रंग गहुम, जेकरा देखलासँ बुझि पड़ैत जे जँ ऊपरसँ थारी फेकल जाए तँ ऊपरे-ऊपर छिछलैत केतौ-सँ-केतौ चलि जाएत। जहिना पोखैरक पानिपर झुटका फेकलासँ होइत तहिना। गहुमक सटले पूवारि भाग बीघा भरि अल्लू। अल्लुक गाछ जुआ कऽ लटुआएल। पाँत सभमे दराइर फाटि-फाटि गेल। आड़िक कातेक एकटा गाछकेँ बिशेसर खोधिया कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे किलोसँ बेसीए गाछमे अल्लु अछि। अल्लू देख बिशेसर श्यामानन्दकेँ पिठ ठोकि बजला-

"तोरे सन-सन जुबक जखन गामक खेत पकड़त तखन अनेरे सबहक उद्धार हेतइ।"

अल्लू खेतक बगलेमे पाँच कट्ठामे टमाटरक खेती। पाँचो कट्ठाक टमाटर गाछ फड़सँ लदल। गोटि-पँगरा गाछमे पकितो। जहिना मेघमे तरेगन देख पड़ैत तहिना पाकल टमाटर खेतमे। टमाटर खेत टपिते कागजी-जमीरी नेबोक दू कट्ठामे बगान। साले भरिक गाछ रहनौं गोटे-आधे फड़ पकड़ने। जुआनी पकड़ैले गाछ तेजीसँ डेग बढ़ौने। गाछक

जड़िमे पटबैले दड़ी बनौल। एकोटा घासक दरस गाछक जड़िमे नहि।

निंगहारि-निंगहारि बिशेसर आ बचनू गाछ सभकेँ देखैत। एकटा गाछमे एकटा सुखल डारि देख श्यामानन्द गाछक लग जा ओइ डारिकेँ काटि बिशेसर लग नेने आबि डारिकेँ हाँसूसँ चीर आँगुर भरिक कीड़ा निकालि सभकेँ देखौलकैन। आगू बढ़ि श्यामानन्द बिशेसरकेँ कहलैन-

"भाय साहैब, बीस गाछ दारीम, पनरह गाछ अनरनेबा, पाँच गाछ धात्री, दस गाछ लताम, पनरह गाछ मद्रासी आम, पचास गाछ अनारस, तीनटा मचान बना तीन रंगक छोटका-बड़का अंगुर, आठ गाछ बेल, चारि गाछ शरीफा, चारि गाछ आँता आ चारि गाछ सपाटू[5]क लगा पाँच कट्ठामे रोपने छी। पाँच कट्ठामे सिंगापुरी, बंशीबट, मरीचमान, भोस, गौरिया, बरहरी, दूधी, बागनर, दूधमुंगर, झुरकुटिया इत्यादि किसिम-किसिमक केरा रोपने छी। जइमे अखन तीस-पैंतीसटा घौर लटकलो अछि। जाड़क मास दुआरे जुआएल तँ नइ अछि मुदा कोशा काटि देने छिऐ।"

किरिण डुमल देख गुलाब आँगनसँ खेत आबि कातेसँ मुड़ी उठा-उठा श्यामानन्दकेँ तकैन। मुदा मकइ दुआरे देखबे ने करैथ। कोबीक छिट्टा लग आबि गुलाब ठाढ़ भऽ गेली। कनी कालक पछाइत चारू गोरेकेँ टमाटर खेत दिससँ अबैत देखलैन। लग अबिते गुलाबकेँ श्यामानन्द पुछलखिन-

"अनेरे किए धड़फड़ाएल एलौं। बिशेसर भाय सभ आबि गेला। हुनके सभकेँ घुमा-घुमा देखबए लगलौं तँए कनी अबेर भऽ गेल।"

बिनु संकोच केनहि गुलाब श्यामानन्दकेँ कहलखिन-

[5] चिक्कू

"कोबी कीनिनिहार सभ आबि आँगनमे बैसल छैथ, तँए एलौं। अहाँ जखन आएब तखन आएब ताबे हम कोबीक छिट्टा नेने जाइ छी। कनी अलगा दिअ।"

श्यामानन्द कोबीक छिट्टा गुलाबकेँ उठा देलखिन। गुलाब माथपर छिट्टा नेने आँगन विदा भेली। माथपर छिट्टा लऽ दुनू हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकैड़ दुलकी डेग बढ़बैत गुलाब 'सैंयाँ भेल किसनमा' घुनघुनाइत आँगन दिस लफरल चलली।

बिशेसर श्यामानन्दकेँ पुछलखिन-

"बौआ श्याम, खेती करैक एते लूरि केना सिखलौं?"

बिशेसरक बात सुनि श्यामानन्द मने-मन हँसैत बजला-

"भाय, अपनो छगुन्ता लगैए जे की छेलौं आ की छी। हमर सार पूसा कृषि कौलेजसँ पढ़ने छैथ। ओ खेतीक विशेषज्ञ छैथ। मुदा हमरा कहियो हुनकासँ खेतीक गप नै भेल छल। चारि बरख धरि ओ पढ़लैन। विद्यार्थियो नीक रहैथ आ मेहनतो खूब करैथ तँए फस्ट डिवीजनसँ पासो केलैन। पास करिते नोकरियो भऽ गेलैन। एक दिन हम सासुर गेलौं तँ अलमाड़ीमे भरल किताब देखलिऐ। किताब देख मनमे आएल जे दिवारे-दिम्मक सभ किताब खाइए जाएत, तइसँ नीक जे हमहीं एक मोटा साइकिलपर लादि लऽ जाइ। सासुरे छल तँए केकरोसँ किछु पुछैक जरूरते नहि। एक मोटा किताब अपना ऐठाम लऽ अनलौं। सभ किताबकेँ नीक जकाँति सेरिया कऽ रखलौं। मुदा पढ़ी कहियो नहि। किएक तँ भरि दिन गजे-भाँगमे बीत जाइ छल। मुदा जखन बोरिंग गड़ेलौं तखन खेतीक किताब सभ छँटिया कऽ निकाललौं। अनक खेतीक एकटा किताब, तरकारी खेतीक किताब, फलक खेतीक किताब निकालि-निकालि पढ़ए लगलौं। थोड़-थाड़ खेतीक लूरि तँ देखियो कऽ भऽ गेल छेलए मुदा कोन मासमे कोन

चीजक खेती हएत, कए बेर पटौल जाएत, कोन-कोन खाद केते-केते पड़तै, नीक बीआ केतए भेटत, ई सभ बात किताब पढ़ि कऽ बुझलौं। जखन सभ बात बुझि गेलौं आकि खेती दिस आरो बेसी मन दौगल। बोरिंग गड़ाइए नेने रही।"

झलफल भऽ गेल। हाँइ-हाँइ श्यामानन्द बारहटा मकइ बाइल आ तीनटा कोबीक फूल लऽ तीनू गोरेकेँ देलक। खेतक आड़िए-पर पतियानी लगा चारू गोरे बैस गप-सप्प करए लगला। बिशेसर श्यामानन्दकेँ पुछलखिन-

"बौआ, बोरिंग-दमकलमे केते खरच भेल?"

बोरिंगक चर्चा सुनि श्यामानन्द उन्मत्त भऽ बाजए लगला-

"भाय अहाँ लग बजैत लाज होइए। पहिने जखन बोरिंगक विचार मनमे उठल तखन हुअए जे केते लागत लगत केते नहि। किएक तँ लोकक मुहेँ पोखैर खुनबैक खरच सुनने रहिऐ तँए हुअए। मुदा जखन किनैले गेलौं तँ साढ़े चारि हजारमे सात गेज टाटाक नबे फुट पाइप, पैंतीस फुट पितरिया फिल्टर आ ऊषा मशीन भऽ गेल। छोट-छोट आरो कएटा समान होइ छै से सभ आ गड़ाइक खरच मिला कऽ पाँच साएमे भऽ गेल। कुल मिला कऽ पाँच हजारमे बोरिंग-दमकल भऽ गेल।"

बिशेसर-

"बोरिंग गड़बैक विचार मनमे केना उठल?"

मुस्कियाइत श्यामानन्द-

"जखन परिवारमे भिनौज भऽ गेल तखन तँ अपना ऊपर अपन परिवारक भार पड़ल। जखन भार पड़ल तखन सोचए लगलौं जे पहिलुका जकाँ जिनगी बितौलासँ भीख माँगए पड़त वा दोसर अपराधीक काज करए पड़त जे दुनू मनुख-ले अधर्मे छी। अनासुरती

मनमे आएल जे हमहूँ मनुख छी। खेत छोड़ि दोसर अवलम्ब नै देख खेती दिस धियान गेल। तखन खेतीक सम्बन्धमे सोचए लगलौं। जखन खेतीक सम्बन्धमे सोचए लगलौं तखन खेती-ले पानिक महत नजैरपर आएल। जखन पानिक महत बुझए लगलिऐ तखन पानिक जोगारक उपए सोचए लगलौं। जखन पानिक उपए सोचए लगलौं तखन बोरिंग दिस धियान गेल। जखन बोरिंग दिस धियान गेल तखन बोरिंग गड़बैक उपय सोचए लगलौं। बोरिंग गड़बैक विचार करिते रही आकि मनमे एकटा नव विचार जगल। ओ नव विचार छल सम्पैतक सम्बन्धमे। सम्पैत दू तरहक होइत, पहिल क्रियाशील आ दोसर ठमकल। क्रियाशील पूजी ओ छी जइसँ उत्पादन होइत आ गतिहीन पूजी ओ छी जे चलायमान नै अछि। एते बात मनमे अबिते अपन सम्पैत दिस तकलौं, तँ दुनू तरहक पूजी पर्याप्त बुझि पड़ल। दस बीघा जमीन भैयारीमे हिस्सा भेल छल जइमे आठ बीघा उपजाउ बुझि पड़ल आ दू बीघा घराड़ी, परती, गाछी-बिरछी, बँसबाड़ि इत्यादि मिला कऽ देखलिऐ। ओना गाछी, बँसबाड़ि तँ थोड़-थाड़ क्रियाशीलो अछि मुदा परती आ पाकल सुखल बाँस, गाछ सेहो बहुत बुझि पड़ल। ओना परतियोकेँ तोड़ि कऽ क्रियाशील बनौल जा सकैत मुदा तत्काल तँ ओ मारे अछि। परती आ सुखल-पाकल गाछपर नजैर अँटैक गेल। बोरिंगक उपय देख मनमे खुशी उपकल। मनमे खुशी अबिते एकटा आरो बात धियानमे आएल। ओ बात ई जे घरवालीक गहना अनेरे घरमे पड़ल अछि। अखन ओकरा बन्हकी लगा बोरिंग गड़ा ली आ उपजा-बाड़ी भेलापर छोड़ा लेब। बेसी-सँ-बेसी एतबे हएत ने जे छह महिना साल भरिक सूदि लागत। ई बात मनमे अबिते घरवालीकेँ पुछलयैन। घरोवाली मंथरा जकाँ नै द्रोपदी जकाँ मानि गेली। पेटीसँ गहनाक मोटरी निकालि आगूमे रखि देलैन। गहना देख क्षुब्ध भऽ गेलौं। दूटा गहना निकालि छह हजारमे बन्हकी लगेलौं। पाँच हजार

बोरिंग-दमकलमे खरच भेल आ एक हजार खेती करैले रखि लेलौं।"

सुनि बिशेसर मुड़ी डोलबैत बजला-

"हमरो तीनू गोरेक खेत एकठाम अछि। तीन बीघा बचनूक, दू बीघा बचनाक आ डेढ़ बीघा हमर। हमहूँ तीनू गोरे मिला कऽ बोरिंग गड़बए चाहै छी।"

बिशेसरक बात सुनि श्यामानन्द अचम्भित भऽ गेला। खुशीसँ छाती फुलए लगलैन। मुस्की दैत बजला-

"भाय, हाथमे पानि एलासँ गिरहस्तक जिनगी बदैल जाइ छइ। हमरे लोक अवारा कहै छेलए, मुदा आइ लोक प्रणाम करैए।"

श्यामानन्दक बात सुनि उत्साहित होइत बचनू बाजल-

"बिशेसर भैया, अहाँ गरीब छी मुदा हम आ बचन भाय तँ चीजबला छी। तीन हजार हम जोगार करब आ दू हजार बचन भाय करह। काल्हिए श्यामकेँ संग केने बजार चलू।"

सहानुभूति दैत श्यामानन्द बचनकेँ कहलखिन-

"दोकानदारसँ हमरा कारोबार चलैए तँए अधो-छिधो रूपैआक भाँज लगि जेतह तैयो काज चलि जाएत।"

चारू गोरे बजार जाइक समए बना लेलैन। शुभ काजमे बिलम नहि। बिशेसर श्यामानन्दकेँ कहलखिन-

"बौआ, भिनसर अहाँ अपने चलि आएब समदिया भरोसे नै रहब। हम सभ अखनेसँ रूपैआक ओरियानमे लगि जाइ छी।"

बिशेसरक बात सुनि श्यामानन्द बजला-

"नइ-नइ, समदिया भरोसे हम नइ रहब। भोरे किछु पानि पीब चलि आएब।"

सभ कियो उठि कऽ विदा भेला।

श्यामानन्दकेँ घरपर अबिते पत्नी पुछलकैन-

“एते अबेर केतए भऽ गेल?”

कहलखिन-

“बिशेसर भाय बोरिंग गड़ौता ओही गप-सप्पमे समए लगि गेल।”

बोरिंगक नाओं सुनिते गुलाब बजली-

“जँ बिशेसर भैया बोरिंगक विचार अहाँसँ पुछैले एला तँ अहुँक फर्ज भऽ जाइए जे रूपैआ-पैसा दुआरे काज बिथुत ने होइन। गाममे तँ बहुत लोक छै अनकासँ पुछैले किए ने गेलखिन। जँए अहाँपर बिसवास भेलैन तँए ने।”

रस्तामे बचनू बिशेसरकेँ कहलकैन-

“भैया, अहाँक खेत ऊँचगर अछि आ हमरा दुनू गोरेक नीच तँए ऊँचगरपर बोरिंग गड़ाएब नीक हएत।”

बचनूक बात सुनि हँसैत बिशेसर बजला-

“सभ कियो रहबे करब। जेतइ नीक हएत तेतै गड़ाएब।”

भोरे श्यामानन्द दतमैन करैत बिशेसर ऐठाम पहुँचला। बिशेसर सेहो बचनू ऐठामसँ आबि नहाइक ओरियानमे रहैथ। श्यामानन्दकेँ देख बजला-

“अखन धरि घुमिते छह श्याम?”

“हमरा मनमे भेल जे कोनो बाधा-ताधा ने त..। तँए आबि गेलौं।”

श्यामानन्द चोट्टे घुमि कऽ घरपर आबि हाँइ-हाँइ नहा कऽ जलखै खा बिशेसर ऐठाम एला। बचनू आ बचना पहिनहि आबि गेल छल। चारू गोरे बजार विदा भेला।

बजार पहुँच बोरिंगक पाइप, दमकल आ आरो-आरो समान सभ कीनि, टाएर गाड़ी भाड़ा कऽ सभ सामान लदलैन। दाम जोड़ि दोकानदारकेँ दऽ देलखिन। श्यामानन्द बचनूकेँ संग केने आगू बढ़ि मिस्त्री ऐठाम एला।

एक किलोक रौह माछ कीनि मिस्त्री पोलिथीनक झोरामे नेने घरपर पहुँचले छल कि श्यामानन्द शोर पाड़लकैन।

आँगनसँ निकैल मिस्त्री श्यामानन्द लग आबि पुछलकैन-

“केमहर-केमहर एलौं?”

मुस्कियाइत श्यामानन्द कहलखिन-

“एकटा आरो बोरिंग गड़बैक अछि। सएह कहैले एलौं। टाएर गाड़ी अही देने अबैए तँए गाड़ैक सभ समान लादि दियौ। काल्हि भोरेसँ हाथ लगा देबइ।”

श्यामानन्दक बात सुनि मिस्त्री बाजल-

“समान तँ पठा देब मुदा हाथ काल्हि नइ लगत। किएक तँ हमर सभ आदमी दोसर बोरिंग गाड़ैले गेल अछि।”

श्यामानन्द-

“दोसर कोनो उपए नइ छइ?”

मिस्त्री-

“हँ, छइ। हम तँ रहबे करब। जँ काज करैबला तीनटा आदमी भऽ जाए तँ काल्हियो लगि सकैए।”

बचनू-

“आदमीक कमी नै अछि। अखन समान नेने चलू आ जेतए बोरिंग गाड़ल जेतै तेतए बाँस-ताँस ठाढ़ कऽ खाधिक चेन्ह दऽ देब, हम सभ से खुनि लेब। जेते काज भेल रहत ओते समए काल्हि बँचि

जाएत।”

टाएर आबि गेल। सभ सामान लादि गप-सप्प करैत सभ कियो विदा भेला। थोड़े आगू बढ़लापर बिशेसर मिस्त्रीकेँ पुछलखिन-

“अहाँ पढ़लो-लिखल छी?”

‘पढ़ल-लिखल’ सुनि मिस्त्री चौंक बाजल-

“हम पढ़ल-लिखल नै छी। जखन बारहे-तेरहे बर्खक रही तखने बाबू मरि गेला। चारि भाए-बहिनमे दू बहिनक बिआह-दुरागमन बाबूए सोझाँमे भऽ गेल छल। दू भाए-बहिन कुमार छेलौं। घराड़ी छोड़ि एक्को धूर बाधमे खेत नै छल। मुदा माए जेहने लूरिगर तेहने जिबटगर। दोकानसँ तेबखा, खेरही आ मसल्ला कीनि आनए आ अदौरी-पापड़ बनबए। हमहूँ पापड़ बेली आ रौदमे सुखाबी। छोटकी बहिन आ माए अदौरी खोंटै। साँझू-पहर झोरामे लऽ हम जा कऽ बेच आबी। ओइसँ गुजर करी। बहिनक बिआहो केलौं। बहिनक बिआहक साल भरिक पछाइत अपनो बिआह केलौं। फागुनक समए रहै, धुर-झार लगन चलैत रहइ। कपड़ा दोकानदार-रामफलक नोकर पड़ा गेलइ। हम जखन पापड़ बेचए गेलौं तँ रामफल शोर पाड़लक। गेलौं। हमरा कहलक ‘नोकरी करबह?’ हम गछि लेलिऐ। दोसर दिनसँ नोकरी करए लगलौं। भरि दिन दोकानमे काज करी आ साँझमे अपना ऐठाम चलि आबी। गामपर आबि खाइ-पीबै राति धरि पापड़ बेल-बेल राखी। दिनमे माए ओकरा सुखबै। आमदनी बढ़ि गेल। मुदा जेते मन अपन काजमे लगए तेते नोकरीमे नहि।”

बिच्चेमे बिशेसर पुछि देलखिन-

“मिसतिरियाइ केना सिखलौं?”

मुस्कियाइत मिस्त्री कहलकैन-

“मामा गाम गेलौं। ममियौत भाए चापाकल गाड़ैले जाइत

रहैथ। हमरो चलैले कहलैन। हमहूँ गेलौं। जैठाम कल गाड़ैत रहैथ तैठाम हमहूँ कातमे बैस देखए लगलौं। सरा-सैर पाइप गड़ैत जाए। हमरा काज हल्लुक बुझि पड़ल। कमाइयो बढ़ियाँ। कल गड़ौनिहारक पतियानी लगल। दोसर दिनसँ हमहूँ काज करए लगलौं। दसे दिनमे मिस्त्री भऽ गेलौं। गाम अबै काल ममियौत, पुरना सभ औजार हमरा दऽ देलैन। गाम आबि हमहूँ कल गाड़ए लगलौं। नोकरी छोड़ि देलिऐ, कल गाड़ए लगलौं। जखन बैसारी हुअए तखन पापड़ बनाबी...। तीन साल चापाकल गाड़ैत-गाड़ैत बोरिंग गाड़ैक सभ औजार कीनि लेलौं। जखन सभ औजार भऽ गेल तबसँ बोरिंगक काज शुरू केलौं।”

मिस्त्रीक बात सुनि बिशेसर हँसैत पिठ ठोकि देलकैन। दिन उगले सभ घरपर आबि गेला।

घरपर अबिते गाड़ीपर सँ सभ सामान उताइर, गाड़ीबला-केँ पचास रूपैआ भाड़ा दऽ देलखिन। श्यामानन्द सेहो घर होइत एला। अबिते बिशेसर कहलकैन-

“श्याम, अखन सभ कियो छी। चलै चलू बोरिंग-ले जे जगह नीक हेतै से ठेमा लेब।”

बिशेसरक बात सुनि सभ कियो जगह देखैले विदा भेला। खेत पहुँच सभ बिशेसरक खेतकेँ ऊँच बुझि बोरिंग गाड़ैक जगह ठेमा लेलैन। सभ राजी भैला।

बिशेसर भोलियाकेँ खनती आनए कहलखिन। बचनू बाँसक टोन अनलक। बचना कोदारि आनि खाधि खुनए लगल। झलफल होइत-होइत बोरिंग गाड़ैक सभ जोगार लगि गेल। मिस्त्री चलि गेल।

दोसर दिन भोरे मिस्त्री आबि भोलियाकेँ कहलक-

“जेते औजार अछि सभकेँ गनि लएह आ धिया-पुतापर नजैर रखने रहिहह नइ तँ औजार गड़बड़ कऽ देत।”

सभ औजार गिनती कऽ झोरामे रखि भोलिया कान्हपर लऽ विदा भेल। खेतमे झोरा रखि भोलिया आ बचनू पोखैरसँ पानि आनि-आनि खाधि भरए लगल।

अखन धरि बचनाक केतौ पता नहि। मुड़ी उठा-उठा बिशेसर बचना घर दिस तकैत जे अखन धरि किए ने आएल।

बचनाकेँ नै अबैत देख बिशेसर बजबैले विदा भेला। बचनाक घरपर पहुँच बिशेसर देखलैन जे गाइयो-बरद घरेमे छै! ने बचनाक पता आ ने बचनाक घरेवालीक।

दरबज्जापर ठाढ़ भऽ चारूकात ताकए लगला। मुदा केतौ नजैरपर पड़बे ने केलैन। बिशेसर घुमि कऽ चलि एला।

बोरिंग गाड़ब शुरू भेल। श्यामानन्द झोरामे कोबी, टमाटर, अल्लू नेने पहुँचला। श्यामानन्दकेँ बिशेसर कहलकैन-

“बौआ, जाबे बोरिंग गाड़ल जाएत ताबे अहूँ एतै रहू।”

किरिण उगैसँ पहिने बचनूक पत्नी हाथ-पएर धोइ, गोसाँइ घर जा, गोसाँइक आगूमे एक-टंगा दऽ दुनू हाथ जोड़ि फुसफुसा कऽ गोसाँइकेँ कहलखिन-

“हे गोसाँइ बाबा, अगर शुभ-शुभ कऽ बोरिंग भऽ जाएत तँ सवा सेर लड्डु चढ़ेबह।”

कहि घरसँ निकैल उपास करए लगली। सबहक भानस आ जलखै बचनूए ऐठाम होइक विचार भेल छल तँए बचनूक पत्नी ओइ जोगारमे लगि गेली।

बिशेसर आ श्यामानन्द बगलमे बैस देखबो करैथ आ गप्पो-सप्प करैथ-

“बिशेसर भाय, जखन बोरिंग गड़ेलौं तखन लोक-सभ बाजए जे

बोरिंगक पानिसँ उपजा थोड़े हएत। बरखा पानि भगवानक पानि छिऐन आ बोरिंगक पानि तँ लोहा पाइपसँ अबैए तँए जजात जरिये जेतइ!”

श्यामानन्दक बात सुनि बिशेसर ठहक्का मारि हँसए लगला। बिशेसरकेँ हँसैत देख श्यामानन्द आगू बजला-

“एतबे नै भैया, खाद आनि जखन खेतमे देलिऐ तखन बाजए जे हाड़क खाद बनै छइ। हिन्दु केना खाएत।”

दुनू गोरे गप-सप्प करिते छल कि बचना धड़फड़ाएल पहुँचल। बिशेसरपर नजैर पड़िते बाजल-

“मौगीक फेरीमे पड़ि गेल छी भैया। जखनसँ घरवाली बोरिंगक नाओं सुनलक तखनसँ जेना भूत लगि गेलइ! भरि राति ने अपने सूतल आ ने हमरा सुतए देलक। भरि राति की कहलक की नै कहलक से ओते मनो ने अछि। अधरतिएमे पड़ा कऽ केतए-दन चलि गेल। भोरेसँ तकैत-तकैत तबाह भऽ गेलौं मुदा केतौ ने भेटल। बोरिंगक दुआरे ताकब छोड़ि चलि एलौं। मालो-जाल अखने बाहर केलौं हेन।”

बचनाक बात सुनि बिशेसर कहलखिन-

“जे भेलै से भेलै, काजमे लगि जाह। पाछू बुझल जेतइ।”

भरि दिनमे अस्सी फूट बोर भेल। अस्सी फूटपर जा कऽ लस्साबला माटि पकड़ा गेलइ। आगू पाइप धँसबे ने करैत। जेना पहाड़ी इलाकामे होइत। सबहक बाँहि आ जाँघ सेहो दुखाए लगलै।

सबहक थाकैन देख मिस्त्री काज छोड़ि देलक। सभ समान सेरिया कऽ रखि मिस्त्री बचनू आ भोलियाकेँ कहलक-

“इनहोर पानिसँ नीक जकाँति बाँहि आ जाँघकेँ ससारि लेब नइ तँ काल्हि काज कएल नै हएत।”

दोसर दिन, भोरेसँ सभ काजमे जुटि गेल। पहिलुके तोरमे दसो फुट लस्साबला माटिसँ आगू बढ़ि बाउलपर पहुँच गेल। पैंतीस फुट मोटका बाउल भेटलासँ मिस्त्रीक मन गदगद भऽ गेल।

चारि बजैत-बजैत बोरिंग गड़ि गेल। खुट्टा-खुट्टी उखाड़ि मिस्त्री दमकल लगा बोरिंग चला देलक।

◌

शब्द संख्या : 3719

दस

बिशेसर बोनिहार नै आब छोटका किसान भऽ गेल। अपन बदलैत जिनगी दिस नजैर दौगबैत बिशेसर मने-मन सोचए लगला जे कम-सँ-कम एकटा बरद जरूरी अछि। डेढ़ बीघा खेती कोदारिसँ तत्काल तँ भऽ सकैए। मुदा बिनु बरदे काज चलब कठिन अछि। अगर केकरो हर जोति जँ हर-बरद लेब तँ तीन दिन जोतब तखन एक हरक काज हएत। ऐ बेर तँ समाज मदैत केलक तँए खेती भऽ गेल। मुदा सभ दिन तँ से सम्भव नै अछि। तखन एकटा उपए अछि जे अदहा-छिदहा काज कोदारियोसँ कऽ लेब आ अदहा-छिदहा हरो मोल लऽ कऽ कऽ लेब। जखन पाइ-कौड़ी हएत तखन बुझल जेतइ। फेर बिशेसरक मनमे आएल जे जँ कियो बरद पोसियाँ लगौत तँ सएह लऽ लेब। अपन जुतिक काज रहत, केकरो जुतिमे नै रहब। मुदा केकरा पुछबै जे बरद पोसियाँ लगेबह? समाजमे तँ यएह देखै छी जे कियो गाए वा बरद पोसियाँ लगबैए वा खेत भरना लगबैए तँ सुराक लगा काज होइ छइ। दू-चारि गोरे लग बजबै तँ अपने भाँज लगि जाएत। जखन बरद हएत तखन हरो बनबए पड़त। तत्काल जँ हर नहियोँ हएत तैयो साल-दू साल काज चलि सकैए किएक तँ बेसी किसान ओहन अछि जे दू-दूटा हरखाड़ा आ पालो रखने अछि। जेना-जेना उपए होइत जाएत तेना-तेना चीजो बनबैत जाएब। मुदा सभसँ जरूरी अछि

जे जखने बरद भेट जाएत तखने ओकरा रहैले घरोक जरूरी हएत। घर नै अछि। एकटा बरद रखैले बड़ भारी समस्या तँ नहियेँ अछि मुदा समस्या तँ अछिए। भनसे घर लगा कऽ एकचारी बान्हि ठाढ़ कऽ लेब। चारि-पाँचटा खुट्टा, एकटा पाढ़ि आ आठ-नअ हाथक ठाठ लागत। तीन-चारिटा बाँस कीनि लेब तहीसँ सभ काज भऽ जाएत। बिशेसर सोचिते छला कि मोहिनी आबि पुछलकैन-

"किए मन्हुआएल बैसल छी?"

पत्नीक बात सुनि बिशेसर बाजल-

"भने अहूँ आबि गेलौं, आउ ऐठाम बैसू। अखन धरि तँ बोइने करै छेलौं, ने माल-जाल खुट्टापर छल आ ने बेसी असार-पसार तँए एक्कोटा घरसँ काज चलि जाइ छल। मुदा आब खेतो भेल आ पानियोँक उपए भऽ गेल। जखन खेत आ पानि भऽ गेल तखन उपजो बढ़बे करत। तेतबे नहि, जखन उपजा-बाड़ी बढ़त तँ ओकरा रखैले घरमे कोठियो चाही, नार-पात रखैले जगहो चाही। ओना घराड़ीक कमी नै अछि मुदा ओकरा बेवस्थित ढंग धड़बए पड़त।"

मुड़ी डोलबैत मोहिनी बजली-

"हँ, से तँ करैये पड़त।"

बिशेसर-

"अखन धरि गाछी-बिरछीसँ जारैन तोड़ि अनै छेलौं, पत्ता बीछि अनै छेलौं तखन भानस होइ छल। मुदा जाबे जारैनक ओरियान नै कऽ लेब ताबे तँ अनके गाछी-बिरछीक आशा रहत। तँए विचार अछि जे एकटा बरद पोसियाँ लऽ ली। बरद रखलासँ जरनोक ओरियान भऽ जाएत आ खेतो जोतैक। मुदा बरद रखैसँ पहिने घर बान्हए पड़त। घर जे बान्हब से अपना बाँसो-लकड़ी नहियेँ अछि।"

मोहिनी-

"चारिटा हाट भोलिया केलक जइसँ दू साए रूपैआ कमाएल। तँए हमर विचार अछि जे भोलियाकेँ साझी कऽ लियौ। आइ जँ दू-चारि भाँइ भोलिया रहैत तँ एकटा बातो मुदा से तँ नहियेँ अछि। लऽ दऽ कऽ असगर अछि।"

मोहिनीक बात सुनि बिशेसर गुम्म भऽ गेला। थोड़े कालक पछाइत बजला-

"बजलौं तँ ठीके मुदा ओकरा भीने किए केलिऐ। बेहूदा छौड़ा-मारैरक भाँजमे पड़ि दुइर भऽ गेल तँए ने तामस उठल आ भीन केलिऐ। यएह उमेर ने कमाइ-खटाइबला होइ छइ। अखन जे काजसँ देह चोरौत तँ कमाएत कहिया?"

मुड़ी डोलबैत मोहिनी कहलकैन-

"कहलिऐ तँ ठीके मुदा जहियासँ दुखन सिपाही रेबाड़लकै तहियासँ भाँग-गाँजा छोड़ि देलक!"

मुस्कियाइत बिशेसर बजला-

"छुतहरक चालि छोड़ि जँ मनुखक चालि धड़त, तखने ने इज्जत-आबरू हेतइ। हमरा कि कोनो ओकरासँ दुश्मनी अछि। शोर पाड़ियौ दुनू परानीकेँ।"

मने-मन खुशी होइत मोहिनी आँगन जा दुनू परानी भोलियाकेँ बजौने एली। पिता लग अबैत भोलियाकेँ छाती धकधकाइत, मुदा तैयो आबि पिताक आगूमे बैसल। भोलियाक पत्नी-मेना सेहो बगलमे ठाढ़ भेली। बिशेसर भोलियाकेँ कहलखिन-

"रौ भोलिया, भाँग-गाँजा पीबै दुआरे तोरा भीन केने छेलियौ जँ आब छोड़ि देलेँ तँ आइसँ साझी भऽ जो। हमहूँ दुनू परानी दिनोदिन बुड़हे होइत जाएब मुदा तूँ दुनू बेकती तँ जुआन छेँ। जेते मेहनत करमे ओते अपने ने सुख हेतौ। एते दिन खेतो ने छल, बोइन करै छेलौं।

मुदा आब तँ खेतो भऽ गेलौ आ पटबैले बोरिंगो। तँए मन लगा खेती कर। बड़बढ़ियाँ छोट-छीन रोजगारो शुरू केलेँ। परिवार अगुअबैले बहुत मेहनत आ बहुत चीजक जरूरत होइ छइ। पाइक काज तँ पाइए करत। घर लग जे डेढ़ कट्ठा खेत अछि तइमे आँगन, घर, दुआर, मालक थैर आ अगवास बना-ले आ तीमन-तरकारी बोरिंगे लग करब।"

पतिक बात सुनि मोहिनी बजली-

"एते दिन सोलहो आना बोइनेपर गुजर करै छेलौं, पाइक कोनो आमदनी नइ छल मुदा आब तँ थोड़-थाड़ पाइयोक आमदनी भाइए गेल। समाजमे पैंचो-पालट ओकरे भेटै छै जेकरा आमदनी रहै छइ। एक्के बेर जे सभ काज करए चाहब से तँ नइ हएत मुदा किछु नगदो आ किछु उधारियो लऽ कऽ एक-एकटा करैत जाएब तँ सभ काज भऽ जाएत।"

पत्नीक बात धियानसँ सुनि बिशेसर बजला-

"अहाँक विचार एक तरहक अछि मुदा एतेटा जिनगीमे केकरोसँ किछु मंगलौं नहि, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे केना माँगब?"

बिशेसरक विचारमे छिपल संकल्पकेँ मोहिनी बुझि गेली। सामंजस्य करैत बजली-

"अपने दुनू परानी बुढ़ भेलौं। पाकल आम जकाँ कखन छी आ कखन गिर पड़ब तेकर कोन ठेकान। तँए भोलियाकेँ घर-दुआर सुमझा दियौ। जाधैर कियो घरक भार उठा नै चलैत ताधैर अबोधे-अनाड़ी रहि जाइत। करैत-करैत कियो सीखैए।"

मोहिनीक विचार बिशेसरकेँ जँचलैन। मुदा मनमे द्वन्द्व जगि गेल। द्वन्द्व ऐ दुआरे जगलैन जे अपना ढंगसँ परिवारोक रस्ता आ समाजोक बीच रहैक बनौने छैन...।

एक टकसँ बिशेसर आगू-मुहेँ देख सोचए लगला। तैबीच बचनू आएल। बचनूकेँ देखते बिशेसर हाथक इशारासँ ओछाइन देखबैत कहलखिन-

"आबह, आबह बचनू। ऐठाम बैसह।"

ओछाइनपर बैस बचनू बिशेसरकेँ कहलक-

"भैया, बड़ चिन्तित देखै छिअ?"

बचनूक बात सुनि बिशेसर बिनु कोनो लागि-लपैटिक कहलक-

"चिन्ता कोनो तेहेन नै अछि। परिवारेक सम्बन्धमे किछु मनमे आबि गेल।"

परिवारक नाओं सुनिते बचनू बाजल-

"परिवारेमे ने भैया सभ सुख-दुख भोगैए। तँए चिन्ता तँ करै पड़तह।"

"कहलह तँ ठीके मुदा हमर चिन्ताक कारण दोसर अछि। एते दिन बोइन करै छेलौं, गुजर करै छेलौं। मुदा आब अपना खेतो भऽ गेल, खेत पटबैले पानियोँक जोगार भऽ गेल। तँए आब उपजा-बाड़ी सेहो बढ़त। ओइ खेतकेँ जोतै-कोड़ैले बरद चाही, हर-कोदारि चाही आ आरो औजारो चाही। बरद रखैले घरो चाही। नार-पात रखैले जगहो चाही। एते दिन तँ एक्कोटा घरसँ काज चलि जाइ छल मुदा आब से हएत? अपना तँ डेढ़ कट्ठा घराड़ी छोड़ि किछु अछि नहि। यएह चिन्ता मनमे घुरियाइए।"

बचनू कहलकैन-

"भैया बजलह तँ सभ ठीके मुदा समाज समुद्र होइए। तोरा अपना बुझि पड़ै छह जे किछु ने अछि मुदा गाममे तँ सभ किछु अछि। तइले एते चिन्ता किए करै छह। जाबे तोरा अपना बरद नै भऽ

जेतह ताबे हम अपन बरदसँ खेती सम्हारि देबह। घर बन्हैले बाँस आ लकड़ी सेहो सम्हारि देबह। जखन उपजा-बाड़ी हेतह तखन हमरा ओकर दाम दऽ दिहह। तोरा पाबि हम एते करै छी आ तोहीं लटपटा जेबह।”

बचनूक बात सुनि बिशेसर कहए लगल-

“हम तँ पढ़ल-लिखल नै छी बचनू, मुदा आँखि तँ अछि। अपने गामटा मे नहि आनो गाममे देखै छी जे हमरा-तोरा सन जे पछुआएल परिवार आ लोक अछि ओकरामे किछु एहेन दुरगुन अछि जेकरा सुधारने बिना अगुआएब कठिन अछि।”

बिशेसरक बात सुनि बचनू चौंकैत पुछलक-

“से की भैया?”

“सएह तँ कहै छिअ। अपनो गाममे देखै छहक ने जे अनेरे छोट-छीन कारणे भरि-भरि दिन लोक गारि-गड़ौवैलमे, झगड़ा-झंझटमे समए बिता लइए, जइसँ परिवारक काज मारल जाइ छइ। जखन परिवारक काज मारल जाएत तखन ओ परिवार आगू-मुहेँ केना ससरत?”

मुड़ी डोलबैत, मुँह बौने बात सुनि बचनू बाजल-

“हँ, ई तँ ठीके कहलक।”

बिशेसर आगू बजला-

“एतबे नै बचनू, आरो बात अछि। हमरा-तोरा परिवार सन परिवारमे देखबहक जे जेकरा ऊपरमे घरक भार रहै छै ओ भरि दिन काजसँ लऽ कऽ आरो तरहक जोगारमे तंग-तबाह रहैए मुदा घरक आन गोरेकेँ धैनसन। जेना एक्के गोरे-ले कमाइक भार छै आ दोसर-तेसरकेँ सिरिफ खाइक। तेतबे नहि, आरो देखबहक जे कमाइ-

खटाइबला जे अछि ओ भरि-भरि दिन भाँगे-गाँजाक पाछू वौराएल रहैए।”

बचनू-

“हँ, ईहो बात ठीके कहलह भैया”

बिशेसर-

“जाधैर कोनो परिवारमे, परिवारक सभ सदस अपन परिवार बुझि नै लगि जाएत ताधैर कोनो परिवारकेँ आगू बढ़ब कठिन अछि। जखने परिवारक सभ आदमी अपन शक्तिक अनुरूप श्रम करए लगत तखने ओ परिवार धुधुआ कऽ आगू बढ़ए लगत। अखन धरिक जे अपन सबहक परिवारक दिशा रहल ओ एहेन बनि गेल अछि जइमे जिनगीक महतकेँ छोड़ि कल्पनामे चलि रहल अछि। तँए सभ कष्टकर जीवन बना कल्पित जिनगी जीब रहल अछि।”

एते बात सुनिते बचनू बिशेसरकेँ कहलक-

“भैया, हम एकटा काजे आएल छेलौं।”

“कोन काज?”

“फगुआक समए लगिचा गेल। पानिक दुआरे गहुमक खेती करबे ने केलौं। किएक तँ अपना बाधमे ने एक्कोटा बोरिंग छल आ ने पोखैर। लऽ दऽ कऽ एकटा पोखैर अछि, जँ ओहू पोखैरक पानि उपैछ गहुमे पटा लितौं तँ गाए-महींस केतए पानि पीबैत। तेतबे नहि, आगि-तागिक दुआरे सेहो किछु पानि रहब जरूरी अछि। मुदा आब तँ अपन बोरिंग भऽ गेल। खेतो सभ खाली भऽ गेल। मौसरी-खेसारी सभ उखैर गेल। अखन कोनो खेती करैक समए अछि की नहि? सएह पुछैले आएल छेलौं।”

बचनूक बात सुनि बिशेसर बुझबैत कहलखिन-

“खेती तँ बारहो मास होइ छै, बचनू। एते दिन अपना हाथमे पानि नै छल तँए नै होइ छल। जखने जागी तखने परात। दमकल बोरिंगमे लगा जेते खसल खेत छह, सभकेँ पटाबह। हमहूँ पटा लेब। बचनोकेँ आइए कहि दहक। तीनू गोरे सभ खेत पटा खेरही, मकइ आ तेल-ले सुर्जमुखी फूल बाउग कऽ लेब।”

मकइ आ सुर्जमुखीक नाओं सुनि बचनू बाजल-

“भैया, खेरहीक बीआ तँ अपनो घरमे अछि मुदा मकइ आ सुर्जमुखी-बीआ केतएसँ आनब?”

बिशेसर-

“कोन कमी छइ। बजारमे सभ कथुक बीआ भेटै छइ। पहिने खेत पटा कऽ जोत-कोर तँ करह। जखन बीआ आनए बजार जाए लगिहह तखन गरमा धानक आ तीमन-तरकारीक बीआ सेहो नेने अबिहह।”

बचनू-

“बेस कहलह भैया। आइएसँ मुसताइज भऽ जाइ छी। मुदा एकटा बात तँ पुछबे ने केलियऽ। पाछू कऽ मन पड़ल, खएर..। पहिने ई कहह, तीमन-तरकारीक जे खेती-ले जे कहलह से तँ बड़बढ़ियाँ मुदा गामक लोक तँ किचारत नइ जे तरकारी खेती कोइर-कुजरा करैए?”

बचनूक बात सुनि बिशेसर ठहक्का मारि हँसैत कहलखिन-

“धुर बुड़िबक कहीं-के! कम-सम तरकारी खेती तँ सभ करैए, तखन लोक किए हँसतह। जइ चीजक खर्च सभ परिवारमे होइए ओइकेँ उपजबैमे लोक किए हँसत।”

बचनू-

“तेसर सालक एकटा किस्सा कहै छिअ। हमर तमुरियाबला

कुटुम पानक खेती केलक। वेचारा गरीब अछि। बोइन करैए। पान उपजबैक सभ लूरि वेचारा सीखने अछि। पानक आमदनी देख एक कट्ठा खेती केलक। बड़ सुन्नर पान उपजलै। एक्के-दुइए गामक सभ बुझलक। जखन बुझलक तँ एका-एकी लोक सभ आबि-आबि देखए लगल। देखला पछाइत गामक सभ बरइ चौगामा बरइक पनचैती बैसौलक। पनचैतीमे सभ मिलि निर्णए केलक जे तीन दिनक भीतर ओ बरैब उजाड़ि लिअ नइ तँ बलजोरी बरैब उजाड़ि देबइ। पान उपजाएब हमरा सबहक पुश्तैनी खेती छी, दोसर जाति किए उपजौत। वेचारा कुटुम बरैब उजाड़ि लेलक।”

बचनूक बात सुनि, आरो जोरसँ ठहक्का मारि बिशेसर बजला-

“एहेन-एहेन घटना मुरूखपनाक चलैत भेलै, आब एहेन घटना थोड़े हएत।”

दुनू गोरे बिशेसर आ बचनू गप-सप्प करिते छला कि श्यामानन्द सेहो बजारसँ घुमैत एला। श्यामानन्दकेँ देखते बिशेसर कहलखिन-

“आबह-आबह बौआ श्याम। अखन हम दुनू गोरे खेतीए-क गप करै छेलौं। भने तोहूँ आबि गेलह।”

श्यामानन्द-

“भैया, अखन हमहूँ धड़फड़ाएल छी। निचेनमे करखनो फसल-चक्रक गप करब। भोलियाकेँ कहि दिहक जे टमाटर आ फुलकोबी दुइर भेल जा रहल अछि तँए काल्हि भोरे आबि कऽ जेते दुइर होइबला अछि ओकरा कौल्हुके हाटमे बेच लेत। दुइर भेलासँ की फल। कनी बेसी मेहनत हेतै मुदा पाइयो तँ हेतइ। अखन जाइ छी।”

‘अच्छा ठीक छै’ कहैत बिशेसर श्यामानन्दकेँ विदा कऽ बचनू संगे गप करए लगला-

“बचनू, जहिना सभ रंगक किसान अछि– खेतक हिसाबे,

केकरो दू बीघा खेत छै, केकरो तीन बीघा, केकरो दस बीघा। तहिना खेतियो अलग-अलग ढंगसँ करए पड़त। ने एक रंग खेत सभ किसानकेँ अछि आ ने एक रंग खेती केलासँ काज चलत। ओना, सभ किसानक परिवार एक रंगाहे अछि। चारि गोरेसँ लऽ कऽ सात-आठ गोरे तक। मुदा खेत तँ कम-बेसी छै तँए परिवारक हिसाबसँ खेती करए पड़त। दोसर बात अछि जे कोनो परिवारमे अधिक खेत अछि मुदा काज केनिहार- श्रमिक कम अछि। तहिना कोनो परिवारमे खेत कम अछि आ खटनिहार अधिक अछि। तहिना उपजोक अछि, कोनो फसिलमे कम श्रम लगैए आ कोनो फसिलमे अधिक। लाभोक दृष्टिये तहिना छइ। तँए सभ हिसाब मिला कऽ किसानकेँ चलए पड़त।"

ꣲ

शब्द संख्या : 1923

एगारह

अबेर कऽ उठि महंथ रघुनाथ दास डोलडालसँ आबि स्नान करै छला। बारह बजे राति धरि जगल रहने अबेर कऽ निन टुटलैन। फुलचन दास बाल्टीनमे जल भरि महंथजीक पीठक मैल छोड़बैत रहैन...।

भोरे गंगानन्द नित्यकर्मसँ निवृत्त भऽ चाह पीब, पान खा महंथजीसँ भेँट करए स्थानपर पहुँच मन्दिरक आगूमे पजेबा सिमटीक बनल चबुतरापर बैसल छला।

गंगानन्दकेँ बैसल देख महंथ रघुनाथ दास हाँइ-हाँइ स्नान कऽ, कमण्डलमे जल भरि मन्दिर जा पूजा करए लगला। महंथजीक फेरल लँगोटा आ खौरकी फुलचन दास खीचि कऽ ढाठपर पसारि मन्दिरपर जा महंथजीक संग अस्तुति गाबए लगल। पूजा बिसरजन कऽ महंथजी गंगानन्द लग आबि पुछलखिन-

"केमहर-केमहर एलौं?"

चौअन्नियाँ मुस्की दैत गंगानन्द कहलकैन-

"अपनेसँ एकटा विचार करए एलौं हेन। चारू-भरक गाममे धरमक काज जोर-शोरसँ भऽ रहल अछि, केतौ अष्टयाम कीरतन तँ केतौ यज्ञ तँ केतौ पूजा होइए। मुदा बीचमे अपन गाम छुटल अछि।

सुनैमे आएल अछि जे ऐ बेर एगारहटा ग्रह एकठाम जम्मा भऽ रहल अछि। तँए की हएत की नहि, तेकर कोन ठेकान! तँए...।"

गंगानन्दक विचार धियानसँ सुनि रघुनाथ दास बजला-

"बहुत दिनसँ हमरो मनमे छेलए मुदा गामक लोकक मन देख अनठा दइ छेलिऐ। आइ जँ अहाँक मनमे धरमक रूचि जगल तँ हमहूँ तैयार छी। जहाँ धरि जे भऽ सकत तन-मन-धनसँ सहयोग करब।"

महंथजीक विचार देख गंगानन्द सुकलकेँ बजबैले फुलचन दासकेँ कहलखिन। फुलचन दास सुकलकेँ बजबए विदा भेल। फुलचन दासकेँ विदा होइते हुँहकारी भरैत महंथजी बजला-

"हँ-हँ गौँआँक सहयोग तँ जरूरी अछि। बिनु समाजक सहयोगे एहेन काज होएब कठिन अछि।"

मेरियाक संग बैस सुकल चाहक दोकानपर गाँजा पीबै छल। सात-आठ गोरेक मेड़ियामे। रस्तेपरसँ फुलचन दास हिया कऽ सुकलकेँ देख लगमे जा ठाढ़ भऽ गेल। फुलचन दासकेँ लगमे ठाढ़ देख सुकल बाजल-

"बाबा तूँ किए ठाढ़ छह, बैसह। बड़ सुन्दर वसन्ती माल छइ।"

कहि सुकल कनी अपनो घुसैक गेल आ मोहनोकेँ हाथक इशारासँ घुसकौलक। बीचमे फुलचन दास बैस गेल। एक चीलम गाँजा एक्के-एक्के दम सभकेँ होइत। विचित्र मिलान गाँजा पीआकक। एक-एक दम मारि चीलम आगू बढ़ा दइत। चीलम आगू बढ़ि गेल छल तँए फुलचन दासकेँ नै भेल। दोहरा कऽ अबैत-अबैत गाँजा सठि गेलइ। सठिते रूपना आगूमे रखल पुड़ियासँ निकालि बामा तरहत्थीपर लऽ दहिना औंठासँ मलए लगल। सोधन टाटक खरौआ जौर तोड़ि, गिरह बान्हि गुल बनौलक। बिच्चेमे चाहबला चाह बढ़ौलक। गाँजा मलि रूपना प्रेम कटारी लऽ गुलाब-तख्तीपर गाँजा काटए लगल।

सकरी कट तमाकुल तँए काटैक जरूरते नहि। हाँइ-हाँइ चाह पीब सोधना गुल जरबए चाहक चुल्हि लग गेल। जाबे रूपना गाँजा-तमाकुल मिला चीलममे भरलक ताबे सोधनो गुल जरा अनलक।

अखन धरि गाँजाक एक्के दम सुकल मारैने छल मुदा फुलचन दासकेँ एलासँ सुकल फुलचने दास दिस बढ़ौलक।

फुलचन दास दहिना हाथमे चीलम लऽ दुनू आँखि बन्न कऽ ठोर पटपटा कसि कऽ चीलममे दम मारलक। तेते जोरसँ दम मारलक जे चीलमसँ धधरा उठि गेल। धधरा उठैत देख मुस्कियाइत सुकल बाजल-

"नीक माल छै ने बाबा?"

चीलम आगू बढ़बैत, मुहसँ धुँआ फेक फुलचन दास कहलकै-

"बहुत दिनक पछाइत एहेन माल भेटल।"

तीन-चारि चीलम आरो गाँजा पीब सुकल फुलचन दासकेँ पुछलक-

"केमहर-केमहर बाबा सवारी एलै?"

"तोरे बजबैले एलौं। महराजी आ गंगानन बैसल छैथ वएह कहलैन।"

दुनू गोरे उठि कऽ स्थान दिस विदा भेल। फरिक्केमे दुनू गोरेकेँ अबैत देख महंथजी गंगानन्दकेँ कहलखिन-

"कनी असथिरसँ गप कऽ किछु खाइ-पीबैले दऽ देबइ। सभ काज सुढ़िया जाएत।"

स्थानपर पहुँचते सुकल दुनू हाथ जोड़ि मुड़ी झुका महंथजीकेँ प्रणाम केलकैन। प्रणामक जवाब महंथ माथ झुका कऽ दैत आग्रहसँ कहलखिन-

“आबह-आबह सुकल। बहुत दिन जीबह। तोरे चरचा दुनू गोरे करै छेलौं।”

जहिना आँखि लाल सुकलक तहिना फुलचनोक। दुनू गोरे चबुतरापर बैसल। गंगानन्द आ महंथजी विचार केने रहैथ जे फागुनक समए नीक होइ छै, ने बेसी जाड़ आ ने गरमी। ने पानि-पाथरक डर आ ने अन्हड़-बिहाड़िक। गंगानन्द सुकलकेँ कहलखिन-

“सुकल, जहिना महंथजी स्थानक काजमे व्यस्त रहै छैथ तहिना हमहूँ माया-जालमे ओझड़ाएल छी। एक्को क्षण छुट्टी नै होइए। एमहर दौग तँ ओमहर ताक। खरचाक चिन्ता तोरा नहि, हमहूँ जोगार करब आ महंथोजी करता। गाममे एहेन मेला हुअए जे चारू-भरक मेलाकेँ दाबि दइ। तूँ दसटा काजकर्ता बनाबह जे गाममे चन्दो करत आ मेलोक बेवस्था।”

महंथजी सुकल दिस देख मुस्कियाइत अपन समर्थन देलखिन। अपन बढ़ैत इज्जतकेँ देख सुकल हँसैत बाजल-

“हम की कोनो अहाँ सभसँ बाहर छी, जेना जे कहबै से हेतइ।”

सुकलकेँ राजी देख, मने-मन महंथोजी आ गंगानन्दो खुशी भेला। खुशीक कारण छल चाइल सुतरब।

रघुनाथ दासक मन्दिरक आगुएमे अढ़ाइ-तीन बीघाक परती। जैपर गाए-महींस चरैत। गामक धिया-पुता गुल्ली-डन्टा, कबड्डी, गुड़ी-गुड़ी इत्यादि खेलाइत। वएह परतीपर मेला लगबैक विचार तीनू गोरे तँइ केलैन। स्थानक चुनाव कऽ बैसार समाप्त भेल।

बेरूपहर गामक जुबक सभकेँ सुकल बैसार केलक। बैसारमे सुकलक सभ गजेरीक संग गोटि-पँगरा बैलियो जुबक जमा भेल। सबहक बीच मेलाक चरचा करैत सुकल जनसेवा दलक चुनाव केलक।

गाममे बड़का मेला, चारि दिनक होएत तँए सभ जुबक खुशी। गामक चन्दोक भार जनसेबे दलपर तँए आमदनियो। जाधैर मेला सम्पन्न नै हएत ताधैर सभ अपन-अपन घरक काज छोड़ि, ऐ काजमे लगि जाए। हाथ उठा सभ अपन सहमत देलक। काल्हिसँ सभ दिन सबेरे सात बजे सभ एकठाम जमा भऽ काजक बँटवारा कऽ अपन-अपन काजमे जुटि गेल।

जहिया बुढ़बा महंथ गरीब दास मुइला तहियासँ रघुनाथ दास महंथ भेला। स्थानक सभ भार रघुनाथे दासपर आबि गेलैन। महंथ बनैसँ पहिने रघुनाथ दास परिवारिके लोक छला। रघुनाथ दासक पिता धान चाउरक खरीद-बिकरी करै छेलखिन। जइसँ परिवारक गुजर-बसर चलै छेलैन। भैयारीमे रघुनाथ असगरे तँए माए-बापक दुलारू। भरि दिन ओ एमहर-ओमहर घुमि समए बितबैत। काज-उद्यमसँ कोनो सरोकार नै तँए महाग-कोँढ़ि भऽ गेल। रघुनाथक पिता अपन दायित्व बुझि बेटाक बिआह-दुरागमन कऽ देलक। जाधैर रघुनाथक माए-बाप जीबैत रहथिन ताधैर रघुनाथ मौजक जिनगी बितौलक। दुनियाँ रूपी कन्याक सुन्नरताकेँ रघुनाथ हृदैसँ चाहैत मुदा ओ मिसियो भरि देखए नइ चाहैत। मुदा दुनियाँ तँ अमृतसँ लऽ कऽ बिख धरि, सुन्दरसँ लऽ कऽ कुरूप धरि, महात्मासँ लऽ कऽ दुरात्मा धरि, पण्डितसँ लऽ कऽ मुरुख धरिक भार उठौनिहार ऐछे जे रघुनाथोक भार उठौने। मुदा माए-बापकेँ मरिते रघुनाथक मौज ससरए लगल।

एक दिन रघुनाथ साँझू पहरकेँ नाच देखए गेल। घरमे खाइक कोनो वस्तु नै जे रघुनाथक स्त्री भानस करैत। भूखसँ वेचारीकेँ बरदास नै भेलैन। अपन नैहरक थारी-लोटा आ नुआँ-वस्त्रक मोटरी बान्हि घरसँ विदा भऽ गेली।

अधरतियामे रघुनाथ नाच देख कऽ आएल। सुन्न आँगन-घर

देख पत्नीकेँ ताकए लगल। पहिने तँ बुझि पड़लै जे ओ केतौ नुका रहल अछि। मुदा बड़ी काल धरि तकलापर जखन नै मिललै तखन निराश भऽ सुति रहल। सुति तँ रहल मुदा निने ने होइ। भरि राति जगले रहि गेल। भोर होइते अड़ोस-पड़ोसक आँगनमे घरवालीकेँ ताकए लगल। मुदा केतौ नै भेटलै। गाममे केतौ नै भेटलापर सासुर जाइक विचार केलक। मुदा एक तँ रौतुका जगरना, दोसर भूखल देह। एक्को रत्ती हूबे ने बुझि पड़इ। ओसारपर बैस मने-मन सोचए लगल जे आब की करी..?

जहिना धुनि लगलापर किछु नै देख पड़ैत तहिना सोगसँ रघुनाथोकेँ किछु सुझबे ने करैत। तहिना रघुनाथकेँ किछु सुझबे ने करैत। गुनधुनमे पड़ल। अनासुरती मनमे एलै जे माया-मोह छोड़ि बबाजी भऽ जाइ। माँगि-चाँगि कऽ खाएब आ जेतइ मन फुरत तेतै रहि जाएब। मुदा आत्महत्या करैक विचार मनमे नै एलइ। ओहनो हालतमे रघुनाथकेँ जीबैक आशा रहबे करइ। मुदा स्त्रीक सोग मनसँ हटबे ने करइ। गाड़ीक पहिया जकाँ विचार मनमे उनटैत-पुनटैत। फेर मनमे एलै जे पिते जकाँ हमहूँ धान-चाउरक खरीद-बिकरी कऽ गुजर करब। मुदा तइले रूपैआ चाही। फेर रघुनाथक मनमे एलै जँ सासुर जा घरवालीकेँ जवाब दऽ दिऐ ओहो कायरता हएत...।

जेना-जेना रघुनाथक पेटमे भूखक आगि धधकै तेना-तेना विचारो अदलै-बदलै। फेर मनमे एलै जे घरक सभ किछु बेच चलि जाइ। मुदा जेकरा हाथे बेचब ओ पुनः ऐ घरमे कहियो आबए नै देत..! तत्-मत् करैत दुपहर भऽ गेल। जोशमे आबि घरसँ निकैल गरीब दासक स्थानपर पहुँचल।

महंथ गरीब दास भोजन करए बैसल। रघुनाथकेँ देख हाथक इशारासँ गरीब दास शोर पाड़लखिन। लगमे अबिते रघुनाथकेँ खाइले

देलखिन।

नमहर स्थान। तीस बीघा जमीन। गाछी-कलम, पोखैर-इनार सभ भगवानक नाओंसँ। गामोक लोक किछु-ने-किछु जमीन साले-साल दइते। जइसँ स्थान मोटाइते जाइत। गाममे जे निपुत्र भऽ जाइत वा कोनो झंझटिया जमीन होइ, ओ स्थानमे दऽ दइत।

रघुनाथ गरीब दासक चेला बनि स्थानमे रहए लगल। दुनू साँझ रघुनाथ गरीब दासकेँ खाँटी करु-तेलसँ मालिश करैत। कपड़ा खिचैत।

रघुनाथक सेवा देख गरीब दास अगुआ चेलाक उपाधि दऽ देलखिन। ओना गरीब दासकेँ अनेको चेला रहैन, मुदा मन्दिरमे पूजा करैक अधिकार रघुनाथे-टाकेँ देने।

सिपाहीक नोकरी सुकल दिल्लीमे एकटा सेठक ओइठाम पहिने करैत। गोर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोँछ, बरदक आँखि सन नमहर-नमहर आँखि। कोठीक गेँटपर कान्हमे बन्दूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सेठक करैत। सेठक बड़की बेटीक बिआह बम्बईक एकटा कपड़ा वेपारीक संग भेल। धनक अमार मुदा लड़का एड्सक रोगी। नोकरे-चाकर हाथे सभ कारोबार करैत। बिआहक समए ई बात डोलीक माए-बापकेँ नै बुझल। तँए बिआह केलक। जखन डोली सासुर बसए लगली तखन बिमारीक भाँज लगलैन। पतिक बिमारीसँ डोली मने-मन कानए लगली। अपन मुरझाएल जिनगी देख डोली सासुरसँ भगैक भाँजमे। एक दिन रोगक बहाना बना डोली इलाज करबए नैहर-दिल्ली चलि एली। डोलीक सोगाएल मन देख माए-बाप पुछलखिन। मुदा अपन बेथाकेँ झँपैत डोली केकरो किछु ने कहलकैन।

दाम्पत्य जीवनसँ निराश डोली, जिनगीक आशा देख सुकलसँ तरे-तर प्रेम करए लगली। सठियाएल सुकल डोलीक चलाकी नै बुझि

प्रेम करए लगल। जेतए डोलीक प्रेमक कारण काम तृप्तिक छल तेतए सुकलक जवानीक अल्हरपनक। एक सुसम्पन्न परिवारक तँ दोसर उजड़ल-उपटल घरक। प्रेमक डोर केते मजगूत होइत से दुनूमे सँ कियो ने बुझैत। उमेरक बलउमकी दुनूमे तँए बुझबो केना करैत।

एक दिन दुनू गोरे-डोली आ सुकल सिनेमा देखए गेल। बालकोनीक टिकट कटा दुनू हॉलमे बैसल। सिनेमा शुरू भेल। शुरू होइते बगलक एकटा जुबक जे निशाँमे बुत्त छेल, तिलमिला कऽ डोलीक देहेपर गिरल। डोली चिचिआ उठल। डोलीकेँ चिचिआएबसँ सुकलक क्रोध बेकाबू भऽ गेल। उठि कऽ सुकल ओइ जुबकक कालर पकैड़ दहिना हाथक ठुस्सासँ नाकपर जोरसँ मारलक। नाकक चोट बरदास नै कऽ ओ जुबक तिलमिला कऽ निच्चाँमे गिरल। हॉलमे हल्ला भेल। सिनेमा बन्न भऽ गेल। लगले थानाक दरोगा पाँचटा सिपाहीक संग पहुँच गेल। हल्लाकेँ भँजियबैत दरोगा घटना स्थलपर पहुँचल। अचेत जुबककेँ देख दरोगा सुकलकेँ पकैड़ लेलक। अचेत जुबकेँ अस्पताल भेज देलक। अस्पताल पहुँचैत-पहुँचैत ओ जुबक दम तोड़ि देलक। हत्याक मोकदमामे सुकल जहल गेल। ने कियो पैरबी करैबला सुकलक आ ने कियो पुछनिहार।

जहल काटए लगल। एकान्तमे बैस सुकल मने-मन सोचए लगल जे दू-पाइ कमाइले दिल्ली एलौं जे माए-बापक सेवा करब मुदा मकड़ा जकाँ अपने बनौल जालमे फँसि गेलौं! हदिघड़ी डोली कहै छलै जे सुख-दुखमे संग देब मुदा एक्को दिन खोजो-पुछारि करए ने आएल। जेकरा-ले अपन जिनगीकेँ बलि चढ़ेलौं ओकरा कोनो गम नहि। यएह छी धनिक-गरीबक प्रेम।

जहियासँ सुकल गाम छोड़ि दिल्ली गेल तहियासँ परिवारमे आशाक किरण फुटल। जाधैर सुकलक कमाइ माए-बापकेँ नै होइ

छल ताधैर गाछी-बिरछीक पात बीछि, सुखल ठौहरीक जारैन तोड़ि, खेतसँ धान लोढ़ि, रब्बीक मासमे खेसारी, मौसरी, तीसी, गहुम बीछि, अल्हुआ चालि, संग-संग बोइन-बुत्ता कए कऽ गुजर करै छल। मुदा सुकलक दरमाहा पाबि भरि पेट अन्न खाए लगल छल। बेटाक कमाइसँ दुनू परानीक मनमे रंग-बिरंगक कल्पना अबए लगल। बेटाक बिआह करब, घर बनाएब, सुखसँ बुढ़ाड़ीक दिन बिताएब। मुदा जहिया सुनलक जे जिनगी भरिले बेटा जहलेमे रहत तहियासँ जिनगीक आशा टुटि गेलइ। अधमरू भऽ जिनगी बितबए लगल। काज करैक शक्ति देहमे नै रहलै। मुदा ऐ दुनियाँक आकर्षण जहरो पीबैसँ मनाही करए लगलै। अन्तमे दुनू परानी, सुकलक माए-बाप भीख मंगए लगल। किछु दिनक पछाइत दुनू ऐ दुनियाकेँ छोड़ि देलक।

चौदह बरख दिल्लीक जहलमे बिता सुकल सोझे गाम विदा भेल। गाड़ी, बसमे टिकटक जरूरीए ने रहै किएक तँ जहलक मोहर बाँहिमे छापल रहइ। आशा-निराशाक बीच जिनगी, तँए भूखो ने लगइ। गाम आबि सुकल घर बसबए चाहलक मुदा घर-बसाएब ओते हल्लुक नहि।

गाममे जखन सुकल टहलै-बुलैले निकले तखन गामक लोककेँ बुझि पड़ै जे बोनसँ हूरार चलि आएल। फरिक्केमे सुकलकेँ अबैत देख जनिजाति सभ अपन बच्चा लऽ लऽ घर चलि जाइत, ढेरबा-धिया-पुता नुका रहैत आ मरदा-मरदी मुँह घुमा लइत।

जहलमे रहि सुकल आनो-आनो कैदीसँ गप-सप्प करैत आ अपनो एकांतमे बैस जिनगीक सम्बन्धमे सोचैत मुदा हजारो-लाखो किसिमक जिनगीक रस्तामे सुकल वौआइते रहि गेल। सही जिनगीक रस्ता भेटबे ने केलइ। जहिना फुलवाड़ीमे काँटक गाछ फुलेनौं काँटे

कहबैत तहिना दिल्लीक अपराधी सुकल गामोमे अपराधीए जकाँ बुझि पड़ैत। अपन दशा देख सुकलकेँ अपने दुनियाँ बनाएब हल्लुक बुझि पड़लै। ओ दुनियाँ छी अपराधीक।

रघुनाथ दास मन्दिरकेँ चुनेठ, रंगसँ रंगि देलक। गामक चन्दा मेड़ियाक संग सुकल करए लगल। आन-आन महंथानासँ रघुनाथ दास मोट-मोट चन्दो मंगबए लगल आ मेला देखैक हकार-नोत सेहो पठबए लगल।

समधियौरसँ पर्याप्त धन पाबि गंगानन्द अपन प्रतिष्ठा बनबैक भाँजमे, तँए चन्दा करैक जरूरते नहि।

मेला शुरू होइसँ दस दिन पहिनैसँ सभ मेलाक तैयारीमे जुटि गेल। मेलाक तैयारी अद्भुत। जहिना दोकान-दौरीक बेवस्था तहिना नाच-तमाशाक। जहिना स्थानक सजाबट तहिना इजोत।

मेला शुरू भेल। रंग-बिरंगक बबाजी सभ अबए लगला। कियो हाथीपर चढ़ि रेशमी पोशाकमे तँ कियो ऊँटपर चढ़ि धप-धपौआ सुती वस्त्रमे। कियो लँगोटा-खौरकी पहिर तँ कियो वस्त्र-विहीन, नंगटे। सभकेँ अपन-अपन कफला। सभ कफलामे अपन-अपन साजो-समान। कियो नबका चालिमे तँ कियो पुरनामे। एक कफला एक समियानाक भीतर। दोसर दोसर समियानाक भीतर। एक-दोसरमे जाए नै दइत। खाइ-पीबैक ओरियान सेहो फुट-फुट।

बेवस्था करैमे महंथ रघुनाथ दास पानि-पानि भेल। एक महंथ दोसर महंथक खुल्लम-खुल्ला निन्दा करैत। तालमेल बैसबैमे महंथ रघुनाथ दासकेँ पएर पकड़ैत-पकड़ैत तबाही। मने-मन वेचारे सोचैत जे कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ल जे एहेन काज केलौं।

पतियानी लगल दोकान। सभ रंगक समानक अलग-अलग बजार। राति-दिनमे अन्तरे नै बुझि पड़ैत। मेलाक चारू कोणपर

नाचक स्टेज बनल। एक कोणपर थियेटर, दोसरपर रास, तेसरपर यात्रा-पार्टी आ चारिमपर अल्हा-रूदल। परोपट्टाक लोक उलैट कऽ मेला देखैले दिन-राति अबैत।

गंगानन्द ऐठाम तेते पाहुन-परक आबि गेलैन जे घरपरसँ कखनो मेला स्थलपर गेले ने होइन। दुनू परानी चाह-पानसँ लऽ कऽ खुअबै-पिअबैमे पश्त छला, दिन-राति एक्के रंग तबाही...।

दिन-रातिक खटनीसँ सुकल दोसरे दिन अस्सक पड़ि गेल। एक साए तीन डिग्रीसँ कखनो बोखार कम्मे ने होइत। कखनो-कखनो ज्वरक तापसँ बड़बड़ेबो करैत। सिरिफ रघुनाथे दास, गंगेनन्द आ सुकलेटा परेशान नहि, सौंसे गामक लोक पाहुन-परकसँ परेशान।

मेलाक पहिल राति एकटा आठ-नअ बर्खक बच्चिया, दोसर राति दूटा आ तेसर राति चारिटा बच्चियाक चोरि भऽ गेल। पहिने तँ बच्चियाक माए-बापकेँ भेलै जे गामे घरमे भुतलाएल अछि जे एक-दू दिनमे भेटिए जाएत। मुदा मेला उसरला बादो नइ केकरो भेटलै। तेसर दिनक दूटा लड़की एक्के परिवारक। दुनू बच्चिया जेहने देखैमे सुन्दर तेहने माए-बापक दुलारू। एगोक नाओं 'लछमी' आ दोसर 'सरस्वती'। लछमीक पिता जिलाक कार्यालयमे अफसर आ माम सी.आइ.डी. विभागमे अफसर। लछमी, सरस्वतीकेँ चोरि होइते माए टेलीफोनसँ पति आ भाएकेँ जनतब दऽ देलखिन। दुनू सारे-बहनोइ अपनामे सम्पर्क कऽ छुट्टी लऽ सोझे गाम विदा भेला। रस्तेमे दुनू गोरेक भेँटो भेलैन। दरभंगा स्टेशन पहुँच लछमीक पिता महेन्द्र घरपर एबाक जनतब सेहो परिवारमे दऽ देलखिन। झंझारपुर स्टेशन पहुँचैसँ पहिनहि महेन्द्रक छोट भाए, स्टेशन पहुँच, प्रतीक्षामे। गाड़ी अबिते दुनू गोरे गाड़ीसँ उतैर निच्चाँमे बैग रखिते रहैथ कि महेन्द्रक छोट भाए-दिनेशकेँ नजैर पड़लै। लगमे आबि दिनेश दुनू गोरेक बैग दुनू हाथमे

लऽ प्लेटफार्मक कुरसीपर जा रखलक। घटनाक जनतब दुनू गोरेकेँ देलकैन। बच्चियाक चोरिक चर्चा होइते महेन्द्र हबोढकार भऽ कानए लगला। महेन्द्रकेँ चुप करैत सार दिनेशकेँ कहलखिन-

“अहाँ दुनू बैग नेने घरपर चलि जाउ। हम दुनू गोरे कनी कालक पछाइत आएब।”

रिक्शासँ दिनेश घर दिस विदा भेल। दुनू गोरे घरपर नै जा सोझे थाना पहुँचला। दुनू गोरे अपन परिचए दैत दरोगाकेँ घटनाक जनतब देलखिन। केस लिखि दरोगा छहटा सिपाहीकेँ संग केने जा महंथ रघुनाथ दास, गंगानन्द आ सुकलकेँ पकैड़ जहल पठा देलक। घटनाक छानबीन हुअ लगल।☼

गंगानन्दक कामतपर यमुनानन्द मौजसँ रहैत। ने खाइ-पीबैक कोताही आ ने कोनो चिन्ता। भरि दिन यमुनानन्द गजो पीबैत आ ताशो खेलैत। गामक बीचमे कामत रहने दू-चारिटा फालतू जुबक हदिघड़ी कामतपर रहैत। कामतक सटले घुरनीक घर। घुरनीकेँ सातटा बेटी, बेटा नहि। जेठकी आ मैझली बेटी बिआहै जोकर भऽ गेल। जुआनीक सभ गुण आ विशेषता दुनूमे आबि गेल छल। हदिघड़ी घुरनी आ राघवकेँ करेज टुटैत। एक दिस सातो बेटीक बिआह आ गुजरक चिन्ता दोसर दिस गरीबीक राक्षस जमि कऽ पकड़ने। दुनू साँझ भरि पेट खेनाइयो ने होइत।

घुरनी यमुनानन्दकेँ कहि सरिताकेँ भानस करैले कामतमे रखौने। चोरा-नुका घुरनी कामतपर सँ अन-तीमन-जारैन उठा-उठा लऽ जाइत। तइसँ कोनो तरहेँ दुनू साँझ चुल्हि पजरै एक दिन घुरनी राघवकेँ बिगैड़ कऽ बेटीक बिआह करैले कहलक। बिआहक खर्चक कोनो उपए नै देख राघव सोगसँ मूसक दवाइ खा ओसारपर सुति रहल।

कामातुर यमुनानन्द, सरितासँ सिरिफ चौकेक काजटा नै करबैत बल्कि इच्छा-पूर्ति सेहो करैत। भूखल-नाँगट, पशु-तुल्य मनुख देहक क्रियाकेँ इज्जत नै बुझि पेट भरैक उपए बुझैत। पेटक भूख मनक भूखसँ प्रवल आ कठोर होइते अछि तँए सरिता इज्जत नै गमा पेटक आगिकेँ शान्त करैत। जाधैर मनुखकेँ पेटक आगि जरौत ताधैर इज्जत-आबरूक बात सोचब आ बुझब कठिन अछिए। तहूमे जे हजारो बर्खसँ गुलामीक जालमे फँसल रहैत आएल अछि ओकरा-ले तँ आरो कठिन बात छी। हर मनुखकेँ ऐ दुनियाँ आ धरतीक एहेन आकर्षण होइत जे नीच-सँ-नीच कर्म केलोपरान्त जीबए चाहैए। ओकर जीवन्त उदाहरण सरितो छी।

कुमारि सरिताक शरीर त्वरित गतिसँ फुलाए लगल। जइसँ गामक जनिजाति इनार-पोखैरक घाटपर सरिताक सम्बन्धमे चरचा करैत। जे बात घुरनीक कान धरि सभ दिन अबैत। मुदा घुरनी ओहन ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेल छेली जइमे ने एक्कोटा जीवित पात आ ने जीवित डारि।

गामक जुबकक बीच सेहो सरिताक चर्चा चलए। किछु जुबक हँसी-मजाकक विषय सरिताकेँ बनौने तँ किछु जुबक भुमहुरक आगि जकाँ मने-मन जरैत। सरिताक प्रति रमेशक आगि एते प्रवल भऽ गेल जे ओ अपन जानसँ खेलैले आगू बढ़ल। मने-मन रमेश संकल्प कऽ लेलक जे यमुनानन्दकेँ गामसँ भगा सरिताकेँ आदर्श नारी बनाएब।

घरसँ निकैल रमेश टोलक जुबक सभकेँ संगोर केलक। पाँच-सात जुबक रमेशक संग पुरैले तैयार भऽ गेल। सभकेँ संग केने रमेश यमुनानन्द लग पहुँचल। संगीक-संग रमेशकेँ देख यमुनानन्द डरल नहि बल्कि बाघ जकाँ गरैज कऽ बाजल-

“की रौ रमेशबा केतए ऐलेँ?”

एक तँ ओहिना रमेशक हृदैमे आगि लगल, तैपरसँ यमुनानन्दक करूआएल बात सुनि मुहसँ बोली नै फुटल। तामसे सगर देह काँपए लगलै। बिनु किछु बजनहि यमुनानन्दक कण्ठ पकैड़ पटैक देलक। माटिपर खसिते रमेश लतियाबए लगल। यमुनानन्दकेँ लतियबैत देख रमेशक संगी सभ सेहो लतियाबए लगल। साइयो लात खा यमुनानन्द रमेशक दुनू पएर दुनू हाथे पकैड़ कनैत बाजल-

“भाय, हमर जान छोड़ि दाए। अखने हम ऐठामसँ चलि जाइ छी।”

यमुनानन्दक बात सुनि रमेश सभकेँ रोकि, छोड़ि देलक। छुटिते यमुनानन्द निछोह पड़ाएल। सभ जुबक यमुनानन्दकेँ ताधैर देखैत रहल जाधैर अढ़ नै भेल।

सरिता कातमे ठाढ़ भऽ सभ देखैत। एक्के-दुइए सौंसे गामक लोक हल्ला सुनि पहुँच गेल।

सौंसे गामक लोक एकठाम बैस अपनामे विचार केलक जे बहरबैयाक जे जमीन-जत्था अछि ओ छीनि लिअ। गामक जेते जे चीज–खेत-पथार, पोखैर-झाँखैर इत्यादि अछि ओ गौंआँक छी। जँ कियो बहरबैया औत तँ सौंसे गौंआँ मीलि ओकरा भगाएब। चाहे अइले मारि हुअए, मोकदमा हुअए वा जहल जाए पड़ए। हाथ उठा सभ सहमत भेल।

☼

शब्द संख्या : 2887

बारह

डाक्टर नीलमणि सेन कलकत्तासँ एम.बी.बी.एस. कऽ सोझे मिथिला चलि एला। बंगला आ अंग्रेजी छोड़ि आन कोनो भाषा नै जनैत। मिथिलाक गाम-घरमे एलोपैथिक इलाजक चलैन नहि। रोगक इलाज झार-फूक आ जड़ी-बुटीसँ होइत। रोगीकेँ लोक भूत, हवा वा देवी-देवताक प्रकोप बुझैत।

डाक्टर नीलमणि सेनक घर बंगला देशक सीमासँ सटले बंगालमे। डाक्टर सेनक पिता प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन दर्शनशास्त्रक नामी विद्वान। सम्पन्न आ सुभ्यस्त परिवार ज्योतिमणिक।

अंग्रेजी हुकुमतक अन्तिम समैमे हिन्दू-मुसलमानक बीच जमि कऽ लड़ाइ बंगालोमे भेल। पहिल दिन डेढ़-दू साए हिन्दू भाला, फरसा, तरुआरि लऽ सड़कपर आबि सैयो मुसलमानक हत्या केलक, घर जरौलक, चीज-बौस लूटलक। गाम सुनसान भऽ गेल। जे किछु लोक बँचल ओ भागि-पड़ा कऽ अपन कुटुमक ओइठाम चलि गेल। मुदा घटना कमल नहि। जहिना गहुमन साँपकेँ लाठीक चोट खेलापर होइत तहिना तरे-तर मुसलमानक हृदैमे आगि धधकए लगल। सात दिनक पछाइत हजारो मुसलमान हथियारक हाथे बदला लेमए निकैल गेल। अनेको गामक हिन्दू मृत्युक मुँहमे समा गेल। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवार सेहो समाप्त भऽ गेल।

प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन आ प्रोफेसर जफर एक्के कौलेजमे प्रोफेसर। सैयो बर्खसँ दुनू परिवारक बीच दोस्ती चलि अबैत। जहिया कहियो कोनो उत्सव प्रोफेसर सेनक ओइठाम होइत तहिया प्रोफेसर जफर सपरिवार आबि उत्सव मनबैत। तहिना प्रोफेसर जफरक परिवारमे प्रोफेसर सेनोक उपस्थिति होइत। एकठाम बैस दुनू गोरे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ जिनगीक नीक-अधला सभ गप करैत। ने प्रोफेसर सेन प्रोफेसर जफरकेँ आन बुझैत आ ने प्रोफेसर जफर प्रोफेसर सेनकेँ। तहिना घरक स्त्रीगणक बीच सेहो सम्बन्ध। बाल-बच्चाकेँ तँ बुझिए ने पड़ैत जे दुनू परिवार दू धर्मक छी...।

हिन्दु-मुसलमानक बीच तनाव देख शिक्षण-संस्था सभ बन्न भऽ गेल तँए दुनू गोरे गाममे रहैथ। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवाक समाचार प्रोफेसर जफर सुनलैन। पहिने तँ एक्को पाइ बिसवासे ने भेलैन मुदा सत्-सत् पता लगिते कुरसीपर अचेत भऽ लुढ़ैक कऽ निच्चाँमे मुहेँ-भरे गिर पड़ला। दुखसँ हृदए विदीर्ण भऽ गेलैन। कोठरीमे असगर रहने पहिने तँ परिवारक कियो ने देखलकैन मुदा चाहक कप नेने जखन पत्नी एलैन तँ देखलखिन। निच्चाँमे पड़ल पतिकेँ देख हसीना कप रखि छाती पीटैत हल्ला करए लगली। हल्ला सुनि अपनो परिवारक आ अड़ोसियो-पड़ोसियो दौगल एलैन।

साँस तँ प्रोफेसर जफरक चलैत रहैन मुदा चेतन-शून्य छला। लगले डाक्टर बजौल गेल। हसीना पंखा हौंकए लगली। पहिने डाक्टर प्रोफेसर जफरक मुँहपर पानिक छिच्चा देलखिन। पानिक छिटका पड़िते जफर आँखि खोललैन। आँखि खुलिते डाक्टर आला लगा कऽ देखलकैन। आला रखि दूटा सूइया लगेलखिन। सूइया पड़िते प्रोफेसर जफर होशमे एला। मुदा तेतेक दुख प्रोफेसर जफरक हृदैकेँ पकैड़ नेने रहैन जे फेर अचेत भऽ गेला..!

दवाइक प्रभावे प्रोफेसर जफर होशमे अबैथ आ हृदैक दुखसँ पुनः बेहोश भऽ जाइथ। होश-बेहोशक बीच पतिकेँ देख हसीनो अचेत भऽ गिर पड़ली। एते काल डाक्टर सिरिफ प्रोफेसर जफरेक इलाज करै छला मुदा हसीनाक दशा देख हुनको इलाज करए लगला।

आठ बजे रातिक पछाइत दुनू परानी प्रोफेसर जफर नीक जकाँ होशमे एला। जखन दुनू गोरे बिस्कुट आ चाह खेलैन-पीलैन तखन परिवारक सभकेँ बिसवास भऽ भेल जे आब नीक भऽ गेला। आराम करैले दुनू गोरेकेँ पलँगपर छोड़ि सभ सभ दिस भऽ गेल। एगारह बजेक घन्टी घड़ीमे टुनटुनाएल। घन्टी सुनि प्रोफेसर जफर पत्नीकेँ पुछलखिन-

"जगले छी?"

"हँ।"

"अपने दुनू बेटा मित्र-ज्योतिमणि आ हुनक परिवारक हत्या केलक! हत्यारा-बेटाक बाप बनि जीअबसँ नीक मरब। अहाँकेँ जँ ऐ परिवारक बेटा-पुतोहुसँ सिनेह हुअए तँ जीबू मुदा हम एक्को क्षण जीब पाप बुझै छी।"

कहि प्रोफेसर जफर गरदैनमे फँसरी लगबए लगला। पतिकेँ गरदैनमे फँसरी लगबैत देख हसीना अचेत भऽ पलँगसँ लुढ़ैक निच्चाँमे गिर पड़ली। प्रोफेसर जफर फँसरी लगा प्राण तियागि लेलैन...।

जखन हसीनाकेँ होश एलैन तँ पतिकेँ फँसरी लागल झुलैत देखली। झुलैत देख दुनू मित्रक बीचक सिनेह हसीनाक मनमे एते ग्लानि पैदा कऽ देलकैन जे ओहो वेचारी फँसरी लगा मरि गेली।

जखन नीलमणि पढ़िते रहैथ तहिए सोचि नेने छला जे हम शहरमे नै गाममे रहब। सभ तरहेँ गाम शहरसँ नीक। ने प्रदूषणक दोष आ ने चोर-उचक्काक डर। भूखलकेँ एक टुकड़ी रोटी देलासँ मन

जुड़ाइत मुदा जैठाम सभ किछु भरल-पूरल रहै छै तैठाम एक टुकड़ी रोटीक महत्ते की हएत। विशाल मानव रूपी बोनमे तपस्या करैक विशाल क्षेत्र होइत, तँए जैठाम वृक्षकेँ माटि-पानिक अभाव होइत तैठाम रहि सेवा करब विशेष महत रखैत। की गमलाक सजौल फूल बोनक पानि-पाथर खेलहा फूलक बरबैर भऽ सकैए?

एम.बी.बी.एस.क डिग्री लऽ डाक्टर नीलमणि अपन सभ सामान सेरिया, गाम जाइक कार्यक्रम बना संगी-साथी सभसँ भेँट-घाँट करए लगला। अपन अन्तरंग मित्रसँ लऽ कऽ आत्मीय गुरूक ओइठाम जा-जा नीलमणि अपन भविसक संकल्प व्यक्त करैत असिरवाद लेलैन। दोसर दिस, गाममे, हिन्दू-मुसलमानक बीच धार्मिक वा जातीय लड़ाइ शुरू भऽ गेल। संगी-साथी सभसँ मिलि जुलि डाक्टर नीलमणि कोठरीमे बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे मने-मन विचारए लगला। रेडियो बजैत बगलमे राखल। रातिक आठ बजैत। सवा आठ बजेक समाचारमे हिन्दू-मुसलिमक लड़ाइक चर्चा भेल। स्पष्ट समाचार नहि। मुदा जइ इलाकामे नीलमणिक घर छैन ओइ इलाकाक गामक चर्चा समाचारमे आबि गेल छल। पहिल बेरक समाचार सुनि नीलमणिकेँ भेलैन जे सुनैमे धोखा भेल। मुदा कनीए कालक पछाइत समाचार दोहरौल गेल। समाचार सुनिते डाक्टर नीलमणिक हृदैमे जोरसँ धक्का लगलैन। जहिना पहाड़क निच्चाँक आदमीक ऊपरमे पहाड़पर सँ लुढ़कैत पाथरक टुकड़ा खसलासँ होइत तहिना डाक्टर नीलमणिकेँ भेलैन। कुरसीपर सँ उठि बाहर आबि सड़क दिस देखए लगला। सड़कपर गाड़ी-बस चलैत। मुदा पएरे लोकक चलब पतरा गेल छल। गोटि◌-पँगरा कियो-कियो चलैत। सही ढंगसँ समाचार बुझैक इच्छा डाक्टर नीलमणिक मनकेँ झकझोड़ैत रहैन। ओना, अखन धरि डाक्टर नीलमणि ओते चिन्तित नहि, किएक तँ इलाकाक समाचार सुनने छला।

नअ बजि गेल। कोठरी बन्न कऽ डाक्टर नीलमणि खेनाइ खाइले होटल विदा भेला। कोठरीसँ निकैलते जेना कियो किछु कहि देलकैन, एकाएक मनमे डर प्रवेश कऽ गेलैन। डर समाइते आँखि उठा-उठा चारू दिस ताकए लगला। सुनसान राति। सन-सन करैत अन्हार। थोड़े काल ठमैक डाक्टर नीलमणिक मन असथिर कऽ होटल दिस बढ़ला। होटल पहुँचते मुँह-हाथ धोइ एकटा खाली टेबुल लगक कुरसीपर चुपचाप बैस, आन-आन गोरेक मुँहक बात सुनए लगला। टी.बी. चलैत। गौरसँ टी.बी.क समाचारपर कान रखने। होटलक नोकर थारीमे खेनाइ परोसि डाक्टर नीलमणिक आगूमे देलकैन। खाए लगला। मुदा जहिना बहैत पानिमे माटिक वा कोनो आन वस्तु पड़लासँ पानिक बहाउ अवरूद्ध होइत तहिना भोजनक अन्न नीलमणिकेँ कण्ठसँ निच्चाँ उतरबे ने करैन। खेनाइ छोड़ि हाथ-मुँह धोइ होटलबला-केँ पाइ दऽ सोझे अपन कोठरी चलि एला। कोठरी आबि पलँगपर पड़ि रहला। मुदा निनक केतौ पता नहि। कछमछ करैत डाक्टर नीलमणि एक करसँ दोसर कर घुमैत रहला। भोर हेबाक प्रतिक्षामे डाक्टर नीलमणि। देवालमे टँगल घड़ी दिस नजैर उठा-उठा तकैथ।

रातिक एगारह बजैत। पलँगसँ उठि केबाड़ खोलि डाक्टर नीलमणि बाहर निकलला। सड़कपर गाड़ी-बस चलब बन्न भेल। आँखि उठा कऽ अकास दिस तकलैन। डण्डी-तराजू उगि गेल मुदा सप्तर्षिक केतौ पता नहि। पुनः डाक्टर नीलमणि कोठरी आबि पलँगपर पड़ि रहला।

भोर होइते डाक्टर नीलमणि पलँगसँ उठि, नलमे कुरुर कऽ चाहक दोकान दिस विदा भेला। चाहक दोकानपर, उट्ठा काज करैबला मोटिया, रिक्शा चलौनिहार सभ बैस चाहो पीबैत आ रेडियो समाचारक चरचा करैत। किछु गोरे, हिन्दू-मुसलमानक लड़ाइक,

निन्दो करैत तँ किछु गोरे बाहबाहियो करैत। किछु गोरे मोरचापर जा लड़ैयो-ले सन-सन करैत। चुपचाप बैस डाक्टर नीलमणि चाहो पीबैथ आ गप्पो सुनैथ। चाह पीब डेरा आबि कपड़ा पहिर डाक्टर मुकुल ऐठाम विदा भेला।

डाक्टर मुकुल कुरसीपर बैस मुँहपर हाथ दऽ कौल्हुके घटनाक सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। डाक्टर नीलमणिकेँ देखते कहलखिन-

"अहाँ गाम नै जाउ। सौंसे इलाकामे तनाव बनल अछि। निश्चित समाचार तँ अखन धरि नइ बुझि सकलौं मुदा रूप रंगसँ बुझि पड़ैए जे लड़ाइ बन्न नै हएत आरो बढ़त।"

डाक्टर मुकुलक बात सुनि डाक्टर नीलमणिक ह्रदए थर-थर काँपए लगलैन। गाममे रहैक विचार सेहो चूर-चूर हुअ लगलैन। मुदा परिवारक सोग उत्तेजित करैत रहैन।

तीन दिनक पछाइत इलाका शान्त भेल। डाक्टर दलक कार्यक्रम इलाका-ले बनल। दलक संग डाक्टर नीलमणि सेहो विदा भेला। डाक्टर नीलमणिक आग्रहसँ दल नीलमणिक गाम शान्तिपुर पहुँचल। शान्तिपुरमे एक्कोटा घर दुरूस नहि। सभ आगिमे जरल। जीवित आदमीक पता नहि। जहाँ-तहाँ लाश छिड़ियाएल। हजारो कौआ-कुकुर आ गीध पसरल।

अपन घर लग पहुँचते डाक्टर नीलमणि अपन माए-बापक लाश आ जरल घर देख अचेत भऽ गिर पड़ला।

कम्पाउण्डर सभ नीलमणिकेँ उठा मेडिकल भानमे दऽ इलाज शुरू करबेलैन। कनीए कालक पछाइत डाक्टर नीलमणि होशमे एला। नीलमणिकेँ होशमे अबिते डाक्टरक दल आगू बढ़ि गेल।

मुदा डाक्टर मुकुल नीलमणिपर धियान रखि मने-मन सोचैथ जे नीलमणि ऐ दुखद घटनाकेँ सहि नै सकता। एक मनुख होइक नाते

डाक्टर मुकुल मने-मन संकल्प केलैन जे जाधैर नीलमणिकेँ दुख सहैक शक्ति नै आबि जेतैन ताधैर छोड़ब उचित नहि।

डाक्टरक दल घुमि कऽ आबि गेल। डाक्टर नीलमणिकेँ अपने ऐठाम डाक्टर मुकुल रहैक बेवस्था कऽ देलखिन। रसे-रसे डाक्टर नीलमणिक ह्रदए असथिर हुअ लगल मुदा माए-बापक पीड़ा मनसँ मेटाएल नहि।

सात दिनक पछाइत डाक्टर नीलमणि बैंकसँ रूपैआ निकालि कलकत्तासँ सोझे दरभंगा आबि गेला। मिथिला अबैक कारण छेलैन, पिताक मुहेँ सुनल मिथिलाक गुणगान। दुनियाँक स्वर्ग मिथिला। जेहने माटि तेहने पानि। जेहने हवा तेहने वातावरण। रंग-बिरंगक गुणसँ भरल मिथिलाक गाछ-बिरीछ सभ समैमे फुलाइत-फड़ैत...।

दरभंगा स्टेशनपर उतैर डाक्टर नीलमणि प्लेटफार्मपर बनल ब्रेंचपर बैसला। अनभुआर जगह, मनमे उठलैन- आब केतए जाइ..? डाक्टर नीलमणिकेँ एक दिस माए-बापक सोग पकड़नहि रहैन तँ दोसर दिस अपन बेठेकान जिनगी..। ऐठामक भाषासँ सेहो अनभुआरे छैथ। अंग्रेजी बजनिहार एकोटा ने देखैत...।

जइ ब्रेंचपर नीलमणि बैसल छला ओही ब्रेंचपर जगह देख दुनू परानी पण्डित शंकर सेहो बैसला। दुनू परानी शंकर अस्पताल आएल छला। डाक्टर नीलमणि दुनू परानी– पण्डित शंकरक गप-सप्प अँखिहासि कऽ सुनए लगला। मुदा मैथिली नै बुझि किछु बुझबे ने करैथ।

पण्डित शंकर झोरामे सँ लोटा निकालि पानि आनए कल दिस विदा भेला आ पत्नी झोरामे रखल चूड़ा, गुड़ आ छिपली निकालए लगली। पएर-हाथ धोइ कऽ लोटामे पानि नेन पण्डित शंकर एला। पतिक हाथसँ लोटा लऽ पत्नी छिपली धोइ कऽ चूड़ा-गुड़ निकालि

देलखिन। ब्रेंचपर बैस पण्डित शंकर हाथमे छिपली लैत डाक्टर नीलमणिकेँ आग्रह केलखिन-

"बौआ, अहूँ खाउ?"

पण्डितजीक बोली तँ नीलमणि नै बुझलैन मुदा आगू बढ़बैत छिपली देख मुस्कियाए लगला। पण्डित शंकर डाक्टर नीलमणिक सुखल मुँह देख आग्रह केलखिन मुदा भाषाक विशाल समुद्र बीचमे रहने सिनेहमे आड़ि देने। हाथसँ बढ़ौल छिपली पण्डित शंकर आ डाक्टर नीलमणिक बीच अँटकल। पण्डित शंकर बुझि गेलखिन जे हमर सादगी देख डाक्टर नीलमणि अंग्रेजी नै बाजि रहल छैथ मुदा हम तँ जनै छी। तँए हमहीं पहिने बाजी। अंग्रेजीमे पण्डित शंकर डाक्टर नीलमणिकेँ अपन पता पुछलखिन। धाराप्रवाह अंग्रेजी बजैत डाक्टर नीलमणि अपन जिनगीक बहुत बात पण्डित शंकरकेँ कहलकैन। दुनू गोरे चूड़ा-गुड़ खा पानि पीब, निर्मलीक गाड़ी पकैड़ लेलैन।

गाड़ीमे बैस डाक्टर नीलमणि आ पण्डित शंकर–दुनू गोरे मिथिला आ बंगालक विषयमे गप-सप्प करए लगला। दुनू गोरेक बीचक विचार उदेसक लग पहुँच गेल। गाड़ीसँ उतैर तीनू गोरे पएरे गाम एला। गाम आबि पण्डित शंकर डाक्टर नीलमणिक रहैक बेवस्था अपने ऐठाम कऽ देलखिन। दू-चारि दिन तँ नीलमणिकेँ अनभुआर जकाँ बुझि पड़लैन मुदा जिनगीक ठर भेटलासँ ह्रदैमे खुशी बढ़ैत गेलैन। नीक लगए लगलैन। टो-टा कऽ मैथिलियो बाजए लगला।

अखन धरि मिथिलाक गाममे रोगक इलाज जड़ी-बुटीसँ लऽ कऽ झार-फूक धरि होइत। ने एलोपैथिक ढंगसँ इलाज केनिहार आ ने लोक बुझैत। एक तँ नव ढंगक इलाज दोसर नव लोक केनिहार। तँए कठिन। डाक्टर नीलमणि तँ बच्चा रहैथ तँए मिथिला समाजक सम्बन्धमे किछु ने बुझैथ। मुदा पण्डित शंकर तँ मिथिलाक समाजकेँ

नस-नस जनैथ।

आठ बजेक भिनसुरका समए। पण्डित शंकर आ डाक्टर नीलमणि चाह पीब गप-सप्प करै छला। डाक्टर नीलमणि पण्डित शंकरकेँ पुछलखिन-

"दादा, ऐठाम रोगक इलाज कोन रूपे कएल जाइ छइ?"

डाक्टर नीलमणिक प्रश्न सुनि कनी काल गुम्म भऽ पण्डित शंकर कहलखिन-

"ऐठाम, मिथिलांचलमे रोगक इलाज करैक अनेको पद्धैत चलि रहल अछि। ओना, मुख्य रूपसँ लोक जड़ी-बुट्टीक उपयोग कऽ रोगक इलाज करैए, जे बहुत पहिनेसँ चलि आबि रहल अछि। इलाजो बिसवासू अछि। आयुर्वेद नाओंसँ ऐ इलाजकेँ जानल जाइए। पैघ-पैघ ज्ञानी पुरुख सभ ऐ इलाजकेँ खोजि-खोजि समृद्ध आ विकसित केलैन। दोसर तरहक अछि झार-फूक, जे मंत्रक माध्यमसँ चलैए। तेसर तरहक अछि भगताइ, जे देवस्थानमे खास बेकती-द्वारा देवी-देवताक नाओंपर होइत। ऐ तरहेँ आरो केतेको रस्तासँ रोगक इलाज ऐ इलाकामे चलैत आबि रहल अछि।"

पण्डित शंकरक बात सुनि नीलमणि पुछलखिन-

"की एलोपैथक चलैन नै अछि?"

"अखन धरि नै अछि। मुदा बिनु एलोपैथी इलाजसँ आइक समैमे रोगक इलाज असम्भव भऽ गेल अछि। किएक तँ बहुतो एहेन रोग अछि जेकर सटीक निदान ने होमियोपैथमे अछि आ ने आयुर्वेद आकि यूनानी इत्यादिमे ऐठाम अछि।"

पण्डित शंकरक बात सुनि मुड़ी डोलबैत डाक्टर नीलमणि पुछलखिन-

"जखन ऐठामक लोक एलोपैथ जनितो ने अछि तखन इलाज केना कराएत?"

पण्डित शंकर बजला-

"अइले वैचारिक आ बेवहारिक संघर्ष करए पड़त। हमरा ओहिना मन अछि जे जखन लहेरियासराय अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरू भेल तखन गाममे एहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाइक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैए। जेकर असर भेलै जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअ लगला। मिथिलांचलक ई इलाका जाति आ धर्मसँ ओइ रूपे बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिनु संघर्षे सम्भव नै अछि।"

डाक्टर नीलमणि-

"तखन की करब?"

पण्डित शंकर-

"हँ उपए अछि। हम अहाँकेँ रस्ता बता दइ छी। अहाँ बंगाली छी जइसँ जाति आ घर्म दुनू झँपाएल अछि। ऐठाम मोटा-मोटी हिन्दूमे तीन वर्ण अछि। पहिल अगुआएल जाति, जेना सोति, ब्राह्मण, राजपुत, भूमिहार इत्यादि। दोसर पनिचल्ला जाति- जेना यादव, धानूक, कियोट, अमात, बरइ, कोइर इत्यादि आ तेसर अछि हरिजन। जेकरा समाजमे अछोप जाति कहल जाइ छै, जेकर पानि उच्च जातिक लोक नै पीबै छैथ। ने पानि पीबै छैथ आ ने छुअल अन्न खाइ छैथ।"

डाक्टर नीलमणि-

"अरे बाप रे! तब तँ समाज टुकड़ी-टुकड़ीमे बँटल अछि?"

पण्डित शंकर मुस्कियाइत बजला-

"यएह मिथिलाक विशेषता छै जे सभ सभ जाति आ धर्मसँ बँटल अछि मुदा समाजिक सम्बन्ध सेहो मजगूत अछि। जखन कखनो कोनो आफद-असमानी अबैत तखन सभ एक भऽ सहयोग करैत। तेतबे नहि, जखन कोनो धार्मिक काज होइत तखन सभ एकजुट भऽ सहयोग करैत।"

कनी काल गुम्म भऽ पुनः डाक्टर नीलमणि पुछलखिन-

"तखन तँ अजीब गति अछि?"

हँसैत पण्डित शंकर फेर बजला-

"जेते जातिक चर्चा केलौं ओइमे आब फुटा-फुटा कऽ सुनू। एक जातिक भीतर, कुल-मूल आ गोत्रक आधारपर अनेक विभाजन अछि। जे एक जातिक रहनौं, ने दोसरक अन्न खाइए आ ने कथा-कुटुमैती करैए। 'हम पैघ तँ हम पैघ' ऐ उलझनमे सभ अपनाकेँ पैघ बुझि मस्त भेल अछि। जातिक रूआब, पैघत्व आ बुधियारीक रूआब सभमे छइ। मुदा ऐ सभ ओझरीमे अहाँकेँ नै जाइक अछि। आइए हम सभ वर्गक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजबै छी, ओहो सभ बेरोजगारो अछि आ लोककेँ रोगक उचित इलाज सेहो नइ भऽ पबै छै, जइसँ रोगी मरबो करैए आ रोगग्रस्त भऽ जिनगियो जीबैए।"

डाक्टर नीलमणि-

"एहेन परिस्थितिमे केना डेग आगू बढ़ौल जाए?"

पण्डित शंकर-

"आइ धरिक इतिहास यएह कहैए जे जहिया कहियो समाजमे जखन कोनो कल्याणकारी काज शुरू कएल गेल तखन समाजक बहुसंख्यक लोक ओकर विरोध केलक। मुदा केतबो विरोध भेल तैयो काज आगू बढ़बे कएल। जे बादमे सभ मानि करए लगल आ आइ चलैए। जइसँ सभकेँ लाभ भऽ रहल छइ। तँए एक्को पाइ चिन्ता नै

करक चाही। एलोपैथी इलाजक प्रति जे विरोध ऐठाम अछि ओ शक्तिक विरोध नै अज्ञानताक विरोध छी। लोकक बीच जेना-जेना ज्ञानक ज्योति प्रखर होएत तेना-तेना लोकक झुकाउ एलोपैथी इलाज दिस बढ़त। आइए हम अपनो गामक आ अगलो-बगलो-गामक सभ रंगक जातिक पँच-पँचटा नवजुबककेँ जे कम्मो पढ़ल-लिखल हएत, बजबै छी। अहाँ ओइ जुबक सभकेँ किछु दिन पढ़ा रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ उपचार धरिक ढंग बुझा देबइ। वएह सभ अहाँक परचारो करत आ छोट-छीन इलाज करैत सहयोगियो बनत।"

पण्डित शंकरक विचार डाक्टर नीलमणिकेँ जँचलैन। मनमे संतोख भेलैन। संतोखक जन्म होइते मुस्कियाइत बजला-

"अपने परिवारमे दुइए परानी छी और कियो नै छैथ?"

डाक्टर नीलमणिक बात सुनि पण्डित शंकर हँसैत कहलखिन-

"परिवार बहुत नमहर अछि, पढ़लो-लिखल अछि। दूटा बेटा आ तीनटा बेटी अछि। पाँचोक बिआह-दुरागमन भऽ गेल अछि। दुनू बेटो आ तीनू जमाइयो नोकरी करै छैथ। जहिना दुनू बेटा अपन बाल-बच्चाक संग बाहरे रहै छैथ तहिना तीनू बेटियो-जमाए बाहरे रहै छैथ। हमहूँ संस्कृत महाविद्यालयमे शिक्षकक काज करै छेलौं। चारि साल पहिने नोकरीसँ सेवा निवृत्त भेलौं। दर्शनशास्त्र आ साहित्य पढ़बै छेलौं। जखन नोकरीएमे रही तखने बच्चा सभ नोकरी करए लगल। जखन सेवा निवृत्त भेलौं तखन दुनू बेटा कहलैन- 'आब अहाँ बुढ़ भेलौं, घरपर असगर रहब नीक नहि। आब अहाँकेँ सेवा-टहलक जरूरत पड़त, जइले लगमे आदमी चाही। हम सभ केतौ रहब अहाँ केतौ, ओइसँ कष्ट हएत।' दुनू भाँइक विचार अपनो जँचल मुदा जिनगी भरि तँ अपनो किताबेमे सन्हियाएल रहलौं। अपन कर्तव्य दिस जखन नजैर उठा कऽ देखलिऐ तखन मनमे आएल जे मनुख सिरिफ

माइए-बापक बेटा नै होइत बल्कि समाजोक छी। माए-बापक ऋृण तँ चुका चुकलौं मुदा समाजक ऋृण तँ बाँकीए अछि। छठिहारे राति समाजक दाइ-माइ कोरामे लऽ अपन बेटा बनौने रहैथ तँए हुनकर ऋृण चुकबैले जिनगीक शेष समए हुनका बीच रहि चुकेबैन।"

पण्डित शंकरक बात सुनि डाक्टर नीलमणिक हृदैमे बिसवास जगलैन। मनमे एलैन जे सभ आदमीकेँ कर्तव्यनिष्ठ हेबा चाही। जखने सभ अपन-अपन कर्तव्य बुझि कर्म करत तखने सबहक कल्याणो हएत आ मनुखक बीच प्रेम सेहो बढ़त।

डाक्टर नीलमणिक चर्चा पँचकोसीमे चलए लगल। कियो 'डाक्टर नीलमणि' तँ कियो 'सेन साहैब' तँ कियो 'बंगाली बाबू' तँ कियो 'डाक्टर साहैब' कहि सम्बोधित करए लगलैन।ः

तीन सालक बेटा कपिलदेवकेँ। जन्मेसँ बच्चाकेँ तुतली लगल। साल भरि तँ बच्चाक तुतलीपर माए-बापक नजैरे ने पड़लैन। मुदा साल भरिक पछाइत दुनूक नजैर पड़लैन जे बच्चाक बोली गड़बड़ अछि। बोली सुधारैले कपिलदेव पहिने गहवर जा डाली लगौलक। तीन मासमे बच्चाक बोली नीक भऽ जाएत ई आश्वासन गहवरक भगता कपिलदेवकेँ देलखिन। भगताक असिरवाद सुनि दुनू परानी कपिलदेव बेरागने-बेरागने गहवर जा डाली लगबैत रहल। मनमे सोलहन्नी बिसवास रहै जे बच्चाक बोली सुधरबे करत मुदा मास दिनक उपरान्तो जखन बच्चाक बोलीमे मिसियो भरि सुधार नै भेलै तखन रसे-रसे दुनू परानीक बिसवास गहवरपर कमए लगल।

तीन मास बीत गेल मुदा बच्चाक तोतराएब नइ सुधरलै। पछाइत गहवरक आशा तोड़ि झार-फूकक रस्ता धेलक।

सुकनकेँ इलाकामे सभसँ नीक झार-फूक केनिहार बुझैत। केहनो साँप धेलहाकेँ मनतरेसँ छोड़ा दइत। ओना गोटे-गोटे मरबो

करैत मुदा अधिक बँचबे करैत।

दुनू बेकती कपिलदेव सुकन ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देख सुकन कपिलदेवकेँ कहलक-

“ई तँ बामा हाथक खेल छी, मुदा एकाबन रूपैआ पूजा-पाठ करैले पहिने जमा करए पड़तह।”

एकाबन रूपैआ पहिने जमा करैक बात सुनि कपिलदेव बाजल-

“अखन तँ संगमे ओते रूपैआ नै अछि मुदा अखनसँ ऐ बच्चाकेँ झार-फूक शुरू कऽ दियौ काल्हि भोरे एकाबनो रूपैआ दऽ देब।”

कपिलदेवक बात सुनि सुकन बाजल-

“झार-फूकक बात अहाँ नै बुझबै। पहिने पूजाक सभ सामान कीनि पूजा करब। पूजा केला पछाइत देवता हुकुम देता तखन ने झारब। बिनु देवताक हुकुम नेने जँ होइत तखन तँ सभ झारि लैत।”

सुकनक बात सुनि दुनू परानी कपिलदेव विचारलक जे अखन चलू रूपैआक व्योंत कऽ काल्हि आएब। दुनू परानी विदा होइत सुकनकेँ कहलक-

“अखन जाइ छी काल्हि ने तँ परसू आएब।”

कपिलदेवकेँ विदा होइत देख सुकन कहलक-

“अखन जँ अदहो-छिदहो रूपैआ जमा कऽ दी तँ हम काजकेँ जोरियबए लगब।”

सुकनक बात सुनि कपिलदेव कहलक-

“संगमे नइए, घरोमे जँ रहैत तँ अखने आनि दैतौं मुदा घरोमे नइ अछि। जोगार करए पड़त।”

“बड़बढ़ियाँ, अखन जाउ। अगर एकाबन रूपैआक जोगार नै हुअए तँ कम-सँ-कम एक्कैसो रूपैआक जोगार अबस्स केने आएब।

ओना हम आइए पूजा करै काल देवताकेँ नोत दऽ देबैन। तँए काजमे बिथुत ने हुअए। जँ बिथुत हएत तँ उन्ना-सँ-दुन्ना दुख भऽ जाएत। तखन सम्हारब कठिन भऽ जाएत।”

बच्चाकेँ नेने दुनू परानी कपिलदेव घर दिस विदा भेल। रस्तामे घरवालीकेँ कहलक-

“एक बेर दीनानाथ बाबासँ बच्चाकेँ देखा दितिऐ?”

कपिलदेवक विचार सुनि घरवाली बाजल-

“बड़ बढ़ियाँ कहलौं। केते दुखताहकेँ दीनानाथ छोड़ौलखिन। भगवान केलैन जँ अपनो बच्चाकेँ छुटि जाए।”

इलाकामे दीनानाथ नामी वैद। जड़ी-बुटीसँ रोगक इलाज करैत। कम्मे रोग एहेन होइ जेकरा दीनानाथ वैद नै छोड़ा पबैथ बाँकी सभकेँ छोड़ा देथिन।

बच्चाकेँ नेने कपिलदेव दीनानाथ ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देख दीनानाथ कहलखिन-

“बच्चाकेँ तुतली लगल अछि जे ऑपरेशन केलासँ ठीक हएत। हम ऑपरेशन नै करै छी। अहाँ सेन साहैब ऐठाम चलि जाउ। ओ ऑपरेशनसँ ठीक कऽ देता। रोग साधारण अछि तँए बेसी खरचो-बरचो नहियेँ हएत।”

दीनानाथक विचार सुनि कपिलदेव दुनू परानी बच्चाकेँ नेने डाक्टर नीलमणि ऐठाम आएल। डाक्टर नीलमणि एकटा कम्पाउण्डरकेँ ऑपरेशनेक सम्बन्धमे बुझबैत रहथिन। कपिलदेवकेँ देख डाक्टर नीलमणि पुछलखिन। कपिलदेव बच्चाक सम्बन्धमे कहलकैन। बच्चाक मुँह खोलि देखलखिन। जीह आ निचला तालुक बीच मौस जुटल। बच्चाकेँ कोठरीमे चौकीपर सुता कैंचीसँ काटि, दवाइ लगा बाहर आनि कपिलदेवकेँ कहलखिन-

“साधारणे ऑपरेशन छल, जाउ ठीक भऽ गेल।”

कपिलदेव विदाहो ने भेल छल आकि दू आदमी खाटपर टाँगि एकटा रोगीकेँ नेने आएल। डाक्टर नीलमणि तुरन्त उठि कऽ देखलखिन। ओइ आदमीक दहिना पएरक हड्डी टुटल देख डाक्टर नीलमणि रोगीक समाँगकेँ कहलखिन-

“हिनकर पएरक हाड़ टुटल छैन, पलश्तर करए पड़त। बिनु पलश्तर केने पएर ठीक नै हेतैन।”

समाँग कहलकैन-

“डाक्टर साहैब जखन अहाँ ऐठाम एलौं तँ जे केलासँ पएर चलैबला हेतै से कऽ दियौ।”

समाँगक बात सुनि डाक्टर नीलमणि अलमारीसँ पलश्तरक सभ समान लऽ पलश्तर कऽ देलखिन।

यएह दुनू इलाज डाक्टर नीलमणिक जिनगीमे चारिचान लगा देलक। चौगामामे, बिहाड़ि जकाँ डाक्टर नीलमणि सेनक गुण पसैर गेलैन। गुण पसैरते सभ दिन पनरह-बीस रोगी अबए लगल। जइसँ डाक्टर नीलमणिकेँ कमाइ हुअ लगलैन आ परोपट्टामे सर्जरीक इलाजो पसरल।

चारिक अमल। सुरूज पच्छिम दिस झुकि गेल जइसँ रौदमे तीखरपनो कमल। पण्डित शंकर डाक्टर नीलमणि लग एला। डाक्टर नीलमणि किताब पढ़ैत रहैथ। पण्डित शंकरकेँ देख किताब मोड़ि टेबुलपर रखि पण्डित शंकरक मुँह दिस देखए लगला जे किछु बजता। विचार दैत पण्डित शंकर कहलखिन-

“डाक्टर साहैब, आब अहाँले दूटा काज करब जरूरी भऽ गेल। पहिल, अखन धरि दरबज्जापर रहि इलाज करै छी से अलग बेवस्था करब आ दोसर बिआह करब।”

पण्डित शंकरक विचार सुनि डाक्टर नीलमणि बजला-

“अपनेक विचार तँ बड्ड उत्तम अछि मुदा अरचन तँ दुनूमे अछि। पहिल, घर बनबैले घराड़ी आ समानक जरूरत हएत। आ दोसर, हम तँ बंगालक रहनिहार छी, ऐठाम बिआह केना हएत?”

डाक्टर नीलमणिक प्रश्न सुनि पण्डित शंकर हँसैत कहलखिन-

“अहाँक प्रश्न उचित अछि मुदा दमगर नै अछि। घर-घराड़ी-ले हम छी। बाड़ीमे घर बना देब। जे रोड-साइडमे सेहो अछि आ बीच टोलोमे अछि जइसँ चोरो-चहारक कोनो डर नै रहत। आ दोसर प्रश्न बिआहक अछि, ओहो कोनो बड़ पैघ समस्या नहियेँ अछि। ई मिथिला छिऐ। ऐठाम अदौसँ जाति-प्रथा नै रहल। ओना, समाजकेँ गलत रस्ता दिस बढ़बैले समाज-विरोधी शक्ति जाति-धर्मक कबच बना अपन उल्लु सोझ करैत रहल, तँए जाति-धर्म एते बुझि पड़ैए। ऐठाम स्वयंवरक चलैन अदौसँ रहल। स्वयंवरक अर्थ होइ छै स्वयं बड़केँ चुनि बिआह करब, जे जाति-पाँजिसँ अलग अछि।

ः

शब्द संख्या : 3467

तेरह

कलकत्तामे एकटा वेपारी ओइठाम गणेशी नोकरी करैत। बीसो बर्खसँ ऊपरेसँ जीप चलबैत।

आजादीक आन्दोलनक दौरान बियालीस ईस्वीमे रेलक पटरी उखाड़ल गेल, पोस्ट ऑफिस जरौल गेल, टेलीफोनक तार काटल गेल। असहयोग आन्दोलनक सहयोगमे ढेरो आदमी नोकरी छोड़लक। रेल, पोस्ट ऑफिस आ आनो-आनो संस्थाकेँ चलब मुसकिल भऽ गेलइ। जमालपुरमे त्रिवेणी उट्ठा[6] नोकरी रेलबेमे करैत। आदमीक अभावक दुआरे पछाइत स्थायी नोकरी रेलबैएमे भऽ गेलइ। रेलबेमे बहाली होइत देख त्रिवेणी अपन भाए–बंगटकेँ तार पठा जमालपुर अबैले कहलक।

गणेशी बंगटक दोस। बच्चेसँ दुनू गोरेक दोस्ती चलि अबैत। घरो एक्केठाम। शुरूएसँ दुनू गोरे संगे नाचो-तमासा देखए जाए आ भरि दिन ताशो खेलए। परोपट्टामे जँ केतौ डंका पड़ै वा कोनो मेला लगै तँ दुनू गोरे संगे जा कऽ देखए। बेरूपहरकेँ सभ दिन दुनू गोरे लाल काका ऐठाम पीसुआ भाँगो पीबए।

पोस्ट ऑफिससँ तार पहुँचते बंगट गणेशीक संग जा मास्टर

[6] टेम्प्रोरी

साहैबसँ पढ़ौलक। समाचार सुनि बंगट गणेशियोकेँ जमालपुर चलैले कहलक। घरपर आबि दुनू गोरे खरचोक ओरियान केलक आ कपड़ो-तत्ता खिचलक। दोसर दिन गाड़ी पकैड़ दुनू गोरे विदा भेल।

बंगटक रस्ता त्रिवेणी तकैत। भागलपुर जाइ वाली गाड़ीसँ दुनू गोरे जमालपुर पहुँचल। रातिमे दुनू गोरे त्रिवेणीक डेरामे रहल। भोरे तीनू गोरे कलकत्ताक गाड़ी पकड़लक। किएक तँ रेलबेक हेड ऑफिस कलकत्तेमे। जइ ऑफिससँ रेलबे कर्मचारीक बहाली होइत।

तीनू गोरे हाबड़ा स्टेशनमे उतैर रेलबेक हेड ऑफिस भँजियाबए लगल। तीनूमे केकरो अक्षर-ज्ञान नइ रहने ऑफिसक भाँजे ने लगइ। अनठिया केकरोसँ पुछबोमे दिक्कते, सभ बंगलामे बजैत। तीनू गोरे बाटपर ठाढ़ भऽ गुनधुन करैत रहए। एकटा रिक्शाबला-केँ अबैत देख त्रिवेणी मने-मन सोचलक जे एकरेसँ पुछबै। रिक्शोबला दरभंगीए। लगमे रिक्शाकेँ अबिते त्रिवेणी हाथक इशारासँ रोकैले कहलक। रिक्शा रोकि रिक्शाबला पुछलकै-

“भाय, केतए जेबह?”

रिक्शा लग आबि त्रिवेणी बाजल-

“भाय रेलबेक हेड ऑफिस जाएब।”

हाथक इशारासँ देखबैत रिक्शाबला कहलकै-

“है-वएह उ देखै छहक, उहए रेलबेक हेड ऑफिस छिऐ, तइले रिक्शा किए करबह।”

तीनू गोरे विदा भेल। ऑफिसक आगूमे करीब दू कट्ठाक परती। जइमे सात-आठटा अशोक, यूक्लिपटश आ बोतलक गाछ। अशोकक गाछक छाहैरमे बंगट आ गणेशीकेँ बैसा त्रिवेणी ऑफिस दिस बढ़ल। ऑफिसक गेँटपर चपरासी बैसल। चपरासी लग जा त्रिवेणी बाजल-

“भाय, हम जमालपुर रेलबे टीशनक इस्टाप छी, एते दिन उठा काज करै छेलौं। आब सालतनि भऽ गेल। वएह चिट्ठी लइले एलौं हेन। कनी किरानी बाबूकेँ देखा दाए।”

चपरासी कहलकै-

“बीड़ी पीबै छह। पहिने बीड़ी पिआबह तखन संगे नेने जा काज करा देबह।”

जेबीसँ त्रिवेणी दूटा बीड़ी आ सलाइ निकालि दुनू बीड़ी लगौलक। एकटा चपरासी हाथमे देलक आ दोसर अपने पीबए लगल। बीड़ीक धुँआ फेकैत चपरासी बाजल-

“समाँग सभ गाममे नै छह? अखन धड़हल्लेसँ बहाली होइ छइ। सभकेँ नोकरी भऽ जेतह।”

त्रिवेणी-

“खरचो-बरचो पड़तै।”

चपरासी-

“पाँच रूपैए आदमी खरच हेतह। दू रूपैआ किरानी बाबू लेतह, दू रूपैआ साहैब आ एक रूपैआ हमर हिस्सा होइए।”

त्रिवेणी-

“भाय, करए की सभ पड़तै।”

चपरासी-

“किछु ने करए पड़तह। पाँच रूपैआ लाबह। तूँ एत्तै बैसह। ऑफिसेमे फारम छइ। खाली अपन नाम-गामक ठेकान कहि दाए। ओइठाम फारम लऽ किरानी बाबूसँ भरा देबह। खाली हमरा सोझहामे दसखत करए पड़तह।”

“अगर दसखत कएल नै होइत होइ तब?”

“तब की? औठा निशान दऽ देतइ”

“भाय दूटा समाँग आएल अछि। दुनूकेँ काज करबा दहक।”

“अच्छा थमहह, किरानी बाबूसँ गप केने अबै छी।”

कोठरी जा चपरासी किरानीकेँ कहलक। आमदनी देख चपरासीए संगे बाहर निकैल तीनू आदमीकेँ देख आँखिक इशारा दैत चाहक दोकान दिस विदा भेल। चपरासी त्रिवेणीकेँ कहलक-

“बड़े बाबूक संग जाउ। चाह-पान करा देबैन। सभ काज लगले भऽ जाएत।”

किरानीक पाछू त्रिवेणी धऽ लेलक। ऑफिसक कम्पाउण्डसँ निकैलते त्रिवेणी किरानीकेँ कहलक-

“हाकिम, तीन बर्खसँ हम उट्ठे काज करै छी। ऐ बेर सालतनि भेल। वएह कागत-ले एलौं।”

किरानी-

“आरो जे दूटा समाँग छह ओकरो नोकरी दिएबहक?”

त्रिवेणी-

“हँ हुजूर। बड़ गरीब सभ छइ। नोकरी भऽ जेतै तँ कहुना-कहुना गुजर कऽ लेत।”

किरानी-

“आब दोकान लग एलौं। नोकरी-चाकरीक गप बन्न करह।”

दुनू गोरे चाह पीब पान खा गप-सप्प करैत ऑफिस आएल। ऑफिसक मुँहपर अबिते किरानी गेँटकीकेँ कहलक-

“हिनका सबहक काज जल्दी करा दहुन।”

कहि किरानी भीतर चलि गेल। बंगट आ गणेशीक नाओं-पता

लिखि चपरासी त्रिवेणीसँ पनरह रूपैआ लऽ भीतर जा तीनू गोरेक चिट्ठी नेने आबि त्रिवेणीकेँ हाथमे दैत कहलक-

"हिनका दुनू गोरेकेँ एतै गैरेजमे काज भऽ गेलैन। अखने गैरेज चलि जाउ आ इंचार्जक हाथमे चिट्ठी दऽ देबैन। औझुके दिनक बहाली भऽ जाएत। काल्हिसँ काज करत।"

तीनू गोरे गैरेज गेल। त्रिवेणी दुनू गोरेक चिट्ठी इंचार्जकेँ दऽ दुनू आदमीकेँ देखा देलक। इंचार्ज नाओं-ठेकान पुछि, बोहीमे लिखि, काल्हिसँ काज करए अबैले बंगट आ गणेशीकेँ कहलक।

काज भरिगर। भरि दिन[7] लोहाक रड, नट-बोल्ट, चदराक टुकड़ा, शीलपट इत्यादि एक ठामसँ उठा दोसर ठाम राखए पहुँचबैत-अनैत। सरकारी नोकरी बुझि बंगट साहससँ करैत मुदा गणेशीकेँ मने ने लगैत। अट्ठाइस दिन, दुनू गोरेकेँ काज करैत पूरि गेल। दू दिन महिनामे कम छल। दुनू गोरेकेँ इंचार्ज बजा दरमाहा दऽ चारिम दिनसँ काज करए अबैले कहलक। अहिना सभ मास होइ।

पैंतालिसे रूपैआक नौकरी। कलकत्ता सन जगहमे रहब। केतबो काटि-छाँटि कऽ जिनगी बितबैत तैयो बीस-पचीस रूपैआ खरचे भऽ जाइत। पाँच रूपैआ जम्मेमे कटि जाइ, बाँकी पनरह-बीस बँचइ। गणेशी मने-मन सोचए लगल जे असगरमे पच्चीस रूपैआ खरच भऽ जाइए आ गाममे तँ तीन गोरे अछि, पनरह रूपैआसँ की हेतइ? सालो भरिपर तँ गाम जेबे करब, गाड़ीमे टिकट नै लगत मुदा सभले कपड़ा-लत्ता, सनेस आ दुओ चारि साए रूपैआ लऽ कऽ नइ जाएब तँ केहेन हएत। मुदा ओहो दू-चारि साए औत केतएसँ। जाबे गाममे छेलौं ताबे टुटलो घरमे गुजर कऽ लइ छेलौं मुदा आब तँ सरकारी नोकरी करै छी। आबो जँ घर-दुआर नै बनाएब तँ कहिया

[7] आठ घन्टा

बनाएब।

जेते बात गणेशीक मनमे अबैत तेते मन खिन्न भेल जाइत। डेरासँ निकैल गणेशी चाहक दोकान दिस विदा भेल।

चाहक दोकानक बाहरेक ब्रेंचपर गणेशी बैस चाह पीबए लगल। कनीए कालक पछाइत एकटा वेपारी मोटर साइकिलसँ उतैर गणेशीक बगलेमे बैस चाह पीबए लगल। चुपचाप दुनू गोरे चाह पीबैत रहए। वेपारी चाहो पीबैत आ गणेशीकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि निंगहारबो करैत। चाह पीब गणेशी उठल कि ओ वेपारी पुछलकै-

"नोकरी करबह?"

नोकरीक नाओं सुनि गणेशी पुछलक-

"कोन तरहक काज अछि?"

वेपारी-

"काज तँ बहुतो अछि मुदा अखन कपड़ा दोकानमे जरूरत अछि।"

हल्लुक काज बुझि गणेशी बाजल-

"दरमाहा केते देबइ?"

वेपारी-

"चालीस रूपैआ, खेनाइ आ रहैले क्वाटर देबह।"

गणेशी-

"अहाँ एतै रहू। हम अपन कपड़ा-लत्ता डेरासँ नेने अबै छी।"

गणेशी डेरा पहुँच बंगटकेँ सभ सुमझा अपन सभ समान लऽ आबि गेल। वेपारीए-क मोटर साइकिलपर चढ़ि गणेशी वेपारीक घर पहुँचल। घरपर पहुँचते गणेशीकेँ एकटा कोठरी सुमझा देलक।

अपन सभ समान रखि गणेशी काज करए लगल। दिल खोलि गणेशी मेहनत करैत। चारि बजे भोरे उठि वेपारीक दुनू गाड़ीकेँ, जीपो आ कारोकेँ चिक्कनसँ साफ करैत आ सात बजेसँ पहिनहि नहा कऽ जलखै खा, कपड़ा दोकानपर चलि जाइत। बारह-एक बजे खाइले अबैत। खा कऽ फेर दोकानपर चलि जाइत। पाँच बजे बजारसँ तीमन-तरकारी आनए जाइत। फेर भिनसरे गाड़ी धुअबसँ काज शुरू करैत रहए। गाड़ी साफ करैत-करैत गाड़ी चलाएबो सीख लेलक। साल भरिक पछाइत गणेशी ड्राइवर भऽ गेल। दोकानदारीक संग गणेशी ड्राइवरियो करए लगल।

गणेशीक मेहनत आ इमानदारी देख वेपारी अपन समाँग बुझए लगल। जखन जे रूपैआ गणेशी घर पढ़बैले मंगैत, वेपारी दऽ दइत। सिरिफ काजक नाओं पुछि लइत। ऐ तरहेँ गणेशीकेँ बीस बरख कलकत्तामे भऽ गेल।

गाममे गणेशीक परिवार स्त्री चलबैत। सालमे एक बेर गणेशी एक मास-ले गाम अबैत। पाँचटा बेटा आ एकटा बेटी गणेशीकेँ। पहिल बेटी, बाँकी चारू बेटा। छओ भाए-बहिनकेँ गणेशी पढ़ैक खर्चा जोड़ए। बेटी मैट्रिकक परीक्षा देलक। साल भरिसँ गणेशी बेटी बिआहक ओरियान करैत। परीक्षे दुआरे बेटीक बिआह रूकल।

दू मासक छुट्टी लऽ गणेशी गाम आएल। पाँच भाँइक बीच एकटा बहिन तँए दिल खोलि कऽ खरच करैले गणेशी तैयार। कुटुमैती ठेमबए लगल। केतौ नीक घर भाँजपर अबै तँ लड़का दब आ केतौ लड़का बढ़ियाँ भेटै तँ घर दब। ऐ तरहेँ पनरह दिन बीत गेल। सोलहम दिन एकटा लड़काक भाँज लगलै। पितियौत भाएकेँ संग केने गणेशी लड़का देखए विदा भेल। अढ़ाइ कोस हटि ओ गाम, घर-बर देख गणेशीकेँ पसीन भऽ गेलइ।

मझोलका गिरहस्तमे सोनेलालक गिनती गाममे होइत। साठि-सत्तैर मन धान, बीस-पच्चीस मन मरूआ, आठ-दस मन दलिहन उपजबैत। जइसँ किछु बेचियो लैत आ परिवारोमे सालो भरि चलैत। ग्रामीण चालि-ढालिक सोनेलालक परिवार तँए खरचो कम।

दलानपरसँ उठि, गणेशी दुनू भाँइ विचार केलक जे समए कम अछि तँए बेसी लटारम नै करब। लटारम ई जे हम दुनू भाँइ बर देखलौं। आब कनियाँ देखैले हिनका सभकेँ कहबैन। दू-चारि दिनक पछाइत कनियाँ देखता। तखन फेर अपना सभ लड्डुपान चढ़बैले आएब। तखन फेर ई सभ कनियाकेँ असिरवाद दइले जेता। अही सभमे पनरह-बीस दिन लगि जाएत। तेकर बाद कुटुम सभकेँ नोत-पिहानसँ लऽ कऽ जोगार-पाती सभ करए पड़त। फेर बिआहक पछाइत बर-विदागरीक झमेल भऽ जाएत। भाड़-दौर करैत कहुना-कहुना मास दिनसँ ऊपरे लगि जाएत। तँए नीक हएत जे बिआहसँ पहिलुका प्रक्रियाकेँ छोड़ि दिऐ। किएक तँ बिआहसँ पहिनौं दोस-महीमसँ लऽ कऽ हित-अपेछित, कुटुम-परिवारकेँ नोत-हकार दिअ पड़त। बरियातीक बेवस्थासँ लऽ कऽ समान जुटाएब आदि ढेरो काज अछि। अगर देखे-सुनीमे समए लगा देब तखन काजमे पहपैट भऽ जाएत।

दलानपर आबि गणेशीक पितियौत भाए–रामकिसुन सोनेलालकेँ कहलक-

"समैध, हमर भाय नोकरिया छैथ, दुइए मासक छुट्टी लऽ कऽ एला हेन। तहूमे पनरह दिनसँ बेसी बितिये गेलैन। जहिना बिआहसँ पहिने जोगार-पाती, नोत-पिहानमे समए लगैत तहिना तँ बिआहक बादो बर-विदागरी आ भाड़-दौरमे लगैए। जखन हमर अहाँक दिल मिलि गेल तखन अनेरे आडम्बरमे किए पड़ब। लड़का-लड़कीक

भागमे जे लिखल हएत ओ हेबे करतै। हमरो एक्केटा भतीजी अछि। भैयाक विचार छैन जे जहिना बेटा-तहिना बेटी। जेते बेटा-ले करबै ओते बेटियो-ले करब। जहिना बेटीकेँ पढ़ेलौं तहिना सम्पैतोमे जेते हिस्सा हेतै तेते देबइ। तँए कोनो लटारममे नइ पड़ब अहूँकेँ नीक हएत आ हमरो।"

रामकिसुनक बात सुनि, सोझमतिया-सोनेलाल बाजल-

"अहाँ की कहए चाहै छी?"

रामकिसुन-

"ओनो हम सभ तैयार भऽ कऽ नहियेँ आएल छी मुदा लड़काकेँ गोरलगाइ दऽ जमाए बनाइए कऽ जाएब।"

सोनेलाल-

"कोनो हरज नहि। मुदा बिनु खान-पीन केने जमाए केना बनाएब?"

रामकिसुन-

"बड़बढ़ियाँ। जाउ, भानस करबाउ। मुदा बेसी असार-पसार नै करब। जाबे भानस हएत ताबे अहूँ चारिटा समाजक लोककेँ बजा लिअ। बरियातीक गप-सप्प कइए लेब।"

सोनेलाल आँगन जा घरवालीकेँ कहलक-

"बिआहक गप-सप्प पक्का भऽ गेल। झब-दे अहाँ भानस करू ताबे हम चारिटा समाजकेँ बजा आनि, बरियातीक गप-सप्प कऽ लइ छी।"

पतिक बात सुनि सुधीरा झपैट कऽ बजली-

"ई कोन बिआह भेलै? ने घरदेखी भेल, ने लड़काकेँ दूबि-धान पड़ल, ने लड़की देखलौं आ ने घर-दुआर देखलौं। चुपेचाप चोर जकाँ

बेटाक बिआह करए चाहै छी। कोन एहेन माए-बाप हएत जेकरा बेटा-बेटीक बिआहक मनोरथ नै हेतइ। लोक की कहत।"

सोनेलाल-

"अहीले तँ समाजकेँ बजबै छी। अहाँ झब-दे भानस करू।"

कहि सोनेलाल सौंसे टोलक लोककेँ बजा अनलक। चाह-पान, बीड़ी-सिगरेट तमाकुल चलए लगल। बरियातीक गप-सप्प शुरू भेल। सोनेलालक भातीज मंगला। मंगला बम्बईमे लूम चलबैत। बम्बैया हवासँ प्रभावित तँए बजैमे फड़कोर। सोनेलाल कातमे खुट्टा लगल बैसल। गणेशी सेहो चुपचाप बैसल। समाजक लोक ऐ भाँजमे जे पहिने घरवारी बजता तखने ने किछु बाजब। तँए सभ चुप। मंगला अबैसँ पहिनहि एक शीशी ब्राण्डी पीब नेने, किएक तँ लोकक बीच जाइ छी, मूड बनल रहत। सभकेँ चुप देख मंगला बाजल-

"कुटुम जखन लड्डुपान आ तिलक नै केलौं तखन तीनटा काज भेल। तँए दू साए बरियाती आएब। नाचो रहबे करत, अंग्रेजी बाजा सेहो रहत। दू साए बरियाती-ले दूटा मैक्सी आ चारिटा कार जाएत। तीन साँझ खाएब। एक साँझ भात, दोसर साँझ पक्की आ तेसर साँझ चूड़ा-दही। माछ-मौस खुअबैए पड़त। ऐ गाममे बम्बैया छौड़ा सभ अछि ओ सभ इग्लिश पीबे करत। लेन-देन जे करब से अपन दुनू कुटुम जानी।"

मंगलाक बात रघुवीर बाबाकेँ अनसोहाँत लगलैन। बजला-

"रे मंगला, तूँ जे एना अलगटेंट जकाँ फर्र-फर्र बजै छेँ से तोरा एक्को पाइ जेठ-छोटक विचार नइ छौ। तूँ की बुझबिही जे समाज केना चलै छइ। दू साए बरियाती जे कुटुमकेँ कहलहुन से कह तँ दू साए बरियाती गाममे केकरा-केकरा गेलइ। जे मनमे अबै छौ बकैत जाइ छेँ। गाममे की सभसँ मातवर सोनेलाले आछि। सभसँ बेसी

अजगजबला तँ मोतियेलाल अछि। बेटा बिआहमे सवा साए बरियाती लऽ गेल रहए। लड़का जाइले एकटा कार आ बरियाती जाइले टाएर गाड़ी रहइ। खाइए-पीबै दऽ जे कहलिही माछ-मौस आ ताड़ी-दारू, से आइ तक समाजमे केतए देखलिही। हम सभ वैष्णो छी तँए माछ-मौस आ ताड़ी-दारू समाजक काजमे नै हुअ देबइ। जेकरा खाइ-पीबैक मन होइ अपन घरमे खा-पीबह। कियो ओकरा रोकतै।"

रघुवीर बाबा बजिते रहैथ कि मंगला उठि कऽ चलि गेल। सभ कियो विचारि कऽ तँइ केलैन जे एक साए बरियाती, एकटा कार, एकटा मैक्सी, एकटा नाच, अंग्रेजी बाजा जाएत। खाइ-पीबैमे ने माछ-मौस चलत आ ने ताड़ी-दारू...।

गणेशी मानि लेलक। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। सभ किछु तँइ होइते सोनेलाल आँगन जा देखलक तँ भानसो भाइए गेल रहइ। समाजक सभ चलि गेल सिरिफ रघुवीर बाबाटा बँचल छला, किएक तँ सोनेलाल कुटुमक संगे खाइले कहि देने रहैन।

खेला-पीला पछाइत समैधकेँ पहिरबैले दू जोड़ धोती नेने सोनेलाल दुआरपर आएल। धोती देख गणेशी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"समैध, बेटी ऐठाम धोती पहिरब उचित नहि। तँए अहाँ सुआगत केलौं, बड़बढ़ियाँ। मुदा धोती नै पहिरब, लऽ जाउ।"

गणेशीक बात सुनि सोनेलाल रघुवीर बाबा दिस देखए लगल। रघुवीर बाबा बुझि गेलखिन। बजला-

"कुटुमक विचार ठीके छैन। लऽ जा धोती।"

घरपर आबि गणेशी बिआहक सरंजाममे लगि गेल। कलकत्ता फोन कए कऽ बैण्ड पार्टी आ नाटक पार्टीक सट्टा बना लेलक। लड़का-लड़की-ले वस्त्र-आभूषणसँ लऽ कऽ बरतन, कुरसी पलँग धरिक ओरियान सेहो कऽ लेलक। बरियातीकेँ रहैले टेन्ट, समियाना,

कुरसी-टेबुल सभ दरभंगासँ भाड़ापर ठीक केलक।

बिआहसँ एक दिन पहिने कलकत्तोसँ बेण्ड पार्टी, ड्रामा पार्टी आ दरभंगोसँ टेन्ट-समियानाबला गणेशीक ऐठाम पहुँच गेल। बरियातीक भानस-ले दरभंगेसँ भनसियो आबि गेल। बिआहक दिन भोरेसँ सभ बेवस्थामे जुटि गेल।

सात बजे साँझमे बरियाती आबि गामक स्कूलपर रूकल। बरियातीक दू आदमी अनभुआर बनि गणेशी ऐठाम पहुँच सभ किछु देखलक। सभ किछु देख, घुमि कऽ बरियाती लग जा सभ समाचार सुना देलक। स्कूलपर सँ बरियाती गणेशी ऐठाम विदा भेल। बैण्ड बाजा बजए लगल। बम्बैया छौड़ा सभ बाजाक संग डान्स करैत बढ़ल। छुड़छुड़ी-फटक्का शुरू भेल। बरियाती एबाक अवाज सुनि कलकत्ताक बैण्ड पार्टी अपन कलकतिया पोशाक लगा आधुनिक कलाक धून शुरू केलक। गणेशीक अँगनाक मुँहपर कलकत्ताक बैण्ड पार्टी आ बरियातीक संग सोनेलालक बैण्ड पार्टी अपन-अपन नाच-गान शुरू केलक। बरियातीक बैण्ड पार्टीक संग जे छौड़ा सभ डान्स करै छल ओ नचबो करए आ पिहकारियो दइ। गामोक जे नवजुबक सभ छल ओकरो नै रहल गेलै, ओहो सभ कलकतिया बैण्ड पार्टीक संग नाचए लगल। बरियातीक कार, जैपर बर बैसल छला ओ मैक्सी पाछू पड़ि गेल आ बैण्ड पार्टी आगू भऽ गेल। घरबैयोक बैण्ड पार्टी थोड़े आगू बढ़ल। एक भाग बरियातीक बैण्ड पार्टी आ दोसर भाग घरवारीक। देखनिहार लोकक करमान लगि गेल। देखनिहारे सभ दुनू बैण्ड पार्टीकेँ चुप करा कहलक जे बेराबेरी दुनू पार्टी बजाउ।"

सएह भेल। मुदा कलकतिया बैण्ड पार्टीक आगूमे बरियातीक बैण्ड पार्टी कमजोर पड़ि गेल। जे बरियातियो आ समाजो मानि लेलक। बरियातीक बैण्ड पार्टी बन्न भऽ गेल मुदा डान्सर सभ

घरबैयाक बैण्ड पार्टीमे मिलि डान्स करए लगल। ड्रामा पार्टीक डान्सरकेँ नै देखल गेलइ। ओहो दुनू अपन पोशाक लगा डान्स करए लगल। बरियातीक डान्सपर पीहकारी पाड़ए लगल। तँए ओहो सभ आबि-आबि मैक्सीमे बैस गेल। दुइए-अढ़ाइ घन्टामे कलकत्ताक बैण्ड पार्टी परोपट्टामे दलमलित कऽ देलक।

बैण्ड बाजा बन्न भेल। बरियाती सभ बैसारमे आबि बैसला। चाह-पान चलए लगल। जनिजाति सभ चँगेरामे दुबि-धान आ दीप लऽ बरकेँ दुआर लगबए लगली। चाह-पान होइते बरियातीक बीच जलपान चलए लगल।

बरियातीक बैण्ड पार्टीक सभ कलाकार एकठाम मन्हुआएल, अपन कलापर अपशोच करैत। मुदा कलकत्ताक बैण्ड पार्टीक कलाकारकेँ जीतैक कोनो खुशी नहि। किएक तँ ओ सभ बुझैत जे ग्रामीण कला शहरी कलासँ पछुआएल अछि।

दस बजि गेल। चौगामाक लोक नाच देखैले अबए लगल। रस्ता-पेरासँ लऽ कऽ नाचक मैदान धरि, देखनिहार सभ पीह-पाह करैत। एकटा नमहर परतीपर नाचक बेवस्था गणेशी करबौने। एक भाग कलकत्ताक ड्रामा पार्टीक स्टेज आ दोसर भाग मनचलक नाच पार्टीक। कलकत्ता पार्टीक स्टेज शहरी ढंगसँ बनल जखन कि मनचलक स्टेज ग्रामीण ढंगसँ।

नाच-नाटक शुरू होइसँ पहिने मनचलक स्टेज लग बेसी देखनिहार। किएक तँ मनचलक पार्टीक प्रतिष्ठा इलाकामे अधिक। जखन कि कलकत्ताक ड्रमा पार्टी अनभुआर। देखनिहारो तँ बच्चे। किएक तँ कलाकेँ कला नै बुझि मात्र मनोरंजन बुझैत।

मनचलक स्टेजपर नँगेड़ा बाजब शुरू भेल। नँगेड़ाक गड़गड़ाएब सुनि सभ देखनिहार सभ मनचलक स्टेज दिस भऽ गेल। सम्म बन्है

काल मनचल कातमे ठाढ़ भऽ सभ किछु देखैत। दर्शक आ संगीतकारक बीच साजक अवाज जेना तार जोड़ि देलक। कातमे ठाढ़ भेल मनचल मने-मन चपचप होइत जे आइ हमर पार्टी जरूर ऊपर हएत। सम्म बान्हब समाप्त भेल। मनचल मेकप रूपमे गेल। मनमे बेहद खुशी तँए अपन मेक-अप ढंगसँ करए लगल।

कलकत्ताक ड्रामा पार्टी बिजली चालित साज सजा साउण्ड-बॉक्स ठीक कऽ टेप खोललक। एकटा नर्तकी आबि मूक डान्स शुरू केलक। जेहने मधुर बाजाक अवाज तेहने शास्त्रीय नाच। शुरू होइते जेना वृन्दावनमे राधिका सभ कृष्णक प्रेममे विभोर भऽ नचैत तेहने दृश्य बनि गेल। सभ देखनिहार कलकत्ताक ड्रामा दिस घुमि गेल। मनचलक स्टेज दिस एक्को आदमी ने रहल...।

हरमुनियाँ मास्टर उठि कऽ जा मनचलकेँ कहलक। मनचल अदहा मेकप केने। स्टेजपर आबि मनचल देखलक। अपन नाचसँ बिमुख होइत दर्शककेँ देख मनचलक दुनू आँखि नोरा गेलइ। बजंतरीसँ लऽ कऽ नाचक पार्ट खेलनिहार धरि, सभ कियो स्टेजपर बैस कलकत्ता पार्टीक नाटक देखए लगल। अपन नाच पार्टीक दुर्दशा देख सोनेलाल मनचल लग आबि बाजल-

“मनचल भाय, ई तँ बरियाती-घरवारीक बीचक बात छी। समाज तँ देखबे करैए। हमरा-तोरा बीच समाजिक सम्बन्ध अछि तँए तूँ दुख नै करह। जेतेमे तोहर सट्टा छह ओ देबे करबह। आब तूँ सभ नटुआ नहि, बरियाती भेलह।”

एक तँ भरि राति नाटक चलैत, दोसर बरियातीक धुमशाही। मुदा ऐ सभसँ फराक कारणे मनचलकेँ निन नै होइत। मने-मन मनचल सोचैत जे जिनगी भरिक प्रतिष्ठा आइ चलि गेल। बिनु प्रतिष्ठाक आदमी आ मुरदामे कोन अन्तर, दुनू बरबैर! मुदा ऐठाम जे प्रतिष्ठा गेल

ओ कि सभ ठामक आकि सभ दिनक चलि गेल? कथमपि नहि। काल्हिए जँ हम दोसर ठाम नाचब तँ की ओ प्रतिष्ठा पुनः नै आबि जाएत, जरूर आएत। तखन एते मनमे दुख किए होइए। अनेरे। हमरा सभकेँ ओकर अनुकरण करबा चाही, दुख नहि। सीखक चाही। हम सभ ठमकल छी। हमर सिरिफ कलेटा नहि ठमकल अछि बल्कि समाजिक बेवस्था सेहो ठमकल अछि जइसँ लोकक बुधि आ नजैर[8] सेहो ठमैक गेल छइ। समैक गतिकेँ जानि समैक संग सभकेँ चलब उचित चलब भेल।

भोरे बैण्ड पार्टी आ नाच पार्टीक अगुआ–मनचल आ विदेसर बरियाती सभसँ अलग भऽ कातमे बैस अपन-अपन पछुआएल कलाक सम्बन्धमे गप-सप्प करैत। जहिना अपन परिवारकेँ अपन सोझहामे नष्ट होइत देख मनमे होइत तहिना मनचल आ विदेसरकेँ होइत। दुनूकेँ जेना शरीरसँ शक्ति निकैल गेल होए तहिना शक्तिहीन बुझि पड़ैत। मुँह मलिन, चेहरा उदास। दुनू गोरेकेँ कातमे उदास बैसल देख रघुवीर बाबा लगमे जा कहलखिन-

“बौआ, तूँ दुनू गोरे एते उदास किएक छह। जिनगीमे अहिना नीक-अधला होइ छइ। सभ दिन नीके होइत रहलह आइ जँ कनी अधले भऽ गेलह तँ की हेतइ। तूँ सभ जुआन-जहान छह जिनगी बड़ीटा होइ छै तँए मनसँ दुनू गोरे एकरा हटा लएह। धैर्य आ साहस करह। हम अपन जिनगीक घटल घटना कहै छिअ। तहिया हम पचास बर्खक छेलौं, बरद कीनए बसौली हाट चारि-पाँच गोरे गेल रही। हम सभ ओमहर गेलौं एमहर बाढ़ि चलि आएल। एहेन बाढ़ि आएल जे ढेरो लोकक घर खसलै, माल-जाल भँसलै, खेती-पथारीक तँ कोनो चर्चे नहि। हमर दुनू बच्चा, एकटा बेटा एकटा बेटी आ

[8] दृष्टिकोण

घरवाली सेहो डुमि गेल। ओतइ सुनलिऐ जे बड़-जोर बाढ़ि अपना इलाकामे आबि गेल। विचारलौं जे जँ बरद कीनब तँ लऽ केना जाएब। बरद कीनब छोड़ि देलिऐ। सभ कियो घुमि गेलौं। अबैत-अबैत जखन कमला छहर लग एलौं तँ देखलिऐ जे पुबरिया छहर पान-सात ठाम टुटल अछि। सौंसे पानि झलाक-झलाक करैत। सेहो ठाढ़ पानि नहि, कड़गर वेग। गाम अबैक साहस नै भेल। छहरक सटले रामखेतारीमे सभ रहि गेलौं। भरि राति निन नै भेल। हुअए जे कहीं अही सोझहे जँ छहर टुटि जाएत तँ दहाइए जाएब। भोर भेलइ। मुदा अढ़ाइ दिन बाढ़िकेँ पूरि गेल छेलै तँए धारक पानि कोर लेलक। बाढ़ियो कमल। धारमे नावपर पार भेलौं आ पएरे विदा भेलौं। गाम अबैसँ पहिनहि पता लगल जे हमर परिवारे नास भऽ गेल। मुदा मन नै मानलक। मनमे भेल जे उड़ंतीए गप छिऐ कहीं झूठे होइ। मुदा मनमे खुटका भाइए गेल।

गाम एलौं तँ देखलिऐ बात ठीके। मनमे अदंक पैस गेल। बुधि जेना उड़ि गेल। थाल-पानि सौंसे रहबे करै, केतए बैसब सेहो जगह नहि। घर-अँगनामे पानि चलि आएल छल। एक्केटा घर ठाढ़ बाँकी दुनू गिरल। घरक बगलेमे इनार। इनारक लहरा ऊँचगर देख ओहीठाम जा थालकेँ साफ केलौं। कनीए कालक पछाइत लहरा सुखि गेल। ओतइ रहए लगलौं।

तीन दिनक पछाइत जखन सौंसे सुखल तखन अपना घर एलौं। चारि दिनक पछाइत सासुरसँ खबैर भेल जे ससुरो आ साढ़ूओ डुमि गेला। दुनू गोरे भादबक पूर्णिमामे कुशेसर स्थान गेल छला। किएत तँ हुनका बुझल रहैन जे बैजनाथ बाबा भादवक पूर्णिमामे विदेसर आ कुशेसर स्थान, देवघर छोड़ि कऽ चलि अबै छैथ। सासुरक समाचार सुनिते अनेरे मुहसँ हँसी निकलए लगल। बड़ी काल धरि हँसिते रहलौं। तखन अपने मनमे भेल जे लोक बताह भऽ जाइ छै तँ अहिना हँसै

छइ। जनु हमहूँ तँ ने बताह भऽ गेलौं।

मने-मन सोचए लगलौं जे बताह छी की नै छी।"

मुस्कियाइत विदेसर बिच्चेमे टोकि देलकैन -

"एते भारी दुख सहि अहाँ बुलंदीसँ जीबै छी, हमरा दुनू गोरेकेँ तँ खाली ग्लानि भेल हेन। आगू की भेल, से कहियौ?"

"छह मास धरि मन उचटल रहल। कहियो हुअए जे बबाजी भऽ घरसँ निकैल जाइ, के ऐ माया-जालमे पड़ल रहत।

मुदा फेर मनमे आबए जे बड़का-बड़का महंथ सभ केना परिवारसँ अलग रहि ब्रह्मचर्य जिनगी जीबैए। फेर मनमे आबए जे बड़का-बड़का ऋषि-मुनि सभ केना जंगलमे रहि तपस्या केलैन।

अहिना छह मास धरि मन वौआइत रहल। पछाइत धीरे-धीरे मन असथिर हुअ लगल। घटनाक सभ बात बिसैरतो गेलौं। छह मासक पछाइत सासु समाद पठौलैन जे हम बड़ दुखित छी तँए कनी आबि मुँह देखा जाथु। समाद सुनि मनमे आएल जे आब ओ हमर के छैथ जे भेँट करबैन। जाधैर स्त्री छल ताधैर ओ हमर सासु छेली। मुदा फेर मनमे भेल जे बिमारी अगिलगी वा कोनो पैघ घटना भेलापर बिनु कहनौं जाइक चाही। तँए अचता-पचता सासुर गेलौं। सासुर गेलापर देखलौं जे ओ बिमार नइ छैथ मुदा सोगाएल जरूर छैथ। किएक तँ पति, जमाए, नाति-नातिन आ बेटी एक्के बेर मुइलैन तँए चिन्तित हएब सोभाविके। मुदा हमर आगत-भागत पहिनेसँ बेसी होइत। हम बुझबे ने करिऐ जे ई उलटल गंगा किए बहैए। मने-मन तारतम करी। एक दिन ओहिना बीत गेल। सिरिफ हम गोड़ लगलयैन आ ओ असीरवाद देलैन।

दोसर दिन हम कहलयैन जे चलि जाएब। तखन जिनगीक नव प्रक्रिया शुरू भेल। जलखै बेरमे चूड़ा, दही, चिन्नी, केरा, कलकतिया

आमक खूब नमगर अचार, लुँगीयाँ मिरचाइ आ नुन थारीमे पड़ोसि आगूमे देलैन। मनमे आएल जे कलौओ खाइक जरूरत नै रहत, एक्के बेर खूब दमसा कऽ चढ़ा ली। जहाँ दू-चारि कौर खेलौं कि सासु कहलैन-

"पाहुन, हमर तँ घरे बिलैट गेल। आब केना फेर ओहन फड़ल-फुलाएल घर देखब?"

हम निक-नहाँति बुझबो ने केलिऐ। मुदा एते बात हमरा मुहसँ जरूर निकैल गेल- 'अहाँ तँ हमर माए तुल्य छी जे कहबै, हम करब।' सासु कहलैन, दूटा बेटी छल दूटा जमाए भेल। दूटा नाइतो-नातीन छल। सभ मिला छह गोरे छेलौं। जइमे दू गोरे छी, एकटा बेटी, एकटा जमाए। घर एक्कोटा ने भेल। तँए अहाँ साइरसँ बिआह कऽ लिअ। दुनू गोरे ठरो धऽ लेब आ दू परिवारमे एकटा तँ फड़त-फुलाएत।' साइरो लगेमे बैसल छेली। सासुक मधुआएल गपक संग चूड़ा-दही भोजन आगूमे तँए हमरो मन दहलाएल।

हमहूँ किछु तर्क-वितर्क नै करए लगलिऐ, सोझे 'हँ' कहि देलिऐन।

'हँ' कहिते जेना साउसोकेँ आ साइरोकेँ मन हरिअर भऽ गेलैन। पितियौत सरहोजि सेहो लगेमे बैसली। चौअन्नियाँ मुस्की दैत सरहोजि बजली-

'शुभ काजमे बिलम की।'

लगले हमर सासु, आठ-दसटा जनिजातिकेँ बजा अनलैन। ताबे हमहूँ खा कऽ उठि गेलौं। गीत-नाद शुरू भेल। दिनेमे चुमौन भऽ गेल। ने बरियाती आ ने आजा-बाजा। आइ देखते छहक जे अस्सी बर्खक उमेरमे हम केहेन थेहगर छी। दूटा बेटा, दूटा पुतोहु, सातटा पोता-पोती अछि। अपन खिस्सा हम ऐ दुआरे सुनेलियह जे मनुखकेँ कखनो

निराश नै हेबा चाही। आशाक जिनगी स्वर्गक जिनगी आ निराशाक जिनगी नरकक जिनगी होइत। तँए तोहूँ दुनू गोरे मनसँ चिन्ता हटाबह आगूक उपाइ सोचह।"

रघुवीर बाबाक बात सुनि विदेसर मनचलकेँ कहलक-

"भाय, अखन अपनो दुनू गोरेक पार्टी अछि आ कलकत्तोक दुनू पार्टी अछि। ओइ दुनू पार्टीकेँ बजाबह आ अपनो दुनू पार्टीक कलाकारकेँ जामा करह। कलकत्ता पार्टीकेँ गुरु मानि आग्रह करबैन जे एक-एकटा कलाकार दुनू पार्टीक रहि जाउ। हमरा सभकेँ सिखा दिअ। जखन हम सभ सीख लेब तखन अहाँ चलि जाएब।"

मनचल-

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि विदा भेल।

दुनू गोरे चारू पार्टीक कलाकारकेँ बजौलक। पहिने तँ किछु काल हँसी-मजाक चललै, पछाइत काजक गप-सप्प चलल। गप-सप्पक पछाइत दूटा कलकत्ताक कलाकार दुनू पार्टीकेँ सिखबैक आश्वासन दैत रहि गेल।

◌

शब्द संख्या : 3847

चौदह

अंग्रेजी शासनक संध्यावेला। मिथिलांचलमे केतौ-केतौ संस्कृत विद्यालय, केतौ-केतौ गोटि-पँगरा संस्कृत महाविद्यालय आ एकटा संस्कृत विश्वविद्यालय, जइमे संस्कृत भाषाक माध्यमसँ पढ़ाइ होइत। मुदा शिक्षा जनोपयोगी कम, सेहो आमजन-ले उपलब्ध नहि। ग्रामीण इलाकामे कियो-कियो खानगी शिक्षक रखि अपन-अपन बेटाकेँ पढ़बैत। लड़कीकेँ पढ़ाएब सेहो बर्जिते जकाँ। कोनो-कोनो गाममे, गौंआँ अपन सहयोगसँ लोअर-प्राइमरी स्कूल चलबैत। हाई स्कूल आ कौलेज नगण्ये जकाँ। सेहो बजारक इलाकामे। तँए ग्रामीण इलाकामे आगू पढ़ैक कोनो उपाइए नहि। किछु गनल-गूथल सुभ्यस्त परिवारक विद्यार्थी पढ़ैत ओहो बाहर जा-जा।

ओना, मिथिलांचलमे जमीन्दारीक विरोधमे जन-आन्दोलन शुरू भेल जमीनक लड़ाइ जोर पकड़लक। अपन कमजोरी जमीन्दारो बुझैत मुदा अंग्रेजी हुकुमतक जन-विरोधी शासनक लाभ उठा ओहो सभ माने जमीन्दारो सभ आम जनक विरोधे करैत। गोटि-पँगरा जमीन्दार आम-जनक संग सहानुभूति रखैत। मुदा तैयो जन-आन्दोलन बढ़िते गेल कमल नहि माने दबल नहि।

भाषा आ संस्कृतिक दृष्टिये समाज दू भागमे बँटल। एक भाग पढ़ल-लिखल पण्डित लोकैनक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिली

चलैत तँ दोसर दिस टुटल-फुटल मैथिली–जनभाषा चलैत। जेकरा पढ़ल-लिखल लोक गमार आ असभ्य बुझैत। आम-जनक जिनगियो पछुआएल।

आम जनक जिनगी पछुआइक अनेको कारण छल, जेना- जमीन्दार खेतक मालगुजारी लइ छल जे दू-साल नै देलापर किसानक जमीन निलाम कऽ लेल जाइत। जइसँ आइक किसान काल्हि बोनिहार बनि जाइत। जइसँ उपजा-बाड़ीमे अबैत गेल। काज पतराइत गेल। सभ दिन काज नै रहने लोक कर्जामे डुमि जाइ छल जइसँ दिनानुदिन ओकर हालत निच्चे-मुहेँ होइत जाइ छल। तैपरसँ प्राकृतिक आफद सेहो होइते रहै, जइसँ कहियो बाढ़ि तँ कहियो रौदीक चपेटमे चटपटाएब निश्चित छल। समाजक बीच स्पष्ट दू तरहक जिनगी चलैत। जइसँ स्पष्ट दू तरहक कला-संस्कृति चलैत रहल। एक दिस परिनिष्ठित संस्कृति बढ़ि रहल छल तँ दोसर दिस टुटल-फुटल संस्कृति, लोक संस्कृति, सेहो चलि बढ़ि रहल छल।

भोलानाथक सुभ्यस्त परिवार। भैयारीमे असगरे। साठि बीघा जमीन। निःसन्तान भोलानाथ। सन्तानक दुआरे तीनटा बिआह केलक मुदा एक्कोटा सन्तान नै भेलइ। साले-साल कामौर लऽ-लऽ बीस बर्खसँ देवघर जाइत-अबैत रहल। इलाकाक एक्कोटा डाक्टर, वैद, हकीम, ओझा-गुनी नइ बँचला जिनका ऐठाम भोलानाथ नै गेल। जेते तीर्थस्थान अछि सभठाम जा कौबलो केलक मुदा तैयो निःसन्ताने रहल। सन्तानक दुआरे भोलानाथ हदिघड़ी चिन्तित रहै छल। मुदा अपना बसक काज नै बुझि धीरे-धीरे सबुर करैत।

बच्चेसँ खुशीलाल भोलानाथक संगी। भोलानाथकेँ नि:सन्तान देख खुशीलालो चिन्तित। एक दिन खुशीलाल कहलकै-

“दोस, जँए तीनटा स्त्री केलह तँए एकटा आरो करह। लोकक

भाग्य सभ दिन एक्के रंग नै रहै छै, के कहलक जँ चारिम स्त्रीक भाग्यमे सन्तान लिखल हुअ।”

सन्तान दुआरे भोलानाथक मन जरल। तँए खुशीलालक बातसँ मनमे खुशी भेलइ। आह्लादित होइत भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

“दोस, लोक कहै छै जे अधला काज केने अधला फल होइ छै मुदा हम तँ कहियो अधला काज नै केलौं, तखन एना किए भेल। अखनो देखै छी जे तीनू स्त्री अपने-अपने हाथे फूल तोड़ि निअम-निसठासँ पूजा करैए मुदा तैयो नीक फल कहाँ होइ छइ। दुख अखुनका ओते नै अछि जेते मुइला पछाइतक होइए। किएक तँ जाबे जीबै छी ताबे तँ कहुना कटिए जाएत मुदा मुइला पछाइतक दुख ऐ दुआरे होइए, पोथी-पतराक बात थोड़े झूठ हएत। अपने आँखिए तँ नै पढ़ने छी मुदा पढ़निहार सभ कहै छथिन जे बिनु बेटाक आदमीकेँ कोनो गति नै होइ छइ। मुइला पछाइत ओ जहाँ-तहाँ वौआइए। तँए बेसी चिन्ता मुइला पछाइतक अछि। निचेनमे जखन असगरे रहै छी, तखन यएह बात मनमे घुरियाइत रहैए जे खेत-पथारक की हएत। ऐगला पीढ़ीक लोक सभ सेहो कहत जे समाजमे सभसँ बेसी पापी भोलबे छल जे तीन-तीनटा बौह केलक मुदा तैयो एकोगो मुसरियो ने भेलइ।”

भोलानाथक बात सुनि खुशीलाल बाजल-

“अही दुआरे ने दोस कहै छिअ। कखन केकर भाग्य बदलत से कोइ जनैए।”

भोलानाथ-

“दोस, आब हमरासँ कोन बेटीबला बेटीक बिआह करए चाहत। पचपन-साठिक उमेर भेल।”

मुस्की दैत खुशीलाल बाजल-

“सम्पैत देख कोन कन्याँगत अपन बेटीक बिआह नै करए चाहत। बड़ करत तँ बिआहक खर्च लेत। किछु बेसीए दऽ देबइ। मुदा बिआह नै हएत, केहेन बात बजै छह।”

भोलानाथ-

“दोस, सभ तीर्थ स्थान जा-जा गुहारि लगेलौं मुदा किछु ने भेल। सिरिफ एकटा तीर्थ-स्थान बँचल अछि, पहिने ओइठामसँ भऽ अबै छी तखन तोहर बात करब।”

खुशीलाल-

“कोन स्थान?”

“उनीकुटी। उनीकुटी त्रिपुरामे अछि। एमहर जेते तीर्थस्थान अछि सभ खुदरा देवस्थान छी। मुदा उनीकुटीमे करोड़मे एक कम देवी देवता अछि। तँए मनमे अबैए जे सभकेँ एक्के बेर किए ने कहिऐन। जँ किछुकेँ नहियोँ मन हेतैन तैयो सभ बेपाटे भऽ जेता, से तँ नहि।”

भोलानाथक बात सुनि खुशीलाल बाजल-

“अपने सभ परानी मिलि सभ देवताकेँ तँ कहबे केलहुन मुदा हमहूँ तँ दोस छिअ। तँए हमहूँ जेबह। दोसक काजे होइ छै दोसक नीक-अधलामे संग देब।”

आसीन मास। सौन-भादो भरि मन बरिसल। झाँटो-बिहाड़ि अपन हिस्सा नीक जकाँति पुरा लेलक। केतेको उझुम बाढ़ि मुड़ीयारी देलक।

बेरूपहरकेँ भोलानाथ खुशीलाल ऐठाम पहुँचल। खुशीलालक घर झाँटमे गिर पड़ल रहइ, ओकरे सुढ़ियबैत रहए। लगमे बैस भोलानाथ अपन दुख आ खुशीलालक दुखकेँ तुलना करए लगल। मने-मन सोचए लगल जे जहिना हम धिया-पुता दुआरे दुखी छी

तहिना तँ खुशीलालो अन्न वस्त्र आ घर-ले दुखी अछि। हमहीं दुनू दोस दुखी छी सेहो बात तँ नहि। समाजोमे देखै छी कियो कोनो दुखमे पड़ल अछि तँ कियो कोनो दुखमे मुदा अछि तँ सभ दुखीए। बच्चेसँ दुनू गोरे संगे खेलेलौं, मेला-ठेला देखलौं मुदा गरीबीक चलैत खुशीलाल मनुखक जिनगी कहियो ने जीब सकल। वेचारोकेँ सातटा सन्तान भेल मुदा तरद्दुतक चलैत पाँचटा मरि गेलइ। सिरिफ दुइएटा बेटा बँचल छै, जेकरो देखै छी जे ने देहपर वस्त्र छै आ ने भरि पेट अन्न भेटै छइ। तहिना स्त्रियोकेँ देखै छी जे वेचारी रोगसँ ग्रसित अछि, ने भरि पेट खेनाइ भऽ रहलैए आ ने दवाइ-दारू। मुदा तैयो वेचारी जिनगीमे हारि नै मानि रहल अछि। अखनो देखै छी जे भरिगर-सँ-भरिगर काज करैमे दोसकेँ संग दइए। वाह रे औरत..!

एते बात मने-मन भोलानाथ सोचिते छल कि खुशीलाल टोकलकै-

“दोस, दुख-सुख तँ जिनगीमे लगले रहै छै आ लगले रहत मुदा ऐ बेरक दुख जिनगी भरि मन रहत।”

जिज्ञासासँ भोलानाथ पुछलक-

“से की?”

जहिना कियो मृत्युक मुहसँ बँचि सुखक जिनगी पाबि खुशीसँ बजैत तहिना खुशीलाल बाजल-

“दोस, पैछला मासक जे अन्तिम झाँट रौतुका रहह ओइ दिनक घटना कहै छिअ। एक्केटा घर अछि, ओहीमे एकचारी दऽ गाए बन्है छी आ अपनो सभतूर रहै छी। बरतनो-बासन आ आनो-आनो चीज-बौस रखै छी। सुतली रातिमे पहिने पानि हुअ लगल। पानि होइते छल कि पुरबा हवा उठल आ उठिते तेज हुअ लगल। तेज होइत-होइत खूब तेज भऽ गेल। पहिने मालक एकचारी गिरल। एकचारी गिरते गाए

डिरियाए लगल। अपनो सभ एकचारी गिरैक अवाज सुनलिऐ। ठाठो हल्लुके रहै तँए गाए ठाढ़े रहल। गाइक देहपर ठाठ पड़ल। अन्हार गुप-गुप। बेसुमार पानि झहरैत। हवो कहै जे आइ छोड़ि काल्हि नै बहब। समए देख गाएकेँ बँचबैक हिम्मते ने हुअए। अग-दिगमे सभ पड़ल रही। गुल्लियाक माए कहलक-

"गाइक देहपर चार गिरल अछि ओ मरि जाएत। अगर जँ गाए मरि जाएत तँ धनो जाएत आ पतियो लगत तँए दुनू परानी चलू आ गाएकेँ निकालि अही घर लऽ आउ।"

कहि घरवाली साड़ीक फाँड़ बान्हि घरसँ निकैल गेल। घरसँ निकलैत देख हमहूँ धोतीकेँ बान्हि निकललौं। एकचारीक मुँहपर जाइते गाइक नजैर पड़लै। अखन धरि जे गाए डिरियाइ छल ओ दोसर स्वरमे मुदा पहुँचलापर जे डिरियाएल ओ बदलल स्वरे, बुझि पड़ल जे वेचारी कनैए। गाइक अवाज सुनि जेना देहमे दस हाथीक बल चलि आएल। सोझे हाथसँ चार अलगा, गाए लग पहुँच माथपर चार उठा लेलौं। गाए देह चाटए लगल। गुल्लिया माए गाएकेँ खोलि घर लऽ अनलक। हम असथिरसँ चारकेँ रखि निकैल गेलौं। निकैल कऽ घर अबिते घरक खुटा कड़कड़ाएल। मनमे भेल जे ईहो घर गिरत। पुबरिया चारक दूटा कोरो हम पकैड़ निच्चाँ-मुहेँ बल दिऐ आ पछबरिया चारमे गुल्लियाक माए। दुनू बच्चा आ गाए बीचमे ठाढ़। जाबे धरि झाँट रहलै ताबे धरि पकड़ने रहलौं। बुझि पड़ए जे दुनू डेन टुटि जाएत। मुदा की करितौं। ओते रातिमे आ ओहन झाँट-पानिमे केतए जइतौं। सबहक तँ एक्के गति। ओही झाँटमे किसुनमा सभतूर मरि गेल।"

खुशीलालक बात सुनि भोलानाथक आँखिमे नोर आबि गेल। मने-मन सोचए लगल जे जिनगी भरिक दोस दुखसँ त्रस्त अछि मुदा

हमरा तँ कोनो चीजक कमी नइए, तबो कहियो दोसक दुख नै बुझलिऐ। धैनवाद ऐ वेचाराकेँ दिऐ जे कहियो किछु नै मंगलक। लोककेँ दोसक जरूरी ऐ दुआरे ने होइ छै जे सुख-दुखमे संग रहए, मुदा हम तँ दोसक दुखमे कहियो संग नै देलौं। बहुत पैघ गलती हमरासँ भेल। एक दोसक अछैते धने दोसर दोस गरीबीक चक्कीमे पिसाइत रहल। जँ भगवान हमरा निःसन्तान बनौने छैथ तँ उचिते केने छैथ। अनेरे हम एते तीर्थ केलौं। ओना, उनीकुट्टी तँ जेबे करब मुदा ओइसँ पहिने दोसकेँ रहैक घर आ जीबैले धनक उपए कऽ देबइ। मुस्की दैत भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

"दोस, एकटा बात पुछै छिअ?"

"की?"

"तोहर दशा देख हमर मन बदैल गेल। एक दिस हमरा धन अछि तँ भोगनिहार नहि आ दोसर दिस तोरा भोगनिहार छह तँ धन नहि। अखन कहुना कऽ घर मरम्मत कऽ लएह, किएक तँ परसू उनीकुट्टी जाइक विचार कऽ नेने छी। ओमहरसँ जखन घुमि कऽ आएब तखन चारि बीघा खेत आ घर बन्हैले सभ किछु देबह।"

भोलानाथक बात सुनि खुशीलालक हृदए चमैक गेल मुदा मनमे हुअ लगलै जे कहीं आवेगमे ने बाजि गेल हुअए आ पछाइत कहए जे 'ओहीना बाजि गेलौं।' खुशीलाल पुछलक-

"दोस, के सभ जेबह?"

भोलानाथ-

"अपने चारू बेकती तँ जेबे करब जे तोरो संगे चलए पड़तह।"

खुशीलाल-

"दोस तोरा तँ बुझले छह जे सभ दिन कमाइ छी तखन गुजर

चलैए। हम जँ चलि जाएब तँ गाइयो आ धियो-पुतो मरि जाएत। गुल्लिया माएकेँ देखते छहक जे देहमे कोनो हब छइ।"

"काल्हि भोरे दोस्तिनीकेँ डाक्टर ऐठाम लऽ चलह। जे खरच हेतै से हम देबह आ डाक्टरोकेँ कहि देबै जे सभ दिन अहाँ दुनू साँझ देखैत रहबै। अपनो सबहक खाइले आ गाइयोकेँ खाइले सभ किछु अखने चलि कऽ लऽ आनह। बच्चासँ आइ धरि हमरा-तोरा बीच सिरिफ मुँहक दोस्ती छल मुदा आइसँ असल दोस्ती हएत।"

कहैत भोलानाथ उठि कऽ खुशीलालक दहिना बाँहि पकैड़ कऽ उठबैत आगू बाजल-

"आइ हमर मन जेना चमैक रहल अछि, चलह, अखने चलह। असगरे सभ किछु आनल नै हेतह तँए दोस्तिनियोकेँ संग कऽ लएह। बच्चा सभ ताबे एतै रहतह।"

दुनू परानी खुशीलालो आ भोलानाथो विदा भेल। घरपर जा भोलानाथ नारक टाल देखबैत बाजल-

"ऐमे सँ नार घीचि लिहह।"

कहि आँगन जा भोलानाथ कोठीसँ चाउर-दालि निकालि खुशीलालकेँ देलक।

दोसर दिन भोरे भोलानाथ खुशीलाल ऐठाम जा चारियबैत बाजल-

"दोस, डाक्टर ऐठाम सबेर गेलासँ नीक रहतह, किएक तँ डाक्टरोकेँ खटैत-खटैत मन पीता जाइ छै जइसँ पैछला रोगी सबहक इलाजो नीक जहाँति नै भऽ पबै छै तँए अखने चलह।"

भोलानाथक बात सुनि गुल्लियाक माए भोलानाथकेँ सुनबैत गुल्लियाकेँ कहलक-

"बौआ, दोसकाकाकेँ कहुन ने चाह पी लेता तब जइहैथ।"

दोस्तिनीक गप सुनि भोलानाथक मनमे उठल- दुनियाँमे प्रेम केतौ झँपाएल नै अछि ओ तँ सौंसे छिड़ियाएल अछि। सिरिफ देखै आ करैक जरूरत अछि। मने-मन भोलानाथ सोचिते छल कि गुल्लिया चाह नेने भोलानाथक हाथमे देलकैन। एक घोंट चाह पीब भोलानाथ दोस्तिनीकेँ कहलक-

"झब-दे चाह पीबू आ चलू। सवेर घुमि कऽ आएब तखन ने कौल्हुका ओरियान करब।"

दुनू परानी खुशीलाल आ भोलानाथ, तीनू गोरे डाक्टर ऐठाम विदा भेल। रस्तामे खुशीलाल भोलानाथकेँ कहलक-

"दोस, गरीबो रहैत, भगवान हमरा स्त्री देलैन! हम तँ दुनू उखराहा बोइन करए जाइ छी। एमहर धिया-पुतासँ लऽ कऽ माल-जाल, भानस-भात, कुटौन-पीसौन सभ सम्हारैए। एहनो दशा छै तैयो एक्को क्षण बैसल नै देखबहक। कखनो काल अपनो मनमे होइए जे जखन तोहर दोस्तिनी मरि जेतह तखन हमर की गति हएत। मुदा सवुर ऐ दुआरे होइए जे दुनू बेटो भगवान हमरे चुनि कऽ पठौलैन। एतबे-एतबे अछि मुदा कखनो मुँह मलिन नै देखबहक। भरि दिनमे पान सेर कच्ची धान बोइन होइए। ओहीमे सँ नूनो-तेल करै छी। ई तँ भगवानेकेँ जश देबैन जे अनेरूआ साग बाधमे उपजबै छथिन जे तीमनो खाइ छी, नइ तँ सेहो ने खइतौं।"

आइ धरि जे जिनगी भोलानाथ नै देखने छल ओइ जिनगीसँ भेँट भेल। डाक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत भोलानाथक हृदए मोम जकाँ कोमल भऽ गेल। डाक्टर ऐठाम पहुँचते भोलानाथ अपन दोस्तिनीकेँ देखबैत डाक्टरकेँ कहलैन-

"डाक्टर साहैब, पाइ कौड़ी दुआरे इलाज कमजोर नै करबै। जे

खरच हेतै हम देब तँए इलाज नीक जकाँ कऽ दियौ।"

गुल्लिया माएकेँ जाँच-पड़ताल कऽ डाक्टर बजला-

"रोग कोनो जब्बर नै छैन मुदा अनक दुआरे रग-रग बैस गेल छैन। तँए रोगी मरती नै मुदा तनदुरुस होइमे किछु समए लगतैन। खाइ-पीबैक नीक बेवस्था सेहो कऽ देबैन आ दवाइयो चलतैन।"

डाक्टर ऐठामसँ तीनू गोरे विदा भेल। थोड़े दूर आगू आबि भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

"दोस, जखन बजार आएले छी तखन कपड़ो दोकानक काज केनहि जाएब। जखन तीर्थ-स्थान जाइक तैयारीमे छी तखन सभले नव-वस्त्र सेहो कीनियेँ लेब।"

कपड़ा दोकान जा भोलानाथ दोकानदारकेँ कहलक-

"तीनटा हमरा स्त्री अछि आ एकटा दोस्तिनी छैथ चारू गोरेले एक्के रंग साड़ी, आँगी आ दुनू दोस-ले एक्के रंग पाँचो-टुक कपड़ा दिअ।"

भोलानाथक आदेश सुनि दोकानदार एक्के दामक, एक्के रंग कपड़ा सभले निकाललक। कपड़ा देख भोलानाथ दोकानदारकेँ दाम जोड़ैले कहलक मुदा खुशीलालक बेटा मन पड़िते नइ-नइ करैत बाजल-

"दूटा ढेरबा बच्चा-ले सेहो दू जोड़ा पेन्ट, दूटा गंजी, दूटा अँगाक खत आ दूटा चरिहत्थी चद्दैर सेहो दिअ।"

दोकानदार सभ कपड़ा दऽ बाजल-

"आरो किछु?"

दोकानदारक बात सुनि भोलानाथ खुशीलालकेँ पुछलक-

"आब तँ कियो बाँकी नै ने रहल। किएक तँ अखन दोकानपर

छी, कीनि लेब।"

मुड़ी डोलबैत खुशीलाल बाजल-

"नहि।"

बाजारसँ विदा भऽ रस्तामे भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

"दोस, दोस्तिनीकेँ कहि दहक जे समए-समैपर दवाइ खाथि। एहेन ने हुअए जे कहियो तीन खोराक दवाइ एक्के बेर खाथि आ कहियो तीन दिनपर।"

गुल्लियाक माए सेहो भोलानाथक गप सुनलैन। किछु काल गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगली जे भलेँ हम नै करी मुदा एहनो लोक तँ ऐछे जे दवाइ खाइमे एना करैए। मुस्कियाइत गुल्लिया-माए भोलानाथकेँ सुनबैत बजली-

"मनुख जँ अपन देखभाल अपने नै करत तँ आन केते काल कऽ सकतै। तखन तँ भूखल-नाँगट आ खगल लोककेँ मतिये बगैद जाइ छै तँए लोक अन्ट-शन्ट कऽ लइए।"

गाम पहुँचते भोलानाथ अपन कपड़ाक मोटरी लऽ अपना ऐठामक रस्ता पकड़लक आ दुनू परानी खुशीलाल अपना ऐठामक। आँगन अबिते खुशीलालक दुनू बेटा हाथसँ मोटरी लऽ ओसारपर रखलक। दुनू परानी खुशीलाल पएर धोइले कलपर गेल। कलक हेन्डिल पकैड़ खुशीलाल पत्नीकेँ कहलक-

"आउ, पहिने अहाँ हाथ-पएर धोइ लिअ, चला दइ छी।"

पतिक बात सुनि रेशमाकेँ मनमे जिनगीक आशा जगलैन जे जहिना पतिक सेवा पत्नी करैत तहिना कुसमए पाबि पत्नियोँक सेवा पतिकेँ करक चाहिऐ। तखने परिवारक गाड़ी आगू-मुहेँ हँसैत-खेलैत चलैत रहत।

दुनू बेकती हाथ-पएर धोइ आँगन आएल। रेशमा घरसँ बिछान आनि आँगनमे बिछौलैन। खुशीलाल कपड़ाक मोटरी खोलि पहिने दुनू बेटाकेँ गंजी-पेन्ट दैत बाजल-

"बौआ, दुनू भाँइ पहिर लएह आरो कपड़ा सभ छह।"

दुनू भाँइ धरिया खोलि पेन्ट पहिरते छल कि रेशमा बजली-

"बौआ, धरियाकेँ टाटपर रखि दहक घरनीपा बना लेब।"

आइ धरि खुशीलालक परिवारमे एतै खुशी कहियो नै भेल छल। परिवारमे सभकेँ एक बेर सुन्दर नव वस्त्र देहपर आएल। आइ धरि जे बच्चा जाड़मे आगि तापि, बरखामे बोराक घोघही ओढ़ि बितबै छल ओइ बच्चाकेँ जँ भरि देह कपड़ा, बरखामे छत्ता भेटलै तँ खुशीक अन्त रहतै केना। मुदा बहुतो लोक तँ घरोमे बर्खाक समए छत्ता लऽ बितबैए आ भरिपेट अन्न भेट जाइ तँ किए ने कनैत मन हँसत। खुशीलालक परिवारमे आइ टाट तोड़ि कऽ ओहन हँसी आबि गेल जे कहियो ने आएल छेलइ।

दोसैर साँझ। धड़फड़ाएल भोलानाथ खुशीलालक ऐठाम आबि दोस-दोसक अवाज लगौलक। रेशमा सिलौटपर मसल्ला पीसै छेली आ खुशीलाल चुल्हि लग बैस आँचो दैत आ दुनू बच्चोकेँ कहैत-

"बौआ, काल्हि हम दोसक संग तीर्थ करैले जेबह। बीस-पच्चीस दिन लगत। माए दुखिते छह तँए दुनू भाँइ गाइयोकेँ खुअबिहह आ माइयोक काज कऽ दिहक।"

भोलानाथक अवाज सुनि रेशमा लोढ़ी चलाएब रोकि उठि कऽ घरक ओलती लग आबि बेटाकेँ जोरसँ कहलक-

"बौआ, दोसकाका बाटपर सँ गर्द करै छथुन।"

रेशमाक बात सुनि खुशीलाल चुल्हि लगसँ उठि बाहर

निकलल। बाहर आबि भोलानाथकेँ कहलक-

"दोस, बाटपर किए छह अँगने आबह।"

आँगन आबि भोलानाथ बाजल-

"दोस अखन नै रूकबह, तीन बजे भोरे गामसँ निकलबह तखने चरिबजिया बस पकैड़ सकब। किएक तँ कोस भरि जाइयो पड़तह। सएह कहैले एलिअ हेन। दोसर बात जे हमरो ऐठाम तँ कियो रहत नहि, तँए दोस्तिनीकेँ कहि दहुन जे भोरे अपन गाइयो आ दुनू बच्चोकेँ ओतै लऽ जेती। ओतै रहती, खेती-पीती आ अपन गाइयोकेँ खुऔती-पीऔती। अखन जाइ छिअ। बहुत जुति-भाँति लगाएब बाँकीए अछि।"

खुशीलाल-

"केते दिन लगतह?"

भोलानाथ-

"एक तँ घरसँ निकैल नै होइए, जखन निकलब तँ रस्तामे जे सभ देखैबला अछि से सभ देखनहि आएब किने। जेना ऐठाम गाड़ी पकैड़ लोकहा जाएब आ ओतएसँ बस धरब। आगू गेलापर कोसी पुल पार भेलापर बराहक्षेत्रक रस्ता अछि जाइ काल ओ छोड़ि देबइ। आगू बढ़ब। नेपालक बीचे-बीच बसक रस्ता अछि। उतरवारि भाग जंगल-पहाड़ देखबह आ दछिनबारि भाग धार-धूर, खेत-पथार, गाम-घर देखबहक। आगू इटहरी चौक अछि। जैठाम अपना सभ पूब-मुहेँक बस पकैड़ काकड़भिट्टा जाएब। मुदा चौकसँ दच्छिन-मुहेँ गेलापर बिराटनगर अछि आ उत्तर-मुहेँ गेलापर धरान आ धनकुट्टा अछि, से घुमती कालमे देखब। काकड़भिट्टा तक नेपालक बस चलैए। ओतै उतैर कऽ मेची धार पार हएब। धार पार भेलापर अपन देशक बस भेटत। ओइ बसपर चढ़ि नक्सलबाड़ी होइत सिलीगुड़ी जाएब।

सिलीगुड़ीसँ एकटा रस्ता असाम जाइ छै जे अपना सभ पकैड़ कऽ जाएब। ओना, ओहूठामसँ देखैबला बहुत जगह अछि जेना- दार्जिलिंग, सिक्किम, भूटान। मुदा जाइ काल केतौ ने अँटकब। अबै काल सभ देखैत-सुनैत आएब। एकटा बात मन पड़ि गेल। जखन सिक्कम जेबहक तँ देखबहक जे जेना सौंसे सिक्कम फुलवाड़ीए अछि। किछु फूल अपनो इलाकाक देखबक मुदा बेसी फूल अनठीए बुझि पड़तह। दुनियाँमे एते रंगक फूल केतौ ने अछि। से तँ जखन देखबहक तखन अनेरे बिसवास हेतह। फूलेटा किए, चाहोक खेती देख असम्भय लगतह। सिलीगुड़ीमे बस पकैड़ असाम जाएब। ओतै अँटकब आ रातिमे यात्रपाटी-विदेशिया नाच देखब। भोरमे त्रिपुरा-ले बस पकैड़ लेब। ओना असामोमे बहुत चीज देखैबला छइ। जेना ब्रह्मपुत्र धार, कामरूप कामाख्या, काजीरंगा, शिवसागर, केते कहबह...।

..जखन गौहाटीसँ बस पकैड़ दच्छिन-मुहेँ विदा हेबहक, तखन रस्तेमे मेघालय भेटतह। एकटा बात तँ छुटिए गेलह। गौहाटीएसँ मिजोरम बस जाइ छै, ओतौ जाएब। मुदा घुमती कालमे। मिजोरममे पहाड़-जंगल देख कऽ मन भरि जेतह। मिजोरममे जे आदी देखबहक तँ आश्चर्ज लगि जेतह। अपना सबहक ऐठाम जे आदी अछि ओ तँ कनगोरियो ओंगरीसँ पातर होइए मुदा ओइठामक जे आदी होइए ओ औंठोसँ मोट। तहूमे ओइठामक आदीमे सोन नइ होइ छै..।"

'सोन'क नाओं सुनि बीच्चेमे रेश्मा बजली-

"दोस भाँग-ताँग पीब कऽ एला हेन तँए एना बजै छैथ। कहू जे जइ आदीमे सोन नै रहत ओ आदी केहेन हएत।"

दोस्तिनीक बात सुनि भोला बाजल-

"हम सभ तँ जाइते छी, अबै काल एक किलो कीनने आएब।

जखन अपना चसमसँ देखबै तखन तँ बिसवास हएत। तिला संक्रातिक खिचड़ी-ले थोड़े रखियो लेब। हँ तँ दोस कहै छेलिअ जे गौहाटीएसँ मणिपुर सेहो बस जाइ छइ। देखैबला जगह अछि मणिपुर। ओइठाम विष्णु भागवानक मन्दिर, गोविन्दजीक मन्दिर आ सभसँ नीक देखैबला अछि हेलैत उद्यान। मुदा ओहूठाम घुमतीए काल जाएब। ओतैसँ नागालैंड सेहो बस जाइ छइ। ओहो देखब। अरुणाचल सेहो ओही रस्तामे अछि, सेहो देख लेब। अरुणाचलमे दोसरे हिसाबसँ खेती करैत देखबहक। ओ सभ अपना खेतीकेँ झूम सिस्टम कहै छइ। बुद्धदेवक बहुत पुरान मन्दिर तवांगमे देखबहक। हँ तँ कहै छेलिअ जे गौहाटीसँ जखन मेघालय जाएब तखन बुझि पड़तह जे ई राज पहाड़ेक छिऐ आ पहाड़ेटा किए, खूब गहींर-गहींर धार सभ सेहो देखबहक। पहाड़ेपर शिलौंग सेहो अछि। ऊपरसँ जे देखबहक तँ बुझि पड़तह जे हजारो हाथसँ गहींर ओठामक धार सभ अछि। से की एगो-दुगो मारे। सभटा मनो ने अछि मुदा जे मन अछि से कहै छिअ। कृष्णई, कालु, भुगइ, दरेंग, सिमसांग इत्यादि पनरह-बीसटा धार अछि। अखन जाइ छिअ। काल्हिसँ तँ संगे रहबह। भरि रस्ता गप-सप्प होइते रहत।"

दोसर दिन भोरे बस पकैड़ पाँचू गोरे–तीनू स्त्रीक संग भोलानाथ आ खुशीलाल–उनीकुट्टी विदा भेल। तीन दिनक बसक सफर। किरिण डुमैत बससँ उनीकुट्टी उतरल। उनीकुट्टी पहुँच पाँचू गोरे हियाबए लगल जे ने अपन इलाका सन इलाका अछि आ ने बोली। बड़का-बड़का, ऊँचगर-ऊँचगर पहाड़ अछि, बोन-झाड़ अछि। अपना सभकेँ देखल नै अछि आ लोकक बात बुझै नै छिऐ। ने हमर बोली ओ सभ बुझैए आ ने ओकर हमसभ। विचित्र स्थिति। बिनु देखने घुमियो जाएब सेहो केनादन हएत। आब की करब। बसे स्टैण्डमे पाँचू गोरे रूकल। भोलानाथ खुशीलालकेँ पुछलक-

"दोस, की करबह?"

खुशीलाल बाजल-

"दोस, चाह-पानक दोकानदारसँ भाँज लगि जेतह। किएक तँ टीशनक कातक दोकानमे सभ मुलुकक लोक अबै छै किने। हम जा कऽ पुछै छिऐ।"

मुसाफिर खानासँ हटि बाहरमे पानक दोकान। खुशीलाल बाहर निकैल पानक दोकान लग जा ठाढ़ भेल। दोकानदारे खुशीलालकेँ पुछलकै जे की लेब। मुदा दोकानदारक बोली खुशीलाल नै बुझलक। दोकानदार बुझि गेल जे आन ठामक यात्री छी। आँखिक इशारासँ दोकानदार पुछलक। खुशीलाल बाजल-

"भाय, परदेशी छी।"

बोली सुनि दोकानदार बगलक हलुआइक दोकानक नोकरकेँ शोर पाड़लक। नोकर मिथिलांचलेक। नोकरक नाओं बिलट। बिलट अबिते खुशीलालसँ गप कऽ दोकानदारकेँ कहलक। दोकानदार अपना ऐठाम लऽ जा चारू गोरेकेँ नल देखौलक। चारू गोरे बेराबेरी नहा चूड़ा-दही भरि पेट खा सुति रहल।

दोसर दिन बिलटकेँ संग कए सभ कियो देखैले विदा भेल। चारिअनामे भोलानाथ 'ऊनीकुट्टीक महात्म' नामक किताब कीनलक। घुमैले जाइसँ पहिने उनीकुट्टीक महात्म भोलानाथ पढ़ि लेब नीक बुझलक। सभ कियो पाथरक टुकड़ापर बैस भोलानाथसँ उनीकुट्टीक कथा सुनए लगल-

"द्वापर, युग अन्तिम दिन गनैत। कलियुग लग आबि गेल। कलियुग अधला युग होइत तँए सभ देवी देवता राता-राती पड़ा कऽ समुद्रमे बास करए विदा भेल। ऊनीकुट्टी लग जाइत-जाइत भोर भऽ गेलइ। चिड़ै-चुनमुनी चह-चहाए लगल। दिनक आगमन बुझि सभ

देवी-देवता ओतइ रहि गेल। वएह छी उनीकुट्टी।

नमगर-चौड़गर इलाका। छोट-पैघ सैयो पहाड़। ऊँच-ऊँच पहाड़सँ पानि झहरैत। जे अपन-अपन रस्ता बनौने। पैघ-पैघ अनभुआर गाछ-बिरीछ। जहाँ-तहाँ टुटल-टाटल देवी-देवताक मूर्ति। एक दिनमे सगरे घुमि कऽ देखब सम्भव नहि। बीचमे एकटा साधुक स्थान। छोटेटा घर। आगूमे चबूतरा जकाँ पाथरक टुकड़ा। साधु भोलानाथसँ परिचए पुछि, एबाक कारण पुछलखिन।

भोलानाथ सविस्तार कहि सुनौलकैन। हँसैत साधु कहलखिन-

"ऐ दुनियाँमे ने कियो अपन अछि आ ने आन। सभ अपन। जइ बेटा-बेटीक इच्छा मनमे अछि ओ क्षणिक छी। जेतेकेँ अपन बुझै छी ओतबो अपन नै छी। मनुख खिआइत-खिआइत एते खिया गेल जे मनुखकेँ अपन नै बुझि दू-चारि गोरेकेँ बीच समटा गेल। जहिना कियो चलैत बसमे भीड़ देख नै चढ़ि, छोड़ैत-छोड़ैत एते छुटि जाइए जे अपन गन्तव्य स्थान धरि पहुँचिए नै पबैए तहिना समैक गति रूपी गाड़ीसँ छुटि तेते पाछू पड़ि गेल जे समयक संग पकड़ब कठिन भऽ गेल अछि। सभ मनुखक दायित्व होइत जे अपनासँ आगू बढ़ि आनो-आनकेँ सेवा करए। जेतेक अधिक मनुखक सेवा ऐ शरीरसँ भऽ सकत ओते अधिक धर्म होएत।"

साधुक विचार सुनि भोलानाथक हृदए गंगाजल जकाँ पवित्र हुअ लगल। अनासुरती सिनेह भरल हँसी भोलानाथक मुहसँ निकलए लगल-

"हम जे तकै छेलौं से भेट गेल। ई अन्तिम तीर्थाटन छी। गाम पहुँच अपन सभ सम्पैत बच्चा सभकेँ पढ़ाइमे लगा देब। सभ बच्चा, बच्चा छी।"

सौंसे उनीकुट्टी देखैमे पाँच दिन समए लगलै। उनीकुट्टीसँ

नीरमहल जा कऽ सेहो सभ चीज देखलक। नीरमहलसँ डबूर झील देखैत कमल सागर देख सभ विदा भेल। रस्तामे चाहक खेती केतौ-सँ-केतौ देखए गेल। डाँड़ भरि ऊपरसँ गाछ छपटल पतियानी लगौल रोपल। खेतमे जुआन आ ढेरबा लड़की सभ घघड़ा पहिर पीठपर बेंतक बोको नेने चाहक पात तोड़ि-तोड़ि रखैत। गठल देह पुष्ट ललाट फूलक झाबा केशमे खोंसि पातो तोड़ैत आ मस्तीसँ गीतो गबैत। तहिना छाती भरि-भरि ऊपरमे रबड़क गाछसँ दूध बहैत सेहो देखलक। भोलानाथ कमलसागरक महारपर जा काली मन्दिरक ओसारपर बैस सभ कियो गाम घुमि जाइक विचार केलक। दोसर दिन भोरे गाड़ी पकैड़ विदा भेल।

चारिम दिन गाम आबि भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

“दोस, आब बिआह नै करब। जे खेत अछि आ घरमे राखल गहना-गुरिया आ बरतन-बासन अछि ओ सभ रखि कऽ की करब? चौगामा लोकक बच्चाकेँ पढ़ैले स्कूल बना देब। अखन धरि जे अनपढ़ लोकक समाज अछि ओ पढ़ल-लिखल लोकक समाज बनत। जइसँ समाज आगू-मुहेँ बढ़त।”

समर्थन दैत खुशीलाल बाजल-

“दोस, काल्हिसँ चारू-पाँचू गाम जा-जा सभकेँ कहि बैसार करब। बैसारेमे अपन सभ बात कहिहक।”

◌

शब्द संख्या : 3709

पनरह

भोलानाथ आ खुशीलाल जलखै खा कमलपुर विदा भेल। जहिना अनभुआर जंगल पार होइमे डर होइत तहिना भोलानाथ आ खुशीलालकेँ हुअ लगल। जिनगीमे परिवारसँ आगू बढ़ि कहियो कोनो काज नहि केने। पहिने दुनू गोरे बिशेसरक ऐठाम पहुँचल। बिशेसर दहिना हाथमे हाँसू, खुरपी आ बामा हाथमे कोदारिक बेंट पकैड़ कान्हपर नेने खेत जाइ छला। रस्तेमे बिशेसर भेँट भऽ गेलैन। भेँट होइते खुशीलाल बाजल-

“बिशेसर भैया, तूँ बहु-दिन जीबह। तोरे चर्चा हम दुनू गोरे करै छेलौं। एकटा विचार तोरासँ पुछए एलौं?”

बिशेसर कहलखिन-

“खेते दिस चलह हमर खेतियो देखिहक।”

तीनू गोरे संगे जा बोरिंगक एकचारीमे बैस गप-सप्प करए लगला। बिशेसरक इमानदारी आ कर्मठताक चर्चा परोपट्टामे होइत। हृदए खोलि भोलानाथ बिशेसरकेँ कहलक-

“बिशेसर भाइ, भगवान सन्तान नै देलैन। धन-सम्पैतक तँ कमी नै अछि मुदा भोगनिहार नहि। मनमे आएल जे सभ सम्पैत बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूलमे दऽ दिऐ।”

मुड़ी डोलबैत बिशेसर कहलक-

“बड्ड निक विचार भोला केलह। हमरा तँ देह छोड़ि किछु अछि नै मुदा देहसँ जे काज हुअ अखनेसँ तैयार छिअ। जाधैर स्कूल बनत ताधैर संगे खटबह। पहिने एकटा बैसार समाजक करह।”

‘यएह सभ सोचि तोरासँ पुछए एलौं।”

तर्क-वितर्क करैत-तीनू गोरे चारू-भरक गामक सभकेँ बैसौनाइ नीक नै बुझि खाली शिक्षा-प्रेमीकेँ बैसाएब उचित बुझलैन। बिशेसर अपना गामक शिक्षा-प्रेमीक संग लालपुरक शिक्षा-प्रेमीकेँ भार लेलक। पछबारि गामक भार खुशीलालकेँ दऽ दछिनबरिया गामक भार भोलानाथ अपने लेलक। परसू चारि बजे बैसारक समए बना तीनू गोरे अखनेसँ काजमे जुटि जाइक विचार कऽ लेलैन। एक बेर सगरे खेत घुमि देखब उचित बुझि बिशेसर आड़िए-आड़ि सभकेँ घुमबए लगलखिन। गहुमक कोला टपिते भकरार फुलाएल दारीमक गाछपर बिशेसरक नजैर पड़लैन। लाल-लाल फूल जेकर पाछूसँ हरिअर फड़ अबैत आ आगूसँ फूल झड़ैत। मधुमाछी एकपर सँ उड़ि दोसरपर बैस रसपान करैत। संगे अपन कोमल स्वरसँ गीतो सुनबैत आ फूलो खाइत। बिशेसर ठाढ़ भऽ तीनू गाछपर आँखि गड़ा-गड़ा देखए लगला। एकटा गाछमे पहिलुका फुलाएल फूल झड़ि फड़ बनि गेल छल। गोल-मोल हरिअर। ऊपरसँ चिक्कन-चुनमुन। फूलक पत्ती झड़ि निच्चाँमे मौला गेल। दर्जनो फूल गाछमे फुलाएल। फड़केँ हाथसँ छुबि-छुबि बिशेसर मने-मन खुशीसँ गदगद होइत सोचैथ जे हमरा सन गरीब-गुरबाकेँ जिनगीमे नसीब नै होइबला चीज मेहनतक कृपासँ केतेको खाएब..! कोदारि, हाँसू, खुरपी लऽ बिशेसर आँगन गेला। मोहिनी अरबा-खुद्दी पीसि रोटी ठोकि रोटिपक्कामे दऽ कर उनटबै छेली। चुल्हि लग मोहिनीकेँ देख बिशेसर सहैट कऽ कहलखिन-

“एकटा जरूरी काज उपस्थिति भऽ गेल तँए खेतक काज छोड़ि श्यामानन्द ऐठाम जाइ छी।”

रोटिपक्कासँ रोटी उठा हाथक आँगुरसँ टोबि कऽ देख फेर रोटिपक्कामे रखि बजली-

“रोटी सीझ गेल। नून-मिरचाइ सिलौटपर पीसि दइ छी। जाबे अहाँ हाथ-पएर धुअब ताबे भऽ जाएत। घुमि कऽ कखन आएब कखन नहि। जलखै कऽ लिअ।”

थतमतमे बिशेसर ठाढ़। एक दिस समाजक काज मनकेँ घिचैत रहैन तँ दोसर दिस शरीरक रक्षा-ले खाएबो जरूरी बुझाइत रहैन। ओसार परसँ लोटा उठा हाथ-पएर धुअ इनार दिस बढ़ला। हाथ-पएर धोइ लोटामे पानि भरने आबि जलखै केलैन। जलखै कऽ चुनौटीसँ चुन-तमाकुल निकालि चुनबैत श्यामानन्द ऐठाम विदा भेला। श्यामानन्द जलखै कऽ ट्रेक्टरपर बैस गरमा, सीता धान कटल, खेत जोतैले विदा होइत रहैथ। बिशेसरकेँ देखते ट्रेक्टर परसँ उतैर श्यामानन्द दलानपर आबि बिशेसरकेँ बैसबैत अपनो बैसला। कुशल-क्षेम केला पछाइत पुछलखिन-

“सबेरे-सबेर केमहर ऐलह?”

“बौआ श्याम, हमहूँ काज छोड़ि एलौं। भोलानाथ भिनसरे आबि कहलक जे हमरा ढेर सम्पैत अछि आ भोगनिहार कियो ने अछि तँए अपन सभ सम्पैत बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूल बनबैमे दऽ देब।”

बिशेसरक बात सुनि खुशीसँ श्यामानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ आँगन जाइत बजला-

“भैया कनी रूकह आब हमहूँ खेत जोतए नै जाएब।”

आँगन जा गुलाबकेँ कहलखिन-

"दोसर काजमे जा रहल छी। जाबे ओइ काजमे हम रहब ताबे घरक काज अहाँ सम्हारू।"

मुँह बाबि, सुनि अचम्भित भऽ गुलाब बजली-

"कोन एहेन काज आबि गेल जे सभटा भार हमरा देने जाइ छी?"

आगू बढ़बैत डेग रोकि श्यामानन्द बजला-

"भोलानाथ अपन सभ सम्पैत स्कूल बनबैले दऽ रहल अछि ओही काजे जा रहल छी।"

बिशेसर श्यामानन्द संगे लालपुर विदा भेला। कमलपुरक सटले लालपुर, दुनू एकबधु गाम। लालपुर पहुँच दुनू गोरे मुनीलालक ऐठाम पहुँचला। मुनीलाल दरबज्जेपर मोथीक बिछान लाधि बीनै छला। दुनू गोरेकेँ देख हाँइ-हाँइ परतानसँ ठोकि उठि कऽ आबि श्यामानन्द आ बिशेसरकेँ बैसौलकैन। चौकीपर बैस श्यामानन्द मुनीलालकेँ कहलखिन-

"भाय कोनो चेष्टगर बच्चाकेँ शोर पारि कहियौ जे गामक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजा लौत।"

मुनीलाल बेटाकेँ शोर पाड़लैन। बेटा आठमामे पढ़ैत। मुनीलाल दरबज्जे परसँ कारी, डोमी, कप्पल आ गुनमाकेँ शोर पाड़ि बेटाकेँ रघुनाथक टोल पठौलखिन। स्कूलक बात सुनि सभ जुबकमे नव उत्साह पैदा लेलक। दशो-बारहो जुबक आएल। सभकेँ बैसा श्यामानन्द कहलखिन-

"बौआ, अपन चारू-पाँचू गाममे एकोगो स्कूल नइ अछि। अवसर भेटल, भोलानाथ अपन सम्पैत दऽ रहल छैथ। हमसभ जे नवजुबक छी जी-जानसँ पड़ि लोअर स्कूलसँ लऽ कऽ हाइ स्कूल तक बनबैमे जुटि जाए। बेसी परिवार गरीबे अछि। बाहर खरचा दऽ

बच्चाकेँ पढ़ौत से सम्भव नइ छइ। लगमे स्कूल भेलासँ गामपर सँ खा स्कूल जा पढ़त। परसू चारि बजे बरहमस्थानक ऐगला मैदानमे बैसार हएत तइमे सभ अबिहह।"

गप-सप्प करैत दुपहर भऽ गेल। बिशेसर आ श्यामानन्द विदा हुअ लगला। मुदा खाइक बेर देख मुनीलाल दुनू गोरेकेँ बाँहि पकैड़ कहलखिन-

"बिनु खेने नै जाए देब?"

मुनीलालक आत्मीय सिनेहकेँ दुनू गोरे नै काटि सकला।

पाँचू गामक लोक चारि बजेक बदला दुपहरेसँ जमा हुअ लगला। श्यामानन्द आ बिशेसर कलौ खा विहारी आ बचनाकेँ संग केने बैसारमे पहुँचला। चारि बजेक समए आगू नै घुसैक पाछुऐ घुसैक दुइए बजेसँ बैसार शुरू भेल। बैसारक बीच भोलानाथ ठाढ़ भऽ बाजए लगला-

"भाइ लोकैन! अपन इलाका पढ़ै-लिखैमे बड़ पछुआएल अछि जइसँ सभ तरहेँ पछुआ गेल अछि। हमर सम्पैतकेँ कियो भोगनिहार नै अछि तँए हम चाहै छी जे अपन सभ सम्पैत दऽ हाइ स्कूल तक बनाबी। साठि बीघा जमीन अछि तैसंग घरोमे फुल-पीत्तैरक बरतन, गहना-जेबर इत्यादि ढेर अछि। पिताजी अपने अमलदारीमे बन्हकी नेन छला। तैसंग गाछी-कलम बाँस सेहो अछि। अहाँ सबहक बीच कहै छी जे अखनसँ ओ सभ चीज अहाँ सबहक भेल जइसँ बच्चा सबहक उद्धार-ले स्कूल बना दियौ।"

थोपड़ी बजा सभ कियो भोलानाथक विचारमे समर्थन देलक। श्यामानन्द ठाढ़ भऽ बजला-

"जाधैर स्कूल बनि पढ़ौनी शुरू हएत ताधैर हम दिन-राति अहाँ सबहक संग खटब।"

श्यामानन्दक पछाइत पण्डित शंकर उठि कऽ बजला-

"जाधैर हम कौलेजमे अध्यापकक काज केलौं ताधैर समाजसँ अलग रहलौं। जाधैर नोकरीमे रहलौं एक तरहक लोकक समाजमे रहलौं। जेकरा आइ नदी जकाँ समाज बुझै छी। बीस बरख अध्यापन केलासँ अध्यापक भेलौं, साइठ बर्खमे सेवा निवृत्ति भेला पछाइत जखन गाम एलौं तखन बुझलिऐ जे आइ धरिक समाज नदी जकाँ छल आब समुद्र रूपी समाजमे एलौं। तँए नौजवानक शक्ति हमरा शरीरमे प्रवेश केलक। आइ हम ओइ समाजमे छी जइमे प्रकाण्ड पण्डित, महान वैज्ञानिक, दार्शनिक, इंजीनियर, डाक्टर, कानूनवेतासँ लऽ कऽ महामुर्ख धरि रहैए। जहिना समुद्रमे बड़का-बड़का जानवरसँ लऽ कऽ छोट-सँ-छोट कीड़ि-मकोड़ी बास करैत। जइ समाजमे स्वस्थ खलीफासँ लऽ कऽ अथबल धरि रहैत। जइ समाजमे महानसँ महान डाक्टर होइत ओइ समाजमे विकटसँ विकट रोगक रोगी रहैत। आइ ओइ समाजमे हमहूँ छी। अखन धरि पेट-ले नोकरी करै छेलौं जे जिनगी भरिक जोगार भऽ गेल। आब पेट-ले नहि कल्याण-ले सेवा करब। जखन सेवा निवृत्त भऽ गाम अबैत रही तखन रस्तामे मने-मन कचोट हुअए जे जइ समाजमे जन्म लेलौं ओ जिनगीमे बहुत देलक। जेकर हम ऋृणि छी। तँए अहाँ सबहक बीच कहै छी जे मरै काल धरि अहाँ सबहक बाँहि पकैड़ चलैत रहब।"

पण्डित शंकरक वक्तव्यक बीच केतेक बेर थोपड़ी बजल। पण्डित शंकरकेँ बैसते डाक्टर नीलमणि सेन ठाढ़ होइत बजला-

"हमहूँ अहीं सबहक बीच बसि जिनगी बिता रहल छी आगूओ बिताएब। हम एकटा अदना डाक्टर छी, जहाँ धरि बनि पड़ैए अहाँ लोकैनक सेवा करै छी। भोलानाथ अपन सभ सम्पैत समाज-ले लगा रहल छैथ तँए हुनका हृदैसँ धैनवाद दइ छिऐन आ हमहूँ अपन आधा

समए अहाँ लोकनिक सेवामे देब आ आधा समए पेट-ले लगाएब।"

डाक्टर नीलमणिकेँ बैसते ईंटा बनौनिहार रामधन उठि कऽ ठाढ़ भेल। रामधनकेँ ठाढ़ देख सभ टकटकी लगा देखए लगल। जेकरा एको अक्षरक बोध नहि, सभ दिन माटि बना पजेबा गढ़लक ओ पाँच गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ अपन विचार रखए चाहैए। सभकेँ एकरे जिज्ञासा। ठाढ़ भऽ रामधन कहलक-

"हम सभ अठारह गोरे पजेबा बनबै छी। अठारहो गोरेक विचार अछि जे स्कूलक पजेबा हम सभ अदहा मजदूरी लऽ बनाएब। अदहा स्कूलक मदैतमे देब।"

रामधन थोपड़ी अवाजमे अपन विचार सम्पन्न कऽ बैसल।"

रामधनकेँ बैसते मनचल उठि ठाढ़ भऽ बजला-

"जाधैर स्कूल बनत ताधैर गामे-गाम घुमि नाटक करि कऽ स्कूलक प्रचार करब आ जे आमदनी हएत ओ चन्दामे देब।"

आइ धरि गामक उत्थान-ले एते गामक एते लोक एकठाम बैस कहियो नै विचार केने छल। अखन धरि सभ जाति, सम्प्रदाय, ऊँच-नीचक आड़िक भीतर वौआइ छल। अनेरे एक-दोसरसँ जरैत रहै छल, छोट-छीन झगड़ा ठाढ़ कऽ उलझल रहैत छल जइसँ समाजक पतन होइत रहल। औझुका बैसारसँ सबहक मनमे खुशी आएल, आपसमे प्रेम जगल। भायचारा आ पड़ोसिपनक उदय भेल। सबहक जिज्ञासा, तियाग आ प्रेमक माध्यमसँ नव समाजक निर्माणक बीज लोकमे पड़ल। ..पण्डित शंकर पुनः ठाढ़ भऽ बाजए लगला-

"भाइ लोकैन भोलानाथक सम्पैत सबहक भऽ गेल। एकरा खजाना बुझियौ। हमर-अहाँक जिम्मा बनैए जे खजाना भरल रहए तँए एकरा मेहनतसँ भरबाक जरूरत अछि। पाँच-गामक लोक बैसल छी। सभ बड़का-बड़का राक्षसक चालिमे पड़ल छी। आइ हम सभ संकल्प

ली जे बिआह-श्राद्ध इत्यादिमे धन लूटबै छी ओकरा बन्न कऽ समाजक कल्याणमे धन लगाबी। बिआह, श्राद्ध तँ आइए नै अदौसँ होइत रहल आ आगूओ होइत रहतै। दहेज रूपी दानव पहिने नै छल जे अखन सैयो हाथीक बलक बरबैर भऽ गेल अछि। बिआह तँ सृष्टि निर्माणक प्रक्रिया छी, हेबे करत, जँ नै हएत तँ सृष्टि रुकि जाएत। मुदा जे श्राद्धमे जे भोज करि कऽ घर-घराड़ी बेच लूटा दइ छिऐ जैपर सभकेँ धियान दिअ पड़त। तहिना छोट-छोट बातक झगड़ा बढ़ि विकराल रूप धारण कऽ लइए। जेकरा चलैत कोट-कचहरीक चक्करमे पड़ि सभ निच्चाँ-मुहेँ जा रहल छी। ने अपन जिनगीक महत बुझै छिऐ आ ने दोसरक।"

हाथ उठा सभ जोरसँ बाजल-

"पण्डित बाबा बढ़ियाँ विचार देलैन।"

पण्डित शंकर दुनू हाथसँ सभकेँ शान्त करैत आगू बजला-

"भाय लोकैन! पाँच गामक लोक बैसल छी। पाँचू गामक सभ संकल्प लिअ जे हम अपन बेटा-बेटीक बिआह ऐ पाँचू गामक बीच करब। दहेज नै लेब। जरूरी काज जे अछि ओतबे करब। देखै छी जे अदहासँ अधिक परिवारमे दुनू साँझ भरि पेट अन्न नै भेटै छै, देहपर कपड़ा नइ छै, रहैले घर नइ छइ। आइ बच्चाकेँ पढ़ैले विचार कऽ रहल छी, नीक बात।"

कहि पण्डित शंकर बैस गेला।

पण्डित शंकरेक अध्यक्षतामे समाज उत्थान समिति बनल जेकर सदस पाँचू गामक पच्चीस नौजवान भेल आ आगू-ले योजनावद्ध ढंगसँ कार्यक्रम सेहो तँइ भेल।

◌

शब्द संख्या : 1640

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 350

ISBN : 978-93-87675-24-7

जगदीश प्रसाद मण्डल

इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं





इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ... ।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया... ।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान... ।

ISBN : 978-81-936422-1-4

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

IZZAT GAMA IZZAT BANCHELAUN
A Maithili Novel by Shri. Jagdish Prasad Mandal.

अनुक्रम

अंक

एक/08
दू/16
तीन/30
चारि/41
पाँच/52
छह/61
सात/73
आठ/83
नअ/95
दस/120

1.

कोलकातासँ खुशीलाल गाम अबैत छल कि स्टेशनपर रघुवीर भाय भेटलखिन। बेरुका समय, साढ़े चारि बजे ट्रेन आधा घन्टा बिलमसँ तमुरिया स्टेशनपर पहुँचल। छोटकी रेल-पटरी, देशक आजादीक सत्तैर बर्खक पछातियो अंग्रेजी शासनक जे बनौल गेल रेल लाइन छल ओ अखनो जीवित अछिए। चदराबला छोट-छीन मुसाफिरखाना, उभर-खाभर प्लेटफार्म, तैपर लकड़ीक तीन-चारिटा बइसैक ब्रेंच, तहूमे एक-आधटा तख्ता उखड़ले, पानि पीबैले एकटा चापाकल जे सालक तीन मास चलैत बाँकी मास परते रहैत अछि। प्लेटफार्मपर छाहैरक लेल तीन-चारिटा पाखैर आ बरक गाछ अखनो अंग्रेज बहादुरक साक्षात् दृश्य सदृश्य अछिए।

ओना, जखने तमुरिया रेलबे टीशनक पहिल सिंगनल लग गाड़ी पहुँचल कि खुशीलाल गाड़ीक ब्रेंचपर सँ उठि अपन बैगो आ झोरो हाथमे लऽ ट्रेनसँ उतरैक उपक्रममे लागि गेल, मुदा उतरनिहार बेसी रहने खुशीलाल पाछू पड़ि गेल।

घोघरडिहा, चिकना स्टेशनक संग बीचमे केतेक ठाम गाड़ी रोकले जाइए आ चढ़निहार-उतरनिहार चैढ़ते-उतैरते अछि। ओना, बीच-बीचमे–माने चिकनासँ घोघरडीहाक बीचमे–गाड़ी रोकैक मजबुरियो लोकमे अछिए। एक तँ दूर-दूरपर स्टेशन तैसंग गाड़ी-सवारीक अभाव

रहने लोककेँ पएरे बेसी चलए पड़ै छै जइसँ समैयो अधिक लगै छै आ थकानो होइते छइ। स्टेशनपर गाड़ी पहुँचैसँ पहिने प्लेटफार्मपर जहिना चढ़निहारक भीर लागि जाइत अछि, तहिना गाड़ीक भीतर उतरनिहारो सबहक भीड़ लगिते अछि। तहूमे रौदियाह समय भेने घोघरडीहा तकक लोक दलिहारा चौरसँ घास काटि-काटि गाड़ीए-सँ लऽ जाइत अछि। जइसँ घसवाहक भीड़ आइ-काल्हि सभसँ बेसी भाइये जाइए। ओना गाड़ी रूकैक समय दुइये मिनट अछि मुदा यात्रियोक अँटाबेस हएत तखने ने गाड़ी खुजत। तहूमे यात्रियो तँ यात्री छी। कियो भुखाएल गाए-महींसक चाराधारी तँ कियो लवनचूस-बिस्कुट-शिखर-पान-पराग बेचनिहार वेपारी, कियो सासुर जाइबला धड़फड़ाएल यात्री, तँ कियो गाड़ीमे टाँगल साइकिल उतारनिहार पसिंजर छथिए। सबहक जहिना अपन दुनियाँ-जहान छैन तहिना अपन जिनगी जान सेहो छैन्हे। ओना, गाड़ीमे चढ़निहारो एक-सँ-एक छैथ, माने ई जे कियो गाड़ी अबैक दिशाक प्लेटफार्मक कतवाहिमे हियासैत रहैत तँ कियो गाड़ी अबैक विपरीत दिशाक कतवाहिमे ठाढ़ भऽ हियासैत रहै छैथ।

ओना, किछु पसिंजरक ईहो धारणा छैन्हे जे गाड़ीक आगू-पाछू खाली रहैए आ बीचमे बेसी भीड़ भऽ जाइ छै, तँए प्लेटफार्मक ऐगला-पैछला मुँहथैरपर तेकर भीड़ बेसी भाइये जाइए। मुदा ओहन सोचनिहारक नजैरमे ई बात रहबे ने करै छैन जे जखन सभ यएह बुझि गाड़ीमे चढ़त तँ भीड़ बीचमे हएत केना?

खाएर.., रघुवीर भाय सेहो एहने खेलाड़ी, तँए प्लेटफार्मक मुँहथइरेपर ठाढ़ भऽ हुलकी दइक खियालसँ ठाढ़ रहैथ। इंजन प्रवेश करिते रघुवीर भाय हुलकी दऽ दऽ गाड़ीकेँ देखए लगला कि दोसरे वौगीमे खुशीलालकेँ देखलखिन। जहिना गामसँ बाहर गौआँकेँ देख केकरो मन तृप्तिसँ तिरपित हुअ लगैए तहिना रघुवीर भायकेँ सेहो भेलैन। खुशीलालकेँ देखते हाथ उठा इशारा सेहो दिअ लगलखिन मुदा अनचिनहार हाथकेँ लोक चिनहार हाथ किए बुझत।

गाड़ी रूकिते घसवाह सभ तीनटा वौगीक मुँह घेर लेलक। चलिते गाड़ीमे एक गोरे माने एकटा घसवाह कुदि कऽ ऊपर चढ़ि गाड़ीक मुँह दफानि लेलक। गाड़ीसँ उतरनिहार घेरा गेला। निचला घसवाह सभ निच्चासँ घासक बोझ डिब्बामे फेकए लगल। खाएर जे भेल से भेल, मुदा सरकारी धन जखन गाड़ी छी तखन सबहक ने भेल। एते बुधियारी तँ लोकमे आबिये गेल अछि, तँए घसवाहो अपन घासकेँ सेरिया कऽ सैति उतरनिहारक रस्ता छोड़ि देलक।

गाड़ी लागल ठाढ़ रघुवीर भाय सेहो छेलाहे। तइ बिच्चेमे एकटा पसिंजर गाड़ीसँ उतैर निच्चाँ आबि घसवाहकेँ ठिकिया बाजल-

“जे खेबा नइ देत ओ ऐगले मांगि बैसत..!”

ओना मरदा-मरदी जे घसवाह छल ओ किछु ने बाजल। किछु ने बजैक कारण भेल जे ओ सभ बाट-घाटक बटमारिकेँ मानि नइ दइए। तँए चुपे रहबकेँ नीक बुझैए। मुदा एकटा घसवाहिनीक मुँह खुजि गेल। बाजल-

“अपनो नाहक माँगिपर कियो खेबा दइ छै, जे देबइ।”

मुदा रच्छ रहल जे गाड़ी ससैर कऽ कनी आगू बढ़ि गेल।

खुशीलाल गाड़ीसँ उतैर कन्हामे बैग टाँगि हाथमे झोरा लटका घरमुहाँ हुअ लगल कि रघुवीर भाय धड़फड़ाइत कहलखिन-

“खुशीलाल, गाम नहि जा। केतौ जे लग-पासमे कुटमैती आकि दोसतियारे हुअ तँ तैठाम चलि जा।”

कहि रघुवीर एक हाथसँ ढेका सम्हारैत दोसर हाथमे झोरा नेने ऐगला कोठरी दिस दौड़ैत गाड़ीक पैदान पकैड़ लेलैन। ओना, पाछूसँ खुशीलाल बेर-बेर पुछैत रहलैन जे से की, से की रघुवीर भाय। मुदा रघुवीर भाय खुशीलालक बात सुनबे ने केलैन आकि सुनि कऽ अनठा देलैन से तँ ओ जानैथ। खुशीलालकेँ बुझि पड़ल जे रघुवीर भाइक मन अपचंग छैन।

सकरीसँ पूबक रेलक यात्री उन्नैस साए बिआलिसक आन्दोलनक ढाठी अखनो धेनहि छैथ तँए सकरी-निर्मलीक बीचमे कम लोक गाड़ीक टिकट कटौनिहार छैथ बाकी स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक छथिए। रहबो केना ने करता! एक दिस दुनियाँक महाशक्ति देश भारत, दोसर दिस पछुएलहा देश। सभ अपन जहिना एक दिस जलोक मार्गकेँ नीकसँ बेवस्थित केने अछि, तहिना दोसर दिस थल मार्गक संग अकास मार्गक सुविधा सेहो प्राप्त केनहि अछि! खाएर जे अछि से अछि, मुदा मिथिलांचलक धरोहर रेल तँ छीहे से जहिया धरि रहए। ओना, रघुवीर भायकेँ घसवाह सभ एते पुछबे केलकैन-

"भाय, तमाकू खाइ छी।"

रघुवीर भाय अपनो टिकट नहियेँ कटौने छला तँए घसवाहक संग भैयारी लागिये गेल रहैन। बजला-

"तोरा सबहक हाथ अखन तमाकुल चुनबैबला नइ हेतह। घासक छू-छा केने छह, तँए हमहीं लगा कऽ खुआ दइ छिअ। केते गोरे खाइ छह?"

ओना, गिनतीमे घसवाह सभ सक-सका गेल किए तँ जहिना तीनू मरद तमाकुल खाइत तहिना तीनू जनानी सेहो खाइत। मुदा तमाकुले सन तुच्छ वौस-ले दस गोरेक बीच बाजब नीक नहि बुझलक, तँए जनानीक गिनती ई सोचि छोड़ि देलक जे मरदे-मरदी कनी बेसिया कऽ जुम लऽ लेब आ तीनू गोरे तीनू गोरेकेँ चुपचाप हाथ बढ़ा कऽ दऽ देबइ। तइसँ दुनू काज भऽ जाएत।

..एकटा घसवाह बाजल-

"भाय, खाइ तँ छी तीनियेँ गोरे मुदा बुझिते छिऐ जे हम सभ अलपुरिया छी, तँए जूम कनी नमहर होइते अछि।"

ओना रघुवीर भाइक मन अपचंग भेल रहैन मुदा तैयो अपनाकेँ अप्पन विचारमे दाबि घसवाह संगे गपो-सप्प करए लगला आ तरहत्थीपर

तमाकुल-चुन मिला रगड़ौ लगला। गप-सप्पकेँ आगू बढ़बैत रघुवीर भाय बजला-

"भाय, अनेरूआ घास जे पानिमे सँ काटि-काटि मालकेँ खुआबै छह से कोनो अबघातो मालकेँ करतह?"

रघुवीर भाइक विचार सुनि छबो घसवाह थकथका गेल मुदा लचारो तँ विचारकेँ खाइते अछि। एकटा घसवाह बाजल-

"भाय, कहलौं तँ जीवनियेँ जकाँ मुदा की करबै। तेहेन समय आ तेहेन बाइढ़िक इलाकामे रहै छी जे जमीनक शेखीए खतम भऽ गेल अछि। तैपर रौदी अछि।"

तैबीच सातो गोरे तमाकुलक पहिल थूक फेकलक। रघुवीर भाय अपन मनक बात बजला-

"भाय, तूँ सभ मालक पीठपोहू छह, कहुना-ने-कहुना पशुधनकेँ बँचाइये लेबह मुदा...।"

रघुवीर भाइक 'मुदा' सुनि एकटा घसवाह बाजल-

"से की, से की भाय?"

ओना, अपन विचारकेँ रघुवीर भाय बाजए नइ चाहै छला। नइ बजैक कारण मनमे थाना-पुलिस छेलैन आकि गाम-परिवारक इज्जत, से तँ ओ जानैथ मुदा घसवाहक मनमे भेल जे भरिसक हमरे सभ जकाँ ईहो गाए-महींस पोसनिहार जरूर छैथ। एकटा घसवाह बाजल-

"भाय, केतए तक जाएब?"

घसवाहक बात सुनि रघुवीर भाय सकपकेला। सकपकाइक कारण भेलैन जे चिकनासँ पूब निर्मली तक मिला सातटा कुटुमैती अछि, कोन गामक नाओं कहबै। जँ कोनो काजे (माने नौत-पिहाने) जाइत रहितौं तँ जैठामक रहैत तैठामक नाओं कहितिऐ, मुदा से तँ नहि अछि, तखन कोन गामक नाओं कहबै। ओना मनमे डर पैसल रहने रघुवीर भाय विचारि नेने छला जे थाना कातक गामसँ कनी हटले रहब। ..जोगी जकाँ

रघुवीर भाय बजला-

"भाय, इलाका की हेराएल अछि जे कोनो गामक नाओं फुटा कऽ कहबह। जेतए धड़ तेतए घर।"

चिकना पहुँचते घसवाह सभ उतैर गेल। गाड़ीक सीटो खाली भेल। रघुवीर भाय सीटपर जा बैसला।

तमुरिया स्टेशनसँ गाड़ी बाहर भऽ गेल। प्लेटफार्मपर खुशीलाल गौआँ-घरूआकेँ हियासए लगल जे कियो जँ भेटता तँ रघुवीर भाइक देल विचारकेँ नीक जकाँ बुझि लेब। ओना, जखने खुशीलाल रघुवीर भाइक मुहेँ गाम-जाइसँ मनाहीक बात सुनलक तखने मन सनाक-दे ऊपर चढ़ि गेलइ। तँए मन थीरे ने होइ। मुदा खुशीलालक नजैरपर कियो गौआँ नइ चढ़लखिन। कन्हामे बैग आ हाथमे झोरा लटकौने चारूकात चकोना होइत खुशीलाल स्टेशनसँ बाहर भेल।

देशक आजादीक आन्दोलनमे मिथिलांचलक भरपूर जोगदान रहल। गोरा-पलटनक हाथे केतेको गाम जरौल गेल, केतेको गाम लूटलो गेल, केतेको लोक जहलो गेला, केतेको गोरे मारियो खेलैन, एते तक कि केतेक गोरे गोली सेहो खेलैन। एक दिस देश स्वतंत्र भेने देशवासीकेँ गुलामीसँ मुक्ति भेटल, आ दोसर दिस पुलिस-पलटनक दमनक कुप्रभाव समाजक संस्कारमे सेहो पड़ल। जइसँ अखनो गाम-घरमे रघुवीर भाय सन लोक छथिए जे थाना-पुलिसक आ कोर्ट-कचहरीक नाओं सुनि गामसँ डरे पड़ेबे करै छैथ। मुदा खुशीलाल तीन सालपर कोलकातासँ गाम घुमि रहल अछि। एक तँ कोलकाता सन शहरक जिनगी तैपर दिनानुदिनक घटना-परिघटना आ पुलिसक छान-बीन सेहो तीन सालसँ खुशीलाल देखिये चुकल छल तँए नव विचार मनमे आबि गेल छेलइ।

ओना, खुशीलाल मैट्रिक पास केला पछाइत गामसँ निकलल छल मुदा कोलकातामे नोकरीक दौरान स्कूली शिक्षा तँ छुटिये गेलै, मुदा बाहरी कहियौ आकि जिनगीक कहियौ, ओ तँ आबिये रहल छेलइ।

ओना, ओहूमे ई जरूर छल जे अपना आँखिये खाली अनकर देखने छल, अपना सिरे अपन नइ देखने छल। तँए आगिमे तपाओल सोना जकाँ नहियेँ भेल छल मुदा सोन सन बुधि नइ आएल छेलै सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। गामक परिवेश आ शहरक परिवेशमे अन्तर अछिए। गाम आ शहरक एक बात भेल मुदा शहरो-शहर आ गामो-गामक परिवेश एके रंग अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे गामसँ शहर तक देखनिहार खुशीलालकेँ अपन जीवन दर्शनक रस्ता जरूर भेट चुकल छेलै मुदा समाजक बीच ओकरा स्थापित करब बाल-बोधक खेल तँ नहि।

स्टेशनसँ निकलला पछाइत जहिना खुशीलालक मन गाम जाइले तनफन करैत तहिना दोसर दिस रघुवीर भाइक बातसँ मन हिचकियेबो करैत रहइ। गुनधुन करैत खुशीलालक मनमे उठल- अधखिज्जू बात रघुवीर भाय बजला, से नइ तँ लगेक गाम अपनो छी, भऽ सकैए जे कोनो तेहेन घटना भेल होइ जइसँ रघुवीर भाइ मनाही केलैन, तँए किए ने केकरोसँ पुछि ली। 'केकरोसँ पुछि ली' मनमे ऐबते खुशीलालक विचार आगू-पाछू करए लगल। आगू-पाछू करैक कारण भेल गामो तँ गाम छी। कोनो गाममे आगि लगैए आ कोनो गामक लोक आगि मिझबैक नामपर गामक सम्पैतक चोरी सेहो करैए आ लूटबो करैए, मुदा जे अछि से वएह रहह। एक बेकतीसँ पुछलापर कोनो भ्रम (वैचारिक भ्रम) उठि कऽ ठाढ़ होइए मुदा जँ एकसँ अधिक बेकतीसँ पुछि ली। ओना जेते मुँह तेते रंगक बात ऐबते अछि मुदा वएह अनेक रंग ने अपनो मनकेँ एक रंग तक पहुँचा दइए...।

अन्तो-अन्त खुशीलाल विचारि लेलक जे जे राम से राम, अपन गाम छी, जेबे करब। जिनगीमे जखन जीवित ठाढ़ छी तखन जँ हवा-बिहाड़िक डर करब तँ जीब केना पएब। तहूमे अपन बाप-पुरखाक इतिहासक खतियानक खतियाएल गाम अछिए जे आइ धरि जेते आगि-पानि, पाथर-ठनका धरतीपर खसल आ नष्ट केलक, तइमे हमहूँ ओही

इतिहास-पुरुखक वंशज ने छी जे आइयो धरि जीवित धरतीपर अछिए।

कन्हामे बैग आ हाथमे झोरा लटकौने खुशीलाल रेलबेक हातासँ बाहर भेल।

◌

शब्द संख्या : 1630, तिथि : 14 सितम्बर 2017

2.

दस डेग आगू बढ़िते खुशीलालक नजैर सिंहेसर काकापर पड़लैन। माथपर गमछा आ हाथमे झोरा नेने सिंहेसर काका हाट जाइ छला। आगूए-सँ खुशीलाल बाजल-

"काका, गोड़ लगै छी!"

उमरदार सिंहेसर काका, खुशीलालक बदलल चेहरा देख नीक जकाँ चिन्ह नइ सकला। मुदा उमरदारकेँ अपनेटा परिवारक लोक प्रणाम नहि करै छैन बल्कि समाजक आनो-आन करिते अछि, तँए बिनु चिन्हनौं खुशीलालकेँ असीरवाद दैत बजला-

"भगवान नीके रखथुन।"

खुशीलाल बुझि गेल जे सिंहेसर काका नहि चिन्हलैन। अपन चिन्हारे दैत खुशीलाल फेर बाजल-

"काका, हम खुशिया छी।"

'खुशिया' सुनि अख्यासि कऽ सिंहेसर काका बजला-

"खुशीलाल! तोहर तँ रूपे-रंग बदैल गेलह।"

सिंहेसर कक्काक बात सुनि खुशीलालक मन उमैड़ गेल। बाजल-

"काका, केतए जाइ छिऐ?"

अपशोच करैत सिंहेसर काका बजला-

"बौआ, की कहबह! तेहेन ने समए भऽ गेल जे तीमन-तरकारी दुआरे भरि पेट खाइ नइ छी।"

खुशीलाल बाजल-

"से किए काका? अच्छा गप-सप्प होइत रहतै। ताबे अही दुभिपर बैस एकटा कलकतिया बिस्कुट खाउ।"

'कलकतिया बिस्कुट' सुनि सिंहेसर काका अतीतमे वौआ गेला। पाँच साल पहिने रघुनन्दन खुएने रहैन...।

दुनू गोरे रस्ताक बगलेक दुभिपर बैसला। बैसते खुशीलाल बैगकेँ खोलए लगला कि आत्म विह्वल होइत सिंहेसर काका बजला-

"बौआ, बिआह तँ नइ भेल छह?"

सिंहेसर कक्काक बात सुनिते खुशीलालक मनमे जेना जोरसँ धक्का लगल। धक्काक कारण भेल जे जइ बैचमे खुशीलाल मैट्रिक पास केलक ओइ बैचक सभकेँ बिआह भऽ गेल। नीक परिवार–माने अर्थक सुभियस्त–सँ लऽ कऽ मध्यम परिवारक ओ सभ छल। मुदा खुशीलाल गरीब बोनिहारक बेटा, जइसँ बिआह नइ भेलइ। गाम-घरक लोक हजारो रंगक ताना मारिते रहइ। तानाक परिस्थितियो बनले रहइ। ओना, माइयो-बाप अपने बोइन करैले तैयार रहै मुदा पढ़ल-लिखल बेटाकेँ खेते-खेते बोइन करैमे अपनाकेँ तौहीन बुझइ। एक तँ ओहुना खुशीलाल सोल्होअना समय पढ़ैयेमे बितौलक। पढ़ैमे बितबैक कारण छेलै जे ने अपना परिवारमे कोनो काज छेलै आ ने नव कोनो काज ठाढ़ करैक उहि रहइ। उहियो केना होइत, जैठाम आनो-आन परिवारक वएह स्थिति छेलै, तैठाम देखा-देखीक प्रभावो केना पड़ैत। दोसर ईहो छेलै जे अपनो आगूक जिनगीक बाट ओते फरिच भऽ कऽ नहि देखैत छल, जेते देखला पछाइत लोककेँ अपन चेतना जगै छइ।

ओना, खुशीलालक मनमे एतेक जरूर छेलै जे जइ समाजमे हमरा सन लोककेँ एतबो पूछ नहि जे बिआहो होइत, तैठामक समाजकेँ हमहूँ

देखा देबै जे खुशीलाल घरोवाली रखै-जोकर अछि कि नहि...।

जगैत आत्मवले खुशीलाल बाजल-

"काका, बिआह करै-जोकर नइ भेल छेलौं तँए बिआह नइ भेल, आब बिआहोक उमेर भेल आ गाममे रहैक विचार सेहो अछिए।"

ओना सिंहेसर कक्काक मन परदेशिया परिवारक स्थिति आ गमैया लोकक स्थितिमे अकास-पतालक अन्तर देखबे करैत, तँए मनमे रहैन जे परदेशमे काज केनिहारक स्थिति गमैया लोकसँ बेसी नीक छइहे। बजला-

"गामसँ नीक बाहरेक नोकरी करब हेतह। अनेरे गाममे किए आबि दुख-तकलीफ कटबह।"

नव विचारक संग नव जिज्ञासाक लोक खुशीलाल भाइये गेल छल तँए सिंहेसर कक्काक विचारकेँ हलके-फुलके मनमे लैत, विचारकेँ बदलैत बाजल-

"काका, गामेक एक गोरे कहला जे गाम नहि जाह। से गाममे किछु भेल हेन?"

सिंहेसर काका सोझ-साझ लोक। अपन घर-परिवारक काजमे भरि दिन लागल रहने आन-आन लोकसँ कम गप-सप्प होनि, जइसँ गामक सभ गपक जनतब नइ होइन। बजला-

"नहि! गाममे कहाँ किछु भेल अछि। हमहूँ तँ गामेमे छी, कहाँ किछु कियो कहलक अछि।"

सिंहेसर कक्काक बात सुनि खुशीलालक मन ओहिना छनछनाए लगलै जहिना गरम लोहापर पानि पड़ने छनछनाइए। अखन धरि खुशीलालक मन रघुवीर भाइक बात सुनि भीतरे-भीतर वौआ रहल छल जइसँ सिंहेसर कक्काक बात पानि जकाँ बुझि पड़लै। बैगक मुँह खोलि खुशीलाल बिस्कुटपर नजैर देलक कि नुनहो आ मीठहो बिस्कुटक डिब्बा देखलक। ओना पहिने हाथ नोनहे बिस्कुटपर गेलै मुदा खुशीलालक

मनक विचार रोकि देलकै। मनमे उठलै- बेरुका समए छी, गामसँ सिंहेसर काका पएरे एला अछि, जँ कहीं पियास लगल होनि तखन तँ नोनहा बिस्कुट कुपथे हएत किने, तहूमे जँ गोटे लूगिया मिरचाइक बीआ मुँहमे पड़ि जेतैन तखन तँ आरो छटपटा कऽ पानि पीबैले विदा हेता। तखन गप-सप्प केकरासँ करब। तँए नोनहा बिस्कुटपर सँ हाथ हटबैत मीठहा बिस्कुटपर देलक। नीक बिस्कुट रहबे करइ। दू डिब्बा बिस्कुट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा सिंहेसरो कक्काक हाथमे देलकैन।

हाथक डिब्बामे सँ एकटा बिस्कुट खाइते सिंहेसर कक्काक मन मीठा गेलैन। बजला-

"बौआ, गाम कि आब गाम रहल, नीक-नीक मैनजन मरि-मरि गेल, काँची-पीची मैनजन भेल।"

सिंहेसर कक्काक बात सुनि खुशीलाल भभा कऽ हँसैत बाजल-

"से की काका?"

सिंहेसर काका बजला-

"हौ बौआ, नीक-नीक जेते लोक गाममे छला से ते गामसँ बहरा गेला, आ गाममे रहि गेल सभटा कौआ-कुकुर, जे सुगरक गोबर जकाँ ने नीपै जोकरक अछि आ ने पोतै जोकरक!"

ओना, सिंहेसर कक्काक मनमे बजैक क्रम जे रहल होनि मुदा खुशीलाल बुझलक जे भरिसक काका ओ बात कहि रहला अछि जे गामक ओ बुधि जे दुनियाँ तँ टहैल रहल अछि मुदा अपन मातृभूमिक सेवा करैकाल पथरा जाइए। अखन धरिक जे गीत-नाद वा कथा-पिहानी मिथिलांचलक रहल ओ समृद्धशाली मिथिलाक रहल मुदा ओइ समृद्धशीलतामे कनबह केतए भऽ गेल अछि जे जे मिथिला बाढ़ि-रौदीक संग अशिक्षा आ भूखसँ तबाह अछि, जेतए ने उत्तम स्वास्थ्य बेवस्था अछि आ ने उत्तम आवासक। मुदा अखनो हम ओकरा कोन नजरिये देख रहल छी। तेतबे नहि, ऐठामक भाषाक दुर्भाग्य बनि रहल अछि जे

गामक-गाम आ परिवारक-परिवार भाषा क्षेत्रसँ पड़ाइन कऽ रहल छैथ! आन भाषा आ बेवहारक क्षेत्रमे रहि अपन भाषा आ अपन संस्कृतिक गुणगान केतेक उपयोगी हएत..? तहीकाल बचनू भाय स्टेशने दिससँ अबैत दुनू गोरे-लग पहुँचला। सिंहेसर काका बचनू भायकेँ देखते बजला-

"बौआ खुशी, जेकरे नाम गुलाब छड़ी सहए चलि आएल।"

सिंहेसर कक्काक बात सुनि बचनू भाय बजला-

"काका, हम कोन जोकरक छी जे गुलाब छड़ी बनब।"

जेना सिंहेसरो कक्काक जीहेपर रहैन तहिना बजला-

"सबै नचाबे राम गोसाई।"

तइ बिच्चेमे खुशीलाल बचनू दिस तकैत बाजल-

"गोड़ लगै छी भाय। बैसू अहूँ भोजमे शामिल होउ।"

कहि बैगमे सँ बिस्कुटक एकटा डिब्बा खुशीलाल आरो निकाललक। बचनूओ भाय तीन कोनियाँ बनि बैस गेला। बैसते बिस्कुटक डिब्बा हाथमे लैत बजला-

"खुशीलाल, आब ते तूँ फुटि कऽ जुआन भऽ गेलह। हमरा भाँजमे तोरे सन हड़गर-कटगर एकटा लड़की अछि, जँ कहह ते हम ओइमे भीरी।"

अपन बेवसी देखबैत खुशीलाल बाजल-

"भाय, तीन सालपर गाम एलौं हेन। आब गामेमे रहब। अहाँ सभ गाममे रहै छी, एक नजैर देखैत रहब।"

बचनू भाय बजला-

"बौआ खुशी, तोरा कहने आ नइ कहने देखब। तूँ गाममे नइ रहै छह, मुदा सिंहेसर काका तँ रहै छैथ।"

अपन नाओं सुनिते सिंहेसर काका मुड़ी डोला स्वीकारलैन। मुदा मुहसँ किछु बजला नहि। नइ बजैक कारण भेलैन जे बिस्कुट मुँहमे रहैन।

ओना, खाइकाल केते लोक नहियोँ बजै छैथ। नइ बजैक कारण सेहो अपन-अपन होइत अछि।

मुदा ऐठाम सिंहेसर कक्काक संग से नइ छेलैन। मनमे ऐबते छेलैन जे जैठाम 'हँ-नइ' मे जवाब देल जाएत तैठाम इशारोसँ काज चलि सकैए, मुदा जैठाम अनेक शब्दक जोड़सँ जवाब देल जाएत तैठाम असोकर्ज तँ भाइये जाइए। ओना, खेबाकाल नइ बजैक कारणो अछि, पहिल अछि जे राज-दरबारमे जखन जन-विरोधी कानून बनै छल तखन मंत्री-संत्रीक बीच खाइ-पीबैक ओरियान होइ छल, आ खाइ-पीबै काल प्रतिबन्ध छल जे कियो मुहसँ नहि बाजि खाली हूँहकारी दऽ सकै छैथ। जइसँ जन-विरोधी कानून बनैमे असान होइ छल। मुदा खेबाकाल नइ बजैक दोसरो पक्ष अछि। ओ अछि जे जे किछु भोजन आगूमे आबि जाए ओ संतोषदाता भगवान छैथ तँए हुनकर अवहेलना ने होइन।

खाएर जे अछि से अछि, मुदा सिंहेसर काका पानि जकाँ जेहने ऊपर स्वच्छ-निरमल छैथ, तेहने भीतरसँ स्वच्छ-निरमल तँ छथिए। जइसँ गामक जे काट-मार अछि से सभ नइ बुझै छैथ। नइ बुझैक कारण एकटा ईहो अछि जे गामक सभ बेकती हिनका-दे बुझै छैन जे सिंहेसर कक्काक कानमे गेने बात प्रचार भऽ जाएत, तँए हुनका लग बाजब नीक नहि।

अपन अखन धरिक जिनगीकेँ साबुनसँ साफ होइत देख बचनू भाइक मन सेहो पवित्र भेलैन, बजला-

"काका, जखन बिस्कुट खाइये लेलौं तखन अनेरे रस्तापर बैस केकरो रस्ता रोकने रहबै सेहो नीक नहि। जखन तीनू गौंए छी, तखन किए ने डेगे-डेग गाम दिस चलबो करब आ गपो-सप्प करब।"

'गाम दिस चलब' सुनि सिंहेसर काका बजला-

"बौआ, हम ते हाट जाइ छी। हाटसँ घुमब तखन गाम जाएब।"

सिंहेसर काका हाट दिस विदा भेला आ बचनू भाइक संग खुशीलाल गाम दिस विदा भेल।

बचनू समाजक ओहन लोक छैथ जे अपन काज गदहोपर चढ़ि सम्हारबकेँ नीके बुझै छैथ तँए नीक-अधलाक विचार मनसँ उठि गेल छैन। जेतए लाभ हएत ओतए पहुँचब दिन-दिनक किरदानी छैन्हे। ओना, मनुखो तँ मनुखे छी, जे पशुए जकाँ कखनो मनुखाहो बनि जाइए आ कखनो मरखाह सेहो बनियेँ जाइए। देखते छी जे गजेरी तड़िपीबाकेँ निन्दा करैए आ तड़िपीबा गजेरीकेँ। एकटा एकटाकेँ फोकटिया-नशेरी बुझैए तँ एकटा एकटाकेँ इज्जतखोर कहिते अछि। मुदा तेसर तँ दुनूकेँ नशाखोरे ने बुझत।

दस डेग सिंहेसरो काका आगू बढ़ला आ दस डेग खुशीलालो दुनू गोरे आगू बढ़ल। दुइये गोरे रहने अपन अनुकूल समय पेब बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, समाजक लोक जनै छैथ जे कोनो साल एहेन नइ होइए जइ साल दस-बीस जोड़ाक बिआह नइ करबै छी। ओना, कियो-कियो घटको आ कियो-कियो दलालो कहिते अछि, मुदा तेकर जँ लाज-संकोच करब तखन लोकक उपकार हएत।"

दस-बीस जोड़ाक बिआहक बात सुनि खुशीलालक मन जरि-जरि कऽ खखसियाह हुअ लगल। खखसियाह होइक कारण खुशीलालक मनमे उठि गेलै जे हमहूँ तँ अही समाजक बेटा छेलौं। किए लोक दुसि कऽ हटैक गेल, जइसँ बिआहे ने भेल। मुदा पैछला जिनगीकेँ अतीत बुझि खुशीलाल मनेमे रखि बाजल-

"बचनू भाय, स्टेशनपर एक गोरे गाम जाइसँ मनाही केलैन, से किए?"

खुशीलालक बात सुनि बचनू भाय ठमकला। ठमकैक कारण जे भेल होनि मुदा ठमकल रहला नहि। पुछलखिन-

"अपने गौआँ छला?"

खुशीलाल-

"हँ।"

बचनू भाय-

"के छला?"

खुशीलाल-

"रघुवीर भाय।"

बचनू भायकेँ जेना किछु मन पड़लैन तहिना अकचकाइत बजला-

"एहेन ने कोनो बात अछि आ ने घटना। भने दुनू भाँइ छीहे रस्ते-रस्ते चलबो करब आ गपो-सप्प करब।"

बचनू भाइक बात सुनि खुशीलालक मन थीर भेल। बाजल-

"रघुवीर भायकेँ देखलयैन जे एकदम हकासल-पियासल छैथ। जेना मन उड़ल होनि तहिना बुझि पड़ल। गाड़ी पकैड़ केतौ भागल-पड़ाएल जाइ छला।"

खुशीलालक बातकेँ मटियबैत बचनू भाय बजला-

"सभ रंगक लोक ने समाजमे अछि, कियो किछु उनटा-सीधा कहि देने हेतैन जइसँ डर पैस गेल हेतैन, तँए केतौ पड़ाएल जाइत हेता।"

ओना, खुशीलालक नव-निरमित चरित्र बचनू भाय आँकि नेने छला। मुदा ओकरा उपयोग केना कएल जाए, ई मनमे घुरियाइत रहैन। तइ बिच्चेमे खुशीलाल बाजल-

"अखनो एहेन लोक समाजमे छथिये!"

खुशीलालक बात सुनि बचनू भाय बजला-

"जखन मेघे फाटल अछि तखन दरजी केते सीअत। खाएर जेतऽ जे अछि से रहह। अखन अपना सभ दुइये गोरे छी, तँए दुनू गोरे एकठाम रहि एक-विचारसँ केना चलब, से विचार करह।"

बचनू भाइक बात खुशीलालकेँ नीक बुझि पड़लै, बाजल-

"भाय, तीन साल कलकत्तामे रहि बहुत किछु दुनियाँक हवो-

बिहाड़ि देखलौं-सुनलौं आ किछु-किछु सीखबो केलौं। आब अहीं सबहक संग गाममे रहब, रहए दी वा भगा दी।"

'गाममे रहब' सुनि बचनू भाय बजला-

"तोरे सन-सन नवकवरिया लोकक खगता गामोमे छइ। कहुना भेलह ते पुरना मैट्रिक पास भेलह किने। नवका सभ ने घूस-घास दऽ कऽ पास कऽ लइए आ नोकरी पाछू बौआइत रहैए। खाएर जे करैए से अपना-ले करैए। मुदा ई जे कहलह जे गाममे रहए दी वा भगा दी, से एहनो केतौ भेल अछि।"

ओना बजैक क्रममे बचनू भाय बाजि गेला मुदा भीतरे-भीतर मन कहए लगलैन जे एहेन तँ आइये नहि सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। बेकती आ परिवारक कोन गप जे गामक गामकेँ लोक भगेबो केलक आ बसेबो केलक अछि। जँ से नइ अछि तँ घराड़ीकेँ करमुक्त किए कएल गेल। मुदा आब देश स्वतंत्र अछि। हम सभ स्वतंत्र देशक नागरिक छी...।

'स्वतंत्र देशक नागरीक छी' मनमे ऐबते बचनूक विचार उनैट गेलैन। मनमे उठलैन- ओना, कहैटा ले स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरीक छी मुदा वास्तवमे छी नहि। आँखिक सोझमे अपनो छी आ समाजो अछिए।

ओना, बचनू भाइक विचार सुनि नवनिरमित खुशीलालक मनमे एते तँ उठबे कएल जे आइ धरिक जे इतिहास रहल ओ यएह ने रहल अछि जे एक-देश दोसर देशकेँ गुलाम बना ओकर धन-सम्पैत, इज्जत-आबरू लूटैत रहल। से कोनो एक्केटा देश दोसरकेँ केलक तेतबे नइ अछि। एकसँ अधिक देश एकठाम मिलि दोसर देशकेँ हड़ैप अपनामे सभ बनदरो-बाँट नइ केने अछि, एकरा नकारल थोड़े जाएत। ओना कहैले ई इतिहासक पन्ना भेल मुदा तँए कि अखन नइ भऽ रहल अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। मशीनीकरण भेने जहिना उत्पादन शक्ति सभकेँ बढ़ल, माने जइ देशक जेहेन तेज मशीन तेकर तेहेन शक्ति बढ़ल। से कोनो कि

एक्केटा क्षेत्रमे कार्यान्वित भेल, सेहो बात नहि। पछुआएल देशक जहिना सभ किछु पछुआएल चलै छै, तहिना ने ओकर सैन्यवल सेहो पछुआएल अछि जइसँ ओ देश आइक दौड़मे कमजोर अछिए, जेकरा शक्तिशाली सैन्यवलबला देश अपन सैन्यशक्तिसँ गुलाम बना ओकर सभ किछु लुटिये रहल अछि। वौद्धिक क्षेत्रमे दुनियाँ आगू बढ़ल अछि मुदा तँए ओकर वास्तविकता मेटा गेलै सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो मनुख-मनुखमे ओ दूरी ओहिना बनल आबि रहल अछि जेहेन अदौसँ रहल। जइसँ समाज कहियौ कि देश आकि दुनियाँक मनुखक बीच, दूरी बनले अछि। एक-दोसराक श्रमकेँ लूटि अपन उपयोग काइये रहल अछि। तँए जहिना लूटैबला प्राणपनसँ लूटै पाछू बेहाल अछि तहिना लूटेनिहारोकेँ अपन श्रमक रक्षा लेल प्राणपन रौपए पड़त। जखन आइये नहि, सभ दिनसँ गामक सबहक पूर्वज समाज बनि एक निश्चित भूभागपर गाम बना गौआँ-समाज बनि जिनगी गूदस करैत आबि रहला अछि तखन सभ ने बुझता जे गाम-समाजसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक समाज, सभ मनुखेक समाज छी। जखन मनुख वुधि-विवेकी पुरुष भेला तखन तँ अपनो वुधि-विवेकक उपयोग करता किने। बचनू भाइक विचार सुनि खुशीलालकेँ मनक सोनिहारीमे एकटा सोन्हि भेटल। ओही सोन्हिमे अपन ऐगला जिनगीकेँ सेहो देखलक।

खुशीलाल बाजल-

"भाय, आब तँ गाम आबिये गेलौं। लोक-लोकक बीच भजारीपन तँ लोकपने मे ने होइ छइ।"

'लोकपन' सुनि बचनू भाय खुशीलालक मनकेँ नीकसँ टोबए लगला। ओना, खुशीलालक चालि-ढालि आ बात-विचार गमैया लोकक अपेक्षा सकताएल बुझि पड़लैन मुदा अपन मातृभूमिक जिनगी आ आनक भूमिक जिनगीमे सक्कतपनमे कनी अन्तर होइते अछि। मुदा भूमियोसँ इतर ने भूमिपति भेला जे पानियोंसँ पवित्र कोमल किसलयसँ लऽ कऽ पहाड़क पाथरे जकाँ निरमित छथिए। तँए भूतकेँ सूत बुझि अपन

जिनगीकेँ बीर्तमान बुझि वर्तमान बना आगू चलता। दुनियाँ बदलने–माने आगू बढ़ने–सभ किछु ने अपन रूप सेहो बदलबे करैए जइसँ आरो बेसी नीक होइत आगू बढ़ैए। ओना जइ काजमे बचनू भाय हाथ लगौने छैथ ओ काजो नमहर अछि। नमहर काज-ले बेसी लोकक खगता होइते छै, माने भारी काज-ले भारी शक्तिक जरूरत पड़िते छइ। जे बचनूओ भाय बुझिते छैथ। दोसर, ईहो जे जखन सभ अपने-अपने कमाइसँ जीवन धारण केने चलै छैथ तखन केकरो, केकरो संग अनोने-विसनोन किए हएत..?

बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, केकरो प्रतिभाकेँ कियो भावमे नहियेँ लेता तँ की ओ प्रतिभा पानिमे सड़ि थोड़े जाएत! तखन तँ ई जरूरी अछिए जे प्रतिभावान बनैले प्रतिभाशील पहिने बनए पड़ै छइ।"

बचनू भाय अपना विचारे की बजला से बचनू, भाय जानैथ मुदा खुशीलालक बिसवास बचनू भाइक प्रति जरूर जगलै। बाजल-

"भाय साहैब, तीन सालसँ कोलकातामे देखैत एलिऐ हेन जे सौ-सैंकड़ा आकि लाख-करोड़केँ के कहए जे अरब-खरबक कारोवार ओतए मुँह-जुआनीए होइए आ गाम-घरमे देखै छी जे सहोदरो भैयारीमे खरब-अरबक कोन बात जे दुइयो-चारि रूपैआ-ले एक-दोसरकेँ कहैए जे तूँ बेइमान तँ तूँ बेइमान!"

खुशीलालक बात सुनि बचनू भाइक मनमे थोड़ेक कचोट जरूर भेलैन मुदा विचारमे सच्चाइ देख बाजल-

"हँ से तँ अछिए, मुदा तइमे जेते दोख लोहाक अछि ओते लोहारोक अछिए। ओना, गामो तँ गामे छी, केमहर मुँह छै आ केमहर नाँगैर से जाबे गौआँ नइ बुझता ताबे तक एना हेबे करत किने।"

बचनू भाइक विचार सुनि खुशीलालकेँ जेना किछु भेट गेल होइ तहिना मुस्कियाइत बाजल-

"मुदा..!"

तैपर बचनू भाय बजला-

"जाबे, अपन बाबा-दादाक गीतक संग अनको बाप-दादक गीतकेँ बरबैर बुझि एक-दोसर नइ गौत, ताबे तक एहेन विचार पनपैक सम्भाना बनले रहत।"

बचनू भाइक विचारमे निष्पक्षताक रंग देख खुशीलालोक मनमे निष्पक्षताक रंग-रूप बनए लगल, तैबीच दुनू गोरे गामक सीमानपर पहुँच गेल छल। खुशीलाल बाजल-

"भाय, छोड़ू दुनियाँदारीक गप। अपने मुइने दुनियाँ मरबो करैए आ अपने जीने दुनियाँ जीबो करैए।"

ओना, खुशीलालक आरो बात बजैले पेटमे बाँकीए छल कि बिच्चेमे बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, तेतबे नइ ने अछि। जहिना तूँ कहलह अपने मुइने-जीने दुनियाँ मरै-जीबैए तहिना ईहो अछि जे अपने बनौने दुनियाँ बनितो अछि आ अपने उजाड़ने दुनियाँ उजड़ितो अछि!"

कविताक भावे आकि तुकबन्दिये देख खुशीलालकेँ कैफी आजमीक गीत मन पड़ल। जहिना सिनेमा देखैकाल मन खुशी भेल रहै तहिना बिहुसि गेलइ। मनकेँ बिहुसिते मुँह तेना फुटलै जे हँसिते बाजल-

"भाय साहैब, अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ै छी, तइसँ नीक जे अपन केलहा समाजोक लोककेँ देखा दिऐ। लोक मोजर दिअए वा नइ दिअए। आकि आँखिसँ देखला पछातियो कहए जे हम नइ देखलौं, आकि कियो कानसँ सुनियों कहए जे हम नइ सुनलौं, मुदा तइले तँ अपनो आँखि-कान अछि किने।"

खुशीलालक विचारमे बचनू भायकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा बुझि पड़लैन जे समुद्रमे पार होइत संगी जकाँ एकटा संगी हमरो गाममे भेटल। संगीक संगपना मनमे ऐबते बचनू भाइक मनक उत्साहमे

जेना सहस्त्र कमल, हजार पंखुरिबला कमल फुला गेल होनि।

बजला-

"खुशीलाल, गाम अबैसँ जे मनाही केलखुन ओहो अपना जनैत नीके कहलखुन, मुदा हमहूँ कहै छिअह जे दुनू भाँइ रस्ते-रस्ते ईहो विचारि लएह जे जहिना रस्ताक सिर चढ़ि विचार करै छी तहिना भैयारी जकाँ भयपन सेहो निमाहब।"

बचनू भाइक आगूक बात पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे खुशीलालक पेटक बात कुदि पड़ल-

"भाय, समय छल जे गाम छोड़ि पड़ाए पड़ल मुदा दुनियोँ तँ सीखैक छी, ओही दुनियाँमे सीखि गाममे रहैक लूरि सीखलौं।"

खुशीलालक ऐगला बात पेटेमे छल कि बिच्चेमे बचनू भाइक पेटक बात कुदि पड़ल-

"खुशीलाल, जखने एक-दोसर एक-दोसरमे सटल कि तखनेसँ समाजक निरमान हुअ लगल। मनुख समाज बना रहैबला समाजिक प्राणी छी, बिनु समाजे मनुखक जिनगी, जिनगी नहि रहि जाइए, वनमानुख जिनगी भऽ जाइए। मुदा से नहि, हम सभ एकैसमी सदीक ने लोक भेलिऐ। आइक जुगमे देखै छी जे एक-एक आदमीक बुधि ओते सक्कत भऽ गेल अछि जे दुनियाँकेँ ताल-मात्रा सिखबैए! आ अपना सभ एतबो ने भेलौं हेन जे अपन परिवार आ कि समाजकेँ नीक रस्तापर आनि नीक रस्ते चलैक पाठ पढ़ाएब।"

बचनू भाइक विचारसँ खुशीलालक मन जेना भरि गेल तहिना बाजल-

"भाय, राति-बिरातिक कोनो शंका नइ ने?"

बचनूकेँ मनमे उठलैन- एक तँ समाजक भितुरका मुद्दा, दोसर नव लोक खुशीलाल अछि। जँ सभ बात कहि दिऐ आ ओहो अपन कुशल-छेमक संग हमरो बात बिलैह दिअए तखन तँ रनमे भन भाइये जाएत।

तइसँ नीक जे पहिने ऐगला टालि जगा दिऐ...। बजला-

"बौआ खुशी, राति-बिरातिक कोनो शंका नहि। आरो गप काल्हि निचेनमे करब, अखन एतबे बुझह जे तूँ परदेशिया भेलह, तँए जखन पुलिसक गाड़ी औत तखन चुपचाप अपन गर पकैड़ सुति रहिहह।"

◌

शब्द संख्या : 2878, 18 सितम्बर 2017

3.

घरपर ऐबते खुशीलालकेँ देख माता-पिता ओहिना चहा उठला जेना चाहा अपन जेरमे चहचहाइत रहैए।

कान्हमे बैग आ हाथमे झोरा नेने खुशीलाल दुनू गोरेकेँ मुहेँसँ पहिने प्रणाम केलक। झोरा-बैग रखि, बैगक मुँह खोलि साल भरिक कपड़ाक संग एक-एक साए रूपैआ माता-पिताक आगूमे राखि पएर छुबि दुनू गोरेकेँ गोड़ लगलक।

खुशीलालक रंग-रूप देख दुनू परानी–रजनी आ सोमन–मने-मन तिरपित होइत रहला। दुनू गोरेक मनमे संतोष जगलैन जे हम सभ जँ मरियो जाएब तैयो बेटा मनुख बनि दुनियाँमे ठाढ़ रहबे करत..!

विह्वल माए, बेटाकेँ देख ईहो ने कहि सकली जे 'बौआ रस्ता-पेराक थाकल-ठेहियाएल हेबह, पहिने एक दाना अन आ एक घोंट पानि पीब लएह।' हेरा गेली माए पति आ बेटाक बोनमे, बिसैर गेली अपन दुनियाँ-जहान...।

मुदा पिता जे परिवारक रक्षक होइ छैथ, ओ केना पत्नी-पुत्रक बोनमे भटैक जइतैथ? आखिर किछु भेला तँ पुरुख-पात्र भेला किने।

पत्नीकेँ डपटैत सोमन बजला-

"छोड़ू अखन आहे-माहे!"

बेटाकेँ कहलखिन-

"बौआ, पहिने नहा लएह।"

बौआ कहि पत्नी दिस ताकि सोमन फेर बजला-

"अहूँ उठू, जाउ किछु पहिने खाइ-पीबैक ओरियान करू। की बुझि पड़ैए जे बेटाकेँ कियो झपैट कऽ लऽ पड़ा जाएत।"

खुशीसँ दहलाएल मन माइयक रहबे करैन, बजली-

"किछु छी तँ बेटा धन छी किने! जहिना पानिमे पाथर नइ सड़ैए तहिना बेटाक रहने कुल-खनदान सेहो नइ ने सड़त।"

पत्नीक अह्लादित विचार सुनि सोमन बजला-

"बर बेस।"

ओना नवनिरमित खुशीलाल बुझि गेल जे पिता अपन कर्तव्यक पालन कऽ रहला अछि आ माए अपन। बैगमे सँ लूँगी निकालि पहिरैत खुशीलाल बाजल-

"माए बैगमे बिस्कुट सेहो छौ आ राजस्थानी रसगुल्लाक डिब्बा सेहो।"

अपन काजक भार उतरैत देख रजनी बजली-

"बौआ, तोरा पोसै-पालैमे बड़ दुख भेल।"

माइयक बात सुनि खुशीलाल बुझि गेल जे पवित्र धारमे माए भँसिया रहली अछि, तँए मातृऋणसँ अखने पार करैक अवसर अछि। अवसर चुकने लोक जिनगीक घाट चुइक जाइए, तँए अवसरक लाभ किए ने सोझेमे उठा ली। बाजल-

"माए, सएह रीन तूँ अपन असुलए चाहै छेँ..!"

ऋणदाता जहिना ऋण खेनिहारकेँ हँसैत ऋणमुक्त करैत तहिना परिवारिक धारमे भँसियाइत रजनी बजली-

"बौआ, तूँ की हमर रीनखौका छह आ हम की रीन दाता छी,

अपन कोखिक लाज निमाहलौं। मुदा आइ तोरा देख ई भरोस जागि रहल अछि जे अही धरतीपर हमरो लाल अछि।"

ओना, रजनी ई बिसैर गेली जे यएह बेटा छी जेकरा पेट काटि पढ़ेलौं। मुदा पढ़ला पछातियो बेटीबला कियो ने अपन बेटी परिवारमे गरीबीक चलैत दइले तैयार भेल..!

तैबीच खुशीलाल बाजल-

"माए, समैक गतिये लोकक गति सेहो होइते छै, तँए जइ दिनक जे गति छल से भेल। मुदा ओ भेल बीतल जिनगीक गति। आब सभ संगे एकठाम भेल रहब से लूरि कलकत्तासँ नेने एलौं हेन।"

ओना बेटाक बात माए नइ बुझली, मुदा पिता बुझि गेला। जइसँ मन खुशी भेलैन। तहीकाल पड़ोसी परिवारक राम सुनरि, जे खुशीलालकेँ भौजाइ सम्बन्धमे छैथ, कोरामे बच्चा नेने पहुँचली। राम सुनरिक कोरामे बच्चाकेँ देख रजनी भार स्वरूप शब्दमे पति दिस तकैत बजली-

"अपन खुशीलाल आ मुनिलाल एक्के संगतुरिया छी, छबे मासक जेठाइ-छोटाइ छइ।"

परिवारक बीच घुरियाइत माता-पिताकेँ देख खुशीलाल बिच्चेमे राम सुनरिकेँ कहलक-

"आउ भौजी बैसू। तीन सालक पछाइत गाम एलौं हेन।"

कहि बैगसँ बिस्कुटक एकटा डिब्बा निकालि बच्चाक हाथमे खुशीलाल देलक। डिब्बाक ऊपर छपल फोटो राम सुनरि बच्चाकेँ देखबए लगली। ओना, आन-आन बिस्कुटक–माने गमैया बिस्कुटक– डिब्बाकेँ देखते बच्चा परेख लइ छल मुदा नव डिजाइनिक डिब्बा देख भोतिया गेल। माने डिब्बाक आकार-प्रकार आ रंग-रूप देख, नहि परेख सकल। बिस्कुटक सम्भावना मनमे जगबे ने केलै जे हलैस कऽ डिब्बा पकैड़ लइत। ओना, राम सुनरिक मनमे सेहो यएह रहै जे डिब्बाकेँ आँगनमे खोलब। मुदा मनमे ईहो उठलै जे जँ बिस्कुट खोलि बच्चाक हाथमे नइ

दऽ देबै तँ कनियाँ काल बैस कऽ गप-सप्प ऐ दुआरे नइ करए देत जे अनठिया बुझि एतए-सँ पड़ाए चाहत।

तैबीच खुशीलाल रसगुल्लाक डिब्बा खोलि, माइयक आगूमे रखि, राम सुनरि भौजीक हाथमे चारि-पाँचटा रसगुल्ला निकालि कऽ देलक। पहिने तँ रसगुल्ला सुटकल छेलै तँए राम सुनरिक हाथमे अँटि गेल मुदा जखन ओ फलकल कि हाथमे बेकाबू हुअ लगलैन। राम सुनरि रच्छ रखली जे एकटा रसगुल्ला बेटाक हाथमे धरा देलखिन। ओना, भरि मुट्ठी-के बच्चा पकैड़ तँ लेलक मुदा सुटलकसँ फलकैत रूप देख बच्चो धकमकाए लगल।

हाथ-पएर धोइले खुशीलाल कलपर विदा भेल। ओना राम सुनरिक मन रसगुल्ला देख चटपटाइत रहैन, मुदा सोमनक आगू केना खइतैथ। मनमे होनि जे जँ सोमन काका सोझासँ हटि जाथि तँ रजनी काकीकेँ बेटिये बनि फुसला लेबैन। ओना, भेल सएह। रजनी काकी चारि-पाँचटा रसगुल्ला निकालि पतिकेँ हाथमे दैत बजली-

"कलकत्ताक रसगुल्ला छी। कनी सुआदि-सुआदि देखबै जे अपना सभ नीक मिठाइ बुझै छिऐ आकि कलकतिया सभ बुझैए, परेख कऽ कनी हमरो कहब। भलेँ तरूआ-तरकारीमे अपना सभसँ बंगाली पछैड़ जाए, मुदा मिठाइमे पटका-पटकी करबे करत। ओहुना देखै छी जे बंगाली वन्धुगण अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति केते सिनेहिल छैथ जे अपन परिवारक संग अपन समाजक बीच ओहन जीवन्त रूप बना रखने छैथ जइसँ पूर्ण जीवन्तताक दर्शन करैत रहै छैथ। मुदा अपना सभ छी, जे दुनूसँ कतियाएल छी। जहिना मातृभूमिसँ कतियाएल छी तहिना मातृभाषासँ सेहो कतियाएल छी। अपना ऐठामक लोकक संस्कारमे ओहन कीड़ा फड़ि गेल अछि जे अपन परिवारो आ समाजोक बीच अपन भाषाकेँ तिलांजलि दइत आन-आन भाषाक प्रयोगमे अपनाकेँ गौरवान्वित बुझै छैथ।"

ओना, रजनी हाथमे रसगुल्ला धरा पतिकेँ बहटारि देने छेली मुदा

तैयो राम सुनरिकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, हमर-तोहर घर कि बाँटल अछि जे लजेबह। हमहूँ दूटा लइ छी आ तोहू खा। खुशिया कियो आन थोड़े अछि, हमर बेटे छी आ तोहर दिअरे भेलह।"

दूटा रसगुल्ला जाबे राम सुनरि खेली ताबे बेटा सेहो अपन हाथक खा चुकल छल। बिहुसैत राम सुनरि अपन हाथमे बँचल दूटा रसगुल्लामे सँ एकटा बेटाक हाथमे दैत दोसरकेँ टोबि-टोबि परेखए लगली जे गाइयक दूधक बनल रसगुल्ला छी कि महींसिक दूधक आकि कोनो आन दुधारू पशुक आकि लोहाबला महींसक..!

राम सुनरिकेँ रसगुल्ला टोबैत देख रजनी काकी बजली-

"कनियाँ, कोनो कि गाछक फल छी जे बीचमे आँठी हएत, किछु छी तँ पशु वृक्षक फल छी किने।"

राम सुनरिक मनमे रजनी काकीकेँ पछाड़ैले जेना कोनो अस्त्र भेट गेल होनि तहिना मुस्कियेली। ओना रजनी काकीक मनमे भेलैन जे कनियाँकेँ हमर बात बेसी नीक लगलैन तँए मुस्किया रहली अछि..! मुदा तैबीच, अपन अस्त्रकेँ शस्त्रमे परिणत करैत राम सुनरि बजली-

"काकी, गाछक फलमे ने भगवान आँठी दऽ पठबै छथिन, मुदा पशुवृक्षमे तँ मनुखे ने आँठी बना सजबैए।"

राम सुनरिक बात जेना रजनी काकी हृदयसँ बुझि गेली तहिना खुशी होइत बजली-

"हँ हइ कनियाँ, सरिपहुँ बजलह! रवि भाइक सराधक भोजमे जे रसगुल्लो आ लालमोहनो खेलौं तइमे तेहेन-तेहेन जुआएल आँठी बीचमे रहै जे निकालि-निकालि फेकए पड़ल।"

तैबीच बच्चो आ राम सुनरि सेहो अपना हाथक रसगुल्ला खा चुकल छेली। नौतहारी पंचकेँ जहिना खेवाकाल पुछि-पुछि खुऔल जाइ छै तहिना रजनी काकी पुछलखिन-

"कनियाँ दूटा आरो लेब?"

रसगुल्लाक सुआद पेब आकि अपन कर्तव्यक बोधे राम सुनरिक मन मानि गेल छेलैन जे ई उचित नइ हएत। कलकत्ताक सनेस गाम-परिवार-ले आएल अछि, नौतहारी जकाँ जँ हमहीं डिब्बो भरि सठा देबै तखन दोसराइतकेँ की पइठ हेतैन..! परिपूर्ण मने राम सुनरि बजली-

"ऐँह, काकी ईहो अन्दाजलखिन नहि जे केते-केते अछि। कोनो की राक्षस छी जे अछोए ने हएत।"

'अछोए ने हएत' खुशीलाल सेहो सुनलक। एक तँ चौबीस घन्टा गाड़ीक सफर केला पछाइत पतालक पवित्र पानिसँ खुशीलालक सौंसे देह निरौल, तैपर नव लोकक मुहेँ हेराएल नव शब्द सुनि मन भरि गेलइ। ओना खुशीलाल आ मुनिलाल दुनू बच्चेक स्कूलसँ संगे-संगे पढ़ैत रहल। किछु मन्द बुधि रहने मुनिलालक छह मासक दूरी मेटा संगतुरिया बना देलक आ खुशीलालक तीव्र बुधि मुनिलालक संगे एक कतारमे ठाढ़ कऽ देलक। तेतबे नहि, एक तँ पड़ोसी, दोसर एक उमेरिया सेहो भेबे कएल किएक तँ साल लगला पछाइत ने सालक जेठाइ-छोटाइ होइए मुदा सालक बीच तँ महिना होइए। महिनो तँ महिने छी। जेहने महिना तेहने तहिना। बात बरबैर अछिए। उम्रक दूरीकेँ संगपन मेटा नव सम्बन्धक रूपमे पनपल जे खुशीलालकेँ मुनिलाल अपनासँ ऊपरक मने देखए लगल।

खुशीलालसँ मुनिलालक परिवार आर्थिक रूपे अगुआएल। तँए मैट्रिक पास करैसँ पहिनहि केते लौकिया लगल छल। मुदा मुनिलालक माता-पिताक विचार रहैन जे मैट्रिक पास केला पछाइत बेटाक बिआह करब। मैट्रिक पास केलापर बिआह करब तँ एकटा सीमापर पहुँचने एकटा निर्धारित दरपर पहुँच जाएब, जइसँ अपनो जान हल्लुक हएत। लेत अपन घर-अँगना बेटा-पुतोहु, अनेरे कोन माया-जालमे पड़ल रहब। भाय जखन बुझले बात अछि जे अपना ऐठाम लाख रूपैआसँ निच्चाँक बिआह आब बहुत कम परिवारमे रहि गेल अछि। आब तँ करोड़ तकक

खेल चलि रहल अछि। ओइ पूजीसँ माता-पिताकेँ किए मतलब रहतैन ओ तँ बेटा-पुतोहुक भेल। दुनू परानी अपना हाथमे ओइ पूजीकेँ राखह आ परिवार बना आगू बढ़ह...।

मैट्रिक पास केला पछाइत लगले मुनिलालक बिआह एकटा परदेशिया–माने बंगलोरमे नोकरी करैबला–परिवारमे भऽ गेल। माने राम सुनरिक संग। राम सुनरि बंगलोर कोचिंगसँ मैट्रिक पास केने। बिआह भेला पछाइत सासुर एला साते दिनमे राम सुनरि पुन: सासुरसँ नैहर–माने बंगलोर–पहुँच गेली। जे आठ मासक पछाइत दोहरा कऽ दशमीक यात्रा दिन सासुर पहुँचली। तइसँ तीन मास पहिने खुशीलाल गाम छोड़ि कलकत्ता गेल छल। तँए मुहाँ-मुहीं एको दिन दुनू गोरेक बीच गप-सप्प नइ भेल छेलइ। तैपर ईहो विचार खुशीलालक मनकेँ दबनहि छेलै जे मुनिलाल सभ दिन ऊपरक नजरिये देखैए, जइसँ हम एकतुरिया रहितो ओकरा छोट भाइयक नजरिये देखै छिऐ आ ओ पैघक नजरिये हमरा देखैए। मुदा लगले मनमे तीन सालक देखल-सुनल कलकत्ताक विचार नाचि उठलै- 'जेहेन जेकर भावना रहत ओ ओही रूपक ने जिनगी बना चलत..।' तुलसी बाबा कहने छैथ- 'जाकी रहे भावना जैसी..।' ओना एहेन वायुमण्डलक हवा छेलैहे जे माए-बापक संग सर-समाज आ राम सुनरि सेहो अपनाकेँ भौजी मानि खुशीलालकेँ दिअर बुझि रहल छेली।..माए आ भौजीक बीच तीन कोनियाँ बना खुशीलाल बैसल। मिठाएल मन रहने मिठाएल गप होइते छइ। राम सुनरि चालली-

"काकी, खुशीलाल बौआ तँ फुटि कऽ जुआन भऽ गेलैन! किए दुनू परानी अनठौने छथिन?"

बरदक नाथ जकाँ राम सुनरि भौजी खुशीलालक नाथ अन्नागाँहिसे पकैड़ लेली। ओना खुशीलालोक मन तन-तना गेल छेलै जे भौजाइक विचारक की जवाब हएत। मुदा अपन भोगल जिनगी खुशीलालक मनकेँ ठमकौने रहल जे जइ गाममे बिआह नइ भेल, ओइ समाजक...। मुदा तैसंग विचारमे ईहो दाब पड़लै जे जइ कारणे बिआह समाजमे नइ भेल,

तइ समाजक तँ भौजी छैथ नहि, तँए रक्का-टोकी करब नीक नहि।

मुदा तैबीच रजनी काकी अपन उत्तर माने राम सुनरिक प्रश्नक, मने-मन सम्हारि नेने छेली। बजली-

"कनियाँ, तीन सालपर बौआ कलकत्तासँ गाम आएल, ताबे तोरा एकटा बौओ भेलह। आब गाम आएल हेन, नइ ऐ सालक लगनमे तँ ओइ सालक लगनमे बिआह कइये देबै किने।"

खुशीलाल राम सुनरिकेँ पुछलक-

"केते दिनक बौआ अछि, भौजी?"

राम सुनरि भौजीकेँ जेना सुतरलैन तहिना बजली-

"केते दिनक किए कहै छिऐ, जखने साल लागल कि दिनकेँ महिना खा जाइ छइ किने।"

भौजीक बात सुनि खुशीलाल हँसल। बुझि पड़लै जे अपन साल गीरह भरिसक भौजी पुरा रहली अछि। बाजल-

"ई कोनो नव गप कहलौं, ई तँ सभ दिनसँ होइते आएल जे दिन रातिकेँ खाइए आ राति दिनकेँ।"

तैबीच राम सुनरियो अपन साल-महिना जोड़ि नेने छेली। बजली-

"दू बर्ख डेढ़ मास भेलै हेन।"

खुशीलाल-

"बड़-बढ़ियाँ बच्चा पोसने छी!"

बच्चाकेँ बड़-बढ़ियाँ पोसब सुनि राम सुनरिकेँ अपन कएल कृत्तिसँ द्रवित मन पसीज गेलैन। बजली-

"बौआ! अहाँसँ लाथ की, अहाँ-भैयाकेँ ओते कमाइ नइ छैन जे संगे दिल्लीमे रहितौं। तखन तँ गाममे छी, जे एतए सभ रंगक लोकक अँटाबेस भइये जाइए।"

राम सुनरिक बात सुनि खुशीलालक मनमे एक संग दुनू संकल्प आ

विकल्प उठल। मुदा मन ठमैक गेलइ। ठमकैक अनेको कारणमे मुख्य छल जगह-जगहक माटि-पानिक गुण-धर्म। माने बंगलोर शहरमे पलल-बढ़ल राम सुनरिक जीवन, जे गामक जिनगीक पूर्व अवस्था छल। जखन कि खुशीलालक गामक जिनगीक पछाइत तीन बर्ख बंगालक कोलकाताक माटि-पानिमे पलल-बढ़ल छल।

कोलकाता आ बंगलोर दुनू महानगर देशमे अछि। ओना, आरो अछि, मुदा तुलनात्मक दृष्टिसँ दुनू महानगरक माटि-पानिक सुगन्धमे बहुत अन्तर अछि। माटि-पानिक गुण-धर्मे तँ ई होइत अछि जे ओकर भाषा, साहित्य मनुखक जिनगी आ जिनगी जीबैक ढाँचाकेँ बदैल दइत अछि। ढाँचा बदलने श्रम-अश्रमक बीच समाज बँटैए, जइसँ ओकर जीबैक साधनमे टूट-फूट अबैए। ऐठाम देखए पड़त जे कोन माटि-पानिक जिनगी केहेन बनैए। ओना जहिना नव कान्हीक लोक राम सुनरि भौजी तहिना कन्हछुट्टू खुशीलाल, तँए ढाही मारैक ताउ दुनूक मनमे रहबे करइ। बैगसँ दूटा बिस्कुटक डिब्बा निकालि दुनू सुआदक बिस्कुटक डिब्बाकेँ फारि दुनू बिस्कुटकेँ गमछापर मिला पसारैत खुशीलाल बाजल-

"संगे-संग खाउ भौजी, बौओकेँ ढेरियेमे भिड़ा दियौ जे देखबै कोन बिस्कुट बीचमेसँ उठबैए।"

जइ मने खुशीलाल बाजल हुअए मुदा राम सुनरि भौजीक मन अपन जिनगीमे डुमल छेलैन। केतए बंगलोर शहरमे जनमल-पलल-बढ़ल राम सुनरि बेटी सुदुर गाम आबि गेली, मुदा एते अपन मातृत्वक आशा तँ जगले छेलैन जे काल्हि दिन जखन बेटा कमाइबला भऽ जाएत तखन ओहूसँ–माने बंगलोरक जिनगीसँ–नीक जिनगी भेटबे करत। तैसंग अपन जिनगीक विकल्प दिस सेहो नजैर दौगा रहल छेली। मुदा अपन हेराएल जिनगीमे ओकरा ताकब ओतेक असान थोड़े अछि। तहूमे पछुआएल सुदूर गाममे। एक तँ गमैआ काजसँ अनाड़ी, दोसर, दोसर जिनगीमे अपनाकेँ बढ़ाएब, जहिना ओते असान नहि अछि तहिना ओते भारियो तँ नहियेँ अछि जे सोलहन्नी असम्भव होइ। अपन जिनगी जीतैले जहिना

राम सुनरिक मन भीतरे-भीतर कछमछाइत रहैन तहिना खुशीलालोक मन कछमछाइते छल तँए दुनू पहलवान अपन-अपन जिनगीक पहल दिस मुड़ल। खुशीलाल बाजल-

"भौजी, हमरा अपन पैत्रिक सम्पैत नहियेंक बरबैर अछि मुदा मुनी भायकेँ तँ किछु अपन छैन्हे। जखन हम जीबैक संकल्प लऽ गाम एलौं हेन तखन...।"

ओना अखन धरिक जिनगी राम सुनरि भौजीक वएह रहलैन जे, आन-आन ओहन परिवारमे अछि जे मरदा-मरदी परदेश खटै छैथ आ बाल-बच्चाक संग पत्नी आ वृद्ध माता-पिता गाममे रहै छैन। दिल्ली वा आने ठामसँ मासे-मास रूपैआ आएल ओकरा कीन-बेसाहि जिनगी चलबैत रहलौं, मुदा राम सुनरिक मनमे ईहो खुशी तँ रहबे करैन जे खुशीलाल बौआ अपने बौआ जकाँ बौओकेँ–माने बच्चोकेँ–आ अपनो कलकत्ताक पहिल सनेस तँ खुऔलैन। बजली-

"बौआ, गरीब लोकक जीवन आ किदैनिक तीमनकेँ कोनो मोल अछि!"

ओना राम सुनरि भौजी हँसैत बाजल छेली मुदा खुशीलालक मनकेँ असाध वानसँ बेधलक। बेधलक ई जे भाय गरीबो लोककेँ तँ जिनगीक कोनो-ने-कोनो सीमा छै, ओइ सीमापर ठाढ़ भऽ ने अपन जिनगी दिस ताकब जे केतए ठौरपर छी आ केतए हेराएल छी...। खुशीलाल बाजल-

"भौजी, अहाँ गरीब छी आ हम कोन सात हथिसारबला छी। तखन तँ भेल जे दुनू गोरे गाड़ा-जोड़ी करैत काल्हि दिन-ले झखू। जखने झखब तखने ने गाछक डारियो आ सीलो सभकेँ झखा-झखा आनब।"

ओना रौतुका भानसक बेर भेने राम सुनरि भौजीक मन सेहो छनछना लगलैन, दोसर ईहो भेलैन जे जाबे खुशीलाल बौआ गाममे रहता ताबे गपो-सप्प करैक ठौर तँ भेटिये गेल। राम सुनरि भौजी उठैत बजली-

"रातिमे ने अहाँकेँ कियो चोरा लेत आ ने हमरे चोरा लेत। तँए बाँकी गप-सप्प काल्हि करब। भानसक बेर भऽ गेल।"

जहिना राम सुनरि भौजी बजली तहिना खुशीलालो बाजल-

"अखन काजक बेर अछि भौजी, तँए नइ रोकब, आब सभ दिन गाममे रहब।"

राम सुनरिकेँ उठिते रजनी काकी सेहो धड़फड़ेली। धड़फड़ाइत बजली-

"कनियाँ, रस्ता-बाटक थाकल बौआ अछि तँए हमहूँ चुल्हिये लग जाइ छी।"

◌

शब्द संख्या : 2318, 22 सितम्बर 2017

4.

बारह बजैत राति, अन्हरिया पख तँए रातिक रतिपनमे दुगूना रंग चढ़ल। बचनू भाय अपन छोट भाएकेँ उठबैत बाजल-

"बौआ, बौआ, रमेश?"

भैयाक अवाज सुनिते रमेश चहा कऽ उठल। मुदा चहा कऽ उठला पछाइत दू रंगक लोकमे दू रंगक विचार जगैए। एकमे, जे नइ सुनने-बुझने रहल ओ आ दोसर जे कोनो बुझल बातकेँ सुतली रातिक काज बुझि मनमे समेट सुतल रहल।

दोसर कोटिक रमेश, चहा कऽ उठिते बाजल-

"भैया..!"

बचनू-

"हँ।"

रमेश-

"समय भऽ गेल?"

बचनू-

"हँ, उठह।"

रमेश-

"की सभ संगमे लेब?"

बचनू-

"एकटा डेढ़हत्थी लऽ लएह आ लालटेन नेस लएह। कियो जँ रस्ता-बाटमे देखबो करत ते देखिये कऽ बुझि जेता जे बर-बेमारी लऽ कऽ डाक्टर ऐठाम कियो जा रहल अछि तँए गप-सप्पमे बाट रोकब नीक नहि। कियो टोकबो ने करथुन।"

दरबज्जापर सँ निकैल बचनू भाय अकास दिस तकलैथ तँ बुझि पड़लैन जे डंडी-तराजू माथपर अछि। आगू हिया कऽ देखला तँ सूनसान बुझि पड़लैन। दच्छिनभर हिया कऽ देखलैन तँ नि:सबद भेल बुझि पड़लैन।

आगू-आगू रमेश लाठी आ लालटेन नेने आ पाछू-पाछू बचनू भाय पच्छिम मुहेँ–थाना दिसक रस्ता पकैड़–विदा भऽ गामक सीमानपर पहुँच गेला। आमक गाछ, अन्हार रहितो हवाक सिहकी वातावरणकेँ मस्त बनौनहि छल। तैसंग हजारो भकजोगनी गाछपर सेहो भुक-भुक करै छल।

किछुए-कालक पछाइत थाना दिससँ तीन गाड़ीक इजोत देख बचनू भाय बुझि गेला। योजनानुसार सभ अनुकूले बुझि पड़लैन। तीनू गाड़ी आमक गाछ लग आबि रूकल। बचनू भायकेँ अपने लग थानेदार बैसा रमेशकेँ सिपाहीक गाड़ीपर गामक चौकीदार लग बैसौलैन।

गाममे प्रवेश करिते सभकेँ अनुकूले वातावरण भेटैत गेलैन। योजनानुकूल विलासक संग भोगिया देवी पुलिसक हाथ आबि गेल। चुपचाप दुनूकेँ दुनू गाड़ीमे लऽ जाबे परिवारक लोक नीक जकाँ बुझैत-बुझैत तइसँ पहिनहि दुनू गामक सीमान टपि गेल।

एक तँ गाड़ीक अवाज, दोसर परिवारक लोकक झौहरिसँ गामे गनगना गेल छल। काने-कान सौंसे गाम बीआ-वान भऽ गेल। ताबे निशिभाग रातियो आगू दिस टगल। जइसँ ऐगला दिनक उदयक भान

सेहो हुअ लगल। दुनूकेँ गामसँ निकैलते सौंसे गामे कुकुर-काँटमे ओझरा गेल। कहा-कही, गारा-गारी सौंसे गामे शुरू भऽ गेल। केतए-सँ कोन लुत्ती उड़ि-उड़ि केम्हर लगि गेल से थाहे ने रहल। भोरक तीन बजैत-बजैत, जहिना तेसर सालक राखी पाबैन दिन भेल छल जे राता-राती सौंसे देशक लोकक राखी हाथसँ कटि गेल, तहिना भऽ गेल। प्रचार-माध्यम बढ़ने एतेक तँ लाभ भेबे कएल अछि।

गाममे गदमिशान होइत देख खुशीलालो आ राम सुनरियो शान्त-चित्त सड़कपर ठाढ़ भऽ हिया-हिया अकानए लगल तँ बुझि पड़लै जे दशमी मेलामे बाजा-गाजाक अवाजसँ जहिना झौहैर होइत रहैए तहिना सौंसे गामे भऽ रहल अछि। राम सुनरि भौजी खुशीलालक माता-पिताक बीच खुशीलालकेँ कहली-

“बौआ, आब की हएत।”

बौआ तँ बौए भेला, तँए कौआ ने लऽ कऽ उड़ि जाइन तहिना रोमैत रजनी काकी बजली-

“केतौ किछु हुअ, हमरा कोन मतलब अछि। आगि लगौ, बज्जर खसौ, जेकर जेहेन किरदानी छै, तेकरा से हेतइ।”

ओना, खुशीलालकेँ बुझल रहइ जे निचेनसँ रहैले बचनू भाय कहि देने छला। रजनी काकी अपनाकेँ पूर्ण सुरक्षित शब्दमे बाजल छेली, मुदा जे वातावरण गाममे बनि रहल अछि, तइसँ नहियोँ डराएब असोभाविके हएत। धड़कैत दिलसँ राम सुनरि भौजी बजली-

“बौआ, राति-बिराति जँ कोनो आफत-असमानी हएत, तखन की करबै?”

‘की करबै’ सुनि खुशीलालक मन बिहुसि उठल। एतेटा दुनियाँमे कोनो काज नइ छै! तोष दैत खुशीलाल बाजल-

“जखन अकासे फाटि जाएत तखन दर्जी केते सीअत, मुदा जाबे से नइ भेल अछि ताबे बिमारीसँ पहिने दवाइयो खाएबकेँ के नीक

कहत।”

ओना, चारि गोरेकेँ एकठाम रहने एते बिसवास तँ राम सुनरि भौजीक मनमे ठहैकते रहैन जे चारि मिलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज। तहूमे गामक लोक तँ अपनेमे रक्का-टोकी कऽ रहल अछि। पुलिसक गाड़ी तँ गामसँ चलिये गेल। ओ जँ रहैत तँ पाइ-कौड़ी झोड़ै दुआरे किछु एम्हरो-ओम्हरो करैत। गाम तँ अपने बँटाएल अछि तखन केकरा दाँत जनमतै जे निरदोस दिस आँखि उठौत।

तैबीच राम सुनरि भौजीक बेटा उठि कऽ ओछाइनपर कानए लगल। बच्चाकेँ कानब सुनि भौजी आँगन गेली। खुशीलाल माता-पिताकेँ कहलक-

“अहूँ सभ सुतैले जाउ। हम कनीकाल रस्तेपर सँ अजमा कऽ देखै छी जे हल्ला बढ़ैए आकि घटैए।”

अपन पल्ला झाड़ैत पिता बजला-

“रौतुका गल-गुल छी लगले शान्त भऽ जाएत। आ जँ नहियेँ हएत आ अपना घर दिस अबैत देखिहह तँ हमरो कहिहह।”

दुनू परानी अपन-अपन ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। अन्हार रहबे करै, ओना तीन बजे भोर भऽ गेल छल मुदा नीक जकाँ फरिच्छ नइ भेल रहइ। अन्हारमे भोरो अन्हराएले छल।

बेटाकेँ कोरामे नेने पुन: राम सुनरि भौजी खुशीलाल लग पहुँच गेली। मनमे पैछला पढ़लाहा पाँती उठि गेलैन। ‘घन घमण्ड नभ गरजत घोड़ा, पियाहीन डरपत मन मोरा।’

ओना अन्हारमे राम सुनरि भौजी नहि बुझि पेली जे दुनू बुड़हा-बुड़ही चलि गेला। किएक तँ सभ चुपे-चुप अकानि रहल छला। मुदा खुशीलाल तँ बुझै छल जे अखन दुइये गोरे छी। सबहक अपन-अपन सीमान अछि। किछु एहनो बात तँ अछिए जे माइयक कहैबला बात पिताकेँ नहि कहल जाइए आ पिताकेँ कहैबला बात माएकेँ नहि कहल

जाइए। ओना, अहूक पाछू बहुत रास बात अछि। बात ई अछि जे जेकरा माए नहि छै, पितेटा छइ। तहिना एहनो तँ अछिए जेकरा बाप नइ छै, माइयेटा छइ। मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जँ दूटा पुरुख-नारी एहेन समैमे एकठाम हुअए, तँ गामक अवाज अकानि-अकानि माने ई जे केमहर अवाजमे जोर पड़ैए आ केम्हर कमजोर पड़ैए तेकरा आधार बना गप-सप्प जँ नइ करए तँ ओहो समाजक बिमुखे अवस्था भेल। जे खुशीलाल बुझि रहल छल। ओना, अखन खुशीलालो आ राम सुनरियो दू दिशा कहियौ आकि दू पाशा, दुनू दिस दुनू छल। तेकर अनेको लक्षणमे एकटा ईहो तँ अछिए जे खुशीलाल अपना भरे परिवारक भार उठबैक शक्ति बना नेन अछि। मुदा राम सुनरि तइसँ बहुत दूर छैथ। खुशीलाल बाजल-

“भौजी, गामक तँ सभ बुझिते छैथ जे केहेन समैमे हम गाम छोड़ने रही, मुदा अहींटा छुटल रहि गेल छी जे नइ बुझल अछि।”

जेना किछु ओहन वौस राम सुनरिकेँ छुटि गेल होनि, जइले मन ललिचाए लगलैन, तेहने स्वरमे बजली-

“तीन सालक पछाइत मन पड़लौं?”

हारल नटुआ जकाँ खुशीलाल बाजल-

“अहाँ ते मोने छेलौं, अपने बात बिसैर गेल छेलौं, तँए नइ कहि सकलौं।”

ओना अखुनका जे वातावरण गामक बनि गेल छल ओ अनुकूल नइ छल, मुदा ओते अनुकूल तँ छेलैहे जे जे किछु अखन गाममे घटित भऽ रहल अछि तइसँ अलग खुशीलालोक आ राम सुनरियो भौजीक परिवार छैन्हे। तँए जँ अपन जिनगी वा परिवारक जिनगीक गप-सप्प दुनू गोरेक बीच हएत तँ उचिते हएत।

सामंजस करैत राम सुनरि भौजी बजली-

“पुरुख जकाँ मौगी थोड़े लबरदौड़ होइए, मुदा जेतए होइए तेतए

हुअ। हमरा अहाँक बीच से खेलकट्टी।”

ओना खुशीलालक मन खुशीलालकेँ धिक्कारलक मुदा ओइ धिक्कारकेँ ओ अपन परिस्थितक अनुकूल सफाइ देब नीक बुझि बाजल-

“भौजी, पुरुखकेँ समय लबरदौड़ बना दइए। ओना, एकरा पुरुखक दोख नइ कहबै सेहो नीक नहियेँ हएत। मुदा जहिना दुनियाँ बड़ीटा अछि तहिना बहुत लोको अछि किने। तेकरा छोड़ू आ छुटल जे बात अछि से कहि दइ छी।”

तही बीच भौजीक बच्चा कानए लगल। भौजी ओकरा चुप करए लगली। खुशीलालक मनमे उठल- जँ हमरो परिवार ओहन रहैत तँ हमरो ने समैयेपर बिआह भऽ गेल रहैत आ एतेटा बेटाकेँ हमरो चुप करए पड़ैत...।

मुदा भौजीकेँ थोड़ेक महग भऽ गेलैन बच्चाकेँ चुप करब। तेकर कारण अपने बेसाहल छेलैन। बेसाहल ई छेलैन जे कनला पछाइत गप-सप्प करै दुआरे बच्चाकेँ एक थापर मारि देने छेलखिन। मुदा एते तँ बुझले छैलैन जे माए-बच्चाक पनचैती केना होइए। तैबीच कनैत बेटा कहलकैन-

“तूँ हमरा मार-लेँ किए?”

राम सुनरि भौजीकेँ बुझल रहबे करैन, बजली-

“से की चोट लगैबला हाथे मारने छेलियौ। कनियेँ जोरसँ छुबने छेलियौ।”

एक तँ ओहिना बाल-बोध कोनो चीज सुनने बेर-बेर बजैए तैपर जँ किछु भऽ जाइ छै तँ ओ आरो कानि-कानि बजबे करैए। बाजल-

“दुखाइए किए?”

माए पुछलखिन-

“केतए दुखाइ छौ?”

अपन पीठ बच्चा देखबे ने करए। हाथेसँ हँथोरि कऽ देखबैत बाजल-

"एतए।"

राम सुनरियो भौजी हाथेसँ दू-चारि बेर होंसतैत बजली-

"कहाँ केतौ छौ।"

जेना बेटा जीत गेल हुअए तहिना हँसए लगल। खुशीलाल दिस मुँह घुमा भौजी बजली-

"की कहए लागल छेलौं?"

मुस्की दैत खुशीलाल बाजल-

"बीचमे फेर ने तँ ई छौड़ा कनवाहि शुरू करत?"

भौजी बजली-

"बाल-बोध छिऐ। एकरा की करबै।"

राम सुनरिक बात सुनि खुशीलालक मनमे भेल जे भौजी अपनाकेँ समगम बना विचार सुनैले पूर्ण तैयार भऽ रहली अछि। मुदा लगले खुशीलालक मनमे ईहो डर पैस गेलै जे नव-नौतरि भौजी छैथ, जँ कहियो बेर-कुबेर कोनो बाते कहा-कही हएत आ मुहेँपर कहि दथि जे देखले पुरुख छी, सरलो-पाकल मौगी-छौड़ी बिआह करैले तैयार नइ भेल तखन तँ...।

ओना, नव निरमित खुशीलालक विचार, मुदा सभ बात सभकेँ सदिकाल आगूए-मे ठाढ़ रहै छै सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अपनाकेँ समेटते खुशीलालक मनमे उपकल जे एक-धरिया तीर ने एके दिस आक्रमण करैए मुदा जँ ओकरा दू-धरिया बना चलाएब तँ दुनू दिस ने चलत। जखने दुनू दिस चलत तखने ने सवाल-जवाब दुनू दिस उठत। जँ से नइ करब तँ एकपर एक तीर (प्रश्न) लगने अपनो ओध-बाध होइक सम्भावना रहबे करत।

खुशीलाल अपनाकेँ सम्हारैत बाजल-

"भौजी, जहिना अहाँ बंगलोर सन शहरमे जन्म लेलौं आ निछच्छ देहातमे आबि बास करै छी तहिना हमरो गाम..?"

'गाम' लग आबि खुशीलालक बात बन्न भऽ गेल। ओना, अपन बेथाक कथा सुनि राम सुनरि भौजी सेहो थकमका लगली जइसँ खुशीलालकेँ दोहरा कऽ आगूक बात नहि पुछि सकलखिन, जे बात खुशीलालो बुझि गेल। सामंजस करैत खुशीलाल बाजल-

"भौजी, जहिना दुनियाँक खेल अजीव अछि तहिना ने जिनगियोक अछि।"

'अजीव' सुनि भौजीक मुँह खुजलैन। किएक तँ कोनो किताबमे पढ़ने छेली जे दुनियाँ बनौनिहार अपने अजीव छैथ तँए जे अजीव बनौलैन ओ तँ उचिते भेल। मुदा जिनगी तँ सभ मनुखक फुटा कऽ भेल। ओ तँ अपने बनौने ने बनत। तखन अजीव, किए ने सजीव बनत? मुस्की दैत राम सुनरि भौजी बजली-

"छोड़ू दुनियाँ-जहानक बात। अखन जहिना दुनू गोरेक बीच गप-सप्प होइए तहिना दुनू गोरे अपन जान-जहानक गप-सप्प करू।"

राम सुनरि भौजीक गहन विचारकेँ खुशीलालक मन मानि गेल जे दुनियासँ अलग अपन परिचय भौजी दिअ चाहि रहली अछि। तँए ऐठाम आत्मीय सम्बन्धक सम्भावना बनियेँ रहल अछि। निधोखसँ बजबामे कोनो अवघात नहि अछि। खुशीलाल बाजल-

"भौजी, अपन सभ लाज-धाक उठा कहै छी जे गामसँ भागैक कारण भेल जे बुझि पड़ल परिवार बिलैट जाएत। तँए ओही बिलटैकेँ सुलटैले गामसँ परदेश गेलौं।"

ओना, खुशीलालक पेटमे जे बात छल तेकरा ओ झाँपि-तोपि बाजल। मुदा राम सुनरि भौजी खोरनी चलबैत बजली-

"की बिलैट जइतए?"

हारल सिपाही जकाँ खुशीलाल अपन हार कबुल करैत बाजल-

"भौजी, पुरुख-नारीक सहयोगसँ ने जीवैत परिवार आगू बढ़ैए, से जँ नहि भेल तँ ओ परिवार बिलटत की नहि।"

खुशीलालक बात सुनि भौजी मुड़ी डोला स्वीकारैत बजली-

"बौआ, धरमागती पूछी ते देहात आ शहरकेँ नीक जकाँ नहि बुझि पेने छेलौं। एक-चलिया छेलौं, शहरमे जन्म भेल, बच्चासँ सोलह-सतरह बर्ख धरिक जे किरिया-कलाप छल तेतबे बुझि पेने छेलौं। पछाइत बिआह भेल। ऐठाम एलौं...।"

बिच्चेमे खुशीलाल बाजल-

"जखन शहरमे बालपन बीतल तखन माता-पिता नइ बुझलैन जे गाम-देहातक जिनगीमे बेटीक बास हएत की नहि?"

खुशीलालक बात सुनि भौजी निरुत्तर भऽ गेली। मुदा जे प्रश्न सोझामे आबि गेल तेकर तँ किछु-ने-किछु उत्तर नहियोँ देब उचित नहियेँ होएत। बजली-

"जे भाग-तकदीरमे लिखल छल तेकरा कियो मेटा दइत।"

भाग-तकदीरकेँ सोझामे ऐबते खुशीलालकेँ गड़ भेटल। बाजल-

"जाए दियौ, जइ दिनका जे भोग-पारस छल से भेल। आब केना जीब तइले झखू।"

तही बीच उत्तरवारि टोलमे जोरसँ कनबाक अवाज उठल। दुनू गोरे, माने खुशीलालो आ राम सुनरियो भौजी अपन गप-सप्पकेँ बिराम दैत कान ठाढ़ कऽ अकानए लगलैथ। गदगर टोलक बीच विलासो आ भोगियो देवीक घर। अपनो गदगर परिवार दुनूक अछिए। जखन पुलिसक गाड़ी आएल, तखन किछु लोक टोलोक आ दुनू परिवारोक जागल छेलैहे। मुदा किनको मनमे ई शंका छेलैहे नहि जे पुलिस गाड़ीसँ औत आ दुनूकेँ पकैड़ लऽ जेतैन। दुनूक घरो पाँच कट्ठा हटल एकेठाम। गौओं-घरूओ आ परिवारोक लोककेँ ऐ दुआरे नहि कोनो शंका छेलैन जे

देखौआ कोनो तेहेन घटनो नहियेँ भेल छल जे पुलिसक आगमनक शंका रहैत। ओना, पड़ोसियो आ परिवारोक लोककेँ पुलिसक पैरक धमकसँ बुझि पड़लैन जे किछु लोकक आगमन भेल अछि। मुदा दुनू गोरे–विलासो आ भोगियो देवी–क ऐठाम राति-बिराति एहिना लोकक आबा-जाही रहिते अछि, तँए जगलोहोक मनमे कोनो शंका किए होइतैन।

दुनू गाड़ीक सिपाही दुनू गोरेक घर घेर एके बेर पकैड़ लेलकैन। ओना, जखने भोगिया देवीकेँ घरसँ उठा आँगन आनि सिपाही कहलकैन-'चलो भोंसरी गाड़ीमे बैसो।' तखनेसँ भोगिया देवी जोर-जोरसँ कानए लगली। मुदा जाबे परिवारो आ टोलोक लोक उठै-उठै तइसँ पहिनहि सिपाही गाड़ीपर चढ़ा, अपनो सभ चढ़ि विदा भऽ गेल।

एक्के-दुइये परिवारोक आ टोलोक लोक पहुँच-पहुँच देखैथ तँ दुनूक ओछाइन खाली छल। टोलक लोक तँ अगदिगेमे रहैथ जे की बात भेल। मुदा लाजपछ परिवारक लोक झौहैर करए लगलैन। ओना, पुरुख-पात्र चिचिया-चिचिया तँ नहि कानैथ मुदा ठुनैक-ठुनैक नहि कानैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जहिना भोगिया देवीकेँ भेलैन तहिना विलासक सेहो भेल। मुदा विलास भोकाइर पाड़ि कानल नहि। बेटाकेँ ललकारा दैत कहलक-

"जोगा, जल्दी आ। पुलिस पकड़ने जाइए।"

ओना पुलिसक पैरोक धमक आ गपो-सप्प सुनि जोगाक नीन टुटि गेल छल। खिड़कीसँ सभ किछु देखियो नेने छल। मुदा बापोसँ बीस (माने कुवृत्तिमे) जोगाक चालि-चलन छइहे। जइसँ भीतरे-भीतर अपनो डरि गेल जे हमहूँ जेबे करब। ओना अपनाकेँ कोठरीसँ भागैक ओरियान मने-मन कइये रहल छल मुदा भागब केमहरसँ गड़ नइ देखने अपनाकेँ सुटकल बिलाइ जकाँ गबदी मारि केबाड़क दोगमे चुप-चाप ठाढ़ छल। जखन विलासकेँ गाड़ीपर चढ़ा पुलिस विदा भेल तखन रोहिणी–विलासक पत्नी–बोम फाड़ि कानए लगली। कहियो थाना-पुलिससँ भेँट नहि तँए डराएब सोभाविके छल। मुदा जोगाक मनमे अखनो शंका छेलैहे जे भऽ

सकैए हुनका (पिताकेँ) गाड़ीमे बैसा दोहरा कऽ आबि हमरो ने कहीं पकैड़ लिअए। तँए कोठरीसँ निकैल दरबज्जा दिस नहि बढ़ि पछुआर दिस भागि गेल।

रोहिणी सुच्चा मिथिलानी। सुच्चा मिथिलानी ओ भेली जे पतिक जघन्यसँ जघन्य किरदानी देखला-सुनला पछातियो किछु कहैक साहस नहियेँ रखै छैथ। नइ रखैक अनेको कारणमे एकटा ई कारण तँ अछिए जे अछैते पुरुखे जिनगी मृत्युप्राय बनि जाइए। कानैत रोहिणी जोगाकेँ जोरसँ शोर पाड़ि कहली-

"जोगा, बापकेँ पुलिस पकैड़ नेने जाइ छौ आ तूँ केतए नुकाएल छेँ।"

पुलिसक गाड़ी निकैल चुकल छल। गाड़ीक अवाज घरसँ किछु हटए लगल छेलइ। पछुआर दिससँ एकटा लाठी नेने जोगा माए लग पहुँच बाजल-

"हमरा तँ लाठीए ने भेटै छल, लाठी ताकए गेल छेलौं तँए कनी देरी भऽ गेल।"

एके-दुइये टोल-पड़ोसक लोक आबि-आबि विलासक खोज-पुछारि करए लगल। मुदा किए विलासो आ भोगियो देवीकेँ पकैड़ लऽ गेलैन से स्पष्ट भाँज कियो बुझिये ने पेब रहल छला।

◌

शब्द संख्या : 2239, 26 सितम्बर 2017

5.

चारि बाजि गेल। रसे-रसे दिनक सभ सिरखार जागए लगल आ रातिक सभ सिरखार रसे-रसे मेटाए लगल। जेहो चीज नहि देखाइ छल ओहो एका-एकी देखए-मे आबए लगल। ओना, भोर बुझि अनेको पक्षी अपन-अपन बासा छोड़ि-छोड़ि पतियानियोँ लगा-लगा आ असगरो-असगर अकासमे उड़ौ लगल आ अपना-अपना ताने, तानी-भरनी सेहो दिअ लगल। मुदा कौआ-मेना अपन-अपन ठौर धेनहि अछि, अँगना-दुआरपर नहि पहुँचल।

आन दिनसँ भिन्न आइ गामक लोकक बीच चहल-पहल भाइये गेल अछि। आन दिन, ऐ बेरमे कए गोरे अपन-अपन महींस खोलि पोसर चरबैले निकैल जाइ छला आ कियो-कियो पराती सेहो गाबए लगै छला, मुदा से आइ नइ भेल। जेहो सभ अपन गाए-महींसकेँ किरिण फुटला पछाइत घरसँ बाहर करै छला आ अपनो ओछाइन छोड़ै छला, सेहो सभ आइ भोरगरे अपन-अपन गाइयो-बरद निकाललैन आ अपनो केकरो-ने-केकरोसँ गप-सप्प करए लगला।

बचनू भाय भोरे खुशीलाल ऐठाम पहुँचला।

खुशीलालक सभ परिवार जगले छल। खुशीलालकेँ देखते बचनू भाय बजला-

"सबेरे नीन टुटि गेल तँए सोचलौं जे कलकत्तासँ खुशीलाल एबे

कएल अछि, दार्जिलिंगक चाहपत्ती अननहि हएत, सएह जा कऽ पीबी।"

बचनू भाइक विचारकेँ आगू घुसकबैत खुशीलाल बाजल-

"चाहेटा किए, बिस्कुट सेहो अनने छी।"

खुशीलालक बातकेँ बचनू भाय जेना बुझलैन, जेतेक बुझलैन ओ तँ बचनूए भाय जनता, मुदा बचनू भाइक बातसँ खुशीलालकेँ स्पष्ट बुझि पड़लै जे काल्हि जे रस्तामे बचनू भाय कहने छला भरिसक सएह गोटी सुतरलैन तँए खुशी छैथ। भने चाहक चर्च काइये देलैन, भिनसुरका समए छीहे, किए ने चाहेक क्रममे आरो गप पुछि लेबैन।

ओना, बचनू भाइक चरित्रकेँ खुशीलाल नीक जकाँ नइ परेख पेने छल। परखबो ओतेक असान नहियेँ अछि। माने ई जे मनुखो तँ मनुखे ने छी। कियो अधलासँ अधला वृत्त अपनाए नीकसँ अधला बनि जाइ छैथ, तँ कियो अधलासँ अधला वृत्ति छोड़ि अधलासँ नीक बनि जाइ छैथ। तैठाम पैछला आधारपर परेखब तँ कठिन अछिए। खाएर जे अछि, जेतए अछि आ जेतेक अछि से तेतइ रहह। मुदा ऐठाम मात्र खुशीलाल आ बचनू भाइक बीचक बात अछि तँए एतबे।

खुशीलाल दतमैन नहि केने छल, जइसँ मन होइ छेलै जे बासी मुँह छी। जहिना बसिया भात खेने लोक बिसराह भऽ जाइए तहिना ने बासी-मुँहक बातो हएत। ओना बचनू भाय सेहो दतमैन नहि केने छला, मात्र दू बेर कुर्राटा कऽ नेने छला।

खुशीलाल बाजल-

"भाय, आब की फेर दोहरा कऽ ओछाइनपर जाएब, से नहि तँ दू मिनटमे ब्रशो काइये लइ छी।"

'ब्रश' सुनि बचनू भाय बजला-

"भने मन पाड़ि देलह खुशीलाल। हमहूँ दतमैन नहियेँ केने छी।"

दुनू गोरे दाँत माजि, कुर्रा कऽ एकठाम भेला। आँगन जा खुशीलाल एक डिब्बा बिस्कुट निकालि माएकेँ कहलक-

"माए, बचनू भायकेँ ताबे बिस्कुट दइ छिऐन आ तूँ कनी केतली-कप-सभ धोइ ले। हमहूँ चुल्हिये लग बैस तोरा देखा देबौ।"

बेटेक लूरि किए ने हुअए, मुदा किछु लोक एकरा नीक बुझै छैथ आ किछु लोक अधलो बुझिते छैथ। खाएर, आन जे बुझैत होथु मुदा रजनीकेँ नीक बुझि पड़लैन। गुरु-चेलाक बीच ओहने ने सम्बन्ध अछि जेहने ऑपरेशनक डॉक्टर आ कम्पाउण्डरक बीच वा राज मिस्त्रीक संग हेलपरक बीच वा ड्राइवरक संग खलासीक बीच अछि। रजनीक मनमे ई रहबे करैन जे बेटा तीन सालपर शहरसँ आएल हेन। शहरी लोक हमरा सभसँ खाइ-पीबैमे अगुआएल अछिए। जखने खाइ-पीबैमे अगुआएल तखने ने ओकरा बनबैक लूरियो अगुआएल हेतइ...।

मुदा रजनीक मन लगले घुमि अपन तीमन-तरकारी आ तड़ुआ-बघड़ुआपर चलि एलैन। ऐबते ई बिसवास जगलैन जे केतबो शहर-बजारक लोक तरकारी नीक बनौत तैयो हमरे सबहक नीक रहत। किए तँ कोनो तरकारी बाड़ीसँ आनि सोझे कत्तापर चढ़ा, धोइ कऽ लोहियामे दइ छिऐ, तेकर सिहनता तँ ओकरा सभकेँ हेबे ने करत।

..रजनीक मनमे खुशी आबि गेलैन। दोसर ईहो खुशी तरे-तर रहबे करैन जे जखने बेटा उपारजन करि उपभोग करैक लूरि सीखि लेलक तँ जीनाइ सीखि लेलक! जखन लोक खेतसँ चुल्हि धरिक लूरि बना लेत तखने ओकरा-ले दोसराइत दोसरे राति जकाँ भऽ जाएत।

खुशीलाल अपना बुधिये विचारे माएकेँ कहने छल जे जइ चाह पत्तीक चलैन गाम-घरमे अछि तइसँ बेसी खौलबैक, माने सिद्ध करैमे दार्जिलिंगक चाहपत्तीमे समय लगैए, जइसँ ओकर भीतुरका सुआद अबैए।

बचनू भाइक मन भिन्ने तिरपित रहैन जे बहुत दिनक पछाइत एहेन बिस्कुट हाथ लगल तखन जँ ओकरा सुआदि-सुआदि नहि खाएब तँ ओकर रसे केना बुझब। मुदा से तँ परोछे-परोछी ने नीक हएत। सोझहामे

जँ गपे जकाँ चीबा-चीबा बिस्कुटो खाएब तखन तँ खुशीलाल कहबे करत किने जे दाँत ढील भऽ गेलैन। भाय! जखन मुँहक दाँते ढील भऽ जाएत तखन मुँह चोकटत नहि से अखैन केना मानि लेब।

जाबे खुशीलाल चाह बना अनलक ताबे तक बचनू भाय मात्र दूटा बिस्कुट खेने छला। बाँकी डिब्बा हाथेमे छेलैन। अपन बनौल चाहक रंग देख खुशीलाल मने-मन चपचपाइत जे तेहेन हार्ड लीकरबला चाह बचनू भायकेँ पीएबैन जे बिजली-करेंट लगल कुरसीपर बैसा जहिना पेटक सभ बात निकालल जाइए तहिना सभ बात हिनकासँ बोकरा लेबैन।

चाहक कप बचनू भाइक आगूमे रखि खुशीलाल बाजल-

“भाय, अखन तक अदहो डिब्बा बिस्कुट नइ सठल हेन!”

मुस्की दैत बचनू भाय बजला-

“दूटा ठंढाएल मुहेँ खा कऽ देखलिऐ, मुदा धीपल चाहोमे मिला-मिला खाएब, तखन ने ओकर रंगक संग रूपो देखबै।”

ओना, खुशीलाल बचनू भाइक मुँहपर मुँह चढ़ा मुस्की देलक मुदा मुस्की ने दुनू गोरेक मुस्की भेल, फुस्की तँ अपन-अपन होइ छै किने। खुशीलालक मनमे बिसवास जगल जे यएह जिनगीक अग्नि परीक्षाक जगह छी...।

बामा हाथमे अपनो-ले खुशीलाल चाहक कप अनने छल। ओसार परहक चौकीपर बचनू भाय बैसल छला। आगूमे जहिना कियो सोझा-सोझी ठाढ़ होइए वा बैसैए तहिना खुशीलाल बैसल। जिनगी जीबैले जहिना समाजक खगता लोककेँ होइ छै तहिना खुशीलालो आ बचनूओकेँ छेलैन्हे। बिनु समाज बनने असगरक समुचित विकास सम्भव नहियेँ अछि। आ तहिना, बिनु समाजिक ढाँचा विकसित भेने देशक विकसित ढाँचा नइ भऽ सकैए। आन जे बुझए मुदा गाम-समाजक लोक नइ बुझत, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

चाह-बिस्कुटक संग इलाइची चलल। दुनू गोरेक मुहसँ इलाइचीक

सुआद उठि चुकल छल।

चालीस बर्खक बचनू भाइक चरित्र समाजिक कार्यकर्ताक रूपमे किछु गोरे बुझबो करै छैन आ किछु गोरे नहियोँ बुझै छैन, मुदा बचनू भाय अपने तँ एते बुझिते छैथ जे हमरोसँ लोक ठकि कऽ खाइए आ हमहूँ जँ केकरो ठकि कऽ खाइ छिऐ तँ आन समाज जे कहह मुदा ठकुआ समाज आकि ठकक समाज केना एकरा अधला कहत। हँ, आन भलेँ दियादे किए ने कहए। ओना, समाज सेवा विभिन्न स्तरमे आ विभिन्न रूपमे बँटाएल अछि तइ हिसाबे बचनू भाय दोसर श्रेणीक समाज सेवक रहला अछि। केकरो बिआह करा देब, केकरो ब्लौकमे कोनो काज करा देब एहेन तरहक किरिया-कलाप तँ रहबे केलैन हेन।

खुशीलाल गामक उजड़ल-उपटल परिवारक उपज छी। माए-बाप बोइन करि मैट्रिक पास करौलखिन। मुदा समाज तँ समाज छी। किछु गोरेकेँ किछु गोरे कान फूकि बिआहमे बाधा उपस्थित करिते रहल अछि। जइसँ मनोनुकूल परिवारमे कुटुमैती नहि होइए। मुदा नहियेँ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। दोसर ईहो अछि जे जइ परिवारमे पाँच हाथ वस्त्र आ पाँच कौर अन्नक अभाव बेटीकेँ बुझि पड़त, तइ परिवारकेँ लोक छँटिटो अछि। मुदा ओहन छँटलो परिवारक तँ समूह छै, ओकर बिआह ओहन परिवारमे होइते छइ। मुदा पढ़ने-लिखने मनमे नव विचार जगने एहनो तँ भाइये रहल अछि जे पढ़ल-लिखलकेँ पढ़ल-लिखलक जोड़ा हेबा चाही, से बाधा नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तैसंग एहनो तँ अछिये जे जातिमे विभाजित समाजमे ओहनो जाति तँ अछिए जइमे लड़काक अपेक्षा लड़की कम छइ। लड़की कमैक कारण अनेको अछि जइमे मेडिकल साइंस सेहो अछिए। एहेन जातिक बीच समस्या नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि, से अछि...।

कोलकातामे खुशीलाल जइ महल्लामे रहैत छल ओइ महल्लामे एकटा परिवार प्रोफेसरक छैन। दुनू परानी प्रोफेसर छैथ। कौलेजसँ निकलला पछाइत प्रोफेसर साहैब अपन दरबज्जापर बैस महल्लाबला

सभसँ दू-तीन घन्टा गप-सप्प करिते छैथ। ओना, दोकान-दौड़ीक काज छोड़ि जँ टहलबो-बुलबो करै छैथ तँ अपन महल्लाक बीच टहलै छैथ। संयोगो नीक, दुनू परानी समाजशास्त्री सेहो छथिए, माने समाजशास्त्रक प्रोफेसर छैथ। समय बँचबै दुआरे भोजन बनबैले मशीनक बेवस्था केने छैथ। आब एते तँ सुविधा भाइये गेल अछि जे जिनगीक आवश्यकताक अनेको क्रियामे मशीन सहायक भऽ रहल अछि।

ओही प्रोफेसर साहैबक सानिध्यमे खुशीलाल समाजक सूत्र बुझलक। सुतिहार लोक दुनू परानी प्रोफेसर साहैब, समाजक एक-एक बन्धनकेँ तेना सुतिया-सुतिया अपनो बुझै छैथ आ लोकोकेँ बुझबै छथिन जे अन्हार इजोत जकाँ भऽ जाइए, नव दृष्टिक उदय भऽ जाइए। प्रोफेसर साहैबक सानिध्यमे खुशीलालकेँ सेहो सएह भेल जइसँ मन सकताए लगल। मन मानि गेलै जे मनुख ओहन जीव छी जे दुर्वृत्ति–माने राक्षसी वृत्ति–तियागि सुवृत्तिक जीवन धारण कऽ लिअए तँ राम-रावणक रहस्य बुझि अपनाकेँ पतियानीमे ठाढ़ कऽ लेत। ओना ई मात्र एक दिनक काज नहि, जिनगी भरिक छी।

जहिना बचनू भायकेँ समाजक खगता छेलैन तहिना खुशीलालकेँ सेहो छेलैहे। होइतो अहिना छै जे हाट-बजार जाइ काल पड़ोसिया संगी भेट गेने, पड़ोसपनक गप-सप्प होइत रस्ता कटिये जाइए।

ओना, बचनू भायकेँ समाजक खगता दोसर रूपमे छैन आ खुशीलालकेँ दोसर रूपमे। खुशीलालकेँ अछि अपन परिवारमे जीवन दइक आ बचनू भायकेँ छैन समाज-ले। तँए दुनूक विचारमे सम्बन्धक दूरी तँ किछु अछिए। मुदा सम्बन्धो तँ सम्बन्ध छी जे बढ़बो करैए, ठमकलो रहैए आ घटबो करिते अछि।

ओना, चाह पीला पछाइत बचनू भाइक मुहसँ बेर-बेर हँसी फुटैत रहैन, जे खुशीलाल बुझिये ने पेब रहल छल जे किए बचनू भाय फूलि कऽ तुम्मा भेल छैथ। बिनु कारणो बेर-बेर हँसै छैथ। अनठेकानीए खुशीलाल तुम्माकेँ तुम-तुमबैत बाजल-

“भाय, अहाँ ते रातिमे धमगज्जर करि देलिऐ..!”

ओना, खुशीलालक बात सुनि बचनू भाय खुलि कऽ हँसए चाहै छला, मुदा अखन तकक जे योजना–विलास आ भोगिया देवीकेँ जहल पठाएब–छेलैन तेकरा बचनू भाय मात्र तीनियेँ ठाम चर्चा केने रहैथ। ओ छल अपन मात्रिकक परिवार, थाना आ गाममे अपन परिवार...।

बचनू भाय बजला-

“बहुत धमगज्जर कहाँ भेल। योजनानुसारे भेल। तइमे थाना बधाइक पात्र अछि।”

थानाकेँ बधाइक पात्र सुनि खुशीलाल चौंकल। किए तँ थानामे बटुआ जकाँ अनेको कोठली बनि गेल अछि जइसँ जेते लाभ समूहकेँ हेबा चाही से नहियेँ भऽ रहल छइ।

खुशीलाल बाजल-

“से की भाय! हमरा तँ बुझि पड़ैए जे अहीं सन शिकारीसँ सम्भव भऽ सकैए।”

अपन भारीपन देख बचनू भाय बजला-

“बौआ खुशीलाल, तोंही सभ ने गाम-समाज आ देश-दुनियाँक करता-धरता भेलहक, तँए कहबह जे गामक जे मूल समस्या अछि तइमे किछु केलौं अछि वा नहि। हम जे केलौं से नीक केलौं आकि अधला, तेकर निर्णय करैक अधिकार तँ तोरो ने छह।”

बचनू भाइक बात सुनि खुशीलालक मन झूकि गेल। झुकिते बाजल-

“बचनू भाय, अहाँ तँ देखते छी जे हमर परिवार अपने उजड़ल-उपटल अछि, एकरे ठौर धरबैमे ते नाको-दम भऽ जाएब, तखन समाजक भार लादबे ने हएत।”

बचनू भायकेँ खुशीलालक विचारमे की भेटलैन से तँ बचनू भाय

जानता मुदा मनमे जेना अपन कएल कृत्तिक प्रति सक्कतपन जगलैन, जइसँ दिल खोलि बात करैक जेना जमीन भेट गेल होनि तहिना बुझि पड़लैन।

बचनू भाय बजला-

“बौआ खुशी, अखन काजक दौड़मे छी, तँए मन कनी चौचंग अछि। जइसँ नीक जकाँ गप-सप्प नहि कऽ पाएब। ओना मनमे होइए जे जेते पेटमे बात अछि ओ अखने सोझामे बोकैर दिअ।”

ओना, खुशीलाल जे दृष्टि पेब जइ समाजमे छल ओइ समाजसँ हटल अपन समाज छेलै, तँए जेते बिसवासक संग विचारमे सक्कतपन ऐबतै तइमे थोड़ेक थर-थरी पैसिये गेल रहइ। मुदा अपन मनक जे माखि होइ छै ओ तँ अनुकूल रहबे करइ, तँए जल्दीवाजीमे सेहो नहियेँ छल। ओ क्षण-पलक विचार भऽ सकैए मुदा क्रियागत स्थायी नहि भऽ सकैए। मुदा तैयो मनमे ओहन जिज्ञासा तँ जगिये रहल छेलै जे जहिना विद्यार्थी परीक्षाक तैयारीक समय ओहन अनुमानित प्रश्नक तैयारी करए लगै छैथ तखन ईहो अनुमान तँ करबे करै छैथ जे जँ ई प्रश्न परीक्षामे पूछत तँ निसचित एते नम्बर एबे करत। आ जँ अहिना सभ प्रश्नक उत्तर दऽ देब तँ रिजल्टमे प्रथम पाँतीक छात्रमे एबे करब। यएह ने भेल विद्यार्थी जीवनक लक्ष्य।

खुशीलाल अपन लक्ष्यपर नजैर अँटका बाजल-

“भाय, जाति-टोल ने दुनू गोरेक घरो आ विचारोकेँ कनी फरका देने अछि मुदा जखन समाज बनि चलब तखन तँ ओ अनेरे ने नीचाँ पड़ि जाएत।”

खुशीलालक विचार सुनि बचनू भाइक मनक बिसवास आरो मजगूत भेलैन। अपन सक्कत डोरकेँ नीक जकाँ डोरियबैत बचनू भाय बजला-

“खुशी, अखन धुमसाही काजमे फँसि गेल छी। जहिना बाढ़ि एला

पछाइत वा भुमकम भेला पछाइत वा आगि लगला पछाइत लोक धुमसाही काजमे पड़ि जाइए, तहिना भऽ गेल अछि। मुदा एते तँ कहबे करबह जे सौंझुका चाहो आ बिस्कुटो तोरे खेबह।”

मुस्की दैत खुशीलाल बाजल-

“जखन देहे तैयार अछि तखन चाह बिस्कुट तँ सहजे खाइ-पीबैक वौस भेल।”

◌

शब्द संख्या : 1903, 29 सितम्बर 2017

6.

घरपर बचनू भायकेँ पहुँचते परिवारक सभ जुटि गेलैन। जुटैक कारण भेल जे विलासक घर लगमे रहने, विलासक पत्नियोँ आ बेटो-बेटी तेना आनी-मानी लगा चिकैर-चिकैर गरियबैत जे आन जे बुझौ मुदा बचनू भाइक परिवारक सभकेँ बुझि पड़इ जे हमरे गरियबैए।

ओना, ने बचनूए भाय आकि बचनू भाइक परिवारेक आन समांगकेँ नाओं धरा गरियबैत, मुदा इशारामे नहि गरियबैत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जे बात बचनू भाइक परिवार ऐ रूपे बुझैत जे गाममे तँ केकरो ने किछु बुझल छै, आ ने कियो किछु करबे केलक अछि, तखन जे दोसरकेँ गारि पढ़त तँ ओ हमरा छोड़ि पढ़ैए केकरा। मुदा, परिवारक सभ एते रच्छ रखनहि छेलैन जे बिनु गारजनकेँ–माने बचनूकेँ–पुछने कियो किछु ने आगू बढ़ि करता।

भोगिया देवीक दिअर विचारक लोक। जे बेर-बेर भोगिया देवीकेँ बुझा-बुझा कहै छला जे बिआहसँ पहिने जँ कियो कोनो नीच-ऊँच काज–माने पुरुख-औरतक बीचक दैहिक क्रिया–करबो केने रहल तँ ओ कर्म नैहरक समाजक परिवेशमे धुआ जाइए। मुदा जहिना विचार जगने मनुखक कायाकल्प होइए तहिना नैहर-सासुरक बीचक सिमान टपने समाजिक स्तरपर नारीकेँ सेहो कायाकल्प होइते अछि। तँए पैछला नीच कर्मकेँ बिसैर, माने जिनगीक पूर्व कर्मक पछाइत समाजक जे ऊँच कर्म

अछि तेकरा अंगीकार करैत चलबे ने जीवन भेल। मुदा से दिअरक विचारकेँ भोगिया देवी कहियो नहि मानि दए मानली। दिअरकेँ थाना-पुलिस आ कोर्ट-कचहरी तँ हाथमे नहि रहैन जे हाथ पकैड़ कऽ सजा कए दइतथिन। एक आँगनमे रहितो दिअर अपन सम्बन्धक दूरी ओते बना नेने छला जेते क्रियागत विचारक दूरी हेबा चाही। तँए भोगिया देवीकेँ पुलिसक संग कानूनक हाथ पड़ने मन खुशियो रहैन। मुदा तैयो दलानक ओसारक चौकीपर चुपचाप पड़ल रहबे करैथ। जखन पुरुखे-पात्र मुँह बन्न केने रहत तखन जनिजातिये किए अनेरे किछु बाजत।

बचनू भायक पत्नी बजली-

“भोरेसँ विलासक बहुओ-बेटी आ बेटो गरियबैए, आ हम सभ मुँह बन्न केने सुनि रहल छी...।”

ओना, बचनू भाइक मन ओइठाम अँटकल छेलैन जैठाम भुमकम भेला पछातिक जे स्थिति होइ छइ। मुदा ऐठाम तँ दुनू परिवार आमने-सामने भऽ गेल अछि। तैसंग ईहो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए जे एक दिस गामसँ जहल तकक रस्ता सोझमे अछि आ दोसर दिस परिवारकेँ सेहो ने विचारक संग ओते दूर चलबो आ करबोक अछि।

बचनू भाय पुछलखिन-

“अपना सबहक नाओं धरा कऽ गरियबैए?”

एहेन प्रश्न रखैक कारण बचनू भाइक छेलैन जे जखन गामक कियो नहि बुझि रहला अछि तखन परिवारक नाओं लगौत से ओकरे मजाल छिऐ। ओना, पत्नियोँ आ परिवारक आनो-आन बेकती सुननहि छला जे अपन परिवारक केकरो नाओं तँ नइ लइए मुदा मात्रिकक चर्च जरूर करैए।

बचनू भाय अपन छोट भाएकेँ पुछलखिन-

“सुरेश, मात्रिकक नाओं लइए?”

मुड़ी डोलबैत सुरेश कहलकैन-

"हँ!"

बचनू भाय बुझबैत बजला-

"जइ गाममे तोहर मात्रिक छह तइ गाममे केते लोकक मात्रिक छै, तेकरा किछु लगबे ने करैए आ तोरे किए लगै छह!"

परिवारक तँ सभ ठमैक गेल, मुदा मनमे ईहो रोपि लेलक जे जखने परिवारक नाओं लेत तखने हमहूँ सभ गरियेबै।

बचनू भाय बजला-

"गारि-गरौबैल केने ते अनेरे ने झगड़ा बढ़त।"

परिवारजन-

"जँ ओ झगड़ा करैले तैयार हएत ते हमहीं सभ किए पाछू हटि जाएब।"

बचनू भाय बजला-

"आब ते हमहूँ ने एलौं। हमहूँ ने अपना काने सुनब।"

ओना बचनू भाइक विचार सुनि परिवारक सभ ठमैक गेल मुदा मनमे ईहो रहबे करइ जे जखने अपना कानसँ सुनब तखने उनटाबए लगब। जे बात बचनू भाय बुझि गेला। मुदा जखन रणक्षेत्रमे ठाढ़ भेल छी तखन सेनाक जरूरत तँ अछिए, तइले तँ रणफलो सभकेँ जना देब जरूरी अछि, जइसँ ओ अनुशासित सिपाही जकाँ कहियौ आकि गाछ परहक घोरन वा माटि परहक मुसहरनियाँ चुट्टी जकाँ, जे जखन ओ पकैड़ लेत तखन अपने किए ने टुटि कटि जाए, मुदा छोड़त नहि। 'मुसहरनियाँ' कोनो जाति-विशेष नहि, माटिपर चलैबला चुट्टीक एकटा किस्म छी। चुट्टीक अनेको किस्ममे किछु एहनो अछि जेकरा रहैक अप्पन ठौर बनबैक लूरि नइ छै, आ किछु किस्मकेँ अछिए। जइ किस्मकेँ अपन ठौर बनबैक लूरि अछि ओइ किस्ममे जे सभसँ बीहर अछि–माने जेकरा बोहैर बनबैक लूरि छै–ओकरा मुसहरनियाँ चुट्टियो कहै छै आ मुसहरबा चुट्टा सेहो कहल जाइ छइ।

अपन परिवारकेँ जखन आँखि निराड़ि कऽ बचनू भाय देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे आन-आन जे छोट-पैघ मन-भेद अपनामे अछियो तँ ओ ऐठाम–माने विलासक घटनामे–सहजे पोखैरक पानिमे जहिना छोट-छोट डुमैबला वौस डुमि कऽ विलीन भऽ जाइए तहिना विलीन भाइये जाएत...।

दर-दियादक बीच बचनू भाय छथिए, परिवारक सभ लोककेँ एक्के शब्दमे कहलखिन-

"अहाँ सभ अखन ऐ विवादमे नइ उलझू। ऐसँ परिवारक गतिमे बाधा पहुँचत, तँए अहाँ सभ अपन-अपन काजमे लगि जाउ। हम दरबज्जेपर बैसल अकानै छी। जखन उक्खैरमे मुड़ी देलौं तखन मुसराक डर करब।"

बचनू भाइक बात सुनि सभकेँ भेलैन जे गारजनो अपना सबहक विचारसँ सहमत भऽ मानि लेलैन।

सभ समांगकेँ लगसँ हटला पछाइत बचनू भाय अपनाकेँ एकान्तमे पौलैन। एकान्तमे पबिते अपन उठौल डेगक प्रक्रिया दिस बचनूक नजैर दौड़लैन। पुरुख-महिला कहियौ कि मौगी-मरद आकि लड़का-लड़की दुनूक बीच लैंगिक सम्बन्ध होइत आबि रहल अछि, जेकरा-ले समाजमे ढीलसँ ढील आ कड़गड़सँ कड़गड़ नियम सेहो बनिते-मेटिते आबि रहल अछि मुदा जहिना एकहत्तैर रंगक धाह-बोखार आ उनचास रंगक हवा-बिहाड़ि होइए तहिना एहेन रोग समाजमे सैयो रंगक अछि। मुदा ऐठाम से नहि, मात्र एक रंगक रोगसँ मतलब अछि।

ओना अखन तक जे बचनू भाइक योजना छैन तइमे जँ समाजक सहयोगकेँ छोड़ि डेग बढ़ौल जाएत तँ ओ ओहने हएत जेहने बहैत पातर धाराकेँ माटिक ऊँचगर बान्ह बान्हि रोकि देल जाइ छै, एहेन उदाहरणोक तँ ढेरी अछिए...।

परिवारसँ आगू बढ़ि बचनू भाय पड़ोसीक दरबज्जापर पहुँचला।

रौतुका घटना–माने विलास आ भोगिया देवीक एरेस्टिंग–क चर्च तँ गाममे पसरले छल, मुदा बिनु जड़ि-मुड़ी बुझने घंघौजे केतेकाल चलि सकैए, जीतन काका चौक-चौराहाक हवा-पानि पीब दरबज्जापर आबि चुकल छला। मुदा मन झुझुआएले रहैन। झुझुआइक कारण रहैन जे आगूमे माने लगमे भुमकम भेल आ बुझियो ने पेलौं, जे किए भेल। बचनू भायकेँ दरबज्जापर देखते जीतन काका बजला-

"गामक की हाल-चाल बचनू?"

बचनू भाय बुझि गेला जे बैशाख-जेठक चिड़ै जहिना पानिक अभावमे पियासे लोल रगड़ए लगैए सएह गति जीतन कक्काक छैन। अखन जीतन काका घटनासँ पूर्ण अनभिज्ञ जकाँ बुझि पड़ै छैथ तँए जँ सही दिशामे सही ढंगसँ अपन बात कहबैन तँ जरूर सोलहअना नहि तँ आठोअना बिसवास करबे करता...।

बचनू भाइक मनमे पड़ोसीपनक कर्तव्य सेहो जगलैन। बजला-

"काका, गाम किए कहबै, अपन तँ टोले छी किने, जइ बीच घटना भेल अछि।"

जीतन काका बजला-

"एकरा के नकारत।"

बचनू भाय बजला-

"केहेन चालि-परकितक भोगियो देवी आ विलासो अछि से तँ अपनो सभ देखते छी। देखला पछाइत मुँह दबने छी ई दीगर बात भेल।"

बचनू भाइक बात सुनि जीतन काका ठमैक गेला। ठमकैक कारण भेलैन जे दस बर्ख पूर्व एहने कोनो बात बजला जेकर अनुचित हरजाना भरए पड़ल छेलैन...।

जीतन काकाकेँ ठमकल देख जहिना गाइयक बच्चा अपन माइयक थनमे मुहसँ उधका-उधका दूध अनैए तहिना बचनू भाय पड़ोसी समाज

जकाँ उधकबैत बजला-

"काका, अखन दुइये गोरे छी। एकसँ दू कियो तखन ने होइए जखन दुनूक पेटो आ पेटक विचारो एकसंग मिलैए। जइसँ विचार-धाराक जन्म होइए।"

बचनू भाइक विचारसँ जीतन काकाकेँ जेना सह भेटलैन तहिना अपनाकेँ सहियारैत बजला-

"बौआ बचनू, आब की समाज समाज रहल, कौआक समाज भऽ गेल। जे खेला-पीला पछाइत जखन पहिल साँझमे सभ एकठाम हएत तखन सभ अपनामे मुँहमिलानी करत जे आइ तक जे अधला केलेँ आकि अधला बचन बजलेँ से बजलेँ मुदा काल्हिसँ से ने कियो झूठ बजिहेँ आ ने झूठक कमाइ खइहेँ।"

मुस्की दैत बचनू भाय बिच्चेमे टोनलैन-

"मैनजनक बात सभ कौआ मानि लइए?"

गंभीर होइत जीतन काका बजला-

"एना धड़फड़ेने नइ ने हेतह। कहिते तँ छिअह।"

बचनू भाय अपन मुँह समटैत बजला-

"ठीक छै, जखन अहाँ बजैले कहब तखने बाजब। मुदा...।"

बजैक क्रममे जीतन काका रहबे करैथ, तँए मनमे शंका होइत रहैन जे बीचमे टोक-टाक भेलासँ रस्ता परहक खाधि कहियौ आकि बाट परहक बटमारि, विचारक लड़ीक कड़ी छुटि गेने रसमे थोड़ेक कमी तँ ऐबते अछि। जइसँ जेतेक मधुर बना जीतन काका अपन विचारक विन्यास परसए चाहै छला तइमे कमी बुझि पड़लैन।

बजला-

"मुदा-तुदा अखन किछु ने।"

ओना बचनू भाइक मनक इच्छा रहैन जे जेतेक खुलि कऽ जीतन

काकासँ गप-सप्प हएत तेतेक पेटक मिलानी सेहो हएत। मुदा अपना झोंके जीतन काका बाजि जाथि आ बीचक खाधि-खुधि हम बुझबे ने करी, आ जँ अन्त होइसँ पहिने जेहो किछु खाधि-खुधि भेटल रहत ओ जँ बिसैर जाइ तखन तँ ओ खाधि अपन जगह बनौनहि रहत किने...। मुदा फेर लगले बचनू भाइक मनमे उपैक गेलैन जे जीतन काका कोनो घटना विशेषक चर्च थोड़े कऽ रहला अछि, ओ तँ कौआक किस्सा कहि रहला अछि। तखन सरदर सुनैमे की लागत। कोनो कि ऐसँ सरदारी पनैप जाएत। बचनू भाय बजला-

"अच्छा हौउ काका, अहींक विचार रहल। मुदा हम सुनब आँखि मुनि कऽ, तेकरा अहाँ सुतल नइ बुझब।"

बचनू भाइक बात सुनि जीतन काकाकेँ मन गवाही देलकैन जे अखन भिनसुरका पहर छी, अखन नीनक बेर थोड़े अछि जे नीन आबि जेतइ। आँखियो मुनि कऽ जँ सुनत तहूमे कोनो हर्ज नहियेँ अछि।

जीतन काका बजला-

"जे कहलियह से पहिल प्रस्ताव, पहिल कौआक ने भेल, ओकरा की कोनो बोध छै जे कुल-खनदान बुझत आकि बाबा-दादाक मैनजनीपर विचार करत।"

'मैनजनी' सुनि बचनू भाय अपन आँखि खोलि जीतन कक्काक आँखि-पर-आँखि चढ़ौलैन। आँखि-पर-आँखि चढ़िते माघ मासक रौदक गरमी जहिना सूर्यसँ निकैल देहमे प्रवेश कऽ गरमबैए तहिना जीतन काकाकेँ विचारमे गरमी एलैन। गरमी पबिते जीतन काका अपन हाथक इशारासँ शान्त करैत आगू बाजए लगला-

"दोसर कौआ प्रस्ताव देलक जे एतबेसँ काज नइ चलत। जिनगी बड़ नमहर अछि। तँए ओ अपन प्रस्ताव जोड़लक जे ने अधरमी बनि समाजमे रहैक अछि, तइले ने अधरम काज करब आ ने अधरम बात-विचार करैक अछि जइसँ अधरम विचार जगत, आ ने अधरम बाट

चलैक अछि जइसँ अधरम रस्ता बनत।"

बचनू भायकेँ जेना रस भेटलैन तहिना बजला-

"विचारवान तँ जरूर रहबे करइ।"

मुस्की दैत जीतन काका बजला-

"बौआ, एना जे खोंट-खाट करबहक तँ कहैमे बड़ देरी लागत, मन ओतेक चैन अखन नइ अछि।"

बचनू भाय बजला-

"बड़ नीक! अहाँ कहैत चलियौ। जखन कहब जे भऽ गेल, तखन आँखि खोलब।"

जीतन काका बजला-

"ई भेल पहिल पहरक बैसारक विचार माने सौंझुका बैसारक गप। रातिमे जखन एक-एक नीन सुति कऽ सभ उठत, मनुख जकाँ नअ-दस घन्टाक नीन कौआकेँ थोड़े होइ छै, कौए-क नीन छी, जागल अछि कि सुतल से अपनो ने बुझैए। दोसर बैसार फेर केलक। दोसर बैसारमे पहिल प्रस्तावमे थोड़ेक संशोधन केलक जे पहिल प्रस्ताव अबेवहारिक जकाँ लगैए, तँए जे बेवहारिक होइ, ओ जोड़ा गेल।"

प्रस्ताव जोड़ब सुनिते बचनू भाय आँखि खोललैन। आँखिपर आँखि चढ़िते जीतन काका बजला-

"आब दुइये पहर राति बाँकी अछि तेकरा हाँइ-हाँइ कऽ सुना दइ छिअ। तेसर पहरमे जखन सभ एकठाम भऽ निचेनसँ विचार करए लगल तँ फेर प्रस्तावमे संशोधन करैत विचार केलक जे चारिम पहरमे भोर हएत, केकर कखैन नीन टुटतै से ठेकान अछि, तँए आब ओ बैसार नइ हएत। यएह बैसार अन्तिम छी, तँए रामराज्य जकाँ सभ स्वतंत्र छह, जेकरा जे मन फूरह से सएह करिहह।"

जीतन कक्काक खिस्सा अन्त होइत बचनू भाय आँखि तकलैन तँ

बुझि पड़लैन जे जीतन काका धारक पानि जकाँ बहि तँ नइ रहल छैथ मुदा जँ बहैतक संग बहौल जाए तँ बहता धारक संग जरूर बहैत चलता। जइसँ बचनू भाइक मनमे सवलताक आभास भेलैन। तहीकाल सुगिया काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। दुनू गोरेकेँ हाथमे चाहक कप पकड़बैत सुगिया काकी आगूमे ठाढ़ भेली। गामक घटना बुझैक उत्सुकता मनमे रहबे करैन। उत्सुकताक दू कारण छल, पहिल जे एकसंग मरद-औरतकेँ पुलिस पकैड़ लऽ गेल आ दोसर ई जे जखन पति विचारक बात करैत रहता तँ किए ने तखने दुनू गोरेक विचारमे अपन जे किछु कनी-मनी घटी-बढ़ी अछि ओकरा तेहल्ले लग एकरंग कऽ ली। ओना, जँ पति धियानी जकाँ कोनो धियान करैत होथि तखन यत्र-कुत्र चर्च करब नीक नहियेँ छी, मुदा अखन तँ से नहि अछि। तहूमे बचनूसँ पुछब केहेन हएत। एक तँ वेचारा तेहाला छी, दोसर पति-पत्नी जखन एकठाम छी तखन हुनकर विचार ने परिवारक विचार भेल।

सुगिया काकी बजली-

"चौक-चौराहापर गेल छेलौं, रौतुका घटनाक किछु भाँजो लागल?"

सुगिया काकीक बात सुनि जीतन काका सकपका गेला जे कोनो निश्तुकी बात तँ बुझल अछि नहि, जँ अखन तेहालाक सोझामे, अपना घरोमे बाजब तँ की ओ घरे भरि थोड़े रहत। तहूमे बुझले अछि जे 'यएह गुर खेने कान छेदौने' भेले अछि। माने ई जे अहिना पुरुख-औरतक बीचक गामेक बात छल, सुनलौं आ यत्र-कुत्र बजलौं। अन्तमे घटना लेन-देन भेने फरियाएल, बजलाहा दोखी भेलौं। जइसँ कान पकैड़ पनचैतीमे बाजए पड़ल छल। जे जे बजलौं से गल्ती भेल, आब एहेन बात कहियो ने बाजब।

जीतन काका पत्नी दिस तकैत बजला-

"काजक औगताइ तँ बेसी नइ ने अछि। जँ अछि ते जाउ, पछाइत

साँझू पहर सभ बात, खिस्सा जकाँ सुना देब। पहिने अखन दुनू बापूत विचार करै छी।"

ओना, सुगिया काकीकेँ काजोक धड़फड़ी रहैन मुदा बातो-विचार सुनैक इच्छा मनमे रहबे करैन तँए ठमकल ठाढ़े रहली।

बचनू भाय बजला-

"काका, हमरा जेते बुझल अछि ओते अहूँकेँ बुझल हएत आ गामक लोककेँ सेहो बुझले छै, मुदा तेतबे बुझने काज नहि चलत।"

ओना, बचनू भाय भविसकेँ नजैरमे राखि बाजल छला मुदा से बात ने जीतने काका बुझला आ ने सुगिये काकी।

सुगिया काकी बजली-

"ओना, दुपहर रातियेसँ जगलो छी आ गलो-गुल सुनै छिऐ। मुदा जगहपर अखन धरि गेलौं हेन नहि, माने विलासो ऐठाम आ भोगियो देवीक ऐठाम। किए तँ अगिलग्गी हुअ आकि मरण-जरण हुअ तइमे समाजक सभकेँ सभठाम जेबाक अधिकार अछिए जइसँ सभकेँ सभठामक रस्ता खुजले रहैए। मुदा थाना-पुलिसक जैठाम गप अछि, तैठाम बिनु बुझने डेगो उठाएब नीक नहियेँ हएत।"

सुगिया काकीक विचार बचनू भायकेँ नीक लगलैन। मुड़ी डोलबैत बजला-

"हँ से तँ नीक नहियेँ हएत, मुदा नीक-अधलाक विचार करैत नहियोँ जाएब नीक नहियेँ हएत।"

बिच्चेमे जीतन काका बजला-

"बचनू, तूँ चालू-पुरजा लोक छह। बेसी लोकक तरी-घटी तोरा बुझल छह, तँए तोरा जे बुझल छह से बाजह।"

जीतन कक्काक विचार बचनू भायकेँ जेते नीक लगलैन तेते शंको जगलैन। नीक ई लगलैन जे समाजमे एहेन समस्याक प्रति नजैर जगलैन,

तँए जगलकेँ जगाएब नीक हेबे करत। मुदा शंका ई अछि जे आन बुझह वा नहि बुझह मुदा अपने तँ बुझबे करै छी जे अखन गाम समाज दिस बढ़ि रहल अछि। जइमे अपने रणक्षेत्रमे छी। रणक्षेत्रक अपन सीमा अछि। जँ सीमाक उल्लंघन हएत तँ रणकौशलमे कमी-बेसी हएत। जइसँ धरती डगमगेबे करत। मुदा तैसंग एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे रणविद्या जीतन काका पचा सकता की नहि। जखने एकटा बात बाजब तखने ओइमे नोन-तेल मिला तेतेक बात जोड़ि देल जाएत जे रणभूमिये हेरा जाएत...।

अपनाकेँ समटैत बचनू भाय बजला-

“काका, उड़न्ती गप जहिना अहाँ सुनलिऐ तहिना हमहूँ सुनलौं। मुदा थाना-पुलिसक, कोर्ट-कचहरीक बात छी, तँए बिनु बुझने बाजबो तँ नीक नहियेँ हएत।”

बचनू भाइक विचारकेँ सूहकारैत जीतन काका बजला-

“हँ हँ! जइ काजमे जइ घाटक पानिक जरूरत हुअए, ओइ काज-ले ओही घाटक पानि आनब नीक। गंगा तँ एके छी मुदा किए ओइमे मगैहिया घाट अछि।”

जीतन कक्काक विचार सुनि बचनू भाय मुस्कियेला। बचनू भाइक मुस्की देख सुगिया काकीक मनमे खुशी भेलैन जे पतिक विचार बचनू भाइक विचारसँ ऊपर चढ़ि रहल अछि। बजली-

“बड़ बेस।”

सुगिया काकीक ‘बड़ बेस’ सुनि जीतन कक्काक मन चपचपेलैन। चपचपाइते नजैर-मे-नजैर मिलबैत बजला-

“बुढ़ भऽ गेलौं आ अखनो तक गामक लोककेँ नइ चिन्ह सकलिऐ! भरि दिन फुसि-फटकमे सभ कौआ जकाँ उड़बो करैए आ चौक-चौराहापर कँए-कँए सेहो करिते अछि।”

बचनू भाय बजला-

“काका, दुपहरमे थानापर जाएब आ साँझ तक घुमब। खुशीलालकेँ कहि देने छिऐ जे सौंझुका चाह तोरे ऐठाम पीबह। तँए अहूँकेँ ओतुक्के चाहक नौतो भेल आ थानाक गपो-सप्प सुना देब। किए तँ जहिना हम हमहीं भेलौं आ अहाँ अहीं भेलौं तहिना खुशीलालो तँ खुशीलाले भेल, मुदा जखने तीनू गोरे एकठाम हएब तखने ने समाज भऽ जाएब।”

◌

शब्द संख्या : 2450, 03 अक्टुबर 2017

7.

जीतन कक्काक ऐठामसँ बचनू भाय आबि अपना दलानक चौकीपर बैस गामो दिस हियाबए लगला आ थाना दिस सेहो। समयपर कोनो काज करबे काजक सगुन होइए। मुदा ओ सगुन बनैए केना, ई निर्भर करैए अपन-अपन विचार आ जीवनक क्रिया-कलापपर। सभ बेकती स्वयं अपन निर्माणकर्ता होइए। थानापर नइ गेने, काज गड़बड़ हएत। आन जे गड़बड़ हुअए वा नइ हुअए मुदा एते तँ बुझले अछि जे गाम-घरसँ लोककेँ थाना पकैड़ कऽ लऽ जाइए आ लेन-देन केने छोड़ि दइए।

ओना, दस बजेमे कोर्ट-कचहरी खुजैए तँए ओतेकाल थानामे रहबे करत। मुद्दालहक संग केसमे जान फूकब सेहो अछिए। ओहू वेचारे सभकेँ–माने थानेदार-पुलिसकेँ–रौतुका जगरना सेहो छैन्हे। तँए दस बजेसँ पहिने जाएब नीक नहि। तैबीच ईहो हेबे करत जे चारू दिससँ पर-पैरवी सेहो हेबे करत। जहिना एरेस्ट भेला पछाइत समाचार पसरैमे तीन-चारि घन्टा लगिये जाइए तहिना थानासँ कोर्ट गेला पछाइत बीचक समयमे ईहो पसरिये जाएत जइसँ थानोक भीड़ छँटत। तँए नीक हएत जे दू बजेक पछाइत जाएब। गाड़ी-सवारीक जुग भेल, तीन-चारि घन्टा समय काजक बहुत भेल।

थानासँ निसचिन्त भेला पछाइत बचनू भाइक नजैर परिवारपर

एलैन। परिवारोक ओगरवाही अखन जरूरी अछिए। गाममे ने कनफुक्का सबहक कमी अछि आ ने कनसुन्नी बुझनिहारक कमी अछि...। ऐठाम अबैत-अबैत बचनू भाइक मन जेना हुमरलैन। हुमरलैन ई जे गामक जे समस्या अछि ओकरा गौँआँ बैस निराकरण करह। एक दिस जइ वृत्तिकेँ प्रतिष्ठाक प्रश्न बनौने अछि, जेकरा इज्जत-धरम सभ कहल जाइए, ओकर प्रतिष्ठा केना बनल रहत तेकरा अगुआबह। लगले ‘धिया-पुताक खेल’ आ लगले ‘जुगक खेल’ कहनेटा सँ नइ ने हएत। समाजमे एहेन-एहेन रोग–माने पुरुख-नारीक बीच लैंगिक सम्बन्ध–सँ अनेको रोगाह अछिए। खाएर जे अछि, मुदा जइ काजमे डेग बढ़ेलौं ओइ काजसँ पाछू नइ हटब। समाज बुझह सेहो बाह-बाह, नइ बुझह सेहो बाह-बाह, ओ समाज जानह।

अपन छोट भाएकेँ बचनू भाय कहलखिन-

“बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह तँ ने औगता कऽ किछु बजिहह आ ने केकरोसँ झगड़ा करिहह।”

सुरेश बाजल-

“भैया, कियो जँ आँखि देखौत ते की ओकरा छोड़ि देबइ?”

मुस्की दैत बचनू भाय बजला-

“जहिना तूँ बुझै छहक जे ओकर आँखि फोड़ि देबइ तहिना ने ओहो तोहर आँखि फोड़ि देतह।”

मुस्की दैत सुरेश बाजल-

“यएह ने पेंच छी भैया, जे आँखि फुटने लोक आन्हर होइए आकि डिठगर माने नइ देखैबला होइए आकि देखैबला होइए, सएह नइ बुझै छी।”

सुरेशक बात सुनि बचनू भाइक मन गद-गदा गेलैन मुदा बजला किछु ने। बचनू भायकेँ चुप देख सुरेश नहाइले विदा भऽ गेल।

तैबीच पत्नीकेँ शोर पाड़ि बचनू भाय बजला-

"देखू, गाममे अखन किछुसँ किछु भऽ सकैए, तँए औगुता कऽ ने किछु बाजब आ ने किछु करब। ओना, दू बजे तक हमहूँ छीहे।"

बचनू भाइक परिवारमे सभकेँ बुझल रहबे करैन। तँए हवा-बिहाड़िक बातक कोनो असर नहियेँ होएत मुदा समाजो तँ समाजे छी किने, जहिना नटकिया लोकक कमी नइ अछि तहिना फटकिया लोकक कमी सेहो नहियेँ अछि। जखने नटकिया-फटकिया एकठाम हएत तखने ने झटकिया शुरू भाइये जाएत। जखने झटकिया हएत तखने समाज दलमलेबे करत। जखने समाज दलमलाएत तखने दल बनि दलदल करबे करत।

तही बीच दू डिब्बा बिस्कुट नेने खुशीलाल पहुँच गेल।

आगूमे भौजीकेँ देख खुशीलाल बाजल-

"भौजी, गोड़ लगै छी।"

कहैत दुनू डिब्बा बिस्कुट भौजीक हाथमे दिअ लगलैन मुदा तइ बिच्चेमे भौजी बजली-

"एतै बिस्कुटक डिब्बा रखू, चाह बनौने अबै छी। अपनो दुनू भाँइ खेबो-पीबो करब आ धियो-पुतो सभकेँ दऽ देबइ।"

पत्नीकेँ चरियबैत बचनू भाय बजला-

"जाउ, गीताकेँ कहि दियौ चाह बनौने औत आ अहाँ अहीठाम आबि गप-सप्प सुनू।"

पतिक बोलकेँ बुधनी भौजी आदेश बुझि दरबज्जापर सँ आँगन पहुँच बेटी–गीता–केँ कहलखिन-

"बुच्ची, जल्दी चाह बना लेब तँ बिस्कुटक संग खुआ देब।"

गीता बाजल-

"कोन बिस्कुटक संग?"

बुधनी भौजी-

"कलकतिया बिस्कुट।"

कहि चोटे आँगनसँ घुमि बुधनी भौजी दरबज्जापर पहुँचली। ओना, गीता चाह बनबए विदा भऽ गेल मुदा बिस्कुटक नाओं सुनि चाह बनबैक प्रक्रियामे चीनीक मात्रा लग आबि ओहिना घुरियाए लगल जहिना सुकुमार लत्तीक मुड़ी कोनो छोटो-छीन वा दुबरो-पातर बाधासँ धुरिया जाइए। बी.ए. पार्ट- वनक छात्रा गीता, मने-मन यएह ने तँइ कऽ पाबि रहल छल जे चाहमे केतेक चीनी देब! चाहो तँ चाह छी जेकर अनेको रूप छइ। एक गिलास पानि पीलाक पछातिक चाह आ नमकीन बिस्कुटक संग खाइबला चाहमे एके रंग चीनी केना पड़त? ओना पानि पीला पछातिक चाहक सम्बन्ध 'पीला'क होइए, मुदा बिस्कुट संग चाहक सम्बन्ध 'खेला'क भऽ जाइए। तैसंग ईहो तँ प्रश्न अछिए जे कोन चाहमे केतेक चीनीक खगता अछि। चाहपत्तीक तीतपन कटै दुआरे आकि सुगन्धित शरबत बनबै दुआरे चीनी पड़त? आ तहूमे जँ मीठहा बिस्कुट हएत तखन केतेक चीनी देब...। गीताक मन अक्छाए लगल। तैबीच चाहो खौल गेल। हाँइ-हाँइ कऽ आने दिन जकाँ कपमे चीनी दइत गीता चाह छानि लेलक।

दरबज्जापर चाह नेने गीताकेँ ऐबते देख खुशीलाल बाजल-

"भाय, तीन साल पहिने जइ गीताकेँ देखने छेलिऐ ओ तँ तीनियेँ बर्खमे बदैल कऽ सियान भऽ गेल।"

बचनू भाय बजला-

"हँ से तँ भाइये गेल मुदा परिवारो तँ एकटा नमहर काजक ओझरीमे पड़िये गेल अछि।"

खुशीलाल-

"से की भाय साहैब?"

खुशीलालक बात सुनि अपन करैत वृत्तिपर जेना बचनू भायकेँ ग्लानि हुअ लगलैन। ग्लानि ई हुअ लगलैन जे जइ समाजक बीच रहै छी

ओइ समाजमे विचारक रूपे बदैल गेल आ बीचमे करैत-धड़ैत अपनो मुँह तकिते रहि गेलौं। माने ई जे जइ समाजमे दहेजकेँ प्रतिष्ठाक आदर्शसँ बाहर मानल जाइ छल माने अप्रतिष्ठित काज बुझल जाइत छल, ओ दहेज आइ प्रतिष्ठाक आदर्श बनि समाजमे अपन श्रेष्ठता बना लेलक अछि। जइसँ जइ परिवारकेँ जेते बेसी दहेज भेटै छै ओ परिवार ओतेक प्रतिष्ठित अपनो बुझैए आ समाजो मानए लगलै हेन। मुदा अपनाकेँ, कौआक लोलसँ उजारल खढ़क घरकेँ जहिना लोक झाँपैन दइए तहिना अपनाकेँ झँपैत बचनू भाय बजला-

"रंग-बिरंगक तमाशा सभ समाजमे आइये नहि, सभ दिनेसँ चलैत आबि रहल अछि आ अखनो चलिये रहल अछि।"

खुशीलाल-

"से की भाय साहैब?"

बचनू भाय-

"देखै नइ छहक जे केहेन बरह-रूपिया रूप समाज पकैड़ नेने अछि।"

बंगालक प्रवासक दौड़मे खुशीलाल अनुभव कऽ नेने छल जे समाजमे तेहेन अलंकारिक शब्दक प्रयोग होइए जे कामनाक जड़िकेँ खोइध दइए। जइसँ शब्देक जाल तेना पसैर कऽ पसाही लगा देने अछि जे किछु थाहे ने पबै छी। बेटी-बहिनकेँ शिक्षा दियौ माने पढ़ाउ। सतरह-अठारह बर्खक शिक्षा पेब जखन ओ बिआह करै-जोकर होइए। जेते अहाँ पढ़ैमे खर्च केलौं तेकर एको पाइ हिसाब नइ होइए आ ओइसँ बेसी रूपैआ दहेजमे खर्च कऽ ओकर बिआह करू। जँ अहिना परिवारक विघटन होइत रहत तखन केना परिवारक संघटन हएत? ओना, विचारक क्रममे बचनू भाइक मन वौआ रहल छेलैन, मुदा समयपर सेहो ठेकान रखनहि छला। मनमे उठलैन- अखन अनेरे आन-आन समस्यामे ओझराएब समयकेँ नष्ट करब हएत। तँए जे सामनेक समस्या अछि, तइ

विषयमे किए ने गप-सप्पकेँ उठाबी। बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, दू बजे थानापर जाएब अछि।"

अपन बुझल विचारकेँ बचनू भाय अखन नइ खोलब नीक बुझलैन। गाम डगमगा रहल अछि तैबीच कोनो एहेन लुत्ती ने उड़ि जाए जे होत-सँ-होतांग भऽ जाए। तँए एतबे बाजि बचनू चुप भऽ गेला।

खुशीलाल बाजल-

"भाय साहैब, आब तँ हमहूँ गाम एलौं। जँ जरूरी–माने थानापर जाइमे–हुअए तँ हमहूँ चलब।"

अपन आगू-पाछूक हिसाब जोड़ैत बचनू भाय विचारलैन जे अखन असगरे चलब नीक हएत। ऐ दुआरे जे थाना-पुलिस छी जखने एकसँ दूक संग जाएब तखने रस्ता-पेराक लोक बुझत जे किछु खास बात अछि। गाममे चहल-पहल अछिए। बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, तोरा ते हम छोट भाए बुझि आशा बन्हनहि छी। तीन सालक पछाइत गाम एलह अछि, तोरा संग गेने लोककेँ अनेरे केतेक रंगक शंका मनमे दाबत। तँए अखन असगरे जाएब नीक हएत।"

बचनू भाइक विचारकेँ खुशीलालक मन नीक जकाँ मानलक जे एक तँ नव-नव घटना भेल अछि, तइमे अपनो नव-नव गाम एलौं अछि। तहूमे बचनू भाय थानासँ आबि जखन साँझुका चाह पीबैले एबे करता, तखने सभ बात किए ने बुझि लेब। खुशीलाल बाजल-

"अखन जाइ छी, फेर साँझमे भेँट हेबे करब किने?"

मुस्की दइत बचनू भाय बजला-

"एँह, भेँट केतौ नइ दिअ। असगरे किए, जीतन काका सेहो रहथुन। हुनको नौत दइये देने छिऐन।"

खुशीलालकेँ गेला पछाइत बचनू भाय अपन चलैक रस्ताक विचार करए लगला। गाममे थाना-पुलिसक आगमन भेल अछि। आन जहिया

बुझत से बुझत मुदा थानो आ मात्रिकोक लोक तँ बुझिते अछि जे बचनूक हाथ ऐमे छइहे। तँए आन राही-बटोहीक रस्ता-बाट तँ अपन नइ हएत। एक करताइतक रूपमे छी। तँए चारू दिस चकोना तँ हुअ पड़त। ओना, अखनो गामक अपन परिवार छोड़ि कियो ई नहि बुझि रहल अछि जे बचनू ऐमे पील कऽ पड़ल अछि। भेल तँ, गामक लोकक़ेँ बुझले ने छैन आ अनगौंआँ सहजे सुनला पछातिये ने बुझता। थाना सेहो थने छी, ओहो की परचा-पोस्टर छपा रोडपर टाँगत सेहो तँ नहियेँ अछि।

मनमे थानाक काज ऐबते बचनू भाइक मन आगू छड़ैप गेलैन। आगू छड़ैपते मुँह बुदबुदेलैन-

“बधाइक पात्र थानाक बड़ा बाबू छैथ। अखन तक जेते देखलौं तइमे जहिना बड़ाबाबू विचार देलैन तहिना करबो केलाह, तँए नीक हएत जे हुनका डेरापर पहुँच परिवारक बीच जँ अपन कृतज्ञता प्रगट करी तँ परिवारजनक मन सेहो जुड़ेतैन।”

विचार केला पछाइत बचनू भाइक मन बिहुसि उठलैन। मनकेँ बिहुसिते मुँह खिलए लगलकैन। खिलखिलाइत मुहसँ अनायास निकललैन-

“तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे जइ सहोदर भाए वा बेटाकेँ पेटक पालनसँ देहक पालन करैत पढ़ा-लिखा सम्पन्न बनबै छी ओहो कहैए जे अहाँ की केलौं! जखन घरेमे एहेन लीला अछि तखन गाम-समाज तँ गाम-समाज छी! केकरो मुँह छै तँ नाँगैर नहि, आ केकरो नाँगैर छै तँ मुँह नहि! तहूसँ तँ टपल तँ ई अछि जे गाछ जकाँ सिरो तँ नहियेँ छइ। गाछक सिर धरतीक माटिमे सटल रहैए आ मनुखक सीर अकास दिस उठल रहैए जइसँ केकरो धड़ छै तँ घर नहि, आ केकरो घर छै तँ धड़ नहि! खाएर जे छै से की कोनो आइये भेल आकि सभ दिनसँ अहिना वंशक बँसवाड़िये रहल अछि...।”

अढ़ाइ बजे बचनू भाय बड़ाबाबू–थाना प्रभारी–क डेरापर

पहुँचला। सुति-उठि कऽ बड़ाबाबू कलपर मुँह-हाथ धोइत रहैथ आ पचहत्तैर-छिहत्तैर बर्खक हुनकर माए डेराक ऐगला ओसारक चौकीपर असगरे बैसल रस्ते दिस देखै छेली।

चारि भाँइक भैयारीमे बड़ाबाबू छोट भाए, पिताकेँ मुइला पछाइत चारू बेटाक बीच माए छोट बेटाक सिनेहे जिनगीक शेष समय हुनके संग–माने छोटे बेटाक संग–अपन विचारे सूहकारि नेने छेली। बड़ाबाबूक बेटा-बेटी स्कूल गेल छेलैन तँए डेरामे मात्र तीनियेँ गोरे–माइक संग बेटा-पुतोहु–रहैथ।

ओसारपर चढ़ि बचनू भाय माएकेँ दुनू हाथे पएर पकैड़ गोड़ लगलैन। सुभावी अपन सुभावे दुनू हाथ बचनूक माथपर दैत बजली-

“भगवान नीक करैथ, बैसू।”

चौकीक एक कोणपर बचनू भाय बैसला। तैबीच गमछासँ मुँह-हाथ पोछैत बड़ाबाबू सेहो पहुँचला। माए-बेटाक संग तेहालाकेँ बीचमे बैसल देख बड़ाबाबूक पत्नी खिड़कीए-सँ हियासि चाहक ओरियानमे लगि गेली।

बड़ाबाबूकेँ ऐबते दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत बचनू भाय बजला-

“अपनेक उपकारकेँ हम जिनगीमे नइ बिसैर आभारी जरूर बनल रहब।”

बेटाक कृतिक वृत्ति सुनैक जिज्ञासा सुभावीक मनमे उठलैन। जे बेटाक मुहेँ नहि, बचनू भाइक मुहेँ सुनए चाहली।

बड़ाबाबू अखन अपनाकेँ थानाक प्रभारी नहि माइक सोझ छोट बेटा बनि बैसल छला, तँए माइक विचारमे हस्तक्षेप करब नीक नहि बुझि रहल छला। एमहर बचनू भाय अपन मनक विचारक तेकठमे पड़ि गेला। अपन गामक समस्याक सम्बन्धमे बुझैले आएल छैथ आ सुभावीक प्रश्न दोसर मोड़क भऽ गेलैन। मुदा विचारकेँ सेरियबैत बचनू भाय बजला-

“सर, अपने तँ रातिमे कमाल कऽ देलिऐ!”

बेटाक ‘कमालपन' सुनि सुभावीक हृदय सहस्त्र कमल जकाँ मनक तलावमे खिल उठलैन। बेटाक कर्मक बिसवाससँ सुभावीक खिलखिलाइत मनमे उठलैन जे जे बेटा अनका-ले कमाल करत ओ माए-बापकेँ थोड़े छोड़ि देत! तही बीच पुतोहु चाह नेने लगमे पहुँचलैन।

सासुक मुस्कियाइत मुँह देख पुतोहुकेँ टकटकी लगि गेलैन जे बेटाक कोन कमाइक अर्जन हाथ लगलैन जे एहेन मुस्कीक टुसी छैन...।

चाह नेने ठाढ़ भेल पुतोहुकेँ देख सुभावी बजली-

“पहिने, बच्चा सभकेँ दियौ।”

‘बच्चा’ सुनि पुतोहु दुनू गोरेक हाथमे चाह धड़ा अपने कोठरी दिस चोटे घुमि गेली।

बड़ाबाबू बजला-

“बचनू बाबू, जखने दुनूकेँ थानापर अनलौं कि तखनियेँ अपन ऑफिसमे बैस जहल तकक काज समेट लेलौं।”

बचनू भाय-

“सर, नीनवासलमे कोनो गड़बड़ ने ते भेल?”

मुस्की दैत बड़ाबाबू बजला-

“काजक दौड़ नीनकेँ खिहारि-खिहारि ठेलि अपन दौड़ बना लइए।”

बचनू भाइक मुहसँ निकललैन-

“बाह-बाह। अपने तँ सहोदरो भायसँ बेसी संग देलौं!”

बड़ा बाबूक मनक बखारी जेना खुजि गेलैन तहिना बजला-

“बचनू बाबू, जखन विचार करै छी तँ अपन कोनो अधिकार नइ देखै छी, बस एतबे जे कोर्ट तक पहुँचा सकै छी। लगलो जमानतपर छुटि सकैए आ छह मास जहलमे रहियो सकैए। तँए ऐसँ बेसी हम काइये की सकै छी। ओना, बहुत पैरवीकार एहेन जरूर पहुँचला जे घन्टा-दू-घन्टा

थानापर रोकि गप-सप्प करए चाहै छला, मुदा जहिना सभ स्टाफ सभकेँ लिखित ड्यूटी देने छेलिऐ तहिना निमाहलक। अपने तँ सबेरे ऑफिस छोड़ि क्षेत्र पकैड़ नेने छेलौं।”

बचनू भाय-

“पैरवी करए के सभ आएल छला?”

बड़ाबाबू-

“ओ सभ नइ पुछू। मुदा अहाँकेँ ई जरूर कहब जे समाजक एहेन जड़ समस्याकेँ समाजक बीच आनि निर्णय करू। आइये नहि, सभ दिनसँ एहेन रोग समाजक कोढ़-करेजकेँ कचैड़-कचैड़ खाइत रहल अछि। तँए हमर शुभकामना जे जहिना समाजमे एहेन-एहेन रोगक समाधान-ले ठाढ़ भेलौं तहिना ठाढ़ भेल निमाहब।”

दुनू हाथ जोड़ि बचनू भाय उठि कऽ ठाढ़ भेला। तैबीच बड़ाबाबू सेहो अपन कपड़ा पहीरि संगे डेरासँ दुनू गोरे थाना दिस विदा भऽ गेला।

◌

शब्द संख्या : 2040, 07 अक्टुबर 2017

8.

कोर्ट-कचहरीक सभ टोह-टाह लगबैत बचनू भाय छह बजे घरपर पहुँचला। परिवारोजनकेँ जिज्ञासा रहबे करैन जे ऐगला समाचार–कोर्ट-कचहरीक–कखन सुनब। ऐबते बचनू भाय कुरता निकालि चौकीपर रखि कल दिस हाथ-पएर धोइले विदा भेला आ पत्नीकेँ शोर पाड़ि कहलकैन-

"कनी सुनि लेब?"

दरबज्जासँ आगू बढ़ि पत्नी बजली-

"जाबे अहाँ हाथ-पएर धुअब ताबे हम चाह बना दइ छी।"

तैबीच बचनू भाए हाथ पएर धोइ कऽ दरबज्जा दिस बढ़ैत सुरेशकेँ सेहो शोर पाड़लैन-

"बौआ, कनी सुनि लिहह।"

लगले सुरेश आबि बचनू भाय लग ठाढ़ भेलैन।

ठाढ़े-ठाढ़ बचनू भाय दुनू गोरे सुरेशक संग पत्नीकेँ सुनबैत बजला-

"दुनू जहल गेल।"

पत्नी बिच्चेमे टभैक गेली-

"जहलक गेटपर दुनूसँ भेँट नइ कऽ लेलिऐ?"

पत्नीक मुहसँ 'भेँट करब' सुनि बचनू भाइक मन जेना कड़ैक गेलैन मुदा जहिना गहुमन साँप अपन बीखकेँ पचौने रहैए तहिना बचनू भाय

सेहो अपन क्रोधकेँ मनेमे पचबैत बजला-

"एहेन पतित हम नइ छी। जेकरासँ माने जइ विचारसँ घृणा केलौं, आ जँ कियो घृणित काज करत तँ ओकरासँ घृणा करबे करब। जेकरा दुश्मन जकाँ जहल पठेलिऐ तेकरासँ भेँट करितिऐ!"

पत्नीपर बिगड़ब सुनि बचनू भायकेँ सुरेश कहलकैन-

"भैया, ऐ सभ-ले मनमे तामस नइ करू। जखन परिवारमे सभ छीहे तखन बात-विचार करैत चलू। अहाँ काजमे अगुआएल छी, जेना जे होइ सभकेँ कहैत चलियौ।"

बचनू भाय, पत्नीकेँ दोखी बुझैत बजला-

"बौआ, तोहीं कहह, ओकरा दुनूसँ भेँट करब केहेन होइत?"

सुरेश-

"समझदार-ले अधला होइत मुदा नासमझदार-ले अधलो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।"

बचनू भाय कुरता रखि, गमछा देहपर लेलैन आ खुशीलाल ऐठाम विदा भेला। ओना, जीतन काका सेहो चाहक नौत सुनि खुशीलाल ऐठाम पहिनहि पहुँच गेल रहैथ। पहुँचैक कारण मनमे थानाक समाचार सुनैक जिज्ञासा छेलैन आकि कलकतिया चाह पीबैक से तँ जीतने काका जनता। घरसँ निकैलते बचनू भाइक मन खुशीलाल ऐठामक चाहपर पहुँच गेलैन- दू बेकती नौतहारी भेलौं, जँ कहीं जीतन काका पहुँचैमे बिलम केलैन तँ अपनो ओहने नौतहारी बनि जाएब जहिना बिआहक बरियातीमे जाबे बर नइ दरबज्जापर पहुँचल रहैए। गमैया नौत छी, रंग-रंगक भोज-भात होइते अछि। कोनो भोज ओहन होइए जइमे भानस होइसँ पहिनहि नौतहारी पहुँच जाइए आ कोनो भोज एहनो तँ होइते अछि जे नौतहारीक कमीसँ भोज्य-पदार्थ दुरि भऽ जाइए। माने ई जे समाजक समस्याकेँ जे जइ हिसाबे बुझैए ओ ओहने तत्परो रहैए।

भोजपर सँ बचनू भाइक मन आगू बढ़ि लत्ती-फत्तीपर पहुँच

गेलैन। लत्तीए-फत्ती जकाँ ने समाजो अछि आ समाजक समाज सेहो तँ अछिए। जहिना कोनो लत्तीक नमहर फड़ भेने लत्ती-फत्ती कम चतड़ैए आ छोट फड़ भेने बेसी चतड़ैए तहिना समाजक काजो अछि। मुदा ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे एहेन कोनो लत्तीए ने अछि जे बेसी चतड़बो करैए आ नमहर फड़ो होइते अछि। खुशीलालक ऐठाम जीतन काकाकेँ बैसल देख बचनू भाय पहुँचते बजला-

"काका, हमरा तँ होइ छल जे नौत सुनि अहाँ भाँग-ताँग पीबैमे अबेर कऽ देब, मुदा...।"

बचनू भाइक टोकारा सुनि जीतन काका बजला-

"बचनू, चारिये बजेसँ तोहर भाँज-भुँज लगबै छेलौं जे बचनू थानापर सँ आएल कि नहि। मुदा जखन तोरा कलपर हाथ-पएर धोइत देखलियह तखन हमहूँ हाँइ-हाँइ कऽ माल-जालकेँ घर करैत, घूर सुनगा हाथ-पएर धोइ विदा भेलौं।"

बचनू भाय-

"केते काल एना ऐठाम भेल हएत?"

जीतन काका-

"बस बैसलौं हेन कि तोहूँ एलह।"

तैबीच खुशीलाल प्लाष्टिकबला छोटकी कपमे चाह नेने पहुँच बाजल-

"भाय साहैब, ताबे मुँह छोहैन करैले ई चाह पिआबै छी। नाश्ता सेहो तैयार होइए पछाइत मनगर चाह पीआएब।"

बिच्चेमे जीतन काका बजला-

"एक बेर हमहूँ कलकत्ता घुमै-फिड़ैले गेल रही ते ओइठाम देखलिऐ जे कुम्हारक बनौल कनीए-कनीए-टा फुच्ची जकाँ माटिक बनौल भाँरीमे बेसी लोककेँ चाह पीबैत। एकटा दोकानपर हमहूँ चाह

पीलौं ते ओही फुच्चीमे चाह देने रहए।"

जीतन कक्काक बातकेँ सम्हारैत खुशीलाल बाजल-

"काका, दोकाने किए कहै छिऐ, ओइठाम परिवारो सभमे ओही भाँड़ीक चलैन अछि।"

कहि खुशीलाल आँगन गेल। आँगनसँ दूटा प्लेटमे नमकीन आ बिस्कुट नेने आबि दुनू गोरेक आगूमे रखि देलक।

नास्ता देख बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, बेसी लटारममे नइ पड़ह। सौंझुका पहर छी, गप-सप्पमे बेसी समय लगि जाएत।"

नास्ता-चाह करौला पछाइत लगमे बैस खुशीलाल बचनूकेँ पुछलकैन-

"बचनू भाय, थानाक की हाल-चाल अछि?"

बचनू भाय बजला-

"नीके अछि। भने आब सभ एकठाम बैसलौं, तँए जड़ियेसँ सभ बात कहै छिअ।"

बिच्चेमे जीतन काका बजला-

"मारियो-तारियो दुनूकेँ लागल की नहि?"

जीतन कक्काक बात सुनि बचनू बजला-

"हमरा पहुँचैसँ पहिनहि दुनूकेँ–माने विलासो आ भोगियो देवीकेँ–थाना चलान कऽ पठा देने छल, तँए से नइ देखलिऐ। ओना, थानापर गेबो ने केलौं जे कोनो सिपाहियोसँ पुछितिऐ। बड़ाबाबूक डेरेपर गेलौं आ ओतइ सभ बात बुझलौं।"

'बड़ाबाबूक डेरा' सुनि खुशीलाल बाजल-

"डेरापर तँ सभ गप भेल हएत किने?"

बचनू भाय-

“एँह की पुछै छह। संजोगो नीक भेटल। अपने बड़ाबाबू सुति उठि कऽ कलपर मुँह-हाथ धोइ छला आ डेराक ऐगला ओसारक चौकीपर हुनकर माए बैसल रहथिन। पहुँचते बुड़हीकेँ गोड़ लगलयैन। दुनू हाथे माथ ठोकि बुड़ही मनसँ असिरवाद दइत बजली- ‘भगवान अहिना सभ दिन हँसी-खुशीसँ राखैथ।’ ओना, बड़ाबाबू सेहो कलपर सँ देखैत रहैथ। असिरवाद दइत आगूमे बैसैले माताराम कहली। चौकीक कोणपर बैसलौं। तैबीच बड़ाबाबू सेहो आबि बैसला।”

बिच्चेमे खुशीलाल पुछलकैन-

“तखन तँ भरि मन गप-सप्प भेल हएत?”

बचनू भाय बजला-

“भरि मन की गप-सप करितौं। तखन तँ जइ काजे गेल छेलौं से तँ भेबे कएल। जेना-जेना बड़ाबाबू केने छला से सभ बात कहलैन। सभ बात सुनि, चाह पीब ओ थाना दिस बढ़ला हम गाम दिस विदा भेलौं।”

जीतन काका-

“रस्तामे कियो गौंओ-घरूओ भेटलखुन?”

बचनू भाय-

“नइ, कियो ने भेटला। जखन कोर्ट लग एलौं तखन थानाक चारिटा सिपाही, जे रातिमे दुनूकेँ पकड़ैले आएल छल, कचहरीक काज समहारि चारू बेकती जखन आपस जाइ छल कि रस्तापर भेँट भेला। पुछलयैन- ‘की हाल-चाल सिपाही साहैब?’ ओना चारूक चेहरा थोड़ेक मलिन जरूर बुझि पड़ल, किए तँ एक तँ रौतुका जगरना तैपर भरि दिन कचहरीसँ जहल तकक दौड़-धुप करैत थाकि सेहो गेले छला। मनमे भेल जे चारू गोरेकेँ भरि पेट जलखै करा दिऐन। मुदा लगले भेल कोर्ट-कचहरी छी, जँ कियो चिनहरबा दोगो-सान्हिसँ देख जाएत तँ ओ चुगली करबे करत। तइसँ नीक जे किए ने जलखैयो आ चाहो-पानक खर्च कातमे लऽ जा कऽ दऽ दिऐन। सएह केलौं। दू साए रूपैआ चारू गोरेमे

दऽ देलिऐ। जे छिऐ से ओहो वेचारा सभ खुशी होइत एकटा दोकानमे गेल आ हमहूँ घरमुहाँ भेलौं।”

बंगालक पैदाइसी नव-निरमित खुशीलाल बचनू भाइक बात सुनि किछु गम्भीर होइत बाजल-

“भाय साहैब, मुद्दा (समस्या) आन गामक छी, तखन?”

‘तखन’ कहि खुशीलाल चुप भऽ गेल आ बचनू भाइक मनक टोह लिअ लगल।

ओना, बचनू भाइकेँ गड़ भेट गेल छेलैन मुदा मनमे भेलैन जे सोझे प्रश्नोत्तरी केलामे रक्का-टोकीक सम्भावना सेहो रहैए तँए नीक हएत जे प्रश्नक उत्तर बेवहारिक रूपमे पारवेशिक बखान करब बेसी नीक हएत। समाजमे छी, नान्हि-नान्हिटा खैंक, नान्हि-नान्हिटा काँट जहिना देहाग्रकेँ सड़ैन कऽ दइए तहिना समाजोमे नान्हि-नान्हिटा विचारक खोंट समाजकेँ सड़ैन करैत रहैए। समाजमे एहेन कंटक विचार नइ आबए ई तँ समाजेक ने दायित्व भेल, माने अपने सबहक दायित्व भेल किने।

एकटा उदाहरणक संग अपन विचार रखैत बचनू भाय बजला-

“अखन अपना सभ ‘मधुबनी जिला’क बासी छी, मुदा जखन मधुबनी ‘जिला’ नइ बनल छल तखन अपनो सभ ‘दरभंगे जिला’क बासी छेलौं। तँए अपने जिलाक बात बुझहक।”

मधुबनी-दरभंगा जिलाक नाओं सुनि जीतन काकाकेँ सेहो एकटा अपन जिनगीक देखल घटना मन पड़लैन। बजला-

“बौआ खुशीलाल, तोहर तँ उमेर कम छह उन्नैस साए बहत्तैर इस्वीक पछाइतिक जन्म भेल छह तँए मधुबनिये जिलाक कोर्ट-कचहरी देखै छहक। मुदा सड़कक कातक जे पँचकठबा खेत देखै छह ओ दीपबलासँ कीनलौं। ओकरा लिखबैले बहेरा रजिष्ट्री ऑफिस गेल रही। ओही ऑफिसमे मणिपद्मजीक पिता सेहो कार्यारत् रहैथ, जे बहेरा अखन दरभंगा जिलामे पड़ैत अछि।”

जीतन कक्काक विचारमे बचनू भायकेँ सेहो कनियेँ सह भेटलैन। सहटैत बजला-

“तेतबे किए कहै छिऐ काका?”

अँड़पेन देल बछबा बरद जकाँ बिच्चेमे जीतन काका पुनैक बजला-

“ऐ आँखिक देखल केतेको घटना अछि। एकबेर अहिना गाममे चोरि भेल, चौकीदार थानामे लगा देलकै। बहेरे थानामे छल।”

बिच्चेमे खुशीलाल बाजल-

“थानामे की लगा देलकै?”

अपसोच करैत जीतन काका माथपर हाथ लैत बजला-

“एँह की कहबह! अखुनका जकाँ की राति-बिराति-के दरोगा-सिपाही खिहारि-खिहारि मुद्दालह सभकेँ पकड़ै छल, गाममे दरोगा आएल, चोर सभकेँ बजा-बजा पकड़ै छल। गौंए सोझामे मारबो करइ।”

धारक बेगमे भँसियाइत नाहकेँ जहिना नैया कोनो माँगि[1] पकैड़ नाहकेँ बँचबए चाहैए तहिना जीतन काकाकेँ भँसियाइत देख खुशीलाल बाजल-

“काका, एना जे घोड़-छड़पन छड़ैप बाजब तखन ओ नँपाएत थोड़े। गाम तँ नँपाएत तखन, जखन असथिरसँ दू हाथक डेग बनेबै। तीन डेग देबै एक लग्गी बुझबै।”

जीतन कक्काक विचारकेँ सम्हारैत बचनू भाय बजला-

“काका, बजियौ सभ बात मुदा विचारकेँ पहिने जन्मा कऽ मुड़न करबियौ, पछाइत ने पढ़ाइ-लिखाइ आकि बिआह-दान करेबै। तँए पहिने ई फरिछा दियौ जे चौकीदार थानामे की लगा देलक।”

विचार भवनमे बैसते जेना यात्रीक मनमे रंग-रंगक भाव जागए

[1] नाहमे दुनू सिरा माँगि होइ छै, तँए भँसियाइत नाहक कोनो माँगि।

लगै छै तहिना जीतन काकाकेँ जगलैन। बजला-

“बौआ, केकरो आँखिक देखल आ भोगल दुनू अछि आ केकरो कानेटाक सुनल अछि, तँ दुनूमे अन्तर हेबे करत किने। आँखिक देखल अछि तँए जँ कनी भँसियाइयो जाइ छी ते ओकरा नीके बुझहक, जहिना धारमे कनी-मनी भँसियाइत नाहकेँ नैया शैर-सपट्टा करब बुझैए...।”

ओना खुशीलालकेँ कोनो बात बुझै-सुझैक आ सुनैक कान बनि गेल अछि तँए बेसी नीके लगै मुदा आगूमे घटल घटनाक विचार करब ने बेसी जरूरी अछि। खुशीलाल बाजल-

“अहिना अपन सबहक एकठाम बैसार होइत रहत जइमे इतिहास-पुराणक कथा चलैत रहत।”

खुशीलालक विचारकेँ आँकि बचनू भाय पुन: दोहरबैत बजला-

“काका, पहिने जड़ि खुनि कऽ देख लियौ, पछाइत डारि-पात काटब। थानामे चौकीदार की लगा देलकै से कहियौ।”

अपनाकेँ समटैत जीतन काका बजला-

“बौआ खुशीलाल, गाममे चोरि भेल, गामेक पाँच गोरे चोरि केने छल जेकर नाओं चौकीदार जा कऽ थानामे लिखा देलक।”

ओना, खुशीलालक मनमे जागल जे गौंआँक घर चोरि भेल, गौंआँ चोरी केलक आ बाँकी गौंआँ कियो ने देखलक, कियो ने बुझलक आ एकटा चौकीदारे केना सच्चाइक पता लगा थानामे लगा देलक! मुदा लगले खुशीलालक मनमे समाजक इतिहास कुदि खसल। कुदि ई खसल जे जेकरा हम समाज बुझै छी ओकरा समाजिकताक कोनो सक्कत आड़ि-मेड़ नहि छै जे एके काजकेँ लगले ‘नीक’ कहैए आ लगले ‘अधला’ कहैए। एकर कारण केतए छिपल अछि ई तँ हमरे-अहाँकेँ ने बुझए पड़त। मुदा बुझबो केना करब, जाति-जातिमे बँटल गाम, दियाद-दियादक बीच बँटल जाति, कुल-मूलक बीच बँटल गाम, टोल-टोलक बीच बँटल गाम, ऊँच-नीच सभ मानेमे समाजिक, आर्थिक, वैचारिक

रूपमे बँटल गाम अछि, तइमे रंग-रंगक समाज अछि। पढ़ल-लिखल समाज, बिनु पढ़ल-लिखल समाज, पढ़लो-लिखलमे डॉक्टरक समाज, ओकीलक समाज, शिक्षकक समाज इत्यादि-इत्यादि तँ अछिए। एहेन समाजक बीचमे मनुष्यक समाज बनब ओते असान थोड़े अछि! मुदा कठिनो तँ नहियेँ अछि। खाएर जे अछि अपना जगहपर अछि। लगले खुशीलालक मन भनभना उठल-

“कहू जे ई केहेन होइए जे आगि लगलापर मघैये डोम किए ने हुअए, मुदा जँ ओ घरक आगिकेँ मिझा देलक तँ बड़ बेस। तखन ओही मुहसँ निकलत जे समाज केतौ रहत तँ समाजक उपकार हेबे करत। मुदा लगले ओकर देहक छाँह तक एतेक दूषित भऽ जाइए जे देहमे भिरलासँ छुत पकैड़ लइए!”

पहिल मनक भनभन्नीकेँ सुनि खुशीलालक अपने दोसर मन रोकैत बाजल-

“जाबे तक समाजक लोक ठेकानि कऽ ठेकानल बाट नइ धड़त ताबे तक ठेकनाएल समाज केना बनत? ओना देखले दिन तँ भेल जे चालिस-पचास बर्खक जिनगी मनुखक होइए जेकरा अबै-जाइमे केतेक देरिये लगत।”

बचनू भायकेँ गम्भीर होइत देख जीतन काका बजला-

“बचनू, ओंघी लगै छह?”

अधनीनामे जहिना कियो भकचका कऽ आँखि ताकि बजैए तहिना बचनू भाय बजला-

“नहि! जगले छी, विचारमे कनी आँखि मूना गेल छल।”

खुशीलाल बाजल-

“बचनू भाय, समस्या गामक हुअए आकि बाहरक, एक-दोसरमे सटल अछिए, मुदा अहाँकेँ ओइमे हस्तक्षेपक की कारण अछि जइ कारणे अहाँ परेशान छी?”

बेर-बेगरताक घड़ीमे जहिना कियो बर-बेगार बनि आबि मददगार बनैए जइसँ ओकर जिनगीक आशा जगैए, जइसँ ओ आशान्वित होइए तहिना बचनू भायकेँ सेहो भेलैन। भेलैन ई जे केकरो दुख-बेथाकेँ सुनि जँ कियो दुखी-बेथित भऽ संगी बनैले हाथ बढ़ाबए तँ ओकर दुखक पहाड़ जरूर ढहबे करत...।

बचनू भाय अपन करेज काटि बजला-

“खुशीलाल, जँ हम अपन कोढ़े-करेज काटि तोरा दऽ देबह आ तूँ ओकरा कोढ़-करेज बुझबे ने करबहक तखन ओकर मोले की भेल?”

बचनू भाइक बात सुनि जीतनो काका आ खुशीलालो विचारक मर्मसँ मर्माहत हुअ लगला। जइसँ दुनूक मुँहक रंगमे गहींरपन आबए लगलैन। गहींर पानिमे पैसला पछाइत जहिना सौंसे देह पानिक शीतलपनसँ सिक्त होइते रोआँ-रोआँ भुटकए लगैए तहिना दुनूकेँ भेलैन। खुशीलाल बाजल-

“भाय साहैब, कनी फरिछा कऽ सभ बात कहियौ।”

खुशीलालकेँ सभ बात बुझैक जिज्ञासा सुनि बचनू भाइक मन सेहो जिज्ञासु जकाँ कलशलैन। बजला-

“खुशीलाल, गाम-समाजक लोक बहुत बात बुझितो अपन ओहन पहचान बनौने रहै छैथ जेना किछु बुझले ने होइन। एहेन स्थितिमे कियो केतए बाजत आ केकरा लग बाजत।”

ओना, खुशीलालक पैछला जिनगी–माने कोलकाता जाइसँ पूर्वक–सेहो गाममे बीतल छल मुदा तैबीच ओ ने समाजकेँ बुझै छल आ ने समाजक तहियाएल तहकेँ बुझै छल। मुदा कोलकाता गेला पछाइत दुनियाँक नव-नव जगह सेहो देखलक आ नव-नव लोकसँ सम्बन्ध बनने नव-नव विचारसँ प्रभावितो भेल, जइसँ नव दृष्टि आ नव दृष्टिकोण सेहो पनैप गेल छेलइ। खुशीलाल बाजल-

“भाय साहैब, फल-फूलक बाग-बगीचा होइ आकि फूल-फलक

बाड़ी-फुलवाड़ी होइ, ओइमे जेते रंगक आ जेते पेड़-पौधा होइए, सबहक अपन-अपन जिनगियो अछि आ जीवन-क्रिया सेहो। तँए ओकरा बुझै-गमैले ओकर आदि-अन्तक जीवन लीला वा जीवन क्रिया सेहो जानब-बुझब तँ अछिए, तँए...।”

खुशीलालक विचारक गम्भीरताकेँ सुनैत बचनू भायकेँ मनक गहमे गहियाएल सम्बन्धक सम्भावना सेहो बुझि पड़लैन, जइसँ जिनगीक दौड़मे दूर धरिक संग पूरैक संगीक रूप सोझमे नाचि उठलैन। नचिते मन विहुँसलैन। बजला-

“खुशीलाल, ओना तीनू गोरेमे तूँ अखन जिनगीक शुरूआती दौड़मे छह, जीतन काका आधासँ बेसी जिनगीक दौड़मे दौड़ला पछातियो जइ ढंगसँ जिनगीकेँ परेख बीतेबा चाही से नहि बीता, कहुना-कहुना कटैत चलि रहला अछि आ हमर तँ कोनो हिसाबे नहि, जेतबो देखै छी सेहो ने काइये पबै छी आ ने कएले होइए।”

खुशीलाल बाजल-

“से की भाय साहैब?”

जहिना कोनो अनुभवी डॉक्टर रोगक रोगीक अभावमे जेकर अनेको कारणमे जइ कारणे अपन बदरंगपन देखै छैथ वा बुझनुक इंजीनियर मशीनक पार्ट-पुरजाक अभावमे अपनाकेँ बदरंग बुझै छैथ तहिना बचनू भाय सेहो बदरंग समाजमे अपनाकेँ बदरंग देख रहल छला मुदा मनक ओहेन बात-विचार तँ ओहने मनमे ने उपजैक सम्भावना होइए जइमे उपजैक शक्तिक संचय करैक सक्कतपन जेतेक होइ। जँ से नइ रहत तँ ओहन फसिलक केतेक आशे कएल जा सकैए जइमे सक्कतपनेक अभाव होइ। मुदा नहि, अखन जैठाम बैस गप-सप्प कऽ रहल छी ओइमे चानी जकाँ चनपन जरूर चमैक रहल अछि। चनपन ई जे जहिना खुशीलाल कोरा कागज जकाँ–जइमे किछु ने लिखल गेल–अछि तहिना आधा उमेर बितौला पछातियो जीतन काका छैथ। जीतन कक्काक ई छैन

जे गाम-समाजक कोनो छलपनमे ने कहियो रहला आ ने अखने छैथ। अपन पाँच बीघा खेतक गिरहस्तीक जिनगी छैन। परिवारक सभ बेकती मीलि-जुलि ओकरा खोदै-बेदैमे लागल रहै छैथ, जइसँ समैक संग परिवारक जिनगी सेहो ससाइर रहल छैथ। तेसर अपने छी। अपने की छी से तँ, पोखैरक महार होइ आकि धार-कातक खेत आकि समुद्रकातक पहाड़ आकि समाजक धैड़, ओइमे तँ काजक दौड़मे हेलैले कुदबे केलौं अछि। तखन तँ देखा चाही जे एक आदमीमे केतेक शक्ति आ केतेक साहस अछि। जँ संगीक संग भेटत तँ समुद्रक अतल-बीतल रूप सेहो देख सकै छी आ अकास बीच अकास गंगा सेहो तँ देखिये सकै छी...।

बचनू भाय बजला-

“खुशीलाल, जहिना नव काज समाजमे उपस्थित भऽ गेल अछि, जेकर चर्च तीनू गोरेक बीच भेबे कएल अछि तेकरा शान्त-चित्तसँ विचारह। अखन रातियो बेसी भऽ गेल, काल्हि साँझु पहरक गप-सप्पक नौत-हकार दुनू दइ छिअ।”

◌

शब्द संख्या : 2403, 12 अक्टुबर 2017

9.

किरिण नीक जकाँ डुमलो ने छल कि जीतन काका बचनू भाइक घरपर पहुँच गेला। ओना बैसारमे पहुँचैक विचार जीतन कक्काक अपन जेतेक रहल होनि तइसँ बेसी पत्नीक छेलैन। गाइयक बच्चा जहिना माइयक थनमे मुहसँ उधुक्का मारि दूध पोनगबैए तइसँ बेसी जीतन काकाकेँ पत्नी उधुक्का मारने छेलैन। तेकर कारणो भेल जे जहिना भानस केला उत्तर पतिक आशामे बैस पत्नी अपनो आशा बन्हने रहै छैथ जे पतिकेँ खुएला पछाइत अपनो खेबे करब आ खेबाकाल पतिसँ अपन विन्यास बनबैक कलाकारियोक बात पुछबे करबैन, तहूसँ जँ मन बेसी खनखनाएत तँ एकटा सोहर सेहो सुना देबैन आ जँ किछु नीक केने आएल रहता तँ बधैयो सुना देबैन। सएह भेल, काल्हि जखन जीतन काका खुशीलालक ऐठामसँ घुमि कऽ घरपर एला आ खाइले बैसला तखन थाना-पुलिसक सभ बात बुझबैत पत्नीकेँ ईहो कहलखिन जे जखन भोगिया आ विलसबा जहलक मुँहपर पहुँचल तखन दुनूकेँ छठिक राति मन पड़लै जे विधाता सबहक कपारमे महींक्का कलमसँ लिखलैन आ हमरा बेरमे दुनू हाथे लेपिये देलैन। पतिक विचारमे रोहिणीकेँ की भेटलैन से तँ ओ अपने जनती मुदा चेहराक रूप आ हाउ-भाउक लक्षण ओहिना बनि गेलैन जहिना पहिल दिन पतिक हाथ पकैड़ते फल-फूलक गुलदस्ता भेटने बनल छेलैन। पतिक मनक धारमे डुमैत सुगिया काकी बजली-

"भगवान केतौ चलि गेलखिन अछि आकि बैसल-बैसल सभ किछु देखै छथिन।"

पत्नीक बात सुनि जीतन कक्काक मनमे जहिना कमलक गाछ पोखैरमे पनिपत देने रहैए तहिना भेलैन जे जखन कमलक गाछ पनिपत देलक तँ जरूर ओइमे कमलक फूलक संग बड़ी सेहो फड़बे करत। विचारमे विचड़ैत दुनू परानी जीतन काका जेना देवलोकमे पहुँच भोजन करैत होथि तहिना रूचिपूर्ण भोजन सेहो करबे केलैन। कौल्हुका पार्ट टाइमक सी.एल.क आवेदन दैत जीतन काका पत्नीसँ छुट्टी मंजूर करा नेने छला। माने खाइयेकाल पत्नीकेँ कहि देने छेलखिन-

"समाजक नीक-बेजाइक गप-सप्पमे जाइ छी, तँए भानस भेलापर खाइले हकबाहि नइ करए लागब।"

तैपर मुस्की दैत सुगिया काकी बाजल छेली-

"भानस भेला पछाइत जँ चुल्हि लग ओंघी लगि जाए आ झूकैत रही तँ अहाँ आबि कऽ खोंचारब नहि जे हमरा कियो खाइयो बेरमे मोजर ने दइए। भानस केला पछाइत कहाँसँ खाइले दइतैथ से सुतिये रहली!"

जीतन काका जखन बचनू भाइक दरबज्जापर पहुँचला तखन ने तँ खुशीलाले पहुँचल छल आ ने बचनूए भाय उपस्थित छला। सभ दिनुका दरबज्जा बचनू भाइक छैन्हे तँए जँ सबेर कियो आबियो गेला तइले पत्नियो, भाइयो आ आनो-आन समांग छैन्हे। ओना, दरबज्जापर ऐबते जीतन काका बचनू भायकेँ नइ देखलैन तँ सोझे मालक घर दिस आगू बढ़ला। होइतो अहिना छै जेना तुलसी बाबा कहने छैथ- 'जाके रहे भावना जैसी, प्रभू मूरत देखी तीन तैसी।' जेहेन जे रूचिक आ सूचिक लोक रहला ओ अपने रूचिये आ सुचिये ने दुनियाँ देखै छैथ। गाम-घरमे एकटा कथा चलैए जे एकटा गिरहस्तक ऐठाम एकटा महात्मा पहुँचला। ओना, महात्मा दू रंगक होइ छैथ, एकटा होइ छैथ जिनकर भीतर-बाहर माने मनक क्रियासँ बाहरक क्रिया सभ चिकने-चिक्कन रहल, जे दुनियाँमे

अपन दुनियाँ गढ़ि ओइमे विलीन भेल रहै छैथ आ दोसर भेला जे जिनकर भीतर तँ चिक्कन रहै छैन मुदा बाहर निपाएल-पोताएल रहल। मुदा से नहि, पहिल कोटिक महात्मा छला जे गिरहस्तक ऐठाम पहुँचला। ऐबते महात्माजी गृहीकेँ कहलखिन-

"भाय, भुखाएल छी से किछु खुआउ।"

भूखो-भूखमे अन्तर अछिए। मनक भूख महात्माजीकेँ रहैन। मनक भूख जगैक कारण छल जे गाममे दुर्भिक्षक स्थिति उत्पन्न भऽ गेने अपन भागीदारी निमाहैक विचारसँ महात्माजी पहुँचल छला।

समयक थापरसँ थपराएल ओ गिरहस्त, हिया हारि महात्माजीकेँ कहलकैन-

"बाबा महराज, तुरन्त खाइ जोग घरमे किछु ने अछि। समए दुआरे चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे एक्केबेर सभ प्राणी मिलि एकठाम बैस खाइ छी, से तँ खा चुकलौं।"

रगड़ी महात्माजी बजला-

"दरबज्जापर सँ केकरो भूखल नइ जा दिऐ। तहूमे जँ कियो मुँह खोलि बाजैथ तखन तँ आरो।"

तैबीच गृहिणी सेहो पहुँचली। अपन भार उतारैत पति पत्नीकेँ कहलखिन-

"महात्माजी बड़ भुखाएल छैथ, तँए किछु...।"

बिच्चेमे महात्माजी बजला-

"कनियोँ-मनियोँ जँ किछु भेट जाए तँ ओकरा पानियोँमे घोरि कऽ पीब सकै छी।"

'पानिमे घोरि कऽ पीब सकै छी' सुनि गृहिणीकेँ मन पड़लैन जे कोठीक खोलियामे एक फुच्ची सतुआ तँ राखल अछि। फुच्चीक सतुआ मन पड़िते गृहिणीक मुँह विहुँसलैन, विहुँसिते बजली-

"बाबा महराज, अपनेक सगुन नीक अछि। बदामक सतुआ घरमे अछि।"

महात्माजी मुस्कियाए लगला। गृहिणी आँगन दिस बढ़ली। मुस्कियाइत महात्माजीक मनमे उठलैन- अन्नक राजेसँ भेँट भेल। जहिना सभ गुणसँ सम्पन्न बदाम अछि तहिना सभ विन्यासक सभ गहनासँ सजल सेहो अछिए। चाउरक भात जकाँ उसैन कऽ उसना बनाउ, आकि राहैर जकाँ दड़ैर कऽ दालि बनाउ, चाहे गहुम जकाँ पीसि कऽ रोटी बनाउ, आकि तेल-घीमे तड़ि-भूजि कऽ चीनी मिला मिठाइ बनाउ वा नोन मिला नोनगर घुघनी बनाउ। तेतबे किए, गाछमे फड़ल फल जकाँ काँचो खाउ आ ओराहियो कऽ खाउ आकि अहिना पानिमे सानि सतुआ बना कऽ खाउ। तैबीच गृहिणी बाटीमे सतुआ आ लोटामे पानि नेने पहुँचली।

मुस्कियाइत महात्माजी बजला-

"यएह छी दुनियाँ, जे मनमे रहैए सएह ने पेटोमे रहबे करैए।"

महात्माजी विदा भऽ गेला। तैबीच खुशीलाल सेहो पहुँचल आ खुशीलालक पीठेपर बचनूओ भाय पहुँचला। तीन बर्खक कोलकाताक प्रवासमे खुशीलाल बहुत किछु सीखबो केलक आ देखबो केलक। जहिना दुनू परानी प्रोफेसर साहैब कहने छेलखिन जे बंगाली समाज आ मिथिलांचलक समाजमे बहुत किछु समतो अछि आ विषमतो तँ अछिए। से तँ खुशीलाल बुझला पछाइत जेते लगसँ बंगाली समाजक बेवहार देखलक तेते लगसँ मैथिल समाजकेँ नहियेँ देखने छल। ओना, खुशीलाल तीन बर्ख पूर्वसँ जन्म तकक जिनगी मैथिले समाजमे बीतौने छल मुदा ओ ओकर बालपनक समय छेलै, जखन ओ समाजकेँ नहि बुझै छल। पछाइत बंगालमे बंगाली प्रोफेसरक सानिध्यमे बुझनुक भेल। तँए अपनाकेँ अनभुआर बुझि मात्र तर्कक आधारपर खुशीलाल अपन जिनगीकेँ आगू घुसकबैक विचार मनमे रोपि लेलक।

दरबज्जापर बैसते जीतन काका खुशीलालकेँ कहलखिन-

"बौआ खुशी, कौल्हुका गप-सप्प जेहेन तोरा ऐठाम भेल ओहेन गप-सप्प जिनगीमे कहियो ने भेल छल।"

जीतन काकाकेँ पीठपर हाथ दैत खुशीलाल बाजल-

"काका, जमात करए करामात। पहिने जमात तैयार करू पछाइत ने करामात देखबै।"

ओना, खुशीलालक बात जीतन काका नीक नहाँति नइ बुझि सकला मुदा मुस्की भरल तुकबन्द शब्द गीताक गीत जकाँ जरूर बुझि पड़लैन। बजला-

"जमात कि कोनो कुम्हारक चाकसँ गढ़ि आबासँ पकि कऽ औत आकि अपने सबहक केने हएत।"

ओना, दुनू गोरेक विचारमे कनीक अन्तर देख बचनू भाय सामंजस करैत बजला-

"दुनू गोरेक विचारमे दम अछि।"

कुश्ती लड़ैकाल जहिना सोलहपर दुनू खलीफा उठि अपन हार-जीतक समीक्षा करैत अपनाकेँ समकक्ष बुझैए तहिना खुशीलालोकेँ आ जीतनो काकाकेँ बुझि पड़लैन। ओना, खुशीलालक मनमे ईहो छल जे गाममे तीन सालसँ नइ छेलौं, तँए गामक बात जेते जीतन काकाकेँ बुझल हेतैन तेतेक तँ अपना नहियेँ बुझल अछि। मुदा घरसँ बाहर धरिक हवा-पानि तँ लगले अछि। तहिना जीतनो कक्काक मनमे होनि जे केतबो खुशीलाल कलकत्ताक खेलाएल किए ने अछि मुदा हमहूँ ओइसँ कम नहियेँ छी। ओना, तरे-ऊपरे जहिना खुशीलाल जीतन काकाकेँ देखैत रहैथ तहिना जीतनो काका खुशीलालकेँ देखते छला। तैबीच आँगनसँ चाह नेने बचनू भाइक बेटी–सुमित्रा दरबज्जापर आबि, उमरदार बुझि पहिने जीतन काका दिस चाहक कप बढ़ौलकैन। जीतन काका सुमित्राकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, खुशीलाल परदेशी छी, पहिने ओकरा दहक। हम तँ

गौआँ-घरूआ भेलौं।"

अपन आदर देख खुशीलाल जीतन काकाकेँ आदर करैत सुमित्राकेँ कहलक-

"बुच्ची, जीतन काका उमरदार छैथ, तीनू गोरेमे श्रेष्ठ छैथ तँए पहिने हुनका दहुन।"

खुशीलालक बात सुनि जीतन कक्काक मन मानि गेलैन जे खुशीलाल ठीके कहलक।

पहिल घोंट चाह पीब बचनू भाय बजला-

"जीतन काका, जेहेन चाहपत्तीबला चाह काल्हि खुशीलाल पिऔलक तेहेन तँ ऐठाम नहियेँ अछि, मुदा चाहो तँ चाहे छी किने।"

बचनू भाइक विचार सुनि जीतन कक्काक मन थोड़ेक झुझुएलैन जरूर मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"कौल्हुका चाहपत्ती किछु छल तँ छल, मुदा दूध तँ लोहा-महींसिक रहइ तँए कनी लोहराइनो तँ लगिते छल मुदा औझुका चाह बकेन महींसिक दूधक छी किने, तँए..?"

ओना जीतन कक्काक बात सुनि खुशीलालक मन थोड़ेक झुझुआएल जरूर मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बाजल-

"काका, एतेक दिन परदेशी छेलौं मुदा आब सुदेशी बुझू। तँए, धीरे-धीरे सभ किछु ने सुदेशीए भऽ जाएत।"

खुशीलालक विचारमे जीतन काकाकेँ की भेटलैन से तँ वएह जानता मुदा मनमे चपचपी जरूर जगलैन। चपचपाइत बजला-

"बौआ खुशी, बड़ आशासँ ऐठामक किसान-मजदूर परदेशी अंग्रेजकेँ भगबैमे अपन तन-मन-धन गमौलक, मुदा स्वदेशी हाथमे एला पछातियो किसान-मजदूरक धिया-पुता हकन कनिते अछि आकि नइ कनैए?"

जीतन कक्काक बात सुनि बचनू भाय सोचलैन जे अनेरे 1857 ईस्वीसँ लऽ कऽ 1947 ईस्वी धरिक आजादीक इतिहास बैसारक विचारमे अगुआ रहल अछि! अखने जँ एकरा नइ रोकि अपन विचारकेँ बढ़ाएब तँ जइले बैसलौं सएह ससैर जाएत! बचनू भाय बजला-

"काका, अहिना दुनियाँदारी चलैए आ चलैत रहत। अखन अपना सभ जइ विचारे एकठाम बैसलौं हेन पहिने तेकरा अगुआउ।"

खुशीलाल बाजल-

"जखन सभ गौंए छी तखन ऐगला-पैछला जे गप-सप्प अछि से बादमे करैत रहब। अखन जइ काजे सभ कियो बैसलौं, पहिने तेकरा अगुआउ।"

जीतन काका सेहो समर्थन दैत बजला-

"एक लाखक बात खुशीलाल बजलह! काल्हि की भेल आ काल्हि की हएत तइमे एकटा भूते भेल आ दोसर भविसे, मुदा अखन जे छी से ते वर्तमानमे छी किने तँए वर्तमाने ने वीर्तमान जीवनो आ जिनगियो भेल।"

समर्थनमे मुड़ी डोलबैत खुशीलाल बाजल-

"हँ, से तँ भेबे कएल..!"

समुचित वातावरण बनैत देख बचनू भाय घटनाकेँ मनमे तहियबैत बजला-

"जीतन काका, अखन धरि अहूँ गामक हवा-बिहाड़िमे किछु-ने-किछु सुननहि हेबइ। खुशीलाल गाममे नइ रहए,एबे कएल अछि तँए नहियों बुझने हएत। मुदा अहाँ तँ गामेमे छी आ हम तँ ओकर कर्ते-धर्ता छी। तँए अपन कएल सभ काज दुनू गोरेक सोझहामे रखि दइ छी, पछाइत सभकोइ विचारब।"

'पछाइत विचारब' सुनि जीतन काका फुड़फुड़ा कऽ बजला-

"हँ, हँ! बड़ बेस!"

बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल तोंहू आ जीतन काका अहूँ, दुनू गोरे नीक जकाँ सुनबो करू आ नीक जकाँ विचारि कऽ आगू की हेबा चाही सेहो निर्णय करू।"

ओना, बचनू भाइक प्रश्नक जटिलताकेँ जीतन काका अनुभव नहि कऽ सकला, तेकर कारण छल जे आइ धरिक जिनगीमे एहेन समस्या आ समस्याक एहेन रूपसँ भेँट नहि भेल छेलैन। तँए अनुभवहीन तँ छेलाहे। मुदा तैयो जहिना कियो भरे-भर भार पुड़ैए तहिना अपन भार पुड़ैत जीतन काका बजला-

"जखन समाजमे छी तखन समाजमे जे निर्णय हएत, तइमे पएर पाछू करब समाजिकता थोड़े भेल।"

जीतन कक्काक विचार सुनिते खुशीलालक जहिना जुआनी उमेर तहिना जवानक विचार मनमे तड़ैप उठल। बाजल-

"बचनू भाय, की सभ अखन धरि भेल अछि आ आगू की करब से तँ बुझला पछातिये ने विचारबो करब आ ओइले जे करए पड़त से करबो करब।"

निर्भय होइत बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, तूँ अखन नवतुरिया छह तँए समाजक जाल-फाँसकेँ नीक जकाँ नइ बुझैत हेबह। मुदा ओ तँ बुझनहि आ बुझौनहि ने बुझबो करबह।"

बचनू भाइक विचारमे अपन विचारकेँ सटबैत खुशीलाल बाजल-

"हँ, से तँ बुझबे करब। आकि नइ यौ जीतन काका?"

अपन नाओं सुनिते जीतन काका बजला-

"हँ, से की तोहर अनर्गल विचार छह जे नइ सुनब कि नइ बुझब आकि नइ मानि चलब। समाजमे एकरे ने खगता अछि।"

जीतन कक्काक विचार सुनि मने-मन जखन बचनू भाय ठेकनाबए

लगला तँ ताड़क गाछ जकाँ एकमुड़िया केतौ बुझिये ने पड़ैन। बुझि पड़ैन आमक गाछ जकाँ सहस्त्र मुड़िया अछि। एहेन सहस्त्र मुड़िया विचारकें केतए-सँ आ केना परखैत गाछक धड़कें मिलाएब से तँ जटिल अछिए। तहूमे जँ अपन विचार सोझो-साझ रहत आ सुनैक क्रममे दुनू गोरेमे सँ जँ कियो टोक-टाक केलैन तखन तँ अपन मन नइ रहितो वएह स्पष्ट करए पड़त। जँ से नइ करब तँ जहिना रस्तापर घुच्ची देख राही घुचिया जाइए तहिना घुचिया जाएब आ जँ से भेल तखन तँ सुनिनिहार के हेता जे संगे-संग सुनैत चलता..!

मनकें दबैत बचनू भाय बजला-

“खुशीलाल, तोरो कहै छिअ आ जीतन काका, अहूँकें कहै छी। ओना हम घटनाक सभ घाटकें नीक जकाँ सफाइ दैत नइ बाजब, जे पछाइत गप-सप्पक क्रममे हएत। मुदा पहिने सभ घाटक न्योंक चर्च कऽ लइ छी।”

ओना जीतन काका ‘घटना’ आ ‘घाट’ सुनि अकबकाए लगला मुदा बचनू भाइक पहिल विचारक अनुरूप अपन मनक भावकें दबैत रहला। जे खुशीलालो आ बचनूओ भाय देख-देख तारतममे पड़ि गेला। पछाइत अपन मुँह उठा जीतन कक्काक मुँहपर जखने बचनू भाय देलैन कि जीतन कक्काक मुँह फुटि पड़लैन-

“बचनू, कनी ‘घाट’ आ ‘घटना’क मुँह मिलानी करैत चलह।”

मुस्की दैत खुशीलाल बाजल-

“काका, एना जे कोनो विचारकें शुरूहेसँ खोटियाबए लगबै तखन विचारक गाड़ी केतेक ससरत!”

सामंजस करैत बचनू भाय बजला-

“खुशीलाल, जीतन काका बड़बढ़ियाँ पुछलैन। आन गपमे जेते समय लागत तइसँ कमे समयमे कहि देबैन। घटना भेल गाछ आ घाट भेल ओकर डारि, बुझलिऐ काका?”

बचनू भाइक विचारकें जीतन काका केतेक बुझला से तँ ओ जानैथ मुदा चहैक कऽ बजला-

“हँ-हँ बुझि गेलौं! बुझि गेलौं!”

जहिना चौमास खेत जोतला-चौकियेला पछाइत अपन गर्भ ओहेन बना लइए जइमे अंकुरण शक्ति आबि जाइ छै तहिना जीतनो काकाकें आ खुशीलालोकें भेल। बचनू भाय बजला-

“भोगिया देवीक पुतोहु हमर पितियौत मामाक बेटी छी। बुझले हएत।”

बिच्चेमे जीतन काका बजला-

“कोनो कि बहुत दिनक गप छी, आठ-दस बर्ख बिआह भेना भेलै हेन।”

जीतन कक्काक विचारमे अपन विचारकें साटैत खुशीलाल बाजल-

“जखन हम मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही तखन बिआह भेल रहइ। ओहिना मन अछि।”

दुनू गोरेक विचारमे विचरण करैत बचनू भाय बजला-

“मामा केहेन विचारक लोक छैथ से तँ काका अहाँ चिन्हते छिऐन।”

समतल मैदान पाबि जहिना घोड़ा सरपट दौड़ लगबैए तहिना जीतन काका बजला-

“औझुका समयमे ओहन विचारवान लोक कोनो-कोनो गाममे अछि। सभ गाममे अछियो नहि।”

बचनू भाय-

“जेहने मामा अपने छैथ तेहने ने परिवारोक लोक छैन।”

जीतन काका-

“ऐमे के आँगुर बतौत।”

बचनू भाय-

“ओइ लड़कीसँ–माने भोगिया देवी अपन पुतोहुसँ–नीच वृत्ति करबए चाहलक। जे बात ओ लड़की–माने हमर ममियौत बहिन सुशीला–प्रथम-प्रथम माएकें कहलक। मामी मामाकें कहलखिन। मामीक मुहसँ सुनिते मामाक चानि अगिया कऽ चनकए लगलैन। मुदा परिवारक बात छी, तँए जह-पटार बाजबो उचित नहियेँ छल। ई सोचि मामा मुँह बन्न केने रहला।”

बिच्चेमे जीतन काका बजला-

“यएह ने भेल विचारवानक विचारशीलताक शीलपन।”

बचनू भाय बजला-

“ई बात चारि-पाँच साल पहिलुका छी। पछाइत मामा ऐठाम आबि–माने हमरा ऐठाम आबि–बोम फाड़ि कानए लगला। केतबो चुप करिऐन चुपे ने होथि! तेहेन कानब रहैन जे अपनो मन असहज भऽ गेल। छाती दहैल गेल। दुनू आँखिसँ नोर झहड़ए लगल। मुँहपर हाथ दए मुँह बन्न केलिऐन। मुँह बन्न होइते बजला- ‘भागिन, बिनु केलहो पाप लोककें एना पापी बनबै छै से अखन धरि नइ बुझने छेलौं!’ मामाक विचार हम नहि बुझि सकलौं। मुदा पाप आ पापीक बात तँ बुझबे केलौं। पछाइत, शान्त करैत मामाकें कहलयैन- ‘मामा, हमरा खून देने जँ अहाँक पाप कटत तँ हम तैयार छी। जे कहब, जेना कहब, सभ-ले तैयार छी।”

बचनू भाइक विचार सुनि खुशीलालकें बुकौर लागि गेल। जेना छाती फाटए लगलै। मिरमिराइत बाजल-

“बचनू भाय! विचारकें रोकियौ नहि, आगू की भेल?”

बचनू भाय बजला-

“मामा कहलैन जे जिनगीमे कहियो कोर्ट-कचहरी तँ देखलौं नहि, गाम-समाज केहेन अछि से तँ सबहक सोझहेमे छह। जही वृत्तिकें एकठाम इज्जतक ऊँच सीढ़ीपर आसीन करैए, तेकरे दोसरठाम धिया-

पुताक खेल बुझि रबड़क बैलून जकाँ उड़ेबो करैए।”

जीतन काका बजला-

“तखन की केलहक, बचनू?”

बचनू भाय-

“जे जुतिगर बुझि पड़ल से केलौं। थानाक बड़ाबाबू लग जा सभ बात बुझा कऽ कहबो केलिऐन आ अपहरण सहित हत्याक केस कऽ दुनूकें जहलो पठेलौं।”

बचनू भाइक बात सुनि खुशीलाल नमहर साँस छोड़ैत बाजल-

“भाय साहैब, इलाइची जकाँ जाबे खोंइचा छोरा नइ खाएब ताबे ओकर रस थोड़े पीब सकै छी। इलाइची दालचीनी नइ ने छी जे खाली खोंइचो चटलासँ रस जाएत।”

तैबीच दोहरौआ चाह-पान सेहो आबि गेल आ विचारक एक पाराग्राफ सेहो समाप्त भेल। एक दिस आगू आएल चाह आ दोसर दिस कथाक एक परायण पड़ा कऽ पाछू गेल। आ दोसर परायण आगू आएल।

गिलासक पानि पीबिते जीतन कक्काक मन जेना सर्ड़ास भेलैन। सर्ड़ास होइते आगू-पाछू हियासए लगला जे पैछले परायणपर ने दोसर परायण मंगलाचरणसँ शुरू होइए, मुदा से तँ जीतन काकाकें बुझल नहि जे मंगलाचरण केहेन हएत। पैछला परायण तँ सामाप्ते भऽ गेल तँए ओकरा मुरदा बुझि ताबे तुलसी-चौड़ा लग उत्तर मुहें सुता दियौ। बीच बाटमे जीतन काका अकबका गेला, माने मुहसँ कोनो शब्द निकैलते ने रहैन। अकबकाइते हाँइ-हाँइ कऽ एक घोंट चाह पीलैन। जेना-जेना चाहक धार मुहसँ पेट दिस बढ़ैत गेलैन तेना-तेना मनो अपन हेल-हेलए लगलैन। हेलैत जीतन कक्काक मुहसँ बकार फुटल-

“बचनू, की पुछै छह! हमरे सन-सन अखज लोक सबहक बास एहेन-एहेन गाममे होइए। नीक लोकक बास आब थोड़े एहेन गाममे हएत। जेतेक नीक लोक सभ छैथ ओ बीता भरि पेट-ले दिल्ली-बम्बै धऽ

लेलैन।"

जीतन कक्काक विचारसँ जहिना बचनू भाय खुशी होइत रहैथ तहिना खुशीलालकेँ तासम उठैत रहइ। खुशीलालक तामसक कारण रहै जे हमरे ठिकिया कऽ जीतन काका बाजि रहल छैथ। से कहू जे एहेन होइ! कोलकातासँ जिनगी जीबैक क्रिया बुझि मनकेँ मजगूत बना गाममे जीबैक इच्छासँ एलौं हेन तैठाम एहेन-एहेन बुढ़-पुराण पहिनेसँ समुद्रक लहरिक ढुइस लिअ लगैथ तँ नवतुरिया समाजमे केतेक दिन जीब सकत?

मुदा एते खुशीलाल रच्छ रखलक जे विचारकेँ मनेमे दाबि बाजल-

"काका, एना जे काजक विचार करैबेर अखबार वा किताब ई सोचि पढ़ए लगब जे विचारे हल्लुक अछि ऐसँ नीक अखबारेक चहचहौआ फोटो सभ देखब नीक। तखन तँ नाह बीच धारमे कि भँसियाइत जे कातेमे डुमि जाएत। आगू की भेल बचनू भाय?"

श्रोताक अकान कान पाबि बचनू भाइक मन वीहसँ बिहियाइत विचारक दुनियाँमे खसि पड़लैन। एक दिस एक परिवारक भविस सम्हारि चुकल छला तँ दोसर दिस एहेन घृणित समाजकेँ देख मन विषसँ विषिया-विषिया विसविसाइन सेहो होइते रहैन।

ओना, बचनू भाइक अखन तकक जे किरिया-कलाप मात्रिकक संग रहलैन ओ गाम समाजकेँ तीत लगौ आकि मीठ, मुदा परिवारक भविस तँ जीबैत रहबे करत किने। जखन परिवार जीवित रहत तखन नीक-अधलाक विचार करैत समरस बना लेत।

बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, अपन कएल काजसँ हमर परिवार आ हमर मात्रिक परिवारक लोककेँ तँ खुशी भेबे केलै मुदा तैसंग किछु विचारवान लोक-ले चुनौती सेहो भेल।"

ओना, विचारक धारमे बचनू भाइक बात तँ बतिया गेल मुदा

कर्मक मुँह फुटबे ने कएल जे खुशीलाल अँकलक। मुदा अँकला पछातियो खुशीलाल मुँहकेँ चुप्पे राखब नीक बुझलक किएक तँ कहुना भेलौं तँ अखन परदेशीए भेलौं। मनमे ढेरी विचार आ ढेरी काज किए ने हुअए मुदा से तँ मनेमे अछि। जाबे धरतीपर नइ औत ताबे ओकर मोले केतेक? तइमे तँ जीतने काका ने श्रेष्ठ भेला। ओ की सभ बुझलैन से तँ वएह ने बजता, बाजौथ! मुदा तैकालमे जीतन काका घुच-पुच करए लगता।

घन्टा भरिक विचारसँ बहैत-बनैत विचारधारा आबिये रहल छल, ओहो तँ भोथाएल नहियेँ छल। जीतन काका बजला-

"बचनू, पहिने एकहरफी बाजि जा। जहिना सौंसे रामायण एकटा अष्टपदीमे अछि तहिना। पछाइत ने जहिना एक-एकटा आँकर-पाथरकेँ सिदहाक चाउर जकाँ बीछल जाइए तहिना गोटा-गोटी बीछब।"

बचनू भाय बजला-

"काका, मामा सोझमतिया छैथ। छोटो-छीन बात-कथा हुनका कुशक-काँट जकाँ पकड़ कऽ दइ छैन जइसँ लगले टीससँ टहैक छाती छँहोछित भऽ जाइ छैन, तँए मात्रिक गेलौं।"

बचनूक बातसँ जीतन काकाकेँ जेना सहगर गड़ भेटल होनि तहिना मन खुशी भेलैन। बजला-

"बेस केलह बचनू! यएह ने तोरा सन-सन नवयुवकक काज भेल। आगू बाजह।"

जीतन कक्काक जिज्ञासा देख बचनू भायकेँ सेहो सहगर जमीन भेटए लगलैन। बजला-

"मात्रिकक सौंसे परिवारकेँ एकठाम केलौं।"

बिच्चेमे जीतन काका बजला-

"बेस केलह। तेहेन-तेहेन घचकनाह लोक सभ भऽ गेल अछि जे सदिकाल घचकनाइत-घचकनाइत कन्हे छिप लइए। आगू की भेलह?"

बचनू भाय-

"पहिने सभकेँ एकठाम बैसेलौं। बैसा कऽ कहलयैन जे परिवारमे बेटीक समस्या उपस्थित भऽ गेल अछि। अखन दुनियाँ दिस नइ तकैके अछि किए तँ दुनियाँमे नीक-अधला सभ किछु अछि। तँए अपन परिवारक दायित्वकेँ बुझि कर्तव्यक रूपमे निमाहैक अछि। सुशीला सेहो सभ बात सुनलक। मैट्रिक पास अछि। बेचारी सबहक मुँह दिस ताकि रहल छल..!"

सुशीलाकेँ पुछलिऐ-

"सुशील, अखन सौंसे परिवारक बीचमे छह, तँए सोचि-विचारि कऽ बाजह। माए-बाबू बुढ़ भेलखुन, आब केते दिन जीबे करता। मुदा तोहर तँ जिनगी नमहर छह, बाजह।"

हमर बात-विचार सुनि-बुझि दुनू परानी मामाकेँ जेना अपन उद्धारक बाट भेल गेल होनि तहिना मन हर्षसँ हर्षित हुअ लगलैन। मामी, माने सुशीलाक माए, बजली-

"बौआ, दुनू परानी सुशीलाकेँ ई कहैत असिरवाद दइ छिऐ जे बुच्ची, माए-बाप बाल-बच्चाकेँ जन्म दइए मुदा जिनगी तँ चलतै अपने करमे। हम तँ एको अक्षर पढ़ल नइ छी, मुदा जिनगीक अन्तिम पड़ाव तक केना निमाहि चलैत एलौं से कियो आन कहत तखन बुझबै। अपन आँखि कथी-ले अछि।"

मामीक विचार जेना-जेना आगू बढ़ए लगलैन तेना-तेना मामाक मन, पेट-भरल पौरुकी जकाँ घुटकए लगलैन। अपन आँखि मुनि परिवारोजन अपन-अपन आँखि नचौलैन। भाय, दुनियाँ बड़ीटा अछि, केतबो नाचए चाहब तैयो कि सौंसे दुनियाँ नाचि पएब आ तैपर सँ देहो-हाथ तेतेक दुखाएत जे थभैक कऽ केतौ बैसए पड़त। तँए अपन परिवारक दायित्व तँ परिवारेजनपर ने अछि। मुदा परिवारो तँ एहने अछि जे नीक कि बेजाए, एक्केगोरेपर आश्रित अछि। जइसँ सबहक विचारक बाट

एकबटिया भऽ जाइए। ओना, एकबटिया नीक सेहो छीहे मुदा ओ तँ परिवारजनक विचारक सहमतिक पछाइत, मुदा से तँ अछि नहि। लगले बहुमत अल्पमतक प्रश्न उठा अधलाकेँ बँचौल जाइए आ लगले बाप-दादाकेँ दोख लगा राजा-दैव सेहो मानि लेल जाइए। यएह तँ छी गाम-समाजकेँ ऐनाक आगूमे रखि देखब। जखने आगूमे अपन-अपन परिवार आ समाजकेँ ऐनामे देखए लगब तखने ने ओकर मुहोँ-कान देखबै आ आँखियो नाक।

मामीकेँ विचारमे डुमल देख मामा विचारक भवधारमे बहए लगला। बहैत-भँसियाइत बजला-

"बेटी तँ माइयेक वंश भेल किने, तँए अपन वंशक लोचन (वंशलोचन) तँ वएह ने चाइनसँ लगौती। हम तँ पुरुख भेलौं, हुनकर भार उठौनिहार बेटा श्रवण कुमार जकाँ।"

मामा-मामीक विचार सुनि विचारक गाड़ीकेँ ढलान दिस बढ़बैत कहलयैन-

"बेरा-बेरी जँ सभ अपन-अपन खिस्सा-पिहानी सासुरसँ नैहर आ नैहरसँ सासुरक पसारब से नीक नहि। जे विपत्ति परिवारक कपारपर खसल अछि तेकर निमरजना केना हएत अखन बस एतबे विचार करै जाउ।"

बीचमे मामा बजला-

"बचनू, पहिने सुशीलासँ सभ बात पुछि लहक।"

मामाक विचार नीक लागल। सुशीलाकेँ पुछलिऐ-

"बुच्ची, अखन तूँ बाल-बोध छह, काँइते ने जुआन जकाँ भेल जाइ छह, मुदा बुद्धियो आ विवेको अखन बचकानीए छह। ओना, दू साल पहिने मैट्रिक पास केला पछाइत बिआहो भेलह। किए ओइ परिवारसँ, माने सासुरक परिवारसँ दिल टुटलह आ माए-बापक ऐठाम चलि एलह?"

जहिना समाजक संस्कारमे लाज-विचारक रूप जगैए तहिना

विद्यालय गेला पछाइत लड़को-लड़कीक विचारमे लाजपनक रूपो तँ बदलबे कएल अछि। भलेँ ओ ई नइ बुझै जे जेकरा हम सभ भोग-विलासक अंग बुझै छी वएह सृष्टिक सृजनहार सेहो छी। मुदा से अपना जगहपर...।

हमर विचारकेँ सूहकारैत सुशीला बाजल-

“बचनू भैया, माता-पिता दोसर खाड़ीक भेला मुदा अहाँ तँ एक खाड़ीक भेलौं, तँए अहाँकेँ कोनो बात खोलि कऽ कहैमे कोनो हिचकपन नइ अछि।”

सह दैत बिच्चेमे सुशीलाकेँ कहलिऐ-

“बुच्ची, जइ परिवारमे जन्मसँ अखन धरि बितेलह, तैठाम जँ कोनो विचार आकि कोनो काज करैमे हिचकपन रखबह तखन दुनियाँमे केना बेहिचक चलि सकबह आकि जीविये सकबह। अहीठामसँ ने लोक बजैत दुनियाँ दिस निकलैए।”

सुशीला सहैट कऽ विचारक सहीट होइत जमीनपर उतैर बाजल-

“भैया, बाबूक जेहेन परिवार अखन धरि छैन, तइसँ नीचाँ उतैर जीवन जीब नीक केना होएत। तँए अखन तक ओही विचारमे अपनाकेँ रखने छी आ आगूओ रखैक संकल्प चाहै छी।”

सुशीलाक स्वर माता-पिताक विचारक धर्मक बाटपर चढ़िते मामाक मन जेना डंका पीटए लगलैन। मुदा जैठाम शास्त्रीय धुन चलैत रहत तैठाम डंकाक ढोल केहेन ताल-मात्राकेँ मिलए देत से तँ गौनिहारे-बजौनिहार ने बुझता। मुदा अपन मनक डंकाकेँ मनेमे समेट मामा हमरा दिस तकैत रहला। हम सुशीलाकेँ पुछलिऐ-

“बुच्ची, ओइ परिवारक चालि-चलैन केहेन अछि?”

सासुर परिवारक चालि-चलैन-दे सुनिते सुशीला बाजल-

“भैया, अहुँक घर तँ ओही गाममे ने अछि। हमरा दुनू सासु-पुतोहुक बीचक जे बात अछि से अहाँकेँ नइ बुझल हएत, मुदा गाम-

समाज केहेन अछि से कोनो अहाँ नइ बुझै छिऐ?”

बचनू भाय बाजिये रहल छला कि बिच्चेमे जीतन काका रोकैत-टोकैत बजला-

“बौआ बचनू, बुझले छह जे एहने किरदानीक बात पौरुसाल बजलौं, जइसँ पनचैतीमे कानो पकैड़ कऽ उठौलक-बैसौलक आ तइपर सँ ईहो कहए जे ‘थूक फेकि कऽ चाट जे फेर एहेन गप कहियो ने बाजब!’ ओही दिनसँ मुँह सीब लेलौं।”

जीतन कक्काक बात सुनि खुशीलाल असमसानक अछियाक बाँसक खोंरनी चलबैत बाजल-

“काका, अहीं सभसँ ने गामक इतिहास-पुराण सीखत।”

खुशीलालक बात सुनिते जीतन कक्काक मन मुँगड़ा भऽ गेलैन। मुँगरा होइते बमकैत बजला-

“बचनू, खुशीलालक बात आन मानौ कि नहि मानौ मुदा हम सोल्होअना मानै छी।”

दोसर खोंरनी चलबैत खुशीलाल फेर बाजल-

“सोझे मानै छिऐ आकि की-की मानै छिऐ से जखन अपने मुहेँ बजबै तखने ने केकरो बिसवास हेतइ।”

खुशीलाल जे सोचि बाजल हुअए मुदा जीतन काका खुशीलालकेँ बिसवास-पात्र बुझैत बजला-

“असगर पड़ि गेलौं, सभ मिलि चापि देलक। पाइयक पुत पहाड़ तोड़ै छइ। जएह भोजैतनी सएह चटैतनी, यएह तँ छी समाज।”

तीक्ष्ण वाण छोड़ैत खुशीलाल बाजल-

“असगर पड़ि गेलौं तँए ने चपा गेलौं, मुदा जँ दोसराइत भेटए तखन की करबै?”

जहिना बाल-बोध दू बेर पीठपर हाथ आ दू बेर मुहसँ टोकारा

पबिते दौड़ जाइए तहिना जीतन कक्काक मनक घोड़ा सेहो उधैक कऽ उधियाएल चालि पकैड़ लेलकैन।

जेना-जेना जीतन काका आ खुशीलालक बीच विचारक धार बनैत गेल तेना-तेना बचनू भाइक मन सेहो धड़-धड़ धारा पकड़ए लगलैन। धारा पकैड़ते बचनू दुनू गोरेकेँ अपन दुनू हाथसँ इशारा दैत कहलखिन-

“खुशीलाल, जीतन काका तँ बुढ़ाइये रहला अछि, दिनो-दिन उदिआस्ते दिस बढ़ता मुदा तूँ तँ अखन हमरोसँ नव छह, तोहर उदीयमान आशा तँ जिनगीक पार लगाइये सकैए किने।”

खुशीलालकेँ बजैसँ पहिनहि जीतन काका बजला-

“हँ, बेस बात बजलह बचनू। जाबे जीबै छी तेतबे आशाक बिसवास ने केकरो दऽ सकै छिऐ। तइमे ते खुशीलालेक बेसी आशा[2] ने करब।”

मुस्की दैत खुशीलाल बाजल-

“काका, ई दुनियेँ अशे-अशीपर चलैए, तेहीमे ने अपनो सभ छिऐ।”

विचारकेँ समटैत जीतन काका बजला-

“बचनू, जइले बैसल छी से पछुआइत पछुआ पकैड़ लइए आ जेकरा अगुआ कऽ अगुअबै चाहै छी ओ तेना भौक मारि दइए जे खिखिर जकाँ अनेरे दस डेग रस्ता बढ़ि जाइ छी।”

खुशीलाल बाजल-

“काका, लोककेँ अहाँ सीम-भाँटाक गाछ बुझै छिऐ जे एक-मुड़ियो होइए आ दस-मुड़िया सेहो होइए। मुदा मनुख तँ से नइ छी। ओ तँ नोनी साग जकाँ बुझियौ आकि राजा सगर जकाँ जे जन्मेसँ हजर-मुड़िया होइए। तखन जँ समय ताकि-ताकि काजे करब आकि विचारे करब से

[2] बेसी आशा भेल जिनगी भरिक आशा। जिनगी भरिक आशा भेल दहधारीक आशा।

सम्भव अछि? कथमपि नहि! सम्भव तँ ई ने अछि जे काजो करैत चलू आ विचारो करैत चलू।”

खुशीलालक बात सुनि जीतन काका बचनू दिस तकैत बजला-

“समय कहाँ तकै छी बचनू। गप-सप्प क्रममे टपानक घाटे ने हेरा जाए, तँए ओइपर कनी धियान चलि जाइए। आगू की भेल से बाजह?”

बचनू भाय बजला-

“काका, पहिने एकटा टटका समाचार कहि दइ छी, पछाइत पैछला काजक चर्च करब।”

जीतन काका अकानैत बजला-

“हँ, पहिने टटके समाचार सुनाबह। जँ समए खटिया जाएत तँ बाँकी बात काल्हियो सुनब।”

बचनू भाय बजला-

“काका, आइ चारि बजे बेरूपहरमे सुशीलाक फोन आएल। बड़ हरखित मन बुझि पड़ल। ओ कहलक अछि जे परसू हम गाम अबै छी। अहाँ जे भोगिया देवी आ विलासकेँ जहल पठेलौं तइसँ हमर छाती फुलि बत्तीस हाथक भऽ गेल अछि। गामक समाजसँ किछु हमर प्रश्न अछि, ओ बिना पुछने हमर प्राश्चित केना कटत। जखन अपन परिवार–माने नैहरक परिवार, हरियाएल जिनगीक बाट बना देलैन तखन हमहूँ किए ने ओइ परिवारोकेँ आ परिवारजनोकेँ पूजबैन। जँ इज्जतसँ जिनगी जीबैले छोट-छीन इज्जत गमबौ पड़त तँ ओ गमाएब नहि भेल।”

बचनू भाइक मुहसँ सुशीलाक समाचार सुनिते खुशीलाल जीतन काका दिस आ जीतन काका खुशीलाल दिस नजैर उठा-उठा देखबो करैथ आ निच्चो खसा लैथ। मुस्की दैत जीतन काका बजला-

“कंगना ले आरसी की आ पढ़ल-लिखल-ले फारसी की। जखन

सुशीला परसू एबे करत तखन किए ने समाजक आरो लोक सभकेँ कहबैन जे सुशीला मरल नइ अछि जीवित अछि। अपहरण आ हत्याक मोकदमा सुशीलाक जिनगीक बाटक बाधाकेँ दूर करैक उपाय छल, जइमे एक सुशीला नहि हजारो सुशीला पीसा रहल अछि..!"

बिच्चेमे जीतन कक्काक विचारकेँ रोकैत बचनू भाय बजला-

"काका, बीचमे एकटा नमहर घाट छुटि गेल अछि। जँ ओइ घाटकेँ आइ नइ सुनि लेब तँ परसू विचार करैमे घटिया जाएब। तँए...।"

बचनू भाइक विचारधाराकेँ खुशीलाल बंगालमे सिखल अपन विचारधारासँ मने-मन मिलबए लगल। लड़का-लड़की वा पुरुष-नारीक बीच जेतेक समस्या अपना ऐठाम अछि ओतेक बंगालमे नहि, ओतए एकसँ एक परिनिष्ठित आ सुसंस्कृत परिवार सभ अछि। मुदा जेतए धड़ रहत तेतइ ने घरो बनाएब। तँए अखन जैठाम छी तहीठाम ने घर बनाएब।

खुशीलाल बाजल-

"बचनू भाय, रातियो बेसी भऽ गेल। अन्हरिया राति छी, परसूए परदेशसँ एलौं हेन, तँए ओगरवाहियो ने करए पड़त।"

खुशीलालक बात सुनि जीतन काका बजला-

"खुशीलाल, काल्हि-दिन नइ कहिहह जे जीतन काका पहिनहि संग छोड़ैले तैयार भऽ गेला। पत्नीसँ राति भरिक छुट्टी सेहो लाइये नेने छी। तँए...।"

'तँए' बाजि जीतन काका बचनूकेँ कहलखिन-

"कोन घाट छुटि गेल छेलह बचनू?"

जीतन कक्काक चाँकि देख खुशीलालो आ बचनूओ भाय अपन चाँकिक आँखि जगौलक। बचनू भाय बजला-

"काका, पाँच बर्ख पहिने सुशीलाक बिआह भेल। तेकर दू बर्खक

पछाइत सासुरसँ नैहर पहुँच अपन दुखनामा माता-पिताकेँ कहलक। सोझा-सोझी अपनो गप केलौं। साँप-छुछुनैरक गति भऽ गेल छल। 'जँ खाएब तँ मरब, नहि जँ छोड़ि देब तँ आन्हर भऽ जाएब।' आगू दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे समाज दोख लगौत जे दोहरा कऽ सुशीलाक बिआह किए भेल। तहूमे, ने विधवा भेल छल आ ने तियागले गेल छल। जे उमेरोक बहन्ने ओकरा काटलो जा सकैत। 'ने अक् चलए आ ने बक्!' तैपर सँ अपन उतड़ी उतरैत देख दुनू परानी मामा-मामी सेहो खोंचारए लगला।"

मुस्की दैत जीतन काका बजला-

"उचिते ने खोंचारब छेलैन। पेट जरल ने जरल पेटक दर्द नपैए। आकि जरल पेटक दर्दक नाप-जोख भरल पेटक थर्मामीटरसँ हएत।"

उत्साहित होइत बचनू भाय बजला-

"निर्णय कऽ लेलौं जे सुशीलाक बिआह अपन हाथसँ ओहन कराएब जे सुशीलाक भविसक हँसैत दिन सभ देखत।"

खुशीलाल बाजल-

"बचनू भाय, मामा-मामी ने सहमत भऽ गेला, मुदा ओइ गामक समाज?"

खुशीलालक विचारकेँ तारीफ करैत बचनू भाय बजला-

"खुशीलाल, बहुत पैघ बात बजलह। मुदा बेकती हुअ कि परिवार-समाज आकि देश-दुनियाँ सभकेँ सभठाम अपन अधिकारक संग कर्तव्योक पालन ने करए पड़त।"

तेज गतिये मुड़ी डोलबैत जीतन काका बजला-

"हँ, बिल्कुल ठीक बात बजलह बचनू। हमरे बात कि समाजकेँ नहि बुझल छेलै जे जीतन सत् बाजल छल कि फुइस। मुदा दण्ड-जुर्माना लगि गेल, यएह तँ छी समाज।"

अपन विचारकेँ खुशीलाल सहटारि सहमत दिस बढ़ैत बाजल-

"काका, गाममे कि कोनो अहाँ आइये एलौं आकि केश-दाढ़ी अही गाममे पकबैत बीतेलौं।"

अपन विचार खुशीलालकेँ कबुलैत देख जीतन काका बजला-

"बचनू, कनी सोझरा कऽ सुशीलाक बिआहक बात बाजह।"

बचनू भाय बजला-

"जीतन काका, जखन सुशीलाकेँ अपन जिनगीक सीमाक संग माता-पिताक जिनगीक सीमा सुझौलिऐ तखन ओकर भकुआएल मनमे नव शक्तिक उदय भेलइ। निर्भीक होइत बेचारी कहलक- 'भैया, सभ रंगक लोको ऐ दुनियाँमे अछि आ रंग-बिरंगक विचारो आ जीवनो छइहे। हम जेकरा अधला वृत्ति बुझि सासुर छोड़ि माए-बापक आश्रयमे एलौं तखन फेर ओइ परिवारमे थूको फेकए नइ जाएब।"

सुशीलाक संकल्पित विचारकेँ जहिना हम तहिना सुशीलाक मातो-पिता शिरोधार्य केलैन। अपन भार कम करैत मामा कहलैन-

"बौआ बचनू, सुशीला जेहने हमर बेटी तेहने ने तोहर बहिनो भेलह। तँए दुनू भाए-बहिन विचारि जे कहबह तही विचारमे हमरो दुनू परानीकेँ बुझिहह।"

जहिना कोनो कार्यालयमे आकि विद्यालयमे कर्मचारी आकि शिक्षक पदभार ग्रहण करै छैथ तहिना हम सुशीलाक जिनगीकेँ ठौर धड़बैक भार लेलौं। बचनू भाय बाजिये रहल छला कि बिच्चेमे जीतन काका कहलखिन-

"बचनू, आजुक जे काजक बात छह से सम्हारि लएह। किए तँ खुशीलालो परदेशसँ आएल अछि। गामक लोक केहेन-केहेन छुतहर अछि से केकरोसँ छिपल थोड़े अछि। जँ कहीं चोइरो-तोइर भऽ जेतै तँ अपनो सभ दोखी हएब। गप-सप्प केतौ पड़ाएल नइ जाइए, काल्हियो-

परसू हेतइ।"

बचनू भाय बजला-

"अन्तिम बात कहि दइ छी। दिल्लीमे प्राइवेट नोकरी करैत एकटा मैट्रिक पास लड़का टोहियेलौं। सुशीलाक अखन धरिक जिनगीक सभ बात ओइ लड़काकेँ सुना देलिऐ। ओ बिआहक लेल राजी भऽ गेल। अढ़ाइ साल पहिने सुशीलाक दोसर बिआह भऽ गेल। एकटा बच्चो छइ।"

बचनू भाइक बात सुनि खुशीलाल बाजल-

"भाय नीक ढंगसँ काज केलौं!"

की ढंगसँ काज केलौं से बचनू भाइक नजैरमे रहबे ने करैन। नजैरमे नइ रहैक कारण ई जे काजक दौड़मे तेना बचनू भाइक विचार काजमय भऽ गेलैन जे ओइपर कहियो नजरिये ने गेलैन। जिज्ञासु होइत बजला-

"की ढंग खुशीलाल?"

खुशीलाल बाजल-

"भाय साहैब, बिआह-दानसँ जुड़ल जे लड़कीक समस्या अछि, ओकर निराकरण अपना ढंगे करैत, पछाइत कोर्ट-कचहरीक मुद्दा बनाएब बेसी नीक होइए अपेक्षाकृत पहिने कोर्ट-कचहरीक मुद्दा बना पछाइत समस्याक समाधान करबसँ।"

खुशीलालक विचार सुनि बचनू भाइक नजैर ओहिना विचारक समुद्रमे धड़-धड़ा कऽ मिलि गेलैन जेना छोट-छीन धड़ियाएल पानिक धड़ धारमे मिलि धड़धड़ाएल धारा बनए लगैए...।

बचनू भाय बजला-

"धरमागती कहै छिअ खुशीलाल अखन तक एते पैघ बात, नजैरमे आएले नइ छल।"

बचनू भाइक विचार सुनि खुशीलालक मनमे अपन विचारक सकताएल रूप नाचि उठल, मुदा बाजल किछु ने।

◌

शब्द संख्या : 5046, 19 अक्टुबर 2017

10.

भोगिया देवी आ विलासक समांग थानाक कसट्डीमे जा कऽ दुनूसँ भेँट केलक। दुनू गोरेक मन नीक जकाँ खसल छेलइ। मनमे रंग-बिरंगक अपन जिनगीक क्रिया नाचि रहल छेलइ। ओना कसट्डियोमे सबहक मन एके रंग नइ रहैए। किछु लोक एहनो होइ छैथ जिनकर मन ऊपर उठल रहै छैन, मनमे संकल्प रहै छैन। संकल्पित मन रहने नजैर आगूक क्रियापर रहैए तँए मन खसल नहि बल्कि खुशीसँ ऊपर उठल रहैए। मुदा से भोगिया देवी आ विलासक नहि छल। दुनूक मनकेँ अपन-अपन कएल नीच-वृत्ति तेना घेर कऽ घोरमट्ठा बना देने रहै जे अपन पनचैती अपने मन करैत कहै- 'सचमुच हम अधला वृत्ति केलासँ जहल आबि गेल छी..!'

अपहरणसँ हत्या धरिक एफआईआर भोगिया देवी आ विलासपर संगे छेलइ। दस बजेमे जखन दुनू गोरेकेँ थानासँ कोर्ट लऽ गेल तखन एफआईआरक नकल समांग सभ लेलकैन। बारह बजैत-बजैत दुनू सवडिवीजनल जेल पहुँच गेल। ओना, जमानतक लेल दुनूक समांग ओकीलकेँ सेहो ठाढ़ केने छल, मुदा निचला कोर्टक केस नइ रहने लाख आसन लगौला पछातियो जमानत नहि भेलइ। दुनूकेँ जहल गेला पछाइत समांग सभ केसक नकल नेने गाम आबि गेला।

मुदइ पक्षमे बचनू भाइक नाओं खुलि गेलैन। गाम अबिते जखन

समांग सभ केसक चर्च केलक, तखन एक्के-दुइये गाम दिस चर्च बढ़ल। जहिना बचनू भाइक परिवारक सम्बन्ध गामसँ तहिना भोगियो देवी आ विलासोक परिवारक सम्बन्ध सेहो गामसँ अछिए।

जहिना बचनू भाइक परिवारक समांग सभ विरोधमे ई बाजए लगल जे दुनूक चालि-चलन बिगैड़ कऽ एतेक निच्चाँ-मुहेँ अछि जे पतालमे चलि जाएत...। तहिना भोगियो देवी आ विलासोक समांग सभ बचनूकेँ दोखी बनबैक हवा पसाराए लगल जे जहिना बचनू अगुआ कऽ अहित केलक तहिना तेकर जवाबो देब...।

दुनू दिससँ दुनू हवा गाममे टकराएल। जइसँ गामक लोक, गामक समाज अकबकाए लगल। ओना रंग-रंगक विचार रंग-रंगक लोकक मुहसँ निकलए लगल। मुदा ओ ऐ बिन्दुपर आबि दबि जाइत जे आन ने सुनि लिअए। स्पष्ट रूपसँ तीन रंगक विचार गाममे पसरल।

किछु लोकक मुहेँ निकलल-

"भोगिया देवी आ विलासोक संग अन्याय भेल।"

किछु लोकक मुहेँ निकलल-

"भोगिय देवी आ विलासक किरदानीसँ समाजमे बहुतो लोक पतितो बनल आ बहुतोकेँ जीवन सेहो नष्ट भेलइ।"

किछु लोकक मुहेँ तेसर तरहक विचार निकलल-

"समाजक बीचक सभ छी तँए कोर्ट-कचहरीक मुद्दा बनाएब नीक नहि। समाजेक बीच ओकर निराकरण करब नीक होएत। खाएर जे भेल से भेल मुदा सौंसे गामक लोकक बीच भोगियो देवी आ विलासोक किरदानी सबहक बीच आबिये गेल।"

जहिना दस बजे गाम पहुँचैक बात सुशीला बचनू भायकेँ कहने रहैन तहिना नअ-बजिया ट्रेनसँ तमुरियामे उतैर टेम्पू पकैड़ सुशीला गाम पहुँच गेल। संगमे बेटा सेहो रहइ।

तैबीच बचनूओ भाय अपन मात्रिकक परिवारक संग पाँचटा

समाजोकेँ बजा नेने छला।

सुशीलाकेँ पहुँचते जीतनो कक्काक परिवारक सभ आ खुशीलालोक परिवारक सभ समांग बचनू भाइक ऐठाम पहुँच गेल। जहिना कोनो यज्ञ-हवनमे दसटा लोककेँ एकठाम भेने उत्साहक रूप बनि जाइए तहिना बचनू भाइक ऐठाम उत्साहित वातावरण बनि गेल। समांग सभ आगत-भागतमे लगले छेलैन।

चाह-पान भेला पछाइत सभ कियो दरबज्जापर बैसला। सुशीला सेहो बीचमे बैसल। मर्द-औरत, बुढ़-बच्चा सभ एकठाम बैसला। जीतन काका बजला-

"बचनू, अखन आहे-माहे छोड़ह। नहाइ बेर भऽ गेल आ देखते छहक जे सौंसे परिवार उनैट कऽ आबि गेल अछि तँए भानसो बन्न भऽ गेल हएत।"

जीतन कक्काक विचारकेँ पछुअबैत खुशीलाल बाजल-

"सुशीला बहिन, पहिने ई कहह जे अपना जिनगीसँ सन्तुष्ट छह?"

सुशीला बाजल-

"खुशीलाल भाय, अखन तक–माने दू मास पूर्व तक–अपने लेबरक काज कारखनामे करै छला जइसँ चारि घन्टा ओभर टाइम खटने आठ-नअ हजार महिना कमा लइ छला, आब कलर्क भऽ गेला। जइसँ पनरह-सोलह हजार दू माससँ कमाए लगला अछि। हम अपन डेरापर ट्यूशन पढ़बै छी। जइसँ हजार-बारह साए अपनो कमा लइ छी। बच्चा सेहो लगमे रहैए। दू गोरेक परिवारमे केते चाही। नीक जकाँ गुजरो चलैए आ संतोखो अछि।"

सुशीलाक विचार सुनि सबहक मुहसँ एक्केबेर निकललैन-

"वाह!"

बचनू भाय सुशीलाकेँ पुछलैन-

“बुच्ची, सासुर किए छोड़लह?”

बचनू भाइक प्रश्न सुनिते सुशीलाक मन तन-फना लगलै जइसँ वाणीमे उत्स जागए लगलै। उत्साहित होइत सुशीला बाजल-

“भैया, अखन अहाँ पंचवेदीमे छी। तँए बजैमे हमरा कोनो हिचक नहि अछि।”

सह दैत बिच्येमे जीतन काका बजला-

“ऐठाम कियो आन अछि, हीय खोलि कऽ बाजह।”

सुशीला बाजल-

“भैया, भोगिया देवीक चालि-चलैन नैहरेसँ पाइक रस्ता पकैड़ नेने छइ। संजोगो एहेन भेल जे जहिना घरबला दिल्लीमे रहि कमा-खटा उड़बै-पुरबै छै तहिना अपनो भोगिया देवी गाममे व्यभिचारक जाल पसारने अछि। देहक बेवसाय पाइ-ले करैए। जेकर लगक दलाल छिऐ विलास। गाममे चरित्रहीन लोकक कमी थोड़े अछि जे बेवससाय नहि चलतै। जखन हम पुतोहु बनि भोगिया देवीक घर एलौं तखन ओ हमरो देहक बेवसाय करए चाहलक! तँए...।”

सुशीलाक बात सुनि पिताक–बचनू भाइक मामाक–आँखिसँ नोर टघरए लगलैन। मुदा ओ नोर दुखक नहि सुखक छेलैन, संकल्पित बेटीक जिनगीक उत्साहक छेलैन।

खुशीलाल बाजल-

“सुशील बहिन, तोरा नजैरमे विलास केहेन अछि?”

सुशीला बाजल-

“खुशीलाल भाय, लंकामे राक्षसक ऊँचाइ उनचास हाथ छेलइ, मुदा विलासक ऊँचाइ ओहूसँ बेसी अछि। विलास इज्जतक सभसँ पैघ रूप पाइमे देखैए जइसँ कर्मक दिशे बदैल गेल छइ। विलास पकिया

दलाल भोगिया देवीक छी। नमहर बेपार दुनूक छइ। भाय साहैब, जीबैत रहब, अहिना अबैत रहब। अखन बहुत बात समाजसँ पुछब बाँकी अछि।”

○○○

शब्द संख्या : 794, दीपावली (19 अक्टुबर) 2017

लेखक परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- **गीत संग्रह**। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- **कविता संग्रह**। 8. पंचवटी- **एकांकी संचयन**। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- **नाटक**। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- **उपन्यास**। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- **एकांकी**। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- **बीहैन कथा संग्रह**। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- **दीर्घ कथा संग्रह**। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. स्वाभिमानी जिनगी- **लघु कथा संग्रह**।



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-1-4

उपन्यास



लहसन

जगदीश प्रसाद मण्डल

लहसन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

लहसन
(उपन्यास)
जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-87675-63-6

दाम : ₹ 250/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

LAHASAN (लहसन)
A Maithili Novel by Shri. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि...।

अनुक्रम

एक/09

दू/23

तीन/33

चारि/46

पाँच/59

छह/84

सात/95

आठ/101

नअ/112

उपन्यास लेखन क्रम/122

1.

दुरागमनक दू सालक पछाइत मेवालाल अपन परिवारिक जिनगीक खिंचैत गाड़ीकेँ एकाएक रूकैत देख तेना निराश भऽ गेला जेना अपन सजीव स्वावलम्बी जिनगी बिला गेने होइ छइ..!

अपन पत्नीसँ विचार-विमर्श करब ओतेक जरूरी मेवालाल नहि बुझलैन जेतेक माए-सुभावीसँ...।

टुटैत जिनगी, ढहैत विचार आ नष्ट होइत समाजिक सम्बन्धकेँ देखैत मेवालाल माएकेँ कहलैन-

“माए, अखन धरिक जे जिनगी छल ओ मरि रहल अछि। किछु दिनमे मरि जाएत..!”

सुभावी अपनो, अपन परिवारो आ गाम-समाजक संग परोपट्टोक सभ किछु आँखिसँ देखियो रहल छेली आ भोगियो रहल छेली, मुदा जिनगीक मरबकेँ नइ बुझि रहल छेली। पढ़ल-लिखल सुभावी नइ छेली, मुदा सोल्होअना मुरूखे छेली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जिनगी आ जीवनक लेल ज्ञान सभ किछु छी। पढ़ि-लिखि सेहो लोक ज्ञाने पकड़ै छैथ आ बिनु स्कूल गेनौं परिवार हुअए वा नहि, मुदा जीबैले ज्ञाने मुख्य छी। ज्ञाने शरीरक शक्तिशाली शक्ति छी जे जिनगीकेँ भूतसँ भविस तकक रस्तो देखबैए आ रस्तासँ चलैले प्रेरित सेहो करैए। जखने जिनगी जीबैले ज्ञान मनकेँ प्रेरित करए लगैए तखने अपन प्रगतिक दिशा दिस अपन शक्ति सेहो हाथ-पएर उसकाबए लगैए। परिवारक संग माने माता-पितासँ लऽ कऽ पति-पत्नीक बीचक

जीवन गुदस करैत सुभावी आइ बेटा-पुतोहुक बीचक परिवारमे 'माए' आ 'सासु' बनि ठाढ़ छैथ। अपन बेटा-मुँहक बोल सुभावीकेँ किए कोनो रंगक कचोट मनमे जगैबतैन। तँए निर्भीकसँ निर्भय भेल सुभावी मेवालालक आँखि दिस तकैत बजली-

"की कहलहक बौआ, जिनगी मरि रहल अछि?"

माइक प्रश्नसँ मेवालालकेँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नहि भेलैन। कुवाथो केना होइतैन, संग-संग बीतल जिनगी माइक सोझमे छेलैन। माइयो एक समर्पित जन परिवारक छेलीहे। भाय, मनुखे भगवान आ भगवानेक मन्दिर ने परिवार छी! तैठाम कुवाथे किए हएत? सुभावी परिवारक आमद-खर्च, उत्पादन-उपभोग थोड़े बुझै छैथ। सुति उठि भोरे पहिने आँगन बहारै छैथ, आँगन बहारि माल-जालक थैर-बथानक गोबर-करसी उठबैत खर्ड़ा-बाढ़ैनसँ खरैड़-बहारि गोबर पाथए लगै छैथ आ जलखै बेर होइत जलखै करैत माल-जालक जोगारमे घास-भूसा करए चलि जाइ छैथ, जे दूपहर बीतैत आँगन अबै छैथ आ अपने नहाइ-खाइसँ पूर्व सभ दिन पहिने पुतोहुसँ पुछि लइ छैथ-

"अहाँ सभ खा-पी लेलौं किने?"

ओना, पाँतीक व्यंग रूप सेहो भऽ सकैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम मिथिलाक मातृत्व शक्ति छी। जखने पुतोहु सासु दिस देख मुस्की भरि दइ छथिन तखने सुभावी अपन मुस्कुराइत मने नहाइ छैथ। नहेला पछाइत भोजन करै छैथ।

जहिना जिनगीक फल सुफल पएब छी तहिना ने दिनक फल भोजन छी। मुदा फलो तँ फल छीहे, खटगर अंगुर जँ गुणगर भऽ सकैए तँ मिठगर मालदह आम किए ने भऽ सकैए? भइये सकैए। बाँकी जे फल अछि ताबे बीचमे बैस बीचमानि करह। अखन 'अ'

अक्षरक फलसँ शुरू भेल अछि मुदा तोहूमे अनार, अमरूद छोड़ि कऽ...। नहेला पछाइत अनेरो लोककेँ खेबाक चाह जगिते छै, मुदा श्रमशील लोककेँ तँ दोबरा जाइए, माने नहेलाक चाहक संग मेहनतक चाह, तँए ओकरा भोजनसँ प्रेमो हेबे करैए। भोज्य पदार्थोकेँ तँ ओहीमे ने खुशी होइत हएत जे पेटगर संग डटगरक भक्ष बनैत अपन बलिदान देखत।

भोजन केला पछाइत सुभावी अरामकेँ हराम बुझि बेरूका पहरक काजक जोगार सभकेँ जोड़ियबैमे लागि जाइ छैथ, बेरूका उखड़ाहाक काजक हथियार सभकेँ सम्हारैमे लगि जाइ छैथ। घास छिलैले खुरपी चाही, तोहूमे रौदियाह समय अछि, एक तँ घासकेँ जरने बाढ़िमे कमी अबिते अछि, तँए सुभ्यस्त समयसँ बेसी समयो लगबे करत, दोसर सक्कत माटि रहने खुरपियो ने ओहने बना चलए पड़त। तँए ओकरा पीट-पाटि कऽ काजुल मुँह बनबए पड़ै छैन। तैसंग माल-जालक घरक घूरक जोगार-पाती सेहो नित्य करिते छैथ। दिनक उदय-सँ-अन्त धरि सभ दिन जे सुभावी परिवारक समरपित भक्त रहली, ओ केना परिवारक अभक्त हेती आ अभक्त विचार मनमे जगा विभक्त पैदा करती?

पनरह कट्ठा खेतक जिनगी बना मेवालाल आत्मनिर्भर भऽ स्वावलम्बी जीवन धारण केने आबि रहल छला। अपना सभ मिथिलामे ने रहै छिऐ यौ, मिथिलाक दर्शन दुनियाँमे ओहिना पसरल अछि आकि किछु कएलो-धएल छइ? छै! मुदा देखए पड़त। जइ मिथिला भूमिमे अयाची मिश्र पैदा लेलैन, जे अपन जीवन दर्शनसँ अहाँक जीवनमे दर्शन दैत रहला अछि, ओ दर्शन की छी? ओ छी-एक कट्ठा जमीनक बीच एक परिवारकेँ गुजर-बसर करैत मानवीय गुणसँ सम्पन्न निर्भय जिनगी प्राप्त करब। जखने मनुखमे निर्भय गुणक आगमन होइए तखने ओ मुक्तिक शिखरपर पहुँच अभय शक्ति प्राप्त

करैए। की हमरा नइ बुझल अछि जे हुनका ऐठाम, माने आयाची मिश्रक ऐठाम राज-दरबार पहुँचलैन। भलेँ ओ आइ इतिहासक पन्नाक विषय-वस्तु किए ने बनि जाए, मुदा ओइमे जीवनी शक्ति नइ अछि, तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए।

पनरह कट्ठा खेत मेवालालकेँ पैतृक सम्पैतक रूपमे छैन। पिता–बुधिलाल–केँ सेहो पितासँ वएह पनरह कट्ठा खेत भेटल रहैन। सुभ्यस्त स्थिति बना चलने बुधिलालक जमीन कहियो मालगुजारीक अभावमे नीलामपर नहि चढ़ल। गामक भीतर जे परिवारक सम्पैतक लूट-पाट भेल, तइमे मालगुजारियोक खेल कम नहियेँ रहल। एक तँ दुर्भाग्य अपना सबहक रहबे कएल जे एक नमहर समय पराधीन रहलौं। मुदा स्वतंत्रतो भेटला कम दिन नहियेँ भेल अछि। ओतेक जरूरे भऽ गेल अछि जे परिवारक तेसर पीढ़ी सेहो आब अन्त कऽ रहल अछि।

आइ हम सभ ओहन जुगक देहलीपर पहुँच गेल छी, जेकरा वैज्ञानिक जुग कहल जाइए, विकसित जुग कहल जाइए। एते तँ विज्ञानसँ अविष्कार भइये गेल अछि जे खेतीक सभ साधन असान बना देलक अछि। बुधिलाल खेतीक संग मवेशी पालनसँ अपन परिवार चलौलैन। खेतीक लेल पटबन जरूरी अछि, जइले पानिक साधन अनिवार्य अछि, मुदा तइले बुधिलाल अपन किछु साधन नइ बनौने छला। सालक तीन मास बरसातक होइत अछि, जइमे कम कि बेसी बरखा हेबे करैए। ओना, बेसी भेने बाढ़ियो अबिते अछि आ मध्यम बरखा भेने ने बाढ़ि अबैए आ ने सोल्होअना रौदी होइए। तँए, ओहन सालक मौसमक रूप बदैल जाइए जइसँ सुभ्यस्त भऽ जाइए। जखने सुभ्यस्त समय हएत तखने उपजा-बाड़ी नीक हेबे करत। जइसँ खेतक बले जीनिहार खेतिहरमे खुशहाली एबे करत। एक तँ ओहुना, जँ मुरकुटियो बँटवारा करै छी तैयो सालमे तीनटा मौसम होइए- जाड़, गरमी आ बरसात। ऐ हिसाबे तीन सालमे एक साल रौदी, एक साल

शीतलहरी आ एक साल बरसातक हिस्सा भेल।

सोझ-साझ हिस्सा तँ बाँटि लेलौं मुदा तीनू मौसमक गुण-अवगुण सेहो ने देखब जे कोन मौसम हितू अछि आ कोन अहितू अछि। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे बुधिलाल सोल्होअना अपन खेती-बाड़ी भगवानक देल बर्खाक भरोसे करै छला। ओना, बुधिलाल पारखी गिरहस्त जरूर छला। ओ जनैत रहैथ जे कोन फसिलक उपज केहेन मौसममे केलासँ लाभक बनत आ कोन घाटाक सौदा बनत। ओना परिवार चलबैक खास गुण बुधिलालमे ई छेलैन जे परिवारक हिसाबकेँ नीक जकाँ बुझैत रहैथ। परिवारक हिसाब बुझैक माने भेल- समांगक संग ओकर ओकाइतकेँ बुझब। समांग आ समांगक ओकाइतक बीच सामंजस करैक नीक लूरि बुधिलालकेँ छेलैन, तँए हँसैत-खेलैत अपन जिनगीक आदि-अन्त केलैन।

पाछूसँ अबैत परिवारक गाड़ीक जुआ कन्हेठ मेवालाल जखन आगू बढ़ला तखन बारह मासक समयपर नजैर गेलैन। पिताक देल पनरहो कट्ठा खेत मेवालालक एकेठाम छैन, जे माटिक उर्वरा शक्तिक हिसाबसँ गामक मध्यम श्रेणीक जमीन अछि। अखन तक गाममे खेतीक लेल पानिक कृत्रिम साधन मात्र पोखरि-इनार रहल। बरखा प्राकृतिक साधन छी। गाममे चापाकलोक दर्शन नहि भेल छल। खेतक पटौनीक साधन करीन-ढोसिक संग उपछा मात्र छल। गोटि-पङ्गरा किसान, मरूआ खेतीक बीआ पटबैले अपना खेतमे कूप खुनै छला। जेकर देखा-देखीसँ मेवालाल सेहो खेती-ले कूपे खुनि पानिक बेवस्था करैत आबि रहल छला। पनरहो कट्ठा खेतमे चारिटा कूप साले-साल कातिक मासमे खुनि लइ छला आ मासे-मासे ओकरा उड़ाहैत रौदीक सामना अपन शक्तिक अनुकूल करैत जीवन-यापन कऽ रहल छला।

मेवालाल अपन जिनगीक आरम्भ पनरहे बर्खक अवस्थामे केलैन। आ अपन मेहनतक बले परिवारक जुआकेँ खिंचैत आबि रहल छला। पनरह बर्ख पूर्व, माने मेवालाल जखन दस बर्खक छल, तहिये पिता मरि गेलैन। बीचमे किछु दिन सुभावीक भरे परिवार चलल। छोट परिवार सुभावीकेँ छेलैन। ओना, चारि गोरेक परिवारकेँ छोटो नहियेँ कहल जा सकैए। परिवारक खर्च छोटाइ-बड़ाइक हिसाबसँ चलैए, माने कम संख्या आ अधिक संख्याक हिसाबसँ, जे सर्वविदित अछिए। मुदा छोटाइ-बड़ाइक हिसाबसँ समरूप चलत, से जरूरी नहि, किएक तँ जइ परिवारमे कमेनिहार कम रहत आ बच्चा तथा बेमारीक संग वृद्धजन बेसी रहता तइ परिवारक खर्च, छोट रहितो बेसिया जाइए। मुदा जँ नमहर परिवारे अछि आ बेमारीक संग बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ कम रहल, तखन खरचो कम होइए। खाएर जे होइए, जेतए होइए, बात तेतुक्का भेल...। सुभावीक पति जखन मुइला तइ समय जेठ सन्तान–मेवालाल–दस बर्खक छल आ ओकरासँ छोट दूटा बहिन छेलै, जे एगो आठ बर्खक छल आ दोसर- छह बर्खक। बाल बिआहक चलैन रहने जेठ बेटीक बिआह बुधिलाल अपना जीबिते कऽ नेने छला। मुदा दुरागमन पछुआएल छेलैन। ओना, मेवालालोक बिआह करैक विचार दुनू परानी बुधिलाल, बेटीक बिआह केला पछातियेसँ करए लागल छला, मुदा तइ बिच्चेमे बुधिलालकेँ मुइने मेवालालक बिआह पछुआ गेल। मोटा-मोटी सुभावीक ऊपर एकटा बेटीक दुरागमन, दोसर बेटीक बिआह-दुरागमन आ मेवालालक बिआह, यज्ञ स्वरुप आगूमे छेलैन। तैसंग चारू गोरेक जीवन-यापन सेहो छेलैन्हे।

किसानी सभ्यता जे अपना ऐठाम शुरूसँ चलि आबि रहल छल, मशीन एने ओ बदलल। बदललक माने ई नहि जे चितसँ पट भऽ गेल आकि पटसँ चित, बल्कि ओइमे थोड़ेक तोड़-जोड़ भेल, जेकरा

संक्रमण सेहो कहि सकै छी। तैसंग विचारमे विकासक संग विघटनो भेल। विघटनक अनेक कारणमे एक ईहो भेल जे जैठाम किसानी जिनगी-ले पानिक जेतेक जरूरत अछि, ओतेक मशीन-ले नइ अछि। तैसंग बर्खाक पानि खेतक जिनगीकेँ जे शक्ति दइए, ओइ शक्तिक ओते खगता मशीनकेँ नइ छै, तँए बरखा-मौसम उद्योग जगतक लेल–माने मशीनक संग वेपार लेल–जेतेक नीक अछि तइसँ बेसी अवरोधक बनि अधला सेहो अछिए।

देशक बहुसंख्यक अवादी किसानी जिनगी धारण केने जे आबि रहल छला, मशीन भेने ओइमे टूट आएल। गामक श्रम शक्ति शहर दिस बढ़ल, जइसँ शहरक विकास जइ गतिये भेल, ठीक ओकर विपरीत ग्रामीण शक्तिकेँ हटने गामक भेल। मनक धारणामे सेहो घटी-बढ़ी भेल। जैठाम समयपर बरखा नइ भेने होम-यज्ञक संग ओझाइ-भगताइ सेहो होइ छल ओ आब नइ रहल। ओना, खेती-ले पानिक जरूरत मशीन सेहो पुरबए लगल, जइसँ रौदीक प्रकोपमे थोड़ेक घटबी सेहो भेल। धार-धुरक पानि, जे छिड़ियाएल चलै छल, छहर-नहर भेने ओहूमे कनीक बदलाव एबे कएल, जे नीक-बेजाए दुनू होइते अछि। आइ हम सभ टुटैत किसानी सभ्यता आ उदय होइत मशीनी सभ्यताक बीच ठाढ़ छी, से बुझि ने आगू दिस ताकब?

ओना, बुधिलालकेँ मुइने सुभावीक ऊपर परिवारक सोलहन्नी बोझ पड़लैन, मुदा ओइकेँ उठबैक पाछू सुभावी चारू परानी[1] मिलि अपन परिवारकेँ जीवनी शक्ति दइ पाछू अपन श्रम शक्ति लगौलैन। ओना, एकटा अनुकूलता सेहो सुभावीकेँ भेटलैन, ओ भेटलैन बेटा-बेटीक बीच परिवारक काज करैक संस्कार, काज करैक ऊहि। ओना, जइ लगनसँ बेटी माइक संग काजमे सहयोग करैत अछि, तइ

[1] अपना संग दुनू बेटी आ बेटा

अनुपातमे बेटा नइ करैए, ऐमे लोहा-लोहार दुनूक दोख अछि। ओना, एकरा बीच मोट लकीर नहि घिचल जा सकैए, किएक तँ ओइक पाछू, पाछूसँ अबैत ढर्ड़ाक हिसाबे परिवारक बुनाबट सेहो अछि।

दुनू बेटीक विआह-दुरागमन करि सुभावी अपन बेटीक भारक उतरी गंगा महरानी दिस नजैर उठा चढ़ा देली आ बेटाक बिआह, माने मेवालालक बिआह सेहो कऽ नेने छेली। ओना, दुनू माए-बेटाक बीच अखन तक ई स्पष्टता नइ आएल छल जे परिवारक मुँहपुरखी सझिया अछि आकि बेकतीगत।

परिवारक सभ काजकेँ सभ कियो अपन बुझि, जे जइ-जोकर अछि ओ ओहेन काज करैत आबि रहल छल। ने सुभावी ई बुझै छेली जे परिवारक सोलहन्नी भार हमरे पुरबए पड़त आ ने मेवालाले बुझैत। दुनू मायपुत अपना संग एक-दोसरकेँ सेहो गारजन बुझैत। जखन बुधिलाल मरल रहैथ आ मेवालाल कानैत रहए, तखन वएह सुभावी आँखिक नोर पोछैत कहने रहथिन-

“बेटा, बाप ने मरलखुन, हम तँ दुनू कूर[2] जीविते छिअ, तखन तूँ कानै किए छह।”

माइयक विचारकेँ मेवालाल अपन मातृत्व शक्तिक असीरवाद बुझि अपन किसानी जिनगीमे कनी जोर दैत धक्का मारि आगू बढ़ैक चेष्टा केलैन। अपन पनरहो कट्ठा खेत, जे मध्यम किस्मक एकठाम छेलै, जइमे कूपसँ पटौनी करैक लूरि सीखि खेती शुरू केने छला, तइमे बैंकसँ कर्ज लऽ बोरिंग-दमकल करौलैन। जइसँ परिवारिक जिनगीमे खुशहाली आबि चुकल छेलइ।

पाँच बर्खक रौदीमे तेसर साल छी। रौदी भेल जे अकास वृष्टि नइ भेल वा जँ भेबो कएल तँ थोड़-थाड़ भेल। रौदी-रौदी छी। ओना,

[2] माता-पिता, माए-बाप

दहार रौदीसँ भयंकर होइए। दहार भेल, बर्खासँ बाढ़ि धरिक रूप। बाढ़िक तँ ओहन भयंकर रूप होइए जे गामक गाम समतल भूमिकेँ तोड़ि धार बना मनुखक बास भूमिकेँ अपन बास भूमि बना अनवरत बहए लगैए। जइसँ पूजनीय सेहो बनिते अछि। मुदा अखन दहार नहि मात्र रौदीटा।

रौदीक आँट-पेट देखैले पहिने ओकर पेटमे पड़ल जे बीज स्वरूप आँठी अछि, तेकरा जखन निकालए लगब तँ भक्-दे मिथिलाक जनक राजक बारह बर्खक रौदी सोझमे औत। जइमे जनक महराजकेँ सेहो अपने हर जोतए पड़ल रहैन। जइमे सीता सन जगत जननी जानकीक प्रादुर्भाव भेल। मुदा ई भेल त्रेता जुगक बात। ओना वाल्मीकि ऐ आँठीकेँ त्रेता जुगसँ पहिनहि खोजि धरतीमे रोपि देने छला, जे त्रेता जुगमे लक्ष्मणक संग राम बोने-बोन भरैम अपन आत्मरूप सीताकेँ फुसियाहा रावणक हाथे चोरौल जगत जननी जानकीक भाँज लगा, चोरक वंशकेँ संहार केलैन। रौदीक छोट रूप, माने जहिना महादेवक विराट स्वरूप चिन्तनक लिंगकेँ माटिक छोट-छीन रूप गढ़ि पचीस-पचास साएकेँ एकठाम साटि, एकटा रूप गढ़ि पूजा कएल जाइए, तहिना कृषक आ कृषि'क बीच सेहो अछिए। छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ बीजक बीच अनेको रूप अछि। कम-सँ-कम सिंचाइक जरूरतबला फसिलसँ लऽ कऽ पानिक फसिल धरि अछिए। मुदा कोनो कारणे जँ कम्मो सिंचाइबला फसिलकेँ समयपर पियास नइ मिझाएत तँ ओहो रौदिया जाइते अछि। जेकरा रौदियाएल कहै छिऐ, रौदीक एक रूप ईहो भेल। तहिना रस्ता चलैत आकि कोनो काजे करैकाल जँ उचितसँ कनी बेसी रौद लागि गेल, जइसँ मन कनी तबैध गेल, तेकरो ‘रौदियाएब’ कहै छिऐ। मुदा से नहि, पाँच बर्खक

घनघोर रौदी[3]क बीचक तेसर साल, मेवालाल अखन तक पूर्ण आशाक संग अनेको बाधाकेँ अङैजैत निकैल चुकल छला। पहिल सालक रौदीमे अस्सीसँ नबे प्रतिशत उपजा नोकसान भेलइ। उपजावाड़ी हुअ आकि नहि, मुदा मनुख तँ अन्न खेबे करत, बर-बेमारीक इलाज करेबे करत, रहैले घर-दुआर बनेबे करत इत्यादि-इत्यादि जे जिनगीक मूल-भूत खगता छै ओ तँ पुरबए पड़बे करत। मेवालालकेँ मात्र दूटा शीशोक गाछ आ दूटा आमक गाछ। ओना, रौदी भेने ओ चारू गाछोमे उखराहा पकैड़ लेलकै। बर्खाक पानि, माने बिना पानि पीने गाछो-बिरीछ केना लहटगर रहत।

रौदीक पहिल साल एकटा शीशो आ एकटा आमक गाछ बेच मेवालाल परिवारकेँ ठाढ़ केने रहला। दोसर साल सेहो ओहिना केला, ओहो दुनू गाछ बेच खेपला। मुदा तेसर सालक शुरूहेमे अपन खसैत स्थितिकेँ देख मेवालाल अँकए लगला। मनमे उठलैन- जइ जिनगीमे अखन धरि परिवार रहल तइमे आगूओ एहिना चलि सकैए आकि टुटि कऽ खसि पड़त, मेटा जाएत? एकटा बोरिंग-दमकल लेलौं, ओहो लसैक गेल! धरतीक पानिकेँ निच्चाँ उतरने बोरिंगक लेअर सुखि गेल, बोरिंग पानि देब छोड़ि देलक। तेतबे नहि, गामक सेखी सेहो बदैल रहल अछि। जे गाम गाछ-बिरीछ, उपजा-बाड़ीसँ हरियर-कचोर छल, ओ मरना सन भऽ गेल अछि। हरियरीक जगह पीड़ीपन लऽ लेलक। गाछ-बिरीछकेँ सुखने, उद्योग जगतक भाग्य चमकल। हजार रूपैयाक गाछ साए-दू-साएमे लोक बेचए लगल। दू फाटकक बीच लोक फँसि गेल। कबीर दास कहने छैथ-

'दो पाटन के बीच में बाकी बचे ने कोई।' जे जेतए से तेतए फँसि गेल...।

[3] सोलहन्नी बरखा नइ भेल

एक दिस बैंकक कर्जक सूदि, जइमे रौदी-दाही किछु ने होइ छै, आ दोसर दिस तीन गोरेक परिवारक खर्चक बीच मेवालाल फँसि गेला। ओहुना बुझै छिऐ जे साधारण मेशोमे हजार-डेढ़-हजार महिना एक बेकतीक खर्च भेल। से तँ भेल सोझे रतुका-दिनक भोजन, मुदा जलखैक संग जिनगीमे साइयो अनेक खर्च तँ बाँकीए अछि। खेती सहजे नष्ट भऽ गेल। दोसर कोनो उपाय मेवालाल नहि देख रहल छला। ऐठाम दुनू बात अछि, दुनूक उपायो अछिए। गामक जे पानिक रूप अछि, तैठाम उपाय एकभग्गू भऽ गेल अछि। आ दोसर, लोकक मन-बुधिकेँ ई पकैड़ नेने अछि जे शहर-बजारमे ओहिना लोककेँ मुँह-मंगा भेटैए। ओना, जीवन-यापन करैक साधन गामक अपेक्षा शहर-बजारमे बेसी भइये गेल अछि। हजारो रंगक कारोबार पसरल अछिए, जे गाममे नइ अछि...।

प्रश्न उठैत अछि, की गामकेँ ओहिना तरमुहाँ छोड़ि देबै आकि पितृ भूमि, मातृ भूमि, मिथिला भूमि बुझि विचारि किछु करबो करबै? की खिखिरक फलकल नाँगैर जकाँ सोझे फलकल छी आकि लुक्खीक नाँगैर जकाँ सुर्राइतो छी? खाएर जे छी, जेतए छी, मौजसँ छी, नीक छी...।

हम सभ किसान छी, माटि-पानिक बीच बसल धरतीपर ओहन जीव बनि माटि-पानिसँ बनलो छी आ माटिये-पानिपर जीवो करै छी। साल भरिक चक्रमे किछु दिन पानि धरतीक निच्चाँमे रहैए आ किछु दिन धरतीक ऊपरोमे सेहो पसैर जाइए। माने, किछु दिन पानिक छातीपर चढ़ि माटि सवारी कसैए आ किछु दिन माटिक छातीपर चढ़ि पानि सवारी कसैए। बरसातक समय बाढ़ि-बर्खासँ धरतीक ऊपर पानि पसरल रहैए आ रौदी पाबि पानिकेँ तर करैत माटि ऊपर रहैए। मुदा दुनूमे जहिना उपज शक्ति छै तहिना संहार शक्ति सेहो छइहे। जइ रूपक संगम दुनूक बीच जखन होइए ओइ रूपक जीवधारीक

जन्म होइए जइसँ धरतीक शोभा-सुन्दर निखारैए।

गाछ-बिरीछबला शोभा-सुन्दर गाम हुअए आकि दहाइत-भँसियाइत उजरल-उपटल गाम, ओइमे माल-जालसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछक संग लोको-वेद आ चिड़ैयो-चुनमुनी रहबे करत। तइमे जहिना चिड़ै-चुनमुनी आकि माल-जाल केम्हरो मटिबसू अछि आ केम्हरो पनिबसू, तहिना ने मनुखोक संग अछि, जे मनुखक काजो आ बुधियो-विचारमे देखल जा सकैए। खाएर जे अछि, जेतए अछि, तेकरा तेतै रहए दियौ, अपना सभ अप्पन विचार करू...।

पानि पतालमे बसैए, हवा अकासमे आ अपना सभ बीचमे धरतीपर छी। जरूरत दुनूक अछि, जहिना पानि पीलाक पछातिये जीब सकै छी तहिना बिनु हवोक तँ नहियेँ जीब सकै छी। तँए, जरूरत दुनूक अछिए। मुदा से दुनू समुचित ढंगे केना पेबब, ई तँ अपने सभ ने विचारबै..?

जइ गाछ-बिरीछ, माल-जाल आ लोक-वेद पेब जे धरती जेहेन सुसम्पन्न बनल ओ ओतेक नीक भेल आ जइमे जेतेक उजार अछि ओ ओतेक श्रीहीन अछि। धरतीपर चाहे जे कोनो गाछे-बिरीछ आकि अन्ने-तरकारी लगबै छी, सभकेँ अपन-अपन सिर रूपमे ऐ धरतीसँ शक्ति लइक शक्ति छै, ओ ओतेमे पसैर अपन दुनियाँ गढ़ि लइए। तँए ई कहब जे मिरचाइ गाछकेँ ताड़क गाछ बनैक इच्छा नइ छै, से नहि! से छइहे। मुदा जइ देहमे जेतबे शक्ति रहतै तेतबे दूर ने पसैर सकत। जहिना कोनो अन्नक सिर (जड़ि) छह ओंगरी गहींर धरिक नमी (जल शक्ति) पीब अपन जीवन ठाढ़ केने अछि, आ कोनो कोनो हाथ-भरि गहींर धरिक रस पीब जीवनक दुनियाँ गढ़ने अछि। ओना, मेवालालकेँ अपना संग अपन गामकेँ आ अपन इलाकाकेँ जइ नजरिये चिन्हबा चाही, से नहि चिन्ह सकला, तइमे कनी कमी छेलैन। मुदा दू सालक

रौदी मेवालालक जिनगीक हालकेँ दू हाथ गहराइ दिस नइ धकेललक सेहो बात नहि, मुदा ओ अलग भेल। ओना, समाजिको रूपमे किछु-ने-किछु धकलेबे कएल। मिथिलांचल छी, सभ अयाचीए मिश्र नइ हेता। मुदा तँए कि हुनको पान-सालक कि साल सालक आकि बारह सालक रौदी आ फाटल-फाटल मेघकेँ बोरा-बोरे पानि उझलबसँ भेँट नहि भेल हेतैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तँए, ओ केना गाछ-बिरीछसँ सम्पन्न धरतीक रक्षा करै छला आ केना केलैन..? खाएर, आयाची जे केलैन, जेतबे केलैन मुदा अपन विचारक जिनगीक घोड़ाकेँ नमहर जिनगी नहि देलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

बीतैत फागुन आ चढ़ैत चैतक बीचक वसन्ती मौसम पकैड़ नेने छल, मुदा गतिहीन चालि-ढालिमे, जेहेन सुभ्यस्त समैक मौसम होइत तेहेन नहि। फगुआ परसू छी, रंग-अबीरक खेलो चलत आ डम्फापर फॉगुक संग फगुआ सेहो गाओल जाएत, मुदा कोन फॉगु आ केहेन फगुआक नाच हएत से तँ परसू देखब। तपसँ तपिस मेवालाल सुभावीकेँ कहलैन-

"माए, जान बँचाएब कठिन भऽ गेल..!"

मेवालालक मनक हलन्त सुभावी ठीकसँ नइ बुझि निरुत्तर भऽ अकबकाए लगली।

निरुत्तर सुभावीक भावकेँ परेख मेवालाल बजला-

"माए, खेती-पथारी बिलैट गेल। चारिटा बेख जे छल, दूटा शीशोक आ दूटा आमक, ओकरा बेच कऽ कहुना दिन कटलौं मुदा आब की करब?"

'आब की करब' बाजि मेवालाल चुप भऽ रहला जे माए की विचार दइ छैथ।

गोमुख माए, केना बेटाकेँ बिमुख भऽ किछु कहती, मुदा...।

सुभावी बजली-

"बौआ, कहुना भेलह ते तूँ घरक पुरुख-पात्र भेलह, तोहीं ने घर-परिवारकेँ बुझबहक।"

माइक बात सुनि मेवालाल ठकमुरा गेला। ठकमुरा गेला ई जे पिताकेँ मुइला पछाइत परिवारक माइये ने गारजन भेली, तेकर अनुभव किछु ने देली! भऽ सकैए बिसरियो गेल होथि। मुदा एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे मानि लिअ पचास बर्खक बीच नमहर भुमकम नइ भेल वा नमहर रौदियो नइ भेल, जे ऐबेर भेल। यएह ने भेल बुनियादी आधार। ऐ बीच जे पाँच बर्खक हुअए आकि पचास बर्खक, मुदा नवता तँ एबे करत किने...।

मेवालाल बजला- "माए, परदेश जाइये पड़त। गाममे रहने सभ तूर मरि जाएब!"

एक समए छल जखन कियो बेटा जँ परदेश जाइक चर्चा करैत तँ माए घरमे बिनु अने पेटकान लाधि दइ छेली, जे जँ बेटा परेदश जाएत तँ हम ओकरा जाइसँ पहिने परान तियागि देब। मुदा आब तँ ओहन परिवेशे बनि गेल अछि जे जइ परिवारमे परदेश खटनिहार नइ अछि, ओइ परिवारक कथा-कुटुमैती तक प्रभावित भेल अछि।

माएकेँ सकदम देख मेवालाल पत्नी दिस तकैत बजला-

"घरमे गहना की सभ अछि?"

पत्नी- "आध सेरक चानीक सुति आ पाभैरक पाइत।"

पत्नीक बात सुनि मनमे मेवालाल ठानि लेलैन जे परदेश जेबे करब।

❍

शब्द संख्या : 3169, तिथि : 10 नवम्बर 2017

2.

अढ़ाइ बर्खक रौदी भऽ गेल। अकाससँ एको बून पानि नइ खसल। जहिना मिथिलाक जनकजी अढ़ाइ बर्खक रौदीकेँ (बारह बर्खक रौदीक बीच) बचकानी रौदी बुझि, अपन तपमे तल्लीन मने-मन विचारि रहल छला जे अढ़ाइ बर्खक रौदीसँ केते उजार भेल से तँ ऐठामक प्रवुद्धेजन ने जमीनी अनुभव करि विचार करता। एकटा जनक की करता, जनकपुर देखता आकि रौदियेलहा गाम।

अपन परिवारक टुटैत कड़ी देख मेवालालक मन असहज भइये गेल छेलैन। अतीत दिस जखन देखै छला तँ भरल-पुरल स्वावलम्बी जिनगी हँसैत देखा पड़ैन मुदा जखन भविसपर नजैर जाइत तखन अन्हार कुप-कुप बुझि पड़ैन। आ वर्तमानक अपन गनजन तँ सोझामे नचिते रहैन। घरमे पुरुख-पात्र तँ हमहीं छिऐ, पत्नीकेँ हाथ पकैड़ जिनगी भरिक संकल्प वेदी लग घुमि आगि-पानिक बीच केने छी। माए तँ माइये छिया। कखनो जन्मदाताक संग पालनकर्ताक रूप देखौती तँ कखनो पुरुख-पात्र कहि दुनियाँ देखबैत पाछूसँ पीठ ठोकती।

गामक सात पोखैरमे तीनटा ओहन रूपमे जीवित अछि जे अपन सकल तियागि डोह-डाबर बनि गेल अछि। पाछूसँ (माने ऊपर दिससँ) एहेन थाल-कादो बनि गेल अछि जे मनुखक संग मालो-जाल आ चौंगर चिड़ैकेँ सेहो गादिमे गड़ैक रूप बनि गेल अछि। से कोनो एक्के गाममे नहि, परोपट्टाक संग सम्पूर्ण रौदियाएल इलाकामे। सुखल

चारिटा पोखैर ओहन बनि गेल अछि जइमे नमीक नरम रूप पाबि हरियर घास जनैम-जनैम चतैर-पसैर जरूर गेल अछि मुदा धरतीक फाटो ओहन फाटि गेल अछि जइमे अनभुआर माल-जालक संग अचेत मनुखो फँसिये सकैए।

गामक अठारह इनारमे बारहटा इनार अपन रूप बदैल कुरुप बनि गेल। बँचल छबो इनारमे तीनटा ओहन बनि गेल अछि जे गाए-महींस जकाँ साँझ भोर चारि घैल पानि दैत-दैत अपने गदिया लगैए। बाँकी तीन इनारक पानि ओते निच्चाँ पहुँच गेल अछि जे जेते उगहैन खिंचला पछाइत दू घैल पानि अबै छल से आब एक घैल अबैए, तँए पानि रहितो भारी तँ भइये गेल अछि। से कोनो एक गाम आकि एक टोलक बात छी से नहि, रौदियाएल इलाकेक।

पानिकेँ पड़ाइन लगिते माटिक मोल की? किछु ने। जँ पानिक संग रहल तँ सृष्टिकर्ता छी नहि तँ मटियाहा पाथरक पहाड़। अन्नक खेती सोलहन्नी समाप्त भऽ गेल। तीमन-तरकारीक खेती सेहो चलि गेल। गाए-महींस पोसब कठिन भऽ गेल, जेहो छल तइमे घटैत-घटैत एक तिहाइपर पहुँच दिनो-दिन घटिये रहल अछि। गाछ-बिरीछक स्थिति सेहो बदहाल अछिए। आधासँ बेसी सुखि गेल आ जेहो जीबैए ओ टुक-धुम-टुक-धुम करैत।

अपन टुटानक संग जिनगीक बदलानक बीच मेवालाल किछु तँइये ने कऽ पाबि रहल छैथ जे आगू की करब। ओना, मनमे ईहो रहैन जे बाहर गेलापर जे काज भेटत से मन मारि करब। भाय, अपन कारोबार ने कियो अपना बुधिये-विचारे करैए, जे मनलग्गू बनि गनगनाइत चलैत रहै छै, मुदा जैठाम अनका बुधिये काज करए पड़त तैठाम तँ मनकेँ मारिये कऽ ने खोंच-खरोंच सहितो करए पड़त। ओना, हारल नटुआ सेहो नम्बरी नोटसँ उतैर खुदरा पाइ दिस चलिये अबैए।

मुदा मंचक हारल आ जिनगीक हारबमे कनी दूरी अछिए।

जिनगीक अनेको प्रश्न मेवालालक मनमे पानिक बुलबुला जकाँ उठैत-फुटैत रहैन। आइ धरिक स्वाधीन जिनगीक जे स्वतंत्र किरिया-कलापक छल ओ मेटा रहल अछि! मुदा परिस्थितिवश किरिया-कलापमे जे चढ़ा-उतरी भेल ओहो तँ सोझहेमे अछि, तँए राजा-देवक दोखे की। तही अवस्थामे ने कियो किछु छोड़बो करैए आ किछु पकड़बो करैए। किछु पकैड़ जीवनकेँ तँ जीवित रखए पड़त किने। हँ! तइमे नचार सेहो विचारकेँ असथिर होइमे डेंगी नाह जकाँ किछु-ने-किछु डगमगैबते छइ...।

जइ लूरि-बुधिक बले अखन तकक जिनगी मेवालालक रहलैन ओ बदैल जेतैन, जे औजार हाथमे छेलैन ओ छुटि जेतैन। आगूक औजार चलबैक लूरि नहि छैन। पढ़ल-लिखल सेहो तेतबे छैथ जे शहर-बजारमे हिनका सन लोक-ले ऑफिसक पनिभरो काज हेतैन कि नहि तेकर कोनो गारंटी नहि। एक तँ गाम-घरक लोक ओहुना बजै-बुझैमे धखाइए तैठाम ऑफिस तँ सहजे सहरगंजा लोकक अड्डे छी। तँए ओमहर तकबो मेवालाल-ले उचित नहियेँ हेतैन।

मेवालालक निराश मनमे आस लगलैन। आस लगिते विचारमे संकल्प जगलैन। जगिते विचारमे संकल्पक विकल्प सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेलैन। विकल्पकेँ उठि ठाढ़ होइते मनमे उपकलैन- 'जखन दू हाथ, दू पएर आ दू आँखि लऽ कऽ दुनियाँमे आएल छी तखन किछु-ने-किछु आँखि देखबे करत, हाथ करबे करत आ पएर डेगा-डेगी चलबे करत। जेहेन देश तेहेन भेष बनौने जिनगी चलिये जाइए...।'

हौंसलीक संग पत्नीक पाइतकेँ बजारमे बन्धक नहि लगा मेवालाल ऐ आशापर बेच लेलैन जे कमा कऽ कीन लेब। जेकर परिस्थिति सोझामे ई छेलैन जे बन्हकी गहनाक कोनो दर निर्धारित

नहि अछि। ने मूलधनक निर्धारण अछि आ ने सूदिक। तँए कमसँ कम वस्तुक मूल्यक आँक अछि। मुदा तैसंग ईहो तँ लाभ अछिये जे कम सूदिक रूपैआकेँ सूदियो कमे हएत।

मुदा ई सभ तँ चलन्त जिनगीक भसान छी, असल तँ अछि जे जैठाम जिनगी मरि रहल अछि तैठाम ओकरा कोरामीन खुआ पहिने ठाढ़ करब...।

हौंसलीक रूपैआ परिवारमे पत्नी-माइक बीच मेवालाल दैत बजला-

“जाबे बाहरसँ कमा कऽ नहि भेजब तैबीच अहाँ सबहक हिस्सा भेल। पाइत हल्लुक छल तँए गाड़ीक भाड़ाक संग बटखरचा भरि हमरो रहल।”

हिसाब-बारीक गप-सप्प हौ आकि कोनो विधि-बेवहार, ओ तँ जेहेन मन रहल तेहेन विचारो फुरल आ तेहने मनो लगत। जइसँ नीक कि बेजाए मनमे जँ उपकबो करैत तँ जिनगीक धार ओकरा धरिया लइत। मुदा भँसैत धारमे टुटैत नाहकेँ देख जहिना यात्रीक मन मानि लइए जे आब मरबक करीब आबि गेल छी, मनक सभ आशा मनेमे विलीन हुअ लगैत, तहिना मेवालालक माइयो आ पत्नियोँकेँ हुअ लगलैन। दुनू सासु-पुतोहुक नजैर लगले मेवालाल दिस उठैत आ लगले धरती दिस गोड़ि अपन-अपन जिनगी देखए लगैत। कियो ने किछु बाजिये रहल छेली आ ने किनको किछु फुरिये रहल छेलैन जे घरक पुरुख-पात्रकेँ की अश्वासन देब। मुदा मेवालाल अपन जिनगीक गतिकेँ देख रहल छला जे पैछला दू सालमे चारू बेख बिक गेल, ऐबेर घरक गहना सेहो जा रहल अछि। तेतबे नहि, जे खेत परिवारक जीवनदाता छल ओहो जा रहल अछि! तैसंग खेतक बॉण्ड बना जे दमकल-बोरिंग लेलौं ओहो हाथसँ निकैल रहल अछि! खेत रौदियाएल

मुदा बैंकक पूजी नइ ने मरियाएल..!

आगूमे ठाढ़ भेल मेवालालक मन तरैस उठलैन जे माएकेँ की कहब आ पत्नीकेँ की कहबैन..? मुदा लगले मेवालालक मनमे उठल-अछैत माइक इतिहास ने टुटि रहल अछि मुदा अपन तँ आगू शेष अछि जे माइक (पैछला पीढ़ी) पाछू औत। पत्नीक इतिहासे ठाढ़ कहिया भेल जे टुटत। माइयक सिपाहीक रूपमे ने अपने छी, तँए जा जीबै छी ताबेत धरिक भार ने अपने ऊपर अछि। माइक बिसवासमे आस भरैत मेवालाल बजला-

“माए! कोनो चिन्ता नहि, दुनियाँ बड़ीटा अछि। जेहेन हाथ-पएर कमाइ-खटाइ-ले देने छैं तेहने हाथ-पएर लऽ कऽ कियो भीखो-दुख मंगैए किने।”

अपना विचारे मेवालाल जे बाजल होथि मुदा सुभावीक मन तरैस उठलैन। बजली-

“बौआ, जँ लोक भीखे मांगि जिनगी काटत तँ ओहन जिनगीक लोभे की!”

माइक विचार सुनिते मेवालालक मनमे उठलैन- माए तँ माइये ने भेली। ओ केना नीक छोड़ि अधला सोचती..! बुलैत-बुलैत बुलन्दी मेवालालक मनमे आबए लगलैन। बजला-

“माए, काल्हि गाड़ी पकैड़ कलकत्ता चलि जाएब।”

मेवालालक मनसँ गाम निकलए लगल आ कलकत्ता आबए लगल। गामक असगर केना रहब आ एते दूरक रस्ता केना जाएब? मुदा लगले मन बदैल गाड़ीपर पड़लै। गाड़ीक दूठाम जोड़ अछि। पहिल गोरखपुरसँ हवड़ा जाइबला बड़ी लाइन, जे बरौनी होइत जाइए आ दोसर, पटना-हवड़ा या तँ मोकामा-क्यूल होइत जाइए वा जयसीडी-आसनसोल होइत। बरौनी तक छोटी लाइनक गाड़ी अछि,

तँए पहिने बरौनी तक ने पहुँचब अछि, तहूमे निरमली-झंझारपुर होइत चलैवाली गाड़ी समस्तीएपुर तक जाइए। ओतए-सँ छोटीए लाइनक गाड़ी बरौनी जाइए। भाय, जिनगीक सफरक ने गाड़ी छी, तँए गाड़ीमे जहिना ढेरो संगी भेटैए तहिना गामक ढेरो संगी छुटबो तँ करबे करत।

दस बजे बरौनी स्टेशनपर पहुँचला पछाइत मेवालालकेँ पता चललैन जे एक घन्टामे गोरखपुरसँ हवड़ा जाइक गाड़ी औत। बीचक समयमे जँ किछु खा-पीब लेब ओते समयौ अछि जइसँ अपनो ऐगला सफरक पेटक मुँहरी मरल रहत...।

रंग-रंगक खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ साज-श्रृंगारक वस्तु-जातसँ प्लेटफार्म सजल रहबे करइ। जहिना टिशनो नमहर तहिना तेकर प्लेटफार्मो नमहर रहबे करत। तहूमे बड़ी-छोटी लाइनक प्लेटफार्म छी। अपनो छोटी लाइनक प्लेटफार्मसँ बड़ी लाइनक प्लेटफार्मपर जाएबे अछि। जहिना नमहर-नमहर प्लेटफार्म तहिना लोको कोंचकी लगल अछिए। मुदा तैयो टहलै-बुलै आ दोकान-दौरीसँ वस्तु-जात कीनैक जगह तँ अछिए।

छोटी लाइनक तीनू प्लेटफार्मकेँ टहैल-बुलि देख मेवालालक मन मकैक ओरहापर गड़ि गेलैन। एक तँ नव चीज, दोसर सस्तो। दूटा बाइल कीनि खा लेब आ दूटा रस्ता-ले नेने जाएब। आठे अने बाइल अछि, दुइये रूपैआमे चारिटा भाइयो जाएत। मकैक ओरहाक दोकान जहाँ-तहाँ प्लेटफार्मपर लागल, तँए मेवालालक मनमे कोनो अगुताइ रहबे ने केलैन। गाड़ी अबैमे घन्टा भरि समयो अछिए। समयो ने काटब अछि। जखन एक्के स्टेशनक प्लेटफार्म छी तखन जहिना छोटी लाइनमे दोकान अछि तहिना ने बड़ियो लाइनक प्लेटफार्मपर हएत।

एक प्लेटफार्मसँ दोसर प्लेटफार्मपर जाइ-ले सीढ़ी बनले अछि। जहिना स्टेशनक ऐपार-सँ-ओइपार धरि सीढ़ी बनल अछि तहिना सभ

प्लेटफार्मपर चढ़ै-उतरैक सेहो बनले अछि। सीढ़ीपर चढ़ि जखन मेवालाल पुलपर पहुँचला कि प्लेटफार्मपर एकाएक हर-बिर्ड़ो भेल। जे जेतए छल से तेतइ अपन-अपन दोकान-दौरी बन्न करए लगल। ओरहाबला सभ अपन-अपन चुल्हिमे पानि ढारलक, आ चाहक दोकानदार-सभ अपन-अपन गैसक चुल्हिक स्वीच बन्न केलक। पुलपर ठाढ़ मेवालाल निच्चाँमे सभ किछु देखए लगला। देखला जे जहिना प्लेटफार्मपर दोकानदारक संग गहिंकी यात्री छल सेहो तहिना अछि। जे एक्के-दुइये जेबो करैए आ एबो करैए मुदा एना हर-बिर्डो किए भेल? मेवालालक मनमे जिज्ञासा जगलैन। के कहत, केकरासँ पुछबै..?

दस मिनट बीतैत-बीतैत जहिना दोकान-दौरी बन्न भऽ गेल तहिना यात्रियो सभ असथिर भऽ-भऽ अपन-अपन जगह पकैड़ लेलक। छोटी लाइनक प्लेटफार्म टपैत-टपैत मेवालाल सभ किछु शान्त देखलैन मुदा पुलिससँ स्टेशन भरि गेल। आन यात्री जकाँ मेवालालकेँ सतरहटा समानो नहियेँ छेलैन, खाली एकटा झोरा रहैन, जे काँखमे नंगा बबाजी जकाँ टाँगल छेलैन। ओना, नंगा बबाजीक रूप-रंग आ मेवालालक रूप-रंगमे अकास-पतालक अन्तर छेलैन्हे। जैठाम नंगा बबाजीक देह बेनग्न रहैत मुदा काँखमे झोरा रहबे करैए, से मेवालालकेँ नहि छेलैन, खाली काँखमे झोरा मात्र छल, धोती-कुरता पहिरने छला आ झोरामे एकटा चद्दैर आ एकटा धोती रहैन।

बड़ी लाइनक प्लेटफार्मपर उतरैत मेवालाल दोकान-दौरीकेँ बन्न देख मनकेँ समेट लेलैन। अखन खाइयो बेर नहियेँ भेल अछि, जखन खाइबेर हएत तखन बुझल जाएत।

दू भागमे पुलिस बँटल अछि। एक अछि जेकरा हाथमे बन्दूक छै आ दोसर, जेकरा हाथमे बेंतक लाठी रहइ। ग्रुप बना-बना पुलिस-

सभ प्लेटफार्मपर टहैल रहल छल। दोकानदारो-सभ अपन-अपन दोकान बन्द कऽ जहिना पुलिसक ग्रुप बनल तहिना ओहो सभ गोलिया-गोलिया गप-सप्प करए लगल। यात्रियो सभ अपन-अपन संगीक संग शान्तिसँ बैस चारूकात देखए लगल।

सीढ़ीसँ उतरैत मेवालालक मनमे घुरियाइये रहल छेलैन जे एना हर-बिर्डो किए भेल? पुलिस तँ शान्ति-बेवस्था बनबै दुआरे अपन-अपन ड्यूटि कऽ रहल अछि, ने अखन गप-सप्प करत आ ने ओकरासँ गपे-सप्प करब नीक हएत। एहनो तँ भइये सकैए जे ओकरा जानकारी नहियोँ होइ। यात्रियो सएह भेल। बाहर बाहरक छी, जँ किछु जानकारी हेबो कएल हेतै, तँ ओ सुनल-सुनाएल हेतइ। जे सहियो भऽ सकैए आ गलतियो भऽ सकैए। मुदा दोकान-दौरीबला सभ लग-पासक सेहो छी आ भऽ सकैए जे ओकरा पहिनेसँ सेहो किछु जानकारी होइ, तँए नीक हएत जे ओकरे सभ लग जा किए ने बुझी। जखन स्टेशनक ई हाल अछि, तखन गाड़ियो औत कि नहि, तेकर कोन ठीक। जँ बाहरसँ एबो करत तँ स्टेशनसँ खुजत की नहि। मेवालालक मन झुझुआए लगलैन। झुझुआइत मनमे उठलैन- कन्हाक बिआहमे सतरहटा आफद होइते छइ। मुदा उपाइये की...।

दूटा मकैक ओरहाबला, एकटा पानक दोकानबला, एकटा चाहबला आ चारि-पाँच गोरे आन-आन बेवसायबला एकठाम बैस गप-सप्प कऽ रहल छल। अपने सन लोक देख मेवालाल ओकरा-सभ लग जा कऽ बैसला। टटके घटना रहने वएह गप-सप्प–माने स्टेशनपर पुलिसक आगमन, दोकानदौरी बन्न हएब, आ यात्री सभकेँ अपन-अपन ठौर धड़ैक–चलैत रहइ। तँए मेवालालकेँ अपन विचार–बुझैक विचार–रहितो अपन कोनो प्रश्ने ने रहल। किए तँ जे बुझए चाहै छला वएह गप-सप्प चलि रहल छइ।

पानक दोकानदार बाजल-

“बरौनीक कारखानामे श्रमिक सभ तालाबन्दी कऽ हड़ताल केलक अछि।”

ओना, पानबलाक बात सुनि मेवालालक मनमे उठल जे कारखानामे तालाबन्दीसँ रेलबेकेँ कोन मतलब छै जे ऐठामक दोकान-दौरी बन्न भेल आ अनेरे यात्री सभकेँ परेशानी होइए..!

तैबीच मकैक ओरहाबला बाजल-

“नीक केलक। साल भरिसँ दरमाहा बढ़बैक खाली अश्वासनेटा श्रमिक सभकेँ देल जाइ छेलै, बढ़बै नहि। भाय, भरि दिन खटत ओकर परिवारक जँ गुजरो-बसर नीक जकाँ नइ होइ तखन दोसर उपाइये की छइ।”

तेसर बाजल-

“जाबे तक कारखनाबला सभसँ समझौता नइ हएत, ताबे तक श्रमिको-सभ अपन-अपन कारोबार बन्न राखह।”

मुस्की दैत चाहबला बाजल-

“सोल्होअना तोहर विचार सही छह, भाय। आइ ने हमहूँ तीन सालसँ चाहक दोकान स्टेशनक प्लेटफार्मपर केलौं हेन, मुदा जिनगी तँ गुदस भेल गामे-समाजमे।”

सह दैत मकैबला बाजल-

“भाय! तोहीं किए, हमहीं कोन बिलेंतसँ आबि कारोबार केने छी। तोरे जकाँ ने हमहूँ गाममे रहै छेलौं।”

गामक बात सुनिते चाहबलाक मन हरिया गेल। हरियाएल मने बाजल-

“भाय, एक बेर हमरा गाममे एकटा रेवाज तोड़ैले गामक

नवतुरिया सभ तैयार भऽ ओकरा उठौलक आ नव रेबाज शुरू केलक। माने अबेवहारिक चलैनकेँ बदैल बेवहारिक चलैन शुरू केलक। नीक रहितो अखन तक ओ पुरना चलैन चलिते अछि!”

बिच्चेमे पानबला बाजल-

“भाय, ओइमे कनी चूक भेल, चूक ई भेल जे समाजक आन-आन ओकरा नइ मानलक। मुदा अपना सभ से नहि करब। जाबे तक कारखानाक श्रमिकक मुहेँ नइ सुनब ताबे तक अपनो सभ अपन-अपन कारोबार बन्न राखब।”

तही बीच हल्ला भेल-

“हबड़ा जाइक गाड़ी पैछला स्टेशन पहुँच गेल अछि। किछुए कालमे एक नम्बर प्लेटफार्मपर चलि औत...।”

मेवालाल उठि कऽ अपना प्लेटफार्मपर जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

○

शब्द संख्या : 2031, तिथि : 17 नवम्बर 2017

3.

पैछला स्टेशनपर गाड़ी अबैक हल्ला सुनि जहिना आन-आन यात्रीकेँ सबुर भेल तहिना मेवालालोकेँ भेलैन। मुदा कनियेँकालक पछाइत फेर काने-कान पसरल जे गाड़ी नइ आएल अछि ओहिना कियो फुसिकेँ फुसका बाजल छल...।

अपन-अपन ओछाइन-बिछाइन जे यात्री समेट कऽ बैग-एटैचीमे रखि नेने छला सेहो सभ अपन-अपन मन तोड़ि पुन: अपन-अपन जगह भँजिया-भँजिया सभ बैसला। सबहक मनमे शंका बढ़ए लगलै जे गाड़ी औत कि नहि औत वा ऐला पछातियो जँ कहीं हड़तलिया सभ गाड़ीकेँ स्टेशनेपर रोकि देत तखन की करब..? जइसँ यात्री सबहक मन झखि-झखि खसिये रहल छल। कियो अपन ऑफिसक छुट्टीक बेथे बेथित तँ कियो ऐगला मेल ट्रेनक छुटबक बेथे बेथित। तहूमे बरौनी सन टीशन, जैठाम भरि ठेहुन कागजक पुड़िया-पुरजीक संग केराक खोंइचा आ मकैक नेरहा सेहो पसरल रहिते अछि।

असगरे मेवालाल प्लेटफार्मपर कखनो-कखनो घुमियो-फीरि आ कखनो-कखनो बैसियो-उठि अपन ऐगला बाट दिस तकैत रहैथ। बेठेकान गाड़ीक कोन ठेकान? लगलो आबि सकैए आ नहियोँ आबि सकैए आ एला पछातियो जँ हड़तलिया सभ अपन माँगक संग गाड़ियोकेँ रोकने रहल तखन तँ भेल दुनू रोटी चाउरे-कँे। मुदा लगले मेवालालक विचारमे लहकी लहकल। लहकी ई लहकल जे जखन

एक कारखानाक झंझट छी तखन कारखाने भरि विवादकेँ रखने ने बेसी नीक होइत। कारखाना दिससँ मेवालालक नजैर अपना दिस बढ़ल। बढ़िते मनमे उठलैन- घरपर पत्नियोँकेँ हिसाबेसँ खर्चा देने आएल छिऐन। अपनो संगमे तहिना अछि। तैठाम जँ पाँचो दिन रस्ता रोकाएल रहल तखन तँ दुनू दिस ने तवाही मचत। मुदा अखन कइये की सकै छी। जहिना हाथ बिनु ओजारे आ पएर बिनु पेरे रहैए तहिना ने रहब..!

जिनगीक चकभौरमे मेवालालक मन सेहो चकभौर लेलक। चकभौर लइते मनमे उठलैन- भने स्टेशन परहक खाइ-पीबैक सभ दोकान बन्न भऽ गेल। अखन खेबोक तृष्णा तँ तेना भऽ कऽ नहियेँ जगल, नीके भेल! मुदा तैसंग मनमे ईहो उठलैन जे जखन जिनगीक संघर्षमे रोजगारियो अपन रोजगार छोड़ि भूखे रहि सकैए तखन हम किए ने रहि सकै छी। घरपर जँ पत्नीकेँ खगबो करतैन तँ एते आशा तँ भइये गेल हेतैन किने जे पति परदेश कमाइये-ले गेल छैथ, जखने कमा कऽ पठौता कि पहिल कमाइसँ उधारीए सठाएब। उधार देनिहारोक मनमे परदेशक आशा नइ जगतैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। ओहो तँ ओहने मारू-बेगारूकेँ टेब-टेब एककेँ तीन झोरि-झोरि अपन जिनगीक महल ठाढ़ केने अछि...।

लगले मेवालालक मन देनिहारसँ उछैट लेनिहारपर गेलैन। लेनिहारपर जाइते तुरैछ-तुरैछ मन मुड़छए लगलैन। मुड़छल मनमे उठलैन- बेठेकनाएल जगहपर कमाइ-ले जाइ छी। मुदा माइयो आ पत्नियोँकेँ तँ से नहि छैन। हुनको सभकेँ ने अपन-अपन बात बुझाए पड़तैन। आ से जाबे तक नइ बुझती ताबे तक मुरै-भाँटाक दोस्ती जकाँ हएत जे एकटा गाड़ले रहत आ दोसर लटकले रहत..!

गाड़ी अबैक समाचार पसरल। यात्री सभमे चलमली जगल,

जइसँ गाड़ी-गाड़ीक हल्ला भेल। मेवालालक मनक भक्क सेहो खुजलैन। भक्क खुजिते मेवालाल अपन कुर्ताक ऊपरका जेबीमे राखल टिकटपर हाथ देलैथ। टिकट पहिने कटाइये नेने छला, तँए जेबीमे रहबे करैन। तहीकाल गामक तँ नहि, मुदा पड़ोसी गामक एकटा चिन्हरबापर मेवालालक नजैर पड़लैन। ओहो कलकत्ता जाइ छल। मेवालाल ससैर कऽ पड़ोसी लग पहुँच बजला-

“भाय, तूँ केतए जा रहल छह?”

रविनाथ बाजल-

“भाय! ‘जे गति तेरो से गति मेरो आ मेरोए-तेरोए-टा किए, आनो-आनकेँ सेहो।’ कलकत्ता जा रहल छी। गाममे रहने ऐ रौदीमे अपनो आ परिवारोक मटियामेट हएब निसचित। रौदी भेने किसानक हाथ-पएर टुटि गेल, अछैत औरुदे जहिना कियो मरि जाइए तहिना दोसर दिसक कोनो उपाय नहि, तखन जीबैक आशे की अछि।”

तही बीच नमगर-छड़गर ‘गोरखपुर-हबड़ा’ गाड़ी स्टेशनक पैछला सिंगल लग पहुँचल। मेवालाल बजला-

“भाय, हमहूँ तँ कोलकत्ते जा रहल छी! संगमे मात्र एकटा झोरेटा अछि। तोरा की सभ छह?”

रविनाथ बाजल-

“हमरो तेतबे अछि।”

एक रंग-ढंगक संगी बुझि मेवालाल बजला-

“भाय, पहिले बेर कलकत्ता जाइ छह आकि पहिनौं कहियो गेल छेलह?”

मुस्की दैत रविनाथ बाजल-

“कलकत्ताक कोन गप जे केरलो-कर्नाटक गेल छी।”

मेवालाल बजला-

“तब ते तूँ भाय बाहरक रेहल-खेहल छह! हम पहिल बेर गामसँ निकलल छी, बाहरक कोनो ठौर-ठेकान नइ बुझल अछि।”

जहिना अपन बड़ाइ सुनैमे सभकेँ नीक लगै छै, तइसँ कि भिन्न रविनाथ अछि जे अधला लगितै। बाजल-

“कलकत्ता ते हमरा ऐपार-सँ-ओइपार धरि धाँगल अछि, जेते हम कलकत्ताकेँ धँगने छी तेते ते जे कलकत्तामे नोकरी करैत-करैत बुढ़ भऽ भऽ मरि गेल सेहो ने धँगने हएत।”

रविनाथक विचारमे मेवालालकेँ कनी-मनी जिनगीक रस भेटए लगलैन। संगे, अपन टुटैत जिनगी आ जिनगीक विचारकेँ अर्रा-अर्रा खसैत सेहो देखिये रहल छला। देखबो किए ने करितैथ, स्व-अवलम्वित ओहन जीवन जे स्वयं अनुशासित राखि अपन जिनगीकेँ स्वतंत्र रूपे दुनियाँक बोनमे वृन्दावनक गाए सदृश चरौर करैत रहला ओ आइ बेलज्जत भऽ रहल छैन। जखन धरतियेमे लज्जैत नहि रहल तखन ओइपर बसैबलाकेँ केतेक काल लाज बँचि सकतै। तँए संगीक खगता मेवालालकेँ सेहो भइये रहल छैन। संग पुड़ैत मेवालाल बजला-

“भाय! की कहलहक, ऐपारसँ-ओइपार धरि कलकत्ता धाँगल अछि?”

एक तँ ओहुना ट्रेनक प्रतीक्षा आ असपतालक ओगरवाहीक राति नमहर भइये जाइए आ जँ तैपर माघक शीतलहरी हुअए तखन तँ आरो घनघोर! रविनाथकेँ सेहो बरौनी सन प्लेटफार्मपर दस गोरेक बीच अपन बेथो बुझाएब छेलइ। बाजल-

“एक दिस जहिना रविन्द्र बाबाक शान्ति निकेतन देखने छी

तहिना दोसर दिस दार्जिलिंगक राहुल बाबा[4]क डेरा सेहो देखने छी। तेसर दिस जहिना सुन्दर बनक चाननक गाछी देखने छी तहिना चारिम दिस एक बंगलाक दू भागक बीचक सीमा सेहो तँ देखनहि छी। तेतबे नहि, पूस मासक संक्रान्तिक गंगा सागरक स्नान सेहो केने छी। आब अहीं कहू जे कलकत्ताक की बाँकी रहल।”

अनभुआर मेवालाल बजला-

“भाय, तखन ते तूँ पूरा देखल-सुनल अनुभवी जकाँ सभ किछु देखने छह! तोरा संगे रहब तँ ऐ दुनियाँक कोन बात जे ओहू दुनियाँमे केतौ नइ हराएब।”

मेवालालक मुहेँ जीतहा-मुइलहा सुनि रविनाथक मन आरो खनहन भेलैन। खनखनाइत बजला-

“भाय, जीतहे-मुइलहेटा दुनियाँटा किए कहै छहक, सरग-नरक[5] धरि देखा सकै छिअ।”

जेना-जेना रविनाथ आगू बढ़ैत बजैत गेल तेना-तेना मेवालालोक मनमे बिसवास बेसियाए गेलैन। जेतेक मनमे बिसवास बेसियाइत गेलैन तेतेक खुशी सेहो उपकैत गेल। जखने दुखी मनमे खुशी उपकत आ खुशी मनमे दुख उपकत तखने विचारक धारक मुँह सेहो बेरेबे करत। जे बेराइत-बेराइत दू धारा बनि बहए लगैए। मुदा दुखकेँ मेटाइते सुखक धार पेब जहिना विचारमे विचरपन बढ़ैए तहिना सुखक सुखाएल मरुस्थलक धारक विचरपनमे घटबी सेहो अबिते अछि। मुदा से नहि, मेवालालक मनमे अखन ओतबे धड़धड़ा रहल अछि जे टुटैत परिवारक जिनगीकेँ केना बँचा कऽ जीवित रखि सकब। जँ जीवित रहत तँ आगू-ले आगू विचार करैत रहब...।

[4] राहुल सांस्कृतयायन

[5] स्वर्ग-नर्क

मेवालाल बजला-

“भाय, अखन सरगक-नरकक बात छोड़ह। तूँ जे एते घुमि-फीरि कऽ कलकत्ता देखलह तेकर की कारण?”

तखने यात्रीक बीच हल्ला भेल जे गाड़ीक इंजनमे खरापी आबि गेल अछि तँए दस-पनरह मिनट बिलमसँ स्टेशनपर औत।

ओना, हल्ला मुहेँ-मुँह आ काने-कान सौंसे प्लेटफार्मपर भेल मुदा मेवालालक मनमे मिसियो भरि हलचली नइ आएल। हलचली नइ अबैक कारण भेल जे सिंगल लग गाड़ी पहुँच चुकल अछि। कनी-मनी सरदी-बोखार भेने कियो अपन जिनगीक गाड़ीकेँ रोकि थोड़े लइए। तखन तँ जहिना मौसमी रोग तहिना ओकर मौसमी दवाइयो तँ अछिए, दुनू संगे-संग चलैत रहत। होइतो अहिना छै जे आँखिक देखलपर लोककेँ बिसवास बेसी होइते छइ। ओना, देखब-देखबमे थोड़े-थोड़े अन्तर सेहो अबिते अछि। तेकर कारण अछि जे देखैक-देखैक अपन नजैर सेहो होइते अछि। ओना, सोझे आँखिसँ देखब आ मनमे विचार करैत देखबमे सेहो अन्तर होइते अछि। मुदा से सभ अखन नहि। अखन एतबे जे जहिना आन-आन यात्री सिंगल लग गाड़ी सहित इंजनकेँ ठाढ़ भेल देखैत तहिना मेवोलाल आ रविनाथो तँ देखते छल। मनो मानियेँ गेल छेलै जे जहिना अनका हाथक काज तहिना ने अनका पैरक सवारियो छीहे, तँए कनी-मनी देरी कोनो देरी नइ भेल। अपन पैरक सवारी आ अपना हाथक काज कियो अपना जुक्तिये ने मिलबैत, माने जोड़-घटाव करैत चलैए। जखन घरसँ निकैल जिनगी बँचबैले परदेश जाइये रहल छी तखन मुरदापर जहिना अस्सी मनक बोझा तहिना नब्बे मनक बोझा, बात बरबइरे भेल। दस घन्टाक रस्ता बारह घन्टा-चौदह घन्टा आकि सोलह घन्टाक हएत सएह ने, मुदा पहुँचौत तँ जरूरे। तँए गाड़ी देख सबहक मन असथिर

भइये गेल छल। रविनाथ बाजल-

“भाय, जखन तूँ पुछिये देलह आ दुनू भाँइ निचेन सेहो छीहे, तँ जड़ियेसँ कहि दइ छिअ।”

टोकारा दैत मेवालाल बजला-

“हमरा-तोरामे कोनो भेद अछि, जहिना उजरल-उपटल तूँ छह तहिना ने हमहूँ छी, अनेरे विचारमे विभेद किए करबह। मुँह खोलि बाजह, भने रेलबे स्टेशनक प्लेटफार्म छीहे।”

मेवालालक टोकारा सुनि रविनाथ टोनिया-टोनिया बाजए लगल-

“मेवा भाय, पचीस बीघा खेत पिताजीक अमलसँ रहल अछि। अही खेतक बले पिताजी कौलेज तक पढ़ा बी.ए. पास करौलैन। आन-आन ओहन विद्यार्थी जकाँ अपन जिनगी कहियो ने रहल जे ट्यूशन पढ़ा, छोट-मोट चाकरी कए वा अपन बाप-दादाक सम्पैतकेँ बेच-बेच पढ़ै छैथ। सम्पन्न परिवार रहने सभ कथू सम्पन्नतासँ चलैत रहल।”

मेवालाल-

“बाह! यएह ने जिनगी भेल जे समयानुसार परिवारक सभ आवश्यकता पूरा करैत चलैत रहल!”

खेबाकाल तेबखा-दालिकेँ जहिना शरीरक सौंसे दुनियाँ चलैक गति रहितो बुढ़-बुढ़ानुसक कण्ठे लग बैस गारा लगि जाइए तहिना मेवालालक बात सुनि रविनाथकेँ सेहो गारा लगि घेघ जकाँ निच्चाँमे लटैक गेलैन। मुदा बीतल दिनक सुख ने लोक बिसैर जाइए, दुख तँ मनकेँ दुख-दुखबैत जीविते रहैत अछि। ओही दुख-दुखाइत मने रविनाथ बाजल-

“ओइ दिनमे नइ बुझि पेलौं जे जिनगीक भारी चूक भेल!”

रविनाथक मुहसँ ‘जिनगीक चुकब’ सुनि मेवालालक मनमे उठलैन- ई तँ हाथीक पीछड़बक बराबरी भेल! जँ हाथी पिछैड़ कऽ खसि पड़ल तखन ओकरा उठा कऽ ठाढ़ के करत। तहिना जिनगीमे चूक भेने सेहो तँ होइते अछि। मुदा अतीतमे बेतीत करब एक परिस्थिति भेल आ वर्तमानमे पिछैड़ कऽ खसब दोसर परिस्थिति भेल...।

मेवालाल बजला-

“भाय, केहेन चूक भेल?”

जहिना हार-जीतक बीच बीचक सिमान सोलह भेल तहिना रविनाथ अपन पैछला विचारकेँ सोलह करैत बाजल-

“भाय, एक्के बेर घोंटि कऽ सभटा पीब लेलौं।”

मेवालालक मनमे छगुन्ता भेलैन। छगुन्ता ई भेलैन जे रविनाथ बाजल किछु ने आ सभटा घोंटि कऽ पीब गेल, की पीब गेल? बजला-

“भाय, जखन दुनू भाँइ रस्ते चढ़ल जाइ छी तखन औगताइये कोन अछि, तँए फरिछा कऽ बाजह।”

सुखक सुखाएल सुखकेँ ने कियो बिसैर जाइए मुदा दुखक दुखाएल दुखकेँ थोड़े बिसरैए, ओ तँ मन रहिते छइ। रविनाथक मनमे जेना धिक्कार उठलै तहिना अपनाकेँ धरिकार बनि धिक्कारैत बाजल-

“भाय, अपन जिनगीमे चूक भेल तइमे जेते दोख अपनो छल तइसँ कम मातो-पिता आ समाजोक नहियेँ छल। तँए सोलहअना अपने गलतीसँ चुकलौं सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, किछु गोरेकेँ अधला सेहो लगलैन, किएक तँ ओ जनै छैथ जे अस्तगामी सूर्यक निखार उदयगामी सूर्येसँ होइए। मुदा तइमे त्रिवेणी घाटक गंगा-

यमुनाक बीच सरस्वतीक पातर धाराक धार सेहो तँ जीवित रहिते अछि।”

बजैत-बजैत रविनाथ, पाँतरमे सठल मोटर इंजनक गाड़ी जहिना पेट्रोलक अभावमे एकाएक रूकि जाइए तहिना बिच्चेमे रूकि गेल। बीचमे रूकने जहिना सवारीक सवार उतैर कऽ चारूकात चकोना हुअ लगैत जे नीक कि बेजाए कियो देखलक तँ ने। तहिना रविनाथोकेँ भेल छेलैन, मुदा मेवालाल तँ आगूमे सुननिहारक रूपमे ठाढ़े रहैन, तँए विचार-क्रमकेँ मिलबै दुआरे चुप भेला।

रविनाथकेँ चुप देख मेवालाल बजला-

“रवि भाय, तूँ ते बजैत-बजैत तेना बिच्चेमे चुप भऽ गेलह जे हम किछु बुझबे ने केलौं।”

मेवालालक एक्के प्रश्नक दू-दिसिया रस्ता जकाँ दू-मुहरी उत्तरो तँ अछिए। से नइ तँ मेवालालकेँ पहिने यएह जना दइ छिऐ। बजला-

“भाय दू-दिसिया बाट रहने एकक निरदोस दोसर बाट चढ़ने दोखियो भऽ सकैए आ दोखी नहियोँ भऽ सकैए। तँए, कोन बाटक विचार सुनबह से तोंरे विचार।”

मेवालालकेँ रविनाथक विचारमे अपन दोख तेना सन्हिया गेल जे अपन परिवारोक आ अपनो सभ किछु बिसैर गेल। बजला-

“कलकत्ता जाइमे गाड़ीकेँ भरि दिन भरि राति समय लगबे करत तखन बीचमे औगताइये की अछि। अपना विचारे बेरा-बेरी दुनू बाजह।”

मेवालालक बात सुनि रविनाथक मनमे भेल जे जँ पहिल रस्ताक उत्तर बिना भूमिका बन्हने जँ दोसर रस्ताक बात उठाएब तँ दोखी होइसँ कियो ने बँचाएत। सोल्होअना दोखी बनि जाएब। तहूमे दुनू भैयारी बाट चढ़ल गामसँ परदेश जा रहल छी। जखने दोखाह बनि

एक समाजसँ[6] दोसर समाजमे[7] जाएब आ दोखाहक कारणे, बिनु बुझने जँ दोखी मानि बेवहार करत ओहो तँ लाजमीए हएत किने..! तँए पहिने अपन बाल लीला, माने पैछला चुकल जिनगीकेँ अगुआ रविनाथ बजला-

"भाय, पहिने भूमिका रूपमे सुनह। समाज दोखी भेल जे एहेन वातावरण समाजमे बनल केना, आ बनल जीवित केना अछि जे जखने जमीन-जत्था परिवारबला बच्चाकेँ अपन जिनगीसँ, माने खेती-पथारीसँ बिमुख किए कएल जाइए। माने ई जे पढ़ल-लिखल लोक जखन कोदारि पाड़ैए आकि हर जोतैए वा गाए-महींस-ले कुट्टी काटैए, तँ लोक हुनकर कुट्टीचाल किए करैए।"

रविनाथक विचार जेना मेवालालक ह्रदयकेँ बेधलक। मनमे उठलैन- अखन तँ दुनू गोरे गामसँ बाहर शहर-बजार जा रहल छी, तखन गाममे कइये की सकै छी। बजला-

"भाय! ई तँ समाजक समाजिक बात भेल, कोनो कि अपना सभ नेतागिरी करए जा रहल छी जे एहेन-एहेन बात-विचारमे पड़ि झमेलमे पड़ब। दोसर की भेलह से कहक?"

मेवालालक विचार सुनि रविनाथक मन सेहो हल्लुक भेल। हल्लुक ई भेल जे जे समाज निर्दोष रहत तखन ओइ समाजक बीच रहनिहार दोखी हुअए, सेहो तँ नहियेँ भऽ सकैए। तँए अदहा-अदही दोख मेटाएब तँ नहि भेल। मुदा पास मार्क-जोकर एक तिहाइ तँ भइये गेल। एकटा भेल समाज, दोसर भेल माता-पिता आ तेसर भेलौं अपने। तइमे तिहाइ तँ कटिये गेल...। रविनाथ बाजल-

"भाय, माता-पिताक बीच चारि भाए-बहिनमे असगरे भाए

---

[6] गाम-समाजसँ

[7] आन राज्य, आन शहरक समाजमे

हम। जहिना माता तहिना पितो कहियो कोनो काजक भीर-भार हमरा आबए नइ देलैन। किए हुनका सबहक मनमे एहेन रोग पइस गेलैन जे ओ कर्मक जिनगी दिस प्रवृत्त नहि करा सोल्होअना अकर्मक जिनगी बनबैक पक्षधर भऽ गेला। भाय, एतबे ने हएत जे जाबे माता-पिता छैथ ताबे हुनकर सहयोगी बनि पाछू-पाछू चलबैन।"

बिनु विचारने मेवालालक मुहसँ खसलैन-

"हँ, से सएह ने हएत।"

तैबीच सिंगल लग अँटकल गाड़ी सिटी देलक। मेवालाल बजला-

"आब भरिसक गाड़ी औत।"

अपन विचारक दुनियाँमे डुमल रविनाथ बाजल-

"भाय, गाड़ीक चिन्ता किए करै छह, ओ सिंगलपर सँ प्लेटफार्मपर आबि रूकत, तखन ने। अपनो दुनू भाँइ तँ संगे प्लेटफार्मपर छीहे।"

मेवालाल बजला-

"तोरो तँ आब एक्के प्रकरण विचार ने बाँकी छह। तइ बीचमे ओहो भइये जाएत, तोहूँ अपन गाड़ीकेँ खिंचैत बाजह।"

मेवालाल आ रविनाथक बीच जे गप-सप्प होइ छल, ओ अगल-बगलक यात्री सभ सेहो कान पाथि सुनिते छला। होइतो अहिना छै किने जे अनको गप-सप्प आकि विचार-विमर्शमे जिनगीक बात-विचार सन्हियाएल रहैए, जइमे अपनो जिनगीक रस्तो आ रस्ताक बन्धनो सभ टुटैत बाट भेटिये जाइए। जँ से नइ भेटैए तँ किए लोक अनेरे रामायण आकि महाभारते पढ़ैए। एकटा भेल अयोध्यासँ लंका तकक खिस्सा आ दोसर भेल वृन्दावनसँ कुरुक्षेत्र धरिक सिस्सा।

मुदा ओइ दुनूसँ हमरा कथी लाभ अछि। एकटाक लाभ अयोध्यासँ लंका तकक लोककेँ भेल आ दोसर वृन्दावनसँ कुरुक्षेत्र धरिक। हमर गाम आकि हमरा इलाकासँ तँ ओ दुनू हटल अछि, तखन हमरा पढ़ैक कोन प्रयोजन। हमरा तँ अपने गाम-घर बुझैक पलखैत नइ अछि तखन अनकर की सुनब। देखते छी जे जखन ईंटाक दू मंजिला मकान सीमेन्ट-बाउलसँ जोड़ल नइ छल, लोक गाछ-बिरीछसँ लऽ कऽ टटघर-भीतगरमे शिक्षा ग्रहण करै छल तखन ओकरा आत्मीय नीतिगत ज्ञान होइ छेलै, मुदा आब जखन दू-मंजिला मकानमे बिजली पंखाक तरमे शिक्षाक बँटबारा होइए, तँ जएह आदमी अपना परिवार-ले दिन-राति तबाह रहैए, तेकर माए-बापक दशा की अछि आ अपन पाँच सालक बेटा-बेटीसँ सालमे गोटे दिन भेँट हुअए आ मास्टर साहैबकेँ चिन्हबए पड़ैन जे यएह तोहर पिता भेलखुन आ माए, तखन मातृत्व-पितृत्वक केते महत रहत। आ जँ विचारे पर्यावरण-हीन भऽ जाएत तखन कोन मुलुकक दर्जी ओहन फाटल दाढ़केँ सीअत..!

रविनाथ बजला-

"भाय, आब पाँचे मिनटक खेला बाँकी रहल अछि। एकरा अन्तिमे द्दश्य बुझह। किए तँ अखन तक ने प्लेटफार्मपर दुनू गोरे बैस कऽ बतियाइ छेलौं मुदा जखन गाड़ी औत तखन तूँ केतए चढ़बह आ हम केतए चढ़ब तेकर कोनो ठीक अछि। मुदा एकटा बात पहिनहि विचारि लएह जे गाड़ीमे केतौ चढ़ी, जेतए सीट भेटतह तेते ने चढ़बह, मुदा केतौ-केतौ उतैर कऽ भेँट-घाँट करैत रहब। कोनो कि अपना दुइये गोरे पसिंजर छी, देखै छहक प्लेटफार्मे भरल अछि।"

मेवालाल बजला-

"भाय, जखन अपन अन्तिमे द्दश्य छिअ तखन जल्दी बाजि कऽ बिसरजन करह। किएक तँ जिनगियो ने नाटकेक मंच छी। नङ्गेरा-

डिगरीसँ पर्दा-तिरपाल धरि ने समेटए पड़त।"

मुस्की दैत रविनाथ बाजल-

"भाय, टिकुलीक नाँगैरमे जहिना पतरका काठी भोंकि अकासमे धिया-पुता उड़ा दइए, तहिना अपनो मन उड़ए लगल। अपनो मन कलकत्तासँ बंगलोर-मुम्बइ होइत दिल्ली-अमृतसर धरि उड़ि गेल।"

मेवालाल-

"तखन तँ तूँ पूबसँ पच्छिम आ उत्तरसँ दच्छिन- सौंसे देश भ्रमण केने छह!"

रविनाथ-

"तइमे शंका किए करै छह। अपन खेत-पथार छोड़ि नोकरीक भाँजमे सौंसे देश घुमलौं मुदा मन मोताबिक नोकरी नइ भेल। हारि-थाकि अपन गाम पकैड़ जिनगी चलबए लगलौं। जइसँ पूर्ण सम्पन्नता आबि गेल।"

अपन मनक भरास निकालैत मेवालाल बजला-

"भाय, लोकक बुझने कम सम्पैत भेल मुदा अपना बुझने पनरह कट्ठा जमीनपर जीनिहार एकटा स्वावलम्बी परिवार हमरो दू साल पहिने धरि छल मुदा आब..!"

'आब' कहिते जहिना मेवालालक वाक् हरण भेल तहिना रविनाथो अवाक् भऽ गेल। दुनू एक-दोसरक मलिन मनकेँ मलि-मलि मल निकालैक परियास करए लगल।



शब्द संख्या : 2592, तिथि : 25 नवम्बर 2017

4.

रेलबे स्टेशनक पहिल प्लेटफार्मक ऐगला मुँहमे गाड़ीक इंजनकें प्रवेश करिते यात्रीक बीच हड़बड़ी भेल। सभकें अपन-अपन चिन्ता। दूरक सफर छी तँए यात्रीक संख्या कम। सोल्हो बोगीक गाड़ी स्टेशनक प्लेटफार्ममे लगि गेल। तीन श्रेणीक बोगी अछि, जइमे छहटा ओहन अछि जेकर टिकटोक दाम बेसी आ बैसै-सुतैक सुविधो बेसी। पाँचटा बोगी ओहेन जइमे दिनक यात्री-सभ तँ चढ़ि सकैए मुदा नअ बजे रातिक पछाइत ओइसँ उतैर जाइत। दोसर श्रेणीक सुतैबला यात्रीक भेल। तेसर श्रेणी, जेकरा 'सरहगंजा श्रेणी' सेहो कहि सकै छी, एकर किरायो कम छै आ ऐमे जेकरा जगह भेट गेल ओ बैसल जाएत आ जेकरा जगह नहि भेटल ओ ठाढ़े जाएत वा पौदानपर लटैक-फटैक कऽ जाएत।

रविनाथकें बुझल-गमल तँए दू रूपैआ कुल्लीकें थम्हा सीटपर जा कऽ बैस रहला। मेवालाल पाहि लगा गाड़ीक बोगीकें देखए लगला। लोकक भीड़ देख मेवालालक मनमे होनि जे जखन एकटा गाड़ीमे एते लोक अछि तखन सभ गाड़ी मिला कऽ केते यात्री हएत। एतेक यात्री तँ सभ दिन ने गाड़ीमे सफर करैत हएत...।

गोरखपुरसँ लऽ कऽ बीचक जे जे स्टेशन अछि ओ सोलहन्नी रौदियाएल इलाका, तँए गाम-घरक किसान-बोनिहार गाम छोड़ि-छोड़ि बजार दिसक जोड़ पकड़ने अछि। सौंसे गाड़ीक बोगी देखला पछाइत मेवालालक मनमे उठलैन, नइ बैसैक जगह हएत तँ ठाढ़ो-ठाढ़ तँ

जाएबे अछि। ओना प्लेटफार्मपर पुलिसक जमघट लगले छल तँए भीड़-भाड़ रहितो कहा-कही आ झगड़ा-झंझटसँ बँचल गाड़ी रहबे करइ। मेवालाल गाड़ीमे चढ़ि ससरैत-ससरैत कनी आगू बढ़ि ब्रेंचक मुँह लग गेला कि एक गोरे हाथक इशारासँ अपने लग जगह दैत बैसए कहलकैन।

जगह पबिते मेवालालक मनमे संतोष भेलैन जे अरामसँ कलकत्ता पहुँच जाएब। ठाढ़े-ठाढ़ जाइमे भीड़ होइते अछि। जाँघो आ हाथो भरा जाइत मुदा आब से नहि, अरामसँ जाएब।

गाड़ी बरौनी स्टेशनपर सँ विदा भेल। गाड़ीमे चढ़ल यात्री सभ अपन-अपन ठौर पकैड़-पकैड़ किछु बैसबो कएल, किछु ठाढ़ो रहल। देखते-देखते गाड़ी सिमरिया पुलपर पहुँच गेल। मेवालाल चुपचाप सबहक बोली अकानैत रहैथ मुदा बोलीक थाहे ने पबै छला। एक्के मुहें बंगलो बजैत, छपड़ियो बजैत, तैसंग भोजपुरियो बजैत आ मैथिली सेहो बजैत। से एक्के गोरे नहि, दुनू ब्रेंचपर बैसल बारहो-तेरहो यात्री।

जहिना मेवालाल सभकें ठेकनबैत रहैथ जे के कोन इलाकाक छिया तहिना मेवोलालकें ओ सभ तरे आँखिये ठेकनबैत जे कोन इलाकाक छी। मेवालालकें ने दोसराइत संगी आ ने कियो चिन्हरबा, तँए अनठिया जकाँ चुपचाप देहो आ मुहों मारने बैसल छला।

थोड़ेकालक पछाइत, मेवालालकें बइसैले जे पइसैठ-सत्तैर बर्खक बुड़हा जगह देने रहथिन ओ पुछलकैन -

"बौआ, केतए-सँ एलौं?"

भाषा सुनि मेवालालक मनमे भेलैन जे अपने इलाकाक छैथ। बजला-

"मधुबनी जिलासँ एलौं हेन आ कलकत्ता जा रहल छी।"

तही बीच एक गोरे गंगा महरानीक जयकार करैत भोजपुरी गीत

गाबए लगला, आ तैसंग एक्के-दुइये दुनू ब्रेंचपर बैसल सभ घुनघुनाए लगला...।

अखन तक जे मेवालालक मनमे होइ छेलैन जे सभ सभ इलाकाक छिया, तइमे थोड़ेक बदलाव आबए लगलैन। बुझि पड़लैन जे भरिसक एक्के इलाकाक छिया।

मेवालालकें चुप देख ओ बुड़हा अपन परिचय दैत बजला-

"बौआ, आब तँ हम बुड़हा गेलौं मुदा छी भिखारी कक्काक मंचक खेलाएल। नाओं हमर सुमनलाल छी।"

भिखारी ठाकुरक नाओं सुनि मेवालालक मनमे जिज्ञासा जगलैन। आँखिक देखल नाचक मंचपर ठाढ़ भेल भिखारी ठाकुर आँखिक सोझमे झकझकाए लगलैन। झकझकाइत भिखारी ठाकुरक रूप मेवालालक मुँह फोरि देलकैन। मुस्कियाए लगला। मुस्कियाइत मेवालाल बजला-

"भिखारी बाबाक मुँहमे साक्षात् सरस्वती बास करै छेलखिन..!"

मेवालालक मुहसँ भिखारी ठाकुरक बड़प्पन सुनि सुमनलालक मन सौन-भादो जकाँ नहाएल तँ नहि, मुदा कातिक-अगहनक ओस जकाँ ओसा जरूर गेलैन। अह्लादसँ अह्लादित होइत सुमनलाल पूसक पाला जकाँ पलाइत बजला-

"अहाँ, भिखारी काकाकें मंचपर केना देखलयैन?"

मेवालाल बजला-

"ओइ समय हम पढ़ैत रही। कनी नेनमति रहबे करए। नेनमति भेल- जे नीक लागल ओकरा बढ़ा कऽ बजलौं आ जे नइ नीक लागल ओकरा या तँ घटा कऽ बजलौं वा नहियें बजलौं।"

मेवालाल बजिते छला कि बिच्चेमे सुमनलाल बजला-

"वाह! वाह..!"

'वाह वाह' सुनि मेवालाल अकचकाए लगला जे कोन एहेन फूलक झाबा झड़ि कऽ खसि पड़ल जे ई बुड़हा एते जोरसँ बाहबाही केलैन!

जेना बिलाइ बाघपर कन्हुआइए आ बाघ बिलाइपर बघुआइए तहिना मेवोलाल आ सुमनोलालक बीच भेल। जहिना सुमनलाल रूपक अलंकार जकाँ अपने अलंकृत हुअ लगल रहैथ तहिना अपन बुझल-देखल मेवालाल एक जुग-पुरुषक गुण-गाथाक स्मरणमे मस्तसँ मस्ती धेने छला। मुदा शंका तँ मेवालालक मनमे रहबे करैन जे बुड़हा हमरा बोलीपर बाहबाही देलैन आकि भिखारी बाबाक नाओं सुनि? किएक तँ जँ कहीं ओहो हमरे जकाँ कहियो भिखारी बाबाकें मंचपर ठाढ़ भेल कवायद करैत देखने होथि। मुदा लगले मनमे साहस बटोइर विचारलैन जे चलह जे राम से राम अपन देखल-सुनल ने बाजब। जे जे आँखिक देखल अछि ओ मुहसँ बाजब, ऐमे लजाइ-धखाइक बाते कोन अछि। दुनियाँमे के नइ अपन सुखक पाछू वौआइए, बुझबै जे हमहूँ वौआइ छी, मुदा तैयो एते तँ लाभ हेबे करत किने जे एते तेज सवारीक यात्रा शान्तिसँ कटि जाएत, यएह की कम भेल। मेवालाल बजला-

"एकबेर, जखन भिखारी बाबा मंचपर चढ़ला। चढ़िते आँखिक इशारासँ कि कहि देलैन आ मुहसँ कोन बुकनी छोड़लैन से तँ नइ देख पेलौं, किएक तँ तैकाल हमहूँ आ हमर एक संगी रहैथ सेहो, दुनू संगी भिखारी बाबाक लम्बाइ-चौड़ाइ फैदम[8]सँ नपैत रही...।"

जइ दिनक वृतान्त मेवालाल बखान करए चाहि रहला अछि तइ

[8] समुद्र नपैक माप

दिन सुमनलाल सेहो हुनके पार्टीमे पाइट लगैत रहैथ। समाजी रूपमे मंचपर सेहो जाइथ। ओना सुमनलाल समाजी रूपमे केतेको मंचपर भिखारी ठाकुरक संगे रहि चुकल छला, मुदा पारखी जहिना सइयो-जोड़ धोती-साड़ीक थानमे एकटा चुनि तृप्त होइए तहिना सुमनलाल सेहो अपन कृत्तिक वृत्ति भुखाएल काने सुनए लगला। ओना एक दिस जहिना भिखारी ठाकुरक संग अपनाकेँ चलन्त सिपाही बुझि रहल छला तहिना दोसर दिस सुखल फूलकेँ झड़ैत बीच फड़क सिरखार सेहो देखिये रहल छला तँए बिच्चेमे सुमनलाल टोकलकैन-

"नापमे केते बुझि पड़ला?"

मुस्की दैत मेवालाल बजला-

"अथाह! जहिना अपने केतौ ठाढ़ भऽ कऽ तकलापर अपनाकेँ दुनियाँक बीच सभ बुझैए तहिना ने अपन-अपन नजरिये सभ देख-देख नपबो करैए। केतौ केते पानि अछि से तँ ओकर थीरपनेसँ ने लोक बुझैए।"

मेवालालक बात सुनि सुमनलाल जेना चिन्ताक नमहर खाधिमे खसि चिनतए लगला। तैबीच नवतुरिया सभ जे भिखारी ठाकुरकेँ नहियोँ देखने छल आकि अन्तिम बुढ़ाड़ीमे देखनौं छल, बिनु देखल एक गोरे मेवालाल दिस तकैत बजला-

"भाय साहैब, भिखारी बाबाक मुँहमे केना सरोसत्ती बास करै छेलखिन?"

मेवालाल बजला-

"बौआ, भिखारी ठाकुरसँ कोनो भैयारी आकि दियादी सम्बन्ध नहि अछि जे बेसी कए कऽ बाजब आ ने कोनो दुश्मनी अछि जे पक्षक नीक बात-विचारकेँ चाहे तँ अधला बना कऽ बाजब वा मुहेँ बन्न करि मनेमे चौपेत लेब। तँए अपन जे अनुभूति भेल से अनुभवक

विचार केलौं।"

दोसर मेरिया, माने एके नाच पार्टीक दोसर संगी, ओकरा डपैट कऽ कहलक-

"भाय, जखन कलकत्ता सभ जाइये रहल छी, तखन एते धड़फड़ेने हेतौ। चुपचाप सुन जे भिखारी बाबाक बोलमे की सरस्वतीक बास छेलैन।"

नवतुरिया मेरियाक प्रश्न सुनि सुमनलाल सेहो साकांच भेला। साकांच ई भेला जे भिखारी काकाकेँ अपना-अपना नजरिये सभ देखै छेलैन। कियो समाज-सुधारक बुझै छेलैन, कियो मन बहलाउ नटुआ। खाएर, जहिना अपन-अपन सबहक देखै-सुनैक नजरियो होइ छै तहिना नजरानो भेटिते छइ।

भिखारी ठाकुर नाच पार्टीक पार्ट करैबला बारहो गोरेक संग तेरहम सुमनलाल छला। सुमनलाल भिखारी ठाकुरक संग करीब बीस बर्ख धरि नाचि चुकल छला। बारहे-तेरहे बर्खक अवस्थासँ सुमनलाल भिखारी ठाकुरक संग पूरि चुकल छला। एक तँ परिवारिक सम्बन्ध सुमनलालकेँ सेहो छेलैन आ दोसर भिखारी ठाकुरक कलाकारियो आ कवाइदोसँ तेतेक आकर्षित भऽ गेला जे हृदयकेँ छुबि हृदयाबास सेहो भऽ गेलैन। जाबे तक भिखारी ठाकुरकेँ देखौआ नाचसँ जन-जागरणक विचार मनमे प्रवल छेलैन ताबे तक भोजपुरसँ मिथिला आ बंगालसँ आसाम धरिक क्षेत्र बनौने रहला। सालो भरि घरसँ बाहरे घुमि-घुमि बीतबै छला। मुदा जखन उमेरो ढहलैन आ अपन जिनगीक लेखो-जोखो केलाह तखन मन यएह गवाही देलकैन जे जइ पाछू पड़ि जन-जागरण बुझै छेलौं ओ नटुआ बुझि लोक मन बहलाएब बुझलक। जखन गुणाक अंके नहि तखन गुणनफल की भेटत..! ओना, हाव-भाव तँ भिखारी ठाकुरक नहि रहलैन मुदा मुँहक बोल

ओहिना जह-जह करिते छैन। जहिना एक समुद्र टपि कियो दोसर समुद्र टपैले समुद्रक एक महारपर बैस अपनाकेँ नाप-जोख करए लगैए जे एते नमहर आ एतेक गहींर समुद्र टपैमे केहेन हेलबक संग केहेन नाह आ केहेन नैयाक खगता हएत से तँ जोड़ला पछातिये ने समुद्रमे कुदब। ओना, हनुमानजी जकाँ एक महारसँ दोसर महारपर कुदियो कऽ टपल जा सकैए मुदा तइले तँ हनुमन विधि-विधानक खगता अछि किने...।

एक समुद्र[9] टपला पछाइत जखन भिखारी ठाकुर अपन आत्म-चिन्तन केलैन तखन अपन मातृभूमि कहियौ आकि जन्मभूमि, विचारक ऐ सीमापर आबि मन अँटैक गेलैन जे किछु ने केलौं। जहिना बालपनमे गाम-समाज देखलौं तहिना जुआनियोमे आ तहिना जिनगीक चारिमपनमे सेहो। आइसँ सत्तैर बर्ख पहिनहि हमरा सबहकक हाथमे स्वतंत्रताक फूल भेटल, मुदा केते स्वतंत्र छी, ई तँ विचारणीय अछिए। पीढ़ीक-पीढ़ी[10] ससैर गेल मुदा आइ हम केतए ठाढ़ छी, से तँ बुझए पड़त। जँ अपने अपनो-ले समाजमे ठाढ़ केने रहितौं, जेकर देखो-देखी आ कहो-कहीसँ जँ समाज एक-बटिया बनि गेल रहैत तँ बहुत बेसी लतैड़-चतैड़ भलहिं नहि गेल रहैत मुदा आगूक दिशा दिस तँ मुँह जरूर अलगौने रहैत जइसँ आगू ससरैमे राहु-केतु नहि बाधित करैत। मुदा की एकरा झुठलाएल जा सकैए जे एकटा नीक कृत्तिक पाछू दसटा अधला नइ होइए?

एक तँ भिखारी ठाकुरक नाच पार्टीक मेड़िया तैपर साल भरि पहिलुका हकार पूरए सभ जाइये रहल छला तँए मन खनहन रहबे करैन। तैपर गाड़ीक सफर, मन भरले रहैन जे भिखारी बाबा तेतेटा

[9] जिनगीक वयस

[10] मनुखक इतिहासक पीढ़ी

जमीनदारी दऽ गेल छैन जे नौत-हकार पहिया कऽ पुरैमे साल लगिये जेतैन। जहिना किसानकेँ दिन-दिनक काज सालो भरि दइते रहैए तहिना फेर ऐगले साल घरोक आ घरवालीक सेहो मुँह देखै जेता। जखन परदेश कमाइ-ले जाइये रहल छैथ तखन मन खाली केने किए चलता। तहूमे भिखारी ठाकुरक विदेशिया नाचक संग राजा हरिश्चन्द्र नाचसँ राजा भरथरी होइत दुर्वाशा-श्रृंगी ऋृषि होइत भीष्म पितामहसँ श्रवणकुमार धरिक पार्ट खेलेनिहार तकक जमात छैन्हे। तैसंग बजनियोक मन अगधाएल रहबे करइ। किए तँ मन गवाही दइते रहै जे सभ खेल हमरेपर अछि।

चौदह-पनरह बर्खक एकटा नवतुरिया नटुआ बाजल-

"गपे-सप्पमे बारह बजि गेल, भूखो लगि गेल तँए नीक हेतह जे पहिने किछु खा-पीब लएह।"

दोसर नटुआ टीपलक-

"भूखे भजन न होई गोपाला।"

ओना सबहक खाइ-पीबैक विन्यास सम्लिते रहै तँए जेकरा भारमे रहै ओ झोरा-झोरी खोलए लगल। तैबीच एकटा तेसर नटुआ टीपलक-

"तोहर सूर बाबा सूरमे सुर-सुरा बाजल छेलखुन। मुदा हमर कबीर बाबा गर-गरा कऽ कहलैन- 'न कुछ देखा भक्ति भजन में, न कुछ देखा पोथी में। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो देखा सो रोटी में।"

मने-मन मेवालाल सोचए लगला जे बरौनीमे विचारने रही जे दूटा मकैक बालिक ओरहा खाइयो लेब आ रस्ता-ले दूटा रखियो लेब मुदा से नइ भेल। एकठाम बैसल सभ खाएत, हम मुँह ताकब..!

मुदा लगले मेवालालक मनमे उठि गेलैन जे ओरियान नइ केलौं आकि परिस्थितिये प्रतिकूल बनि गेल। केहेन बढ़ियाँ शान्त

वातावरणमे सभ काज शान्तसँ प्लेटफार्मपर चलि रहल छल, तखने एक्केबेर तेहेन हवा कारखानाक हड़तालक उठल जे सभ किछु उसैर गेल। ऐमे अपन कोन दोख?

अखन धरि जहिना मेवालाल चुपचाप बैसल सभ किछु देख-सुनि रहल छला तहिना सुमनलाल सेहो मेवालालकेँ आँकि रहल छेलैन। मेवालालक मुँहक रूखि कनी मलिन जरूर होइत रहैन, तेकर कारण छल, सबहक बीच मेवालाल मुँह तकता।

सुमनलाल फरमाइस दैत बाजल-

“दिनक मसीम छी तँए नीक हेतह जे मकैक सतुआ अखन खा। जअक तँ रातियो-बिराति खा सकै छी।”

नाचमे जे विपटाक पार्ट खेलैत ओ बाजल-

“काका जखन पुड़ियो अछिए तखन पहिने पुड़ीए खाएब ने नीक हएत।”

दोसर, जे बिपटाक चालि पकैड़ बिपटा बनए चाहि रहल अछि, ओ बाजल-

“तेलपुड़ी ने लगले अड़ुआ जाइए, पनिपुड़ी तँ जेते बसियाएत तेते सुअदगरे बनत।”

मेवालाल बैसल-बैसल नवतुरिया सबहक बोलियो सुनै छला आ निहारि-निहारि ओकर बगेयो-वाणि देखै छला, मुदा तैबीच अपना मनक खाधिमे गच्चा लगलैन। खत्तामे गच्चा ई लगलैन जे तेलपुड़ी तँ बुझै छला मुदा पनिपुड़ी नहि बुझि सकला। सींग कटा छौड़ा-माड़ैरसँ पुछबो नीक नहि, तहूमे नाचक बिपटा छी, की बाजि देत तेकर कोन ठेकान। सुमनलालकेँ पुछलैन-

“चाचाजी, पनिपुड़ी की भेल?”

मेवालालक प्रश्न सुनि सुमनलालक मन मुस्कियेलैन। ‘संगेमे वैद मियाँ मरता है।’ आँखिक सोझहे देखल सभ किछु मुदा बुझि नहि रहल अछि! बजला-

“बौआ, जहिना तेल-घीमे सिद्ध कएल पुड़ी होइए तहिना पानिमे सिद्ध कएल सेहो होइए, जेकरा अपना सभ बगिया कहै छिऐ।”

सुमनलालक बात सुनि मेवालालक मन एक्केबेर भभैक उठलैन। भभा कऽ हँसए लगला।

कोनो अनठिया वस्तुक जानकारी आ कोनो ठिया वस्तुक जानकारी पेब अहिना होइते छइ। मेवालालक मनमे उठए लगल जे सचमुच जहिना पुड़ीक विन्यास बनौल जाइए तहिना तँ बगियोकेँ बनिते अछि। दालिक संग दलि-पुड़ी जकाँ दलि-बगिया आ गुड़क संग ठकुआ जकाँ गुड़-बगियो तँ बनिते अछि।

एक्केठाम मकैक सतुआ सानल गेल। जहिना रंगमे बदामक सतुआक कान कटैत तहिना खाइयोमे रूइयाक फाहा जकाँ मोलाइम सेहो होइते अछि। ओना गुणमे जहिना बदामक सतुआ गरिष्ट-बलिष्ट अछि तेना मकैक नइ अछि, मुदा खाइमे नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा किछु अछि, अन्न तँ छीहे तँए देवोपम अछिए।

एकठाम सतुआ सानैत देख मेवालालक मनमे थोड़ेक संतोष जरूर भेलैन। थोड़ेक संतोष ई जे जेतेकाल सतुआ सानि बँटवारा हएत तेतेकाल तक तँ कियो नइ बुझत जे फल्लाँकेँ किछु खाइक वस्तु नहि छैन। मुदा हाथे-हाथ गेला पछाइतसँ लऽ कऽ खाइकाल धरि अपनाकेँ की करब मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे कोनो कि कियो गौंआँ-घरूआ आकि सर-समाज छी जे माँगियो कऽ खाइक अधिकार रहत। गाड़ीक यात्री जहिना ओ सभ अछि तहिना ने अपनो छी। ओ सभ छपरासँ आएल अछि। आ जँ घरेक खेलहा होइ तइ हिसाबे तँ हम

लगसँ आएल छी, तँए खाइक क्षुधो ने ओते पछुआइये कऽ हएत। मनमे धैर्यक बान्ह बन्हाइते मेवालालकेँ संतोष जगलैन। जइसँ मन मुस्कियेलैन।

मेवालालक मुस्की देख सुमनलाल बजला-

“बौआ, जाबे खाइक ओरियान होइए ताबे एकटा बात कहि दइ छीअह।”

अपरिचित सुमनलालक ‘एकटा बात’ सुनिते मेवालालक मनमे उठलैन जे गोटे घन्टा भेँट भेना भेल हएत, तैबीच कोन एहेन एकटा बात हिनका मनमे आबि गेलैन! अखन सतुओ सानले जाइए, जँ बँटवारा होइत रहैत, सेहो नहियेँ अछि। से नहि तँ हिनकेसँ किए ने पुछिलिऐन। बजला-

“की एकटा बात?”

मेवालालक जिज्ञासु मनक पिपाशु रूप देख सुमनलाल बजला-

“अपन जिनगी आ जिनगीक लीला।”

सुमनलालक बात सुनि मेवालालोक मनमे भेलैन जे भने अरामसँ रस्तो कटि जाएत आ एक जिनगीक वृतान्तो सुनि लेब। जिनगीक वृतान्त सुनला पछातिये ने कियो अपन जिनगीकेँ स्थापित करैए। मेवालाल बजला-

“हम तँ पहिल बेर कलकत्ता जाइ छी, मुदा अहाँकेँ तँ रेहल-खेहल अछि तँए रस्तोक ठेकान राखब आ समयक संग यात्राक सेहो।”

जहिना भूखलकेँ पेटसँ बेसी भोजन देखलापर, निवस्त्रकेँ वस्त्रक भण्डार देखलापर आ घरविहीनकेँ घर भेलापर खुशी होइ छै तहिना सुमनलालकेँ सेहो संगियो भेटलैन आ सवारीक संग समय सेहो

भेटलैन तँए मनमे खुशीक बमकोला फुटबे केलैन।

सुमनलाल बजला-

“बौआ, अही देहे तेसर जिनगी जीबै छी।”

सुमनलालक बात सुनि मेवालालकेँ छगुन्ता भेलैन जे तीन जिनगी की भेल? मुदा पहिल भेँटमे अपनाकेँ बेसी खोलियो कऽ राखब नीक नहियेँ हएत तँए किछु ने बजला। मुदा मुँह कनी एकोशिया भऽ मुस्किया जरूर गेलैन। मेवालालक मुस्की देख सुमनलाल आगू बजला-

“बौआ, भिखारी कक्काक संग जहिया दसे-बारह बर्खक रही तहिये धेलौं। जौनपुरसँ लऽ कऽ बीचला सभ इलाका पकड़ैत बंगाल-असाम-नेपाल होइत मेल ट्रेन जकाँ सालो भरि घुमि-घुमि नचै छेलौं। आ भिखारी काका जखन मरि गेला तेकर बादो हमसभ जे नचैबला रही सेहो सभ आ किछु नवको तूर सभ मिलि कऽ पार्टी ठाढ़ केने रहलौं। जाबे तक हूबगर रहलौं ताबे तक जे इलाका छल तइमे सालो भरि घुमि-घुमि नचैत रहलौं।”

भिखारी ठाकुरक संग सुमनलालक नमहर जिनगी देख, बालपनक विचार मेवालालक मनमे जगलैन। अपना आँखिसँ मेवालाल भिखारी ठाकुरकेँ देखनौं छला जखन भिखारी ठाकुर अधवयसू रहैथ। बजला-

“भिखारी बाबामे की खूबी छेलैन जे एते लोकक चाह छला?”

मेवालालक बात सुनि सुमनलालक मनमे उठलैन- किछु भेलौं तँ भिखारी कक्काक चेले ने भेलौं तँए गुरुक प्रति मिसियो भरि कम-बेसी नहि बाजब। बजला-

“बौआ, भोजपुरसँ ढाका-बंगाल होइत असाम-नेपाल तकक बोलियो आ समाजोकेँ ओ चिन्है छला, तँए एक नाच पार्टी रहितो

इलाका-इलाकामे कनी-मनी कम-बेसी कइये लइ छला, जे केतबो परियास केलौं तैयो हमरा बुते नइ भेल। तैसंग ईहो बड़का खूबी हुनकामे छेलैन जे केना भोजपुरक बोलीकेँ बंगालमे बंगलामे बाजि दइ छला आ बंगला बोलीकेँ भोजपुरमे सेहो लूरि-बुधि हमरा नहि भऽ सकल।”

सुमनलालक जिनगीक कमजोर जगह देख मेवालाल बजला-

“जखन एते दिन संगे-संग रहलौं तखन किए ने भेल?”

सुमनलाल-

“काजक एते धुमसाहीमे रहितो भिखारी काका बेसीकाल असगरे काजो करै छला आ विचारितो छला, मुदा हम अखबारोक समाचार अनके मुहेँ सुनैत रही, आ काजो अनके हिसाबे करैत रही, तखन ओहन अखियास केना होइत।”

मिलानक एक रस्ता भेने खेनाइ-पीनाइ महतहीन भइये जाइए। सतुआक गोली बना-बना पाहि लगा कऽ परसल गेल, ने वारीक परहेज केलक आ ने मेवालाले मनाही केलैन।

❍

शब्द संख्या : 2562, तिथि : 4 दिसम्बर 2017

5.

दोसर दिन आठ बजे भिनसरमे गाड़ी हाबड़ा स्टेशन पहुँच गेल। नमगर-चौड़गर स्टेशन। गाड़ीसँ उतैर मेवालाल रविनाथकेँ भँजियबए लगल। ओना, नाचक जे मेरिया छल सेहो उतरल। लोकक भीड़ जहिना प्लेटफार्मपर तहिना मुसाफिरखानामे सेहो छल।

रविनाथो गाड़ीसँ उतैर मेवालालकेँ भँजियबैत लगमे पहुँचल। दरभंगा-मधुबनीक स्टेशन जकाँ हाबड़ा-स्टेशन नहियेँ अछि। अपना ऐठाम मुसाफिरखाना भरि दिन यात्रियो आ अनठियोसँ भरले रहैए, से हाबड़ा-स्टेशनमे नइ अछि। जहिना गाड़ी अबै-जाइ काल मुसाफिर-खानासँ लऽ कऽ प्लेटफार्म तक यात्रीसँ भरि जाइए तहिना लगले खाली सेहो भऽ जाइए। ओना दरभंगे-मधुबनीक रेलबे स्टेशन जकाँ हाबड़ो-स्टेशनमे दोकान-दौरी अछिए। मुदा अबै-जाइबला यात्री बेसी रहैए।

मेवालालकेँ देख रविनाथ बजला-

“मेवालाल भाय, आब आगू की कि-केना विचार अछि?”

ओना, मेवालालक मनमे पूर्व निर्धारित कोनो विचार नहियेँ छल जे फल्लाँक ऐठाम जाएब आकि फल्लासँ भेँट करि केतौ काज करब। मनमे खाली एतबे छेलै जे कारोबारी जगह छी, कोनो-ने-कोनो काज पकैड़ काज करब। चाहे ओ महिनवारी हुअए आकि उट्ठा, तँए मेवालाल चुप छला।

रविनाथक बात सुनि सुमनलाल बजला-

“कोनो धड़फड़ाइक बात नहि अछि। पचीस-तीस घन्टाक गाड़ी-झमारल छी, तँए पहिने एकठाम बैस किछु खा-पी लिअ पछाइत निचेनसँ आगू बढ़ब।”

जेना सुमनलालक मनमे निसचिन्ती छल तेना मेवालालक मनमे नहि छल। एक तँ भाषाक दूरी छल, किएक तँ अधिकांश लोक बंगला भाषी छला जे बंगलामे बजैत, मेवालालकेँ बंगलासँ भेँट नहि। भाषा नइ बुझने मेवालालकेँ केकरोसँ किछु पुछबो कठिन छेलैन्हे। से बात सुमनलाल आ रविनाथकेँ नहि छेलैन। केताबेर रविनाथ कलकत्ता आबि चुकल छला तँए ऐठामक तौर-तरीका बुझल छैन। तहिना सुमनलालकेँ सेहो छेलैन। ओना सुमनलाल बेसी अनुभवी रविनाथसँ छैथ। किएक तँ पचासो बर्खसँ कलकत्ताक बजारक संग-संग गाम-देहात सेहो घुमैत आबि रहल छला जइसँ सभ तरहक लोकसँ भेँटो-घाँट छेलैन आ गपो-सप्प तँ छेलैन्हे।

अबै-जाइक रस्तासँ बगैल सुमनलालक मेरियाक संगी-सभ एकटा नमहर चद्दैर बिछौलक। सभ कियो अपन-अपन चीज-वौस रखि बिछौल चद्दैरपर बैसला। पर-पैखानासँ लऽ कऽ नहाइ-धोइक सभ बेवस्था ऐठाम अछिए। सभ-कियो सभ दिस लगि अपन-अपन तैयारीमे जुटि गेला। रविनाथ आ मेवालाल सेहो अपन तैयारीमे लगि गेला।

नहेला-धोला पछाइत सुमनलालक मेरियाक जे भण्डारी छल– माने जेकरा लग खाइ-पीबैक समान छेलै–ओ झोरासँ सतुआ निकालि सानए लगल। साननिहारकेँ सुमनलाल कहलखिन-

“बौआ! भूखक तृष्णा सभकेँ अछिए, तहूमे जखन आब अड्डापर पहुँच गेलौं तखन अनेरे झोरामे खाइक वौस किए रखबह।

अखन सभ छीहे, सभटा सठा लएह।”

भण्डारीक अपन मनक प्रश्न मनेमे विलीन भऽ गेल। मनमे प्रश्न छेलै जे मेवालाल आ रविनाथो-ले सतुआ सानब कि नहि? मुदा आब सभटा सतुआ सानैक विचार भइये गेल तँए फुट-फुटक प्रश्ने समाप्त भऽ गेल।

अखन तक, माने बरौनी स्टेशनसँ लऽ कऽ हाबड़ा स्टेशन धरि रविनाथ आ सुमनलालक बीच टोका-टोकी नइ भेल छल, जे हाबड़ा स्टेशनपर मेवालालकेँ बीचक कड़ी बनने भेल।

मेवालालक संग रविनाथो सुमनेलाल लग गोलिया कऽ बैसला। बैसते मेवालालकेँ सुमनलाल कहलखिन-

“हम तँ नाच पार्टीक संग जाएब, अहाँ तँ असगरे छी अहाँ केतए जाएब?”

सुमनलालक प्रश्न सुनि मेवालालक मनमे जुआर जकाँ उठल। उठल ई जे रौदीक मारल जखन हारल जिनगी अछि आ कारोबारी जगहपर पहुँच गेल छी, तखन जे काज भेटत से करब।

मुदा अखन तक मेवालाल सुमनलालकेँ बाहर[11]क अनुभवी मानि चुकल छला तँए बेतुकार बाजबोकेँ उचित नहि बुझि बजला-

“जखन अड्डापर पहुँच गेल छी तखन कोनो-ने-कोनो गड़ कमाइले भेटबे करत।”

अनिश्चित विचार मेवालालक सुनि सुमनलाल बजला-

“ओना, जँ हमरा संगे चली तँ तत्काल खाइ-पीबैक जोगार लगि जाएत, मुदा जखन बिपैतक मारल झमाड़एल एलौं तखन ई उचित नइ हएत जे पेटे भरिक आशापर जाएब। परिवार सेहो अछिए तँए बिनु

[11] घरसँ बाहर रहैबला

कमेने काज नहियेँ चलत।"

की उचित आ की अनुचित अछि तइ दिस मेवालालक मन बहकलैन। बहकलैन ई जे मात्र पेट भरिक भोजन दुआरे सुमनलाल बजला, मुदा जैठाम पेटे भरिक समस्या अछि तैठामक लेल तँ उचित भेबे कएल। जँ पेटक समस्याकेँ समस्या नहि बुझल जाए तँ हजारक-हजार, लाखक-लाख जे भिखमंगा अछि ओ किए अछि..?

अपनाकेँ संयमित करैत मेवालाल बजला-

"भाय साहैब, अपने भोजनक भार उठेलौं तइले धन्यवाद दइ छी, मुदा जइ परिस्थितिमे हम फँसि गेल छी, तैठाम मेहनत छोड़ि दोसर कोनो उपाय नइ अछि। तँए, मन राखब। अखन जाए दिअ।"

ओना, रविनाथ सुमनलालकेँ सेहो तोष-भरोस दैत कहलकैन-

"भाय साहैब! कारखाना होइ कि खेत, ऑफिस होइ आकि स्कूल, जेतए काज लागत जरूर करबे करब तँए आशा अछि।"

रविनाथक संग मेवालाल सेहो विदा भेल।

चारि डेग आगू जखन मेवालाल बढ़ला कि पाछूसँ सुमनलाल बजला-

"केतौ केकरो संग जँ कोनो ओझरी-पोझरी लागए तँ कहबै जे हम भिखारी ठाकुरक मेरियाक छी।"

स्टेशनसँ निकैलते रविनाथ बाजल-

"मेवा भाय, अपना सभ ते हर-कोदाइर पाड़ैबला देशक छी तँए कोनो काजसँ डरैक नहि अछि।"

'काजसँ नै डरब' सुनिते मेवालालक मनमे निडरपन जागल। निडरपनो जगैक तँ अपन जगहो आ परिस्थितियो छइहे। ओना, डरबो आ निडरपनो ने एके दिनमे अबैए आ ने जाइए। ओकरो क्रमिक

विकास छइ। जे जेतए अछि माने जेकर जिनगी जेतए छै ओकर डरपनो आ निडरपनो ओतै छइ। ओना, आइ धरिक जे मनुखक इतिहास रहल अछि ओइमे डरपनक रस्ता प्रवल रहल, जे अनेकानेक रूप पकैड़ अपार जनमानसकेँ दबैत रहल जइसँ डरपन बढ़बे कएल। अपन अतीतक जे संसविचार[12] रहल ओहो ओइसँ अछूत नहियेँ अछि। खाएर जे अछि ओ जाबे अछि ताबे अछि चाहे जहिया छल तहिया छल, मुदा आइ हम सभ एकैसम सदीक अठारहम बर्खमे पहुँच रहल छी, मुदा वयस्क नइ भेलौं सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तँए जँ अपन मताधिकारक प्रयोग करी तँ अत्यधिके की..?

अखन धरिक मेवालालक जिनगी श्रमशीलक रूपमे छेलैन तँए श्रमसँ भागि नहियेँ सकै छला जे मनमे डर पसितैन आकि डरितैथ। ओना, एहेन मनुखक सोभाव आइये नहि, सभ दिनसँ दुनू तरहक रहल अछि। माने श्रमशील आ श्रमहीनक। श्रमहीन मनमे सदिकाल अधिक-सँ-अधिक भोगक चाह बढ़िते अछि जइसँ रंग-रंगक अपराध वृत्ति धरतीपर पसरले अछि। मुदा ऐठाम से नहि, मेवालाल श्रमशील छैथ। श्रमे ने मनुखकेँ इमानदारो आ स्वावलम्बियो बनैबते छइ। यएह दुनू ने मनुखक मनक तिजोरीक मूल सम्पदा भेल। से तँ मेवालालमे छैन्हे। मुदा नव जगह, नव समाजक बीच नव काज–नव काजक माने अखन तक नइ केलहा काज–मेवालालक मनमे हौंर नहि मारि रहल छेलैन सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, मेवालालक मनमे एहेन बिसवास नइ छेलैन से बात नहि, जे देखा-देखी दुनियाँमे ने लोक सीखा-सीखी करैत साखी-मंत्र बना गबैए। तैबीच ओतए-सँ निकैल एकटा चाहक दोकानक सोझ दुनू गोरे पहुँच गेला। चाहक दोकानदारकेँ केटलीक कारिख छोड़बैत देख मेवालालक मन जेना

[12] संस्कारक विचारधारा

बिहुसि गेलैन। बिहुसिते मेवालाल रविनाथकेँ कहलैन-

"रविनाथ भाय! काजसँ डरैक माने भेल जिनगीसँ डरब। से जँ डरि जाएब तखन जिनगीक समरभूमि केना टपि सकै छी। आ जँ से नहि टपि सकै छी तखन पाप-पुण्यक वा धर्म-अधर्मक विचारे केना कऽ सकब।"

मेवालालक विचार सुनि जेना रविनाथोक मनमे नव विचार पोनगल। पोनगल ई जे नोकरीक पाछू बड़ घुमलौं, बुझू ते सौंसे देशे घुमलौं मुदा ठौर नहि भेटल। जेते कुटुम-परिवारक संग चिन्हार लोक छैथ सभसँ कहबो केलिऐन आ सभ नोकरीक आश्वासनो देलैन मुदा जेहेन परिवारक जिनगी पिताक अमलदारीमे रहल तइसँ नीक बनि जीब से केतौ ने भेटल। ओना, जेहेन हवा-पानि बनि गेल अछि तइमे दोख किनको ने दइ छिऐन। दोख अपन कपारक अछि जे जेते दिन वौऐनी धेने छल, वौएलौं। औझुके काजपर ने कौल्हुका जिनगी ठाढ़ अछि...।

विचारमे बहैत रविनाथक मन विचारक कतवाहिमे आरा लगल। जेना जिनगीक नाहे रूकि गेल होइ तहिना चौंकैत बजला-

"मेवा भाय, जखन जे हएत से हएत! पहिने भरिमन चाह पीब लिअ। जखन देह लऽ कऽ पहुँच गेल छी आ जोलहा जकाँ धुनैले तैयारो छीहे तखन कबीर बाबा अपन तानी-भरनी लऽ कऽ नइ औता सेहो बात नहियेँ अछि।"

दुनू गोरे–माने मेवोलाल आ रविनाथो–चाहक दोकानक ब्रेंचपर बैसला। बैसते रविनाथ बाजल-

"दोकानदार भाय, अपन मिथिलामे जे चाह पीलौं सएह पीने छी। रस्तामे टीशन सभपर छुच्छे गरम पानि पीआ नीक चाहक दाम ठकैए तँए केतौ ने पीलौं। मन कनी बेसी जड़ाएल जकाँ भऽ गेल अछि

तँए कनी बकेनमा महींसिक दूधक जराइन चाह भरि मन पीआबह। जे दाम कहबह से दऽ देबह।"

हाबड़ाक दोकानदार केना मुँह चुप रखैत। हड़बड़ाइत बाजल-

"तोरा सबहक गाममे बकेनमा महींसिक जरलाहा दूधक चाह बनैत हेतह, ऐठाम लोहे-महींसिक दूध चलैए।"

अपनाकेँ पाछू घुसकबैत रविनाथ पाशा पलैट बाजल-

"अखन जे पाँचटा चाह पीबैबला गहिंकी दोकानपर आबि जा तखन केना पीएबहक?"

ओना, दोकानदारो मिथिलेक चटिसारक लोक, जे एकटा गौंआँक संग कलकत्ता आबि चाहक दोकान खोलने छल। पित्ती रेलबेमे नोकरी करैत रहथिन। हुनके बले तीस सालक बन्दोबस्ती जमीनमे दोकान छइ। जे मात्र पौन धुर जमीनमे अछि। एक तँ रेलबे स्टाफक संग परिवारिक सम्बन्धक शक्ति तैसंग जेतेक कुली आ ठेलाबला-रिक्शाबला छल सभ एकरे दोकानमे चाहो पीबैए आ देश-विदेशक राजनीतो करिते अछि, तँए दोकानदारो मंचपरक लोक भइये गेल अछि। बाजल-

"सौंसे दुनियाँक ठीकेदारी हमहीं लोकक नेने छिऐ। बाबा सदिकाल बजै छला- लूटि लाबी कुटि खाइ प्रात भेने फेर जाइ।"

दोकानदारक बात रविनाथो परेख गेल। बाजल-

"दोकानदार भाय! तोरा दोकानपर छिअ, तहूमे मरल-मराएल परदेशी छी, बाल-बच्चाकेँ मुँहक अहारक ओरियान करै दुआरे ऐठाम एलौं हेन, तँए झगड़ा नइ करब। मुदा जँ कहऽ ते एकटा बात कहियह?"

चौमैत परहक दोकानदार रहबे करए, हँसी-खुशीसँ बाजल-

“भाय, अखन तूँ हमर गहिंकी छह तँए लछमी भेलह। आएल लछमीकेँ गपे-सप्पे भगा देब, से एहेन वेपारी नइ ने छी। बाबा ईहो कहै छला जे ‘अपने खड़ा बजारमे सबहक ली खैर,[13] ने केकरोसँ दोस्ती आ ने केकरोसँ बैर।”

रविनाथ आ दोकानदारक बीच होइत गप-सप्प सुनि मेवालाक मन ओहिना पघिलल जा रहल छल जहिना गरम वस्तुकेँ देख घी वा मोम पघिलए लगैए। तैबीच टुस्की दैत मेवालाल बाजल-

“जखन दुनू गोरेक रस्ता एके रंग अछि तखन बजैमे संकोचे की?”

रविनाथकेँ जेना चारू दिससँ सह भेटल होइ तहिना निरविकार होइत बजला-

“दोकानदार भाय, जहिना तूँ अपन बाबाबला विचार जे बजलह से कि हमर बाबा नइ बजै छला। जे तोहर बाबा बजै छेलखुन सएह हमरो बाबा ने बजै छला।”

पारखी दोकानदार, बाजल-

“जे बात हमर बाबा बजै छला सएह जँ तोरो बाबा बजै छेलखुन तखन तँ..?”

बजैत-बजैत दोकानदारक देह जेना सिहैर गेल। जइसँ रविनाथ अपनाकेँ जेना उपलाइत देखलक तहिना बाजल-

“भाय, जखने दोकानपर एलौं तखने मनमे किछु अन्दाज हुअ लगल। मुदा एक राजक कोन बात जे दोसर राजक भेलौं। ओना, एक इलाकाक रहला पछातियो दू इलाकामे रहने थोड़े-थोड़े बोलियो-वाणी आ आचारो-विचारमे अन्तर आबिये जाइए। होइतो एहिना अछि जे

[13] खैरियत- हाल-चाल

जइ इलाकामे गाछी-कलम अधिक अछि ओइ इलाकाक चिड़ै-चुनमुनी आ जइमे नइ अछि–माने जे दहार इलाका अछि, पनिगर इलाका अछि–तइमे अन्तर एबे करै छइ।”

दोकानदार बाजल-

“खाएर जे अछि से अछि मुदा जखन कमाइले एलह तखन चाह पीब लएह, जलखै करा दइ छिअ, अढ़ाइ-तीन बजेमे दिनका खेनाइ बनबै छी, तैबीच तोहूँ सभ काज भँजियाबह।”

दोकानदारक विचार सुनि रविनाथक नैतिक बल जेना सबल भऽ गेल। रविनाथ बाजल-

“तोरा भाँजपर तँ केतेको काज हेतह।”

दोकानदार बाजल-

“पढ़लो-लिखल छह?”

रविनाथ-

“हँ हौ, बी.ए. पास छी।”

हाथक इशारा दैत दोकानदार बाजल-

“तोहर काज बैसले-बैसल भऽ गेलह।”

कहि दोकानदार चुप भऽ गेल।

भँसैत धारमे जड़ि उखड़ल गाछ जकाँ मेवालाल अपन जिनगी देख रहल छला। अपन बाहुँ-बलसँ जीबैबला स्वावलम्बी पुरुख अपन जीवनकेँ मराएल धारमे जड़ि उखड़ल गाछ जकाँ भँसियाइत देख रहल छला। की दुनियासँ हारि मानि पेटक खातिर आत्महत्या कऽ ली? नहि! अध्यात्म हमर दर्शन छी जे अनेको रंगक जिनगीकेँ अनेको रंगक दिशा निर्धारित करैत आएल अछि आ आगूओ करैत रहत। की ओकरा झुठला देब? नहि! नहि, आत्महत्या कथमैप नइ करब। वृद्ध

माए आ पत्नी-बच्चाकेँ गाममे छोड़ि आएल छी, तैठाम जँ अपन नचार-विचार अपने नइ ताकब तँ दोसराक तकने भेटबे केते करत? हे मन! धीरज रख! दुनियाँ बड़ नमहर आ बड़ सघन छइ। सबहक बास हेबे करत..!

दोकानपर मात्र तीनियेँ गोरे- दोकानदार, मेवालाल आ रविनाथ। दोकानदार बाजल-

“दुनू गोरे पहिने ओइठाम जाउ, जैठाम हम फोन करि कऽ कहि दइ छिऐ, जे आदमी-दे जे कहने रही से भेज रहल छी। सामने-सामनी गप-सप्प कऽ लेब। किछु छी तँ बंगाली भाय छी किने। ओ अनेरे ने सोचत जे जहिये कहलिऐ तहियेसँ ओ टोहियबए लगल हएत। कोनो काज ओहिना होइ छै आकि ओइमे समैयो लगै छइ। जे वेचारा हमर एते मान रखलक, तेकरा जँ तेतबो सम्मान नइ देब तखन अनेरे लोक किए ‘गुरुदेव-गुरुदेव’ जपैत रहैए।”

दुनू गोरे उठि कऽ ठाढ़ भेल। दोकानदार ठाढ़ रहबे करए, बाजल-

“ओइठामक काज सम्हारि कऽ आउ, ताबे खाइ बेर सेहो भऽ जाएत। अहीठाम खा-पीब लेब आ चारि-पाँच बजेमे धरमतल्लामे जे धरमशल्ला अछि ओइठाम चलि जाएब। ओतए दू-चारि गोरेक काज सदिकाल रहिते छइ। ओना, बुझी तँ ओ धरमशल्ला अपने सबहक छी। पचीस-पचास गौंआँ-घरूआ सभ दिन रहिते अछि।”

मेवालाल आ रविनाथ जखन काजक भाँज बुझए विदा भेला तखन मेवालाल बजला-

“अपन चिन्हा-परिचयक लोक सभ नइ छैथ?”

अनुभवी जकाँ रविनाथ बजला-

“मेवा भाय, कलकत्ता छी किने, कलेपर ठाढ़ अछि! तँए सभ

किछु छोड़ि देलौं, केकरो डेरापर जेबै आ ओकरा मनमे ई हेतै जे खाइये-ले आएल अछि, से किए। जखन कि खेनाइ ऐठाम तेतेक सस्ता अछि जे बेसी लोक होटलेमे दुनू साँझ खाइए। तइले केकरो मनमे अनोन-विसनोन होइ, से नीक नहि।”

अखन धरिक स्वावलम्बी जिनगी जे मेवालालक मनमे छल ओ एकाएक उद्वेलित भेल। उद्वेलित होइते बुदबुदाएल-

“धरमोक अपन रस्ता छै, जे अपने तोड़ने टुटैए आ अपने जोड़ने जोड़ाइए। तैठाम जखन श्रमिक धरम पोसने छी तेकरा केना गरदैन दाबि कऽ मारि देब!”

मेवालालक विचार सुनि रविनाथ बजला-

“भाय मेवा, एतेक तँ आशा दुनू गोरेक बीच जगिये गेल किने जे एक गोरेक काजक भाँज लगि गेल। ओना, ई बात तँ अपनो विचार कहैए जे दुनियाँमे सभ सबहक सहारे छी आ कियो केकरो सहारा नहियों छी। तखन तँ तेहीमे ने लोक चलितो अछिए आ आगूओ चलैत रहत।”

रविनाथक बात सुनि मेवालाल बजला-

“जखन काज करए एलौं आ तैठाम जँ काज रहत, ते किए ने ओइमे लगि जाएब। मजदूरक मजदूरीक टकराव तँ ओतए ने होइए जेतए ओहेन श्रमिक रहल आ ओकर ओहन श्रम भेल। मुदा जँ से नहि अछि तखन तँ विचारए पड़त किने। अपना सभ तँ सहजे पएर उखड़ल बोनिहार भेलौं। तँए पहिने पएर रोपैक ने गड़ लगाएब।”

मेवालालक विचार सुनि रविनाथ बजला-

“मेवा भाय, अपनो तँ देखल-सुनल अछिए किने जे जैठामक श्रमिक अपना सभ छी, तैठाम श्रमक महत केते छल आ ऐठाम की अछि। ओना किछु अछि तैयो तँ पढ़ल-लिखल लोकक समाजो छीहे

आ कारोबारी इलाका सेहो छीहे। तँए अपनाकेँ अखन ई मानि ली जे हम केते परिश्रमी छी, तइ हिसाबसँ अपन सामंजस करब। काज रहने छोड़ि कऽ भागबो तँ पलायनक पागलपने हएत किने। से नइ करैक अछि।"

रविनाथक विचार सुनि मेवालाल अपन सहमत जतबैत बजला-

"रविनाथ, अखन बुझह जे जइ रौदियाएल इलाकासँ अपना सभ परिवार बँचबैले एते दूर काज करए एलौं, तैठामक नइ बहुत तँ दू गोरे तँ भेबे केलौं किने। तँए आगूक जिनगी तोहर की हएत आ हमरे की हएत से तँ भविस बुझत मुदा अखन एते तँ अपना सभ विचारिये लेब किने जे कहुना कऽ पहिने पएर रोपी।"

'अपन इलाका' सुनने रविनाथक मन उठि कऽ गाम चलि गेल, जरैत धरतीक सुगन्ध मनमे पसि गेलैन। बजला-

"मेवा भाय, ठीके तेतर दास बबाजी बजै छला- 'केकरो कियो ने..!"

'केकरो कियो ने' सुनिते मेवालालक मन जंगमे अपन जंगी रूपमे रूपायित हुअ लगल। जंग क्षेत्रमे जंगभूमिक ने विचार हएत। तैठाम रविनाथक एहेन बोल हेबा चाही? बजला-

"से की रवि?"

उदास भेल मनक मुँहक मुस्की दैत रविनाथ बजला-

"भाय, अखन अपने सभकेँ किछु हएत, आकि गाममे परिवरेक लोककेँ किछु हेतै तँ के केकरा देखत? हँ! एते बात जरूर अछि जे ओही परिवारक पेटक आगि मिझबै खातिर ऐठाम एलौं हेन, मुदा जिनगी पेटे भरिक नहि ने छी..!"

रविनाथक बात सुनि मेवालालक मन ठमैक कऽ मुड़ि गेलैन।

मुड़िते बजला-

"रवि, दरमाहा निर्धारित करैमे बेसी लागि-लपेट नइ करिहऽ।"

मेवालालक विचार सुनि रविनाथ बजला-

"केकरो गेला उत्तर ने हमरा काज भेटत। तखन तँ रहल काजक अनुभव।"

'काजक अनुभव' सुनि मेवालाल बजला-

"पढ़ल-लिखल लोकक काजमे यएह ने नमहर ओझरी अछि।"

'नमहर ओझरी' सुनि रविनाथ अपन ओझरी सोझरबैत बजला-

"पहिने काज आ दरमाहा तय कऽ लेब, पछाइत कहबै जे पहिने ई काज नइ करै छेलौं तँए काज सिखबैक भार अहाँ ऊपर।"

बिना कोनो रौं-झौं भेने रविनाथकेँ नोकरी भऽ गेल। काल्हि साढ़े आठ बजे अपन उपस्थिति दर्ज करौता।

नौकरीक खुशी जहिना रविनाथक मनकेँ चढ़ा देलक तहिना मेवालालकेँ सेहो चढ़लैन। चढ़न्त खुशीक कारण दुनूक अपन-अपन रहैन। रविनाथक मनमे दरमाहा सुनि खुशी भेल आ मेवालालकेँ खुशी ऐ दुआरे भेलैन जे दूटा हराएल बटोहीमे एकटाकेँ ठौर भेट गेल। एकटाकेँ ठौर भेटने दोसरोक हेराएब तँ हेराएब नहियेँ ने रहल।

रविनाथ बाजल-

"मेवा भाय, एते तँ आशा भइये गेल किने जे दुनू गोरे एक घरमे रहबो करब आ दरमाहासँ अपन जिनगियो चलाएब।"

गप-सप्प करैत दुनू गोरे भूषण ऐठाम पहुँचला।

दुनू गोरेकेँ देखते भूषण बजला-

"रस्ताक चलल छी तबैध गेल हएब, तँए पहिने नहा लिअ। ऐठाम स्टेशनक सभ अपने लोक छैथ केतौ लजाइ-धखाइक नइ अछि।"

मेवालाल भूषणकेँ कहलकैन-

"सबेरे, अहीठाम नहा नेने छेलौं। नहाइक खगता नइ अछि। कनी हाथ-पएर आ मुँह-कान धो लेब, तहीसँ काज चलि जाएत।"

दोकानेपर तीनू गोरे खेलैन। खाइते काल भूषण बजला-

"धरमतल्लाक रिक्शाबला सभ पसिंजर पहुँचबए स्टेशन अबिते अछि, ओही रिक्शापर दुनू गोरेकेँ बैसा देब।"

सएह भेल। खेलाक लगले पछाइत एकटा रिक्शाबला सवारीकेँ पहुँचबैले पहुँचल। रिक्शाबला–बचनू–आ भूषणकेँ चिन्हारए रहबे करइ। मुसाफिरखानाक मुँह लग पहुँच, सवारीकेँ उताइर जखन बचनू घरमुहाँ हुअ लगल, तँ भूषणकेँ कहलक-

"की भूषण भाय, चला-चलती ठीक अछि किने?"

भूषण बजला-

"हँ हौ बचनू भाय, आगूमे पाइ गनह तूँ आ चला-चलती रहत हमर!"

बचनू सहैट कऽ दोकानपर आबि बाजल-

"पाहुन सभ केतक छैथ?"

भूषण-

"आइ दू सालसँ अपन इलाकाक की दशा भऽ गेल अछि से कि तूँ नइ जनै छहक।"

बचनू-

"हँ, से तँ बुझले अछि। कोन गाम घर भेल?"

रविनाथ-

"लछमीपुर।"

'लछमीपुर' सुनिते बचनू बाजल-

"ओऽऽ लछमीपुर..! ओइठाम तँ हमर सढ़ुआरए अछि। दुखियाकेँ चिन्है छिऐ?"

रविनाथ-

"हँ, किए ने चिन्हबै। गाम कि कोनो कलकत्ता छिऐ जे बापो-बेटाक बीच चीन-पहचीन नइ रहत। दुनू गोरेक घर एकेठाम अछि।"

बचनू बाजल-

"ओ हमर छोट साढ़ू छी।"

रविनाथ-

"दुनू गोरे बच्चेसँ एकेठाम खेलाइत आएल छी, पढ़ैमे तँ बड़ तेजगर रहैथ मुदा माता-पिताक हालते तेते रद्दी रहैन जे गामक स्कूलसँ आगू नहि पढ़ि सकला। नाम-गाम लिखल तँ होइते छैन। मुदा आब घरक चुहचुही कनी बदललैन अछि। जेठ भाय जकाँ हमहूँ मानै छिऐन आ ओहो तहिना मानै छैथ।"

एक तँ बचनुक सढ़ुआरेक गाम लछमीपुर, तहूमे छोट साइरिक सासुर। केना बचनू अपन पाग निच्चाँ उतारैत। बाजल-

"भूषण भाय! औझुका आमदनियो आ तरहत्थियो सबसबेनाइसँ अपनो बुझि पड़ै छल जे आइ पाहुन जरूर औता। किएक तँ जँ बामा हाथ सबसबाइत तखन तँ अपने केतौ जइतौं, मुदा दहिना हाथ कखनो-कखनो अखनो सबसबाइते अछि।"

भूषण-

"औझुका केहेन कमाइ रहलह?"

बचनू-

"सबैयासँ बेसी आ डेढ़ियासँ कम जरूर भेल अछि।"

भूषण-

"तब ते दूटा पाहुनक भार भारी नइ लगतह!"

आमदनीक गरमी बचनूकेँ चढ़ल छेलै कि अपन मातृभूमिक संस्कार जोर मारलकै से तँ बचनुए जानत मुदा उत्साहित होइत बाजल-

"भूषण भाय, गरीब भेने इज्जतखोर नइ भऽ गेल छी। अपनो इज्जत आ अपन माइटो-पानिक इज्जतकेँ जीता जिनगी केना बिसैर जाएब। बाबाक अमलदारीक एकटा गप कहै छी। एकटा हेराएल बटोही दोसर-तेसर साँझमे दुआरिपर एला। बाबा जीविते रहैथ। अबिते बाबा कहलखिन- 'पहिने पएर धोउ। पएर धोला पछाइत बाबा कहलखिन- अन्नक तँ अभाव अछि, मुदा पानि तँ अछि। पानि पीब जँ राति निमाहि सकी तँ संग मिलि निमाहू। भोरे जेतए जेबाक मन हुअए, दिन उगल जाएब...।' हमहूँ तेही खनदानक ने छी। धरमतल्लामे रहै छी, रोड परहक दोकानमे खाइ छी, ओछाइन ओछा अपने सन दसटा समांगक संग सुतै छी। एतेक बेवस्था तँ हमरो अछिए।"

भूषण-

"दुनू गोरे आशा बान्हि गामसँ आएल छैथ, एक गोरेक भाँज तँ लगि गेलैन, दोसर गोरेक भाँज लगबिहऽ।"

बचनू-

"हँ, हँ, चलू। रोड परहक आदमी ने हम छी, रोडपर काज छिड़ियाएल अछि, तँए काज हाथेमे अछि। जखन कलकत्ता आबि गेलौं तखन ओहिना घुमि जाएब सेहो नीक हएत।"

बचनुक बात सुनि मेवालालकेँ जेना बुकौर लागए लगलैन। तेकर कारण भेल जे एक दिस समाजक ओहन बोन-झाड़ देखै छला जे भाइ-भाइक बीच गोली-वारीसँ लऽ कऽ जहल-फाँसी तक भऽ रहल अछि आ दोसर दिस आनो-बीरान अपन सहोदर भाए जकाँ शुभचिन्तक छैथ। मुदा ई तँ मनक बात बुझू आकि पेटक बात, मुदा की एकरो नकारल जा सकैए जे एक दिस गामक-गाम प्राकृतिक आपैत-बिपैतसँ–माने रौदी-दाहीसँ–उपैट रहल अछि तँ दोसर दिस मानव निरमित बेवहारसँ नहि उपैट रहल अछि सेहो केना कहल जाए? सबहक अपन-अपन गुण-धर्म छै, ओही गुणे-धरमे ने मनुखो लड़ैत-झगड़ैत अपन जीवन बितैबते आबि रहल अछि।

थोड़बे आगू जखन रिक्शा बढ़ल कि रोडक कातमे पानिक टंकीपर बौन दास बाल्टिनमे पानि भरि रहल छला। बौन दासकेँ देखते बचनू बाजल-

"बौन भैया, अपने इलाकाक पाहुन सभ छैथ!"

'अपन इलाकाका पाहुन' सुनि बौन दास चौंकल। चौंकैक कारण जे रहल होउ...।

बौन दासकेँ लोक सिनेहसँ 'बौन भैया' कहै छैन। असल नाओं मखनलाल छिऐन। से कोनो भैयारियेक लोक कहै छैन से बात नहि, धियो-पुता आ बुढ़ो-बुढ़ानुस 'बौने भैया' कहै छैन। जेना कोनो नामक आगू टाइटिल लागल रहैए, आ जान-अनजान दुनू मिला कऽ नामक सम्बोधन करैए तहिना 'भैया' बौन दासमे लगि गेल अछि। ओना, गामक पड़ोसियाकेँ देख बौन दासक मनमे कनी लाजो भेलैन। लाजक कारण रहैन जे आइ पैंतीस बर्खसँ बौन दास घरे-घर, एक मंजिला, दू मंजिला, तीन मंजिलामे सीक-पटैपर पानिक बाल्टिन उघि-उघि पहुँचा अपन जीवन-जापन करैत आबि रहल छैथ। जेहेन कठिन मेहनत

तेहेन कमाइ। अपन जुआनीमे बौन दास काजक बाजी पाइयक पाशापर रखि पनरह बर्ख धरि जिनगी बितौलैन, माने अधिकसँ समय लगा अधिक घरमे पानि पहुँचेने अधिक कमाइ पनरह बर्ख धरि केलैन। मुदा अपन जिनगीकेँ तँ ओही जिनगीमे रखने रहि गेला। मिसियो भरि काजमे सुधार नइ केलैन। तँए अपन वएह जिनगी पचास बर्खक उमेर भेलोपर छैन्हे। मुदा गाममे ईंटाक मकानो, पाँच बीघा खेतो जरूर बना लेलैन। बेटीक बिआह सेहो धुम-धामसँ केलाह आ दुनू बेटाकेँ सेहो मैट्रिक तक पढ़ौलैन। मुदा जिनके कमाइपर परिवार ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ ससरल, परिवारमे गति आएल हुनके जिनगी गतिहीन भऽ गेल! बौन दासक मन भरिसक तँए लजा गेलैन। मुदा कलकत्ताक सड़कपर रहनिहार बौन दास केना अपन मुँह चुप रखितैथ। बजला-

"बचनू, रिक्शा रोकह। तीनटा परिवारमे आरो पानि देब बाँकी रहल अछि, तइमे पहुँचा पीठेपर हमहूँ अबै छी। अच्छा जे हेतै से अगाइत-पछाइत हेतै, पहिने चाह पीबह, पान खा, तखन आगू बढ़िहऽ। कोन गामक पाहुन सभ छैथ?"

बौन दासपर नजैर गाड़ि मेवालाल मने-मन विचार करए लगला जे भरिसक काजोमे आनन्द छइ। मने-मन ठेकना नेने छला जे बौन दासक उमर पचास बर्खसँ ऊपर जरूर हेतैन। लोक जीबे केते करैए, जँ पचास बर्ख अपना जुतिये-भाँतिये जँ जिनगी जीब ली, तँ बाँकीए की रहल। ओना, जहिना बचनू अपन काज रोकि ठाढ़ तहिना बौन दास सेहो। दुनूक मनमे नचैत रहैन जे जेते काज अखन पछुआएत तेते पछुआ पकैड़ पछुआइते चलि जाएत। बचनू बाजल-

"भैया, अखने तीनू गोरे भूषण ऐठामसँ चाह-पान खा-पीब कऽ एलौं हेन। तँए अखन चाह-पान छोड़ह। ताबे हम सभ धरमशल्लापर

जाइ छी।"

बौन दास पानि भरए लगला आ बचनू रिक्शा बढ़ौलक। कनियेँ आगू बढ़लापर बचनू बाजल-

"साढ़ू, एहेन जिबठगर कम लोक होइए। जैठाम रहब, तैठाम अड़ोसिया-पड़ोसियासँ झग्गड़ हेबे करैए। ऐठाम अपना सबहक पक्षक पहाड़ बौन भैया छैथ। हिनकर धाक सौंसे महल्लाबला रखै छैन। जइसँ हमरो सभकेँ बुझि पड़ैए जे गाम तँ नहि, मुदा समाजमे जरूर छी।"

मेवालाल आ रविकान्तक तँ कियो चीन-पहचीन लोक रस्तामे नहियेँ रहैन। सड़कक बगलेसँ बचनूकेँ देख राघव बाजल-

"अढ़े-अढ़ मुँह चोरौने बचनू काका भागल जा, हम सभ ते बोन-झाड़ ने छी।"

राघवक अवाज सुनि बचनू रिक्शा रोकि अपन सफाइ दैत बाजल-

"राघव, जखन सवारी लऽ कऽ चलै छी तखन जँ रोडपर सँ नजैर हटाएब से नीक हएत। तँए नइ देखलियह। केते कालमे डेरापर एबह। अपने पाहुन सभ छैथ।"

राघव बाजल-

"एक घन्टामे काज निपैट जाएत। पचास किलोबला पचीसटा बोरा बँचल अछि, लगले गोदामे थकिया पीठेपर अबै छिअ।"

राघवक बात सुनि मेवालालक मन चौंकल। यएह छी मनुखक जिनगी! ठीके बाबा कहै छला- 'दिन धराबए तीन नाम।' अही तीनूमे ने केतौ-ने-केतौ अपनो छी। मुदा बजला किछु ने।

सूर्यास्तक समय, दिनुका काजक उसारी आ रौतुका काजक

पसारीक समय भइये रहल छल। धरमशल्लाक आगूमे रिक्शा लगा बचनू दुनू गोरे–मेवालाल आ रविनाथ–कें रिक्शासँ उताइर बाजल-

“आगूमे टंकी लगल अछि, झोरा रखि दियौ आ जाबे दुनू गोरे हाथ-पएर धोब ताबे हमहूँ ओछाइन ओछा लइ छी।”

ओछाइन ओछा बचनू रोड परहक चाहक दोकानदारकें कहलक-

“मनोहर, दूटा पाहुन एला अछि, चाह नेने आबह।”

मनोहर अपन बारह बर्खक बेटाकें कहलैन-

“बौआ, हमरा कनी देरियो लगि सकैए, ताबे तूँ दोकानेपर रहिहें।”

कहि तारबला टँगनामे चारि गिलास चाह नेने मनोहर पहुँचला। बचनू सेहो हाथ-पएर धोइ ओछाइनपर दुनू गोरेक संग बैस गप-सप्प शुरूहे केनहि छल। लगमे अबिते मनोहर रविनाथकें पुछलखिन-

“कोन गाम घर भेल?”

रविनाथ-

“लछमीपुर।”

लछमीपुर मनोहरक छोट बहिनक सासुर। ओना, मनोहरक बहिनक बिआह बच्चेमे भेल छेलैन आ मनोहरो गामेमे रहै छला, तइ समय लछमीपुर बेसी काल जाइ-अबै छला मुदा आइ बीस बर्ख मनोहरकें कलकत्ता एना भेल। तहियासँ अपन गाम तँ मौका-कुमौका जाइत-अबैत रहै छैथ मुदा बीचक बीस बर्खसँ बहिनक ऐठाम भरदुतियोमे ने कहियो जा सकला। ओना, झमटगर दियादी परिवार मनोहरक रहने लछमीपुरसँ आबा-जाही अछिए, मुदा मनोहर-ले तँ अनचिन्हार भइये गेलैन अछि। एक तँ अपन घर छी माने जैठाम रहै

छी तैठाम आएल पाहुनकें केना कहल जाएत जे नइ चिन्है छी, तँए मनोहरकें विचार उठि गेलैन जे केना एहेन बात बाजब। अपनाकें तत्सम बनबैत मनोहर बजला-

“बचनू भाय, रौतुका भोजन हमरा भाँजमे रहल। छोट बहिनक सासुर गाम लछमीपुर छी।”

रविनाथ दिस तकैत फेर बजला-

“बौआ, अहाँ हमरा नीक जकाँ नहि चिन्ह रहलौं अछि। जागेसर बहनोइ छिया...।”

‘जागेसर’क नओं सुनिते रविनाथ बजला-

“ओ तँ भइये हेता। मुदा दुनू गोरेक घर दू टोलमे अछि।”

चाह सठि गेल। चारू गिलास तारक टँगनामे लटका हाथमे नेने मनोहर दोकानपर जा रखि, पानक दोकानसँ चारि खिल्ली पान नेने पहुँचला। तैबीच बासू पहुँच चुकल छल। बासू महल्लेक मकानमे परिवारक चौका-बरतनक काज करैत अछि। अबिते बासू रविनाथकें पुछलैन-

“कोन गाम घर छी?”

रविनाथ कहलकैन-

“लछमीपुर।”

‘लछमीपुर’ सुनि बासू बाजल-

“ओइ गाममे हमर मौसा-मौसी छैथ। रूपलाल मौसाक नाओं छिऐन।”

‘रूपलाल’ सुनि रविनाथ बाजल-

“जिनकर घर पछबरिया रस्ता-कातमे छैन, सएह ने?”

बासू-

“हँ।”

रविनाथ-

“हुनका ते हम सभ कक्के कहै छिऐन आ अहाँक मौसीकें काकी कहै छिऐन। ओना, हुनकर घर कनी हटल दोसर टोलमे छैन, जइसँ आवाजाही कनी कम अछिए।”

बिच्चेमे बचनू बाजल-

“बासू, मौसी-काकी पछाइत करिहें। पहिने ई कह जे कोनो काज भाँजपर छौ?”

बासू बाजल-

“बचनू भैया, कोनो काज तकैसँ पहिने ई ने बुझि लेब अछि, जे अहाँ केहेन काज करए चाहै छी। काजो तँ काज छी। कोनोमे शरीरक श्रम बेसी लगैए, तँ कोनोमे मानसिक श्रम बेसी लगैए।”

रविनाथ बजला-

“हमर जोगार भऽ गेल, मेवा भायकें नहि भेलैन अछि।”

मेवालाल-

“बासू, जखन गामक सभ किछु छोड़ि देह लऽ कऽ ऐठाम एलौं तखन ऐ देहसँ जे काज लागत सभ करब।”

सात बजैत-बजैत पचीसो गोरे–माने जे धरमशल्लामे रहै छला–पहुँच गेला। सभकें पहुँचते एक दिस ताश शुरू भेल आ दोसर दिस साँझू पहरक मनोरंजन-कीर्तन-भजन सेहो शुरू भेल। दसनामा अपन ढोलक-झालि आ हरमुनियाँ सेहो रखने अछिए। गामे समाज जकाँ सेहो पचीसोक समाज बनियेँ गेल अछि। रंग-रंगक बोली, रंग-रंगक भाषामे कीर्तनो-भजन हुअ लगल। जहिना एक दिस विद्यापति आ चन्दा झाक संग मधुपजीक, तँ दोसर दिस सूरदासक ब्रजबोली, तेसर

दिस तुलसी दासक अवधी, चारिम दिस भिखारी ठाकुरक भोजपुरीक संग रबिन्द्र संगीतक धुन शुरू भेल तहिना ताशक पाशपर सेहो खेल शुरू भेल। एकटा गोधिया भरि दिनका अपन-अपन कमाइ हारि गेल, तँ दोसर गोंधियाकें आमदनी दोबरा गेल। माने जेतेक भरि दिनमे कमाइ केने छल तेते जीतियो गेल। यएह तँ छी जिनगीक खेल जे एके रंग कमाइमे दू गोरे दाता-महाजन बनि गेल तँ दू गोरे लेनिहार कर्जखौक! माने ई जे हारल दुनूक कमाइ ओतबे छल जेतेसँ अपने खाइ-पीबै छल आ गाम पठबैले जे रूपैआ रखै छल। मासिक मजदूरी पौनिहारकें तीस दिनक एकठाम भेटैए मुदा जेकरा से नइ छै, उट्ठा कमाइ छै, ओ तँ दिन-दिनक हिसाब जोड़ि ने जमा करैए। तँए दुनू हरलाहा ओइ आशापर ओते कर्ज लेलक जेते दिनमे कमाएल छल। ओना, मनमे ई आशा बनले रहै जे कौल्हुका पाशा जँ हमरे सुतरत तँ औझुका घाटाक पूर्ति भइये जाएत। तँए मनक विचारक मुँह किए मलिन होइतै आकि आमदनियेक खुशी बेसी किए होइतै। एहेन विचार एकटा मटिया आकि रिक्शा चलौनिहार किए बुझत, जँ कहीं कौल्हुको पाशा हारब तँ दोबर कर्जदार भऽ जाएब आकि जिनगीए दू सीढ़ी पिछैड़ जाएत।

जहिना गाममे रंग-रंगक लोकक जमात अछि तहिना धर्मशल्लाक बीच सेहो बनल छल। आठ-दस गोरे एकठाम बैस गाम-घरक कुशल-समाचार मेवोलाल आ रविनाथोक संग कइये रहल छला। तैबीच एते सम्बन्ध सबहक बीच बनियेँ गेल छेलैन जे एक्को गोरे एहेन नहि छुटला जिनका मेवालाल वा रविनाथक संग समाजिक सरोकार-सम्बन्ध नहि बनि चुकल छेलैन। जगह बदलने किछु बेवहार बदलबो करैए आ किछु जुड़ितो तँ अछिए। ओना, गाम-गामकबीच समाजक सम्बन्ध सेहो सघन लत्ती जकाँ तरे-ऊपरे लतरल सेहो अछिए।

भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल जहिना सभ छल तहिना मेवोलालआ रविनाथो छलाहे। रौतुका खाइक बेर भेल। एका-एकी सभ उठि-उठि दोकान जा-जा खाए लगल। अन्तो-अन्त मेवालाल बजला-

“भाय-बन्धु, जहिना अपन परिवार अछि तहिना आनोकेँ छइहे। परिवार केना चलैए से केकरोसँ केकरो छिपल नहियेँ अछि। तहूमे दू सालक रौदी तँ आरो अपना इलाकाकेँ जरा कऽ बदरंग बना देलक अछि। जखन लोकक आमदनी जरत तखन ओकर चेहरो आ विचारो बदरंग हेबे करत।”

मेवालालक विचारमे मुड़ी डोला समर्थन करैत दुखमोचन बिच्चेमे बजला-

“हँ, से तँ अछिए। मुदा बुधि-विवेकक मनुख हारियो केना मानत।”

अपन ढहैत जिनगीक टुटैत क्रमपर विचार करैत मेवालाल बजला-

“जहिना अहाँ सबहक देह अछि तहिना ने हमरो अछि, जे काज लागत से करब।”

तहीकाल सुकदेव बाजल-

“बचनू भाय, काल्हि गाम जाएब तँए हमर रिक्शा खालीए रहत। बुझले हएत जे हमर हथ-रिक्शा[14] छी तँए बेसी सिखैयोक जरूरत नहियेँ अछि।”

बचनू बाजल-

“सुकदेव, रौदीक मराएल-पड़ाएल मेवालाल आ रविनाथ छैथ

[14] माने छाती बले दुनू हाथे पकैड़ चलैबला

तँए गाम जाइते दुनू गोरेक घरपर जा-जा कुशलो-समाचार बुझि लिहऽ आ एक-एक साए रूपैआ सेहो दऽ दिहौन। विदा होइसँ पहिने दू साए रूपैआ हमरासँ लऽ लिहऽ।”

हारल जिनगीक मन्हुआएल मेवालालक मुहसँ निकलल-

“जखन कमाइले आबि गेल छी तखन पैंचो-पालट कऽ कऽ परिवारकेँ चलेबे करब। जहिना बेरपर अहाँ सभ ठाढ़ भेलौं तहिना जिनगी भरि–जाबे एकठाम रहब, हमहूँ निमाहब।”

❍

शब्द संख्या : 4691, तिथि : 30 दिसम्बर 2017

6.

चारि बजे भोरे मेवालालक नीन टुटि गेलैन जइसँ जागि चहा कऽ उठि बैस रहला। चहा कऽ उठैक कारण भेलैन जे सुतलमे भोरक सपना देखलैन जे सभ काज करए चलि गेल आ अपने सुतले छी...।

सपनो तँ सपना छी। जागल सुतल सभमे लोक देखते अछि। जइमे सभकेँ अपन-अपन विचारो अबैए आ अपन-अपन भवितव्यो अबिते छइ। जहिना वैज्ञानिककेँ अविष्कारक, डॉक्टरकेँ अनुसंधानक, साहित्यकारकेँ सृजनशीलताक आ कलाकारकेँ कलाकारिताक विचार मनमे औनाइत सुतलमे आबि जगा मन रखैले कहैए तहिना मेवालालोकेँ भेलैन। मेवालालक सपनाक अपन कारण रहैन। अपन कारण ई रहैन जे जखन रौदियाएल गाम-परिवारसँ निकैल, अपन पैत्रिक सभ सम्पैतकेँ छोड़ि बेचारे अपन मन-धनक आशासँ घरसँ कलकत्ता आएल छैथ किने। ओही आशाक अनुकूल सपना छेलैन।

नीन टुटिते ओछाइनेपर बैस मेवालाल विचारए लगला, यएह छी दुनियाँक खेल! कियो अछैते प्राणे मरैए आ कियो मुइलोमे प्राण घोंसियाबए चाहैए। की हम श्रमचोर छी जे जहल सदृश्य जीवनक भोग भोगब..?

स्वतंत्र-स्वावलम्बी जिनगी बना जीबैबला मेवालाल की आइ हारल जिनगीक गुलामी स्वीकार नइ कऽ रहल अछि। मुदा एक मेबेलाल एहेन छैथ आकि गामक-गाम, देशक-देश एहेन नइ अछि? की एक देश दोसर स्वतंत्र देशकेँ गुलामी दिस नहि धकेल रहल अछि?

की गामो समाजमे एक परिवार दोसरकेँ ओहिना नहि धकेल रहल अछि? की अपनेटा अजादी नीक आ दोसरक अजादी नीक..?

मेवालालकेँ ओछाइनपर बैसल देख बौन भैया सेहो उठि कऽ बैइसैत बजला-

“मेवालाल, अपना सबहक यएह दुनियाँ छी। पैंतीस बर्खसँ बाल्टीनक भारपर डेरे-डेरे पानि पहुँचबैत आबि रहल छी। जेकर चलैत परिवारक ऐगला पीढ़ीकेँ ओते अरैज देलिऐ जे जँ ओ मनुखक जिनगी बना स्वतंत्र जिनगी जीबए चाहत तँ अबस्स जीब सकैए।”

बौन भैयाक बात सुनि मेवालालक मन चकभौर लेलकैन। रंग-बिरंगक विचार मनमे जगलैन, मुदा आनठाम मन नहि अँटैक अपन पैछला जिनगीक कठिन मेहनतपर नचलैन। जइसँ अपन श्रमक बर्खाक बून झहरए लगलैन। जइसँ एकाएक मन सीताए लगलैन। सीताइते बिसवासक पन्ना पोनगलैन। बजला-

“बौन भाय, काज छोड़ि गाम जाइक छुट्टी केना होइए?”

मेवालालक विचारमे बौन भैया अपन विचारक संग अपन मुस्कीक मधुर घोर घोरैत बजला-

“मेबा बौआ, एहेन एक्को दिन नइ होइए जइ दिन एकटा-दूटा आदमी गाम दिससँ नइ अबैए। दू जोड़ सीको-पटै आ बाल्टिनो रखने छी। जे काज करए अबैए ओ तँ एते हिम्मत बान्हियेॱ कऽ ने अबैए जे जे काज भेटत से करब।”

आगू बजैक विचार बौन भैयाकेँ पेटेमे रहैन तइ बिच्चेमे मेवालालक मुहसँ खसलैल-

“हँ, से तँ अबिते हएत! गामकेँ के कहए जे जखन परोपट्टेमे आगि लगि गेल अछि तखन लोक भागि-पड़ा केतौ-ने-केतौ ठौर तँ धरबे करत किने...।”

जिनगीक धारक पजरवाहिमे जखन दोसर जिनगी आबि सटै-मिलैए तखन अहिना ने काजक धार बहैए। बौन भैया बजला-

“मेवा बौआ! अहाँ सभ जवान छी, हम जखन बुढ़ोमे एते तनने छी तखन जिनगीक कोनो परवाह नइ करी। गामसँ आएल ओहन-ओहन समांग सभकेँ अपन समांग बुझि अपने संगे ओइ काजपर लऽ जाइ छी, जैठाम पाँच भार पानि देबा अछि तैठाम तीन भार अपने देलौं आ दू भार ओकरोसँ दिएलौं।”

बौन भैयाक विचार सुनि मेवालालक मुहसँ निकलल-

“वाह! वाह भाय वाह..!”

स्वाभिमानी जिनगीक नीव ठाढ़ करैत बौन भैया बजला-

“ऐसँ अपनो ने लाभ होइए। जखन जीबै-जोकर उपारजन लोक अपने कऽ लेत तखन दोसराक मुँहतक्की किए करत। जहिया गाम जाइ छी, तहिया अपन काज केकरो करैले कहि दइ छिऐ। सात-आठ गोरे हम सभ यएह काज करै छी।”

मेवालाल आ बौन भैयाक गप-सप्पक अवाजसँ धरमशल्लामे सुतल तेसरो-चारिमोक नीन टुटए लगल। नीन टुटिते मनमे लाज उठै जे गामसँ समांग आएल छैथ, ओ बैसल गप-सप्प करै छैथ आ अपने दुखताह जकाँ पड़ल छी..!

एका-एकी केते गोरे उठि कऽ बैस गप-सप्प सुनए लगला। बौन भैयाक काजक विराम देख बचनू बाजल-

“बौन भैया, मेवालाल नव लोक छैथ। तँए नीक हेतैन जे जैठाम दू-चारि गोरेक काज अछि, तइमे करैथ। नव लोक-ले रिक्सा चलाएब नीक नइ हएत।”

बिच्चेमे दुखमोचन बाजल-

“भाय, कलकत्ता छी कि ठट्ठा! रोडपर काज छिड़ियाएल अछि!”

सुबहक छह बजि गेल। सुर्ज सेहो उगि गेला। चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ मनुख धरि अपन-अपन काज दिस बढ़ए लगल।

गामक समाजक अपेक्षा बजारू समाजक बेवहार किछु अगुआएल बेवहार आबिये गेल अछि। गाममे अखनो एक जूम खैनी आकि एकटा बीड़ीसँ आदर-सत्कार होइए। जे एक दिस युगानुकूल हँसैक बात भेल तँ दोसर दिस कम-सँ-कम साधनसँ समाजक सम्बन्ध बना रखबो भेल। खाएर जे भेल से भेल। मुदा गामक वा परिवारक बीच जहिया सोल्होअना मिथिलाक माटि-पानिक गन्ध रग-रगमे समाएल छल, तहिया छल मुदा अखन जे एक्के परिवार वा एक्के गाममे, देशक कोन बात जे दुनियाँ हवा-पानि–खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पहिरब-ओढ़ब इत्यादिक संग भाषा-बोली तकमे–पहुँचिये गेल अछि तैठाम जँ बहुत कठिन नहि तँ थोड़-थाड़ असोकर्ज तँ भइये गेल अछि। हेबो किए ने करत। विचारणीय अछि। आइ कलकत्ताक परिवेश, जेकरा हम सभ गंगा-ब्रह्मपुत्रक बीच एक मैदानी इलाकामे बसल बुझै छी, जहिना अपना सभकेँ उत्तर[15]सँ सैंकड़ो नदी दच्छिन मुहेँ बहैए, जइसँ बंगालो आ बिहारोक उपजा-बाड़ी एकरंगाह अछिए। ओना, अक्षांसक दूरी रहने अपना सभसँ बेसी बरखा कलकत्तामे होइ छइ। मुदा भूगोलसँ हटि जखन भाषा आ संस्कृति दिस बढ़ै छी तखन जरूर देखै छी जे मिथिलाक्षर आ बंगलाक्षरमे जेते समता अछि, तेकर कनौसियो भरि विषमता नहि अछि। दू-चारि अक्षर मात्र अछि। तैठाम की हम बंगला साहित्यक सोझामे अपनाकेँ ठाढ़ राखि सकै छी? भाषाक प्रति जे अनुराग बंगालीमे अछि, की ओ अनुराग मिथिलोक मैथिलीमे अछि? बंगालीक बेवहारिक पक्ष ई अछि जे ओ सभ अपने

[15] नेपालक उत्तरो आ नेपालो पहाड़सँ

राज्य भरि नहि, आनो-आनो राज्य वा आनो-आनो देशमे जखने एक दोसरकेँ बुझि जेता जे बंगलाभाषी छैथ कि लगले ओइ भाषाकेँ छोड़ि अपन भाषामे बाजए लगै छैथ। शिक्षाक अनिवार्य रूपमे अपन भाषा अछि। तैठाम की हमरा सबहक विचारमे एहेन नइ आबि गेल अछि जे अपन परिवारोमे आन भाषा बजैमे खुशी नइ होइए।

बजारू समाजक दैनंदिनक जिनगीमे चाह-पान आबिये गेल अछि तँए अपन-अपन समाजिक सम्बन्ध बनबैत अपना-अपनीकेँ सभ चाह-पान-जलखैक ढेर मेवालालो आ रविनाथोक आगूमे लगा देलक। सभ मिलि सभ किछु सठबैत अपन-अपन कजमुँह भेल।

रविनाथकेँ दूर जाएब छेलै, विदा भऽ गेल। काजक जोग करैत दुखमोचन मेवालालकेँ कहलकैन-

“बौआ! अहाँ जवान छी से हमहूँ देखै छी, मुदा काजक अनाड़ी छी तँए अखन भारी काज दिस नहि बढ़ि, हल्लुक काज पहिने करू।”

ओना, मेवालालक अभियंतरमे भेलैन जे जखन काज करए एलौं, तखन हल्लुक-भारीक विचार की करब। जखन जरैत परिवार-ले पानिक ओरियानमे घर छोड़ि आबि गेल छी, तखन समतल पोखैर की आ पतालमे पानि जोगबैबला कुआँ की। मुदा विचारकेँ मनेमे रखि मेवालाल आगू देखए लगला जे हल्लुक-भारीक विचार दुखमोचनक मनमे जे एलैन, तइ पाछू कारण की अछि।

मेवालालक रंग-रूप देख दुखमोचन बुझि गेला जे हमरा विचारसँ मेवालाल झुझुआ रहला अछि। ओना, अनभुआरकेँ झुझुएबो सोभाविक अछिए...।

अपन विचारक स्पष्टीकरण करैत दुखमोचन बजला-

“मेवा बौआ, ऐठामक किछु गोरे चौका-बरतनक काज माने कोठी-बाड़ीक काज करैए। आ किछु गोरे डेरे-डेरे पानि पहुँचबैए,

किछु गोरे हथरिक्सा चलबैए, किछु गोरे बोरा उघैए। अहाँ-ले जेहने भारी काज भेल कुनिटलिया बोरा उघब तेहने भेल रिक्सा चलाएब।”

ओना, दुखमोचनक विचारसँ मेवालालक मनमे थोड़ेक ठमकाउ एलैन। मुदा कमाइक नाओंपर जेहेन उध चढ़ि गेल छैन तेहने अधि-आएल आँखि उठा दुखमोचन दिस ताकए लगला।

मेवालालकेँ देख दुखमोचन बजला-

“बौआ, अखन अहाँकेँ किछु देखल-सुनल आ जानल-पहचानल नइ अछि तँए रिक्सा केना चलाएब। तहिना कुनिटलिया बोरा उघैक अभ्यास जेकरा नइ छै ओकरा-ले, उठबैक कोन बात जे सम्हारबो कठिन अछि।”

दुखमोचनक विचार सुनि मेवालालक मन फेर ठमकलैन। ठमैकते बजला-

“भैया, ऐठामक तँ जानकार लोक अहीं सब छी, जेना कहब तहिना करब ने नीक हएत।”

मेवालालक सहटल मनक समतल विचार सुनि दुखमोचन सहमैत बजला-

“बौआ, धीरे-धीरे देखैत-सुनैत करैत-धरैत अपने सभ किछु बुझि जाएब। जखन अपने सब किछु बुझए लगब, तखन अपना मने जे नीक बुझि पड़त से करब आ जे नीक नइ बुझि पड़त तेकरा छोड़ि देबइ।”

दुखमोचनक विचार सुनि मेवालालक विचारमे उठलैन जे घर रही कि बाहर आकि दुनियाँक कोनो कोणमे रही, पहिने लोक बइसैक ओरियान करैए तेकर पछाइत सुतैक...।

बिना किछु बजने मेवालाल अपन झोराकेँ जहिना आन-आन

सभ देवालक काँटीमे लटका रखने छल तहिना देवालक काँटीमे लटका काज करैले तैयार भेला। काजोक गड़ भेटलैन। मुनिलालक संग पचीस किलो समानबला बोरीकेँ एक गोदामसँ दोसर गोदाम लऽ जा सरिया कऽ रखैक छल।

दिन भरि काज केला पछाइत साँझमे मेवालालकेँ मजदूरी भेट गेलैन। होटलक खर्च बुझले रहैन। तैसंग मनो गवाही देलकैन जे जखन तक काज नइ लगल छल तखन तक दोसरक आशा उचित रहए, मुदा जखन अपने काज लगि गेल, अपन उपार्जन हुअ लगल तखन अपन कमाएलपर ने जीवन ठाढ़ करब नीक।

ओना, डेरापर माने धरमशल्लामे आन-आन सभ कियो आग्रह करबे केलकैन जे रौतुका भोजन हमरा दिससँ रहत। मुदा सबहक आग्रहकेँ मनाही करैत मेवालाल बजला-

“अहीं सभ जेकाँ हमहूँ जखन कमाए लगलौं तखन अहाँ सबहक खाएब उचित हएत? अहूँ सबकेँ परिवार अछि, बाल-बच्चा अछि...।”

रौतुका खेनाइसँ पहिने आने दिन जकाँ धरमशल्लामे ढोलको-झालि बजए लगल आ ताशक संग गाम-घरसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक गप-सप्प सेहो चलए लगल। एक घर[16] आ एकरंगाह जिनगी[17] रहितो अनेको समाजमे विभाजित अछिए। कियो ताशक जुआमे अपन कमेलहो गमा रहल अछि तँ कियो मेहनतक कमाइक संग जुओसँ कमा रहल अछि। तही बीच किछु गोरे एहनो तँ छथिये जे साज-बाजक संग भगवत-भजन सेहो कइये रहला अछि। दुनियाँमे दिन-दिनक घटना सेहो घटिये रहल अछि। तहूमे छोट घटनासँ लऽ कऽ पैघ

[16] धरमशल्ला
[17] श्रमिक वर्ग

धरि घटिते अछि। रंग-रंग देखनिहारो-सुननिहार अछिए। लोक अपना मुँहमे ताला थोड़े लगा लेत आकि काने केना मुइन लेत। सेहो तँ चलिते रहत। यएह ने भेल दुनियाँक तमाशा जइमे सभ केनिहारो छी आ देखनिहारो।

अपनाकेँ सभसँ भिन्न बुझि मेवालाल जाजीम बिछा बाँहिक सिरमा बना अपन दुनियाँ देखए लगला। ओना, आन-आन सभ ई बुझैत जे भरि दिनक खटनीमे मेवालाल थाकि गेल अछि। थकबो केना ने करत, हम सभ अभ्यस्त[18] छी तँए बिना किछु टीका टिप्पणी केने सभ अपन-अपन धुनिमे धुनकी चलबै पाछू लगल छी मुदा...।

मने-मन मेवालाल औझुका उपार्जनक हिसाब जोड़ए लगला। एक साए बोरा एक-गोदामसँ दोसर गोदाममे उघि-उघि रखलौं। तइमे जे मजदूरी भेल ओ गामक तीन दिनक बोइन भेल। माने एक आदमीक तीन दिनक कमाइ वा तीन आदमीक एक दिनक कमाइ भेल। ऐमे सँ जँ एकबर माने एक बट्टे तीनमे अपन जिनगी चलाबी आ दू तिहाइ जँ परिवारमे दिऐ, तखन एक रौदी कि साइयो रौदी हँसैत-खेलैत काटि लेब...।

एकाएक मेवालालक अपन बाँहिक शक्तिमे जेना गामसँ आरो बेसी बढ़ोत्तरी एलैन।

गाम आ शहर खाली दू शब्द नइ छी। जे गामक माने अभाव ग्रस्त ग्रामीण क्षेत्रक एक अंग भेल, आ बजारक माने पक्की सड़क आ ईंटाक घर भेल। तहूमे कलकत्ता शहरे नहि, देशक महानगर सेहो छी, शहरोमे अगुआएल शहर...।

अपना सबहक गाम, जेकरा मिथिलाक गाम सेहो कहै छिऐ, तेकर भोगौलिक बनाबट की अछि? गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदानी भागे ने

[18] अनुभवी

छी। जे समुद्रसँ दूर अछि, मुदा पहाड़ तँ सटले अछि। जहिना उत्तरी सिमानपर माने नागालेण्ड-अरूणाचल प्रदेशक पूर्वी इलाकासँ लऽ कऽ कश्मीरक पच्छिमी इलाका तक, पहाड़ घेरने अछि। जेकर लम्बाइ तीन हजार किलोमीटरसँ बेसीए हएत। तहिना छोट-पैघ पहाड़ मिलि जे घोदा-माली बैसल अछि तेकर चौड़ाइयो दू साए-सँ अढ़ाइ साए किलोमीटर सेहो अछिए। ऊँच-ऊँच पहाड़, जइमे बर्फक सृजन सेहो होइते अछि, तैसंग एते बिराट क्षेत्रमे जे मेघसँ बरखो होइए, ओहो जमि कऽ एकत्रित भऽ निच्चेँ मुहेँ ससरैए। तँए छोट-पैघ साइयो नदी उत्तरो-मुहेँ आ दच्छिनो मुहेँ बहिते अछि। पहाड़क बीच जे खाली जगह सभ अछि, ओइ होइत निकलैए। तहिना केतौ-केतौ जे चारू भागसँ घेराएल अछि, ओइ बीचमे जे क्षेत्र छै, ओ झील बनि गेल अछि। अपना सबहक–माने मिथिलावासी कहियौ आकि बिहारवासीक–जे गाम-घर अछि, ओ अनेको किस्मक समतल माटिक छी। जैबीच होइत अनेको छोट-पैघ नदी उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ बहि रहल अछि। ओना, गंगा नदी सेहो ओही–उतरवरिया पहाड़सँ निकलल अछि, मुदा ओ उतरांचलमे पहाड़सँ उतैर समतल भूमि होइत उत्तरप्रदेश पार करैत, दच्छिन मुहसँ पूबक रूखि पकैड़ बिहारमे पूबे-पच्छिमे भऽ गेल अछि, तँए ओइ बीचक क्षेत्रक जे कोनो धार-धुर अछि ओ एक-दोसरमे मिलैत, गंगामे मिलि समा जाइए, जे बिहार टपैत, बंगालमे प्रवेश करैत सागरमे मिलैए।

बंगालक खाड़ीमे जे मौनसून बनैए ओ खाड़ीसँ उठि उत्तरो आ पच्छिमो, हवाक रूखिक अनुकूल बढ़ैए जइसँ बरखा होइए। ओना, अपना सभसँ बेसी बरखा पूर्बी इलाकामे होइ छै, किएक तँ खाड़ीसँ उठल हवाकेँ पहाड़ो आ पहाड़ी क्षेत्रक जंगलो-झाड़ रोकैए। वएह मौनसून पच्छिम मुहेँ अबैत अपना सभ दिस बरिसैए। जेना-जेना पूबसँ पच्छिम मुहेँ होइए तेना-तेना बरखा पतराइत जाइए आ उत्तर

प्रदेशक पच्छिमी भाग जाइत-जाइत आरो पतरा जाइए।

एक तँ बरखा, दोसर पहाड़ी नदीक बाढ़िक एते जबरदस प्रकोप अछि, जे गामक-गाम कटि कऽ धारो बनैए आ बाढ़िक प्रकोपसँ क्षति-ग्रस्त सेहो होइए। मिथिलांचलक किसानी जिनगी बाढ़ि-रौदीसँ साले-साल प्रभवित होइते अछि। जइसँ गामक स्थिति आगू मुहेँ नहि बढ़ि पाछुए मुहेँ ससैर रहल अछि। जइसँ सभ किछु–माने मनुखसँ माल-मवेशीक संग खेती-पथारी तक–दूभर बनियेँ गेल अछि। तँए लोकक पड़ाइन भऽ रहल अछि। जइसँ सभ तरहेँ गाम निच्चाँ मुहेँ ससैर रहल अछि। माने मिथिलाक मानवीय सम्पदासँ लऽ कऽ प्राकृतिक सम्पदा धरि हहैर रहल अछि। ओना, पहिनेसँ सोल्होअना निच्चेँ मुहेँ भेल जाइ छी सेहो बात नहियेँ अछि, किछु आगूओ मुहेँ तँ ससरबे केलौं हेन। मुदा देशकेँ स्वतंत्र भेला पछातियो जे ‘स्वतंत्र देशक’ जन-गणकेँ हेबा चाही, स्वतंत्र देशक जे प्रगति हेबा चाही से नइ भेल। तीन पीढ़ी बीत गेल, मुदा हम केतए ठाढ़ छी से तँ अपनेसँ ने देखब।

कलकत्ता सन महानगरक बीच मेवालाल ओछाइनपर पड़ल-पड़ल अपन जिनगीक विचार करए लगला। मनमे उठलैन गामक एकचलिया जीवन। जैठाम लोक मात्र खेती आश्रित छैथ, जैठाम बाढ़ि-रौदीक भारी प्रकोप छै, दोसर कोनो उपार्जनक साधन नहि, तैठाम कलकत्ता सन महानगरमे लाखो रंगक उपार्जनक साधन तँ बनियेँ गेल अछि। बाढ़िसँ मास-मास दिन घेराएल वा रौदीसँ छह-छह मास, साल-साल भरिक संग अनेको साल धरि लोक प्रभावित होइ छैथ, तैठामक जीवन आ दिनानुदिनक क्रिया-कलापमे अन्तर आबिये जाइए...।

मेवालालक मनमे सेहो बिसवास जगलैन जे सभ दिन उपार्जनक उपाय भऽ जाएत तखन जिनगी बिताएब असान भऽ

जाएत। तँए, आब आगूओ दिन कलकत्तेमे रहब। जखन देखब जे गामक परिवारो सोल्होअना अही ठामक भरोसे जीब रहल अछि तखन परिवारोकेँ एतै लऽ आनब। दुनियाँमे केतौ कोनो कोणमे किए ने रही मुदा जिनगी चलैक जे धारा अछि ओ तँ ओही गतिये ने चलत।

नअ बाजि गेल। गप-सप्पक क्रम सेहो टुटल, कीर्तनो-भजन उसरल आ ताशो बिसरजित भेल। सभ अपना-अपनी उठि-उठि कऽ खेनाइ खाइ-ले विदा भेल। मेवालालो ओछाइनकेँ पसरले छोड़ि बौन भैयाक संग विदा भेला। धरमशल्लासँ निकैल सड़कपर अबिते मेवालाल बौन भैयाकेँ पुछलकैन-

“बौन भैया, जहिना उजरल-उपटल गाम आगू मुहेँ बढ़ि बजार वा शहर बनैए, जइसँ मनुखक जिनगीमे अनेको गुणा उछाल अबैए, तहिना ने अपनो सबहक गाम भऽ सकैए।”

बौन भैया बजला-

“अपने सभ गाम जकाँ ने पहिने कलकत्तो छल।”

❍

शब्द संख्या : 2240, तिथि : 15 फरवरी 2018

7.

कलकत्ता एला मेवालालकेँ आइ चारिम सालक पहिल दिन छी, हथरिक्सा चलबैकाल एवरेडी कम्पनीक मैनेजरसँ भेँट भेलैन। भेँट की भेलैन तँ मेवालाल एकटा पसिंजरकेँ डेरा पहुँचा घुमि रहल छला कि मैनेजर अपन डेरासँ निकैल धरमशल्ले विदा भेल रहैथ, जे खाली रिक्सा देख मेवालालकेँ रोकि ओइपर चढ़ला। किछु दूर आगू बढ़लापर मैनेजर मने-मन ई आँकि नेने छला जे चिमनी[19]मे एहने हड़गर-कठगर आदमी बेसी दिन टिक सकैए। मैनेजर मेवालालकेँ पुछलैन-

“केते काल रिक्सा चलबै छी?”

मेवालाल-

“तेकर कोनो ठीक अछि। गोटे दिन चारि बजे भोरोमे पसिंजर भेट जाइए आ कोनो दिन दस-एगारह बजे रातियोमे।”

मेवालालक विचारमे अपन विचार सोन्हियबैत मैनेजर बजला-

“जँ नियमित काज भेट जाए तँ करब?”

मेवालाल-

“जँ ऐ काजक अनुकूल वेतन भेटत तँ किए ने करब। जखन देह धुनि कमाइ-ले तैयारे छी, माने कबीरदास जकाँ धुनियाँ बनि धुनकी धुनैले तैयारे छी, तखन किए ने करब।”

[19] कारखाना भट्ठी

ओना, बहुराष्ट्रीय कम्पनीक कारोबार छी एवरेडी बैट्री, तँए कर्मचारीकेँ रहैक बेवस्था अपना कैम्पसमे मकान बना नेने अछि। तैसंग अपना कैम्पसेमे छोट-छीन बजार सेहो लगौने अछि। दोकान रहितो जिनगीक आवश्यकताक पूर्ति-जोकर बजार। बिजली, सड़क, पानिक नीक बेवस्था सेहो केने अछिए। कर्मचारीकेँ आन-आन कम्पनी सभसँ दरमहो बेसी दइते अछि...।

मैनेजर बजला-

“जेते अहाँ बारह-चौदह घन्टा खटने कमाइ छी तेकर दोबर अहाँकेँ आठे घन्टाक ड्युटीमे देब।”

काज तँ बिनु देखल छेलैन, मुदा एके सूरे अपन मनकेँ मेवालाल मना नेने छला जे जखन कमाइले एलौं तखन पाथरे तोड़ैक काज किए ने भेटए, मुदा जँ बेसी पाइ भेटत तँ ओहो करैले तैयार छी।

काजकेँ सूहकारैत मेवालाल बजला-

“हँ, करब!”

मेवालालक मुहसँ ‘हँ’ सुनि मैनेजरकेँ अपन गोटी चालैक नीक परिणाम बुझि पड़लैन। बजला-

“खाली दरमहेक बात नइ ने अछि, केते रंगक आरो सुविधा सभ भेटत। तइमे सभसँ पैघ अछि जे अहाँ जखन सेवा मुक्त हएब तखनो पेंशन भेटत आ तइसँ पहिनौं जँ बेटा काज करै-जोकर हएत तँ ओकरो काज देल जाएत।”

अपन भूत-भविस देखैत मेवालाल बजला-

“कहियासँ काज देब?”

जीतल पाशा देख मैनेजर बजला-

“जँ अहाँ आइये संगे चलब ते काल्हियेसँ काज भऽ जाएत। रहै-तहैक बेवस्था सेहो अछिए।”

मेवालालक मनमे उठलैन जे अखुनका जुगमे नोकरी सोनाक चिड़िया बनि गेल अछि, तँए हाथसँ पकड़ल चिड़ैकेँ जँ छोड़ि उड़ा देब, ई सोलहन्नी बेकूफी हएत..!

बजला-

“हम ते थोड़बे दिनसँ कलकत्तामे रहै छी तँए सब कुछ देखलो-सुनल नहियेँ अछि। आ ने...।”

मेवालालक अन्तिम बात पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे मैनेजर बजला-

“हराइ-भोथियाइक जँ डर होइए ते संगे चलू। अपन जे समान सभ अछि ओ लऽ लिअ।”

मेवालाल-

“अहाँकेँ केते समय अपना काजमे लागत?”

मैनेजर-

“बस, पनरह-सँ-बीस मिनटक काज अछि। संगे दुनू गोरे चलू, हमहूँ अपन काज सम्हारैत अहाँक डेरापर पहुँचब। अहूँ अपन रिक्साकेँ भाड़ाक संग आपस दऽ देबै आ अपन जे समान अछि से सभ लऽ लेब आ दोसर रिक्सा पकैड़ विदा हएब।”

मैनेजरक विचार मेवालालकेँ जँचलैन। तँए, मैनेजरक विचारमे अपन विचार जोड़ैत मेवालाल बजला-

“बड़बढ़ियाँ..!”

दिनक दू बजेक समय छल, तँए मेवालालकेँ जे चिन्हरबा लोक रहैन, ओ सभ डेरासँ बाहर काज करए गेल छला। खाली दोकानदार सभ अपन-अपन दोकानपर छला।

झोरामे अपन सभ समान लऽ मेवालाल चाहक दोकानदारकेँ

कहि देलखिन जे हम दोसर ठाँ काज करए जा रहल छी, जँ कियो खोज करैथ तँ कहि देबैन।

मैनेजरक संग मेवालाल कारखानाक कोलनीमे पहुँचल। एकटा कोठरी रहैक देखा मैनेजर कहलकैन-

“काल्हि आठ बजेसँ काजमे आबि जाएब।”

कौल्हुका आठ बजेक समय कहि मैनेजर चलि गेला।

पँच-मंजिला मकानक तेसर मंजिलमे मेवालालकेँ डेरा भेटलैन। सभ सुविधा, माने पानि-बिजलीसँ सजल कोठरी। ओना, आन-आन कोठरीमे सेहो लोक सभ छल मुदा मेवालालक कियो परिचित नहि, तँए भेँट-घाँटक कोनो बाते नहि। अपन कोठरीमे झोरा रखि पहिने नहेबाक विचार केलैन। नहा कऽ कोठरीसँ निकैल एकटा दोकानसँ जलखै कीनि आनि कोठरीमे बैस खेलैन। खेला पछाइत चौकीक ओछाइनपर पड़ि रहला। पड़िते अपन चारि सालक बीतल जिनगीपर नजैर गेलैन।

गामक परोपट्टामे जे रौदी छल ओ पैछले साल समाप्त भऽ गेल। ओना, चारि सालक बीच मेवालाल चारि बेर मास-मास दिन-ले गामो आएल छला। तैबीच एकटा बेटी सेहो भेलैन। अपन अतीतक जे स्वावलम्बी जीवन छेलैन, माने मेवालालक अपन पनरहो कट्ठाक जे खेती-बाड़ी छेलैन, ओइ-ले मेहनतो आ पूजीयोक जरूरत छेलैन्हे। तहूमे खेती-ले सभसँ पहिने पानिक बेवस्था करब आरो जरूरी छेलैन्हे, किएक तँ जहिना बोरिंग मरने भऽ गेल छैन तहिना राखल-राखल दमकलो भइये गेल छैन। तैसंग लोनपर लेल बोरिंग-दमकलक सूद्द सहित मूर सेहो दोबरोसँ बेसी भऽ गेल छैन।

मेवालालक मनमे उठलैन- खेती-ले पानिक बेवस्थाक संग बैंकक लोन चुकाएब जरूरी अछि। जँ से नइ चुकाएब तँ जेहो खेत

अछि सेहो नीलाम भऽ जाएत। अखन धरि जे कमेलौं तइसँ कहुना परिवारकेँ जीवित रखलौं। रौदी भेने गामक खेतोक मूल्य टुटि गेल। जे खेत तीस हजार रूपैये कट्ठा छल ओ दस-बारह हजारपर चलि आएल। तहूमे बेचबाल बेसी, लेबाल कम। किए तँ नोकरी-चाकरी करैबला बहरबैया कमा-खटा बाहरेमे घर बना जखन गामकेँ छोड़ि देलक तखन गामक खेतसँ ओकरा कोन मतलब। किछु ओहन लोक अछि जे सीजिनल काज करैबला अछि, जेना- धनरोपी, धनकटनी करैले माने खाली सिजन भरिक काज करैले पंजाब चलि जाइए आ बाँकी समय गामेमे रहैए, जँ ओकरा बाड़ी-घराड़ी नइ छै, ते ओ सभ जे घराड़ी कीनैए, ओ थोड़ेक महग जरूर भेल अछि। बाँकी जे बाधक जमीन अछि, ओकर दाम अदहोसँ निच्चाँ आबि गेल अछि। एक तँ रूपैआक भेल्यू कमि गेल तैपर सँ खेतक दरो कमि गेने गाम-घरक पूजी जेतबो छल तेकर तिहाइ-चौथाइ निच्चाँ उतैर गेल।

ओना, कलकत्तामे चारि सालक बीच मेवालाल अनेको रंगक काजक अभ्यस्त भइये गेल छला। माने ई जे समय-समयपर रिक्सो चलबै छला, बोरो उघै छला आ डेरे-डेरे पानियोँ भरै छला इत्यादि-इत्यादि जे काज गौंआँ-घरूआ करै छेलैन से सभ काज मेवालाल करै छला। महानगर कलकत्ता छीहे, तँए सभ कोटिक काजोक भरमार अछिए। ओना, देशक जे आन-आन महानगर अछि ओइ अनुपातमे कलकत्ता गरीब-मजदूरक लेल नीक अछिए। तेकर कारण ईहो जे खाइ-पीबैक समानक सस्ती छइ। जेतेक कम खर्चमे लोक कलकत्तामे जीवन-बसर कऽ सकैए ओतेक कम खर्चमे आन महानगरमे गुंजाइश करब असम्भव...।

जाधैर मेवालाल गाममे रहै छला ताधैर एक प्रतिष्ठित सीमान्त

किसानक रूपमे छला। विकसित नजैर[20] रहने, तहूमे अपन खेतीक एक साधन बनौने, ओहन किसानक रूपमे अपन जीवन-यापन करै छला जइसँ परिवारक सभकेँ समुचित काजो छेलैन आ समुचित उपार्जन सेहो होइत रहैन। जइसँ समुचित जिनगी सेहो चलै छेलैन। माइयो आ पत्नियोँ घर-अँगनाक काज सम्हारि खुट्टापर जे दूटा दुधारू गाए छेलैन तेकर निमरजना कऽ लइ छेली। जेकर दूधक संग ओतेक गोबरो भऽ जाइ छेलैन जइसँ खेतो उर्वर बनल रहै छेलैन आ जरनाक अभाव सेहो कहियो नइ होइ छेलैन। गाममे एहेन किसान मेवेलालटा नहि, आनो-आन केतेको छल। मुदा रौदी भेने जहिना मेवालालक परिवार ढहलैन तहिना आनो-आन केतेको परिवार ढहबे कएल।

❍

शब्द संख्या : 1026, तिथि : 18 फरवरी 2018

[20] वैज्ञानिक दृष्टि

8.

एक रफ्तारमे आइ मेवालाल पचीस बर्खसँ एवरेडी बैट्रीक कारखानामे नोकरी करैत आबि रहल छैथ। बहुराष्ट्रीय कम्पनी रहने दरमहो नीक छैन्हे। तीन सालपर महगाइ-भत्ताक रूपमे आरो बढ़िते गेलैन। दू साल आरो नोकरी छैन।

पचीस सालक नोकरीक बीच मेवालाल परिवारिक बहुतो काज केलैन। बोरिंग-दमकलक जे लोन रहैन सेहो सठा लेलैन। दमकल बेच, खेत बँटाइ लगा लेला। बेटीक बिआह सेहो कऽ लेलैन। बेटी सासुर बसए लगलैन। जेकरा दूटा सन्तानो अछि।

मेवालालकेँ बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे नोकरी भेला उत्तर पाँच सालक पछाइत माइयो मरि गेलखिन। जइमे नीक किरियो-करम केलैन आ भोजो बढ़ियाँ। तहिना बेटीक बिआह सेहो खूब धुमधामसँ केने छला। माएकेँ मरि गेने आ बेटीक बिआह भेने मेवालालक पत्नी असगरे गाममे रहि गेलखिन। अपने मेवालाल कलकत्तामे आ पत्नी असगरे गाममे रहए लगलैन।

बेटी बिआहक तीन सालक पछाइत दुनू परानीमे विचार केला जे एक तँ परिवारमे दुइये गोरे छी, तहूमे दुनू गोरे दू ठाम, एक गोरे गाममे आ दोसर गोरे कलकत्तामे। तइसँ नीक जे दुनू गोरे किए ने एकेठाम रही...। सएह केलैन। पत्नियोँकेँ मेवालाल कलकते लऽ एला। एकटा बेटीक पछाइत दोसर कोनो सन्तान नइ भेलैन। ओना, आशा-आशीमे दुनू परानीक उमेर पचास बर्खसँ ऊपर चढ़िये गेलैन। तथाइप

डॉक्टरसँ लऽ कऽ ओझा-गुनी तकसँ बहुतो बेर देखौलौन मुदा अन्तो-अन्त दोसर सन्तान नहियेँ भेलैन।

ओना, गाममे चारि कोठरीक पक्का मकान सेहो मेवालाल बना नेने छला, मुदा पत्नीकेँ संग रखने मकानमे ताला लगबए पड़लैन। सालमे एकबेर दुनू परानी गाम अबै छला आ मास दिन तक रहै छला। तही बीच बेटियो-नातिकेँ अपना ऐठाम लऽ अबै छला आ कलकत्ता जाइसँ दू-तीन दिन पहिने, सासुर पठा दइ छेलखिन। माने बेटी सासुर चलि जाइ छेलैन। ओना, अखनो धरि दुनू परानीक मनमे गामक प्रति सिनेह छैन्हे जइसँ ने कलकत्तामे आन नोकरिहारा जकाँ घरे बनौलैन आ ने रहैक विचारे केलैन। नीक दरमाहा रहने मेवालाल गाममे दू बीघा खेतो अरजलैन।

बीस साल नोकरी बीतला पछाइत मेवालालकेँ चिमनी-आगिक गरमी आ धुआँसँ सम्बन्धित रंग-रंगक बेमारी सेहो उपकए लगलैन। ओना, कम्पनीक भीतर अपन डॉक्टर अछि, जइसँ कनियोँ किछु भेने कर्मचारीकेँ इलाज भइये जाइए। इलाज की होइए जे तत्खनात् रोगकेँ दबा देल जाइए। आन-आन बेमारी तँ मेबालालकेँ दबल रहलैन मुदा कानक बिमारी नइ दबलैन। जइसँ सुनैमे कमी आबि गेल छेलैन। माने जेना पहिने सुनै छला तइसँ कम आब सुनै छैथ। ओना, जे काज करैत आबि रहल छैथ ओइमे कानक कम सुनबसँ कोनो खास बाधा नहियेँ पहुँचैए।

एक दिस नीक दरमाहा, दोसर दिस छोट परिवार रहने खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कपड़ो-लत्ता आ भोगो-विलासक वस्तु-जातसँ मेवालालक डेरो भरिये गेल छैन। जाबे तक असगरे मेवालाल रहै छला ताबे तक सिंगिल बेडक छोट डेरा छेलैन मुदा जखन परिवार संगमे रहए लगलैन तखन डेरो नमहर भेटलैन। माने दूटा रहैक कोठरीक संग

कीचेन-बाथ सभ भेटलैन।

एवरेडी बैट्री कम्पनीक एरियाक बगलेमे बंगालीक महल्ला अछि। सुनीलपाल, जे ओही महल्लामे रहै छैथ, जिनका अपन दू-मंजिला मकानो छैन आ ओही कम्पनीमे नोकरी सेहो करै छैथ। ऑफिसमे कलर्क छैथ। सुनीलपालसँ मेवालालकेँ दोस्ती भऽ गेल छेलैन। जहिना सुनीलपाल मेवालालक डेरापर अबै-जाइ छला तहिना मेवालाल सेहो सुनीलपालक ऐठाम जाइ-अबै छला। ओना, सुनीलपाल नीक पढ़ल-लिखल छैथ, माने ग्रेजुएट छैथ, मुदा मेवालाल साधारण पढ़ल-लिखल, तथाइप एक कम्पनीमे कार्यरत रहने दुनूक बीच दोस्ती भेलैन।

सुनीलपालकेँ दूटा बेटा, दुनू इंजीनियरिंग पढ़ि अमेरिकामे नोकरी करैत अछि आ सुनीलपाल अपने दुनू परानी कलकत्तामे रहै छैथ। एक दिन दुनू परानी–सुनीलपाल बजार गेला, रस्तेमे पत्नीकेँ ट्रकक ठोकर लगि गेलैन, जइसँ ओहीठाम हुनकर मृत्यु भऽ गेलैन। ओना, उमेर पचास बर्खसँ ऊपर भइये गेल छेलैन। पत्नीकेँ मुइला पछाइत सुनीलपाल असगरे रहि गेला।

ओना, सुनीलोपालकेँ आ मेवोलालक आबा-जाही, एक-दोसरक ऐठाम दोस्ती भेला पछातियेसँ शुरू भेल छल। अपना ऐठामक रीति-रेबाजमे माने मिथिलांचलमे जहिना खाइयो-पीबैक चलैन अछि आ पाबैनो-तिहार मनबैक चलैन अछि तहिना बंगालोमे अछिए। मुदा संख्यामे जेते अपना ऐठाम अछि, ओतेक बंगालमे नहि। एकर माने ई नइ जे बंगालमे नहि अछि। अपने ऐठाम जकाँ सभ-पाबनिक विधो-बेवहार आ खेबो-पीबोक चलैनमे किछु-ने-किछु अन्तर अछिए। जहिना पाबैन-तिहार सभ मौसमक अनुकूल अछि तहिना खेबो-पीबोक चलैन सेहो ओही अनुकूल अछि। अपना

ऐठामक जलवायु आ बंगालक जलवायुमे अन्तर नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। किछु-ने-किछु अन्तर अछिए जइसँ खेबो-पीबो आ खेतियो-बाड़ीमे अन्तर अछिए। उपजा-बाड़ी मौसमक अनुकूल होइए। माने जैठाम बरखा-बाढ़ि बेसी अछि तैठाम खेतमे पानिक जमाव रहने पनिसहु फसिल बेसी होइए आ जैठाम कम बरखा होइए तैठाम रौदसहु फसिल बेसी होइए। ओना, कम पानिक वा बिनु पानिक उपजा-बाड़ी होइते अछि।

अपना ऐठामक रीति-रेबाजमे बेसी पाबैन आ बेसी रंगक खेनाइयो-पीनाइक चलैन रहने मेवालालक ऐठाम बेसी पाबैन-तिहार मनौल जाइत। जाबे मेवालाल असगरे रहै छला ताबे विधिवत पाबैन कम-सँ-कम मनबै छला आ जखन परिवार रहए लगलैन तखन वृहत् रूपमे मनबए लगला।

मेवालालकेँ सुनीलपालसँ दोस्ती रहने एते तँ लाभ छेलैन्हे जे ऑफिसक काजमे कहियो कोनो बाधा उपस्थित नइ होइ छेलैन। प्राइवेट कम्पनीमे सरकारी काज जकाँ बेसी उलझनो नहियेँ होइए। एक दिस जहिना सरकारी काजमे अपनासँ ऊपर जेते रहला सबहक आदेशक पालन करए पड़ैए, से बात प्राइवेट कम्पनीमे नहियेँ अछि। नियमित काज आ नियमित वेतनक भूगतान, जइसँ बीचमे ओझरियो नहियेँ जकाँ रहैए। मनुखक एहेन सोभावो तँ अछिए जे असगरे नइ रहए चाहैए। समाजक बीच, समूहक बीच रहए चाहैए।

पाबैन-तिहार मनबै पाछू आर्थिक कारण सेहो काज करिते अछि। जेकरा कम आमदनी रहल, जइसँ दैनंदिनक आवश्यकताक पूर्ति नइ होइक कारणे ओ बहुत पाबैन छोड़ियो दइए। आ जेकरा आर्थिक सम्पन्नता रहल ओ पाबैनकेँ वृहत् रूपमे करिते अछि। आर्थिक सम्पन्नता रहितो मेवालाल करताइतक दुआरे, जाधैर असरगे

रहै छला ताधैर पाबनिक वृहत् रूप नहियेँ छेलैन। मुदा गाम आ शहरक दूरीमे ई अन्तर तँ भइये जाइए। जीवन-शैली बदलने किछु पाबैन अबेवहारिक सेहो भइये जाइए, जे स्वत: छुटैत जाइए।

जहियासँ मेवालाल पत्नीकेँ कलकत्तामे रखए लगला तहियासँ पाबैनमे बढ़ोत्तरी भेलैन। बढ़ोत्तरीक कारण दुनू भेलैन। पहिल गाम-घरक रहनिहारि पत्नीकेँ सभ पाबनिक अनुभव छेलैन, दोसर पत्नी रहने करताइत सेहो बढ़ि गेलैन जइसँ पाबनियोँ बढ़ब सोभाविके अछि। तइमे दुनू परानी ‘आगू नाथ ने पाछू पगहा’ सेहो देखैथ तइसँ खाइयो-पीबैक आ आनो-आन खर्चमे कंजूसी नहियेँ रहैन।

मेवालाल आ सुनीलपालक बीचक सम्बन्ध दिनो-दिन बढ़िते गेल। मेवालालक पत्नी– राधा, जहियासँ कलकत्तामे रहए लगली तहियासँ सुनीलपालक पत्नी– अंतिकापाल,क आबा-जाही सेहो बढ़ि गेलैन। सम्बन्ध बढ़ैक कारणमे दूटा प्रमुख बिन्दु छल। पहिल दुनू छुट्टा छेली, माने घरक भानस-भात छोड़ि दोसर कोनो काज नहि। आ दोसर, मौका-मुसीबतमे एक-दोसरक बीच पाइक लेन-देन सेहो छेलैन। ओना, पाइक लेन-देन मोटा-मोटी एक भग्गुए छल। एकभग्गु ई जे सुनीलपाल परिवारक बीच छला, जइसँ साइयो रंगक खर्च छैलैन जखन कि मेवालाल असगरे छला तँए खर्चो कम छेलैन, जइसँ समटल आमदनीमे समटल खर्च रहने असानीसँ समय कटि जाइ छेलैन। मासे-मास जे मेवालाल गाम रूपैआ पठबैथ ओ दरमाहा उठला पछाइत। प्राइवेट कम्पनी, तँए सरकारी नोकरी जकाँ छह-छह मास आकि साल-साल भरि दरमाहा रूकैबला झमेलो नहियेँ छेलैन। मासे-मास मासक अन्तिम तारीखक प्राते दरमाहा भेट जाइ छेलैन।

राधा आ अंतिकापालक बीच दिनो-दिन सम्बन्ध बढ़ैत गेल। सम्बन्ध बढ़ैक कारण भेल जे जहिना राधा छुट्टा छेली तहिना

अंतिकापाल सेहो छुट्टे छेली। माने ई जे जहिना मेवालाल आठ घन्टा ड्यूटीक नोकरी करै छला तहिना सुनीलपाल सेहो करै छला। भानस-भात छोड़ि ने अंतिकापालकेँ कोनो काज छैलैन आ ने राधाकेँ। ओना, हाट-बजारक काज अंतिकापाल अपने करै छेली जे राधा नइ करै छेली। तेकर कारण छल जे अंतिकापाल पढ़ल-लिखल छेली मुदा राधा से नइ छेली। ओना, उमेरक हिसाबसँ दुनू पचास बर्खसँ ऊपर टपि चुकल छेली, मुदा वौद्धिक रूपमे राधासँ अगुआएल अंतिकापाल छेली।

जखन अंतिकोपाल आ राधो एकठाम होइ छेली, तखन अंतिकापाल अपन दब-दबा सदैत बनौने रहै छेली तँए किताबक संग समाचार-पत्र सबहक जानकारी पढ़ि कऽ अरैज लइ छेली, जे राधाकेँ नहि छेलैन। दोसर कारण दुनूक बीच ईहो छल जे अंतिकापाल बंगालक माटि-पानि परहक उपज छेली जखन कि राधा से नइ छेली। होइतो अहिना छै जेना अपन माटि-पानिपर कुकुड़ो बताह होइए। तैसंग दुनूक बीच ईहो होइ छेलैन जे जखन दुनू घुमै-फिरैले बजार जाइ छेली तखन राधा बौक बनल रहै छेली, किएक तँ ओइठामक बोली-वाणी नइ बुझै छली, जइसँ दोकानो-दौरी आ सड़कपर गाड़ियो-सवारीमे जहिना बजै-भुकैमे बाधा होइ छेलैन तहिना बुझैयो-सुझैमे होइते छेलैन।

ओना, कारखाना चौबीसो घन्टा चलैए जइसँ तीन पालीमे श्रमिक-कर्मचारी काज करै छैथ, मुदा मेवोवालकेँ आ सुनीलोपालक पाली दिनके छेलैन तँए दुनूक एक समयमे ड्यूटी रहने दुनू गोरेक एक्के समय डेरासँ बाहर रहै छला तँए अंतिकापाल आ राधाकेँ डेरोमे गप-सप्प करैक आ बजारो घुमैक एक समय भेट जाइ छेलैन। सिनेमा, सर्कससँ लऽ कऽ बजार घुमब धरि दुनूक सबदिना छेलैन्हे। तँए, अपनो सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबैत गेलैन आ आनो-आन बेकती दुनूकेँ

सखी-सहेली बुझए लगलैन।

कलकत्ता गेला पछाइत राधामे एकाएक तेजीसँ उभार एलैन, जइसँ आइ-धरिक जिनगीक बीच जे विचार दबल-झँपाएल छेलैन ओइमे तेजीसँ दिनो-दिन बढ़ोत्तरी होइत गेलैन। ओना, समुचित वातावरण बच्चेसँ भेटैत रहलासँ आ नइ भेटलासँ दुनूक जिनगीमे दूरी बनियेँ जाइए। जइसँ अधिक उम्र भेला पछातियो सक्कत आ खिच्चा विचारक बीच जीवन चलिते अछि...। यएह राधो आ अंतिकोपालक बीच छेलैन। पछुआएल गाम-घरक राधा वौद्धिक रूपमे अंतिकापालसँ बहुत पाछू चलै छेली।

जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना राधाकेँ विचारसँ लऽ कऽ शारीरिक उभारमे सेहो जागरण भेल। विचार जगने माने विचारमे उभार एने, राधाक आकर्षण दिनो-दिन अंतिकोपाल आ सुनीलोपाल दिस बढ़ए लगलैन। आकर्षण बढ़ैक कारण राधाक वौद्धिक जिज्ञासा जागब भेलैन। जहिना सद्वृत्ति जगने दुर्वृत्ति कमैए आ दुर्वृत्ति जगने सद्वृत्ति सेहो कमिते अछि तहिना...।

ओना, सद्वृत्तिक शक्ति प्रवल अछि, जे दुर्वृत्तिकेँ अपना लग नहि आबए दिअ चाहैए, मुदा ओ ओइठाम होइए जैठाम सद्वृत्ति सभ आफद-आसमानी सहैले तैयार होइए। मुदा जैठाम से नइ होइए तैठाम सद्वृत्तिकेँ दुर्वृत्ति दाबि कऽ छातीपर नइ चढ़ैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

अंतिकोपाल आ सुनीलोपालसँ राधाक सिनेह बढ़ने मेवालालसँ राधाक सिनेह किछु दिन तँ ठमकल रहल मुदा धीरे-धीरे कमए लगलैन। तेकर कारण भेल जे, जे मेवालाल जाबे तक गाममे छला माने कलकत्ता अबैसँ पूर्व, ताबे तक जे स्वाभिमानी जिनगी स्वभिमान विचारक बीच छेलैन ओ कलकत्ता एला पछाइत कमलैन। जे जिनगी

मेवालालक गाममे छेलैन–माने किसानी जिनगी–ओ शहरी मजदूर बनने टुटलैन, जइसँ विचारक क्षेत्र बदैल गेलैन। बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे नोकरी भेला पछाइत मेवालालक जिनगी विचारक क्षेत्रेमे समटा गेलैन। माने ई जे आठ घन्टाक चिमनीबला काज रहने देहक थकानक संग मनक थकान सेहो जबरदस्त हुअ लगलैन। एक तँ आठ घन्टाक काजक ड्यूटी, जइले अबैसँ पहिने तैयार होइमे सेहो डेढ़-दू घन्टा समय लगै छेलैन आ ड्यूटी केला पछाइत डेरा पहुँचैमे सेहो लगिते छेलैन। तैसंग खेनाइ-पीनाइक जोगार करैमे सेहो समय लगिते छेलैन। काजक संग अरामोक सम्बन्ध अछिए। जँ से नइ हएत तँ शरीरपर पड़बे करत। जखने शरीरपर प्रभाव पड़त तखने मन प्रभावित हेबे करत। जइसँ शरीरक संग मनो दुखित-दूषित हेबे करैए।

बन्हौटा गाए-महींस जकाँ मेवालालक जिनगी बनि गेल छेलैन। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे मेवालाल तेना बन्हा गेला जे ओकरे पुरबैमे दिन-राति खपि जाइ छेलैन। ओना, पत्नीकेँ कलकत्तामे रखला पछाइत मेवालालकेँ किछु काजमे जेना- खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता साफ-सुथरा करैमे मदैत भेटए लगलैन मुदा गमैया नव लोककेँ बजार पहुँचने साइयो रंगक आवश्यकतो तँ बढ़िये जाइए। तहूमे मेवालाल पुरुखाह डेरा बनौने छला। पुरुखाह डेरा भेल, जइमे असगरे वा दुसगरे पुरुख रहला आ सिनेमा-हिरोइनसँ लऽ कऽ टेलर टेकिन तक भेल। टेलर टेकिन भेल- कपड़ाक ओहन रूपमे नारीकेँ सजाएब जइमे रसिकजनकेँ रस जगैए।

राधाकेँ पहुँचला पछाइत मेवालालकेँ डेराक रूप-रंग बदलए लगलैन। तँए, जेतेक आ जेहेन साज-सामान मेवालाल अपना मने रखने छला तइमे दोबर बढ़ोत्तरी भेलैन। दोबरे कि तहूसँ बेसी तखन भेलैन जखन अंतिकापालक संग राधाक सम्बन्ध बनने हुनका डेरापर सेहो जाए-आबए लगली, तैसंग रंग-रंगक फैशनेबुल दोकान-दौरी सेहो

देखली।

ओना, राधापर सुनीलपालक एकटा जबरदस छाप ईहो पड़लैन जे जखन कखनो मेवालालकेँ कोनो तेहेन रोग-वियाधिक आक्रमण भऽ जाइन तँ सुनीलेपाल समांग जकाँ राधाक संग पूरैत संग-संग डॉक्टर ऐठाम जाएबक संग दिन-राति संगे रहब इत्यादि तक-मे संग दिअ लगलैन। तहूमे आब की ओ जुग रहल जे सीता अपन पैरुखपनसँ अपन बरक वरण करती। आब तँ सिनेमा जुग आएल अछि जँ कहीं कौलेजिया लड़कीकेँ बरखा मास रोडपर छत्ताक सहायता पानि होइकाल केलिऐन तँ ओ ओहन सौनक सोहावन दृश्य बनैबते अछि जइमे थैंक्यू-थैंक्यू दुनूक बीच भइये जाइए। ओना, जहिना ओझा-गुनी साइयो रंगक टोना-टापर करैत अपन प्रेमीजनकेँ मुरि लइए–माने बुड़िबक सभकेँ झूठ-फूसक चालिमे फँसा कमेलहा लूटि लइए–तहिना रसिकजन नइ करै छैथ सेहो केना नइ कहल जाएत। साइयो रंगक जादू-टोनाक संग साइयो रंगक टोना-टापर सुनीलपाल नइ करै छैथ, सेहो केना नइ कहल जाएत। तहूमे राधा सन सुनीलपालकेँ दस बर्खक ओहन गोपी भेटलैन, जेहेन अपनो मनमे रहैन। होइतो अहिना छै जे उमेरक हिसाबसँ भलेँ प्रौढ़ हुअए मुदा जँ वौद्धिक रूपमे बच्चा अछि तँ ओ अधिक भावुक हेबे करैए, जेकरा प्रेमीजन अपन प्रेमक जादूसँ खींच अपना मनमे बसाइये लइए आ सुधिजनक मनमे बैसियो जाइते अछि।

सुनीलपालकेँ दूटा लड़का आ एक लड़की। लड़की जेठ रहने दुनू भाँइसँ पहिने कौलेज देखलक। बिआहमे दान-दहेज समाजक एकटा अनिवार्य नियम बनियेँ गेल अछि। माने बिनु लेन-देनसँ समाजक गाड़ी चलब कठिन भइये गेल अछि। ओना, समाजो जे रंग-रंगक जातिपर ठाढ़ अछि, ओइमे सेहो लेन-देन–दान-दहेजमे अन्तर अछिए, माने किछु जाति-समाजमे एहेन छैथ जइमे एके सिंग-

सिंगहौटीक लड़का जँ दोसर जातिमे रहल तँ दुनूक दाम-दिगरमे अन्तर आबिये जाइए। तैसंग लड़कीक रंग-रूप सेहो एकटा कारक तत्त्व छीहे। मुदा कम-बेसी जे हुअ, मोल-जोल नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, अपनो समाजमे एहेन अखनो अछि माने किछु जातिमे, जइमे लड़के पक्षसँ दान-दहेज लड़की पक्षकेँ देल जाइए। मुदा ओ कम अछि। तैसंग अपन समाज आ बंगाली समाजक बीच वैचारिक दूरी सेहो बनियेँ गेल अछि। माने ई जे बंगाली समाजमे जेतेक लड़की बंगालमे स्वेच्छाचारी भेल अछि तेतेक अपना माने मिथिला समाजमे नइ अछि। तइमे समाज आ शासनक दूरी बहुत अछि। अखनो अपना ऐठाम बाल-विवाह अछि, कोट-कचहरीमे ओहन वैवाहिक मुकदमा बहुतयात संख्यामे अछिए जे अल्पवय लड़की लड़काक बीचक अछि। तँए समाजक बीच एहेन समस्यापर गम्भीर चिन्तन-मननक खगता समाजो आ शासनोमे अछिए। खाएर जे अछि...।

सुनीलपालक बेटी- बेबीपाल, कौलेजमे कौमर्स पढ़ैत। वेपारसँ बैंक धरिक कारोबारक बात (विषय) बुझैक जिज्ञासा जगले रहै, एकटा वेपारीक बेटा संग बिनु खरचे-बरचेक बिआह कऽ लेलकैन। ओना, परिवारिक सम्बन्ध अखनो सुनीलपाल आ मोहन सेठक बीच छैन्हे। सबहक आबा-जाही छैन्हे। बेबीपालकेँ सेहो नैहर-सासुर बनले छइ। सुनीलपालक दुनू बेटा–राकेश आ रंजन–इंजीनियरिंग शिक्षा पेब अमेरिका चलि गेल। ओतइ बिआहो कऽ लेलक आ धिया-पुताकेँ सेहो अमेरिकने बना लेलक।

पचपन बर्खक अवस्थामे जखन पत्नीक मृत्यु ट्रक दुर्घटनामे भेलैन आ असगरे सुनीलपाल रहि गेला। तेकर बाद राधापर बंशी पथलैन, जे सुतैर गेलैन। सुतैर ई गेलैन जे राधाकेँ अपन पत्नी बना अपना घरमे रखि लेलैन। ओना, बुढ़ाड़ीमे सिनुरदान करब नीक नइ

बुझि नइ केलैन। तँए राधा सिनुर नइ करै छैथ सेहो नहियेँ अछि। दुनूक सम्बन्ध सभकेँ बुझल, मुदा तैयो सुनीलपाल राधाकेँ छह मास चोरा कऽ रखलैन।

❍

शब्द संख्या : 2220, तिथि : 22 फरवरी 2018

9.

राधाकेँ अपन डेरासँ सात दिन गाएब भेला तक मेवालालक मनमे ओहेन शंका नइ भेलैन जेहेन शंकाक विषय छल। तेकर कारण छल जे अनदिनो राधा एक दिन, दू दिनसँ लऽ कऽ तीन-तीन-चरि-चरि दिन तक सुनीलपाल ऐठाम रहि जाइ छेलैन। ओना, मेवालालक मनमे जँ कनी-मनी शंका उठितो छेलैन तँ अपने मन मानि लइ छेलैन जे राधा गाएब नइ भेली दोसक ऐठाम हेती। दोस्तियो तँ दोस्तीए छिऐ किने। जहिना केतए-कहाँक लड़की आ केतए-कहाँक लड़काकेँ एक चुटकी सिनुर तेना जोड़ि दइए जे दुनू रने-बने बौआएबक संकल्प मनमे रोपि बौआइ-ले तैयारेटा नहि होइए बल्कि बौएबो करिते अछि। तहिना दोस्तियो तँ छीहे किने। तहूमे जँ दुनू दोस अपन-अपन कनगुरिया आँगुर जोड़ि गंगा स्नान कऽ लेलक तखन तँ ओ आरो पक्का पकिया भेबे कएल..!

ओना, अपन शंकित मनकेँ मेवालाल बिसबासु बनबै दुआरे, राधाकेँ डेरासँ गाएब भेला पराते भने सुनीलपाल ऐठाम टोह लिअ गेल छला, मुदा राधाक कोनो सुर-पता नहि भेट सकलैन। भेटबो केना करितैन, जैठाम कमजोर शिकार रहत आ जोरगर शिकारी, तैठाम ने शिकार फँसि शिकारीक हाथ लगैए मुदा जैठाम शिकार सिरगर रहत आ शिकारी पनिमरू, तैठाम केना शिकार हाथ लागत? एक तँ ओहुना मेवालालक समाजिक संस्कार सुनीलपालक समाजिक संस्कारसँ बेवहारिक रूपमे पछुआएल अछि, तैपर सुनीलपालक अपन माटि-

पानि सेहो छिऐहे, केना मेवालालकेँ हाथ लगए दइत। तैसंग सभसँ अनुकूल परिस्थिति ई छल जे मेवालालक राधा मात्र एक दिन पहिने डेरासँ गाएब भेलैन मुदा सुनीलपालक पत्नी तँ साल भरि पहिनहि संग छोड़ि देने छैन। जइसँ सुनीलपालक असगरूआक इतिहासो नमहर बनियेँ गेल छेलैन।

जखने मेवालाल सुनिलपालक डेरापर पहुँचला कि दुनू हाथ पसाइर सुनीलपाल अरिआति कऽ अपन बैसारक कोठरीमे लऽ जा बैसा अपने हाथे टंकीपर सँ पानि आनि मेवालालक हाथमे गिलास धड़ा देलखिन आ चाहक ओरियान करए अपनेसँ आगू बढ़ला।

मेवालाल मने-मन सोचैत-विचारैत जे मनुख की कोनो नुआँ-वस्त्र सीऐबला सुइया छी जे लगोमे रहत तँ देखबे ने करबै। मनुख तँ आँखि-मुँहबला साढ़े तीन हाथक ठढ़का लोक छी, तँए जानवरसँ एते फरक तँ अछिए। अनभुआर ने बुझैए जे मनुखकेँ मात्र दूटा पएर आ दूटा हाथ होइ छै, मुदा साढ़े तीन हाथ छड़गो-ठढ़गर होइत अछि से धियानेपर ने रहै छइ।

दू कप चाहक संग दूटा बिस्कुट नेने सुनीलपाल मेवालालक लगक कुर्सीपर बैस अपना खुशीकेँ भितुरका मनमे खोंसि, उपदेशक बनि मेवालालक आँखि-मे-आँखि मिलबैत बजला-

“दोस, की कहब! जहिया बेबीक माएकेँ ट्रकमे दबैत देखलौं आ पीचरा-पीचरा भेल देखलौं तहियासँ ऐ दुनियाँमे मने ने लगैए। होइए जे बबाजी बनि वृन्दावन चलि जाइ। मुदा तेहेन माया-जाल घरक अछि जे जखने लोक बुझत जे फल्लाँ बबाजी बनि रमि गेल तखने सभसँ पहिने घरे ने हड़ैप लेत। जँ कहियो अपन देश-कोश देखैक मन हएत आ आएब, तखन रहब केतए। तँए घर धेने छी। गुण अछि जे नोकरी करै छी, छुटला पछातियो पेंशन भेटत जइसँ बँकियाहा शेष जिनगी

कटैमे असुविधा नइ हएत।”

सुनीलपालक विचार सुनि मेवालालक मनमे जेहो कनी-मनी शंकाक औंकरा पोनगए लगल छेलैन ओहो टुटि कऽ साफ भऽ गेलैन। बजला-

“दोस, अहाँकें तेतेक दरमाहा अछि जे भरि दिन छनुओ-मनुओ खाएब तैयो ने घटत।”

मेवालालक बातकें बिच्चेसँ लोकैत सुनीलपाल बजला-

“दोस की कहब। बिनु घरनी घर भुतक डेरा! कमेबे करब आ खेनाइ बनौनिहारे ने कियो रहत तखन खाएब केना?”

ओना, मेवालालक मनपर सुनीलपालक विचारसँ दाब पड़ि रहल छेलैन मुदा तेकरा मेवालाल अनबुझी केलैन। दाब ई पड़ि रहल छेलैन जे ‘बिनु घरनीक घर भूतक डेरा’ की सुनीलपाल दोस-टाकें हेतैन आ मेवालाल दोसकें नहि..!

मुड़ी डोलबैत मेवालाल बजला-

“की करबै दोस, सभ भगवानक चकरचालि छिऐन! जेना-जेना हमरा-अहाँकें घुमौता तेना-तेना तँ घुमै पड़त किने।”

मुड़ी डोलबैत सुनीलपाल बजला-

“दोस, बुढ़ाड़ियो गाड़ाक घेघ छी। बेटा-पुतोहु खुशीए-सँ छोड़ि दइए, तैपर भगवानो रंग-बिरंगक रोग-बियाधि लाधि दइते छैथ। तखन ते मनुखे छी, कोनो-ने-कोनो धरानी जीवियै लेब। चाहे हारल मने जीबी आकि मारल मने, मुदा तँए कि कियो देहक पराण खिंच लेत।”

मेवालाल बजला-

“दोस! दुनियाँमे केतौ किछु होउ तइसँ अपना सभकें कोन

मतलब अछि। कम्पनी जिन्दावाद, कर्मचारी जिन्दावाद। अखन जाइ छी।”

ओना, मेवालाल बजला जे ‘अखन जाइ छी’, मुदा मनक जे भितुरका आशा रहैन जे जँ कहीं राधाकें चोरा-नुका कऽ रखियो नेने हेता तँ ओहो कोनो-ने-कोनो खिड़कियोक दोग देने देखते हेती, तँए बजबो करैत आ कनडेरिये आँखिये कोठरी सबहक खिड़कियो दिस देखैत।

भितुरका आशाक कारण मेवालालक मनमे ई छेलैन जे आखिर किछु हुअ, मुदा जहिना ओ पत्नी भेली तहिना ने हम पतियो भेलौं। अही पति-पत्नीक बीच तँ भगवानो भक्तक संग ओझराइये जाइ छैथ। नइ तँ भक्त आ भगवानमे केतेक अन्तरे अछि..?

जहिना मेवालाल मनमे आशा बन्हने छला तहिना सुनीलपालक मनमे शंका सेहो कनी-मनी उपैकते रहैन जे हो-न-हो हम दुनू दोस ऐठाम गप-सप्प करै छी आ तैबीच राधा ने कहीं भीतुरका कोठरीक केबाड़ खोलि सोझामे आबि पतिक संग जाइले तैयार भऽ जाइथ, तखन तँ शिकारे उड़ि जाएत!

भीतुरका कोठरीमे राधा पलंगपर चारूनाल चीत भऽ पड़ल मने-मन विचाइर रहल छेली जे जिनगी तँ सुखे-भोगक ने छी। से की अपना परिवारसँ ऐठाम कम अछि। तहूमे जँ दोसकें दोस्तिनी जीबैत रहितैन तखन दोस्तिनी बीच कनी-मनी खटपटो-लटपट होइत सेहो नहियेँ अछि। बेटो दुनू अपन परिवार अमेरिकेमे बसा लेलक। जे अमेरिकाक माटि-पानिमे बसि गेल ओ थोड़े गाम औत। आब की ओ जुग आ जमाना रहल जे देश सेवा-ले लोक अपन परिवारकें आगिमे झोंकि अपने फाँसीपर बिसवासक संग हँसैत चढ़त। आब तँ ओ जमाना आबि गेल जे अमेरिका सन धरतीएकें लोक स्वर्ग बुझैए...।

अमेरिकाक विचारसँ राधा सोझे उतैर अपना धरतीपर पहुँचली, पहुँचते मनमे उठलैन जे पतियो तँ रोगीए-टट्टी भेल जा रहल छैथ, तहूमे ऐठाम तँ दुइये गोरे छी। जँ किछु भइये जेतैन तँ हमरा बुते सम्हारल हएत।

ओना, गप-सप्पक क्रममे सुनीलपाल राधाकें चिक्कारीमे कहि देने छेलखिन जे ‘दोस्तिनी, पति आ दोसमे कोनो अन्तर नइ होइए।’ मुदा ई तँ भेल वैचारिक, बेवहारिक रूपमे सेहो सुनीलपाल राधाक संग शारीरिक सम्बन्ध बना नेने छला, जइसँ राधाक मनसँ सावित्री-सत्यवानक कथा हेरा गेल छेलैन। जखन अमेरिका सन धरती जे दुनियाँक स्वर्ग बुझल जाइए, तेकर बेवहारो आ इतिहासो बिनु बुझने तँ विचारल नहियेँ जा सकैए। मनुखक चित्त केहेन आ वृत्ति केहेन, एकरा बिनु बुझनौं-सुझनौं तँ नहियेँ किछु कहल जा सकैए। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहऽ..।

राधा जखन अपन भविस दिस देखैत तँ स्पष्ट नहियोँ तँ झलफलाएलो नीक सुनीलेपाल संग रहबकें बुझलैन।

सात दिन बीत गेल। राधाक भाँज मेवालालकें अखन धरि नहि लगलैन। तहूमे जखन सुनीलपाल ऐठाम जा टोहो लगौलैन आ सुनीलोपाल कहलकैन जे ‘ऐठाम राधा नइ एली हेन।’ तखनेसँ मनमे उद्विनता जगए लगलैन। उद्विनता जगैक कारण भेलैन जे खाली सुनीलेपालटा एहेन छैथ जिनका ऐठाम राधा जाइतो छेली आ रहितो छेली। ओना, दोकान-दौरीक काज सेहो करए लगल छेली, किछु-किछु बोलियो-वाणी बुझए लगल छेली। कम्पनियोंक कर्मचारी आ लग-पासक हाटो-बजारक लोक राधाकें चिन्हए लगल छेलैन...।

मेवालालक मनक उद्विनता धीरे-धीरे बढ़ए लगलैन। मनमे बेर-बेर ईहो उठैत रहैन जे एते दिनक जिनगीमे सुनीलपाल कहियो झूठ नइ

बजला, ओ केना झूठ बजता। मुदा लगले मनमे उठि जाइन जे सुनीलपालक परिवार छोड़ि राधा दोसरठाम केतौ ने राति-बिराति रहै छेली। जँ कहीं सड़केपर गाड़ीए-सवारीसँ धक्का-धुक्की खा मरि गेल रहितैथ तैयो हल्ला तँ हेबे करैत आ चीन-पहचीन भेला पछाइत लहासो तँ भेटबे करैत..!

मनक उद्विनताक चलैत मेवालालकें ड्यूटीसँ सेहो मन उचटए लगलैन। जइसँ बेर-बेर चेतौनी सेहो पड़ि गेल छेलैन।

मतिछिन्नु जकाँ जेकरा-तेकरासँ मेवालाल पुछए लगला जे ‘राधा नजैरपर नइ पड़ली अछि।’ ओना, मेवालालक मनमे बेर-बेर सुनीलपाल ऐठामक आबा-जाही सेहो ठहैक उठैन मुदा लगले ईहो उठि जानि जे अप्पन गाम-घर आ अप्पन माटि-पानि तँ छी नहि, आन राज्य छी। आ राज्येटा नहि, आन समाजक माटि-पानिपर सेहो छी। जँ दुनू गोरेक बीच झगड़ो-झंझट हएत तँ ऐठामक समाज ओकरे ने मदैत करतै, हमरा थोड़े करत?

चोट-पर-चोट खसैत चोटाएल मेवालालक मन अपन दुनियाँ देखए लगलैन। माए मरि गेली..! बेटी सासुर चलि गेल..! पत्नी हेरा गेली..! असगरे केना जीब? नोकरियो आब दुइये साल बँचल अछि, ओहो छुटि जाएत। जखने नोकरी छुटत तखने आमदनी सेहो बन्न भइये जाएत आ डेरोसँ निकालिये देत। केतए रहब आ केकरा संग रहब।

सोचैत-विचारैत मेवालालक मन कानए लगैन...। मुदा केकरा कहता आ के आँखिक नोर पोछतैन। ऐ दुनियाँमे की मेवेलालटा एहेन अछि आकि आरो लोक..?

अही आशा-बाट देखैमे मेवालालकें छह मास बीत गेलैन। संजोग बनल। एक दिन सुनीलपाल राधाक संग बजार जाइ छला,

मेवालाल सेहो दहिनासँ बामा होइत ओही रस्ते डेरा अबै छला। रिक्साकेँ लग अबिते सबहक आँखि सभपर पड़ल माने तीनू एक-दोसरकेँ अपना आँखिये देखलक। राधाकेँ सुनीलपालक संग देख मेवालालकेँ बुकौर लगि गेलैन। जइसँ बोलती बन्न भऽ गेलैन, किछु बाजि नहि सकला। बुकौरक कारण भेलैन जे एक दिस सुनीलपाल सन कपटी दोसकेँ आँखिसँ देखलैन तँ दोसर दिस राधा सन कपटी पत्नी सेहो आँखिक सोझमे पड़लैन। ओना मेवालालकेँ देखते राधा मुँह मोड़ि सुनीलपाल दिस घुमि गेली, मुदा जहिना सुनीलपालक बघबा नजैर मेवालालपर चढ़लैन कि तहिना मेवालालक नजैर बिलरबा रूप पकैड़ निच्चाँ उतैर गेल। कियो किछु ने बजला। अपन-अपन रस्ता धेने सभ आगू मुहेँ बढ़ि गेला।

डेरा आबि मेवालाल विचार केलैन जे जखन अपना आँखिये दुनूकेँ संगे देखलौं तखन न्यायालय जरूर जाएब। भऽ सकैए जे हमरा देखौआ गवाही नइ भेटए, मुदा तीनू गोरेक बीचक मुद्दा नइ छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जे राम से राम, न्यायालय जेबे करब।

ओना, जहिना मेवालालक मन न्यायालय जाइले एक दिस साहस बटोरि रहल छल तहिना दोसर दिस डेरामे सजल राधाक जिनगी, हेंगरपर टाँगल रंग-रंगक साड़ी-ब्लौज आ सायाक संग रंग-रंगक चीज-वौससँ सजल चौका देख-देख मन तरैस-तरैस बिलैप रहल छेलैन। जहिना हँ-नहि, नीक-बेजाए आ हारि-जीतक बीच जे परिस्थिति संकल्प-विकल्पक बीच ठाढ़ होइत अपनाकेँ निहारैत अछि आ तखन जे बीचक नुकाएल कोनो रूप सामनेमे आबि पीठपर सवार भऽ मनकेँ ठेलैत अछि, तहिना मेवालालकेँ हुअ लगलैन। विचारक दुनियाँमे तेना मेवालाल बोहिया गेला जे ने भानस करैक मन जगलैन आ ने खाइ-पीबैक आ ने सुतैक। अन्हारमे वौआएल जहिना कोनो यात्रीकेँ धरतीसँ असमानक संग पूब-पच्छिम-उत्तर-दच्छिनक दिशो

तेते अन्हरा जाइए जे हाथ-हाथ नइ सुझैए, मुदा तइ बीचमे पड़ल यात्रीकेँ यात्राक रूपक जे दर्शन होइए, तेहने दर्शन मेवालालोकेँ भेलैन। मनमे संकल्प उठलैन जे जखन परिवारे नहि, तखन जिनगी की..? सभसँ पहिने कारखानामे जा औझुका छुट्टीक दरखास्त दैत वकील ऐठाम जाएब, ओइठाम गेला पछाइत जेना-जे हएत से जरूर करब। जँ कहीं समाजक जालमे ओझरा वकीलो जँ काज करैले तैयार नइ हेता तँ दोसर-तेसर-चारिम लग जाएब। सभ वकील जातिये-समाजक जालमे तँ नहि ओझराएल हेता, एहनो तँ हेबे करता जे वकीलक गरिमाकेँ बुझैत हेता। जे एहेन बुझनिहार हेता ओ हमरा संग जरूर देबे करता।

भोरे मेवालाल अपन छुट्टीक दरखास्त दैत महल्लेक एक वकील ऐठाम पहुँचला। दुनू परानी वकील साहैब सुबहक[21] चाह पीबैत रहैथ कि मेवालाल पहुँचला। बाहरेक ओसारपर दुनू परानी वकील साहैब चाह पीबैत रहैथ। मेवालालकेँ गेट टपिते देख वकील साहैब फुसफुसा कऽ पत्नी दिस मुँह घुमा बजला-

“शुभ दिन अछि!”

ओसार लग पहुँचते मेवालाल बजला-

“प्रणाम वकील साहैब, अहींसँ मदैतिक आशामे एलौं हेन।”

बिनु बुझल-सुझल वकील साहैब अगुरवारे असीरवाद दैत बजला-

“जँ ऐ देहक खूनक मदैतिक जरूरत पड़त ते सेहो देब।”

कुर्सीपर बैइसैत मेवालाल बजला-

“ऐठामक कोट-कचहरीक अनुभव हमरा नइ अछि। हम

[21] शुभक

परदेशी छी, बैट्री-कम्पनीक भट्टीमे नोकरी करै छी।”

बिच्चेमे वकील साहैबक पत्नी– सुदामा, बजली-

“यएह ने भेल मनुष्यता। जे अपन मेहनैतपर जिनगी ठाढ़ कऽ चलैत अपना पएरे बढ़ि रहल छैथ, हुनके आशा ने सभसँ पैघ। जखन ऐठाम एलौं तखन मनोरथ पूर हेबे करत।”

कहि सुदामा चोट्टे ओइठामसँ उठि चाह बना मेवालालक हाथमे देलकैन।

हाथमे चाह अबिते मेवालालक मन जे दुनू परानी वकील साहैबकेँ एकठाम बैस चाह पीबैत देखलैन से अपनो मन अपन पत्नीपर तरैस तड़ैप कऽ पहुँच गेलैन। मुदा उपाय, उपाय तँ केले पछाइत हएत...। अपन सभ बात मेवालाल वकील साहैबकेँ कहि देलखिन। अन्तमे वकील साहैब पुछलखिन-

“कोनो गुप्त पहचान दऽ सकै छी?”

मेवालाल-

“हँ, दहिना जाँघक काछ लग नमहर लाल लहसन छैन।”

वकील साहैब-

“अहाँकेँ पत्नी जरूर वापस औती।”

वकील साहैबक विचार सुनि मेवालालक मनमे पत्नीक ओ रूप, जइमे सुनीलपालक संग शारीरिक सम्बन्ध भेल छेलैन से मनसँ उड़ए लगलैन। उड़ैक कारण भेलैन जे जइले न्यायालय जाएब आ न्यायालय देत, तैबीच जँ एहेन विचार रहत तँ लाभ की हएत? दू राजाक बीचक लड़ाइ मेवालालक मनमे जगि गेलैन। जगि ई गेलैन जे केतबो उमेरक रानी किए ने होथि मुदा युद्धमे प्राप्त रानी तँ रानीए भेली किने। वएह ने ओइ जीतल राजाक लेल बारह बर्खक किशोरी भेली।

पौने दू बर्खक न्यायालयक पछाड़क पछाइत मेवालालक हाथमे राधा एली मुदा ओ राधा नइ एली जे पहिने छेली। तीन मासक पछाइत मेवालालक नोकरीक अन्त सेहो भेलैन।

सेवा-निवृत्ति भऽ कऽ, तीन मासक पछाइत मेवालाल अपन पत्नीक संग गाम एला। बढ़ियाँ आमदनी कम्पनीसँ भेल छेलैन। माने बीस बर्खक अदहा दरमाहा एकठाम भेटलैन। तेकर पछातियो जँ जीबित रहता तँ पुन: फेर भेटतैन।

गाम अबैसँ पहिनहि कलकत्तेमे मेवालाल योजना बनौलैन जे कलकत्ता सन न्यायालयसँ जखन जीत कऽ गाम जा रहल छी, तखन समाजकेँ किए ने भोज खुआ अपन जीत दर्ज कराएब। आब खेत-पथारक भीर नइ जाएब। जे रूपैआ अछि, तइमे सँ घरो बना लेब आ खाइते-पीबिते रामलला करैत रहब।

तेसर दिन मेवालाल पत्नीक संग गाम पहुँच समाजकेँ अपन जिनगीक पुरुखपनक परिचय दैत घरबासक संग भोजक चर्च सेहो केलैन।

❍

शब्द संख्या : 2015, तिथि : 25 फरवरी 2018

उपन्यास लेखन क्रम

1. मौलाइल गाछक फूल

पहिल अंक- शब्द संख्या : 3338
दोसर अंक- शब्द संख्या : 2694
तेसर अंक- शब्द संख्या : 5466
चारिम अंक- शब्द संख्या : 4554
पाँचम अंक- शब्द संख्या : 4396
छठम अंक- शब्द संख्या : 2906
सातम अंक- शब्द संख्या : 2465
आठम अंक- शब्द संख्या : 3633
नअम अंक- शब्द संख्या : 4580
दसम अंक- शब्द संख्या : 2478
एगारहम अंक- शब्द संख्या : 3365
बारहम अंक- शब्द संख्या : 3770
तेरहम अंक- शब्द संख्या : 3095.

❍

2. जिनगीक जीत

(1.) शब्द संख्या : 2652
(2.) शब्द संख्या : 2410
(3.) शब्द संख्या : 1260
(4.) शब्द संख्या : 2926
(5.) शब्द संख्या : 2453
(6.) शब्द संख्या : 2017
(7.) शब्द संख्या : 4807

(8.) शब्द संख्या : 3125
(9.) शब्द संख्या : 4937
(10.) शब्द संख्या : 3127
(11.) शब्द संख्या : 2834
(12.) शब्द संख्या : 1980
(13.) शब्द संख्या : 1359
(14.) शब्द संख्या : 1278
(15.) शब्द संख्या : 9314.

❍

3. उत्थान-

1. (क) शब्द संख्या : 1105
(ख) शब्द संख्या : 332
(ग) शब्द संख्या : 709
2. शब्द संख्या : 3349
3. शब्द संख्या : 4651
4. शब्द संख्या : 3359
5. शब्द संख्या : 2869
6. शब्द संख्या : 1842
7. शब्द संख्या : 2278
8. शब्द संख्या : 2822
9. शब्द संख्या : 3719
10. शब्द संख्या : 1923
11. शब्द संख्या : 2887
12. शब्द संख्या : 3467
13. शब्द संख्या : 3847

14. शब्द संख्या : 3709
15. शब्द संख्या : 1640.

❍

4. जीवन-

1. शब्द संख्या : 7699
2. शब्द संख्या : 6539
3. शब्द संख्या : 4703
4. (क) शब्द संख्या : 5532
4. (ख) शब्द संख्या : 1944
4. (ग) शब्द संख्या : 2373
4. (घ) शब्द संख्या : 1793
4. (ङ) शब्द संख्या : 1609
5. शब्द संख्या : 3811.

❍

5. जीवन-मरण

1. शब्द संख्या : 14981
2. शब्द संख्या : 7903.

❍

6. नै धाड़ैए

6. नै धाड़ैए-

1.- शब्द संख्या : 2359
2.- शब्द संख्या : 3037
3.- शब्द संख्या : 1633
4.- शब्द संख्या : 10284
5.- शब्द संख्या : 1590.

❍

7. भादवक आठ अन्हार

पहिल अंक- शब्द संख्या : 1149.

❍

8. सधबा-विधबा

पहिल अंक- शब्द संख्या : 3122.

❍

9. बड़की बहिन

पहिल- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 4940,
दोसर- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 6692
तेसर- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 3769
चारम- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 5554
पाँचम- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 3250.

❍

10. ठूठ गाछ

एक- शब्द संख्या : 1790, तिथि : 25 अक्टुबर 2015
दू- शब्द संख्या : 1203, तिथि : 29 अक्टुबर 2015
तीन- शब्द संख्या : 999, तिथि : 04 नवम्बर 2015
चारि- शब्द संख्या : 1494, तिथि : 07 नवम्बर 2015
पाँच- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 12 नवम्बर 2015
छह- शब्द संख्या : 1539, तिथि : 17 नवम्बर 2015
सात- शब्द संख्या : 3232, तिथि : 23 नवम्बर 2015
आठ- शब्द संख्या : 2780, तिथि : 01 दिसम्बर 2015
नअ 'क'- शब्द संख्या : 2091, तिथि : 06 दिसम्बर 2015
'ख'- शब्द संख्या : 1083, तिथि : 08 दिसम्बर 2015
'ग'- शब्द संख्या : 1296, तिथि : 10 दिसम्बर 2015
दस- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 16 दिसम्बर 2015.

❍

11. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं

एक- शब्द संख्या : 1630, तिथि : 14 सितम्बर 2017
दू- शब्द संख्या : 2878, 18 सितम्बर 2017
तीन- शब्द संख्या : 2318, 22 सितम्बर 2017
चारि- शब्द संख्या : 2239, 26 सितम्बर 2017
पाँच- शब्द संख्या : 1903, 29 सितम्बर 2017
छह- शब्द संख्या : 2450, 03 अक्टुबर 2017

सात- शब्द संख्या : 2040, 07 अक्टुबर 2017
आठ- शब्द संख्या : 2403, 12 अक्टुबर 2017
नअ- शब्द संख्या : 5046, 19 अक्टुबर 2017
दस- शब्द संख्या : 794, दीपावली (19 अक्टुबर) 2017.

❍

12. लहसन

एक- शब्द संख्या : 3169, तिथि : 10 नवम्बर 2017
दू- शब्द संख्या : 2031, तिथि : 17 नवम्बर 2017
तीन- शब्द संख्या : 2592, तिथि : 25 नवम्बर 2017
चारि- शब्द संख्या : 2562, तिथि : 4 दिसम्बर 2017
पाँच- शब्द संख्या : 4691, तिथि : 30 दिसम्बर 2017
छह- शब्द संख्या : 2240, तिथि : 15 फरवरी 2018
सात- शब्द संख्या : 1026, तिथि : 18 फरवरी 2018
आठ- शब्द संख्या : 2220, तिथि : 22 फरवरी 2018
नअ- शब्द संख्या : 2015, तिथि : 25 फरवरी 2018.

❍



जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यतः तरकारी खेती) **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत। **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

प्रकाशित पोथी : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधवा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. सुभिमानी जिनगी- लघु कथा संग्रह।

सम्पर्क- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, पिन- 847410, बिहार। **मो.** 9931654742

E-mail, jpmandal.berma@gmail.com



पल्लवी प्रकाशन
नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452
ISBN : 978-93-87675-63-6
₹ 250

जगदीश प्रसाद मण्डल

मौलाइल गाछक फूल





मौलाइल गाछक फूल

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-27-8

दाम : ₹ 350/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

MAULAYAL GACHHAK PHOOL
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

...
..
.

एकसत्तैर-

अंक

अप्पन बात/08
एक/11
दू/23
तीन/36
चारि/64
पाँच/85
छह/106
सात/121
आठ/134
नअ/152
दस/174
एगारह/187
बारह/204
तेरह/224

अप्पन बात

जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिए नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक बिसवास भऽ गेल। बिनु गार्जनक–पुरुष गार्जनक–परिवार 1960 ईस्वीमे भऽ गेल।

पिताक स्वर्गवास भेला पछाइत दू भाँइ पिसियौत रहै छला। तत्काल गार्जनी हुनके दुनू भाँइपर। कोसीक उपद्रवसँ भागल पीसा बेरमे माने सासुरेमे बसि गेल रहैथ।

पिताक मृत्युक समए तीन बर्खक हम आ छह बर्खक जेठ भाय छला। पिसियौत भाए 1960 ईस्वीमे अपन गाम 'हरिनाही' चलि गेला। दुनू भाँइ 1964-65 ईस्वीमे गामक स्कूलसँ निकैल अपर प्राइमरी स्कूल कछुबीमे नाओं लिखौने रही। 1960 ईस्वीसँ परिवारक बोझ पड़ल। पुरुष विहीन भेनौं माए ओहन परिवारक छेली, जइ परिवारमे नाना 1942 ईस्वीमे अंग्रेजक गोली खा चुकल छला। साहसी माए। अपन गहना, जमीन बेच देल बच्चाकेँ पढ़बै खातिर।

पैंतीस साल धरि समाज सेवा कऽ हहरैत शरीर देख किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल। 2002 ईस्वीमे डॉ. तारानन्द 'वियोगी'जीक सम्पादनमे देशज पत्रिका निककल। पोथी हाथमे आएल। पढ़लौं। तइसँ पहिनहि किछु-किछु लिखब शुरू केने रही। फोनपर वियोगीजी सँ सम्पर्क भेल। मुदा ढीले-ढाल। जखन मधुबनी एला आ सामने-सामनी बैस गप्प भेल तखन काफी प्रेरित भेलौं। तइसँ पहिने पटनामे उमेशक माध्यमसँ किछु उपन्यास आ किछु कथा संग्रह ऊपरे-झापड़े देखने रहैथ। पहिल भेँट तँए गप्पे करब जरूरी बुझलैन। सएह भेल। रहुआ (मधेपुर)मे 'सगर राति दीप जरय' (8.11.2008) कथा गोष्ठीमे भाग लइले कहलैन। ताधैर नइ जनैत रही। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक स्थानमे कार्यक्रम भेल। सिद्धपीठ। ओना, केतेक बेर राजनीतिक मंचपर रहुआमे बाजि चुकल छेलौं, कर्म क्षेत्र छल तँए कथा वचैमे संकोच नइ भेल। ओना एकर दोसरो कारण छल। ओ कारण छल किनको चिन्हैत नै रहिऐन। भिनसरु पहर डॉ. अशोक अविचलजी सँ पुरना चिन्हारेक नवीकरण भेल।

गाड़ी दुआरे लग रहितो पाछू गेलौं। कथा पाठ केलौं। सभ प्रशंसा केलैन। डॉ. रमानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। चादैर-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।

मैथिली साहित्यक लेल 'सगर राति दीप जरय' कथाकारक ट्रेनिंग कौलेज सदृश अछि। विद्वान कथाकार सबहक गाइड-लाइन। नव पीढ़ी-ले ऐसँ उपयोगी भऽ की सकैए...।

मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल अपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो गोरेकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी। ओइसँ पहिलुका कथादिक ठौर-ठेकान नइ अछि। घर बाहरमे भैंटक लावा आ बिसांढ़ छपल आ फेर मिथिला दर्शनमे 'चुनवाली' कथा पढ़िते अनेको बधाइ फोन आएल जेना- पञ्जीकार

विद्यानन्द झाजीक। एकटा महत्वपूर्ण फोन श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक रहल। हिनकर फोन सुनिते जिनगीक ओहन चौबट्टी टपि गेलौं जे चौबीस घन्टाक खुशी मनमे आबि गेल। जहिना बाल्यकालमे हनुमान सूर्यकें ग्रहण (बाल समय रवि भक्ष लियो) कऽ नेने छेला तद्सदृश गजेन्द्रोजीक टीम छैन। नवयुवक सभ छैथ, हम तँ बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहि सकै छिऐन जे हमरो औरदा लऽ अहीं सभ जीबू।

अन्तमे, तीनू भैंयो (सुरेश, उमेश, मिथिलेश) आ समाजोकें कहि दिअ चाहै छिऐन जे मिथिला अहाँक देश छी। ऐठामक माटि-पानिसँ लऽ कऽ साहित्य-कला धरिक विकास करब सबहक दायित्व छी।

ऐठाम एतबे। आगाँ, आगू...।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बेरमा

एक

दू सालक रौदीक उपरान्तक अखाढ़। गरमीसँ जेहने दिन तेहने राति। भरि-भरि राति बिऐन हौंकि-हौंकि लोक सभ समए कटैत। सुतली रातिमे उठि-उठि पानि पीबए पड़ैत। भोर होइते घाम अपन उग्र रूप पकैड़ लइत। जहिना कियो केकरो मारैले लग पहुँच जाइत तहिना सुरूजो लग आबि गेला। रस्ता-पेराक माटि जमल सिमेंट जकाँ सक्कत भऽ गेल। चलै बेर पएर पिछड़ैत। इनार-पोखैरक पानि अपन अस्मिता बँचबैले पतालक रस्ता पकैड़ लेलक। दू सालसँ एक्को बुन्न पानि धरतीपर नै पड़ने धरतीक सुन्दरता धीरे-धीरे नष्ट हुअ लगल।

पानिक चलैत दुबि सभ पाण्डु रोगी जकाँ पीअर भऽ-भऽ परान तियागि रहल अछि। गाछ-पात बेदरंग भऽ गेल अछि। लताम, दारिम, नारिकेल इत्यादि अनेको तरहक फलक गाछ सूखि रहल अछि। आम-जामुन-गमहाइर-शीशो इत्यादि गाछक निच्चाँ पातक पथार लगि गेल।

दसे बजेसँ बाधमे लू चलए लगैत। नमहर-नमहर दराड़ि फाटि धरतीक रूपे बिगाड़ि देलक। की खाएब। की पीब। केना जीब। अपनामे सभ एक-दोसरासँ बतियाइत। घास-पानिक दुआरे मालो-जाल सूखि कऽ संठी सन भऽ गेल। अनधुन मरबो कएल। अनुकूल समए पाबि रोगो-बियाधि बुतगर भऽ गेल। माल-जालसँ लऽ कऽ लोको सबहक जान अवग्रहमे पड़ि गेल अछि।

खेती-बाड़ी चौपट्ट होइत देख थारी-लोटा बन्हकी लगा-लगा लोक मोरंग, दिनाजपुर, ढाका भागए लगल। जएह दशा किसानक वएह दशा बोनिहारोक। कहिया इन्द्र भगवानक दया हेतैन, ऐ आशामे अनधुन कबुला-पाती लोक करए लगल।

तीन दिनसँ अनुपक घरमे चुल्हि नै पजरल। नल-दमयन्ती जकाँ दुनू परानी अनुप दुखक पहाड़क तरमे पड़ल एक-दोसराक मुँह तकैत। केकरो किछु बजैक साहस नहि। बारह बर्खक बौएलाल बोरापर पड़ल माएकें कहलक-

“माए, भूखे परान निकलल जाइए। पेटमे बगहा लगैए। आब नइ जीबौ।”

बेटाक बात सुनि दुनू परानी अनुपक आँखिमे नोर आबि गेल। मुँहक बोल बुताए लगलै। लगमे बैसल रधिया उठि कऽ डोल-लोटा लऽ इनार दिस विदा भेल।

इनारोक पानि निच्चाँ ससैर गेल छै, जइसँ डोलक उगहैनो छोट भऽ गेल। केतबो निहुड़ि-निहुड़ि रधिया पानि पेबए चाहैत, मुदा डोल पानिसँ ऊपरे! रधियाक मनमे एलै, जखन अधला होइबला रहै छै तखन अहिना कुसंयोग होइ छइ। बौएलाल नै बँचत! एक तँ पाँचटा सन्तानमे एकटा पिहुआ बँचल, सेहो आइ जाइए। हे भगवान! कोन जन्मक पापक बदला लइ छह..? इनारसँ डोल निकालि लहरेपर छोड़ि रधिया उगहैन जोड़ैले डोरी आनए आँगन आएल। रधियाक निराश मन देख अनुप पुछलक-

“की भेल?”

टुटल मने रधिया बाजल-

“की हएत, जखन दैवेक डाँग लगल अछि तखन की हएत। उगहैन छोट भऽ गेल तँए जोड़ैबला जौड़ी लइले एलौं।”

रधियाक बात सुनि अनुप घरक ओसारेक बनहन खोलि देलक। खड़ौआ जौड़ लऽ रधिया इनारपर जा उगहैन जोड़लक। उगहैन जोड़ि पानि भरलक। पानि भरि लोटामे लऽ रधिया आँगन आबि बौएलालकें पीबैले कहलक।

पड़ल बौएलालकें उठिए ने होइ। ओसारपर लोटा रखि रधिया बौएलालकें बाँहि पकैड़ उठा कऽ बैसौलक। अपने हाथे रधिया लोटासँ चुरुकमे पानि लऽ बौएलालक आँखि-मुँह पोछलक। बौएलालक देह थरथर कँपैत। बौएलालक थरथरी देख रधियोकें थरथरी पैस गेल। लोटा उठा बौएलालक मुँहमे लगबए लगल आकि थरथराइत हाथसँ लोटा छुटि गेल, पानि बोरापर पसैर गेल। दुनू हाथे छाती पीटैत रधिया जोरसँ चिचिया उठल-

“आब बौएलाल नै जीत! जइ घड़ी, जइ पहर अछि!”

रधियाक बोल सुनि अनुप जोरसँ कानए लगल। अनुपक कानब सुनि टोलक धियो-पुतो आ जनिजातियो एक्के-दुइए आबए लगल। सबहक मुँह सुखाएले। के केकरा बोल-भरोस देत। सबहक एक्के गति। अनुपक कानब सुनि रूपनी अँगनेसँ कानैत दौगल आएल। रूपनी अनुपक ममियौत बहिन। रूपनी बौएलालकें देख बाजल-

“भैया, बौआकें परान छेबे करह। किए अनेरे दुनू परानी कानै छह। जाबे शरीरमे साँस रहतै ताबे जीबैक आशा। चुप हुअ!”

कहि रूपनी बौएलालकें समैट कोरामे बैसौलक। तरहत्थीसँ चाइन रगड़ए लगल। बौएलाल आँखि खोलि बाजल-

“दीदी, भूखसँ पेटमे बगहा लगैए।”

बौएलालक बात सुनि रूपनी बाजल-

“रोटी खेमे?”

"हँ।"

बौएलालक 'हँ' सुनि रधिया घरमे धएल फुलही लोटा–जे रधियाकेँ दुरागमनमे पिता देने रहैन–निकालि अनुपकेँ देलक। लोटा नेने अनुप दोकान दिस दौगल। लोटा बेच गहुम किनने आएल। अँगना अबिते रधिया हबड़-हबड़ चुल्हि पजाइर गहुम उलौलक। दुनू परानी जाँतमे गहुम पिसए लगल। एक रोटी-जोकर चिक्कस होइते रधिया समैट कऽ रोटी पकबए आबि गेल। बाँकी गहुम अनुप पिसए लगल।

रोटी पका रधिया बौएलाल लग लऽ गेल। अपनेसँ रोटी तोड़ि खाइक साहस बौएलालकेँ नहि। छाती दाबि-दाबि रधिया बौएलालकेँ रोटी खुआबए लगल। सौंसे रोटी बौएलाल खा लेलक। रोटी खाइत-खाइत बौएलालोकेँ हूबा जगलै। अपने हाथे लोटा उठा पानि पीलक। पानि पीबते हाफी भेलइ। भुइँएमे ओंघरा गेल।

जाँत लगक चिक्कस समैट रधिया चुल्हि लग आनि सूपमे सानए लगल। जांघपर पड़ल चिक्कस अनुप तौनीसँ झाड़ि, लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ल। हाथ-पएर धोइ, लोटामे पानि लऽ आँगन आबि खाइले बैसल।

छिपलीमे रोटी आ नून-मेरचाइ नेने रधिया अनुपक आगूमे देलक। भुखे अनुपकेँ होइ जे सौंसे रोटी मोड़ि-सोड़ि कऽ एक्के बेर मुँहमे लऽ ली, मुदा से नै कऽ तोड़ि-तोड़ि खाए लगल। छिपलीक रोटी सठिते अनुप रधिया दिस देखए लगल मुदा तीनियेँटा रोटी पका रधिया चिक्कसक मुजेला कोठीपर रखि देलक। रधियाकेँ देख अनुप चुपचाप दू लोटा पानि पीब उठि गेल।

दिन अछैते नथुआ दौगल आबि हँसैत अनुपकेँ कहलक-

"गिरहत काका बड़की पोखैर उराहथिन। काल्हिसँ हाथ लगतै।

तोहूँ दुनू गोरे काज करए चलिहह।"

नथुआक बात सुनिते रधियाकेँ जेना अशर्फी भेट गेलै तहिना खुशी भऽ गेल। अनुपोक मुहसँ हँसी निकलल। अनुपक खुशी देख नथुआ फेर बाजल-

"अपने मुसना काका मेटगीरी करत। वएह जन सबहक हाजरी बनौत।"

नथुआ, अनुप आ रधियाक बीच गप-सप्प होइते छल कि बिच्चेमे मुसनो धड़फड़ाएल आबि गेल। मुसना दिस देख नथुआ बाजल-

"मुसनो काका तँ आबिए गेला। आब सभ गप फरिछा कऽ बुझबहक।"

मेटगीरी भेटलासँ मुसनाक मन तरे-तर गदगद होइत। ओना, कहियो मुसना मेटगीरी केने नहि, मुदा गामक बान्ह-सड़कमे मेट सबहक आमदनी आ रोब देखने, तँए खुशी। मने-मन सोचैत जे जेकरा मन हएत तेकरा जनमे रखब आ जेकरा मन नइ हएत तेकरा नइ रखब। ई तँ हमरे जुतिक काज रहत किने। जेकरा मन हएत ओकरा बेसियो कऽ हाजिरी बना देबइ। पावर तँ पावर होइए। जँ पावर भेटए आ ओकर उपयोग फाजिल करि कऽ नै करी तँ ओहेन पावरे लऽ कऽ की? जँ से नै करब तँ मुसना आ मेटमे अनतरे की हएत। लोक की बुझत..!

मुस्कियाइत मुसना अनुपकेँ कहलक-

"भैया, काल्हिसँ बड़की पोखैरमे काज चलतै, तोंहू चलिहह। दू सेर धान आ एक सेर मरुआ भरि दिनक बोइन हेतह। तेतेटा पोखैर अछि जे कहुना-कहुना रौदी खेपिए जेबह। सुनै छी जे आनो गामक जन सभ अबैले अछि मुदा ओकरा सभकेँ माटि नै काटए देबइ।"

मुसनाक बात सुनि बौएलाल फुरफुरा कऽ उठि बाजल-

"काका, हमरो गिनती कऽ लिहह। हमहूँ माटि काटए जेबह।"

"बेस बौआ, तीनू गोरे चलिहह। हमरे हाथक काज रहत। दुपहरमे भानस करैले भौजीकेँ पहिनहि छुट्टी दऽ देबइ।"

कहि मुसनो आ नथुओ चलि गेल।

दोसर दिन भोरे माने पोखैरमे हाथ लगैसँ पहिनहि चौगामाक जन सभ, कियो कोदारि-टाला तँ कियो पथिया-कोदारि लऽ पोखैरक महारपर पहुँच थहाथही करए लगल। मेला जकाँ लोकक करमान लगि गेल। जेते गामक जन तइसँ कए गुना बेसी आन गामक। जनक भीड़ देख मुसनाक मनमे अहलदिली पैस गेल। तामसो आ डरोसँ देह थरथर कापए लगलै। मुसनाक मनमे उठलै- हमर बात के सुनत? माथपर दुनू हाथ लऽ बैस गेल। किछु फुरबे ने करइ। ठकमुड़ी लगि गेलइ। सौंसे पोखैर गौंआँ-सँ-अनगौंआँ धरि, जगह छेक-छेक कोदारि लगा टल्ला ठाढ़ केने। सोचैत-सोचैत मुसनाक मनमे एलै जे गिरहत काकाकेँ जा कऽ सभ बात कहिऐन। सएह केलक। उठि कऽ रमाकान्त बाबूसँ भेँट करए विदा भेल।

तैबीच गौंआँ-अनगौंआँ जनमे रक्का-टोकी शुरू भेल। अनगौंआँ सभ जोर-जोरसँ बजैत-

"कोनो भीख मंगैले एलौं। सुपत काज करब आ सुपत बोइन लेब।"

तहिना गौंआँ जनसभ कहइ-

"हमरा गामक काज छी तँए हम सभ अपने करब।"

सुखेतक भुटकुमरा आ गामक सिंहेसरा एक्केठाम पोखैरक माटि दफानने। दुनूक बीच गारि-गरौवैल हुअ लगलै। सभ हल्ला करैत तँए

केकरो बात कियो सुनबे ने करए। सभ अपने बजैमे बेहाल। गारि-गरौवैल करिते-करिते भुटकुमरो सिंहेसर दिस बढ़ल आ सिंहेसरो भुटकुमरा दिस। दुनूक बीच गारियो-गरौवैल होइत आ पकड़ो-पकड़ी भऽ गेल। एक-दोसरकेँ पटैक छातीपर बैसए चाहैत। दुनू बुतगर। पहिने तँ भुटकुमरे सिंहेसराकेँ पटकलक किएक तँ सिंहेसराक पएर घुच्चीमे पड़ि गेलै, जइसँ ओ धड़फड़ा कऽ खसि पड़ल। मुदा सिंहेसरो हारि नै मानलक। हिम्मत करि कऽ उठि भुटकुमरोकेँ छिटकी लगा खसौलक।

दरबज्जापर बैस रमाकान्त बाबू बखारीक धान-मड़ूआक हिसाब मिलबै छला। हलचलाएल मुसनाकेँ देख रमाकान्त पुछलखिन। मुसनाक बोली साफ-साफ निकलबे ने करैत। मुदा तैयो मुसना कहए लगलैन-

"काका, तेते अनगौंआँ जन सभ आबि गेल अछि जे गौंआकेँ जगहे ने हएत। केतबो मनाही केलिऐ कोइ मानैले तैयारे नै भेल। कनी अपनेसँ चलि कऽ देखियौ।"

कागत-कलम घरमे रखि रमाकान्त विदा भेला। आगू-आगू रमाकान्त आ पाछू-पाछू मुसना। पोखैरसँ फरिक्के रहैथ कि पोखैरमे हल्ला होइत सुनलखिन। मन चौंक गेलैन। मनमे हुअ लगलैन जे अनगौंआँ सभ बात मानत की नहि! अगर काज बन्न कऽ देब तँ गौंओक कमाइ मरत। जँ काज बन्न नै करब तँ अनगौंओ मानबे ने करत! ..विचित्र स्थितिमे रमाकान्त पड़ि गेला। निअरलाहा सभ गड़बड़ भऽ रहल छेलैन।

पोखैरक महारपर रमाकान्तकेँ अबिते चारूभरसँ जन सभ घेर लेलकैन। सभ हल्ला करैत जे जँ काज चलत तँ हमहूँ सभ खटब।

ततमतमे पड़ल रमाकान्त बाबू अनगौंआँ सभकेँ कहलखिन-

“देखू, रौदियाह समए अछि। सभ गाममे काजो अछि आ करौनिहारो छैथे। चलै चलू अहाँ सबहक संगे हमहूँ चलै छी आ हुनको सभकेँ कहबैन जे अपना-अपना गामक बोनिहारकेँ अपना-अपना गाममे काज दियौ।”

अनगौआँ सभ अपन-अपन कोदारि, छिट्टा, टल्ला नेने विदा भेल। रमाकान्तो संगे विदा भेला।

किछु दूर बढ़िते रमाकान्त मुसनाकेँ इशारामे कहि देलखिन जे जखन आन गामक लोक निकैल जाएत तखन गौआँ जनकेँ काजमे लगा दिहक। तैबीच कियो जा कऽ सिंहेसराक घरवालीकेँ कहि देलक जे पोखैरमे तोरा घरबलाकेँ ओंघरा-ओंघरा मारलकौ। घरबलाक मारिक नाओं सुनिते सिंहेसराक घरोवाली आ धियो-पुतो गामेपर सँ गरियबैत पोखैर दिस विदा भेल। मुदा तइसँ पहिनहि अनगौआँ सभ चलि गेल छल। पोखैरमे मटि-कटिया शुरू भेल। तीनू गोरे अनुप एक्केठाम खत्ताक चेन्ह देलक। कोदारिसँ माटि काटि-काटि अनुप पथियामे भरैत आ रधिया दुनू माय-पुत माथपर लऽ लऽ महारपर फेकए। बारह बाजि गेल। रमाकान्त घुमि कऽ आबि पोखैरक पछबरिया महारपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। नजैर पड़िते मुसना दौग कऽ रमाकान्त लग पहुँचल। मुसनाकेँ पहुँचते रमाकान्त आँगुरक इशारासँ बौएलालकेँ देखबैत पुछलखिन-

“ओ के छी। ओकरा साँझमे कहिहक भेँट करैले।”

कहि रमाकान्त घर दिसक रस्ता पकड़लैन। बारह बर्खक बौएलालक माटि उघब देख सभकेँ छगुन्ता लगैत। जाबे दोसर कियो एक बेर माटि फेकैत ताबे बौएलाल तीन बेर फेक अबैत।

बौएलालक काज देख अनुप मने-मन सोचए लगल जे बोनियातीसँ नीक ठिक्का होइतए। मुदा हमरे सोचलासँ की हएत...।

ताबे मुसनो रमाकान्तकेँ अरियाति घुमि कऽ अनुप लग आबि कहलक-

“भैया, मालिक दुनू बापूतकेँ साँझमे भेँट करैले कहलखुन हेन।”

‘मालिकक भेँट करब’ सुनि अनुपक ह्रदैमे खुशीक हिलकोर उठए लगल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि अनुप मुसनाकेँ कहलक-

“जखन मालिक भेँट करैले कहलैन तँ जरूर जाएब।”

सुरूज पच्छिम दिस एकोशिया भऽ गेला। घुमैत-फिरैत मुसना अनुप लग आबि रधियाकेँ कहलक-

“भौजी, अहाँ जाउ। भरि दिनक हाजरी बना देने छी। भानसोक बेर उनैह जाएत।”

रधिया आँगन विदा भेल। अनुप आ बौएलाल काज करिते रहल। चारि बजे सभ गोरे काज छोड़ि देलक। गामपर आबि अनुप दुनू बापूत नहा कऽ खेलक। कौल्हुके गहुमक चिक्कसक रोटी आ अरिकंचन पातक पतौरा बना-पका चटनी बनौने छल। खा कऽ तीनू गोरे–अनुप, बौएलाल आ रधिया–ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगल। अनुप रधियाकेँ कहलक-

“भगवान बड़ीटा छथिन। सभपर हुनकर नजैर रहै छैन। देखियौ एहेन कहात् समैमे कोन चक्कर लगा देलैन।”

गप-सप्प करिते गोसाँइ डुमि गेल। झलफल होइते अनुप दुनू बापूत रमाकान्त ऐठाम विदा भेल। रस्तामे दुनू बापूतकेँ ढेरो तरहक विचार मनमे उठैत आ खतम होइत। ओना, दुनू बापूतक मन गदगद।

दरबज्जापर बैस रमाकान्त मुसनासँ जनक हिसाब करबैत रहैथ। मुसना जनक गिनतियो केने आ नामो लिखने। मुदा अपन नाओं छुटल तँए हिसाब मिलबे ने करैत। अही घों-घाँमे दुनू गोरे लागल। तैबीच दुनू बापूत- अनुप पहुँचल। फरिक्केसँ अनुप दुनू हाथ

जोड़ि रमाकान्तकेँ गोड़ लगि बिछानपर बैसल। बौएलालो गोड़ लगलकैन। बौएलालकेँ देख रमाकान्त बिहुँसैत अनुपकेँ कहलखिन-

“अनुप, तोँ अपन ई बेटा हमरा दऽ दएह।”

मने-मन अनुप सोचए लगल जे ई की कहि देलैन! कनी काल गुम्म रहि अनुप बाजल-

“मालिक, बौएलाल की हमरेटा बेटा छी, समाजक छिऐ। जखैन अपनेकेँ जरूरत हएत लऽ लेब।”

अनुपक उत्तर सुनि सभ छगुन्तामेँ पड़ि गेला। मास्टर साहैब अनुपकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगलखिन। एकटा युवक जे दू दिन पहिने भाग्यक मारल आएल छल, ओहो आशा-निराशामे डुमि गेला। ओइ युवककेँ तीन बर्ख कृषि विज्ञानक पढ़ाइ पूरा भेल छेलैन, एक बर्ख बाँकी रहैन। अपन सभ खेत बेच बेमार पिताक इलाज करौलैन मुदा ठीक नइ भऽ मरि गेलखिन। कर्जा लऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलैन। खरचा दुआरे पढ़ाइयो छुटि गेलैन आ जीबैक कोनो उपैयो ने रहलैन।

जिनगीक कठिन मोड़पर आबि युवक निराश भऽ गेल छला। साल भरि पहिने बिआहो भऽ गेलैन। एक दिस बुढ़ माए आ स्त्रीक भार, दोसर दिस जीबैक कोनो रस्ता नहि। सोगसँ माइयोक देह दिने-दिन निच्चे-मुहेँ हहरल जाइत रहैन। रमाकान्त बाबूक उदार विचार सुनि ओ युवक आएल रहए।

सभ दिन रमाकान्त चारि बजे पिसुआ भाँग पीबै छैथ। दोसर-तेसर साँझ होइत-होइत रमाकान्तकेँ भाँगक निशाँ चढ़ि जाइ छैन। भाँगक आदत रमाकान्तकेँ पितासँ लागल छेलैन।

रमाकान्तक पिता न्यायशास्त्रक विद्वान। ओना, गाममे कम्मे-सम्म रहै छला, बेसी काल बाहरे-बाहर। हुनके प्रभाव रमाकान्तक ऊपर। तँए रमाकान्त जेहने इमानदार तेहने उदार विचारक सेहो।

पोखैरक चर्चा करैत रमाकान्त मुसनाकेँ कहलखिन-

“काल्हिसँ बौएलालकेँ दोबर बोइन दिहक।”

‘दोबर बोइन’ सुनि मुसना गुम्म भऽ गेल। कनी कालक पछाइत बाजल-

“मालिक, एक गोरेकेँ बोइन बढ़ेबै ते दोसरो-तेसरो जन मांगत। ऐसँ झंझट शुरू भऽ जाएत। झंझट भेने काजो बन्न भऽ जाएत।”

काज बन्न होइक बात सुनि रमाकान्त उत्तेजित होइत बजला-

“काज किए बन्न हएत! जे जेतेक काज करत ओकरा ओते बोइन देबइ।”

रमाकान्तक विचारकेँ सभ मुड़ी डोला समर्थन कऽ देलकैन। समर्थन देख गदगद होइत रमाकान्त फेर बजला-

“अखन बौएलालकेँ बोइन बढ़ेलौं, बादमे दू बीघा खेतो देबइ। मास्टर साहैब, अहाँ राति-के बौएलालकेँ पढ़ा दियौ। सिलेट-किताबक खरच हम देबइ।”

खेतक चर्चा सुनि मुसना रमाकान्तकेँ कहलकैन-

“विपन्न तँ बौएलालेटा नहि, गाममे बहुतो अछि?”

मुसनाक प्रश्न सुनि रमाकान्तक ह्रदैमे सत्-जुगक हरिश्चन्द्र पैस गेलैन। उदार विचार, इमानमे गम्भीरता, मनुखक प्रति सिनेह, रमाकान्त बाबूक विवेककेँ घेर लेलकैन। अखन धरि ने सुदिखोर महाजनक चालि आ ने धन जमा करैबला जकाँ अमानवीय बेवहार प्रवेश केने छेलैन। नीक समाजमे जहिना धनकेँ जिनगी नइ बुझि, जिनगीक साधन मानि उपयोग कएल जाइए तहिना रमाकान्तोक परिवारमे रहलैन।

जखन रमाकान्तक पिता गाममे रहै छला आ कियो किछु मांगए

अबैन तँ खाली हाथ किनको घुरए नै दइ छेलखिन, जे रमाकान्तो देखने। सदिखन पिता कहथिन जे जँ किनको ऐठाम पाहुन-परक अबैन आ ओ किछु मांगए अबैथ तँ जरूर देबैन। किएक तँ ओ गामक प्रतिष्ठा बँचाएब छी। गामक प्रतिष्ठा बेकतीगत नै सामूहिक होइत अछि। तैठाम जँ कियो सोचत जे गाम सबहक छिऐ हमरा ओइसँ कोन मतलब, ओ सोलहन्नी गलती हएत। गाममे अधिकतर लोक गरीब आ मुरुख अछि, ओ ऐ प्रतिष्ठाकेँ नइ बुझैए तँए जे बुझनिहार छैथ हुनकर ई खास दायित्व बनि जाइ छैन। ऐ धरतीपर जेतेक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ मनुख धरि अछि, सभकेँ जीबैक अधिकार छइ। तँए, जे मनुख केकरो हक छिनए चाहैए ओ ऐ भूमिपर सभसँ पैघ पापी छी। जनकक राज मिथिला छिऐ तँए मिथिलावासीकेँ जनकक कएल रस्ताकेँ पकैड़ चलक चाही। जइसँ ओ प्रतिष्ठा सभदिन बरकरार रहत।

◌

शब्द संख्या : 2338

दू

सुखी-सम्पन्न रमाकान्त जेहने उदार तेहने इमानदार समाजमे बुझल जाइ छैथ। मरौसी जमीन तँ बेसी नहि मुदा पिताक अमलदारीमे जत्था बहुत भेलैन। पितो किनने तँ नहियेँ रहथिन मुदा पुरस्कार स्वरूप पैघ-पैघ दरबार सभसँ भेटल छेलैन। मधुकान्त अध्यात्म, वैयाकरण आ न्यायशास्त्रक विद्वान छला।

बच्चेसँ मधुकान्तक झूकाउ अध्ययन दिस देख पिता बनारस पढ़ैले पठौलखिन। बनारसमे अध्ययन कऽ मधुकान्त तीन बर्ख काशीक एकटा न्यायशास्त्रक पण्डित ऐठाम अध्ययन केने रहैथ। अध्ययनोपरान्त मधुकान्त पूर्णरूपेण बदैल गेल रहैथ। अध्ययन-अध्यापनक असुविधा दुआरे गाममे मन नै लगैन। ने अपन मनोनुकूल लोक भेटैन आ ने क्रिया-कलापमे सामंजस होइन। तँए जिनगीक अधिक समए गामसँ बाहरे बितबैत रहैथ।

जेहने प्रतिष्ठा मधुकान्तकेँ अपना राज्यमे तेहने आनो-आनो राज्यमे रहैन। भारतीय चिन्तनकेँ बुनियादी ढंगसँ व्याख्या करब मधुकान्तक खास विशेषता रहैन। समाजिक बेवस्थाक गुण-अवगुणक चर्च अनेको लेखमे उद्धृत केने छला, जे असुविधाक चलैत अप्रकाशिते रहलैन। तगमा, प्रशस्ति-पत्र टाँगि दरबज्जाक शोभा बढ़ौने छला। जखन गाममे रहै छला तखन सबहक ऐठाम जा-जा समाजिक

बेवस्थाक कुरीति बुझबथिन। खास कऽ कर्मकाण्डक। समाजमे सभ चाहैन। अपनो जिनगीक बात दोसरकेँ कहथिन आ दोसरोक जिनगीक अध्ययन करैत रहै छला।

छल-प्रपंचक मिसियो भरि गन्ध मधुकान्तक जिनगीकेँ नहि छुलकैन। समाजमे मनुख केना मनुखक जिनगीमे बाधा बनि ठाढ़ अछि आ ओइसँ केना छुटकारा भेटतै, नीक-नहाँति मधुकान्त बुझथिन। सत्तैर जाड़ ऐ धरतीपर कटलैन।

सभ दिन चारि बजे रमाकान्त भाँग पीब, पान खा टहलैले निकैल दोसर साँझ धरि घुमि कऽ घरपर अबै छला। घरपर अबिते हाथ-पएर धोइ कऽ दरबज्जापर बैस दुनियाँ-दारीक गप-सप्प करै छला। टोल-पड़ोसक लोक एका-एकी आबि-आबि बैसए। रंग-बिरंगक गप-सप्पक संग चाहो-पान आ हँसियो-मजाक चलैत। मास्टर साहैब–हीरानन्द–आ युवक–शशि शेखर–सेहो टहैल-बुलि कऽ एला। चाह पीब रमाकान्त शशि शेखरकेँ पुछलखिन-

“बौआ, अहाँ की चाहै छी?”

मजबूरीक स्वरमे शशि शेखर कहलकैन-

“एहेन दल-दलमे हम फँसि गेल छी जे एकटा पएर निकालै छी तँ दोसर धँसि जाइए। ऐसँ केना निकलब?”

कृषि कौलेजमे प्रवेशक प्रतियोगितामे सफल होइते शशि शेखरकेँ सुखद भविसक ज्योति भेटलैन। बेटाक सफलता सुनि पिताक उत्साह हजार गुना बढ़ि गेलैन, जेते जिनगीमे कहियो नै भेल छेलैन। जहिना काँटक गाछमे अमर-फल[1] फड़ैए, गुलाबक फूल फुलाइए तहिना पछुआएल परिवारमे शशि शेखर भेला।

[1] बेल

शशि शेखरक पिता मनमे अरोपि लेलैन जे बीत-बीत कऽ खेत किएक ने बीकि जाए मुदा बेटाकेँ कृषि वैज्ञानिक बना कऽ छोड़ब। शशि शेखरोक मनमे पैघ-पैघ अरमान आबए लगलैन। कृषि वैज्ञानिक होएब, नीक नोकरी भेटत, माए-बापक सिहन्ता कमा कऽ पूरा करब। सिरिफ परिवारेक नहि, जहाँ धरि समाजोक भऽ सकत सेवा करब। मुदा बिच्चेमे समए एहेन मोड़पर आनि देलकैन जे सभ अरमान हवामे उड़ि गेलैन। जहिना बीच धारमे नाह चलौनिहारक हाथसँ करूआरि छुटि गेलापर जहिना खेबनिहारक संग नाहपर सवार यात्रीकेँ होइत तहिना शशि शेखरोकेँ भेलैन। चारि सालक कोर्समे तीन साल पुरला पछाइत पिता दुखित पड़लखिन। चारिम सालक पढ़ाइ छोड़ि शशि शेखर पिताक सेवामे जुटि गेला। एक दिस पिताक इलाज तँ दोसर दिस परिवारक बोझ पड़ि गेलैन। आमदनीक कोनो स्त्रोत नहि, मात्र खेतेटा। खेतो बहुत अधिक नहि। तहूमे अदहासँ बेसी बीकिए गेल छेलैन। शशिकेँ बचपनाक बुधि। जिनगी आ दुनियासँ भेँट नहि। छोट बुधिसँ पैघ समस्याक समाधाने नै होइ छेलैन। अन्तमे निराश भऽ खेत बेच-बेच परिवारो आ पितोक इलाज करबए लगला। बीत-बीत कऽ खेत बीकि गेलैन। जहन कि दुनू समस्या[2] बरकरारे रहलैन। पछाइत पितो मरि गेलखिन। वेवश शशि कर्ज करि कऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलैन। दुनियाँमे केतौ इजोत देखबे नै करैथ। सौंसे दुनियाँ अन्हारे-अन्हार लगए लगलैन।

बेवस भेल शशि मने-मन सोचए लगला जे हम ट्यूशनो पढ़ा कऽ आगू पढ़ए चाहब मुदा परिवारक की दशा होएत। ओतेक तँ ट्यूशनोसँ नहि कमा सकै छी जे अपनो काज चलाएब आ परिवारो चला लेब। अधिक कमाइले अधिक समैयो लगबए पड़त जे सम्भव

[2] परिवार आ इलाज

नइ अछि। अगर जँ सभटा समए ट्यूशनेमे लगा देब तखन अपने कखन पढ़ब आ क्लास केना करब? जहियासँ पिता मुइला तहियासँ माइयोक देह सोगसँ हहरले जा रहल छैन। एक तँ बुढ़ छैथ दोसर सोगसँ सोगाएल सेहो। मनुखमे जन्म लेलापर कियो माए-बापक सेवा नै करए तखन ओ मनुखे की। मनुखक मात्र नकल छी। हम से नै करब। चाहे दुनियाँक लोक नीक कहए वा अधला तेकर हमरा गम नइ अछि। डिग्री लऽ कऽ हम नीक नोकरी करब। नीक दरमाहा भेटत। जइसँ खाइ-पीबै, ओढ़ै-पहिरै आ रहैक सुविधा तँ भेटत, मुदा जिनगी तँ ओतबे-टा नइ अछि। जिनगी-ले ज्ञान, कर्म आ बेवहारक जरूरत सेहो होइए। जिनगी पाबि जँ मनुख प्रतिष्ठित नहि बनि सकल तँ ओ जिनगीए की। आइ जँ हम माएकेँ छोड़ि दिऐन आ हुनका जे कष्ट हेतैन ओइ कष्टक भागी के बनत? दिन-राति हुनका सेवाक जरूरत छैन, उठौनाइ-बैसोनाइसँ लऽ कऽ खुऔनाइ-पिऔनाइ धरि। हम सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जैठाम श्रवणकुमार सन बेटा जन्म लऽ चुकल छैथ।

यएह विचार शशि शेखरक पढ़ाइ छोड़ौलकैन। दुनियाँमे कोनो सहारा नै देख शशि रमाकान्त ऐठाम एला। अपन जीवनक सभ बात हीरानन्दकेँ कहलखिन।

शशिक बातसँ हीरानन्दक हृदए पघिल गेल छेलैन। हीरानन्द मने-मन सोचैत रहैथ जे जे नवयुवक देश सेवामे एकटा खुट्टाक काज करत ओ अपने नष्ट भऽ रहल अछि, तँए ओहेन युवककेँ सोंगर लगा ठाढ़ करैक जरूरत अछि।

सोझमतिया रमाकान्त दोहरबैत शशिकेँ पुछलखिन-

"नीक जकाँ अहाँक बात हम नइ बुझि सकलौं?"

बिच्चेमे मास्टर साहैब रमाकान्तकेँ बुझबैत बजला-

"शशि महाग संकटमे फँसि गेल छैथ। हिनका अहींक मदैतक जरूरत छैन तखने ई उठि कऽ ठाढ़ हेता।"

मास्टर साहैबक बात सुनि धाँइ-दे रमाकान्त बजला-

"अगर हमर मदैतसँ शशिकेँ कल्याण हेतैन तँ जरूर करबैन।"

रमाकान्तक अश्वासनसँ शशिक हृदैमे भोरक सुरूज देख दिनक आशा जगलैन। शशिक मुहसँ हँसी फुटलैन। जिनगीक आमावश्या पूर्णिमामे बदलए लगलैन। गम्भीर भऽ हीरानन्द शशिकेँ कहलखिन-

"शशि, चिन्ता छोड़ू। नव जिनगी दिस डेग उठाउ। ई कर्मभूमि छिऐ। ऐठाम कर्मनिष्ठे लोक मनुखक जिनगी पाबि सकैए।"

हीरानन्दक विचार सुनि शशि उठि कऽ ठाढ़ भऽ हुनक हाथ पकैड़ जिनगी भरिक मित्रताक व्रत लैत बजला-

"जहिना कोनो रोगाएल गाछकेँ माली तामि-कोरि पानि दऽ पुनः नव जिनगी दइए तहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा देलौं। तइले हम ऋणी छी। जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करैत रहब।"

शशिक विचार सुनिते रमाकान्तक हृदैमे कर्णक रूप सन्हिया गेलैन। खुशीसँ गदगद होइत बजला-

"बौआ, हम तँ पढ़ल-लिखल नइ छी। पिताजी गाममे नै रहै छला तँए परिवार सम्हारए पड़ै छल। ओना, कोनो वस्तुक अभाव जिनगीमे ने पहिने भेल आ ने अखन अछि। जहिया पिताजी गाम अबै छला तहिया बुझा-बुझा कऽ कहै छला। अखनो मनमे वएह विचार अछि।"

रमाकान्तकेँ दूटा बेटा, दुनू डाक्टरी पढ़ि मद्रासमे नोकरी करै छैन। कहियो काल दू-एक दिन-ले गाम अबै छैन। दुनू भाँइ मद्रासेमे बिआहो कऽ नेने छथिन। दुनू पुतोहुओ डाक्टरे छथिन। एक परिवारमे

चारि डाक्टर, तँए आमदनियो नीक छैन। दस बर्खक नोकरीमे कमा कऽ ढेर लगा नेने छैथ। अपन तीन मन्जिला मकान मद्रासेमे बनौने छैथ। चारिटा गाड़ी सेहो रखने छैथ। अपन क्लिनिक सेहो बनौने छैथ। बेटा लग जाइक विचार रमाकान्त बहुत दिनसँ करै छैथ मुदा दुरस्तक दुआरे निआरिए कऽ रहि जाइ छैथ।

पुनः रमाकान्त बजला-

"पोखैरोक काज सुढ़िआइए गेल अछि ओकरा सम्पन्न कऽ कऽ मद्रास जाएब। मद्राससँ एला पछाइत अहाँक सभ जोगार कऽ देब। ताधैर अहाँ पत्नियोँ आ माइयोकेँ अहीठाम लऽ अबियौन आ एतै रहू।"

बेरू पहर हीरानन्द आ शशि शेखर टहलैले निकलला। दरबज्जाक सोझे पोखैरक महारक निच्चाँ, उत्तर-पूब कोणमे एकटा भरिगर सरही आमक गाछ अछि। दुनू गोरे ओइ गाछक निच्चाँक दुबिपर बैस गप-सप्प करए लगला। हीरानन्द अपन खेरहा कहए लगलैन-

"मैट्रिक पास केला पछाइत मास्टरी-ले इन्टरभ्यू दइले गेलौं। जखन ओइठाम गेलौं आ देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जे इन्टरभ्यू मात्र देखाबा अछि। मोल-जोल तेजीसँ चलैत रहइ। मुदा सोझे घुमियो जेनाइ उचित नइ बुझि रूकि गेलौं। मनमे आएल जे मोल-जोलक विरोध करी। संगी भँजियाबए लगलौं। मुदा मोल-जोलक पाछू सभ लागल। एक्को गोरे संग दइबला नहि, मनकेँ असथिर केलौं। फेर भेल जे विरोध कऽ हंगामा ठाढ़ कए दिऐ। मुदा दुनू पक्ष एक दिशाहे, सिरिफ हमहींटा कातमे। तामसे देह थरथर कँपैत छल। लाभ-हानिक हिसाब जोड़ी तँ हानियेँ बेसी बुझि पड़ल। मुदा मन तैयो मानैले तैयार नै हुअए। हुअए जे जे बहालीक ऊपरका सीढ़ीपर जे अछि ओकरा चारि धौल लगा दिऐ। दस दिन जहलेमे रहब। फेर हुअए जे जखन

डिग्री आ योग्यता अछि तखन एहेन-एहेन नोकरी केतेको आएत जाएत। फेर हुअए जे हजारो नवयुवक देशक आजादी-ले खून बहौलैन। हमरा बुते एतबो ने हएत। ..समुद्रक लहैर जकाँ मनमे संकल्प-विकल्प उठैत आ शान्त होइत रहल। सभ कियो चलि गेल। हम असगरे रहि गेलौं। अचता-पचता कऽ विदा भेलौं। डेगे ने उठै छल मुदा तैयो घरपर एलौं। घरपर अबिते पत्नी बुझि गेली। मुदा आशा जगबै दुआरे लोटामे पानि नेने आगू आबि कहलैन-

"थाकि गेल हएब। हाथ-पएर धोइ लिअ, थाकैन कमि जाएत। जलखै नेने अबै छी।"

..जाबे हम पएर-हाथ धोलौं ताबे थारी नेने पत्नी पहुँचल छेली। पहिनहिसँ जलखैक ओरियान करि कऽ रखने रहैथ। जलखै खा, दरबज्जेक चौकीपर कुरता खोलि कऽ रखि देलिऐ आ बाँहिक सिरमा बना पड़ि रहलौं। पड़िते मनमे ढेरो रंगक विचार सभ आबए-जाए लगल। मुदा दू तरहक विचार सोझमे आबि गेल जेना ठाढ़ भऽ गेल। पहिल जे शिक्षकेक बहालीटा-मे घूसखोरी छै आकि सभ विभागमे अछि?

..आँखि उठा-उठा सभ दिस देखए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे अहूसँ बेसी आन-आनमे अछि। जखन सभ विभागमे घूसखोरी अछि तखन देश आगू-मुहेँ केना ससरत? निच्चासँ ऊपर धरि एक्के रोग सगतैर पकड़ने अछि!

..मन औना गेल। औनाइत मनमे दोसर विचार उपकल। मनकेँ असथिर केलौं कि अनासुरती आएल- जहिना पुरबा-पछबा हवा धरतीसँ अकास धरि बहैए तहिना ई बेवस्थाक हवा छी। तँए एकरा बदलैक एक्केटा रस्ता अछि बेवस्था बदलब। मुदा बेवस्था बदलब छौरा-छौरीक खेल नइ छी। कठिन काज छी। बेवस्था सिरिफ लोकक

चालिए-ढालि धरि सीमित नइ अछि। ओ अछि मनुखक चालि-ढालिसँ लऽ कऽ ओकर बुधि-विचार, संगे विवेक धरिमे। मनुखकेँ जेहेन बुधि रहै छै ओहने विचार मनमे अबै छै आ जेहेन विचार मनमे अबै छै तेहने ओ काज करैए। तँए जाधैर मनुखक बुधि नहि बदलत ताधैर ओकर क्रिया-कलाप नहि बदैल सकैए। जाधैर क्रिया-कलाप नहि बदलत ताधैर बेवस्था बदलब मात्र बौद्धिक व्यायाम हएत। तँए जरूरत अछि मनुखमे नव बुधिक सृजन कऽ नव क्रिया-कलाप पैदा करब। नव क्रिया-कलाप एलापर नव रस्ता बनत। नव रस्ता बनला बादे कियो नव स्थानपर पहुँचत। नव जगह पहुँचलापर मनुख मनुखक बराबरीमे औत, छोट-पैघ-धनीक-गरीब आ ऊँच-नीचक खाधि समतल हएत।

..तखन भक्क खुगल। भक्क खुजिते हाइ स्कूलक शिक्षक देवेन्द्र बाबू मन पड़ला। देवेन्द्र बाबू, सदिखन छात्र सभकेँ कहथिन-

"मनुखकेँ कखनो निराश नै हेबा चाहिऐ। जखने मनुखमे निराशा अबै छै तखने मृत्यु लग चलि अबै छइ। तँए सदिखन आशावान भऽ जिनगी बितेबाक चाहिऐ। कठिनसँ कठिन समए किएक ने आबए मुदा विवेकक सहारा लऽ कऽ सदिछन आगू डेग उठबैत रहक चाहिऐ।"

..देवेन्द्र बाबूक विचार मन पड़िते संकल्प लेलौं, जहन शिक्षक बनैले डेग उठेलौं तँ शिक्षक बनि कऽ रहब। चाहे जेते विघ्न-बाधा आगूमे उपस्थित हुअए।

..जखन देवेन्द्र बाबू कौलेजमे पढ़ैत रहैथ तखन आजादीक आन्दोलन देशमे उग्र रूप धेने छल। पाँच-सातटा संगीक संग देवेन्द्र बाबू पोस्ट ऑफिसमे आगि लगा देलखिन। पोस्ट-ऑफिस जरि गेलइ। तीन दिनक पछाइत हुनका पुलिस पकैड़ लेलकैन। मारबो

केलकैन आ जहलो लऽ गेलैन। जहल जाइसँ पहिने कनी डरो होइ छेलैन। लोकक मुहेँ सुनने रहथिन जे जहलमे खाइले नै दइ छइ। ऊपरसँ दुनू साँझ मारबो करै छइ। मुदा जहलक भीतर गेलापर देखलखिन जे हजारो देशप्रेमी-क्रान्तिकारी जहलमे छैथ। हुनका सभ-ले जेहने घर तेहने जहल। एक बर्ख ओहो जहलमे रहला। ओइ बर्ख दिनमे ओ बहुत सिखलैन। जिनगीए बदैल गेलैन। आब देवेन्द्र बाबू सिरिफ अपने आ अपना परिवारेटा-ले नइ सोचै छैथ, बल्कि ओ बुझि गेला जे देशक अंग समाज आ समाजक अंग बेकती वा परिवार होइए। तँए, सभकेँ अपनासँ लऽ कऽ देश धरिक सेवा करैक चाहिऐ। जहलसँ निकैल बी.ए.क फार्म भरलैन। बी.ए. पास केलापर हाइ स्कूलक शिक्षक बनला।

हाइ स्कूलमे बहुतो शिक्षक छला मुदा हुनकर जिनगी भिन्न छेलैन। खानगी पढ़ौनीकेँ पाप बुझि किलासमे तेना पढ़बै छला जे विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ैक जरूरते ने रहै छेलइ। स्कूलक पजरेमे टटघर बना असगरे रहै छला। महिनामे एक दिन गाम जा बालो-बच्चाकेँ देखैथ आ दरमहो उठा परिवारमे दऽ अबथिन।"

चौकीपर हीरानन्द पड़ले रहैथ आकि एकटा अनठिया आदमी पहुँचला। ओ नै चिन्हलखिन। मुदा दरबज्जाक लाज रखैले आँगनसँ एक लोटा पानि आनि पएर धोइ कऽ बैसैले कहि आँगन जा पत्नीकेँ कहलखिन-

"एकटा अतिथि एला हेँ, तँए झब-दे चाह बनाउ।"

दरबज्जापर आबि हीरानन्द ओइ आदमीक नाओं-गाओं पुछलखिन। नाओं-गाओं पुछि काजक गप उठैबते रहैथ कि आँगनसँ पत्नी हाथक इशारासँ चाह लऽ जाइले कहलकैन। गपकेँ विराम दैत हीरानन्द दुनू हाथमे चाहक गिलास लऽ दरबज्जापर आबि दहिना

हाथक गिलास अतिथिकेँ देलखिन आ बामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लऽ अपनो पीबए लगला। गप्पो चलैत आ चाहो पीबैत रहैथ तँए पीबैमे देरी लगलैन। चाह सठलो ने छेलैन कि आँगनसँ पत्नी जलखैक इशारा देलखिन। पत्नीक इशारा देख हाथेक इशारासँ थोड़े काल बिलैम जाइले कहलखिन।

..चाह पीब लगले जलखै करब नीक नै होइए। हँ, चाह पीबैसँ पहिने जलखै नीक होइ छइ। चाह पीब पान खा दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। अतिथिकेँ हीरानन्द पुछलखिन-

"केमहर-केमहर अहाँ एलौं?"

"एकटा बुढ़ हमरा गाममे छैथ। समाजिक सम्बन्धे दादी हेती। बिधवा छैथ। बेटो नै छैन। हुनक विचार भेलैन जे बच्चा सभकेँ पढ़ैले एकटा स्कूल बनाबी। चारि बीघा खेत छैन। समाजोक सभ आग्रह केलकैन जे सम्पैत तँ राइ-छित्ती भाइए जाएत, तइसँ नीक जे स्कूल बना दियौ। अखन ओ दू बीघा खेत स्कूलमे देथिन आ दू बीघा अपना-ले रखती। जखन दादी मरि जेती तखन चारू बीघा स्कूलेक हेतइ।"

धियानसँ अतिथिक बात सुनि मुस्कियाइत हीरानन्द बजला-

"बडड् नीक विचार छैन।"

"ओइ स्कूलकेँ चलबैले अहाँकेँ कहए अएलौं।"

"जरूर जाएब। राति एतै बीता लिअ। भोरे चलब।"

"कोसे भरि तँ अछि दोसर साँझ धरि पहुँच जाएब?"

"एते धड़फड़ाउ नहि, हमहूँ थाकल छी। भोरे चाह पीब दुनू गोरे चलब।"

हीरानन्दक आग्रह अतिथि मानि गेला। अँगनाक टाट लगसँ पत्नी दुनू गोरेक सभ बात सुनैत रहथिन।

दुनू गोरे तमाकुल खा लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। घुमैत-फिरैत साँझमे घरपर एला। घरपर आबि दरबज्जापर बैस दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। भानस भेल, दुनू गोरे खा कऽ सुति रहला।

चारि बजिते दुनू गोरेक नीन टुटि गेलैन। जाबे पैखानासँ आबि दतमैन केलैन ताबे आरती[3] चाह बनौलैन। चाह पीबते रहैथ कि सुरूजक उदय भेल।

औझुका सुरूजमे एक विशेष रंगक आकर्षण तीनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। सुरूजक रोशनीमे विशेष आकर्षण छल आकि सबहक ह्रदैमे छेलैन..?

..आरतीक मनमे होइ छेलैन जे पति नोकरी करए जा रहल छैथ तँए विशेष आकर्षण। हीरानन्दक ह्रदैमे जिनगीक एक सीढ़ी बढ़ैक आकर्षण रहैन आ अतिथि-मटकन-क ह्रदैमे अपन बेटाक पढ़ैक आकर्षण।

चाह पीब हीरानन्द झोरामे धोती-तौनी लऽ दुनू गोरे गप-सप्प करैत विदा भेला। गप-सप्पक क्रममे बुझि पड़लैन जे स्कूल बनबैमे रमाकान्तक विशेष हाथ छैन। तँए गाम पहुँचते मटकनकेँ कहलखिन-

"पहिने रमाकान्तसँ भेँट कऽ लेबैन तखन दादी ऐठाम जाएब।"

दुनू गोरे रमाकान्त ऐठाम पहुँचला। साठि वर्षीय रमाकान्त गाइक नादिमे कुट्टी-सानी लगबैत रहैथ। दलानपर दुनू गोरेकेँ देख हाँइ-हाँइ हाथ धोइ लग आबि, बैसैले कहलखिन। हीरानन्द चौकीपर बैसला मुदा मटकन ठाढ़े रहल। मटकनकेँ रमाकान्त कहलखिन-

"तूँ आगू बढ़ि जाह। हम दुनू गोरे पाछूसँ अबै छी। जहन मास्टर साहैब दुआरपर एला तँ बिना जलखै करौने केना जाए देबैन..?"

[3] हीरानन्दक पत्नी

मटकन आगू बढ़ि दादी लग पहुँच सभ समाचार सुनौलक। समाचार सुनि दादीक मन खुशीसँ नाचि उठलैन। मनमे हुअ लगलैन जे आब गामक बच्चा अन्हारसँ इजोत दिस बढ़त।

जलखै कऽ चाह पीब रमाकान्त आ हीरानन्द दादी ऐठाम विदा भेला। दादीक घर थोड़बे हटल। रस्तामे रमाकान्तक मनमे आबए लगलैन जे स्कूल तँ बेकतीगत संस्था नइ छी। समाजिक छी। समाजिक संस्थामे सबहक सहयोग हेबा चाही। धैनवाद भौजीकेँ दइ छिऐन जे अपन सभटा सम्पैत समाजकेँ दऽ रहल छथिन। मुदा हमरो सबहक तँ किछु दायित्व बनैए। तँए अइले किछु करब जिम्मा भऽ जाइए। मास्टर साहैबक भोजन आ रहैक जोगार हम कऽ देबैन। दरमाहा रूपमे खेतक उपजा हेतैन आ समाजक सभ मिलि कऽ जँ स्कूलक घर बना दइ तँ सर्वोत्तम होएत। ..एते बात मनमे नचिते छेलैन कि दादी ऐठाम पहुँच गेला। दादीकेँ रमाकान्त भौजी कहै छथिन। किएक तँ समाजिक सम्बन्धमे दादीक पतिसँ भैयारी रहैन। दादियो मास्टर साहैबक रस्ता तकै छेली। ..भौजी ऐठाम पहुँचते रमाकान्त मटकनकेँ कहलखिन-

“मटकन, स्कूल गामक एक पैघ संस्था छी। तँए समाजो-लोककेँ खबर दहुन। सभ मिलि कऽ विचारि आगूक डेग उठाएब। ओना, भौजीक तियागक प्रशंसा जेते कएल जाए कम हएत। जइ सम्पैत-ले लोक नीच-सँ-नीच काज करैले उतैर जाइए ओइ सम्पैतक तियाग भौजी कऽ रहली अछि। जखन मास्टर साहैब आबिए गेल छैथ तखन हड़बड़ करैक जरूरत नहि। पहिने सौंसे गाममे सभकेँ कहि दहुन आ बेर-मे सभ कियो एकठाम बैस विचारि लेब।”

बेर टगि गेल। समाजक सभ एका-एकी आबए लगला। सबहक मनमे जिज्ञासा रहैन तँए सभ विशेष उत्सुक छला। सबहक

बीचमे रमाकान्त बजला-

“समाजक सभ जनिते छी जे भौजी अपन सभटा सम्पैत बच्चा सभ-ले दऽ रहल छैथ। जइसँ हमरे अहाँक कल्याण हएत। मुदा हमरो अहाँक दायित्व बनैए जे हमहूँ सभ किछु भागीदार बनी। जाधैर हम जीबैत रहब ताधैर शिक्षकक रहैक आ भोजनक प्रबन्ध करैत रहबैन। अहाँ सभ स्कूलक घर बना दियौ।”

रमाकान्तक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलखिन। मुस्कियाइत हीरानन्द बजला-

“घर बनैमे किछु समए लगत, तैबीच अहाँ सभ अपन-अपन बच्चाकेँ पठाउ। हम पढ़ाइ शुरू कऽ देब।”

मास्टरो साहैबक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलकैन। थोपड़ी बन्न होइते दुखिया ठाढ़ भऽ अपन विचार रखैत बाजए लगल-

“खेती करैले केतए-सँ ओते हर-जन अनता। जेते बोनिहार छी सभ मिलि कऽ खेती कऽ देबैन। किएक तँ जहिना मास्टर साहैब हमरा सबहक सेवा करता तहिना तँ हमहूँ सभ मिलि कऽ हुनकर सेवा करबैन।”

◌

शब्द संख्या : 2694

तीन

छह माससँ सोनेलालक स्त्री अस्सक छथिन। परोपट्टाक डाक्टर, बैद, हकीम आ ओझा-गुनी थाकि गेल मुदा सुगियाक रोग एक्केसे होइत गेलै जे उन्नैस नइ भेल। फेदरैत-फेदरैतमे सोनेलाल पड़ल। दिन-राति एक्को क्षण मन चैन नहि। कखनो डाक्टर ऐठाम तँ कखनो दबाइ आनए बजार दौड़ैत रहला। कखनो बच्चा-ले दूध आनए जाथि तँ कखनो माल-जालकेँ खाइ-पीबैले दइ छला। अपन खाइयो-पीबैक सुधि नै रहलैन। कखनो मनतरियाकेँ बजा अनैथ, तँ कखनो साँढ़-पाराकेँ रोमैले खेत जाइ छला। स्त्री मरैक ओते चिन्ता नहि जेते तीन बेटीपर सँ भेल चारिम बेटाक रहैन। कोरैले बेटा जनमै काल सुगियाकेँ दुख पकैड़ लेलकैन। बच्चा जनमै काल तेहेन समए भऽ गेल छेलै जे सोनेलाल डाक्टर ऐठाम नै जा सकला। एक तँ जाड़क मास, दोसर अनहरिया राति। कनी-कनी पछिया हवा सिहकैत। बर्खाक बुन्न जकाँ टप-टप गाछ सभपर सँ पालाक बुन्न खसैत। समए देख सोनेलाल बेवस भऽ गेला। पल्हैनक घर लगमे रहितो बजबए गेल नहि भेलैन। डरो होइत रहैन जे हम ओमहर जाइ आ एमहर हिनका किछु भऽ जाइन। गुप-गुप अन्हार। हाथ-हाथ नइ सुझैत। विचित्र संकटमे सोनेलाल पड़ि गेल छला।

जहियासँ बच्चाक जनम भेलै आ स्त्री बिमार पड़लैन, तहियासँ

सोनेलालक कोनो दशा बाँकी नै रहलैन। मुदा सोनेलालो हिम्मत नै हारला। जे कियो जे दबाइ वा प्रतिकारक कोनो वस्तुक नाओं कहैन ओ आनि सोनेलाल सुगियाकेँ देथिन। अन्तमे पाँच कट्ठा खेत पाँच हजारमे भरना लगा लहेरियासराय जाइक विचार कऽ लेलैन। बच्चो सभ छोट-छोट तँए घरो आ बाहरो सम्हारैले आदमीक जरूरत भेलैन। घर सम्हारैले सारि आ लहेरियासराय जाइले बहिनकेँ बजौलैन। स्त्रीक दूध सुखि गेलैन तँए बच्चाकेँ बकरीक दूध उठौना केने छला। बहिनक छोटका बच्चा नमहर भऽ गेल छेलै तँए ओकरो दूध सुखि गेल। मुदा बच्चाक दशा देख बहिन मौसरी दालिक झोड़ो पीबए लगल आ बच्चोकेँ छाती चटबए लगल, जइसँ कनी-कनी दूध पोनगए लगलै।

लहेरियासराय जाइक तैयारीमे सोनेलाल लगि गेला। मालक घरमे टाँगल खाटकेँ उताइर झोल-झाल झाड़ए लगला। खाटक झोलो साफ केलैन आ केतौ-केतौ जे जौड़ टुटल रहै ओकरो जोड़ि-जोड़ि बन्हलैथ। बहिनकेँ सोनेलाल कहलखिन-

“दाइ, नुआ बिस्तर आइए खिंच लएह, भोरके गाड़ी पकैड़ कऽ चलैक छह। दस दिन-जोकर चाउरो-दालि लैये लेब। चाउर तँ कोठीएमे छह, खाली दालि दर्ड़ैरए पड़तह। सभ ओरियान आइए कऽ कऽ रखि लएह।”

बहिन कहलकैन-

“भैया, तोहर कोन-कोन कपड़ा साफ कऽ देबह?”

“दाइ, एक जोड़ धोती, अँगा आ चद्दैर हम्मर आ तूँ अपनो कपड़ा खिंच लीहह। अखन तँ एकटा धोती पहिरनहि छी। अलगन्नीपर धोती छह, ओकरा अखने खिंच दहक जइसँ नहाइ बेर तकमे सुखि जाएत। नहा कऽ ओकरा पहिर लेब आ पहिरलहा धोतीकेँ खिंच लेब।”

सोनेलालक सारि सेहो लगेमे ठाढ़। सारिकेँ कहलखिन-

“अहाँ दुआर-दरबज्जासँ केतौ बाहर नै जाएब। अँगने-घरमे बच्चो सभकेँ रखब आ मालो-जालकेँ खाइ-पीबैले देबइ। समए साल खराप अछि, तोहूमे ऐ गाममे देखते छिऐ जे नव-कबरिया छौरा सभ भाँग-गाँजा पीब लेत आ अनेरो लोककेँ गरियबैत रहत। जँ कियो उकट्ठे कऽ दिअए।”

बहिन कोठीसँ मौसरी आ चाउर निकालि अँगनेमे बिछानपर सुखैले देलक। नवकुटुए चाउर तँए सूरा-फाड़ा नहियेँ लगल छेलइ। बहिन कपड़ा खिंचए गेल आ सारि मौसरी दर्ड़ए लगली। सोनेलाल खाट ठीक कऽ दूटा बरहा दुनू भागक पाइसमे बन्हलैन। कपड़ा खिंच बहिन सोनेलालकेँ पुछलकैन-

“भैया, केते चाउर-दालि लऽ जेबहक?”

“दाइ, दुइए गोरे खेनिहार रहब ने, तइ हिसाबसँ चाउरो आ दालियो लऽ लेब। तीमन-तरकारी ओतै किनब।”

बहिन-

“भैया, नून तँ ओतौ कीनि लेब मुदा मिरचाइ, हरदी आ करुतेल एतैसँ नेने जाएब। एकटा थारी, एकटा लोटा आ दुनू छोटकी डेकची सेहो लैये लेब। डेकचीए-मे सभ समान लऽ लेब, किएक तँ फुट-फुट कऽ लेलासँ अनेरे नमहर मोटरी भऽ जाएत। खाइयोक चीज-वौस रहत आ लत्तो-कपड़ा रहत मुदा तैयो मोटरी नम्हरे भऽ जाएत।”

सोनेलाल-

“मोटरी नम्हरे हएत तँ की करबै। जखन गाड़ामे ढोल पड़ल अछि तखन तँ बजबै पड़त किने।”

लहेरियासराय जाइक तैयारी करैत बहिन मने-मन सोचैत जे

भगवान भारी विपैतमे भैयाकेँ फँसा देलखिन। जँ कहीं भौजी मरि जेतै तँ भैया फटो-फन्नमे पड़ि जाएत। असगरे की करत। बच्चो सभ लिधुरिए छइ। केना खेती सम्हारत, धिया-पुताकेँ देखत आकि माल-जालकेँ देखत! हे भगवान! एहेन विपैत सात-घर मुद्दैयोकेँ नै दिहक। हमहीं की करबै। हमहूँ तँ असगरूए छी। हमरो चारिटा धिया-पुता आ माल-जाल अछि। छी ऐठीम आ मन टाँगल अछि गामपर। मुदा एहेन बेरमे जँ भैयोकेँ नै देखबै तँ लोक की कहत। लोके की कहत, अपने मनमे केहेन लगत..!

साँझ पड़िते सोनेलाल टीशन जाइले दूटा जन ताकए गेला। ओना तँ अपनो दियाद-वाद छैन मुदा बेरपर केकर के होइ छइ। अचताइत-पचताइत सोनेलाल फुद्दिया ऐठाम पहुँचला। फुद्दियाक जेहने नाओं तेहने काज। सोनेलालकेँ देखते पुछलकैन-

“केमहर-केमहर एलह, भाय?”

“तोरेसँ काज अछि।”

“की?”

“काल्हि, भोरका गाड़ी पकड़ब। रेखिया माएकेँ लहेरियासराय लऽ जेबइ। अपनेसँ चलैयो-फिरैवाली ने अछि, खाटपर लऽ जाए पड़त। तँए दू गोरेक काज अछि।”

फुद्दिया बाजल-

“तोरा जँ हमर खूनक काज हेतह तँ हम सेहो देबह। तोहर उपकार हम जिनगी भरि नै बिसरब। हमरा ओहिना मन अछि जे बेटी विदागरी करैले तीन दिनसँ जमाए बैसल रहैथ आ कपड़ा दुआरे विदागरी नै करिऐ। मगर जहिना आबि कऽ तोरा कहलियह तहिना तोहूँ रूपैआ निकालि कऽ देने रहह। एहेन उपकार हम बिसैर जाएब।”

सोनेलाल-

“समाजमे अहिना सबहक काज सभकेँ होइ छै आ होइत रहतै। जँए तोरापर भरोस छल तँए ने एलौं। भोरेमे गाड़ी छइ। गाड़ी अबैसँ एक घन्टा पहिने घरपर सँ विदा हएब।”

“बड़ बढ़ियाँ, चारिए बजेमे हमरा सभ दिन नीन टुटि जाइए। हम दुनू भाँइ चलि एबह। तोहूँ अपन तैयारीमे रहिहह। भऽ सकैए जे कहीं नीन नै टुटए तँए एक लपकन चलि अबिहह।”

फुद्दी ऐठामसँ आबि सोनेलाल बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ, सभ चीज एकठीन सेरिया कऽ रखि लएह, नहि तँ जाइ काल हड़बड़मे छुटि जेतह।”

सोनेलालक बात सुनि बहिन मने-मन सोचए लगल जे कोनो चीज छुटि तँ ने गेल। गुनधुन करैत बाजल-

“भैया, एक बेर फेरसँ सभ चीजक नाओं कहि दएह। अखने मिला कऽ सेरिया लेब।”

दुनू भाए-बहिन एक-एक करि कऽ सभ वस्तुक नाओं लेलैन। सभ वस्तु देख सोनेलाल बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ, चारि बजे उठैक अछि जँ भानस भऽ गेलह तँ अखने खाइले दऽ दएह।”

हाथ-पएर धोइ कऽ सोनेलाल खाइले बैसला। चिन्तित मन, तँए खाएले ने होनि मुदा तैयो जी-जाँति कऽ कहुना-कहुना चारि कौर खेलैथ। खा कऽ मालऽ घर गेला। माल-जालकेँ खाइले दऽ आबि कऽ सुति रहला। बहिनो खा कऽ बच्चाकेँ छाती लगा सुति रहल। सुतले-सुतल बहिन भौजाइकेँ पुछलक-

“भौजी, मन नीक अछि किने?”

“हँऽऽ।”

ओछाइनपर पड़ल सोनेलालकेँ नीने ने होइन। विचित्र द्वन्द्वमे पड़ल छला। एक दिस भोरे उठै दुआरे सुतए चाहैथ तँ दोसर दिस पत्नीक चिन्ता नीनकेँ आबै ने दैन। कछ-मछ करैत सोनेलालकेँ केत्ता-रातिमे हाँफी भेलैन, नीन एलैन। मुदा लगले चहा कऽ उठि बहिनकेँ पुछलखिन-

“दाइ, भोर भऽ गेल?”

बहिनो जगले छल, बाजल-

“भैया, अखने तँ खा कऽ कड़ देलौं हेन। लगले भोर केना भऽ जेतइ?”

तीन बजे दुनू भाँइ फुद्दिया आबि डेढ़ियापर सँ सोर पाड़लक-

“सोनेलाल भाय? हौ सोनेलाल भाय? अखन तक सुतले छह? उठह-उठह, भुरूकबा उगि गेलह!”

फुद्दियाक अवाज सुनि दुनू भाए-बहिन धड़फड़ा कऽ उठल। आँखि मिड़िते सोनेलाल बाहर निकैल फुद्दीकेँ कहलखिन-

“की कहियह, बड़ी रातिमे नीन भेल। भने तूँ आबि कऽ जगा देलह। हम चीज-वौस निकालै छी आ तूँ खाटकेँ सुढ़ियाबह।”

अन्हारक दुआरे बहिन दूटा डिबिया नेसलक। एकटा डिबिया ओसारक खुट्टा लग रखलक आ दोसर- घरमे। खाट निकालि फुद्दी पाइसमे बान्हल बरहाकेँ अजमा कऽ देखलक जे सक्कत अछि किने। दुनू कात पाइसमे बान्हल बरहाकेँ देख फुद्दी सोनेलालकेँ कहलकैन-

“भाय, बरहा तँ ठीक अछि। बाँसक टोन कहाँ छह?”

बाँसक टोन घरक पँजरेमे राखल। टोनकेँ ओंगरीसँ देखबैत सोनेलाल कहलखिन-

“हइ-वैह छह।”

टोन आनि फुद्दी डिबियाक इजोतमे देखए लगल जे गिरह सभ छीलल छै कि नहि। छीलल छेलइ। खाटपर बिछबैले सोनेलाल एक पाँज पुआर आनि बजला-

“फुद्दी, तोरा अँटियबैक लूरि छह कनी पुआर सेरिया कऽ चौरस कऽ कऽ बिछा दहक।”

पुआरकेँ सेरिया, फुद्दी बाजल-

“भाइ, ऐपर बिछेबहक की?”

सोनेलाल घरसँ शतरंजी आ सिरमा आनि फुद्दीकेँ देलखिन। बिछान सेरिया फुद्दी बाजल-

“भाय, रस्तामे कान्ह बदलै काल कहीं भौजी गिर-तिर ने पड़ैथ तँए पँजरोमे दुनू भागसँ डोरी बान्हि देबइ?”

फुद्दीक विचार सोनेलालकेँ जँचलैन। कनी गुम्म भऽ बजला-

“की कहियह फुद्दी, दुख पड़लापर मनो वौआ जाइ छइ। तोहूँ की अनाड़ी छह जे नइ बुझबहक। जे नीक बुझि पड़ह, से करह।”

खाटपर रोगीकेँ चढ़ा दुनू भाँइ फुद्दी कान्हपर उठौलक। कान्हपर उठैबते सोनेलालकेँ मन पड़लैन, बजला-

“फुद्दी, घरमे तँ धिए-पुते रहत, कियो चेतन नहियेँ अछि। सारि सेहो आएल अछि, ओहो अनठीए अछि तँए तूँ राति-के एतै खैहह आ सुतिहह।”

‘बड़ बढ़ियाँ’ कहि फुद्दी आगू बढ़ल। चाउर-दालि आ बरतन-बासनक मोटरी माथपर लऽ सोनेलालो निकलला। बच्चाकेँ छाती लगौने बहिनो निकलली। डेढ़ियापर अबिते सुगिया खाटेपर सँ बजली-

“कनी अँटैक जाउ।”

फुद्दी ठाढ़ भऽ पुछलकैन-

“किए रोकलौं?”

खाटेपर सँ सुगिया बजली-

“हे साधु-गुरु, अगर निकेना घुमि कऽ आएब तँ पचास मुरतेक भनडारा करब।”

फुद्दी खाट उठा विदा भेल। रस्तामे कियो किछु ने बजैत। मने-मन सभ, सभ रंगक बात सोचैत। फुद्दी सोचैत जे भगवानो केहेन बेइमान अछि जे सोनेलाल भाय सन सुधा आदमीकेँ एहेन विपैत देलखिन।

सोनालाल सोचैथ जे तीन बेटीपर बेटा भेल, जँ घरवाली मरि जाएत तँ बेटो हाथसँ चलि जाएत। चुमौन जँ करबो करब तइसँ बेटाक कोन गारंटी। जँ कहीं बेटीए भेल तखन तँ खनदानोक अन्त हएत आ जिनगी भरि अपनो बिआहे दानक बनर-फाँसमे पड़ल रहब...।

बहिन सोचैत जे जँ कहीं भौजी मरि जेती तँ जिनगी भरि भैयाकेँ दुखे-दुख होइत रहतै।

स्टेशन पहुँच सोनेलाल मोटरी रखि गाड़ीक भाँज लगबए गेला। टिकट कटैत देख बुझि पड़लैन जे गाड़ी अबैमे लगिचा गेल अछि। हमहूँ टिकट कटाइए लइ छी। टिकट कटौलैन।

कनीए कालक पछाइत गाड़ी आएल। तीनू गोरे मिलि कऽ सुगियाकेँ गाड़ीमे चढ़ौलैन। सोनेलाल गाड़ीए-मे रहला। मोटरी उठा कऽ फुद्दी देलकैन। मोटरी रखि सोनेलाल बहिनक कोरासँ बच्चाकेँ अपना कोरामे लेलैन। बहिनो चढ़ल। गाड़ी खुजिते दुनू भाँइ फुद्दी खाट उठा घर दिस विदा भेल।

गाड़ी दरभंगा पहुँचल। छोटी लाइन दरभंगे तक चलैए। दू घन्टाक पछाइत फेर घुमि कऽ गाड़ी निर्मलीए जाएत। गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगल। मगर सोनेलाल सबतूर बैसले रहला। मनमे कोनो

हड़बड़ी नहियेँ रहैन जखन सभ यात्री उतरल तखन सोनेलाल सीटपर सँ उठि बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ! तूँ एतै रहह, हम कोनो सबारी भँजियौने अबै छी।”

कहि सोनेलाल गाड़ीसँ उतैर प्लेटफार्मक बाहर एकटा टेम्पू लग पहुँचला। ड्राइवर निच्चाँमे ठाढ़ भऽ पसिंजर सभकेँ तकै छल। सिरसिराइत सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

“भाय, हमरा डाकडर ऐठाम जेबाक अछि, चलबह?”

सोनेलालक बोलीसँ ड्राइवर बुझि गेल जे देहाती आदमी छी तँए एना बजला। मुदा सोनेलालक प्रति ड्राइवरक आकर्षण बढ़ि गेलैन। असथिरसँ पुछलखिन-

“रोगी कहाँ छैथ?”

“गाड़ीए-मे।”

“बजौने अबियौन।”

“अपने पएरे अबैवाली नै छैथ। पकैड़ कऽ आनए पड़त।”

गाड़ीकेँ सोझ कऽ ड्राइवर सोनेलालक संग प्लेटफार्मपर एला। गाड़ी लग पहुँच ड्राइवर रोगी आ समान देख मने-मन विचारलैन जे एक आदमीक काज आरो पड़त। प्लेटफार्म दिस नजैर उठा कऽ हियाबए लगला। गाड़ी साफ करैले दू गोरेकेँ अबैत देख सोर पाड़ैत बजला-

“भैया?”

भैया सुनि झाड़ूबला आँखि उठौलक तँ ड्राइवरकेँ देखलक। ड्राइवरकेँ देखते लफैर कऽ लगमे आबि बजला-

“की?”

ड्राइवर बजला-

“भाय, एकटा दुखित महिला ऐ कोठलीमे छैथ, हुनका उताइर कऽ टेम्पूमे बैसा दियौन।”

झाड़ू रखि दुनू झाड़ूओबला आ ड्राइवरो सुगियाकेँ उताइर टेम्पू दिस बढ़ला। सोनेलाल मोटरी लेलैन आ बहिन बच्चाकेँ कन्हा लगा विदा भेल। सुगियाकेँ चढ़ा कऽ झाड़ूबला गाड़ी साफ करैले घुमए लगल। दुनू झाड़ूबलाकेँ रोकि सोनेलाल एकटा दसटकही निकालि दिअ लगलखिन। रूपैआ देख, अधबेसू झाड़ूबला कहलकैन-

“भाय, हमहूँ रेलबेमे सरकारी नोकरी करै छी। दरमाहा पबै छी। अहाँक मदैत केलौं। अखन जइ मोसीबतमे अहाँ छी, ओइमे हमरा देहो आ रूपैओसँ मदैत करक चाही। मुदा गरीब छी, कहुना-कहुना कमा कऽ गुजर कऽ लइ छी। किएक तँ अहूँ बुझिते हेबै जे सभ दुख गरीबेकेँ होइ छइ। धनीक लोक सोनाक मुरूतकेँ खोआ-मलाइ चढ़ा धरम करैए। हमर भगवान यएह मरल-टुटल लोक छैथ। हम सेवा केलौं। भगवान करैथ जे हँसी-खुशीसँ अहाँ घर जाइ।”

झाड़ूबलाक बात सुनि सोनेलाल अचम्भित भऽ गेला जे जेकरासँ लोक छूत मानैए ओकर आत्मा केतेक पवित्र अछि!

टेम्पू आगू बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

“डरेबर साहैब, हम अनभुआर छी। कहियो ऐठाम नै आएल छी। अहाँ एतए रहै छी, सबटा बुझल-गमल अछि। तेहेन डाकडर लग चलू जे हमरा रोगीकेँ छुटि जाए।”

ड्राइवर कहलकैन-

“बड़ बढ़ियाँ।”

मने-मन ड्राइवर सोचए लगला- अस्पतालमे भरती करौनाइ नीक नै हेतैन। एक तँ अस्पतालमे बेवस्थो बढ़ियाँ नै छै, दोसर जेकरे

लागि-भागि छै तेकरे सभकेँ सभ सुविधो भेटै छइ। तँए सभसँ बढ़ियाँ डाक्टर बनर्जी लग लऽ चलिऐन। डाक्टर बनर्जी रिटायर भऽ अपन घरो आ क्लिनिको बनौने छैथ। डाक्टरो नीक आ मनुखो नीक छैथ।

बारह बाजि गेल। डाक्टर बनर्जीक पहिल पाली आठ बजे भिनसरसँ बारह बजे तक आ दोसर पाली चारि बजेसँ सात बजे साँझ धरि होइ छैन। सभ रोगीकेँ देख डाक्टर बनर्जी डेरा जाइक तैयारी करिते रहैथ, टेम्पूकेँ ड्राइवर सोझे फाटकसँ भीतर ओसार लग लऽ गेल। टेम्पू देख डाक्टर बनर्जी फेर बैस रहला। टेम्पू रोकि ड्राइवर उतैर कऽ सोझे डाक्टर बनर्जी लग जा कहलकैन-

"डाक्टर साहैब, रोगी अपनेसँ चलै-फिरैवाली नै छैथ, तँए पहिने एकटा डेरा दियौन।"

आँखिक इशारासँ डाक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन। बगलेमे अपन डेरा रहैन। कम्पाउण्डर जा कऽ एकटा कोठरी खोलि कुँन्जी सोनेलालकेँ दऽ देलकैन। कम्पाउण्डर घुमि कऽ आबि, नोकरकेँ संग कऽ स्ट्रेचरपर सुगियाकेँ लऽ जा दुजनियाँ चौकीपर सुता देलकैन। स्ट्रेचर रखि कम्पाउण्डर डाक्टर बनर्जीकेँ कहलकैन-

"सभ बेवस्था कऽ देलिऐन।"

डाक्टर बनर्जी आगू-आगू आ कम्पाउण्डर, ड्राइवर आ सोनेलाल पाछू-पाछू लगमे गेला। सुगियाकेँ देखते डाक्टरकेँ रोग परखमे आबि गेलैन, मुदा आरो मजगूती लेल किछ-किछ पुछए लगलखिन।

हतास मन सोनेलालक। मुँह सुखाएल। आँखि नोराएल। बहिनक आँखिसँ नोरक ठोप खसैत। डाक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ सूइ लगबैले कहलखिन। कम्पाउण्डर सूइ आनए गेल। सोनेलाल डाक्टर बनर्जीकेँ पुछलखिन-

"डागडर साहैब, रोगीक दुख छुटतै किने?"

सोनेलालक प्रश्न सुनि डाक्टर बनर्जीक हृदए पघिल गेलैन। उत्साह दैत सोनेलालकेँ कहलखिन-

"चौबीस घन्टाक भीतर रोगी टहलए-बुलए लगती। अखन एकटा सुइया दइ छिऐन। पाँच बजे तक सूतल रहती। उठेबैन नहि। अपने नीन टुटतैन। नीन टुटलापर कुर्ड़ा-आचमन करा चाह बिस्कुट देबैन।"

ताबे कम्पाउण्डर आबि सुगियाकेँ सूइ लगौलक। सूइ पड़िते सुगियाकेँ नीन आबि गेल। डाक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"आब अहाँ सभ खाउ-पीबू-गे।"

डाक्टर चलि गेला। ड्राइवर सोनेलालकेँ किछ-किछ बुझबैत कहलखिन-

"पानिक कल बगलेमे अछि। भानस करैले चुल्हो अछिए। अपने भानस करब। बाहर चलू, दोकान देखा दइ छी। ऐसँ बाहर नै जाएब। लुच्चे-लम्पट बेसी अछि। जेबीसँ पाइ निकालि लेत, तँए जेतबे काज हुअए तेतबे पाइ मुट्ठीमे नेने जाएब आ सामान कीनि लेब। आब हम जाइ छी। ऐठाम कोनो चीजक डर नै करब। सभ भार डाक्टर साहैबकेँ छैन।"

पाँच बजिते सुगिया आँखि खोलली। सुगियाक लगेमे सोनेलालो आ बच्चाकेँ कोरामे नेने बहिनो बैसल। आँखि खोलिते सुगिया सुतले सूतल बजली-

"किछु खाइक मन होइए।"

सुगियाक बात सुनिते सोनेलालकेँ मन पड़लैन जे डाक्टरो साहैब कहने रहैथ। उठि कऽ चाह-बिस्कुट आनि सुगिया लग रखलैन।

कलपर सँ लोटामे पानि आनि कऽ कुर्ड़ा करैले देलखिन। बैसले-बैसल सुगिया कुर्ड़ा करि चाहेमे डुमा-डुमा बिस्कुट खेलैन। चाह-बिस्कुट खा मुँह पोछलैन। सुगियाकेँ मुँह पोछिते सोनेलाल पुछलखिन-

"मन केहेन लगैए?"

"कनी हल्लुक लगैए।"

सोनेलालो आ बहिनोक मनमे खुशी आएल। मने-मन बहिन भगवानकेँ कहए लगल-

"हे भगवान, कहुना भौजीकेँ नीक कऽ दियौन!"

सुगियाकेँ सुधार हुअ लगल। तेसर दिनसँ बुलए-टहलए लगली। दिनमे दू बेर डाक्टरो साहैब आबि-आबि देखैत रहथिन। सभ तरहक तरद्दुत सोनेलाल करैले हरिदम तैयार।

दसम दिन सुगियाकेँ डाक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलखिन। सोनेलाल कम्पाउण्डरसँ सभ हिसाब केलैन। जेते हिसाब सोनेलालकेँ भेलैन तइसँ पाँच साए रूपैआ अधिक लऽ डाक्टर साहैबक आगूमे रखि देलकैन। रूपैआ गनि डाक्टर साहैब फजिलाहा पाँचो साए रूपैआ घुमबैत बजला-

"गनैमे पाँच साए बेसी आबि गेल। ई पाँचो साए रखि लिअ।"

डाक्टर साहैबक बात सुनि सोनेलाल कहलकैन-

"गनैमे गलती नै भेल, पाँच साए अहाँकेँ खुशनामा दइ छी।"

'खुशनामा' सुनि डाक्टर बनर्जी गुम्म भऽ गेला। मनमे एलैन, वेचाराक बगए-वाणि कहैए जे पैंच-उधार करि कऽ आएल हएत तखनो देखू उद्गार! हमरा कोन चीजक कमी अछि जे ऐ वेचाराक फाजिल पाइ छुबै? मन पड़लैन, जमीनदारीक समैक पुनाह...।

जमीनदार सभ सालमे एक बेर पुनाह करै छला। जमीनदारक

कचहरीमे पुनाह होइ छेलइ। पुनाह होइसँ पनरह दिन पहिनहि रैयत सभकेँ जानकारी दऽ देल जाइ छल। जमीनदार दिससँ मोती-चूड़ बनौल जाइ छेलइ। एक रूपैआमे एक लड्डू देल जाइ छेलइ। रैयतोमे दू विचारक, एक ओ छल जेकरा खाली अन्नेक आमदनी छेलइ। ओइ तरहक रैयतक हालत कमजोर छेलइ। मगर दोसर तरहक जे रैयत होइ छल ओकरा अन्नक संग-संग नगदो आमदनी छेलइ। जेना कोनो-कोनो जातिकेँ दूध-दहीक, तँ कोनो-कोनो जातिकेँ तीमन-तरकारीक आ कोनो जातिकेँ पानक तँ कोनो-जातिकेँ छोट-छोट कौल्ह इत्यादि..। पुनाह धर्मसँ जोड़ल शब्द अछि। धार्मिक भावना सबहक मनमे रहै छेलै तँए एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैले मने-मन प्रतियोगिता करै छल। एकटा लड्डूक दाम मोसकिलसँ दू पाइ होइत हेतइ। किएक तँ आठ अने चिन्नी आ रूपैआमे चारि सेर खेरही वा आन कोनो अन्न, जेकर लड्डू बनै छेलइ। प्रतियोगिता दू तरहक होइ छेलइ। पहिल, बेकती-विशेषमे आ दोसर, जाति-विशेषमे। लोक खूब खुशी रहै छल। गामे-गाम मालगुजारीसँ बेसी, पुनाहमे जमीनदार रूपैआ असुल कऽ लइ छला। जइ समाजमे मालगुजारीक चलैत लोकक खेत निलाम होइ छेलै, ओइ समाजमे पुनाहक नाओंपर लूट सेहो चलै छेलइ। वएह बात डाक्टर बनर्जीकेँ मन पड़लैन। हँसैत डाक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"अहाँ, खुशी भऽ ऐठामसँ जा रहल छी यएह हमर खुशनामा भेल। भगवान करैथ परिवार फड़ए-फुलए।"

तीनू गोरे गामक रस्ता धेलैन। बच्चाकेँ सुगिया कोरामे नेने आ बहिन बरतनक मोटरी माथपर नेने आ खालीए देहे सोनेलाल। सभ कियो दरभंगा स्टेशन आबि गाड़ी पकड़लैन।

अपना स्टेशनमे उतैर तीनू गोरे हँसी-खुशीसँ गाम दिसक रस्ता

धेलैन। रेलबे कम्पाउण्डसँ निकैल सुगिया सोनेलालकेँ कहलकैन-

"दरभंगा जाइत काल पचास मुरते साधुक भनडारा कबुला केने रही। कबुला-पाती उधार नै रखक चाही। काल्हिखन ओहो कबुला पुराइए लेब।"

सोनेलालोक मन खुशी रहैन। चाउर-दालि घरेमे अछि। रूपैओ किछु उगरले अछि। मुस्कियाइत सुगियाकेँ कहलखिन-

"काल्हिए भनडारा नै सम्हरत। दही पौरैक अछि, हाटसँ तीमन-तरकारी, नून-तेल आनए पड़त। चारि-पाँच दिनमे भनडारा कए लेब। अखन दाइयो आएले अछि।"

दाइक नाओं सुनि बहिन बाजल-

"भैया, तेहने गड़मे पड़ि गेल छेलह तँए अपन सभ किछु छोड़ि कऽ छिअ। तूँ नइ बुझै छहक जे हमरो कियो दोसर करताइत नइए। काल्हि हम चलि जेबह।"

सोनेलालक मन गदगद रहबे करैन। जहिना चुल्हिपर चढ़ौल पानि देल बरतनमे निच्चाँसँ आगिक ताउ लगिते निचला पानि गर्म भऽ ऊपर-मुहेँ उठैए तहिना सोनेलालक मन खुशीसँ नचैत रहैन। स्टेशनसँ निकैल बजला-

"अहाँ दुनू गोरे ऐठाम बैसू। लगले हम चीज-वौस किनने अबै छी।"

सुगियो आ बहिनो, रस्ते कातमे आमक गाछक निच्चाँमे बैसली। सोनेलाल स्टेशन दिस विदा भेला। स्टेशने कातमे आठ-दसटा दोकान छेलइ। एकटा दोकान माछक, दोसर मुरगी आ अण्डाक, एकटा सुधा दूधक, एकटा चाहक, एकटा पानक आ पान-छहटा तरकारीक।

..सोनेलालक मनमे एलैन जे पान-सात रंगक तरकारियो, दूधो आ राहैरक दालियो कीनियेँ लेब। किएक तँ छह माससँ ने भरि पेट अन्न खेलौं आ ने कहियो मन असथिर रहल। तँए आइ राति अपनो सभ परिवार आ फुद्दियो दुनू भाँइकेँ नौत दऽ खुआ देबइ।

रेलबेक कम्पाउण्डमे जे तरकारी, दूध, माछ इत्यादिक दोकान छेलै ओ स्थायी नहि। साधारण छपरी टाँगि-टाँगि दोकान चलबैत। कियो दोकानदार रेलबेसँ दोकानक पट्टो नहि बनौने। स्टेशनेक स्टाफ, दोकानदारकेँ दोकान लगबए देने छै, जइसँ बट्टीक बदला सभकेँ परिवार-जोकर तरकारी सभ दिन भऽ जाइ छइ। जहिया कहियो रेलबेक अफसरक आगमन होइत, तइसँ पहिनहि स्टाफ दोकानदार सभकेँ कहि दइ छेलइ। अपन-अपन छपरी सभ हटा लइ छल।

दोकान आ रेलबेक बीच मोड़पर ठाढ़ भऽ सोनेलाल सोचए लगला जे दोकानमे जे राहैरक दालि बिकाइए ओ अरबा रहैए। तँए दालिकेँ उलबए पड़त। घरमे तँ लोक पहिने राहैर उला लइए। बिनु उलौल राहैरक दालि तँ खेसारीए जकाँ होइए। मुदा उलौला पछाइत आमील देल राहैरक दालि तँ दालिए होइए! सभसँ नीक...।

लटखेना दोकान पहुँच सोनेलाल एक किलो राहैरक दालि आ अदहा किलो चिन्नी किनलैन। दुनूक दाम दऽ तरकारीबला लग आबि सात-आठ रंगक तरकारी सेहो किनलैन। तड़ै-जोकर गोलका भाँटा-भाँटिन, गंगाकातक बड़का परोर, हैदराबादी ओल टेबि कऽ किनलैन। दू किलो सुधा दूध सेहो लेलैन। सभ समानकेँ गमछामे बान्हि, हाथमे लटकौने घुमि कऽ सुगिया लग एला...।

गमछामे बान्हल समान देख बहिन पुछलकैन-

"भैया, की सभ कीनि लेलहक?"

बहिनक मनमे भेलै जे धिया-पुता सभ-ले भरिसक लाइ-मुरही

कीनि लेलैन। मुदा मोटरी नमहर तँए पुछलकैन। बहिनक बात सुनि सोनेलाल हँसैत बाजला-

"दाइ, खाइ-पीबैक समान सभ किनलौं। आइ सभ परानी मिलि नीक-निकुत खाएब। वेचारा फुद्दियो, नोकर जकाँ राइत-के घरक ओगरबाही करैत हएत। तँए ओकरो दुनू भाँइकेँ नौत दऽ खुआ देबइ। तीमन-तरकारी, दूध आ दालि कीनि लेलौं। भानस करैले तोहूँ तीन गोरे[4] छेबे करह। एक्को दिन तँ तोरो सबहक मेजमानी हुअए। दाइ, जेते अनका भाइयोसँ सुख नै होइ छै, तइसँ बेसी तोरासँ भेल। तोहर उपकार जिनगीमे नै बिसरब। भगवान तोरा सन बहिन सभकेँ देथुन।"

सोनेलालक बात सुनि गदगद होइत बहिन उत्तर देलकैन-

"भैया, हम अपन काज केलौं। तोहर उपकार की केलियह। एहेन बेरपर जे तोरा नै देखितौं तँ हमरा सन बहिन केकरो रहिए कऽ की हेतइ?"

ननैदक बात सुनि सुगिया पति दिस तकैत बजली-

"दाइ तँ औगुताइए। कहैए जे काल्हि भोरे चलि जाएब। एकोटा धराउ घरमे साड़ियो ने अछि जे देबैन। बिना साड़ी देने केना जाए देबैन, केहेन हएत?"

भौजाइक बात सुनि मुस्कियाइत ननैद बाजल-

"भौजी, चारू बेटा-बेटीक बिआहमे तँ हमरा चारि जोड़ साड़ी रखले अछि। एहेन बेरमे साड़ीक कोन काज छइ। अपने तँ भैया पैंच-उधार लऽ कऽ काज चलौलक। तैपर सँ हमरो-ले करजा करत। हमरा जँ दियौ चाहत तँ नइ लेबइ।"

घरपर अबिते परिवारसँ गाम धरि खुशीक बर्खा बरिसए लगल।

[4] बहिन, स्त्री आ सारि

तीनू बच्चा सुगियाक गरदैनमे लटपटा गेल। सुगिया बच्चाकेँ कोरामे लऽ लऽ मुँह चुमए लगल। जहिना जाड़क मासमे गाछ-बिरीछ पालाक मारिसँ ठिठुइर जाइए मुदा गरमी धबिते नव रूप धारण करैए तहिना सभकेँ भेलइ। छह मासक तबाही, सोग, निराश सोनेलालकेँ छोड़ि पड़ा गेल। पास-पड़ोसक जनिजाति सभ आबि-आबि सुगियाकेँ देखबो करैत आ बिमारीक समैक खिस्सो सुनैत। एक्के-दुइए सौंसे अँगनासँ धियो-पुतोक आ जनिजातियोक भीड़ हटल। तीनू गोरे भानसक जोगारमे लगि गेली। केते दिनसँ सोनेलाल भरि इच्छा नहाएल नै छला। साबुन लऽ कऽ नहाएले गेला।

भानस भेल। सभ कियो भरि मन खेलैन। खाइते सभकेँ ओंघी आबए लगलैन। सभ जा-जा कऽ सुति रहला।

पत्नीक संग सोनेलालकेँ लहेरियासराय जाइते गाममे चर्च चलैत। एक दिस जनिजाति सभ सोनेलालक बाहवाही करैत, तँ दोसर दिस मरदा-मरदीक बीच इलाजक खर्चाक चर्च चलैत।

सबेरे स्कूलमे छुट्टी दऽ खसल मने हीरानन्द चलि एला। हीरानन्दकेँ आएल देख रमाकान्त पुछलखिन-

"सबेरे स्कूल बन्न कए देलिऐ?"

ओना, रमाकान्तोकेँ सोनेलालक सम्बन्धमे बुझल छेलैन मुदा जइ गम्भीरतासँ हीरानन्द सोचै छला ओइ गम्भीरतासँ ओ नै सोचने छला तँए मनमे कोनो तेहेन विचार नइ रहैन।

हीरानन्द उत्तर देलखिन-

"बच्चा सभकेँ पढ़बैमे मन नै लगै छल तँए छुट्टी दऽ देलिऐ।"

"किए नै पढ़बैमे मन लगै छल।"

चिन्तित हीरानन्द बजला-

"एक तँ बाढ़िक मारल वेचारा सोनेलाल तैपर सँ बिमारीक तेहेन चपेटमे पड़ि गेला जे कोनो कर्म बाँकी नै छैन। यएह बात मनमे घुरियाए लगल। पढ़बैमे एक्को रत्ती नीके ने लगैत रहए।"

सोनेलालक बात सुनिते रमाकान्तक मन मौलाए लगलैन। मौलाइत-मौलाइत जहिना हीरानन्दक मन रहैन तहिना भऽ गेलैन। पएरमे ठेंस लगलापर जहिना कियो मुँह-भरे खसैए जइसँ छातीमे चोट लगैत तहिना रमाकान्तक हृदैमे मनक चोट लगलासँ भेलैन। मुदा जोरसँ नहि, चुप्पेचाप कुहरए लगला। मनमे एलैन, जइ गाममे चारि-चारिटा डाक्टर छैथ ओइ गामक लोक रोगसँ कुहरए ई केतेक दुखक बात छी। एहेन डाक्टरकेँ लोक भगवान बुझि पुजैन से कहाँ धरि उचित छी..? जइ पढ़ल-लिखल लोककेँ अपना गामसँ सिनेह नहि, अपन कुटुम्ब परिवार सर-समाजसँ सिनेह नहि, आ खाली अपने सुख-भोगक पाछू बेहाल रहता। हुनका अनेरे दाइ-माइ किए छठियार दिन छातीमे लगा जीबैक असिरवाद देलकैन। ..फेर मोनमे एलैन, जहिना माल-जालकेँ डकहा बिमारी होइ छै तहिना तँ मनुखोकेँ चटपटिया बिमारी होइ छइ। जे छने-मे-छनाँक कऽ दइ छइ। चारिटा बेटा-पुतोहु डाक्टर हमरे छैथ, जँ कहीं अपने कि महेन्द्रक माइएकेँ वएह चटपटिया बिमारी भऽ जाइन तँ की करता ओ सभ हमरा..?

रमाकान्तक मन घोर-घोर भऽ गेलैन। तेना सकदम भऽ गेला जेना बाके हरण भऽ गेलैन।

तीन दिनक पछाइत सोनेलाल भनडाराक कार्यक्रम बनौलैन। खाइ-पीबैक सभ ओरियान दिल खोलि कऽ केलैन। तुलसीफुलक अरबा चाउर, राहैरक दालि, एगारहटा तरकारी, तैसंग दही-चिन्नीक नीक बेवस्था केलैन।

गाममे दू पंथक साधू। पहिल पंथक महंथ रमापति दास आ

दोसर पंथक गंगा दास। राम-जानकी मन्दिर रमापति दास बनौने छैथ। दुनू साँझ पूजा करै छैथ। मुदा गंगा दासकेँ से सभ नइ छैन। ओना, गामसँ लऽ कऽ आनो-आन गाममे सेवकान धरि दुनूकेँ छैन..!

सोनेलालक मनमे छल-प्रपंचक मिसियो भरि लसि नहि, तँए पच्चीस मुरते साधुक दल रमापति दासकेँ देलकैन आ पच्चीस मुरतेक दल गंगा दासकेँ। दल देला पछाइत सोनेलाल दुआर-दरबज्जा चिक्कन-चुनमुन करए लगला। भानस करैक बरतन सभ माँजि-मूजि तैयार केलैन। खाइले केराक पात काटि चिक्कनसँ धोइ कऽ रखलैन।

एक गाममे रहितो दुनू पंथक बीच अकास-पतालक अन्तर अछि। पहिल पंथमे ऊँच जातिक बोलबाला जखन कि दोसर पंथमे ऊँच जातिक कम मुदा निम्न जातिक बेसी। छूत-अछूतक कोनो भेद नहि। दिनुके समैमे भनडारा हएत।

दोसर पंथक साधु सभ सबेरे आबि चरण पखारि भजन शुरू केलैन। भजन शुरू होइते टोल-पड़ोसक जनिजातियो आ धियो-पुतो सभ आबए लगल। सौंसे खरिहाँन भरि गेल। खरिहाँनेमे बैसारो केने रहैथ। तीनटा भजन समाप्त भेला पछाइत रमापति दास चेला सभकेँ संग केने पहुँचला। फरिक्केसँ दोसर पंथक साधुकेँ देख रमापति दास मने-मन जरए लगला। मुदा क्रोधकेँ दाबि दरबज्जापर एला। दरबज्जापर अबिते रमापति दास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"हमरा सबहक बैसार फूटमे करू।"

रमापति दासकेँ प्रणाम कऽ सोनेलाल दलान दिस इशारा दैत कहलकैन-

"अपने सभ दरबज्जेपर बैसियौ।"

सोनेलालक विचार सुनि रमापति दास मने-मन सोचए लगला जे जँ अखन दोसरठाम बैसार बनबैले कहबै तँ औगताइमे सम्भव नै

हेतइ। जँ झगड़ा करै छी तँ केकरासँ करूँ। वेचारा घरवारी की करत। घरवारी-ले तँ जहिना हम सभ दल पाबि एलौं अछि, तहिना तँ ओहो सभ आएल अछि। तँए जेहने हम सभ तेहने ओहो सभ। अगर ओहो साधु सभसँ कहा-कही करै छी तँ दू धार्मिक पंथक बीच विवाद उठत। मुदा ऐठाम तँ भनडारा छी, पंथक नीक-अधलाक विवेचनक मंच नहि। जँ अपनाकेँ उन्नैस मानि लइ छी तखन तँ सोलहन्नी कायरता हएत..!

..विचित्र स्थितिमे रमापति दास पड़ि गेला। गुम्म-सुम्म भेल रमापति दास दरबज्जा आ खरिहाँनक बीच खुट्टा जकाँ ठाढ़ रहैथ। ने डेग आगू बढ़ैन आ ने पाछू। मनमे उठलैन- जेते गोरे हमरा संग आएल छैथ जँ हुनका सभसँ विचार पुछबैन आ ओ सभ हमरा मनक विपरीत विचार दैथ तखन की करब? आइ धरि तँ सेहो नै केलौं। करब उचितो नहि। गुरु-चेलाक अन्तर समाप्त भऽ जाएत। रमापति दासक मन औनाए लगलैन। चाइनपर पसेनाक रूप चमकलैन। ताबे कान्हपर रखनिहार हरमुनियाँबलाक कान्ह अगिया गेलै, ओ आगू बढ़ि ओसारक चौकीपर हरमुनियाँ रखि देलक। हरमुनियाँ रखैत देख ढोलकियो ढोलक रखि देलक। अहिना एका-एकी सभ अपन-अपन कमण्डल-गिलास धरि रखि देलक। मुदा बैसल कियो नहि। तेकर कारण छेलै जे बिना चरण पखरबौने बैसब केना। आ जाबे गुरु महाराज नइ बैसता ताबे हम सभ केना बैसब। ..सभकेँ अपन-अपन सामान[5] रखैत देख रमापति दासकेँ गर भेटलैन। विक्षिप्त मने बजला-

"जखन सबहक मन अछि तखन किएक ने दरबज्जेपर बैसल जाए, घरवारियो तँ आदर करिते छैथ?"

एक दिस रमापति दासकेँ मन जरैत रहैन, दोसर ईहो खुशी

[5] बाजा, लोटा, गिलास

होइत रहैन जे चरण पखरबाक स्वागतक संग घरवारी हमरे बेसी महत देलैन। सभ कियो चरण पखरबा कऽ बैस जाइ गेला।

बिढ़नी जकाँ सुगिया नाचैत। कखनो घर जा दही देख अबैत, जे कहीं बिलाइ ने आबि कऽ खा लेलक। तँ लगले ओसारपर रखल सामान सभकेँ देखैत जे कौआ ने आबि कऽ छूता देलक। फेर लगले अँगनामे राखल टौकना, कराह आ बाल्टिनोकेँ देखैत जे धिया-पुता ने गन्दा कऽ दइ। तँ लगले आबि दलानक पाछूमे ठाढ़ भऽ टाटक भुरकी देने दरबज्जो दिस देखैत जे लोकसँ भरल दरबज्जा-खरिहाँन अछि, कहीं मारिए ने शुरू भऽ जाइ। सुगियाक मनमे अहलदिली पसि गेल। तहिना मगज परहक पसेना केशक तर देने गरदैनपर होइत सोनेलालक धोतीकेँ भिजबैत रहैन...।

भजन सुननिहारमे धिया-पुतासँ लऽ कऽ गामक स्त्री-पुरुष धरि बैसल। मोतिया-माए जे पचास बर्खक बुढ़ छैथ। भजन बन्न भेल देख बुचाइ दासकेँ कहलखिन-

"हे यौ बुचाइ दास, बिना भजन गौने जे पङ्गहैत करबै तँ पाप नै लिखत?"

मोतिया माइक करूआएल बात सुनि बुचाइ दास उत्तर देलखिन-

"बड़ी काल गाजा पीना भऽ गेल तँए कनी पीब लइ छी। तखन नाचो देखा देब आ कबीर साहैब की कहलखिन सेहो सुना देब। कनीए काल और छुट्टी दिअ। हुअ हौ रघुदास, जल्दी गुल दहक।"

बिना साजे बाजक, घुन-घुना कऽ गाबए लगला-

"हटल रहियौ सन्तो बिलइया मारे मटकी...।"

बुचाइ दासक पाँति आ मुँहक चमकी देख धियो-पुतो आ जनिजातियो सभ, खापैड़मे देल जनेरक लाबा जहिना भर-भरा कऽ

फुटैए तहिना सभ हँसल।

दलानोमे आ खरिहाँनोमे भजन शुरू भेल। दोसर पंथक बैसारमे ढोलक, झालि, खौजरीक संग थोपड़ियो बाजए लगल। मुदा पहिल पंथ दिस पखौज, झालर, हरमुनियाँक संग सितार बाजब शुरू भेल, संगे एक सूर एक लय आ एक तालमे भजनो आरम्भ भेल-

"केशव! कही न जाए का कहिए..!"

मुदा दोसर पंथ दिस भजन तेते जोरसँ होइत जे पहिल पंथक भजन सुनाइए ने पड़ै छल। महंथ रमापति दास बाहर निकैल घुमबो करैथ आ भजनो सुनैथ। रमौथ भजनक अवाज दलानक घरसँ बाहर निकलबे ने करै छल। जइसँ रमापति दास तामसे माहुर भेल छला। मने-मन भनभनेबो करैथ। सोनेलालकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"ई कोन बखेरा ठाढ़ करबा देलिऐ?"

थरथराइत दुनू हाथ जोड़ि सोनेलाल उत्तर देलकैन-

"सरकार, हम अनाड़ी छी। नइ बुझलिऐ जे एना होइ छइ। जे भऽ गेलै से तँ भाइए गेलइ। अपने तमसाइयौ नहि। जँ कनी गलतीए भऽ गेल तँ माफ कऽ दिअ। अपने समुद्र छिऐ। नीक-अधला पचबैक सामर्थ्य छै अपनेमे। अखन धरि भोजन बनबैक अहरियो ने खुनल गेल अछि, आदेश दियौ।"

तरैंग कऽ रमापति दास बजला-

"हमर जेते साधु छैथ ओ फुटेमे अहरियो खुनता आ भोजनो बनौता। तँए बरतनसँ लऽ कऽ चाउर-दालि, तरकारी धरि सभ किछु हमरा फुटा दिअ।"

'बड़ बढ़ियाँ' कहि सोनेलाल सभ किछु दू भाग कऽ देलकैन। चारि-चारि गोरे भानसक जोगारमे लगि गेला। दूटा अहरी, हटि-हटि

कऽ खुनल गेल। सोनेलाल सभ बरतनो आ चाउरो-दालि आनि-आनि दुनू अहरी लग रखि देलकैन।

दलानक भजन बन्न भऽ गेल। मुदा खरिहाँनक भजन चलिते रहल। बुचाइ दास अगुआ मुरते। भजनियाँ सभ गोल-मोल भेल बैसल, तँए बीचमे जगह खाली रहए। ओइ खाली जगहमे बुचाइ दास ठाढ़ भऽ आगू-आगू भजनक पाँतियो गाबए आ नाचबो करए। बीच-बीचमे पाँतिक अर्थ सेहो अर्थाबए।

रमापति दास सोनेलालकेँ हाथक इशारासँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"बड्ड अनघोल होइए। भजन बन्न करबा दियौ।"

बुचाइ दास लग आबि सोनेलाल बाजल-

"गोसाँइ साहैब, भजन बन्न कऽ दियौ। महंथजीकेँ तकलीफ होइ छैन।"

सोनेलालक आग्रह सुनिते, के छोट के पैघ सभ एक्के बात कहए लगलैन जे हम सभ बिना भजन गौने पङ्गहैत नइ करब।

सोनेलाल अवाक भऽ गेला। सौंसे देह केराक भालैर जकाँ डोलए लगलैन। मुदा की करितैथ। कियो तँ बिनु दले नै आएल छैन। तँए सभ साधुक महत बरबैर बुझैथ।

अँगनाक टाट लग ठाढ़ भेल सुगिया मने-मन सोचै छेली जे जँ कहीं साधु सभ अपनामे झगड़ा कऽ बिना भोजन केने चलि जेता तखन तँ हमर कबुला पूरा नइ हएत। कबुला नै भेने दुखो घुमि कऽ आबि सकैए। आब जँ दुखित पड़ब तँ जीब की मरब तेकर कोन ठेकान। हे भगवान साधु सभकेँ मति बदैल दियौन जे असथिर भऽ जेता। मने-मन साधु-साधुक जाप करए लगली।

दू बजैत-बजैत निर्गुण पंथ दिस भोजन बनि कऽ तैयार भऽ गेल। भोजन तैयार होइते गंगा दास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"भोजन बनि गेल। आब भोजनक जगह तैयार करू।"

गंगा दासक आढ़ैत सुनि सोनेलालक करेज आरो थरथर काँपए लगलैन। ई केहेन हएत। एक दिस साधु सभ भोजन करता आ दोसर दिस बनिते अछि। एक तँ जखनेसँ साधु सभ दरबज्जापर एला तखनेसँ झंझट होइए। कहुना-कहुना अखन धरि पार लगल, मगर आब आखरी बेरमे ने कहीं झगड़ा फँसि जाए। ..बाढ़ैन आनै लाथे सोनेलाल आँगन गेला। आँगन जा बाढ़ैन तकै लाथे बैस रहला। बैसैक कारण रहैन, समए लगाएब। कनीए कालक पछाइत सुनलैन जे हिनको सबहक भोजन तैयार भऽ गेलैन। बाढ़ैन नेने सोनेलाल अँगनासँ निकैल खरिहाँन आबि बाहरए लगला। खरिहाँन बहारि सोनेलाल पानिक छिच्चा मारलैन। छिच्चा दऽ खरही बिछौलैन। खरही बिछैबते साधु सभ हरे-हरे कऽ उठि खरहीपर बैसला। खरहीपर बैसते पात उठल। पातक बँटबारा शुरू होइते रमापति दास अपन सत्तैरमे घुमि-घुमि जय-जयकार करए लगला। दोसर दिस भजन मंगल शुरू भेल।

सभ साधु भोजन केलैन। भोजन कऽ सभ उठला। दोसर पंथ दिसक सत्तैरमे एक्कोटा अन्न वा कोनो वस्तु पातपर छूतल नहि। जखन कि पहिल पंथक सत्तैरमे बरियातीक भोजन जकाँ छूतल। सभकेँ उठिते चारूभरसँ कौआ-कुकुर आबि-आबि खाए लगल।

भोजन कऽ दोसर पंथबला सभ ढोलक-झालि लऽ विदा हुअ लगला। मुदा रमौथ दिससँ दछिनाक तगेदा भेल। अनाड़ी सोनेलाल सिक्कीक चङेरीमे पान-सुपारी लऽ बीचमे ठाढ़ रहैथ। हाथक इशारासँ रमापति दास सोनेलालकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"आब हम सभ चलब तँए झब-दे दछिना लाउ।"

सोनेलाल-

"केना की दछिना..?"

रमापति दास आदेश दैत कहलखिन-

"एक साए एकाबन स्थानक चढ़ौआ, एक साए एक हमर, साधु सभकेँ एकाबन-एकाबन आ भोजन बनौनिहारकेँ एकासी-एकासी दऽ दियौन।"

भोजन बनौनिहारक आ महंथजीक दछिना तँ सोनेलालकेँ जँचल मुदा...।

गंगा दास आ बुचाइ दास सेहो सभ देखैत-सुनैत रहैथ। आँखिक इशारासँ गंगा दासकेँ बुचाइ दास कहलखिन-

"अधिकार अधिकार छी। जेते दछिना रमापति दासकेँ हेतैन तइसँ एक्को पाइ कम हमहूँ सभ नै लेब।"

हिसाब जोड़ि सोनेलाल अँगनासँ रूपैआ आनि रमापति दासक हाथमे दऽ देलकैन। रूपैआ ठीकसँ गनि रमापति दास सोनेलालकेँ असिरवाद दैत उठि कऽ विदा भेला। रमापति दासक पाछू-पाछू सोनेलालो अरियातने किछु दूर धरि गेला। फेर घुमि कऽ आबि गंगा दास लग ठाढ़ भऽ पुछलकैन-

"गोसाँइ साहैब, अहाँकेँ दछिना केते हएत?"

सोनेलालक कलपैत मोनकेँ गंगा दास अँकलैन। दयासँ हृदए बरफसँ पानि बनए लगलैन। मुहसँ बोली नै फुटैन। सोनेलालकेँ की कहथिन से फुरबे ने करैन। बुचाइ दास दिस देख बजला-

"की यौ बुचाइ दास, अहूँ तँ अगुआ मुरते छी, बिना अहाँ सबहक विचार नेने हम केना जवाब देबैन। किएक तँ ऐठाम दूटा प्रश्न

अछि। पहिल दू पंथक अधिकारक सबाल अछि, जइसँ दोसर पंथकेँ निच्चाँ-मुहेँ जेनाइ हएत। आ तेसर, सोनेलाल कबुला पुरबैले भनडारा केलैन। एक तँ बिमारीक फेड़मे पड़ि पश्त भेल छैथ, तैपर सँ हमहूँ सभ भार दिऐन, ई हमरा नीक नइ बुझि पड़ैए।"

गंगा दासक प्रश्न सुनि दोसर पंथक सभ साधु गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगला जे की कएल जाए? मुदा सोचबोक रस्ता अलग-अलग होइ छइ। एक्के प्रश्नक उत्तर पबैले वैरागीक रस्ता अलग होइए, जहन कि रागीक विचार अलग। भलेँ दुनू गोरे एक्के रंग विद्वान किएक ने होइथ। तेतबे नहि, आध्यात्मिक चिन्तक आ भौतिकवादी चिन्तकक बीच सेहो अहिना होइए। जहन कि निष्पक्ष चिन्तकक अलग होइए। पंथक बीच बँटल समाजमे निष्पक्ष चिन्तक होएब कठिन अछि। किएक तँ पंथ खाली वैचारिकेटा नहि, बेवहारिक सेहो होइए। जे परिवार आ समाजसँ जोड़लो रहैए। जइसँ जिनगीक गाड़ी चलै छइ।

कोनो विषयपर गम्भीर चिन्तन करैले एकटा आरो भारी उलझन अछि। ओ अछि भूखल आ पेट भरल शरीरक मन। मनकेँ बहुत अधिक प्रभावित करैए शरीरक इन्द्रिय। इन्द्रियकेँ संचालित करैए शरीरक उर्जा। उर्जाक निर्माण करैए उर्जा पैदा करैक वस्तु। ओ वस्तु अबैत भोजनसँ। मुदा सिरिफ भोजनेटा-सँ उर्जा पैदा नै होइत। उर्जा पैदा करैक दोसरो वस्तु अछि जेकर भोजन शरीरक भोजनसँ अलगो होइए।

बीच-बचाउ करैत बुचाइ दास गंगा दासकेँ विचार देलखिन-

"गोसाँइ साहैब, हमहूँ सभ अपना पंथक सिपाही छी, तँए मरै-दम तक पाछू हटब धोखाबाजी हएत। पवित्र धर्मक रक्षा करब सेहो हमरे सभपर अछि, तँए सोनेलाल जेते रूपैआ रमापति दासकेँ देलखिन, तेते हमरो सभकेँ दऽ दौथ। छह मासक दुख-तकलीफ हम

सभ सोनेलालक सुनबे केलौं तँए हुनकर दुखमे हमहूँ सभ शामिल भऽ रूपैआ घुमा दिऐन।"

सएह भेल। सभ कियो हँसी-खुशीसँ भनडारा सम्पन्न कऽ जय-जयकार करैत विदा भेला।

◌

शब्द संख्या : 5466

चारि

मद्रास स्टेशन गाड़ी पहुँचते रमाकान्त नमहर साँस छोड़लैन। दू राति आ तीन दिनसँ गाड़ीमे बैसल-बैसल रमाकान्तो, श्यामो आ जुगेसरोकेँ देह अकैड़ गेल छेलैन। गाड़ीकेँ रूकिते रमाकान्त हुलकी मारि प्लेटफार्म दिस तकलैन तँ दोसरो-तेसरो लाइनपर गाड़ीए सभकेँ ठाढ़ भेल देखलखिन। अपना सबहक स्टेशन जकाँ नहि जे कखनो काल गाड़ियो अबैत आ भीड़-भाड़ नै रहने पुलोक जरूरत नहि, सगतैर रस्ते। जेमहर मन हुअए तेमहर विदा भऽ जाउ। गाड़ियो छोट आ लाइनो तहिना।

गाड़ीमे रमाकान्तकेँ अनभुआर जकाँ नइ बुझि पड़लैन किएक तँ बिहारेक गाड़ी आ बिहारेक पसिंजरो।

गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगल। तीनू गोरे रमाकान्तो अपन झोरा-मोटरीक संग उतैर, थोड़े आगू बढ़ि पुलपर चढ़ए लगला। पुलपर लोकक करमान लगल मुदा अपना सभ स्टेशन जकाँ एँड़ी-दौड़ी नै लगैत। जेकरा हियासि कऽ रमाकान्त अपनो चेत गेला आ श्यामो-जुगेसरकेँ कहि देलखिन। अखन धरि स्टेशनमे दुनू कात गाड़ीए देख पड़ैन मुदा पुलपर जेना-जेना ऊपर चढ़ैत गेला तेना-तेना आनो-आनो चीज सभ देखए लगला।

पुलक सीढ़ीपर चलैत-चलैत श्यामो आ रमाकान्तोक जांघ चढ़ि

गेलैन। पुलक ऊपर पहुँचते रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, मोटरी कतबाहिमे रखि दहक आ कनी तमाकुल लगाबह। ताबे हमहूँ कनी सुस्ता लइ छी।"

जुगेसर मोटरी भुइयेँमे रखि तमाकुल चुनबए लगल। गाड़ीक जेते चिन्हार पसिंजर रहैन, सभ हेरा गेल। नव-नव लोककेँ पुलोपर आ निच्चोमे देखए लगला। खाली लोकेटा नव नहि, ओकर पहिराबो आ बोलियो। तमाकुल खा झोरा-मोटरी उठा तीनू गोरे पुलपर सँ उतैर हियाबए लगला जे केकरोसँ पुछि लिऐन। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैथ। रमाकान्तो लोक सभकेँ देखैथ आ लोको सभ रमाकान्तकेँ देखैन। जेना तमाशा दुनू बनल रहैथ। रमाकान्त आ जुगेसरक धोती पहिरब देख ओइठामक लोक निंगहारि-निंगहारि देखैत आ रमाकान्तो तीनू गोरे ओइठामक मरदो आ मौगियोक कपड़ा पहिरब देख मने-मन हँसबो करैथ। अनुभवी लोक सभ तँ बुझि जाइ छला जे बिहारी छैथ। मुदा जेकरा नइ बुझल छल ओ सभ ठाढ़ भऽ भऽ तजबीज करैन।

एक जेर मौगी रस्ता धेने गप-सप्प करैत जाइ छेली, ओ सभ अपने सबहक मरद जकाँ ढेका खोंसने। मौगी सबहक ढेका देख श्यामा मुस्कियाइत रमाकान्तकेँ कहलखिन-

"देखियौ ऐठामक मौगी सभकेँ ढेका खोंसने!"

श्यामाक बात सुनि रमाकान्त हँसला, मुदा किछु बजला नहि। रमाकान्त आँखि उठा-उठा चारू दिस ताकि मने-मन सोचैथ जे वाह रे ऐठामक सरकार! केते सुन्दर आ चिक्कन-चुनमुन बनौने अछि! केतौ बैस जाउ..! केतौ सुति रहू..! सरकार बनौने अछि..! अपना सभ दिस कोनो स्टेशन एहेन नइ अछि जैठाम भरि ठेहुन गन्दगी नहि। प्लेटफार्मेपर केराक खोंइचा, पानक पीक, चिनियाँ बदामक खोंइचा, कागतक टुकड़ी, रंग-बिरंगक गुटखा सबहक पन्नी छिड़ियाएल रहैए।

तेतबे नहि, जेरक-जेर भिखमंगा, पौकेटमार, उचक्का सेहो रेलबे स्टेशनसँ लऽ कऽ बस स्टेण्ड धरि पसरल रहैए। मुदा ऐठाम तँ एक्कोटा नजैरिए ने पड़ैए।

गाड़ीक झमारसँ तीनू गोरेक देह भँसियाइ छेलैन। मुदा की करितैथ। जुगेसर तमाकुल चुनबैत रहए। मने-मन रमाकान्त सोचैथ जे बड़का फेरामे पड़ि गेल छी। की करब। किछु फुरबे नै करै छेलैन। बड़ी काल धरि उगैत-डुमैत रहला। जइ गाड़ीसँ गेल रहैथ ओइ गाड़ीक भीड़ छँटल। लोक पतराएल। तैबीच एक गोरे मोटर साइकिलसँ आबि रमाकान्तेक आगूमे गाड़ी लगौलक। रमाकान्त ओइ आदमी दिस ताकए लगला आ ओहो आदमी रमाकान्त दिस। जेना नजैरेसँ दुनू गोरेक बीच चिन्हा-परिचए भऽ गेल होइन।

..रमाकान्त उठि कऽ ओइ आदमी लग जा, जेबीसँ पुरजी निकालि देखए देलखिन। पुरजीमे पता लिखल देख ओ आदमी एकटा टेम्पूबलाकेँ हाथक इशारासँ सोर पाड़लक। टेम्पूबलाकेँ अबिते पता बता लऽ जाइले कहलखिन।

तीनू गोरे टेम्पूमे बैस विदा भेला। मुदा ड्राइवर ने हिन्दी जनैत आ ने मैथिली। तँए ड्राइवरक संग कोनो गप-सप्प रस्तामे नै होइ छेलैन। स्टेशनक हातासँ निकैलते रमाकान्त आँखि उठा-उठा बजारो दिस देखैथ आ लोको सभकेँ। बजारमे ओते अन्तर नइ बुझि पड़ैन जेते लोक आ बोलीमे। मने-मन रमाकान्त अपना इलाकासँ इलाका मिलबए लगला। अपना ऐठाम पिंड-श्याम आ गोर वर्ण एकरंगाह अछि मुदा ऐठाम पिंड-श्याम वर्णक लोक अधिक अछि। लोकक बाजबो दोसरे रंगक छइ। जेना मधुमाछी भनभनाइए, तहिना। मुदा अपना ऐठामक लोक जकाँ ठक ऐठाम नइ बुझि पड़ैए...।

बजारक रस्तासँ जाइत रहैथ तँए गरीबी-अमीरीमे अन्तर बुझिए

नै पड़ैन। मुदा अपना इलाकाक बजारसँ ओइठामक बजार बेसी चिक्कन-चुनमुन आ सुन्दर बुझि पड़ैन। गन्दगीक केतौ दरस नहि।

मुख्य मार्गसँ निकैल पूब-मुहेँ एकटा रस्ता गेल अछि। ओही रस्तामे डाक्टर महेन्द्रक घरो आ क्लिनिको छैन आ जइ अस्पतालमे महेन्द्र नोकरी करै छैथ ओ मुख्य मार्गमे अछि। ..ओही गलीक मोड़पर टेम्पूक ड्राइवर तीनू गोरेकेँ उताइर भाड़ा लऽ आगू बढ़ि गेल। सड़कक दुनू भाग बड़का-बड़का मकान सभ। मोड़पर तीनू गोरे मोटरी रखि बैस रहला। गाड़ीक झमारसँ तीनूक देह-हाथ तेतेक बथैत रहैन जे ठाढ़ रहले ने होइन। जहिना अमावस्याक रातिमे वादल पसैर आरो अन्हार कऽ दइए तहिना रमाकान्तोकेँ होइ छेलैन। एक तँ अनभुआर जगह दोसर बोलीक भिन्नता, बोली मनुख मनुखक बीच केते दूरी बनबैए ई बात रमाकान्त आइए बुझलैन। श्यामा मने-मन सोचैथ जे हे भगवान केहेन जगह अछि जे अछैते मनुखे हम सभ हेराएल छी! तीनू गोरे निराशाक समुद्रमे डुमल। मने-मन रमाकान्तकेँ होनि जे आब की करब? आइ धरि जिनगीमे एहेन फेरा नै पड़ल छल। अपन सभटा बुधि-अकील हेरा गेल अछि...।

रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

“जुगेसर, मन घोर-घोर भऽ गेल अछि। कनी तमाकुल लगाबह।”

जुगेसर तमाकुल चुनबए लगल। सभ सबहक मुँह देख नजैर निच्चाँ कऽ लइ छला। तैबीच रमाकान्तक जेठ बेटा डा. महेन्द्र फिएट कारसँ अस्पतालसँ घर अबैत रहैथ कि सड़कक कातमे तीनू गोरेकेँ बैसल देखलैन। पहिने तँ थोड़े धखेला मुदा चिन्हल चेहरा तँए मेन रोडसँ गाड़ी बढ़ा अपन रस्तापर लगौलैथ। गाड़ीसँ उतैर लगमे आबि पिताकेँ गोड़ लगलैन। पिताकेँ गोड़ लागि माएकेँ गोड़ लगलैन। गोड़

लागि पिताक हाथक झोरा लऽ गाड़ीमे रखैले बढ़ला। पाछूसँ ईहो तीनू गोरे उठि गाड़ी दिस बढ़ला। जुगेसरो अपना हाथक मोटरी गाड़ीमे रखलक। चारू गोरे गाड़ीमे बैस आगू बढ़ला।

महेन्द्र अपने ड्राइवरी करैथ। महेन्द्रकेँ गाड़ी चलबैत देख माए पुछलकैन-

“बच्चा, मोटर अपने हँकै छह?”

“हँ।”

“डरेबर नै छह?”

माइक प्रश्न सुनि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला-

“जखन गाड़ीमे रहै छी तखन दोसर काजे कोन रहैए जे डरेबर राखब। अनेरे खरचो बढ़त।”

घरक आगू गाड़ी पहुँचते महेन्द्र हौरन बजेला। गाड़ीक अवाज सुनि भीतरसँ नोकर आबि गेटक ताला खोलि देलकैन। महेन्द्र गाड़ी भीतर लऽ गेला। गाड़ी ठाढ़ कऽ उतैर गाड़ीक तीनू फाटक खोलि तीनू गोरेकेँ उतारलैन। गाड़ीसँ उतैरते रमाकान्त मकान दिस तकलैन। तीन-तल्ला बड़का मकान। आगूक फुलवाड़ी देख रमाकान्त मने-मन सोचए लगला जे सम्पैत तँ गामोमे बहुत अछि मुदा एहेन घर अपन कोन जे परोपट्टामे एहेन मकान केकरो नइ छइ। मनमे उठलैन जे अपन कमाइसँ महेन्द्र एहेन घर बनेलक कि बैंक-तैंकसँ करजा लऽ कऽ आकि भाड़ामे नेने अछि? ओना, कहने छेलए जे जमीन कीनि कऽ मकान बनेलौं। मुदा एहेन घर बनबैमे पचास लाखसँ ऊपरे खरच भेल हेतै, एतबे दिनमे केते कमा लेलक!

आगू-आगू महेन्द्र आ तइ पाछू तीनू गोरे मकानमे प्रवेश केलैन। मकानक सिमेंट एहेन जमौल जे पएर पिछड़ैत।

सभसँ ऊपरका तल्लामे लऽ जा एकटा कोठरी रमाकान्त आ जुगेसरकेँ दोसर माएकेँ सुमझा देलैन। ताबे नोकर जलखै आ पानि नेने पहुँच गेलैन। हाथो-पएर नै धोलैन आ रमाकान्त पलँगपर पड़ि रहला। पंखा चलैत। दूटा पलँग कोठरीमे लगौल। दूटा टेबुल, एकटा नमहर ऐना, देवी-देवताक फोटो सेहो देबालमे टाङ्गल। नील रंगसँ कोठरी रंगल। दूटा अलङा सेहो देबाल दिस राखल। खूब मोटगर गद्दीदार ओछाइन पलँगपर बिछौल। मसनद सेहो दुनू पलँगपर राखल। पानिक टँकी सेहो कोठरीक मुहेँपर केबाड़क बगलमे।

पलँगसँ उठि रमाकान्त कुरुर कऽ जलखै करए लगला। दू कौर खा पानि पीब चाह पीबए लगला। जुगेसरो जलखै खा कऽ चाह पीबए लगल आ महेन्द्रो हाथमे कप लेने ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीबए लगला। ..चाहक चुस्की लैत रमाकान्त महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

“बौआ, मकान अपने छी?”

“हँ।”

“बनबैमे केते खरच भेल?”

खर्चाक नाओं सुनि मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

“बाबू, खरच तँ डायरीमे लिखल अछि तँए बिना देखने नीक-नाहाँति नै कहि सकै छी मुदा तीन लाखमे जमीन किनलौं से मन अछि। जखन जमीन भऽ गेल तखन चारू गोरे कमेबो करी आ घरो बनबी। तँए ठीकसँ बिना डायरी देखने नै कहि सकै छी।”

टेबुलपर कप रखि रमाकान्त बजला-

“चारि दिन नहेना भऽ गेल, देहमे एक्को रत्ती लज्जैत नइ बुझि पड़ैए तँए पहिने नहाएब-खाएब आ भरि मन सूतब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि महेन्द्र कोठरीसँ निकैल नोकरकेँ कहलखिन-

"तीनू गोरेकेँ फोनसँ कहि दहक जे बुड़हा-बुड़ही एला अछि।"

नोकरकेँ कहि पिता-लग आबि महेन्द्र कहलखिन-

"चलू, नहाइक घर देखा दइ छी।"

आगू-आगू महेन्द्र आ पाछू-पाछू रमाकान्त आ जुगेसर चलला। स्नान घरक केबाड़ खोलि महेन्द्र बजला-

"दूटा जोड़ले कोठरी अछि, दुनू गोरे नहाउ।"

कहि दुनू कोठरीक बौल जरा देलखिन।

कोठरीकेँ निंगहारि-निंगहारि दुनू गोरे देखए लगला। पानिक झरना, टँकी, साबुन रखैक चक्का, कपड़ा रखैक अलगनी इत्यादि सभ किछु...।

रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, चाह तँ पीलौं मुदा तमाकुल खेबे ने केलौं। मन लुलुआएले अछि। जा पहिने तमाकुल नेने आबह।"

जुगेसर स्नान घरसँ निकैल कोठरी आबि, तमाकुल-चुन लऽ आबि चुनबए लगल। तमाकुल चुना रमाकान्तोकेँ देलकैन आ अपनो ठोरमे लेलक। थूक फेकैत रमाकान्त बजला-

"जुगे, गाममे हमहूँ सम्पैतबला लोक छी मुदा आइ धरि एहेन पैखाना कोठरी आ नहाइक घर नै देखने छेलिऐ। सभ दिन खुल्ला मैदानमे पैखाना जाइ छी आ पोखैरमे नहाइ छी।"

"काका, अपना सभ गाममे रहै छी ने। ई सभ शहर-बजारक छिऐ। जँ शहर-बजारक लोक गाम जकाँ चाहबो करत से थोड़े हेतइ। ऐठाम लोक बेसी अछि आ जगह कम छै तँए लोककेँ एना बनबए पड़ै छइ। मुदा पोखैरमे लोक पानिमे पैस कऽ नहाइए आ ऐठाम पानि ढारि

कऽ नहाइए जहिना अपना सभ कहियो काल लोटासँ पानि ढारि कऽ नहाइ छी तहिना। मुदा पानिमे पैस कऽ नहेलासँ जे संतोख होइ छै से ऐमे नै हेतइ।"

"एहेन जिनगी जीनिहारकेँ गाममे रहब पार लगतै, जुगे?"

"से केना लगतै।"

"बाबू हमरा बेसी काल कहै छला जे मनुखक शरीर देखैमे एक रंग लगनौं जीबैक जे ढंग छै ओ दू रंग बना दइ छइ।"

"अहाँक गप हम नइ बुझलौं, काका?"

"देखहक, जे आदमी भरिगर काज सभ दिन करैए ओकरा जइ दिन भरिगर काज नइ हेतै तँ देहो-हाथ दुखैतै आ अन्नो रुचिगर नै लगतै। तहिना जे आदमी हल्लुक काज करैए आ जँ ओकरा कोनो दिन भरिगर काज करए पड़तै तँ ओकरो देह-हाथ ओते दुखेतै जे अन्नो ने खा हेतइ।"

"हँ, से तँ होइ छइ, हमरो कए दिन भेल अछि।"

"तहिना गामक लोक जे शहर-बजारमे आबि जिनगी बदैल लइए, ओ फेर गाम अही दुआरे नै जाए चाहैए।"

"काका, गामक लोक गरीब अछि, खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़े-पीनहै, रहइ आ दबाइ-दारूसँ लऽ कऽ पढ़ै-लिखैक सभ चीजक अभाव छै, तँए लोक नै रहए चाहैए गाममे।"

महेन्द्र पिताकेँ स्नानघर पहुँचा घुमि कऽ अपना कोठरी आबि पत्नी, भाए आ भावोकेँ माने डाक्टर रविन्द्रकेँ, डाक्टर जमुनाकेँ आ डाक्टर सुजाताकेँ फोनसँ कहि देलखिन जे गामसँ माए-बाबू आ जुगेसर एला हेन। तीनू गोरेकेँ जानकारी दऽ अपने भंसा घर जाए मने-मन सोचए लगला जे ऐठामक जे खान-पान अछि ओ हुनका सभकेँ

पसिन हेतैन की नहि? तँए गामक जे खान-पान अछि, सएह बनौनाइ नीक हएत। मुदा भनसिया तँ ऐठामक छी, बना पौत कि नहि। तँए अपनेसँ बनाएब। ओना, भात-दालि आ रसगर तरकारी तँ भनसियो बना सकैए। खाली तेतैर परहेज करैक अछि। तेतैरक अलगसँ खटमिट्ठी बना लेब। जँ तरूआ तरकारी नहि बनाएब तँ पिता अपमान बुझता। ओना, दूधो-दही जरूरी अछि। मुदा एक्कोटा चीजसँ काज चलि सकैए। दहियो तँ घरमे नहियेँ अछि। लगक दोकान सबहक दही दब रहै छै तँए रविन्द्रकेँ कहि दिऐन जे दरभंगाबला होटलसँ दही किनने औत। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र मोबाइलसँ रविन्द्रकेँ कहलखिन। रविन्द्र अस्पतालसँ सोझे दरभंगाबला होटल विदा भेला।

महेन्द्र अपनेसँ तिलकोरक पात, परोर, झिंगुनी, भाँटा आ आलू तड़ए लगला। गैस चुल्हि, तँए लगले सभ किछु बनि गेलैन।

पैखाना जाइसँ पहिनहि रमाकान्त हाथ मटियबैले माटि ताकए लगला। मुदा माटिक केतौ पता नहि। नहाइसँ लऽ कऽ हाथ धोइ तकमे साबुनेक बेवहार। रमाकान्त जुगेसरकेँ पुछलखिन-

"जुगेसर, बिना माटिए हाथ केना मटियाएब?"

रमाकान्तक बात सुनि मुस्कियाइत जुगेसर बाजल-

"काका, जेहेन देश ओहेन भेस बनबए पड़ै छइ। गाममे तँ भरि दिन माटिए-पर रहै छी मुदा ऐठाम तँ माटिसँ भेँटो मोसकिल अछि। देखते छिऐ जे माटि तरमे पड़ि गेल अछि। ने माटिक घर अछि आ ने रस्ता-पेरा। साबुनो तँ गमकौए छी। की हेतै साबुनेसँ हाथ धोइ लेब।"

"कहलह तँ ठीके मुदा हाथ धुअब आ मनकेँ मानब दुनू दू बात अछि। हाथ धोइए लेब मुदा मन नै मानत तँ ओ हाथ धुअब केना भेल?"

"हँ काका, ई बात तँ हमहूँ मानै छी मुदा गन्दगी साफ करैक

सबाल छै किने से तँ हएत। मनकेँ बुझधे चलबै छै तँए मनकेँ बुधि मना लेत।"

"तोहूँ तँ आब बच्चा नै छह जे नइ बुझबहक। एकटा बात कहह जे लोक पेटमे खाइए, पेट भरै छै, तखन लोक किए कहै छै जे भरि मन खेलौं वा पेट भरला पछाइतो कहै छै जे मन नै भरल?"

"अपना सभ काका मिथिलामे रहै छिऐ ने। मिथिलाक माटियो पवित्र छइ। मुदा ई तँ मद्रास छी, तँए ऐठामक लोक जे करैत हुअए सएह करब उचित।"

"बड़ बढ़ियाँ।"

कहि दुनू गोरे अपन क्रिया-कलापमे लगि गेला।

रमाकान्त आ जुगेसर स्नाने घरमे रहैथ, तैबीच रविन्द्र, जमुना आ सुजाता तीनू गोरे अपन-अपन गाड़ीसँ आबि गेलैथ। सबहक मनमे अपन-अपन ढंगक जिज्ञासा रहैन तँए गाड़ीसँ उतैरते कियो पिता रमाकान्त, ससुर रमाकान्तकेँ देखैले उताहुल। मुदा कोठरी अबिते पता चललैन जे ओ नहाइ छैथ। नहाएब सुनि सभ अपन-अपन कपड़ा बदलए अपना-अपना कोठरीमे प्रवेश केलैन।

पेन्ट-शर्ट खोलि रविन्द्र लुंगी पहिरते माइक कोठरी दिस बढ़ला। कोठरीमे पहुँचते माएकेँ गोड़ लागि आगूमे ठाढ़ भऽ गेला।

रविन्द्रकेँ माए चिन्हलकैन तँ नइ मुदा गोड़क जवाब बिन चिन्हनहि दऽ देलखिन। ..रविन्द्र मुस्कियाइत रहैथ। मुदा अनचिन्हार जकाँ माए बेटाक मुँह दिस टकर-टकर तकैत। तैबीच जमुना आ सुजाता सेहो आबि श्यामाकेँ गोड़ लगलकैन। दुनू पुतोहुओकेँ सासु असिरवाद देलखिन। रविन्द्र बुझि गेला जे माए नइ चिन्हलैन। मुस्कियाइत बजला-

"माए, हम रविन्द्र छी!"

'रविन्द्र' सुनिते श्यामा हक्का-बक्का भऽ गेली। अनासुरती मुहसँ निकललैन-

"रविन्द्र।"

चारि सालसँ रविन्द्र गाम नै आएल छला। पहिने रविन्द्रक देह एकहारा छेलैन। खिरकिट्टी जकाँ। जे अखन मस्त-मौला भऽ गेला अछि। पुष्ट देह भेने रविन्द्रक रूपे बदैल गेलैन। कोरैला बेटा होइक नाते माइक ममता बाढ़िक पानि जकाँ उमैड़ गेलैन। मुँहक बोली पड़ा गेलैन। खाली आँखिए-टा क्रियाशील रहलैन जेहो अश्रुधारासँ सिमैस गेलैन। ..आँचरसँ नोर पोछिते श्यामाकेँ ओ दिन मनमे नचए लगलैन जइ दिन रविन्द्र ऐ आँचरमे नुकाएल रहै छल। सौंझुका तरेगन जकाँ श्यामाक ह्रदैमे सुखद जिनगीक मनोरथ सभ चमकए लगलैन। हाथक इशारासँ माए दुनू पुतोहुकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू पुतोहु माइक दुनू भाग बैसली। दुनू कान्हपर दुनू हाथ दऽ सासु ओइ दुनियाँमे वौआए लगली जइ दुनियाँमे दुखक कोनो जगह नै होइत। मुदा सुखोक तँ दूटा दुनियाँ अछि। एक दुनियाँ श्यामाक आ दोसर रविन्द्रक। जे दुनियाँ श्यामा दुनू परानीक भेल जाइ छेलैन ओ तियाग, करूणा आ दयाक सवारीसँ वैरागक मन्जिल दिस बढ़ैत जाइत रहैन। जखन कि दुनू भाँइ रविन्द्रक जिनगी अधिक-सँ-अधिक धनक उर्पाजन कऽ दैहिक सुख दिस बढ़ि रहल छेलैन...।

रमाकान्त आ जुगेसर नहा कऽ कोठरी एला। नहेला पछाइत दुनू गोरेक देहक थाकैन मेटा गेलैन। नव-नव स्फूर्ति आ ताजगी आबि गेलैन। नव ताजगी अबिते भूखो जगलैन।

रविन्द्र कोठरीसँ निकैल पिताक कोठरी दिस बढ़ला। ताबे महेन्द्र सेहो पिता लग आबि भोजन करैक आग्रह केलकैन।

एमहर सासु लग दुनू पुतोहु बैस एक-दोसराक खनदान, परिवार

आ मानवीय सम्बन्ध बनबैले वस्तु-जात एकत्रित करए लगली। गामक देहाती जिनगी बितौनिहारि पचपन बर्खक सासु आ बजारू जिनगी जीनिहारि दुनू पुतोहु, तीनूक मन अपन-अपन जिनगीक रस्तासँ भ्रमण करैत रहैन। मुदा सासु-पुतोहुक रस्तामे केतौ सम्बन्ध नै रहनौं मानवीय संवेदना आ जिनगीक बेवहारिक प्रक्रिया तीनूकेँ लग आनि सटबैत रहैन। बीतल जिनगी तँ स्मृति आ इतिहास बनि जाइए मुदा अबैबला जिनगीक रूप-रेखा तँ अखने निर्धारित होएत। एककेँ जिनगीक पचपन बर्खक अनुभव तँ दोसर-तेसर आधुनिक शिक्षासँ लैश। सोचमे दूरी रहनौं, सभ एक्के परिवारक छी, ई विचार सभकेँ बलजोरी खींच कऽ एकठाम सटबैत रहैन। श्यामाक मनमे प्रश्न उठैत रहैन जे हम हजारो कोस हटि कऽ बेटा-पुतोहुसँ दूर रहै छी तखन हमरा पुतोहुक सुख केते हएत? समाजमे देखै छी जे अस्सी बर्खक बुढ़-पुरानसँ लऽ कऽ पेटक बच्चा धरि एकठाम रहि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबैए। खाएब-पीब कोनो वस्तु नइ छी। किएक तँ जेकरा हम नीक वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्य-पदार्थ छी आ जेकरा दब वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्ये-पदार्थ छी। हँ, ई विषमता समाजमे जरूर छै जे कियो नीक वस्तु थारीमे छूता कऽ उठैए जेकरा कुकुर खाइए आ कियो भूखल सुतैए। मुदा हम देखै छी हजारो किसिमक भोज्य-वस्तु घरतीपर पसरल अछि जेकरा ने सभ चिन्हैए आ ने उद्यम कऽ आनए चाहैए...।

जखन कि जमुना आ सुजाता सोचैत जे परिवारकेँ आगू बढ़बैले सन्तान जरूरी अछि। नोकर-दाइक सहारासँ छोट बच्चाक पालन तँ हएत मुदा सेवा नहि, किएक तँ माए अपन बच्चाकेँ दूधो नै पीआबए चाहैत। बच्चा जखन स्कूल जाइ-जोकर होइत तखन आवासीय विद्यालयमे भरती करा शिक्षा-दीक्षा दइत। शिक्षा प्राप्त केला पछाइत कमाइक जिनगीमे प्रवेश करैत। जिनगीक एक चक्र ईहो छी।

जहिना जमुना आ सुजाताक मनमे चकभौर लइ छेलैन।

श्यामाक मन अपन खनदानी परिवारक फुलवाड़ीमे औनाइ छेलैन। ने आगूक रस्ता देखै छेली आ ने पाछूक।

आगूक रस्ता कठिन अछि आकि सघन आकि संवेदन रहित वा सहित? एक-दोसर मनुखक सम्बन्ध हेबा चाहिऐ, ओ जरूरीए नइ अनिवार्य आ आवश्यक सेहो अछि। जे मनुख ऐ धरतीपर जन्म लेलक, ओकरो ओतेक जीबैक अधिकार छै जेते दोसरकेँ छइ। जँ से नइ अछि तँ लड़ाइ-दंगाकेँ कोन शक्ति रोकि सकैए? मुदा प्रश्न जटिल अछि, आइ धरिक जे दुनियाँक मनुखक जिनगी बनि गेल अछि ओ एतेक विषम बनि गेल अछि, जे सामूहिक मनुखक कोन बात, दू सहोदर भाइक बीच समता रहब कठिन भऽ गेल अछि, तँए..?

भोजनालय। नमगर-चौड़गर कोठरी। देबालपर बहुरंगी फूलक चित्र बनौल। सुन्दर हल्का गुलाबी रंगसँ कोठरी रंगल, एअरकण्डीशन लागल। गोलनुमा नमगर-चौड़गर खेनाइ-खाइक टेबुल। जेकर चारूकात खेनिहार-ले पनरहोसँ बेसीए कुरसी लगल। देबालक खोल्हियामे साउण्ड बॉक्स। जइसँ मधुर स्वरमे गीतक ध्वनि बहराइत।

भोजन करैक बाजारू बेवस्थाकेँ महेन्द्र अपनौने। मुदा माता-पिताक एलासँ धर्म-संकटमे पड़ि गेला। मने-मन सोचए लगला जे हम दुनू भाँइ आ दुनू दियादनी चारू गोरे तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा माए तँ बाबूक सोझमे नै खेती। तेतबे नहि, हमरा दुनू भाँइक संगे तँ ओ खेता मुदा दुनू पुतोहुक संग तँ नै खेता। अगर जँ जोर करबैन तँ कहीं बिगैड़ ने जाथि। जँ बिगैड़ जेता तँ आरो विचित्र भऽ जाएत। ..की करब नीक हएत? गुनधुनमे महेन्द्र। मुदा अनासुरती मनमे एलैन जे माएसँ विचार पुछि लिऐन। माए लग जा पुछलखिन-

"माए, हमसब तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा..?"

महेन्द्रक बात सुनि श्यामा बुझबैत बजली-

"बौआ, हमरो उमेर पचास-साठि बर्खक भेल हएत। आइ धरि जइ काजकेँ अधला बुझलिऐ ओ आब केना करब। केते दिन आब जीबे करब। तइले किए अपन बाप-दादाक बतौल रस्ता तोड़ब। एहेन बेवहार सिरिफ अपनेटा परिवारमे तँ नइ अछि, समाजोमे छइ। जाधैर ऐठाम छी ताधैर, मुदा गाम गेलापर तँ फेर वएह बेवहार रहत। तइले एहेन काज करब उचित नहि। गामक जिनगीक अनुकूल चलैन अछि। कोनो चलैन समाज आ जिनगीक अनुकूल बनैए जे जिनगी-ले नीक होइए। भलेँ दोसर तरहक जिनगी जीनिहारकेँ ओ अधला लगौ।"

माइक विचार सुनि महेन्द्र दू तोरमे खाएब नीक बुझलैन। पहिल तोरमे अपने, जुगेसर आ पिता तथा दोसर तोरमे बाँकी सभ कियो।

भोजन करिते रमाकान्त हफुअए लगला। जुगेसर सेहो हफुअए लगल। हाथ-मुँह धोइ कऽ दुनू गोरे सुति रहला।

एक तँ तीन रातिक जगरना, तैपर अन्नक निशाँ सेहो लगले रहैन। एक्के बेर चारि बजे रमाकान्तकेँ नीन टुटलैन। नीन टुटिते, सुतले-सुतल रमाकान्तक नजैर देबालक घड़ीपर गेलैन। चारि बजैत। भाँग पीबैक बेर भऽ गेल रहैन। भाँगक आदत रमाकान्तकेँ पहिनहिसँ छैन। तँए मद्रास अबैए काल झोरामे भाँगक पत्ती लऽ नेने छला। श्यामो बुझि गेली जे हुनका भाँग पीबैक बेर भऽ गेलैन।

भाँगक मेजन–मरीच, सोंफ–अननहि छी। सिरिफ पीसैक जरूरत अछि। पलँगपर सँ उठि झोरा खोलि भाँगक सभ समान निकालए लगला। तैबीच सुजाता ब्राण्डीक किलोबला बोतल आ गिलास नेने सासु लग आबि ठाढ़ भऽ गेली। खाइए बेरमे सासु पुतोहकेँ कहि देने रहथिन जे बुढ़ा सभ दिन चारि बजे पीसुआ भाँग पीबै छैथ। भाँगक सम्बन्धमे सुजाता अनाड़ी रहैथ। किछु ने बुझल

रहैन। मुदा ब्राण्डीक सम्बन्धमे तँ बुझल रहैन। सुजाता, श्यामा आ रमाकान्त सभ अपन-अपन ढंगसँ साकांच रहैथ।

रमाकान्त जुगेसरकेँ जगा टँकीपर मुँह-हाथ धोइले गेला। खट-खुटक अवाज सुनि श्यामा बुझि गेली। बोतल लऽ सुजाता तैयारे रहैथ। मुदा सुजाताक मनकेँ मिथिलाक संस्कृति झकझोड़ैत रहैन। किएक तँ मिथिलाक संस्कृतिक बेवहारिक पक्ष नै जनै छेली तँए जहिना अनभुआर जंगलमे कोनो जानवर औनाइत तहिना सुजातो औनाइ छेली। मने-मन सोचैथ जे ऐठाम जहिना पुतोहु ससुरक बीच बेवहार होइए तहिना मिथिलोमे होइत हएत की नहि? दोसर प्रश्न उठैन जे पढ़ल-लिखल समाजमे तँ पुरान बेवहारो बदैल नव रूप लऽ लइए...। सुजाता अपना हाथमे ब्राण्डीक बोतल आ गिलास रखने वैचारिक दुनियाँमे वौआइ छेली। रमाकान्तकेँ भाँग पीबैक समए भऽ गेल छेलैन तँए विचारमे मधुरता आबि गेल रहैन। तखने लगमे आबि श्यामा बजली-

"अखन भाँग नै पिसलौं हेन। पुतोहुजनी एकटा बोतल रखने छैथ से की कहै छिऐन?"

भाँग नै पिसब सुनि रमाकान्तक मनमे क्रोध आबए लगलैन मुदा बोतलक नाओं सुनि दबि गेलैन। मुस्कियाइत बजला-

"बेटी आ पुतोहुमे की अन्तर छइ। जहिना बेटी तहिना पुतोहु। तहूमे छोटकी पुतोहु, ओ तँ कौरैला बेटी सदृश होइत। एक तँ दुनियाँमे कोनो सम्बन्ध अधला होइते ने छै मुदा तखन जखन ओ सीमामे रहए। जखन सीमाक उल्लंघन लोक करए लगैत तखन लाज आ परदाक जरूरी भऽ जाइ छइ। जे परम्परा बनि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। मुदा ओहनो पैछला बेवहार निपुआंग मरि नहियेँ गेल अछि। तँए नीक बेवहार जिनगीमे धारण करब अधला तँ नहि।"

रमाकान्तक बात सुजातो सुनै छेली। मने-मन खुशियो होइ छेली जे ज्ञानवान ससुर छैथ। मुदा बिना सासुक सहमतिसँ आगू बढ़ब उचित नहि। तँए बोतल-गिलास नेने सुजाता अढ़मे ठाढ़ छेली। रमाकान्तक विचार सुनि श्यामा सुजाताकेँ कहए आगू बढ़ली। पर्दाक अढ़मे सुजातोकेँ ठाढ़ देख बजली-

"जाउ, भगवान अहाँकेँ भोलेनाथ ससुर देने छैथ। मुदा ससुर जकाँ नहि पिता जकाँ बेवहार करबैन।"

बामा हाथमे बोतल आ दहिना हाथमे गिलास नेने सुजाता ससुर लग आबि मुन्ना खोललैन। मुन्ना खुलिते सौंसे कोठरी महक पसैर गेल। महकसँ हवोमे मस्ती आबि गेल। एक गिलास पीब रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगेसर, तोंहू एक गिलास पीबह।"

जुगेसर बाजल-

"काका, अहाँ लग बैस केना पीब?"

"अखन, ने तूँ छोट छह आ ने हम पैघ छी। सभ मनुख छी। मनुख तँ मनुखे लगमे रहि ने जिनगी बितौत।"

तैबीच सुजाता गिलास जुगेसरो दिस बढ़ौलैन। जुगेसर एक्के सुढ़िमे भरल गिलासक पीब गेल। पेटमे ब्राण्डी पहुँचते गुदगुदबए लगलै। दोसर गिलास पीबते रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन-

"बेटी, किछु नमकीन सेहो लाउ?"

रमाकान्तक आढ़ैत सुनि सुजाता गिलास-बोतलकेँ टेबुलपर रखि कीचेनसँ मद्रासी भुजिया दूटा पलेटमे नेने एली। एकटा पलेट रमाकान्तक आगूमे आ दोसर जुगेसरक आगूमे रखली। ..दू-चारि फँक्का भुजा फाँकि रमाकान्त फेर दू गिलास ब्राण्डी चढ़ा लेलैन। ओना,

भाँगक निशाँ रमाकान्तकेँ बुझल जे पीलाक घन्टा-दू-घन्टाक पछाइत निशाँ चढ़ैए मुदा ब्राण्डीक निशाँ तँ पीबते चढ़ि गेलैन। ओना, जुगेसर दुइए गिलास पीलक मुदा तहीमे मन उनैट गेलइ। सौंसे बोतल पीबते रमाकान्तकेँ ढकार भेलैन। ढकार होइते सुजाताकेँ कहलखिन-

"बेटी, इलाइची देल पान खुआउ?"

सासु पतिक खान-पानक सम्बन्धमे सभ बात कहि देने रहथिन। तँए सुजाताकेँ बुझल रहबे करैन। दू खिल्ली पान, सुअदगर तेज जरदाक डिब्बा, इलाइची आ सेकल सुपारीक कतरा पलेटमे नेने सुजाता आबि ससुरक आगूमे रखि देलखिन। शराबक रंगमे जहिना रमाकान्त तहिना जुगेसर रंगि गेला। बजैले दुनूक मन लुसफुसाइत रहैन। पान मुँहमे लैत रमाकान्त सुजाताकेँ पुछलखिन-

"बेटी, अहाँ डाक्टरी केना पढ़लौं?"

ससुरक सबाल सुनि सुजाता बगलक कुरसीपर बैस संकुचित भऽ कहए लगलैन-

"बाबू जी! हमर पिता आ माए अपन महल्लाक कपड़ा साफ करैथ। सभ-दिना काज छेलैन। ऐसँ जेना-तेना गुजर चलै छेलैन। एक्केटा घर रहए। अनके कलपर नहेबो करै छेलौं आ पानियोँ पीबै छेलौं। पिता ताड़ी पीबैथ। एक दिन साँझू पहरमे ताड़ी पीब अबैत रहैथ। बहुत बेसी निशाँ लगि गेल रहैन। रस्तापर एकटा खाधि रहै, ओइ खाधिमे ओ खसि पड़ला। तखने एकटा ट्रक, बिना इजोतेक पास करैत रहए। ट्रक हुनका ऊपरे देने टपि गेलै कुड़कुट-कुड़कुट सौंसे शरीर हड्डी सहित भऽ गेलैन। हम सभ बुझबो ने केलिऐ। दोसर दिन भिनसरमे हल्ला भेलै तखन हमहूँ माए, भाए तीनू गोरे देखए गेलौं। देहक दशा देख चिन्हबो ने केलिऐन। मुदा कपड़ा आ चप्पल देख मन खुट-खुट करए लगल। तीनू गोरे दुनू वस्तुकेँ चिन्हि गेलिऐ। तखन

हुनका उठा कऽ आनि जरौलयैन।

बिच्चेमे जुगेसर बाजि उठल-

"अरे बाप रे!"

जुगेसरक 'अरे बाप रे' सुनि सुजाताक आँखिमे नोर आबि गेलैन।

सुजाताक बात रमाकान्त आँखि मूनि कऽ सुनैत रहैथ। जुगेसरक बात सुनिते आँखि खोललैन। हृदए पसीज गेल रहैन। ताड़ी पीआकक बात सुनि रमाकान्तक मनमे उठैत रहैन जे निशाँपान तँ हमहूँ करै छी मुदा ऐठामक जिनगी आ गामक जिनगीमे बहुत अन्तर अछि। तेतबे नहि, पेटबोनियाँ आदमीक सबाल सेहो अछि। हमरा सबहक ग्रामीण जिनगी शान्तिपूर्ण अछि। धनक अभाव तँ जहिना एतौ छै तहिना गामोमे अछि। ऐठाम किछु गनल-गूथल उद्योग आ बेपारी-कारोबारी अछि जे समृद्धशाली अछि। मुदा पेटबोनियोँ ओकरे देखौंस करए चाहैए जइसँ ओकर जिनगी अशान्त भऽ जाइ छइ। ओइ अशान्तिकेँ शान्त करै दुआरे लोक सड़ल-गलल निशाँपान करैए। जइसँ जिनगी बाटेमे टुटि जाइ छै...।

एते बात मनमे अबिते रमाकान्त पलँगसँ उठि पीक फेकैले निकलला। बाहरक नालीमे पान थुकैड़ कऽ फेक, टँकीमे कुरुर कऽ कोठरी आबि सुजाताकेँ कहलखिन-

"बेटा, चाह पिआउ?"

आँचरसँ आँखि पोछैत सुजाता चाह बनबैले किचेन गेली। रमाकान्तक हृदैमे सुजाताक प्रति विशेष आकर्षण बढ़ि गेल रहैन। जेना हनुमानक हृदैमे राम-लक्ष्मण बैसल तहिना सुजातो रमाकान्तक हृदैमे एकटा छोट-छीन घर बना लेली। रमाकान्तक प्रति सुजातोक हृदैमे तस्वीर बनए लगलैन। आइ धरि जे बात सुजातासँ कियो ने

पुछने छेलैन से बात सुनि ससुरक हृदए पघिल गेलैन। जरूर रमाकान्तक हृदैमे सुजाता अपन जगह बना लेलैन। चाह आनि सुजाता रमाकान्तो आ जुगेसरोकेँ देलैन। हाथमे चाह लइते रमाकान्त अपन अस्तित्व बिसैर गेला।

सुजाताक आँखिमे अपन आँखि दऽ एक-टकसँ देखए लगला। आर्द्र भऽ रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन-

“ओइ समैक जिनगी ओहिना मन अछि आकि बिसरबो केलौं?”

“बिसरब केना! ओ घटना तँ हमर जिनगीक इतिहासक एक महतपूर्ण कालखण्ड छी!”

“तेकर बाद की भेल?”

“हम, दू भाए-बहिन छी। एगारह बर्खक हम रही आ आठ बर्खक भाए। दुनू गोरे स्कूल जाइत रही। महल्लेमे स्कूल। भाए तँ छोट रहए तँए कोनो काज नइ करै मुदा हम माइक संग कपड़ो खिंची आ परतीपर सुखेबो करी, संगे लोहो दिऐ आ माइक संग महल्लासँ कपड़ा आनबो करी आ दैयो अबिऐ। ओइसँ जे कमाइ हुअए तइसँ गुजर करी। पढ़ल-लिखल परिवारसँ लऽ कऽ बनियाँ-बेकाल धरिक परिवारमे आबा-जाही रहए। पढ़ल-लिखल परिवारमे जखन जाइ तँ फाटल-पुरान किताब मांगि ली। ओइसँ पढ़ैले किताब भऽ जाए। खाइक जोगार कमाइएसँ भऽ जाए। ऐ तरहेँ मैट्रिक फस्ट डिविजनसँ पास केलौं। जखन मैट्रिकक रिजल्ट निकलल रहए, तखन महल्ला भरिक लोक बाहबाही केलक। हमरो उत्साह बढ़ल। मनमे अरोपि लेलौं जे बी.एस.सी. करब। ओइ समए हमरा मनमे डाक्टरक विचार रहबे ने करए। रहबो केना करैत। जेतबे बुधि छल, जएह साधन छल तही हिसावे ने सोचितौं। खएर.., कौलेजमे एडमीशन शुरू भऽ गेल छल। महेन्द्र भैयाक कपड़ा दइले हम तीनू गोरे भिनसुरके पहरमे

एलौं। भैया ताबे अस्पतालेक क्वाटरमे रहैत रहैथ। तखन ओसारपर बैस दाढ़ी बनबै छला। माए कपड़ाक मोटरी रखि जमुना दीदीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“मलिकाइन, कपड़ा लिअ।”

..हम-दुनू भाए-बहिन ठाढ़े रही। कोठरीसँ निकैलते दीदीक नजैर हमरापर पड़लैन। जमुना दीदी माएकेँ कहलखिन-

“बेटी पास केलक, मिठाइ खुआउ।”

..जमुना दीदीक बात सुनि महेन्द्र भैया दाढ़ी बनेनाइ छोड़ि हमरा दिस मुड़ी उठा कऽ तकलैन। बिना किछु बजने थोड़े काल देख, फेर हाँइ-हाँइ दाढ़ी काटए लगला। दाढ़ी काटि, सभ समान सैंत कऽ रखि सोर पाड़लैन। हमरा मनमे कोनो तरहक विचार उठबे ने कएल। किएक तँ तेसरा-चारिम दिनपर बरबैर अबिते-जाइते रही। दीदीकेँ भैया कहलखिन-

“कनी चाह बनाउ।”

भैयाक बोली हम नइ बुझलयैन मुदा दीदी बुझि गेलखिन। ओ पाँच कप चाह बनौलैन। दू कप अपने दुनू परानी आ तीन कप हमरा तीनू गोरेकेँ देलैन। पहिल दिन हम भैयाक डेरामे चाह पीने रही। भैया, नाओं पुछलैन, हम कहलयैन। मैट्रिकक रिजल्टक सम्बन्धमे पुछलैन। सेहो कहलयैन। भैया नाओं लिखबैसँ लऽ कऽ किताब-कॉपी धरिक भार उठबैत माएकेँ कहलखिन-

“स्कूल-कौलेज तँ लगेमे अछि, माने महल्लेमे अछि तँए बाहर जा कऽ पढ़ैक समस्ये ने अछि। घरेपर रहि पढ़ि सकैए। तखन स्कूल-कौलेजक खर्चसँ लऽ कऽ पढ़ैक सभ सामग्री धरिक खर्च आइसँ दुनू भाए-बहिनक हम देब।”

..भैयाक बात सुनि खुशीसँ हमर मन नाचि उठल। हम बड़ी

काल धरि टकर-टकर भैयाक मुँह दिस तकिते रहि गेलौं। जाधैर डाक्टर बनलौं ताधैर भैया सभ खरच दैते रहला।”

सुजाताक बात सुनि रमाकान्तक मनमे एलैन जे जँ कनियोँ मदैत गरीबकेँ कएल जाए तँ जिनगीक उद्धार भऽ सकैए। पितो बहुत केलैन। बेटो केलक। बीचमे हम तँ किछु नै केलौं..!

ओना, दोसरा-ले रमाकान्तो बहुत किछु केनौं रहैथ आ करबो करैथ। मुदा सभ केलहा बिसैर गेला।

रातिक आठ बजि गेल। एका-एकी तीनटा गाड़ी आएल। महेन्द्र अपन गाड़ीसँ उतैर कोठरीमे आबि कपड़ा बदललैन आ सोझे पिता लग एला। महेन्द्रकेँ देखते रमाकान्त कहलखिन-

“बौआ, हम बेसी दिन नै अँटकब। हम तँ दस गोरेमे समए बितबैबला छी। ऐठाम असगरमे नीक नै लागत।”

महेन्द्र-

“गाड़ीक झमारल छी तँए पहिने चारि दिन अराम करू। तेकर बाद देख-सुनि कऽ जाइक विचार करब।”

◌

शब्द संख्या : 4454

पाँच

मद्रास एला रमाकान्तकेँ आइ दस दिन भऽ गेलैन। दस दिन केना बितलैन से बुझबे ने केला। ऐ दस दिनक बीच महेन्द्र अपने गाड़ीसँ तीनू गोरेकेँ उदकमण्डलम्, कोडाइकनाल आ एकडि हिलस्टेशन सहित शुचीन्द्रम, रामेश्वरम्, तिरुचेंदूर, मदुराइ, पलनी, तिरुचिरापल्ली, श्रीरंगम, तंजोर, कुम्बकोणम, नागोर, वेलांकण्णि, वैत्तीश्वरन कोइल, चिदम्बरम्, तिरुवण्णामलै, कांचीपुरम, तिरुत्तणि आ कन्याकुमारी घुमा देलकैन। मुदा अपना सभसँ भिन्न रीति रेवाज, बेवहार आ जीबैक ढंग ओइठामक लोकक बुझि पड़लैन। तैसंग ईहो जरूर बुझि पड़लैन जे अपना सभसँ ऐठामक लोक अधिक मेहनतियो आ इमानदारो अछि।

भारतक आजादीक उपरान्त राज्य-पुनर्गठन अधिनियमक अन्तर्गत चौदह जनवरी उन्नैस साए उनहत्तैरमे मद्रास राज्यक नाओं तमिलनाडु राखल गेल। पुरना केरलक किछु हिस्सा आ आन्ध्र प्रदेशक किछु हिस्सा जोड़ि कऽ ऐ राज्यक निर्माण भेल।

तमिलनाडु द्रविड़ सभ्यताक केन्द्र अदौसँ रहल अछि। ई.पू. चारिम शताब्दीमे चोल, पाण्ड्य आ चेर राजवंशक समैमे द्रविड़ सभ्यता अपन चरम सीमापर फुलाएल-फड़ल।

तेरहमी शताब्दीक आरंभमे ऐठाम काकतीयक शासन रहल।

तेरह साए तेइस ईस्वीमे दिल्लीक तुगलक सुल्तान काकतीय शासककेँ भगौलक। गोलकुंडाक कुतुबशाही सुल्तान अखनुका हैदरावादक न्यों लेलक। सम्राट औरंगजेब सुल्तानकेँ हेरा आसफजा-केँ गवर्नर बना देलक। मुगल शासनक आखिरी समैमे आसफजा अपनाकेँ निजामक उपाधि धारण कऽ स्वतंत्र शासक घोषित कऽ लेलक।

सोलह साए उनचालीस ईस्वीमे ईस्ट इंडिया कम्पनीक पएर मद्रासमे जमि गेल, ताधैर देशक अधिकांश भागमे अंग्रेजक अधिकार भऽ गेल छेलइ। तमिलनाडुक पूबमे बंगालक खाड़ी, दच्छिनमे हिन्द महासागर, पच्छिममे केरल आ उत्तरमे कर्नाटक आ आन्ध्रप्रदेश अछि।

पैछला राति गप-सप्प करैत सभकेँ डेढ़ बजि गेलैन। गपक विषैयो नमहर, सात दिनक देखल मद्रास...।

अढाइ बजे भोरमे एकठाम गाड़ी दुर्धटना भऽ गेलइ। चारू गोट डाक्टरकेँ फोन एलैन जे जल्दी दुर्घटनाक जगहपर अबिऐ। फोन सुनि महेन्द्र तीनू गोरे–रविन्द्र, जमुना आ सुजाता–केँ जानकारी दैत कहलखिन-

"जल्दी-जल्दी तैयार भऽ चलै चलू।"

एक्के गाड़ीसँ चारू गोरे विदा भेला। दुर्घटनाक जगहपर पहुँच महेन्द्र देखलखिन जे गाड़ी एकटा सड़कपर राखल रौलरसँ टकरा गेल अछि। जइसँ सभ कियो थौआ-थाकर भेल अछि। ..गाड़ीमे एक्के परिवारक आठ गोरे सवार छला। उद्योगपतिक परिवार। दू गोरेक हालत बड़ खराप छेलइ। एकटा बुढ़क माथ फटि गेल रहैन, जइसँ ओ अर्र-दर्र बजै छला आ दोसर महिलाक छाती टुटि गेल रहैन। मुदा वायपर कखनो-कखनो बजबो करै छली। एकटा जुआन महिलाक दुनू जांघ टुटि गेल रहैन। दूटा ढेरबा बचियाक एक-एकटा आँखि फुटि गेल रहैन आ एक-एकटा डेन टुटि गेल रहैन। अबोध बच्चाकेँ किछु नै भेल

छेलइ। डॉ. महेन्द्रकेँ पहुँचते धाँइ-धाँइ अस्पतालक आनो-आनो डाक्टर, नर्स आ स्टाफो सभ आबए लगला। थाना पुलिससँ लऽ कऽ जिला पुलिस धरि सेहो पहुँच गेल। डाक्टर सभ रोगी सभकेँ देख विचार केलैन जे अस्पताले लऽ जेनाइ नीक होएत। डाक्टर सबहक संगमे सिरिफ अलेटा। ने कोनो दबाइ आ ने कोनो औजार रहैन।

आठो गोरेकेँ उठा-पुठा कऽ अस्पताल आनल गेल। अस्पतालमे जाँच-पड़ताल होइते समए दू गोरेक मृत्यु भऽ गेलैन।

साढ़े पाँच बजे चारू गोरे डेरा पहुँचला। गाड़ीक हरहरेनाइ सुनि रमाकान्तोक नीन टुटि गेलैन।

सुतैक समए नै देख चारू गोरे गाड़ीसँ उतैर अपन-अपन नित्य-कर्ममे लगि गेला। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल रमाकान्त सोचए लगला जे आइ एगारहम दिन छी मुदा एक्को-टा पोता-पोतीक मुँह नै देख सकलौं! जइ परिवारमे पाँच-पाँचटा पोता-पोती रहत ओइ परिवारक बच्चासँ भेँट नै हुअए, ई केतेक दुखक बात छी। माए-बाप, दादा-दादीक सिनेह बच्चाक प्रति की होइ छै तेकर कोनो नामो-निशान नै देख रहल छी। जइ बच्चाकेँ माए-बापक सिनेह नै भेटतै ओइ बच्चाकेँ माता-पिताक प्रति केहेन धारणा बनत। हँ, ई बात जरूर जे दुनियाँक सभ मनुख-मनुख छी तँए सबहक प्रति सभकेँ सिनेह हेबा चाही। मुदा जइ परिवेशमे हम सभ जीब रहल छी, जैठाम बेकतीगत सम्पैत आ जवाबदेहीक बीच मनुख चलि रहल अछि, तैठाम सिनेह तँ खण्डित होइए। मनुखक जिनगी स्थायी नहि अस्थायी होइए। उमेरक हिसाबसँ शरीर क्रियाशील रहैए। जहिना बच्चाक उत्तरदायित्व माए-बापपर रहै छै तहिना रोगसँ ग्रसित वा अधिक वयस भेलापर जखन शरीरक अंग शिथिल हुअ लगै छै, तखन माइयो-बापक उत्तरदायित्व तँ बच्चापर होइ छइ। जँ से नै होइ तखन जिनगी कष्टमय हेबे करत। लोक एक

राज्यसँ दोसर राज्य, एक देशसँ दोसर देश कमाइले जाइए, किएक? अहीले ने जे अपनो आ परिवारोक जिनगी चैनसँ चलत...।

रंग-बिरंगक प्रश्न सबहक बीच रमाकान्त पड़ल छला।

महेन्द्रकेँ तीन आ रविन्द्रकेँ दू सन्तान। दुनू मिला कऽ पाँच भाए-बहिन। महेन्द्रक जेठ बेटा हाइ स्कूलमे पढ़ैत, बाँकी चारू नर्सरीमे। महेन्द्रक जेठ बेटाक नाओं 'रमेश', जे हाइ स्कूलक होस्टलमे रहैए आ बाँकी चारू आवासीय स्कूलमे। महिना दू महिनापर महेन्द्र अपनेसँ जा कऽ खरचा पहुँचबै छैथ।

बाबा-दादीक जोर केलापर बच्चा सभकेँ भेँट करैक कार्यक्रम महेन्द्र बनौलैन। रबि दिन स्कूलो बन्न रहत, तँए भेँट-घाँट करैमे सुविधा सेहो होएत। सात बजे डेरासँ चलबाक कार्यक्रम बनल। रमाकान्त, श्यामा आ जुगेसर समैसँ पहिनहि तैयार भऽ गेल छला मुदा भरि रातिक जगरना दुआरे महेन्द्र पछुआएल रहैथ। ओंघीसँ देह भँसियाइत रहैन। मुदा नीन तोड़ैक दबाइ खा पिता लग आबि बजला-

"बाबू, हम तँ भरि राति जगले रहि गेलौं। जखन ओछाइनपर गेलौं, नीन पड़लो ने रही कि फोन आबि गेल जे एकटा गाड़ीक दुर्घटना भऽ गेलै, जइमे सवार एक्के परिवारक आठ गोरे छला, ओ पैघ उद्योगपति परिवार छल। हुनके सभकेँ देखैत-सुनैत भोरमे एलौं।"

बिच्चेमे जुगेसर बाजल-

"मरबो केलइ?"

"हँ! जे दुनू मुख्य कारोबारी छला ओ मरि गेला। एक गोरेकेँ ब्रेन हेम्रेज भऽ गेलैन। आब ओ सभ दिन पगलाएले रहती। एक गोरेकेँ छातीक हड्डी थौकचा भऽ गेल छैन, ओ दू-चारि मासक मेहमान छैथ। तीनटा अधमरू भऽ कऽ जीता। एकटा चारि सालक बच्चाटा सुरक्षित रहल।"

रमाकान्त महेन्द्रक बातो सुनैथ आ मने-मन सोचबो करैथ जे यएह छी जिनगी। अहीले लोक एते नीच-सँ-नीच काजपर उतैर मनुखकेँ मनुख नइ बुझैए। मुदा अनका बुझबैले धरमक नाटक रचि पूजा-पाठ-कीरतन-भजन करैए। तैसंग हजारो-लाखो रूपैआ खरच कऽ पाथरक मूर्ति सेहो स्थापित करैए, नीक-नीक प्रसाद चढ़बैए। मुदा जइ मनुखकेँ पेटमे अन्न नहि, देहपर वस्त्र नहि, रहैक घर नहि आ जीबैक कोनो ठेकान नहि, ओकरा देखिनहारो कियो नहि! यएह छी कर्मकाण्डक आडम्बर आ चक्रव्यूह!

रमाकान्तकेँ गम्भीर देख मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

"नोकरीक जिनगीए एहेन होइ छइ। एक रातिक कोन बात जे एकलखाइत पाँचो राति जगल रहब तैयो किछु नइ बुझबै। एहेन-एहेन दबाइ सभ अछि जे खाइत देरी नीन निपत्ता भऽ जाइए। जाबे अहाँ सभ चाह-पान करब ताबे हमहूँ तैयार भऽ जाइ छी।"

कहि महेन्द्र उठि कऽ तैयार होइले अपना कोठली चलि गेला।

चारू गोरे कारमे बैस विदा भेला। दुनू स्कूल एक्केठाम। एक दोसरसँ थोड़बे हटल। चारू गोरे पहिने रमेशक होस्टल पहुँचला। छहरदेवालीक बीचमे होस्टल अछि। अबै-जाइक एक्केटा दरबज्जा, जइ दरबज्जामे लोहाक फाटक लागल, ओतए एकटा दरमान बैसल। दरमान महेन्द्रकेँ चिन्हैत रहैन। किएक तँ मासे-मास ओ अबै छैथ। चारू गोरे भीतर गेला। भीतरमे गार्जन सभ-ले एकटा खुला घर अछि, जइमे चारूकात कुरसी सजल। चारू गोरे ओइ घरमे बैसला। महेन्द्र रमेशकेँ समाद देलखिन। रमेश आबि पिताकेँ गोड़ लागि ठकुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ने रमेश बाबा दादीकेँ चिन्हैत आ ने बाबा-दादी रमेशकेँ। ठकुआएल ठाढ़ देख रमेशकेँ महेन्द्र कहलखिन-

"बौआ, बाबा-दादीकेँ गोड़ लगहुन ने!"

महेन्द्रक कहलापर रमेश तीनू गोरेकेँ गोड़ लगलकैन। शिष्टाचार निमाहैत तीनू गोरे असिरवाद देलखिन। मुदा रमाकान्तक मनमे तूफान उठि गेलैन। सोचए लगला- जे पोता चिन्हबो ने करैए ओ सेवा की करत? पढ़नाइ-लिखनाइ, सभ मनुख-ले जरूरी अछि। ऐसँ ज्ञान होइ छै, जे जिनगी जीबैक ढंग सिखबैए। मुदा जँ बच्चाकेँ परिवारसँ अलग जिनगी बना पढ़ौल-लिखौल जाए तँ ओ परिवारकेँ केना चिन्हत आ परिवारक दायित्वकेँ केना बुझत? परिवारोक तँ सीमा छइ। एक परिवार पैछला पीढ़ीकेँ जोड़ि बनैए, जे संयुक्त परिवार कहबैए। संयुक्त परिवार मिथिलाक धरोहर छी। आ दोसर अपने लगसँ आगू बढ़ि बनैए, जे एकल परिवार कहबैए। जइमे लोक बापो-माएकेँ बीरान बुझि कुभेला करैए। जँ ऐ तरहक परिवारक संरचना हुअ लगत तँ बापो-माएकेँ धिया-पुतासँ कोन मतलब रहतै। तखन समाजक की दुर्दशा हेतै? जँ से हेतै तँ मनुख आ जानवरमे अन्तरे की रहत? अखने देख रहल छी जे अपन खून रहितो बुझि पड़ैए जे जहिना हाट-बजार वा मेला-ठेलामे हजारो मनुख देखलोपर अनचिन्हारे-अनचिन्हार बुझि पड़ै छै, तहिना भऽ रहल अछि। ऐसँ नीक जे जखन मनुखक समूहसँ परिवार बनैत आ परिवारक समूहसँ समाज तखन समाजेक सदस्यकेँ किएक ने अंगीकार कएल जाए, जइसँ जिनगी हँसैत-खेलैत बितैत रहत...।

पिताकेँ गुम्म देख महेन्द्र बजला-

"बाबू, ऐठामसँ चलू। ऐठाम सभ बच्चाक रुटिंग बनल छइ। अगर अपना सभ बेसी समए अँटकबै तखन बच्चाक रूटिंग गड़बड़ा जेतइ।"

ममता भरल मनकेँ मारि रमाकान्त उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-

"हँ, हँ, चलू। ओहू बच्चा सभकेँ देखैक अछि।"

रमेशो चलि गेल आ ईहो चारू गोरे गाड़ीमे बैस बढ़ला।

नर्सरी विद्यालय लगेमे, लगले सभ कियो पहुँचला। महेन्द्रकेँ दरमान चिन्हिते, तँए कोनो रोक-राक नहियेँ भेलैन। चारू बच्चाकेँ दरमान बजा अनलक। चारू बच्चा आबि महेन्द्रकेँ गोड़ लगलकैन। गोड़ लागि चारू गोरे ठमैक गेल। हाथक इशारासँ रमाकान्त आ श्यामाकेँ देखबैत बच्चा सभकेँ महेन्द्र कहलखिन-

"बौआ, बाबा-दादी छथुन। गोड़ लगहुन।"

महेन्द्रक कहलापर चारू बच्चा तीनू गोरेकेँ गोड़ लगलकैन। रमाकान्तो आ श्यामोक मन तरे-तर टुटए लगलैन। मुदा की करितैथ। सोचए लगला जे की सोचि ऐठाम एलौं आ की देख रहल छी। आब एक्को दिन ऐठाम रहब उचित नहि, मुदा जखन आबि गेलौं तखन तँ बेटे-पुतोहुक विचारसँ ने गाम जाएब। किछु देखैले बाँकी सेहो अछि। टुटल मने रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"बच्चा सभकेँ देखिए लेलौं, आब ऐठामसँ चलू। गामक सुरता घीचि रहल अछि। जल्दीए चलि जाएब।"

पिताक बात महेन्द्र नइ बुझि सकला। जाधैर महेन्द्र गाममे रहला विद्यार्थीए छला। डाक्टर बनला पछाइत मद्रासे चलि एला। जइसँ मद्रासेक परिवेशमे ढलि गेला।

बेर टगिते चारू गोरे ब्रह्मचारी आश्रम विदा भेला। बह्मचारी आश्रममे मन्दिर नहि। मात्र दूटा घर। एकटा घर धर्मशाला जकाँ सार्वजनिक आ दोसर घरमे ब्रह्मचारीजी अपने रहै छला। एक भागमे सुतबो करैथ आ दोसर भागमे भानसो-भात। तैसंग बरतनो-बासन सभ रखैथ। ब्रह्मचारीजी मिथिलेक छिआ। अद्वैत दर्शनक प्रकाण्ड पण्डित छैथ। ब्रह्मचारीजीक नस-नसमे अद्वैत दर्शन समाएल छैन।

ब्रह्मचारी आश्रम लगमे रहितो महेन्द्र नै जनै छला। मुदा जखन

रामेश्वरम् गेल छला तँ ओतै एकटा पुजेगरी कहलकैन।

मुख्य मार्गसँ ब्रह्मचारीक आश्रम दस लग्गी पच्छिम। एकपेड़िया रस्ता तँए महेन्द्र मुख्य मार्गक कतबाहिमे गाड़ी लगा, चारू गोरे आश्रम दिस बढ़ला। आश्रमक सीमापर पहुँचते रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा-उठा तजबीज करए लगला। ने कोनो तरहक तरक-भरक आ ने लोकक भीड़-भाड़ आश्रममे। घर तँ ईंटाक बनल मुदा धर्म स्थान जकाँ नइ बुझि पड़ैत। साधारण गिरहस्तक घर जकाँ आश्रम। मुदा एकटा नव चीज दुनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। बुझि पड़लैन जे हम सभ मद्रासक जमीन छोड़ि मिथिला चलि एलौं अछि।

ब्रह्मचारीजी करजानमे हाँसू लऽ कऽ केरा गाछक सुखल डपोर सभ कटैत रहैथ। केरा गाछक अढ़मे, तँए ने ब्रह्मचारीजी रमाकान्त सभकेँ देखलखिन आ ने रमाकान्त सभ ब्रह्मचारीजीकेँ देखैथ। मुदा गाड़ीक अवाज ब्रह्मचारीजी सुनने छला। ओना, गाड़ी तँ सदिखन चलिते रहैए, तँए गाड़ीक अवाजपर ब्रह्मचारीजी धियाने नै देलैन। अपन काजमे मस्त छला।

करीब एक बीघा जमीन आश्रम हएत, जइमे सभ किछु बनल अछि। दू कट्ठामे दुनू घर, आँगन आ गाइक थैर सेहो छैन। चारि कट्ठाक एकटा छोटेटा पोखैरो अछि आ करीब पाँच कट्ठामे गाछी-कलम सेहो हएत। दू कट्ठामे गाए-ले घासऽ खेती आ सात कट्ठामे अन्न उपजबै छैथ।

सभसँ पहिने चारू गोरे पोखैर घाटपर पहुँचला। पोखैर घाट पजेबा-सिमटीसँ बनल अछि। घाटपर ठाढ़ भऽ चारू गोरे पोखैरकेँ हियासि-हियासि देखए लगला। पोखैरक किनछैरमे पान-सातटा मिथिलेक बौगुला चरौर करैत रहए। एक टकसँ रमाकान्त बौगुलाकेँ देख सोचए लगला जे जहियासँ ऐठाम एलौं, आइए अपन इलाकाक

बौगुला देखलौं। ओना, बौगुला तँ एतौ अछि मुदा मिथिलाक बौगुला तँ दोसरे चालि-ढालिक होइए।

..बौगुलापर सँ नजैर हटा पोखैर दिस देलैन। पोखैरमेँ दस-बारहटा कुमहीक छोट-छोट समूह फूल जकाँ छिड़ियाएल, जे हवाक सिहकीमे नचैत। तैबीच दूटा पनिडुम्मी भुक-दे जागल, जेकरा अपना सभ पिहुओ कहै छिऐ। पिहुआकेँ तजबीज करिते रहैथ कि एक जेर सिल्ली उड़ैत आबि पोखैरमे बैसल। तैबीच जुगेसर बाजल-

"काका, ई तँ अपने इलाकाक पुरैन गाछ छी। फूलो ओहने बुझि पड़ैए।"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी उठा पुरैनकेँ देख बजला-

"हँ हौ जुगेसर, छी तँ कमले।"

हाथ-पएर धोइ कऽ चारू गोरे घाटक ऊपरका सीढ़ीपर आबि ब्रह्मचारीजीकेँ हियाबए लगला। ब्रह्मचारीजीकेँ नै देख रमाकान्त सोचए लगला जे भरिसक केतौ गेल छैथ। तैबीच जुगेसरक नजैर करजान दिस गेल। करजानमे ब्रह्मचारीजीकेँ देख जुगेसर बाजल-

"काका, एक गोरे करजानमे काज कऽ रहल अछि। हम जा कऽ पुछिऐन जे ब्रह्मचारीजी केतए छैथ?"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा कऽ देखलैन। मुदा ओइ बेकतीक छुछुन चेहरा देख रमाकान्तकेँ भेलैन जे कियो जन-मजदूर काज करैए। तैबीच हनको कानमे रमाकान्तक अवाज पहुँचलैन, कानमे अवाज पहुँचते हाथक हँसुआ नेनहि पहुँचला।

ब्रह्मचारीजी अनेको भाषा आ बोलीक जानकार, चारू गोरेकेँ देखते बुझि गेला जे ई मिथिलेक छैथ किएक तँ जुगेसर आ रमाकान्तकेँ मिथिलेक ढंगसँ धोती पहिरने देखलैन। मुदा महेन्द्रकेँ देख

तत-मतमे पड़ल छला। श्यामाक साड़ी पहिरब देख ब्रह्मचारीजीक मन मानि गेलैन जे ई सभ मिथिलेक छैथ। ..तैबीच रमाकान्त पुछलखिन-

“ब्रह्मचारीजी केतए छैथ?”

ब्रह्मचारीजी साधारण धोती पहिरने रहैथ। सेहो फाँड़ बन्हने। देहपर अंगपोछा रहैन। ने बाबरी छटौने आ ने दाढ़ी रखने। ने गरदैनमे कण्ठी-माला आ ने देहमे जनेउ...।

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी उत्तर देलखिन-

“अहाँ सभ मिथिलासँ एलौं। एना-ठाढ़ किए छी। चलू बैस कऽ गप-सप्प करब। ब्रह्मचारीजी अपने आबि जेता।”

कहि पोखैर घाटपर हाँसू रखि हाथ-पएर धोइ कऽ अँगनेमे मोथीक बिछान बिछौलैन। चारू गोरेकेँ बैसा घरसँ एक घौर केरा निकालि अनलैन।

..केराक रंग-रूप देख रमाकान्त बुझि गेला जे ई तँ मिथिलेक गौरिया-मालभोग छी, अँठियाहा नइ छी। घौरो नमहर। गछपक्कू, अँठि-अँठि जुआएल अछि। सुआदो नीक हेतै, अपनेसँ पूर्ण जुआ कऽ पाकल अछि। धुकलाहा नइ छी।

केराक घौर बीचमे राखल आ सभ कियो हाथ बगने। जुगेसर सोचैत जे तेते खेने छी जे पेटमे जगहे ने अछि, नहि तँ सौंसे घौर खा जैतिऐन।

रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ कहलखिन-

“अखने, एक घन्टा पहिने भोजन केलौं, तँए खाइक क्षुधा नइ अछि। मुदा ब्रह्मचारी आश्रमक परसाद छी तँए दू छीमी जरूर खाएब।”

कहि दूटा छीमी ऊपरका हत्थासँ तोड़ि खेलैन।

रमाकान्तकेँ देख महेन्द्रो आ जुगेसरो दू-दू छीमी तोड़ि खेलैन। श्यामा हाथ बगने चुपचाप बैसल छेली। श्यामाकेँ हाथ बागल देख ब्रह्मचारीजी बजला-

“बहिन, अहाँ जइ दुआरे हाथ बगने छी ओ हमहूँ बुझै छी। मुदा अपन मिथिलामे दुनू चलैन अछि। पति आगूमे पत्नीकेँ नै खाएब आ बिआहक प्रकरणमे समाजक माए-बहिन मिलि मौहक करै छैथ, जइमे पति-पत्नीकेँ संगे खुऔल जाइए। तँए अहूँकेँ लजेबाक नै चाही। ई तँ सहजे आश्रम छी। दोसर धर्म स्थान सेहो छी।”

ब्रह्मचारीजीक विचार सुनि श्यामाक मन डोललैन, मगर बेवहार मनकेँ रोकिते छेलैन। तैबीच असमंजसमे श्यामाकेँ देख जुगेसर फनैक कऽ बाजल-

“काकी, जखन हमरा घरनीकेँ हाथ ढेकीमे कटि गेल रहैन, तखन हम अपने हाथे खुअबै छेलिऐन। अहाँ तँ सहजे वृद्ध भेलौं।”

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी झूका लेलैन। दू छीमी केरा श्यामो खेलैन। चारू गोरे केरा खा हाथ-मुँह धोलैन।

ब्रह्मचारीजी रमाकान्तकेँ पुछलखिन-

“ऐठाम अपने केना-केना एलिऐ?”

महेन्द्रकेँ देखबैत रमाकान्त बजला-

“ई जेठ बेटा छैथ। डाक्टरी पढ़ि नोकरी करए ऐठाम चलि एला। सालमे एक बेर अपनो गाम जाइ छैथ। बाल-बच्चा आ स्त्री आइ धरि गाम नइ गेलखिन। ओहो सभ अहीठाम रहै छैथ। दुनू परानीक मनमे आएल जे देशो-कोस आ बच्चो सभकेँ देख आबी तँए एलौं?”

महेन्द्र दिस देख ब्रह्मचारीजी बजला-

“केते दिनसँ ऐठाम छी?”

कनी कल गुम्म रहि समए मन पाड़ि महेन्द्र बजला-

“ई बाइसम बर्ख छी।”

“एते दिनसँ ऐठाम रहै छी मुदा कहियो भेँट-घाँट नै भेल?”

अपन विबसता देखबैत महेन्द्र उत्तर देलखिन-

“एक तँ नोकरी करै छी, तैपर डाक्टरी एहेन पेशा अछि जे भरि मन कहियो अरामो नै कऽ पबै छी। घुमनाइ-फिरनाइक कोन बात। मुदा तैयो कहुना समए निकालि ऐबो करितौं से बुझले ने छल।”

“आइ केना एलौं?”

“चारिम दिन रामेश्वरम् गेल रही, ओइठाम एकटा पुजेगरी अपनेक सम्बन्धमे कहलैन।”

महेन्द्रक बात सुनि ब्रह्मचारीजी मुस्कियाइत बजला-

“मासमे एक बेर हमहूँ रामेश्वरम् जाइ छी। समाज-रूपी समुद्रक कातमे स्थापित रामेश्वरम लग जा समुद्रमे उठैत लहैरकेँ धियानसँ देखबो करै छी आ विचारबो करै छी। दुनू तरहक लहैर समुद्रमे उठैए- नीको आ अधलो। नीक लहैर देख मन प्रसन्न होइए आ अधला देख मन जरए लगैए। मुदा तैयो सोचैत रहै छी जे अधला लहैर बेसी उग्र नै हुअए आ नीक लहैर सदिखन उठैत रहए।”

ब्रह्मचारीजीक विचार जेना महेन्द्रक सूतल बुधिकेँ जगा देलकैन। अनासुरती महेन्द्रक मनमे उठलैन- अन्हार-सँ-इजोतमे आबि गेलौं, कि इजोते-सँ-अन्हारमे चलि गेलौं?

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। जइ रूपमे माए-बाप आ जुगेसरकेँ अखन धरि देखै छला ओ बदलए लगलैन। बीचसँ उठि महेन्द्र गाछी दिस टहैल गेला। ब्रह्मचारीजी बुझि गेलखिन।

तैबीच रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

“अपने मिथिला छोड़ि ऐठाम किए आबि गेलौं। जखन कि ई इलाका दोसर धर्म, दोसर संस्कृति आ दोसर जातिक छी?”

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी कहए लगलखिन-

“कोनो जाति, पंथ आकि संस्कृतिक अधार होइ छै जिनगी। जिनगीक अधार होइ छै मनुखक बुधि, विचार आ कर्म। जखने मनुख अपन सुपत कर्मसँ जिनगी ठाढ़ करैए तखने धर्म, संस्कृति, विचार आ आचार सभ किछु बदैल, सही मनुखक निर्माण करैए। जेकरा हम महामानव, धर्मात्मा आ उच्च कोटिक मनुख बुझै छी, जे मिथिलांचलमे क्षीण भऽ रहल अछि! ओना, सोलहन्नी मरल नइ अछि मुदा दबाइत-दबाइत दुब्बर भऽ गेल अछि। मिथिलाक जे मूलबासी छैथ हुनका सभकेँ अभिजात वर्ग वा कही तँ परजीवी वर्ण वा बाहरी लोक आबि सभ किछुकेँ बदैल एहेन समाजिक ढाँचामे ढालि देलकैन जे अदौसँ अबैत संस्कृतिकेँ दाबि अभिजात-संस्कृतिकेँ बढ़ा देने अछि। जिनगीक सच्चाइकेँ दाबि बनौआ जिनगीमे बदैल देने अछि। जइसँ लोकक जिनगी वास्तविकतासँ हटि वौआ गेल अछि। ओना, निर्मूल नष्ट नै भेल अछि मुदा एतेक क्षीण जरूर भऽ गेल जे नीक-अधलाकेँ बेराएब कठिन अछि। हम सभ मनुखकेँ मनुख बुझै छी। ने कियो कारी अछि आ ने कियो गोर। मुदा जिनगीक ढाँचा एहेन बनि गेल अछि जे स्पष्ट रूपमे एक-दोसरसँ पैघ आ छोट बनि गेल अछि आ बनलो जा रहल अछि। ओना, देखबै तँ बुझि पड़त जे सभ एक दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट अछि। मगर मकड़ा जकाँ अपने पेटसँ सूत निकालि अपनेसँ जाल बुनि, ओइमे सभ ओझरा गेल छैथ।”

ब्रह्मचारीजी आँखि बन्न केने बजिते छला कि बिच्चेमे रमाकान्त

पुछि देलखिन-

"अपने तँ प्रकाण्ड पण्डित छी तखन मिथिलाकेँ किएक छोड़ि ऐठाम चलि एलौं?"

रमाकान्तक दोहराएल प्रश्नपर ब्रह्मचारीजी गम्भीर होइत बाजए लगला-

"अहाँक बात हम मानै छी, मुदा पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि गेल अछि जइमे नीक विचारकेँ सन्हिआइए नै देल जाइए। कहलो गेल छै जे 'असगर ब्रहस्पतियो फूसि।' तेतबे नहि, जेकरा कल्याणक जरूरत अछि ओहो नीक रस्ता धड़ैले तैयारे नहि! 'जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए चोरा।' की करबै जँ सिरिफ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ संघर्ष कएल जा सकैए मुदा तेतबे नइ अछि। जिनगीक क्रियामे उपद्रव जे करैए से तँ करबे करैए जे जानोसँ खेलबार करैमे नै चुकैए। अभिजात वर्ग एते सशक्त बनि गेल अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा पाँकमे चलै काल फँसि जाइए आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुरक संग गीध, कौआ आबि-आबि जीबतेमे आँखि फोड़ि-फोड़ि खाए लगै छै, तहिना इमानदार मनुखोक संग होइए। मुदा हारि मानैले ने हम तैयार छी आ ने मानब..! मुदा जहिना नव सुरूजक संग नव दिनक शुरूआत होइत तहिना नव मनुख नव जिनगी बनबैक दिशामे बढ़ैए, तँए संतोख अछि।"

रमाकान्त-

"अपनेक परिवारमे के सभ छैथ?"

ब्रह्मचारी-

"पिता गिरहस्त छला। पनरह बीघा खेत रहैन। ओइ खेतकेँ माता-पिता दुनू परानी उपजबै छला, जइसँ परिवार नीक जकाँ चलै छेलैन। ओना, रौदी-दाही होइते छेलै मुदा तैयो सहि-मरि कऽ ओहीसँ

गुजर करै छला। हम दू भाँइ छी। घरे लग नवानी विद्यालयमे हम पढ़लौं, किछु दिन लोहना पाठशालामे सेहो पढ़लौं। हमर छोट भाए बच्चेसँ पिताजीक संग खेती करै छला। नै पढ़लैन। माइयो आ बाबूओ मरि गेला। हम बिआह नै केलौं। भाएकेँ बिआह करा सभ किछु छोड़ि अपने घरसँ निकैल गेलौं। मनमे छेलए जे जइ कुरीति, कुबेवस्था आ कुचालिमे मिथिलाक समाज फँसल अछि ओकरा सुधारि सुरीति, सुबेवस्था आ सुचालि दिस लऽ चली। तइ पाछू लगि गेलौं। मुदा वेबस भऽ छोड़ि चलि एलौं। कारण ओइठामक निआमक आ निआमकक पाछू पढ़ल-लिखल लोक छैथ जे अपनाकेँ बुधियार बुझै छथिन तिनका लगा अभिजात लोकैन सभ, मनुखक साँचकेँ ओहन बना देने छैथ, जइसँ कुपात्र छोड़ि सुपात्रक निर्माणे ने होइत। जेकरा चलैत छीना-झपटी, बलतकारी, चोरी, छिनरपनी, जातीय उन्माद, धार्मिक उन्माद वा ई कहियौ जे मनुख बनैक जेते रस्ता अछि ओ सभटा नष्ट भऽ गेल अछि! सबहक जड़िमे सम्पैत घुइस कऽ काज कऽ रहल अछि। जइ पाछू पड़ि सभ बताह भऽ गेल अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि जे नीक-सँ-नीक, पैघ-सँ-पैघ आ विद्वान-सँ-विद्वान धरि बजता किछु आ करता किछु! जइसँ समाजक बीच सत बजनाइए मेटा गेल अछि! एहेन समाजमे नीक लोकक रहब केना सम्भव हएत? तँए छोड़ि कऽ पड़ा गेलौं। देहक सुखक पाछू सभ आन्हर भऽ गेल अछि।"

ब्रह्मचारीजीक बात सुनि रमाकान्तकेँ धनक प्रति मोह भंग हुअ लगलैन। सोचए लगला जे हमरो दू साए बीघा जमीन अछि, ओते जमीनक कोन प्रयोजन? जँ ओइ जमीनकेँ निर्भूमि-गरीबक बीच बाँटि दिऐ तँ केते परिवार आ केते लोक सुख-चैनसँ जिनगी जीबए लगत। जेकरा-ले जमीन रखने छी ओ तँ अपने तेते कमाइ छैथ जे ढेरी लगल छैन। अदौसँ मिथिला तियागी महापुरुषक राज्य रहल, किएक ने हमहूँ

ओइ परम्पराकेँ अपनए पुनर्जीवित कऽ दिऐ? ...एते बात मनमे अबिते रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

"अपने ऐ जिनगीसँ संतुष्ट छी?"

रमाकान्तक प्रश्न सुनि हँसैत ब्रह्मचारीजी बजला-

"हँ, बिल्कुल संतुष्ट छी। ऐसँ नीक जिनगी की भऽ सकै छइ। दुनियाँक जेते भाषा अछि, ओइ भाषाक उद्भव, विकास आ साहित्यक सभ पोथी पुस्तकालयमे रखने छी। तेतबे नहि, दुनियाँमे जेते धार्मिक सम्प्रदाय अछि ओकरो पुस्तक रूपमे रखने छी आ अध्ययन करै छी। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण संहिता, स्मक्रित, ज्योतिष, पुराण, रमायणक संग बाइबिल, कुरान, गुरु ग्रन्थ सेहो रखने छी। सभ दर्शनक पोथी सेहो अछि। शरीर निरोग रखै दुआरे किछु समए शारीरिक श्रम करै छी, बाँकी समए अध्ययन आ चिन्तन-मननमे लगा रमल रहै छी। मासमे एक दिन सभ धार्मिक सम्प्रदायिक पण्डित सभकेँ बजा, अपन-अपन सम्प्रदायपर व्याख्यान करबै छी। एक दिन राजनीतिक व्याख्यान, एक दिन साहित्यिक व्याख्यान मासमे करबै छी। ऐ सबहक अतिरिक्त बेरा-बेरी किसान गोष्ठी, चिकित्सा गोष्ठी, विज्ञान गोष्ठीक संग आइक वैश्वीकरणक दुनियाँमे विज्ञानसँ नीक-अधलापर विचार-विमर्श करबै छी। समए केना खटि जाइए से बुझबे ने करै छी।"

ब्रह्मचारीजी बजिते रहैथ कि महेन्द्र सेहो आबि गेला। उन्मत्त पागले जकाँ महेन्द्रक चेहरा बुझि पड़ैन। रमाकान्तो बाहरी दुनियासँ निकैल भीतरी दुनियाँक बाट पकैड़ नेने छला।

चारू गोरे ब्रह्मचारीजीकेँ पएर छुबि गोड़ लागि चलैक विचार केलैन। चारू गोरेकेँ अरियाति ब्रह्मचारीजी गाड़ीमे बैसा अपने घुमि गेला। गाड़ीमे कियो केकरोसँ गप-सप्प नै करए चाहैत। सभ अपने-आपमे डुमल। डेरा अबिते रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"बौआ, आब हम एक्को दिन नै अँटकब। गामक सुरता घीचि लेलक, तँए जेते जल्दी भऽ सकए विदा कऽ दिअ?"

"बड़बढ़ियाँ। आइए टिकट बनबा लइ छी। ऐठामसँ दरभंगाक गाड़ी सप्ताहिक अछि तँए अपना औगतेने तँ नै ने हएत। अगर टिकटो बनि जाएत तैयो पाँच दिन रहै पड़त।"

आठ बजे रातिमे सभ कियो एकठाम बैस अपन गामक सम्बन्धमे गप-सप्प करए लगला। गाममे अपन बीतल दिनक चर्चा करैत महेन्द्र बजला-

"की जिनगी छल आ अखन की अछि, ऐ विषयपर अखन धरि विचारैक अवसरे नै भेटल। जहिना अकासमे चिड़ै-चुनमुनी उन्मुक्त भऽ उड़ैए तहिना बच्चामे छेलौं। ने कोनो चिन्ता आ ने फिकिर छल। जहिना मध्यम गतिसँ गाड़ी-सवारी चलैए तहिना छल। ने कोनो प्रतियोगिता परीक्षा-ले चिन्ता आ ने नोकरीक जिज्ञासा रहए। साधारण गतिसँ आई.एस.सी. पास केलौं आ मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखा डाक्टर बनलौं। डाक्टर बनला पछाइत नोकरी आ पाइक भूख जागए लगल। जइसँ अपन गाम, अपन इलाका छोड़ि हजारो कोस दूर आबि गेल छी। ऐठाम आबि बजारू समाज आ संस्कृतिमे फँसि अपन परिवार, समाज सभ छुटि गेल। जेते पाइ कमा सुख-भोगक कल्पना करै छी ओते काजक बोझ बढ़ल जाइए। सुख-भोग-ले समए कहाँ बँचैए! ..समैक एते अभाव रहैए जे केता दिन अखबारो ने पढ़ि पबै छी। अखन धरिक जे विचार जिनगीक सम्बन्धमे छल, आइ बुझै छी जे भ्रमक छल। एते दिन अपने सुखटा-केँ सुख बुझैत रहलौं मुदा आब बुझि पड़ैए जे अपने सुखटा सुख नइ छी। हर मनुखकेँ जिनगी चलैक जे आवश्यक वस्तु अछि ओ पूर्ति हेबा चाहिऐ तखने सभ कियो चैनसँ जिनगी बिता सकैए। मनुखसँ परिवार बनै छै आ परिवारसँ समाज।

मनुखोक कर्तव्य बनै छै जे सभसँ पहिने ओ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ परिवारकेँ ठाढ़ करए। परिवार ठाढ़ भऽ जाएत तखन समाज स्वतः ठाढ़ भऽ आगू बढ़ए लगत। ओना, सुख की छी? सभसँ पहिने ऐ बातक विचार कऽ लेबक चाही। पंचभौतिक शरीर आ आत्माक संयोगसँ मनुख बनैए। सुख-दुख, नीक-अधला आत्माक अनुभूति छी नइ कि शरीरक। ओना, दुनियाँमे जेते मनुख अछि सभकेँ एक स्तरसँ चलक चाहिऐ मुदा से तँ नइ अछि। दुनियाँ देशमे बँटल अछि आ देशक शासन बेवस्था आ समाज खण्ड-परवण्ड भेल भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृति आ भिन्न-भिन्न जातिमे बँटल अछि, जइसँ खान-पान, रीति-रेबाज, चालि-ढालिमे भिन्नता छइ। कहैले तँ हमहूँ मनुखेक सेवा करै छी मुदा पाइक दुआरे हम पाइबलाक सेवा करै छी। बिनु पाइबलाक सेवा कहाँ भऽ पबै छै। जखन कि ओकरा सभसँ बेसी जरूरत छइ। अभावमे ओ खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ घर-दुआर, कपड़ा-लत्ता, दबाइ-दारू, सभसँ बन्चित रहि जाइए। जइक चलैत गरीब लोकक जिनगी जानवरोसँ बत्तर बनि गेल अछि। ओ सभ मनुखक शकलमे जानवर बनि जीबैए। जइ मनुखक जरूरत ओकरा सभकेँ छै ओ अपने पाछू तबाह अछि।”

डाक्टर महेन्द्रक बात सभ कियो धियानसँ सुनलैन। रमाकान्त बजला-

“बौआ, जइ गाममे तोहर जन्म भेलह आ जइ माटि-पानिमे रहि डाक्टर बनलह, ओइ गामक लोक उचित इलाजक दुआरे मरि जाए, ई केते दुखक बात छी?”

रमाकान्तक प्रश्न सुनि सभ कियो गुम्म भऽ गेला। कियो किछु नै बाजि पबैथ। सभ सबहक मुँह देखैथ। हजारो कोसपर गाम अछि। केना ऐठामसँ ओइठाम इलाज भऽ सकै छइ? सबहक मनमे सबाल

नचै छेलैन। बड़ी कालक पछाइत महेन्द्र मुँह खोललैन-

“बाबू, सबाल तँ एहेन भारी अछि जे जवाबे ने फुरैए। मुदा एकटा उपाय मनमे आएल।”

“की?”

“अहाँ गाम जाएब तँ दू गोरेकेँ माने एकटा लड़का, एकटा लड़कीकेँ जे कम्मो पढ़ल लिखल हुअए, तेकरा ऐठाम पठा दिअ। ओइ दुनू गोरेकेँ ऐठाम रखि छह मास पढ़ा पठा देब। जे तत्काल इलाज करब शुरू कऽ देतइ। संगे हम सभ चारि गोरे सालमे एक-एक मास-ले जाइत रहब आ जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाज करैत रहब। तैबीच जँ कोनो जरूरी रोग उपैक जाएत तँ फोनसँ कहि सेहो बजा लेब। नहि तँ लहेरियासराय अछिए।”

महेन्द्रक विचार रमाकान्तकेँ जँचलैन। मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, गामक लोक तँ गरीब अछि, ओ केना इलाज करा सकत?”

गरीबक नाओं सुनि धाँइ-दे रविन्द्र उत्तर देलकैन-

“बाबू, हम सभ बहुत कमाइ छी। जेते इलाजमे खरच हेतै से देबइ। तेतबे नहि, अखन अहाँ जाउ, पहिने दू गोरेकेँ पठा दिअ। ऐगला मासमे गाम आबि एकटा स्वास्थ्य केन्द्र बनाएब। जइमे सबहक इलाज हेतइ।”

रविन्द्रक विचारसँ सबहक ठोरपर हँसी एलैन। रमाकान्तक मनमे उठलैन, हमरे दू साए बीघा जमीन अछि मुदा छी कए गोरे! जँ इमनदारीसँ देखल जाए तँ की हमहीं चोर नहि? महाभारतोमे कहल गेल छै जे जे जरूरतसँ बेसी सम्पैत रखने अछि ओ चोर छी। जे बात पितोजी बरबैर कहैत रहै छला। ओना, अनका जकाँ हम बेइमानी कऽ कऽ खेत नइ अरजने छी मुदा ढेरिया कऽ तँ रखनहि छी...।

गप-सप्प करैत साढ़े दस बजि गेल। भानसो भेल। सभ कियो गप-सप्प छोड़ि खाइले बैसला।

दोसर दिनसँ चारू गोरे विदाइक जोगारमे लगि गेला। केतेको गोरेसँ दोस्ती चारू गोरेकेँ, जेकरा सबहक काज उद्यममे ईहो सभ नौत पुरने छैथ। तँए सभकेँ जानकारी देब उचित बुझि चारू गोरे अपन-अपन अपेछितकेँ जानकारी दिअ लगलखिन। अपनो सभ फुट-फुट माता-पिताक विदाइमे जुटि गेला।

ऐ चारि दिनक बीच रमाकान्त टहलब-बुलब छोड़ि, दिन-राति आत्मनिष्ठ भऽ सोचमे डुमल रहए लगला। चाह पीबै बेर चाह पीब पान खा, भोजन बेर भोजन कऽ, भरि दिन पलँगपर पड़ल-पड़ल जिनगीक सम्बन्धमे सोचैत रहला। अखन धरि एक्केटा दुनियाँ बुझै छेलिऐ जे आब दोसरो दुनियाँ देखै छी। एक दुनियाँ बाहरी, जेकरा ऊपरका आँखिसँ देखै छी, दोसर दुनियाँ शरीरक भीतर अछि, जइ दुनियाकेँ अखन धरि नै देखै छेलौं। बाहरी दुनियासँ भीतरी दुनियाँ फुलवाड़ी जकाँ सुन्दर अछि। जइमे आशाक जंगल पसरल अछि।

पाँच बजे साँझमे मद्रास स्टेशनसँ दरभंगाक गाड़ी खुजैए। आरक्षित टिकट तँए मनमे बेसी हलचलो नहियेँ छेलैन। गाड़ी पकड़ैक हलचल तँ ओइ यात्रीकेँ होइत जे साधारण बोगीमे टटका टिकट कटा सफर करत। मुदा आरक्षित बोगीमे तँ गनल सीट आ गनल टिकट होइए। बाइली यात्रीकेँ तँ चढ़ैये ने देल जाइए। दुइए बजेसँ सभ समान अटैची आ काटुनमे सैंत तैयार केलैन। रस्ता-ले फुटसँ एकटा झोरामे खाइक सभ सामान सेहो दऽ देलकैन। दस लिटरा गैलेनमे पानि, थर्मसमे चाह, पनबट्टीमे पान आ तैसंग एक काटुन विदेशी शराब सेहो, जे डाक्टर सुजाता रमाकान्तकेँ आँखिक इशारासँ कहि देने रहैन।

चारि बजे, परोठा-भुजिया खा तीनू गोरे नव वस्त्र पहिर तैयार भऽ गेला। स्टेशनो लगेमे तँए विदा हेबामे हड़बड़ियो नहियेँ। मुदा सामान बेसी तँए गाड़ी खुजैसँ पहिनहि स्टेशन पहुँचब जरूरी अछि। ओना, गाड़ी मद्रासेसँ बनि कऽ चलैत तँए सामानो रखैमे परेशानी नहियेँ रहैन। सबा चारि बजे सभ डेरासँ निकैल गाड़ी पकड़ैले चलला।

◌

शब्द संख्या : 4396

छह

छुट्टीक दिन रहितो हीरानन्द गाम नइ गेला। ओना, लगमे गाम रहने शनियेँ-शनि जाइ छला आ स्कूल खुजबासँ पहिने सोमे-सोम चलि अबै छला। मुदा रमाकान्त अपने नै रहने, परिवारक सभ भार देने गेल छैन।

गोसाँइक धाही निकैलते हीरानन्द नहा कऽ चाह पीब बौएलाल ऐठाम विदा भेला। मने-मन यएह होनि जे रमाकान्त बाबू कहने छला जे मद्रास जाइ छी, धिया-पुताकेँ देख-सुनि लगले घुमि जाएब मुदा आइ पनरहम दिन भऽ रहल अछि अखन धरि किएक ने एला? ओना, दुरसो छै आ परिवारोक सभ तँ ओतै छैन तँए बिलम्मो भेनाइ तँ सोभाविके...।

रस्तामे जे मास्टर साहैबकेँ धिया-पुता देखैन तँ हाथ जोड़ि-जोड़ि प्रणाम करैन। हीरोनन्द सभकेँ असिरवाद दैत आगू बढ़ैत जाइ छला। बौएलालक घरसँ थोड़े पाछूए रहैथ कि बौएलाल देखलकैन। देखते आगू बढ़ि, प्रणाम कऽ, संगे-संग अपना ऐठाम लऽ गेलैन।

हीरानन्दकेँ पाबि बौएलाल बहुत किछु सिखबो केलक आ सुधरबो कएल। अपन एकचारीबला बैसकीमे मास्टर साहैबकेँ बैसा पानि आनए आँगन गेल। आँगनसँ लोटामे पानि नेने आबि पएर धोइले कहलकैन। लोटामे पानि देख हीरानन्दक मनमे मिथिलाक

वेबहार नाचि उठलैन। सोचए लगला जे पूर्वज केते विचारवान छला जे एते चलौलैन..!

पएर धोइ कऽ हीरानन्द चौकीपर बैसला। बौएलाल चाह बनबए आँगन गेल। माएकेँ चाह बनौल नै होइ छेलइ। तैबीच अनुपो बाड़ीएमे खुरपी छोड़ि, मटियाएले हाथे आबि मास्टर साहैबकेँ प्रणाम कऽ चौकीक निच्चाँमे, एकचारीक खुट्टा लगा बैसल। मटियाएल हाथ देख मास्टर साहैब पुछलखिन-

"कोन काज करै छेलौं?"

मटियाएल हाथ रहितो अनुपकेँ संकोच नै होइ छेलइ। निःसंकोच भऽ उत्तर देलकैन-

"बाड़ीमे गेनहारी साग बौग केने छी ओहीमे तेते मोथा जनैम गेल अछि जे सागकेँ झाँपि देने अछि, ओकरे कमठौन करै छेलौं।"

सागक कमठौन सुनि हीरानन्द बजला-

"चलू, जाबे बौएलाल अबैए, ताबे कनी हमहूँ देख ली।"

कहि उठि विदा भेला। मास्टर साहैबकेँ ठाढ़ होइत देख अनुपो ठाढ़ भऽ आगू-आगू विदा भेल। धूर दुइएमे साग बौग केने। साग देख हीरानन्द बजला-

"जिनगीमे आइए हम एहेन गेनहारी देखलौं! ई तँ अद्भुत अछि! किएक तँ एक रंगक पत्ताबला गेनहारी तँ अपनो उपजबै छी मुदा ई तँ फूल जकाँ लगैए! अदहा पात लाल आ अदहा हरिअर छै! केतए-सँ ई बीआ अनलौं?"

मास्टर साहैबक जिज्ञासा देख खुशी होइत अनुप कहलकैन-

"हम सढ़ुआरए नौत पूरए गेल रही। ओतै देखलिऐ। देख कऽ मन हलैस गेल। ओतैसँ अनलौं। करीब दस बर्खसँ सभ साल करै छी।

खाइत-खाइत जहन डाँट जुआ जाइ छै, तहन छोड़ि दइ छिऐ आ ओहीमे तेते बीआ भऽ जाइए जे अपनो बौग करै छी आ जे मंगलक तेकरो दइ छिऐ।"

"ऐ बेर हमरो थोड़े देब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

दुनू गोरे घुमि कऽ आबि पुनः एकचारीमे बैसला। तैबीच बौएलालो चाह बनौने आएल। दुनू गोरेकेँ चाह दऽ आँगन जा, अपनो लेलक आ माइयोकेँ देलक। चाह पीब बौएलालक माए घोघ तनने दुआरपर आबि मास्टर साहैबकेँ गोड़ लगलकैन। सुखल शरीर, पाकल केश आ धँसल आँखि रधियाक। रधियाक देह देख मास्टर साहैबक मन तरे-तर बाजि उठलैन- 'हाय, हाय-रे गरीबी! आगियोसँ तेज धधड़ा!! पैंतीस-चालिस बर्खक शरीरक ई दशा बना दइए!'

मुस्कियाइत एकटा आँखि उघारि रधिया बाजल-

"आइ हमर भाग जगि गेल जे मास्टर-साहैब एला। बिनु खेने-पीने नै जाए देबैन। जे कन-सागक उपाय अछि से बिनु खुऔने नै जाए देबैन।"

रधियाक सिनेह भरल शब्द सुनि हीरानन्दक आँखि सिमैस गेलैन। दुनू तरहत्थीसँ दुनू आँखि पोछैत बजला-

"ओना, तँ घुमैक विचारसँ आएल छेलौं मुदा अहाँ सबहक सिनेह बिना खेने जाइए नै दिअ चाहैए। जरूर खाएब।"

घरमे सुपारी नै रहने बौएलाल सुपारी आनए दोकान गेल। तैबीच मास्टर साहैब अनुपकेँ पुछलखिन-

"अहाँक पुरखा केते दिनसँ ऐ गाममे रहैत आएल छैथ?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप छगुन्तामे पड़ि गेल। मने-मन सोचए

लगल, एहेन बात तँ आइ धरि कियो ने पुछने छला! मास्टर साहैब किए पुछलैन? ..मुदा मास्टर-साहैबक उपकार अनुपक हृदैमे ऐ रूपे बसल अछि जे हिनका, आत्माक दोसर रूप बुझैए। हुनके पाबि बेटा दू आखर पढ़बो केलक आ मनुखोक रस्ता सिखैए। हँसैत अनुप कहए लगलैन-

"मास्टर साहैब, हमरा बाउकेँ अपना घराड़ियो ने रहइ। अनके जमीनमे घरो बन्हने रहै आ अनके हरो-फाड़ जोतइ। अनके खेतमे रोपैन-कमठौन सेहो करइ। हम धानोक शीश आ रब्बी-राइक मासमे खेसारियो-मौसरी लोढ़ी। अनके गाइयो पोसियाँ नेने रहइ। सालमे जेते पावैन-तिहार होइ आ अनदिनो जे करजा-बरजा लिअए ओ ओही गाइक दूधो बेच कऽ आ लेरू जे होइ, ओहो बेच कऽ करजा सदहाबै। एक दिन बाउक मन खराप रहइ। गिरहत आबि कऽ बेटी ओइठाम फोकचाहा भार दऽ अबैले कहलकै। बाउक मन बेसी खराब रहै तँए जाइसँ नासकार गेल। तैपर ओ बेटाकेँ सोर पाड़लकै। बेटा एलइ। दुनू बापूत हमरा बाउकेँ गरियेबो केलकै आ अँगनाक टाट-फरक उजाड़ि कऽ कहलकै जे हमर घराड़ी छोड़ि दे। हमर बाउ केतेक गोरेकेँ कहबो केलकै मुदा सभ ओकरे दिस भऽ गेलइ। तखन हमर बाउ की करैत, आखीरमे माटिक तौला-कराही छोड़ि, थारी-लोटा, नुआ-बसतर, हाँसू-खुरपीक मोटरी बान्हि, माए-बाबू आ हम तीनू गोरे ओइ गामसँ भागि गेलौं। गामसँ निकैल, बाधमे एकटा आमक गाछ रस्तेपर रहै, ओइठिन जा कऽ बैसलौं। बाउकेँ बुकौर लगइ। दुनू आँखिसँ दहो-बहो लोर खसइ। माइयो कानए। थोड़े-खान ओइठिन बैसलौं। तखन फेर विदा भेलौं।"

बजैत-बजैत अनुपक दुनू आँखिमे नोर आबि गेल। अनुपक नोर देख हीरानन्दोक आँखिमे नोर आबि गेलैन। रूमालसँ नोर पोछि पुनः पुछलखिन-

“तब की भेल?”

अनुपक हाथ मटियाएल रहै तँए गट्टासँ नोर पोछि पुनः बाजए लगल-

“ई मात्रिक छी। नाना जीबते रहए। हुनका एक्केटा बेटी रहैन, हमरे माएटा। जखन तीनू गोरे ऐठाम एलौं तँ ननो आ नानियौं अँगनेमे रहए। नानी आ माए दुनू बाँहि दुनू गरदैनमे जोड़ि कानए लगल। बाउओ कानए लगल। नाना हमरा कोरामे उठा लोर पोछैत अँगनासँ निकैल डेढ़ियापर बुलबए लगल। थोड़े-खान नानी कानि, मोटरीकेँ घरमे रखि हाँइ-हाँइ चुल्हि पजारलक। मुदा माए कनिते रहल।”

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

“नाना गुजर केना करै छला?”

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप गुदगुदाइत बाजल-

“अहाँसँ लाथ कोन माहटर साहैब, महिनामे आठ-दस साँझ भानसो ने होइ। हम बच्चा रही तँए नानी बाटीमे बसिया भात-रोटी रखि दिअए। सएह खाइ छेलौं।”

अनुपक बात सुनि हीरानन्दक हृदए जेना पघिल गेलैन, अनुपकेँ कहलखिन-

“जाऊ, काजो देखियौ। बौएलाल तँ आबिए गेल।”

मास्टर साहैबक कहलासँ अनुप पुन: साग कमाइले चलि गेल। बौएलाल आ हीरानन्द रमाकान्तक चर्चा करए लगला। बौएलाल बाजल-

“करीब पनरह दिनक धक लगि गेल हएत, अखन धरि बाबा किए नै एला? बाजि कऽ गेल रहैथ जे आठ दिनक भीतरे चलि आएब? किछु भऽ ने तँ गेलैन?”

हीरानन्द-

“अखन धरि कोनो खबैरो नै पठौलैन जे बुझितिऐ।”

दुनू गोरे उठि कऽ बाड़ी दिस टहलैले विदा भेला। अनरनेबाक गाछकेँ हीरानन्द हिया-हिया कऽ देखए लगला। पहिल खेपक फड़, तँए नमहर-नमहर रहइ। गोट दसेक नमहर, बाँकी जेना-जेना फड़ ऊपर होइत गेल रहै तेना-तेना छोटो आ खिच्चो। पान-सातटा फड़ छिटकल। जइमे एकटाकेँ लाली पकैड़ नेने रहइ। हीरानन्द बौएलालकेँ ओंगरीसँ देखबैत बजला-

“बौएलाल, ओ फड़ तोड़ि लएह। खूब तँ पाकल नइ अछि मुदा खाइ-जोकर भऽ गेल आछि। हम सभ तँ दँतगर छी किने।”

गाछ बेसी नमहर नहि। हाथेसँ बौएलाल ओइ फड़केँ तोड़ि, डन्टीसँ बहैत दूधकेँ माटिपर रगैड़ देलक। दुनू गोरे घुमि कऽ आबि हीरानन्द चौकीपर बैसला आ बौएलाल अनरनेबा रखि आँगन गेल। आँगनसँ कत्ता आ एकटा छिपली नेने आएल। कत्तासँ अनरनेबाकेँ सोहि टुकड़ी-टुकड़ी कटलक। छिपली भरि गेल। भरलो छिपली बौएलाल हीरानन्दक आगूमे देलकैन। भरल छिपली देख हीरानन्द बजला-

“एते हमरे बुते खाएल हएत। पान-सातटा खण्डी खाएब। बाँकी आँगन लऽ जाह।”

बौएलाल सएह केलक। अनरनेबा खा पानि पीब हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन-

“चलू, थोड़े टहैल आबी?”

दुनू गोरे रस्ते-रस्ते टहलए लगला।

जाधैर दुनू गोरे टहैल-बुलि कऽ एला ताधैर रधिया अरबा

चाउरक भात, माछक तीमन आ तरूआ बनौलक। भानस कऽ रधिया चिक्कैन माटिसँ ओसार नीपि, हाथ धोइ, कम्मल चौपेत कऽ बिछौलक। थारी, बाटी, लोटा आ गिलासकेँ छौरसँ माँजि धोलक। लोटा-गिलासमे पानि भरि कम्मलक आगूमे रखि बौएलालकेँ बजौने आबैले कहलक। आँगन आबि हीरानन्द कम्मलपर बैस मने-मन सोचए लगला। भोजनसँ तँ पेट भरैए मुदा मन तँ सिनेहेसँ भरैए जे भरि रहल अछि। तैबीच बौएलाल घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। गम-गम करैत भात तैपर माछक नमहर-नमहर तरल कुटिया। जम्बीरी नेबोक खण्ड। बाटीमे तीमन। भोजन देख, मुस्कियाइत हीरानन्द रधियाकेँ कहलखिन-

“अलबत्त ढंगसँ भोजनक बेवस्था केने छी। देखिए कऽ पेट भरि गेल!”

मास्टर साहैबक बात सुनि खुशीसँ रधियाकेँ नै रहल गेलै, बाजल-

“माहटर बाबू, अहाँ पैघ छी। देवता छी। हमर भाग जे हमरा सन गरीब लोकक ऐठाम भात खाइ छी।”

रधियाक बात सुनि हीरानन्द बुझि गेलखिन जे भातकेँ अशुद्ध बुझि बजली। मुदा ओइ विचारकेँ झँपैत बजला-

“बौएलाककेँ छोट भाए बुझै छिऐ आ परिवारकेँ अपन परिवार बुझै छी। तखन भात-रोटी खाइमे कोन संकोच?”

हीरानन्दक विचार सुनि रधियाक हृदए सौनक मेघ जकाँ उमैड़ गेल। मनमे हुअ लगलै जे अपन जिनगीक सभ बात कहि सुनबयैन। उत्साहित भऽ बाजए लगल-

“माहटर बाबू, एहनो दुख कटने छी जे एक दिन पिसियौत भाए आएल रहए। घरमे एक्को तम्मा चाउर नहि! चिन्ता भऽ गेल जे भाएकेँ

खाइले की देब। तीन-चारि अँगना चाउर पैंच आनए गेबो केलौं मुदा सबहक हालत खराबे रहइ। अपने ने रहै तँ हमरा की दइत। हारि कऽ मरुआ रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन रान्हि कऽ खाइले देलिऐ आ अपनो सभ खेलौं। मुदा अखन तँ रमाकान्त कक्काक परसादे सभ किछु अछि।”

थारीमे बाटीसँ झोर ढारैत हीरानन्द बजला-

“पहिलुका आ अखुनकामे केते फरक बुझि पड़ैए?”

“माहटर बाबू, अहाँसँ लाथ कोन! ओइ हिसाबे अखन राजा भऽ गेलौं। पहिने कल्लर छेलौं। हरिदम पेटेक चिन्ता धेने रहै छेलए।”

मुँहक भात आ माछ चिबबैत रहैथ कि दाँतक गहमे एकटा काँट गड़ि गेलैन। भात घोंटि आँगुरसँ काँट निकालि थारीक बगलमे रखि हीरानन्द बजला-

“पहिने जेते खटै छेलौं तइसँ अखन बेसी खटै छी आकि कम?”

“पहिने बेसी खटै छेलौं। बोइन करि कऽ आबी तखन अँगनाक काजमे लगि जाइ। अँगनाक काज सम्हारि भानस करी। भानस करैत-करैत बेर झूकि जाइत रहए, तखन खाइत रही।”

ओसारपर बैसल अनुप रधियाकेँ चोहटैत बाजल-

“मास्टर साहैबकेँ भोजन करए देबहुन आकि नहि।”

अनुपक बात सुनि हीरानन्द टोकलखिन-

“अहाँ तमसाइ किए छिऐन। भोजनो करै छी आ गप्पो सुनै छी। जे बात काकी कहै छैथ ओ बड्ड नीक लगैए।”

मास्टर साहैबक समर्थन पाबि रधियाक मनमे आरो उत्साह जगि गेलइ। होइ जे जेते बात पेटमे अछि सभटा मास्टर साहैबकेँ सुना दिऐन। बाजल-

"माहटर बाबू, बर्खमे अदहासँ बेसी दिन सागे रान्हि तीमन खाइ छेलौं। माघ-फागुनमे जखन खेसारी-मौसरी उखाड़ै छेलौं आ बोइन जे हुअए तइ दिनमे खाली दस-पाँच दिन दालि खाइ नहि तँ बाड़ी-झाड़ीमे जे तीमन-तरकारी हुअए, से खाइ। बेसी काल सागे। खेसारी मासमे महिना दिन दुनू साँझ चाहे खेसारी साग खाइ नहि तँ बथुआ।"

खेसारी सागक नाओं सुनि हीरानन्द पुछलकैन-

"खेसारी साग केना बनबै छी?"

मास्टर साहैबक प्रश्न सुनि अनुपोकेँ पैछला बात मन पड़लै। मन पड़िते खुशी जगलै। मुस्कियाइत बाजल-

"मास्टर साहैब, राँड़िन बुते केतौ खेसारी साग रान्हल हुअए..!"

अनुपक बातकेँ धोपैत हीरानन्द बजला-

"खेसारी सागमे कँचका मिरचाइ आ लसुनक फोरन दऽ हमरो कनियाँ बनबै छैथ। हमरा बड़ सुन्दर खाइमे लगैए।"

व्यंगक टोनमे अनुप बाजल-

"अहाँ सबहक कनियाँक परतर राँड़िनकेँ हेतइ। हमहीं छी जे एहेन लोकक गुजर चलै छइ। नहि तँ..?"

व्यंगक भाव बुझि हीरानन्द चुप्पे रहला। मुदा फनैक कऽ रधिया एक लाड़ैन चलबैत बाजल-

"नहि तँ सासुरमे बास नै होइतए।"

अनुप-

"मन पाड़ू जे जइ दिन ऐठीम आएल रही तइ दिन कोन-कोन लूरि रहए। जँ सासु नै सिखबैत तँ कोनो लूरियो होइत?"

पासा बदलैत रधिया बाजल-

"माए आ सासुमे अन्तरे कथी होइ छइ। जहिना अपन माए

तहिना घरबलाक माए। सिखलौं तँ हमहीं!"

रधिया अनुप दिस तकैत आ अनुप रधिया दिस। मुदा दुनूक मनमे क्रोध नै सिनेह भरल। तँए वातावरण मधुर छल। ..हीरानन्द सागक सम्बन्धमे बाजए लगला-

"अपना सबहक पूर्वज बहुत गरीब छला। अखुनका जकाँ समैयो नइ छल। बेसी काल ओ सभ सागे खाइ छला।"

जेहने भोजन बनल, तेहने पवित्र बरतन छेलै आ तहूसँ नीक बैसैक जगहक संग ऐतिहासिक गप-सप्प। जेते वस्तु हीरानन्दक आगूमे आएल छेलैन, रसे-रसे सभ खा लेला। पानि नहि पीलैन, किएक तँ ने गाड़ा लगलैन आ ने बेसी करु। भोजन कऽ बाटीएमे हाथ धोइ कऽ उठैत बजला-

"एते कसि कऽ आइ धरि भोजन नै केने छेलौं।"

आँगनसँ निकैल एकचारीमे आबि मास्टर साहैब सोझे पड़ि रहला। पड़ले-पड़ल अनुपो आ बौएलालोकेँ कहलखिन-

"अहूँ सभ भोजन करै जाउ। हमरा सुतैक मन होइए।"

हीरानन्द असबिस करै छला। लगले-लगले करौट फेरए पड़ैन। मने-मन सोचए लगला जे एतबे दिनमे अनुप केते उन्नैत कऽ गेल। उन्नैतक कारण भेलै सही ढंगसँ परिवारकेँ बढ़ाएब। जे परिवार जेते सही दिशामे चलत ओ ओते तेजीसँ आगू बढ़त। मुदा जिनगीक रस्ता तँ बाँस जकाँ सोझ अछि नहि, टेढ़-टूढ़ अछि। जइमे लोक वौआ जाइए। जिनगीक रस्तामे डेग-डेगपर तिनबट्टी-चौबट्टी अछि। जइमे लोक भटैक जाइए। तहूमे जेकरा रस्ताक आदि-अन्तक ठेकान नै रहल ओ तँ आरो ओझरा जाइए। एहेन-एहेन ओझरी सभ जिनगीक रस्तामे अछि जइमे ओझरा कियो बताह भऽ जाइए तँ कियो घर-दुआरि छोड़ि चलि जाइए। जइसँ क्षणिक सुखक खातिर स्थायी सुखक रस्ता छुटि

जाइ छइ। क्षुद्र सुख पैघ सुखक रस्ताकेँ धकेल एहेन पहाड़ जकाँ ठाढ़ भऽ जाइ छै, जेकरा पार करब मोसकिल भऽ जाइ छइ। जिनगीक रस्ता एक नइ अनेक अछि मुदा पहुँचैक स्थान एक अछि। जेते मनुख तेते रस्ता अछि। एक मनुखक जिनगी दोसरसँ भिन्न होइए। अनभुआरो आ बुझनिहारो, अज्ञानियों आ ज्ञानियों लगले माने जिनगीक शुरूमे ऐकेँ नहि बुझि पबै छैथ जे कोन रस्ता पकड़लासँ सही जगहपर पहुँचब आ नै पकड़ने छुटि जाएब। मनुखक उद्धारक बात तँ सभ सम्प्रदाय, किस्सा-पिहानी बना कहैए मुदा रस्तामे घुच्ची केते छै जैठाम जा लोक खसैए, से बुझैएमे ने अबै छै। मुदा ईहो तँ सत अछि जे निष्कलंक जिनगी बना ढेरो लोक ओइ स्थानपर पहुँच चुकल छैथ आ ढेरो जा रहल छैथ जे जरूर पहुँचता। भलें हुनका भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र नइ भेटैत होइन। सुखल गाछ रूपी समाजकेँ जाधैर गंगाजल सन पवित्र पानिसँ नहि पटौल जाएत ताधैर ओइमे केना कलश कलशत आ फूल फुलाएत। अगर जँ समए पाबि कलशबो करत तँ किछुए दिनमे मौला जाएत। दुखो थोड़ दिनक नइ अछि, जड़ियाएल अछि। अनेको महान बेकती ऐ दिशाकेँ देखबैक कोशिश अदम्य साहस आ शक्ति लगा केलैन मुदा जड़िसँ दुख कहाँ मेटाएल? सभ कियो मातृभूमिक सन्तान छी, सबहक दायित्व बनैए जे माइक सेवा करी। छठिआरे राति समाजक माए-बहिन कोरामे लऽ छाती लगौलैन मुदा ओकरा बिसैर केना जाइ छी? की सभ बीराने छैथ? अपन कियो नहि?"

बेर खसैत हीरानन्द चलैक विचार करए लगला। बौएलाल चाह पीबैक आग्रह केलकैन। मुदा भरियाएल पेट दुआरे हीरानन्द चाहक इनकार करैत बजला-

"खाइ बेरमे पानि नै पीने छेलौं, खाली एक लोटा पानि पिआबह।"

आँगनसँ लोटामे पानि आनि बौएलाल देलकैन। लोटो भरि पानि पीब हीरानन्द बाजला-

"बुझि पड़ैए जे अखने खा कऽ उठलौं। चाह नै पीबह, सिरिफ एक जूम तमाकुल खुआ दएह।"

अनुप तमाकुल चुनबए लगल। तैबीच हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन-

"तूँ तँ आब धुरझार किताब पढ़ए लगलह। आब तोहूँ पड़ोसीक बच्चा सभकेँ, जखन समए खाली भेटह, पढ़ाबह। ऐसँ ई हेतह जे कखनो बेकारी सेहो नइ बुझि पड़तह आ थोड़-थाड़ बच्चो सभ पढ़ै दिस झूकत।"

पढ़बैक नाओं सुनि अनुप बाजल-

"मास्टर साहैब, केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत!"

ओंगरीसँ देखबैत अनुप आगू बाजल-

"देखै छिऐ, ओ तीन घर कुरमी छी। ओकरासँ खनदानी दुश्मनी अछि। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने हकार-तिहार।"

फेर ओंगरीसँ देखबैत बाजल-

"तहिना ओ घर देखै छिऐ, मलाहक छी। भरि दिन जाल लऽ कऽ चर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखैर-झाँखैरमे मछबारि करैए। जेकरा बेच कऽ गुजरो करैए आ ताड़ी-दारू पीब कऽ औत आ झगड़ा-झाटी शुरू कऽ देत। तहिना ओ कुजरटोली छी। अछि तँ सभटा गरीबे मुदा बेवसायी अछि। स्त्रीगण सभ तरकारी बेचै छै आ पुरुख सभ पुरना लोहा-लक्करक कारोबार करैए। जातिक नाओंपर सदिखन अराड़िये करैत रहैए। तहिना हम दस घर धानुक छी। हमहींटा गरीब रही, बोइन करै छेलौं। आब तँ अपनो रमाकान्त बाबूक देल दू बीघा खेत

भऽ गेल तँए खेती करए लगलौं, नहि तँ सभ खबासी करैए। जुआन-जहान बेटी सभकेँ माथपर चँगेरा दऽ आन-आन गाम पठबैए। तँए ओकरा सबहक एकटा पाटी छै आ हम असगरे छी। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने कोनो लेन-देन। आब अहीं कहू जे केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत?”

अनुपक बात सुनि हीरानन्द गुम्म भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला जे समाजक विचित्र स्थिति अछि। एहेन समाजमे घूसब महाग-मोसकिल अछि।

..कनी काल गुम्म रहि हीरानन्द बजला-

“कहलौं तँ ठीके अनुप, मुदा ई सभ बिमारी पहिलुका समाजमे बेसी छेलइ। ओना, अखनो थोड़-थाड़ ऐछे मुदा बदैल रहल अछि। आब लोक गाम छोड़ि शहर-बजार जा-जा कल-कारखानामे काज करए लगल अछि। संगे गाममे चाह-पानक दोकान खोलि-खोलि जिनगी बदैल रहल अछि। खेती-बाड़ी तँ मरले अछि तँए ऐमे ने काज छै आ ने लोक करए चाहैए। करबो केना करत। गोटे साल रौदी तँ गोटे साल बाढ़ि आबि सभटा नष्ट कऽ दइ छइ। जहिना गरीब लोक मर-मर करैए तहिना खेतोबला सभ। खेतोबला सभकेँ देखते छिऐ बेटीक बिआह, बिमारी आ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिना खेत बेचने नइ सम्हरै छइ। ओना, सबहक जड़िमे मुरुखपना छै, जे बिना पढ़ने-लिखने नै मेटाएत। धिया-पुताकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ छै मुदा ओ मने भरि छइ। बेवहारमे एको पाइ नहि। ईहो बात छै जे जेकरा पेटमे अन्न नहि आ देहपर वस्त्र नइ रहत ओ केना पढ़त?”

हीरानन्द आ अनुपक सभ गप बाड़ीमे टाटक पुरना कड़ची उजारैत सुमित्रा सेहो सुनै छल। ..बारह-तेरह बर्खक सुमित्रा अछि। अनुपक घरक बगलेमे ओकरो घर छइ।

तमाकुल खा हीरानन्द विदा भेला। हीरानन्दकेँ अरियातने पाछू-पाछू बौएलालो बढ़ै छल। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्दकेँ छोड़ि बौएलाल घुमि गेल।

जाबे बौएलाल घुमि कऽ घरपर आएल ताबे सुमित्रो जरनाक कड़ची आँगनमे रखि बौएलाल लग आएल। ओना, परिवारक झगड़ासँ धिया-पुताकेँ कोन मतलब। धिया-पुताक दुनियाँ अलग होइए। सुमित्रा बौएलालकेँ कहलक-

“हमरा पढ़ा दे।”

बौएलाल किछु कहैसँ पहिने मने-मन सोचए लगल जे हमर बाबू आ सुमित्राक बाबूक बीच केते दिनसँ झगड़ा अछि, दुनूक बीच केता दिन गारि-गरौवैल होइत देखै छी, तखन केना पढ़ा देबइ। मुदा हीरानन्दक विचार मने रहै तँए गुनधुन करए लगल।

कनी काल गुनधुन करैत सुमित्राकेँ कहलक-

“पहिने माएसँ पुछि आ।”

सुमित्रा दौग कऽ आँगन जा माएकेँ कहलक-

“माए, हम पढ़ब?”

माए-

“केतए पढ़मे?”

“बौएलाल लग।”

बौएलालक नाओं सुनि माए मने-मन विचारए लगली जे हमरासँ तँ कम्मो-सम्म मुदा हुनकासँ तँ बौएलालक पिताकेँ झगड़ा छैन..!

कनी काल गुनधुन कऽ माए कहलकै-

“जँ बौएलाल पढ़ा देतौ तँ पढ़।”

खनदानी घरक बेटी सुमित्राक माए। आन-आन घरक बेटियो

आ पुतोहुओ चँगेरा उघैए मुदा सुमित्राक माए केतौ नै जाइत। अपने राम प्रसाद भार उघैए। मुदा स्त्री नहि।

जहिया कहियो अनुप आ राम प्रसादक बीच भार उघैक सबालपर झगड़ा होइत, तँ सुमित्रा माइक विचार अनुप दिस रहैत। मुदा मरदक झगड़ामे केना विरोध करैत। तँए चुपचाप आँगनमे बैस मने-मन अपने पतिकेँ गरियबैत जे कोन कुल-खनदानमे चलि एलौं..!

घुमि कऽ सुमित्रा आबि बौएलालकेँ कहलकै-

“माइयो कहलक।”

“ठीक छइ। मुदा पढ़मे करबैन कऽ, भरि दिन हमहूँ काजे उदममे लगल रहै छी आ साँझू पहरकेँ अपने पढ़ैले जाइ छी।”

दुनू गोरे गर लगबैत तँइ केलक जे काजक बेरसँ पहिनहि भोरमे पढ़ब।

◌

शब्द संख्या : 2906

सात

तीन बजे भोरमे हीरानन्दक नीन टुटलैन। नीन टुटिते बाहर निकैल झल-अन्हार देख पुनः ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। अनुपक बात मनकेँ झकझोड़ै छेलैन, समाजमे ऐ रूपे कटुता, विषमता पसैर गेल अछि जे घर-घर, जाति-जाति आ टोल-टोलमे भैंसा-भैंसीक कनारि पकैड़ नेने अछि। एहेन स्थितिमे केना समाज आगू बढ़त? समाजकेँ आगू बढ़ैले एक-दोसरक बीच आत्मीय प्रेम हेबा चाहिऐ। से केना हएत..?

प्रश्नकेँ जेते सोझराबए चाहै छला तेतेक ओझरा जा छेलैन। विचित्र स्थिति हीरानन्दक आगू बनि गेलैन। अनेको प्रश्न मनमे उठैत रहैन आ तर्क-वितर्कक बीच अन्त होइत-होइत ओझरा जाइ रहैन। जेना विवेक काजे ने करैन। तैबीच पूबारि भागमे चिड़ैक चहचहेनाइ सुनलैन। चिड़ैक चहचहेनाइ सुनि कोठरीसँ निकैल हीरानन्द पूब दिस तकलैन तँ मेघ ललिआएल बुझि पड़लैन। घड़ीपर नजैर देलैन तँ पाँच बजैत देखलैन। कोठरी आबि लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। मुदा मनकेँ एहेन गछाइर कऽ सबाल पकड़ने रहैन जे चलैक सुधिए ने रहलैन। जाइत-जाइत बहुत दूर चलि गेला। खुला मैदान देख, लोटा रखि टहलबो करैथ आ प्रश्नो सोझरबैक कोशिश करैत रहैथ। मुदा तैयो निष्कर्षपर नै पहुँच सकला। पुनः घुमि कऽ घरपर आबि, दतमैन

कऽ मुँह हाथ धोइ चाह बनबए लगला। ओना, चाहक सभ समान चुल्हियेक ऊपरका चक्कापर रखल रहै छैन, मात्र केतली पखारब, गिलास धोअब आ ठहुरी-जारैन डेढ़ियापर सँ आनए पड़लैन। सभ किछु सेरिया हीरानन्द चाह बनबए बैसला मुदा मन वौआइते छेलैन। असथिरे नै होइ छेलैन। असगरे चाह पिबनिहार, मुदा भरि केतली पानि दऽ चुल्हिपर चढ़ा देलैन। जखन चाह खौलए लगल तखन मनमे एलैन जे अनेरे एते चाह किए बनबै छी? फेर केतली चुल्हिपर सँ उताइर दू गिलास दूध मिलौल पानि कातमे राखल गिलासमे रखि, बाँकी दूध मिलौल पानि केतलीमे दऽ चुल्हिपर चढौलैन।

मन वौआइते छेलैन। आँच लगबैत गेला मुदा चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलखिन। आगिक तावपर दुनू गिलास पानि जरि गेल, तखन मन पड़लैन- जा! चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलिऐ..!

हाँइ-हाँइ कऽ डिब्बासँ तरहत्थीपर चाह पत्ती लऽ हीरानन्द केतलीक झँप्पा उठौलैन। नजैर केतलीक भीतर गेलैन तँ पानियेँ नहि! सभटा पानि जरि गेल! तरहत्थी परहक चाह पत्ती डिब्बामे रखि पुनः केतलीमे पानि देलैन। चाह बनल। भिनसुरका समए तँए दू गिलास पीलैन।

एक तँ ओहिना हीरानन्दक मन समाजक समस्यामे ओझराएल छेलैन तैपर सँ चाह आरो ओझरी लगा देलकैन। खाएर.., चाह पीब दरबज्जापर बैस विचारए लगला। मुदा चाहक गर्मी पाबि मन आरो बेसी वौआए लगलैन। जहिना केकरो कोनो वस्तु हेरा जाइ छै आ ओ खोजए लगैए तहिना हीरानन्द समाजक ओइ समस्याक समाधान खोजए लगला जे समस्या समाजकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देने अछि। लगमे दोसर कियो ने छेलैन जिनकासँ तर्क-वितर्क करितैथ। असगरे हीरानन्द ओझराएल रहला। अपने मनमे सवालो उठैन जवाबो

खोजैथ। अध्ययनो बहुत अधिक नहियेँ छैन। सिरिफ मैट्रिक पास छैथ। मुदा तैयो समस्याक समाधान तकिते रहला, छोड़लैन नहि। जहिना पथिककेँ बिनु देखलो पथ हेराइत-भोथियाइत भेटिए जाइ छै तहिना हीरानन्दोकेँ भेटलैन। अनासुरती नजैर मिथिलाक चिन्तन-धारा आ मिथिलाक समाजक बुनाबटिक ढाँचापर पड़लैन। चिन्तनो-धारा आ समाजिक ढँचो, दुनूपर नजैर पड़िते मनमे एकटा नव ज्योति बिजलोकाक इजोत जकाँ मनमे चमकलैन। बिछानपर सँ उठि ओसारेपर आबि टहलए लगला। टहैलते अनासुरती मुहसँ निकललैन-

“वाह रे मिथिलाक चिन्तक! दुनियाँक गुरु! जे ज्ञान हजारो बर्ख पहिने मिथिलाक धरतीपर आबि गेल छल, वएह ज्ञान उन्नैसम शताब्दीमे मार्क्स कठिन संघर्ष करि कऽ अनलैन, जइसँ दुनियाँक चिन्तनधारा बदलल। मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य भेलै जे समाजक निआमक धूरतइ केलक। जे चिन्तक मनुखकेँ सभ मनुख मनुख छी एक रूपमे देखलैन, ओइ रूपकेँ निआमक, शासनकर्ता टुकड़ी-टुकड़ी कऽ काटि देलैन! आइ जरूरत अछि ओइ सभ टुकड़ीकेँ जोड़ि-जोड़ि एक रूप बनबैक। जे नान्हिटा काज नइ अछि। तेतबे नहि, अखनो टुकड़ी बनौनिहारक कमी नइ अछि। जखन कि भेल टुकड़ीकेँ स्वयं ओ चेतना नइ छै जे टुकड़ी भेल कातमे पड़ल छी आ कौआ-कुकुर खाइए..!”

एहेन विचार हीरानन्दक मनमे उपैकते मन असथिर भेलैन, मनमे नव स्फूर्ति, नव चेतना आ नव उत्साह जगलैन। नव ढंगसँ सभ वस्तुकेँ देखए लगला। तैबीच शशि शेखर सेहो टहलैत-बुलैत लगमे एलैन।

हीरानन्दपर नजैर पड़िते शशि शेखरकेँ बुझि पड़लैन जेना अखने नहा कऽ पोखैरसँ ऊपर भेला अछि। हीरानन्दक मन विचारमे डुमले

रहलैन। मने-मन सोचैथ जे जहिना पटुआक सोन, सन्नैक सोन वा रूइक रेश महीन होइत मुदा कारीगर ओइ रेशकेँ टेरुआ वा टौकरीक सहारासँ समैट कऽ सूत वा सुतरी बना कपड़ा वा बोरा वा मोटगर रस्सा बनबैए, तहिना समाजोक टुटल मनुखकेँ जोड़ि समाज बनबए पड़त। तखने नव समाजक निर्माण होएत। जे अद्दी-गुद्दी काज नहि बल्कि कठिन काज छी। कठिन काज-ले कठिन मेहनतक जरूरत अछि। सिरिफ कठिन मेहनते केलासँ सभ कठिन काज नइ भऽ सकैए। कठिन मेहनतक संग, सही समझ आ सही रस्ताक बोध सेहो जरूरी अछि। तँए कठिन मेहनत, गम्भीर चिन्तन आ आगू बढ़ैले काज करैक अदम्य साहस सेहो सभमे हेबा चाही। तैसंग मजगूत संकल्प सेहो होएब जरूरी अछि।

विचारक संग-संग हीरानन्दक मनमे कठिन कार्यक संकल्प सेहो अपन जगह बनबए लगल। भिनसुरका समए तँए लाल सुरूजमे ठंढपन सेहो रहबे करए। एक टकसँ सुरूज दिस देखैत हीरानन्द अपन विचारकेँ संकल्प लग लऽ जा दुनूकेँ हाथ पकैड़ दोस्ती करौलैन। दुनूक बीच दोस्ती होइते मनक नव उत्साह शरीरमे तेजी आनए लगलैन।

दरबज्जाक आगुए देने उत्तरे-दच्छिने रस्ता। हीरानन्द शशि शेखरकेँ कहलखिन-

“चलू, कनी बुलियो-टहैल लेब आ एकटा गप्पो करब।”

दुनू गोरे दरबज्जापर सँ उठि आगू बढ़ला आकि उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ तीनटा ढेरबा बच्चाकेँ जाइत देखलैन। तीनूक देह कारी खटखट। केश उड़ियाइत। डोरीबला फाटल-कारी झामर पेन्ट तीनू पहिरने। देहमे केकरो कोनो दोसर वस्त्र नहि। तीनूक हाथमे पुरना साड़ीक टुकड़ाकेँ चारू कोण बान्हल झोरा। तीनू गप-सप्प करैत उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ जाइत। तीनूक गप-सप्प सुनैले हीरानन्द कान पथलैन।

..मुस्कियाइत बेंगबा बजैत रहए-

“रौतुका बसिया रोटी आ डोका तीमन तेते ने खेलियौ जे चललो ने होइए। पेट ढब-ढब करैए।”

दहिना हाथ बढ़बैत फेर बाजल-

“हे सुंहीं, हमर हाथ केहेन गमकै छै! जेना बुझि पड़तौ जे कटुक-मसल्ला लगल छइ!”

हाथ समैट बाजल-

“तूँ की खेलँह गै रोगही?”

सिरसिराइत रोगही बाजल-

“हमरा माए कहलक जे जो डोका बीछि कऽ ला-गे। ताबे हमहूँ मड़ूआ उला-पीसि कऽ रोटी पकेने रहबौ। डोका चटनी आ रोटी खइहेँ।”

रोगहीक बात सुनि बेंगबा कबुतरीकेँ पुछलक-

“तूँ गै कबुतरी?”

“काल्हि जे माए डोका बेचैले गेल रहै तँ ओमहरेसँ मुरही किनने आएल। सएह खेलौं।”

कबुतरीक बात सुनि बेंगबा पनचैती केलक जे तोहर जतरा सभसँ नीक छौ। आइ तोरा सभसँ बेसी डोका हेतौ। सभसँ बेसी तोरा, तइसँ कम हमरा आ सभसँ कम रोगहीकेँ हेतइ।”

बेंगबाक पनचैतीक विरोध करैत रोगही बाजल-

“बड़ तूँ पण्डित बनै छँह। तोरे कहने हमरा कम हएत आ तोरा सभकेँ बेसी। हमरा जकाँ तोरा दुनू गोरेकेँ डोका बीछैक लूरि छौ? घौदियाएल डोका केतए रहै छै से बुझै छीही?”

मुँह सकुचबैत बेंगबा पुछलक-

"केतए रहै छै से तोंहें कह?"

"किए कहबौ। तूँ जे खेलें से हमरा बाँटि देलें?"

बेंगबा-

"बाँटि दैतियौ से हम अगरजानी जननिहार भगवान छी। तूँ कहलें हेन अखनी आ बाँटि दैतियौ अँगनेमे?"

बेंगबाक बात सुनि रोगही निरूत्तर भऽ गेल। हीरानन्द आ शशि शेखर तीनूक बात चुपचाप ठाढ़ भऽ सुनलैन। ताधैर तीनू गोरे हीरानन्दक लग पहुँच गेल रहए। हाथक इशारासँ तीनू गोरेकेँ हीरानन्द सोर पाड़ि पुछलखिन-

"बौआ, तूँ सभ केतए जाइ छह?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि बेंगबा धाँइ-दे बाजल-

"डोका बीछैले!"

"डोका बीछि कऽ की करै छहक?"

"अपनो सभतूर खाइ छी आ माए बेचबो करैए। बाउ कहने अछि जे डोका बेच कऽ पाइ हेतौ तइसँ अँगा-पेन्ट कीनि देबौ। घुरना बिआहमे पिहिन कऽ बरियाती जइहें।"

बेंगबाक बात सुनि हीरानन्द रोगहीकेँ पुछलखिन-

"बच्चा तूँ?"

रोगही-

"हमहूँ डोके बीछैले जाइ छी। माए कहलक जे डोकासँ जे पाइ हेतौ, तइसँ शिवरातिक मेलामे महकौआ तेल, महकौआ साबुन, केश बन्हैले फीता आ किलीप कीनि देबौ।"

मुस्कियाइत हीरानन्द बातक समर्थनमे मुड़ियो डोलबै छला आ मने-मन विचारबो करैथ जे केतेक आशासँ गरीबोक बच्चा जीबैए।

शशि शेखर दिस देख आँखिक इशारासँ कहलखिन-

"एकरा सबहक बगए देखियौ आ आशा देखियौ!"

तेसर बचियाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, तूँ?"

हीरानन्दक आँखिमे आँखि गड़ा कबुतरी कहलकैन-

"हमरा माए कहने अछि जे डोका-पाइसँ सल्बार-फराक कीनि देबौ।"

काजक समए दुइर होइत देख हीरानन्द तीनूकेँ कहलखिन-

"जाइ जाह।"

हीरानन्द आ शशि शेखर घुमि कऽ दरबज्जापर एला। ओ तीनू बच्चा गप-सप्प करैत आगू बढ़ल। थोड़े आगू बढ़लापर कबुतरी बेंगबाकेँ पुछलक-

"बेंगबा, तूँ बिआह कहिया करमेँ?"

बिआह सुनि बेंगबाकेँ मनमे खुशी भेलइ। हँसैत बाजल-

"अखनी बिआह नै करबै। मामा गाम गेल रहिऐ तँ भैया कहलक जे कनी और बढ़मेँ तँ तोरा भिबन्डी नेने जेबौ। ओतै नोकरी करबै। जखन बहुत रूपैआ हेतै तब ईंटाक घरो बनेबै आ बिआहो करबै।"

बिच्चेमे रोगही कहलकै-

"तोरा सनक ढहलेल बुते बौह सम्हारल हेतौ?"

बौहुक नाओं सुनि बेंगबाक हृदए खुशीसँ गदगद भऽ गेल। हँसैत बाजल-

"आँइ गे रोगही, तूँ हमरा पुरुख नइ बुझैछेँ। हम तँ ओहेन पुरुख

छी जे एगोकेँ के कहए, तीन गो बौहुकेँ सम्हारि लेब!"

कबुतरी-

"खाइले की देबही बौहकेँ?"

बेंगबा-

"भिबन्डीमे जब नोकरी करबै तँ बुझै छीही जे केते कमेबै? दू हजार रूपैआ एक्के महिनामे हेतइ।"

हँसैत रोगही बिच्चेमे टिपलक-

"दू हजार रूपैआ गनलो हेतौ?"

"बीस-बीस कऽ गनबै। रूपैआ हेतै तँ फुलपेन्ट सिएबै, खूब चिक्कन अँगा किनबै, घड़ी किनबै, रेडी किनबै, मोबाइल किनबै, डोरीबला जुत्ता किनबै..; तब देखयहैन जे बेंगबा केहेन लगै छइ।"

"तोरा नोकरी के रखतौ?"

"गामबला भैया नोकरी रखा देतइ। कहलक जे जही मालिक ऐठीम हम रहै छिऐ तही मालिक ऐठीम हमरो रखा देतइ। बड़ धनीक मालिक छइ। मारिते नोकर छइ। हम जे मामा गाम गेल रही तँ भैयो गाम आएल रहए। ओ कहै जे हम मालिकक कोठीमे रहै छिऐ। दरमाहा छोड़ि कऽ बाइलियो खूब कमाइ छइ। मालिककेँ एकटा बेटी छइ। उ बड़का स्कूल-कौलेजमे पढ़ै छइ। अपनेसँ हवागाड़ी चलबै छइ। सभ दिन हमर भैया ओकरा स्कूल संगे जाइ छइ। उ पढ़ै छै आ हमर भैया गाड़ी ओगरै छइ। जखनी छुट्टी भऽ जाइ छै तखनी दुनू गोरे संगे अबै छइ। उ मलिकाइन हमरा भैयाकेँ मानबो खूम करै छइ। संगे-संग सिलेमा देखैले जाइ छइ। बजार घुमैले जाइ छइ। बड़का दोकान-होटलमे दुनू गोरे खूम लड्डू खाइए। अना तँ बड़का मालिक सभ नोकरकेँ दीयाबत्तीमे चिकनका कपड़ा दइ छै, हमरो भैयाकेँ दइ छइ। छोटकी मलिकाइन अपने दिसनसँ निकहा-निकहा फुलपेन्ट, निकहा-निकहा अँगा कीनि-कीनि दइ छइ। रूपैओ खूम दइ छइ...।"

तीनू गोरे बाध पहुँच गेल। बाध पहुँचते तीनू तीन दिस भऽ गेल। तीन दिस भऽ तीनू गोरे डोका बीछए लगल। ऊपरे सभमे डोका चरौर करैले निकलल रहए। डोका बीछि तीनू गोरे घुमि गेल।

दरबज्जापर आबि हीरानन्द शशि शेखरकेँ पुछलखिन-

"शशि, की सभ ओइ बच्चा सभमे देखलिऐ?"

मुँह बिजकबैत शशि बजला-

"भाय, ओइ बच्चा सभकेँ देख क्षुब्ध छेलौं। ओकरा सबहक बगए देखै छलिऐ आ मनक खुशी देखै छलिऐ! जेना दुनियाँ-दारीसँ कोनो मतलब नहि, एकदम निर्विकार। अपने-आपमे मगन छल।"

हीरानन्द-

"कहलौं तँ ठीके मुदा एकटा बात तर्कक छल। अपना सबहक समाज तेते नमहर अछि जइमे भिखमंगासँ राजा धरि बसैए। एक दिस बड़का-बड़का कोठा अछि तँ दोसर दिस खोपड़ी। एक दिस औझुका विकसित मनुख अछि तँ दोसर दिस आदिम जुगक मनुख सेहो अछि। एते पैघ इतिहास समाज अपना पेटमे रखने अछि, मुदा ने ओइ इतिहासकेँ कियो पढ़निहार अछि आ ने बुझनिहार।"

"ठीके कहलौं भाय!"

"आइ धरि, हम सभ समाजक जइ रूपकेँ देखै छी ओ ऊपरे-झापरे देखै छी। मुदा देखैक जरूरत अछि ओकर भीतरी ढाँचाकेँ। जहिना समुद्रक ऊपरका पानि आ लहैर तँ सभ देखैए मुदा ओइक भीतर की सभ अछि से देखनिहार कए गोरे अछि?"

सभ दिन भोरमे बौएलाल अपनो पढ़ैत आ सुमित्रोकेँ पढ़ा

दइत। जाधैर टोल-पड़ोसक लोक सुति कऽ उठैत ताधैर बौएलाल आ सुमित्रा एक-डेढ़ घन्टा पढ़ि लिअए। एक तँ चफलगर, दोसर पढ़ैक जिज्ञासा सुमित्रामे तँए एक्के दिनमे अ-आ-सँ-य-र-ल-व तक सीखि गेल। कब्बीरकाने सीखि सुमित्रा बाल-पोथी पढ़ब आ खाँत सिखब शुरू केलक।

सुमित्राकेँ पढ़ैत देख माए-बापकेँ खुशी होइ। ओना, माइयो आ बापोक मनमे शुरूहेसँ रहै जे बच्चा सभकेँ पढ़ाएब मुदा समैक फेर आ परिवारक विपन्नताक चलैत मनक सभ मनोरथ मनेमे गलि कऽ विलीन भऽ गेल रहइ। मुदा जहियासँ सुमित्रा पढ़ए लगल तहियासँ ओ मनोरथ अंकुरित हुअ लगलै। मनुखक जिनगीक गति मनुखक विचारो आ बेवहारोकेँ बदलैए। अनुपक प्रति जे कटुता आ दुर्विचार राम प्रसादक मनकेँ गहिया कऽ धेने छेलै ओ नहुँए-नहुँए पघिलए लगलै। सुमित्राक माए अनुपक आँगन जाइ-अबै छेली। तीमन-तरकारीक लेन-देन पतिसँ चोरा कऽ सेहो करिते छेली। मुदा तैयो राम प्रसादक मनमे पैछला दुश्मनी नीक-नहाँति मेटाएल नइ छेलइ। जहिना बरसातमे सुखाएल धारमे पानि अबिते जीवित धारक रूप-रेखा पकैड़ लैत तहिना विद्याक प्रवेशसँ रामप्रसादोक परिवारक रूप-रेखा बदलए लगल। भाए-भैयारीमे भैंसा-भैंसीक दुश्मनी बदलए लगलै।

मिरचाइ, तरकारी आ चुन कीनैले अनुप हाट गेल रहए। कोसे भरिपर कछुआ हाट अछि। तैबीच राम प्रसाद केता बेर अनुपक डेढ़ियापर आबि-आबि अनुपक खोज केलक। राम प्रसादक मनमे अधला विचारकेँ धिक्कारि नीक-विचार अपन जगह बना लेलक। दोसर साँझमे अनुप हाटसँ घुमि कऽ रस्तेमे अबै छल आकि राम प्रसाद फेर तकैले पहुँचल। अनुपपर नजैर पड़िते राम प्रसाद कठ हँसी हँसि कहलक-

"बहुत दिन जीबह भैया। बेरूए पहरसँ केतए हेरा गेल छेलह?"

राम प्रसादक बदलल चेहरा आ बदलल विचार देख-सुनि अनुप मने-मन तारतम करए लगल जे आइ सुरूज केमहर उगला। जिनगी भरिक दुश्मनी एकाएक एना बदैल केना गेल?

पैछला गप अनुपकेँ मन पड़लै। अखन धरि रमपरसदबाक संग हमरा दुश्मनी ओकर अधले काजक दुआरे ने छल। मुदा ताराकान्तकेँ धैनवाद दिऐ जे वेचारा मारियो खा, जहलो जा गाममे खबासी प्रथा मेटौलक। जाबे रमपरसदबा अधला काज करै छल ताबे जँ दुश्मनी छल तँ ओहो नीके रहए। किएक तँ हमहूँ अपना डारिपर छेलौं...। मुदा आब जँ ओ ओइ काजकेँ छोड़ि देलक तँ हमरो मिलान करैमे हरज कथी। कालोक गति तँ प्रबल होइ छइ। समैयो बदैल रहल अछि। एक तँ पहिलुका जकाँ भारो-दौर लोक नै दइए, दोसर पहिने लोक कान्हपर भार उघै छल आब गाड़ी-सवारीमे लऽ जाइए। तेतबे नहि, आब सबहक समांग परदेश सेहो खटए लगल अछि। गामक मालिको-मलिकानाक पहिलुका रूतबा कमले जाइ छइ।

राम प्रसादक बात सुनि अनुप बाजल-

"हाट जेनाइ जरूरी छेलए। घरमे ने मिरचाइ छल आ ने चुन। जे चुनवाली चुन बेचए अबै छेलए ओकर सासु मरि गेलइ। ऐ साल एक्को दिन कटहरक आँठी देल खेरही दालि सेहो नै खेने छेलौं तँए मन लगल छेलए।"

कहि अनुप सोझे आँगन जा ओसारपर आँठी आ मेरचाइक मोटरी रखि, कोहीमे चुन रखलक।

एकचारीमे बैस राम प्रसाद तमाकुल चुनबैत छल। चुनक कोही खोल्हियापर रखि अनुप बाहर आबि राम प्रसादकेँ कहलक-

"ताबे तमाकुल लगाबह, कनी हाथ-पएर धोइ लइ छी। एक तँ

कच्ची रस्ता तहूमे तेते टेक्टर सभ चलै छै जे भरि ठेहुन गरदा रस्तामे भऽ गेल अछि। जहिना लोकक पएर थाल-पानिमे धँसै छै तहिना गरदोमे धँसै छइ।"

कहि अनुप इनारपर जा हाथ-पएर धोइ कऽ आबि राम प्रसाद लग आबि बैसल। अनुपकेँ तमाकुल दैत राम प्रसाद बाजल-

"भैया, दुपहरेसँ मनमे आएल जे तोरो बरदक भजैती आन टोलमे छह आ हमरो अछि। दुनू गोरे ओकरा छोड़ा कऽ अपनेमे लगा लएह। जइसँ दुनू गोरेकेँ सुविधा हेतह।"

थूक फेक अनुप कहलै-

"ई बात तँ केते दिनसँ बौएलाल कहै छेलए जे जेते काल बरद अनैमे लगै छह ओते कालमे एकटा काज भऽ जेतह।"

मुड़ी डोलबैत राम प्रसाद बाजल-

"काल्हि जा कऽ तोहूँ अपन भजैतकेँ कहि दहक आ हमहूँ कहि देबइ। परसूसँ दुनू गोरे एक्केठीन जोतब।"

आँगन बहारब छोड़ि रधियो आबि कऽ टाटक कातमे ठाढ़ भऽ गेल छेली। किएक तँ बहुतो दिनक पछाइत दुनू गोरेकेँ मुँहा-मुँही गप करैत देखलक। ..बरदक भजैतीक गप कऽ अनुप राम प्रसादकेँ कहलक-

"अबेर भऽ गेल। अखन तोहूँ जाह, हमहूँ पर-पैखाना दिस जाएब।"

जहिना सड़ल-सँ-सड़ल पानिमे कमल फुलेलासँ भगवानक माथपर चढ़ैक अधिकारी भऽ जाइए तहिना बौएलालक सेवा सभ-ले हुअ लगल। जइसँ गाममे बौएलाल चर्चाक पात्र बनि गेल। हीरानन्दक असरा पाबि बौएलाल रामायण, महाभारत, कहानी, कविता पढ़ब

सीखि लेलक। जइ गाममे लोक भरि-भरि दिन ताश खेलैत, जुआ खेलैत तइ गाममे बौएलालक दिनचर्या सभसँ अलग बितए लगल, जइसँ बौएलालक जिनगीक रस्ता बदैल गेलइ। अधिक काल हीरानन्द बौएलालकेँ कहथिन-

"बौएलाल, गरीबक सभसँ पैघ दोस्त मेहनत छी। जे कियो मेहनतकेँ दोस्त बना चलत वएह गरीबी रूपी दुष्टकेँ पछाइर सकैए। तँए सदिखन समैकेँ पकैड़ सही रस्तासँ मेहनत केनिहार जे अछि, वएह ऐ धरती आ दुनियाँक सुख भोगि सकैए।"

ः

शब्द संख्या : 2465

आठ

रौतुके गाड़ीसँ रमाकान्त तीनू गोरे अपना टीशनमे उतरला। अन्हार राति। भकोभन स्टेशन। खाली दुइए गोरे, स्टेशन मास्टर आ पैटमेन स्टेशनक घरमे केबाड़ बन्न केने जगल रहए। लेम्प जरैत रहइ। ने एक्कोरती इजोत प्लेटफार्मपर आ ने मुसाफिरखानामे। अन्हारेमे रमाकान्त तीनू गोरे अपन सभ समान मुसाफिरखानामे रखि, जाजीम बिछा बैसला। गाड़ीक झमारक संग दू रातिक जगरनासँ तीनू गोरेक देह ओंघीसँ भँसियाइत रहैन। प्लेटफार्मक बगलमे ने एक्कोटा चाहक दोकान खुगल आ ने एक्कोटा दोकनदार जगल रहए। ने कोनो दोकानमे इजोत होइ छेलै आ ने गाड़ीसँ एक्कोटा दोसर पसिंजर उतरल। नीन तोड़ै दुआरे रमाकान्त चाह पीबए चाहैथ मुदा कोनो जोगार नै देख कखनो समान लग बैसैथ तँ कखनो उठि कऽ टहलए लगैथ।

श्यामा सुति रहली आ जुगेसरो सुति रहल। मुदा रमाकान्तक मनमे होनि जे जँ कहीं सुति रहब आ सभ समान चोरि भऽ जाए तखन तँ भारी जुलुम हएत। ओना, नीन तोड़ैक एकटा नीक उपाय ढाकीक-ढाकी मच्छर रहबे करैन। तँए जुगेसरो आ श्यामो अपन-अपन चद्दैर ओढ़ि मुँह झाँपि कऽ सूतल रहैथ।

प्लेटफार्मपर पनरह-बीसटा अनेरुआ कुकुर एमहर-सँ-ओमहर करैत रहए। प्लेटफार्मक पछबारि भागक माल-जालक हड्डीक ढेरीसँ

गन्ध से अबैत रहइ। सकरीक एकटा बेपारी हड्डीक कारोबार करैए। गाम-घरमे जे माल-जाल मरैत ओकर हड्डी गामे-घरक छोटका बेपारी, भारपर उघि-उघि अनैए ओही बेपारी ऐठाम बेच-बेच गुजर करैए। जखन बेसी हड्डी जमा भऽ जाइ छै, तखन ओ मालगाड़ीक डिब्बामे लादि बाहर पठबैए। जाधैर हड्डी प्लेटफार्मक बगलमे रहैए ताधैर अनेरुआ कुत्ता सभ ओइ हड्डीकेँ चिबबै पाछू तबाह रहैए। दिन रहौ कि राति, जेते टीशनक कातक कुकुर अछि सभटा ओही इर्द-गिर्द मड़ाइत रहैए। ओना, आनो-आनो गामक कुकुर अपन गाम छोड़ि ओतए रहैए। ..एकटा पिल्ला एकटा पिल्लीक संग प्लेटफार्मक पुबारि भागसँ अबिते छल कि एकटा दोसर कुत्ताक नजैर पड़लै। बिना बोली देनहि ओ कुकुर दौग कऽ ओइ पिल्ला-पिल्ली लग पहुँच गेल। आगू-आगू पिल्ली आ पाछू-पाछू पिल्ला नाङैर डोलबैत जाइत रहए। ओ (दोसर कुकुर) पिल्लीक मुँह सूँघलक। सुँघिते पिल्ली मुँह चियारि कऽ ओइ कुत्तापर टुटल। पिल्लीकेँ टुटिते पैछला पिल्ला जोरसँ भुकलक। कुत्ताक अवाज सुनिते, जेते अनेरुआ कुकुर प्लेटफार्मपर रहए, सभ भुकैत दौग कऽ ओइ पिल्लीकेँ घेर लेलक। सभ सभपर भूकए लगल। मुदा पिल्ली डेराएल नहि। रानी बनि हस्तिनीक चालिमे पच्छिम-मुहेँ चलल। अबैत-अबैत टिकट घरक सोझमे बैस रहल। पिल्लीकेँ बैसते सभ पिल्ला पटका-पटकी करए लगल।

प्लेटफार्मक पछबारि भाग, कदमक गाछक निच्चाँमे मघैया डोम सभ डेरा खसौने रहए। तखने एकटा छौड़ा एकटा छौड़ीक संग, डेरासँ थोड़े पच्छिम जा लट्टा-पट्टी करैत रहए। ..कुत्ताक अवाज सुनि एक गोरेकेँ नीन टुटलै। नीन टुटिते आँखि तकलक कि पछबारि भाग दुनू गोरेकेँ लट्टा-पट्टी करैत देखलक। ओ केकरो उठौलक नहि। असगरे उठि कऽ ओइ दुनू लग पहुँचल। ओहो दुनू देखलकै। छौरा ससैर कऽ झाड़ा फीड़ैले कातमे बैस गेल। मुदा छौड़ी चलाक।

फरिक्केसँ ओइ आदमीकेँ कहलकै-

"काका?"

'काका' सुनि ओ किछु बाजल नहि, मुदा घुरबो नै कएल। आगुए-मुहेँ ससरैत बढ़ल। छौड़ियो ओकरे दिस ससरल। लगमे पहुँचते छौड़ी कन्हापर दहिना हाथ दैत फुसफुसा कऽ कहलकै-

"काका..!"

कान्हपर हाथ पड़िते कक्काक मन बदलए लगलैन। जहिना शिकारीकेँ दोसराक शिकार हाथ लगलापर खुशी होइत तहिना कक्कोकेँ भेलैन। ओहो अपन दहिना हाथ छौड़ीक देहपर देलखिन। देहपर हाथ पड़िते छौड़ी हल्ला केलक। छौड़ो देखैत। उठि कऽ ओहो हल्ला करए लगल। हल्ला सुनि सभ मघैया उठि-उठि दौगल।

स्टेशनक टिकट घरमे टिकट मास्टर पैटमेनकेँ कहलक-

"रघू, प्लेटफार्मपर बड़ हल्ला होइ छै जा कऽ देखहक तँ!"

पैटमेन जवाब देलकैन-

"टीशन छिऐ। सभ रंगक लोक ऐठाम अबै-जाइए। जँ हम ओमहर देखैले जाइ आ एमहर घरमे चोर चलि आबए तखन असगरे अहाँ बुते सम्हारल हएत। भने केबाड़ बन्न छइ। दुनू गोरे जागलटा रहू, नइ तँ सरकारी समान चोरि भेने दुनू गोरेक नोकरी जाएत। कोनो कि सुरक्षा गार्ड अछि जे चोरिक दोख ओकरा लगतै।"

पैटमेनक बात स्टेशन मास्टरकेँ नीक बुझि पड़लैन, बजला-

"ठीके कहलह।"

दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। लेम्प जरिते रहइ। केबाड़क दोग देने पैटमेन प्लेटफार्म दिस तकलक तँ देखलक जे कुत्ता सभ पटका-पटकी करैए। अन्हार दुआरे मघैया सभकेँ देखबे नै केलक।

एक दिस कुत्ता सबहक झौहैर आ पटका-पटकी तँ दोसर दिस मघैया सबहक गारि-गरौवैल प्लेटफार्मकेँ गदमिशान केने। ..रमाकान्त सोचैथ जे भने भऽ रहल अछि। लोकक हल्लासँ हमर समान तँ सुरक्षित अछि। जुगेसरकेँ उठबैत कहलखिन-

"जुगे, कनी आगू बढ़ि कऽ देखहक तँ कथीक हल्ला होइ छइ?"

जुगेसर उठि कऽ बाजल-

"काका, कोन फेरामे पड़ै छी! बस-स्टेण्ड आ रेलबे स्टेशनमे अहिना हरिदम झूठो-फूसि-ले हल्ला होइते रहै छइ। अपन जान बचाउ। अनेरे केतए जाएब।"

भोर होइते टमटमबला सभ आबए लगल। थोड़े हटि कऽ उत्तरबारि भाग, ठकुरबाड़ीमे घड़ी-घण्ट बाजब शुरू भेल। घड़ी-घण्टक अवाज सुनि रमाकान्त नमहर साँस छोड़लैन। जुगेसरकेँ कहलखिन-

"ओंघीसँ मन भकुआएल अछि। चाहो दोकानपर लोक सभकेँ गल-गुल करैत सुनै छिऐ। कनी चाह पीने अबै छी। ताबे तूँ समान सभ देखैत रहह।"

रमाकान्त उठि कऽ कलपर जा कुरुर केलैन। पानि पीलैन। पानि पीब चाहक दोकानपर पहुँच चाह पीलैन। चाह पीब पान खा घुमि कऽ आबि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"आब तोंहू जाह। चाह पीब दूटा टमटम सेहो केने अबिहह।"

जुगेसर उठि कऽ कलपर जा पहिने कुरुर केलक। कुरुर केला पछाइत सोचलक जे अखन भिनसुरका पहर छी। तोहूमे तीनियेँ-चारिटा टमटमबला आएल अछि। जँ कहीं चाह पीबैले चलि जाइ आ एमहर टमटमबला दोसर गोरेकेँ गछि लइ तखन तँ पहपैट भऽ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने टमटमेबलाकेँ कहि दिऐ। ..टमटमबला लग पहुँच

जुगेसर बाजल-

"भाय, टमटम खाली छह?"

"हँ।"

"चलबह?"

"हँ, चलब।"

पहिल टमटमबलाक घरवाली दुखित छइ। दस बजेमे डाक्टर ऐठाम जेबाक छइ। एक्कोटा पाइ नइ रहने भोरे स्टेशन पहुँच गेल जे एक्को-दूटा भाड़ा कमा लेब तँ औझुका जोगार भऽ जाएत। किएक तँ कम-सँ-कम पचास रूपैआ दबाइ-दारू, तेकर बाद घरक बुतात, घोड़ाक खरचा आ दस रूपैआ बैंकबलाकेँ सेहो देबाक अछि। ..टमटमबला मने-मन सोचए लगल, भिनसुरका बोहैन छी तँए एकरा छोड़ब नहि। साला टमटमबला सभ जे अछि ओ उपरौंज करैत रहैए। कहैले अपनामे युनियन बनौने अछि मुदा बान्ह कोनो छैहे नहि। लगले बैसार कऽ कऽ विचारि लेत आ जहाँ दस रूपैआ जेबीमे एलै आ ताड़ी पीलक आकि मनमाना करए लगैए। अपनामे सभ विचारने अछि जे बर-बिमारी सन बेगरतामे सभ-सभकेँ सहयोग करब, चन्दा देबइ। मुदा हमरे कएटा पैसा चन्दा देलक? पनरह दिनसँ घरवाली दुखित अछि, जइ पाछू रेजानिस-रेजानिस भऽ गेल छी। ने एक्को मुट्ठी घोड़ाकेँ बदाम दइ छिऐ आ ने अपने भरि पेट खाइ छी। धिया-पुता सभ से अन्न बेतरे टौआइत रहैए। तखन तँ धैनवाद ओही बच्चा सभकेँ दिऐ जे भूखलो-दूखल माइक सेवा-टहल करैए। अपनो घोड़ाक संग-संग टमटम घिचै छी। जँ से नै करब आ सोल्होअना घोड़े भरोसे रहब तँ ओहो मरि जाएत! यएह तँ हमर लक्ष्मी छी। एकरे परसादे दू पाइ देखै छी। घोड़ाकेँ केना छोड़ि देब। तहिना घरोवाली कमजोर अछि। जिनगी भरि तँ ओकरे संग सुखो केलौं, छोट-छोट बच्चोकेँ तँ वएह

थतमारि कऽ रखलक। हम तँ भरि दिन बोनाएले रहै छी। घर तँ ओही वेचारीक परसादे चलैए..!

टमटमबला सोचिते छल, तैबीच जुगेसर पुछलकै-

"केते भाड़ा लेबहक?"

भाड़ाक नाओं सुनि टमटमबला सोचलक- एक तँ भिनसुरका बोहैन छी, दोसर डाक्टरो ऐठीम जाइक अछि। जँ भाड़ा कहबै आ ओते नै दिअए तखन तँ बक-झक हएत। जँ कहीं दोसर टमटम पकैड़ लिअए तखन तँ ओहिना मुँह तकैत रहि जाएब। तइसँ नीक जे पहिने समानो आ पसिंजरो चढ़ा ली...। एते बात मनमे अबिते बाजल-

"जे उचित भाड़ा हएत सएह ने लेब। हम तोरा एक हजार कहि देबह तँ की तूँ दाइए देबह?"

टमटमबलाक बात सुनि जुगेसर बाजल-

"अच्छा ठीक छइ। पहिने चाह पीब लएह।"

दुनू टमटमोबला आ जुगेसरो दोकानपर जा चाह पीलक। चाह पीब तीनू गोरे तमाकुल खेलक। चाहबलाकेँ जुगेसरे पाइ देलकै। तीनू गोरे रमाकान्त लग आबि समान सभ उठा-उठा टमटमपर लादलक। एकटा टमटमपर श्यामा, जुगेसर चढ़ल आ दोसरपर असगरे रमाकान्त समानक संग बैसला। किछु दूर आगू बढ़लापर टमटमबलाकेँ पुछलखिन-

"घोड़ा एते लटल छह। खाइले नै दइ छहक?"

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबला बेवशी-आँखिए रमाकान्त दिस ताकि उत्तर दिअ चाहैत मुदा कानैत हृदए मुहसँ बकारे नै निकलए दइ। टमटमबलाक आँखि-पर-आँखि दऽ रमाकान्त पढ़ए लगला। तैबीच टमटमबलाक आँखिमे नोर ढबढबा गेलइ। कान्ह परहक

तौनीसँ आँखि पोछि टमटमबला बाजल-

"सरकार, यएह टमटम आ घोड़ा हमर जिनगी छी। अहीपर परिवार चलैए। जइ दिनसँ भनसिया दुखित पड़ल तइ दिनसँ जे कमाइ छी से दबाइए-दारूमे खरचा भऽ जाइए। अपनो बाल-बच्चाकेँ आ घोड़ोकेँ खेनाइक तकलीफ भऽ गेल। की करबै! कहुना परान बँचेने छिऐ। परान रहतै तँ मौसु हेबे करतै।"

टमटमबलाक बेवशी आ धैर्य देख रमाकान्तक हृदए पघिल कऽ इनहोर पानि जकाँ पातर भऽ गेलैन। बिना किछु बजने मने-मन सोचए लगला जे एक तरहक मजबूर ओ अछि जे किछु करबे नै करैए आ दोसर तरहक ओ अछि जे दिन-राति खटैए मुदा ओकरा प्रकृतिसँ लऽ कऽ मनुख धरि ऐ रूपे संकट पैदा करै छै जइसँ ओ मजबूर अछि। ई टमटमबला दोसर श्रेणीक मजबूर अछि, तँए एहेन लोकक मदैत करब धर्मक श्रेणीमे अबैए। जरूर एहेन लोकक मदैत करक चाहिऐ। मुदा मेहनतकस आदमीक मन एते सक्कत होइ छै जे दोसरसँ हथउठाइ नै लिअ चाहैए। मुदा हम किछु मदैत करए चाहिऐ आ ओ लइसँ नासकार जाए तखन तँ मनमे कचोट हएत!

..असमंजसमे रमाकान्त पड़ि गेला। कोन रूपे एकरा मदैत कएल जाए? सोचैत-सोचैत सोचलैन जे हम अपने नै किछु कहि एकरेसँ पुछिऐ जे अखन तूँ जइ संकटमे पड़ल छह ओइमे केते सहयोग भऽ गेलासँ तोरा पार लगि जेतह। ..ई विचार मनमे अबिते रमाकान्त पुछलखिन-

"अखन तोरा केते मदैत भऽ गेलासँ पार लगि जेतह?"

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबलाक मनमे संतोखक छोट-छीन रेगहा घिचा गेल। मने-मन सभ हिसाब बैसबैत बाजल-

"सरकार, अगर अखन पाँच दिनक परिवारोक आ घोड़ोक

बुतात आ एक साए रूपैआ भऽ जाए तँ हम अपन जिनगीकेँ पटरीपर आनि लेब। जखने जिनगी पटरीपर आबि जाएत तखने जिनगी अपन सरपट चालि पकैड़ लेत। स्त्रीक इलाज, परिवार आ कारोबार तीनू काज एहेन अछि जे एक्कोटा छोड़ैबला नइए।"

टमटमबलाक बोलीमे रमाकान्तकेँ मदैतक आस बुझि पड़लैन। आशा देख मनमे खुशी एलैन। खुशी अबिते फुरलैन- अगर पाँच दिनक बदला दस दिनक बुतात आ साए रूपैआक बदला दू साए रूपैआ जँ मदैत कऽ देबै तँ विरोध नै करत। संगे जखने समस्याँ निकलैक आशा जगि जेतै तँ काजो करैक साहस बढ़ि जेतइ। मुदा असगरे तँ नइ अछि, दूटा टमटमबला अछि। की दुनू गोरेकेँ मदैत करब आकि एकरेटा।

..ई प्रश्न रमाकान्तक मनमे ठाढ़ भऽ गेलैन। सोचए लगला- मुसीबत तँ ऐ वेचारेकेँ छइ। दोसर टमटमबाला सँ तँ गप नै भेल जे बुझितिऐ। मुदा एकर तँ बुझलिऐ। तँए एकरा मदैत करबै। दोसर टमटमबलासँ पुछि लेबै जे तोहर भाड़ा केते भेलह। जेते कहत तेते दऽ देबइ। मुदा सोझमे एकठाम कम-बेसी देनाइयो तँ उचित नहि, तँए पहिने ओकरा भाड़ा दऽ विदा कऽ देबै आ एकरा रोकि पाछू कऽ सभ किछु दऽ विदा करब। गरीबक हृदैकेँ जुड़ाएब बड़ पैघ काज होइत। एते सोचैत-विचारैत रमाकान्त घरपर पहुँचला।

घरमे ताला लगा हीरानन्द पैखाना गेल रहैथ। दुनू टमटम पहुँच दलानक आगूमे ठाढ़ भेल। टमटम ठाढ़ होइते सभ कियो उतरला। टमटमोबला आ जुगेसरो सभ समानकेँ उताइर दरबज्जाक ओसारपर रखलक। ताबे हीरानन्दो बाध दिससँ आबि पोखैरक पुबरिया महार लग पहुँचला। महार लग अबिते दरबज्जापर टमटम लागल देखलैन। टमटम देख बुझि पड़लैन जे रमाकान्त आबि गेला। ..हाँइ-हाँइ कऽ

दतमैन-कुरुर कऽ लफरल दरबज्जापर आबि घरक ताला खोलि देलखिन। हाथे-पाथे तीनू गोरे सभ सामानकेँ कोठरीमे रखलैन। दोसर टमटमबलाकेँ भाड़ा पुछि रमाकान्त दऽ देलखिन आ पहिल टमटमबलाकेँ आँखिक इशारासँ थम्हैले कहलखिन। दोसर टमटमबला चलि गेल। पहिल टमटमबलाकेँ दू साए रूपैआ आ दस दिनक बुतात– दू पसेरी बदाम आ तीन पसेरी चाउर–दऽ कऽ विदा केलैन। टमटमपर चढ़ि मने-मन गदगद होइत टमटमबला गीत गुनगुनाइत विदा भेल- ‘सबहक सुधि अहाँ लइ छी यौ बाबा हमरा किए बिसरल छी यौ... ।”

पसेनासँ गन्ध करैत कुरता-गंजी निकालि रमाकान्त चौकीपर रखलैन। भकुआएल मन रहैन। मुदा नीकेना घर पहुँचलासँ मन खुशी होइत रहैन। हीरानन्दक किछु पुछैसँ पहिनहि रमाकान्त बजला-

“गाम-घरक हाल-चाल बढ़ियाँ अछि किने?”

“हँ।”

हीरानन्द पुछलखिन-

“यात्रा बढ़ियाँ रहल किने?”

“ऐंह, यात्राक सम्बन्धमे की कहू! अखन तँ मनो भकुआएल अछि आ तीन दिनसँ नहेबो ने केलौं हेन तँए पहिने नहाइले जाए दिअ। तखन निचेनसँ यात्राक सम्बन्धमे कहब।”

जुगेसरकेँ जे विदाइ मद्रासमे भेटल छेलै ओ चारिटा काटुनमे छल। ओ चारू काटुन जुगेसर फुटा कऽ ओसारेपर रखलक। जुगेसरक घरवाली आ धिया-पुता सेहो आबि गेल। चारू काटुन जुगेसर अपन घरवालीकेँ देखबैत बाजल-

“ई अपन छी अँगना नेने चलू।”

‘अपन’ सुनि घरोवाली आ धियो-पुतो चपचपा गेल। चारू

काटुन लऽ आँगन विदा भेल।

रमाकान्तक अबैक समाचार गाममे बिहाड़ि जकाँ पसरल। धिया-पुतासँ लऽ कऽ चेतन धरि देखैले आबए लगला। दरबज्जापर लोकक भीड़ बढ़ए लगल। रमाकान्त नहाएब छोड़ि जुगेसरकेँ कहलखिन-

“जुगे, सनेसबला काटुन एतै नेने आबह।”

सनेसमे डाक्टर महेन्द्र टुकड़ी बनौल दू काटुन नारियल देने रहैन। जुगेसर कोठरी जा एकटा काटुन उठौने आएल। जहियासँ रमाकान्त ब्रह्मचारीजीक आश्रम गेला तहियासँ विचारे बदैल गेलैन। अपन सुख-दुखकेँ ओते महत नै दिअ लगला जेते दोसराक।

दरबज्जापर लोक थहा-थही करए लगल। जेना लोकक हृदए रमाकान्तक हृदैमे मिझर हुअ लगलैन आ रमाकान्तक हृदए लोकमे। अपन नहाएब, दतमैन करब आ आँखिपर लटकल ओंघी, सभटाकेँ बिसैर जुगेसरकेँ कहलखिन-

“चेतनकेँ दू-दूटा टुकड़ी आ बाल-बोधकेँ एक-एकटा टुकड़ी बाँटि दहक। दरबज्जापर आएल एक्को गोरे ई नै कहए जे हमरा नै भेल।”

काटुन खोलि जुगेसर नारियलक टुकड़ी बिलहए लगल। हाथमे पड़िते, की चेतन की धिया-पुता, नारियल खाए लगल। एक काटुन सठि गेल मुदा देखिनहार, जिज्ञासा केनिहार नै ओराएल। दोसरो काटुन जुगेसर खोललक। दोसर काटुन सठैत-सठैत लोको पतरा गेल।

लोकक भीड़ हटल देख रमाकान्त नमहर साँस छोड़ैत जुगेसरकेँ कहलखिन-

“आब तोहूँ जा कऽ खा-पीअ-गे। हमहूँ जाइ छी।”

आँगन आबि जुगेसर अपन चारू काटुन खोललक। मद्रासमे काटुनक भितरका समान नै देखने छल तँए देखैक उत्सुकता रहइ। एक-एकटा काटुन चारू गोरे–डॉ. महेन्द्र, रविन्द्र, जमुना आ सुजाता– देने रहथिन।

महेन्द्रक देल पहिल काटुनमे, एक जोड़ धोती, एकटा कुरता-कपड़ाक पीस, एकटा आङीक पीस, एकटा चद्दैर, एकटा गमछा आ एक जोड़ जुत्ता जुगेसर-ले आ एक जोड़ साड़ी, जोड़ भरि साया-ब्लौजक कपड़ा, एक जोड़ चप्पल घरवाली-ले। दुनू बच्चाले पेन्ट-शर्टक संग तीन साए रूपैआ रहइ। अहिना तीनू काटुनमे सेहो रहइ।

चारू काटुनक समान देख जुगेसरक परिवारमे जेना खुशीक बिहाड़ि उठि गेल। दुनू बच्चा अपन कपड़ा देख खुशीसँ एक-एकटा पहिर आँगनमे नाचए लगल। कपड़ाक एहेन सुख जिनगीमे पहिल दिन भेटल छेलइ। दुनू परानी जुगेसरकेँ सेहो खुशीसँ मन गदगद भऽ गेल। जुगेसर हिसाब जोड़ए लगल- जँ ओरिया कऽ पहिरब तँ दुनू गोरेकेँ जिनगी भरि पार लगि जाएत। एहेन चिक्कन कपड़ा आइ धरि नसीब नै भेल छेलए... ।

एक आँखि जुगेसर समानपर देने आ दोसर आँखि घरवालीक आँखिपर देलक। दुनू गोरेक आँखिमे जेना जिनगीक वसन्त आबए लगल। अपन बिआह मन पड़लै। जुगेसरकेँ होइ जे घरवालीकेँ दुनू बाँहिसँ पजिया कऽ छातीमे लगा ली आ घरवालीकेँ होइ जे घरबलाक कोरामे बैस एकाकार भऽ जाइ। मुदा तीन दिनक गाड़ीक झमारसँ जुगेसरक देहो भँसियाइत आ ओंघी सेहो आँखिक पिपनीकेँ झलफलबैत, जुगेसर घरवालीकेँ कहलक-

“पहिरैले एक-एक जोड़ कपड़ो आ जुत्तो बाहर रखू आ बाँकीकेँ खूब सेरिया कऽ रखि लिअ, दुरि नै हुअए।”

बेर टगि गेल। जुगेसर नवका धोती आ गंजी पहिर कान्हपर गमछा नेने रमाकान्त ऐठाम पहुँचल। दरबज्जापर रमाकान्त सुतले छला। आँगन जा श्यामाकेँ देखलक तँ ओहो सुति उठि कऽ मुँह-हाथ धोइ छेली। जुगेसरकेँ देख, श्यामा एक टकसँ निंगहारि कऽ मुस्कियाइत पुछलखिन-

“आइ तँ अहाँ दुरगमनियाँ वर जकाँ लगै छी जुगेसर?”

हँसैत जुगेसर उत्तर देलकैन-

“काकी, महिन्दर भाइयक देलहा छी।”

महेन्द्रक नाओं सुनि श्यामा बजली-

“भगवान भोग दैथ! और की सभ बच्चा देलैन?”

जुगेसर बाजल-

“अहाँसँ लाथ कोन काकी, तेते कपड़ा-लत्ता आ जुत्ता-चप्पल चारू गोरे देलैन जे जिनगी भरि केतबो धाँगि कऽ पहिरब तैयो ने सठत।”

बेटा-पुतोहुक बड़ाइ सुनि श्यामाक हृदए उमैड़ गेलैन, अह्लादित भऽ बजली-

“पाइयो-कौड़ी देलैन आकि कपड़े-लत्ताटा?”

“रूपैआ तँ गनलिऐ नहि, मुदा बुझि पड़ल जे दस-पनरहटा नमरी अछि।”

“बाह! मालिक देखलैन की नहि?”

“ओ तँ सुतले छैथ। हुनके देखबैले पहिर कऽ एलौं।”

“हम ताबे चाह बनबै छी। दरबज्जापर जा कऽ उठा दियौन।”

“बड़बढ़ियाँ।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि जुगेसर दरबज्जापर आबि रमाकान्तकेँ उठबए लगल। आँखि खोलि रमाकान्त देबालक घड़ीपर नजैर देलैन। चारि बजैत। पड़ले-पड़ल सुतैक हिसाब जोड़लैन। हिसाब जोड़ि घुनघुना कऽ बजला-

“एहेन नीन तँ जुआनियोँमे ने आएल छल!”

ओछाइनपर सँ उठि जुगेसरकेँ कहलखिन-

“कनी चाह बनौने आबह। अखनो बुझि पड़ैए जे नीन आँखिए-पर लटकल अछि। ताबे हमहूँ कुरुर कऽ लइ छी।”

कहि रमाकान्त पहिने लघी करए गेला। लघी करै काल बुझि पड़ैन जे चाहोसँ धीपल लघी होइए। तेतबे नहि, जेते लघी चारि बेरमे करै छी, तोहूसँ बेसी भऽ रहल अछि...।

लघी कऽ कलपर आबि रमाकान्त आँखि-कान पोछि, कुरुर कऽ दमसा कऽ भरि पेट पानि पीलैन। पानि पीबते बुझि पड़लैन जे अदहा नीन पड़ा गेल।

जुगेसर चाह अनलक। रमाकान्त चाह पीबते रहैथ आकि हीरानन्दो स्कूलसँ आबि गेला। शशि शेखरो एला। हीरानन्द जुगेसरकेँ पुछलखिन-

“जात्रा बढ़ियाँ रहल किने?”

हँसैत जुगेसर बाजल-

“जाइ काल टेनमे बड़ भीड़ भेल। जाबे गाड़ीमे रही ताबे ने एक्को बेर झाड़ा भेल आ ने सुतलौं। किएक तँ रिजफ सीट रहबे ने करए। जइ डिब्बामे बैसल रही ओइमे लोकक करमान लगल रहइ। तैपर सँ जइ टीशनपर गाड़ी रूकै सभ टीशनमे एगो-दूगो लोक उतरै आ दस-बीस गोरे चढ़ि जाए। मुदा भगवानक दयासँ कहुना-कहुना पहुँच

गेलौं। जखन मद्रास टीशनपर उतरलौं तँ दोसरे रंगक लोक देखिऐ। अपना सभ दिस अछि किने जे सभ रंगक लोक मिलल-जुलल अछि, से नै देखिऐ। बेसी लोक कारीए रहइ। गोटे-गोटे लोक उज्जर बुझि पड़इ। जखन डेरापर पहुँचलौं तँ मकान देख बिसबासे ने हुअए जे अपन छिऐन। बड़का भारी मकान, कोठलीक कमी नहि।”

“भरि मन देखलौं किने?”

“ऐंह, की कहू मास्टर साहैब, महिन्दर भाय अपने मोटरसँ भरि-भरि दिन बुलबैत रहैथ। मोटरो तेहेन जे जहाँ बैसी आ खुगै आकि ओंघी लगि जाए। केतए की देखलौं से मनो ने अछि।”

मद्राससँ रमाकान्तक एनाइक समाचार सुनि महेन्द्रक स्कूलक संगी सुबुध सेहो एला। सुबुध हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। महेन्द्र आ सुबुध हाइ स्कूल धरि, संगे-संग पढ़ने। महेन्द्र साइंसक विद्यार्थी आ सुबुध आर्टक। बी.ए. पास केलापर सुबुध शिक्षक भेला आ महेन्द्र डाक्टरी पढ़ि डाक्टर बनला। महेन्द्रक कुशल-छेम बुझला पछाइत सुबुध रमाकान्तकेँ पुछलखिन-

“अपना ऐठामक लोक आ मद्रासक लोकमे की अन्तर देखलिऐ?”

दुनू ठामक लोकक तुलना करैत रमाकान्त बजला-

“ओत्तुका आ अपना ऐठामक लोकमे अकास-पतालक अन्तर अछि। ओइ ठामक लोक अपना ऐठामक लोकसँ अधिक मेहनती आ इमानदार अछि।”

बिच्चेमे शशि शेखर प्रश्न केलकैन-

“की मेहनती?”

“मनुखक तुलना करैसँ पहिने अपन इलाका आ मद्रासक माटि-

पानिक तुलना सुनि लिअ। जेहेन सुन्नर माटि अपना सबहक अछि, देखते छिऐ जे केते मुलाइम आ उपजाऊ अछि, पानियोँ केते बढ़ियाँ अछि। एहेन मद्रासमे नइ छइ। ओतए अपना सभसँ बेसी गरमियो पड़ै छइ। ..जहाँ धरि लोकक सबाल अछि। अपना ऐठामक लोक अधिक आलसी अछि, समैकेँ कोनो महत नै दइए वा ई कहियौ जे ऐठामक लोक समैक महत बुझबे नै करैए। कियो बुझबो करैए तँ ओ परजीवी बनि जिनगी बितबए चाहैए। हँ! किछु गोरे एहेन जरूर छैथ जे मर्यादित मनुख बनि जिनगी जीब रहल छैथ। जे पूजनीय छैथ मुदा समाजिक बेवस्था सदिखन हुनको झकझोड़िते रहै छैन। ओइठामक लोक समैक संग चलैए जइसँ कमजोर इलाका रहितो नीक-नहाँति जिनगी बितबैए। ओइठामक लोक भीखकेँ अधला बुझि नै मंगैए मुदा अपना ऐठाम लोक उपार्जनक स्त्रोत बुझैए।”

बिच्चेमे सुबुध पुछलकैन-

“पढ़ाइ-लिखाइ केहेन छइ?”

“स्कूल, कौलेज, युनिवर्सिटी सभ देखलौं। लड़का-लड़कीक स्कूल शुरूहेसँ अलग-अलग अछि। मुदा तैयो दुनूकेँ संगे-संग पढ़ैत सेहो देखलौं। अपना ऐठामसँ बेसी लड़की ओइठाम पढ़ैए। अपना ऐठाम लड़के पछुआएल अछि तँ लड़कीक कोन हिसाब। गाड़ी, ट्रेन, बसमे सेहो अलग-अलग बेवस्था छइ। जखन कि अपना ऐठाम सभ संगे-संग चलैए।”

सुबुध-

“खाइ-पीबैक केहेन बेवस्था छइ?”

“गरीब लोकक खान-पान दब होइते छइ। मुदा एक हिसाबसँ देखल जाए तँ अपना सबहक नीक अछि। कपड़ो-लत्ता पहिरब अपना ऐठाम नीक अछि।”

बिच्चेमे आँखिक इशारासँ रमाकान्त जुगेसरकेँ एक बोतल ब्राण्डी अनैले कहलखिन। जुगेसर उठि कऽ भीतर गेल आ एकटा बोतल नेने आएल। दरबज्जापर आबि चाहेक गिलासकेँ धोइ, सभमे शराब दऽ सबहक आगूमे देलकैन। आगूमे पड़िते रमाकान्त गट दऽ पीब गेला। मुदा हीरानन्दो, शशि शेखरो आ सुबुधोकेँ पीबैत डर होइ छेलैन। कहियो पीने नै छला।

..दोहरी गिलास पीबैत रमाकान्त सभकेँ कहलखिन-

“पीबै जाइ जाउ, फलक रस छिऐ। कोनो अपकार नै करत।”

मुदा तैयो सभ-सबहक मुँह तकैत रहला। दोहरा कऽ फेर रमाकान्त सभकेँ कहलखिन। मने-मन सुबुध सोचलैन जे कोनो जहर-माहूर थोड़े छिऐ जे मरि जाएब। अगर मरबो करब तँ पहिने कक्के ने मरता। बुझल जेतइ। आगूमे राखल गिलास उठा आस्तेसँ दू घोट पीब, गिलास रखि हीरानन्दकेँ कहलखिन-

“पीबू, पीबू मास्टर साहैब। सुआद तँ कोनो अधला नहियेँ बुझि पड़ैए।”

सुबुधक बात सुनि हीरानन्दो आ शशि शेखरो गिलास उठा कऽ पीब गेला। ताबे तेसरो गिलास रमाकान्त चढ़ा लेलैन। तेसर गिलास पीबते आँखिमे लाली आबए लगलैन। मन हल्लुक सेहो हुअ लगलैन आ बजैक ताउ चढ़ए लगलैन। ..जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बरतनमे ताउ लगलापर निच्चाँक पानि गर्म भऽ ऊपर उठैत रहैए तहिना रमाकान्तकेँ हुअ लगलैन। धीरे-धीरे रंग चढ़ैत-चढ़ैत नीक जकाँ चढ़ि गेलैन। हीरानन्द, सुबुध आ शशि शेखरक आँखि सेहो तेज हुअ लगलैन। तेज होइत नजैरसँ सुबुध पुछलखिन-

“काका, महेन्द्र भाय मस्तीमे रहै छैथ किने?”

बजैक वेग रमाकान्तकेँ रहबे करैन तैपर सँ महेन्द्रक मस्ती सुनि

आरो बढ़ि गेलैन। बाजए लगला-

"मेहनत आ कमाइ देख क्षुब्ध भऽ गेलौं। अपन बड़का मकान, चारिटा गाड़ी, बजारमे अइल-फइल बास। तैपर सँ बैंकोमे ढेरी रूपैआ जमा केने अछि। ऐठामक सम्पैतक ओकरा कोनो जरूरत नइ छइ! किएक रहतै? जेकरा अपने कमाइ अम्बोह छै...।"

बिच्चेमे सुबुध टोकलखिन-

"तखन ऐठामक खेत-पथार गरीब-गुरबाकेँ दऽ दियौ?"

बिना किछु आगू-पाछू सोचने रमाकान्त बजला-

"बड़ सुन्नर बात अहाँ कहलौं। अनेरे हम एते खेत-पथार रखने छी। यएह खेत जे गरीबक हाथमे जेतै तँ उपजबो बेसी करत आ सबहक जिनगियो सुधैर जाएत।"

जहिना धधकल आगिमे हवा सहायक होइत तहिना रमाकान्तोकेँ भेलैन। एक तँ ब्राण्डीक निशाँ, दोसर परिवारमे चारि-चारिटा डाक्टरक कमाइ, तैपर सँ अपार सम्पैत देख मन उधियाइते रहैन। समाजक सिनेह सेहो बढ़िए गेल छेलैन। तेतबे नहि, अद्वैत दर्शन हृदैकेँ पैघ सेहो बना देने रहैन। ..हँसैत रमाकान्त सबहक बीच, बजला-

"अखन धरि हम गुल्लैरक किड़ा बनल छेलौं मुदा आब दुनियाकेँ देखलिऐ। दू साए बीघा जमीन अछि। अनेरे किए हम एते रखने छी। एकटा जमीनदारक खेतसँ सैकड़ो गरीब परिवार हँसी-खुशीसँ गुजर कऽ सकैए। जखन कि ओतेक सम्पैतक सुख एकटा परिवार करए, ई केते भारी अनुचित छी! सभ मनुख मनुख छी। सभकेँ सुख-दुखक अनुभव होइ छइ। कियो अन्न बेतरे काहि कटैए तँ केकरो अन्न सड़ै छै। घोर अन्याय मनुख मनुखक संग करैए!"

कहि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, इलाइची देल पान लगाबह?"

जुगेसर पान लगबए गेल। तैबीच बौएलाल सेहो आएल। रमाकान्तकेँ गोड़ लागि कातमे बैसल। ..बौएलालकेँ बैसते रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्टर साहैब, महेन्द्र कहने छल जे एकटा लड़का आ एकटा लड़की, दू गोरेकेँ मद्रास पठा दिअ। ओइ दुनू गोरेकेँ अपना संग रखि छोट-छोट बिमारीक इलाज केनाइ सिखा देबइ। गाममे इलाजक बड़ असुविधा अछि। तेतबे नहि, गरीबीक चलैत लोक रोग-बियाधिसँ मरि जाइए मुदा इलाज नइ करा पबैए। तँए एकटा छोट-छीन अस्पताल सेहो बना देब, जइमे लोकक मुफ्त इलाज हेतइ। तइले जेते दबाइ-दारूमे खरच हएत से हम देब। हम सभ चारि गोरे छी। बेरा-बेरी चारू गोरे सालमे एक-एक मास गाममे रहब आ लोकक इलाज करब। तैबीच छोट-छोट बिमारी-ले सेहो दू आदमीकेँ तैयार कऽ देबाक अछि। जँ कहीं बीचमे नमहर बिमारी केकरो हेतै, तेकरो इलाजक खरच देबइ...। तँए दू आदमीकेँ मद्रास पठा दियौ, मासुल हम देबइ!"

रमाकान्तक बात सुनि सभ कियो बौएलाल आ सुमित्राकेँ मद्रास पठबैक विचार केलैन। बौएलालकेँ हीरानन्द कहलखिन-

"बौएलाल, सबहक विचार तँ तूँ सुनियेँ लेलह। काल्हि तूँ आ सुमित्रा दुनू गोरे मद्रास चलि जाह।"

◌

शब्द संख्या : 3633

नअ

कछ-मछ करैत हीरानन्द भरि राति जगले रहि गेला। कखनो मनमे होनि जे रमाकान्तक देल जमीन समाजक बीच केना बाँटल जाए, तँ कखनो हुनक उदार विचार नाचि उठैन। कखनो होनि जे निशाँक झोंकमे बजला मुदा निशाँ टुटलापर जँ कहीं नठि जाथि? बात बदलब धनीक लोकक जन्मजात आदत छी। मुदा हम तँ शिक्षक छी, शिक्षकक प्रति आदर आ निष्ठा सभ दिनसँ समाजमे रहलै आ रहतै। ऐ विचारक बीच जेते गोरे छेलौं ओइमे हम आ सुबुध शिक्षक छी। आन कियो तँ कम्मो मुदा हम दुनू गोरे तँ बेसी घिनाएब! कोन मुँह लऽ समाजक बीच रहब..?

विचित्र स्थितिमे हीरानन्द रहैथ। फेर अपनेपर शंका भेलैन जे हमहूँ शराबेक निशाँमे ने तँ बौआइ छी? ई बात मनमे उठिते, उठि कऽ बाहर निकैल चारूभर तकलैन। अन्हार गुप-गुप, सन-सन करैत राति, हाथ-हाथ नइ सुझैत। मुदा अकास साफ। सिंगहारक फूल जकाँ तरेगन चकचक करैत। हवा तँ कोनो नहियेँ बहैत रहै मुदा राति ठंढाएल रहए। पुनः बाहरसँ कोठरी आबि हीरानन्द बिछानपर पड़ि रहला। मुदा नीनक केतौ पता नहि। मनसँ जमीन हटबे ने करैत रहैन। पुनः उठि कऽ कोठरीसँ निकैल लघुसंका करैले कातमे बैसला। भरि-पोख पेशाब भेलैन। पेशाब होइते मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक

होइते ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। ओछाइनपर पड़िते नीन आबि गेलैन।

सुबुध सेहो भरि राति जगले बितौलैन। मुदा हीरानन्द जकाँ ओ ओझरीमे ओझराएल नै छला। समाजशास्त्रक शिक्षक होइक नाते स्पष्ट सोच आ समाज चलैक स्पष्ट दिशा छेलैन तँए मन दृढ़ संकल्प आ सक्कत विचारसँ भरल रहैन। सभसँ पहिने मनमे उठलैन जे जहिना आर्थिक दृष्टिसँ टुटल समाजकेँ रमाकान्त कक्काक सहयोगसँ मजगूत बल भेटत तहिना तँ ओइ बलकेँ चलबैक मजगूत रस्तो भेटक चाही? जे रमाकान्त काका बुते नै हेतैन। इमानदारी आ उदार सोभावक चलैत तँ ओ सम्पैतक तियाग करता। मुदा ओ सम्पैत आगू-मुहेँ बढ़त केना..? जहिना मनुखक परिवार दोबर, तेबर, चारिबरक रफ्तारसँ आगू-मुहेँ बढ़ैए तहिना तँ सम्पैतोक गति हेबा चाहिऐ। मुदा सम्पैतमे ओ गति तखने औत जखन ओइमे श्रमक इंजिन लगौल जाएत। ओना, श्रमक इंजिन लगौनिहार श्रमिक सेहो पर्याप्त अछि मुदा ओकरा श्रमकेँ कोन रूपमे बढ़ौल जाए। एक रूप ई होइत जे सोझे-सोझी ओकरा नव कार्यक ढाँचामे ढालल जाए, नव काज देल जाए, जे सम्भव नइ अछि। किएक तँ नव औजार आ नव तरीका बिना नव ज्ञाने सम्भव नइ अछि, जे नइ अछि। दोसर जे लूरि आ औजार अछि, ओकरे धारदार बना आगू बढ़ौल जाए। जे सम्भवो अछि आ उपयुक्तो होएत। मुदा अहु-ले पथ-प्रदर्शकक जरूरत होएत। जेकर अभाव अछि। हमहूँ तँ नोकरीए करै छी। सात दिनमे एक दिन रबिए-रबि गाममे रहै छी, बाँकी छह दिन गामसँ बाहरे रहै छी। तइसँ काज केना चलि सकैए। किएक तँ समाजो नमहर अछि आ समस्यो ढेर अछि, तैसंग हर समस्याक समाधानक रस्तो फराक-फराक। जेना बुद्धदेव कहने छैथ जे दुश्मनकेँ सूइयाक नोको बरबैर जँ सुराक भेट जाएत तँ ओहू देने हाथी सन विशाल जानवरकेँ प्रवेश करा लेत। समाजक

समस्यो तँ ओहने अछि..!

अनासुरती सुबुधक मनमे उपकलैन- जहिना रमाकान्त काका अपन सभ सम्पैत समाजकेँ दइले तैयार छैथ तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि अपन ज्ञान समाजकेँ देब। सभ किछु बुझितौं सड़ल-गलल रस्ता अपन अरामक दुआरे धेने चलि रहल छी। सात बीघा जमीन अछि, एकटा पोखैर अछि, दस कट्ठा गाछी-कलम आ खढ़होरि सेहो अछि। जइसँ पिताजी नीक-नहाँति गुजरो केलैन आ हमरो पढ़ौलैन। मुदा हम नोकरियो करै छी, खेतो-पथार ओहिना अछि मुदा केते आगू-मुहेँ बढ़लौं? हँ, एते जरूर भेल अछि जे घरोवालीकेँ आ बेदरो-बुदरीकेँ धनिकक मन्दिरक मुरती जकाँ नीक-नीक परसाद, नीक-नीक सजाबटसँ सजा काहिल बनौने छी! की हम ई नै देखै छी जे झक-झक करैत छातीक हाड़बला मनुख रिक्शा घिचैए, साठि बर्खक महिला चिमनीमे पजेबा उघैए, मरैबला पुरुख बरदक संग हर ठेलैए, अन्नक बोझ उघैए..! की ओकर देह लोहाक बनल छै आ हमरा सबहक कोढ़िलाक बनल अछि? ई सभ सभटा धन आ बुधिक करामात छी। आइ धरिक समाज आ समाजक निआमक एकरे पोसक रहला जे सुधारैक अछि। नहि तँ मनुख आ जानवरमे की अन्तर रहतै? जइ समाजमे मनुख जानवरक जिनगी जीबए ओइ समाजक प्रबुद्ध लोककेँ चुरुक भरि पानिमे डुमि कऽ नै मरि जेबाक चाहिऐन..?

एते बात मनमे अबिते सुबुध तँइ केलैन, जे सभसँ पहिने काल्हि स्कूलमे तियागपत्र देब। आइ धरि जे जिनगी जीलौं, जीलौं। मुदा काल्हिसँ नव जिनगीक सूत्रपात करब। ..अही संकल्प-विकल्पक बीच सुबुधक मन घुरियाइत रहलैन।

भोर होइते सुबुध ओछाइनपर सँ उठि मैदान दिस विदा भेला। हाथमे लोटा मुदा मन ओही विचारमे डुमल छेलैन। थोड़े दूर गेलापर

गाममे गल्ल-गुल होइत सुनलैन। रस्तेपर ठाढ़ भऽ अकानए लगला जे कथीक गल्ल-गुल भऽ रहल अछि। सोझमे केकरो नै देखैथ जे पुछियो लैतैथ। मने-मन अनुमान करए लगला जे भरिसक रातिमे केतौ कोनो घटना घटि गेल। या तँ केकरो साँप-ताँप काटि लेलकै वा केतौ चोरि भऽ गेल। मुदा से सभ नहि छेलइ। साँझमे जे विचार रमाकान्त व्यक्त केलैन ओ राता-राती बिहाड़ि जकाँ सगरे गाम पसैर गेल। रस्तेसँ घुमि सुबुध कड़चीक दतमैन तोड़ि दाँत मजैत घरपर एला। घरपर अबिते देखलैन जे सुकना बैसल अछि। मुदा सुकनाक नजैर सुबुधपर नै पड़ल, किएक तँ ओ अँगनाक दुआरि दिस तकैत रहए। सुबुध सुकनाकेँ पुछलखिन-

"भोरे-भोर केमहर सुकन?"

सुबुधक बात सुनि अकचकाइत सुकन चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"मालिक, अहाँ तँ जनिते छी जे कोनो काज-उदममे सभ तूर मिलि सम्हारि दइ छी। गरीबोपर नजैर रखबै।"

सुबुधकेँ सुकनक बातक कोनो अर्थे ने लगलैन। पुछलखिन-

"सुकन भाय, तोहर बात हम नइ बुझलियह"

"लोक सभ कहलकहेँ जे रमाकान्त काका अपन सभ खेत गरीब-गुरबाकेँ देथिन, जे अहीं बँटबै...।"

सुकनक बात सुनि सुबुध मने-मन सोचए लगला जे जमीन-जयदादक सबाल अछि। धड़फड़ा कऽ केना किछु बाजब। जँ आम लोकक बीच विचार कएल जाएत तँ हो-हल्ला हेतइ। हो-हल्ला भेने काजो बिगैड़ सकैए। तँए असथिरसँ विचार करैक जरूरत अछि। मुदा अखन जँ सुकनकेँ ई बात कहबै तँ दुख हेतइ। तँए आशाक बात कहक चाही। बजला-

"सुकन भाय, जखन गरीबक बीच खेतक बँटबारा हएत तँ तोहूँ गरीबे छह। तखन तोरा किएक ने हेतह। अखन जाह।"

सुकन विदा भेल। कलक आगूमे ठाढ़ भऽ सुबुधक मनमे उठलैन- अजीव स्थिति भऽ गेल। एक दिस गरीबक सबाल अछि। जँ कनियोँ चूक हएत तँ जिनगी भरि बदनामीक मोटरी माथपर चढ़ि जाएत। तँए इमानदारीक जरूरत अछि। मुदा इमानदारी दिस तकै छी तँ अपनोमे बेइमानी घूसल अछि। परिवारोमे तहिना देखै छी आ समाजोमे तँ अछिए। गरीबोमे देखै छी, जे मेहनती अछि ओ बहुत किछु कमा कऽ बनाइयो नेने अछि। जेना रहैक घर, पानि पीबैक कल, जीबैले बटाइ खेतीक संग पोसियाँ मालो-जाल खुट्टापर रखने अछि। जखन कि जे आलसी अछि ओकरा सभ कथूक अभावे छइ। तेतबे नहि, जँ हम इमनदारियोसँ विचार रखए चाहब तैयो उलझन होएत, हमहींटा तँ नइ छी आरो लोक रहता। सबहक नेत सबहक प्रति एक्के रंग हेतैन, सेहो बात नइ अछि। जँ कियो मुँह देख मुंगबा बँटता, सेहो भऽ सकैए। ओइठाम जँ हुनका कहबे करबैन तँ हमरे बात मानि लेता सेहो सम्भव नहियेँ अछि। जँ रमाकान्त काका केकरो बेसी दिअ चाहथिन तँ की कहबैन, सम्पैत तँ हुनके छिऐन...।

विचारक जंगलमे सुबुध वौआए लगला। दतमैनक घुस्सा कखनो चलैन आ कखनो बन्न भऽ जाइन। एक तँ भरि रातिक जगरना तैपर सँ अमरलत्ती जकाँ ओझरीकेँ सोझराएब असान नइ बुझि पड़ैन, कनियोँ किम्हरो जोर पड़त तँ टन दऽ टुटि जाएत। तँए जँ समाजक मूल रोगकेँ जड़िसँ नहि पकड़ल जाएत तँ सभ गूड़ गोबर भऽ जाएत। ..तैबीच मुनमा डाबामे दूध नेने सुबुधक आँगन जा डाबा रखि, लगमे आबि दुनू हाथ जोड़ि कहलकैन-

"भाय, अबलोपर दया करबै।"

एक तँ सुबुधक मन अपने घोर-घोर भेल रहैन, तैपर सँ लोकक पैरबी आरो घोर कऽ देलकैन। मन मसोसि कऽ बजला-

"अखन जाह। जखन जमीनक बँटबारा हुअ लगतै तँ तोरो बजा लेबह।"

दतमैन करि मुँह-हाथ धोइ कऽ सुबुध आँगन जा पत्नीकेँ पुछलखिन-

"डाबामे मुनमा कथी नेने आएल छल?"

"दूध।"

"दाम देलिऐ।"

"नहि।"

"किएक?"

"हमरा भेल जे अहीं पठेलौं।"

पत्नीक जवाब सुनि सुबुधक मनमे आगि लगि गेलैन। खिसियाइत बजला-

"झब-दे चाह बनाउ। स्कूल जाएब।"

पत्नी-

"अखने किए जाएब? आन दिन खा कऽ जाइ छेलौं आ आइ भोरे जाएब?"

"रौतुका खेलहा ओहिना कण्ठ लग अछि तँए नै खाएब।"

कहि सुबुध लुंगी बदैल धोती पहिरए लगला आकि पत्नी चाह नेने एलखिन। कुरता पहिर चाह पीब विदा भेला।

जिनगी भरिमे रमाकान्तकेँ एहेन नीन कहियो नइ भेल छेलैन जेहेन रातिमे भेलैन। समैक अन्दाजसँ जुगेसर आबि खिड़की देने

हुलकी देलक तँ देखलक जे रमाकान्त ठर्र पाड़ै छैथ।

रमाकान्तकेँ सूतल देख जुगेसर जोरसँ केबाड़ ढकढकौलक। केबाड़क अवाज सुनि रमाकान्त आँखि मिड़ैत उठला। जुगेसर रमाकान्तकेँ उठा चाह आनए आँगन गेल। रमाकान्तो उठि कऽ कलपर जा कुरुर केलैन। ताबे जुगेसरो चाह नेने आबि गेल।

रमाकान्त चाह पीबते रहैथ, तखने मनमे एलैन जे बाबा चाणक्य ठीके कहने छथिन जे 'धन केकरा-ले रक्खी।' हमरो तँ पितेजीक अरजल छी। जाधैर ओ जीबै छला, हमरा कोनो मतलब नै छल। मुदा हुनका मुइने तँ सभटा हमरे भेल। दुनू बेटा तेते कमाइए जे ऐ धनक ओकरा जरूरते ने छइ। हम केते दिन जीबे करब। तहन तँ सभ धन ओहिना नष्ट भऽ जाएत। कौआ-कुकुर लूझि-लूझि खाएत। तइसँ नीक जे समाजक गरीब-गुरबाकेँ दऽ दिऐ। जहिना तिब्बतक 8म-9म शताब्दीक राजकुमार चेन्पो अपन सभ सम्पैत लोकक बीच बाँटि देलखिन तहिना हमहूँ बाँटि देब। ऐसँ समाजमे भाए-भैयारीक सम्बन्ध सेहो मजगूत बनत। आइ जँ व्यास बाबा जीबैत रहितैथ तँ ओ जरूर बिना कहनौं आबि कऽ असिरवाद दैतैथ। अगर स्वर्ग जाइक रस्ता तियागो होइए तँ हमहूँ किएक ने जाएब। धैनवाद सुबुध आ हीरानन्द मास्टर साहैबकेँ दिऐन जे हमर अज्ञानताक केबाड़ खोललैन। बेटा-पुतोहु सभ जखन सुनत तँ मने-मन खूब खुशी हएत। की हमर कएल धरम ओकरा नै हेतइ?

चाह पीब, पान खा लोटा लऽ रमाकान्त गाछी दिस विदा भेला। कृष्णभोग आमक गाछ तर लोटा रखि, टहैल-टहैल गाछ सभकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगला।

गाछक जे रूप आइ रमाकान्त देख रहल छैथ ओ रूप आइसँ पहिने कहियो ने देखने छला। गाछ देख बुझि पड़ैन जे पत्ता-पत्ता हँसि

रहल अछि। धरतीक शक्ति पाबि ऐश्वर्यवान बनल अछि। दोसराक सेवा-ले उत्साहित अछि...।

एक टकसँ गाछक रूप देख रमाकान्तक ह्रदए गदगद भऽ गेलैन। लोटा उठा पैखाना दिस बढ़ला। तैबीच जय-जयकारक अवाज सुनलैन। अवाज दूरमे रहै तँए स्पष्ट तँ नहि मुदा सुनै जरूर छला। रसे-रसे अवाज लग अबैत गेलैन। पैखानासँ उठि अवाजकेँ अकानए लगला। जय-जयकारक संग अपनो नाओं सुनाइ छेलैन। अपन नाओं सुनि आरो चौकन्ना भऽ कानक पाछूमे हाथक तरहत्थी रखि अकानए लगला। लोकक समूह जेते लग अबैत जाइत तेते अवाज स्पष्ट भेल जाइत। हाँइ-हाँइ कऽ लोटा नेने पोखैरक घाटपर आबि कुरुर कऽ घर दिस विदा भेला। अपन नाओंक संग जय-जयकार सुनि रमाकान्तक मनमे उठलैन- की बात छिऐ? किएक लोक जय-जयकार कऽ रहल अछि?

रमाकान्तक छातीक धुकधुकी तेज हुअ लगलैन, मनमे गुदगुदी लगए लगलैन। उत्साहसँ छाती फुलैत जाइन।

जाबे लोकक जुलुस घर लग पहुँचल, तइसँ पहिनहि दरबज्जापर आबि रमाकान्त देखए लगला। हीरानन्द आ शशि शेखर सेहो दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ देखै छला। की बुढ़, की जुआन, की बच्चा, सभ एक्के सुरमे। सभ मस्त! सभ उत्साहित! सभ नचैत! सबहक मुहसँ हँसी छिटकैत..!

दरबज्जाक आगूमे जुलुस आबि कऽ रूकल। जुलुसक आगूमे पाँच गोरे घोड़ाबला नाच करैत, पाँचो घोड़े जकाँ दौगैत! कखनो हीं-हीं करैत तँ कखनो पाछूसँ चौतालो फेकैत! तइ पाछू डफरा-बौसलीक धून वसन्तक बहार छिड़ियबैत। तइ पाछू लोको सभ नचबो करैत आ जय-जयकारो करैत...।

रमाकान्त सेहो अपन उत्साहकेँ रोकि नै सकला। दलानक ओसारसँ उतैर सोझे जुलुसमे सन्हिया नाचए लगला।

के छोट, के पैघ, के बुढ़, के जवान, सभ बाढ़िक पानि जकाँ उधियाइत रहए। घर-घरसँ स्त्रीगण सभ सेहो आबि चारूकात पसैर गेल।

आँगनसँ श्यामा आबि दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ भऽ नाचो देखैथ आ रमाकान्तोपर आँखि गड़ौने छेली। रमाकान्तकेँ नचैत देख मने-मन सोचए लगली जे एना किए भऽ रहल अछि? लोक सभकेँ कोनो चीजक खुशी हेतै तँए नचैए, मुदा हिनका की भेटलैन जे एना बुढ़ाड़ीमे कुदै छैथ?

छोट बुधि श्यामाक, तँए बुझबे ने करैथ जे धार जखन समुद्रमे मिलए लगैए तखन दुनूक पानि अहिना नचै छै, किएक तँ एक दिस नदीक पानि जे गतिशील रहल तँ दोसर दिस समुद्रक पानि जे असथिर रहल जइमे सिरिफ लहैर उठै छइ।

अखन धरिक जुलुस आ नाच गामक उत्तरबारि टोलसँ आएल। मुदा आब दछिनबारि टोलसँ दोसर जुलुस, मोर-मोरनीक नाचक संग सेहो पहुँचल। दुनू नाचक बीच सौंसे गामक लोक ह्रदए खोलि कऽ नचैत...।

कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्द, शशि शेखरकेँ कहलखिन-

"अखन जे आनन्द अछि ओ समाजमे सभ दिन केना बनल रहत?"

हीरानन्दक प्रश्नक उत्तर शशि शेखरकेँ किछु नै फुरलैन। मुदा प्रश्नक पाछू मन जरूर दौगलैन। ..गम्भीर प्रश्न अछि, तँए धाँइ-दे उत्तरो देब शशि शेखर उचित नइ बुझि चुप्पे रहला। मुदा एते बात जरूर मनमे उठलैन जे जँ सुकर्मक रस्तासँ मनुख उत्साहित भऽ चलैत रहत

तँ जरूर एहने आनन्द जिनगी भरि बनल रहतै।

जुलुसक बीच रमाकान्त नचैत-नचैत घामे-पसीने तर-बत्तर भऽ गेला। मुदा तैयो मन नचैले उधैकते रहैन। एकटा छौरा जे अखरहो देखने, ओ नचैत-नचैत लगमे आबि रमाकान्तकेँ दुनू हाथे पँजिया कऽ उठा कन्हापर लऽ नाचए लगल।

रमाकान्तकेँ उठेने नचैत देख सभ कियो दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत जय-जयकार करए लगल। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्दकेँ भेलैन जे कहीं रमाकान्त बाबू खसि-तसि नै पड़ैथ, तँए लफैर कऽ बीचमे जा रमाकान्तकेँ डाँड़ पकैड़ निच्चाँ केलकैन।

निच्चाँ उतैरते रमाकान्त दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत फेर नाचए लगला। दुनू हाथ उठा कऽ हीरानन्द सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। हाथक इशारा देख सभ शान्त भऽ गेल। धोतीक खूटसँ रमाकान्त पसेना पोछि कहए लगलखिन-

"अहाँ सबहक बीच कहै छी, जे खेत-पथार आइ धरि हम्मर छल, अखनसँ ओ अहाँ सबहक भऽ गेल।"

रमाकान्तक बात सुनि सबहक मुहसँ धानक लाबा जकाँ हँसी भरभरा गेल। जे समाज आर्थिक विपन्नताक चलैत अखन धरि मौलाएल छल ओइमे खुशीक नव फुल फुलाए लगल। सभ कियो हँसी-चौल करैत अपन-अपन घर दिस विदा भेल।

घरसँ निकैल सुबुध सोझे अपन डेरा गेला, डेरा पहुँच तियाग-पत्र लिखलैन। मेसबलाकेँ सभ हिसाब फरिछबैत स्कूल आबि प्रधानाध्यापककेँ तियाग-पत्र दैत कहलखिन-

"मास्टर साहैब, आइसँ सेवामे सहयोग नै कऽ सकब!"

कहि ऑफिससँ निकलए लगला।

ऑफिससँ निकलैत देख कुरसीसँ उठि प्रधानाध्यापक बजला-

“सुबुध बाबू, कनी सुनि लिअ।”

हेडमास्टरक आग्रह सुनि सुबुध रूकि कऽ मुस्कियाइत बजला-

“की कहलौं मास्सैब?”

हेडमास्टरक छातीक धड़कन तेज भेल जाइ छेलैन तँए बोलीक गति सेहो तेज हुअ लगलैन। बजला-

“सुबुध बाबू, अहाँ जल्दीबाजीमे निर्णए कऽ लेलौं। अखनो कहब जे अपन कागत आपस लऽ लिअ।”

निशंक आ गम्भीर स्वरमे सुबुध बजला-

“मास्सैब, आइ धरि अहाँ सबहक संग रहलौं मुदा आब हम वैरागीक संग जा रहल छी तँए एक्को क्षण एतए अँटकैक इच्छा नइ अछि। एक्को पाइ हमरा दुख नइ भऽ रहल अछि। बेकतीगत जिनगी बना अखन धरि जीलौं मुदा आब समाजिक जिनगी जीबैले जा रहल छी। अपनौसँ आग्रह करब, जे असिरवाद दिअ।”

एक दिस सुबुधक मुखमण्डल नव ज्योतिसँ प्रखर होइत रहैन तँ दोसर दिस हेडमास्टरक मुखमण्डल मलिन होइत गेलैन...।

सुबुधक तियाग पत्रक समाचार शिक्षकक बीच सेहो पहुँचल। सभ शिक्षक अपना कोठरीसँ उठि हेडमास्टरक चेम्बरमे पहुँचला। दुनू हाथ जोड़ि सुबुध सभकेँ कहलखिन-

“भाय लोकैन, आइ धरिक जिनगी संगे-संग बितेलौं, तैबीच जँ किछु अधला भेल हुअए, ओ बिसैर जाएब। आइ धरि किताबी ज्ञानक बीच ओझराएल छेलौं मुदा आब ओइ ज्ञानकेँ बेवहारिक धरतीपर उतारैले जा रहल छी।”

जहिना सूर्योदयसँ पूर्व थलकमल उज्जर रहैत मुदा सुरूजक

रोशनी पाबि धीरे-धीरे लाल हुअ लगैत तहिना सुबुधक हृदए समाजक प्रखर रोशनीक प्रवेशसँ बदैल गेलैन। तेज गतिए स्कूलक ओसारसँ निच्चाँ उतैर गेला।

सुबुधक तेज चालि देख विवेक बाबू सेहो नमहर-नमहर डेग बढ़बैत सुबुध लग आबि कहलखिन-

“सुबुध भाय, अहाँ जे किछु केलौं अपन विचारक अनुकूल केलौं। तँए ओइ सम्बन्धमे हमरा किछु नै कहक अछि। किएक तँ जहिया स्कूलमे नोकरी शुरू केलौं आ जेते बुझै छेलिऐ, ओइसँ बेसी आइ जरूर बुझै छी, तँए ओइ दिन ओइ दिनक विचारक अनुरूप केलौं आ आइ औझुका विचारक अनुकूल कऽ रहल छी। मुदा हमर अहाँक सम्बन्ध सिरिफ शिक्षकेक नइ अछि बल्कि विद्यार्थीक सेहो अछि।”

सुबुध आ विवेक हाइये स्कूलसँ संगी। हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि दुनू संगे-संग पढ़ने। मुदा विवेकसँ सुबुध तीन दिनक जेठ छैथ। जे बात सुबुधोकेँ आ विवेकोकेँ बुझल छैन। स्कूलोमे आ कौलेजोमे सुबुध विवेकसँ नीक विद्यार्थी रहला। विवेकसँ अधिक नम्बरो परीक्षामे सुबुधकेँ अबैत रहैन। ओना, दुनू गोरे एक्के डिवीजनसँ पास करै छला मुदा अंकमे किछु तरपट रहै छल। विवेक सुबुधकेँ सीनियर बुझै छैथ। जेकर उदाहरण अछि जे जइ दिन दुनू गोरेक बहाली स्कूलमे भेल, ओइ दिन सभ कागजात विवेकक अगुआएल रहितो स्वेच्छासँ विवेक सुबुधकेँ तीन नम्बर शिक्षक आ अपनाकेँ चारि नम्बर शिक्षक-ले हेडमास्टरकेँ कहने रहथिन। जेकरा चलैत सुबुधक बहालीक चिट्ठीक समए बदैल हेडमास्टर रजिस्टर मेनटेन केने छेलैन। विवेकक प्रति सुबुधक हृदैमे वएह सिनेह छैन।

सुबुधक संगे विवेक अपना डेरा एला। डेरामे अबिते विवेकक पत्नी चाह बना, दुनू गोरेक आगूमे दऽ बैठकखानासँ निकैल खिड़की

लग जा ठाढ़ भऽ गेली। एक जिनगीक टुटैत सम्बन्धसँ कँपैत हृदए विवेक बाबूक रहैन तँए थरथराइत स्वरमे पुछलखिन-

“एक्को दिन पहिने तँ ई बात नै बाजल छेलौं। अनासुरती एहेन निर्णए केना कऽ लेलिऐ?”

मुस्कियाइत सुबुध उत्तर देलखिन-

“पहिनेसँ निआर नै छल। ऐ बेर जे गाम गेल छेलौं तखन भेल। जहिना देव-असुर मिलि समुद्र मथन केने छला तहिना समाजक मथनक परिस्थिति बनि गेल अछि। जइले हमरो जरूरत समाजकेँ छइ। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ हमहूँ छी। तँए अपन दायित्व पूरा करैले नोकरी छोड़लौं अछि...।

महान जिनगी लेल सेवा जरूरी होइत अछि। जँ नोकरीकेँ सेवा कहल जाए तँ खेतमे काज करैबला बोनिहारकेँ की कहबै? किएक तँ बोइन-मजूरी लेल ओहो काज करैत अछि आ नोकरियो केनिहार। मुदा पेटक लेल तँ कमाएबो जरूरी अछि, जँ से नइ करब तँ खाएब की आ दोसरकेँ खुएबै केना? भूखलकेँ भोजन चाही। चाहे ओ अन्नक भूखल हुअए आकि ज्ञानक। तँए चाहे नोकरी होइ वा आन कोनो उपार्जनक काज; ओइकेँ इमानदारीसँ निमाहैत आगू बढ़ि किछु करब– चाहे ज्ञानक क्षेत्र होइ वा जीवनक खगता- भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा, शिक्षा आदि–ओ सेवा होइत। ज्ञानक सेवा ताधैर अपन महत्वक स्थान नहि पबैत जाधैर ओ जीवनसँ जुड़ि कर्मक रूप नै लैत अछि। सिरिफ वैचारिके धरातलसँ होइत तँ मिथिलामे महान-महान विचारक, मनुखक उद्धार-ले रस्ता बतौलैन। मुदा अखनो समाजमे ओहेन मनुख ऐछे जे हजारो बर्ख पूर्वमे छल। हँ! किछु आगुओ बढ़ल, ईहो सत अछि। मुदा जे कियो बौद्धिक, आर्थिक क्षेत्रमे आगू बढ़ला ओ पछुआएलक डेन पकैड़ आगू-मुहेँ घिंचलैन वा पाछू-मुहेँ

धकेललैन? जँ बाँहि पकैड़ आगू-मुहेँ घिंचए चाहितैथ तखन एतेक जाति, सम्प्रद्राय, कर्मकाण्ड पैदा करैक की प्रयोजन? राजसत्ता आ समाजसत्ता- दुनू पछुआएल लोककेँ आरो पाछूए-मुहेँ धकेललक!”

एते कहि सुबुध उठि कऽ ठाढ़ होइत फेर बजला-

“आब एक्को क्षण ऐठाम नै रूकब। हमर बाट रमाकान्त काका तकैत हेता।”

सुबुधकेँ दुनू बाँहि पकैड़ बैसबैत विवेक पत्नीकेँ कहलखिन-

“झब-दे थारी साँठू सुबुध भाय जाइले धड़फड़ाइ छैथ।”

भोजन कऽ सुबुध विवेकक डेरासँ विदा भऽ गेला। दुनू हाथ जोड़ि विवेक कहलकैन-

“हमरोपर धियान रखब।”

गामक सीमामे प्रवेश करिते सुबुध घरक सुधि बिसैर गेला। सौंसे गाम परिवारे जकाँ बुझि पड़ए लगलैन। एक टकसँ खेत-पोखैर-गाछी-कलम- खढ़होरि इत्यादि देख मने-मन सोचए लगला- जँ ऐ सम्पैतकेँ ढंगसँ आगू बढ़ौल जाए, विकसित ढंगसँ कएल जाए तँ निसचित गामक लोकमे खुशहाली ऐबे करत। अखन धरि जहिना खेत मरनासन्न अछि तहिना पोखैर-झाँखैर सेहो। सभसँ पैघ बात तँ ई अछि जे लोको दबैत-दबैत एते दबि गेल अछि जे सिरिफ मनुखक ढाँचा मात्र रहि गेल अछि। तँए सभमे नव चेतना, नव ढंग आ नव तकनीकक नव औजारक उपयोग आवश्यक अछि। तखने शिशिरक सिकुरल रूप वसन्तक विकसित रूपमे बदैल सकैए...।

सोचैत-विचारैत सुबुध राजिन्दरक घर लग पहुँचला। राजिन्दरक घर देख रस्ता छोड़ि रूकि गेला।

राजिन्दरकेँ तीनटा घर। अँगनाक एकभागमे टाट लगौने।

दछिनबरिया घरमे मालो बन्हैत आ अपनो बैसार बनौने। बैसारमे दूटा चौकी देने। एकटापर अपने सुतैत आ दोसरकेँ पाहुन-परक-ले रखने।

सुबुधकेँ देख राजिन्दर चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसौलकैन। सुबुधकेँ चौकीपर बैसा घरवालीकेँ दरबज्जेपर सँ कहलखिन-

"मास्टर साहैब एला हेन, झब-दे एक लोटा पानि नेने आउ?"

पतिक बात सुनि गुलबिया लोटामे पानि नेने आबि ओलती लग ठाढ़ भऽ गेली। मुँह झँपने। ..स्त्रीकेँ ठाढ़ देख राजिन्दर बजला-

"हिनका नै चिन्है छिऐन, सुबुध भाय छैथ! मुँह किए झँपने छी?"

राजिन्दरक बात सुनि सुबुध मुस्कियाइत बजला-

"गाममे रहितो हम अनगौआँ भऽ गेल छी! जहियासँ नोकरी शुरू केलौं, गाम छुटि गेल! सप्ताहमे एक दिन अबै छी जइसँ गाममे घुमियो-फिर नहि पबै छी तँए नै चिन्है छैथ। मुदा आब गाममे रहै दुआरे नोकरी छोड़ि देलौं। आब चिन्हती।"

सुबुधक बात सुनि राजिन्दर स्त्रीकेँ कहलखिन-

"सुबुध भाय पैघ लोक छैथ। जखन दुआरपर पएर रखलैन तखन बिना किछु खुऔने-पीऔने केना जाए देबैन। जाउ बाड़ीसँ ओरहाबला चारिटा मकइ बालि तोड़ि ओराहि कऽ नेने आउ।"

पतिक बात सुनि गुलबिया मुस्कियाइत विदा भेली।

राजिन्दर सुबुधकेँ पुछलकैन-

"भाय नोकरी किए छोड़ि देलिऐ?"

राजिन्दरक प्रश्नक सही उत्तर देब सुबुध उचित नइ बुझि बजला-

"नइ मन लगल। अपनो खेत-पथार अछि आब खेतीए करब।"

चारू ओराहल बालि आ नून-मेरचाइ थारीमे नेने गुलबिया आबि सुबुधक आगूमे रखि अपने निच्चाँमे बैस गेली। मकैक ओरहा देख सुबुध तिरपित भऽ एकटा बालि हाथमे लऽ गौरसँ दाना देखए लगला। सुभर बालि। एक्कोटा दाना भौर नहि। बालिकेँ देख सुबुध बजला-

"बड़ सुन्नर मकइ अछि! अपना ऐठामक गिरहत तँ उपजैबते ने अछि, जँ उपजौल जाए तँ खूब हेतइ। बेगूसराय, सहरसा आ मुजफ्फरपुर इलाकामे देखै छिऐ जे मकैक उपजासँ गिरहस्त धनिक भऽ गेल अछि। सालो भरि मकैक खेती होइ छइ। जहिना खेती तहिना उपजा। पाँच मन छह मन कट्ठा मकइ उपजैए। खाइयोमे नीक। रोटी, सतुआ, भुजा, ओरहा सभ किछु मकैक बनैए। बदाम आ मकैक सतुआ तँ बुझू जे बिनु दाँतोबला-ले अमृते छी।"

वामा हाथमे बालि दहिना हाथक ओंगरीसँ दाना छोड़ा मुँहमे लैत सुबुध पुछलखिन-

"राजिन्दर भैया, बाल-बच्चा कएटा अछि?"

सुबुधक प्रश्न सुनि राजिन्दर चुप्पे रहला मुदा गुलबिया बजली-

"तीन भाए-बहिन अछि। जेठकी सासुर बसैए। बड़ बढ़ियाँ गुजर चलै छइ। दोसरोक बिआह केलौं। मुदा जमाए वौर गेल। दिल्लीमे नोकरी करैत रहै, ओतैसँ वौरल, ने एक्कोटा चिट्ठी-पुरजी पठबै आ ने रूपैआ-पैसा। छह मास बेटीकेँ सासुरमे रहए देलिऐ, तेकर बाद अपने ऐठाम लऽ अनलिऐ। दिल्लीसँ जे कोइ आबै आ पुछिऐ तँ कोइ कहए दोसर बिआह कऽ लेलक, तँ कोइ कहए अरब चलि गेल। कोइ कहए मलेटरीमे भरती भऽ गेल तँ कोइ कहए उग्रवादी भऽ गेल। कोनो भाँजे ने लगल। आखिरिमे चारि बरिस अपना ऐठीम बेटीकेँ रखलौं। मुदा गामोमे तेहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि जे अनका इज्जतकेँ कोनो इज्जत बुझैए।"

हाथक इशारा सँ देखबैत-

"उ घर देखै छिऐ, ओइ अँगनाक एकटा छौरा कहियो माछ कीनि कऽ नेने आबए तँ कहियो फोटो खिंचबैले संगे लऽ लऽ जाइ। हम दुनू परानी बाध-बोनमे भरि-भरि दिन रहै छेलौं। गाम परहक खेल-बेल बुझबे ने करै छेलिऐ। जखन गामक लोक कुट्टी-चौल करए लगल तखन बुझलिऐ। ..जेठकी बेटी आएल रहए। ओकरा कहलिऐ। ओ अपने संगे नेने गेलइ। दोसर बिआह ऐ दुआरे नै करिऐ जे जँ कहीं जमाए जीबते हुअए। पछाइत जेठके जमाए-सँ बिआह कऽ लेलक। दुनू बहिन एक्के घरमे रहैए। दुनूकेँ सखा-पात सेहो छइ। छोट बेटा अछि। ओकरो बिआह-दुरागमन कऽ देलिऐ।"

मुस्कियाइत सुबुध पुछलखिन-

"दान-दहेजमे की सभ देलक?"

दान-दहेजक नाओं सुनि गुलबिया हँसैत बजली

"समैध अपने एला। संगमे लड़कीक माम सेहो रहथिन। दुआरपर अबिते भोला बापक पुछारि केलैन। हम नुआँक फाँड़ बान्हि चिपरी पाथैत रही। माथ परहक साड़ी ससैर कऽ गरदैनपर रहए आ दुनू हाथो गोबराएले छल। केना गोबराएल हाथे साड़ी सम्हारितौं। तँए ओहिना चिपड़ी पथिते रहि गेलौं। कोनो की चिन्हैत रहिऐ। ओहो तँ हमरा नहियेँ चिन्हैत रहैथ। अनठिया ओहो आ अनठिया हमहूँ रही। ओहो मनुखे छैथ आ हमहूँ मनुखे छी, तखन बीचमे कथीक लाज?"

गुलबियाक बात सुनि दाँत पिसैत राजिन्दर बिच्चेमे कहलखिन-

"आबो एक उमेरक भेलौं तैयो समरथाइक ताउ कम्म नै भेल? जे मनमे अबैए बकने जाइ छी..!"

राजिन्दरक बातकेँ दबैत गुलबिया बजली-

"कोनो की झूठ बात बजै छी जे लाज हएत। मास्टर बौआ की कोनो अनगौआँ छैथ जे रस्ते-रस्ते ढोल पीटता?"

बीच-बचाव करैत सुबुध बजला-

"तेकर बाद की भेल?"

"ताबे ईहो एला। दुनू गोरेकेँ चौकीपर बैसा गप-सप्प करए लगला। हमरो गोबर सठि गेल। आँगन चलि एलौं। हाथ-पएर धोइ कऽ पछबरिया टाट लग ठाढ़ भऽ गप-सप्प सुनए लगलौं। लड़कीक माम तँ उचक्का जकाँ बुझि पड़ैथ मुदा बाप असथिर। वेचारा बड़ सुन्नर गप बजलैथ। ओ कहलकैन जे देखू अहाँक बेटा छी आ हम्मर बेटी। दुनियाँमे जेते लोक अछि ओ अपने बेटा-बेटी-ले सभ किछु करैए। जहिना अहाँ छी तहिना तँ हमहूँ छी। जहिना अपन नून-रोटीमे अहूँ गुजर करै छी तहिना हमहूँ करै छी। कौआसँ खैर लूटाएब मुरुखपना हएत। हमरे एकटा पितियौत सार अपन बेटाक बिआह केलक। एक लाख रूपैआ नगद नेने रहइ। तेते लाम-झामसँ काज केलक जे अपनो जे बैंकमे साठि हजार रूपैआ रहै सेहो सठि गेलइ। हम ओहेन काज नइ करब। बेटी-जमाएकेँ एकटा चापाकल गड़ा देबइ, दू कोठरीक मकान बना देबइ आ एक जोड़ा गाए ली वा महींस, से देब। तैसंग दुनू गोरेकेँ लत्ता-कपड़ा, बरतन-बासन, लकड़ीक सभ आवश्यक सामानक संग बिआहक खरच करब। अहाँकेँ ऐ दुआरे नै खरच कराएब जे जे खरच भऽ जेतै ओ तँ ओही दुनूक जेतै किने। ..हमरा पसिन भऽ गेल। मन कछ-मछ करए लगल जे सूहकारि ली। मुदा पुरुखक बीच गप चलैत रहइ। मनमे ईहो हुअए जे जँ कहीं कोनो बाते दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भऽ जेतैन तखन तँ कुटुमैतियो नइ हएत। तँए मन कछ-मछ करए लगल। एक बेर खोंखी केलौं जे ओ अपने अबैथ मुदा से नै भेल। तखन दुनू हाथे थोपड़ी बजेलौं। तैयो सएह। आब की करितौं।

काज पसिनगर अछि मुदा जँ कहीं कोनो बाधा उपस्थित भऽ गेल तखन तँ सभ नाश भऽ जाएत। पछाइत मुँह उघारनहि हम दुआरपर गेलौं। आगूमे ठाढ़ भऽ हिनका कहलयैन-

“भैया! बड़ सुन्नर बात समैध कहै छथुन, भोलाक बिआह कऽ लएह।”

..कहि चोट्टे घुमि कऽ आँगन आबि शरबत बनेलौं। अपनेसँ जा कऽ तीनू गोरेकेँ देलिऐन। कुटमैती पक्का भऽ गेल। ऐगले लगनमे बिआहो भेल।”

तैबीच चारू बाइलो सुबुध खा लेलैन आ गपो-सप्प सम्पन्न भेल। पानि पीब घर दिसक रस्ता पकड़लैन। थोड़े दूर आगू बढ़लापर सुबुधक मनमे उठलैन- घरपर जाइ आकि रमाकान्त काका ऐठाम?

दुबट्टी लग ठाढ़ भऽ सुबुध गुनधुन करए लगला। एक मन होनि जे भरि दिनक थाकल छी, कनी अराम करब जरूरी अछि। तँए घरेपर जाएब नीक। दोसर मन होनि जे ऐ जुआनीमे जँ अराम करब तँ जिनगी छूटत।

गुनधुनमे पड़ल सुबुधक मनमे एलैन- नोकरी छोड़ैक समाचार घर पहुँचेनाइ जरूरी अछि। तत्-मत् करैत रमाकान्त घर दिसक रस्ता छोड़ि मलहटोलीबला एकपेड़िया पकैड़ घर दिस बढ़ला। घर लग अबिते सभ किछु बदलल-बदलल बुझि पड़लैन। जेना सभ किछु खुशीसँ मस्त हुअए। दरबज्जाक चुहचुही सेहो नीक बुझि पड़लैन। दुआरपर आबि कुरता खोलि चौकीपर रखि पत्नीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“कनी एक लोटा पानि नेने आउ, बड़ पियास लगल अछि।”

पतिक अवाज सुनि किशोरी लोटामे पानि नेने एली। हाथसँ लोटा लऽ लोटो भरि पानि पीब सुबुध बजला-

“आइसँ नोकरी छोड़ि देलौं, विद्यालयमे तियागपत्र दऽ देलौं।”

पतिक बात सुनि किशोरी चौंक गेली। मुदा पति-पत्नीक बीच मजाको चलिते अछि। किशोरीकेँ सोलहन्नी बिसबास नहि भेलैन। मुस्कियाइत बजली-

“नीक केलौं। आठ दिनपर जे भेँट होइ छेलौं से दिन-राति भेँट होइत रहब। हमरो नीके।”

किशोरीक बात सुनि सुबुधक मनमे भेलैन जे भरिसक मजाक बुझलैन। दोहरबैत बजला-

“अहाँ मजाक बुझै छी। सत बात कहलौं।”

जेबीसँ तियागपत्रक नकल निकालि कऽ देखबैत कहलखिन-

“हे देखियौ कागत!”

तैबीच मंगल सेहो आएल। मंगलकेँ देख किशोरी ससैर गेली। मुस्कियाइत सुबुध मंगलकेँ कहलखिन-

“काका, नौकरी छोड़ि देलौं। आब गाममे रहि खेतियो-पथारी करब आ जहाँ धरि भऽ सकत समाजक सेवा सेहो करब।”

सुबुधक बात सुनि मंगल कहलकैन-

“बौआ, हम तँ उमेरेमे ने अहाँसँ जेठ छी मुदा अहाँ पढ़लो-लिखल छी मास्टरियो करै छी तँए नीके जानि कऽ ने नोकरी छोड़ने हएब।”

मंगलक बात सुनि सुबुधक मनमे सवुर भेलैन। मुस्कियाइत बजला-

“काका जाधैर पढ़ल-लिखल लोक समाजमे रहि समाजक क्रिया-कलापकेँ आगू-मुहेँ नै धकलत ताधैर समाज आगू केना बढ़त।”

सुबुध आ मंगल गप-सप्प करिते छला कि किशोरी आँगनमे

अर्ड़ाहैट मारि कानए लगली। सुबुध बुझि गेला तँए असथिरसँ बैसले रहला। मुदा अकलबेराक कानब सुनि टोलक जनिजाति दौग-दौग आबए लगली। सौंसे आँगन जनिजातिसँ भरि गेल। ..नवानीवाली किशोरीकेँ पुछलखिन-

“कनियाँ की भेल जे एना अकलबेरामे कानै छी?”

मुदा किछु उत्तर नै दऽ किशोरी आरो जोर-जोरसँ कानए लगली। टोलक जेते बहिना, फुल, पान, गुलाब, कदम, चान, पार्टनर किशोरीक छेलैन सभ कियो एक्केटा प्रश्न पुछैत रहलैन-

“की भेल?”

मुदा जेते संगी-साथी सभ किशोरीसँ पुछै छेलैन तेते किशोरी जोर-जोरसँ कानै छेली। केकरो कोनो अर्थे नै लगैत। मुदा अनुमानक बजार तेज भेल जाइ छल। कियो किछु बुझैत तँ कियो किछु।

दरबज्जापर बैसल-बैसल सुबुध मने-मन खुशी होइत रहैथ। मनमे होनि जाधैर पुरना चालि-ढालिक लोकक–चाहे मरद हुअए वा स्त्रीगण–चालि नहि बदलत ताधैर नव समाज केना बनि सकैए? ई प्रश्न तँ सिरिफ समाजे-ले नै परिवारो-ले अछि, आ परिवारे किए, मनुखो-ले अछिए। तँए सुबुध किछु बजबे ने करैथ।

अकलबेराक समए रहबे करए। बाध दिससँ गाए, महींस, बकरी चरि-चरि अबैत रहए। घसबहिनी घासऽ पथिया नेने अबै छेली आ गोबर बीछनिहारि सभ गोबरक छितनी माथपर नेने अबै छेली...।

बुधनी आ सोमनी, घासऽ छिट्टा माथपर नेने जखन सुबुधक घर सिके एली कि सुबुधक अँगनामे कानब सुनली। दुनू गोरे अकाइन कऽ बुझलैन जे सुबुधक पत्नी कानै छथिन। सोमनी बुधनीकेँ कहलक-

“बहिन, छिट्टा रखि कऽ चल देखैले।”

तैपर बुधनी बजली-

“गै बहिन, ऐ चमचिकनी सबहक भभटपन सुनि कऽ की करबीही। भरि दिन चाह-पान घोंटैत रहैए, बुझैए जे एहने दुनियाँ छइ। मरदकेँ किछु हुअए, मौगी सभ रानी छी। जाबे एतए बरदेमे ताबे गामेपर चलि जेमे। घास-भूसा झाड़ब, जरना-काठी ओरियाएब। थैर खर्ड़ब, बासन-कुसन धुअब आकि ऐ भभटपनवालीक भभटपन सुनब। चल।”

सोमनी मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बेस कहलैं बहिन, जेकरा जेते सुख होइ छै ओ ओते कनैए। अपने सभ नीक छी जे कमाइ छी खाइ छी आ चैनसँ रहै छी। ऐ ललमुहीं सबहक किरदानी सुनबीही तँ हेतौ जे मुहेँपर थुकि दिऐ।”

◌

शब्द संख्या : 4580

दस

भरि दिन सुबुधक मनमे यएह खुटखुटी धेने रहलैन जे जइ गामक लोकमे एते उत्साह बढ़ल अछि, ओइ गाममे जँ बिहाड़िक पूर्व हवा खसै तँ लोकक मनमे अनदेसो बढ़ि सकैए। समाज छिऐ, के की बाजत, नै बाजत तेकर कोन ठेकान। कियो सोचि सकैए जे जेते विचारक सभ अछि ओ पाइ-कौड़ीक भाँजमे कहीं टौहकी ने तँ लगबैए। मुदा लोकक धाराकेँ रोकलासँ खतरो उपस्थित भऽ सकैए। जहिना अधिक रफ्तारसँ चलैत गाड़ीमे एकाएक ब्रेक लगौलासँ दुर्घटनो भऽ सकैए तहिना काजमे ढील-ढाल भेलापर भऽ सकैए। ओना, भरि दिन तँ अपने चक्करमे फँसल रहलौं, से के बुझत। गामक लोक तँ गामक काजे भेलासँ बुझता...।

अचताइत-पचताइत सुबुध रमाकान्त ऐठाम विदा भेला। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छेलइ। थोड़े दूर आगू बढ़लापर रस्ताक पछबारि भाग, सुरतिया घरक आगूमे पान-सात गोरे बैस गप-सप्प करैत रहए।

“खेतक बँटबाराक ढोल तँ रमाकान्त काका पीटि देलखिन मुदा बँटै कहाँ छथिन! धनक लोभ केकरा नइ छइ। ओ थोड़े खेत बँटथिन! ई सभटा धनिक लोकक चालबाजी छिऐ।”

“लोक थोड़े नीक-अधलाक विचार करैए, जे सुनलक ओ कौआ

जकाँ कौंउ-कौंउ करैत सगरे गाम बिलैह दइए। मुदा तइसँ की, अगर जँ ओ खेत नहियेँ बँटथिन तँ की लोक मरि जाएत!”

“जे अपने ठकि-फुसिया कऽ एते धन जमा केलक ओ सुहरदे मुहेँ लोककेँ जमीन दऽ देतइ! तखन तँ गरीबक कपारेमे जे दुख लिखल छै ओ तँ ओकरा भोगै पड़तै। केहेन निरलज्ज जकाँ रमाकान्त नाचि-नाचि लोककेँ कहलकै..!”

रस्तापर ठाढ़ भऽ सुबुध सुनैत रहला। सुनला पछाइत सुबुधक मनमे जेना आगि लगि गेलैन। मुदा मनमे उठलैन, भरि दिन तँ हमहूँ अनतए छेलौं, गाममे किछु भऽ ने तँ गेल..! बिना किछु बजने सुबुध आगू बढ़ि गेला। रमाकान्त ऐठाम पहुँचला।

सुबुधकेँ देखते हीरानन्द बजला-

“जिनकर चरचा करै छेलौं ओ आबिए गेला।”

रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

“केता बेर तोरासँ गप करैक मन भेल मुदा तोँ तँ भरि दिन निपत्ते रहलह। केतौ गेल छेलह की?”

रमाकान्तक बात सुनि सुबुध बजला-

“भरि दिन एते व्यस्त रहलौं जे अखन फुरसत भेल। घरसँ बहार धरि परेशान-परेशान दिन भरि होइते रहलौं।”

रमाकान्त-

“की परेशान?”

“काल्हि रातिमे जखन ओछाइनपर गेलौं तँ अहाँक कहलाहा बात मन पड़ल। मन पड़िते पेटमे घुरियाए लगल। बड़ी काल धरि सोचैत-विचारैत रहलौं। नीनो ने हुअए। अन्तमे यएह मनमे आएल जे जहिना अहाँ अपन सभ सम्पैत समाजकेँ देलिऐन तहिना हमहूँ नोकरी

छोड़ि देहसँ समाजक सेवा करब। जहिना गाड़ी इंजिनक बले चलैए तहिना तँ समाजोमे इंजिनक जरूरत अछि। तैबीच एकटा इतिहासक घटना मन पड़ल।”

‘इतिहासक घटना’ सुनिते उत्सुकतासँ हीरानन्द सुबुधकेँ पुछि देलखिन-

“कोन घटना मन पड़ल?”

सुबुध-

“तिब्बतमे एकटा राजकुमार चेनपो नामक भेला। ओ अपना राज्यमे धनीक-गरीबक बीच खाधि देखलैन। ओइ खाधिकेँ पाटैले अपन सभ सम्पैत प्रजाक बीच बाँटि देलखिन। मुदा किछुए दिनक उपरान्त फेर ओहिना-क-ओहिना भऽ गेल। माने धनिक धनिक बनि गेल आ गरीब गरीब! राजकुमार क्षुब्ध भऽ गेला जे एना किए भेल?”

खिस्सा सुनि बिच्चेमे शशि शेखर पुछि देलकैन-

“एना किएक भेलइ?”

“हम समाजशास्त्रक विद्यार्थी छी तँए ऐ बातकेँ जनै छी। जाधैर बेवस्था नहि बदलत ताधैर मनुखक जिनगी नइ सुधरत। तँए हम अपन दायित्व बुझि नोकरी छोड़लौं। गामक गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरि आ बच्चासँ लऽ कऽ बुढ़ धरि, गाम सबहक छिऐ। तँए हम तिब्बत जकाँ हूसल काज नइ करब।”

पहिलुके प्रशंसा सुनि रमाकान्तक मन उड़ि गेलैन, राजकुमारक पुरा खिस्सा सुनबो ने केला। मुदा हीरानन्दोक आ शशि शेखरोक धियान ओइ खिस्सामे घुमए लगलैन। तैबीच जुगेसर चाह अनलक। सभ कियो चाह पीबए लगला। चाह पीब रमाकान्त बजला-

“देखू, हम अपन सभ खेत समाजकेँ दऽ देलिऐ। आब हमरा

कोनो मतलब ओइ खेतसँ नइ अछि। मुदा एकटा बात जरूर कहब जे कोनो तरहक गड़बड़ी समाजमे नै हुअए। सभकेँ खेत होइ।”

रमाकान्तक बात सुनि शशि शेखर अपन विचार रखलैन-

“गाममे गरीब-लोकक परिवार जेते अछि ओकरा जोड़ि लिअ आ खेतकेँ जोड़ि एक रंग बाँटि दियौ।”

शशिक विचार सुनि हीरानन्द नाक मारैत बजला-

“उँ-हूँउ।”

मुँहपर हाथ नेने सुबुध मने-मन सोचैत रहैथ, कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ियो ने छै आ कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ीक संग दू कट्ठा धनखेतियो छइ। तहिना केकरो पाँचो कट्ठा छइ। जँ जमा सम्पैतमे एक्के रंग देल जाए तँ सभकेँ एक रंग केना हेतइ। ..ऐ ओझरीमे सुबुध पड़ल छला!

हीरानन्द सोचैत रहैथ, गरीबो तँ सभ एक रंग नइ अछि। कियो मेहनती अछि तँ कियो नमरी कोइढ़। कियो निशाँखोर अछि तँ कियो सात्विक। गरीबोक स्थिति तँ विचित्र अछि। लेकिन मूल प्रश्न अछि समाजकेँ ऊपर उठबैक।

सभकेँ गुम्म देख रमाकान्त मुँहमे पान लऽ जरदा फँकैत बजला-

“एना सभ गुम्म किए छी? हम समाजक दाउ-पेंच तँ नइ बुझै छिऐ मुदा अहाँ सभ तँ पढ़ल-लिखल होशगर छी। तखन कियो किछु किए ने बजै छी?”

अपन बुधिक कमजोरी व्यक्त करैत हीरानन्द सुबुधकेँ कहलखिन-

“भाय, जे सोचै छी ओ ओझरा जाइए तँए अहीं सोझरबैत किछु कहियौ।”

गम्भीर भऽ सुबुध कहए लगलखिन-

“अपन समाज बहुत पछुआएल अछि। पछुआएल समाजमे घनेरो समस्या, समाढ़ जकाँ पकड़ने रहैए। जे बिना समाधान केने आगू नै ससरए देत। मुदा समाधानो तँ कागतपर नक्शा बनौने नइ हएत। समस्या लोकक जिनगीकें चुरीन जकाँ पकड़ने अछि। जहिना चुरीन लोकेक देहमे घोंसिया अपन करामात करैए तहिना समस्यो अछि। तँए अखन मात्र दूटा सबालकें पकडू। पहिल, सभकें एक रंग खेत होइ आ दोसर, खेतक संग-संग आरो जे पूजी अछि ओकरो उपयोग ढंगसँ हुअए।”

सुबुध बजिते रहैथ कि बिच्चेमे जुगेसर टपैक गेल-

“मास्सैब, कनी बिकछा कऽ कहियौ। एना जे पौतीमे राखल जिनिस जकाँ झाँपि कऽ कहबै तखन हम सभ केना बुझब?”

जुगेसरक बातसँ सुबुधकें तकलीफ नहि भेलैन। मुस्कियाइत बजला-

“ठीके अहाँ नइ बुझने हएब जुगे। नीक जकाँ बिकछा कऽ कहै छी। देखियौ, सिरिफ खेते रहने उपजा नइ भऽ जाइ छइ। ओकरा उपजबए पड़ै छइ। पहिने तामि-कोरि कऽ तैयार करए पड़ै छइ। बर्खा होइ वा पटा कऽ बीआ पाड़ए पड़ै छइ। बीआ जखन रोपाउ होइ छै तखन उखाड़ि कऽ रोपल जाइ छै, कमठौन कएल जाइ छै इत्यादि। से सभ करत तखन ने उपजा हएत। खेतक संग-संग मेहनत जे होएत सेहो ने पूजी भेल। मेहनत करैले ओजारोक जरूरत होइए। ओजारोक नमहर इतिहास रहल अछि। शुरूमे लोक साधारण औजारसँ काज करै छल। जेना-जेना औजारो उन्नैत करैत गेल तेना-तेना लोकक हालतो सुधरैत गेल। अखन अपन गाम बहुत पछुआएल अछि, तँए नव औजारसँ काज करब सम्भव नहि। नव औजार-ले अधिक पैसोक

जरूरत होइत, जे नइ अछि। अखन साधारणे औजारसँ काज चलबए पड़त। जेना-जेना हालत सुधरैत जाएत तेना-तेना औजारो सुधरैत जाएत।”

सुबुधक बात सुनि जुगेसर भक-दे निशाँस छोड़ि बाजल-

“हँ, आब बुझलौं। सुआइत लोक कहै छै जे पढ़ि-लिख कऽ जँ हरो जोतब तँ सिरौर सोझ हएत..!”

हीरानन्द बजला-

“बड़ सुन्दर बात कहलिऐ सुबुध भाय। आब खेतक बँटबाराक सम्बन्धमे कहियौ।”

कनडेरिए आँखिए हीरानन्दक चेहरा दिस ताकि सुबुध बजला-

“हीरा बाबू, गाममे जेते एक बीघा खेतसँ निच्चाँबला गरीब लोक छैथ हुनका सभकें एक-एक बीघा खेत भऽ जेतैन। सिरिफ रमाकान्ते काकाबला जमीन नहि, हुनकर अपनो जमीन ओइमे जोड़ा जेतैन। जेना देखियौ, किनको घराड़ियो नै छैन, हुनका बीघा भरि खेत दिअ पड़त। मुदा जिनका पाँच कट्ठा छैन हुनका पनरहे कट्ठा दिअ पड़त। तेतबे नहि, जिनका ओहूसँ बेसी छैन, हुनका आरो कम दिअ पड़त।”

सुबुधक बात सुनि रमाकान्त ठहाका मारि बजला-

“बड़ सुन्नर, बड़ सुन्नर। बड़ सुन्नर विचार सुबुधक छैन। आब रातियो बेसी भऽ गेल। खाइयो-पीबैक बेर उनैह जाएत। रोटी गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छइ, तँए आब गप-सप्प छोडू। काल्हि भोरे ढोलहो दिआ सभकें बजा लेबैन आ सबहक बीचमे अपन निर्णए सुना खेत बँटैक भार सेहो हुनके सभपर छोड़ि देबैन। नहि तँ अनेरे हो-हल्ला करता।”

भोरे ढोलहो पड़ल। एक तँ ओहिना सबहक कान ठाढ़ रहबे

करैन, तैपर ढोलहो सुनि घरा-घरी सभ पहुँचला। जहिना केस लड़निहार फैसला सुनैले उत्सुक रहैए तहिना बैसारमे सभ उत्सुक छला। अस्सी बर्खक सोनेलाल बाबा सेहो आएल छैथ। ओना, सोनेलाल बाबाकें अपने अढ़ाइ बीघा खेत छैन मुदा गाममे नव उत्सवक उत्साहसँ आएल छैथ। बैसले-बैसल ओ मुड़ी उठा कऽ देख बजला-

“कोनो टोलक कियो छुटलो छैथ? सभ अपन-अपन टोलक लोककें गनि लिअ।”

सोनेलाल बाबाक गप सुनि सभ अपन-अपन टोलक लोककें घरा-घरी मिलबए लगल। सिरिफ बौका आ गोसैमा बैसारमे नै आएल छला। दुनू टोलक दू आदमीकें पठा ओहू दुनूकें बजौल गेलैन। दुनू आदमीकें देखते सोनेलाल बाबा पुछि देलखिन-

“तोरा दुनू गोरेकें ढोल्होक अवाज कानमे नै पहुँचल छेलौ?”

बौका बाजल-

“ढोलहो तँ बुझलिऐ। मगर नोकरी करै छी ने, ने माए-बाप अछि आ ने बौह, तखन खेत लऽ कऽ की करब। बिआहो होइते ने अछि। लोक ढहलेल बुझैए, तखन अनेरे किए अबितौं?”

बौकाक बात सुनि सोनेलाल बाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलैन। आब दोसर, गोसैमा बाजल-

“हम दुनू परानी तँ बुढ़े भेलौं, बेटा ऐछे नहि। लऽ दऽ कऽ एकटा ढेरबा बेटी अछि। ओकरो बिआह ऐ बेर कइए देबइ। बिआह हेतै, अपन घर जाएत। भोगनिहार के रहत जे अनेरे हम खेत लेब?”

गोसैमोक विचार सुनि सोनेलाल बाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलैन। दुनू गोरेक बात सुनि सोनेलाल बाबाक मनमे एलैन जे समाजमे दूटा परिवार कमि जाएत। दुनू परिवारकें बँचौल तँ नै जा

सकैए मुदा जँ दुनूकें जोड़ि कऽ एकटा परिवार बनाबी ओ तँ सम्भव अछिए। बजला-

“बौका तँ सिरिफ नामक अछि। केहेन बढ़ियाँ बजैए। गोसैमाक बेटी आन गाम चलि जेतइ। जइसँ बाप-माए–दुनू गोरे–कें बुढ़ाड़ीमे दुख हेतइ। तँए बौकाक बिआह गोसैमाक बेटीसँ करा देने एक परिवार भऽ जाएत।”

सोनेलाल बाबाक विचार सुनि अदहासँ बेसी लोक समर्थन कऽ देलक। मुदा किछु गोरे विरोध करैत बजला-

“एक गाममे लड़का-लड़कीक बिआहक चलैन तँ नइ अछि। जँ हएत तँ अनुचित हएत!”

धड़फड़ा कऽ उठैत लखना जोरसँ बाजल-

“कोन गाम आ कोन समाज एहेन अछि जइमे छौरा-छौरी छह-पाँच नै करैए। चोरा कऽ छह-पाँच केलासँ बड़ बढ़ियाँ मुदा देखा कऽ करत से बड़ अधला हेतइ?”

लखनाक विचारक सभ सहमति दऽ देलैन। दुनूक बिआहक बात पक्का भऽ गेल।

सुबुधक मनमे फेर एकटा प्रश्न उठि गेलैन जे बौका आ गोसैमाक दुनू परिवारकें एक मानि जमीन देल जाए वा दू माइन? ..तर्क-वितर्क करैत, मिला कऽ एक परिवार मानि हिस्सा दैक सहमति बनल।

फेर प्रश्न उठल जे जमीनक नाप-जोख के करत? रमाकान्त कहि देलखिन जे अपनेमे अहाँ सभ बाँटि लिअ।”

सुबुधोक मनमे भेलैन जे रमाकान्त काका ठीके कहलैन। काजकें बाँटि कऽ नै करब तँ गलती हएत। सभ काज जँ अपने करए

चाहब तँ एते गोरे जे समाजमे छैथ ओ सभ की करता। जँ कहीं कोनो गलतियो हएत तँ जल्दीए सुधैर जाएत। बजला-

“खेत नपैक लूरि केते गोरेकें छह। किएक तँ जँ अमीन लऽ कऽ बँटबारा करब तँ बहुत खरच हएत। जे खरच बँटैमे करब ओइ पैसासँ दोसरे काज किए नै कऽ लेब। पैसाक काज तँ बहुत अछि, तँए अन्ट सन्ट खरच नै कऽ सुपत-सुपत खरच करब नीक होएत। देखते छिऐ जे जहिना देशक संविधान ओकीलकें सालो भरि हरिअरी देने रहैए तहिना तँ सर्वेओ अमीनकें अछि। कौआसँ खैर लूटाएब नीक नहि। जहिना अहाँ सभकें मंगनीमे खेत भेट रहल अछि तहिना सही-सलामत हाथमे चलि जाए। जँ अमीन सबहक भाँजमे पड़ब तँ ओहिना हएत जहिना लोक कहै छै ‘जेतेमे बौह नै तेतेमे लहठी..!”

सुबुधक बात सुनि, जोशमे बिलटा उठि कऽ ठाढ़ भऽ बाजल-

“माघसँ लऽ कऽ जेठ धरि हम सभ खेत तमिया करै छी। से कोनो एक्के साल नहि, सभ साल। सेहो कोनो आइए-सँ नहि जहियासँ ज्ञान-परान भेल तहिए-सँ। कोन अमीन आ कमिश्नर नपैले अबैए। अपन गामक कोन बात जे चरिकोसीमे तमनी करै छी। तेतबे नहि, नेपालो जा-जा तमै छी। तेतबे नहि, साले-साल नपैत-नपैत तँ सौंसे गामक खेत जनै छी जे कोन कोला केतेक अछि। नपैक जरूरतो नइ अछि। मुँहजुआनीए कहि देब जे कोन कोला केते अछि। खाली एक गोरे कागतपर लिखि लिअ जे केकरा केते खेत देबइ। हमरा कहैत जाएब, हम कोला फुटबैत जाएब। एकटा पण्डीजी बड़ बढ़ियाँ नाओं कहने रहथिन मुदा मन नइ अछि, जे ओ तीनियेँ डेगमे दुनियाकें नापि नेने रहैथ। तहिना हमहूँ तीन डेगक लग्गी बना, एक गामक कोन बात जे परोपट्टाक जमीन नापि देब।”

बिलटाक बात सुनि रमाकान्त बजला-

“बड़ बढ़ियाँ, बड़ बढ़ियाँ।”

सभ कियो उठि-उठि विदा भेला।

बेर झूकिते सौंसे गामक स्त्रीगण, ढेरबा बचिया, छोटका-छोटका ढेन-बकेन चिकनी माटिक खोभार दिस विदा भेल। सबहक हाथमे खुरपी-पथिया..!

सभकें हाथमे खुरपी पथिया नेने जाइत देख श्रीचन मने-मन सोचए लगल जे एना किए लोक कऽ रहल अछि, दसमियो तँ अखन नै एलै हेन! कोनो पावैनो-तिहार नहियेँ छिऐ! तहन स्त्रीगणमे एना उजैहिया किए उठि गेल? कोन बुढ़िया-जादू तरे-तर गाममे पसैर गेल जे मरद बुझबे ने केलक आ मौगी सभ बुझि गेल? अनकर कोन अपनो घरवाली रमकल जाइए..!

जेते श्रीचन सोचैत ओते ओझरीए लगल जाइत। तत्-मत् करैत रूदल ऐठाम विदा भेल। घरो लगेमे। श्रीचने जकाँ रूदलो छगुन्तामे पड़ल रहए मुदा श्रीचनकें देखते पुछि देलकै-

“आँइ हौ श्रीचन भाय, मौगी सभकें कथीक रमकी चढ़लै जे एते रौदमे माटि आनैले जाइ जाइए?”

रूदलक बात सुनि श्रीचन आरो छगुन्तामे पड़ि गेल। मनमे एलै जे हम गामपर नै छेलौं तँए नइ बुझलिऐ। मगर ई तँ गामेपर रहए। किए ने बुझलक? फेर सोचलक जे जखन घरवाली माटि लऽ कऽ औत तँ पुछि लेबइ। मन असथिर भेलइ। मुदा रूदलक मुँहक रंगसँ बुझि पड़ै जे केते भारी काज स्त्री बिना पुछिनहि कऽ लेलकै..!

भीतरसँ खुश मुदा ऊपरसँ गम्भीर होइत श्रीचन रूदलकें कहलक-

“आँइ हौ रूदल भाय, तोरा भनसियासँ मिलान नै रहै छह जे बिन पुछनहि चलि गेलखुन?”

श्रीचनक मनक बात नइ बुझि खिसिया कऽ रूदल बाजल-

“की कहियह भाय, मौगीपर बिसबास नइ करी। जखन अपन काज रहतै तँ हँसि-हँसि बजतह मुदा जखन तोरा कोनो काज हेतह तँ कहतह जे माथ दुखाइए!”

मुँह दाबि श्रीचन मने-मन खूब हँसैत मुदा रूदल तामसे भेर भेल जाइत।

विदा होइत श्रीचन बाजल-

“जाइ छिअ भाय। मौगी सबहक किरदानी देख हमरा किछु फुरबे ने करैए।”

सह पाबि रूदल गरैज उठल-

“बड़ बुधियार मौगी सभ भऽ गेल। जब एतेक बुधियार अछि तँ चलए तँ हमरा संगे कोदारि पाड़ैले, तखन बुझबै!”

थोड़े दूर आगू बढ़ि श्रीचन रूकि कऽ बाजल-

“भाय की करबहक, आब मौगीए सबहक राज भेलइ।”

“हमरा कोन राज-पाटसँ मतलब अछि, हर जोतै छी, कोदारि पाड़ै छी, तीन सेर कमा कऽ अनै छी, खाइ छी। एते दिन पुरुखे चोर होइ छेलए, मुदा आब मौगियो चोरनी हएत। भने जहल जाएत आ पुलिसबासँ यारी लगौत!”

श्रीचन बढ़ि गेल मुदा रूदल अपन दुनू हाथ माथपर लेने सोचिते रहल।

सभ कियो माटि आनि-आनि अपन-अपन अँगनाक माटिक ढेरीपर रखलैन। घामे-पसीने सभ जनानी तर-बत्तर। कनी काल सुसतेला पछाइत दिआरी बनबैले मुंगरी, लोढ़ीसँ माटि फोड़ए लगल। मेहीसँ माटि फोड़ि, इनार-कलसँ अछींजल भरि-भरि आनि माटिमे दऽ

सानए लगल, सुखल माटिमे पानि पड़िते सोन्हगर सुगन्ध सौंसे गाममे पसैर गेल। गामक हवे बदैल गेल। जहिना साँझू पहरमे सिंगहार-रातिरानी फूलसँ वातावरण महमहा उठैत तहिना माटि-पानिसँ जन्मल सुगन्ध गामकें महमहा देलक।

माटि सानि, छोट-छोट दिआरी सभ बनबए लगल। दिआरी बना, पुरान साफ सूती वस्त्रकें फाड़ि-फाड़ि दहिना हाथक तरहत्थीसँ जाँघपर रगैड़-रगैड़ टेमी बनौलक। टेमी बना दिआरीमे करुतेल दऽ टेमी सजौलक। दिआरी सजा कियो फुलडालीमे तँ कियो चङेरीमे, तँ कियो छिपलीमे, तँ कियो केरा पातपर रखलक। दिआरी रखि सभ नहाएल, अजीव दृश्य! नव उत्सव! नव जिज्ञासा! नव आशा सबहक मनमे।

सुरूज डुमबो नै कएल मुदा निच्चाँ जरूर उतैर गेल छल, गाछो सभ परहक रौद बिला गेल छल, सभ अपन-अपन गोसाँइ घर जा सिरा आगूमे दिआरी नेसलक, दिआरी नेस एकटँगा दऽ आराधना करए लगल जे आएल लक्ष्मी पुनः पड़ाए नहि। गोसाँइकें गोड़ लागि सभ गामक देव स्थान दिस विदा भेल। अपन-अपन आँगनमे तँ सभ असगरे-असगर छल मुदा आँगनसँ निकैलते, माने देवस्थान दिस विदा होइते, संगबे सभ भेटए लगलै। संगबे मिलते सभ कियो जइ स्थान दिस जाइत रहए ओइ देवताक गीत गाबए लगल। सौंसे गामक सभ रस्तामे एक नहि अनेक समूह गीत गबैत मगनसँ देवस्थान पहुँचै गेल। सबहक मनमे जमीनक खुशी तँए सभ देवतोकें मुस्कियाइत देखैत। सबहक मनमे नचैत जे एकसँ एक्कैस हुअए...।

खेत पाबि गामक सभ गरीब-गुरबाक मनमे दिआरीक इजोत जकाँ आशाक दीप बरए लगलैन। हजारो बर्खसँ पछुआएल गरीबीमे एकाएक आड़ि पड़ि गेल। सभ कियो नव-नव योजना मनमे बनबए

लगला। जइसँ जिनगी दुखक बेड़ीकेँ टपि सुखक सीमामे पएर रखलक। नव जिनगी जीबैक उत्कंठा सबहक मनमे जागि गेल।

◌

शब्द संख्या : 2478

एगारह

खेत भेटलासँ भजुआ-परिवारक सभ समांगक विचारो बदलल। नबो बापूत बैस विचार करैत रहए जे जहिना रमाकान्त काका हमरा सभकेँ रखि लेलैन तहिना हमहूँ सभ समाजक एक अंग बनि कऽ रहब। सभसँ पहिने रमाकान्त काका, सुबुध, शशि शेखर आ मास्टर साहैबकेँ अपना ऐठाम भोजन करेबैन। मुदा अखन धरिक जे हमरा सबहक चालि-ढालि रहल अछि, ओकरा तँ अपने बदलए पड़त। अँगना-घर आ दुआर-दरबज्जाक जे छिछा-बिछा अछि से नीक लोकक बैसै-जोकर नइ अछि। सभ दिन अपना सभ एहनेमे रहलौं तँए रहै छी मुदा नीक लोक एहेन जगहमे केना औता। देखिये कऽ मन भटैक जेतैन, तँए पहिने सभ समांग भोरेसँ दुआर-दरबज्जा आ अँगना-घरकेँ चिक्कन-चुनमुन बनाबह। मरदो आ मौगियो जे भदौस जकाँ नुआ-बस्तर बनौने रहै छी, ओकरो बदलह। जखन अपन काज करै छी तखन जँ फटलो-पुरान आ मैलो-कुचैल कपड़ा पहिरै छी तँ बड़ बढ़ियाँ। मुदा जखन किनको नौत दऽ कऽ खाएले बजेबैन तखन एहेन बगए-बानिसँ काज नइ चलत।

भजुआक जेठ बेटाक सासुर दरभंगा बेला मोड़पर अछि। जखन ओ सासुर जाइत आ ओइठामक रहल-सहन, बात-विचार देखैत तँ मन जरूर आगू-मुहेँ बढ़ैक कोशिश करै मुदा गामक जे

गरीबीक अवस्था छै ओ सभ विचारकेँ दाबि दइ छेलइ। मुदा तैयो दरभंगाक देखल परिवार नजैरमे तँ रहबे करइ। भजुआक जेठ बेटा–झोलिया, सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ अछि। तँए सभ भाँइ झोलियाक बात मानैए। झोलिया बाजल-

“सातो भाँइक बीच रमाकान्त बाबा सात बीघा जमीन देलखुन। पाइ तँ एक्कोटा ने लेलखुन। दुनियाँमे केकरा के एना दइ छइ। जँए हुनका मनमे हमरो सबहक प्रति दया एलैन तँए ने। तहिना हमहूँ सभ हुनका ओते पैघ बुझि आदर करबैन। गाममे भाड़ापर कुरसी, समेना, शतरंजी, जाजीम, सिरमा सभ भेटैए। जहिना बरियाती-ले लोक भोजनसँ लऽ कऽ रहै तकक, सभ बेवस्था करैए तहिना हमहूँ सभ करब।”

झोलियाक विचार सुनि छबो भैंयो आ बापो-पित्ती, सभ कियो मुड़ी डोला समर्थन कऽ देलक। झोलिया फेर बाजल-

“बाउ, तूँ रमाकान्त बाबा ऐठाम चलि जैहह। हुनका चारू गोरेकेँ नतो दऽ दिहौन आ संगे-संग बजेनौं अबिहौन। दू भाँइ भाड़ापर सभ समान आनि जोगार करिहह। दू समांग बजारसँ खाइक सभ समान कीनि अनिहह। सभ सभ काजमे भोरेसँ लगि जैहह।”

दलानपर बैस रमाकान्त आ हीरानन्द चाहो पीबैत रहैथ आ गामेक गपो-सप्प करैत रहैथ। गामक गप-सप्प करैत रमाकान्तक नजैर बौएलाल आ सुमित्रापर गेलैन। गिलास रखि रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

“महेन्द्र बौआ कहने रहैथ जे छअ मास सिखा-पढ़ा दुनू गोरेकेँ पठा देब मुदा अखन धरि किएक ने आएल..?”

हीरानन्द बजला-

“कोनो कारण भेल हेतै तँए ने अखन धरि नै आएल। ओना,

चिकित्सा कठिन विद्या छी। सुढ़िआइमे तँ किछु समए लगबे करतै।”

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रहैथ आकि भजुआ आबि रमाकान्तकेँ गोड़ लगलकैन, रमाकान्तकेँ गोड़ लागि हीरानन्दोकेँ लगलकैन। हीरानन्दकेँ गोड़ लगिते ओ असिरवाद दैत पुछलखिन-

“भजू भाय, नीके रहै छह किने?”

“हँ मास्टर बौआ! हमरा तँ गामसँ भागैक नौबत आबि गेल छेलए!”

रमाकान्त दिस देख-

“मुदा, काका नै भागए देलैन।”

हलचलाइत रमाकान्त पुछलखिन-

“से की, से की?”

गाममे बसैक खिस्सा भजुआ कहए लगलैन-

“ऐ गाममे पहिने हम्मर जाति नै रहए। मुदा डोमक काज तँ सभ गाममे जन्मसँ मरन धरि रहै छइ। हमरा पुरखाक घर गोनबा रहइ। पूभरसँ कोसी अबैत-अबैत गोनबो लग चलि आएल। अखार चढ़िते कोसी फुलेलै। पहिलुके उझूममे तेहेन बाढ़ि चलि आएल जे बाधक कोन गप जे घरो सभमे पानि ढुकि गेल। तीन दिन तक ने माल-जाल घरसँ बहराएल आ ने लोके। पीह-पाह करैत सभ समए बितौलक। मगर पहिलुका बाढ़ि रहै, तेसरे दिन सटैक गेल। हम्मर बाबा दुइए परानी। ताबे हम्मर बाउ नै जन्मल रहइ। बाढ़िक पानि सटैकते दुनू गोरे दसोटा सुगर आ घरक समान लऽ गामसँ विदा भऽ गेल। जखन गामसँ विदा भेल तँ दादी बाबाकेँ कहलकै, अनतए केतए जाएब। हमरो माए-बाप जीबते अछि, ओतै चलू। बबो मानि गेल। दुनू परानी अही गाम देने जाइत रहइ। गाममे अबिते सुगरकेँ चरैले छोड़ि देलकै

आ अपने दुनू परानी सुसतए लगल। ऐ गाममे डोम नै तँए गामक बेदरा-बुदरी सभ सुगर देखैले जमा भऽ गेल। गामोमे हल्ला भऽ गेलइ। गामक बाबू-भैया सभ आबि हमरा बाबाकेँ कहलकै जे अही गाममे रहि जा। हमर बाबा रहि गेल। गामक कातमे एकटा परती रहइ। ओही परतीपर सभ बाबू-भैया एकटा घर बना देलकै। ओइ दिनमे परती नमहर रहइ। मगर चारू भाग जोता खेत रहइ। चारू भागक खेतबला सभ परतीकेँ छाँटि-छाँटि खेतमे पियाबैत गेल। परती छोट होइत गेलइ। रहैत-रहैत घर-अँगना आ खोबहारे भरि रहलै। मगर तैयो दिक्कत नै होइ। हमर बाउओ भैयारीमे असगरे। मुदा हम दू भाँइ भेलौं। जखन दुनू भाँइ भीन भेलौं तँ घराड़ियो बँटा गेल आ गिरहतो। मुदा तैयो गुजरमे दिक्कत नै हुअए। अखन दुनू भाँइक बीच सातटा बेटा अछि। चारिटा हमरा आ तीनटा भाएकेँ। गुजर तँ कमा कऽ सभ कऽ लइए मुदा घरक दुख तँ सभकेँ होइते छइ।”

भजुआक खिस्सा सुनि रमाकान्त बजला-

“आब तँ बहुत खेत भेलह?”

“हँ काका, केते पीढ़ी आनन्दसँ रहब! अखन घर तँ नहि बन्हलौं मुदा खेती केनाइ शुरू कऽ देलिऐ।”

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

“सबेरे-सबेरे केमहर चललह, भज्जु भाय?”

भजुआ-

“रातिमे सभ समांग विचारलक जे जहिना रमाकान्त काका सभकेँ समाजक अंग बना खेत देलैन तहिना हमहूँ सभ हुनका नौत दऽ कऽ खुऐबो करबैन आ धोती पहिरा विदाइयो करबैन। सहए नौत दइले एलौं हेन?”

नौतक नाओं सुनिते रमाकान्त कहलखिन-

“कहियाक नौत दइ छह? ईहो तीनू गोरे -सुबुध, शशि आ हीरानन्द- जेथुन। हिनको सभकेँ कहि दहुन।”

“हँ काका, अहींटा केँ थोड़े लऽ जाएब। हिनको सभकेँ लऽ जेबैन। ऐठाम तँ अहीं दू गोरे छी। शशि भाय आ सुबुध भाय नै छैथ। ताबे अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ, हम ओहू दुनू गोरेकेँ बजौने अबै छिऐन।”

हीरानन्द-

“औझुके नौत दइ छह?”

“हँ, मास्टर साहैब!”

रमाकान्त बजला-

“बड़ बढ़ियाँ! शशि तँ पोखैर दिस गेलखुन, अबिते हेथुन। ताबे सुबुधकेँ कहि अबहुन।”

भजुआ सुबुध ऐठाम विदा भेल। चाह पीब सुबुध दुनू बच्चाकेँ पढ़बै छला। भजुआकेँ देखते पुछि देलखिन-

“भज्जु भाय, केमहर-केमहर?”

प्रणाम करैत भजुआ कहलकैन-

“भाय, अहीं ऐठाम ऐलौं हेन। रमाकान्तो काकाकेँ कहि देलिऐन आ अहूँकेँ कहैले एलौं हेन।”

“की कहैले एलह?”

“नौत दइले एलौं।”

“कोन काज छिअ?”

“काज-ताज नइ कोनो छी। ओहिना अहाँ चारू गोरेकेँ खुअबैक विचार भेल।”

भजुआक बात सुनि सुबुधक मनमे द्वन्द्व उत्पन भऽ गेलैन। मनमे प्रश्न उठलैन, भजुओ तँ अही समाजक अंग छी। जहिना शरीरमे नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला अंग अछि, जइसँ शरीरक क्रिया चलैए तहिना तँ समाजोमे अछि। मुदा शरीर आ समाजकेँ तँ एक नै मानल जाएत। समाजकेँ जाति आ सम्प्रदाय ऐ रूपे पकैड़ नेने अछि जे सभ सभसँ ऊपरो अछि आ निच्चो अछि। एक दिस धर्मक नाओंपर सभ हिन्दू छी मुदा रंग-बिरंगक जाति भीतरमे अछि! एक जाति दोसर जातिक ने छूअल खाइए आ ने कथा-कुटमैती करैए! तेतबे नहि, हिन्दूक जे देवी-देवता छैथ ओहो बँटाएल छैथ! जइ देवी-देवताकेँ एक जाति मानैए! दोसर नै मानैए। जँ मानितो अछि तँ ने हुनकर पूजा करैए आ ने परसाद खाइए! भरिसक हृदैसँ प्रणामो नहियेँ करैए। देवतोकेँ मने-मन अछोप, शूद्र इत्यादि बुझै छैथ! जँ ई प्रश्न हल्लुक-फल्लुक रहैत तँ कोनो बात नहि, मुदा अछि तँ प्रश्न जड़ियाएल! एहेन ने हुअए जे नान्हिटा प्रश्नक चलैत समाजमे विस्फोट भऽ जाए। समाजक लोक ऐ दुनू प्रश्नक बीच तेना ने बन्हाएल अछि, जे जिनगीक सभसँ पैघ वस्तु एकरे बुझै छैथ। जहन कि, छी नहि। मुस्कियाइत सुबुध भजुआकेँ कहलखिन-

“ताबे तूँ रमाकान्त काका ऐठाम बढ़ह, हम नहेने अबै छी।”

भजुआ विदा भेल। मुदा सुबुध मने-मन सोचिते रहला जे की कएल जाए। तर्क-वितर्क करैत सुबुधक मन धीरे-धीरे सक्कत हुअ लगलैन। अन्तमे ऐ निष्कर्षपर पहुँच गेला जे जाधैर ऐ सभ छोट-छीन बातकेँ कड़ाइसँ पालन नै कएल जाएत ताधैर समाज आगू-मुहेँ नै ससरत। समाजकेँ पछुआइक ईहो मुख्य करण छी! तँए एकरा जेते जल्दी हुअए तोड़ि देनाइ उचित हएत। ई बात मनमे अबिते सुबुध नहाइले गेला। नहा कऽ कपड़ा पहिर रमाकान्त ऐठाम विदा भेला। जाबे सुबुध रमाकान्त ऐठाम पहुँचैथ ताबे रमाकान्त शशि शेखर आ

हीरानन्द नहा कऽ कपड़ा पहिर तैयार रहैथ। सुबुधकेँ पहुँचते हीरानन्द बजला-

“सुबुधो भाय आबिए गेला। आब अनेरे बिलम करब उचित नहि।”

सुबुध बैसबो नै केला। सभ कियो विदा भऽ गेला। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू सभ। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्द भज्जुकेँ पुछलखिन-

“कथी सबहक खेती केलह हेन भज्जु?”

मजबूरीक स्वरमे भज्जु कहए लगलैन-

“भाय, अपना बरद नइ अछि। कोदाइरो ने छेलए मुदा छौड़ा सभ जोर केलक आ दस गो कोदारि कीनि अनलक। सभ बापूत भोरे सुति कऽ उठै छेलौं आ खेत तामए चलि जाइ छेलौं। पनरह दिनमे सभ खेत तामि लेलौं। बड़ बढ़ियाँ जजाति सभ अछि। ऐ बेर हएत तँ बरदो कीनि लेब।”

“जखन खेत भेलह तँ बरद किए ने कीनि लेलह?”

“एक्केटा दिक्कत नै ने अछि। बरद कीनितौं तँ बान्हितौं केतए? खाइले की दैतिऐ? जँ सभ काज–बरद कीनिनाइ, घर बनौनाइ, खाइक जोगार केनाइ–एक्के बेर शुरू करितौं तँ ओते काज पार केना लगैत? तँए एका-एकी सभ काज करब!”

“बड़ सुन्दर विचार केलह!”

गप-सप्प करैत सभ कियो भजुआ ऐठाम पहुँचला। घरक आगूमे दू कट्ठा जमीन। ओइमे समियाना टँगने। एक भाग कुरसी लगौने। दोसर भाग शतरंजी, जाजीम, तकिया लगौने। मरदसँ मौगी धरि, भजुआक सभ समांग नहा कऽ नवका वस्त्र पहिरने। जहिना

केतौ बरियातीक बेवस्था होइ छइ। तहिना बेवस्था केने।

बेवस्था देख चारू गोरे रमाकान्त क्षुब्ध भऽ गेला। किनको बुझिए ने पड़ैन जे डोमक घर छिऐ। चारू गोरे चारू कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसते भजुआक एकटा बेटा शरबत अनलक। सभसँ पहिने रमाकान्त दू गिलास शरबत पीब ढकार करैत बजला-

“आब पान खुआबह।”

शरबत बँटाइते छल कि बिच्चेमे भजुआक पोती चाह नेने आबि गेली। हाँइ-हाँइ कऽ शशि शेखर शरबत पीलैन। स्टीलबला कपमे चाह। शुद्ध दूधक बनल। ने अधिक मीठ आ ने फिक्का। चाहक रंगो तेहने। तैपर कॉफी चक-चक करैत। चाह पीबैत-पीबैत रमाकान्तक पेट अफैर गेल। भरियाएल पेट बुझि रमाकान्त बजला-

“ई तीनू गोरे कुरसीपर बैसता, हम ओछाइनेपर पड़ब।”

कहि उठि कऽ ओछाइनपर जा रमाकान्त पड़ि रहला। पान आएल। सभ कियो पान खेलैन। मुँहमे पान सठबो नै कएल छेलैन आकि जलखै करैक आग्रह भजुआ केलकैन।

भजुआक आग्रह सुनि रमाकान्त कहलखिन-

“हम ओछाइनेपर खाएब। हुनका सभकेँ टेबुलपर दहुन, मुदा कनी कालक बाद।”

भजुआक सभ समांग दासो-दास। जखनसँ चारू गोरे एला तखनसँ भजुआक परिवारमे नव उत्साहक लहैर उमरल। की मरद की स्त्रीगण सभ उत्साहित। ..जे स्त्रीगण सदिखन झगड़ेमे ओझराएल रहै छल, सबहक मुँहमे हँसी छिटकैत। मनुखे ऐ दुनियाँक सभसँ पैघ कर्ता-धर्ता छी किने। ई विचार सबहक मनमे नाचए लगलैन।

भजुआक पोती, जेकर मात्रिक दरभंगा छिऐ आ ओतै बेसी

काल रहबो करैए, हाइ स्कूलमे पढ़बो करैए, ओकर संस्कार आ काज करैक ढंग देख सुबुध आ हीरानन्द, दुनू गोरे आँखिए-क इशारामे गप करए लगला। आँखिए-क इशारामे सुबुध हीरानन्दकेँ कहलखिन-

“जँ मनुखकेँ नीक वातावरण भेटै तँ ओ किछु कऽ सकैए, चाहे ओकर जन्म केहनो गिरल परिवारमे किएक ने भेल होइ।”

सुबुधक बात सुनि हीरानन्द कहलखिन-

“ई सभ ढोंग छी जे लोक कहैए जे पूर्व जन्मक कर्मक फल लोक ऐ जन्ममे पबैए। हँ, जँ एकरा ऐ रूपे मानल जाए जे ऐ जन्मक पूर्व पक्षपर पछातिक जिनगी निर्भर करैए तँ एक-तरहक विचार हएत। देखियौ जे यएह बचिया, भजुआक पोती कुशेसरी केते बेवहारिक अछि। अही परिवारमे तँ एकरो जन्म भेल छै मुदा अगुआएल इलाका आ अगुआएल परिवारमे रहने केते अगुआएल अछि। की पैघ घरक बेटीसँ कम अछि?”

चूड़ा, दही, चिन्नी, केरा, अचार, डलना तरकारीक संग पाँचटा मिठाइ सेहो जलखैमे आएल। चारू गोरे भरि मन खेलैन। खेला पछाइत अस-बीस करए लगला। हाथ धोइ कऽ रमाकान्त बिछानेपर ओंघरा गेला। मुदा गप-सप्प करै दुआरे सुबुधो आ हीरानन्दो कुरसीएपर बैसल रहला। सभ समांग भज्जुओ जलखै कऽ सरियाती जकाँ बैसल। ..सुबुध पुछलखिन-

“जखन एते समांग छह तखन माल-जाल किए ने पोसने छह?”

नबो समांगमे झोलिया सभसँ होशगर। अपनो सभ समांग झोलियाकेँ गारजन बुझैत। सुबुधक सबालक उत्तर झोलिया दैत बाजल-

“मास्सैब, अखन धरि हमरा सबहक परिवारमे सुगर पोसल जाइत रहल अछि। मुदा सुगर सिरिफ खाइक जानवर छी। आन काज

तँ ओकरासँ होइ नइ छइ। ने हर जोतल जाइ छै आ ने दूध होइ छइ। छोट जानवरक दुआरे गाड़ियो नहियेँ जोतल जेतइ। जेकरा नूनो-रोटी नै भेटै छै ओ मौसु केतए-सँ खाएत। तैयो हम सभ पोसै छी। अपन पोसल रहैए तँए पावैन-तिहारमे कहियो काल खाइयो लइ छी। खेनिहारक कमी दुआरे नेपाल जा-जा बेचै छेलौं। नेपालमे अपना ऐठामसँ बेसी लोक खाइए। किएक तँ सुगरक मौसु खस्सी-बकरीसँ बेसी गरम होइ छइ। अपना ऐठामक मौसम सेहो गरम अछि। सुगर मुख्यतः ठंढ इलाकाक खेनाइ छी। मुदा तैयो सुग्गरे पोसै छेलौं, किएक तँ गाए-महींस जँ पोसबो करितौं तँ हमरा सबहक दूध के कीनैत?”

झोलियाक बात सुनि सुबुध पुछलखिन-

“सेहो तँ नै देखै छिअ?”

झोलिया-

“पहिने जेरक-जेर सुगर रहै छेलए। पोसैयोमे असान होइ छेलए। एक्के गोरेकेँ बरदेलासँ साए-पचास सुगर पला जाइ छल। भोरे किछु खा कऽ सुगरकेँ खोबहारीसँ निकालि चरबैले चलि जाइ छेलौं। घरपर खुअबै-पिअबैक कोनो जरूरते नहि। साल भरि पोसै छेलौं आ सालमे एक बेर नेपाल लऽ जा बेच लइ छेलौं। पौँरुकाँ साल डेढ़ साए सुगर लऽ कऽ बाउओ आ कक्को नेपाल गेल। ओइठिन एकटा मंगलक हाट लगै छइ। जइ हाटमे सभसँ बेसी सुगर बीकै छइ। बड़का-बड़का पैकार सभ ओइ हाटमे रहैए। हाटक एक भागमे हमरो सुगर छल। एक भाग बाउ बैसल आ दोसर भाग काका। एकटा पैकार पान-सात गोरेक संग आएल। दाम-दीगर हुअ लगलै। दाम पटि गेलइ। सभ सुगरक गिनती करि कऽ, एकटा पैकार रहल आ बाँकी गोरे सुगर हाँकि कऽ विदा भेल। ओ पैकार हमरा बाउओ आ कक्कोकेँ कहलक जे चलू पहिने किछु खा-पी लिअ। हमरो बड़ भूख लगल अछि। एकटा

दोकानमे तीनू गोरे गेल। जलखै करए लगल। जलखैमे किछु मिला देने छेलइ। खाइते-खाइते दुनू गोरेकेँ निशाँ लगि गेलइ। लटुआ कऽ दुनू गोरे दोकानेमे खसि पड़ल। तैबीच की भेलै से बुझबे ने केलक। दोसर दिन नीन टुटलै तँ ने ओ पैकार आ ने दोकान। किएक तँ दोकान हाटे-हाटे लगैत रहइ। दुनू भाँइ कानैत-खिजैत विदा भेल। ने संगमे एकोटा पाइ आ ने खाइक कोनो वस्तु। भूखे लहालोठ होइत, कहुना-कहुना कऽ डगमारा आएल। डगमारा अबैत-अबैत दुनू भाँइ बेहोश भऽ गेल। डगमारामे हम्मर एकटा कुटुम अछि। दुनू भाँइक दशा देख ओ कुटुम गुम्म भऽ गेला। किछु फुरबे नै करैन। बड़ी कालक पछाइत दुनू भाँइकेँ होश भेलइ। होश अबिते दुनू भाँइ पानि पीलक, जखन कनी मन नीक भेलै तँ नहाएल। नहा कऽ खेलक। खा कऽ सूतल। सुति कऽ उठला बाद आरो मन नीक भेलइ। दू दिन औतै रहल। तेसर दिन गाम आएल। ओइ दिनसँ सुगर उपैट गेल।”

सुबुध-

“अपना घरमे रूपैआ-पैसा नै छह?”

झोलिया-

“थोड़बे रूपैआ अछि जे बाबा बाउकेँ देने रहै आ कहने रहै जे जब हम मरब तँ ऐ रूपैआसँ भोज करिहें। रूपैआ गनल नइ अछि। बाँसक चोंगामे, सुगरक खोबहारीमे राखल अछि।”

हलचला कऽ रमाकान्त कहलखिन-

“नेने आबह तँ। देखिऐ केते रूपैआ छह?”

सातो चोंगा भजुआ सुगरक खोबहारीसँ निकालि रमाकान्तक आगूमे रखि देलकैन। फोंकगरहा बाँसक पोरक चोंगा, एक भाग गिरहेसँ बन्न आ दोसर भागमे कसि कऽ लत्ता कोंचने। सातो चोंगाक लत्ता निकालि रमाकान्त आगूमे रूपैआ निकालि-निकालि रखलैन।

एकटा रूपैआ उठा रमाकान्त निंगहारि कऽ देखलैन तँ चानीक रूपैआ रहए। रूपैआक ढेरीपर सभ अपन-अपन आँखि जे जेत्तै रहैथ से तेत्तैसँ गड़ौने। रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्सैब, ऐ रूपैआकेँ गनियौ तँ।"

कुरसीपर सँ उठि हीरानन्द रूपैआ लग आबि गनए लगला। सातो चोंगामे सात साए चानीक रूपैआ। सात साए चानीक टाका सुनि सुबुध मने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे एक रूपैआक कीमत पचहत्तैर रूपैआ होइए। एक साएसँ पचहत्तैर साए भेल। सात साएसँ बाबन हजार पाँच साए हएत। अगर एक जोड़ बरद किनत तँ पाँच हजार लगतै। एकटा बोरिंग-दमकल लेत तँ पनरह हजारमे भऽ जेतइ। जँ तीन नम्बर ईंटा लऽ ओकरा गिलेबापर जोड़ि, ऊपरमे एसबेस्टस दऽ कऽ सात कोठरीक घर बनौत तँ पच्चीस-तीस हजारमे भऽ जेतइ। अपनो सभ समांग कमाइते अछि आ सात बीघा खेतोक उपजा हेतइ। साले भरिमे बढ़ियाँ किसान-परिवार बनि जाएत। जे अछैते पूजीए लल्ल अछि! सभ कथूक दिक्कत छै..!

विचित्र स्थिति सुबुधक मनमे उठि गेलैन। एक नजैरसँ देखैथ तँ खुशहाल परिवार बुझि पड़ैन आ दोसर दिस देखैथ तँ ने रहैले घर आ ने खाइ-पीबैक समुचित उपाय..!

मुदा एकटा गुण भजुआक परिवारमे सुबुध जरूर देखलैन, आन गामक डोम जकाँ ताड़ी-दारूक चलैन परिवारमे नइ छइ। सिरिफ बुझैक आ बुझबैक जरूरत परिवारमे छइ।

नमहर साँस छोड़ैत सुबुध भजुओ आ भजुआक सभ समांगोकेँ कहए लगलखिन-

"भजु भाय, हम सभ समाजकेँ हँसैत देखए चाहै छी, कनैत नहि। तँए केकरो अधला होइ से नै सोचै छी। सबहक नीक होइ,

सबहक परिवार हँसी-खुशीसँ चलैत रहइ। सबहक बेटा-बेटीकेँ पढ़ै-लिखै आ रहैक नीक घर होइ, दबाइ-दारू दुआरे कियो मरए नहि, तँए हम कहब जे ऐ रूपैआकेँ रस्तासँ खरच करू। ओना, बाबू श्राद्धक भोज-ले कहने छैथ, सेहो थोड़-थाड़ कऽ लेब, जँ एते दिन नै केलौं तँ किछु दिन आरो टारू। पहिने घर, बरद आ बोरिंगमे खरच करू तखन जे उपजा बाड़ी हएत तँ भोजो कए लेब।"

सुबुधक विचारक समर्थन करैत रमाकान्त कहलखिन-

"बड़ सुन्दर विचार सुबुध देलखुन भज्जु। जिनगीकेँ बुझह जे जिनगी केकरा कहै छै आ केना बनतै। से जाधैर नै सिखबह ताधैर अहिना वौआइत रहि जेबह।"

भजुआ तँ चुप्पे रहल मुदा झोलिया टपाक-दे बाजल-

"बाबा जे कहलैन ओ गिरह बान्हि लेलौं। अहाँ सभ हमरो छोट भाए बुझू। जाबे हमर परिवार रहत आ हम सभ रहब, ताबे अहाँ सबहक संगे-संग चलैत रहब।"

झोलियाक विचार सुनि हीरानन्द खुशीसँ झूमि उठला। हँसैत बजला-

"भज्जु भाय, अहाँ तँ आब बुढ़ भेलौं तँए नवका काज दिस नजैर नहियोँ जाएत मुदा बेटा-भातीज सभ जुआन अछि, नव काज दिस बढ़ए दियौ। जाधैर लोक समैक हिसाबसँ नव काज दिस नहि बढ़त ताधैर समैक संग नै चलि पौत। नहि तँ बाढ़िक पानि जकाँ समए आगू बढ़ैत जाएत आ खढ़-पात जकाँ मनुख आरा लगल रहत। तँए समैकेँ पकैड़ कऽ चलैक कोशिश करू। आब अपनो सभ भाँइ मिला कऽ सात बीघा खेत भेल। सात बीघा खेतबला बढ़ियाँ गिरहस्त तखने बनि सकैए जखन कि खेती करैक सभ जोगार कऽ लिअए। पानिक बिना जजाति नै उपैज सकैए। तहिना बरदोक जरूरी अछि। खेतक

महत तँ तखने हएत जखन कि ओकरा उपजबैक सभ जोगार कऽ लेब। बहुत रास रूपैआ अछि, ऐ रूपैआक उपयोग जिनगी-ले करू।"

गप-सप्प चलिते छल कि हहाएल-फुहाएल डाक्टर महेन्द्र आ बौएलाल पहुँच गेला।

महंथ जकाँ रमाकान्त ओछाइनपर पँजरा तरमे सिरमा देने पड़ल छला। महेन्द्रकेँ देखते सभ अचम्भित भऽ गेला। महेन्द्र आ बौएलाल सोझे रमाकान्त लग पहुँच गोड़ लगलकैन। महेन्द्रकेँ असिरवाद दैत रमाकान्त बजला-

"ऐठाम किएक एलह। कनीए कालक पछाइत तँ हमहूँ सभ ऐबे करितौं। गाड़ीक झमारल छह, पहिने नहैतह-खैतह अराम करितह। हम कि केतौ पड़ाएल जाइ छेलौं जे भेँट नै होइतियह"

महेन्द्र डाक्टरक नजैरसँ चुपचाप पिताकेँ देखै छला। पिताकेँ देख मने-मन अपशोच करए लगला जे गलत समाचार पहुँचल। मुदा किछु बजला नहि। तैबीच महेन्द्र आ बौएलाल दिस इशारा करैत भजुआ झोलियाकेँ कहलक-

"बौआ, पहिने दुनू गोरेकेँ खुआबह।"

महेन्द्रो आ बौएलालोकेँ खुअबैक ओरियान झोलिया करए लगल। ओरियान तँ रहबे करइ। लगले परैस दुनू गोरेकेँ खुऔलैन। दुनू गोरे खा कऽ घर दिस विदा भेला। पाछूसँ कुशेसरी महेन्द्रकेँ सोर पाड़ि कहलकैन-

"चाचाजी, पान-सुपारी लऽ लिअ।"

कुशेसरीक आग्रह सुनि दुनू गोरे रस्तेपर ठाढ़ भऽ गेला। झटैक कऽ कुशेसरी, तस्तरीमे पान-सुपारी नेने, लगमे पहुँचल। लगमे पहुँच अपना हाथे पान सुपारी नै दऽ तस्तरीए महेन्द्रक आगूमे बढ़ौलकैन। पान सुपारी देख महेन्द्र बजला-

"बुच्ची, हम तँ पान नै खाइ छी। अगर घरमे इलायची आ सिगरेट हुअ तँ नेने आबह।"

कुशेसरी चोट्टे घुमि कऽ आँगन आएल। आँगन आबि सिगरेटक पौकेट, सलाइ आ इलायची नेने पहुँचल। उत्तर-मुहेँ घुमि महेन्द्र ओरिया कऽ सिगरेट लगौलैन जे कहीं पिताजी ने देख लैथ। दुनू गोरे गप-सप्प करैत विदा भेला। कुशेसरीकेँ देख महेन्द्र अचम्भित नै भेला। किएक तँ मिथिलाक गाम-ले कुशेसरी अचम्भित लड़की भऽ सकै छेली मुदा मद्रास-ले नहि। पछुआएल जातिमे कुशेसरी सन-सन ढेरो लड़की अछि।

महेन्द्रकेँ गामसँ एकटा गुमनाम पत्र गेल रहैन। ओइमे लिखल छेलै जे पिताजी बताह भऽ गेला! अन्ट-सन्ट काज गाममे कऽ रहल छैथ! तँए समए रहैत हुनका इलाज नइ करेबैन तँ निच्छछ पागल भऽ जेता..!

पत्र पढ़िते महेन्द्र घर अबैक विचार केलैन। भाए रविन्द्रसँ विचारि लेब जरूरी बुझि महेन्द्र एक दिन रूकि गेला। दोसर दिन महेन्द्रक भाबो सुजाता, महेन्द्र, बौएलाल आ सुमित्रा, चारू गोरे गाड़ी पकैड़ गाम विदा भेला।

गाम अबिते महेन्द्र पिताकेँ नै देख मने-मन आरो सशंकित भऽ गेला। माएकेँ पिताक सम्बन्धमे पुछलैन। माएकेँ मात्र एतबे पुछलैन जे 'बाबू केतए छैथ?'। माए कहलखिन। एटैची रखि महेन्द्र बौएलालक संग सोझे भजुआ ऐठाम चलला। डाक्टर सुजाता घरेपर रहि गेली। गामक परम्पराकेँ बुझबैत सासु सुजाताकेँ मनाही कए देलखिन जे अहाँ नै जाउ।

चारि बजि गेल। खाइक इच्छा ने रमाकान्तकेँ आ ने आरो किनको रहैन। भानस भऽ गेलइ। जेते बिलम होएत ओते वस्तु

सुआदहीन बनत। तँए भजुआ चाहै छल जे गरम-गरम खेनाइ सभ किछो खाइथ। मुदा भूख नै रहने चारू गोरे टाल-मटोल करए लगला। असमंजसमे भजुआ रमाकान्तकेँ कहलकैन-

"काका, भानस भऽ गेल अछि। जएह मन मानए सएह...।"

ढकार करैत रमाकान्त उत्तर देलखिन-

"जखन भोजन बना लेलह तँ नै खाएब तँ मुँहो छूताइए लेब। मुदा सच पुछह तँ एक्को रत्ती खाइक मन नै होइए।"

भजुआ कहलकैन-

"जेतबए मन मानए तेतबे...।"

चारू गोरे उठि कऽ आँगन गेला। सौंसे आँगन चिक्कैन माटिसँ टटके नीपल, तँए माटिक सुगन्धसँ अँगना महमह करैत। आँगन तँ छोटे मुदा बेसी लोकक दुआरे पैघ बुझि पड़ैत। कम्मल चौपेत कऽ बिछौल। जेना आइए कीनि कऽ अनने हुअए तेहने थारी, लोटा, बाटी, गिलास चमचम करैत। भोजनक विन्यास देख रमाकान्त क्षुब्ध भऽ गेला। की पवित्रता! की सुआद! मने-मन रमाकान्त सोचैथ जे अगर खूब भूख लागल रहैत तँ खूब खइतौं। मुदा भूखे ने अछि तँ की खाएब।

भोजन कऽ चारू गोरे विदा हुअ लगला। विदा होइसँ पहिने झोलिया रंगल चँगेरामे चारि जोड़ धोती आनि चारू गोरेक आगूमे रखि देलकैन। धोती देख रमाकान्त कहलखिन-

"झोली, तूँ सभ गरीब छह। अपने-ले धोती रखि लएह। तूँ पहिरौलह हम पहिरलौं भऽ गेलइ।"

○

शब्द संख्या : 3365

बारह

मद्रासमे महेन्द्र चारि बजे भोरे उठि जाइ छला आ अपन जिनगीक लीलामे लगि जाइ छला मुदा गाममे पाँचो बजेमे महेन्द्रकेँ कड़गरे नीन पकड़ने छैन। एना किए भेल? ..रमाकान्त सुति-उठि कऽ महेन्द्रक कोठरीमे जा कऽ देखलखिन जे ओ ठर्र पाड़ैत घोर नीनमे सूतल अछि। नै उठेलखिन। मनमे एलैन जे बापक राजमे बेटा अहिना निसचिन्त भऽ रहैए। लोटा लऽ कलम दिस विदा भऽ भेला।

छह बजे भिनसरमे महेन्द्र जगला। जगिते मनमे प्रश्न उठलैन एते कड़गर नीनक की कारण? की मिथिलाक माटि, पानि, हवाक गुणक प्रभाव छी वा काजक कमी रहने एना भेल? ..अही गुनधुनमे पड़ल छला महेन्द्र।

रमाकान्त टहैल-बुलि, दिशा-मैदानसँ होइत अपन घरक रस्ता छोड़ि टोलक रस्ता पकैड़ घुमला। टोलमे प्रवेश करिते, रस्ता कातेक चापाकलपर मुँह-हाथ धुअ लगला।

कलक बगलेमे मंगलक घर। रमाकान्तकेँ मंगल देख चुपचाप अँगनासँ बेंतबला कुरसी आ टेबुल आनि डेढ़ियापर लगौलक। मुँह-हाथ धोइ कऽ रमाकान्त अपना घर दिस चलला कि रस्ता कटैत देख मंगल टोकलकैन-

"काका, कनी एक रत्ती अहूठाम बैसियौ।"

मंगलक बातकेँ कटलैन नहि, मुस्कियाइत आबि कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसते मंगलकेँ कहलखिन-

"बड़ सुन्नर कुरसी छह! कहिया बनौलह?"

"आठम दिन छौड़ा दिल्लीसँ आएल। वएह अनलक।"

मंगलक बेटा रबिया, अँगनामे चाह बनबैत रहए। चाह बना तस्तरीमे बिस्कुट, नमकीन भुजिया आ चाहक गिलास नेने अबि रमाकान्तक आगूमे टेबुलपर रखि, गोड़ लागि कहलकैन-

"बाबा, कनी चाह पीब लियौ।"

रबियाक बात सुनि रमाकान्त सोचए लगला जे यएह मंगला छी जे बिहाड़िमे जखन घर उधिया गेल रहै तँ सात दिन अपनो सभतूरकेँ आ मालो-जालकेँ अपना मालक घरमे रहैले देने रहिऐ। मुदा आइ वएह मंगला छी जे केहेन सुन्दर घरो बना लेलक आ कुरसियो टेबुल कीनि लेलक। वाह..!

मुस्कियाइत पुछलखिन-

"बेटा केतए नोकरी करै छह, मंगल?"

"दिल्लीमे काका। बड़ बढ़ियासँ रहैए।।"

रमाकान्त भुजिया, बिस्कुट खा पानि पीब चाह पीबैत रहैथ आकि तैबीच रबिया आँगन जा जर्मनी मेड एकटा पौकेट रेडियो नेने आबि रमाकान्तक आगूमे रखैत कहलकैन-

"बाबा, ई अहींले अनलौं हेन।"

रेडियो देख रमाकान्त बजला-

"ऐ सबहक सख आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की करब। रखि ले। तूँ सभ अखन जुआन-जहान छँह, छजतौ। हम लऽ कऽ की करब।"

दहिना हाथसँ रेडियो आ बामा हाथे रमाकान्तक गट्टा पकैड़ हाथमे दैत रबिया कहलकैन-

"बाबा, अहींले किनने आएल छी।"

रमाकान्त चाह पीब, कुरसीपर सँ उठि घर दिसक रस्ता पकड़लैन। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू मंगल हाथमे रेडियो नेने घरपर तक चलि आएल।

एक बाँस सुरूज ऊपर उठि गेल। महेन्द्र दलानक ओसारपर बैस, ब्रश करैत रहैथ। तखने पान-सातटा बचिया माथपर पथिया आ हाथमे लोटा नेने पहुँचल।

महेन्द्र ब्रशो करै छला आ चुपचाप सभकेँ देखबो करै छला।

लोटा पथिया ओसारपर रखि एकटा बचिया महेन्द्रकेँ पुछलकैन-

"बाबा कहाँ छथिन?"

बचियाक प्रश्नक उत्तर महेन्द्र नै देलखिन, किएक तँ नइ बुझल रहैन। सबहक पथिया आ लोटाकेँ निहारि-निहारि देखए लगला। कोनो पथियामे कोबी, कोनोमे टमाटर, कोनोमे करैला तँ कोनोमे भँट्टा, तैसंग लोटामे दूध देख महेन्द्र सोचए लगला जे ई की भऽ रहल अछि! किए ई सभ ऐठाम अनलकहेँ..?

महेन्द्र गुनधुनमे पड़ि गेला। कोनो अर्थे ने लगैन। मन घुरियाए लगलैन। कनी कालक पछाइत पुछलखिन-

"बौआ, ई सभ किए अनलह?"

एकटा ढेरबा बचिया जे बजैमे चड़फड़, कहलकैन-

"बाबा अपन सभ खेत हमरे सभकेँ दऽ देलखिन। अपना-ले किछु ने रखलखिन तँ खेथिन की? तँए..!"

बचियाक बात सुनि महेन्द्र गुम्म भऽ गेला। सोचए लगला जे

हम बेटा छिऐन। हुनकर चिन्ता हमरा हेबा चाही। सुआइत कहल गेल अछि जे 'जेहेन करब तेहेन पएब..!'

मुँहपर हाथ नेने महेन्द्रक मनमे उठलैन- अनेरे लोक अपन आ दोसर बुझैए। जेकरा-ले अहाँ करबै, ओ अहूँ-ले करत। चाहे अपन हुअए आकि आन। सोचिते रहैथ कि पिताजीकेँ अबैत देखलैन। पिताकेँ देखते उठि कऽ कुरुर करए कल दिस बढ़ि गेला।

रमाकान्तपर नजैर पड़िते सभ बचिया ओसारपर सँ उठि गोड़ लागए आगू बढ़ल। रमाकान्तक नजैर लोटामे दूध आ पथियामे तरकारीपर पड़लैन। तरकारी देख बजला-

"बच्चा, एते किए अनलह। अच्छा आनियेँ लेलह तँ आँगनमे रखि आबह।"

सभ बचिया अपन-अपन पथिया-लोटा लऽ जा कऽ आँगनमे रखि आएल।

महेन्द्रक अबैक जानकारी गाममे सभकेँ भऽ गेलैन। एका-एकी लोक आबि-आबि अपन-अपन रोगक इलाज करबए चाहलक। मुदा महेन्द्र तँ निआरि कऽ नै आएल छला तँए ने जाँच करैक कोनो यंत्र अनने रहैथ आ ने दबाइ। मुदा तैयो बौएलाल आ सुमित्राकेँ बजा अनैले जुगेसरकेँ कहलखिन। जुगेसर बौएलालकेँ बजबए गेल। जेते जाँच-पड़ताल करैक यंत्र, चीड़-फाड़ करैक औजार बौएलाल आ सुमित्राकेँ कीनि देने रहथिन ओ सभ सामान नेने दुनू गोरे पहुँचल। बौएलाल महेन्द्र लग बैसल आ सुमित्रा सुजाताक संग दरबज्जाक पाछूक ओसारपर। जनिजाति सुजाता लग जाँच करबैले जाए लगली आ पुरुख महेन्द्र लग।

चारिए-पाँच गोरेकेँ महेन्द्र जाँच केलैन कि चारि-पाँचटा रोगी खाटपर टाँगल अबैत देखलखिन। ओ सभ दोसर गामक छेलइ। खाट

देख महेन्द्रकेँ भेलैन जे भरिसक हैजा-तैजा भऽ गेलइ। ओसारपर सँ उठि महेन्द्रो आ बौएलालो निच्चाँमे ठाढ़ भऽ गेला। खाटोबला आबि गेल। सभ कुहरैत रहए। केकरो कपार फुटल तँ केकरो डेन टुटल आ केकरो मारिक चोटसँ देह फुलल।

अपना लग कोनो दबाइ महेन्द्रकेँ नै रहैन। हाँइ-हाँइ महेन्द्र बौएलालकेँ ड्रेसिंग-पलश्तरक सभ समान आ दबाइक पुरजी बना बजारसँ जल्दी अनैले कहलखिन। साइकिलसँ बौएलाल खूब रेसमे विदा भेल।

रमाकान्त रोगी लग आबि एकटा खाट उठौनिहारकेँ पुछलखिन-

"केना कपार फुटलै?"

डरसँ कँपैत ओ कहलकैन-

"मारिसँ कपार फुटलै।"

सुनिते रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"बौआ, सबहक इलाज नीक जकाँ कऽ दहुन।"

कहि ओसारपर बिछौल बिछानपर बैस, खाट उठौनिहार सभकेँ सोर पाड़लखिन। सभ कियो लगमे आबि बैसलैन। पुछलखिन-

"मारि करवन भेलह?"

"खाइ-पीबै रातिमे।"

"तब तँ खेनौं-पीनौं नै हेबह?"

"नहि।"

भूखल बुझि रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"पहिने सभकेँ खुआबह।"

पनरह-बीस गोरेक जलखै तँ घरमे छेलैन नहि। जुगेसर

सुमित्राकेँ सोर पाड़ि कहलक-

"बुच्ची, काकी तँ बुढ़े छैथ आ कनियाँ अनभुआरे। झब-दे बड़का बरतन चढ़ा कऽ खिचड़ी बना। वेचारा सभ रौतुके भूखल अछि। हम सभ समान जोड़िया दइ छियौ। तोरा सभ किछु बुझल छौ।"

जहिना जुगेसर सुमित्राकेँ कहलक तहिना सुमित्रो भानसमे जुटि गेल। सुजातो संग दिअ लगलखिन।

जहिना बौएलाल निछोह साइकिल हाँकि बजार गेल तहिना लगले सभ समान कीनि चलियो आएल। बौएलालकेँ अबिते महेन्द्रो आ बौएलालो सभ रोगीकेँ पहिने दरदक सुइया देलखिन।

सूइ पड़िते कनीए कालक पछाइत, सभ कुहरनाइ बन्न केलक।

खिच्चैर-तरकारी बना सुजातो आ सुमित्रो रोगी लग एली। मन शान्त होइते, सबहक खून लगलाहा कपड़ा बदैल, खिच्चैड़ खुआ इलाज शुरू भेल। तीन गोरेकेँ कपार फुटल रहै आ दू गोरेकेँ डेन टुटल रहइ। सुजाता आ सुमित्रा दुनू गोरेक पलश्तर करए लगली। महेन्द्र कपारमे स्टीच करैत रहैथ। बौएलाल दौड़-बड़हामे लागल रहए। करवनो किछु अनैत तँ करवनो किछु।

दू घन्टाक पछाइत सभ निचेन भेला।

रमाकान्त पुछलखिन-

"मारि किए भेलह?"

नोर पोछैत जोखन कहए लगलैन-

"मकशूदनक बेटी सितिया भाँटा बेचए हाट गेल रहइ। सतरह-अठारह बर्खक उमेर हेतइ। नमगर कद। दोहरा देह। चाकर मुँह। गोल आँखि ओकर छइ। पौंरुके साल दुरागमन भेलइ। ओना, हाट ओकर

माए करै छै मुदा पान-सात दिनसँ ओ दुखित अछि। डेढ़ कट्ठा खेतमे भाँटा केने अछि। खूब सहजोर फड़लो छइ। भाँटाकेँ जुआइ दुआरे सितिया छाँटि-छाँटि कऽ नमहरका भाँटा तोड़लक। एक छिट्टा भेलइ। भँट्टोकेँ बेचब आ माए-ले दबाइयो कीनब जरूरी छेलइ। दबाइक पुरजी साड़ीक खूटमे बान्हि लेलक जे घुमै कालमे दबाइ किनने आएब। हाटमे भँट्टा बेच दोकानमे दबाइ कीनि कऽ असगरे विदा भेल। गोसाँइ डुमि गेल रहइ। खूब अन्हार तँ नहि, मुदा झलफल भऽ गेल छेलइ। धीरे-धीरे रस्तो चलनिहार पतराए लगल छल। हाट गेनिहार तँ साफे बन्न भऽ गेल छेलइ। मगर हाटसँ घुमनिहार गोटे-गोटे रहबे करए। पाँतरमे जखन सितिया आएल तँ पाछूसँ ललबा आ गुलेतिया सेहो साइकिलसँ अबै छल। गुलेतिया ललबाक नोकर छी। ललबा बापक असगर बेटा अछि बीस-पच्चीस बीघा खेत छइ। बच्चेसँ बहसल तँ अछिए। दुनू गोरे दारू पीब अन्ट-सन्ट बजैत घर दिस अबैत रहए। जखन दुनू गोरे सितियाक लगमे आएल तँ ललबा बाजल-

"गुलेती, शिकार फँसलौ!"

..ललबाक बात सुनियों कऽ सितिया किछु नै बाजल। मुदा मनमे आगि सुनगए लगलै। आरो डेग नमहर केलक। आगू बढ़ि ललबा साइकिलसँ उतैर, रस्ताकेँ घेर साइकिल ठाढ़ कऽ देलकै। साइकिल ठाढ़ कए जेबीसँ सिगरेट आ सलाइ निकालि, लगा कऽ पीबए लगल। सितियाक मनमे शंका भेलै मुदा डेराएल नहि। साइकिल लग आबि रस्ताक बगल देने आगू टपि गेल। आगूमे ललबो आ गुलेतियो ठाढ़ भऽ सिगरेटो पीबैत आ चढ़ा-उतरीक गप्पो-सप्प करैत फेर आगू बढ़ल। मुँहमे सिगरेट रखि ललबा साए रूपैआक नोट ऊपरका जेबीसँ निकालि सितिया दिस बढ़ौलक। रूपैआ देख सितियाक देह आगिसँ लह-लह करए लगलै। मुदा ने किछु बाजल आ

ने रूकल। लफरल आगू बढ़ैत रहल। सितियाकेँ आगू बढ़ैत देख ललबो पाछूसँ हाथमे रूपैआ नेने बढ़ल। दुनू गोरेकेँ पछुअबैत देख सितिया ठाढ़ भऽ गेल। माथ परहक छिट्टाकेँ दहिना हाथे आरो कसिया कऽ पकैड़ सोचलक जे छिट्टेसँ दुनूकेँ चानिपर मारब। तामसे भीतरे-भीतरे जैरते छल सितिया।

..ललबा दहिना हाथे नोट सितिया दिस फेर बढ़ौलक। लगमे ललबाकेँ देख, मौका पाबि सितिया तेना कऽ रूपैआपर थूक फेकलक जे रूपैआपर तँ कम्मे मुदा ललबाक मुँहपर बेसी पड़लै। मुँहपर थूक पड़िते ललबा सितियाक बाँहि पकैड़ खिंचए चाहलक। पहिनहिसँ सितिया छिट्टाकेँ पकैड़ अजमेने रहबे रहए। धाँइ-धाँइ दू छिट्टा ललबाकेँ लगा देलक। दुनू गोरे दुनू बाँहि पकैड़ सितियाकेँ घिंचलक। छिट्टा नेनहि सितिया रस्ताक निच्चाँ, खेतमे खसि पड़ल। खेतमे खसिते हिम्मत कऽ उठि दहिना तरहत्थीक मुक्का बान्हि, मुक्को आ दहिना पएरो अनधुन चलबए लगल। मारिक डरसँ गुलेतिया कात भऽ गेल। मुदा ललबा नै मानलक। ओहो अनधुन मुक्का चलबए लगल। गुलेतियाकेँ कातमे देख सितियोक जोश बढ़लै। ललबा दारू पीनहि रहए, तिलमिला कऽ खसल। जहाँ ललबा खसल आकि सितिया एँड़े-एँड़ मारए लगल। तही-बीच हाटसँ तरकारी बेचनिहारिक जेर अबैत रहइ। तरकारी बेचनिहारिक चाल-चुल पाबि सितियाक जोश आरो बढ़ि गेल। एक तँ समरथाइक शक्ति सितियाक देहमे, दोसर इज्जत बँचबैक प्रश्न, बाघ जकाँ सितिया मारैत-मारैत ललबाकेँ बेहोश कऽ देलक। ताबे तरकारियो बेचनिहारि सभ लगमे आबि गेली। सितियाक काली रूप देख हसीना पुछलकै-

"बहिन, की भेलौ?"

..सितिया बाजल-

"अखन किछु ने पुछ। ऐ छुतहरबाक खून पीब लेबइ।"

..बजबो करैत आ अनधुन एँड़ो देहपर बरिसबैत रहल। चारि गोरे सितियाकेँ पकैड़ कात करए चाहलैन। मुदा चारूकेँ झमारि सितिया पुनः आबि कऽ दस लात ललबाकेँ फेर मारलक। फेर चारू गोरे हसीना, जलेखा, रेहना आ खातून घेर सितियाकेँ पँजिया कऽ पकैड़ घिंचने-तिरने विदा भेली।

..अबैत-अबैत जखन गामक कात आएल कि सितिया फेर चारू गोरेकेँ झमारि, अपन डेन छोड़ा फेर ललबाकेँ मारए दौगल। मुदा रेहना आ खातून दौग कऽ सितियाकेँ आगूसँ घेरलक। हसीना आ जलेखा सेहो दौग कऽ आबि पकड़लक। सितियाक मन क्रोधसँ उफनैत रहइ। मनमे होइ जे ललबाक खून पीने बिना नै छोड़ब, चाहे फाँसीपर किए ने चढ़ऽ पड़ए। चारू गोरे सितियाकेँ पकड़ने घरपर पहुँचल। सौंसे गाम घटनाक समाचार बिहाड़ि जकाँ पसैर गेल। गाम डोल-माल करए लगल। तनावक वातावरण बनि गेल। राति भारी भऽ गेल। गामक बुढ़बा चोट्टासँ लऽ कऽ नवका चोट्टा धरिक चलती बढ़ि गेलइ। ..तैबीच चारि गोरे ललबाकेँ खाटपर टाँगि सेहो अनलक। ललबाक बेहोशी तँ टुटि गेलै मुदा कुहरनी धेनहि रहइ। ललबाक पितियौत भाए डाक्टर बजा ललबाक इलाज करबए लगल। स्लाइन लगा डाक्टर बगलमे बैस पानिक गति देखैत रहए। तैबीच ललबाक पितियौत भाए गाममे लाठीक संगोर करए लगल। जेते गामक मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छल से सभ ललबाक पक्ष लेलक। अपन मजगूत पक्ष देख ललबाक बाप बाजल-

"जखन इज्जत चैलिए गेल तँ समपैते रखि कऽ की करब।"

..'दुर्गा-महरानी की जय' कहि पनरह-बीसटा गामक हुरदंगहा, लाठी लऽ सितिया ऐठाम विदा भेल। रस्तोमे सभ जय-जयकार करैत

रहए।

..मकशूदनक टोल मात्र बारह परिवारक। गरीब घरक टोल तँए समांगो सभ मरदुआरे। मुदा तैयो जेते पुरुख रहै, लाठी लए-लए गोलिया कऽ बैस विचारलक जे इज्जतक खातिर मरि जेनाइ धरम छी, तँए जे हेतै से हेतै मुदा पाछू नइ हटब। दोसर दिस टोलक सभ जनिजाति सेहो तैयार होइत निर्णए केली जे जाधैर पुरुख ठाढ़ रहत ताधैर अपना सभ कातमे रहब। मगर पुरुखकेँ खसिते अपनो सभ लाठी उठाएब। एक तँ सितियाक देहमे आगि लगले रहै आरो धधैक गेलइ। बाजल-

"जेते जुआन बेटी छँह आ जुआन पुतोहु, सभ अपन-अपन साड़ीकेँ कसि कऽ बान्हि ले आ माथोमे साड़ीए-क नमहर मुरेठा कसि कऽ बान्हि ले, जइसँ कपार नै फुटौ। बुढ़िया सभकेँ छोड़ि देही। मरुआ बीआ पटबैबला जे पटै घरमे छौ से निकालि कऽ एकठाम सभ रख। आ देखैत रही जे की सभ होइ छइ। जहिना सभ बहिन मिलि मरब तहिना संगे संगे सभ बहिन जनमो लेब।"

..टोलक जेते छोट बच्चा रहै, सभकेँ घरक बुढ़-बुढ़ानुस लए-लए टोलसँ हटि गाछीमे चलि गेल। दोसर हँसेरी टोलक लग आबि बोली देलक। बोली सुनि सितियाकेँ होइ जे असगरे सभसँ आगू जा हँसेरीकेँ रोकी। मुदा लड़ाइमे अनुशासन आ निर्णयक महत बढ़ि जाइ छइ, तँए सितिया आगू नहि बढ़ि ठाढ़े रहल। टोलक लोक, अपना तागत भरि हँसेरीकेँ रोकलक। अनधुन लाठी दुनू दिससँ चललै। मुदा पछैर गेल। पाँच गोरे घाइलो केलक मुदा हँसेरी घुमल नहि बल्कि धन आ इज्जत लूटैक खियालसँ आगू बढ़ल। अपन समांगकेँ खसल आ हँसेरीकेँ आगू बढ़ैत देख मुरेठा बन्हने आगू-आगू सितिया आ तइ पाछू टोलक सभ स्त्रीगण पटै लऽ हँसेरीकेँ रोकलैन। की बिजलोका चमकै

छै तहिना गामक बेटी अपन चमकी देखौलैन! वाह रे मिथिलाक धी..!

..मिथिला सिरिफ कर्म भूमिए आ धर्म भूमिए नहि, वीर भूमि सेहो छी। चारि आदमीक कपार असगरे सितिया ढाहलक। चारू खसलै। खूनक रेत चललै। हँसेरीमे हूर भेलइ। सभ पाछू-मुहेँ पड़ाएल। ईहो सभ भागल हँसेरीकेँ रेबाड़लैन। मुदा किछु दूर रेबाड़ि घुमि गेली।

..अपन सभ समांगकेँ उठा-उठा सभ अनलक। मुदा दोसर दिसक लोककेँ अपन समांग अनैक साहसे नै होइ छेलइ। होइ जे कहीं हमहूँ सभ अनैले जाइ आ हमरो सभकेँ ओहिना हुअए। बड़ी कालक पछाइत चोरा कऽ अपना समांग सभकेँ ओहो सभ लऽ गेल। गाममे दुइयेटा डाक्टर। सेहो डिग्रीधारी नहि, गमैया प्रेक्टिश्नर। सेहो दुनू ललबे ऐठाम रहैथ। रातिमे केतए जइतौं। दोहरा कऽ आक्रमणक डर सेहो रहए। सभ तत-मतमे पड़ल रही। मुदा जेहो सभ घाइल छल ओकरो मुँह मलिन नै छेलइ। मनमे खुशी होइत रहइ। तँए दर्दकेँ अडैजने रहए। इन्होर पानि करि कऽ सभकेँ स्त्रीगण सभ ससारए लगली, कपारक फाटल जगहमे सिन्नुर दए-दए कपड़ासँ बान्हि खून बन्न केलक। भरि राति कियो सूतल नहि। जहाँ-तहाँ अहीक चरचा बेसी काल चलैत रहैए। भिनसरमे डाक्टर महेन्द्रक जानकारी भेल जे गाममे छैथ। तँए एलौं।"

जोखनक बात सुनि रमाकान्त बमैक उठला। ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बाजए लगला-

"जदी कियो अपन इज्जत-आबरू बँचबैले हमरा कहत तँ हम अपन सभ सम्पैत ओइ पाछू फुकि देब। मुदा छोड़बै नहि। बौआ, जेते तोरा हूनर छह तइमे कोताही नै करिहक। खेनाइ-पीनाइ, दबाइ-दारू सभ कथुक मदैत कऽ दहक। फेर ऐ धरतीपर जन्म लेब। ई कर्मभूमि

छिऐ। मनुख किछु करैले धरतीपर अबैए। सिरिफ अपनेटा नै आनो जे कर्मनिष्ठ अछि, ओकरो जहाँ धरि भऽ सकत मदैत करबै। जोखन, जे भऽ गेल से भऽ गेल मुदा सुनि लएह जहिया-कहियो कोनो भीड़ पड़ह, हमरो एक बेर खोज करिहह। जाधैर घटमे परान अछि ताधैर जरूर मदैत करबह।"

बेर टगैत चारिटा बचिया अपना आदमी सभ-ले खाएक लऽ कऽ पहुँचली। एक कठौत भात बड़का डोलमे दालि आ छोटका डोलमे तरकारी लेने, तैसंग खाइ-ले केराक पात आ दूटा लोटा सेहो अनने छेली।

चारू बचियाकेँ देख रमाकान्त पुछलखिन-

"बुच्ची, खाएक किए अनलह।"

रमाकान्तक बात सुनि सितिया कहलकैन-

"बाबा, हमरा सभकेँ नइ बुझल छेलए तँए अनलौं।"

"अच्छा, अनलह तँ सभकेँ पुछि लहुन जे खाएब आकि घुरौने जाएब।"

सितियाक संग रमाकान्त गप-सप्प करिते रहैथ कि बिच्चेमे जोखन कहलकैन-

"काका, यएह सभ बचिया मारि कऽ ओइ पाटीकेँ भगौलक।"

अकचकाइत रमाकान्त बजला-

"आँइ! यएह सभ छी! वाह-वाह! तोरे सभ सन-सन बेटी ऐ धरतीक मान रखि सकैए।"

बिहाड़ि जकाँ जोखनक बात, रमाकान्तक दरबज्जा आ आँगनसँ लऽ कऽ गाम धरिमे पसैर गेल जे सितिया सभ मरदक हँसेरीकेँ अनधुन मारबो केलक, कपारो फोड़लक आ गामक सीमान धरि खिहारबो

केलक।

ई समाचार सुनि गामक स्त्रीगण मरद सभ उनैट कऽ ओइ बचिया सभकेँ देखैले आबए लगल। अजीव दृश्य बनि गेल।

श्यामा आँगनसँ सुमित्रा दिया समाद पठौलैन जे कनी ओइ बचिया सभकेँ अँगना पठा दियौ जे हमहूँ सभ देखब।

दरबज्जापर आबि सुमित्रा रमाकान्तकेँ कहलकैन। अँगनाक समाद सुनि रमाकान्त चारू बचियाकेँ कहलखिन-

"बेटी, कनी आँगन जाइ जाह।"

चारू बचियाकेँ संग केने सुमित्रा आँगन विदा भेल। ओसारपर ओछाइन ओछा श्यामो आ सुजातो बैसल छेली। आगू-आगू सुमित्रा आ पाछू-पाछू चारू बचियो आएल।

चारू बचिया श्यामा आ डाक्टर सुजाताकेँ गोड़ लगलकैन। एकाएकी गामक स्त्रीगण आ गामक बेटी सभ सेहो अँगने जा-जा सितिया सभकेँ देखए लगली। अपने लगमे चारू बचियाकेँ श्यामा बैसौने रहथिन। सुजाता निहारि-निहारि चारूकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि, देखैत रहली। ..अजीव शक्ति चारूक चेहरामे बुझि पड़ैन। चारू बचियो आँखि उठा-उठा कखनो श्यामापर तँ कखनो गामक स्त्रीगण सभपर दइ छेली। सबहक मनमे खुशी रहितो, मुहसँ हँसी नै निकलै छेलैन। जेना खुशीक पाछू अदम्य उत्साह, अदम्य साहस आ जोश सबहक चेहरापर नचैत रहैन। चारूक विशेष आकर्षण सभकेँ अपना दिस घिचै छल। जेहो स्त्रीगण कनी हटि कऽ ठाढ़ भऽ देखै छेली, ओहो सहैट-सहैट सितियाक लगमे आबए चाहैथ। श्यामा सुमित्राकेँ कहलखिन-

"सुमित्रा, एहेन लोककेँ आँगनमे कहिआ देखबीही, तँए बिना किछु खिऔने-पिऔने नै जाए दहुन।"

श्यामाक बात सुनि सुजाता उठि कऽ अपन आनल मद्रासी भुजियाक डिब्बा घरसँ उठेने एली। भुजियाक डिब्बा देख सितिया बाजल-

"बाबी, लगले खा कऽ विदा भेल छेलौं। एको-रत्ती खाइक छुधा नइ अछि।"

तैबीच रमाकान्त चारू गोरेकेँ बजबैले जुगेसरकेँ अँगना पठौलखिन। जुगेसर अँगना आबि सभकेँ कहलक। उठि कऽ चारू गोरे श्यामाकेँ गोड़ लागि विदा हुअ लगली। असिरवाद दैत श्यामा कहलखिन-

"भगवान हमरो औरदा तोरे सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत जिनगी अहिना बितैत रहह।"

चारू गोरेकेँ अँगनासँ निकैलते सभ विदा भेल।

चारिक अमल। रौदक गरमियो कमए लगल। डॉ. महेन्द्र जोखनकेँ कहलखिन-

"ऐठाम रोगी सभकेँ रखैक जरूरत नइ अछि। घरेपर साँझ-भिनसर सभ दिन बौएलाल जा-जा कऽ सूइया दऽ-दऽ औत। गोटी सेहो लगातार चलबैत रहब। पनरह-बीस दिनमे पूरा ठीक भऽ जाएत।"

पएरे सभ विदा भेल...।

साँझू पहर, रमाकान्त आ जुगेसर दरबज्जापर बैस मद्रासेक गप-सप्प शुरू केलैन। मुस्कियाइत जुगेसर कहलकैन-

"काका, एक बेर आरो मद्रास चलू।"

नाक मारैत रमाकान्त बजला-

"धुर बुड़िबक! गाड़ीमे लोक मरि जाइए। ऐठाम केहेन निचेनसँ

रहै छी। ओमहर ने गाड़ी-बसमे शान्ति आ ने रस्ता-पेराक ठेकान। सड़क धऽ कऽ चलू। तहूमे सदिखन लोकेक धक्का लगैत रहत। केहेन सुन्दर अपना सबहक गाम अछि जे रस्ताक कोन बात जे आइरे-धुरे, खेते-पथारे जेतए मन हुअए तेतए जाउ। ने गाड़ी बसक धक्काक डर आ ने पएरमे काँटी-शीशा गड़ैक। जेकरासँ मन हुअए तेकरासँ गप करू, कुशल-समाचार पुछि लिऔ। ओइठाम तँ जेना मुँहमे बकारे नै रहए तहिना बौक भेल रहै छेलौं।"

व्यंग करैत जुगेसर कहलकैन-

"केहेन ठंढा घरमे रहै छेलौं। ने नहाएले केतौ जाए पड़ै छेलए आ ने पर-पैखाना-ले?"

रमाकान्त-

"धुर बुड़ि! ओइठाँ जँ दुइयो मास रहितौं तँ कोढ़ि भऽ जइतौं। उठैयो-बैसैयोमे आसकैते लगैत रहए। सच पुछ तँ एते दिन रहलौं मुदा ने कहियो भरि मन पानि पीलौं आ ने झाड़ि कऽ पैखाना भेल। सभ दिन जेना कब्जियते बुझि पड़ैत रहए। जखने पानि मुँह लग लऽ जाइ कि मन भटैक जाइ छेलए।"

फेर मुस्कियाइत जुगेसर कहलकैन-

"अंगुरक रस पीबैमे केहेन लगैत रहए! बिसैर गेलिऐ?"

अंगुरक रस सुनि थोड़ेक असथिर होइत रमाकान्त बजला-

"लोक कहै छै जे अंगुरमे बड़ तागत छै मुदा अपना सबहक जे केरा, आम, बेल, लताम इत्यादि अछि, ओते तागत अंगुरमे केतए-सँ औत। अंगुरेक शराब बनैए मुदा अपना ऐठामक भाँगक परतर करतै। अंग्रेजिया शराब सनसना कऽ मगजपर चढ़ियो जाइ छै आ लगले उतैरियो जाइ छइ। मुदा अपन जे भाँग अछि ओ रइसी निशाँ छी। ने अपराध करैले सनकी चढ़ौत आ ने एको मिसिया चिन्ता आबए दइ

छइ।”

रमाकान्त आ जुगेसरक गप-सप्प सुजातो अढ़सँ सुनै छेली। दुनू गोरेक गप्पो सुनै छेली आ मने-मन विचारबो करै छेली। तखने हीरानन्द आ शशि शेखर सेहो टहलैत-बुलैत एला।

दुनू गोरेकेँ बैसते रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

“मास्सैब, खेतक झंझट तँ सम्पन्न भेल। बड़ बढ़ियाँ भेल। एकटा बात कहू जे जेते लोक गाममे अछि सभ अपन गाम कहैए किने?”

हीरानन्द-

“हँ। ई तँ कोनो नव नइ अछि। अदौसँ कहैत आएल अछि आ आगूओ कहैत रहत।”

“जखन गाम सबहक छिऐ तँ गामक सभ किछु ने सबहक भेलइ?”

“तइमे थोड़े गड़बड़ अछि। हँ! गड़बड़ ई अछि जे अखन धरि जे बनैत-बनैत समाज आ गाम अछि ओ टुटैत टुटैत खण्ड-पखण्ड भऽ गेल अछि। तँए एक-एककेँ जोड़ि कऽ समाज बनबए पड़त जे लगले नइ भऽ सकैए।”

हीरानन्द बजिते रहैथ कि उत्तर दिससँ सुबुध आ दक्षिण दिससँ महेन्द्र आ बौएलाल सेहो आबि गेला।

रमाकान्त बौएलालकेँ कहलखिन-

“बौएलाल, आब तँ तूँ डाक्टर बनि गेलेँ मुदा तैयो ऐठाम सभसँ बच्चा तोँही छँह। जो, चाह बनौने आ।”

डाक्टरक नाओं सुनि महेन्द्रो आ हीरानन्दो मने-मन खुश भेला। किएक तँ दुनू गोरेक पढ़ौल बौएलाल छिऐन। मुस्कियाइत बौएलाल

चाह बनबए विदा भेल। रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

“सुबुध, जमीनक ठौर तँ लगि गेल, खाली पोखैर बँचल अछि। शशि नौजवानो छैथ आ पढ़लो-लिखल छैथे आ लूरियो छैन्हे। पोखैरमे माँछ पोसथु।”

सुबुध-

“बड़ सुन्दर विचार अपनेक अछि काका। हमहूँ यएह सोचै छेलौं जे गाममे तँ दुइयेटा चीज- माटि आ पानि अछि। तँए दुनूकेँ एहेन ढंगसँ उपयोग कएल जाए जे जहिना एक गोरेकेँ पाँचटा बेटा भेने पाँच गुना परिवार बढ़ि जाइ छइ।

..तहिना खेतो आ पानियोँक हुअए। ढंगसँ मेहनत आ नव तरीका अपनौल जाएत तँ मनुखे जकाँ ओहो पाँचो गुनाक रफ्तारसँ किएक ने आगू बढ़त। जँ एहेन रफ्तार पकैड़ लिअए तँ गामकेँ बढ़ैमे केते देरी लगत। बीस बीघासँ ऊपरे गाममे पानि अछि जे बैशाखो-जेठमे नइ सुखैए। अगर जँ महाग-अकालो पड़ि जाएत तैयो बोरिंगक सहारासँ उपैज सकैए।

..अखन धरि सभ पोखैर ओहिना पड़ल अछि। सौंसे पोखैरकेँ केचली-घास छारने छइ। ने नहाइ-जोकर अछि आ ने माछ-मखान उपजबै-जोकर। जे इलाका माछ-मखानक छी, ओइ इलाकाक लोककेँ माछ-मखान नै भेटै, केते लाजक बात छी। ऐ लाजक कारण की हम सभ नै छिऐ? जरूर छिऐ। भलेँ हरसी-दीरघी लगा अपनाकेँ निर्दोष साबित कऽ ली मुदा...।

देखै छी जे किछु सुभ्यस्त परिवारकेँ तँ माछे-मखानक कोन बात जे अहूसँ नीक-नीक वस्तु भेटैए, मुदा विशाल समूहक गति की छइ? खाली जितिया पावैनमे माछसँ भेँट होइ छै आ कोजगरामे दूटा मखान देखैए! तँए मनुखकेँ खुशहाल बनैले वस्तुक परियाप्तता जरूरी

अछि। जँ वस्तुक कमी रहत तँ खुशहाली औत केना?”

सुबुध बजिते रहैथ कि बौएलाल चाह नेने आएल। चाह देखते कियो कुरुर करए उठला तँ कियो तमाकुल थुकरैले। जुगेसर चाह बँटए लगल। एक घोंट चाह पीब हीरानन्द महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

“डाक्टर साहैब, केते दिनक छुट्टीमे आएल छी?”

हीरानन्दक प्रश्न सुनि महेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेला। मने-मन सोचए लगला जे केना चिट्ठीक चरचा करब। चिट्ठीक बात तँ सोलहन्नी झूठ निकलल। जँ बेसी दिनक छुट्टीक चरचा करब तँ सेहो झूठ हएत। धड़फड़ाएले आएल छी। की कहिऐन आकि नइ कहिऐन।

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। मुदा बिच्चेमे जुगेसर बाजल-

“ऐंह मास्सैब! डाकडर साहैब तँ आला भऽ गेला। कोनो चीजक कमी नै छैन। जखन अपना गाड़ीमे चढ़ा कऽ बुलबै छला तँ बुझि पड़ै छल जे इन्द्रासनमे छी।”

हीरानन्दक बात तर पड़ि गेलैन। मने-मन सोचलैन जे महेन्द्र भरिसक पिता दुआरे गुमकी लधने छैथ।

सभ कियो चाह पीब-पीब गिलास बौएलालकेँ देलखिन। सभटा गिलास लऽ बौएलाल अखारैले कलपर गेल। तैबीच सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन-

“महेन्द्र भाय, गामक लोककेँ जे देह देखै छिऐ तइसँ की बुझि पड़ैए? बुझि पड़ैए ने जे किछु-ने-किछु रोग सभकेँ पछारने छइ। तँए सभकेँ जाँचि कऽ इलाज कए दियौ।”

सुबुधक प्रश्न महेन्द्रकेँ जँचलैन, बजला-

“अपनो विचार अछि। चारि-पाँच दिन जँचैमे लगत। सभकेँ जाँचि, जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाजो कइए देबइ। आइ तँ

भरि दिन दोसरे ओझरीमे ओझरा गेलौं मुदा काल्हिसँ ऐमे लगि जाएब।”

शशि पुछलकैन-

“डाक्टर साहैब, बुड़हा जे अपन सभ खेत बाँटि देलैन तइले अपनेकेँ..?”

शशि शेखरक बात सुनि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला-

“दू भाँइ छी। दुनू भाँइकेँ पिताजी डाक्टर बना देलैन। ऐसँ बेसी एक पिताकेँ पुत्रक प्रति की बाँकी रहि जाइए जे किछु कहबैन। खेतक बात अछि, हम थोड़े खेती करए आएब। तखन तँ जे खेती करैबला छैथ जँ हुनका हाथमे गेलैन तँ ऐसँ बेसी उचित की होएत। बाबाक अरजल खेत छिऐन, जेकर हकदार तँ पितेजी छैथ। जँ अपन सम्पैत लूटाइए देलैन तइसँ हमरा की। ओनाहितो वैरागी पुरुषकेँ रागी बनाएब पाप छी।”

पुनः शशि शेखर पुछलखिन-

“मद्रासमे केहेन लगैए?”

जेना किछु मन पाड़ए लगला तहिना थोड़ेक रूकि कऽ महेन्द्र बजला-

“जहिया डाक्टरीक शिक्षा पेलौं तहिया नीक बुझि मद्रास गेलौं। मुदा अखन गामक सिनेह हृदैकेँ तेना पकैड़ लेलकहेँ जेना छातीमे लगल तीरसँ चिड़ै छटपटाइए तहिना छटपटाइ छी, होइए जे मद्रासक सभ किछु छोड़ि-छाड़ि अहीठाम रही। मुदा केतए-सँ जिनगीक लीला शुरू कएल जाए, ई गम्भीर प्रश्न अछि। ऐ प्रश्नक बीच मन ओझरा गेल अछि। स्पष्ट उत्तर नै भेट रहल अछि। किएक तँ ऐ प्रश्नक उत्तर दृष्टिकोणक मुताबिक भिन्न-भिन्न भऽ जाइए।”

◌

शब्द संख्या : 3770

तेरह

गामक दुखताहक दुख जाँचि दबाइ देबाक समाचार गाममे पसैर गेल। काल्हि भिनसरसँ सभ टोलक दुखताहकेँ बेरा-बेरी जाँचो होएत आ दबाइयो देल जाएत।

भिनसर होइते ओइ टोलक लोक आबए लगला जइ टोलक पार छेलैन। मरदक जाँच डाक्टर महेन्द्र करैथ आ स्त्रीगणक डाक्टर सुजाता। डाक्टर महेन्द्रक सहयोगी बौएलाल आ सुजाताक सुमित्रा।

तीन दिनमे सौंसे गामक रोगीक जाँच भेलैन। दबाइयो भेटलैन। लोकक बीच एहेन खुशी दौग आएल जेना गामसँ बिमारीए पड़ा गेल होइ। सबहक मनक खुशी एक्के रंगक रूप बना नाचए लगल। मनमे एहेन खुशी जे आब ने हमरा देहमे कोनो रोग अछि आ ने मरब। खुशीक नाच एहेन छल जेना रोग देखिए कऽ भागि गेल होइ। मुदा जिनगीमे तँ इहेटा रोग तँ नहि, आरो बहुत तरहक अछि। मुदा ई तँ मनक बात छल। जँ ई मनक बात छी तखन वास्तविक बात की अछि, ओ तँ लोकेमे देखए पड़त।

सभ दिन भलेसराकेँ देखै छेलिऐ जे दुखताहे अछि जइसँ काज-उद्यम छोड़ि देने छल मुदा आइ बड़का छिट्टामे छौर-गोबर नेने खेतमे फेकैले जाइत रहए। रस्तामे सोनमा पुछलकै तँ बाजल-

"आब देहमे कोनो दुख नइ अछि। जाइ छी छाउरो फेक लेब आ गरमा धानो काटि कऽ नेने आएब।"

तहिना तेतरो बहिंगामे गाँथि दूटा धानक बोझ कन्हापर उठेने अबैत रहए।

सोनमाक मनमे नाचए लगलै जे एना केना भेलइ? देखै छिऐ जे लहेरियासराय असपतालमे छअ-छअ मास रोगीकेँ लोहाबला खाटपर रखि, सुइयो पड़ै छै आ गोलियो खाइले देल जाइ छै, तैयो मरि जाइए। मुदा ऐ गामक दुखताहक दुख केना एते असानीसँ पड़ा गेल! अजीव भेल! ओह! भरिसक दुख केकरा कहै छै से बुझबे ने करै छी।

गुनधुनमे पड़ल सोनमाक मनमे उठल- जब अपने बुझबे नै करै छी तब बुझब केना। अपने सोचौ चाहब आ जँ गलतीए सोचा जाए तखन तँ गलतीए बुझब। गलती बुझब आ नइ बुझब, दुनू एक्के रंग। बिनु बुझलो काज लोक करए लगैए आ गलतियो करबे करैए। भलेँ दुनूक फल अधले होइ मुदा करै तँ अछिए। एहेन स्थितिमे की करब? जेकरा बुझै छिऐ जे फल्लाँ बुझनिहार अछि जँ ओकरो नइ बुझल होइ आ झूठे अन्ट-सन्ट कहि दिअए। तेतबे नहि, जे बुझनिहारो अछि आ ओकरा पुछिऐ आ जँ ओ गलतीए कहि दिअए, तैयो तँ ओहिना रहि जाएब। मुदा तोहूमे तँ एकटा बात अछि जे ओ कहै आ हम करी आ तेकर फल जँ गलती होइ तखन दोखी के हएत? तब की करब? आब उमेरो ने अछि जे स्कूलोमे जा कऽ पढ़ब। धिया-पुता सभ स्कूलमे पढ़ैए...।

गुनधुन करैत सोनमाक मन कहलकै- जखन स्कूल जाइबला रही तखन किए ने पढ़लौं? पढ़लौं केना नहि, स्कूलमे नाओं लिखौने रही। पाँच किलास तक तँ पढ़बो केलौं। तखन छोड़ि किए देलिऐ? छोड़लिऐ आकि मास्टर मारि कऽ छोड़ा देलक? मास्टर मारि कऽ किए

छोड़ा देलक? जखन छअ किलासमे गेलौं आ अंग्रेजी मास्टर आबि कऽ पढ़बए जे बी.यू.टी. 'बट' आ पी.यू.टी. 'पुट', तहीपर ने कहने रहिऐ जे अहाँ गलती पढ़बै छिऐ। कोनो गलती कहने रहिऐ। जब गलती नै कहने रहिऐ तब ओ मारलक किए। नै पढ़बैक मन रहै तँ ओहिना कहितए जे तोरा नै पढ़ेबौ, स्कूलसँ चलि जो। मारलक किए? जँ मारबो केलक तँ हमरा मनकेँ तँ बुझा दइतए। अपन मन मानि लइत। मन मानि लैत, भऽ गेलइ। से तँ नै केलक। तँए ने हम मुरुख रहि गेलौं। नहि तँ हमर की हाथ-पएर कोनो पातर-छितर अछि जे दरोगा नहि बनलौं। हमर जे दरोगाक नोकरी गेल से ओ मास्टर हमरा देत जे मारि कऽ स्कूल छोड़ा देलक? धिया-पुतामे सएह भेल, चेतनमे तहिना देखै छी। आब केना जीब?

तर्क-वितर्क करैत सोनमाकेँ शंका भेलै- भरिसक हमरो ने तँ बतहा दुख पकैड़ लेलकहेँ मुदा केकरासँ पुछबै, के कहत, सभकेँ तँ सएह देखै छिऐ। की हम भरि जिनगी हरे जोतैत रहब, घोड़ापर चढ़ि कऽ शिकार खेलैले कहिया जाएब..?

दुनू हाथ माथपर लऽ सोनमा गाछक निच्चाँमे बैसल गुनधुनमे पड़ल सोचैत-विचारैत रहए, जहिना आमोक गाछ रोपल जाइ छै तहिना तँ खएरो-बगुरक रोपल जाइ छइ। जइसँ आममे मीठहा फल फड़ै छै आ खएर-बगुरमे काँट होइ छइ। मुदा रोपैक इलम तँ एक्के होइ छइ। ओना, अनेरुओ होइ छइ। आमोक गाछ अनेरुओ होइ छै आ खएरो-बगुरक।

साते दिनक छुट्टीमे महेन्द्र गाम आएल छला जे आठ दिन पहिनहि बीति गेलैन। मद्रास अबै-जाइक रस्ता सेहो पाँच दिनक अछि। छुट्टी बढ़बए पड़तैन। काल्हि भोरका गाड़ीसँ चलि जेता, ई बात सुबुधोकेँ बुझल छेलैन। तँए सुबुधक मनमे एलैन जे महेन्द्र

बच्चेक संगी छी मुदा भरि मन गप एक्को दिन नै केलौं। काल्हि भोरमे चैलिए जाएत। तँए आइए भरि समए अछि। ..ई सोचि सुबुध अपन सभ काज छोड़ि महेन्द्रसँ गप करए एला।

दरबज्जापर बैस महेन्द्र पिताकेँ कहैत रहथिन-

“बाबू, गामक जेते रोगीकेँ जँचलौं ओइमे एक्को गोरे पैघ रोग जेना टी. वी., कैंसर, एड्स इत्यादिसँ ग्रसित नइ अछि। आश्चर्य लगैए जे बिमारी शहर-बजारमे धरहल्लेसँ होइए, ओइ रोगक नामो-निशान गाममे नइ अछि। बहुत खुशीक बात छी।”

महेन्द्रक रिपोर्ट सुबुधो सुनलैन। ‘खुशीक बात’ सुनि रमाकान्त पुछलखिन-

“तखन जे एते लोक बिमार अछि ओकरा कोन रोग छइ?”

मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

“साधारण रोग। जे बिना दबाइयो-दारूसँ ठीक भऽ सकै छइ। अगर ओकर खान-पान सुधैर जाइ तँ ई सभ रोग लोककेँ नै हेतइ। अदहासँ बेसी रोगी ओहेन अछि जेकरा कोनो रोग नहि, सिरिफ शंका छइ। मुदा जँ ओकरा दुइयो-चारिटा गोली नै दितिऐ तँ मन नै मानितै। तँए पुरजो बना देलिऐ आलासँ छातियो जाँचि लेलिऐ आ दू-चारिटा गोलियो दऽ देलिऐ।

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तो आ सुबुधो मने-मन हँसए लगला। हँसी रोकि सुबुध महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

“महेन्द्र भाय, काल्हि तँ तूँ चलि जेबह, फेर कहिया भेँट हेबह कहिया नहि, तँए तोरेसँ गप-सप्प करैले अपन सभ काज छोड़ि एलौं। जिनगीक तँ ढेरो गप होइत मुदा तोँ डाक्टर छिअ आ हम शिक्षक छेलौं, जे आब नइ छी। मुदा रोगक कारण बुझैक जिज्ञासा तँ जरूर अछि। तँए अखन रोगेक सम्बन्धमे किछु बुझए चाहै छी।”

“की?”

“पहिल सबाल बताहेक लएह। जखन बताह दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जेते मनुख अछि सभ बताह अछि।”

धड़फड़ा कऽ रमाकान्त बिच्चेमे पुछि देलखिन-

“से केना?”

सुबुध कहलकैन-

“काका, जे एक नम्बर प्रशासक छैथ, जे एक इलाकासँ लऽ कऽ देश भरिक शासनमे दक्ष रहै छैथ, ओ परिवारक शासनमे लटपटा जाइ छैथ। तहिना देखै छी जे जे बड़का-बड़का हिसाबी गणितज्ञ छैथ ओ जिनगीक हिसाबमे फेल भऽ जाइ छैथ। तहिना देखै छी, जे बड़का-बड़का इंजीनियर छैथ ओ परिवारक नक्शा बनबैमे चूकि जाइ छैथ। नेताक तँ कोनो बाते नहि। किएक तँ जहिना गोटे साल मानसुन अगते उतैर खूब बरसैए जइसँ बेंगक वृद्धि अधिक भऽ जाइ छै तहिना ओकरो छइ।

मुस्कियाइत रमाकान्त बजला-

“हँ, ठीके कहै छहक!”

“तेतबे नइ काका, कियो ताड़ी-दारू पीबै पाछू बताह अछि, तँ कियो धनक पाछू। कियो पढ़ैक पाछू बताह रहैए, तँ कियो ऐश-मौजक पाछू। कियो खाइ पाछू बताह, तँ कियो ओढ़ै-पहिरै पाछू। कियो काजेक पाछू बताह रहैए, तँ कियो अरामेक पाछू। कियो खेले-कुदक पाछू बताह रहैए, तँ कियो नाचे-तमाशाक पाछू। एते बताहक इलाज केतए हएत? तेतबे नहि, एक रंगक बताह दोसरकेँ बताह कहै छै आ दोसर तेसरकेँ। तहिना कियो शरीरक रोगसँ दुखित वा रोगी कहबैए तँ कियो अन्नक अभावसँ, तँ कियो वस्त्रक अभाव वा घरक अभावसँ दुखी अछि। तहिना कियो कोनो उकड़ू बात सुनलासँ दुखी

भऽ जाइए। ऐ दृष्टिए जँ देखल जाए तँ केते लोक निरोग अछि? तेतबे नहि, जँ एक-एक गोरेमे देखल जाए तँ कए-कएटा रोग धेने छइ। मुदा ई सभ ऊपरी बात भेल। मूल प्रश्न अछि जे वसन्त-ऋतुक गुलाब जकाँ जिनगी सभदिन फुलाइत रहए, जे...।”

‘गुलाबक फूल जकाँ जिनगी केना फुलाइत रहत’ सुनि डाक्टर महेन्द्र नमहर साँस छोड़लैन। आँखि उठा सुबुधक आँखिपर देलैन। सुबुधक नजैरसँ नजैर मिलते जेना महेन्द्रकेँ बुझि पड़लैन जे अथाह समुद्रमे सुबुध हेल रहला अछि। आ हम छोट-छीन पोखैरमे उग-डुम कऽ रहल छी। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र माए-बापसँ लऽ कऽ अपन भैयारी होइत धिया-पुता दिस नजैर दौड़ौलैन। केते आशासँ पिताजी हमरा दुनू भाँइकेँ पढ़ौलैन मुदा हम हुनकासँ केते दूर हटि कऽ रहै छी। एते दूर हटल रहलापर केना हुनका सेवा कऽ सकबैन। आब हुनका सेवाक जरूरत दिनो-दिन बेसीए होइत जेतैन। उमेरो अधिक भेलैन आ दिनानुदिन बढ़िते सेहो जेतैन। जेते उमेर बढ़तैन तेते शरीरक अंग कमजोर होइत जेतैन। जेते अंग कमजोर हेतैन तेते शरीरक क्रियामे रूकाबट औतैन। जइसँ केतेको नव-नव रोग शरीरमे प्रवेश करतैन। जेते रोग शरीरमे प्रवेश करतैन तेतेक कष्ट हेतैन...। की ओइ कष्टक जिम्मेदार हम नै हेबइ? हएब। मुदा तइले करै की छी? किछु नहि! अखन हम सभ दुनू भाँइ आ दुनूक पत्नी जुआन छी मुदा किछु दिनक उपरान्त तँ हमहूँ सभ हुनके जकाँ बुढ़ हएब। कोनो जरूरी नइ अछि जे हमरो सबहक बेटा हमरे सभ लग रहत। अखन तँ हम देशेमे छी। अन्तर एतबे अछि जे देशक एक छोरपर माए-बाबू छैथ आ दोसर छोरपर अपने छी। मुदा आइक जे हवा बहि रहल अछि जे आन-आन देश जा लोक नोकरी करैए आ जीवन-यापन करैए। जँ कहीं हमरो संगे सएह हुअए तखन की हएत..?

महेन्द्रक चेहरा उदास हुअ लगलैन। मन वौआए लगलैन। देहसँ

पसेना निकलए लगलैन। बुझि पड़ए लगलैन जे देह शक्ति विहीन भऽ रहल अछि। एक्को पाइ लज्जैत देहमे ऐछे नहि। ..पसेनासँ तर-बत्तर होइत महेन्द्र सुबुधकेँ कहलखिन-

“सुबुध भाय, जिनगीक अजीव रस्ता अछि। जेते मनुख ऐ धरतीपर जन्म नेने अछि, ओकरा तँ जिनगी बितबए पड़तै। मुदा जिनगीक रस्ता एहेन पेंचगर अछि जे बिरले कियो-कियो बुझि पबैए, बाँकी सभ औनाइते रहि जाइए।”

मुस्कियाइत सुबुध बजला-

“महेन्द्र भाय, अहाँ तँ डाक्टर छी। पढ़ल-लिखल लोकक बीच सदिखन रहबो करै छी। अहाँ किए एहेन बात कहि रहल छी? हम तँ जाबे मास्टरी केलौं ताबे धिया-पुताकेँ पढ़ेलौं आ जखन नोकरी छोड़ि गाममे रहै छी तखन जेहेन समाजमे रहै छी से देखबे करै छी।”

महेन्द्र-

“भाय, अहाँ जे बात कहलौं ओ तँ आँखिक सोझमे जरूर अछि मुदा अहाँमे मनुख चिन्हैक आ ओकर चलैक रस्ताक लूरि जरूर अछि। अहाँ अपनाकेँ छिपा रहल छी।”

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तकेँ मनमे उठलैन- जे आदमी घरसँ हजारो कोस दूर हटि कमा कऽ एते बनेलक ओ अपनाकेँ एते कमजोर किए बुझि रहल अछि? मुदा दुनू संगीक बीच नै आबि रमाकान्त गुम्मे रहला। बैसले-बैसल एक नजैर महेन्द्रकेँ देखैथ आ एक नजैर सुबुधकेँ।

अपनाकेँ छिपाएब सुनि सुबुध बजला-

“महेन्द्र भाय, जइ प्रश्नक बीच अहाँ ओझरा रहल छी ओ प्रश्न ओतेक ओझराएल नइ अछि। मुदा असानो नइ अछि। सिरिफ आँखिमे ज्योति आनि देख-देख कऽ चलैक अछि।”

दलानक आँगन दिसक भितुरका कोठरीमे बैस सुजाता खिड़की देने सभकेँ देखबो करै छेली आ गपो-सप्प सुनै छेली। कखनो मनमे खुशियो अबै छेलैन तँ कखनो मन करुएबो करैन। मुदा किछु बाजैथ नहि। बाजब उचितो नइ बुझै छेली। ओना, पढ़ल-लिखल रहने, कखनो-कखनो बजैक मन जरूर होइ छेलैन। मुदा किछुए दिनमे सासु मिथिलाक रीति-रेवाज आ बेवहारक सम्बन्धमे तेना कऽ बुझा देलकैन जे ‘मद्रासक सुजाता’, ‘मिथिलाक सुजाता’ बनि गेली। जइसँ मुँहपर नुआ रखब तँ उचित नइ बुझैथ मुदा बाजब-भुकबपर नजैर जरूर रखए लगली। किनकासँ कोन ढंगे बाजी, केते अवाजमे बाजी, कोन शब्दक प्रयोग करी, ऐ सभपर नजैर अबस्स रखए लगली। तँए सुजाताक बोली संयमित भऽ गेल रहैन। ओना, ऐठामक चालि-ढालि पूर्ण रूपे अंगीकार नै कऽ सकल छेली मुदा अंगीकार करैक पूर्ण चेष्टा तँ करिते छेली।

सुबुधक ऊट-पटाँगों बातसँ महेन्द्रकेँ दुख नइ होइ छेलैन। हल्लुको बातमे ओ गम्भीर रहस्यक अनुमान करए लगला। भलेँ ओ गम्भीर नहि, हल्लुके किएक ने होइ।

महेन्द्रक गम्भीर मुद्रा देख सुबुधकेँ बुझि पड़लैन जे आब ओ गम्भीर बात बुझैक चेष्टामे उताहुल भऽ रहल छैथ तँए जिनगीक गम्भीर बातकेँ खोलि देब उचित होएत। बजला-

“महेन्द्र भाय, अपना गाममे सभसँ अगुआएल परिवार अहाँक अछि। चाहे धन-सम्पैतक हुअए वा पढ़ाइ-लिखाइ। मुदा कनी गौर करि कऽ देखियौ जे एतेक धन-सम्पैतक उपरान्तो धनेक पाछू घरसँ हजारो कोस हटि कऽ रहै छी। अहीं कहू जे केते धन भेलापर मनमे संतोख होएत। मुदा ऐ प्रश्नक दोसरो पक्ष अछि, ओ अछि, ‘विश्व-बन्धुत्व’क विचार। अपनो ऐठामक महान-महान चिन्तक ऐ विचारकेँ

सिरिफ मानबे नै केलैन बल्कि बनबैक प्रयासो केलैन। ओना, सैद्धान्तिक रूपमे विश्व-बन्धुत्वक विचार महान अछि मुदा जेते महान अछि ओइसँ कनियोँ कम बेवहारिक बनबैमे असान नइ अछि। लोक गामक वा आन गामक देवस्थानमे दीप जरबैसँ अर्थात् साँझ दइसँ पहिने अपना घरक गोसाँइ-आगूमे दीप जरबैए, जे उचिते नहि गम्भीर विचारक दिग्दर्शन सेहो छी। तहिना सभकेँ अपना लगसँ जिनगीक लीला शुरू करक चाहिऐ। अपनासँ आगू बढ़ि समाज, समाजसँ आगू बढ़ि इलाका, इलाकासँ आगू बढ़ि देश-दुनियाँ दिस बढ़ैक चाहिऐ। जँ से नै कऽ कियो परिवार-समाज छोड़ि आगू बढ़ि करैए तखन केतौ-ने-केतौ गड़बड़ जरूर हेतइ। जहिना दुनियाँमे समस्याग्रस्त मनुख असंख्य अछि तहिना तँ ओइ समस्यासँ मुकबलो करैबला मनुख असंख्य छैथ। एक्के आदमीक केलासँ तँ दुनियाँक समस्या नै मेटा सकत। तँए, जे जेतए जन्म नेने छैथ ओ ओतइ इमानदारी आ मेहनतसँ कर्ममे लगि जाइथ।”

सुबुधक प्रश्नकेँ स्वीकार करैत महेन्द्र बजला-

“हँ! ई दायित्व तँ मनुखमात्रक छी।”

सुबुध-

“जखन ई दायित्व सभ मनुखक छी तखन अपने गाममे देखियौ- ऐ सालसँ, जखन सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे आएल। मुदा ऐसँ पहिने तँ देखबे करै छेलिऐ जे ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छेलै, ने भरि देह वस्त्र आ ने रहैले सुरक्षित घर छेलइ। ओना, अखनो नै छै आ ने रोग-बियाधिसँ बँचैक सुरक्षित उपाय। बाजू, छेलै की नै छेलइ?”

धीमी स्वरमे डाक्टर महेन्द्र बजला-

“हँ से तँ ठीके।”

“आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जन्म तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओते कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाइ, पड़ाइक मतलब जेतए पेट भरत ओतए जाएब। जँ कियो पड़ाइए तँ ओकरा कायर-कामचोर छोड़ि की कहबै? मुदा तैयो लोक जाइ किए अछि? एकरो कारण छइ। एकर कारण छै अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनत आ असानीसँ जिनगी जीनाइ ताधैर सम्भव नइ अछि, जाधैर मेहनतसँ देशकेँ समृद्धिशाली नहि बना लेब। अगर जँ किछु गोरेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बुझब तँ ओ बुझनाइ नेने-नेने गुलामीक जीनजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नै होइए, गुलाम होइए ओइ देशक मनुख आ गुलाम होइ छै ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सबहक जादू समाजमे ओइ रूपे चलि रहल अछि जे जहिना हम-अहाँ पोखैरमे कनी बोर दऽ बनसी पाथि दइ छिऐ आ नमहर-नमहर माछ खेनाइक लोभे फँसि जाइए तहिना मनुखोक बीच चलि रहल अछि। जेकरा नजैर गड़ा कऽ देखए पड़त।”

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मुड़ी डोला मानि लेलैन। मुदा मुड़ी डोलौला पछाइतो मनमे किछु शंका रहबे करैन। जे मुँहक हाव-भावसँ सुबुध बुझि गेलखिन। पुनः अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत सुबुध बजला-

“अपना ऐठामक दशा देखियौ। जेकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डाक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जा अपन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेच लइ छैथ। भलेँ किछु अधिक पाइ कमा लैत हेता मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छैथ जे नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसंधान कऽ कऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा बेपारिक माल बेच आरो पछुअबैए। एकटा सबाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना

देशमे ओतेक साधन नइ अछि जे ओ अपन बुधिक सदुपयोग कऽ सकता। तँए अपन बुधिक सदुपयोग करैले आन देश जाइ छैथ। मुदा हमरा बुझने ऐ तर्कमे कोनो दम्म नइ अछि। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल ओ यएह रहल जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर देशकेँ माने पछुआएल देशकेँ लूटैत रहलै। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होइ वा बेपारक माध्यमसँ। जइसँ जेहो सम्पैत-साधन ओइ देशकेँ रहत, ओहो लूटा जाइए। जखन ओ लूटा जाएत तखन आगू-मुहेँ केना ससरत?”

माथ कुड़ियबैत महेन्द्र बजला-

“तखन की करक चाही?”

सुबुध-

“आँखि उठा कऽ देखियौ जे दुनियाँमे कियो बिना अ-आ पढ़ने विद्वान बनि सकल। वा बनि सकै छैथ? जँ से नहि, तखन पछुआएल देश वा लोक केना बिना कठिन मेहनत केने आगू बढ़ि सकैए? ..तँए पछुआएल देशक लोककेँ ऐ बातकेँ बुझए पड़तैन। जँ से नइ बुझि अगुएलहाक अनुकरण करता तँ पुनः गुलामीक बाटपर चढ़ि जेता। केते लाजिमी बात छी जे हम अपने बनौल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिस चलू...।”

डाक्टर महेन्द्रक चेहरा दिस देखैत पुन: सुबुध बाजए लगला-

“अपना ऐठाम जे परिवारिक ढाँचा अदौसँ रहल ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिस बढ़ल अछि। जे हमरा सबहक संयुक्त परिवारक धरोहर रूपमे अछि। मनुखक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजैर दियौ। तीन अवस्था तँ सबहक होइ छइ। बच्चा, जुआनी आ बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ीमे सभकेँ दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। जे एकाकी परिवारमे नइ भऽ पाबि रहल अछि। आइक जे एकाकी परिवार बनि

गेल अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ भऽ गेल अछि। जहिना कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैत तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए केतौ, बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता केतौ रहए लगल अछि। मानवीय सिनेह नष्ट भऽ रहल अछि। सभ जनै छी जे काँच बरतन जकाँ मनुख होइए। कखन की ऐ शरीरमे भऽ जाएत तेकर कोनो गारंटी नहि। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुख केतौ रहि जीब सकैए मुदा अस्वस्थक अवस्थामे तँ से नइ भऽ सकैत अछि। तखन केहेन कष्टकर जिनगी मनुखक सामने उपस्थित भऽ जाइ छइ। तोहूपर तँ नजैर दिअ पड़त।"

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोड़ि देलकैन। देहमे कम्पन आबि गेलैन। बोली थरथराए लगलैन। कनी काल धरि असथिर भऽ मनकेँ थीर केलैन। मन थीर होइते महेन्द्र बजला-

"सुबुध भाय, भलेँ हाइ स्कूल धरि संगे-संग पढ़लौं मुदा जिनगीकेँ जइ गहराइसँ अहाँ चिन्हलौं ओ हम नै चीन्हि सकलौं। सच पुछी तँ आइ धरि अहाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक मात्र बुझै छेलौं मुदा ओ भ्रम छल। संगी रहितो अहाँ गुरु छी। कखनो काल, जखन एकांत होइ छी, अपनो सोचैत रहै छी जे एतेक कमाइ छी, मुदा तैयो दिन-राति खटैत-खटैत बेचैने किए रहै छी, कखनो चैन किए ने भऽ पबै छी। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिए ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि मुदा देखैक समए नइ भेटैए। खाइले बैसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइए, जे फल्लाँकेँ समए देने छिऐ, नै जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतैयोमे होइए। मुदा एते फ्रिसानीक लाभ की भेटैए तँ सिरिफ पाइ। की पाइए जिनगी छी..?"

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्कियाइत सुबुध बजला-

"भाय, पाइ जिनगी चलबैक मात्र साधन छी, नइ कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि जे मनुखकेँ कुकर्मी बना दइए। कुकर्मी बनलापर मनुषत्व समाप्त भऽ जाइ छइ। जइसँ चीन-पहचीन सेहो समाप्त भऽ जाइ छै। तेतबे नहि, अपराधिक वृत्ति सेहो पनपए लगै छइ। अपराधिक वृत्ति मनुखमे एलापर पैघ-सँ-पैघ अपराधमे स्वत: धकला जाइए। तँए अपन जिनगीकेँ देखैत परिवार आ समाजक जिनगी देखब जिनगी छी। ओना, मनुख मात्रक सेवा-ले सेहो सदिखन तत्पर रहक चाही, जहाँ धरि भऽ सकए, करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एतेक कठिन अछि जे कर्मठ-सँ-कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइ छैथ। मुदा ओ थाकब हारब नहि, जीतब छी। जे समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि ओइ जड़िमे तामि-कोरि-पटा कऽ नव जिनगी देबाक अछि। जइसँ ओ अनवरत फुलाइत रहत। ऐ काजमे अपनाकेँ समरपित कऽ देबाक अछि।"

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सक्कत बनए लगलैन। आँखिमे प्रखर ज्योति आबए लगलैन। दृढ़ स्वरमे पितो आ सुबुधोकेँ कहलखिन-

"दुनू गोरेक बीच बजै छी जे सालमे एक्को दिन ओहेन नै बँचत जइ दिन हमरा चारू गोरेमे सँ कियो-ने-कियो ऐठाम नै रहब। ओना, मद्रासोमे अज-गज बहुत भऽ गेल अछि, ओकरो छोड़ब नीक नै होएत मुदा परिवारो आ समाजोकेँ नइ छोड़ब। मद्रासक कमाइ परिवारो आ समाजोमे लगाएब। अखन तँ ओते अनुभव नइ अछि मुदा चाहब जे समाजमे बिमारी-ले जे खरच हएत ओ पूरा करब। जहिना पिताजी समाजकेँ खाइक ओरियान कऽ देलखिन तहिना हमहूँ स्वस्थ्य-ले ओरियान जरूर करब। समाजकेँ कहि दियौन जे जिनका किनको कोनो रोग बिमारी होइ ओ आँखि मूनि कऽ ऐठाम चलि अबैथ। हुनकर इलाजक सेवा जरूर हेतैन। ऐ बेर बिना निआरे गाम आएल

छेलौं तँए किछु लऽ कऽ नहि एलौं। मुदा कहै छी जे जहाँ धरि रोग जँचैक औजारक जोगार भऽ सकत ओ मद्रास जाइते पठा देब। तत्काल अखन भाबो गामेमे रहती। बौएलाल आ सुमित्रा सेहो रहबे करत। आब जे आएब ओ बेसी दिन-ले आएब। आ ऐठाम आबि अधिक-सँ-अधिक गोरेकेँ चिकित्साक ज्ञान करा गामसँ रोगकेँ भगा देब। समाज हम्मर छी आ हम समाजक छिऐ।"

○

शब्द संख्या : 3095

(2004 ईस्वी)

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`350

ISBN : 978-93-87675-27-8